



Libro mercanti di Torino

Balthus heute Dom geoffen n. 17. Set Dom St. f. Rous.

Barnes Aug. 6. 20 p.m. N.Y. 187- Tom M. S. Barnes.

Binelli franc. c. M. palys de l'abbé n. g. 10. 20. 30. 40. 50. 60. 70. 80. 90. 100. 110. 120. 130. 140. 150. 160. 170. 180. 190. 200. 210. 220. 230. 240. 250. 260. 270. 280. 290. 300. 310. 320. 330. 340. 350. 360. 370. 380. 390. 400. 410. 420. 430. 440. 450. 460. 470. 480. 490. 500. 510. 520. 530. 540. 550. 560. 570. 580. 590. 600. 610. 620. 630. 640. 650. 660. 670. 680. 690. 700. 710. 720. 730. 740. 750. 760. 770. 780. 790. 800. 810. 820. 830. 840. 850. 860. 870. 880. 890. 900. 910. 920. 930. 940. 950. 960. 970. 980. 990. 1000.

Bourleau 1^{er} p^{er}meur n. 3. 1^{er} Don J. J. Dancan

Bruch. vom C. M. Halle 14. 12. 19. Don. 17. 1. 1801

Percepiti nuntiati. M. 70. Tutti angeli sotto le piume M. 58. 1910

De Refariis Giovanni C. d. g. l. Sangalli n. 13 p. 2. 12. m. m. m.

Genov. pinto do C. d'f. Zinf. - N. 10 1/2 mm v. 7. F. J. E. W. L. S. etc.

Geometrische Optik

Parv. Mich. Angel. c. s. francus n. y. Sep. Dom. d. s. Franc. 11

Augustine. Don-Griff- u. S.

gou. mawh 170 n. 52.

Omer 494. (Départ de la ville de Paris à la suite de M. de la Roche).

[Faint handwritten notes at the bottom of the page]

Mr. John G. W. M. - C. M. - 13

Propter quod. 17. - 18. - 19. - 20. - 21. - 22. - 23. - 24. - 25. - 26. - 27. - 28. - 29. - 30. - 31. - 32. - 33. - 34. - 35. - 36. - 37. - 38. - 39. - 40. - 41. - 42. - 43. - 44. - 45. - 46. - 47. - 48. - 49. - 50. - 51. - 52. - 53. - 54. - 55. - 56. - 57. - 58. - 59. - 60. - 61. - 62. - 63. - 64. - 65. - 66. - 67. - 68. - 69. - 70. - 71. - 72. - 73. - 74. - 75. - 76. - 77. - 78. - 79. - 80. - 81. - 82. - 83. - 84. - 85. - 86. - 87. - 88. - 89. - 90. - 91. - 92. - 93. - 94. - 95. - 96. - 97. - 98. - 99. - 100. - 101. - 102. - 103. - 104. - 105. - 106. - 107. - 108. - 109. - 110. - 111. - 112. - 113. - 114. - 115. - 116. - 117. - 118. - 119. - 120. - 121. - 122. - 123. - 124. - 125. - 126. - 127. - 128. - 129. - 130. - 131. - 132. - 133. - 134. - 135. - 136. - 137. - 138. - 139. - 140. - 141. - 142. - 143. - 144. - 145. - 146. - 147. - 148. - 149. - 150. - 151. - 152. - 153. - 154. - 155. - 156. - 157. - 158. - 159. - 160. - 161. - 162. - 163. - 164. - 165. - 166. - 167. - 168. - 169. - 170. - 171. - 172. - 173. - 174. - 175. - 176. - 177. - 178. - 179. - 180. - 181. - 182. - 183. - 184. - 185. - 186. - 187. - 188. - 189. - 190. - 191. - 192. - 193. - 194. - 195. - 196. - 197. - 198. - 199. - 200. - 201. - 202. - 203. - 204. - 205. - 206. - 207. - 208. - 209. - 210. - 211. - 212. - 213. - 214. - 215. - 216. - 217. - 218. - 219. - 220. - 221. - 222. - 223. - 224. - 225. - 226. - 227. - 228. - 229. - 230. - 231. - 232. - 233. - 234. - 235. - 236. - 237. - 238. - 239. - 240. - 241. - 242. - 243. - 244. - 245. - 246. - 247. - 248. - 249. - 250. - 251. - 252. - 253. - 254. - 255. - 256. - 257. - 258. - 259. - 260. - 261. - 262. - 263. - 264. - 265. - 266. - 267. - 268. - 269. - 270. - 271. - 272. - 273. - 274. - 275. - 276. - 277. - 278. - 279. - 280. - 281. - 282. - 283. - 284. - 285. - 286. - 287. - 288. - 289. - 290. - 291. - 292. - 293. - 294. - 295. - 296. - 297. - 298. - 299. - 300. - 301. - 302. - 303. - 304. - 305. - 306. - 307. - 308. - 309. - 310. - 311. - 312. - 313. - 314. - 315. - 316. - 317. - 318. - 319. - 320. - 321. - 322. - 323. - 324. - 325. - 326. - 327. - 328. - 329. - 330. - 331. - 332. - 333. - 334. - 335. - 336. - 337. - 338. - 339. - 340. - 341. - 342. - 343. - 344. - 345. - 346. - 347. - 348. - 349. - 350. - 351. - 352. - 353. - 354. - 355. - 356. - 357. - 358. - 359. - 360. - 361. - 362. - 363. - 364. - 365. - 366. - 367. - 368. - 369. - 370. - 371. - 372. - 373. - 374. - 375. - 376. - 377. - 378. - 379. - 380. - 381. - 382. - 383. - 384. - 385. - 386. - 387. - 388. - 389. - 390. - 391. - 392. - 393. - 394. - 395. - 396. - 397. - 398. - 399. - 400. - 401. - 402. - 403. - 404. - 405. - 406. - 407. - 408. - 409. - 410. - 411. - 412. - 413. - 414. - 415. - 416. - 417. - 418. - 419. - 420. - 421. - 422. - 423. - 424. - 425. - 426. - 427. - 428. - 429. - 430. - 431. - 432. - 433. - 434. - 435. - 436. - 437. - 438. - 439. - 440. - 441. - 442. - 443. - 444. - 445. - 446. - 447. - 448. - 449. - 450. - 451. - 452. - 453. - 454. - 455. - 456. - 457. - 458. - 459. - 460. - 461. - 462. - 463. - 464. - 465. - 466. - 467. - 468. - 469. - 470. - 471. - 472. - 473. - 474. - 475. - 476. - 477. - 478. - 479. - 480. - 481. - 482. - 483. - 484. - 485. - 486. - 487. - 488. - 489. - 490. - 491. - 492. - 493. - 494. - 495. - 496. - 497. - 498. - 499. - 500. - 501. - 502. - 503. - 504. - 505. - 506. - 507. - 508. - 509. - 510. - 511. - 512. - 513. - 514. - 515. - 516. - 517. - 518. - 519. - 520. - 521. - 522. - 523. - 524. - 525. - 526. - 527. - 528. - 529. - 530. - 531. - 532. - 533. - 534. - 535. - 536. - 537. - 538. - 539. - 540. - 541. - 542. - 543. - 544. - 545. - 546. - 547. - 548. - 549. - 550. - 551. - 552. - 553. - 554. - 555. - 556. - 557. - 558. - 559. - 560. - 561. - 562. - 563. - 564. - 565. - 566. - 567. - 568. - 569. - 570. - 571. - 572. - 573. - 574. - 575. - 576. - 577. - 578. - 579. - 580. - 581. - 582. - 583. - 584. - 585. - 586. - 587. - 588. - 589. - 590. - 591. - 592. - 593. - 594. - 595. - 596. - 597. - 598. - 599. - 600. - 601. - 602. - 603. - 604. - 605. - 606. - 607. - 608. - 609. - 610. - 611. - 612. - 613. - 614. - 615. - 616. - 617. - 618. - 619. - 620. - 621. - 622. - 623. - 624. - 625. - 626. - 627. - 628. - 629. - 630. - 631. - 632. - 633. - 634. - 635. - 636. - 637. - 638. - 639. - 640. - 641. - 642. - 643. - 644. - 645. - 646. - 647. - 648. - 649. - 650. - 651. - 652. - 653. - 654. - 655. - 656. - 657. - 658. - 659. - 660. - 661. - 662. - 663. - 664. - 665. - 666. - 667. - 668. - 669. - 670. - 671. - 672. - 673. - 674. - 675. - 676. - 677. - 678. - 679. - 680. - 681. - 682. - 683. - 684. - 685. - 686. - 687. - 688. - 689. - 690. - 691. - 692. - 693. - 694. - 695. - 696. - 697. - 698. - 699. - 700. - 701. - 702. - 703. - 704. - 705. - 706. - 707. - 708. - 709. - 710. - 711. - 7

Radneri Felsen

Redund. from a longer sentence above.

1877
 1878
 1879
 1880
 1881
 1882
 1883
 1884
 1885
 1886
 1887
 1888
 1889
 1890
 1891
 1892
 1893
 1894
 1895
 1896
 1897
 1898
 1899
 1900
 1901
 1902
 1903
 1904
 1905
 1906
 1907
 1908
 1909
 1910
 1911
 1912
 1913
 1914
 1915
 1916
 1917
 1918
 1919
 1920
 1921
 1922
 1923
 1924
 1925
 1926
 1927
 1928
 1929
 1930
 1931
 1932
 1933
 1934
 1935
 1936
 1937
 1938
 1939
 1940
 1941
 1942
 1943
 1944
 1945
 1946
 1947
 1948
 1949
 1950
 1951
 1952
 1953
 1954
 1955
 1956
 1957
 1958
 1959
 1960
 1961
 1962
 1963
 1964
 1965
 1966
 1967
 1968
 1969
 1970
 1971
 1972
 1973
 1974
 1975
 1976
 1977
 1978
 1979
 1980
 1981
 1982
 1983
 1984
 1985
 1986
 1987
 1988
 1989
 1990
 1991
 1992
 1993
 1994
 1995
 1996
 1997
 1998
 1999
 2000
 2001
 2002
 2003
 2004
 2005
 2006
 2007
 2008
 2009
 2010
 2011
 2012
 2013
 2014
 2015
 2016
 2017
 2018
 2019
 2020
 2021
 2022
 2023
 2024
 2025
 2026
 2027
 2028
 2029
 2030
 2031
 2032
 2033
 2034
 2035
 2036
 2037
 2038
 2039
 2040
 2041
 2042
 2043
 2044
 2045
 2046
 2047
 2048
 2049
 2050
 2051
 2052
 2053
 2054
 2055
 2056
 2057
 2058
 2059
 2060
 2061
 2062
 2063
 2064
 2065
 2066
 2067
 2068
 2069
 2070
 2071
 2072
 2073
 2074
 2075
 2076
 2077
 2078
 2079
 2080
 2081
 2082
 2083
 2084
 2085
 2086
 2087
 2088
 2089
 2090
 2091
 2092
 2093
 2094
 2095
 2096
 2097
 2098
 2099
 2100
 2101
 2102
 2103
 2104
 2105
 2106
 2107
 2108
 2109
 2110
 2111
 2112
 2113
 2114
 2115
 2116
 2117
 2118
 2119
 2120
 2121
 2122
 2123
 2124
 2125
 2126
 2127
 2128
 2129
 2130
 2131
 2132
 2133
 2134
 2135
 2136
 2137
 2138
 2139
 2140
 2141
 2142
 2143
 2144
 2145
 2146
 2147
 2148
 2149
 2150
 2151
 2152
 2153
 2154
 2155
 2156
 2157
 2158
 2159
 2160
 2161
 2162
 2163
 2164
 2165
 2166
 2167
 2168
 2169
 2170
 2171
 2172
 2173
 2174
 2175
 2176
 2177
 2178
 2179
 2180
 2181
 2182
 2183
 2184
 2185
 2186
 2187
 2188
 2189
 2190
 2191
 2192
 2193
 2194
 2195
 2196
 2197
 2198
 2199
 2200
 2201
 2202
 2203
 2204
 2205
 2206
 2207
 2208
 2209
 2210
 2211
 2212
 2213
 2214
 2215
 2216
 2217
 2218
 2219
 2220
 2221
 2222
 2223
 2224
 2225
 2226
 2227
 2228
 2229
 2230
 2231
 2232
 2233
 2234
 2235
 2236
 2237
 2238
 2239
 2240
 2241
 2242
 2243
 2244
 2245
 2246
 2247
 2248
 2249
 2250
 2251
 2252
 2253
 2254
 2255
 2256
 2257
 2258
 2259
 2260
 2261
 2262
 2263
 2264
 2265
 2266
 2267
 2268
 2269
 2270
 2271
 2272
 2273
 2274
 2275
 2276
 2277
 2278
 2279
 2280
 2281
 2282
 2283
 2284
 2285
 2286
 2287
 2288
 2289
 2290
 2291
 2292
 2293
 2294
 2295
 2296
 2297
 2298
 2299
 2300
 2301
 2302
 2303
 2304
 2305
 2306
 2307
 2308
 2309
 2310
 2311
 2312
 2313
 2314
 2315
 2316
 2317
 2318
 2319
 2320
 2321
 2322
 2323
 2324
 2325
 2326
 2327
 2328
 2329
 2330
 2331

Tranelli hys. Maria

12 Sept. 1884

L. Johnson to Mrs. Johnson

2. William F. Drake 12. f. 2. Town 1815.
Hampden

Bombus terrestris c. *Aph. fuscicornis* etc.

Booneville 6-20 p. 35

13th 18. C. M. Lenato N. Y.

Давно я пишу с. 2. 10. 22.

James Smith (1875) Smith & Co.

Guthrie Folio 1. Not a student. The paper is 4.

Chlorophyllous form. (C. light) Stained in 3.

James Davis. Dr. 40/11. 20
Lester L. Dr. 40/11. 20

Sept 2nd 1890

Lindens manus Joh. Joann. Astruc
van der Linden de scriptis medicis 1330
pag. in 4. Norimbergae 1686.

Plouquet, in Bibliotheca medica, in
Annotat. vobis vol. 8. 1797.-99. 1800. vol. 10.
idem Tubingae 1808/1809. sub titulo Bibliotheca medica
Astruc, seu operum medicorum Astruci, cum
et aliis observationibus. 200000 scriptis operum medicorum
astruci, sed quae in admodum maculatum. Dr. J.
Scribae medicus t. 3. p. 108.

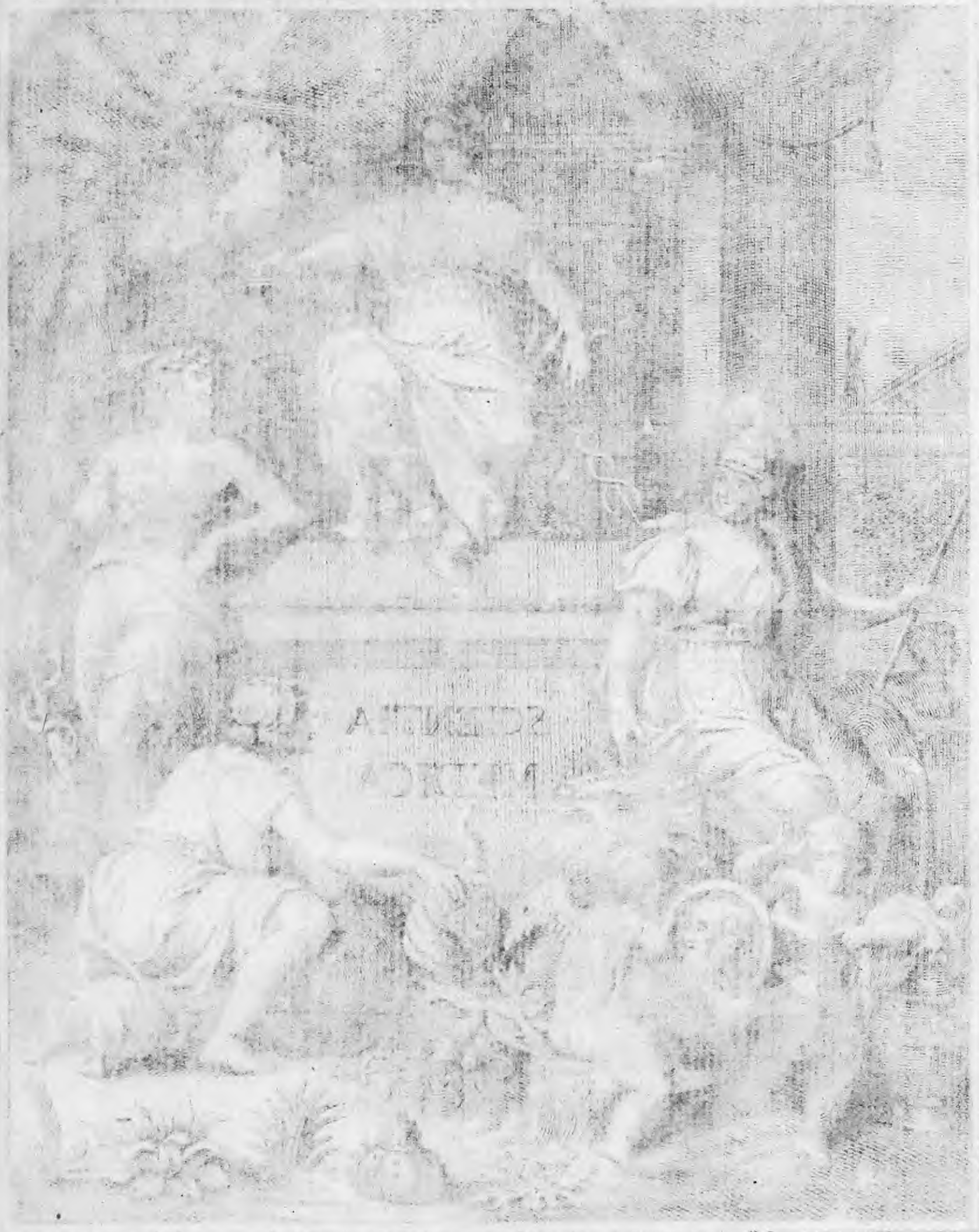
M E T H O D U S
STUDII MEDICI.

II. TOMIS COMPREHENSA.

M E T H O D S

STUDY MEDICAL

IN TOMES COMPREHENSIVE





HERMANNI BOERHAAVE,
VIRI SUMMI, SUIQUE PRAECEPTORIS
METHODUS
STUDII MEDICI.

Emaculata, & Accessionibus locupletata

A B

ALBERTO AB HALLER,

Med. & Phil. D. Anat. Chir. Bot. in Georg. Aug. P. P. O. Consiliario Aul. & Archiatro Reg. & Elect. Praeside Regiae Societ. Scient. Gotting. Acad. Caesar. Natur. Curios. nec non Regg. Socc. & Acadd. Britann. Boruss. Svecic. & Upsal. Sodali, Reip. Bern. in Sup. Senatu CCviro.

EDITIO PRIMA VENETA;

Ab innumeris Amstelodamensis Anni MDCCLI. erroribus expurgata, in qua Additiones omnes Hallerianæ, quæ ad illius calcem legebantur, suis in locis positæ ad maiorem Studioforum commoditatem adinveniuntur.

TOMUS PRIMUS.



V E N E T I I S,

M D C C L I I I.

Ex TYPOGRAPHIA REMONDINIANA,

SUPERIORUM PERMISSU, ac PRIVILEGIO.

THE NATIONAL ANTHROPOLOGICAL ARCHIVES
OF THE SMITHSONIAN INSTITUTION
WASHINGTON, D. C.

Inventory of the Collection of
Prehistoric Artifacts

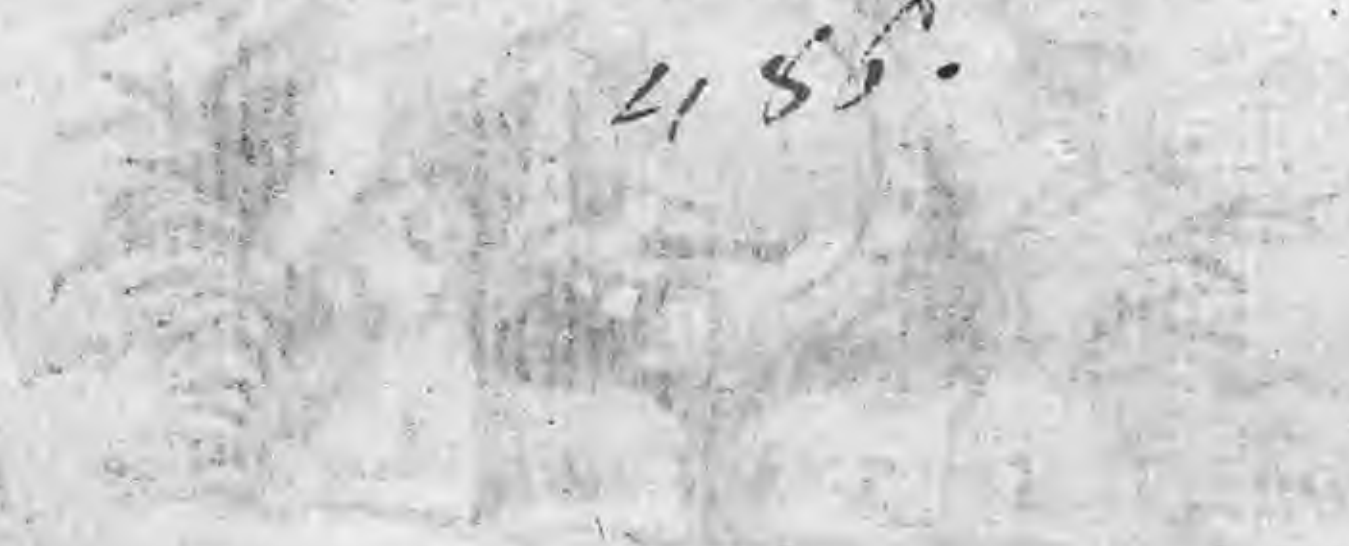
by

ALFRED L. KROEBER

Published by the Smithsonian Institution
Washington, D. C., 1938
The National Anthropological Archives
Smithsonian Institution
Washington, D. C.

TOMUS PRIMUS

A.
188.



THE NATIONAL ANTHROPOLOGICAL ARCHIVES
OF THE SMITHSONIAN INSTITUTION
WASHINGTON, D. C.

G E O R G I O I I.
D. G. M. B R I T A N N I A E,
F R A N C I A E,
E T
H I B E R N I A E
R E G I,
S. R. I. E L E C T O R I,
D U C I B R U N S V I C I E T L U N E B U R G I.
&c. &c. &c.



*NON excidet unquam animo illustris dies ultimæ
posteritati venerabilis , qua præsens Numen
Tuum Academiae Tuae ostendisti , REGUM
JUSTISSIME . Sedet animo æterna Tuae benignitatis recor-
datio , qua motus & in me , adeo exiguam partem GEOR-
GIAE AUGUSTAE TUAE , aliquod pretium , & aliquas
in or-*

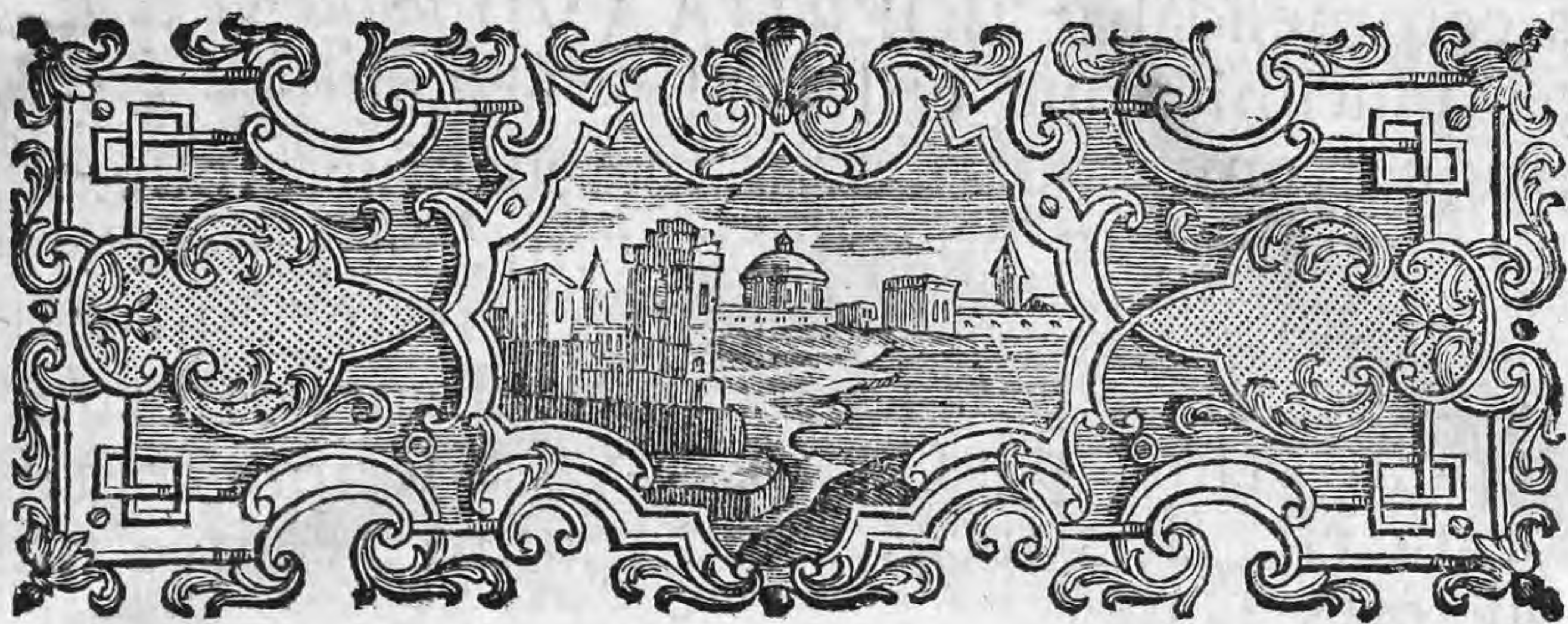
in ornanda republica partes esse sacra voce testatus es. Recens est etiam beneficium, gloriosum mihi, & Reipublicae literariae, ut speramus, utile, quo novam Societatem, ad incrementum scientiarum coeuntem, meae inprimis fidei tradidisti. Supererit denique apud nepotes meos Tuae Munificentiae illustre signum, quos nondum natos Nobiliurn ordini adscriptos, Tuoque beneficio feliciores esse voluisti, ut adpareret, nullos esse honores ad quos bonae literae ducere non possent, quoties sapiens Princeps imperaret. Accipe ergo, PATER PATRIAE, hunc devoti & grati animi testem, librum non ad thronum natum, non eum, qui ARBITRI EUROPÆ oculos possit adlicere, sed talem, qualem præstare potui, futurum apud posteros monumentum, inter tot labores quos pro ORBIS FELICITATE & in bellis subiisti, & in pace urges, eorum memoriam divino animo Tuo insedisse, qui in promovendo vero emerentur. Deum O. M. supplex oro, ut Majestatem Tuam, Domumque Tuam Regiam in perpetuum sospitet.

REGIAE MAJESTATIS TUAÆ.

In Georgia Augusta
A. D. 23. Aprilis.

Devotissimus
Albertus ab Haller.

P R A E.



P R A E F A T I O .



Andem expedio me labore, qui Tibi forte, **LECTOR ERUDITE**, levis videtur, mihi gravissimus per multos annos incubuit: neque hæc ideopræfari me vides, ut laudem operam meam: nemo me melius ejus vitia novit. Patere unice, ut excusam me, atque a voluntate mea, & a difficultate rei

ipfius, spem mitioris judicii expectem.

Ante novem annos cum eximio Bibliopola **JACOPO a VVETSTEIN** egi de edenda emaculata editione ejus codicis, quem cum titulo *Methodi studendi Medicinæ* variis annis variis, & ignoti fere librarii ediderant. Maculosus erat, indignus **BOERHAAVIANO** nomine, & dolebat, quisquis amaverat **PRAECEPTOREM**, quoties videbat nomen tanti Viri, difformi larva tectum, censuris ignarorum & malevolorum exponi.

Facile erat emaculare, paucis locis exceptis, sed videbatur quadraginta annorum interea elapsum spatium plurimos & præcipuos auctores iis addidisse, quos

quos commendabat BOERHAAVIUS . Inter vetustiores plurimi æque utiles libri utique pares laudes paremque commendationem merebantur. Induxi igitur in animum, ut opus subplerem, eo inprimis fine, ut meliorem scriptorum selectum darem, qui de aliqua artis medicæ parte bene meruissent. Ad eum ferre scopum prima pars, quæ physica scripta continet, elaborata est, ut paucos inter multos, eosque utiliores auctores laudet.

Neque multum ab eo scribendi instituto discessi, quando botanicos auctores recensui. Cum vero ordo me ad anatomicos, indeque ad practicos libros duceret, multa mihi in hac mea ratione displicuerunt. Cui vero non displiceat quod displicet auctori?

An dissimulandus ideo scriptor, quod eum non legerim, vel quod in mea, non amplissima librorum collectione, non inveniatur? An non informis, hiulcus, & male judiciosus catalogus fieret, si meos unice, eosque non omnes libros, adlegarem, excluderem vero octuplo plures, quibus destituor?

Quam primum constitit, in propriis libris mihi non esse manendum, alia perinde difficultas successit. Etenim si libros, quos non legi, tacere non licet, nonne omnes recensendi sunt? quænam erit optio mea inter libros perinde mihi ignotos? Poteritne non fieri, ut bonos utilesque libros, mihi ignotos, omittam, in meo, quasi ex casu nato selectu, & admittam alios, quorum nomina multo minus repeti merentur?

Vides, quo devolvor, LECTOR, omnes nempe libros recenseri debere? Chartæ hoc pacto aliqua jactura fit, sed nihil præterea mali sequetur. Non excluduntur utilia scripta, & exiguum malum est, si
nu-

P R Æ F A T I O.

nudum, & illaudatum nomen alicujus minoris momenti scriptoris excusum fuerit.

Itaque increvit labor meus. Ecce nunc apparatus, quo ad totum opus, sed inprimis ad partem Anatomicam, ad Pathologicam, Chirurgicam, Practicam & Historicam usus sum. Valde vellem esset ejusmodi, qui Tibi LECTOR persuaderet, me non temere ad opus hoc exsequendum accessisse.

Legi ab anno retro 1725. libros omnis generis, sed tamen, ut medicos solos in commentarios referrem, & utiliora rerum momenta in meos usus decerperem, schedulisque committerem, de quibus in ipso opere dixi (a) Quam primum librum absolvi, ab ipso anno 1728. judicium meum de eo libro, cum enumeratione inventorum, eorumque, quæ peculiaria haberet, censu continuo in mea adversaria retuli. Ita intra 23. annos natæ sunt censuræ librorum fere 4000. & quod excedit, quorum vix ullus est, qui non aliqua ratione ad rem medicam pertineat. Hac tanquam phalange reliquum exercitum speravi confirmari posse.

Legi præterea diaria tantum non omnia, & in omnibus linguis scripta, & præcipua momenta judiciorum decerpfi. Ita non exiguus numerus, auxiliarii quasi militis, meis copiis accessit.

Bibliotheca mea, ut privati hominis, neque vastissima, eum tamen numerum 4000. voluminum dimidia parte excedit. Eorum librorum, etsi non omnes a capite ad calcem evolvi, aliquam tamen mihi cognitionem esse facile adparet.

Inde ILL. VIRI J. SAMUEL de BERGER & GEORGIUS GOTTLOB RICHTERUS, commoda-

* *

tis

P R Æ F A T I O.

tis libris librorumque titulis, meam penum editionum & judiciorum insigniter auxerunt. Bibliotheca etiam Gottingensis, ad alium equidem finem inprimis collecta, non tamen nihil ornamenti ad opus meum adtulit.

Denique LINDENIANUM opus, aliaque ejus similia, ad subsidium adhibui, KÆSTNERI, NICOLAI ANTONII, MONGITORIS (hoc quidem unice ex MANGETO) MELCHIORIS ADAMI, & aliorum qui vitas eruditorum virorum scripserunt, etsi ego quidem non medicorum, sed librorum, historiam scribere adgressus sum. Catalogos etiam librorum uberiores & magis fidos, PLATNERI, BURCKHARDI, RIVINI, MEIBOMII, SLUSII, THUANI, aliosque consului, ut opus eo minus hiulcum foret.

His præfidiis instructus, quid præstiterim, coram vides, AMICE LECTOR, quid præstari potuisset, ego plane video, &, quantum ab hoc meum opus differat, æquus agnosco.

Oportuisset, totius operis facies eadem esse nunc physica, chemica, pharmaceutica & botanica pars multo reliquis pauperior est.

Præstiterat ubique eundem ordinem servasse: nunc in Anatome & Physica PRÆCEPTOREM secutus sum, in reliquis partibus meliori, ni fallor, consilio, ad evitandas infinitas repetitiones ordinem temporum unice observavi.

Repetitiones tamen & nunc satis numerosæ supersunt. Idem liber sæpissime, vix evitabili vitio, & in Pathologica classe & in Practica numeratus est.

Parum proluxa sunt judicia. Potueram fusiora scripsisse, fusiora enim in meis adversariis sunt, sed perci

P R Æ F A T I O.

perci otio tuo & meo, bonisque chartis. Plures utique censuræ librum redderent meliorem. Meæ enim, etsi multæ, in tanto librorum numero, qui mihi videtur ad 30000. adscendere, fere evanescunt, ut insulæ per vastum oceanum rariter dispersæ.

Librorum, quos ipse vidi, non satis magnus numerus fuit, hinc facile fieri potuit, ut editiones ab aliis testibus receptæ vitiosæ sint. Potuit, quod tamen valde studui evitare, sed potuit tamen fieri, ut idem liber sub diversis titulis repetatur, quoties ego eum non vidi, sed ex catalogis & monumentis decerpfi. Quare, ut fidem certe meam liberarem, asterisco adposito eos libros notavi, qui penes me non sunt, & in quibus facilius errari potuit.

Non omnes libros recensui, quod magnum sed inevitabile vitium est, etiam minus evitabile in homine, qui nulla satis ampla publica bibliotheca medica instructus esset, neque haberet, quam consuleret, præter privatas, semper adeo minus copiosas, librorum collectiones.

In disputationibus, quas vocant, selectum sum secutus, neque omnes credidi esse recensendas, nimium & ignobilem exercitum, neque nullas, cum non desint eximix multumque utilitatis habituræ.

Denique haud exiguus est numerus mendorum quæ typographi incuria irrepperunt. Id & excusabile videtur in absente auctore, & libri ipsius utilitatem nequaquam minuit. Consignavi insignem numerum, & seorsim descripsi. Ita utcunque huic vitiomederi conatus sum.

Habes, quem Te volui, LECTOR AMICE, librorum adeo medicorum diversis linguis scriptorum catalogum, ad nostra usque tempora continuatum, in

P R Æ F A T I O.

practicis & anatomicis paulo ditiores, in botanicis
& physicis pauperiores, pauperrimum in chemicis,
quos parum legissem, neque curassem, ut de reliquis,
judicia a prima ætate colligere. Itaque bonis, si quæ
sunt, utere, & vitia mitis excusa, quorum a condi-
tione humana multa vix abesse possunt, & in mea
etiam plura ægre queunt evitari. Dedi Gottingæ die
22. Mart. 1751.



I N D E X

C A P I T U M.

P R O O E M I U M.

De Medicina in genere, de ejus definitione & partibus, & à quibus sit
incipiendum in hujus scientiæ discendæ methodo.

P A R S I. De P H Y S I C A G E N E R A L I.

C aput I. De natura & proprietatibus corporum;	Pag. 3
Caput II. De extensione.	7
Caput III. De impenetrabilitate.	9
Caput IV. De soliditate & porositate.	13
Caput V. De diversitate corporum.	16
Caput VI. De dirigendo studio.	17

P A R S II. GEOMETRIA sive de FIGURA ET MENSURA CORPORUM.

Caput I. De figura corporum.	18
Caput II. De figurarum mensura.	20
Caput III. De methodo discendi Geometriam.	22
Caput IV. De mensura Linearum curvarum.	24
Caput V. De Trigonometria.	

P A R S III.

Caput I. De motu in genere.	31
Caput II. De mensura motus, sive Mechanica.	38

P A R S IV. P H Y S I C A S P E C I A L I S.

Caput I. De physicæ definitione & partibus.	51
Caput II. Auctores qui de Physica scripserunt.	52

P A R S V. C H E M I A.

Caput I. De Chemia in genere.	162
Caput II. Experimentorum Chemicorum auctores.	167
Caput III. Specialium inquisitionum scriptores.	171
Caput IV. Pharmaceutica. Consilia pharmaceutica.	180

P A R S

I N D E X C A P I T U M.

PARS VI. BOTANICA.

PARS VII. CONSILIA ANATOMICA.

Pag. 193

<i>Sectio</i> I. De solidis partibus.	308
<i>Sectio</i> II. De ossibus corporis humani.	317
<i>Caput</i> I. De osteogenia.	<i>ibid.</i>
<i>Caput</i> II. De osteographia.	325
<i>Sectio</i> III. De Musculis Corporis Human.	352
<i>Caput</i> I. De Myologia.	<i>ibid.</i>
<i>Caput</i> II. De Myographia.	<i>ibid.</i>
<i>Caput</i> III. De Myotomia.	369
<i>Sectio</i> IV. De visceribus corporis humani.	372
<i>Caput</i> I. De Splanchnologia in universum.	<i>ibid.</i>
<i>Caput</i> II. De corde.	373
<i>Caput</i> III. De cerebro.	402
<i>Caput</i> IV. De faucibus.	418
<i>Caput</i> V. De pulmone.	420
<i>Caput</i> VI. De ventriculo & intestinis.	432
<i>Caput</i> VII. De splene.	442
<i>Caput</i> VIII. De pancreate.	445
<i>Caput</i> IX. De omento.	447
<i>Caput</i> X. De mesenterio.	449
<i>Caput</i> XI. De hepate.	450
<i>Caput</i> XII. De virorum organis genitalibus.	457
<i>Caput</i> XIII. De feminarum organis genitalibus.	463
<i>Caput</i> XIV. De renibus.	499
<i>Sectio</i> V. De Adenographia, seu glandularum descriptione.	507
<i>Sectio</i> VI. Angiologia sive vasorum proprie sic dictorum descriptio.	516
<i>Caput</i> I. De vasis rubris.	<i>ibid.</i>
<i>Caput</i> II. De Vasis lymphaticis.	534
<i>Sectio</i> VII. <i>Caput</i> I. De oculo.	548
<i>Caput</i> II. De Aure.	563
<i>Caput</i> III. De Lingua.	574

PARS VIII. De usu partium, sive THEORIA MEDICA.

679

<i>Caput</i> I. Fontes theoriæ.	<i>ibid.</i>
<i>Caput</i> II. Auctores theoriæ.	680

INDEX CAPITUM: TOMUS SECUNDUS.

PARS IX. PATHOLOGIA.	Pag. 5
PARS X. SEMEJOTICA.	123
PARS XI. <i>Υγιεινὴ seu de</i> DIÆTETICA.	143
PARS XII. THERAPEUTICE.	173
PARS XIII. CONSILIA <i>ad</i> CHIRURGIAM. <i>Caput</i> I.	179
<i>Caput</i> II. Prima classis Chirurgorum.	<i>ibid.</i>
<i>Caput</i> III. Secunda classis Chirurgorum, qui de singulis morbis scripserunt.	226
<i>Caput</i> III. Tertia classis Chirurgorum, Observatores.	242
<i>Caput</i> IV. Quarta classis Chirurgorum, Operatores.	<i>ibid.</i>
De Diætetica.	296
PARS XIV. <i>De</i> STUDIO PRACTICO, <i>seu de</i> CONSILIO FACIENDÆ MEDICINÆ.	297
Medici Systematici Græci.	298
Practici Systematici Romani.	320
Græco-Galli.	357
Medici qui de Morbis quibusdam singularibus scripserunt.	398
Medici qui observationes scripserunt.	409
PARS XV. HISTORIA MEDICINÆ.	461
Auctores qui de Studio Medico dirigendo scripserunt.	<i>ibid.</i>

I N D E X

A U C T O R U M

A

B O E R H A A V I O

laudatorum.

Prior numerus paginam, posterior Tomum designat.

A.

ACTUARIUS 319. t. 2.
ÆGINETA (Paulus) 211. 314. t. 2.
ÆTIUS AMIDENUS 317. t. 2.
AGRICOLA (Rodolph.) 199. t. 1.
ALDROVANDUS (Ulysses) 75. t. 1.
ALEXANDER Trallianus 317. t. 2.
ALPINUS (Prosper) 131. 358. t. 2.
AMONTONS (des) 161. t. 1.
ANAXAGORAS 51. t. 1.
ARCHIMEDES 19. 22. 25. t. 1.
ARETÆUS CAPPADOX 307. t. 2.
ARGENTERIUS (Joh.) 174. t. 2.
ARISTOTELES 5. 14. 52. t. 1.
ASELLIUS (Caspar) 449. t. 1.
AUGENIUS 69. 161. t. 1.
AURELIANUS (Cælius) 398. t. 2.

B.

BAGLIVIVS (Georg.) 134. t. 2.
BALLONIUS (Guilielm.) 399. t. 2.
BARBATI (Hieron.) 173. t. 1.
BARKHUYSEN (Conradus) 165. t. 1.
BARROWIUS (Isaacus) 23. 47. t. 1.
BARTHOLINUS (Casp.) 485. t. 2.
- - - (Thom.) 423. 541. t. 1.
BAUHIUS (Joh.) 231. t. 1.
- - - (Caspar.) 199. t. 1.
BAUSCHIUS (Joh. Laur.) 173. t. 1.
BAZZICALUNE (Ascanius Maria) 685. t. 1.
BELLINUS (Laur.) 161. 500. 685. t. 1. & 133.
408. t. 2.
BENNET (Christoph.) 407. t. 2.
BERENGARIUS (Jacob) 226. t. 2.
BERNOULLIUS (Joh.) 12. 680. 683. t. 1.
BIDLOUS 371. t. 1.
BILSIUS (Ludov.) 541. t. 1.
BLEGNY (Nicol. de) 411. t. 2.
BOMNIUS 176. t. 1.
BONCLARUS (Uberius Dathirius) 460. t. 1.
BONNETUS (Theophilus) 410. t. 2.
BONTIUS (Jacob) 380. t. 2.

BORELLUS (Joh. Alph.) 47. 369. 680. 684. t. 1.
BOULDUC 181. t. 1.
BOYLEUS (Robertus) 47. 59. 64. 180. 687. t. 1.
BRIGGS 558. t. 1.
BRUNNERUS (Conrad.) 446. t. 1.
BRUYERINUS (Joh.) 151. t. 2.

C.

CÆSALPINUS (Andr.) 83. 207. t. 1.
CAPIVACCIUS (Hieron.) 345. t. 2.
CARDANUS (Hieron.) 160. t. 1. & 150. t. 2.
CARTESIUS (Renatus) 9. 14. 42. 681. t. 1.
CASSERIUS (Julius) 420. t. 1.
CASSINI 69. t. 1.
CASTELLUS (Bened.) 48. 161. t. 1.
- - - (Petrus) 485. t. 2.
CELSUS (Aurel. Corn.) 180. 308. t. 2.
CLAVIUS (Joh.) 24. t. 1.
CLERC (le) 324. 331. 366. t. 1.
COCKBURNE (Guilielm.) 685. t. 1.
COLE (Guilielm.) 685. t. 1.
COLUMBUS (Realdus) 333. 338. t. 1.
COLUMNA (Fabius) 193. 212. 220. t. 1.
CONRINGIUS (Hermannus) 484. t. 2.
CORNARIUS 161. t. 2.
COWPERUS (Guilielm.) 354. 368. 508. 676. t. 1.
CRUCE (Joh. Andr. a) 193. t. 2.

D.

DALE (Samuel) 195. t. 1. & 173. t. 2.
DALECHAMPIUS (Jacobus) 55. t. 1.
DEDU (Nicolaus) 180. t. 1.
DEMOCRITUS 9. 11. 17. t. 1.
DIOGENES Laertius 17. t. 1.
DIONYSIUS 244. 248. t. 2.
DIOSCORIDES 193. t. 1.
DODARTIUS 181. t. 1.
DODONÆUS (Reimb.) 250. t. 1.
DRELINCOURTIUS (Carol.) 323. 442. 481. t. 1.
DURETUS (Ludov.) 128. t. 1.
DUVERNEY (Joseph.) 311. 323. 566. t. 1. & 228. t. 2.
EPICU-

I N D E X A U C T O R U M.

E.

EPICURUS 9. 11. 17. t. 1.
EUCLIDES 7. 19. 27. t. 1.
EUSTACHIUS (Barthol.) 499. 563. t. 1.

F.

FABRICIUS ab AQUAPENDENTE (Hieron.)
436. t. 1. & 195. t. 2.
FALLOPIUS (Gabriel) 360. t. 1. & 191. t. 2.
FERNELIUS (Joh.) 6. t. 2.
FEVRE (Nicol. le) 164. t. 1.
FORESTUS (Petrus) 242. 409. t. 2.
FOURNIERUS 23. t. 1.
FRACASSATUS (Carolus) 574. 686. t. 1.

G.

GALENUS (Claudius) 214. t. 1. & 127. 158.
180. 299. t. 2.
GALILÆUS GALILÆI 8. 44. 161. t. 1.
GASSENDUS (Petr.) 17. & seq. t. 1.
GEOFROY (D.) 168. 181. t. 1.
GEORGIUS (Matthias) 684. t. 1.
GESNERUS (Conradus) 76. t. 1.
GIRARDET (Petrus) 296. t. 2.
GLISSONIUS (Francisc.) 432. 450. t. 1.
GRAAF (Regnerus de) 445. 458. t. 1.
GREW (Nehemias) 168. 180. t. 1.

H.

HAMEL (Joh. Bapt. du) 68. 181. t. 1.
HARRIS (Guilielm.) 404. t. 2.
HARVEJUS (Guilielm.) 83. 472. 688. t. 1.
HAVERSIUS (Clopton) 320. 331. 346. t. 1.
HELMONTIUS (Joh. Bapt.) 160. 173. t. 1. &
408. t. 2.
HEMSTERHUYS 541. t. 1.
HERMANNUS 206. t. 1.
HERO 48. t. 1.
HEYDEN (Hermann. van der) 408. t. 2.
HILDANUS (Fabricius) 226. 242. t. 2.
HIPPOCRATES 19. 50. 200. 306. 681. t. 1. &
124. 180. 298. t. 2.
HIRE (de la) 69. 161. t. 1.
HOLLANDUS (Isaacus) 174. t. 1.
HOLLERIUS (Jacobus) 129. 299. 357. t. 2.
HOMBERDIUS 168. t. 1.
HORNIUS (Joh.) 211. t. 2.
HOVIUS 555. t. 1.
HUGENIUS (Christianus) 7. 15. 43. 50. t. 1.

I.

JACOTIUS (Desiderius) 129. t. 1.
INGRASSIAS (Joh. Philipp.) 339. t. 1.

K.

KEILIUS (Joh.) 41. 680. t. 1.
KERKRINGIUS (Theodor.) 322. t. 1.
KIRCHERUS (Athanas.) 686. t. 1.
KUNKELIUS 167. t. 1.

L.

LAMY (Bern.) 24. 685. t. 1.
LANSBERGIUS 27. t. 1.
LEAL LEALIS 461. t. 1.
LEEUWENHOECKIUS (Anton.) 314. 522. t. 1.
LEIBNIZIUS 11. t. 1.
LEMERY 165. t. 1.
LINDENUS (Joh.) 485. t. 1.
LIPENIUS 485. t. 2.
LISTERUS (Martinus) 404. t. 2.
LOBELIUS (Matthias) 256. t. 1.
LOCKIUS (Joh.) 682. t. 1.
LOWERUS (Richard) 354. 367. t. 1.
LOWTHORP. 66. t. 1.
LUCRETIUS 17. t. 1.
LUDOVICI (Dan.) 184. t. 1.
LUYSINUS (Aloyfius) 408. t. 2.
LYSERUS (Michael) 370. 671. t. 1.

M.

MAITRE JEAN 227. t. 2.
MALPIGHIUS (Marcellus) 50. 319. 413. 424. t. 1.
MANGETUS 323. t. 1.
MARCRAVIUS (Georg.) 195. t. 1. & 383. t. 2.
MARCHETTIS (Dominic. de) 242. t. 2.
MARIOTTE 49. 161. t. 1.
MATTHÆUS 179. t. 1.
MWTTHIOLUS 197. t. 1.
MAURICEAU 408. t. 2.
MEAD (Richard) 160. t. 1.
MELDERUS 23. t. 1.
MERCATUS (Ludov.) 408. t. 2.
MERCURIALIS (Hieron.) 168. t. 2.
MERSENNUS (Marinus) 84. 686. t. 1.
MORGAGNI 460. t. 1.
MORISONUS 83. 193. 207. 235. t. 1.
MORLEY (Christoph.) 165. t. 1.
MORTON (Richard) 404. t. 2.

N.

NAZARUS 67. t. 1.
NERIUS (Anton.) 168. t. 1.
NEWTONUS (Isaac.) 15. 38. 69. 161. 686. t. 1.
NUCKIUS (Anton.) 484. t. 1. & 247. t. 2.
*** OLDEN-

INDEX AUCTORUM.

O.

OLDENBURGIUS 66. t. 1.
ORIBASII 316. t. 1. & 318. t. 2.

P.

PALFYNNUS (Joh.) 331. 687. t. 1. & 242. t. 2.
PARÆUS (Ambros.) 205. t. 2.
PAULI (Joh. Henr.) 543. t. 1.
PAULUS ÆGINETA 211. 314. t. 2.
PECHLINUS (Nicol.) 410. t. 2.
PERRAULTIUS 161. 685. t. 1.
PEYERUS (Conrad.) 435. t. 1.
PISO (Carolus) 409. t. 2.
- - - (Guilielm.) 382. t. 2.
- - - (Nicolaus) 353. t. 2.
PITCARNIUS (Archibaldus) 50. 682. 684. t. 1.
PLATERUS (Felix) 353. 410. t. 2.
PLEMPIUS (Vop. Fort.) 548. t. 1.
PLINIUS (Cajus) 54. 199. t. 1. & 320. t. 2.
PRESTET (Joh.) 23. t. 1.

Q.

QUERCETANUS (Joseph.) 184. t. 1.

R.

RAJUS (Joh.) 206. 238. t. 1.
RAVIUS 432. t. 1.
RHAZES 322. t. 2.
RHODIUS (Joh.) 485. t. 2.
RHOONHUYZEN (Henr. van) 242. t. 2.
RHYNE (ten) 398. t. 2.
RIDDLEIUS (Henr.) 354. t. 1.
RIOLANUS (Joh.) 305. 326. 361. t. 1.
ROEMERUS 69. t. 1.
RUDBECKIUS (Olaus) 541. t. 1.
RUYSCHIIUS (Freder.) 315. 377. 443. t. 1. & 242. t. 2.

S.

SALA (Angelus) 183. t. 1.
SALMASIUS (Claud.) 55. 199. t. 1.
SANCTORIUS 159. t. 2.
SCHEINERUS (Christoph.) 686. t. 1.
SCHELHAMMERUS (Gunterus Christoph.) 571. t. 1. & 226. 485. t. 2.
SCHENKIUS (Joh.) 410. t. 2.
SCHNEIDERUS (Conr. Victor) 419. t. 1. & 408. t. 2.
SCHOOTEN (Francisc. van) 28. t. 1.

SCHROEDERUS (Joh.) 183. 248. t. 1.
SCHULTETUS 242. t. 2.
SEBIZIUS (Melchior) 151. 174. t. 2.
SENNERTUS (Dan.) 681. t. 1. & 37. 175. t. 2.
SEVERINUS (Marc. Aurel.) 204. 226. t. 2.
SOLINGEN (Corn. van) 246. t. 2.
SPIGELIUS (Adr.) 371. t. 1.
STARKEY (Georg.) 168. t. 1.
STENO (Nicot.) 358. t. 1.
STEVINIUS 47. t. 1.
SWALVE (Bernard) 174. t. 2.
SWAMMERDAMMIUS 315. 468. t. 1.
SYDENHAM (Thom.) 296. 406. t. 2.
SYLVIUS (Jacob.) 176. 362. t. 1.
- - - (Francisc. de le Boe) 175. t. 2.

T.

TACHENIUS (Otto) 169. 173. 176. t. 1.
TAQUET (Andr.) 22. 28. 30. t. 1.
THEBESIIUS (A. C.) 377. t. 1.
THEOPHRASTUS 201. 207. t. 1.
TOLETUS 248. t. 2.
TORRICELLIUS 48. 161. t. 1.
TOURNEFORTIUS 180. 204. 255. t. 1.
TULPIUS (Nicol.) 410. t. 2.

V.

VALLESIUS (Francisc.) 299. t. 2.
VALSALVA (Anton. Maria) 419. 568. t. 1.
VELTHUYSEN 443. t. 1.
VERHEYEN (Philipp.) 176. 643. t. 1.
VERULAMIUS (Baco) 56. 682. t. 1. & 163. t. 2.
VESALIUS (Andr.) 305. 336. 359. 673. t. 1.
VIDUS VIDIUS 206. t. 2.
VIEUSSSENS (Raymund.) 173. 375. 405. t. 1.
VIGO (Joh. a) 206. t. 2.
VILLA NOVA (Arnold. de) 296. t. 2.
VIRSUNGIUS (Jacob.) 445. t. 1.
ULACQ (Adrian.) 28. t. 1.

W.

WALLÆUS 175. t. 2.
WALLISIUS (Joh.) 41. 43. 65. t. 1.
WALTHERUS (Joh. Georg.) 484. t. 2.
WHARTON (Thom.) 446. 507. t. 1.
WIEL (Stalpart van der) 242. t. 2.
WILLISIUS (Thomas) 175. 402. 436. t. 1.
WREEN (Christoph.) 43. 404. t. 1.

Z.

ZWELFERUS (Joh.) 173. 183. t. 1.



PROOEMIUM.



SCOPUS noster in præsentia est exponere, quænam sit cognita hodie conditio medicinæ, & simul tradere ejus statum perfectissimum, quatenus ex his conjunctis, quæ nobis præsto sunt, acquiri potest.

Itaque tria exponenda & tractanda propono :

1. Quænam ea sint, quæ per industriam hominum omnium seculorum hodie inventa habentur. Ea proponam absque ullo errore, ita ut de iis nihil dubitari possit, nec alia, nisi quæ vera & bona sunt, in usum recipiam; id vero seponam omne, quidquid obnoxium & inutile huic arti esse potest.

2. Tum in singulis medicinæ partibus indicabo eos auctores, qui in singulis partibus exornandis principes fuerunt: non eos, qui alios exscripserunt, eosque emaculando sæpe emanciparunt, sed eos, qui sua industria singulis partibus, & omnibus, necessaria ad medicinam invenerunt ornamenta.

3. Dabo consilium breve, quomodo hi auctores legendi sunt.

Et hisce tribus partibus absolvetur hicce propositus labor.

Jam vero, ut rem summi momenti in medicina feliciter auspicer, non multum morabor de medicinæ definitione ipsa, aliis rebus intentus.

Rem suscipio maximi momenti, qui enim honorem medico ambit debi-

debitum, eamque scientiam sibi propriam facere cupit, qui adeo sapientia, quæ hujus honoris causa est, carere non potest, ad hanc scientiam acquirendam, scire debet, quo tempore, & quibus adnuculis illa exorta sit. Neque poterit scientiam sibi acquirere, nisi sciat uti laboribus eorum, qui ante eum scripserunt. Tiro vero, quinam inter tam multos auctores eligendi sunt, scire nequit, ut errores & ambages evitet, brevique suum scopum attingat. Quam plurimi enim de re medica scripserunt, iique non pauciores mali, quam boni, ut manifestum sit, æque lectiones auctorum obesse, quam prodesse posse.

Qui enim animo omni doctrina vacuo se adplicans medicinæ, pessima calamitate incideret in auctores, qui & minus necessaria, & futilia proposuerunt, is id demum lucrabitur, ut cum tempore videat, se nihil didicisse, nisi ea dogmata, ex quibus nihil ad suum finem obtinendum haurire queat.

Hinc in medicina nihil utilius video, quam scire, quonam ordine incipiendum, unde incipiendum, quomodo pergendum, quibus auctoribus utendum sit, ad medicam scientiam acquirendam.

Qui vero eam vult discere scientiam, debet bonam sequi methodum, bonos legere auctores, nihil admittere, quod non faciat ad medicam scientiam, & nihil omittere, quod necessarium sit ut ea acquiratur.





DE

M E T H O D O
S T U D I I M E D I C I
P R O L E G O M E N A.

De Medicina in genere, de ejus definitione & partibus, & a quibus sit incipiendum in hujus scientiæ discendæ methodo, &c.



MEDICINA est scientia docens humani corporis vitam integram & sanitatem conservare & restituere.

Medica enim scientia docet octo diversas partes, sive implet octo scopos, quibus obtinendis insistit humana mens, ut scientiam possideat medicam. Debet ergo scientia medica intellectui explicare:

1. Quid sit corpus.
2. Quid sit corpus humanum.
3. Corporis humani vitam integram.
4. Vitam mutilam.
5. Sanitatem integram.
6. Sanitatis detrimentum.
7. Quænam sint auxilia conservandæ & reparandæ vitæ & sanitati propria, ab ingenio humano hætenus inventa.
8. Quænam sit methodus utendi his auxiliis ad reficiendam vitam, & sanitatem conciliandam, ut ea omnia opportuno tempore, certa dosi, præscripto modo, &c. adhibeantur.

Hæc sequuntur ex definitione, debet enim medicina explicare, quid sit corpus, & quid corpus humanum sit; ergo debet primo corporis in genere cognitionem dare, & deinde de corpore humano in specie docere. Quando enim

A

me-

medicus machinæ nostræ constitutionem explicandam suscepit, tenetur describere ea omnia, quæ in hac machina possunt reperiri. Sed plurima in eo corpore sunt cum omnibus aliis corporibus communia, nonnulla vero humano corpori propria. Sequitur ut ea, quæ corpori humano propria sunt, equidem explicanda sint; non ideo vero ea negligenda, quæ communia sunt omnibus. Corpus enim humanum ob illas quidem partes proprias leges sequitur, ob istas vero obnoxium est omnibus legibus corporum communibus.

Debet igitur medicina generalem corporum ideam explicare. Ea quidem extra medicinam est; ad medicinam enim ea tantum proprie faciunt, quæ pertinent ad corpus humanum: ea vero quæ communia sunt omnibus, ut grave esse, mobile esse, impenetrabile esse, extensum esse, &c. ea ad physicam pertinent. Verum nihilo minus hæc medico perspecta esse debent, siquidem totum corpus humanum integramque ejus naturam intelligere tenetur. Non ergo ab anatome debet incipere medicina, quod consilium plurimi dederunt. Eam enim rationem secuti nunquam perfecti medici fient, qui tanto hiatu relicto, suum studium incipiant, & specialia exponenda sibi sumant, generalibus corporum affectionibus ignoratis. Medicus igitur corporis primo in genere, deinde corporis humani claram cognitionem possidere debet; id ipsa definitio indicat, neque verus medicus erit, qui totam medicinam non possidet; sed ille totam medicinam non possidet, qui definitionem non implet, nec ille definitionem implet, qui prius non considerat, quid corpus sit.

Cum autem humanum corpus plurima habeat communia cum aliis corporibus, illas communes qualitates corporis in genere nosse prius oportet; nam ab iis, quæ corpus humanum habet communia cum omnibus corporibus, æque morbi oboriri possunt, ac ab iis, quæ huic corpori propria sunt.

Pro exemplo, si humanum corpus ex alto demittitur, sine fulcro, cadet certe & contusionem aut fractionem patietur. An nunc ex idea humani corporis, simpliciter spectati, hujus rei causa patescit? minime; sed ex idea gravitatis hoc concipietur (ex mechanicis): atqui ea gravitas omnibus corporibus communis est; videmus adeo causam morbi posse ex illa communi proprietate oboriri. Rursus, quod corpus sanum stabile sit, pendet unice ab ejus gravitate, nam si una pars levior esset aliis, ut pressione adjacentium dimoveretur, inde totius læsio fieret; & in liquidis (a), si aliqua esset levior particula reliquis, illa ex corde cum reliquis non eodem robore expelleretur, & in pulmonibus restitans læderet respirationem. Quare patet necessitas, ut omnes partes corporis ad eandem soliditatem & gravitatem reducantur.

Hinc itaque, ut jam dictum est, medicus noscere debet (ut accuratus sit medicus) corpora quæcumque, & eorum attributa, quæ cum aliis corporibus nostro communia sunt.

ME.

(a) Hoc exemplum non nimis urgere oportet. Leviora enim utique in corpore dantur aliqua, graviora alia. Adeps levior osse est, sanguine urina levior est, perspiratio urina, aer fixus utroque, & isto levior materia caloris, electricitatis. An voluit PRÆCEPTOR, nullam partem in corpore esse, a qua gravitas integre absit? cum causa gravitatis & causa cohesionis partium eadem esse videatur, stabilitas vero a cohæsione partium pendeat.

M E T H O D I S T U D I I M E D I C I

P A R S I.

DE PHYSICA GENERALI.

C A P U T I.

De natura & proprietatibus corporum.



ILLA generalia, & omnibus corporibus communia, infinita fere sunt diversitate sua, sed revocari possunt ad tria digesta & ordinata capita.

Ex omnibus corporibus, & ex iis, quæ ipsis sunt communia, oritur idea corporis, hæcque tunc percepta vocatur *natura corporea*.

I. Explicandum, quænam sit res in intellectu hominis, qui intelligit corpus in genere, & hæc est idea, quæ vocatur *natura* seu *quævis*.

II. Delineanda idea (& species & res cogitata) quæ est in intellectu, dum mens percipit quamcumque mutationem corporum, & vocatur hæc idea *motus*.

III. Docendæ & delineandæ generales leges, juxta quas corpus mutationes suas recipit & efficit.

Ergo breviter videndum est, 1. quænam hæc tria sint capita; 2. quo modo cognoscantur; 3. quinam optime de his scripserint; 4. quonam pacto hi scriptores a medico tirone legendi sint.

Inquirendum hic est, quomodo formetur conceptus generalis corporis.

Conceptus & idea generalis cujusque corporis formatur ab intellectu humano, quando considerat omnia, quæ de corpore aliquo peculiari cognoscit, atque deinde advertit inter illa omnia, quæ de eo corpore perspecta habentur, nonnulla esse communia, hoc est, quæ in omni corpore obtinent, alia vero esse singularia, hoc est, quæ in nonnullis quidem corporibus obtinent, & abesse non possunt, in aliis vero absunt, & abesse possunt, remanente tamen natura corporea.

Si tunc illa, quæ communia deprehendit, in iis corporibus, seorsim colligit (ea nempe quæ in omni corpore reperiuntur, & a nullo absunt, abfuerunt, aut abesse possunt) & ea in unum conceptum redigit, ut una inde exoriatur quasi idea, tunc formavit conceptum generalem corporis.

Quæritur ergo, quomodo mens humana formet ideam generalem omnibus corporibus communem? Intellectus humanus varia intelligit de corpore, exten-

sum esse scilicet, impenetrabile esse, spatium occupare, grave esse, mobile esse, mutabile, figuratum, divisibile, coloratum, magnum, parvum, frigidum, calidum, &c. Quando nunc intellectus humanus perspecta hæc omnia simul præ se posita considerat, & videt nonnulla communia, quæ semper adsunt, ut extensum esse, mobile, impenetrabile esse, &c. tunc singularia etiam videt, quæ aliquando absunt, ut frigus, calor, figura, præparatur mens ad separanda ea, quæ corporis essentiam constituunt. Videt enim nonnulla, quæ aliquando adsunt, & aliquando absunt, alia vero quæ semper adsunt, & quando ista retinet, ut mensurabilitatem, extensionem, gravitatem, mobilitatem, impenetrabilitatem, ex iis perpetuis proprietatibus format ideam, quæ vocatur conceptus corporis. Quando nempe mens excludit singularia, & generalia communia sola colligit, & inde ideam format, tunc habet ideam claram de corpore. Quomodo vero ea idea acquiri possit, & quænam ex ea sequantur, in sequentibus exponendum est.

Examinare debet itaque philosophus & medicus 1. omnia, quæ de corpore cognoscuntur, & a mathematicis & a physicis proposita sunt. 2. Advertet nonnulla esse inter ea, quæ in omnibus quibuscumque corporibus obtinent, alia vero dari, quæ non in omnibus corporibus reperiuntur, sed tantum in quibusdam contingunt, ita ut nihilo minus vera corpora sint, in quibus hæc non inveniuntur: hæc vocantur singularia, & ea rejicere debet medicus, ut illa tantum retineat communia, quæ ubique inveniuntur, & nunquam ab ullo corpore absunt. Si enim generalem conceptum, & ideam corporum dare vult, debet tantum ea, quæ in genere in omni corpore, quodcumque etiam fuerit, inveniuntur, considerare & considerata præbere.

Ubi jam pergit, tunc ea communia, quæ in omnibus obtinent corporibus, sola sibi sumit, & ex iis omnibus conjunctis simul sibi format hanc ideam generalem corporum conceptum dictam; ita in corporibus inveniet supra dictas quatuor notiones, quæ semper in intellectum ingrediuntur, quoties idea corporis repræsentatur. Idea ista, hoc modo nata, dicitur perceptio corporis, nam hæc quatuor rationes ita corporibus adhærent, ut si una tollatur, pereat idea corporis.

Nunc ad quatuor has notas singulatim pergimus.

1. *Extensio est omne illud, cujus partes sunt extra alias posite.* Nulla alia idea tradi, nec concipi potest; est ergo extensum omne illud, cujus pars cum aliis partibus unum totum constituens semper extra aliam existit. Si tollis de corpore extensionem omnem, nullum omnino conceptum de eo corpore formare poteris, nam pereunt statim omnia reliqua. Concipe lapidem, eumque figuræ quadratæ, occupat ergo tale spatium quadratum, præterea eum lapidem concipio mobilem. Pone nunc extensionem tolli, an non statim perit quadratum, an non etiam tunc pereunt omnia, quæ de eo lapide concipi possunt, perit enim simul mobilitas, quia, si nihil concipio extensum, non possum concipere motum, hoc est translationem de loco in locum, mutare enim locum non potest, quod nullum occupavit, neque locum replere nisi quod extensum est. Ergo in omni corporis idea requiritur conceptus accuratissimus extensionis.

2. *Impenetrabile vocatur, quod spatium quoddam replens excludit ex illo omne ingressu.*

gressurum illud spatium, dum ipsum præsens hoc spatium occupat. Impenetrabilitas æque necessario ideam corporis ingreditur, nam, quando corpus perfecte solidum concipio in spatio quadrato positum, & simul concipio aliud corpus in idem spatium ingredi, non duo amplius corpora, sed unum nunc concipio, & aliam ideam sibi formare intellectus negat.

3. *Figurabilitas est delineatio limitum.* Sed nullum corpus est absque limitibus, nam pro varia positione linearum terminos corporis constituentium varia semper erit figura, ita ut nullum corpus absque figurabilitate sit aut concipi possit, nisi infinitum corpus admiseris.

4. *Mobilitas* deprehenditur in omni quocumque corpore; nam si sumatur v. gr. sphaera, etiam si concipiatur de ea, extensam esse, impenetrabilem, figuratam, inde non sequitur ex ea scilicet idea, hanc sphaeram semper ita necessario manere in eodem spatio, poterit enim sphaera esse, & alibi perinde concipi; nam licet aliquo certo loco nunc posita sit, de ea tamen omnia concipio, quæ concipiebam, quando priori erat loco. Ergo corpus potest hic vel alibi, & in omni loco esse, & tamen corpus esse: nam idea, quam habeo de corpore, non figit conceptum in uno spatio, sed in omni spatio possum ideam habere corporis. Ergo in omni corpore adest mobilitas, hoc est quod in id corpus motus admitti possit.

Motus ipse non est tantum successiva existentia in hac vel illa spatii parte, hoc est, quando concipio corpus motum, non tantum concipio illud existere, & ibi, & ibi, & ibi, nam mobilitas est potentia existens (a). Hinc patet corpus non posse concipi absque hisce quatuor attributis, quorum uno deuto, destituitur idea corporis.

Ergo quando definitur corpus, non sequendi sunt CARTESIANI, quid definiunt corpus, quod extensum sit in longum, latum & profundum; ita enim idea corporis non exhauritur. CARTESIANI contra EPICUREOS & DEMOCRITEOS insurgentes, illud ex triplici dimensione tantum voluerunt definire, sed certe, si adtendunt animum, invenient, hanc ideam etiam spatio convenire (b). Quare, si ea definitio reciperetur, possem in toto spatio universi pro lubitu mihi partem extensionis sumere, eaque semper responderet definitioni corporis, & sic omnia in universa rerum natura essent eadem, & in nulla re diversitas aliqua superesset.

Corpus est proprie res extensa, impenetrabilis, figurata & mobilis. Objici potest, hanc definitionem non esse factam juxta leges ARISTOTELIS, qui docet definitionem constituere genus & differentiam specificam, neque hoc vitium diffiteor. Verum nemo mortalium unquam scivit, quid corpus in se ipso sit, errant certe, qui hoc putant, sed proprietates quasdam corporum tantum novimus, aut ratiocinio assequimur. Quando nunc inter eas aliquas qualitates videmus, quæ omni corpori absolute conveniunt, & semper adsunt quamdiu corpus dicitur corpus, eas in definitione corporis in universum considerati admittimus. Si objicies, definitionem perfectam non esse, nihil habebo quod dicam, nisi me quidem ultra non posse progredi.

Nunc videndum est, quid sint hæc quatuor attributa, quæ in omni corpore sem-

(a) Motus nempe est efficacia aliqua activa, non simplex effectus causæ transferentis corpus de loco in locum.

(b) De certo in *physicis*, p. 11. & c.'s GRAVESANDE *Phys. Elem. Mathem.* n. 14. edit. 1742. L EIBNITZ *Journ. des Sav.* 1691. n. 22.

semper inveniuntur; hæcque brevi tempore conabimur ita explicare, uti per optimos mathematicos definita sunt.

Si ergo concipio hæc quatuor attributa in quocumque ente, omnia concipio, quæ de omni corpore in genere concipi possunt, adeoque, cum corpus sit primum medicæ objectum, necessario etiam ista inquirenda habemus. Nam, dum concipio extensionem, concipio etiam divisibilitatem, concipio etiam augmentum posse fieri in infinitum; & sic porro. Quando impenetrabilitatem concipio, concipio omnes leges percussionis, nam ex incurfu & resistentia, omnis percussio oritur. & sic etiam concipio mutabilitatem figuræ, & in eo corpore varios gradus motus posse oriri & excitari.

Ea ergo, quibus præsentibus omne concipitur de corpore quod ipsi proprium inest, & quo ablato nihil de corpore concipitur, ea voco *proprietates primarias corporis*, aut etiam *naturam corporis*.

Ex his nempe quatuor proprietatibus id, quod fundamentum est ceterorum, adeoque quod primum in conceptu, vocatur natura corporea, & natura corporis, partiales vero notæ, quæ in illo conceptu immediate continentur, vocantur proprietates corporeæ.

Nunc ex mobilitate sola, figurabilitate sola, & impenetrabilitate sola, non potest oriri idea corporis primaria, quæ in mentem venit, si unica ex his proprietatibus seorsim spectetur. Mobilitas enim v. g. præsupponit aliud, & sic de ceteris. An vero ab extensione sola hanc ideam obtinebo? certe non video, quomodo ex idea extensionis solius concipiam corpus, nam extensum est tantum, quod mensurari potest, & nihil aliud, nam mensurabilitas est tantum aptitudo ad locandum corpus, dat ergo tantum conceptum spatii. Celeberrimus HUGENIUS (a), in prioribus operibus CARTESII sententiam tuitus est, ipse tamen in egregio illo tractatu paulo ante mortem ejus edito, dicit, concipio nunc, contra quam olim feci, illam definitionem corporis non veram esse, quæ sola extensione absolvi-
tur, eamque video unice describere spatium: nunc enim persuadeor, omnia
non posse esse repleta, sed absolute requiri & dari vacuum, absque quo mo-
tum omnium corporum concipere non possumus." Quænam ergo idea corporis erit stabilienda? nempe est substantia extensa & impenetrabilis.

Concipientur enim hæc duo, nempe extensionem, (extensio etiam est, cujus partes constituentes totum extra se mutuo positæ sunt), & impenetrabilitatem (hoc est resistentiam, contra illud, quod intrare tentat in spatium a corpore repletum) tunc omnem figuram, magnitudinem, mutabilitatem, &c. concipiemus, hinc utique per extensionem & impenetrabilitatem poterit concipi natura corporis; omnia enim reliqua ex hac idea sequentia vocantur proprietates corporum seu attributa.

Illæ vero proprietates, quæ separabiles sunt a corporis idea, dicuntur accidentia.

Qui corpus rite cognoscere debet, huic omnia ista perscrutanda sunt.

Pro exemplo, pono me habere sphaeram, illamque esse diametri duorum pedum & esse perfecte solidam. Ad naturam ejus concipiendam non requiritur ut ex auro aut argento sit. Id autem utique sequitur, cum solidam posuerim, ut nihil in idem spatium, quod hæc sphaera occupat, alterius corporis admittatur, quia materies impenetrabilis est, & hisce duabus notis perfecta hujus sphaeræ natura

con-

(a) Conf. MUSCHENBROEK *Elem. Phys.* II. 16.

concipitur, & si in æternum de sphæra cogitaverim, semper eosdem conceptus iterabo. Hæc adeo ex duabus notionibus composita est natura corporis. Ex ea natura & definitione reliqua sequuntur. Pone sphæram occupare spatium duorum pedum, concipitur facile sphæram eam divisibilem esse in duo hemisphæria, quorum singulum sit unius pedis diametro, hoc enim necessario sequitur ex prima idea, & dicitur *attributum*. Porro moveri poterit hæc sphæra, verum hoc non pendet ex natura sphære, sed ex aliis causis ad sphæram non pertinentibus, & ex ejus idea concepta non pendentibus, productum, hoc adeo *accidens* sphære vocabitur.

Medicus, cujus est corpora cognoscere, debet naturam, proprietates, accidentia corporum intelligere.

Jam vero accedendum ad harum expositionem:

Erit ergo vera corporis in genere definitio, extensio, impenetrabilitas. Proprietates vero corporis individuæ sunt figurabilitas, mobilitas.

Hæc satis clara esse arbitror. Incipiam nunc breviter agere de extensione, ut tantum sufficiat ad dirigendum studium medicum.

C A P U T II.

De Extensione.

Extensio est positio partium totum constituentium extra alias, atque mensuratur ab uno puncto per tres perpendiculares lineas in illud punctum concurrentes, & in eodem puncto se mutuo secantes.

Idea hæc paulo explananda erit ex mathematicis. Demonstrat EUCLIDES (a), si sumitur ad arbitrium punctum in plano aliquo, impossibile esse plus quam duas lineas perpendiculares ad se invicem per hoc punctum ducere. Sit punctum A in plano aliquo, per hoc ponam lineam ductam (Tab. I. fig. 1.) quamcumque, ut BC, ait EUCLIDES, ad eam lineam per punctum A in eodem plano tantum potest duci una perpendicularis linea, sit ea DE, eritque DE perpendicularis ad lineam BC, si ejus inclinatio non major fuerit versus AB, quam versus AC, ad neutram nempe partem lineæ BC magis, quam ad alteram inclinata est. Negat adeo EUCLIDES præter hanc DE aliam perpendicularem esse posse ad BC quæ per A transeat: nam DE ex definitione facit ab utraque parte duos angulos rectos, nulla autem alia linea faciet, ergo tantum una perpendicularis ad illam lineam duci potest. Si dicis, alia potest duci linea, quæ in A secet lineam BC, & utrimque æquales cum ipsa angulos faciat, sit ergo ea linea AF, ponamus ergo angulum FAB esse æque rectum & æque magnum ac angulus DAB, ita certe pars erit æqualis toti, quod impossibile est. Ergo si ex puncto A lineæ BC sit una perpendicularis erecta, impossibile est aliam ex eodem puncto, pariter ad eandem lineam perpendicularem erigere.

Hinc nunc conficio, omne planum unice mensurabile esse in longum & latum, nam quia ex uno puncto per idem planum, duæ tantum perpendiculares admittuntur, planum ipsum unice per duas lineas perpendiculares mensurari potest, uti v. g. planum CBDE (Tab. I. fig. 2.) mensuratur ex C, ducendo lineam versus B, & denuo

(a) EUCLIDES. Prop. XIII. L. XI.

denuo ex C versus D; hinc plani mensura duplex est, nempe in longum & latum.

Verum si ponatur, punctum hoc A. (fig. 1.) non amplius in superficie, sed in spatio solido, jam non tantum duæ perpendiculares per hoc punctum A, sed tres quidem, at non plures etiam duci poterunt. Ponamus illud punctum in digito hominis hære, jam potero ducere per illud punctum quamdam lineam juxta longitudinem digiti, & aliam lineam præcedenti perpendicularem a dorsali parte digiti ad volarem, & tertiam a dextro termino latitudinis digiti ad sinistrum, quartam autem lineam ad priores perpendicularem ducere non possum, quod mathematici facile demonstrant. Uti ergo planum tantum versus duas partes poterat mensurari, ita corpus solidum per tres lineas mensuratur, nam versus tria loca diversa se extendit. Ergo omnis extensio corporea est tantum mensurabilitas, ut ait GALILÆUS, in triplicem dimensionem, scilicet in altitudinem, longitudinem & latitudinem: itaque omne, quod concipere possum, corporeum, tantum triplicem dimensionem habet.

Mathematici etiam ita definierunt corpus, quia omnis mensura plani est tantum in quadrato, si v. g. planum hujus urbis dicitur valere millionem pedum, per singulum pedem intelligo idem quadratum; sed tot pedes ac intelligo, tot intelligo quadrata: si mensuratur per cubum, jam corpus habeo.

Cubus vocatur corpus (Tab. I. fig. 3.), quod finitur sex superficiebus, quarum una superior, altera inferior & quatuor laterales, erunt quadratæ omnes. *Quadratum* vero est figura (Tab. I. fig. 2.) quatuor lateribus constans, cujus quatuor latera omnia inter se æqualia sunt, & cujus omnes anguli sunt recti & æquales.

Hinc cubi superficies & limites sunt sex quadrata, quorum singula sunt termini trium linearum perpendicularium in unum punctum concurrentium, & per cubum hunc mensuratur omne corpus.

Ex natura nunc extensionis sequitur divisibilitas corporis.

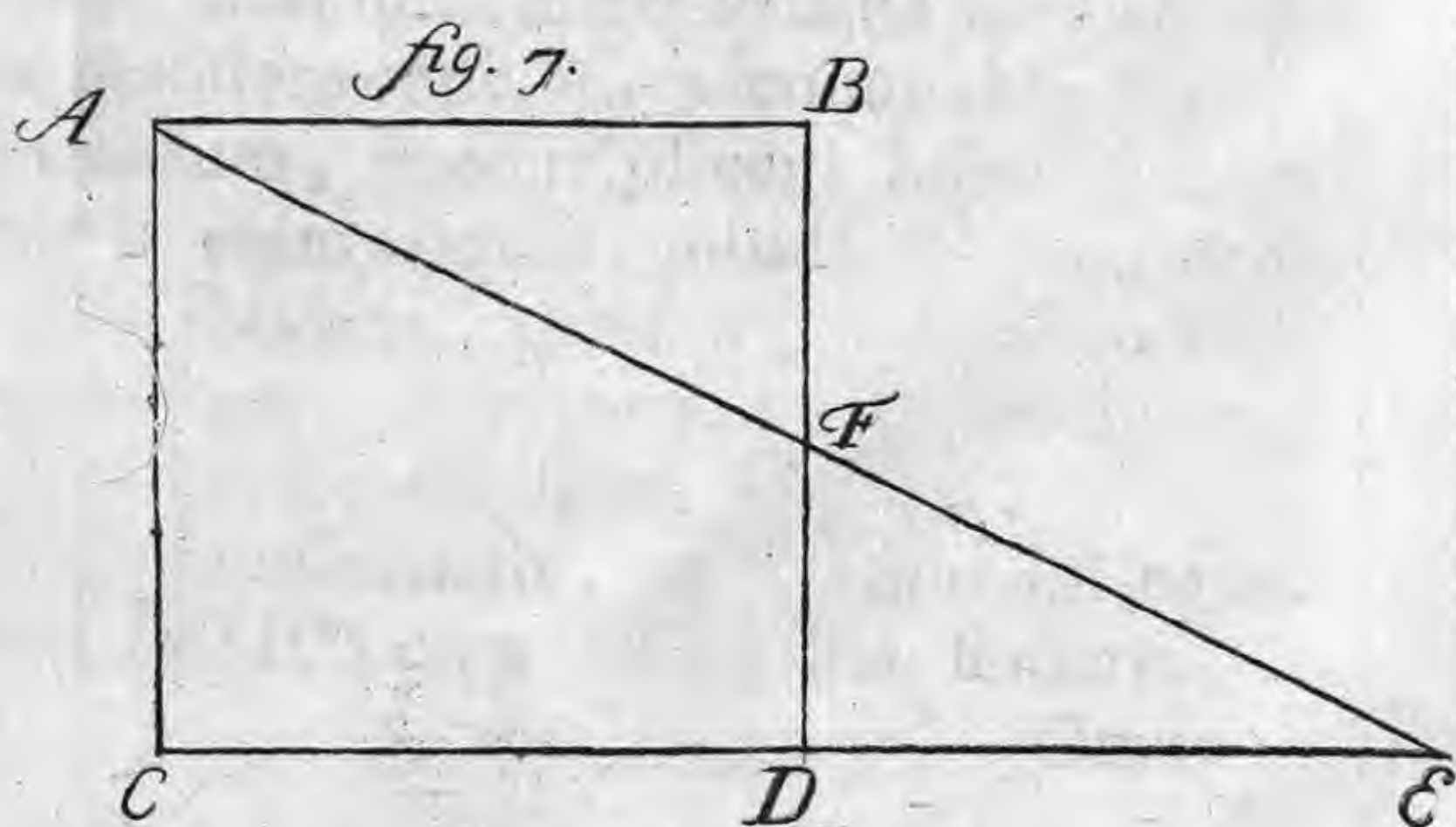
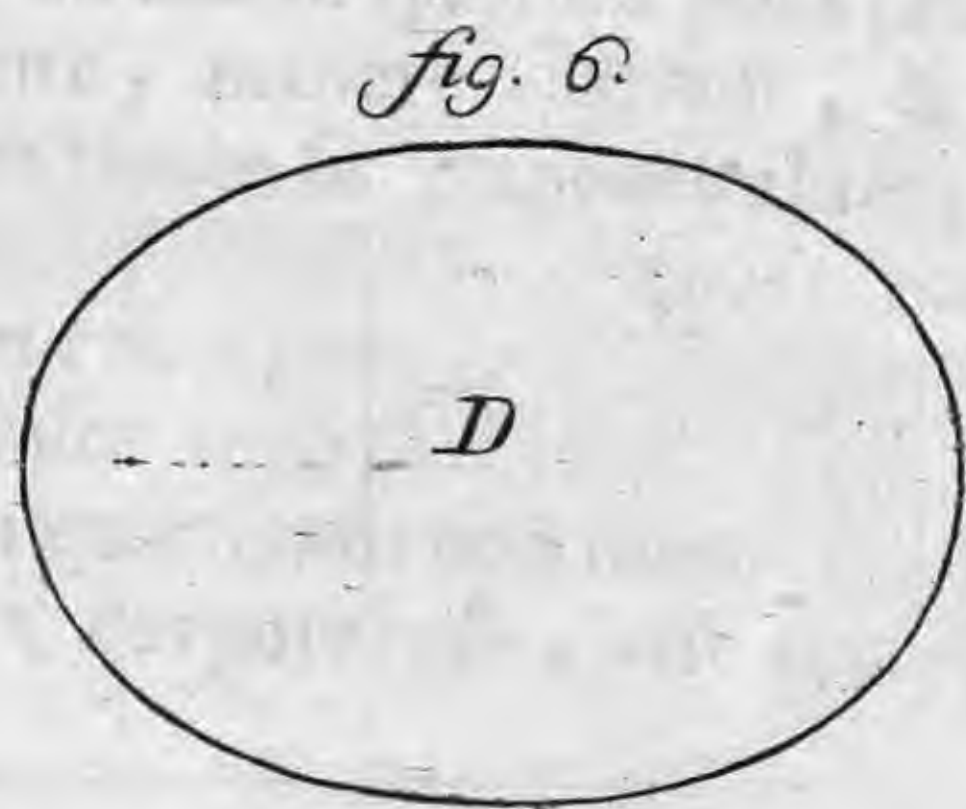
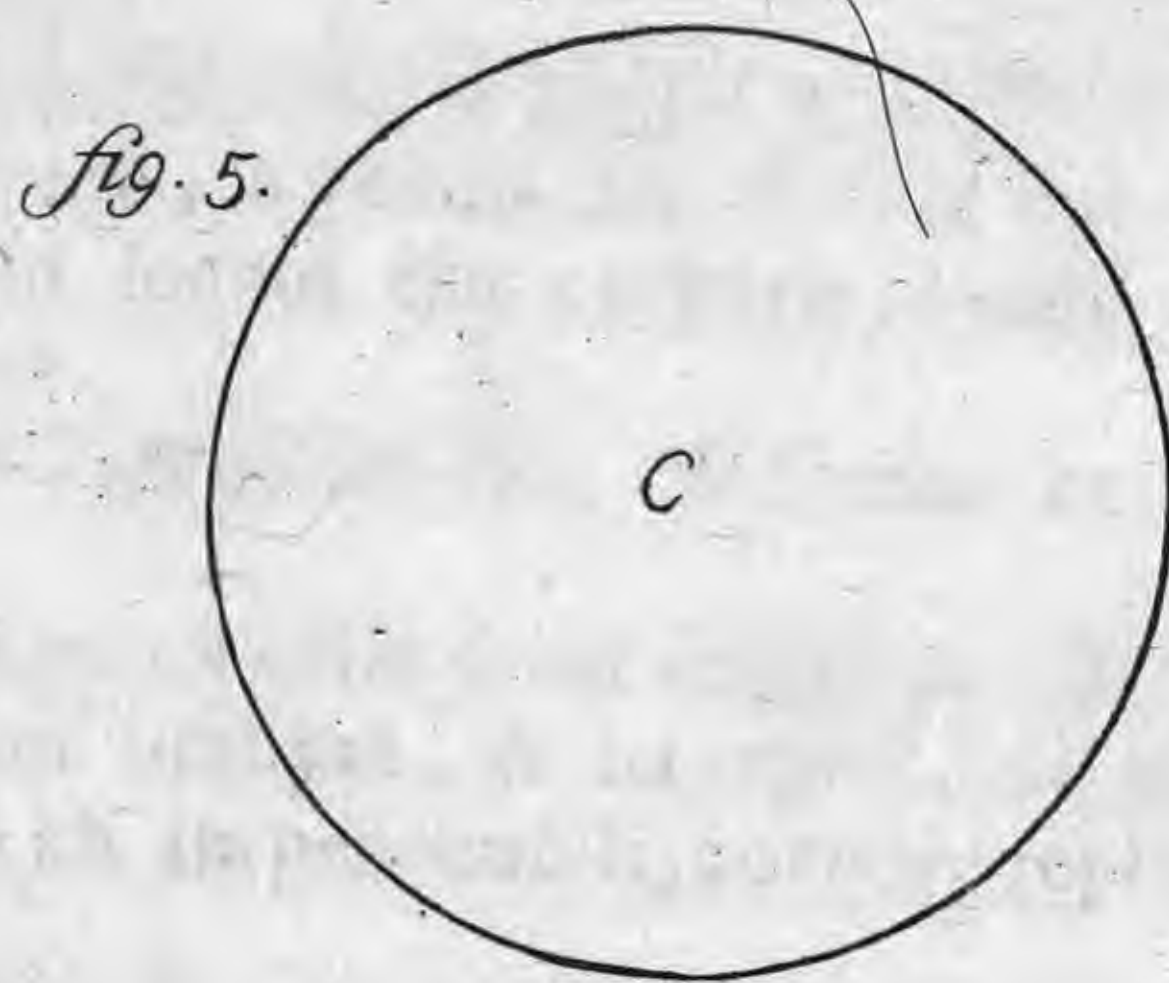
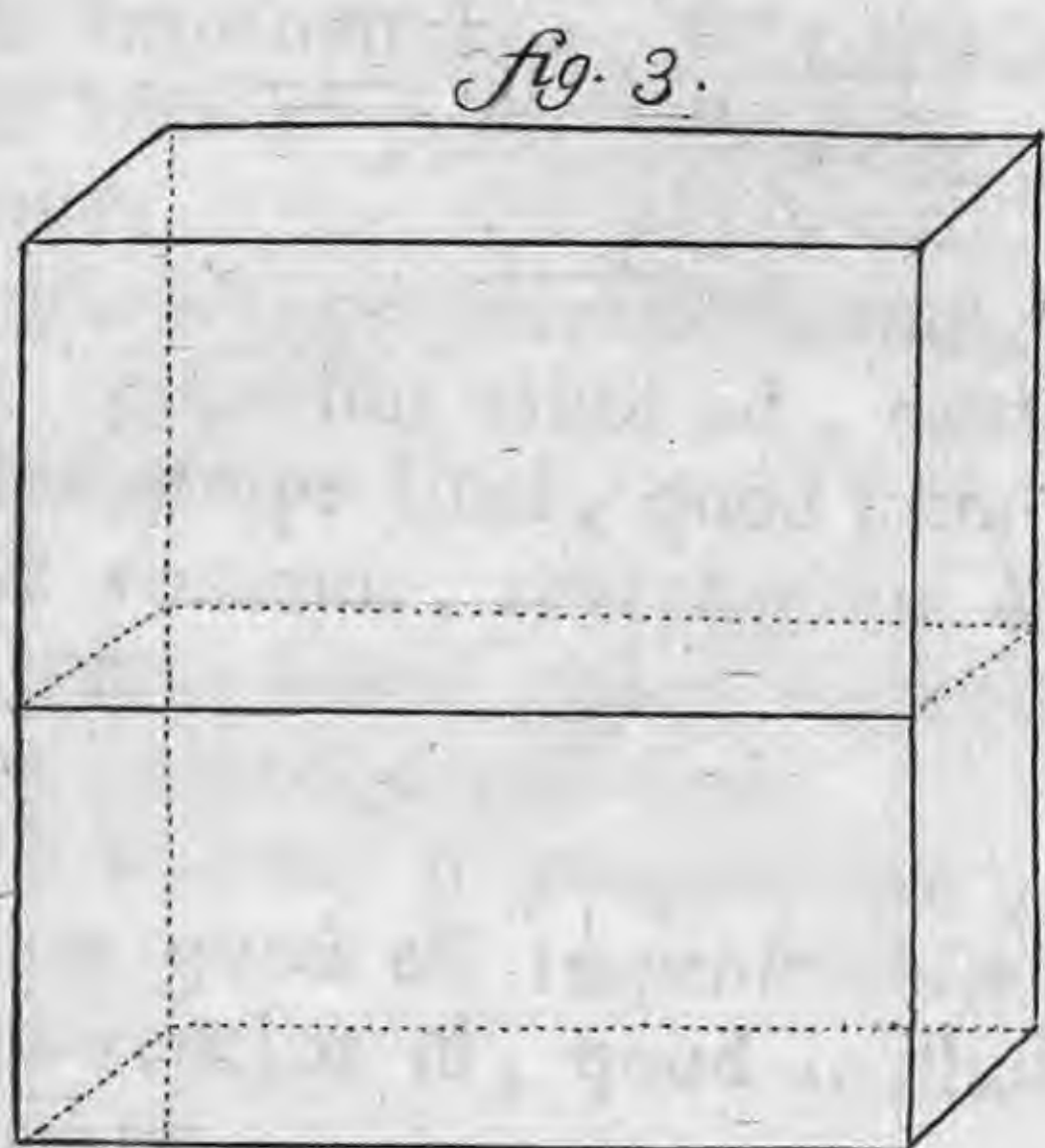
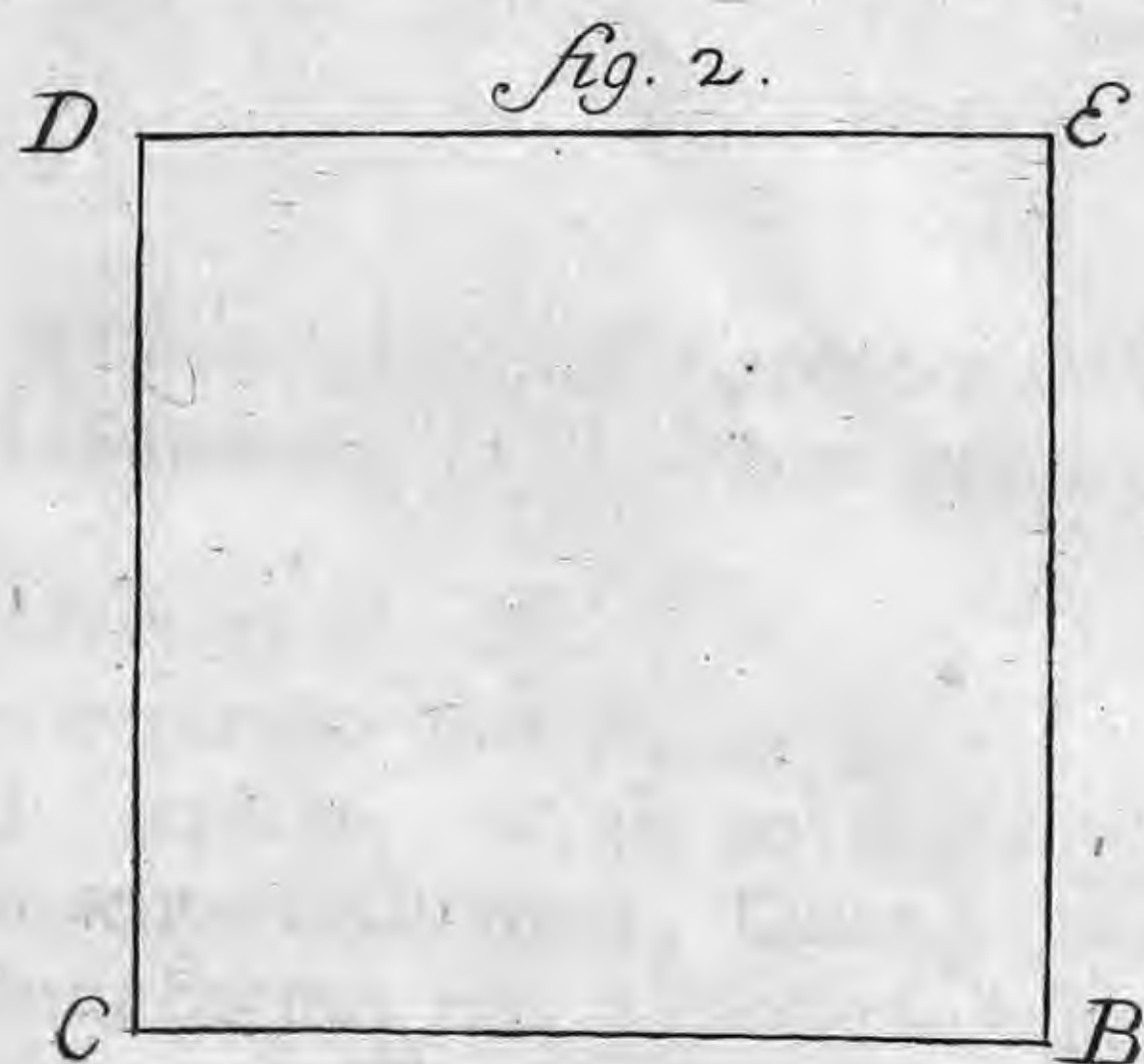
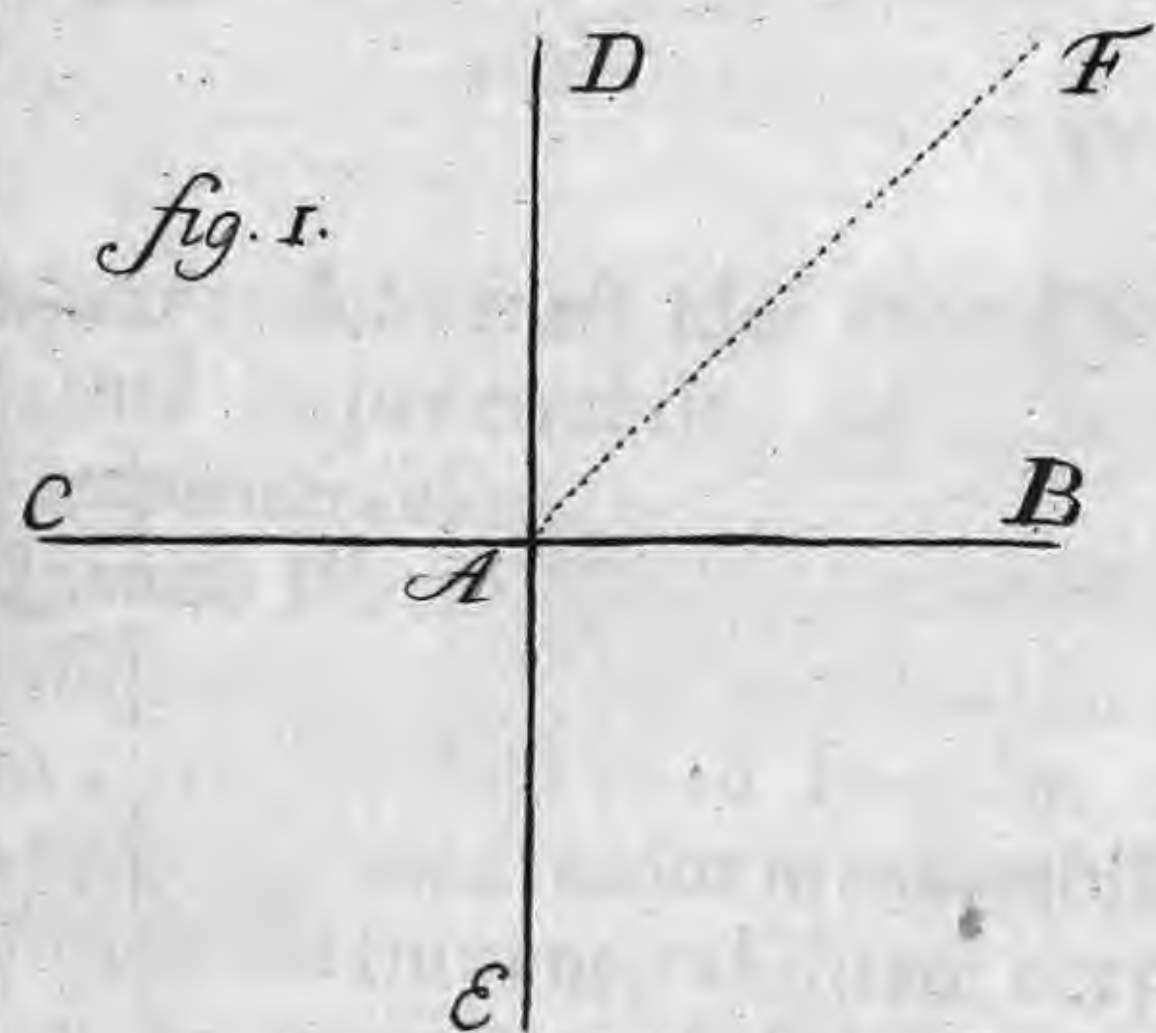
Etenim per priora extensio est positio partium totum constituentium extra se mutuo, ergo pars una ponitur extra aliam, ergo adsumitur in definitione, esse unamquamque partem ab altera separatam & divisam.

Patet etiam, hanc divisibilitatem fieri posse (a) in infinitum, quia semper concipitur aliquid divisibile, quotiescumque concipitur aliquid extensum; nam quamdiu lineam concipio, tamdiu concipio extensionem, & sic omnis linea constat ex lineis, non proprie ex punctis, sed ex aliis lineis, & plana constant ex planis, non ex lineis. Utcumque enim planum dividam, semper minus planum fiet, non linea. Si vero dixeris, ultimum planum fieri in lineam, tunc sequeretur, ut duæ lineæ spatium interciperent, quod impossibile est. Ex his igitur constat; cubum v. g. divisum, semper facere cubum minorem, & sic in infinitum, nec in nihilum redigi posse ultimum illud quidquid sit extensum; nam si dividendo corpus in nihil posses dividere, tunc si iterum has partes, quas vis esse nihil, componeres, & in infinitum multiplicares, facerent hæc nihili partes corpus verum, quod repugnat. Si vero partes cubi divisas corporeas adhuc esse dederis, tunc certe extensæ erunt, & si extensio manet, non poterit fieri, quin una mensurabilitas supersit.

CA.

(a) MUSCHENBROEK. l. c. n. 21. 's GRAVESANDE l. c. C. IV. Idem jam PLATONIS & Peripateticorum dogma fuit, CICERO. *Quest. Academ.* L. I.

Tabula I ad Cap. II Partis I Phys. gener. Pag. 8 et Seqq.



CAPUT III.

De Impenetrabilitate.

Impenetrabilitas est idea extensionis cum infinita resistantia conjuncta, contra omne aliud impenetrabile, quod nititur ingredi idem spatium, in quo hæret prius illud impenetrabile.

Quando illa triplex mensurabilitas ita conjungitur cum alia idea concepta, hoc est resistantia, ut illud mensurabile, in quodam determinato suæ figuræ spatio positum, omne quod in id spatium conatur ingredi, repellat, ut ab eo spatio non admittatur, tunc hujus mensurabilis concipimus impenetrabilitatem. Quando vero loquimur de impenetrabilitate corporis, supponimus corpus esse perfecte solidum, & ut sit perfectum & solidum corpus, debet illa vis resistendi esse infinita.

Si vero illa resistantia, non infinita est, tunc non est perfectum corpus, & solidum impenetrabile, sed tantum condensabile. Aurum enim v. gr. etiamsi densissimum non est perfecte solidum, cum habeat poros, sed partes sunt in auro poris carentes, ergo illæ partes sunt impenetrabiles.

Hæc est veterum philosophorum, præsertim EPICURI & DEMOCRITI *Ἀντιρροπία* (a), quæ nihil aliud est, quam *reverberatio*, a vocula illa *ἀντι* & *τυπώ* *verbero*, quia nempe illud, quod intrare tentat in locum ejus corporis, quod impenetrabile vocamus, reverberatur & repellitur.

Ergo omne illud, quod impenetrabile est, extensum est, sed omne extensum continuo impenetrabile erit.

Hocce dicimus in propositione, omne impenetrabile debet necessario esse extensum, nam quod est impenetrabile, id locum occupat, & ita replet, ut infinite resistendo repellat id, quod in illud spatium ab impenetrabili corpore repletum, intrare tentat.

Verum idea extensionis non involvit ideam impenetrabilitatis (b). Ita nemo est, qui non possit concipere, si inter binas manus meas corpus solidum ponitur, ut ex gr. aurum, quandiu hoc aurum ex eo loco non aufertur, nullum aliud corpus huc posse intrare, auro vero isto jam ablato, licet nihil intret in illud spatium intra manus, id tamen spatium posse tanquam persistens concipi, adeoque absque corpore replente, manere spatium, & esse extensum, quod triplicem habeat dimensionem, nec tamen sit impenetrabile, admittit enim aliquid, admisit aurum, & aliud ejusdem extensionis corpus; verum illud solidum, quod pono perfecte solidum, aurum nempe inter duas meas manus positum, id quidem impenetrabile erat, hoc est infinite resistebat omni corpori tentanti occupare suum spatium.

Ergo idea extensionis non involvit ideam impenetrabilitatis, ut possimus distinguere spatium a corpore ipso, etsi contra CARTESIUS cum schola sua senserit.

B

Omne

(a) DEMOCRITUS atomis solam *ἀντιρροπία* tribuit, gravitatem præterea & motum declinationis EPICURUS. PLUTARCH. placit. Philosoph. L. I. c. 3. CICERO de nat. Deorum. L. I.

(b) MUSCHENBROEK l. c. n. 29.

Omne impenetrabile mensurabile est, & proinde divisibile. Quid enim est *mensurabile*? tantummodo illud, in quo assignare possumus certum numerum partium æque magnarum, ac certa quadam mensura, si v. gr. pollicem video quinquagesies poni posse intra hoc spatium, dico illud spatium mensurari posse per quinquaginta pollices, hoc est, quinquaginta partes ejus æque magnas esse ac quinquaginta pollices; *mensurare* ergo est assignare, certam mensuram toties alicui corpori mensurando (scilicet enti extenso) applicari posse. Ergo omne impenetrabile absolute est mensurabile, quia est extensum, & omne extensum valet sæpius recipere certam quandam mensuram.

Verum omne mensurabile habet partes quarum una potest mensurari extra alteram, ergo omne impenetrabile est extensum, mensurabile, & proinde divisibile.

Ergo omne impenetrabile poterit in infinita semper minora & impenetrabilia dividi.

Hoc clare concipere oportet, cum inter fundamenta admitti necesse sit.

Dico omne impenetrabile posse dividi in infinita minora, singula adhuc divisibilia, hoc est, nulla vel minutissima pars corporis amittit resistantiam, qua spatium suum contra omnia alia corpora tuetur. Pono enim corpus componi ex mille partibus, singulis seorsim penetrabilibus, nulla arte poterit inde confici corpus extensum & impenetrabile, nam partes se mutuo penetrant, vique admota cedunt, aliudque corpus in spatia sua recipiunt, non ergo partes extra partes erunt: id autem si de partibus omnibus dici potest, de corpore ipso sive de toto dici posse necesse est, superest, ut impenetrabilis totius etiam partes impenetrabiles sint.

Ergo omne corpus eget aliqua causa, quæ facit, ut una pars impenetrabilis cohaereat alteri.

Elegantissima certe hæc propositio est, & perfecte docet insufficientiam omnium philosophematum, exceptis Epicuræis & Democritæis.

Omne enim quod impenetrabile est habet in uno sine suo partem impenetrabilem, deinde vicinam alteram, & sic porro, & singula hujus modi pars habet hic propriam sibi impenetrabilitatem, propriumque situm & ordinem inter partes quæ una corpus constituunt.

Hæc ergo idea extensionis & impenetrabilitatis involvit tantum positionem impenetrabilium partium juxta se invicem in unum commune totum congestarum.

Verum *cohesio* est aliud quid, est enim partium impenetrabilium juxta se mutuo positarum resistantia contra omnem harum partium solutionem & separationem: Idea ergo corporis non involvit ideam cohesionis, nam corpus impenetrabile est, quod habet partem impenetrabilem A, positam in aliqua sede a, tunc aliam partem impenetrabilem juxta priorem positam in b. Verum hæ partes possunt unice contingere esse, ut seorsim moveri possint, uti v. g. digiti in manu, cujus partes sunt. Ipsi quidem impenetrabiles sunt, seorsim tamen unus ab altero moveri possunt. Verum cohesio est id, quod facit, ut non possit una pars istius corporis impenetrabilis moveri, nisi etiam alia pars moveatur, estque unio partium, inque exemplo nostro digitus unus, seorsim sumtus, est totum, cujus partes coherent, nulla enim pars absque altera moveri potest. Ergo cohesio non includitur in conceptu & idea extensionis & impenetrabilitatis.

Nam,

Nam, quando in alicujus rei idea non concipio aliquid, quod ei rei adesse potest tunc inquirō in causam, & postea cur hoc aliquid nunc adsit. Ita cum inquirō in trianguli naturam, video ipsum habere tres lineas, illas tres lineas facere tres angulos, hos angulos tres esse æquales duobus rectis, & sic in infinitum varias proprietates trianguli detego, earum vero omnium causam dico esse triangulum, quia hæc omnia continentur in idea trianguli, & sequuntur ex ejus natura, cum absque iis triangulum esse nequeat, & quandiu triangulum est etiam ipsæ adsunt; meritoque dico, omnes has proprietates esse in triangulo, cum tota ratio earum in triangulo ponatur. Omnes vero conjunctæ, sunt *natura* trianguli.

Verum, quando video aliquid aliud, quod non ex natura trianguli ipsa sequitur, ut v. gr. triangulum moveri, tunc vero intelligo aliam causam esse, cur hæc idea cum triangulo nunc jungatur. Et quoties in re quacunque aliquid videmus, quod ex ipsa rei natura non sequitur, tunc dicimus, egere causa aliqua externa, cur adsit, quando nempe in conceptu hujus rei non percipio fundamentum, cur illa idea cum ipsa re nunc jungatur.

Magna inter philosophos quæstio est, an in idea impenetrabilitatis & extensionis hæreat idea cohæsionis. Sane si repeto tantum, quæ dicta sunt, hoc facile percipiemus, quid enim est cohæsiō? est talis contractus partium, qui separationi repugnat, impenetrabilitas vero unice excludit ex eodem spatio alia corpora, & extensio est tantum partium juxta se existentia. Ex ista vero idea non video, cur non separari possit pars a parte, neque ex simplici illa idea impenetrabilium juxta se mutuo existentium concipio hanc contra separationem resistantiam. Necessario ergo causa alia subest, ab impenetrabilitate & ab extensione diversa, cur nixus ille partium & pressio ad se invicem adsit, & cur una pars ita cohæreat alteri, ut per parvum motum divelli a se mutuo partes non possint.

Hanc nunc causam hujus cohæsionis, ignotissimam omni homini, vocamus monadem cum LEIBNIZIO, vim attractricem cum NEWTONO, vim gravem cum EPICURO & DEMOCRITO, causam duritiæ cum aliis philosophis, prout magis placebit vocasse.

Ut de monade primum dicamus, *μονος* significat unum: sed nemo potest dicere unum, nam quando unum pedem dicis, jam concipis aliquid constans ex duobus semipedibus hinc quod vocas unum, id vere collectio unorum est. Sed illud quod facit, ut infinita una faciant unum, id voco *monadem*, aut vim attractricem cum NEWTONO. Non alia voce uti voluit magnus vir, non quod aliquid ridiculi subest, ut plurimi voluere, ridiculam facientes hanc opinionem, quasi pro qualitate aliqua hanc attractionem haberet. Injuste hæc obijciuntur, ignorabat MAGNUS NEWTONUS causam illam (a), cum interim prehenderet, omnia corpora ha-

N 2

bere

(a) NEWTON *opt. quer.* 31. (Quod attractionem voco, id potest ab impulsione fieri aut a quacunque causa mihi ignota. Ea vox mihi unice sonat vim, per quam corpora mutuo ad se tendunt; quæcunque demum ejus causa sit) Ita & s. GRAVESANDE *sumit.* p. 17. n. 73. Qui adeo vocem attractionis refutat, is tenetur demonstrare aliquam esse impulsione externam cognitam, quæ effectus eos producat, quos nos vocamus attractionem. MUSCHENBROEK. n. 358. Sed has impulsiones nemo demonstraverit.

bere in se causam, quæ facit, ut partes earum separationi repugnent, hanc ergo causam vocavit vim attractricem.

Hujus etiam causæ effectum vocamus duritiem, hinc sensim totum systema corporeum brevi intelligetur.

Durum corpus est cujus partes coherent ita, ut separationi resistent, & una pars non moveatur, quin omnes reliquæ partes una moveantur. Si tam magna est illa resistentia, ut, in sensus incurrat, vocatur durities respectu sensus; aliam non habemus ideam.

Nunc dico, causam duritiæ incognitam esse omnibus, & clarissimus CARTESIUS, qui in quiete (a) partium ejus causam posuit, certe rem non intellexit, neque concipio, unde hoc habuerit, cum ipse ex mechanicis facile sciverit, quiescentes partes esse in æquilibrio, & indeterminatas ad quemcunque motum, & sic minimo motu posse moveri, atque adeo corpus destrui, cujus partes in æquilibrio constituuntur, ex sola ergo quiete sequi per evidentissima philosophica principia, ut minimo motu una pars ab alia separari posset.

Durities adeo est cognitus effectus, non causa. Illustrissimus BERNOULLIUS natu major causam duritiæ adscribit pressioni ætheris (b); alii multa scribunt de atmosphæra premente, sed omnes petunt principia, & supponunt corpora esse dura antequam dura sint, nos vero quærimus de origine duritiæ, quæ debet esse aliquid, quod faciat, talem inter partes nixum, ut separationi resistent. Verum non sequitur hoc ex idea corporis, & extensionis & impenetrabilitatis.

Si hæc cohæsiō & hæc durities tantæ sint in parte aliqua, ut omnem cognitam vim motus superent, tunc ista pars vocabitur *atomus*, & elementum corporeum. Docuimus omne corpus esse extensum, impenetrabile, figurabile, mobile, visum est tunc, illa corpora impenetrabilia cohærere cum aliquo nixu omni separationi se opponente, quod ipsum durities vocatur. Si nunc illa cohæsiō, ille nixus, illa vis (ut volueris), tam magna sit in corpore illo, ut nullus motus in rerum natura sit, qui non superetur a resistentia harum partium, tunc pars ista dicetur *atomus*, ex a privativo & *μωτη* sectio, ergo *atomus* proprie est pars non ultra secabilis.

Hæ sunt DEMOCRITI atomi (c) qui certe vir falso accusatur geometriam ignorasse, quod atomos posuerit, philosophus enim sui temporis clarissimus, & peritissimus Phœnicæ & Egyptiæ scientiæ, satis intelligebat, nullam particulam esse in

(a) Quies nihil est, neque adeo vim habet. MUSCHENBROEK n. 360. sed ab attractione id fieri, & hanc esse in ratione inversa distantiarum & in directa facierum se contingentium. NEWTONUS opt. p. 364.

(b) De gravitate ætheris.

(c) DIOG. LAERT. L. IX. c. 1. n. 12. a VERULAMIO etiam recepti in Script. in natur. & univer. phil. Sed ante DEMOCRITUM LEUCIPPI fuerunt. CICERO de nat. Deorum L. I. Cum vero aliqua hic de vita DEMOCRITI addantur visum est, contra conjecturam doctissimi cujusdam viri pro veritate insignium sumtuum testimonium adferre, quos DEMOCRITUS in res physicas effudit., DEMOCRITO omnia curæ fuisse videntur, cum reliqui fere nisi su-
perficie tenus nihil definiant. ARISTOTELES de gen. corrupt. L. I. c. 2. DIAGORAM servum Athenis decies mille drachm. emerat DEMOCRITUS. SUIDAS p. 550. edit. CUSTER. Cum hujusmodi summam in arguta ore servulo effuderit, quanti non itinera, mora in aliis regionibus, animalium dissectiones, lapidum illæ celebratæ decoctiones stetisse potuerunt?

in rerum natura, quæ divisionis capax non esset. Id vero voluit, vim unientem corporis partes majorem esse in atomo, quam omnis vis, quæ posset imprimi, neque ullam esse tam validam vim in rerum natura, quæ hanc unionem in quadam corporis particula superare possit; tali nunc particulæ deprehensæ dabat nomen atomi.

Quæritur, an hujusmodi atomi in natura dentur. Id, ut examinetur, tenendum est nihil mutari in natura, & omnia manere, qualia fuerunt. Licet enim corpora quædam mutantur in forma, nunquam tamen mutantur in essentia sua. Oportet adeo ita cohærere illa, quæ rerum essentiam componunt, ut nulla vis tanta in natura sit, quæ hujusmodi particulæ applicata eam superet, aut eam atomum mutare queat (a). Si enim atomi mutari inciperent, & destrui, tota certe rerum natura destrueretur, & si id corpus, quod nunc aqua est, haberet partes mutabiles, quæ in partes ignis fieri possent, certe omnis rerum facies mutaretur, & omnia ab igne jam incipiente abundare destruerentur.

Sic contrario modo, si id quod nunc est ignis posset fieri aqua, impossibile esset, ut idem calor in natura per 6000. annos, & amplius, perdurare potuisset, uti quidem perduravit.

Ergo tota rerum natura clamat, principia unde reliqua constant, immutabilia esse. Si id aliter esset, non possent corporalia manere, qualia ante tot secula fuerunt. Ergo illud primum cohærens, quod principium dat rebus, est elementum & immutabile; non, quod mathematicè dividi non possit, hoc enim in infinitum fieri potest, sed, quod nulla vis existere queat, quæ ejus partes ab invicem separare valeat, & hoc ipsum facit stabilitatem naturæ.

Illa nunc causa, quæ facit, ut quod extensum est, ita cohæreat, ut suo cohæ-
sionis nixu superet omnem vim in natura, tentantem suam cohæ-
sionem immutare, id est ordo naturæ, & est eadem semper causa cohæ-
sionis, hoc est, idem ille DEUS.

Jam ostendimus quidem elementa rerum, & respondimus questioni an dentur atomi, & quid sint; diximus.

C A P U T IV.

De soliditate & porositate.

SI atomus, & corpus ex atomis confectum, partes suas cohærentes ita habet unitas, ut nullum spatium vacuum intercipiatur inter eas partes unitas, tunc illa atomus, & illud corpus, vocabitur perfecte solidum.

Hæc est illa inter magnos viros agitata quæstio, quæ nempe idea sit solidi. Peripatetici & Cartesiani dicunt, extensum esse ideam solidi. Sed facile demonstrari potest, hoc non ita intelligi. Nam atomum definimus, quod constet ex aliis partibus cohærentibus, sed non separabilibus. Verum non ideo atomus perfecte solida est, nam si duas particulas materiæ creatas fuisse supponas & ita conjunctas ut in icone

Λ

(a) Confer rationes MUSCHENBROEKII n. 24. nam NEVTONUS satis credebatur, posse utique aquam in aerem abire Optiks quer. 30.

A, tantaque coherentes vi cohaesionis, ut unum corpus & una pars non separari posset ab altera, non esset tamen perfecte solida atomus, daretur enim spatium inter ejus partes. Verum si ex duæ partes materiae ita fuissent unitæ, ut nullum vacuum reliquissent inter suas partes, tum atomus illa esset perfecte solida, sive nullum spatium haberet intrinsecum, in quo alterum posset recipi & contineri corpus. Hæc nunc idea est quam in primis fundamentis formare oportet.

Perfekte solidum adeo vocatur *illud corpus quod ex atomis constat ita conjunctis, ut nihil vacui inter eas partes ponatur*. Et perinde alterum etiam perfecte solidum corpus vocatur, *quod ex aliis perfecte solidis corporibus conflatum est, absque ulla intercapedine, seu spatio, relicto inter partes constituentes*.

Ergo tres perfecte solidæ massæ habentur (a). 1. Atomus, quæ constat ex partibus sibi mutuo unitis, sine ullo spatio vacuo interposito. 2. Corpus perfecte solidum, quod constat ex atomis seu partibus perfecte solidis, sed ita unitis ad se invicem, ut nullum spatium intermedium relinquatur. 3. Corpus ex corporibus constans (nam quod ex atomis jam constat, etiam dicitur corpus) sed ex corpusculis perfecte solidis ita sibi mutuo applicatis, ut nullum porum inter se constituent.

Hoc facile intelligitur, cum non sit nisi definitio.

Jam perfecte solidum mensuratur per mensuram spatii. Supponamus molem esse aliquam unius pedis cubici (in exemplo melius intelligetur), habebo ergo cubum perfecte unius pedis; hoc est sumo spatium quoddam, quod sit exacte unius pedis cubici, & pono hoc spatium a me jam repletum esse corpore, in quo nullum omnino vacuum sit, tunc vocabitur corpus illud perfecte solidum, & mensura ejus erit mensura spatii cubici; quia corpus exacte illud spatium cubicum replet, ergo tantum erit impenetrabilis massæ, quanta est spatii magnitudo. Hoc bene retinendum erit, quia postea in mechanicis nobis inserviet.

Si atomus partes impenetrabiles ita junctas habet, ut intercipientur inter unitas partes spatiola vacua, aut alia materia non unita repleta, tunc vocatur illa atomus corpus porosum.

Ut vero habeatur mensura corporis porosi, supponamus v. gr. aurum esse perfecte solidum, ergo occupabit pedem cubicum, jam auferatur aurum, hujus auri ex hypothese mensura est capacitas istius spatii cubici. Pone nunc idem spatium aqua impleri & aquam constare ter pluribus poris, quam aurum, ergo habet $\frac{2}{3}$ duas tertias partes suæ substantiæ porosas, & una tertia pars cubici pedis erit mensura substantiæ corporeæ istius aquæ, nam reliqua sunt tantum vacua non corporea.

Hoc multum facit in viribus corporum inquirendis, nam vires inveniuntur ex quantitate materiæ; sed quantitas materiæ cognoscitur, cognita magnitudine pororum, quos oportet a solidis partibus subtrahere, nihil enim faciunt ad vires corporum, quia sunt tantum spatia vacua. Id vero, quod præter poros spatia replet id dat quantitatem veræ materiæ, ergo hæc est mensura corporeitatis.

Hinc videmus, si ARISTOTELIS & CARTESII sententia vera esset, quando extensionem fecerunt idem esse cum idea solidi, tunc sequeretur ubique esse eandem corpoream substantiam, & ipsum aurum cum aqua essent æque gravia, neque
a se

(a) MUSCHENBROEK n. 40. seq.

a se invicem quantitate materiæ differrent. Sed hoc non esse verum demonstravit MAGNUS NEWTONUS mathematicis (a) evidentissimis demonstrationibus in experimentis de pendulis.

Invenerunt duo maximi viri ultimo elapsi sæculi ISAACUS NEWTONUS nempe & CHRISTIANUS HUGENIUS, ambo per diversa ratiocinia, materiem corpoream in quocunque spatio deprehensam habere ad materiem quæ spatium aliud replet eam proportionem, quæ est ponderis in utroque corpore, cujus massa comparatur (b). Massa vero corporea vocatur, totum id quod conspicitur. Elegantissima propositio, si ulla, hæc est in physica, & utilissima ad corporum vires eruendas.

Quantitas etiam corporea in ea massa dicitur, copia illius impenetrabilis perfecte solidi, quod in ea massa est.

Invenit nunc NEWTONUS, & in tr. *de pendulis* (c) manifestis experimentis demonstravit, illud non cohærens & inter poros interceptum, nihilo plus efficere, in respectu ad vires corporis, quam si vacuum esset. Invenit nempe, si pyxis una auro aut plumbo plena esset, & altera vacua, sed accurate clausa, si tunc ponderare pyxidem & plenam & vacuam, deinde sollicitè respiceret ad utriusque actiones, esse eas actiones in ratione ponderum illorum corporum. Si vero materies hærens inter poros aliquid ad corporis vires conferret, tunc in experimentis certe appareret effectus majoris sed vacuæ molis. Nunc nihil facit.

Hinc, si in auri poris hæret materies quædam, ut materies subtilis CARTESII, seu alia quæcumque, eam, si aliquid addit ad corpus, oporteret aliquid in experimento demonstrare virium. Verum ut hoc faceret, deberet induere naturam solidi. Sed tunc non esset fluidum aliquod poris immistum, sed ad corpus pertineret. Omnia enim corpora agentia agunt ut solida, non ut fluida; nam si v. gr. aquam in tubo habuerim, isque tubus non claudatur, tum tubus solus agit, aqua vero effluit, quia non coercetur. Verum, si comprimens illam aquam in tubo, ibi coerceam, tunc aqua induens naturam solidi agit una cum tubo, ut integrum corpus, & tubus tanto plus impetus edet, quo aqua intus contenta plus molis habuerit.

Materies autem in his poris contenta se non ita habet, ut aqua tubum replens, nam si agerent illa corpora, quæ in his poris continentur, deberent aliter se habere actiones pendulorum, observante NEVVTONO. Nunc pressio tantum agit, & ea in respectu ponderis corporum operatur, reliquum adeo omne, quod poris continetur, nihil agit.

Hinc, prout sunt corporum pondera, ita sunt vires, & si in uno corpore, duplo plus virium reperio, positis reliquis iisdem, in eo duplo plus materiæ impenetrabilis erit, quam in altero, cujus vires duplo superat.

Magnus HUCENIUS idem observavit per experimenta pendulorum, sed Cartesianis principiis imbutus, non tam cito eam conclusionem vidit quam NEVVTONUS inde deduxit. Postea vero, cum NEVVTONI (d) scripta legeret, ingenue confessus est, experimentis captis se observasse, pondus esse unice a materia corporea.

Hoc

(a) *Princip. Philosoph. nat. def. I.* (b) *L. c.* (c) *L. c. L. II. Sect. VI. Prop. XXXI.*

(d) *Contra CARTESIUM docet HUGENIUS de caus. grav. p. 107, & alibi.*

Hoc posito, fundamentum aptum habemus mechanices, ex solo pondere observato, nempe veram materiæ impenetrabilis in certo loco contentæ constitutionem cognitionemque.

Pondus equidem est tantum qualitas ad nos relata, neque perfecte solidum corpus hætenus notum est, neque adeo accurate definire possumus copiam materiæ, copiamque vacui spatii, quæ corporibus sunt. Si unicum daretur corpus perfecte solidum, v. g. aurum, haberemus scalam pro omnibus reliquis corporibus. Tunc enim ponerem: aurum continet in pede cubico tantum materiæ perfecte corporeæ; deinde ponderarem aquæ pedem cubicum, & statim scirem aquam tanto minus habere materiæ corporeæ, tanto plus vero vacui: sed id unice verum est in proportionem ad aurum relata, nec possum pronuntiare, quantum vacui, quantum vero materiæ solidæ aquæ insit. Inde si aerem ponderaverim, qui tanto levior est, disco equidem, tanto plus vacui in eo esse respectu auri, solidioris nempe & ponderosioris corporis, & per eadem, tanto minus esse in eo materiæ perfecte corporeæ; & sic pergendo determinare potero proportionem vacui & solidi in diversis corporibus, non autem proportionem eorum veram inter se.

C A P U T V.

De diversitate corporum.

ERgo ex ipsa corporea natura habetur idea diversitatis. Hætenus vidimus, omnem materiem divisibilem in infinitum constare ex infinitis, quasi, nihilis sed præterea vim in rerum natura esse, quæ faciat, ut respectu nostri hæc nihila fiant aliquid, nempe atomi. Porro in HUGENIO & NEWTONO vidimus, atomos aliquam gravitatem habere. Ergo pro principio physico ponimus materiam extensam esse, impenetrabilem, formatam, divisibilem in infinitum, & omnes partes divisas quandam habere gravitatem toti massæ perfecte convenientem assumimus. Hæc corporibus communia sunt, verum ex eadem idea corporeæ naturæ sequitur triplex diversitas. Prima petitur a diversitate atomi; atomorum non eadem est magnitudo, etsi omnes divisibiles sint, neque enim hæc æqualitas necessaria est ad constituendum corpus; deinde non requiritur, ut omnis atomus sit æqualiter solida ac altera, nam una potest esse perfecte solida, & altera unita ex indivisibilibus, ut tamen inter partes ejus componentes vacuum intercipiatur. Denique atomorum figura diversa esse potest.

Altera diversitas hæc est. Una atomus composita alteri, corpusque unum compositum alteri corpori majori minorive cohæsione inter se uniri potest, & si corpus ex atomis confectum fuerit, potest iterum fieri, ut partes ultimæ majori & minori vi sibi mutuo adhæreant, & hoc facit distinctionem in rerum natura inter corpora.

Tertia diversitas oritur ex diverso modo uniendi unam atomum alteri, & unum corpus alteri, v. g. duæ atomi possunt A hac ratione se tangere, & sic plus spatii inter se relinquere, quam si propius ad se invicem accederent. Videmus itaque clare, triplicem ingentem diversitatem resultantem ex rerum elementis ipsis deprehensis concipi posse, quod certe ex non alio systemate physico sequitur.

CAPUT VI.

De dirigendo studio.

UT recta sit methodus, primo jacienda sunt fundamenta, dicenda præcipua cujusque partis studii capita, excitanda est clara singularium idea; deinde dicendum, qui sint auctores unde petantur ea, quæ nunc maxime recensuimus.

Qui recto ordine rerum naturalium principiis indagandis incumbere vult sequentes legere debet auctores, 1. EPICURUM & DEMOCRITUM, eorumque dogmata, hoc est, antiquissimam Phænicum & Ægyptiorum philosophiam, quam invenimus optime descriptam, apud magnum illum nobilem Romanum poetam TITUM LUCRETII CARUM in tractatu de principiis rerum, qui certe omnium præclarissimus scripsit, jam ante tempora CICERONIS. Hic etiam LUCRETIUS primarius est, apud quem EPICURI & DEMOCRITI principia elegantissime deducta habemus.

2. Legantur hæc apud DIOGENEM LAERTIUM Græcum in *vita EPICURI* (a), & in primo libro de vita philosophorum antiquorum. LAERTIUS quidem omnium philosophorum dogmata descripsit, nullius tamen placita adeo sermone exponit, quam EPICURI, & quamvis videatur plus amare EPICURUM, quam DEMOCRITUM, tamen certum est, EPICURUM omnia sua a DEMOCRITO habuisse.

3. Verum si hæc omnia perfectissime cognoscere vultis, tunc legere oportet PETRUM GASSENDUM in *commentariis in librum DIOGENIS LAERTII de vita EPICURI* (b), qui certe vir DEMOCRITI philosophiam summopere propugnavit. Solus etiam sufficit ad hæc cognoscenda, nam habet quidquid DIOGENES LAERTIUS & quicquid EPICURUS tradidit, deinde quidquid boni & veri mathematici eo tempore addiderant priorum placitis.

Qui vero in scientia mathematica majores fecerunt profectus, legant ISAACUM NEWTONUM (c), palmam præripientem omnibus, uti & CHRISTIANI HUGENII tractatum *de la Lumiere, & de la Pesanteur* (d), qui prius Cartesianus fuerat, sed paulo ante obitum, NEWTONI, EPICURI ac DEMOCRITI doctrinam sequutus est:

Eadem etiam jacta fundamenta videntur apud KEILIIUM in *introductione ad veram philosophiam* (e).

(a) L. X. tot.

(b) Edita an. 1647, & ultimo Lugduni 1675. fol.

(c) Aut si minus firmus in sublimiori Mathesi fuerit, breviter & dilucide ea omnia reperiet in MUSSCHENBROEKII *Element. physices* Leidæ an. 1741. in 8. aut Gallice an. 1739. 4. edit. Nam in principiis NEWTONI vix quidquam de generalibus corporum qualitatibus habetur. Quæ vero de EPICURO supersunt ad curiosiorem eruditionem pertinent, nimis hiulca, nimis nuda experimentis, nimis mista erroribus.

(d) In *operibus posthumis*, quæ Leidæ in 4. an. 1703. & 1728. prodierunt.

(e) Plura habet Editio alia Londinens. an. 1719. 8. alia Leidensis est an. 1739.

M E T H O D I
S T U D I I M E D I C I
P A R S II.
G E O M E T R I A,
S I V E D E
FIGURA ET MENSURA CORPORUM.

C A P U T I.

De Figura Corporum.



Ostquam Medicus naturam generalem communemque omnibus corporibus congno- vit, corpora esse finita facile intelligit. Hoc quidem ex philosophia Peripatetica & Cartesiana fluere non potest; nam apud eos viros idea corporis est extensio, sed extensio est infinita. Verum in nostra philosophia, aurum ponderosum est, sed flexile, ergo habet poros, ergo erit finitum, & lignum, quod levius est auro, adhuc plus pororum habet, ergo magis finitum est, nam ubi pori sunt, ibi vacuum est, & ibi corpus desinit adesse. Sed ex SPINOZIANA & CARTESIANA sententia sequitur, naturam corporum ubique esse eandem, nam extensio est ubique; hinc etiam optime iis objicit GASSENDUS; in locis citatis „ si dicis finem esse aliquem extensionis, pone te esse in eo loco universi, ubi dicis hujus finem esse, non potes, inquit, non fateri, ad exteriora hujus finis extensionem rursus adesse; nam si hic finem ponas ubi ultimum corpus terminatur, juxta hocce corpus erit iterum extensio. Verum extensio CARTESIO dat ideam corporeitatis, ergo nullus est finis corporum secundum CARTESIUM. Sed ex nostra philosophia sequitur, ubi finem pono, ibi vacuum est, adeoque ex nostra philosophia corpus est finitum.

Ubi ergo finitur corpus, ibi limites habet, sive esse desinit, & illud extremum, ubi corpus desinit esse corpus, id vocatur corporis *superficies*. Hæc jam superficies varias formas induere potest, quæ forma vocatur *figura*; hinc videmus, quid figura mathematicis sit, nempe extrema forma corporis, *limes* vero corporis est corporis extremum figuratum, & *superficies* est limes corporis; ergo omnis superficies, hoc est figura, quæ simplex dicitur, nihil habebit corporei: nam figura nullam densitatem habet, sed tantum longitudinem & latitudinem; hinc dicunt Geometræ omnem figuram juxta longitudinem & latitudinem tantum

rum mensurari posse; ergo duplici mensurabilitate prædita habetur omnis figura simplex.

Figuræ nunc sunt, quarum ope mensuratur corpus: hoc demonstrabitur in sequentibus; nemo enim posset mensurare cameram nisi figuram faceret, sed figura est limes seu superficies: hinc quid faciunt Geometræ? sumunt illam lineam longitudinis unius parietis, & alteram lineam alterius parietis, quæ dat latitudinem, & multiplicant has mensuras per se mutuo, tunc dicunt, en area hujus cameræ. Ut tota vero cameræ capacitas habeatur, sumunt ad unum parietem illam latitudinis lineam, secundum alterum parietem mensuram longitudinis capiunt, & secundum parietem perpendicularem tertiam lineam dimetiuntur, has lineas multiplicant iterum per se mutuo, & tunc dicunt, en hæc est tota camera. Ergo Mathematici philosophi nunquam mensurant substantiam corpoream, sed superficiem, & superficies determinat massas corporeas. Verum superficies mensurari nequit, sed lineæ superficiei mensuratæ dant quantitatem massæ: & sic per figuræ mensurationem habemus corpus. Sed corporum vires, a figura & mole pendentes (ex mechanicis), nobis sunt mensurandæ; nam idem corpus sub varia figura, varie agit. Ergo accurato philosopho corporum figuræ sunt cognoscendæ.

Id ergo, quod EUCLIDES & ARCHIMEDES invenerunt de figuris corporum, & qualis usus inde ad scientiam physico-medicam accedat, exponemus paucis, atque breve trigonometriæ fundamentum simul dabimus.

A superficiei cognitione pendet ars mensurandi corporeum spatium, a mensura corporei spatii pendet mensura virium; adeoque Medicus, ubi vires corporeas indagare vult, superficierum cognitione carere non poterit. Notissimum est ex geometricis, quod ille, qui novit superficies ambientes corpora, & spatia corporea, idem invenire possit, quanta sit area, & quantum sit spatium comprehensum intra has superficies, sive in harum figura; ergo ille etiam cognoscet, quantum sit spatium corporeum comprehensum intra has superficies.

Verum, qui vult vires indagare corporum, duo debet cognoscere, 1. celeritatem corporis moti, tum 2. ejus magnitudinem. Sed magnitudo corporis dependet a superficie ejus cognita, ergo qui vires corporum indagare vult, ille superficies mensurare, tuncque celeritatem cognoscere debet. Hinc patet, artem mensurandi superficies necessariam esse Medico, qui vires corporum cognoscere debet. Hinc commendat HIPPOCRATES suo filio (a), ut addiscat arithmetica & geometria; sed geometria est tantum contemplatio superficierum, nihil enim aliud faciunt Geometræ.

(a) In epistola spuria ad Thessalum filium.

CAPUT II.

De Figurarum mensura.

OMnes superficies cognoscuntur cognitis prius linearum mensuris; hoc est; cognitis lineis rectis earumque mensura, quod idem est. Hic demonstrabimus, quomodo Medicus geometriæ cognitionem facile acquirere possit. Figuræ enim cognosci nequeunt, nisi perspecta sit linea recta, per quam mensurantur omnia. Ergo Medico & Physico illud quod Geometriæ in lineis rectis considerant, cognoscendum est.

In his lineis, & in superficiebus, & figuris, atque in ipsis corporibus, & corporeis spatiis versatur geometria, & considerat 1. magnitudinem rerum, 2. incrementum, 3. decrementum, 4. proportionem ejusdem corporis ad alia, hoc est 5. lineæ transmutationem in aliam diversæ naturæ, sed ejusdem magnitudinis. Explicabo nunc, quomodo geometria concipiat lineam rectam. Omne quod EUCLIDES in quindecim libris suis, quod ARCHIMEDES in demonstrationibus linearum rectarum & curvarum, quod Geometriæ in demonstrationibus suis de lineis invenerunt, eo redit ut considerarent 1. magnitudinem, quæ est *extensio intra datos terminos, sive inter duo puncta, sive inter duos limites*; ergo inter punctum hic positum, & inter punctum ibi positum, ponitur extensio, & sic linea est id, quod inter duo puncta ita interjacet, & vocatur magnitudo. *Figura* autem vocatur, quando *extensio hujusmodi continetur intra limites ex lineis formatos*. *Area* vocatur, *ejus figuræ magnitudo*. Si contemplor magnitudinem areæ, debeo cognoscere quantitatem spatii intra suos limites contenti, sic enim magnitudo cubiculi emergit, si cognosco aream baseos per altitudinem. Aream vero metior lineis inter lineas ductis, corpus denique lineis ductis inter superficies.

2. Alterum objectum geometriæ est incrementum, nec enim possum concipere extensionem intra hos limites, quin concipiam extra hos limites aliam a priori extensionem, hoc est *incrementum*, nam Geometra non creat aliam extensionem, sed tantum creatam cogitat; nam quando cogito extensionem extra limites, cogito sit atim ab utroque puncto terminante continuari posse lineas, quæ extensionem mensurant, novamque inter has lineas dari extensionem, ergo illam certam magnitudinem, quæ intra hæc duo puncta erat, posse augeri. Sed eadem ratione etiam corpora augentur. Ita v. gr. non possum cogitare cubiculum intra suos parietes comprehensum, quin ad singulam ejus superficiem limitatam cogitem aliquid addi posse; simile constat, si hujusmodi cubiculum limitetur sex superficiebus, quæ quadratæ sunt, non potero hoc cogitare quadratum, quin extra illud simile concipiam quadratum, & extra hoc quadratum aliud prioribus simile, & si ita pergo, dicor augere primitivum quadratum.

Incrementum ergo est *cogitatio extensionis alicujus extra similem datam extensionem*:

3. Ubi incrementum est, sic oppositum sive contrarium ejus est decrementum. Sed ubi incrementum & decrementum est, sic est divisio & multiplicatio linearum, nam dividere lineam, est extensionem aliquam intra datos limites toties diminuer

quo-

quoties id fieri potest. Ita intra hos limites mensuretur linea tot pedum, tunc Geometra hanc mensuratam lineam vocat hanc magnitudinem datam; nunc, si petit Geometra, ut dividatur illa data linea in tres partes æquales, vult unice, ut cogitem tot lineas, quarum singula, quæ est una tertia pars hujus totius, sit æqualis reliquis duabus quæ æquales sint inter se, & constituent simul totam lineam.

Ergo *dividere lineam*, nihil aliud est, quam *concupere minorem quantitatem de priori toties remove*, quoties id fieri potest in illa data magnitudine.

Nunc apparet, quid sit multiplicare. Sit v. gr. ibi linea 100. pedum, vult Geometra eam multiplicare, considerat illam lineam datam, tum similem lineam, & post hanc iterum similem, hocque sexies repetit, id ipsum quod nunc describo, dicitur multiplicare lineam, & hoc vocatur incrementum apud Geometras.

Id nunc facile applicari potest superficiebus & corporibus; ergo dividere, & multiplicare, est unice invenire quantitatem, quæ illam, quam multiplicandam accepimus, toties in se continet, quoties præscriptum est. Dividere vero, est quantitatem invenire, quæ in dividenda quantitate toties continetur, quoties id petitur.

4. Tractatus de proportionibus est primarius totius matheseos, nam certe tota mathesis sive geometria, sive algebra, sive arithmetica, nihil est, nisi inventio proportionum. Exemplum de lineis sumam, nam idem est, sive lineas consideravero, sive corpora, ergo data est mihi linea, ejusque limites; inter eos limites datur extensio seu magnitudo, quæ est linea ipsa. Sed datur etiam alia linea, cujus etiam novi limites, ergo & magnitudinem. Si nunc Geometra scire velit, quænam proportio sit unius lineæ ad aliam, tunc considerare debet, quot partes sint in hac linea, & inveniet partes v. g. 100, & in altera invenit partes similes 200, proportio nunc erit inter has lineas, ut 100 ad 200, hoc est ut 1 ad 2. *Proportio* ergo est, inventio mensuræ communis duobus extensis, & invenitur, quando vera utriusque extensi magnitudine cognita, comparatio fit unius magnitudinis ad aliam, quantum differat; & hoc vocatur proportio a Geometris, sive ratio, uti loquuntur. Dicere enim linea AB habet se ad lineam CD in aliqua quacunque ratione, est dicere, lineas minores, ex quibus utraque tamquam partibus constat, tot in AB, & tot etiam, sed alio numero, in CD reperiri; hinc nunc dicitur lineæ ratio ad alteram duplex, triplex, quadruplex, quando partes æquales in AB duæ, in CD quatuor, in EF sex, in GH octo repertæ fuerunt.

Veteribus ergo dicitur proportio, quod neotericis ratio, quando lineæ cum lineis, superficies cum superficiebus, corpora cum corporibus, velocitates cum velocitatibus, & in universum duæ quæcunque res ejusdem generis, quarum magnitudo cognita est, inter se comparantur, & invenitur, quomodo magnitudo & mensura unius extensi se habeat ad alterius congeneris magnitudinem & mensuram.

Proportio nunc strictius sumpta est, ut dicit EUCLIDES, *rationum similitudo, aut æqualitas*. Ita proportio dicitur, quando uti ultimæ partes primi se habent ad ultimas partes secundi, ita ultimæ partes tertii ad ultimas partes quarti, &c.

Proportio igitur requirit, ut cognoscatur quantitas utriusque rei comparandæ. Cognitio quantitatis poscit, ut cognoscatur mensura utriusque communis: & deinde,

de, ut hæc mensura ad utramque applicetur, atque notetur, quomodo eadem mensura se ad unam & ad alteram habeat.

5. Transmutatio est nobilissima matheseos pars, quæ dicitur quadratura in figura, & evolutio in lineis. Sit hæc AB (Tab. I. fig. 4.) linea recta cognita, cujus limites dati sunt. Rogat nunc Geometra, ut lineam curvam inveniam, cujus eadem sit magnitudo, quæ rectæ lineæ AB; is certe Geometra petit transmutationem lineæ in aliam. Si tunc scirem lineam circularem aliquam, quæ limites æquales haberet cum AB, jam invenissem transmutationem lineæ rectæ in curvam, & lineæ curvæ in rectam. Verum nemo mortalium hoc novit facere in curvis lineis. Iterum inter lineas curvas, si data mihi esset linea curva circularis C (Tab. I. fig. 5.) atque juberer invenire aliam ellipticam lineam D (fig. 6.) quæ æqualis foret datæ C, hæc inventio vocaretur transmutatio linearum: Ea transmutatio, quantum novimus, ex rectis lineis in curvas, & ex curvis in rectas inveniri vix potest; rectarum vero inter se & curvarum inter se transmutatio utique inveniri potest in multis, & invenerunt Geometræ, ut EUCLIDES ipse demonstrat. Dabo exemplum. Habeo v. gr. quadratum, rogo ut fiat triangulum æqualis magnitudinis. Id præstat EUCLIDES. Scribit quadratum ABCO, (Tab. I. fig. 7.) In harum linearum alterutra sumit DE æqualem CD, conjungit puncta A & E, ducta linea AE, eritque triangulum CEA æquale quadrato ABCD; scribe enim notam F ubi AE secat lineam BD, erit in triangulo ACE figura AFCD, & eadem etiam continetur in quadrato ABCD. Deinde triangula AFB & FDB sunt inter se similia & æqualia, habent enim latus DE per constructionem $\equiv CD \equiv AB$, & angulos rectos ABF, FDE, & angulos AFB ac DFE æquales, cum sint anguli oppositi ad vertices. Hac ratione deinde etiam aliter poterit quadratum mutari in infinita triangula, ut in 6 libris EUCLIDIS patet.

Quando nunc figura curva transmutari potest in rectilineam, tunc vocatur hæc transmutatio quadratura curvæ, quæ nihil est, quam mutatio superficierum lineis curvis comprehensarum in superficies lineis rectis terminatas. Ita deinde seorsim vocatur quadratura circuli, ellipseos, &c. aliaque infinita, ut ellipseos quadratura inventa ab ARCHIMEDE, & lunularum ab HIPPOCRATE. Mathematici recentiores hæc applicarunt & superficibus & denique corporibus; &c. qui nunc ultimus est geometriæ limes. Hæc sunt quinque objecta, quæ contemplantur Geometræ, & nihil aliud habent, neque adeo Medicus ad studium suum perficiendum plura scire tenetur.

C A P U T III.

De methodo discendi Geometriam.

UT quisque geometriam brevissime & facillime addiscat, i. debet arithmeticam cognoscere, quam omnium optime inter auctores docuit ANDREAS TAQUET in *Arithmetica sua*, liber est in 8 (a). Idem etiam præstitit, sed majori ope.

(a) *Theoria & praxis Arithmet.* Amst. 1704. 8. Laudem etiam meruit WOLFII *Elem. Math.* T. V. p. 50.

opere, JOHANNES PRESTET in libro *Elémens de Mathématique*, 2. voll. in 4. Paris (a). Reliqui fere omnes dant operationes, sive demonstrationes, sed in his ultimis invenitur, quomodo inventæ sint operationes, & quibus ratiociniis innitatur arithmetica. Omnium autem prima inter partes geometriæ addiscenda est, quia mensuram sive magnitudinem supputare non possumus absque numeris, nam mensurare est numerare. Oportet adeo Medicum eo usque progredi, donec fractiones multiplicare, dividere, & regulam auream cognoscat.

Postquam Arithmeticam tiro didicit, potest adgredi Geometriam & sex priores EUCLIDIS (b) libros, & considerare figuras, quas a FOURNIERO (c) optime editas descripsit MELDERUS, proprie enim sunt a FOURNIERO, quamvis MELDERUS suas vocet. Si malit omnes XV. libros EUCLIDIS addiscere, debet eligere illos, qui a BARROWIUS (d) editi sunt, optima editio est Londini, & præstat

(a) *Elementa Mathes.* Paris. 1694. 4. Habet analytica vulgatiore.

Cæterum nostris temporibus longe plures ad Arithmeticam spectantes Auctores habemus, neque sufficere ullo modo crediderim vulgarem illam numerorum considerationem, neque ab ullo Medico abesse posse speciosam illam analysin, quam barbaro nomine *Algebram* vocant, adeo fere excluditur optimis quibusque Scriptoribus, & caret disciplinarum usu quicunque & vulgarem *Algebram* & altiores illos differentialium & integralium calculos non perceperit animo. Scriptores ad utramque partem calculi universalis paucissimos adponam. Tironi sufficiet BERNARDI LAMY *Traité de la grandeur*. Parisiis 1731. 12. ut qui peculiari industria effecerit, ut facillimus sit discantibus, & fere præmansum temperatumque cibum propinet. Deinde notum facio omnibus CHR. WOLFII in universali matheseos systemate, quod sæpius & Halæ & Genevæ edidit, & cui de Algebra tractatus insertus est, quem non audio, ut alia fuerunt celeberrimi viri scripta, hætenus fuisse impugnatum.

Ad altiora & IDEM ducit WOLFIIUS, & NEWTONUS in *Arithmetica univers.* quæ primum Cantabrigiæ an. 1707, deinde Londini an. 1722 in 8. denique procurante's GRAVESANDIO Leidæ in 4. prodiit. Sed ad summa progressuro necessarium est ut Sectionum conicarum proprietates perdiscat, quas in Marchionis de L'HOPITAL posthumo opere discere potest, Parisiis 1720. in 4. edito, etsi justo minus memor fuerit Conorum, ex quorum sectione, non ex mechanica productione per regulas, nec in algebraicarum formularum consideratione hæ tres vel quatuor (si circulum addideris) celeberrimæ curvæ lineæ natæ sunt. Vel etiam legi poterunt MILNESII *Sectiones conicae*, Oxon. 1712. 8. editæ, quæ LA HIRIANARUM sunt Epitome, aut LA HIRII majus opus Paris. 1685. in fol. excusum, minulve 1679. 12. Sequitur ejusdem L'HOPITAL infinite parvorum analysis edita Parisiis 1696. & 1716. 4. ex JOHANNIS quidem BERNOULLII Lectionibus natum, sed Gallico ingenio ornatum, mireque in tanta rerum difficultate facile discantibus opus, quod utilius præterea reddidit VARIOGONII commentarius, qui sub nomine *Eclaircissement sur l'Analyse des infiniment-petits* prodiit an. 1711. Parisiis in 4. Ad integram vero calculum, cujus non extant nisi paucæ nantes in gurgite vasto insulæ, STONII in versionis Angl. operis L'HOPITALIANI parte secunda. MANFREDUS in opere *de constructione aequationum differentialium primi gradus*. Bononiæ. 1707. 4. JACOBUS STIRLING in illustratione Libri NEWTONIANI *de Curvis tertii ordinis*. Oxon. 1717. 8. & in *methodo differentialium*. Lond. 1730. 4. COLSON. in *method of fluxions and infinite series*. Londini 1728. 4. & NEWTONI atque LEIBNIZII sparsa opera legi debent. Ad omnem vero *Algebram* opera pulcherrima JOHANNIS BERNOULLII plurimam undique lucem adfudent, quæ nuper conjunctim Lausannæ prodierunt. Plura addere vetat instituti ratio, meumque ab his studiis dudum alienum vitæ genus, quod officia necessaria sequi jubet.

(b) Geometriæ princeps ubique EUCLIDES est, maxime in L. I. II. III. IV. V. VI. XI. XII. XIII. XIV. XV. nam reliqui fere arithmetici sunt.

(c) EUCLIDIS Elementorum L. priores VI. opera CHRIST. MELDER. Leidæ 1673. 12.

(d) EUCLIDIS Opera nova methodo denuo illustrata & succincte demonstrata, Londini 1666. & denuo 1675. 4. GREGORII etiam splendida editio instat quæ in Theatro Scheldoniano an. 1703. in folio prodiit; sed tironi sufficiet, quam nuper Lipsiæ an. 1743. in 8. edidit CL. BAERMAN-NUS, quæ easdem figuras habet GREGORII.

stat Francofurtensi. BARROWIUS, philosophus, musicus, theologus fuit, & aliquos errores in EUCLIDE emendavit. Qui autem simul hæc discere vult, una cum usu proportionum, legat XV. libros EUCLIDIS editos a CHRISTOPHORO CLAVIO (a) sed debet haberi, si potest, editio Romana, duobus voluminibus in 8. Hic enim non solum proportionibus docentur, sed omnia quæ in Philosophia, Mechanica, Geometria, Practica, &c. desiderari possunt.

Verum fatendum est, hos omnes Auctores non observasse ordinem, quem EUCLIDES ipse non bene observavit; ergo, si quis hæc omnia ordine vult addiscere, legat librum illum incomparabilem BERNARDI LAMY *Elémens de Géométrie*, ou *Traité de la mesure des Corps* (b), ibi enim optime omnia Euclidea & Archimedeæ ad finem usque continentur. His præstitis totam Geometriam habebit Medicus.

C A P U T IV.

De mensura Linearum curvarum.

Geometria vulgo contemplatio dicitur, sed sensu improprio; nam proprie est mensuratio figuræ, ad quam requirebantur ex quinque considerationes quas dixi, ut magnitudo, &c. itaque hæc Geometriæ pars, quam jam explicaturus sum, est magis proprie Geometria, tractat nempe de figurarum, linearum & corporum mensuratione.

Figura est superficies circumscripta. Figura plana dicitur ea, ad quam linea recta applicata cum omni puncto congruit ubique, quando nempe nulla puncta superficiei infra lineam rectam se subducunt, nulla supra eam emergunt. Superficies vero plana ordinata est, cujus latera se eodem modo, ut hæc superficies, habent; & ad hanc revocari potest superficies gibba, quæ est figura sphaeram ambiens: in huiusmodi enim figura, si lineam rectam applicaveris, aliquæ partes plani se subducunt, aliæ eminent. Ergo figuræ & superficies curvæ revocantur ad figuras & superficies planas, nam figuræ curvæ mensurantur tantum, quando revocantur ad planum, idque fit methodo qua jam antiquissimi usi sunt Mathematici. Unicum exemplum dabo. Concipiat circulus, cujus centrum sit C (Tab. II. fig. 1.), hunc ita mensurant Geometriæ. Circuli

(a) Reformator Calendarii Gregoriani. Editio EUCLIDIS citata est Romana 1574. 8. & Francofurtian. 1654. Auctoris alia Opera his annis edita sunt, *Geometria practica*. Rom. 1604. 4. *Algebra*. Rom. 1608. 4. *Spherica*. Romæ 1586. 4. Opera vero omnia Germanicæ editionis Moguntiae fol. 1612.

(b) Parisiis etiam an. 1685. 1688. 1710. 1731. & 1734. edita. Facilitatem laudamus, rigorem demonstrandi hinc inde requirimus. Solent cæterum recentiores vitio vertere EUCLIDI, quod ordinem parum observaverit, & quod per deductionem ad absurdum fere demonstraverit, quæ methodus ad sensum sextorquet, animum non illustrat. Hinc ad Geometriæ elementa enixius commendo ANDRÆ TACQUET *elementa Geometria plana & solida* quæ WHISTONUS edidit Cantabrigiæ an. 1703. & 1722. 8. excuderunt vero Amstelodami 1725. 8. Is enim & perspicuitate simul & brevitate efficaci eminentes demonstrationes habet. Sed nec PARDIESII breve compendium displiceat Tironi, sapissime recusum, & cum Auctoris reliquis Opusculis Lugduni 1725. 12. in quod prælegere dignatus sit J. BERNOULLIUS, etsi neque id ubique vitiis & laxitate in demonstrando purum sit.

fig. 1.

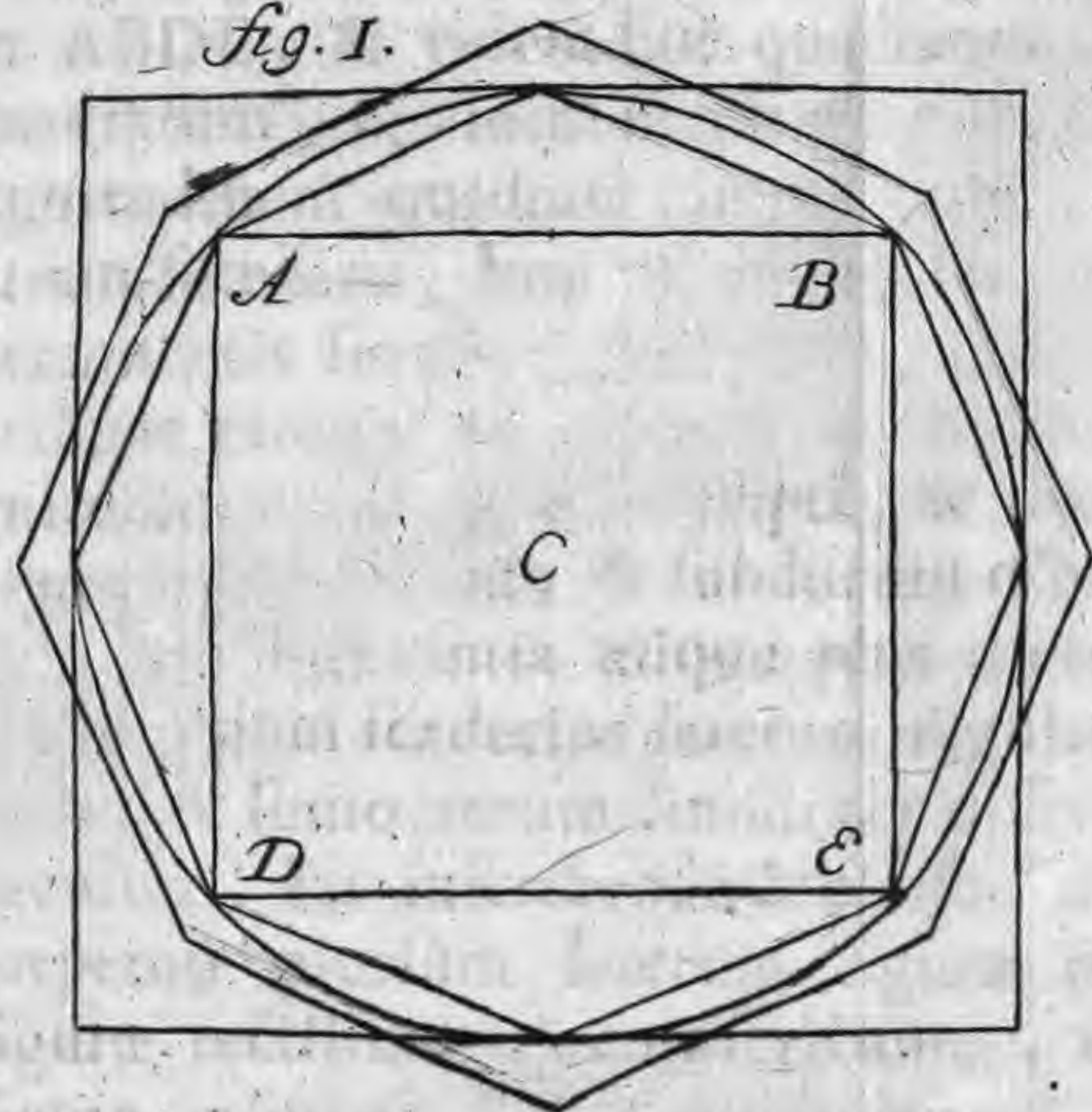


fig. 2.

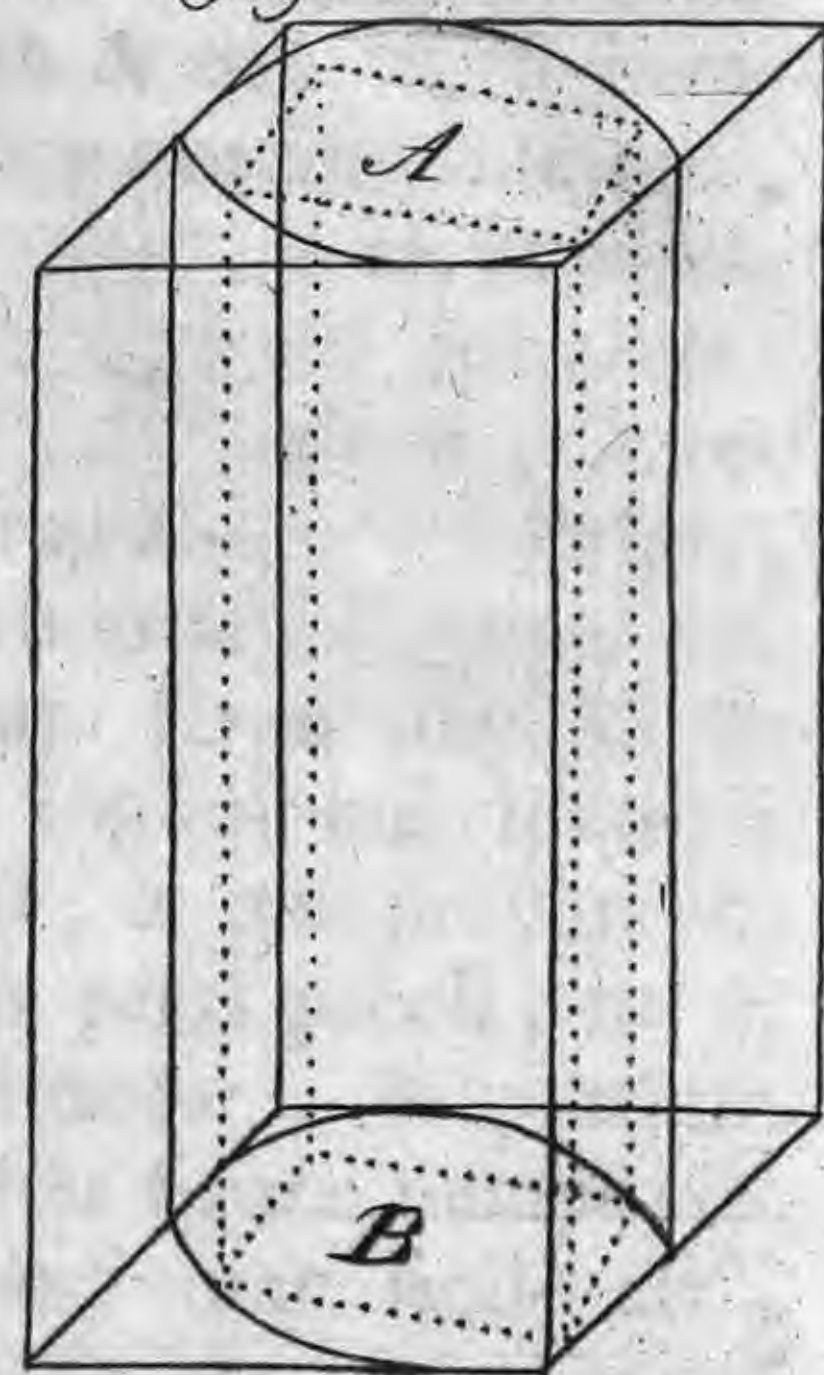


fig. 3.

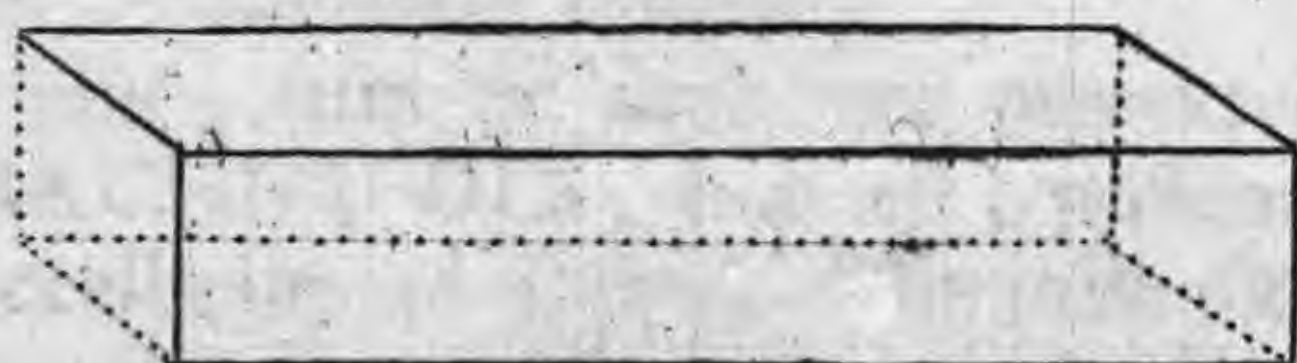


fig. 4.

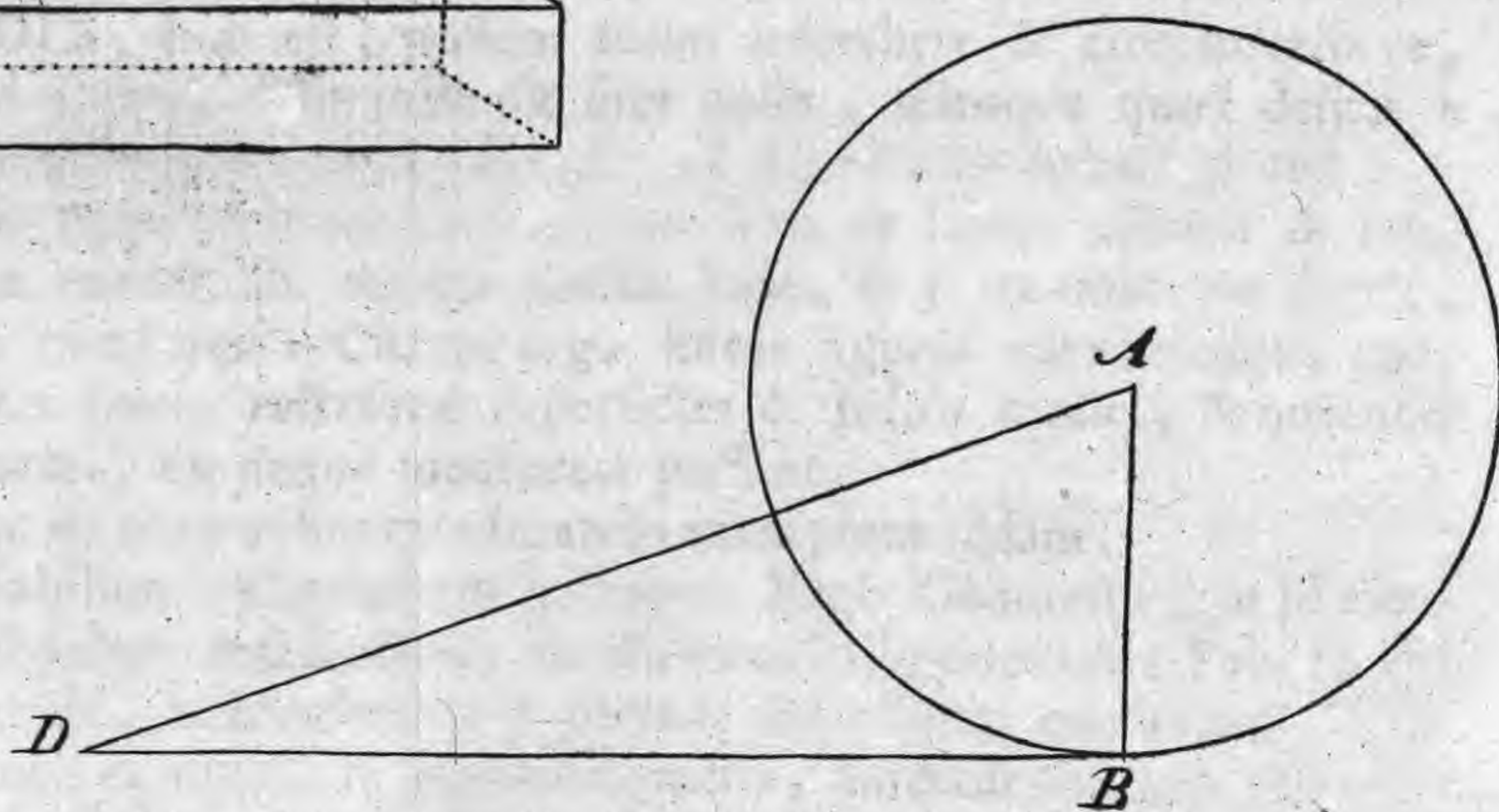


fig. 5.

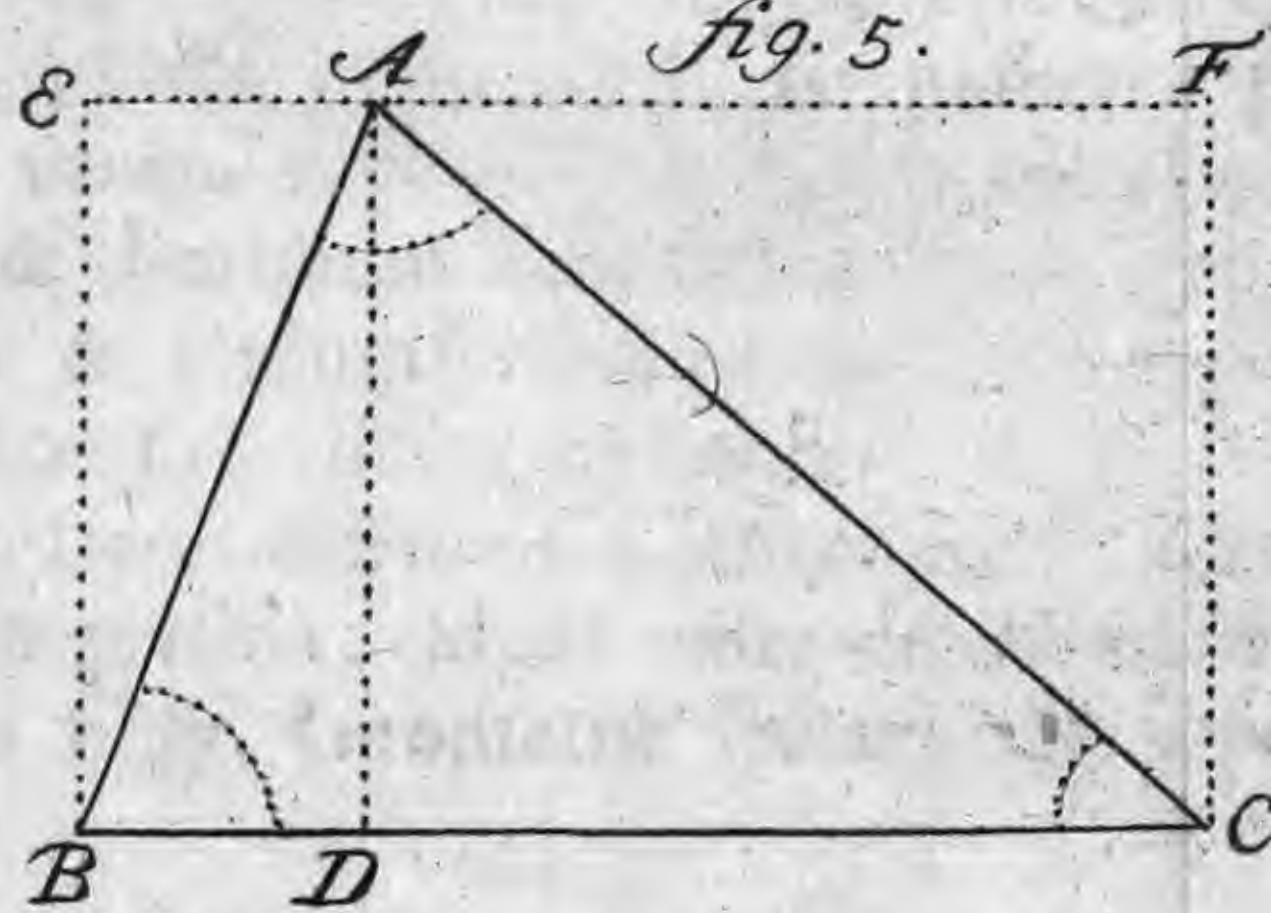
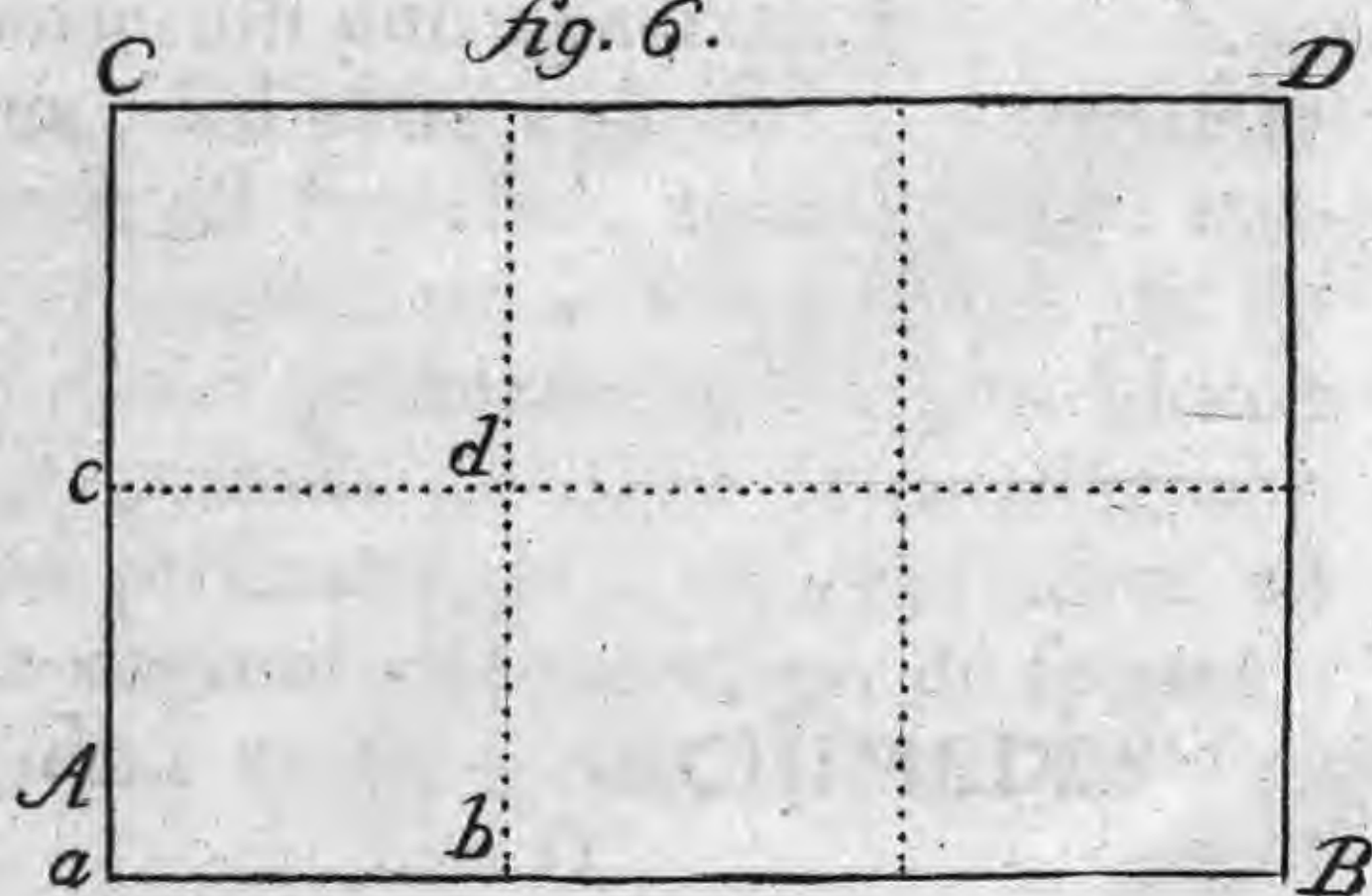


fig. 6.



culi area est figura plana, sed terminus est figuræ curvæ: inscribunt ergo Mathematici quadratum ABDE, & vident hoc quadratum circulo minus esse. Deinde circumscribunt quadratum, & vident majus esse circulo, pergunt ergo & dicunt, si inveni-
nerim magnitudinem quadrati circumscripti, & magnitudinem quadrati inscripti, & differentiam sumfero, hoc est inscriptum quadratum demserim de circumscripto, & remanentis sumfero dimidium, jam reliquum plus accedit ad circulum. Ergo inscribunt circulo octogonum & simile octogonum circumscribunt, inveniunt magnitudinem octogoni inscripti, & magnitudinem octogoni circumscripti, & vident quantum differant, & subducunt octogonum inscriptum de octogono circumscripto, hæc differentia utique plus accedet ad circulum. Ergo inscribo & circumscribo figuram sexdecim laterum regularem, subduco iterum inscriptam a circumscripta, & sumo iterum dimidium differentiæ restitantis, & jam propius accedo ad circulum. Ita inscribendo & conscribendo in infinitum pergi potest, ut in circulo perpetuo plurium laterum figuræ rectilineæ inscribantur, & plurium laterum figuræ rectilineæ circumscribantur, donec omnes tres figuræ nempe circulus & figura inscripta & circumscripta fiant eadem, quod nunc facile est, nam omne inscriptum semper aliquid minuit, ut ultimo nihil remaneat ad subtrahendum, & figura inscripta, & circumscripta, & circulus, nulla alicujus momenti quantitate differant.

Itaque nunc, cum sic multoties perrexerim, illa ultima differentia nulla est, ut dixit ARCHIMEDES, hoc est, possum toties inscribere & circumscribere, ut cum accesserim ad finem, differentia sit fere nulla, adeoque quod deficit a perfecta æqualitate plani multilateri & circuli, id pro nullo haberi potest.

Nempe omnis figura curva concipiatur tanquam facta ex lineis infinitis & infinite parvis rectis, quæ omnes sibi mutuo junctæ sunt, & si ita concepta fuerit, poterit ut linea recta mensurari. Curvas ergo lineas figuras curvilineaque corpora oportet per rectas lineas rectasque superficies & solida metiri, & quæ non possunt ad rectas revocari, eæ neque mensurari possunt.

De lineis dixi, nunc de corporibus mensurandis exemplum addam.

Mensurandum est solidum cylindricum gibbum. Ergo Geometræ, ut id mensurent, reducunt ad solidum rectilineum. Sit illi circulo superiori A (Tab. II. fig. 2.) inscriptum quadratum, huic inferiori B perinde inscribatur quadratum, jungantur hæc plana lineis ex angulis in angulos deductis, nascetur solidum cylindro inscriptum. Deinde his iisdem circulis circumscribo duo quadrata, hæc conjungo lineis & planis qualia dixi, sic nascetur prisma, sed extra cylindrum circumscriptum; verum superficies corporis inscripti minor est superficie circumscripti corporis, & dimidium differentiæ magis accedit ad cylindrum. Pergo ergo ita inscribere & circumscribere in infinitum, donec latera prismatis convenient ultimo cum superficie hujus cylindri, & latitudo ac altitudo cylindri nulla adsignabili quantitate differant a latitudine & altitudine prismatis, hoc est, cylindrus est factus in prisma. Idem valet de omnibus quæ cogitari possunt v. gr. de sphaera. Quando v. gr. Geometræ sphaericam superficiem, ut fecit ARCHIMEDES (a)

D

re-

(a) ARCHIMEDES de Circuli dimensione. Libellus is a WALLISIO editus est Gr. & Lat.

revocare volunt ad figuram mensurabilem, inscribentes & circumscribentes ei quadrata, agunt, ut de circulo diximus, & pergunt sic in infinitum, adeo ut tandem fiat figura rectilinea, qua cum figura sphaerae una sit eademque, aut certe nulla assignabili quantitate differat. Ergo ars mensurandi ponitur in figurae planae mensuratione, & reductione planae curvae ad rectam, & gibbae ad planam rectam.

Explicandum est, quomodo spatium corporum rectis aut curvis planis circumscriptorum assignetur.

C A P U T V.

De Trigonometria.

Mensura est magnitudo quaedam cognita, ad quam applicatur alia cognoscenda; eo fine ut sciamus, quoties ignota ea quantitas cognitam contineat, aut ab eadem contineatur. Omnis mensura debet simplex esse & certa, alias non est mensura; ergo ad mensurandum corpus necessario adhibenda est superficies simplicissima, & ad mensurandam superficiem, est applicanda simplex rectilinea figura. Simplex autem rectilinea figura est triangulum; verum triangulum per quadratum mensuratur, sed quadratum mensuratur per lineam rectam, ergo requiritur ad mensuranda quaecunque corpora lineae rectae mensura; hinc Geometrae primo mensuranda est linea recta, tum quadratum, & per quadratum denique omnes superficies.

Verum quadratum adhuc est nimis compositum, hinc sumunt Geometrae triangulum; nam habet triangulum uno latere minus, quam quadratum; ergo omnes Geometrae mensurant per triangulum; & illa pars Matheseos, quae docet mensurare triangulum, vocatur Trigonometria, quae Geometrae cognoscenda est. Primum ergo, quod Medico & Mathematico discendum est (postquam vidit opera EUCLIDIS & LAMY) est mensurare triangulum, nam per eam figuram mensurantur omnia.

Porro, qui potest triangulum mensurare, ille omnia mensurare potest. Proponamus pro exemplo circulum. Hujus mensura invenitur, quando scimus longitudinem peripheriae, & potest, ea cognita, definiti circuli magnitudinem esse eandem quae trianguli, cujus altitudo BA (Tab. II. fig. 4.) est semidiameter hujus circuli, & cujus longitudo est ejusdem circuli circumferentia. Id ARCHIMEDES demonstravit. Quare omnes figurae curvae, quae per rectas figuras mensurantur, eae omnes per triangulum mensurantur, hanc ergo Trigonometriae scientiam nosse oportet, ut cognoscantur corporum vires, molem enim corporum cognoscere non possum, nisi cognoverim corporum massas, quae mensurantur per triangulum ope Trigonometriae.

In

Oxonii an. 1670. 8. Caeterum ad perfectiorem Geometriae cognitionem pertinent APOLLONII PERGAEI Conicarum L. VII. Oxonii ab HALLEIO an. 1710. in fol. edit. aut ab ALPH. BORELLO 1661. fol. Priores enim editiones, ut Bononiensis an. 1566. folio cum lemmatis PAPPI edita a COMMANDINO, Libros tantum quatuor habent. Porro GREGORII a S. VINCENTIO doctissimum inventis & altioris analyseos seminibus opus AntWerpiæ an. 1647. in folio editum. Compendium APOLLONIANARUM Sectionum Florentiae an. 1722. a GUIDONE GRANDI datum. Ad linearum rationes altiores & locos Geometricos PAPPI Alexandrini collectiones Bononiae 1660. fol. editae. Ad Curvas varii supra recensiti not. (a) pag. 23. & ISAACI BARROW Lectiones Geometricae. Londini 1670. 4.

In triangulo jam occurrunt tria latera, tres anguli, & area; ergo tota Trigonometria seu trianguli mensuratio est id, quod explicat, quomodo ex tribus datis inveniatur omne, quod occurrit in triangulo, & in hoc consistit tota hæc pars Geometriæ. Sit ergo triangulum; in toto hoc triangulo possunt considerari septem diversa, nempe tres lineæ, quæ triangulum faciunt; tum spatium per has tres lineas coercitum, quod vocatur area, & tres anguli, qui huic triangulo insunt, hæc sunt septem. Tribus autem ex his septem datis, reliqua quatuor semper inveniuntur. Si data fuerint tria latera, dico me inventurum tres angulos & aream; dentur ergo tria latera (Tab. II. fig. 5.) AB, AC, BC. Id docuit EUCLIDES (a), datis tribus lineis tres angulos invenire, & perpendicularem ad basim; verum si perpendicularis hæc linea v.g. AD, cognita est, jam basis BC multiplicata per illam perpendicularem AD dabit aream duplicem areæ trianguli, nempe parallelogrammum EBCF, cujus dimidium semper dat aream trianguli, ex *Proposit. 41. Lib. I. EUCLIDIS*. Deinde possum trianguli huius tres angulos invenire per doctrinam ex tabula sinuum, tangentium, & secantium haustam; itaque, si tria latera data sint, trianguli aream per *secundum Librum EUCLIDIS*, & per tabulam etiam tangentium & secantium angulos ipsos invenire possum. Si duo latera & unus angulus dentur, reliqua etiam inveniuntur. Si tres anguli tantum dentur, idem est, ac si duo anguli darentur, quia tres anguli cujuscunque trianguli tantum faciunt duos rectos, & duobus angulis datis tertius semper datur, quod sit eorum ad duos angulos rectos complementum. Si vero duo anguli dentur & unum latus, tunc potero reliqua quatuor deducere, eaque ratione mensurantur triangula, ope Trigonometriæ.

Geometriæ hanc artem, quæ est nobilissima in tota Mathesi, invenerunt exinde, quod EUCLIDES *Lib. X.* demonstravit maximum angulum maximo lateri semper esse oppositum; hinc sequitur in omni triangulo æquilatere omnes angulos etiam æquales esse, & sic porro. Viderunt adeo inter magnitudinem lateris & capacitatem anguli semper esse proportionem aliquam.

Nam ex angulorum proportionem elegans oritur cognitio rationis inter latera per *tractatum de sinibus, tangentibus, & secantibus*. Si quis principiis Euclideis imbutus sit, tum rem istam poterit intelligere, præsertim, si sequentes tum evolverit Auctores.

LANSGERGII *de Geometria triangulorum Libri quatuor* (b). Opus in 4. editum est apud *Blaeu*, Amstelodami 1631. quæ optima est editio.

D 2

Aut

(a) EUCLID. I. Prop. 22. WOLF. Elem. Geometr. n. 205. 206. 207.

(b) Primus Canonem Sinuum novum, sed dudum nunc obsoletum, ob mensuras & divisiones mutatas edidit JOHANNES REGIOMONTANUS Nurembergæ 1537. fol. deinde PHILIPPUS LANSGERGIUS an. 1663. Middelburgi excudi fecit Geometriam Triangulorum, quæ & planam & sphericam comprehendit Trigonometriam. Sed ingens rebus istis mutatio accessit postquam JOHANNES NEPERUS Edimburgi an. 1619. 4. Logarithmorum Canonem edidit, quo admirabili certe invento, multiplicandi & dividendi molestia sublata est, de calculis difficilioribus. Mutatis deinde formulis ab HENRICO BRIGGIO, additis novis Logarithmis, ADRIANUS VLACQ, centum millium numerorum edidit Logarithmos, Canonemque tangentium & secantium addidit, quod opus Goudæ an. 1633. in folio, & alias editum est. Sæpe etiam & Tabulæ sinuum & tangentium solæ, & earum compendium ad numeros 10000, typis impressæ sunt. Eo opere aut majore aut minore frequentissimus omnium nunc usus est.

N. 1 J. NEPERI, qui hic citatus est, Liber prodiit prius Edimb. anno 1617. sub titulo *Rab-dologia seu numerationis per virgulas*, Edimburg 1617.

Aut si velit eundem tractatum amplius & clarius deductum, legat ANDRÆ TACQUET *Geometriam practicam*. Est liber in fol. Antwerp. 1669 (a).

Aut etiam *Tabulas sinuum, tangentium & secantium* editas per ADRIANUM VLACQ, & renovatas per FRANCISCUM VAN SCHOOTEN (olim Lugduni Batavorum Matheseos Professore) Dordraci editas an. 1664.

Hi Auctores totam hanc rem dilucide docent, verum non possunt intelligi, nisi prius intellecto EUCLIDE, & propositione modo exposita. Horum Auctorum optimus est TACQUETUS.

Si quis dicta hactenus accurate noverit, Geometriam propriam absolvit, nempe cum Trigonometria elementis EUCLIDIS conjunctis.

Ex præmissis principiis mensura cognoscitur omnium spatiorum planorum rectilinearum & curvilinearum, quæ ad rectilinea referri possunt; tum quoque spatium gibbum cavorum quorumcunque, quæ ad plana reduci possunt, adeoque corporum his superficiebus contentorum habetur mensura.

Hæc credo optime hac ratione addisci. EUCLIDES accurate docet mensuram figurarum rectilinearum. ARCHIMEDES vero agit de curvis, quæ ad plana reduci possunt, & sic porro, adeoque si quis accurate addiscat utriusque inventa, solidum fundamentum adjecit pro suis studiis, quæ omnia sequentibus nituntur. 1. Mensuræ linæ rectæ; 2. Mensuræ quadrati; 3. Mensuræ trianguli; 4. Mensuræ cubi.

1. Mensura linæ rectæ habetur, quando longitudo aliqua cognita applicatur successive illi linæ, & retinetur in memoria, quoties cognita mensura ingredi hanc lineam possit. Ita Geometræ mensuraturi aliquam longitudinem, duos palos in plano disponunt, deinde longitudinem quamdam cognitam ab uno palo usque ad alterum toties applicant, quoties applicari potest, ita vident illam longitudinem mensurandam continere mensuram cognitam toties, & hæc est mensura linæ rectæ.

2. Mensura quadrati est communis mensuræ spatii per duplicem extensionem mensurabilis. Obtinetur autem hoc modo. Sit spatium (Tab. II. fig. 6.) ABCD, quod dimetiri oportet. Sit tunc *abcd* spatium quoddam cognitum, non linea, sed spatium, idque quadratum, adeoque quando dicitur spatium cognitum centum pollicum, tum intelligimus semper pollicum centum in quadrato, hoc est, in eo spatio disponi posse centum quadrata, quorum singulorum longitudo & latitudo sit unius pollicis. Sit porro spatii mensurandi ABCD linea una AC, altera CD. Ad hæc latera applico quadrati mei cogniti latus nempe *ac*, & invenio ter in CD contineri, bis in AC. Ajo ergo si linea *ac* fuerit pedis unius, spatium ABCD sex pedes continere; multiplico nempe numerum partium æqualium mensuræ meæ, quæ sunt in linea AB, nempe tres per numerum similium partium in linea DB, nempe duas, invenio numerum sex, qui designat totidem quadrata, quorum latus est mensura mea cognita, sex nempe quadrata, quorum singulorum longitudo & latitudo est unius pedis. Ita in universum, quan-

(a) Opera nempe omnia Antwerpiæ 1669. f. & 1708. fol. excusa. Nuperum opus *de la Coupe des pierres*, quod D. FREZIER Argentorati an. 1738. 1739. edidit, & quo Geometria practica traditur, post PRÆCEPTORIS prælectiones prodiit.

quando dicimus aream aliquam continere decem pedes, tunc intelligitur continere decem spatia, quorum singulum est pedis unius quadratum, hoc est decem quadrata applicari ei possunt, quorum singulorum longitudo & latitudo est unius pedis. Et sic omnes mensuræ spatii fiunt.

3. Mensura trianguli fit hac ratione. Sit triangulum (Tab. III. fig. 1.), si nunc detur numerus partium in linea AB, & numerus partium in perpendiculari CD, & hi numeri multiplicentur per se invicem, habebitur area trianguli. Sint v. gr. partes cognitæ quatuor in linea AB, & sint partes ejusdem generis tres in linea CD, multiplicentur per se invicem, habebuntur 12 partes hujusmodi. Deinde sumatur dimidium hujus numeri 12, habebitur area trianguli. Id facile demonstratur, nam priori multiplicatione inventa est figura, quæ duodecim spatia continet hujus datæ mensuræ, sed dimidium hujus rectanguli est triangulum, ut docet EUCLIDES *Libro primo*. Sic in universum area trianguli semper fit multiplicando numerum partium baseos in numerum partium perpendicularis a vertice ductæ, & sumendo dimidium spatii.

4. Mensura cubi demonstranda est, quomodo nempe mensurentur ipsa corpora, hoc est spatia illa realia, & divisibilia per tres dimensiones. Hæc corpora omnia mensurantur per cubos. *Cubus* est figura terminata sex quadratis superficiebus, omnium simplicissima, quæ in mathematica excogitari potest. Sit linea AB (Tab. III. fig. 2.), supra eam sit descriptum quadratum, quod in icone non potest pingi, nisi ex obliquo visum, & tunc quinque quadrata erecta ad istius primi quadrati latera constituentur, quæ quadrata sibi mutuo applicentur, tunc corpus ita natum vocabitur cubus, nam habet sex superficies, unam quæ basis est ABCD, alteram ipsi parallelam superius, nempe EIGH, tertiam elevatam ex latere AB nempe AEHB, quartam ex latere AC, nempe AEIC, quintam ex latere CD, nempe CIGD, ultimam ex latere BD, nempe BHGD.

Iam omnis alicujus corporis mensuratio, quam intelligit Geometra, fit per hujusmodi cubum. Quando enim Geometræ dicunt dolium continere decem pedes, tunc intelligunt pedes cubicos, pes autem cubicus constat sex superficiebus, quarum singularum quadrata habent pedis unius longitudinem & latitudinem, quod perfectum est quadratum. Mensuratio dicitur applicatio cubi ad hoc spatium, & corpus mensuravimus, quando didicimus, quoties cubus cognitus possit applicari isti corpori & spatio. Si v. gr. cubiculum mensurare volueris, sume mensuram longitudinis hujus cubiculi, sit v. gr. viginti pedum, tum latitudinis mensuram pone esse etiam viginti pedum; multiplica hæc per se invicem, fiet quadratum 400 pedum, æquale superficiei toti imæ cubiculi. Tunc sumo altitudinem cubiculi: fac etiam viginti pedum esse, duc in se invicem 400 & 20, prodibunt 8000 pedes, æquales spatio hujus cubiculi; hoc est, si haberem cubum, cujus unumquodque latus esset unius pedis quadrati, & si hujusmodi cubos haberem 8000, replerent perfecte spatium totius cubiculi: neque aliud mensura est, quam experiri quoties cubus notus possit applicari corpori mensurando.

Qui nunc accuratius vult discere, quomodo varia corpora variæ figuræ & va-

variæ magnitudinis mensurentur, videat illam partem Geometriæ, quæ Stereometria dicitur, a στερεόν *solidum* & μετρέειν *metiri*, alio etiam nomine dicitur σωματομετρία, nam σῶμα significat *corpus*, hinc Somatometria est mensuratio corporum, uti στερεομετρία solidorum mensuratio.

Hæc pars Geometriæ optime descripta habetur ab ANDREA TACQUET (a) qui scripsit tres Libros in folio. Antwerpæ editos, quorum ultimus agit de Stereometria, ubi egregie, stiloque brevissimo conscripsit illam Geometriæ partem.

Absolutum ergo est hoc Caput, & illa pars Physices, quæ agit de natura corporum, iisque, quæ ex ea immediate sequuntur. Sequitur, ut de mutatione corporum, quæ semper a motu pendet, agamus.

(a) Vide supra, pag. 28. Not. (a):



M E T H O D I S T U D I I M E D I C I

P A R S III.

M E C H A N I C A.

C A P U T I.

De Motu in genere.



Uⁱ novit generalia corporis in se spectati attributa, ordine ducitur, ut mutationes corpori possibiles intelligat. Quamdiu corpus aliquod simpliciter cogitamus, prima illa idea manet in æternum, neque, si in æternum de eo corpore cogitarem, ullam mutationem conciperemus, sed maneret idea illa istius corporis, nisi alia idea simul occurrat. Duo adeo occurrunt in rebus consideranda, 1. rerum essentia, hæc nunquam mutantur in rebus, sed in æternum eadem manent; 2. ea, quæ sequuntur ex ea essentia, sed quæ non obtinent ex rei essentia sola considerata, verum quatenus concipitur illa res cum alia quadam re conjuncta. Hoc nunc Metaphysices fundamentum est. Ita si cogitarem sphaeram quiescentem, quamdiu nihil simul cum ea idea conceperis, in æternum concipies sphaeram quiescentem: verum si illa sphaera moveri dicitur, jam oportet concipere aliam rem a sphaera diversam, & ejus naturam tenere simul cum natura sphaeræ, est enim aliquid in ea sphaera, quod antea non aderat, hoc est, mutatio facta est in ea, & hæc mutatio est a motu, qui in ea sphaera est, & prius non inerat. Ergo omnis mutatio ponit, præter rem ipsam, de qua cogitavi, concipere me simul aliud quoddam, quod non erat in re sola.

Sed præterea notandum est, si duas res simul conceperim, tunc id compositum, quod ex utraque re conjungitur, & ipsum immutabile esse. Concipio v.g sphaeram cum motu, dico omnes proprietates, quæ sequuntur ex sphaera cum motu, inseparabiles esse a sphaera cum motu; nam si eam sphaeram concipio cum motu, & nihil aliud simul concipio, alio momento temporis post iterum concipiam eam cum motu, & alio momento post iterum; ergo in æternum eam sphaeram concipiam cum motu, quamdiu nihil aliud simul concipio. Verum, si concipio sphaeram cum hoc motu incurrere in aliam sphaeram, jam concipiam illam sphaeram cum motu & præterea sphaeram conjunctam, quam a principio non concipiebam in idea; ab hac autem nova idea poterit oriri idea prioris sphaeræ cum minori motu, & cum motu aliter determinato, hoc est, facta erit mutatio. Hinc cernimus, quot mutationes in rebus sint, & quomodo semper oriantur ab alio quodam, quod concipitur simul cum ea re, cujus conceptus primo nostro animo oblatus est.

Unum corpus vocamus id, *cujus partes ita inter se coherent, ut motus uni parti corporis impressus, totam molem moveat, non vero ad tactam partem a non ad tactis separet*. Nunquam possumus dicere, quid sit mutatio in rebus introducta, nisi hoc adnotemus. Omnium primo enim nobis est dicendum, quid sit unum corpus. Omissio hujus definitionis in causa fuit, cur Mathematici & Physici plurimi longe erraverint, eosque hæc in primis omissio in confusionem deduxit. Nam unum corpus constat ex partibus ita coherentibus, ut si una moveatur, non separetur a reliquis, sed moveantur omnes. Quid ergo vocabimus unum corpus, an atomum; verum ea constat ex aliis partibus. Quid ergo dicemus unum corpus? Ego revolvendo totam hanc materiam voco unum corpus hanc cretæ glebam, cur? quia, si motus aliquis, v. g. hic digitus, impingit in unam partem cretæ, tota moles movetur simul, & illa pars, quæ motum recipit, a reliqua non discedit. Neque enim unum corpus dicere oportet, quod una superficie continetur, ut plurimi dixerunt, hoc enim est nihil dicere, nam sunt corpora, quo una superficie continentur, & tamen non sunt unum corpus, ut aqua quidem continetur una superficie, verum constat infinitis numero corporibus, quorum unum, si movetur, statim ab aliis recedit. Aqua vero tunc demum vocatur unum corpus, quando in vase quodam coercetur ita, ut una pars mota ab aliis recedere nequeat. Ergo unum corpus tunc dico, quando motus in unam ejus partem impingens, non potest eam separare ab aliis, quas non attingit, sed omnes simul movet. Corpora vero multa vocabimus ea, quæ constant ex partibus mutuo ita sibi junctis, ut si motus impingat in unam partem, separet eam ab aliis, & reliquas non moveat, ut in magno v. g. saxo, si malleus tanta vi agat, ut unam partem separet a reliqua mole, tunc hæ duæ partes vocantur duo corpora, & in aqua exemplum etiam habetur.

In uno corpore simul concepto ut uno, nulla potest concipi, & quod idem est, nulla potest accidere mutatio, nisi locus totius, & figura, & unitas mutantur; etenim hoc est fundamentum omnium mutationum in physicis. Explicanda etiam sunt hæc tria, nam præter ea nulla contingit mutatio. Frustrum cretæ v. g. sit iterum unum corpus ex definitione, si concipio illud mutari, hoc est, si eam creatam concipio cum alio quodam, quod ex ejus natura non fuit, hæc poterunt contingere, quæ dicam.

1. Manet figura, manet unitas partium, sed loco mutatur illud corpus, hoc est, tota moles, sive totum unum, existit modo in una parte spatii, modo in altera, & sic porro

2. Manet unitas partium, manet in eodem spatio, hoc est, manet ut ante in loco suo, sed partes aliquæ ab aliis non recedentes, mutabunt tantum suum situm, ut si v. g. corpus quoddam esset ex cera, tunc ego non mutato loco corporis possem digitum imprimere, & facere, ut quædam partes plus peterent centrum quam ante, adeoque motus transponeret quasdam partes; verum totum unum retineret totum suum locum, sed mutaretur figura.

3. Potest fieri, ut hoc unum fiat in plura corpora, manentibus tamen omnibus in eodem loco, hoc est frangetur, seu reducetur in fragmenta, idque fiet, quando pars, quæ motum recipit, a reliquis separatur.

Hæc est omnis mutatio physica, quæ in rerum natura dari potest. Omne ergo
cor-

corpus semel conceptum, tantum tres diversas admittit mutationes, quæ semper a motu dato pendent; 1. mutat locum suum remanente ejus integritate, id est, cohesione partium, & figura; 2. mutatur ejus superficies, hoc est, figura, remanente tantum unitate, & non mutato loco totius; 3. una pars secedat ab aliis, id est, si motus impingit unam partem, non transferetur tota moles, sed pars mota recedet a reliquis, & hoc vocatur divisio.

Prima Motus proprietas.

Phyficam ergo cogniturus discat proprietates motus. In motu vero consideratur 1^o. translatio totius corporis per motum uni parti impressum. In hoc casu cohesio in partibus requiritur tanta, ut per impetum, primo ad tactu illi parti impressum, tolli non possit cohesio partium a reliquis, hoc est, ut motus illud corpus non dissolvat, seu illam partem ad tactam ab aliis non separet. Pro exemplo, habeo cretæ fragmentum, pono hoc ibi supra mensam, occupat certum locum; ut nunc hunc locum relinquat, debent ejus partes ita cohærere, ut, si digitus impingat in hanc partem orientalem cretæ, eam non separet a reliquis occidentalibus, hoc enim posito non totum fragmentum, sed pars impulsæ sola moveretur. Si vero cohesio tanta est, qualem motus impressus superare nequit, tuncque digitus impingit in hanc cretam, motus ille huic parti impressus, facit ut creta ista hoc spatium relinquens uno post momento in spatio vicino existat, hic jam est motus totius corporis, & hæc est prima proprietas motus.

Secunda Motus proprietas.

Requiritur etiam, ut tota motus copia uno momento communicetur toti corpori, hoc est, ut tota moles corporis simul moveatur, sive mutet integre locum, requiritur omnino, ut motus impressus uni parti, continuo omnibus partibus communicetur, alias hæc pars sola moveretur, & fit separatio partium, id est dissolutio corporis, non vero motus totius, quod est contra hypothesein. Sit illa creta, iterum ibi posita, ponamus digitum huic cretæ motum applicare; ergo eo momento, quo motum applico huic parti cretæ, necesse est, ut eo momento ipso in omnibus aliis cretæ partibus excitetur idem ille motus, aliter illa pars mota meridiem versus perget hoc momento, nec reliquæ sequentur, hinc discedet a reliquis, neque fiet motus totius, quod est contra hypothesein; nam agimus hic de corpore uno, quod locum suum omnino mutat, servata unitate partium & figuræ.

Tertia Motus proprietas.

Requiritur etiam, ut illa motus copia per totam molem æquabiliter & proportionaliter distribuatur. Utilissima in tota natura sunt, quæ nunc consideramus. Pono nempe corpus divisum v. gr. in centum partes, ex quibus constat, & pono motum unius gradus applicari uni parti, dico necesse esse, si totum corpus moveri debet, ut simul ipso eo momento temporis, quo applicatur ille motus uni parti, distribuatur idem eodem momento ita per totum corpus, ut singulæ partes eodem momento centesimam partem hujus motus accipiant, alias secederent a se mutuo partes, neque tota massa moveretur; nam illa pars mota primo momento moveretur, dum aliæ adhuc quiescerent, ergo partes illæ non manerent junctæ, sed discederent a se invicem. Si enim duo corpora se mutuo contigerint, eorum vero unum eo momento moveatur, dum alterum quietum manet, separabuntur

a se invicem, & unio perit, quæ certissima est impenetrabilis naturæ vis. Motus ergo qui uni parti communicatur, debet necessario communicari eodem momento omnibus partibus, uno momento temporis, Inquam, & in eadem proportionem hoc est, æquabiliter; adeoque unaquæque pars in hoc corpore centesimam partem motus totius, & reliquæ 99 partes etiam singulæ habebunt eodem momento $\frac{1}{100}$ partem. Hæc naturæ incognita lex est, sed necessaria.

Quarta Motus proprietas.

Sed corpus perget moveri per illum motum jam inhærentem. Hoc corpus cretæ prius quiescebat, quando illud (nempe digitus) in quiescentem cretam impegit, ea ergo ab illo motum accepit. Nunc adeo concipio in idea corporis unum motum. Verum, si nihil aliud nunc concipio in hoc corpore, quam quod præcedenti momento adfuit, quando illud concipiebam cum motu, hoc certe secundo momento idem corpus iterum cum motu concipiam, nam eadem causa faciet eundem effectum, & nihil interim accidit corpori, quod motum ab eo abstraheret.

Quinta Motus proprietas.

Ergo movebitur corpus in infinitum, si consideretur tanquam solum; hoc jam supra explicui.

Sexta Motus proprietas.

Corpus semper movebitur per lineam rectam, quæ producitur per primum inchoatum motum. Si moveatur corpus a puncto A ad punctum B, & per lineam rectam moveatur; si nunc pergat moveri, semper per eandem lineam rectam movebitur, si nihil aliud accedet. Hæc lex nihil difficultatis in intellectu parit, nam causa, quæ hoc momento per lineam rectam corpus hoc movet, quum altero momento sit eadem, movebit iterum per lineam rectam, & cum eadem sit causa, etiam eadem velocitate hoc momento movebit corpus, quo præcedente tempore movebat, nihilque potuit causæ adlegari cur aliter contingeret; ergo semel motum corpus per lineam aliquam, semper æqualibus temporibus æquales partes ejusdem lineæ rectæ absolvet, quamdiu ille idem motus manet.

Septima Motus proprietas.

Nec mutabitur in eo corpore aliquid, præter solam variam existentiam in variis locis. Hæc est ultima lex motus, quam sic explico. Corpus, de quo agitur, accepit motum, ut spatium jam occupatum relinqueret, & aliud, quod ab eo corpore non replebatur, occuparet; ergo nihil patitur, nisi quod per motum inhærentem nunc in loco A existat, mox in B, & sic porro, & cum res semel concepta maneat eadem in idea mea, quamdiu aliud quid non additur, ergo, si conceperim motum neque quidquam resistens una conceperim, tunc concipio in æternum hoc corpus moveri, & nihil aliud.

Si causa motus manet eadem, æqualibus temporibus æqualia semper spatia absolvet, & semper per lineam rectam a primo initio motus inchoatam movebitur, quia nihil novi huic corpori accedit, sed omnia hoc momento sunt eadem, quam primo momento conceptus. Hæ sunt proprietates omnes, quæ in uno corpore moto contingunt, quando ab omni alio seorsim concipitur. Absolvi igitur primum genus mutationum; sequitur jam secundum, hoc est figuræ a motu mutatio.

Vidimus mutationes eas, quas motus producit in corpore, quod vocamus unum, non

non posse plus, quam triplicem mutationem corpori illi, quod vocamus unum, inferre, nempe 1. movere totum corpus ex loco suo, servata figura & unitate; 2. servato loco & servata unitate mutare figuram; 3. servato loco, & servata figura dimovere partes a se invicem, hoc est, dissolvere. Quænam leges sint, quæ obtinent in uno scilicet corpore considerato, ut moto, nunc exposui, quando nempe simpliciter totum locum mutat; hinc ad reliqua pergens considerabo nunc ea, quæ separant partes a se mutuo.

Si motus detur uni parti corporis unius, & si per eum motum pars mota recedat a reliqua mole non adtacta, tunc illa reliqua moles quieta manet, & tardius mota retrogreditur.

Est sane maxime amœnum & necessarium in physicis a priore posse definire, quid ex motu dato fieri oporteat, hinc contemplatio hujus propositionis utilissima est, agitur enim nunc de principiis physicis & mechanicis omnium mutationum, quæ in natura fieri possunt. Dico ergo si corpori uni (quid sit corpus unum jam explicatum est) applicatus sit motus ad aliquam partem, nec aliæ partes motum acceperint una, & ille motus separaverit illam partem a reliquis non adtactis, dico mutationem inde natam referri posse ad tres casus, qui accurate definiuntur a Mechanicis. Ponamus enim iterum glebam cretæ esse unum corpus (uti jam diximus), si pars ejus tertia receperit motum diversum a reliquis duabus partibus, hoc motu secedet pars tertia, & tunc triplex casus obtinere potest. Hæc pars mota secedet ab hoc motu dato, tum fieri potest, ut reliqua moles ibi in loco maneat; vel, ut hac parte mota, etiam reliquæ partes versus eandem plagam moveantur, sed tardius quam pars, quæ diversum motum accepit, atque adeo ea pars semper præcedat, quæ prima motum accepit, vel denique illa parte mota, & hac ad orientem pulsa, reliquæ partes retrocedunt versus occidentem. Hic triplex motus est, quo corpora dissolvuntur.

In parte non adtacta causa sistens & retropellens major absoluta quiete requiritur. Profundæ speculationis theorema est, quod hic proponimus; dico in hac propositione, si in separatione una pars recedit ab altera, ergo illa pars, quæ motum non accepit, & vel remanet, vel movetur retrorsum, habet causam aliquam, a qua sistitur vel retropellatur, eaque causa major esse debet, quam absoluta quies. Consideretur v. g. corpus cretæ in mensa repositum, & per propositionem præcedentem ponatur, motum separare hanc cretam in duas partes, jam eo momento, quo motus impingit in hanc partem A, reliquam molem eo momento quiescere oportet, respectu hujus massæ motæ & separatæ, aliter actum est de separatione, nam si eadem parte A mota etiam altera pars B moveatur, tunc partes simul de loco in locum transeunt, manent sibi motu appositæ, & nihil fit, nisi localis motus totius corporis, quod est contra hypothesin, agimus enim de corpore dividendo. Nam si aliud nihil concipiam, quam cohæsiōem & quantitatem partium in hoc corpore, & tunc simul motum datum uni parti, nulla potest fieri separatio corporearum partium, utcunque violentissimus sit motus datus; nam si cohæreant partes istius corporis & una pars motum accipiat, & nihil præterea adsit in eo corpore, nullæ separabuntur partes, sed totum debet deferri corpus. Ponamus v. g. corpus absolute in partibus cohærens, ut cera, & nullum aerem resistere, dum eam ceram maximo impetu projicio, non separabitur illa pars mota ab altera; sed ut fiat motus se-

paratorius, debet hic esse obex resistens, in quem incurrat quædam corporis pars A, & obex retrougens hanc partem B retropellens, dum illa pars A movetur, & tunc fiet separatio. Ut ergo separatio fiat & divisio, eo momento, quo communicatus motus, hæc pars A ab altera B secedere debet; cohæsiō itaque utcunque parva major est, quam absoluta quies, nam quies partium inter se mutuo nullum nixum in cohæsiōnem ponit (a); imo vero quies cohæsiōni contraria est, nam partes cohærentes habent nixum in se mutuo, adeoque cohæsiō negat quietem. Si nunc cohæsiōnis causa major est quiete, & causa separans, sive motus major est quam illa cohæsiō, sequitur illum motum etiam majorem quiete esse, & causam, quæ facit, ut una pars corporis retro versus moveatur seu retropellatur, quum dato motu altera antrorsum pellitur, esse majorem quiete. Si esset absoluta quies, non moveretur illa pars retrorsum. Separatio adeo ponit semper causam naturalem aliquam, quæ major est, quam cohæsiō, & quam absoluta quies, quæ facit, ut illa pars B quiescat, dum altera A movetur & quæ facit ut illa B retrorsum pellatur, cum hæc A antrorsum pellitur.

In corpore gravi facile est exemplum dare. Pone hujusmodi corpus hic versus centrum terræ descendere, cum vi gravitatis deorsum tradatur & pellatur, si nihil nunc esset in via, nulla foret divisio & separatio corporis, & corpus descenderet ad centrum usque terræ. Si vero obex esset in via, & corpus una parte sua in eum obicem incurreret, dum interim gravitate reliquæ partes pelluntur, una tunc pars deorsum pelleretur, altera pars sisteretur, & tardius mota retropelleretur. Hinc duo requiruntur in separatione, 1. una causa, quæ unam partem moveat corporis 2. altera, quæ retineat aliam partem; & si duæ causæ diversæ non adessent, fieret tantum transpositio totius corporis; vidimus enim paulo superius, quando una pars corporis unius aliquem recepit motum, eodem momento totum corpus recipere motum omnem, sed divisum per omnes partes æquabiliter; eo vero posito motus tantum esset translocatio corporis de loco in locum. Ergo semper in separatione corporum alius debet esse motus sistens & retardans, isque debet major esse, inquam, absoluta quiete, aliter corpus non vocaretur unum, nam si non esset major absoluta quiete, id esset, quia nulla foret cohæsiō, hinc non vocaretur corpus unum, nam partes quiescerent tantum juxta se mutuo, in unum vero non abirent.

Hæ binæ causæ, quo majori vi seu nisu sibi mutuo opponuntur, eo violentior fit separatio partium, hoc est, destructio totius. Hoc facile intelligitur, & evincit experientia per plures mechanicas operationes, omnes enim separationes debent semper per unam vim motum sistentem, & quasi obicem aut causam retropellentem, & per alium motum valide versus aliam plagam agentem fieri. Quo nunc plures causas in diversas partes agentes possumus applicare, eo citius fiet destructio; v. g. si cretam hanc vellem omnino in pulverem reducere, ponerem in mortario, &c. & sic variis agitationibus & variis retropressionibus, & resistentiis a parte mortarii, omnino solveretur hæc creta in pulverem.

Absolvi nunc omnes motus separatorios; motus etiam qui separat partes a se mutuo, semper est localis motus respectu partis separatae: hinc ea, quæ de motu locali dicta sunt, tantum repetere oportet, & addere ea, quæ diximus de causa resistente

(a) Vide supra, pag. 12. Not. (a).

sistente & retropellente, & his binis datis habebimus causas seu causam divisionis corporum. Tertium genus mutationum est, quando retento spatio & integritate sua corpus mutatur in figura sua; hic vero de perfecte duris corporibus ago, ut conceptus sit clarior.

Si unius corporis figura mutata, moles corporea manet una, tunc erunt quædam partes separatæ a loco veteri, & tamen adhuc cohærentes toti. Suppono esse frustum ceræ libræ unius, illi frustulo ceræ digito imprimo foveam, si antea cera perfecte sphæricum corpus esset, nunc non erit perfecta sphæra, ergo pondere, mole, loco non mutatis, mutatur tamen figura; hinc ejus sphærae superficie mutata, libra tamen ceræ manet, hoc est tota moles adhuc adest, omnes partes adhuc cohærent, & si simul transferantur, manet corpus unum. Ergo pars veteris cohæsionis supererit, licet post separationem nova cohæsiō introducta fuerit.

Pone corpus AB (Tab. 3. fig. 3.), pendere libram unam, pone eam habere figuram, quam videmus, parallelogrammi, nempe prismatis; pone ejus corporis figuram mutari, ut tamen eadem moles supersit. Dico nunc, potest hoc fieri duplici modo, 1. si illa pars CB nunc alibi ponitur in loco DE, & tamen sic cohæret parti AB, ut sola pars CB transposita hunc motum FE peregerit, totumque AD CB sit idem adhuc corpus constans ex duabus partibus AD & CB; sed pars CB mutata est in DE, ergo corporis figura mutata est; hinc quædam partes locum mutarunt, quædam adhuc cohærent, ut in puncto D; & sic corpus in figura mutatur, ut tamen maneat unum, & omnem suam molem conservet.

Alter modus est, quando una pars corporis separatur, ut tamen priori iterum se applicet & alio nunc modo cohæreat. Sit idem corpus AB, (Tab. III. fig. 3.) cujus partes tenaces sint, & subito flectatur, jam quidem in flexione aliquæ partes separabuntur, sed iterum appositæ prioribus cohærebunt, nam ex hac flexura mutatus est locus partis BC, in locum DG, & corpus AB mutatus in hanc figuram CG, quia pars ejus corporis CB perfecit hunc motum BIG, ergo in hoc casu fit, ut cohæsiōe partium mutata fiat statim alia cohæsiō, nam cohæsiō, quæ prius fiebat per CD, ea nunc fit per DH.

Tertius casus non datur, quod sciam. Ergo in omni separatione in qua tamen corpus manet unum, ibi alteruter horum casuum fieri debet, nempe vel partes aliquæ separantur cohærentibus adhuc aliis, unde adhuc tota moles manet, vel aliquæ partes mutant cohæsiōem.

Quando prior causa obtinet, corpus vocatur *flexile*. Exponitur hic idea vera corporum flexilium seu mollium dictorum, quorum nempe partes ita cohærent, ut in aliam cohæsiōem mutari possint, & tamen cohærere, nam semper alia cohæsiō partium fit, dum aliquod corpus flectitur.

Quando nunc in hac ipsa flexione, pars corporis ex situ mota, manet in novo situ suo, tunc corpus *molle* vocatur.

Quando vero figura per flexibilitatem mutata, desinente causa flectente, se restituit in veterem situm & figuram, tunc corpus *elasticum* vocatur.

Hæc sunt omnia quæ concipi possunt de corporibus figuram mutantibus, mole retenta, adeoque in hisce paucis fundamentalibus positionibus omnia habemus, quæ a mutatione & motu fiunt. Sic cylindrus ex cera, pone te eam flexisse, eamque man-

mansisse in situ flexo, hæc cylindrus corpus molle dicetur. Pone vero virgam chalybeam, illamque te utroque extremo flectere, flectetur certe, est enim corpus flexile, sed, quando desistis premere, continuo virga restituetur propria vi in lineam rectam, & hæc vis vocatur elater, seu *vis elastica*.

Omnis motus qui in rerum natura est, fit 1. a gravitate, 2. ab alio corpore impingente, 3. a vi attractrice. Corpus quodcunque conceptum solum absque ulla alia re concipitur quiescens in æternum, & nihil unquam aliud de eo concipitur. Si vero corpus idem concipiatur cum nixu descendendi versus centrum terræ, vocatur illud grave. Si creta hæc, quæ quiescens concipitur, destructa aut subtracta mensa caderet in terram & descenderet versus centrum terræ, tunc certe inciperet in ea creta motus a principio ipsi inhærente, & iste motus vocatur *gravitas*, seu *vis centripeta*, ut vocavit magnus NEWTONUS, idem enim est.

Verum tollatur gravitas, & concipiatur hoc corpus unum A quiescens, & simul aliud B in hocce A impingens, jam hæc corpora movebuntur, & illud unum A, quod in hoc spatio quiescebat, feretur in aliud spatium *a*, & hoc voco *motum localem*. Vel concipe hoc corpus A absolute quiescere, & esse ferrum, me vero magnetem habere, quem huic corpori A appropinquem, jam incipiet A moveri, & motu quidem pendente a vi, quam vocamus attractricem; neque novi quo modo aliter vocare possemus. Hæc eadem causa est, seu vis, qua corporum partes inter se mutuo cohærent; v. gr. habeo corpus quodcunque, quod constat ex infinitis partibus, sed adeo cohærentibus inter se, ut eodem motu potius tota massa, quam una sola moveatur, considero nunc hoc corpus, nihil invenio, quam partes, quæ constituunt cujus materiem, & cohæSIONem inter illas partes. Idea cohæSIONis, uti supra apparuit, distincta est ab idea materiæ, ergo vis aliqua datur, quæ facit, ut materies cohæreat. Quænam ea vis sit nescio equidem, adesse tamen video, distinctam a materie, & voco *attractricem*. Ergo motus est 1. vel gravitatis, qui in omnibus corporibus naturalibus reperitur, estque nixus tendendi versus centrum telluris (alia forsan corpora versus alias plagas trahuntur, & versus solem omnes planetæ trahuntur, & stellæ fixæ forte habent alia sua universa, atque suos satellites ad se trahunt); 2. vel est motus localis, hoc est, motus qui datur alicui corpori ab altero corpore, & quo ex uno spatio in aliud fertur. Vel 3. motus in natura excitatur, quia corpus appropinquans alteri habet in se aliquas vires, ut illud moveat, eæ vires dicuntur electricæ, & vires attractrices. Fateor me nihil dicere, & tantum phænomena, quæ observando didicimus, enunciare, non vero causam. Sed nemo hactenus perscrutari causam potuit.

C A P U T I I.

De mensura Motus, sive Mechanica.

N. I.

Mechanica est supputatio quantitatis motus, qui datur (vel demitur) per causas hactenus propositas, uni corpori ab alio corpore. Hæc est optima, quæ potest dari, hujus artis definitio. Mechanica, dico, est supputatio, &c. nihil est enim aliud

aliud quam calculus, & designatio quantitatis illius motus, qui per gravitatem & motum localem, & vires attractrices, conciliatur uni corpori ab alio. Nam motus localis est tantum transmutatio totius, & unius partis quiescente altera, & partium inter se; hinc, si corpus mutatur, semper aliquem motum amittens absentem recipit. Ars nunc, quæ docet, quomodo hoc fiat, & quid inde fiat, dicitur apud Mathematicos Mechanica. Hanc etiam artem necessariam esse Medico nemo non videt.

Facultas præfens corpori & illi inhærens ad motum dandum & auferendum alteri, dicitur ejus corporis vis. Magna est quæstio inter Philosophos de viribus corporum, mihi vero vis in aliquo corpore, est tantum facultas, seu potentia, illi corpori inhærens, qua valet motum dare & motum auferre alteri corpori, & nihil quidquam præterea.

Vis omnis est vel resistens vel impetum faciens. Vim resistenter vocat Magnus NEWTONUS *vim inertiae* (a), alteram vero vim vocat impetum, vis enim est id, quod motum dare potest, & minuere, & aliter dirigere. Ut NEWTONIANAM elegantem hanc sententiam intelligamus, sic res concipienda est. Sit v. gr. massa marmoris decem pedum cubicorum, eaque sit ex filo pendula, quiescet perpendiculariter ad horizontem. Detur nunc per alteram massam unius pedis, cadentem in eam, quam pendulam diximus, impetus, in hoc contactu habetur massa decem pedum quiescens, & massa unius pedis mota, in priorem impacta, hæc vero duæ massæ in puncto contactus sunt quasi una, & ea tota massa ex duabus conjuncta, tanto minori celeritate movetur, quanto nunc conjuncta major erit ea quæ prius sola movebatur. Ergo liquet, ex resistantia decem partium pedum cubicorum minui motum massæ unius pedis, distribuitur enim per decem illos pedes motus ille ex massa unius pedis communicatus, adeoque massa unius pedis tantum amittit, ac communicat, quantum accepit massa decem pedum. Hæc oportet notissima nobis esse, nam si vellemus corpus decem pedum movere, oporteret vim habere, quæ posset decem partes virtutis amittere, & tamen aliquid servare; si enim non amittit de sua quantitate motus, non movebit corpus resistens, quia omnis mutatio est tantum variatio quantitatis motus; ergo in ea causa, quæ aliam mutat, est vis & resistens & impetum faciens, & resistens vis semper æque mutat impellentem, ac impellens vis mutat resistantem, atque adeo æque mutat ac mutatur.

Actio & reactio, hoc est, actio & passio, seu impetus, & inertia, æqualiter agunt. Quando corpus aliquod ovum frangit, non est tantum impetus hujus corporis, qui hanc mutationem facit, quam frangi dicimus, sed est præterea resistantia ejus ovi, quæ una agit. Nam si ovum non habuisset resistantiam, & libere in aere hæsisset, tuque manu pressisses, cessisset tibi prementi, ergo neque fractum fuisset. Si vero debet recipere motum, debet resistere. Sed illud tollere de vi movente vocamus reactionem, etiam in ovo, quæ potius vis est, & quædam vis inertiae. Ergo, quod supra affirmavi, tantum mutatur omnis causa agens, quantum mutat.

Im-

(a) *Principia Philosophiæ naturalis*. L. I. def. III. LEIBNIZIUS eundem contra CARTESIUM proposuit *Journ. des Savans* 1691. & ab eo motu omnes omnino vires Corporum derivavit EULERUS, *Memoires de l'Academie de Berlin*. T. I. & in *Opusculis*. p. 255. Motum ad decubitum vocat, ejusque efficaciam perspexit F. BACO de VERULAMIO de *Augmento Scientiarum*, L. III. C. IV. De vi insita creatura seu de ipsa natura LEIBNIZIUS egit in A. E. 1698. pag. 427. non absque suspitione lecti & parum citati F. GLISSONII.

Impetus est tantum communicatio motus; & *impetum facere*, est motum communicare.

Recipere motum est resistere, sive in sua substantia quantitatem motus accipere; quam corpus impetum faciens habebat, nunc vero resistenti corpori communicat.

Superius dixi, quantum unum corpus mutat, tantum illud mutari ab eo, a quo mutatur, omnis adeo illa mutatio motus, est tantum datio & mutatio motus, motus autem in corpore quiescente prius non aderat, neque tamen de nihilo nasci potest; hinc tantum perit corpori moventi, hoc est corpori quod mutat, quantum dederat idem moto corpori, ac proinde actio & reactio sive mutationes activæ & passivæ, seu mutationes respectivæ, sunt semper eadem iisdem in corporibus.

Mechanica est illa scientia, quæ docet, quantum possit communicari & demi in motu, ut motus inter duo corpora & augeatur & tollatur, & mutetur: nam Mechanica est tantum supputatio quantitatis motus, qui accrescit aut demitur alicui corpori. Mechanicus enim nunquam novum motum facit, ut vulgo creditur; sed motum pridem creatum applicat corpori movendo, & tunc corpus movens tantum exacte amittit motus sui, quantum motum corpus accipit. Nisi ita se haberet lex naturæ, ut motus ab uno communicaretur alteri corpori, destrueretur motus in natura, & nisi demeretur uni, quantum alteri accessit, cresceret motus in immensum, sed neutrum fit.

Ut ergo relatio corporis impetum facientis, & relatio resistentis, inveniri queant ex ordine, requiruntur sex tantum demonstranda.

1. Actio corporis perfecte duri, moti in perfecte durum quiescens, est primum, quod scire oportet. Pono duo corpora perfecte dura, antea vero explicui, quid sit perfecte durum corpus. Horum corporum unum pono perfecte resistere, hoc est quiescere, & alterum motu quodam impingere in illud quiescens corpus, nunc scire oportet ex mole & velocitate data istius corporis impingentis, & ex mole data corporis quiescentis, quid fiat post impactum.

2. Debeo scire actionem corporis perfecte duri & moti A in aliud corpus perfecte durum & motum B in adverso directe contra id motum corpus A impulsam, id est, debeo scire quid fiat, quando duo corpora perfecte dura moventur motu opposito, in unum idemque punctum, in eadem linea motus existens.

3. Debeo cognoscere actionem corporis perfecte duri moti A in alterum corpus perfecte durum motum B præcedens in eadem linea. In hoc casu unum corpus durum præcedit in eadem linea, alterum sequitur & adsequitur id, quod præcedebat; velocius ergo movetur corpus adsequens quam corpus præcedens; hinc debet sciri quid fiat in contactu & post contactum horum duorum corporum.

4. Debeo cognoscere actionem corporis perfecte duri, moti in aliud perfecte durum quiescens, & oblique impingentis; cognoscere, inquam, debeo, quid fiat post impactum inter duo corpora, quorum unum quiescit, & alterum, quod impingit in corpus quiescens, oblique in illud incidit. Dicuntur autem duo corpora *directe impingere in se mutuo*, quando linea, quæ punctum contactus amborum corporum conjungit, etiam transit directe per centrum utriusque corporis, dum se mutuo contingunt. Omne corpus habet centrum gravitatis, hoc est, punctum aliquod intra se, unde, si suspenderetur, hæreret in æquilibrio, cujus puncti adeo condi-

tio est, ut ab ejus omni parte eadem quantitas massæ sit. Quando nunc linea quæ per centrum utriusque corporis transit, etiam transit per punctum, in quo se mutuo contingunt, tunc dicuntur ea corpora directe impingere. Oblique vero impingere dicuntur corpora, quando non per centrum gravitatis horum corporum, sed aliam quamcunque plagam eorum transit illa linea, quæ puncta contactuum conjungit.

Nunc facile inveniemus mutationem illam vicissitudinariam, si linea recta simul per centra gravitatis utriusque corporis transeat. Si vero ea linea, quæ puncta contactus conjungit, non per centra gravitatis utriusque transit, tunc non procedit motus ille per lineam rectam, sed ad latus incidit unum in alterum; ergo intelligendum est, si corpora in se mutuo obliquo ruant motu, quid tunc ab eo motu expectandum sit mutationis.

5. Debeo cognoscere actionem corporis perfecte duri moti, in aliud corpus perfecte durum motum oblique in eandem plagam. Inter hæc duo corpora est aliquod iter commune versus eandem plagam, sed hac cum distinctione, quod unum præcedat, & alterum velocius motum, illud oblique adsequatur, & quod linea, quæ transit per centrum gravitatis, non transit per punctum contactus, sed ad latera est.

6. Debeo intelligere actionem corporis perfecte duri moti, in aliud perfecte durum motum oblique in oppositum. Directe in eadem linea moventur corpora, quando linea, quæ per centra gravitatis transit, etiam parallela est ei lineæ rectæ, in qua corpora moventur, & quando puncta contactuum conjungit. Verum si unum corpus huc versus, alterum alia directione fertur, & tamen incurrunt in quodam puncto in se mutuo, tunc non occurrunt per lineam rectam, sed oblique; hinc, qui novit mathematico calculo supputare mutationes motuum, quæ ab his sex casibus pendent, ille potest omnes leges motuum in corporibus perfecte duris explicare; neque enim plures casus contingunt in perfecte duris corporibus.

Si quis hæc sex proposita brevissime & clarissime intelligere vult, evolvat sequentes Auctores.

1. JOHANNEM WALLISIUM in *Tactatu de percussione*, in 4. Oxonii 1669. Ibi agit de percussione, & de mechanicis; & hanc rem ad finem usque optime deduxit.

2. Vel in *Philosophicis Transactionibus Londinens.* n. 39. (a) hæc etiam inveniuntur, sed sunt tantum conclusiones, non vero demonstrationes a priori.

Qui non facile assequi potest eos libros, reperiet eadem apud JOHANNEM KEILIIUM in *Introductione ad veram physicam ex fundamentis deducta*, quamvis omnino laus omnis WALLISIO debetur, qui nihil omittit, sed ut summus Mathematicus a primis ad ultima usque prosequutus est.

Habemus nunc auxilia ad addiscendam primam partem Mechanices; videamus nunc quomodo res se habeat inter elastica corpora.

F N.

(a) Ibi & WALLISII in formulas algebraicas concentratæ observationes habentur, & WRENNII atque ROOKII seorsim vel alia ratione facta experimenta. Cæterum WALLISIUS plenissimam mechanicam scripsit: titulus est *de mechanica & de motu*, quæ an. 1670. & 1671. Oxonii prodiit, & inter ejus opera omnia 3. in fol. vol. edita, etiam habetur. In qua nobili certe collectione, magna pars totius ambitus Matheseos habetur, Arithmeticæ, Analyseos, Arithmeticæ infinitorum, Cycloidis, Conicarum Sectionum earumque reconditorum, Trigonometriæ sphericæ, harmonicæ, præter miscellanea aliqua Physici & Mathematici argumenti.

N. II.

Deinde vero hæ sex eadem leges & proprietates demonstrandæ & inveniendæ sunt in corporibus perfecte elasticis. Prima pars Mechanices considerabat leges motus, quæ in corporibus perfecte duris obtinent. Secunda nunc pars considerat leges motuum in corporibus perfecte elasticis, ibique rursus occurrunt illa sex eadem proprietates. Addenda quidem sunt semper ea, quæ de motu & occurſu corporum durorum dicta sunt. Sed præterea actio cognosci debet corporis perfecte elastici moti, &c. & sane tunc habebuntur omnia demonstrata, quæ omnia sunt eadem. Hic error summus fuit in magnis etiam viris, & ipſo CARTESIO (a), qui minus feliciter exposuit leges motus inter corpora elastica, ita ut ab ipsis suis sequacibus hac in re tandem desertus fuerit.

Videbat quidem motum in perfecte duris, sed videbat tamen aliquid inde sequi, quod inde produci non videretur; hinc conclusit motum se invicem non destruere, sed tantum unum corpus motum aliter dirigere alterum motum corpus. Causa erroris hæc fuit, elastica corpora suum motum semper restitunt, eam vero proprietatem ignorabat, quia omnia corpora ut perfecte dura considerabat; hinc tantus error ab ipſo admissus est. Ut intelligatur, quantus error hic fuerit, considerandum est, si corpora perfecte dura concurrerint in hoc puncto, & æqualis fuerint magnitudinis & velocitatis, ea certe perfecte quietura in hoc ipſo puncto. CARTESIUS autem in regulis suis motus definivit, resilire ex eo motu hæc duo corpora. Sed cur hoc dixit? quia vidit, quædam corpora post impactum recedere cum eadem quantitate motus, quo accesserant, tantum commutatis inter corpora collisa portionibus motus. Cum hoc vidisset, neque nosset elastica corpora, legem fecit „motum motui non opponi, sed directionem directioni”. Id vero non est verum. Nam sint duo corpora æqualis magnitudinis, & velocitatis, ambo perfecte dura, occurrant sibi mutuo in uno puncto, tunc certe corpus A, secundum directionem suam, premet certa quantitate motus corpus B, & hoc corpus B reprimet A cum eadem quantitate motus per eam directionem, per quam advenerat. Hæ vero quantitates motus eadem sunt, cum & corporum massas, & velocitates æquales sumserimus; ergo resistent sibi in puncto concursus duæ potentiaæ æquales: an non ergo debent quiescere? Idem sensisset CARTESIUS, si corpora elastica novisset, quorum natura a corporibus duris diversissima est. Elastica enim corpora comprimunt se, & per vim suam elasticam se restitunt, & repellunt se a se mutuo, hæc vero resiliationis causa non est in motu, quo occurrebatur, sed in eo, quo se restitunt; ergo hæ regulæ sunt omnino diversæ in corporibus elasticis, a regulis datis in duris; hinc leges corporum durorum ex CARTESIO nemo potest deducere.

Has

(a) Motum in concursu nullum perire, sed quantum unum corpus amisit transire in alterum, pro tertia lege posuit, *PRINCIPIOR. L. II. n. 40.* & corpora dura resilire, nihil debilitata celeritate, si adversa concurrerint. Non nunc immisceo his me litibus, maximos enim viros, & *LEIBNIZIUM* ipsum novi hanc sententiam sequi, ut nullus motus in rerum natura, aut pereat, aut oriatur.

Has etiam leges (nempe inter elastica corpora) denuo invenerunt & docuerunt maximi viri, &, quod maxime mirabile est, tres diversi viri tribus diversis modis eodem tempore idem concluderunt. Hi tres viri fuerunt (ex eorum numero, quibus Societas Regia Londinensis eam demandavit provinciam anno 1662. nempe inquirere leges mutationum in collis corporibus) CHRISTIANUS HUGENIUS (a), CHRISTOPHORUS WREN (b) Eques auratus, & Professor nobilissimus JOHANNES WALLISIUS. Hi, cum omnes sedulo animum ad hoc negotium attendissent, invenerunt hasce leges per pendula, hoc est, sumserunt corpora æqualis gravitatis, & magnitudinis, & ab æqualibus filis suspenderunt, horum corporum ascensum & descensum in circulo secundum gradus accurate notarunt, sic longitudinem ascensus & descensus advertere potuerunt, & omnem horum corporum in se inutuo motum dimetiti sunt. Deinde adnotaverunt exacte per experimenta, quænam mutationes ex incurfu corporum inutuo contingerent; tandemque singuli inventa sua, chartis sigillo occlusis tradiderunt, quas Societas Regia diu non aperuit, & tandem apertis chartis in Societate congregata inventum est, omnium observata & conclusiones easdem esse. De hisce conclusionibus legantur Transactiones Philosophicæ ad eundem numerum 43; verum ibi tantum sunt conclusiones non demonstrationes, demonstrationes autem sui inventi dedit WALLISIUS in eodem Tractatu jam laudato p. 686. nec melius addisci potest ea scientia, quam apud Clarissimum illum Virum (c).

Hæc eadem etiam possunt inveniri apud HUGENIUM in Tractatu *de motu corporum a percussione*, qui Tractatus habetur in *Operibus ejus posthumis* editis apud Boutenstein Lugd. Bat. 1703. WALLISIUS sua experimenta per pendula sumserat. HUGENIUS, ut suum inventum magis admirabile redderet, scapha usus est, in qua homo erat constitutus, & altera vacua, in qua nemo inesset, sua experimenta cepit, licet credam ipsum suam tractationem etiam debere pendulis. Qui vero scire desiderat, quomodo CL. CHRISTOPHORUS WREN suas demonstrationes invenerit, quamvis ipse non ita ediderit, ille legat KEILIIUM in *Introductione ad veram physicam*.

Ex iis Auctoribus hæc omnia facillime dignoscuntur, & his præmissis, nunc secunda pars Mechanices habetur cognita.

Mechanica enim est supputatio motus, qui datur vel demitur uni corpori ab alio seu moto seu quiescente, in hac supputatione invenienda habemus primam quæstionem in perfecte duris corporibus; in secunda parte egimus de corporibus elasticis; tertia nunc pars Mechanices sequitur.

(a) *De motu corporum a percussione* inter posthuma & in *Philosoph. Transact.* n. 46.

(b) L. c. brevissimis schematibus secundum formam additionis & subtractionis dispositis.

(c) Ut & MARIOTTE in *Traite du choc des Corps*, an. 1673. 12. edito, & addito operibus physicis in Belgio recensis. De integro vero vim percussionis & ejus leges demonstrare nova methodo adgressus est CL. EULERUS. l. c.

N. III.

Hæc edoctus quæ hactenus de Mechanicis dicta sunt, gravium corporum leges in perfecte duris & in perfecte elasticis corporibus addiscat.

Si quis velit brevissime & clarissime hæc cognoscere, videat GALILÆUM (a), de *motu locali ex gravitate orto*; est sane profundissimæ subtilitatis, Pisæ & Lugd. Bat. in 4. & alibi etiam editus. Ibi fundamenta dat de motu locali, & primus certe juvit omnes Mathematicos, ut omnes leges motuum, a gravitate orientium, invenire possint.

Legat etiam ALPHONSUM BORELLUM, discipulum GALILÆI, certe & ejus discipuli TORRICELLI, apud eum enim habentur reclusa omnia GALILÆI arcana. Libro titulus est *de vi percussione* (b). GALILÆUS, cum scriberet de percussione admirabilem illum Tractatum, sumsit bilancem, & ab utraque parte imposuit v. gr. uncias decem; quando una uncia urgebatur pondus impositum uni lanci, tunc alteram elevabat; verum quando illa uncia in lancem de alto cadebat, altius videbat elevari lancem oppositam: si duplo nunc altius caderet illa uncia, duplo plus elevabat oppositam lancem. His experimentis conatus est incrementum motus, a gravitate orti, invenire. Sed in eo aliquid mirabile invenit, de quo adhuc moriens amicis suis conquerebatur, quod non potuerat rationem intelligere, quare nempe uncia cadens elevaret uncias decem oppositæ lancis altius, quam si quiete, & ex proximo, lanci imponeretur. Hanc difficultatem sustulit BORELLUS (c), demonstrat enim pondus cadens plus agere, quia grave, dum quiescit, nullum habet motum, sed dum descendit, habet motum quemdam realem, & hinc plus virtutis habet. Hoc ipsum in Tractatu BORELLI supra laudato *de vi percussione* invenitur explicatum, quo certe Libro nullus Medicus carere potest. Legatur supra eadem re etiam JOHANNES WALLISIUS in sua *Mechanica* pag. 33. ubi explicata sunt inventa GALILÆI. Disci hæc etiam possunt apud KEILIIUM l. c.

N. IV.

Post hæc discendum est, quid valeat figura corporis (seu instrumenti) motum communicantis in aliud, cui motus communicatur. Consideremus ibi, quidnam faciat corporis figura, dum suum motum communicat alteri. De hac re plurima scripta sunt, sed possum uno momento in uno & altero casu explicare. Sit corpus cubicum

(a) In *discorsi & dimostrazioni matematiche*, ubi de motu locali & mechanica per Dialogos agit, & in *discorsi della Scienza meccanica* brevibus & posthumis. Accelerationem corporum cadentium curvam, per quam corpus projectum aerem trajicit, & alia primus perspicax vidit. Extant etiam opera omnia (excepto systemat. mundi) Bononiæ an. 1656. 4. 2. vol. & nuper bona editio Florentiæ 3. v. in 4. prodiit an. 1718.

(b) Bononiæ an. 1666. 4. prodiit, in eo felicius quod viri Auctoris limam sit expertus. In Belgio aliquoties recusatus est.

(c) L. c. C. 29. Cæterum ad descensum gravium & motum ex projectione HALLEY *Philosoph. Transact.* n. 179. Litem vero illam celeberrimam, quæ de mensura motus inter CARTESIANOS & LEIBNIZIANOS agitata est, ita explicat EULERUS, ut in Logomachiam transeat, cum tamen verò sit propior sententia NEWTONI, neque percussio in instanti fiat: l. c.

cum A, moveatur juxta lineam AB (Tab. III. fig. 4.), & impingat in obicem resistentem CBD. Ponamus hoc corpus habere vim aliquam determinatam, hoc est motum quemdam determinatum. Si nunc nota est moles hujus corporis, v. gr. libræ unius, & nota sit ejus velocitas, vis ejus cognita habebitur. Inde innotescet, quid fiat in contactu corporis A & obstaculi CBD. Nempe hoc corpus A, hicce loci in A ponebatur ante acceptum motum, post eum motum receptum hæret nunc in B; ergo impinget totum corpus hoc suo latere integro, in partem obicis æque magnam, ac est latus corporis A; ergo omnibus partibus sui lateris adtinget eum obicem, & tota ejus vis per omnia illa puncta distributa communicabitur obici.

Verum ponamus illud corpus jam transmutari in hanc figuram conicam A (Tab. III. fig. 5.), eandemque lineam AB esse lineam directionis, & ponamus illud corpus ex figura cubi nunc in conum (a) mutatum, in mole & rigiditate manere idem; massa ejus habebit eandem copiam virium, pondus enim non mutatur figura mutata, & velocitatem ponimus eandem esse; ergo est eadem quantitas materiæ, & idem motus coni A, qui cubi fuit. Ergo impingat is conus in obicem CD, hærebit nunc hic loci in B: ergo tantum impinget uno puncto in obicem, hoc est, tota quantitas motus ipsius in unum punctum obicis incidet, quia unum punctum corporis tantum adtingit obicem; ergo ea vis, quæ in priori casu distribuebatur in infinita puncta, ea nunc per unum punctum distribuitur, quia tota quantitas motus seu virtutis hujus corporis, tantum unum punctum resistens invenit, tantumque per unum punctum adtingit obicem. Hinc tanto plus jam moveri sequitur illud punctum obicis, hoc est, instrumentum erit hocce tanto aptius ad divisionem obicis, quanto hoc corpus (fig. 5.) paucioribus punctis suum motum communicat cum obice, quam corpus cubicum (fig. 4.). Hinc fundamentum hoc mechanicum totum intelligitur. Quando nempe eadem est rigiditas, moles & velocitas corporis, sed figura mutatur, ita ut per unicum punctum omnem suum motum corpori communicet corpus impulsus, & id prius multis in punctis motum suum communicabat, poterit certe obicem suum, siue corpus in quod impingit, omnium maxime mutare; ea vero figura corporis, quæ motum suum per plura puncta communicat, erit minus apta mutando obici, quia ejus vis distribuitur per plura puncta obicis resistentis; hinc tanto minorem in singulis partibus vim exercet.

Hæc demonstratio necessaria est in actionibus solidorum & fluidorum, quia fluida sæpe constant ex ejusmodi partibus variæ figuræ. Retinendum ergo est in memoria, figuram mutare vim collisionis, non quod majorem motum faciat, ut vulgus putat, aut hujusmodi telum conicum (fig. 5. Tab. III.) aptius sit ad motum excitandum. Nam si idem ferreum telum mutaretur in laminam ferream, haberet adhuc totam suam massam, sed tunc pluribus punctis ejus corporis communicaret suum motum in quod impingeret. Si vero iterum eadem lamina in acum mutaretur, tunc in unum punctum tantum posset incidere tota sua mole & velocitate, quod punctum, in quod incidit, tunc tantum accipit motus ut a reliquis ejusdem corporis punctis non possit non recedere.

Qui

(a) Hæc etiam ex altiori analysi repetit EULERUS l. c. p. 48. 49. ubi formulas dat pro vi percussionis coni & pyramidis.

Qui nunc vult in hæc omnia ex principiis inquirere, quamvis non ex hoc fundamento, inveniet quod sibi satisfaciat in *Tractatu de Mechanica* p. 572. apud WALLISIUM, ubi agit de cuneis & telis. De hisce quoque videre poterit apud CARTESIUM in *Tractatu de la Mechanique*, recte hæc omnia docentem. Videre quoque potest de hisce apud omnes fere Auctores, ubi agunt de cuneo.

Absolvi nunc quartam partem Mechanices; verum quinta nunc agit de fluidis corporibus, quibus absolutis pervenimus ad Physicam (a).

N. V.

De Hydrostatica.

Peractis hisce studiis & absolutis restat adhuc discenda illa Matheseos pars, quæ considerans generales omnium fluidorum proprietates, *Hydrostatica* vocatur.

Fluidum vocatur ea corporum congeries, cujus partes invisibiles & insensibiles, aut nullo, aut facillime mutando nexu inter se cohærent.

Fluidorum partes sunt iterum *una corpora*, nam illa pars fluidi insensibilis, quæ vix cohæret alteri, est unum corpus; ergo, quæ de uno corpore antea dicta sunt ratione solidorum, vera etiam sunt in iis corporibus, quæ fluida constituunt, adeoque ea generalia præmissa hic iterum locum habent.

Verum in fluidorum partibus, quatenus componunt fluidum, considero partium molem, variam figuram & cohæSIONem inter se, & ab hisce tribus diversis pendet omnis varietas fluidorum. Unum enim fluidum habet partes majores altero, & unum fluidum habet partes alio modo figuratas quam alterum, & denique unum fluidum habet partes majori vel minori nexu cohærentes quam alterum; ergo hæ tres varietates efficiunt varietatem fluidorum, & hinc omnia ea adeo varia fluidorum genera; hinc nempe fluidum tenue, cujus partes minimæ & vix cohærentes sunt; & fluidum viscosum, cujus partes majori nexu cohærent, & sic porro.

Hoc posito videmus, Mathematicos posuisse in fluidis nihil aliud, quam proprietates, quæ communes sunt omnibus corporibus, non aquæ propriæ aut oleo, sed communes in omnibus. Hydrostatici considerare voluerunt, quænam essent hæc communia in omnibus fluidis, posuerunt adeo fluida constare 1. partibus quibusdam, 2. tam lubricis, supra se mutuo, ut fluere possent, & 3. eas partes graves esse, & ex his tribus deduxerunt, quomodo massa corporea ex iis partibus constans re vera se haberet; hæc nunc est Hydrostatica.

Hæc etiam pars Matheseos quam necessaria sit, non tantum Physico, sed etiam Medico, nemo non videt; nam omnes fere mutationes physicæ fluidorum ope contin-

(a) Porro ad partem Mechanices vulgarem, sive quæ æquilibrium Potentiarum in machinis producit & æstimat, VARIGNONIUS plenissime scripsit, inprimis in compositis motibus uberri-
mus in *Nouvelle Mechanique ou Statique*, posthumo opere, Parisiis 1725. in 4. edito, sed eam Mechanices partem quæ motus originem, progressus, augmenta considerat, HERMANNUS in *Phoronomia*, difficilius tamen, nuper vero inprimis EULERUS in L. suis *Mechanices sive de motu* qui 2. vol. in 4. Petropoli an. 1736. editi sunt, uberrime & profundissime ex nova infinitorum analysi consideravit. De utraque bene etiam & quod plerisque sufficiat, C. WOLFIUS in *Elementis Matheseos*. Tironi vel KEILII *introduc tio* suffecerit, vel LAMYI *de Mechanica* Tractatus. Parisiis 1681. 12. De permultis Auctoribus, qui de machinis scripserunt, legatur WOLFIUS *Elem. Mathes.* L. V. c. 6.

tingunt; siue enim incrementum animalium videamus, siue plantarum, siue mineralium & eorum nutrimentum, hæc omnia sunt ope fluidi, omnia mutantur per aquam, per aerem, & per sales solutos (quæ omnia sunt corpora fluida).

Ut discamus Hydrostaticam, legendi sunt hi Auctores 1. Antiquissimus ARCHIMEDES in *Tractatu* (a) suo de his, quæ fluidis insident.

2. Illum *Tractatum* ARCHIMEDIS emendavit, & antea obscurum, elucidatum nunc & optimum edidit ISAACUS BARROW, celebris Geometra Anglus, Londini 1675.

3. Scripsit de hac parte pariter quam optime STEVINIUS, Professor olim Matheseos extraordinarius in Academia Lugduno-batava, & præsertim in eo tractatu, quem hoc titulo edidit, *van de Waterwvigten*. Reperitur in ejus Operibus, quæ constant tribus voluminibus in folio, titulo de Hyponeumatibus mathematicis (b).

4. De his scripsit optime, qui solus Medico tyroni sufficere potest, JOHANNES WALLISIUS pag. 708 suæ *Mechanices*, editæ an. 1670. Titulo de *hydrostaticis* (c).

5. Consideravit etiam hanc partem egregie in multis, quamvis eam non tractavit ex professo, JOH. ALPHONSUS BORELLUS, in nunquam satis laudato *Tractatu de vi percussione* (d), qui Liber Bononiæ editus est, & difficile acquiritur, editus est quoque *Lugduni Batarorum apud van der Aa*, eaque editio facilis emptu est.

6. In hanc partem experimenta contulit ROBERTUS BOYLEUS, in *Tractatu* illo non satis laudando, de *Experimentis hydrostaticis paradoxis* (d).

Qui reliquos emere nequit, modo habeat WALLISIUM, BORELLUM & BOYLEUM, sed maxime WALLISIUM, ex his egregiis viris, intra paucos certe dies, remissam satis intelligere poterit.

N. VI.

De Hydraulica.

Pertractata hacce parte, superest, ut indaget Medicus motuum leges, secundum quas fluida in Hydrostatica nota, per vasa elastica & non elastica, figuræ cujuscunque, mota & contenta, agant & patiantur. Hæc pars, quæ eas leges explicat, voca-

(a) BARDII in eum commentaria Romæ 1614. 4. edita sunt, opera vero omnia RIVALTIA FLURANCIA curis, Parisiis folio, eademque demum meliori modo a BARROWIO recusa Oxonii 1579. 4. Editio FR. MAUROLYCI Panormi 1685. fol. excusa, diu apud TOMASIUM latuit, quam BORELLUS curavit, absolvit CYLLENIUS.

(b) Opera omnia Leidæ 1608. & 1634. fol. de unicorn. p. 334. (c) Vide supra, pag. 41. Not. (a).

(d) Maxime in addito libro altero de *motionibus naturalibus a gravitate pendentibus*, qui majori ex parte hydrostaticus est, & Regii Julii prodiit. an. 1670. 4.

(e) *Paradoxa hydrostatica*. Londini 1668. 8. Roterodami 1670, &c. Sed inprimis altiora habet in *Phoronomia* HERMANNUS, DAN. BERNOULLIUS, JOH. FIL. in *Hydrodynamica* Argentorati 1739. in 4. edita, PASCALIUS etiam in *Libello de l' Equilibres Liqueurs* an. 1663. Parisiis 12. & denuo 1698. 12. edito, aliqua huc pertinentia habet, sed pleraque tamen ad aerem spectant. Deinde COTESIUS in *lectionibus hydrostaticis & pneumaticis*, Londini an. 1738. & 1742. Parisiis in 8. iterum editus aliqua, sed perinde plura de aere habet. De iisdem egit Cl. DESAGULIERS in *the motion of water and fluids*. 8. D. CLARE Librum *motions of the fluids natural and artificial* Londini 1747. 8. editum non vidi.

catur *Hydraulica*, a vocibus græcis ὕδωρ *aqua* & αὐλὴ *fistula*, hinc ὑδραυλική est illa pars Matheseos, quæ explicat & demonstrat motuum leges, quæ observantur a corporibus fluidis per fistulas motis, seu vasa sint, seu canales, sive etiam canales sint elastici, ut arteria, sive non elastici, ut canales ex plumbo, demum utcunque variæ figuræ fuerint, unde iterum motus variari certe quam maxime potest. Hinc Medicus iterum nosse debet, quæ leges hisce corporibus a natura datæ fuerint, dum per vasa & canales moventur, & in iis continentur, quid inquam, fluida vasis suis faciant, & quid patiantur ab illis. Si ulla pars Matheseos Medico scitu est necessaria, *Hydraulica* est, nam quidquid Medicus explicat de corpore humano, id omne ab *Hydraulicis* pendet, sive enim digestionem, sive circulationem, sive secretionem, sive quamcunque excretionem explicet, id omne tamen est tantum hydraulice explicare, hoc est, explicare motum fluidi moti per canales motos. Medico tamen hæc scientia non est addiscenda, antequam sciat *Hydrostaticam*, id est, solam fluidorum naturam, ut & *Mechanicam*, quæ docet, quid faciat corpus incurrens v. gr. in parietem & obicem resistentem, quid in eum agat, & quid ab eo patiatur; tunc demum *Hydraulicam* potest addiscere; nam canalis latera sunt obices, & fluidum motum est massa corporum mota in obicem. *Hydraulicam* ergo ut addiscat, debet 1. scire *Hydrostaticam*, quæ etiam continet *Mechanicam*, tum 2. inclinationem fluidi in vasa: quæ duo, dum scit, jam potest cognoscere & determinare, tale fluidum incurrens in latera hujusmodi vasis, faciet & patietur tales actiones & reactiones. Hoc explicare nunc est *Hydraulicam* docere.

Huc pertinet 1. Auctor antiquissimus **HERO** (a) *de spiritualibus*, nam ita transtulerunt Interpretes græcum titulum περὶ πνευματικῶν, est Liber antiquus græcus, in quo mathematica contemplatione natura fontium explicatur; hinc, quæ de aquæ ductuum legibus desiderantur, & ad motum liquidorum per canales spectant, ibi continentur.

2. Legi in hac parte potest magnus **TORRICELLIUS** (b), **GALILÆI** discipulus & successor, qui dum de tubo suo Torricelliano, hodie barometro dicto, scribit, plura de *Hydraulicis* habet, ita ut exinde maximam laudem meruerit.

3. **BENEDICTUS CASTELLI** (c), Scriptor Italicus, **TORRICELLI** discipulus, scripsit Tractatum in 4. italico idiomate, sed continet egregia. Scripsit etiam objectiones quasdam ad **BORELLUM**, sed Opusculum hocce, seu Tractatus de motu aquarum rarissime invenitur. Explicat ibi ingenio mathematico, & miranda certe accuratione, quid patiantur ripæ fluentorum, quid pontes, quid cataractæ ab aquis motis, & hac occasione incomparabili studio explicat & demonstrat, quid aqua decurrens ex altitudine & in altum faciat & patiatur, &c. & multa alia in *Hydraulicis* apprime cognoscendis perutilia, ita ut iste Liber pretiosissimus sit & utilissimus.

4. Verum hanc eandem partem Matheseos excoluit egregie per experimenta clarissimus

(a) **HERO** editus a **COMMANDINO**. Urbini 1565. & 1592. 4. Parisiis 1587. Amstelodami 1680. 4. &c. Sed is fere practica habet, neque magni momenti pro Medico esse potest. Quæ vero a **COLUMNA** destinabatur editio **SEVERIN**. L. I. p. 111. c. 6. *Chir. effc.* ea in lucem non prodiit, neque auctius suum exemplar, quod laudat **T. BARTHOLINUS**, lucem vidit hætenus.

(b) *De motu gravium & naturaliter projectorum*. Florentiæ 1644. 4.

(c) *Misura dell' acque correnti*. Bologna 1660. 4. Romæ 1678.

simus Abbas MARIOTTE, in Tractatu in 8. dicto *Experiences hydrostatiques* (a), optimo certe, in quo multa explicantur egregia, sed quæ non capi facile possunt a matheſi imperitis; ceterum est Liber omni laude dignus.

5. BORELLUS etiam in suo Tractatu de *vi percussione* aliqua eo pertinentia habet (b).

N. VII.

Ultimo denique, ex Mathematicis Medico prodest illa scientia, quæ considerat solidi cogniti per fluidum cognitum moti actionem & retardationem. Hæc est illa nobilissima sed secretissima Mechanicæ pars, quæ ingenio humano ultima patet. Olim putabatur, veteres absolviſſe omne id, quod Mathematici in rebus physicis possint considerare: verum postea considerarunt mox laudandi Philosophi, quod restaret id, ut explicaretur, si detur solidum datæ molis, datæ figuræ, & detur illud moveri, non in abstracto, ut reliqui Mathematici considerarunt, sed in pleno fluido, quid tunc futurum sit? Si nempe noverim pondus, figuram, velocitatem hujus corporis, & nota sit resistantia, quid fiet in illud solidum per illud fluidum?

Hæc pars proxime inter omnes necessaria est, & quam solus fere excoluit Illustrissimus ISAACUS NEWTONUS in *tertia parte Principiorum* suorum, ubi considerat, quid patiat corpus, si moveatur cum noto velocitatis gradu in fluido, & tunc demonstrat, id corpus certam invenire resistantiam, ut, si augeatur ejus velocitas in duplum, quadruplo plus resistantiæ patiat, & si in triplum augeatur ejus velocitas, non duplo plus resistantiæ sit occurſurum, & sic porro in ratione quadrata semper augeatur resistantia, quam patitur corpus in fluido quodam motum, & certe hinc deduxit ingenioſissime, quomodo fluida in solida, quæ per fluidum moventur, & solida iterum in ea fluida agant, quoad omnes proprietates requisitas. Unum fuisset optabile, ut hicce Liber non a tribus seu quatuor hominibus in tota Europa,

G

(a) *Tr. du mouvement des Eaux*. Parisiis 1686. 12. denuo 1700. 12. cura PH. DE LA HIRE, & in Operum omnium collectione. Pertinet maxime ad fontium tubos, aquarum copiam, quam orificia reddunt, &c.

(b) Nempe in *L. de moribus a gravitate pendentibus*. Huc porro referuntur omnino GALILÆI *Discorsi intorno alle cose che stanno su l' Acqua*, &c. cum defensione contra LUDOVICI de COLUMBIS & VINCENTII de GRATIA objectiones.

GUILIELMINI *mensura aquarum fluentium*. Bonon. P. I. II. 1690. 1691. ejusque epistola dua *hydrostatica*. Bonon. 1692. 4. altera contra L. PAPINUM, altera de *velocitate fluidorum in siphonibus recurvis*. EJUSDEM L. *della Natura de' fiumi*, ib. 1697. 4. & in GAUDENTII ROBERTI *miscellaneis Italicis*, ibid. an. 1692. 4. & in Operum collectione, Genevæ an. 1719. 4. 2. vol. editus Liber, atque nuper copiosius a filio. JOH. POLENI in *L. de Castellis habentibus latera convergentia*, Patavii 1718. 4. & in editione auctiori FRONTINI de *Castellis*. Patav. 1722. IDEM de *motu aque misto*. Patav. 1697. 4. JURINUS de *aquis fluentibus*. *Phil. Transact.* p. 355. 373. 452. 453. DESAGULIERS *on the motion of Water and fluids*. CLARE *motion of the fluids natural and artificial, air and water*. Lond. 1737. De *frictione aquæ in canalibus* egit DESAGULIERS. *Philosophic. Transactions.* n. 393. pro Practica autem parte princeps est BELIDOR in *Architectura Hydraulica* quæ Parisiis 1737. 4. prodiit. Huc etiam CARLO FONTANA *delle acque correnti*. Rom. 1696. fol. TOMASO NARDUCCI *della quantità del moto, o sia la forza dell' acque correnti*. Luccæ 1723. 4. tum BERNARDINI ZENDRINI *consider. sopra la scienza delle acque correnti*. Ferrariæ 1717. & ad Practicam *leggi, fenomeni, regolazioni, ed usi delle acque correnti*. Venet. 1741. Collectio vero integra omnium CASTELLI, BORELLI, GUILIELMINI, aliorumque, hydraulices Scriptorum, edita est Florentiæ 1723. 4. maj. sub titulo *Raccolta d' Autori, che trattano del moto delle acque*.

pa, qui se huic unico negotio dederunt, sed ab omnibus posset intelligi, nunc secretissimus Liber est (a).

Pariter hanc partem excoluit Nobilissimus CHRISTIANUS HUGENIUS, qui in *Traſtatu de reſractione & de lumine* super hanc partem egregia habet.

Absolvimus primam partem ſtudii medici, in qua ſi ita ſe exercuerit Medicus, ut eo ordine addiſcat illa, quæ propoſuimus, aptus fiet, qui omnes Phyſicorum, Mechanicorum, Medicorum ſcriptorum Libros intelligat, & ſua exinde deducat in ſuos uſus corollaria.

Quantum nunc hocce propoſitum ſtudium in Medicina valeat, diſcimus exinde. Quidquid theoria medica ratiocinans (non autem experimenta in unum deducens), boni habet, id omne deberi ſolis his viris BORELLO, MALPIGHIO, BELLINO, PITCARNIO, aut aliquibus ex hiſce, qui in eos commentati ſunt; omne vero quod ſummi hi viri invenerunt, id tantum hiſce Matheſeos partibus exculti, antequam ad Medicinam ſe accingerent, detegere potuerunt: ergo Medici animus prius hiſce principiis imbutus eſſe debet, antequam ſe ſtudio medico accingat.

Convenit nunc noſtrum conſilium cum conſilio iſtius viri, qui omni tempore ſummum & principis nomen in Medicina meruit, HIPPOCRATIS puta, qui in ea epiſtola, quam ad ſuum filium THESSALUM ſcribit, in qua conſilia dat addiſcendæ Medicinæ, monet ſerio, *ut ante omnia Arithmeticam & Geometriam probe addiſcat*, hæ autem duæ ſcientiæ faciunt ſummam eorum, quæ haſtenus dixi, cum Mechanica hiſce binis ſolis innitatur, adeoque, conſilio principis Medicinæ confirmatum habetur conſilium noſtrum. Hiſce vero continetur primum προγυμναſμα ſtudiorum Medicorum.

(a) Magna ex parte huic difficultati cautum eſt, edito Opere NEWTONIANO cum Commentariis P. P. JAQUIER & LE SEUR & D. CALANDRINI, quod prodiit Genevæ tribus in 4. voluminibus an. 1740. & ſeq. pro iis vero, qui Mathematica ignorant, PEMBERTONIUS, PRÆCEPTORIS noſtri Diſcipulus, ſcripſit *a view of Newtonian Philoſophy*. Londini 1728. 4. etiam Italice re- cuſum. Cæterum ipſum NEWTONI Opus Londini an. 1687. 4. & auctius Londini 1727. prodierat. Eadem vero ipſo NEWTONO uberius, ordinatius, & plenius EULERUS in ea tractavit quam ſupra citavi *Mechanica*, ſeu *motus ſcientia*, qui omnibus ſuffecerit ſolus, qui analyſin fuerint edocti.

METHODI STUDII MEDICI

PARS IV.

PHYSICA SPECIALIS.

CAPUT I.

De Physicæ definitione & partibus:



Physica est cognitio rerum corporearum in mundo aspectabili existentium. Hæc est illa pars, quam omnes veteres Philosophi vocaverunt φυσικὴν, non quod jus habuerint eam ita separandi, nam Metaphysica & Pneumatica etiam agit de naturalibus, verum jam dudum hic modus loquendi invaluit. Dico esse cognitionem rerum corporearum in aspectabili mundo, quia nolumus cum ANAXAGORA disputare de aliis mundis, an dentur nec ne, acturi unice de iis, quæ in mundo nobis cognito existunt, illa enim pertinent ad Philosophum non ad Medicum.

Acquiratur hæc cognitio 1. per observationes sensuum, 2. per ratiocinia ex observatis incognita deducuntur. Habentur ergo in tota Physica duæ partes; una, quæ per sensus observat omnia, quæ observari possunt; altera, quæ observata per sensus indagando, per ratiocinium ex iis deducit ea, quæ per sensus non patebant.

Pars Physicæ rite observata colligens *Historia naturalis* dicitur. Ea est collectio rite digesta omnium eorum, quæ in rebus corporeis sunt; intelligo in animalibus, vegetabilibus, mineralibus, astris, meteoris, &c. omne illud, quod observat & describit Physica, id pertinet ad *Historiam naturalem*, quæ prima pars Physicæ est.

Historia naturalis tantum describit (dabo enim limites *Historiæ naturalis*) omnes actiones, quæ exercentur inter corpora, quatenus sensuum externorum ope accurate observari & notari possunt in omni circumstantia; nulla enim conditio omittenda est.

Alteram Physicæ partem, quam discere debet Medicus, est, quæ ex observatis prius notis, per illa, quæ jam vidimus in præcedentibus, deducit ea, quæ sensibus externis detegi non possunt, & tamen in ipsis rebus naturalibus obtinent. Omnes movent, sensus nostros tantum aptos esse ad detegenda quædam phænomena: & præterea in ipsis rebus corporeis forte infinites plura esse, quæ sensibus assequi non valeamus; hinc quaeritur, quænam sit secunda Physicæ pars. Hæc videtur in duobus occupari, nempe habet primam partem pro suis datis, & deinde pro fundamento ratiocinii ea, quæ ex Mathematica petuntur, ad observata primæ partis Physicæ, hæc enim conducunt ad scientiam eorum, quæ in physicis corporibus habentur, & tamen sensibus nudis non apparent. Istud clare patet, 1. observando phænomena singula

ab omni parte sua, 2. comparando singula inter se, 3. applicando ipsis legēs ex Mathematica & Mechanica. Ita deducuntur ex prioribus aliæ proprietates prius tectæ. Dico primo examinanda esse phænomena, tum secundo singula compraranda cum aliis, & sic omnia inter se, ut videat Physicus, quid commune, quid diversi inter se habeant.

Tertia pars condendæ Physicæ est, ut leges mechanicæ explicentur his duabus, & Physicus comparans demonstrata mathematica cum phænomenis physicis videat, quomodo ex illis, ut causis, physici effectus varii fluant.

Hæc est vera methodus condendæ Physicæ, & ultima pars æque certa est ac prima, quam exposuimus, cum tantum ex datis certis quædam deducat, quæ iis datis insunt, & quæ non patebant sensibus. Hæc est etiam totius Physicæ sciagraphia, id est, quomodo Physicus gerere se debeat, ut acquirat veram rerum corporearum cognitionem. Superest ut in hanc rem dentur quædam consilia.

C A P U T I I.

Auctores qui de Physica scripserunt:

UT prima pars descripta, nempe Historia naturalis, accurate discatur, legi meretur ARISTOTELES (a) in omnibus suis Libellis, quos scripsit de Historiarum naturalium. Magnus ille Philosophus plura scivit, quam recentiores volunt, & minus quam olim ei imputarunt veteres; adjutus enim liberalitate ALEXANDRI MA-

(a) Judicii maximi, ferrei laboris, nitido idearum ordini aptissimus, & systematici vir ingenii; magis idoneus digerendis in communia axiomata observationibus aliorum, quam propriis experimentis instituendis: ut tota fere antiquitas id maximum vitium habuit, quod experimenta capere negligeret, falsa reciperet a vide quæ a Poetis, Mercatoribus, Piscatoribus & aliis idiotis fabulosa acceperat; vide in ARISTOTELEM judicium OL. BORRICHII, in scripto critico *de sapient. Hermet. & Ægypt. C. X. p. 235. seq.* ubi acrior equidem procul dubio fuit BORRICHIIUS, quo testatior admirator ARISTOTELIS CONRINGIUS fuit. Interim inter veteres hæc culpa apud ARISTOTELEM certe minima fuit. Generales enim inductiones, v. g. de viscerum absentia vel præsentia, quibus ejus Opera replentur, demonstrant, sollicitè satis eum in conquirendis particularibus laborasse, v. gr., nullum sanguineum Animal caret vesica. Quæ cornua habent inter quadrupeda, ea ruminant. Deinde magnam Animalium partem, & imprimis Piscium ab ipso, vel certe præsentè, ARISTOTELE dissecta esse, manifestissimum mihi videtur, etsi ubique minus subtili usus sit scalpello. Qui L. X. de Historia Animalium, L. V. de Generatione, L. IV. de Partibus Animalium, Libros de Spiritu, de Incessu, aliosque, rimatus fuerit, mecum fatebitur, non sine fructu se legisse numerosissimas dissectiones. Aliqua inventorum ARISTOTELIS, sed pauca, decerpit DOUGLAS *Bibliogr. Anatom. Specim. p. 9.* Ad ipsas etiam delineationes partium accessisse ARISTOTELEM nostro tempore notissimum est, cum multis locis sua διαγράμματα citet, v. gr. *Hist. Animal. L. I. c. 17. L. IV. c. 1. L. III. c. 1.* ubi etiam additas literas excitat, nostri sæculi fere more. Alia etiam de his figuris loca habet C. HOFMANNUS in *Instir. & SCHULZE in Spec. Hist. Anatom. II. p. 6.* & ea quidem laus, nisi fallor, ipsi ARISTOTELI prima est. Denique vel propter catenam Historiæ Anatomicæ & Physicæ ARISTOTELEM legere juvat, ut ex quo per tot sæcula omnes harum rerum Scriptores hauserint. Cæterum antiquissima editio Physicorum ARISTOTELIS est Aldina Græce an. 1495. 1497. 1498. fol. min. Latina vero Veneta 1476. folio. Optima vero Parisina DUVALIANA quæ an. 1629. & 1654. 2. vol. fol. prodiit. Qui compendia sumtus quærit, poterit Græco-Latina editione uti, quæ 2. vol. 8. prodiit Genevæ an. 1606. nam Græce omnino hæc scripta oportet legere in tanta THEODORI GAZAEI audacia, qui in nominibus latinis ad græcas ideas exprimendas, fingendis, ni-

MAGNI (a) ac in varias regiones itinera fecit (b), res naturales exquisitè indagavit,

mia libertate usus est, ut sapissime vel nullam vel alienam animo ideam imprimat. *ARISTOTELES* non penitus pondus aeris ignoravit, & utrem inflatum ponderosorem esse vacuo notum habuit *de Cælo* Libro IV. p. 692.

(a) *ARISTOTELI ALEXANDER* aliquot mille hominum parere iussit, inde natum est quinquaginta voluminum opus. *PLINIUS* L. VIII. c. 16. Octingenta talenta ad Historiam Animalium accepisse rumor est. *ATHENÆUS* *Deipnosophist.* L. IX. c. 13. Sed minime certe debilibus rationibus hanc famam infirmat *SCHULZIUS* *Spec. Hist. Anatom.* cap. 10. & *Historia Medica.* p. 358. nisi forte ea liberalitas *ALEXANDRI* ad tempora devictæ Persiæ referri potest, ante conjunctionem *CALLISTHENIS*, postquam alienior ab *ARISTOTELE* factus est *ALEXANDER*. Suspiciatur autem Cl. J. HENRICUS SCHULZE, *ARISTOTELEM*, qui primus Bibliothecam, teste *STRABONE*, collegisse dicitur, multa ex *ALCMÆONE*, *EMPEDOCLE* aliisque vetustioribus habuisse. *Specim. cit.* p. 11.

(b) Athenis, Mitylenis, in Macedonia, in Asiæ parte apud Regulum Atarnensium invenio vixisse, itinera vero majora aliqua in Ægyptum aut hujusmodi non invenio. Caterum ad Historiam Physicæ antiquæ omnino pertinet *PLATONIS* lectio, apud eum virum nihil equidem reperias valde minute expoliti, neque descriptiones rerum naturalium nostro more accuratas. Cum tamen maximi ingenii homo, Pythagoræorum inventa in Italia, Ægyptiorum in ipsa Ægypto, didicerit, multæ opiniones & theoriæ minime inutiles apud eum reperiuntur, in eo dialogo maxime, quem *TIMÆUM* inscripsit, obscuro & imperfecto, sed ex altioribus Physicis cogitata varia, ex Physiologicis vero antiquissimas theorias habente, quas in compendium reduxit Cl. *SCHULZIUS*, p. 317. *seq.* Optima *PLATONIS* editio est, quam *JOHANNES SERRANUS* apud H. *STEPHANUM* procuravit anno 1576. 1578. fol. *ALDUS* aliam impreffit in folio 1513. *Timæus* vero seorsim a *MEURSIO* cum Notis Leidæ an. 1617. 4. editus a *FABRICIO* secundo volumini *Operum S. HYPOLITI* adjectus est.

Porro inter *ARISTOTELEM* & *PLINIUM* non penitus inane spatium est. Pleraque equidem scripta interciderunt, quæ his quatuor sæculis fere infinita prodierunt. Ergo huc pertinent minora Opuscula *THEOPHRASTI* quæ seorsim Hanoviæ 1605. fol. hinc cum *HEINSII* *Theophrasto* edita sunt. Tum *DIOSCORIDES*, qui præter Botanica, magnam partem Historiæ naturalis ad tria illa regna pertinentis tractavit. Apud utrumque multa minora fragmenta lectu minime inutilia extant, tum apud *CASSIUM* in *Naturalibus & Medicinalibus questionibus*, Parisiis 1541. 4. & a Gesnero Tiguri Gr. & Lat. editis an. 1562. tum apud collectores aliquos. Eorum princeps *ATHENÆUS* est. *PLINIO* equidem recentior qui Oppiano junior fuerit, adeoque Caracalla, ut male *MARCI* tempore vixisse scribat *SUIDAS* p. 71. edit. *KUSTER.* In *Deipnosophιστων* L. XV. infinitam vim veterum opinionum, observationum, scriptorum collegit, ut neque Medicus neque Botanicus paulo elegantior eo carere possit. Editio prima est Aldina 1514. fol. Latina satis bona *DALLECHAMPIANA* Lugduni 1583. Alia est *JANIBEDROT* Basileæ 1535. Græca, qua usus sum, satis tamen vitiosa. Optima cum *CASAUBONI* commentariis Genevæ an. 1597. Lugduni vero 1621. & 1657. fol. edita est.

ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΑΛΕΠΤΙΟΥ περί βίων δογμάτων καὶ ἀποφθεγμάτων, βιβλ. i. Alterius generis est, strictim nempe vitas Philosophorum scripsit, additis opinionibus præcipuis & Scriptorum catalogo, ordine singulari & fere secundum Sectas disposito. *EPICURO* ut notissimum præ reliquis favit, inque ejus dogmatibus exponendis fusius egit. Ad Historiam Physicæ & Medicinæ omnino necessarius Auctor, etsi judicii minus acuti. Vixit imperante *SEVERO* *FABRIC.* *Bibl. Græc.* L. IV. p. 601. Usus sum editione, quam H. *STEPHANUS* procuravit in 8. sed *MENAGIANA* & *MEIBOMIANA* splendidior prodiit in fol. an. 1663. & apud *Wetstenios* 1692. in 4.

Tertius collector est *CLAUDIUS AELIANUS*, quem *Adriani* coætaneum facit *SUIDAS* p. 649. magis utique Sophista & vaniori ingenio. In Libris 17. de Animalium proprietatibus veterum vel observationes, vel fabulas, ad Animalia pertinentes, absque ordine, & fere absque judicio congerit. Hujus Operis pulcherrimam editionem *ABR. GRONOVIVS* adornavit, additis *TRILLERII* observationibus. Lond. 1744. 4. sed & *PETRI GYLLII* (qui hoc Opus primus edidit) versio an. 1562. Lugduni impressa non incommoda est.

vit, & cum omnibus eruditis ubique collocutus est. Scripsit itaque & collegit Libros de generatione Animalium, de natura Animalium, de Meteoris, & similia multa, quæ ad Historiam naturalem legi merentur; nam ingentem observationum copiam suppeditant.

Deinde inter antiquos legi meretur PLINIUS (a) major, qui unicus Auctor est ex tota antiquitate, ex quo scire possumus, quid tota antiquitas habuerit in observationibus. Non ergo spernendus est, quamvis fabulas multas contineat, nam habet quidquid veteres in rebus naturalibus sciverunt de Animalibus, Vegetabilibus, eorumque natura, de Meteoris, Astronomia, Botanica, Medicina, Chemia, &c. & quidquid fere potest cogitari, non quod ipse observavit hæc omnia, sed ut ultro fatetur, omnia observata ex omnibus Auctoribus magna cum sedulitate collegit, nulla addendo ratiocinia.

Hi duo Auctores, ARISTOTELES & PLINIUS, cum magna cautione legendi sunt, habent enim multas fabulas & nugas, sed tamen plurima bona apud eos eperiuntur. Unicum indicium dabo, quam vera mista malis habeant. PLINIUS nempe

vant, valde ad fine pugillaribus, quos hodie syllabis *ana* solent designare, cum summa fabularum non solum patientia, sed etiam adfectione. Commoda est editio Gr. Lat. JOH. SCHEFFERI. Ea prodiit Argentorati 1647. 8. & 1662. 8. melius 1685. 8. & 1713. 8. qua editione sum usus, mendosa tamen, etsi LÆDERLINUS correctionem promiserit. Nitidior vero & copiosior GRO-NOVIANA, quæ Leidæ 1731. 4. prodiit. Ad Historiam medicam insignia passim loca habet.

A. GELLIUM Grammaticum, minime tamen hunc inutilem futurum olim Venet. 1477. folio, deinde nuper a GRONOVIO editum Leidæ 1706. 4. ejusque simiam MACROBIUM, & eruditissimi PHOTII Bibliothecam, NONNIUMQUE & TZETZEM, compilatores utrumque, & alios supersedeo lubens. STRABO tamen passim etiam naturalium rerum monumenta aliqua habet, & PLUTARCUS in Libro de Philosophorum placitis ita versatus est, ut sint, qui ab ipso GALENUM exscriptum esse aiant. COLLENUTIUS in PLINII defensione. Sic convivium VII Sapientium & Physica quæstiones multa eo pertinentia habent, uti plurimum ad Medicinæ historiam facit ejus de Iside & Osiride Libellus. Editio plenissima est Parisiis 1620. fol.

(a) CAII PLINII SECUNDI *Natura historiarum* L. XXXVII. Bibliotheca est viri, ut ex vita notum est, studiosissimi, qui nullum fere literarum genus intactum reliquerit. Collegit omnia Græca Latinaque & in satis concinnum ordinem distribuit, plantis etiam magis, quam a viro consulari expectares, & delectatus est, & impendit temporis chartarumque. Quinquaginta, inquit, volumina ARISTOTELIS in hoc meum contraxi. L. VIII. c. 16. Totum Opus, Geographicis exceptis, ad rem Medicam Physicamque facit, & XV. integri Libri in solam materiem Medicam pertinent. Fabulas habere certum est, non tamen nunquam pertæsus fuit GRÆCULORUM audaciæ & vanitatis. Sed infinitas tamen ex omni veterum Auctorum numero naufragorum tabulas servavit, diligentissimus inprimis in inquirendis rerum antiquitatibus & inventoribus, ad minutias usque, & in eo genere studii accuratissimus, ut etiam suum passim de planis judicium interponat, visasque apud CASTOREM sibi stirpes excitat. Utilitas vero utique major erit legentis, qui THEOPHRASTI & DIOSCORIDIS lectionem cum Pliniana conjunxerit, ita enim hujus viri errores sponte innotescunt. Editio prima est Veronenfis 1468, (FARRICIUS Bibl. Lat. L. II. p. 405. nam alibi Venetam Spiræ an. 1461. pro prima haberi video), qualem etiam pulchram satis Venetam an. 1497. in folio majori impressam possideo, prætermisam a FABRICIO. Cæterum Dalechampii editio Lugduni an. 1587. (FABRIC. l. c.), & cujus exemplar ab AUBRYO Francofurti an. 1608. impressum, ex codice quidem antiquissimo Chiffletiano, tum ex CUSACIANO, & alio varias lectiones habet, locorum etiam parallelorum aliquid & Notarum, adpersarum a DALECHAMPIO. Hæc editio ab HARDUINO mire contemnitur, commoda tamen Medico & bono prædita Indice. Nunc autem omnibus præfertur, quam modo nominatus Jesuita secundo edidit Parisiis an. 1723. 2 vol. in fol. ex undecim codicibus, Notisque PELLICERII, & apparatus nummario, qui huic homini plurimus fuit, ornatior. Attulit in Notis loca parallela DIO-

nempe plurimas plantas (a), optime jam notas, melius & exactius describit, quam ullus Botanicus ante eum fecerat, quod certe designat veritatem physicam in ejus Libris contineri. Quod vero plurimas fabulas admixtas habeat, id illius temporis ingenio adscribendum est, quod, ut novimus fabulis delectabatur.

Qui commentari in eos Auctores voluerunt, eos commendare non audeo, nam inter eos, qui ut Physici id fecerunt, non novi certe, qui hoc officio digne defungi valuerint, Arabes enim illi & Scholastici, qui in ARISTOTELEM commentati sunt, certe non digni sunt, qui legantur. Sufficit ergo, ut ARISTOTELEM ipsum audiamus, & illos Commentatores non admittamus. Ipse SALAMASIUS (b) nullatenus potuit unquam aliquid boni hic scribere, cum Physicus non esset. Præstat ergo legere ALISTOTELIS & PLINII Opera sola absque commentariis. PLINII vero optima editio est illa, quam nobis communicavit JACOBUS DALECHAMP, Medicinæ Professor.

Hi unici sunt ex Auctoribus antiquis, qui legi merentur, & qui ex tota antiquitate, usque ad seculum decimum sextum, historiæ naturalis studium supplere possunt.

Magno vero saltu (c) facto transimus ad decimum septimum seculum, quod omnibus

SCORIDIS, THEOPHRASTI, GEOPONICORUM. Hactenus utilis: novarum vero observationum aut ita erutarum herbarum, ut cum recentiorum nominibus conferantur, vix quidquam habet, etsi multum gloriatur.

(a) Contra hanc laudem audiendus est NICOLAUS LEONICENUS, & JOHANNES BODÆUS a STAPEL, ille PLINII erroribus an. 1509. in 4. editis. Certum enim est, PLINIUM, cum non ipse legeret, sed Anagnoston audiret, utique etiam in Balneis sibi prælegentem, & in pugillaria capita rerum conjiceret, sæpissime male audisse, & in plantis omnino aliena nomina adfinium fere sonorum, mire commiscuisse, quod Marrubii & Porri, Cisti & Hederæ, Cyclaminis & Aristolochiæ, Fragariæ & Pentaphylli, Struthii & Passerum, aliisque exemplis nimis confirmatur. PANDOLFUS equidem COLLENUTIUS in *Plintana defensione* Ferrariæ etiam edita, pro sua eruditione, quæ non ipsi nulla fuit, & HARDUINUS pro PLINIO dixerunt, sed facile pellucet veritas.

Inter ARISTOTELIS cæterum Commentatores innumeros, non omnino rejici meretur in tanta eruditione sua JULIUS CÆSAR SCALIGER qui in L. de Plantis commentatus est Lutet. apud Vascosan 1556. 4. AVERRHUIS commentarii, etsi eum virum animam dixerint Aristotelis, metaphysici potius argumenti sunt. Prodierunt Venetiis an. 1552. 1561. 1603. plurimis voluminibus, & alibi.

(b) CL. SALMASIUS neque Medicus fuit, neque Botanicus, hinc in referendis ad nostras stirpes veterum plantis non potuit nobis auxilio esse, inter quas ne vulgatiores quidem notas habuit, uti exemplo demonstrat LE CLERC *Hist. de la Medecine*. p. 630. Sed infinitæ vir lectionis, id in primis in *Homonymia Hyles iatrica* præstitit, ut locos Auctorum veterum ad aliquam rei naturalis particulam pertinentes, congereret omnes, atque adeo laboris maximi nobis fecerit compendium, quem in consensu aut dissensu Scriptorum æstimando oporteret impendere, vide laude dignum specimem apud LECLERC, p. 628. seq. Notissimum cæterum est ejus *exercitationes Plinianas* prodiisse primum Parisiis an. 1629. fol. deinde curante LANTINO Trajecti an. 1689. fol. Præfatio Libri, in L. de *homonymia Hyles iatrica* & de *Plinio judicium* seorsum prodiit Divione 1665. 4.

(c) Plerique equidem hoc spatium comprehensi Scriptores ad barbaros pertinent, & nihil ipsi addiderunt, præter novas fabellas. CICERONEM omitto, & L. ANNÆUM SENECA, non ideo nulla rei naturalis documenta habentes, & T. PETRONIUM ARBITRUM, damnosum lectori, LUCIANUM etiam, refertum adlusionibus ad historiam Medicam & Philosophicam, ARISTIDEM supersticiosissimum ÆSCULAPII clientem, PHILOSTRATUM cujus, uti notum est, optima OLEARI editio Lipsiæ 1709. fol. prodiit. Liceat tamen VITRUVIUM POLLIONEM laudare, maturi judicii virum, qui in L. X. *Architectura*, neque nulla, neque ea vulgo cognita ad rem

bus antecedentibus ævis longe antecellit, maximamque partem gloriæ suæ debet Anglo illi **BACONI VERULAMIO**, de quo pauca dicam.

Hærebat totus orbis litterarius immersus (a) nugis Peripateticis & superstitionibus non dico **ARISTOTELIS**, sed Commentatorum ejus, partim Scholasticorum, qui rotam Physicam reddiderunt logicam, ratiocinantes nempe de rebus, quas per sensus nunquam perceperant. Decimo sexto vero seculo extiterunt Chemicis, qui vilipensis nugis experimenta induxerunt; hincque occasionem dederunt magno illi **BACONI** (b), Cancellario & Sigilli Britanniae Custodi, qui eo seculo floruit sub regno **ELISABETHÆ**, ut meruerit hanc laudem, ab eo uno viro plus profectum esse in promovenda (c) scientia corporum naturalium, quam ab omnibus

„ præ-

naturalem facientia tradidit. In editione quam **POLENIUS** Patavii an. 1739. 4. edidit aliquot exstant **MORGAGNI** ad morborum nomina observationes. **SOLINI** etiam oportet meminisse, cujus *Polyhistor* a **SALMASIO** infinitis Notis ditatus prodiit. **ALEXANDER Aphrodisæus** & Medicus fuit & *problemata iatrophysica* scripsit, & in varia Aristotelica commentatus est. **APULEIUS** in floridis maxime, & in *L. de magia* & in *dialogo de mundo*, tum passim aliqua habet nostri argumenti. Ejus Opera Venetiis 1521. 8. Basileæ 1597. 8. & alibi edita sunt. **OPPIANUS de Piscatura & Venatione** Gr. Parisiis an. 1555. & Latine fere eadem forma apud Morellum editus, tum inaniores quidem illi rei accipitrariæ & canum historiæ Scriptores, quos **RIGALTIVS** simul edidit G. & Lat. 1612. 4. legi possunt omnino.

(a) Duodecim & ultra seculis vix quisquam extitit, qui experimenta non instituere, sed colligere, omnino sit dignatus, **ALBERTO MAGNO** excepto qui 21 vol. in fol. reliquit, aliisque hujus ordinis Scriptoribus paucissimis. Nam de Chemicis alibi dicitur. Omnem humanam disciplinam subjugavit scholastica methodus, quæ a rebus creatis, & a **DEI** operibus contemplandis ad abstractiones, humanæ mentis creaturas, hominum avocavit animos. Vide, quam eleganter contra scholarum generales contemplationes, earumque ab omni vita humana abhorrentia dixit Abbas **PLUCHE** *Consequences de l'Histoire du Ciel*. **F. ROGERII BACONIS** nobilia cogitata de *Telescopiis*, *Speculis ustoriis* multi laudant. Mihi non præsto est. Conf. **PLOT**. *Oxfordshire* p. 220.

(b) **GUILIELMI RAWLEY**, qui **BACONI** florenti a sacris fuit, vitam hujus magni viri scripsit, nuperque aliam **MALLETUS**. An. nempe 1560. natus, ex illustri stirpe, sed inter fratres nativissimus, legum se studio dedit, acceptus **ELISABETHÆ** Reginae, sed absque ullius momenti officio. A **JACOBO** demum rerum potito, omni genere honorum oneratus, demum Cancellarius M. Britanniae creatus est. Cum vero **REX**, & Regi gratiosissimus **BUCKINGHAMIVS** varia contra procerum voluntatem regnique utilitatem fecissent, consentiente **FRANCISCO**, in eum omnis ira Senatus devoluta est, ut deturbatus gradu, etiam post restitutionem famæ, quæ aliquot post annis secuta est, in squalore & paupertate vitam finierit an. 1626. 9. apr.

(c) Nihil hic de Politicis aut Moralibus Operibus dicere visum est, & ad ea unice sermonem dirigere placuit, quæ promovendæ rei naturali dicavit. Valuit nempe hic vir ingenio, quod interiora rerum perspiceret, novasque rerum facies, & affectiones nemini cogitatas contemplaretur. Inanitatem generalium conceptuum & sterilitatem Scholæ, facillime pervidit & modos aperuit, quibus posset rerum cognitio acquiri, emendari, augeri. Magnam autem instaurationem scientiarum molitus est, Libris IX. *de augmento scientiarum*, qui Anglice an. 1605. in 8. sed auctiores Latine an. 1623. Londini prodierunt, in qua editione imprimis octo posteriores Libri multum incrementi ceperunt. Primam ibi instaurationis hujus partem perfecit. Eo Opere L. II. novam scientiarum divisionem constituit, historiam naturæ & artium inter desiderata reposuit. L. III. affectiones corporum sensibus conspicuas motuumque in novas classes proposuit, nemini cogitatas, inter quas motus ad decubitus sive vis inertiae **NEWTONI** reperitur. *Dubitationes* etiam quæ apud **NEWTONUM** quæstiones sunt (part I. Opticorum L. III.) primus introduxit, novorum Inventorum futura semina. L. IV. in historia hominis virum philosophum per brutorum spirantium sectiones valde requirit, & comparatam brutorum anatomen, & historiam anatomicam corporis non ex uno, sed ex multis cadaveribus repetitam, primo a **MORGAGNO** per exempla confirmatam. Vide quam acris præviderit futura inventa aut additamenta artis, quæ posteriores Anatomici per ea

„præcedentibus & subsequētibz Physicis”. Ejus Opera in folio anno 1665 Francofurti

ipsa auxilia detexerunt, & perfecerunt. L. V. consilia dat, qua ratione possimus ad singularem aliqujus rei corporeæ cognitionem pervenire, omnia singulatim examinando attributa. Argumenti loco dedit de gravi & levi disputationem, ubi videas motus accelerati & proportionis massæ ad gravitatem, considerationem a FRANCISCO interjectam, quam recentiorum experimenta perfecterunt. Quæ sequuntur Logica, Ethica, Politica, Theologica sunt, novi omnia saporis & a vulgo remoti. Altera pars hujus magnæ instaurationis est, quam *novi organi* nomine jam Cancellarius edidit duobus Libris an. 1620. fol. ubi propius ad præcepta accessit, quibus ad rerum naturam cognoscendam pervenitur. L. I. removet ab animo errorum principia, idola seu præjudicatas opiniones, sectas, amphibologiam, vicia indolis peculiaris hominis philosophantis (*humeur*), denique vitiosam tractationem Philosophiæ. Magna ibi cum voluptate legas querelas, quod experimenta omnia & mechanicam deseruerint Philosophi, quod paucissima particularia edocti, continuo ad universalia transiverint; quod omnes omnia, non singuli singula tractaverint; quod nihil novi inveniendum sibi proposuerint; quod inter otiosas quæstiones consenuerint, & quæ reliqua ad purgandas Scholarum sordes, si quæ alia aptissima sunt. Libro vero II. interpretationem naturæ orditur, sive methodum, qua per singularum cognitionem & per processum naturæ, qua ad induendas formas utitur ad formarum ipsarum cognitionem perveniatur. In eo Libro agit de tabulis comparentiæ & negationis, in quibus enumeratur, in quibusnam corporibus aliquod attributum sensibus perspicuum adsit, in quibus desit. Ea occasione Thermometrum etiam nomine *vi-tri graduum*, seu *calendarii* proponit, compositum ex vitro longi colli, calefacto, immisso in vitrum frigente aqua plenum, ubi manifesto observat, quomodo calor aerem dilatet, frigus contrahat. Hic ipse est de calore Tractatus, quem laudat FRÆCEPTOR, & quo FRANCISCUS in præsentiam augmenta, gradus, effectus caloris & eorum contraria inquit nova methodo. Sequuntur *instauratarum* genera 27. quæ compendium non patiuntur, totidem enim sunt regulæ artis inveniendi, secundum quas experimenta de rebus naturalibus ita institui possunt ut intimam earum naturam aperiant. Princeps unice memoro experimentum, quo, tanquam ex bivio ad veritatem dubiam ducimur. Physicum valde exemplum addit FRANCISCUS. Horologium, inquit idem, & ad pedem & in summitate turris observetur, notetur an in summa parte turris lentius procedat, quo decidatur, an gravitas mutetur in variis a centro terræ distantis, an adeo gravitas ad essentialia attributum corporis in textura fundatum pertineat, an ab adunatione congenerum seu attractione proveniat. Tabula denique pro horreo (*magazin*) cognitionis humanæ per omnium corporum genera ordinata admirabilis ingenii FRANCISCI & res per ipsas fere essentias penetrantis maximum documentum est. Quæstiones, quas Angli passim imitantur, de rebus naturalibus, hic primum apparent. BACONIS *historia naturalis* Gallice prodiit, *Histoire naturelle en VI. Livres & nouvelle atlantis*, Paris. 1631. fol.

Ad generalia etiam *nova Atlantis* spectat, quæ una cum *sylva* prodiit, collegium nempe sapientum in re naturali augenda laborantium describit FRANCISCUS, eorumque molimina, ipsius Societatis Regiæ sciagraphia. Ad peculiare partes Philosophiæ naturalis alia scripta BACONIS pertinent, primoque *sylva sylvarum*, seu *historia naturalis in X Centurias* distributa Anglice pariter scripta, a RAWLEYO an. 1658. in folio edita. Inordinata sunt experimenta mille. Minus hic valuit VERULAMUS. Multa non satis fida ex auditu recepta sunt, alia propria, sed vitio machinarum in capiendis dimensionibus & experimentis instituendis vitiose instituta, de sono plurima, ad ducenta. Id tamen utique non dissimulandum a mero eventu FRANCISCUM animum revocare ad hujus eventus causas, & ad veritates, quæ ex eo eventu declarari possint, multum adeo a simplici historia & compilatione distare.

Majoris momenti sunt elaboratæ quæ partes Historiarum & Inquisitionum, quarum sex destina-verat, has vero duas perfecit. Prima *de vento* an. 1622. 8. edita est, de quibus vulgaria alia, sed multa etiam peculiariora habet, ortumque ventorum a solis via, a majori vaporum onere, a frigore, a motu naturali aeris definit. Multa ibi de velorum natura. Subjecta, de motu inquisitio, lectu dignissima.

Altera historia elaborata, *vita & mortis* est, quæ Londini an. 1623. prodiit. Causam equidem mortis falsam adlegat, non satis cautus a præjudicata opinione, spiritum, nempe vitalem exhalantem. Multum tamen historiarum confert ad longævitates plantarum, animalium, hominum. Sapientia denique consilia dat, quibus longævitas obtineri queat, nitro, opio, purgationibus subinde repetitis, validis, omnium mediocritate, rejectis nugacibus opinionibus, quæ eo tempore vulgo dominabantur.

Post-

furti (a) *ad Mœnum edita sunt*, quæ optima est editio, nam ibi omnia collecta habentur, exceptis epistolis nonnullis Anglicis ad politica spectantibus. Ejus Opera in duas partes dividuntur. Prima pars continet moralia, ethica, politica. Altera pars philosophica, & in ea VERULAMIUS sine ulla præsuppositione ullius Sectæ, aut prius lati judicii, simpliciter narrat ea, quæ in rebus corporeis contingunt; & quæ ad unum caput reduci possunt, ea in unum etiam egregie reduxit methodo accuratissima, ut inde concluderet, omnia entis A phænomena conveniunt & reperiuntur in ente B, est ergo ens A effectus entis B. Si quis exemplum voluerit, legat Tractatum de ventis, & si velit distinctum Tractatum, videat illum de calore & igne; fatebitur se nullum Auctorem legisse unquam cum majori jucunditate & satisfactione, ita ut magnus ille vir, non tantum reliquis Britannis, sed & Europæ maximis viris antecellat (b). Quidquid
CAR.

Posthuma sunt, & ab ISAACO GRUTERO ex Chartis Mss. edita apud Elzevir. 1653. 12. *Scripta ergo in naturali & universali Philosophia* huc pertinent, dignissima lectu, & plenissima limatis de omni priori Philosophia judiciis. Atomos ibi recipit & vacuum interspersum, impenetrabilitatem corporum essentialibus proprietatibus addit. Experimenta etiam ponderum specificorum habet, aurumque bene definit, in aliis peccat. Quietem absolutam dari negat. De luce novum specimen elaboratæ historiæ addit, sed quæ pro temporis sit modulo.

Alius titulus historiæ naturalis perficitur in *posthumis* quæ RAWLEYUS edidit cum BACONIS vita, *densi nempe & rari historia*. Scala ibi acervationis tangibilium sive tabula ponderum specificorum plurimorum omnium prima habetur, & passim experimenta alia. In globo plumbeo contuso malleo aquam instar roris exprimi, ante Florentinos vidit. Thermometrum præ aqueo commendat ex vini spiritu. Expansionem hujus spiritus in vaporem æstimat ad 480^{um} lum. Prioris voluminis Editæ sunt Londini 1658. 8.

Hæc breviter & ex meis editionibus, omnes enim Anglicas conquirere non potui. Brevia, inquam, si cum mole rerum compares, sat longa, si cum nostro Libro. Volui tamen hujus viri scripta, quæ iterum incipiunt obsolescere, vel ideo lectioni hominum commendare, quod eximium eorum fructum esse perceperim. Addi potest ex optimorum Judicum sententia primum BACONEM emendate Anglica lingua usum esse.

(a) Londini 1638. folio, RAWLEYOpe, Francofurti 1665. fol. Lipsiæ & Hafniæ 1694. fol. & nuper Londini an. 1740. fol. & Amstelodami an. 1730. 7. vol. 12. quarum ultima politica habet.

(b) Contemporaneum BACONI PEIRESCIUM non visum est illaudatum dimittere, qui ita meruit infinito in rem naturalem amore. Nam etsi inter colligendum mortuus sit, immensamque copiam adfectarum observationum ineditam reliquerit, merita tamen viri ex elegantissima vita æstimare licet, quam GASSENDUS scripsit, & quæ Hagæ an. 1651. 12. auctiorque an. 1655. prodiit. Quæ de coraliorum piscatura, de lapidum incremento, de oculis animalium habet: plantarum novarum indagatio & in hortis consitio: Homines maximo sumptu per omnem Europam emissi ad conquirenda naturæ artisque opera, laudem viri omittere non sinunt. Ipse etiam propria manu secuit, morbi causam in Catellis reperit apertis, namque vermes cucurbitinos, & remedium in Theriaca invenit. Papilionis succum esse, quæ credebatur sanguinis pluvia, observavit. Obiit an. 1637. De CÆSIO inter Academiæ.

Duos autem BACONI in literarum instauratione rivales fuisse non oportet dissimulare. Ita lum alium, alterum Gallum. Ille GALILEUS fuit GALILEI, Florentinus, Ducis sui Astronomus, & Pisanus Professor, qui fere cum BACONE vixit. Non eum deprimendo complexus est ambitum rerum, sed ea quæ adgressus est multo magis exhaustit. Ad rerum naturalium contemplationem Matheseos cognitionem attulit, qua caruit VERULAMIUS; instrumenta nova ad Astronomiam illustrandam in auxilium vocavit; aeris gravitatem determinavit ad pondus definitum, aqueum, multaque etiam vitia veteris methodi veterisque Physicæ perspicax detexit, v. gr. non eas in rebus esse qualitates, quas sensus nostri animæ repræsentant. Astronomica quidem imprimis corporumque labentium motus attigit, & ipse tamen, & Discipulus EVANGELISTA TORICELLIUS, Barometri notissimus inventor, Physicam experimentalem non consiliis solum, sed exquisitis & per multa felicibus experimentis sunt adgressi.

CARTESIUS (a) habet, si quid boni habet, hoc unice isti debet, neque melior Auctor haberi potest, licet ejus nomen ab imperitis adeo supprimatur.

Magnum hunc virum excepit (b) fato quodam **ROBERTUS BOYLEUS** (c) pariter Britannus, illud totius Angliæ decus, & in locum **BACONIS VERU-**

H 2

LAMII

(a) Novæ Sectæ Auctor **RENATUS CARTESIUS**, paulo junior fuit prioribus, qui an. 1650. obiit. Mathematica ejus merita hic omitemus. Ad Philosophiam universam imprimis dissertationem suam *de methodo* adtulit, cujus princeps axioma fuit, deponere omnes præjudicatas opiniones & de integro cognitionem veritatis ordiri, mathematico ordine, quo nihil reciperetur, nisi quod esset evictum. Quam longe vero ab hac theoria ipse in praxi recesserit, nimis est notum. Cum enim experimenta, sumtus causa, omitteret, cumque falsissimas regulas admitteret, bonam esse hypothesein dum responderet phænomenis & donec melior adferretur, Milesias quasdam fabulas, pro physicis principiis scripsit. Atque nihil fuit propius, quam ut everteret universam & naturalem Philosophiam, & imprimis artem medicam. Illam inductis fictitiis, & ad omnia perinde aptis, elementi primi particulis, confirmata mundi plenitudine, figuris corporum nullo experimento erutis, sed pro opportunitate effectis, his denique omnibus mathematica non nihil & mechanica veste ita ornatis, ut semi doctis pro oraculis essent, doctis etiam vel ideo placerent, quod a sterilissimis & barbaris abstractionibus ad physicas tamen & mathematicas veritates animum reduceret. Non aliud vero præcipitis animi pignus edidit evidentius, quam illum *de formato fœtu* Tractatum, quo per mechanicas necessitates structum corpus humanum ita finxit, ut ubique experimentis iret contrarius. Sed & reliqua Physica **CARTESII** nostris temporibus ita evanuit ex animis, ut nihil, nisi fallor, superfit, quod retineri potuerit. Nam & vortices, & elementa, & theoria lucis, & refractionum causa *ἡ δὲ ἀπὸ τοῦ φωτὸς* opposita veræ, & meteora, & hominis fabrica & pinealis glandula, & ipsæ motus leges non refutatione unius viri, sed communi consensu veritatis cupidorum abrogatæ sunt, nisi quæ aliqui, indulgentes gloriolæ gentili, de hypotheseibus istis, Galli, quasi forensi quadam astutia usi, nuper defenderunt. Si vero veritati obfuit **CARTESIUS**, nihil hoc, quod maximum esset, damnum, ad id fuit, cujus Discipuli ipsius in omni Philosophia, sed in Medecina maxime rei sunt. Ejus ex Schola ætheris occulta potestas ad omnia æque facilis, salium figuræ, acida fermenta, acidæ morborum causæ, figurati secretionum pori, & quod non monstrosus genus in artem innocuam irruit.

(b) Ut tamen nonnulli interponantur meriti **PRÆCEPTORIS** laudes, **PETRUM** certe **GASSENDIUM** non oportuerat omittere, atomorum & vacui contra **CARTESIUM** vindicem, Scholarum etiam acerbum adversarium, doctum virum & Astronomum, cui tamen mathematicum robur minus esset, & qui plurima ex aliis pro vasta eruditione sua congereret, de suo pauca, egregius & dictione & multiplici lectione Scriptor. Plurima hujus scripta sunt, quæ conjuncta prodierunt Lugduni an. 1658. 6. vol. in fol. *Syntagma vero Philosophiæ Epicureæ* Hagæ 1659. 4. & alibi.

BLASIUM PASCAL jam excitavi, qui experimenta barometrica & hydrostatica ulterius promovit, ad inveniendas montium altitudines, admirandi ingenii virum. **ROBERVALLIUM**, **FERMATIUM** iisdem studiis & Algebra celebres nominasse forte in hac brevitate suffecerit. Ex **GERMANIS** forte, si **KEPLERUM** malis Astronomiæ relinquere, **OTHONEM** tamen **GERLKIUM** nominasse nimis parum est, inter experimenta enim physica vitam trivit & duobus felicissimis inventis a natura, nunquam non redamante, remuneratus est, vacui nempe spatii effectrice machina, & electricitatis in sphaera sulphurea observatis phænomenis. Nam etsi ista ad **BOYLEI** tempora recidant, cum in *Experimentis Magdeburgicis* 1671. editis referantur, aerem tamen extra omnem controversiam primus ex spatio educere docuit.

(c) **ROBERTUM BOYLEUM** omni amore & veneratione dignissimum reddidit, tum perpetuus in experimentis faciendis ardor, tum candor quasi characteristicus in Chemicis, hætenus adeo agyrticis, tum sincera in **DEUM** pietas, qua non minus quam ingenio eminuit. Per totam vitam quæ ipsi non brevis contigit, integri pene semiseculi spatium aluit chemicos Ministros, aluit Mechanicos, inter quos **DYONYSIUS PAPINUS** excelluit, & infinitam vim inquisitionum experimentalium partim incepit, partim perfecit hætenus. Ecce Opera quæ toties repetita a **PRÆCEPTORE** laudes gratesque bonorum merentur. Sola vero Physica recenseo. Eo minus vero tædii laboris, quod nullibi, ne apud **SHAWIUM** quidem, accuratum **BOYLEANORUM** Operum catalogum repererim.

LAMII successit. Ejus præcepta adeo assequutus est, ut ea, quæ inchoaverat VERU-

Experimenta nova physico-mechanica de gravitate & elatere aeris. Anglice Oxonii 1660. 8. 1668. 4. (cum addita defensione). Latine Oxonii 1661. 8. 1682. 4. Primum Opus BOYLEI est, quo immortale nomen meruit, non pondere solum aeris evicto & definito, sed elatere, de quo vix nisi conjecturæ aliquæ exstabant; machina etiam Gerikii hic habetur perfectior; aeris & expansilitas & compressilitas determinata; digressio utilissima de respiratione, &c.

R. BOYLEI *Experimenta nova*, &c. prodierunt etiam Anglice, Oxonii 1662. 4. EJUSDEMETIAM est dissertatio *quantopere experimenta chymica philosophia corpusculari serviant*, Londini 1661. 4.

Sceptical Chymist. Chymista Scepticus. Oxonii 1661. 8. Lond. 1662. 8. Oxonii 1679. recusum, cui editioni accesserunt sex aliæ partes *de producibilitate principiorum*. Dialogus est quo per experimenta demonstratur, neque vetera elementa ARISTOTELIS, neque tria illa Chemicorum aut satis distincta esse, aut in omnibus corporibus demonstrari posse, aut naturam & diversitatem principiorum vere eductorum exhaustire, analysin per ignem destruere plurima, & infidelem esse corporum clavem, cum ea educat, quæ in corporibus minime adfuerint. Vera principia esse materiam & motum. Nulla dari elementa, sed ex mistura & variis potentiis, & componi & destrui formas docuit; in aquam tamen pronior est quæ sit maxime universale elementum.

Tentamina physiologica, cum fluiditatis & firmitatis historia. Londini an. 1661. 4. 1663. & 1669. edita. Quinque sunt Tractatus, successus infidus experimentorum, quæ ex occultis causis modo succedunt, modo eludunt operantis industriam. De experimentis quæ non succedunt. De Nitro ejusque perfecta regeneratione ex principiis in quæ resolvitur, rarissimo in corporibus naturalibus exemplo: fluiditatis & soliditatis rationem mechanicam & levem differentiam evincit, quæ non magnis causis possent mutari, ut levissimo caloris gradu.

Defensio doctrinae de gravitate & elatere aeris contra Linum. Londini 1663. 8. Stolidas calumnias scholastici hominis contra vacuum, aeris elaterem, rarefactionem, facile protrivit BOYLEUS.

Experiments touching colours, sive Experimentalis Colorum historia inchoata. Oxon. 1663. 4. Lond. 1664. 12. Mere experimentalis Libellus, pertinet ad productionem colorum, quæ per varias operationes chemicas & physicas obtinetur. Inter illas ruborem ab acido, viriditatem ab alcalinis in cœruleis succis vegetabilibus produci, primus forte demonstravit, unde magna pars explorationis principiorum corporum quorumcunque hodie derivatur. Sed colores etiam conjunctos lucem producere, adamantem initio unicum, deinde multos, noctu fulgere vidit, unde DU FAYI experimenta postea nata sunt.

Certain Physiological Essays of the usefulness of natural philosophy. P. I. Oxon. 1663. P. II. ibidem 1671. 4. & seorsim varie recusa, & vitiose in Latinum Sermonem translata. Hoc inter Opera BOYLEI vastissimum, demonstrat utilitatem Philosophiæ naturalis ad omnem vitam humanam, artesque omnes. Quæ ad Medicinam pertinent, fusius enarrantur. Multa tamen ibi ex ipso colore sermonis apparet ab aliis recepta fuisse, multa de quibus & Auctor dubitat. Chémica eo tempore præclara intersperguntur. Inde ad reliquas artes humanas pergit.

New experiments touching cold, sive Historia experimentalis de frigore: examen antiperistaseos, &c. Londini an. 1665. 8. & auctius 1683. 4. Est inter majora Opera BOYLEI, collectio nempe experimentorum. Eorum alia sunt ex itinerariorum Scriptoribus, maxime Belgicis, ex Spizbergicis expeditionibus. Alia philosophica, & industria instituta. Expandi aquam a frigore constituit, non vero ab aere id fieri; spiritus vero inflammabiles subsidere; aquam diffringere omnia vi expensiva; frigoris & caloris nullam esse oppositionem, gradibus tantum æstimari; nitrum causam non esse frigoris, nec ventum qui potius calefaciat. Addita dignissima experimenta MERRETI de variorum liquorum congelatione.

Of origine of forms and qualities, sive de formarum & qualitatum origine. Oxonii 1666. 4. 1667. 8. & Latine mihi 1669. 8. minori, & auctius 1671. Experimenta pleraque chémica sunt. Scopus est demonstrare, qualitates & formas corporum non ita essentielles esse, quin possint multis neque valde profunde subeuntibus actionibus commutari, sales in alias classes salium transire, &c.

Hydrostatical paradoxes, sive paradoxa hydrostatica. Londini 1666. 8. & 1676. Contra Aristotelicos demonstrat partes fluidorum inferiores a superioribus comprimi, etiamsi superiora strata leviora, inferiora graviora fuerint. In tubis bicurvis æque altis æquilibrium non mutari, a mutata diametro crurum, aut directione, dum maneat eadem altitudo. Et orificium vasis premi

mi ab eo semper aquæ pondere, quod fit ex ejus orificii lumine & altitudine aquæ, utcunque hoc vas superne amplius fit. Porro fluida etiam lateraliter premere, aquam in tubis ascendere, non a vacui metu, sed a pressione aeris, &c. Tota fere tractatio *PASCALIO* opponitur.

Continuation of new physico-mechanical experiments, touching the spring and weight of the air, the first part. Oxon. 1669. 4. Quinquaginta nova experimenta sunt. Elaterem aeris eadem potentia esse qua totum atmosphæræ, pondus confirmat, & contra vacui fugam scribit. Barometra portatilia describit. De aquæ ascensu per corpora spongiosa, descensu corporum in vacuo, sonorumque mutatione, luce in vacuo visa, de vitri calefacti electricitate, &c. experimenta profert.

Tractatus de cosmicis rerum qualitatibus. Anglice, Oxonii 1670. 8. & Lat. 1671. 8. Plurimi Tractatuli. Omnium corporum attributa ex materie cum suis undecim attributis produci, absque qualitatibus Scholarum; dari forte latentes aliquas in rerum natura leges, unde novi morbi, novæ naturæ productiones oriantur. Nullam in rerum natura absolutam quietem dari. De maris historia, &c.

Of the admirable rarefaction of air. Londr. 1671. 4. *De mira aeris rarefactione & condensatione per frigus.* Londini 1671. 8. Aerem rarefieri posse ad 1376^{plum.} prioris molis, densari ad quadragesimam, aerem in atmosphæra semper compressum esse, &c.

Essays about the origine and virtues of gems. Tentamina circa gemmarum originem. Lond. 1672. 8. Gemmas fieri ex liquido per spiritum petrificantem coacto, tincturam ex ipsis educi posse, in re medica forte non inutilem futuram.

Experimenta nova de relatione inter flammam & aerem cum diff. hydrostatica. Lond. 1672. 8. Flammam vix ulla arte absque aere aut excitari posse aut ali, sed nec Animalia absque aere vivere posse. Defendit aquam in aqua gravitare.

De mira subtilitate & efficacia effluviorum & eorum determinata natura. Lond. 1673. 8. Plures iterum Libelli sunt. Cuivis etiam firmissimo corpori sua esse effluvia, & atmosphæram inde compactam ostendit. Subtilitatem summam, in quam materia dividi possit, demonstrat exemplo odorum vix corpora minuentium, colorum. In Igne plerasque calces metallorum pondere augeri.

Observationes circa falsedinem maris, & scepticus dialogus de natura frigoris. Angl. Londini 1674. 8. Lat. eodem anno. Frigus positivum nullum esse, nisi quietem velis partium. Aliqua ad producendum frigus per commissos liquores. Maris falsedinem videri in incremento esse. Hygrosopia, & aeris humidi effectus in hominum corpora.

Suspiciones circa occultas aeris qualitates. Oxon. 1674. 8. Lond. 1676. 12. Varii Tractatuli. Primus: Suspicionem in aere præter pondus, elaterem, fluiditatem, alias latere qualitates, ad alendam flammam, vitamve Animalium. Dari corpora, quæ alias materies cum prærogativa attrahant, ut Animalia quæ alicui pesti magis patent quam alteri. De regeneratione metallorum ex minera & aere. Vacuum defendit contra *HOBBSIUM*. Non circulo facto aerem irrumpere in vacuum, sed a sublato æquilibrio. Aerem omnis mutationis in corporibus causam esse.

Excellentia & principia hypotheseos mechanica. Lond. 1674. 8. Vitia Scholarum & abstractionum. Principia omnium esse materiam, cum suis attributis, & motum: omnem ergo Physicam ad Mechanicam pertinere.

Physico Theological considerations about the possibility of resurrection. Lond. 1675. 8.

De origine qualitatum particularium. Lond. 1676. 8. & 1692. Denuo demonstrat, qualitates rerum mutari posse. Eo pertinent experimenta ad productionem frigoris, caloris, saporis, odoris, naturæ electricæ.

Relatio historica de degradatione auri. Long. 1678. 4. Experimenta continet auri, ab Extero quodam in metallum fragile mutati. Inde conclusit *BOYLEUS* multiplicationem auri non impossibilem esse, cum destructionis extet exemplum, & obtinuit ut abrogarentur leges in Alchemistas latæ, an. 1689. recusa est & an. 1739. 4.

Continuation of experiments touching the spring of air. Experimenta nova physico mechanica. Lond. 1681. 8. & 1688. 8. Antlia a *PAPINO* magis perfecta usus, qua liceret aerem ad vigesimam sui partem comprimere & in vacuo coquere: tum in Papiniana machina varia experimenta fecit: inclusis Animalibus, peribant in vacuo, sed celerius in aere factitio, quem corpora varia effervescendo aut putrescendo generant. Nulla putredo, nec ulla fere fermentatio in vacuo spatio; hæc vero omnia etiam majora in aere compresso reperit. Hic Liber Latine prodiit, cum omnes reliquos *BOYLEUS* Anglico sermone edidisset.

RULAMIUS, perficere inceperit. Opera ejus omnia edita sunt Genevæ tribus volumi-

Merentur etiam recenferi inter RO. BOYLEI opera huc pertinentia ejus *new experiments to make the parts of fire and flame stable and ponderable*, Lond. 1673. 8. Etiam intra vasa vitrea clausa, & incenso demum spiritu vini, absque fuligine, calcinata corpora pondere augeri ostendit, neque in ea mutatione expelli principium aliquod, quod metalla tenacia reddat, aut humido radicali analogum sit.

In *Physico-theological considerations*, &c. ostendit, corpus humanum equidem fluxum esse & mutabile, sufficere tamen ad revelationis auctoritatem confirmandam, si aliquæ earum particularum conserventur, quæ aliquando corpus nostrum constituerunt: & posse particulas corporis sub variis formarum larvis naturam propriam conservare.

Short memorial of some observations upon an artificial substance that shines, &c. In HOOKII collectionibus. Lond. 1678. editis.

De noctiluca aerea, sive experimenta in substantia factitia sponte lucida productione, &c. Londini. 1680. 8. *New experiments and observations made upon the icy*. Noctiluca L. an. 1581. 8. Tres sunt Tractatuli, primo continentur aliqua sed imperfecta de phosphoris, eo tempore novis Kraftii & Balduini, altero experimenta cum Kraftiano phosphoro, quibus natura ejus acida, solubilitas in oleis, aliaque experimenta habentur. Ultimo Elementa chemica mutabilia esse contendit. Argumento camphoræ ex oleo anisi, sive terræ, ut credit BOYLEUS, ex oleo natæ.

Tentamen porologicum ad porositate tum Animalium, tum solidorum detegendam. Lond. 1684. 8. Pars I. agit de poris Animalium, inque eos facta susceptione vaporum, aeris, mercurii. Tum de poris viscerum, ossium. Altera de penetratione marmorum per pigmenta metallorum, per sulfur, per spiritum fumantem nitri, & denique per spiritum nitri, per aurum.

R. BOYLEI *experiments and observations on several subjects*, &c. hac pagina citatis, adjuncta est *a small collection of strange reports*. Fabulosæ pleræque narratiunculæ. Venenum in domo infecta conspicuis maculis parietes infecisse, bismuthi solutionem cum plenilunio intumuisse & subsedisse, &c.

General heads on natural history magna pars BOYLEI labor posthumus est, aliqua aliena. Illa ad omnes regiones ex æquo pertinent, hæc ad aliquas solas, Turciam, Guineam, Africam & Americam, cum vi fabularum, de quibus peregrinator jubetur inquirere.

Ad BOYLEANOS Libros ibidem recensitos pertinet adhuc EJ. *Essay of mens great ignorance of the use of natural things*. Exempla profert utilitatum, quas in vita humana varia corpora præstant, & quas nemo ex cognitis generalibus principiis sperasset. Exempla mechanica sunt & chemica.

IDEM de figuris fluidorum superficialibus egit in *Phil. Trans.* n. 131. 132.

Apparatus ad historiam naturalem sanguinis humani ac præcipue spiritus ejus. Pars I. Angl. deinde Latine 1684. 8. Primus omiſſis theoriis Galenicis humores humanos subjecit experimentis. Pondera specifica sanguinis & seri definivit. Sed ea nunc emendata sunt. Effectus reagentium in sanguinem, eductos per ignem, mensuravit, descripsit. Maximum vero laborem posuit in sanguinis spiritu alcalino, varie misto & composito, quem plurimum in Medicina valere persuadebatur.

Historia naturalis aquarum mineralium. Lond. 1685. 8. Quæstiones pro inquisitis in naturam aquarum mineralium per titulos digestæ. Acidulas absque visibili acido esse. Non sufficere vulgaris experimenta ad definienda principia aquarum, neque aquis inesse. Gallas recentissimas adhibendas esse. Vires aquarum cito perire. De Sale marino ex acidulis. De pondere specifico.

De remedium specificorum concordia cum Philosophia corpusculari. Lond. 1686. 12. (SH. 1685.) Duo Opuscula. Dari specifica, Cantharidum exemplo. Modum agendi per suspensiones proponit, quas experimenta illustrent. In altera parte laudat medicamenta simplicia, saccharum saturni, paronychiam foliis rutaceis, alia, pronior semper in eas vires laudandas.

De effectu languidi motus. Lond. 1685. 8. 1697. Vis motus parvorum corporum & invisibilium demonstratur, exemplo metalli rotando calefacti, lucis, soni. Vis eximia fluidorum in solida nitentium. Vis motus oculis impercepti, tremuli. Imprægnati aeris a vaporibus subterraneis noxa. De idiosyncrasiis sympathicis; de aere salubri & insalubri; & de vi exhalationum.

De ipsa natura. Lond. 1686. 8. 1687. 12. Magis Metaphysicum Opusculum. Non dari Naturam, sed leges a DEO creatas, secundum quas Mundus gubernetur.

A dis-

luminibus, anno 1714. (a) in 4. At quænam ejus BOYLEI Opera commenda-
bo? Certe omnia, nam ignis, aquæ, animalium, vegetabilium, fossilium, se-
creta, debemus huic uni viro, adeo ut ex ejus Operibus totam Physicam de-
ducere possimus. Si quis enim voluerit v. gr. de corpore humano legere, legat
ejus apparatus ad historiam sanguinis, & sic porro, semper, & de omni sub-
jecto docentem inveniet optima. Opera ejus sparsim edita sunt, prout tempus
ferebat, & sparsim quoque impressa, ut Oxonii & aliis locis, & in Actis Phi-
losophorum disseminata leguntur. Verum hoc tempore omnia collecta in edi-
tione Genevensi habentur. Ita tamen translata sunt nonnulla, ut non bono
sensu habeantur, nec intelligi possint, nisi ab eo, qui rerum probe peritus
fuerit. Hinc ejus Opera sparsa plus laudanda, quam quæ in unum volumen
sunt congesta.

Hi nunc sunt bini maximi viri, quos legere & tractare debet, quicunque in co-
gnoscentis rebus naturalibus ingenium excolere & perficere voluerit. Cum vero
neuter ubique systematice scripserit, hinc ex iis ea, quæ ad unum caput pertinent,
colli-

A disquisition about final causes of natural things. Lond. 1686. 4. Varia ad demonstrandum
ex fabrica rerum Creatorem. Dari fines prævisos partium, neque eas post experimenta ad certas
functiones adhiberi, cum ignotæ nihilo segnius fungantur officio, contra LUGRETIVM. Sub-
jectæ sunt 14. percuriosæ de visu vitiato observationes.

Hydrostatik applied to the materia medica. Lond. 1690. 8. Scopus princeps demonstrare, quomo-
do per experimenta Hydrostatica explorari queant medicamenta simplicia, an genuina sint. Me-
chanismus experimentorum fusissime describitur. Longa tabula ponderum specificorum ab Au-
ctore observatorum proponitur, quæ sit trutina explorandorum corporum. Multa de men-
struis corporum.

Experiments and observations on several subjects relating to natural philosophy. Lond. 1691. 8.
Magnetis historiam habet; & observationes medicas aliquot, quibus curationes per medi-
camenta chemica factæ continentur. Experimenta chemica varia. Mirabilia quædam arca-
na physica ab aliis communicata.

The general history of the air, design'd and begun. Lond. 1692. 4. Aeris historia in capita distri-
buita, secundum quæ BOYLEI experimenta tum propria tum collecta ordinantur: specime n
certe historiæ physicæ peculiaris, quale animo conceperat BACO. Acidum seu nitrum aereum
confirmat. De aere factitio. De meteoris, calore atmosphæræ. Multum inanum titulorum
replendum reliquit posteris.

General heads on natural history. Lond. 1692. 12. Sunt brevia capita quæstionum, pro pere-
grinatoribus industriis.

Medicinal experiments or a collection of safe remedies. Lond. 3. vol. 1692. 1693. 1694. 12. Col-
lectio formularum ad varia mala corporis humani efficacium, cujus exigua pars 50. nempe for-
mularum an. 1687. edita fuerat. Multa hic nimium laudata quod ægri, illustrem Medicum
venerati, vel Medici, quibus medicamenta exploranda dederat, benignius ad BOYLEUM re-
ferrent. Medicinæ enim minime ignarus fuit, & SYDENHAMUM in clinica Praxi secutus.
(*Sydenh. in meth. cur. febr. dedicatione*).

(a) Opera omnia Genevæ an. 1677. 1714. & aliis annis. 4. prodierunt, valde imperfecte, cum
& recentiora in ea editione necessario desint, & inter vetustiora aliqua, ut Liber de formarum &
qualitatum origine omissa sint, & præterea vitiosa sit editio, de qua publice conqueritur BOYLE-
US *Philosoph. Transf.* n. 130. Novam ergo in ordinem naturalem redactam dedit D. BOULTON an.
1699. cumque ea nimis videretur contracta, aliam P. SHAW an. 1725. 2. vol. 4. sed in compen-
dium contractam Anglio sermone edidit. Nuper vero an. 1744. splendida editio in V. vol. fol.
prodiit, multo auctior & ditata epistolis posthumis selectis, & vita Auctoris fusissima.

(a) Cum

colligenda (a), & in indicem quemdam reducenda sunt, hocque faciendo ad omnia statim quæsitæ inveniuntur responsiones.

Nunc in compendio recitabo omnes reliquos Auctores in omni Physicæ parte optimos, qui præter VERULAMIUM & BOYLEUM scripserunt, prout temporis series me ducet. Eo ipso tempore, quo BOYLEUS inceperat edere quosdam Libellos de Physicis, & tota Anglia excitata erat exemplo magni VERULAMII, instituta est (b) *Londini Societas* (c) quæ dicitur *Regia*, rebus naturalibus indagandis unice dicata. Eodem etiam tempore in Gallia (d), in Italia (e), & simul in Germania (f), idem opus inchoatum & institutum est, ut nempe doctorum virorum institueretur societas, qui summi viri sub legibus communibus negotia sua ita dirigerent, ut summo candore non tantum invenire plura conarentur, sed & inventa sibi invicem communicarent. In hunc finem Societates institutæ sunt, non ad ratiocinandum, sed ad colligenda experimenta. Tunc omnium primo Galli in Libello illo dicto *Journal* (g) *des Savans*, quod *Ephemerides* seu *Diaria Eruditorum* sonat, inceperunt Parisiis an. 1665. edere virorum doctorum inventa,

(a) Cum BOYLEANIS experimentis id factum esse monui. Sed & BACONIS Opera idem D. SHAW in compendium methodicum contraxit, 3. in 4. vol. Londini 1738. editis.

(b) Non prima, ut vulgo solet scribi, præter enim plurimas Academias Italicas, quæ ad Literas humaniores propius pertinent, Lyncea certe Academia semiseculo prius an. 1603. (JANO PLANCO teste in *Linceorum notitia* p. 12.) in Italia instituta est a Principe CÆSIO, & frequentata a magnis in re naturali viris GALILEO, FABIO COLUMNA, JOHANNES FABRO, FRANCISCO STELLUTO, J. B. PORTA, aliisque; & CÆSIUS quidem mineralium corporum cognitioni se dedit, ut tamen præclaras ad disponendas plantas cogitationes in tabulis suis Phytoscopis adduxerit. Neque apes neglexit, microscopium denique primus ad rerum naturam detegendam adhibuit, ex cujus schedis in iis ipsis apibus specimen FRANCISCUS STELLUTUS edidit. Semina etiam in foliis silicum vidit CÆSIUS, indeque *tergiferas* dixit, quod nomen aptissimum est.

(c) *Transactionum Philosophicarum* initium factum est 6. Martii 1665. Societas vero multo antiquior Oxonii circa an. 1645. nata, Auctore THEODORO HAAKE, Germano, & ex hominibus potestatem CROMWELII exorsis aut metuentibus coaluit. Inde an. 1648. divisa, partim Londini, partim Oxonii superfuit. CAROLO II. reduce, revocata Londinum, privilegiis aucta est an. 1663. & ab eo tempore floruit. SPRAT *hist. of the royal Soc.* P. II. p. 57. seq. BOYLEUS in vita sua, &c.

(d) A MERSENNI tempore aliqui Parisiis fuerunt eruditorum conventus. Du HAMEL *Hist. Acad. Reg. L. I. p. 7.* Sed nihil publice firmatum. Academia vero COLBERTO procurante ad Anglicæ imitationem constituta est an. 1666. & cum non penitus responderet spei regię, renovata novisque legibus circumscripta, dotata pensionibus, numerusque membrorum restrictus est an. 1699.

De eruditorum conventibus, qui a MERSENNI tempore fuisse diximus, aliqua reperio in *Russicis sermonibus Academicis* 1725.

(e) Vult *Academiam Cimentinam*, quæ FERDINANDO II. & LEOPOLDO Duci, illo Hetruscicæ, hoc fratre Ducis, Florentiæ orta est an. 1657. sed brevis ævi fuit.

Academia Cimentina, de cujus ortu hic dictum est, nata est ex conventibus CLAUDII UBERII & MARCELLI MALPIGHII in ædibus J. A. BORELLI (*CORTE Mediol.* pag. 152.)

(f) *Natura Curiosorum* Academiam vult, quæ privatis etiam curis BAUSCHII Swinfurtensis, primi Præsidis, orta an. 1652. Cæsareo titulo deinde ornata est, & an. 1670. primum volumen Auctorum edidit. Lemma nunquam *curiosorum* a GARMANNO habet, vide ejus *epist.* p. 233.

(g) Cujus primum volumen prodiit quinto Januarii an. 1665. unico hinc Auctore SALLO. Is mox offendit, & an. 1666. successit in officium GALLOIS; an. 1675 la ROQUE; & an. 1687. secutus est COUSIN in Senatu Parisino Præsides. Idem Diarium 1687. Cancellarii curæ subiectum est, qui Auctores selegit, (Præf. ejus anni); anno vero 1702. Collegium pro scribendo eo Diario institutum, quod apud BIGNONIUM conveniret (Præf. ejus anni) cujus Sodales fuerunt D. DUPIN, ANDRY,

vēta, & continuarunt hoc Opus usque in hunc diem, edendo singulis mensibus parvum Libellum, in quo omnia non solum singularia, sed & privata experimenta & observationes continebantur. In hoc Diario habentur omnia, quæ eo tempore ex Libris innotuerant; hinc adeo magnum Opus emerfit, ut plus quam centum constet voluminibus. In eo Opere, nullo fere omisso experimento, habetur quidquid publice ac privatim in Europa (a) factum est experimentorum. Admixta tamen sunt & theologica & moralia multa; unde moles vastior facta est. Si vero alicujus docti viri industria eligeretur omne, quod ad Physicam, Chemiam & Medicinam proprium pertinet, optimum posset colligi Opus; nunc ita vastum est, ut lectionem commendare pene durum videatur. Id tamen boni habet, quod in singulis illis Libellis index rerum habeatur, adeoque si quis velit per indicem colligere, quæ ad sua studia spectant, poterit indicem facere, qui aliquid laboris requireret, sed incredibile quantum juvabit eos, qui Libros scribere, publice legere, & alios docere debent, eo enim facto habemus omnia, quæ ultimis hisce temporibus observata sunt.

Inceperunt eodem tempore Britanni publice Libellis communicare orbi literato ea, quæ in suis Colloquiis recitassent ad leges VERULAMII institutis (b), ita egregium emerfit Opus, Societati enim Duces & Præsidentes erant optimi Mathematici, quales (c) NEWTONUS, WALLISIUS, deinde summi Anatomici Britannici (d), qui omnes, mutua æmulatione ad experimenta incitati, plurima egregia

I

in-

ANDRI, FONTENELLE & VERTOT. Anno 1707. cœpit mensuris intervallis prodire. Hodie a pluribus Auctoribus continuatur; sed a prioribus Diariis hoc diversissimum opus est. Neque enim ab Academia aliqua, sed a privato homine uno alterove scriptum, neque proprios labores continet, sed recensiones, ut vocant, scriptorum omnis generis. Insertæ sunt utique, passim, maxime in antiquioribus voluminibus rariorum phænomenorum observationes, sed hæc laus dudum vera esse desit. Parisiis autem in 4. deinde Amstelodami in 12. prodit mensuatim.

(a) Nempe ex *Transaſtionibus Philosophicis*, ex Diario erudito Italico, an. 1668. incepto, ex Ephemeridibus Naturæ Curiosorum passim, quæ sibi curiosius viderentur scripta, transtulerant in Opus suum Auctores. Sed in primis inventa Academicorum Parisinorum hic pene omnia primum apparuerunt, quæ nunc collecta habentur in T. X. *des Memoires de l'Academie des Sciences*, depuis 1666 jusqu' a 1699.

Præter ea CATALANI, MEKYI, aliorumque minime malæ observationes passim interspersæ leguntur.

(b) De his institutis videatur ingeniosus Liber THOMÆ SPRAT, quo *Historia Regiæ Societatis Scientiarum Britannica* an. 1667. edita continetur. Complectuntur omne fere scientiarum genus, non Physica sola, sed Antiquitates pariter & Philologica elegantiora. Membra omni tempore permulta fuerunt, & in Britannia & in Continente Terra Europæ, neque facile denegatus cupienti aditus. Nunc, cum fere nimia turba fieret, novis legibus & scrutinio satis difficili, receptio circumscripta est. Nulla in Membris ad edendas observationes obligatio, nulli in ea sumptus, aut pro experimentis aut annuarum pensionum ex publico erogantur, libera sunt omnia, & voluntariæ contributioni quæ a duobus Secretariis recepta per trimestria circiter tempora eduntur.

(c) BROUNKERUS primus Præses fuit, nobilissimus Mathematicus, & CHRISTOPHORUS WREENIUS, & NEWTONUS, & SLOANIUS ex gente Physica, nunc Generos. FOLKES. Sed & EDMUNDUS HALLEYUS, RICHARDUS HOOKE, F. HAWKS BEE, DESAGULIERS, GRAI, GRAHAM, RAIUS, WILLOUGBY, &c. in variis Physices partibus eminuerunt.

(d) EDUARDUS TYSON, cujus multa extant ad anatomen comparatam facientia, EDMUNDUS RING, GUILIELMUS COWPER, qui & animalium sectiones & partium corporis humani exquisitiores descriptiones inseruit. JACOBUS DOUGLASS, CHESELDEN, RANBY, & alii. In Botanicis LEONHARDUS PLUKNET, JACOBUS PETIVER, JOHANNES RAIUS, HANS. SLOANE,

inventa communicarunt, non ratiocinando, sed narrando simpliciter. Hoc Opus editum fuit titulo *Transactionum Philosophicarum*, & incepit edi an. 1665, atque ad nostra (a) tempora continuatur, plurimis voluminibus in 4., sed Lingua Anglica. Primæ partes hujus Operis a Secretario Regiæ Societatis OLDENBURGIO in Linguam Latinam translatae, impressæ sunt in Germania Lipsiæ an. 1675. (b) tribus voluminibus in 4. sed continent tantum paucos annos, & reliqui Societatis Secretarii Acta in Linguam latinam non transtulerunt. Quidquid tamen bonum est (c), Galli in suis Diariis excerpserunt. Vasta quidem sunt illa volumina *Transactionum Philosophicarum*, sed etiam plurima parvi (d) momenti ibi continentur. Clarissimus denique Medicus LOWTHORP (e) compendium fecit omnium Actorum, & sic vastissimum Opus ad compendium reduxit stylo tam claro & puro, ut specimen dederit, quomodo optime scribatur. Tribus tantum voluminibus Lingua Anglica conscriptis totum Opus compegit, sed non sperandum est, ut unquam in Latinum possint converti (f), nisi Auctor ipse illud susceperit negotium, nam certe est Opus hujusmodi, ut, qui hoc aggredi vellet, ille deberet 1. accurate scire omnes scientias, & 2. accurate idioma Linguae Britannicæ intelligere. Hoc nunc Opus secunda basis est veræ Philosophiæ, & in illis Operibus inveniuntur plus fere quam centum egregiorum virorum inventa.

Postea anno 1667 (g) Florentiæ in Etruria editus est Liber in folio titulo Italico

SLOANE, S. BROWNE, præter alios non ita notos, perinde tamen industrios viros. In Chemicis post BOYLEUM, BROWNIUS, GODFREY, HANKEWITZ, FROBENIUS, alii.

(a) Numeri sunt, nunc quidem dum scribo 483. volumen vero decurrit XLIV.

(b) Amstelodami 6. voluminibus quibus res gestæ continentur ab initio ad an. 1670. ex Numeris 68. In editione Lipsiensi vero etiam uno anno pauciores sunt. Sed de ea versione SOCIETAS REGIA queritur, quam STERPINO tribuunt, alii SANDIO. Deinde hæc paucissima volumina nullius sunt momenti, si cum mole Operis conferas.

(c) Pauca certe transtulerunt, brevibus verbis, & fere rerum titulos, nunquam legitimas descriptiones, ut vix alicui usui sint, quæ decerpserunt.

(d) In compendiis solent omitti Librorum recensiones, tum quæ minus generalis usus visa sunt contractionis Auctoribus, eristica, quæstiones pro navigantibus, &c. Judicium tamen passim desideras, cum v. gr. PETIVERII egregia botanica, & unicam illam BROWNIANORUM laborum memoriam, totam omiserit D. LOWTHORP. Ita BLAIRII curiosissima Anatome Elephantii in compendiis desideratur. Cæterum cum durior hæc sit PRÆCEPTORIS sententia, ad quam commentor, non potest dissimulari, pleraque Actis Britannicis inserta, omni laude dignissima esse, neque facile fabulosa aliqua, aut parum accurata ibi recipi: ut tamen non diffitear inter adeo numerosos Auctores, non omnes aut NEWTONOS fuisse, aut DOUGLASSIOS.

(e) Trib in 4. voluminibus D. LOWTHORP comprehendit præcipua momenta rerum ab an. 1665. ad 1700. Hinc D. JONES, inde D. MOTTE duobus voluminibus Actorum ab an. 1700. ad 1720. novum compendium ediderunt; sed & tertium secutum est ab. an. 1720. ad 1732. REIDIO & GRAYO procurantibus. Et nuper an. 1745. D. BADDAM in decem volumina in 8. totam ad nostra tempora seriem contraxit. Maxime tamen monitos velim, si qui possunt aut emtionis onus suscipere, aut in Bibliothecis publicis ipsas legendas obtinere Transactiones, ne utantur compendiis, quæ non solum manca sunt & pulcherrima plurima omittunt, sed icones, anatomicas maxime, mire contrahunt & corrumpunt.

(f) D. de BREMOND translationem Gallicam erat meditatus, & tres annos splendide, neque sine accessione ediderat, sed inceptum cum ipso commortuum est. Societas vero quatuor fere virorum ad eum laborem sufficeret, quorum quilibet sibi nota argumenta unice susciperet vertenda.

(g) Cæmentinæ Academiæ sumtus ad experimenta suppeditavit M. Dux Hetruriæ tantos, ut nesciam, an facile alibi adeo magni facti sint, aureos enim globos contundendos dedit, omne demum

co hocce, *saggi di naturali Esperienze fatte dalla Accademia del Cimento*. Hoc Opus est narratio experimentorum naturalium captorum in Academia Cementina. Adeoque binis annis, postquam Societas Britannica incepit edere sua inventa, inceperunt itidem in Italia hocce dicto Libro, quo Acta Academiae Cementinae continentur. Eam Magnus Dux Hetruscus summis impensis ornavit, magnos viros huic uni negotio dicatos advocavit, & ita eos sua praesentia excitavit, ut ipse praesens omnibus experimentis adesset. In eo Libro egregia sane experimenta habentur recitata de igne, de aere, &c. verum Italico sermone. Quod autem in hoc Libro optimum est, id omne denuo in Diariis Gallorum, modo laudatis, habetur, ipse autem Liber rarissimus est.

Deinde anno 1668. iterum in Italia (a) editum est Opus titulo *Giornale de Letterati* per ABBATEM NAZARUM conscriptum. Egregius ibi Philosophus tradit nobis in illo Tractatu, quae apud alios non habentur, nempe optima experimenta in Italia a maximis viris capta.

Deinde anno 1670 instituta est Societas Germanica (b) *Naturae Curiosorum*, adscitis ex tota fere Europa omnium scientiarum viris eruditis sub certis legibus, titulo *Academiae Leopoldinae*, & *Academiae Naturae Curiosorum*. Ea incepit etiam edere sua inventa & communicata anno 1670, ex tota Europa, ab omnibus suis Professoribus publicis & privatis ad Medicinam & Physicam pertinentibus collecta, ut Socii omnes singulis mensibus Lipsiam (c) scriberent, ubi tunc edita sunt illa collecta titulo *Miscellaneorum Curiosorum*; inceperunt ergo an. 1670. & ad nostra tempora usque continuantur. In his Ephemeridibus continentur quam plurima egregia quae nullibi alibi prostant: verum etiam plura fabulosa (d) & vana, quod evitari

I 2

non

num genus gemmarum destruendum suppeditavit per vim speculi caustici. *GIORNALE de LETTERATI D'ITALIA*. T. VIII.

(a) Romae quod in 4. prodiit. Primum Opera Abbatis FRANCISCI NAZARI, & D. CIAMPINI ab anno 1668 ad 1675. deinde a CIAMPINO solo ad annum 1678. apud Tinaum. Abbas vero NAZARI solus ab an. 1675 alio Bibliopola Muscardo usus Diarium eodem nomine edidit. Id quidem Gallici Diarii translatio est, sed Italicis aucta articulis & dissertationibus. Probe vero utrumque distinguere oportet ab alio *GIORNALE de LETTERATI D'ITALIA* quod an. 1708. prodiit, de quo inferius dicitur.

(b) Nempe eo anno primum volumen prodiit, a secundo Praeside JOHANNI MICHAELE FEHR collectum. Plurimi vero Libri inter 1660. & 1670. editi sunt, qui Societatis & Sociorum nomina praese ferunt, quorum primus est P. J. SACHSII *ampelographia*, quae 1661. impressa est.

(c) Sub initio Wratislaviae prodierunt, procurante ADJUNCTO Praesidis SACHSIO, postea (cum quartus Praeses esset L. SCHROEK) per plurimos annos Norimbergae editae sunt Decuriae voluminum tres ab an. 1670. ad 1705. Centuriae decem a 1712. ad 1722. Volumina septem a 1727. ad 1744. Primus scopus Auctorum earum Ephemeridum fuerat, singularem rerum historias elaborare. Inde sensim ad Miscellaneorum historiam delapsi sunt.

(d) *Naturae Curiosorum Societas* id ipsum, quod Anglica, vitium habet, quod voluntarium sit Collegium, cujus Sodales neque legibus, neque emolumentis ad inveniendum verum incitantur. Deinde plerique Praesides, ut practici fuerunt celebres, alii etiam historiae naturalis non imperiti, Medici tamen fuerunt omnes, neque ea aut eminentia eruditionis aut publica auctoritate, quae ad selectum observationum ineundum auctoritatem conciliaret. Cum ergo promiscue Medici Germani conferrent obiter facta experimenta, curationes sibi honorificas, monstra & alia, quae raritate blandiuntur, factum est, ut pleraque vulgaria, multa omnino fabulosa commentariis illata sint, conquerentibus nonnunquam Praesidibus, sed malo imparibus. Inter Auctores vero BERNIZIUS monstrosis suis iconibus plantarum, HANNEMANNUS vanis undique conquisitis rumo-

non potuit, cum Acta Societatis a tot viris & in tam diversis locis viventibus conscripta & collecta fuerint. Optabile foret igitur, si aliquis perita manu bona collecta seligeret, nam ipso Opere Medicus carere vix potest.

Post Miscellanea Curiosa, edita est *Historia Academiae Parisiensis* conscripta per JOHANNEM BAPTISTAM DU HAMEL in 4. (a). Incipit ab an. 1666, desinit ad annum 1698. Pulchrior hoc Libro vix alius invenietur. Editus est Lingua Latina: sed debet haberi ultima editio (b); nam prima editio caret plurimis inventis subsequen- tium annorum, quamvis alioquin sit bona. Hic Liber continet omnia inventa egregiorum virorum Academiae Parisiensis, quæ dicitur l' *Academie Royale des Sciences*, & a toto Litteratorum orbe in maximo habetur pretio; habentur in hoc Opere omnia ad Physicam necessaria fere experimenta, stylo egregio conscripta, adeo ut nemo hoc Libro carere possit, & omnino debeat possideri ab iis omnibus, qui Chemicis ac Medicis arcanis incumbere student (c).

Acta nunc sequuntur *Eruditorum Lipsiensia*, quæ anno 1682 (d) inchoata fuerunt, & Lipsiæ quotannis volumen in 4. editus, aliquando in plures tomos distribuitur; in quo Opere certe Collectores plurimis similium Scriptorum palmam præripuerunt, singulis enim mensibus compendium ediderunt præcipuarum rerum, quæ

tumoribus, & aliqui alii hujus gregis, famæ Collegii nocuerunt. Addi potest, in ipsis jam primis speciminibus Socios non nova invenire, non res singulares propriis experimentis torquere suscepisse, sed colligere immensum rerum alibi scriptarum acervum, adeoque scribere quæ dicta fuerant, non ea quæ dici oportuisset. Denique iconum fidei & speciei nunquam, nisi forte sub initio, satis prospectum est, ut DILLENII aliique, qui melioris notæ Libellos inserendos miserant, a communicando absterrentur. Cum his tamen vitiis compensanda sunt commoda. Tot in tam vasta Germania Medici, intra tres seculi quartas partes labores contulerunt, ut multa egregia non continere ne quidem possint. Eminent autem WEPFERI, BREYNI, MAURITII, HOFMANNI, LORENZINI, SCHELHAMMERI, STURMII, PEYERI, HARDERI, P. S. HARTMANNI, R. J. CAMERARII, ZAMBECCARI, HEISTERI, DILLENII, LOCHNERI, J. ADAMI KULMI & nonnullorum aliorum inserta monumenta. Toti etiam Libri passim illati sunt in Commentarios, GREWII, RIDLEII, alii.

(a) Cum hæc scriberet PRÆCEPTOR, de laboribus Academicorum ante annum 1699. paucissima extabant Commentaria: nempe anni 1692. 1693. deinde aliqua in *Journal des Savans*, quæ menstruatim prodierunt, & Opera denique aliqua singularia, ea pompa edita, ut privatorum opes superarent. Quare du HAMELII Opus mire commendavit, quod unicus fere esset thesaurus, in quo disceremus, quid totis triginta tribus annis Regia Academia boni invenisset. Nunc hæc omnia abundius habentur in XI. voluminibus in 4. *des Memoires depuis 1666. jusqu' a 1699.* quorum HAMELIUS compendia sola absque iconibus habet. Parisiis prodierunt anno 1724. & seq. ad an. 1733.

(b) Nempe an. 1701. non anni 1698. Illa, rarior, editio duobus Libris auctior, habet res in Academia ab an. 1696. ad 1700. gestas.

(c) Vide Not. (a) hujus pag. 66.

(d) Hæc ad normam *Journal des Savans*, & aliorum Diariorum Clerici scripta sunt. Scopus nempe est, Librorum novorum contenta tradere, & breve judicium. Id, cum *Actorum Eruditorum Auctores* nunc per 68. annos egerint, efficit, ut fere historiam literariam integram novissimam in iis Actis reperias. In principiis brevissimæ erant recensiones, nunc flores & uberiores sunt. Multa etiam inserta leges observata a BOHNIO, WALTHERO, aliis, aut communicata ab Exteris, LEIBNIZIANA imprimis & BERNOULLIANA fere innumera. Per quinquaginta annos nomen tenuerunt, & tum *Supplementorum* etiam nomine prodierunt: nunc titulus est *novorum Actorum*. Directores fuerunt pater, filius & nepos MENKENII. Opuscula integra Actis inserta excerpserunt Veneti, & ab. an. 1740 ad 1746 seorsim ediderunt.

(a) Pace

quæ continentur in universis eo tempore Libris; neque unice exscripserunt alios; sed Opere suo comprehenderunt plurima experimenta observationesque hætenus ineditas, quas communicarunt Collectoribus varii ex tota Europa eruditi viri, cum quibus commercium litterarum alerent, adeo ut omne fere, quod in Astronomia, Medica & Physica, in tota Europa notatu dignissimum quotidie observatur, in hoc Opere contineatur. Hæc Acta continuantur in hunc usque diem, omni enim mense Libellum paucarum paginarum edunt, & quotannis conficitur inde Liber in 4. cujus nomen est *Acta Eruditorum*.

Prodiit postea Liber, quem admirati sunt omnes, qui rebus pretium imponere valent, scilicet *Historie de l'Academie Royale des Sciences*, & (a) *Memoires de l'Academie Royale des Sciences*, Liber incomparabilis, quo nullum unquam Opus plus profuit scientiis institutum. Omnes enim norunt, qui litterarium vel primum salutarunt limen, LUDOVICUM XIV, Galliæ Regem, unde quaque collegisse eximios quosque viros ad componendam suam istam Academiam. Tales fuerunt, (& quidam adhuc sunt) HUGENIUS, ROEMERUS, CASSINI, de la HIRE, & huiusmodi fuit ISAACUS NEWTONUS. In hac Societate lex sancita est, ut ad finem singuli anni ederetur Libellus in 4. in quo nihil, nisi a Societate bene examinatum & observatum, contineretur, & sic ab iis comprobatum, in lucem ederetur. Incepit Opus an. 1699, & editur Parisiis in 4. sed in Batavia haberi potest in 8. recusum (b). In his voluminibus habetur quidquid ad Astronomiam, Astro-

(a) Pace restituta, Rex cura Abbatis BIGNONII, novas leges an. 1699. dedit Academiæ. Exclusit literas, quas humaniores vocant, cui aliam Academiam destinavit. Solam ergo Physicam cum connexis Mathematicis & Medicis studiis inter eruditos Academicos distribuit, ut unica pars Matheseos aut Physices cuique propria adsignaretur, in qua ornanda vitam tereret. Imo tres omnino unicuique arti viros proprios dedit, eos omnes pensione annua instruxit & associavit alios eodem numero. Eos vero qui annonam publicam acciperent, adstrinxit, ut in quovis confessor duo ad minimum elaborata monumenta prælegerent. Experimenta omnia iussit in conventu totius Academiæ confirmari. Nihil edi voluit ab Academico, nisi censura Academiæ sanctum esset. Privilegia varia concessit Academiæ, & ipsi iudicium de novis machinis inventisque ubique commisit. Sumptus ad experimenta passim publice præbuit. Icones magnificas, ex gr. TOURNEFORTII de suo sculpi curavit. Præterea magnis præmiis ad inventa utiliora animos excitavit. Ita annuus redditus 12000 L. tributus est REAUMURI, ob inventam ferri in chalybem mutationem. REGNAULT *Origine de la Physique*, III. p. 213. Denique ad commercium Litterarium adlectos viros promisit adscribere, qui per totam Europam inventa sua communicarent, idque officium eos sibi gloriosum habere experientia confirmavit. Ita multo propius, quam ab Anglis, ad BACONIS institutum accessum est. Inquisitio veri unicum officium, unicus labor est virorum solertissimorum, quibus unica, non nimis patens, pars veri excolenda tributa est, quos honor, lex denique ad labores compellit. Quare non mirum est, si omnium aliarum Academiarum opera longe superavit. Adde denique commoda, opportunitates, quæ ab Urbe Regia, præstantissimis Artificibus, maximis Bibliothecis, Mæcenatibus, æmulatione denique plenissima accepit. Ita vero hætenus edita sunt monumenta a viro elegantissimi ingenii FONTENELLIO, ut prima parte tomi cujusque contineretur brevis recensio observationum singularium, aut monumentorum in monumentis secundæ partis præcipuorum; tum elogia Sodalium demortuorum. In altera dissertationes ipsæ prælectæ prius continentur. FONTENELLIO emerito successit D. MAIRAN: deinde D. GRANJEAN de FOUGHI.

(b) Sic compendium fit sumptuum, cum Belgica editio minimo pretio possit emi, sed vitiosa est, contractis in minus spatium imaginibus, turbatis calculorum numeris. Cæterum viri clarissimi qui Academiam hanc exornarunt numerum fere superant, quem Liber meus contineat. In Mathe-

Astrologiam, Physicam, omnes partes Medicinæ, Matheseos, & Mechanices, spectat, adeo ut, quæ ad perfectum Medicinæ studium (a) requiruntur, hic inveniantur, ita ut fatear, ex nullo Opere me unquam plus rebus meis adjumentum intulisse, quam per istos Commentarios. Qui hunc Librum possidet, additum prioribus, habet Bibliothecam physicam egregiam, nec aliis indigebit Auctoribus. (b)

Ha-

maticis ex Astronomia CASSINII pater & filius, & nepos; VARIGNONIUS, candidissima anima, mechanicæ & analyseos peritia celebris; FONTENELLIUS, PH. de la HIRE, minus laudatus LEIBNIZIO, MARCHIO de L'HOPITAL, SAURIN, qui ob furta patriam & religionem mutare coactus, laudem per Mathesim & vitæ sustentationem reperit; D. CLAIRAUT & alii. Ex Physicis elegantissimus D. de REAUMUR, de MAIRAN D. de MAUPERTUIS, PITOT, NOLLET, de BUFFON. Ex Anatomicis DUVERNEYUS, MERYUS, WINSLOWIUS, LITTRIUS (sed iste minoris fidei), la PEYRONIE, ROUHAULT, HUNAULT. Ex Botanicis DODARTIUS, TOURNEFORTIUS, JUSSIEUS fratres, VAILLANTIUS, du HAMEL. Ex Chemicis HOMBERGIUS, BOULDUC, GEOFFROY.

Inter Exteros antiquæ Academiæ ROEMERUS, HUGENIUS, LEIBNIZIUS, BERNOULLII fratres; in nupera BOERHAVIUS, RUYCHIIUS, MORGAGNIUS eminuerunt.

(a) Quæ Medica in his Commentariis continentur nuper cura Domini MIHLES extracta sunt, & aliquot voluminibus in 8. recusa; sed placuisse rerum gnaris non audio. Idem Transactionibus molitur idem, ex quibus ab an. 1705 tria in 8. volumina excerpta prodierunt physici imprimis argumenti, nomine *Miscellaneorum Curiosorum*.

Medica & physica *Commentariorum Acad. R. scient. Paris.* nunc maxime Germanica lingua edit STEINWEHRIUS, Bressaviæ 8. (Not. b) *Mémoires de l'Académie Royale de Scienc. de Berlin* prodierunt ad annos 1745. 1746. 1747. 1748., & seorsim *histoire de l'Académie Royale des Sciences & des Belles-lettres*, ibid. 1750. 4.

In *histoire & mémoires de l'Académie Royale des Inscriptions & des Belles-lettres* pauciora, aliqua tamen, ad rem nostram faciunt, de papyro, de gymnasiis Romanorum, plantis, quæ in nummis Ægyptiorum sculptæ sunt, &c.

Voluminibus X. Actorum Academiæ Petropolitanæ, quæ ab anno 1726. prodierunt, novorum actorum Volumen nuper accessit. Petrop. 1750. 4. quo multa physica D. LOMONOSOW, RICHMAN & KRAFTII, anatomica egregia CAAVII, etiam botanica aliqua continentur.

(b) Plurimæ aliæ Societates Literariæ extiterunt, Diaria plurima, quorum AUCTOR hic non meminit. Inter Societates ad Historiæ naturalis incrementum constitutas, huc pertinet *Academia Philoxotica naturæ & artis*, quæ aliqua Acta Brixia an. 1686. edidit. *Physicocriticam* etiam breviter recensebo, quæ an. 1691. Senis coaluit, cujusque plusculi sermones, & disputationes in *Galeria di Minerva* continentur. Fundator fuit PYRRHUS MARIA GABRIELLI.

DEINDE an. 1700. FRIDERICUS I. Borussiae Rex Societatem Scientiarum Berolinensem condidit, anno vero 1711 iussit inaugurari, auctore LEIBNIZIO, cujus *Miscellanea* septem voluminibus prodierunt ab an. 1710. ad 1743. Parisina Academia fere pro Archetypo fuit Berolinensis, nisi quod Literas humaniores non excluderet, neque perinde legibus adstricta fuerit. Multa ibi Physica, Mathematica, Chemica, Anatomica, LEIBNIZIO, NAUDÆO, LUDOLFO, BUDÆO, ELLERO, NEUMANNO, POTTIO, FRISCHIO, auctoribus, ut nihil de Philologicis addam. Anno demum 1744 d. 23. Januarii FRIDERICUS II. Societatem, quæ non nihil languerat, novis legibus accuratius circumscripsit, ad eadem tamen fere principia: & ab eo tempore incipiunt prodire, *Mémoires de l'Académie Royale des Sciences de Berlin*, quæ EULERI, LIEBERKUHNI, MARGRAAFII aliorumque clarorum virorum Operibus illustratur.

Societas Regia Monspeliensis in Gallia an. 1705 fundata 10. Dec. 1706. primum convenit, & pluscula pro intima sua unione Monumenta Parisinorum Actis inseruit. Quotannis etiam brevissima eorum recensio editur quæ ab ea Academia elaborata sunt, nomine præfixo *Extraits des Registres de la Société Royale des Sciences de Montpellier*. Mererentur utique ista Monumenta publicam lucem, in quibus D. de SAUVAGES, de la PLANTADE, MARCOTUS, NISSOLIUS, LAMORIER, RIDEUX, & alii inclaruerunt.

Sed & BURDIGALÆ Academia convenit, quæ singulis annis post 1715. pretia ad selecta proble-

blemata proponit. Nihil, quod sciam, ipsa edidit, sed volumina dissertationum, quæ palmam meruerunt, prodierunt, pluscula in 12. quorum 6. volumina ad manus sunt, physici fere argumenti, tum medici, optimorum in Gallia ingeniorum partus, sed qui magis ad theoriam & hypotheses spectant. Eximium tamen Opusculum *de motu plantarum* D. de la BAISSE vel solum hanc collectionem commendat.

Sed etiam *Ruppellenfis Academia* an. 1732. condita, coepit edere scripta argumenti physici; & *Lugdunensis* an. 1739. inaugurata, egregias dissertationes nostri scopi prælegit ut D. DE LORME de calore corporis humani, GAVINET de viperis, &c.

PORRO PETRUS I. inter plurima, quæ ad dispellendas tenebras Imperii instituta orsus est, etiam Academiam Petropolitanam condidit, ad quam constituendam an. 1725. ex omni Europa viri clari convenerunt. Magnificæ ædes, Thesauri physici, anatomici Ruyschiani, Bibliotheca, splendide annuæ pensiones, virorum selectus, rerum novitas, illustraverunt novam Scientiarum sedem. Acta hujus Academiæ ab an. 1726. prodierunt X. voluminibus, tota fere ad rem nostram, maxime vero mathematica, nisi quod historiam retinuerit in Academia PETRUS, imitatus Berolinenses. In Mathematicis & Physicis HERMANNUS, NICOLAUS & DANIEL BERNOULLII, BULFINGERUS, GOLDBACHIUS, DE LISLE uterque, KRAFTIUS, HEINSIUS; in Anatomicis DUVERNOY, WEITBRECHT, SCHREIBERUS; in Botanicis BUXBAUMUS, AMMANNUS, GMELINUS; IIDEM in Chemicis, Mineralibus, egregia a nemine facile negligenda monumenta inseruerunt. Petropoli edita, Venetiis recuduntur.

BONONIENSIS Instituti origo debetur LUDOVICO FERDINANDO MARSIGLI. qui de sua novam an. 1712. conditam dotavit Academiam: quæ cum Academia jam antea ab an. 1690. ab EUSTACHIO MANFREDO coepta, in unum coaluit. Volumen Actorum primum an. 1731. prodiit egregium, maxime in Physicis Opus, ZANOTTO, ALGAROTTO, BECCARIO, MANFREDIO, BAZZANO Auctoribus. Sed & Anatomica MORGAGNI, GALEACII, LEPROTII, NANNII, STANCARI, ALBERTINI, SCHEUCHZERORUM, MICHELOTTI egregia mista sunt. Nuper an. 1746. secundum volumen accessit.

Voluminis secundi Actorum Academiæ Bononiensis, quod 1746. prodiisse dictum est, tres partes sunt. In I. historia nuperior Academiæ habetur, & opusculorum compendia, nunc varia propria opuscula, de corticis Peruviani in febre vi, tendinis Achillis vulneribus, fistula lacrymali, phænomenis animalium in vacuo spatio extinctorum, abstinencia a cibo & potu. In II. & III. parte ipsa opuscula adjecta sunt, egregiaque varia habentur, ut GUSMANNI GALEACII, VINCENTII MENGHINI experimenta de chalybis ad sanguinem itinere, MONTII novæ plantæ, JANI PLANCI molæ anatome, J. VERRATTI experimenta de vesicantibus, BALBI de motu cicatriculæ, &c.

Annales Academiæ Julia ab anno 1720. ad 1728. in 8. Helmstadii editi auctore KOCHIO, deinde Collega olim nostro TREUERO, præter compendia rerum in ea Academia gestarum, aliqua non mala habent & propria, SCHMIDTII vasa lactea humana, varia HEISTERI, &c.

GEDANENSIS SOCIETAS primum 2. Jan. 1743. convenit, & edidit in urbe patria anno 1747. *Versuche und abhandlungen der naturforschenden gesellschaft in Dantzic*. 4. qua collectione multa egregia ad electricitatem, ad vim venti & flatus, avium historiam & coralliorum, & dissilientes phialas continentur.

UPSALIÆ jam an. 1710. nata voluntaria Societas eruditorum virorum ad an. 1720. ediderat *Acta Literaria Sueciæ*, ut unum singulo trimestri volumen in 4. prodiret. Ex anno vero 1725. cum ARVIDI HORNII Regia Societatis Literariæ & Scientiarum titulo, publicum constitutum est Collegium, quod porro ea Acta direxit, majoribus tamen intervallis. In iis nova Sueciæ Literariæ habentur & multa præterea egregia Opuscula & observationes, quibus non absque damno careas, CELSIORUM, RUDBECKII filii, HORNII, LINDERI, STOBÆI, MARTINI, SAMUELIS KLINGENSTIERNA, ELVII, BROMELII, POLHEMII, SPORINGII, BRANDII, LINNÆI, HIORTERI. Ab aliquot autem annis mutato titulo, *Actorum Societatis Regiæ Scientiarum Upsaliensis* titulo prodit idem Diarium, recensendis Libris novis literariis nunc minus destinatum, & ex Opusculis unice constans, quæ fere omnia ad naturalem Historiam pertinent.

Edimburgi etiam eruditi Medici in Collegium convenerunt, liberum, neque publica auctoritate subfultum aut excitatum. Quinque volumina Speciminum, (*Essais*), hujus Societatis prodierunt, quorum ultimum duplex est, ab an. 1733. ad 1742, Medicis perutilia & Chirurgis & Anatomicis, ut ad aquas etiam minerales, & meteorologiam ejus regionis pertineant.

MONROUS ibi eminet, sed finis hujus Societatis factus est, quæ in ampliorem omnis naturalis historiae fere ambitum complexumque recepta evanuit. Inventorum medicorum & novorum Librorum catalogus singulis voluminibus subjicitur. Gallice hos quinque tomos vertit *DE-MOURS*, & Belgice etiam prodierunt Amstelod. 1740. 4.

Academia Biterrensis ab anno 1736. edidit *Recueil de Lettres, de Memoires & autres Pieces*, &c. Confusius vero paulo prodeunt. Aquas aliquas minerales, stirpesque nonnullas describi video.

Chirurgi Parisini in Academiam coacti sunt *LUDOVICO XV.* auctore an. 1731. exeunte. Ab eo tempore unicum volumen prodit an. 1743, Chirurgicis quidem inprimis natum inventis. Sed Anatomica tamen interspersa habet, & tale est, quale a primariis in arte sua viris expectari potest. Multa ibi ad perfectionem operationum calculi, aliorumque etiam felleæ vesiculæ, atretarum, deglutitionem absurdorum, hernias, cæsaream sectionem, &c.

Neapolitana Academia a *CAROLO* Rege constituta, in Physicis, præter eruptionis Vesuvii an. 1737. factæ, historiam, nihil, quod sciam edidit.

Denique *Stokholmiensis Academia Regia Scientiarum*, Regiis etiam ornata privilegiis, condita est an. 1739. & ab eo tempore per singula trimestria Monumenta laborum edit, Suecica lingua. Volumen VIII. nunc maxime finitum est, quo 26. trimestria continentur. Plenissima sunt Physicis experimentis, Chemicis, Botanicis, Medicis, ad œconomiam, ad metallurgiam, ad doctrinam fluidorum labentium pertinentibus, laude omni dignissimis. In Chemicis *BRANDIUS*: in Physicis & Mechanicis *POLHEMIUS*, *TRIEWALD*, *ELMIUS*, *KLINGENSTIERNA*: in insectis *DE GEER*, *LINNÆUS*, idem in Botanicis & *D. D. LECHE*, *KALM*: in Anatomicis *D. SPOERING*: in Chirurgicis *D. RIBE*: in practicis Illustris Archiater *ROSEN* eminuerunt. Optabile certe foret, nisi technicorum vocabulorum difficultas obstiterit, ut in linguam aliquam vulgo notiores transferretur.

ULYSIPONENSIS Academia; Gallicæ plurimæ, Sueffione, Lugduni, Massiliæ & alibi fundatæ, vel solas humaniores Literas tractarunt, vel certe monumenta sua non publicarunt.

Danica Societatis Scripta duobus voluminibus Hafniæ an. 1746. 4. prodierunt. Ea aliqua etiam Medica *DETHARDINGII* & *BUCHWALDI* continentur.

Supereft, ut aliqua Diaria subjungam quæ a privatis hominibus profecta, rem tamen Medicam insigniter illustrarunt, & ex Opusculis atque incertis observationibus ita componuntur, ut censuræ Librorum aut nullæ sint, aut partem Operis exiguam efficiant.

THOMÆ BARTHOLINI Acta Hafniensia primum locum tenent, quæ vir eruditissimus, cui amplissimum commercium literarium totam per Europam erat, anno 1671. edere cepit, & cum quinto volumine an. 1679. finiit. Continent observationes Anatomicas, Botanicas, Medicas, Chemicas, Danorum aliquas etiam Physicas. Magna in hoc Diario nomina ubique splendent. *NICOLAUS STENONIS* fil. *OLAUS BORRICHIIUS*, *BARTHOLINI* pater & filius, ut sit inter ea, quæ unius viri cura prodierunt, facile primum.

N. DENYS, strenuus defensor transfusionis, cum nescio quo fato, *Journal des Savans* intermissionem passum esset, duplici Diario locum supplevit ab an. 1672. ad an. 1674. Alteri titulus fuit *Memoires sur les Arts & les Sciences*, cujus duodecim numeri prodierunt. Alteri *Conferences*, cujus 14 sunt Libelli *NICER*. Ad historiam litesque transfusionis, ad monstrorum catalogum, ad Anatomicas passim & aliorum & proprias observationes pertinet. Prodiit Parisiis in 4. & pro parte insertum est Ephemeridibus, sive *Journal des Savans*, denuoque editum Parisiis 1682. 4.

NICOLAUS de *BLEGNY*, Chirurgus & Medicus, inquietus homo, & in quo aliquid fuit minus constantis judicii, parum laudatus *DIONYSIO* (*Cours de Chirurgie par la FAIE* p. 330.) anno 1674. incepit edere mensuris intervallis *Nouvelles decouvertes sur toutes les parties de la Medecine*. Eas Latine a *BONNETO* versas Genevæ edidit in 4. Chouetus, nomine *Zodiaci Medico Gallici*. Quinque anni sunt, quorum ultimus est 1683. non malus Liber, ob primas inprimis partes, quibus multæ præstantiorum Medicorum & Chirurgorum in Gallia, ipsiusque *DUVERNEYI*, *NOUESII*, aliorum observationes Anatomici inprimis & Chirurgici argumenti, continentur. Sed nimis multum miscetur inanum ratiociniorum, & rhetoricationum, maxime ad finem Operis. In Germania etiam prodit Hamburgi 1681. seq.

STEPHANI BLANCARDI Jaar-Register an. 1680. inceptum quantum novi, desit cum an. 1682. Amstelodami in 8 editum. Multum usus Zodiaco Gallico, aliisque ut solebat, scriptis, non tamen nullas suas addidit observationes morborum, & curationum, vel aliorum quidem alibi tamen vix exstantium. Alia falsa aut manca miscentur. Centuriæ observationum sunt VII.

S. BLAN-

S. BLANCARDI *jaar register* Germanice etiam versum a TOBIA PEUCERO prodiit, Lips. 1690. 8. & prius Hamburgi 1680. 8. 3. vol. Hic cæterum Liber multas observationes RUSCHII, MUNNIKII, GRIMMII, chirurgorum van DUUREN, van DYCK continet.

Giornale de Letterati, Parmæ in 4. editum est, ab an. 1686. ad an. 1690. deinde Mutinæ ab an. 1692. ad an. 1697. Auctore BENEDICTO BACCHINI & GAUDENTIO ROBERTI. Et ipsum, insertis doctorum virorum dissertationibus, applausum meruit.

Abbatis de la ROQUE *Journaux de Médecine*, Parisiis an. 1683. mensibus Aprilis, Maio, Junio, Julio, Augusto, Septembre, in 8. prodierunt, idemque Diarium iterum receptum est an. 1686. Non tamen, quantum novi, diuturnum fuit, cum partim ex viris eruditis Galliæ, partim ex omnibus Diariis, quæ tunc per Europam prodibant, collectas haberet observationes Medicas, Chirurgicas, quarum multæ valde singulares sunt; sed mihi non est ad manus.

BRUNETI *Progrès de la Médecine* non adeo recensiones, quam propria continet Opuscula. Inventorum Anatomicorum Parisinorum enumerationem, partus ventralis historiam, &c. sed imprimis scripta eristica, quæ contra MERIUM eo tempore magno numero edita sunt. Prodierunt Parisiis in 12. an. 1698. 1699.

Nova Litteraria Maris Balthici & Septentrionis ab anno 1698. ad 1708. Lubecæ undecim voluminibus in 4. prodierunt. Præter plenissimam recensitionem eorum, quæ in omni litterarum ambitu eo tempore sunt gesta, & infinitorum fere Opusculorum enumerationem, plurimæ egregiæ Physici & Medici argumenti observationes hic reperiuntur, quæ non alibi exstant.

Sammlung vom Natur-kunst und Literaturgeschichte, von einigen Breslauischen Medicis. Versuch 1-38. cum quatuor Supplementis. Vastum Diarium novemdecim voluminibus in 4. ab an. 1717. ad 1726. prodiit Vratislaviæ. Auctores primi fuerunt KUNDMANN, BRUNSCHWITZ, & KANOLD, deinde KANOLDUS solus, denique ANDREAS-ELIAS BUCHNERUS ultimum volumen absolvit. Per menses singulos digestum Opus omnem rem Medicam & Physicam amplectitur. Meteorologia tractatur totius Europæ, & Agricultura, tum *Curiositatum*, ut vulgo vocant, studium & praxis tum per epidemias, tum per peculiare rariorum observationes. Interspersa sunt nova inventa, observationes anatomicæ, dissertatiunculæ vari argumenti, denique Librorum recensiones. Passim a KULMO, WIGANDO, &c. bonæ dissertationes insertæ. Sed sæpissime mali fontes exhausti, & ex publicis Novellis, ut vocant, exiguo selectu, rumores recepti. STAHLII vero fidum adseclam fuisse KANOLDUM, satis constat.

Acta Medicorum Berolinensium viginti & uno voluminibus prodierunt ab an. 1717. ad 1731. quibus duæ Decades absolvuntur, tertia inchoatur. Auctor est L. D. GOHLIUS Stahlianus accerrimus, ut nihil ibi moderati expectes, quando de mechanicis Medicis sermo est. Argumentum fere totum practicum est, epidemias Berolinenses, sectiones cadaverum morbosorum, chemica experimenta complectitur, aliquas etiam controversias, & observationes Chirurgicas, & vitas Archiattrorum Brandenburgicorum, atque quorundam Chemicorum: mores vero & eruditionem ubique desiderabis.

W. V. RANOUW. M. D. an. 1719. incepit Amstelodami edere in 8. *Kabiner der Natuurlyken Historien*, W. *etenschappen*, *Konsten en Handverken*, cujus decem partes vidi, quarum ultima an. 1721. prodiit. Continet fusas recensiones Operum ad Historiam naturalem facientium, PLINII, ALDRIVANDI, GESNERI, FERRANTIS, IMPERATI; deinde dissertationes de auri historia, cum artibus eo pertinentibus, & alias de aquis, fluviiisque Palæstinæ, historia Saccari, Cacao, &c.

ANDREÆ ELIÆ BUCHNERI *Miscellanea Physico-Medico-Mathematica* sunt quasi continuatio KANOLDINI Diarii. Germanica etiam Lingua prodierunt Erfordiæ ab an. 1727. ad 1730. quatuor voluminibus in 4. Eo anno Auctor director factus Ephemeridum ad novas curas transiit. Meteorologica fere & practica complectitur.

D. URBAN-GOTTFRIED BUCHERI *Sachsen-lands Natur-historie* edita Pirnæ 1722. 8. & continuata Dresdæ 1733. 8. brevis cum suo Auctore ævi fuit, minime tamen inutilis, flos camphoræ, fons Radebergensis & alia ibi describuntur.

OPUSCOLI SCIENTIFICHI e FILOLOGICHI Venetiis ab anno 1728. edi inceperunt, collectore Abbate CALOGHIERA, & in quadraginta septem voluminibus hætenus prodierunt. Mera sunt Opuscula, pleraque equidem Philologici argumenti: multa tamen ad rem nostram, tum vitæ celebrium virorum MICHELI, PACCHIONI, &c. tum insertæ dissertationes COGROSSI, VALISNERII, ROUHAULT, RICHÆ & aliorum. Quotannis duo volumina pergunt prodire.

COMMERCIIUM LITERARIUM ad rei Medica & Scientia naturalis incrementum institutum.

Norimbergæ an. 1731. prodire cepit, & cum decimo quinto volumine an. 1745. desit, Director fuit Vir Illustris C. J. TREWIIUS, quem aliqui Medici ejusdem urbis adjuverunt. Elegantissimo Diario, quod singulis hebdomadibus edebatur, singulis vero annis in volumen coalescebat, tota fere historia Medicinæ ejus temporis continetur. Recensiones uberes & fideles, etiam iconibus ornata. Auctorum omnium, qui digni viderentur etiam pretiosissimorum, vitas Medicorum & Philosophorum insignium, eventus literarios, & nova inventa ibi reperias. Inprimis vero observationes plurimæ, Anatomicæ, Botanicæ, Præcticæ interspersæ sunt, quæ nullibi exstant, & efficiunt, ut eo libro Medicus elegantior carere nequeat.

Amstelodami apud Tirion ab an. 1734. ad 1741. quinque voluminibus in 8. prodit, sed brevis ævi Diarium, cui titulus fuit *Uitgeleee natuurkundige Verhandeligen*. Pleraque equidem ex scriptis optimorum Physicorum collecta sunt, non tamen nulla propria habentur, Physici & Medici argumenti, de causa cohæfionis partium, de aurora boreali, de viribus corporum motorum, MARCELLI de vi magnetica, de spina bifida, hydrophobia, de pulmone recens natorum innatante, &c.

Medicorum Silesiacorum Saturæ, quæ varias observationes, casus, experimenta, tentamina ex omni Medicina ambitu exhibent. Specimina hujus Diarii octo Vratislaviæ ab an. 1736. ad 1742. prodierunt, BURGHARTO inprimis Auctore. Medici argumenti, neque inelegantes sectiones morbidorum & monstrosorum cadaverum plurimas, & Chirurgica varia continent.

Selecta Medica Francofurtensia, Anatomen inprimis præcticam, Chirurgiam, Materiam Medicam, Medicinam universam illustrantia. Tres Tomi prodierunt, & quibus Libelli octodecim continentur. Francofurti ad Viadram ab an. 1736. ad 1745. Quartus inchoatus est, Auctore præcipuo ANDREA OTTOMARO GOELIKE, nunc QUEITSCH. Multa satis Anatomica habet, ad thoracicum ductum, ad vasa bilis, sectiones cadaverum, morborum observationes, controversias etiam cum Mechanicis, solito hujus Sectæ more acerbis.

Selectorum Med. Francofurtensium nunc IV. Tomi 24. libellos continentes prodierunt, quibus opus absolutum est.

MICHAEL CHRISTOPHORUS HANOU Gedani 1737. 4. & aliis annis hebdomatim edidit *erlauterte merkvvurdigkeiten der natur*, in quibus de variis rebus physicis stylo populari egit.

Diarii Hamburgisches Magazin nunc Tomi V. absoluti sunt.

Post memoratum jam librum adde: *Oeconomische nachrichten*, Lipsiæ 1749. 8. edi ceperunt nobili editore. Ad agriculturam inprimis pertinent, repetenda, ubi de botanicis agitur.

Memorie sopra la Fisica e l' historia naturale di diversi Valent' uomini, quæ Luccæ an. 1743. 1744. in 8. prodierunt, egregia habent Italorum inprimis Opuscula, Medica quidem TABARRANI, MAZZUOLI, JANI PLANCI, TACCONI, &c. Mathematica deinde & Physica bene multa BOSCOVICII & aliorum.

SAMUEL SCHAAARSCHMID Medicus Berolinensis ab anno 1738. incepit edere *Medicinishe und Chirurgische Nachrichten* quæ singulis primum hebdomadis, deinde collecta in volumen prodeunt. Plurima ibi inprimis Chirurgica utilia & egregia vel ex propria Auctoris praxi, vel ex communicatione Chirurgorum castrensiu nata. Sextum volumen finem fecit.

CL. ZINKIUS ab an. 1744. cepit edere *Leipziger Samlungen von Wirtschafft-Policey-Cammer und Finanz-Sachen*, quarum 8. tomi editi sunt. Ad nostram rem pertinent aliqua, agriculturam tangentia, ad nitrarias lithantraces, &c.

Hoc ipso anno duo Diaria inceperunt edi, Schneebergæ unum, cum titulo, *Neuue versuchenuzlicher Geschichte*, Auctore ignoto, sed ut videtur Theologo. Scopus est phænomena varia colligere, & enarrare, regiones Saxonix metallicas describere. Alterum, quod Annabergæ editur, ab eodem tempore, Medici JOH. CHRISTIANI THEMEL est Opus, & magis ad rem Medicam, neque tamen non ad Physicam pertinet.

Hamburgisches Magazin T. I. II. nuper, ante annum fere in 8. incepit Hamburgi edi. Elegans Diarium, quo præstantiores ex Transactionibus Anglicis & Gallorum Monumentis observationes continentur, neque nullæ propriæ dissertationes.

Pleniorem Catalogum dare nolui, ne quidquam reciperem, quod in re ipsa non vidissem ipse.

Denique nemo a me innumerabilium Diariorum enumerationem expectet, quæ Librorum censuras aut unice continent, aut certe ad eum finem primario scripta sunt, & quorum neque finis est neque modus. *Nouvelles de la République des Lettres*, ob plures interspersas historias Medicas nominari merentur, quæ an. 1684. a P. BAYLE scribi ceperunt, succedente in laborem an. 1699.

JACO-

Habet adeo Tiro Medicus & Physicus aliquod schema (a), cujus fructus in toto suo studio, gratus percipit, cum inde sciat, quid boni scriptum sit, & discat eligere Auctores, qui Lectorem non in errores & tricas industrias Scholasticas abducunt; sed scitu necessaria proponunt. Omnes enim Auctores indiscriminatim legere est unice discere cognitionem multorum hominum; eaque ratione æque falsa ac vera discere poterit Tiro, neque judicare valebit, num vera discat, num falsa, multoque post labores demum videbit, plurima eorum, quæ magno labore in memoriam congeffit, opiniones falsas esse, iterum rejiciendas. Physici enim systematici plerique ex suo captu scripserunt, iique paulo post ab aliis everfi fuerunt. Tiro vero, qui reciperet quæcunque scripta legeret, cogeretur cum Auctoribus suis sententias mutare. Sed ii Auctores, quos adlegavi, durabunt & prostabunt in æternum, quamdiu scilicet orbis Litteratorum supererit. Præter eos vero, quos recensui, alii Auctores exstant, qui in singulis partibus Physices philosophati sunt, v. gr. ULYSSES ALDROVANDUS (b), magnus Scriptor Italicus, cujus Opera multis volumi-

K 2

mini-

JACOBO BERNARD. Sed & W. E. TENZELII *Monatliche underredungen guter Freunde*, quæ singulis mensibus ab an. 1689. ad 1698. Lipsiæ prodierunt, & undecim ipsæ in 8. volumina efficiunt, libros non alibi facile recensitos, & inter eos Physica non pauca habent.

Porro *Galleria di Minerva*, quæ apud ALBRIZZIIUM ab anno 1696. ad annum 1717. in folio septem voluminibus edita est, non magis recensione quam inserta Opuscula habet Medicorum MONTANARII, VALISNERII, LANZONI, REDI, HECTORIS della VALLE (sive DAVINII), GIMMÆ, SCARELLÆ, ALOYSII a FABRA, LANCISII, & aliorum.

Deinde anno 1700. incepit prodire & innumeris fere voluminibus menstruatim editur *Mémoires pour servir à l'Histoire des Sciences & des Beaux-Arts*, quod Jesuitarum Opus est, & vulgo, a loco primæ editionis, Trivultinum Diarium dicitur. In id Diarium Medicæ & Physicæ dissertationes magno numero receptæ sunt, & critica plurima, inter quæ controversia de sede cataractæ, non alibi uberius tractatur.

Giornale de Letterati d'Italia excitavi superius, quod multas etiam elaborationes & maxime Philosophorum & Medicorum vitas habet, præter plenissimam enumerationem novorum scriptorum, quæ in omni Italia prodierunt. Primus Auctor fuit APOSTOLUS ZENUS, & prodire cepit an. 1708. Inde quadragesimo volumine quod an. 1740. excusum est, finis egregio Diario in positus est, cujus judicia & censura alios hujus generis Auctores æquitate, judicio, eruditione superant.

Inter nuperrima Daria non oportet prætermittere *Bibliothèque Raisonnée*, quæ apud VVetstium, pariter, ut pater & avus de re Litteraria apprime meritum, prodit, & cujus nunc 40 tomus absolutus est, initio facta ab an. 1728. Insertæ ibi sunt Dissertationes Practici & Physici argumenti, præter uberiores, quam vulgo solent, optimorum Librorum censuras. Aliquæ etiam hujus generis in *Bibliotheca Italica* Gallico sermone scripta habentur, quæ Genevæ prodiit ab an. 1728. Plusculæ etiam DIVERNOI, GARCINII quæ dissertationes extant in *Journal Helvétique*, quod Neocomi editur. Sed & Gallicus *Mercurius* bene multa passim sparsa habet, etiam Chirurgica & Medica, neque similia defunt in *Gentleman's Magazine*, & plurimis aliis Diariis quorum princeps scopus historicus est. Sed res ipsa infinita est, neque nostri argumenti.

(a) Vide supra pag. 69. Not. (a).

(b) ULYSSES ALDROVANDUS nobilissima familia Bononiensi ortus, GESNERO non ignotus, ejusque elogium vere meritis, jam an. 1562. „neminem diligentiorum, neminem copiosiorum in totius naturæ rerum variarum possessione vivere”. Epist. ad J. B. n. 13. per quinquaginta fere annos collegit Thesauros rerum naturalium, & inter primos fuit, qui hujusmodi rariora collegit, quæ hodie vocant *Cabinet*, maximis itineribus & enormi dispendio proprio. Idem non sine enormi stipendio per triginta annos Pictorem nutrit, unde passim queritur de exhaustis in Opus suum facultatibus, & in dedicatione secundi Tomi *Ornithologia* PERRETTO MONTALTO Cardinali gratias agit, quod sumptus ad edendum hoc volumen præbuerit, & naufragium studiorum patienti facultatem fecerit redeundi ad sua studia. In dedicatione vero ad T.

minibus in folio constant. Vir iste, cum ditissimus esset, omnia sua bona impendit, ut hoc unum scriberet Opus, & se ex eorum numero eximeret, qui plurimis carentes experimentis, ex museo aliquando non exierant. **ALDROVANDUS** autem experimenta, quibus indigebat, instituit ipse, itinera plurima suscepit, & magno sumptu naturæ Opera rarissima & carissima ubique collegit; unde tandem confecit thesaurum & museum, ubi egregia illa omnia asservaret, quorum pars adhuc Bononiæ est. Descripsit magnus ille vir (qui tandem ob immensas impensas pauper mortuus est) Historiam naturalem Animalium quadrupedum, volatilium & reptantium, omniaque fere quæ descripsit, de specimine vivo, in thesauro suo conservato expressit, qui certe egregius quidem est, & ad quem etiam nostro seculo Principes Italiæ quotannis curiosa varia mittunt. Hic Liber majori pretio est, nec fere a privato emi potest, & ut verum fateamur, etiam multas fabulas continet, nimis liberalis est in citatione Auctorum, unde plura, quæ non vidit, æque ac vera etiam allegavit. Cæterum egregia certe plurima Physica continet.

Sequitur **CONRADUS GESNERUS** (a), qui monstrum est eruditionis. Tigurinus

III. *EJUSDEM* viri liberalitatem laudat, qui se exhaustum sumptibus adjuverit. Hos thesauros **RAJUS** medio seculo præterito in Palatio Cardinalis Legati adservatos vidit, & decem volumina pictarum plantarum, sex vero Animalium accurate depictorum, quæ collegerat **ALDROVANDUS**, *Topograph. Observ.* p. 234. Tandem non quidem in paupertatem (ut ex Patinianis citat **STOLLIUS** *Historie der Medicinischen Gelahrheit*, p. 206.) ; sed in cæcitatem circa annum 1602. incidit, (**GASSENDUS** in *vita Peirescii*, p. m. 61.) , neque diu post octogenarius mortem obiit an. 1605. Quæ ad rem naturalem inprimis pertinent, hæc sunt.

Ornithologia Tomi III. in fol., *Avium* nempe *fissipedum*, primo volumine *rapacium*, secundo *granivorarum*, tum tertio *palmipedum*. Aliquæ dissectiones eo Opere continentur, plantæ etiam, sed rudissimæ singulis fere avibus Tomi II. & III. adpinguntur. Ipsæ icones in universum, ut inter ligneas, satis eleganter & ad vivum factæ. Bononiæ prodiit 1599. 1600. 1603. & denuo 1646. 1647. Porro *de quadrupedibus bisulcis*, *solidipedibus* & *digitatis*, *viviparis* & *oviparis* tria volumina a morte ejus edita sunt annis variis 1621. 1639. 1642. 1645. &c. aliquoties. In istis anatomes multo minus, icones propriæ paucæ, reliquæ ex **C. GESNERO**, descriptiones pariter deteriores, sceleta ex **COITERIANIS**, non citatis. Digitata edidit **AMBROSINUS**, bisulca vero & solidipeda **JOH. CORNELIUS UTERVEERIUS**. De *piscibus* & *cetis* ib. 1613. & 1638. fol. edidit **UTERVEERIUS**: Icones undique corrasæ sunt. De *Serpentibus* & *Draconibus* reliquis Bonon. 1640. & 1642. **AMBROSINO** editore. De *Animalibus exsanguibus mollibus & crustaceis*, ib. 1606. (& 1642.) nomen subscribente vidua. Pleræque hic icones ad ipsas in Museo testas expressæ sunt. De *Insectis Animalibus* Bononiæ 1602. & 1638. Hoc ex optimis est, & plurima Auctori propria habet. Deinde ex alio genere *Monstrorum historia* fabulis plenissima **AMBROSINI** cura, Bononiæ 1642. edita, & vix ullius momenti est. De *Dendrologia* ib. 1668. ab **OVIDIO MONTALBANO** edita, alibi dicitur. *Museum Metallicum* ib. 1648. Hoc ab **AMBROSINO**, ni fallor, editum excellit, & prima est, quam novi, alicujus momenti lapidum figuratorum collectio. Hæc eadem Opera Francofurti variis annis, sed sordide satis & imperfecte recusa sunt.

Si judicium meum requiris, observo primum fere omnia **ALDROVANDI** posthuma esse, excepta *Ornithologia* & *Insectorum historia*, hinc imperfecta, & ex collectaneis coacervata nullo delectu. Icones, quas ipse perfecit grandiores, & melius delineatæ Gesnerianis sunt, & Animalia multo plura, ut qui & recentior scripserit, & in longissima vita multo plura collegerit. Descriptiones brevissimæ, satis tamen accuratæ, anatomes passim aliquid additum est. Sed quæ propria Auctor observavit in farragine historicorum, poeticorum, heraldicorum & fabulorum collectaneorum latent. Quare in serie quidem Scriptorum rei naturalis necessarius Auctor, non tamen, qui spem nostram expleat, aut sufficiat historiam rerum desideranti. De museo, quod collegit **ALDROVANDUS**, ejusque custodibus legi possunt **COMM. BONON.** T. II. P. L. p. 34.

(a) In **CONRADI GESNERI** historia paulum immorabor. Ita jubet **BOERHAVII** in eum virum amor,

rinus ille excellentissimus in scientia omnium Linguarum, Medicinæ, Botanicæ, &

Ani-

amor, quem & Nepotibus ejus JOHANNI & JOHANNI CHRISTOPHORO, omni genere benefici-
ciorum testatus est, & mea demum in tantum civem veneratio: cum meus atavus GESNE-
RICIVIS & familiaris fuerit ZWINGLI cum eo occisus in prælio Cappelenfi. A Parentibus minus
locupletibus, honesta tamen familia natus 26. Mart. 1516. (Epist. a WOLFFIO edit. p. 226.) per
summos labores, ex tenui fortuna sensim, suo merito in meliorem statum res suas colloca-
vit (l. cit. p. 49. b.). Corpusculo debili & valetudinario (p. 92.) ut etiam a renibus sibi
metueret (p. 102. b.), arthritidi obnoxius (p. 836.) ob quam an. 1560. thermis Baden-
bus usus est, (p. 7. b. & 88.) vapore demum accensi spiritus vini levatus & ulcere spon-
te oborto (p. 83. b.), myops denique (p. 84.) ut conspicio uteretur, quo objecta remo-
ta minutiora adparent (p. 136. b.). Improlis mansit, cum 30. annis in conjugio vixisset
(p. 62. b.). Diligentia incredibili omnia fere scripta veterum pervolvit, nulli parcens arti,
& edidit plurima Græce Latineque peritus, sed ut non facile alter, Medicinam omnem, uti
per partes demonstrabo, studiis suis complexus est. Solebat colligere omnis generis monu-
menta, ut in uno latere Libri scriberet, quem pro arbitrio posset dissecare (p. 62. b.). Res
autem ipsas colligebat nulli parcendo sumptui, ex Europa omni & ipsa Polonia, ut in tan-
ta rei familiaris mediocritate Thesaurum fossilium (Hist. vit. p. 14. &c.), plantarum, ani-
malium, primus forte collegerit, ipsisque fenestris pisces & marina animalia adleverit de-
picta (Ep. Wolf. p. 115.). Candore eo fuit, quo non facile quisquam alius. In tanta pe-
ritia, qua neminem sibi parem haberet, nullam opportunitatem discendi prætermisit, ut vel
Magum Phædrone invisum sibi, de plantis consulturum ajat, si tempus haberet (ib. p. 24.),
GUILANDINUM vero etiam pro Præceptore haberet (p. 65. Epist.) & generalia se negligere,
in specialibus unice esse occupatum, tanquam vitium aliquod fateatur (ibid. p. 3. b.).
Omnes bonos ubique laudavit, neque quemquam, a quo profecerat, absque grati animi
testimonio reliquit. Animo ita excelso fuit, ut GUILANDINUM ab asperiori in communem
inimicum MATTHIOLUM contentione serio revocaverit (ib. p. 140.). Honestissimi animi
luculenta edidit testimonia, in aliorum operibus edendis, sed inprimis in MOIBANI hære-
des (p. 41. b.), in quorum gratiam etiam amatissimas sibi plantas aliquandiu deseruit (ib.),
mercedem autem laboris sui pupillis condonavit. Pietate summa fuit, cujus documentum
certissimum est, in ea Epistola, quam ad OCCONEM paucis ante imprævisam mortem diebus
edidit (p. 55. b.). Iis cum esset moribus, omnibus suæ ætatis doctis viris carissimus fuit.
ipsi AMATO, minime liberali in laudando, omnium doctorum dictus Magister (Centur.
Hist. Med. VII. Hist. 6.). Ergo ex Sarmatia usque luculentis donis ornatus (p. 115. &c.)
accepit plantas a KENTMANNINO (Epist. ad Wolf. ed. p. 5. 6. & Epist. ad KENTMANNUM
n. 1.), ALDROVANDO (Epist. Wolf. p. 79.), JOHANNI FABRICIO CURIENSI (ib. p. 92.
b. 97. &c.), FELICE PLATERO (p. 101. b.), VALERANDO DOUREZ (Epist. ad J. BAUH.
n. 19.), JOH. BAUHINO (in Epist. ad eundem ubique, in WOLFIANA vero edit. p. 101. b. 121. b.),
THEODORO ZWINGERO (in iisdem p. 101.), BENEDICTO ARETIO (ib. p. 116. b. 119. b. 121. b.),
JOHANNI CATO Britanno (p. 134.), COLLINO Sedunensi (de Aconito l. p. 5.), ADOLPHO OC-
CONE (Ep. Wolf. p. 69.), LEONHARDO RAUWOLFIO (p. 60.), STOECKLINO (p. 80.), HOLZ-
HALBIO (p. 84. b.) QUADRIO (de Aconito primo p. 5.), EUSTATIO QUERCETANO (ib. p. 13.),
CORTUSO (Epist. ad JOH. BAUH. n. 20.) aliisque. Icones vero Stirpium habuit ab OCCONE (p.
50. 52. b. 78. b.), GEORGIO FABRICIO (p. 88.), sed malas istas (p. 89. b.), ARETIO (p. 99. 121.
b.), LEUSCHNERO (Epistola ad KENTM. 27.), KENTMANNINO (ib. & præf. ad CORD. L. IV.),
Sic semina miserunt ADOLPHUS OCCO (p. 77.), HOLZACHIUS (p. 84. 87.), TH. ZWINGER (p.
105. b.), CASP. WOLFIUS (p. 122.), J. BAUHINUS, alii.

Ita porro Animalium icones communicaverunt VALENTINUS GRAVIUS (p. 1316.), quas val-
de laudat JOHANNES CATUS (p. 135.), SITTARDUS (Ep. ad KENTMANNUM, n. 1.), KENT-
MANNUS (ubiq. in Epist.), JOHANNES BAUHINUS (Ep. ad ipsum n. 32.), SIGHARTUS
(Epist. Wolf. p. 726.). Plures vide in Præf. ad L. Histor. Anim. & inter eos RONDELETIUM, GUI-
LANDINUM, ALDROVANDUM.

Lapides & fossilia donarunt PONTANUS (Ep. cit. p. 31.), VALENTINUS GRAVIUS
(Ep. ad KENTMAN. n. 10.), KENTMANNUS (ib. n. 13.), JOHANNES BAUHINUS
(Epist. ad J. B. 6. &c.); terras JOHANNES CRATO (Epist. Wolf. p. 14.). ACHILLES
GASSERUS (p. 43. 54.); Conchas J. CATUS (p. 134.), Pisces KENTMANNUS (ib. p. 56. & ad
KENT.

Animalium sane incomparabilis fuit, ita ut videatur natura constituisse prodigium in eo homine. Scripsit de omnibus animalibus, de piscibus, de plantis &c. non descripsit (a) ex aliis, sed ipse, quæ expertus est, ea nobis tradit: verum quod maxime mirum est, dum tanta opera solus molitur, fecit unus tot & tanta experimenta (b), quot omnes alii cœvi ne junctis quidem viribus fecerunt. Tandem expositurus virtutem radicis doronici (c), ut sopiret lites Italicas, in semetipso cœpit experimentum lethale, nam funestus exitus ejus vim deleteriam in ea radice, de qua disputabatur,

KENT. n. 9. &c.), FELIX PLATERUS (*Ep. Wolf.* p. 97. b.), HEROLDUS (Venetiis ib. p. 6.), GEORGIUS FABRICIUS (p. 132.), alii alia.

Adde his præfidiis proprios labores. Plantas quidem in Alpibus plurimis itineribus quæsiuit. In Monte Fracto fuit ut ex descriptione apparet. Alio itinere, comite JOANNE BAUHINO summas Rhætorum Alpes conscendit, ad acidulas Mauritanas, quas cum fructu bibit (*Epist.* p. 23.), ad Thermas usque Tellinas anno 1561. (*Ep. Wolf.* p. 1. b. 85. &c.), aliis annis alias. Debilis & quinquagenarius in lacu Tigurino natavit, ut plantas quæreret (*Ep. ad BAUH.* n. 17. p. 118. & alibi). Lausannæ etiam, Lutetiæ, in Insubria, Gallica Provincia, ex qua redux iter fecit RAUWOLFIO Socio (*Ep. Wolf.* p. 606.), & in Italia operam ad conquiendas stirpes impendit. Propter pisces marinos Venetias profectus (*Hist. Vita Simler* p. 9. & *Pref. ad Hist. Aquatiliam*), etiam Augustæ fuit (p. 65. *Epist. Wolf.*), ob Rhenanos vero pisces Argentorati (*Hist. Vita* p. 10.). His auxiliis & collata hinc fida naturæ observatione, inde copiosissima lectione Auctorum effecit, ut quadraginta & novem annis, quibus vixit, enormem vim Librorum in omni fere artium ambitu scripserit, nullum tamen, cujus editi pœniteret.

(a) Veterum Scriptorum loca undique concise in Historiam Animalium ita stipavit, ut nihil fere deesset, ex omni genere Physices & Philologiæ, quod desiderares. Proprias tamen ubique descriptiones, icones etiam non exiguæ pulchritudinis addidit, etsi ne tales quidem viro gnarissimo satisfacerent (*Epist. Wolf.* p. 20. 3.) Eas icones pro ditioribus amicis vivis ornari coloribus curabat, mire nitidis (*Epist.* p. 186.), quæ exemplar in mea Bibliotheca est.

(b) Non alia re Medicinæ magis profuit quam hujusmodi experimentis, quibus rerum vires in se ipso expertus est. In omni enim planta solebat sapore, odore, vires explorare, deinde virium periculum facere deglutiendo (*Epist. Wolf.* 553. *Hist. Vir.* p. 146.), sensim aucta dosi (*Epist. Wolf.* p. 75. b.), ne sibi noceret, non parcendo venenatis plantis, cum frustra monerent amici (l. cit.). Ita adquisivit sensim miram peritiam de viribus plantarum judicandi, ut vel solo odore distingueret purgantes plantas (eod. loco). Ita vires exploravit purgatorias Eupatorii Cannabini (*Ep. cit.* p. 6. 121.), Ellebori, Gratiolæ (p. 22. 71. b. & *ad J. Bauh.* 33.), tum efficaciam Antithoræ (*Epist. ad J. Bauh.* n. 30. & *Wolf.* p. 66.), foliorum Tabaci (*Epist. Wolf.* p. 79. b.), Lycopersici (cujus integrum pomum innocens expertus est p. 107.), Polygalæ, cujus vim commode purgantem detexit (l. c. p. 121.), Thoræ VValdensium (*de Aconit.* p. 18. b.), Paridis, &c. Sic eclegma de Spina cervina (*Epist. Wolf.* p. 166.), Oxymel elleboratum, & Thermarum Badensium usum internum ipse primus expertus est, qui nostris iterum temporibus celebrari cœpit (p. 18. 57. b. 80.) In mineralium tamen viribus investigandis merito cautior erat, Sulfure excepto (*Epist. Wolf.* p. 716.). In Canibus etiam Nucem vomicam (ib. p. 14. b. 33. *Epist. ad J. Bauh.* n. 31. p. 147.), Paridem, Balsaminen impatientem (p. 109.) exploravit. Experimenta in se ipso facta ad ægrorum curatio nem transferebat, de quibus inferius dicendi locus erit. Adde nunc indefesso labore ex omni hominum genere profecisse GESNERUM, & ne Rusticorum quidem experimenta sprevisse (*Hist. Vir.* p. 14. b.)

(c) Illepidi fabula a COSTÆO, primum, quantum vidi, profecta, passim in Medicis Historiis reperitur, tum apud FLOYERUM nuper in *Prefat. Pharmacobasani*. Sed falsissimam esse facile evincunt *Epistola GESNERIANÆ*. An. 1564. in Martio sumsit eas Doronici duas drachmas, a quibus ventriculum sibi paululum debilitatum sensit (*Epist.* p. 18. b. 746. 78. *Hort.* p. 257.) Anno vero 1565. die 13. mensis Decembris ex peste, carbunculo in pectore enato, obiit (*Hist. Vir.* p. 19. b.). Cl. SCHULZIUS paulo deteriori modo rem narravit: periisse nempe eo die, quo mane scripserit se Anthoram sumsisse *Mat. Med.* p. 316. sed absque ullo boni Auctoris testimonio, aut veritatis specie.

tur, demonstravit. GESNERI Opera (a), ubique possunt acquiri, emanant avide, habebitur certe ex iis unde lucrum fiat in studiis, nam quo plus increfcit ftudium inter mortales, eo plus increfcit viri iftius fama. Fabulas omnes eruditiffime expun-

(a) Opera GESNERI ordine recenfebimus, quæ quidem ad rem naturalem; aut Medicam pertinent. *De Lacte & operibus lactariis* Libellus. Tiguri prodiit 1541. in 8. Juvenile Opus inprimis philologicum, & ex veteribus collectum, plantæ aliquæ per occasionem descriptæ. *Naturalis Historia compendium*. Basil. 1548. 8. * *De Thermis & Fontibus medicatis Helvetiæ*. Venet. 1553. fol. *

Historia Animalium, vastiffimum Opus, cujus tres tomos edidit CONRADUS. Eadem omnibus methodus, ordo generum alphabeticus, cum nondum fatis cognitæ effent analogiæ. Nomina Animalium 1. antiqua, & hodierna, & a fe ipfo excogitata. 2. Descriptio, locus natalis. 3. Vita, œconomia animalis, & nonnunquam aliqua anatomica, ut in Otide, piscibus nonnullis. 4. Mores. 5. Utilitas in re familiari. 6. Diæteticus ufus. 7. Medicus. 8. Mythologia univerfa. Ælianum, Nicandrum totum, iatrica loca Athenæi, Galeni, Alberti Magni, plurimos alios Auctores totos intulit Operi, & fuo loco disposuit, ut fit pro Bibliotheca animali. Hujus Operis pars prima de *Quadrupedibus viviparis* prodiit Tiguri 1551. fol. ampla, ob copiam rerum ex Geoponicis. Botanica passim intermista sunt. Exoticas Animalium species, ut ea ætate expectari poterat, paucas habet, neque fere fatis bene expreffas. Exemplo Pantheræ, Rhinocerotis, & aliorum. Aliquas etiam icones, quas ab amicis habuit, malas effe fatetur, ut leporini Vulturis a FABRITIO missam, sed in universum non valde placuisse ipsi suas icones, plurima argumenta demonstrant, tum quod sumptus contraheret Frofchoverus, tum quod difficillime prototypos compararet. Eleganter enim cæterum & delineatæ & sculptæ sunt. Denique Opera sua de Animalibus congesta magis, quam digesta effe agnoscit. *Epist. Wolf. p. 16. b.*

De *Quadrupedibus* L. II. De *Oviparis*. Tiguri 1554. *Appendix ad hos duos libros*, eod. anno *ibid.* quæ in editione anni 1560. suis locis inserta est. Continet icones novas CAILLONII. Aliquæ etiam ad vivum expreffæ sunt.

L. III. de *Avium natura*. Tig. 1555. f. L. IV. de *Aquarilibus*. Tiguri 1558. f. Hic tomus reliquis plenior est. RONDELETTII enim & BELLONII icones insertas habet omnes, aliquas sed paucas SALVIANI, tum proprias GESNERI, ut qui solus fere Helveticos Pisces lacustres & fluviales cognitos habuerit. Hunc tomum Imperatori FERDINANDO I. dicavit, a quo gentilitium insigne accepit quatuor inter animalia Regum, quod Andreæ patruo, viro honorato ejusque filiis, ipse improlis inservire voluit (*Ep. p. 19. b. 21. b.*). Ea ex familia duo Professores Tigurini unice supersunt, JOHANNES JACOBUS, nummorum cognitione clarus, & JOHANNES vetustiffimus & fidus meus hospes, amicus, matheseos, botanices & rerum naturalium amore clarus. Icones vero animalium Gesneri solæ seorsim an. 1560. editæ sunt, auctæ & emendatæ.

Porro edidit *Historiam prodigii quo Calum ardere visum est*. Tiguri an. 1561.

Fossilium historiam minus perfecit GESNERUS, cum præsertim, ut ipse addit, Helvetia fere absque metallis sit. Huc tamen pertinent, *Descriptio Montis Fraeti: Morochti lapidis descriptio*: Deinde collectio Librorum de omni rerum fossilium genere, gemmis, lapidibus, metallis & hujusmodi, quæ Tiguri an. 1565. prodiit in 8. inter Opera GESNERI novissimum. In eo pleraque equidem aliena sunt: non tamen exiguus est ipsius GESNERI de *Rerum fossilium, lapidum & gemmarum figuris & similitudinibus Liber*, quo varia genera fossilium secundum figuras disponuntur, sive linearum circumscriptione simplici, sive exquisitiori sint aliqua ad animalium aut vegetabilium genus similitudine. Coralliorum ergo, & lapidum, quibus testaceorum figura inest, primus historiam delibavit. Imperfectiorem vero laborem effe, a typographo præcipitatum ipse fateatur (*Epist. Wolf. p. 15. b.*). Non tamen omittendum est duplex, ni fallor, GESNERI inventum. Primus, quantum novi, sal acidularum coquendo paravit, & de fonte quidem Rhætico (Mauritiano) salem amarum paravit, quem pro nitro vero veterum habuit: alium vero ex fonte Scultensi magis salsum, acriorem (*Epist. Wolfi p. 84. b. 91.*), nempe fixum. Idem vitriolum acidulis vires præbere sagax pervidit (*Epist. p. 77. b.*). Deinde succinum bitumini cognatum effe docuit, & in ejus glebis aliquid vitriolici effloruisse vidit (*Epist. p. 45. b. 68. b.*), quæ sententia recentiorum experimentis nunc evicta est.

Verum

punxit, & vera ac utilia reposuit. Prostant ejus Opera multis voluminibus in folio?

Ad

Verum si aliis artibus pares paucos invenit, nullum vel secundum in plantarum cognitione, quoad vixit, habuit. Ita enim a prima juventute, ab avunculo JOANNE FRICCIO institutus (*Præf. ad Catalog. Quadrup.*) amabat plantas, ut in iis quodammodo se insanire fateretur (*Epist. Wolfii. p. 117. 118. a.*). Multis ergo annis ad integram stirpium historiam se præparavit, ut anno 1551. rararum stirpium super centum icones (*Ep. p. 116. b.*), anno vero 1555. mille figuras stirpium paraverit, quingentas autem plantas nemini dictas moriens collectas reliquerit (*Hist. vit. p. 15.*); Opus autem ex ducentis sexaginta Libris collectum paraverit editioni (*Epist. ad J. BAUH. n. 26.*), ut pari ordine plantarum historiam elaboraret, qua animalium illa edita est (*C. WOLFII pollicit. p. 756.*). Sed & ipse omni fere anno montem aliquem adiit (*Præf. ad hist. Mont. Fract.*) & ab an. 1560. hortum coluit (*Epist. Wolfii p. 115.*), aut omnino duos (*Præf. ad Libr. De hort. Germ.*). Cumque nullas aliorum icones valde probaret (*l. c. p. 13.*), mira & exquisita cura proprias depingendas curavit, ad exemplaria viva a se ipso undique collata (*Epist. p. 27. b.*), ut ipse subinde manum adhiberet operi. Vidi & stupui subtiles tenerosque calami tractus, colorum fidem, characteres exquisitos, quorum etiam specimina sunt in Matthioli compendio CAMERARIANO. In re herbaria longe plura præstitit, quam ante ipsum quisquam, characteres nempe primus pervidit, quibus & species multæ plantarum in unum genus conjungerentur (*Epist. Wolf. p. 39. b.*), & multa genera in unam classem. Eos characteres in flore & semine inprimis posuit (*Ep. Wolf. p. 1136. &c.*), in quibus accuratissime pingendis valde curiosum se esse, & proficitur (*Epist. p. 64. b. 113.*) & res ipsa demonstrat. Ergo Molluceam lamiis ad finem ex flore vidit, etsi seminis figura differebat, cui parti plurimum in cognationibus stirpium tribuebat (*p. 656.*), idque addere solebat iconibus (*p. 107.*). Staphisagriam & aconitum ad fines esse invenit (*ib. p. 113.*), ut alibi scorzoneram & tragopogonem (*p. 3. b.*). Dulcamaram vero ad solana reduxit (*p. 84. b.*). Calceolum in sodalitatem orchidum revocavit (*p. 96. b.*). Sed petali etiam & calycis distinctionem pervidisse apparet, cum calicem Hellebori (constans nempe involucrum) ab imperitis pro flore haberi ajat (*Ep. ad Kentman. n. 24.*). Denique innocentissimum illud laborum Botanicorum præmium primus, certe inter recentiores, proposuit, ut nomen celebrium in re herbaria virorum plantis imponeret, prout quisque vires alicujus stirpis in liquidum constituisset experimentis suis (*p. 73.*). Ita Volratam volebat constituere, & Aretiam seligendam proponebat ARETIO (*Ep. p. 120. b.*). Ita JOH. BAUHINO afferebat cognominis plantæ honorem (*Epist. ad J. BAUH. n. 32.*), & ACHILLI PYRRMINIO Gasseriam vel Achilleam (*l. c. p. 42.*) & Adolphiam vel Occoniam (*Ep. a VVolferd. p. 73.*) pro qua amico suo OCCONI Pirolam proponit (*p. 63.*), & Bursam pastoris, si succum ejus, liquorem, viresve explorasset (*p. 73. b.*), CORTUSIUM vero & CALCEOLARIUM sibi stirpes jam selegisse ad JOH. BAUH. scribit (*Epist. modo cit.*).

Opera ad rem herbariam pertinentia sunt.

Historia Plantarum & vires ex Dioscoride, P. Ægineta, Theophrasto, Plinio & recentioribus Græcis. Tiguri. 1541. 8. Parisiis eod. anno. 12. cum annos natus esset 25. Alphabetica est & laboris plena compilatio descriptionum plantarum, quæ apud veteres reperiuntur, magis tamen ad vires respicit. Lausannæ scriptus est Libellus.

Catalogus Plantarum, Latine, Græce, Germanice & Gallice. Tiguri 1542. 4. Plus hic est cognitionis herbariæ, intercurrunt enim aliquæ rariores. RUELLIO plurimum utitur & TRAGO.

Præfatio in Libros de natura Stirpium Hieronymi Tragi a D. KYBERO Latine editos an. 1552. 4. Brevis est Catalogus Botanicorum, quorum numerum mireris, ubi videris recentissimum eorum Tragum esse. Judicia fida neque ubivis obvia.

De Stirpium collectione Tabula, per duodecim menses. Argentorati 1553. 8. & multo auctius per CASP. WOLFIIUM an. 1587. 8. Initium faciunt Tabulæ stirpium per differentias suas. Videas ibi aliquot Classes plantarum flore radiato, polypetalo pleno, papposo, monopetalo calathiformi, tetrapetalo, pentapetalo, paniculato, verticellato, definitiones calycis, gemmæ, seminum in siliqua, in vasculo, nudorum, quæ γυνώσκειν, methodi, uno verbo, primitias. In altera parte plantæ alphabetico ordine, exstant cum mensibus quibus florent. Raræ aliquæ ibi habentur, & GESNERO primum dictæ. Denique alius Catalogus sequitur, in quo secundum menses recensentur.

De variis & admirandis herbis quæ lunaria nominantur, & obiter de iis rebus quæ in tenebris lucent,

Ad scientias etiam promovendas multum contulit ANDREAS CÆSALPINUS

L

NUS

cent, & descriptio Montis Pilati juxta Lucernam. Tiguri 1555. 4. Auriculæ, Lunariæ filiquosæ, Osmundæ majoris, Rorellæ icones, Thoræ prior descriptio, Montis Fracti plantulæ, fere omnes primum a GESNERO descriptæ, hic exstant præter aliquas, quas in adjecto carmine primus nominavit RHELLICANUS.

De Stirpium aliquot nominibus vetustis ac novis. Basileæ 1557. 8.

Ad Valerii Cordi Opera additiones. Argentorati 1561. fol. & 1563. De Cordo suo loco. Candidissimus GESNERUS ignoti sibi hominis Opera mire ornavit, communicata ab HIERONYMO HEROLDO Lipsiensi. Præposuit judicia sua de DIOSCORIDIS editoribus, deinde Lib. IV. prioribus historiæ plantarum Libris addidit, icones vero tum Tragianas, tum suas, & synonymias. Sed uti in universum queritur de vitiis suæ editionis GESNERUS (*Ep. p. 2. 10. 134.*), icones sæpe transpositæ sunt, quæ corrigi possunt ex monitis editioni an. 1563. additis. Addidit L. IV. Cordi, icones & historias doctissimas Tulipæ, novæ tunc plantæ, chamæceras montani, tres alias, ARETII & FABRICII itinera botanica in monte Stok-Horn, Niesen, Galand, bene grandem denique Librum suum de hortis Germaniæ. In eo primo refert hortos botanicos universæ Europæ quales eo seculo dabantur. Deinde Catalogum stirpium, quæ vel in Helvetia sponte provenirent, vel a GESNERO aut aliis amicis in horto alerentur. Hæc prima florarum est, quam in additamentis ex itinere alpino anni 1560. factò pulcherrimis plantis ditavit.

Medicam equidem Praxin GESNERUS non valde quæsit, cum & Philosophiam doceret ex officio & obrueretur suis laboribus (*Epist. Wolf. p. 87.*); cum tamen eruditione excelleret, ab ægris etiam in desperatis morbis adhibitus, masculam & felicem medicinam magna cum laude exercuit. Maniæ, Apoplexiæ, Hydropis, Epilepsiæ, senilis Asthmatis felix debellator (*Ep. p. 2. b. 5. 10. hist. vit. p. 15.*) Inerat viro innata ingenii rectitudo, qua super ætatis suæ præjudicia solus fere se extulit. Ira gemmas & aurum nullius momenti medicamenta esse, ex earum indigestibili virtute pervidit (*Ep. 4.*), & contra CRATONEM defendit, ut rubi Ydæi syrupum facile præferret omnibus gemmis (*Epist. Wolf. p. 50. b.*) Idem antiquorum efficacem medicinam erecto animo revocare in usum adgressus est. Arteriotomen, ex hominum memoria omissam operationem, in FELICE WURTZIO feliciter adhibuit (*Ep. cit. p. 96. & FEL. WURTZ vund-arzney. p. 703.*) Popliteam etiam venam secturus erat varicosæ feminae, nisi repugnasset indocilis (*Epist. p. 85. b.*) Deinde inter medicamenta ea amabat, quorum certior virtus esset. Helleborum ergo, dudum obsoletum, non ad purgandam solum alvum, sed ad incidendos crassos humores, in asthmate, arthritide, apoplexia, mensibus suppressis, adhibuit; maxime vero oxymel helleboratum ex albo helleboro paratum duplex, mite satis purgans (*Epist. p. 9. 126. 20. b. &c.*) Deinde aquam ex helleboro cum aceto destillatam (*p. 11. 25.*); helleborum denique album ipsum cum melle & aceto coctum, vel vinosam infusionem (*p. 12. 13. b.*), & utrumque nigrum & album (*p. 68. b. 83.*) involvulo & omphalocle feliciter adhibuit (*p. 86.*) Opium quod eo ævo pro veneno habebatur, maximarum virium esse, & movere sudorem, contra Scholarum frigidam naturam opio tribuentium opinionem & cognovit, & ipsi opio theriacæ vim tribuit (*p. 61. 69. b. 114. b.*) Paridem herbam cognatam solanis, viso usu narcotico (*p. 346.*) ad hæmorrhoides adhibuit (*p. 21.*) Oleum vitrioli ipsum, dudum ante SYDENHAMUM, in febribus propinavit (*p. 13. 63. 67. b. 82.*) Acetum destillatum, ad sudorem in peste movendum ante BOERHAAVIUM commendavit (*l. c. p. 46.*). Balsamines vim diureticam in ægris expertus est (*p. 109.*). Aquæ frigida ad morbos acutos malignos vim mirabatur negligi (*p. 11.*). Lixivium fabarum ad calculum laudavit, ante nupera experimenta (*p. 73. b.*) & fraga (*p. 92. b.*), Quartanas, Scholis inexpugnabiles, sæpiuscule devicit (*Ep. ad JOH. BAUHIUM. n. 8.*) Gentianæ succo ad febres efficaciter usus (*Epist. Wolf. p. 58. 63. 97.*). Purgantibus indigenas addidit plantas, Eupatorium ut commodum Emeticum, (*p. 63.*) Polygalam purgantem, Gratiolam, &c. Oleo lini in pleuritide mali moris felicissime usus est (*l. cit. p. 20. 21. 39. 108.*). In dispensatoriis dubiis aut inertibus medicamentis efficacia substituit, tunicæ flores utrique Bun, albo & rubro (*p. 52. 80. &c.*). Nec observationes raras neglexit, ut canthari antennati qui ex alvo feminae dejectus est (*p. 22. b. 94. b. &c.*)

Opera ad Medicinam facientia varia edidit, sed fere minora. Ea sunt: * *Medicamentorum ἀντιβαλλομένων* GALENO adscriptorum Tabula cum adnotationibus. Basil. 1540. 8.

Symbo-

Symbola GALENI experimentorum ex ejusdem Libris collecta, Compendium ex L. ACTUARIi doctrina GALENI de compositione Medicamentorum secundum locos. Tiguri 1541. 8. *

Apparatus simplicium Medicamentorum ex DIOSCORIDE & MESUÆO, & universalia præcepta Pauli Æginetæ de Medicamentorum compositione. Lugd. 1542. 8. *

Enchiridion Medicamentorum purgantium & vomitoriorum alphabeticum. Basileæ 1546. 4. *

De secretis remediis Thesaurus EVONYMI GESNERO Auctore. Tiguri 1554. 8. Formulæ sunt aquarum & aliarum præparationum pharmaceuticarum & chemicarum, quarum pretium ex eo potius tempore quo Liber scriptus est, quam ex nostro æstimare oportet.

Ad editionem optimorum Scriptorum Chirurgia, quam Tiguri an. 1555. in folio procuravit GESNERUS, Bibliothecam Chirurgicorum Scriptorum omnium ad sua tempora subiecit.

Ad GALENI editionem FROBENIANAM an. 1562. varia addidit, vitam GALENI, Operum Catalogum, Commentatorum, Adversariorum & Laudatorum enumerationem, quæ fere tota ad id tempus historia medica post GALENUM continetur.

Enchiridion rei Medicæ, ex variis Tractatulis compositum, dedit Tiguri 1563. 8. * Denique in *Bibliotheca universali seu Catalogo Scriptorum omnium*, Tiguri 1545. fol. edita, & in *Pandectarum* Libris XIX. qui secundus Tomus Bibliothecæ est an. 1548 impressus, inter innumerabiles Scriptores, quorum Opera recenset GESNERUS, etiam de Medicis aliqua documenta habentur, parciore tamen sunt, quod Liber XX^{mus} Pandectarum qui Medicos Scriptores continere debebat, & in quo laborabat CONRADUS (*Epist.* p. 114.), nunquam prodierit in lucem.

Numerosos admodum Libros, quos in omni humaniorum Literarum ambitu scripsit GESNERUS, tum quos alienos maximo numero edidit, omitto, ut posthumos aliquos tangam. EO ergo pertinent *Epistola*. Earum prima & major collectio 226. Epistolas continet, a WOLFIO editas Tiguri 1577. 4. Ex in tres Libros distributæ sunt, nullo ordine, & turbatis temporibus. Plurima ibi ad vitam GESNERI, ad Historiam Literariam ejus ævi, ad rem Botanicam & Medicam pertinentia, rara & curiosa continentur. Porro quartus *Epistolarum Liber* ad KENTMANNUM unice datarum, Wittebergæ an. 1584. in 4. prodiit, quo 28. Epistolæ continentur. Denique CASPAR BAUHINUS Basileæ an. 1591. in 8. forma Epistolas GESNERI ad JOHANNEM fratrem suum scriptas edidit, juvenem tunc, sed præceptori suo utilem Discipulum, qui Basilea, Tubinga, Monspelio, Patavio, Lugduno, stirpes ad CONRADUM mittebat. Nec aliud fere iis epistolis argumentum est.

Cum Epistolis a WOLFIO editis prodiit etiam C. GESNERI de *Aconito Dioscoridis asseveratio*, & de *Oxymello elleborato Liber*. Priori Libello defendit, Thoram Aconitum esse, ejusque venenatas vires demonstrat, & MATTHIOLUM (qui Doronici foliis squammariæ radicem adpinxerat (*Epist.* ad KENTM. n. 20.) facile expugnat, & Doronici innocentiam tueretur. Altero Oxymellis utriusque elleborati compositionem & curationes, quas eo medicamento perfecerat felicissimas, singulatim persequitur.

Porro *secunda pars Evonymi* ab eodem WOLFIO an. 1569. 8. edita est, similis argumenti.

Idem WOLFIUS chartarum GESNERIANARUM hæres, Tiguri an. 1587. in folio, Libellum ejus de *Scorpione* qui solus de insectorum descriptione superest, & *historia Animalium* L. V. de *Serpentibus*, edidit. Ordo idem est, qui in prioribus.

Denique magnum illud de Botanica Opus non totum periit. Et de eo quidem labore (in *Epist.* ad KENTM. n. 28. paulo ante mortem data) testatur GESNERUS se hætenus in materia colligenda fuisse occupatum, nunc formam incipere dare operi: & in *Epist.* a WOLF. edita p. 58. paucis diebus ante mortem, spem suam significat Opus intra annum iri absolutum. Schedæ ergo collectæ cum iconibus ad CASPARUM WOLFIUM pervenerunt, qui publico programme, an. 1568. ad JOH. CRATONEM dato, editionem promisit. Sed nihil præstitit, & Thesaurum integrum vendidit JOACHIMO CAMERARIO, quo icones fere 1500. (WOLF. *pollicit.* p. 43. b.) continebantur, tum collectanea GESNERI. CAMERARIUS partem iconum sculpi curavit, & in suam epitomen MATTHIOLI transtulit, unde in VERZASCHÆ etiam & ZWINGERI herbarios Libros transferunt. Pars major mansit inedita, eaque ad VOLCAMEROS, nunc vero ad J. C. TREWIUM, Directorem Academiae Naturæ Curiosorum, &c. pervenit. Apud hunc clarissimum virum videre eum Thesaurum mihi contigit, & rariores stirpes in Catalogum conjicere. Pleræque icones Tiguri calamo exscriptæ sunt, non absque ipsius GESNERI labore, & coloribus vivis pictæ, additis, manu GESNERI, locis natalibus, & variis ad plantæ cognitionem facientibus notis. Aliquæ minus bonæ sunt ab amicis communicatæ. Numerus figurarum re-

spon-

NUS (a), Medicus a corpore Pontificis Maximi. Vir fuit in naturalibus peritissimus, docent hoc satis ejus Opera Botanica, quæ edidit suppresso ejus nomine MORISONUS (b). Primus fuit CÆSALPINUS, qui dignoscendis plantis signa ex fructificatione sumit, primus etiam inventor fuit circulationis sanguinis, sed non evulgavit, nec eo usque penetravit (c), quo HARVEIUS. Egregia etiam scripsit de re metallica. Quæcunque ejus Opera (d) acquiri possunt, ea emanant utique, nam optima sunt.

L 2

Succe-

spondet WOLFIANO. Scripti vero GESNERI codices etiamnum Norimbergæ extant. Plurimum certe quæ CLUSIO, JOH. BAUHINO, recentioribus vulgo tribuuntur, inventorum ad GESNERUM rediret gloria, si unquam incomparabile Opus suum adspiceret lucem.

(a) Aretinus, Professor Botanices Pisanus, & Archiater CLEMENTIS VIII. obiit an. 1603. Vir ingenio perspicaci, sed Aristotelicis theoriis nimis implicatus, ut in aliena varia, & in ipsam denique universi cum Deo identitatem delapsus fuerit. In rebus vero sensibus subjectis, ubi neminem sequebatur ducem, viam veri constantius secutus est.

(b) CÆSALPINUS equidem constituit genera aliqua naturalia, minus nota superioribus, ex femine maxime desumpta, ut pomiferas, umbilicatas, non umbilicatas, amintaceas, apetalas, herbaceas, cucurbitaceas, tetrapetalas, cruciatas, & bacciferas, (sed has nimis multas & varias), diangias, triangias, asperi folias, verticillatas, umbelliferas, gymno-polypermas, polyangias, &c. quas classes fere omnes recepit MORISONUS, nempe uniloculares, biloculares, unifiliquas, triloculares, bacciferas, multifiliquas, gymnotetraspermas utrasque, composito flore plantas, gymnopolypermas. Diversitatem tamen in utriusque methodo reperias, exquisitiori attentione animi adhibita. CÆSALPINUS enim a receptaculo sive placenta genera deducit, MORISONUS a loculis. Hinc ubi tria sunt receptacula, fructus CÆSALPINI numeratur, cum trilocularibus, separatur a MORISONE & refertur ad uniloculares. Quare cum istius methodus laxior & multo imperfectior sit, quam CÆSALPINI, non videtur eo Auctore valde usus esse.

(c) Solent ubique CÆSALPINUM extollere, quod ante HARVEUM circulationem invenerit. Ut vero iusta fiat æstimatio meritorum CÆSALPINI, tenendum est, circulationem minorem, quæ per pulmonem fit, plurimis Scriptoribus egregie notam fuisse, GALENO nempe de usu partium L. VII. & MICHAELI SERVETO L. de Trinitate, & REALDO COLUMBO de re anatom. L. VII. p. 177. PIGAFETTI & FALLOPII discipulo (apud MONAVIUM in Literis CRATONIANIS. L. V. p. m. 395.) & aliis. Major vero circulatio, qua sanguis ab extremis arteriis in venas transit, atque cor versus redit, paucissimis tacta est. De ea CÆSALPINUS cogitata aliqua reliquit, in Systematis vero speciem rem nunquam constituit (De Plantis L. I. c. 2.), ubi alimentum a venis ad cor duci, inde per arterias in totum corpus adduci ait, non satis tamen manifesto addit, ab arteriis sanguinem in venas reddi. In Quæst. vero Medicis observatam venarum intumescantiam, quæ fit, in ligatis venis inter partes extremas, & vinculum, explicat ex calore nativo, qui ex arteriis in venas per anastomosis transeat.

(d) Scripsit De Plantis L. XV. Florentiæ 1583. 4. excusos, cum brevissima de quibusdam aromatibus appendice, quæ an. 1603. in 4. Romæ prodiit. & SYLVII BOCCONE Musæo Plant. p. 115. inserta est. Eximium Opus est, sed difficilis lectionis, quod stirpium nomina Etrusca fere ponat, nullo cum synonymo. Cæterum primus systema ex receptaculo fructus perfecit, idque fideliter persecutus est. Descriptiones breves, sed utiles, virium tractatio fere ex veteribus.

De re Metallica L. III. Romæ 1596. 4. & Norimbergæ 1602. 4. a SONERO recusi. Simplex est, absque multa causarum inquisitione, tractatio de omnibus fossilibus, nam solus tertius Liber metalla tractat. Pliniano more, & eo quem in plantis secutus est, veterum descriptiones & virium medicarum & arrationes refert, additis quibusdam suis aut recentiorum experimentis, plerumque nihil habentibus reconditum.

Quæstionum peripateticarum L. V. Venet. 1571. & 1593. 4. editi. Hoc in primis Opere locus de circulatione minori continetur L. V. C. IV. Solus Liber quintus Physiologiam humanam adtingit, priores ad Physicam generalem, & ad Astronomiam pertinent.

Quæ-

Succedit MARINUS MERSENNUS (a) ex Minimortum familia, qui Ordo Monachorum est. Hic Librum conscripsit in 4. duobus voluminibus contentum, sub titulo, *de experimentis Mechanicis, Hydrostaticis*, & in eum congeffit luculenter experimenta, adeo ut auro cariorem sit habiturus, qui Libri hujus divitias novit. Quæ certe pro novis apud Auctores sæpe traduntur, ea apud MERSENNUM reperiuntur. Eo ingenio natus erat, ut omnes eruditos viros coleret, cumque ipsis commercium Litterarium aleret, in quo, quæcunque agerent, laudabat comissimus. De industria sæpe committebat eruditos viros, ex quorum litibus fieret doctior, ut duorum Mathematicorum contraria sentientium laudaret sententias, ita uterque ad MERSENNUM argumenta sua scribebat, quibus suam tueretur sententiam, atque

Questionum Medicarum L. II. De Medicamentorum qualitatibus. L. II. * Uterque Liber cum posteriori editione *Questionum peripateticarum* Venetiis prodiit, & quantum ex veterum iudiciis video, pro more seculi scriptus est.

Artis Medica speculum Hippocraticum, spectandos exhibens morbos universos. Francof. 1605. 8. & Tarvisii 1606. 8. cum titulo *Praxis universa Medicina* editum *. Ex Hippocratica lectione more Italarum magnam laudem consecutus est CÆSALPINUS (CONRING. *Introduct.* C. III. n. 34. p. 109.). Ad mulierum morbos laudat IDEM C. V. n. 18. Simplex cæterum & ordinatum Opus, præfixa anatome partium, tunc morbis subjectis, ultimo medicamentis & formulis.

(a) Hebræis Literis & Mathematicis enutritus in primis, pius homo & omnium bonorum amicus, obiit an. 1648, natus annos sexaginta. Primus in Gallia doctorum virorum conventus instituit. DU HAMEL *Hist. Acad. Reg. Scient.* p. 7. Scripta ejus numerosa sunt. Quibus ego usus sum, ea recenseo.

Questiones in Genesin. Parisiis 1623. in folio. Non placuit legenti. Video Hebraicæ Linguae aliquam peritiam, harmonica aliqua, Astronomica practica, de plantis etiam & animalibus quæ rerum interiora ne quidem attingunt. Sed & Sectæ amorem plurimum reperio, & contra veritatem etiam adgnitam, pertinacem renixum.

Cogitata Physico-Mathematica. Parisiis 1644. 4. Liber ex plurimis compositus, multo quam prior utilior & maturior. Primo Libro *Pondera & Mensura* veterum in harmoniam reducuntur, non sine magna suspitione, eo transivisse PEIRESCII de ea re amplissima collectanea. Multa ad rem monetariam pertinentia. In altera parte *Hydraulicorum* locus est & *Pneumaticorum*. Pulchra ibi habet, copias aquarum quæ ex datis tubis dato tempore ex data altitudine cadendo exsiliunt, ejus copiarum variarum mutationes, pro varietate luminum, directionum, etiam secundum conicas Sectiones, parabolæ in primis, de qua proprietates aliquas hac occasione adfert. Deinde de efficacia aeris compressi & renitentis in aquis sursum pellendis, Siphonibus incurvis. Hydrostatica & de ponderatione in aqua, & de arte navigandi aliqua habet. *Harmonia* tertiam partem efficit, in qua plurimum posuit laboris. Sonorum varietas ex varietate chordarum, campanarum pondere mensurive determinanda, vibrationum numero, de consonantiis etiam, arte componendi instrumenta musica omnium generum agit. Hoc Libro & secundis *Harmonicis* majoribus multum usus sum, in ea in primis ætate, Auctoris. Mechanice quartus Liber est. Quinque machinæ simplices. Ibi de robore cylindrorum metallicorum & ligneorum, prima ni fallor experimenta. De effectibus corporum cadentium aut motorum aliqua, &c. Quinto loco est *Balistica* qua velocitates ex chordarum elatere generatæ æstimantur, & de lapsu gravium & curvis, quas projecta describunt. De soni velocitate; multa hic utilia. Sexto loco est *Geometria universa mixta & mathematica synopsis*. Præmittuntur Elementa EUCLIDIS, atque porro ex ARCHIMEDE, APOLLONIO atque veteribus pariter & recentioribus, ambitus universus Matheseos compilatur, ut quisque Auctor in sua arte præstitisset. Mechanica & Optica ipse Auctor ex suo labore & COMMANDINI, LUÆ VALERII, & aliorum inventis composuit: Opus eo tempore certe Tironi utilissimum, & quantum novi, a nemine tentatum, quare merito a BOERHAAVIO commendatur. *Harmonicorum* L. XII. eodem Auctore, Parisiis 1635. & 1648. fol. Sonorum natura, generatio & instrumenta musica omnium generum fuse hic exponuntur. Reliqua Opera, ut *Réflexions de Mathématique, du mouvement; la Vérité des Sciences*, & alia lubens omitto, ut quæ mihi non lecta sint. (a) Li-

atque contrariam destrueret. Ipse vero latens ad retia extricabat ex verbis litigantium, id quod verum erat apud utrumque, hocque statim in collectionibus suis annotabat.

Absolvi nunc præcipuos (a) Auctores, qui historiam naturalem experimentis tantum

(a) Licuerit monere, nimis angustum esse catalogum Scriptorum, quos PRÆCEPTOR proposuit. Visum ergo est ex re esse discentium, si universum Physices ambitum in particulas secarem, atque singulis suos assignarem Auctores, ex quibus & ipse plurimum profecissem, & Medicus purissima inventa haurire possit. Cum præterea quadraginta fere annis, qui ab his prælectionibus effluxerunt, elapsi sint, quibus acerrime studium Physicum excultum est, & per multo plures, quam olim, Europæ partes, & melioribus Instrumentis, & addito matheseos lumine, cum seculum a studiorum humaniorum unico amore ad experimenta & res ipsas industriam suam converterit, eo major fuit Supplementi necessitas.

Physices universa Compendia Theoretica.

JOH. BAPT. du HAMEL *de fossilibus; de corporum affectionibus tum manifestis, tum occultis; de corpore animato* L. II. junctim editi Nurembergæ 1681. 4. E Scholarum methodo multum retinet, recentiorum tamen passim additamenta habet, & Physiologiam corporis humani Anatomicis experimentis superstructam. Cartesiana cum veterum placitis conciliat. Suorum laborum quasi compendium edidit *de consensu veteris & novæ Philosophiæ*. Parisiis 1663. Oxonii 1668. 8. editum. Dictiono Latinissima.

JOH. CHRISTOPH. STURM *Physica Electrica*. 4. 2. Vol. Altdorf. 1686. 1698. 1730. Electricus Auctor, & experimentator, historiam opinionum veterum & recentiorum exponit, modesto addito judicio suo, ad progressus ergo Physices cognoscendos utilis.

JACOBI ROHAULT *Physica* ab an. 1675., quo Parisiis 4. prodiit, frequenter edita, ipsoque NEWTONO & CLARKIO procurante Londini an. 1710. recusa, tum denuo an. 1718. & ultimo an. 1729. 2. vol. 8. Commodum Compendium, magis Mathematicum, maxime postquam nuperis inventis auctum est, CARTESIANI cæterum hominis sed Mathematici.

FRANCISCI BAYLEI *Institutiones Physicæ*. Parisiis 1701. 4. minime, ut eo ævo, malæ.

JO. KEIL *Introductio ad veram Physicam*, seu *Lectiones habitæ in Schola Oxoniensi*, an. 1700. & Ed. IV. Londini 1719. 8. Commodum Compendium ad inventa NEWTONIANA, & Mechanicam & Mathematicam Physices partem superius jam laudatam.

PETRI van MUSSCHENBROEK *Elementa Physicæ*, Leidæ 1734. & 1741. 8. Maj. uberius vero Gallice edita 2. vol. 4. 1739. sub titulo *Essais de Physique*. Palmam, ni fallor, præripit reliquis hic Auctor, qui in brevem Librum & rerum descriptionem, & causas, nobis certe notas, & experimenta constipaverit, veri unicus amator, & ab omni Secta purus,

FRANCISCI TERTII de LANIS *Magisterium Naturæ & Artis*, fol. T. I. Brixia 1680. T. II. 1686. & T. III. Parma 1692. Etsi non ignorem, & Scholastica & vana varia admista esse, plurima tamen habet experimenta, maxime ad sonos & tremores sonoros, tum ad motus omnis generis, &c. & alia pericula, non ad sublimem adeo Mathesin, sed ad mistam, vitamque humanam pertinentia.

J. B. du HAMEL *de corporum affectionibus tum manifestis, tum occultis*, Paris. 1670. 12. fol. prodiit. In primo Libro de calore & frigore & sensuum qualitatibus & objectis agit, multum usus BOYLEO & HOOKIO. Altero mechanice interpretatur medicamentorum potentias. Dictiono pura & simplex.

J. ROHAULT *Physica* nuper etiam recusa est, Roterodam. 1750. 8.

P. van MUSSCHENBROEK *Elementa Physicæ* recusa sunt 1748. 8. & Germanice prodierunt Lipsi. 1748. versa a J. C. GOTTSCHED, satis mendose. In nuperiori editione vocantur *Institutiones Physicæ* quæ quidem multum aucta est, inprimis vero capite de electricitate, tum novis variis rerum monumentis. In Gallica editione, quam diximus, nonnulla capita valde locupletata exstant, ut illud de meteoris, de rore. Ab omni cæterum secta purum prædicavimus MUSSCHENBROEKIUM, nisi eo referas corpuscula frigorifica, corporum cælestium naturam, quam admittit solidam.

tum constantem locupletaverunt, nam apud eos data quæcunque pro ratiocinio in

FR. TERTIUM de LANIS, quem quidem ob experimenta quæ habet, laudavimus, multa ex aliis sumfisse facile credo MUSSCHENBROEKIO differt. p. 427.

Ad *Physices universæ Compendia Theoretica* adde seqq.

C. WOLF *vom absichten naturlicher dinge*, Hall. 1737. 8. EJ. *von den vvrkungen der natur*, ibid. 1739. 8c.

VOLTAIRE *Elémens de Philosophie*, Amstelod. 1738. 8.

G. E. HAMBERGER *Elementa physices*, Jen. 1735, 1741. 1750. 8.

J. A. SEGNER *naturlehre*, Gotting. 1746. 8.

CHRIST. AUG. CRUSIUS *anleitung uber naturliche beg ebenheiten nachzudenken*, Lisp. 1749. 2. part.

J. T. DESAGULIERS experimentorum, quæ quotannis demonstrasse diximus, 121. cursus emensum fuisse nunc addimus. In ultima editione, quam solam legi, inprimis studuit utilitati publicæ, ut experimenta communibus hominum commodis inservirent. Solet præmittere experimenta difficilia, & calculos in remotiores notas conjicere. Frictionem fuisse considerat, ut magnum mechanices detrimentum. De robore humano utiliter egit, viresque machinarum ubique ad veros calculos revocavit. In hydrostaticis & hydraulicis accurate versatus est, & plurimas eo pertinentes machinas descripsit. De meteoris copiose egit, & LEIBNITII explicationem rejecit. Optica omisit.

Ad Physicam experimentalem, pro universali ambitu.

JOHANNIS CHRISTOPHORI STURM *Collegium Physicum experimentale*. P. I. Nurebergæ an. 1676. 4. P. II. 1685. 4. & denuo 1701. Non quidem plenum ambitum Physices, sed præcipua tamen recentiorum inventa persequitur, quæ propriis prius tradiderat disputationibus. Primus enim experimentalem Physicam in Academiis Germanicas, ni fallor, introduxit. Ad Medicam rem dissertationes de oculo, de tubis stentorophonicis, de viribus muscularibus per vesicas explicatis, propius pertinent.

F. HAWKS BEE *Physico mechanical experiments on various subjects*. Lond. 1709. 4. 1719. 8. Editio posterior posthuma, & aucta est. In capiendis experimentis constat curiosum fuisse observatorem mensurarum, eventuum: industrium etiam in perficiendis instrumentis. In electricæ lucis & attractionis experimentis plurimum laboris posuit. Sonos in vacuo neque nasci, neque propagari; nihil aerem facere ad vim attractilem tubulorum capillarum; utique refringi radios ab vacuo in aerem propagatos, & magis si compressus aer fuerit; plurimaque alia evicit, totus fere absque ratiocinio, per sola clara experimenta.

GUILIELMUS JACOBI GRAVESANDE *Physices Elementa Mathematica*. Leidæ 1721. 4. 2. vol. & multo auctius an. 1742. a morte Auctoris recusa. Plenissimus congenerum, olim etiam meus PRÆCEPTOR. Machinarum & instrumentorum vis infinita, eaque sæpe nova & ingeniose excogitata. Proprietates corporum fere omnes sub examen revocatae, additis post experimenta Mathematicis demonstrationibus. Plenissime de vi percussionis, de coloribus agit. Id habet difficile Tironi, quod eventus experimentorum a machinis, ab eventibus conclusionum non satis separaverit.

J. THEOPHILI DESAGULIERS *Course of experimental Philosophy*. Lond. 1717. 4. 1734. 1745. 4. 2. vol. &c. Brevissimæ sunt descriptiones experimentorum, quæ magna dexteritate coram principibus viris quotannis demonstrabat Auctor. Eloquentia valuisse & dexteritate in experiendo notissimum est. Multa ibi medici argumenti & anatomici & machinæ & alia describuntur, minus vulgaria.

RICHARDI HELSHAM *Course of experimental Philosophy*. Lond. 1730. 8. NEWTONIANO more, magis Mathematicæ, instrumentis non additis: dilucida tamen & facili dictione usus, ad optica, ad frictionem, utilis Auctor.

Physique expérimentale par M. l'Abbé NOILLET T. I. II. III. Parisiis 1744. 1745. & Amstelodami 1745. 1746. Majoris Operis tres tomī prodierunt, quibus generalia de simplicibus machinis & universalibus corporum attributis, hydrostatica, aere & de sono continentur. Laus primaria Auctoris est facilitas, quam, etiam numeris expunctis, ubique adfectavit. Eventus expe-

in Physica adquiri poterunt, dico principes Auctores, nam qui hos omnes habet, nihil

experimentorum a machinis, ab utrisque conclusiones commode sejunxit. Primis lineis hujus scientiæ ducendis aptissimus. *Leçons de Physique Expérimentale* par M. l'Abbé NOLLET Tom. IV. secutus est Parisiis 1748. Amstelodami recusus 1749. ut majoris operis quatuor nunc tomi prodierint, in quorum ultimo de aqua & igne agitur.

R. HOOKII etiam huc spectat *collection of lectures physical, mathematical, mechanical, geographical and astronomical*, Lond. 1679. 4. *

Experimenta varia.

Huc BOYLEI Opera, supra recensita. ROBERTI HOOKII omnia. Huc ergo *Lampas* ejus, edita Londini 1677. 4. Sed varia præter Lampadem habet hydrostatica. Contra Principium Hylarchicum, semina filicum, muscorum, &c.

Ejusdem *Posthumous works published by RICHARD WALLER* Lond. 1705. fol. Variæ gravis momenti dissertationes. De modo & legibus, secundum quas ab experimentis axiomata licet deducere. De Luce. De memoria, cujus sedem, & recte, corpoream facit. De idearum duratione, indeque orta idea temporis. De Cometis. De superficie Telluris, Telluceis, origine Montium. Ad Astronomiam & Navigationem.

Ejusdem *Philosophical experiments and observations published by W. DERHAM*. Londini 1726. in 8. Omnis generis tentaminum est farrago, mathematicorum, mechanicorum, steganographicorum, anatomicorum, ad vires plantæ Banguæ, &c. tum Auctoris tum amicorum.

WOLFERDI SENGUARD Prof. Leid. *Rationis atque experientia connubium & de Tarantula*. Roterod. 1715. 8. Cartesianus fuerat, animo tamen ad experimenta facienda applicato hanc Sectæ notam eluit. Pleraque ad aërem pertinent. Addita tamen hydrostatica experimenta de ponderibus solidorum in fluidis. Tarantulæ vim ad choreas excitandas, mihi hætenus incredibilem, admittit & conatur explicare.

PETRI van MUSSCHENBROEK editio *Tentaminum Experimentorum naturalium Academiae Cementina*. Leidæ 1731. 4. Superius jam laudata editio, multis experimentis ditior, ad vacuum, frigoris naturam, ignis vim expansilem, &c. pertinentibus. EJUSDEM *Dissertationes Physicae Experimentales & Geometricæ*. Leidæ 1729. 4. editæ. Non totam Physicam continent, sed magnetis, (per curiosissima & numerosissima experimenta), tubulorum capillarium, coherentiæ corporum firmorum, &c. theorias, & ephemerides metereologicas Trajectinas, Medicis utilissimas.

CHRISTIAN WOLF *nützliche versuche*, Hall. 1737. 8. 3. vol. & alias excusa.

STEPHANI HALES omnia, sed ad miscellaneum genus pertinent. *Physico Mechanical Experiments* Londini edita 1739. 8. Princeps equidem tractatio est de edulcoratione aquæ marinæ; adde, de sale condiendis animalibus per injectiones: de conservandis carnibus: reliqua suis locis laudabo.

Physica Opera varia integrum ambitum artis non complexa, sed pluscula tamen capita, ad historiam naturalem.

HIERONYMI CARDANI *de subtilitate* L. XXI. Basileæ, 1554. fol. & repurgati quibusdam impiis locis, auctius editi 1560. fol. Superstitiosus homo & Astrologus, & vanus causarum eventuum naturalium indagator: sed cum peregrinationes varias suscepit, ubique summa curiositate ductus in rariora naturæ inquisiverit, Mathematicus denique fuerit non vulgaris, multa eaque sæpe rarissima ex omni ambitu Physices hic latent experimenta, & observationes. Totam vero rerum naturalium historiam continet.

EJUSDEM *de rerum varietate* L. XVII. Basileæ 1557. fol. Est Operis prioris quoddam quasi Supplementum ordine eodem iisdemque titulis, multa tamen rariora, sublimiora, mathematica, sed vanissima etiam alia de Dæmonibus habet, &c. Caute vero ob credulitatem & amorem miraculi est legendus.

JULII CÆSARIS SCALIGERI *exotericarum exercitationum* L. XV. *de subtilitate ad Cardanum*

nihil videbit apud alios novi, quod non melius in suis inveniat. Itaque, qui Biblio-

num. Parisiis 1557. 4. & Francof. 1582. 8. cum Præfatione CRATONIS. Peritissimus Latinæ Linguæ Literator; non æque aut Physicus, aut patiens experimentorum, qui dignatus sit plantas legere, cum de iis scriberet. Prosequitur singula capita Cardani, & ex recentioribus itinerum Scriptoribus, aut ex ipso suo acri ingenio invenit, quibus singula refutet. Aliqua tamen rariora quæ passim viderat, mista intercedunt. Ad has exercitationes in editione an. 1560. acriter respondit CARDANUS.

JOH. RAI *Wisdom of. God manifested in the vvorks of the Creation*. Londini, 1691. 8. deinde Gallice, Germanice & variis locis & annis. Publici sunt sermones, quos ex BORLEI ultima voluntate edidit. Cartesii fictitium Systema rejicit. Ambitum naturæ, ab ipsis elementis facto initio, percurrit. Hinc fossilia, vegetabilia, animalia, corporis humani fabricam, rerum fines. In Physiologicis tamen fusior est. Pro systemate generationis univocæ.

J. RAI citatus hic liber prodiit etiam Londini 1722. 8.

G. DERHAM *Physical theolgy* prodiit Londini 1713. & 1714. 1727. 8.

Post DERHAM adde: GEORGII CHEYNE *philosophical principles of religion*, London... & V. ed. 1736. 8. scopus, qui DERHAM, minus tamen in minutiora descendit, & magis facilis est in hypothesebus recipiendis. Multa tamen utiliter considerat, ut formationem simultaneam omnium partium, partesque quarum utilitas olim adparebit.

P. van MUSSCHENBROEK *de sapientia divina oratio*, Leid. 1744. 4. Teleologia ad DERHAM morem.

Le spectacle de la Nature Germanice prodiit *schauplatz der natur*, Nurnberg 1746. seqq & Anglice versum.

J. G. SULZER *Unterredungen von den schonheiten der Natur*, Berlin 1750. 4. egregius liber, oppositus recentissimis atheis, qui ordinem & fines in natura negant se invenire.

NEHEMIÆ GREW *Cosmologia sacra*. Lond. 1701. fol. Scopus est ex creaturis eruere creatorem. Id inprimis conficit ex fabrica animalium in initio Libri, breviter, quod dolendum, sed pulchre.

GUILLIELMI DERHAM *Physical Theology*. Londin. 1714. 8. & aliis variis locis & annis. Continet flores physicos magis quam nodos, & historiam rerum creatarum, quatenus Creator inde elucescit, potius quam causas modosque. Plurima tamen ab homine Physices universæ & experimentorum gnarissimo utilia & propria, & ex optimis Scriptoribus repetita. Facili dictione se commendat.

BERNARD van NIEUWENTYT *regt gebruyk der vvæereld beschouvvingen*. Amst. 1716. 4 1720. 1725. tum variis annis & linguis alibi, & Parisiis 1725. 4. Jenæ 1747. 4. Germanice, sed verius & correctius. Ex natura DEUM demonstrat, Physices experimentalis & Matheseos minime imperitus Auctor, Consul Purmerendinus. Integra ibi fere naturæ contemplatio, cum finibus rerum. Physiologia corporum animalium minime brevis, Hydrostaticorum experimentorum fasciculum integrum operi inseruit.

Le Spectacle de la Nature. Paris Ed. I. 1732. Ed. IV. 1735. 12. & seqq. 8. Tomis Elegantissimum Opus Abbatis PLUCHE, quo nihil aut jucundius aut sapientius cogitari potest. Percurrit naturæ ambitum integrum, & undique testimonia divinæ bonitatis conquirat, minus quidem DERHAMO Anatomicus, & flores potius rerum secutus, sed recentiorum inventorum amœnissimus Doctor, idemque ad artes mechanicas, vitæque usum propius respicit. Ad formandum Tironis animum aptissimus.

CORNELII GEMMÆ *Cosmocritice*, sive *de natura humana & divina characterismis*. Antwerp. 1575. 8. Ob ætatem & varia non vulgaria interspersa, huc refero, credulum cæterum, & prodigiorum & Astrologiæ amantem Auctorem, Cardano proximum. Ad monstra, morbos epidemicos, aliqua habet.

JOHANNIS BAPTISTÆ FORTÆ *Magia naturalis* L. XX. Antwerp. 1650. 8. Neapoli 1659. fol. (ex Magn. Bibl.) Hamb. 1619. 8. Leidæ 1651. 12. &c. Ex Physica universa, miraculis propiora delibat, sive artificia, sive causarum inquisitiones, ex quibus naturæ eventus producuntur, meretur vero vel ob Sclopi pneumatici (sive machinæ aerem comprimentis)

bliothecam comparare voluerit, emat potius istos, alios enim si emerit & confu-
luerit, nunquam perfecte addiscet Physicam.

Sequi-

tis), & cameræ obscuræ lucernæque magicæ inventum legi, ut tamen cautus sit Lector,
neque promptissimam fidem adhibeat inexplorato.

PEIRESCI VITA jam recensita est.

PAULI BOCCONE, qui provectiore ætate SYLVIVS dictus est, varia scripta. Credulus
equidem & miraculorum amator, multa tamen vidit in Sicilia, aliisque locis, vulgo non
nota. Ad rem naturalem pertinent *Recherches & observations naturelles* de M. BOCCONE.
Parisiis 1670. 12. & Amstelodami 1674. 12. auctius. Hypotheses aliquæ erroneæ, ut illa
de Coralliis. Inserta de eorundem globulis in tumidis ramorum finibus repertis SWAM-
MERDAMI observatio. Ætnæ incendium. Catalogus plantarum Siciliae.

PAOLO BOCCONE *Offervazioni naturali*. Bologna 1684. 8. Multa botanica, sed quæ fe-
re omnia in posterioribus ejus Operibus repetuntur, Physica multa seniliter congesta, &
phænomena non penitus fida.

EJUSDEM *Museo di Fisica e di Esperienze*. Venetiis 1697. 4. Multa passim utilia de animalibus
venenatis minus notis, de lacte coralliorum, de marinis, de fungis & inprimis de lycoperdis.

BERNARDI CONNOR *Dissertationes Medico-Physicae*. Oxon. 1695. 8. Judicio perinde & inge-
nio valuit. Quatuor sunt dissertationes. I. de antris lethiferis. Vaporem respirationi non ido-
neum pro causa mortium in canina illa specu assignat. II. Vesevi incendium describit. III. Sce-
leton in unum os anchylosi coalitum. IV. Uteri in massam carnosam degenerationem.

FRANCISCI REDI Opera omnia. Viri elegantissime docti alia Opera alibi laudabo. Huc in-
primis pertinet. *Esperienze intorno a cose naturali portate dall' Indie*. Fiorenza 1671. 4. Varias &
proprias omnes observationes habet, vim antidoti æmulam lapidum serpentum refutat.

Offervazioni intorno a quelle Gocciole, &c. sive, de lacrumis vitreis quæ fractæ in pul-
verem collabuntur.

Lettere intorno all' inventore degli occhiali.

Esperienze intorno a' sali fatiaj. Ad sales lixivos plantarum pertinent, pauca magnifi-
ca experimenta.

Lettere del Redi. Litteræ ad CESTONEM multa habent ad historiam naturalem, maxime
insectorum, & animalium marinorum spectantia.

REDI Opera junctim edita sunt Neapoli, Venetiis 1687. 8. & plenius 1742. 8. maj. se-
ptem voluminibus: quorum tamen major pars vel poetici, vel medici est argumenti.

REDI Opera edita etiam sunt Neapoli 1741. 4. 7. vol.

W. DERHAM *philosophical Letters, &c.* prodierunt Lond. 1718. 8

Post hunc librum adde: J. THOM. POPE BLOUNT *natural history*, Lond. 1693. 8. *

A. VALISNERI *Raccolta di varie off. &c.* ibi citata, descriptiones etiam habet iliacæ vi-
peræ & pinus VALISNERI.

EJUSDEM *Nuove osservazioni ed esperienze intorno alla storia medica e naturale*. Varia con-
tinent de vermibus. PHILIPPI della TORRE contra vermes hæreditarios objectiones & re-
sponsiones VALISNERI. De generatione æquivoca contra ARISTOTELEM. Partus monstrosos,
&c. EJ. *nuova giunta di osservazioni e di sperienze intorno all' istoria medica e naturale*. It-
erum bona varia. De phthiriasi per generationem univocam explicabili... de variis medi-
camentis simplicibus Indiæ, de viis aëreiiis ovi BELLINIANIS, animalcula brassicæ.

Estratti varj d' osservazioni dell' autore con osservazioni sue o di altri a lui mandate.

Miglioramenti e correzioni di alcune osservazioni del REDI. Amicus ostendit VALISNE-
RIUM animam illam vegetabilem REDI refutasse, & invenisse muscas, a quibus vermes na-
scuntur, qui gallas forando producunt.

EJUSD. *Raccolta d' alcune lettere, &c.* practicas & physicas & de vermibus continet scriptas
epistolas.

LEO BERNARD PAGLINI *conclusiones physico-medicas* scripsit, in III. Volumine operum
VALISNERI recusas, quæ compendium sunt inventorum hujus viri, systematis evolutio-
num ovorum microscopicorum, &c.

ELIÆ CAMERARII *Dissertationes Taurinenses epistolica Medico-Physica*. Tubingæ 1712. 8.

Sequitur ut addam consilium quomodo his Auctoribus sit utendum, nam omnes
spar-

Viginti Epistolæ scriptæ, cum Archiater Principem suum per Italiam comitaretur. Vir incredulus observationibus, nescio quid habens fanatici, ad refutandum pronior. Varia habet ad rem naturalem, ad refutandum Woodwardum, ad Collegium physicum experimentale, ad praxin, morbos rariores, & recentiorum inventa.

JOACHIM JUNGII *Doxologia Physica minores*. Hamburg. 1679. Methodicus homo, & qui interiora rerum quæreret, neque in opinionibus consisteret. Varia præter Scholarum morem. Inprimis brevia, & propria tamen experimenta passim habet, quem plurimi uti notum est, fecit J. RAJUS. * *Philosophical Letters betwveen John RAJ and several ingenious correspondents, published by W. DERHAM*. Egregius Liber & necessarius, miscellanæ eruditionis, plurima ad historiam animalium, insectorum inprimis, fossilium etiam & plantarum continet, ex industrii viri & eruditissimi, & sui similium amicorum observatione nata. Plurima sunt LISTERI, HULSII, ROBINSONI, quem obiter observo saponis vim ad tollendas obstructions perspicacem vidisse. Literæ fere 150. Sed super omnia placet candor Auctoris, & animi placida benignitas.

ANTONII VALISNERII Opera omnia. Hæc Venetiis an. 1733. collecta, & tribus in folio voluminibus a cognomine filio hoc titulo edita sunt: *Opere Fisico-Mediche stampate e manuscritte d' ANTONIO VALISNERI*. Historia quidem insectorum inprimis voluit vir elegantissimi ingenii, industriæ summæ, vix tamen ulla rerum naturalium pars est, quam non ornaverit. A sterili aut certe non nisi florido humaniorum Literarum & argutiarum studio Italos suos, dudum tardantes, ad res ipsas inspiciendas, naturæque opera revocavit, magnus generationis univocæ adsector. Festiva dictione, stylo purissimo rerum pondera ornat. Alia opuscula alibi laudabimus: huc vero pertinent:

Lezione intorno l'origine delle Fontane. Venet. 1715. & 1726. 4. Veram sententiam defendit: „omnes nempe fontes ex pluvia aut nive liquefacta oriri”. Strata montana describit, & mirum illum torrentem Mutinensis regionis subterraneum.

De Corpi marini che su monti si trovano. Contra Diluvianos. Venet. 1721. 4.

Raccolta di varie osservazioni spettanti all' Istoria Medica e Naturale. Venezia 1710. 8. & alias. Descriptiones sunt itinerum quæ plurima suscepit in Apenninum, ad acidulas, fontes varios. Ea itinera in GALLERIA DI MINERVA referuntur & in RACCOLTA del Danieli quæ Venetiis an. 1728. 4. prodiit, variaque argumenti physici Opuscula Auctoris & amicorum continet.

Saggio d' Istoria Medica e Naturale. Dictionarii Physico-medici specimen. Et hoc & quod sequitur posthumum prodiit.

Raccolta d' alcune Lettere Scientifiche scritte a suoi amici.

Miscellanea curiosa quæ an. 1706. & 1708. tribus voluminibus Londini prodierunt, fere ex Transactionibus sunt excerpta, uti supra dictum est.

Observations sur toutes les parties de la Physique. Paris 1719. 1730. 1736. 12. Auctor compilationis est P. BOUJEANT. Collegit sua ex Transactionibus Phil. & aliunde.

RICHARD BRADLEY *Philosophical account of the works of nature*. Lond. 1721. 4. maj. Scopus primarius est demonstrare scalam entium, qua a lapidibus ad terras, per plantas ad animalia ascenditur. Varia autem vel collecta ex Transactionibus & Musæis variis, vel propria satis curiosa adspersit.

LUD. PHIL. THUMMIG *Versuch einer gründlichen erläuterung der merkwürdigsten begebenheiten, &c.* Partibus 4. Halæ prodiit 1723. 8. Varia omnino habet singularia de fonte inflammabili, monstro, foliis plantam reparantibus, de surdis mutis, visu nocturno, succo osseo, &c. Ejus vero meletemata varii argumenti Brunsvici 1728. 4. prodierunt. *

GEORGE MARTINE *Medical and Philosophical Essais*. Lond. 1740. 8. ad Physicam pertinent. Concordantia, ut vocant, thermometrorum, & variorum examen atque vitia. Experimenta de incalescentia & refrigeratione. Non sunt illæ ut pondera specifica, neque in ratione inversa. Calorum sublunarium gradus varii, aeris, hominis, brutorum animalium. Hic tractatus reliquis utilior. In BOERHAAVIUM non sine aliqua adfectione ubique pugnat.

M. DESLANDES *Recueil de différens Traités de Physique & d'Histoire naturelle*. Paris 1736. 12.

JO. CHRIST. KUNDMANNI *rariora Artis & Naturæ, oder seltenheiten der naturkunst und arzneey*

sparsim scripserunt, nec aliter fieri potuit; omnes enim qui experimenta tantum scri-

arzney wuissenschaft. Bressavv. 1737. fol. Initium facit descriptio Musei sui, quo fossilia; animalia artificialia continentur. Sequuntur observationes Medicæ, ad pestem inprimis, & emortuales fastos. Historia ciborum insolitorum.

J. FRID. CARTHEUSER *abhandlung aller merkwürdigkeiten der natur und kunst*, Hall. 1733. 4. EJ. *amœnitatum natura seu historia naturalis* P. I. generalior 1735. 4. & *specimen amœnitatum natura & artis* 1733. 4. *

CHRIST. PHIL. BERGER *versuche einer vernünftigen erklärang*, &c. Lemgov. 1737. 8.

CARLO TAGLINI *lettere scientifiche sopra varii dilettevoli argomenti di fisica*, Florent. 1747. 4. De sono, exhalatione plantarum, docilitate avium, lapsu corporum gravium, exhalationibus, quæ pondus corporis exhalantis non minuunt, idiosyncrasia, quæ odorum certorum averfationem parit.

Miscellanea medico physica ex Acad. Germanicis deprompta, Florent. 1748. 4. exiguo selectu recusæ disputationes.

EIDOUS *mémoires littéraires*, Paris 1750. 8. Neque has possum probare, ex malis passim fontibus collectas.

J. G. SULZER *moralische betrachtungen*, Berlin 1745. 8.

Ad Physicam generalem, Mathematicam, & de proprietatibus Corporum magis universalibus.

ISAACUS NEWTON. *Principia Philosophiæ naturalis Mathematica* variis annis & locis, optime vero Genevæ an. 1739. seq. 3. in 4. vol. Cum commentariis perpetuis P. P. JAQUIER & LE SEUR & D. CALANDRINI. Hoc admirabili Opere continentur leges motus. Vires centrales, ab IPSO descriptæ. De corporis motu per media resistantia, & ea occasione de sono, systema mundi ejusque leges, & ex legibus explicata phænomena.

CHRISTIANI HUGENII Opera. Eorum quatuor volumina prodierunt, priora duo, *Opusculum variorum* titulo an. 1714. cura s. GRAVESANDII Leidæ edita 4. continent numerosa Opuscula HUGENII, variis locis, aut seorsim edita, aut inserta Diariis. Duo alia anno 1728. successerunt Amstelodami, quorum uno Opera per vitam HUGENII edita reliqua continentur, de lumine nempe nobile Opus, & de causa gravitatis. Altero tomo posthuma jam an. 1703. Leidæ edita habentur, quorum princeps est Dioptrica. Deinde de vi centrifuga, de Corionis & Parheliis, de motu corporum ex percussione, &c.

ED. MARIOTTE Opera omnia junctim edita Leidæ. an. 1717. 2. vol. 4. Tota fere physica sunt. Libellum de *percussione corporum & de aqua motu*, Parisiis 1686. 12. ab Auctoris morte editum supra tetigimus. De *natura aeris* perutile & BOERHAAVIO commendatum Opus, quo solutio inprimis aeris in liquoribus demonstratur. De *Calore & Frigore* cum priori an. 1676. & 1679. Parisiis editus Libellus. De *Coloribus* ib. 1686. Sed ille Auctor non pervenit ad NEWTONIANAM exquisitam radiorum divisionem, erroresque de radiis iterum divisibilibus apud Gallos introduxit. *Experimenta de coloribus & congelatione*. Parisiis 1682. & ipsa digniora lectu.

CLAUDII PERRALTI Opera omnia, quæ collectim edita sunt. Leidæ an. 1721. 4. 2. vol. Ex iis ad Physicam varia pertinent, quæ quidem inprimis theoretica sunt, atque in causis eventuum expiscandis laborant, non tamen sunt sine experimento. De elatere & duritate corporum. De gravitate, de motu peristaltico, de sono fusior tractatus, ubi ex Musicis multa repetuntur. Deinde ex tentaminibus physicis, scilicet de pelluciditate corporum, de eorum reflexione, de congelatione, hic melior & feracior experimentorum.

LEONHARDI EULER *Opuscula*. Berolini 1746. 4. Alia Mechanica habet & Astronomica: alia vero Physica de luce & colore, cum nova de utriusque natura hypotesi: de particulis minimis materiæ, & de vi inertiae unica vi corporum. Ea omni luce superioris Matheseos illustravit.

Ad Historiam Mundi universalem.

ISAACI MEWTON Systema Mundi, quod Londini an. 1728. & alias prodiit. Ex legibus centralibus planetarum motum & corporum cœlestium ordinem explicat.

GALILEI GALILEI *Dialogo dove si discorre sopra i due massime Sistemi del mundo Ptolomaico e*

scribunt, semper ita ea edunt, prouti se obtulerunt, illique certe viro, qui vitam impen-

Copernicano. Florentiæ 1631. 4. Leidæ 1641. 4. &c. Hic liber quo terræ motum defendit maximarum calamitatum Auctori suo causa fuit, donec renuntiatione solemni facta & abjurata hypothefi ex carceribus Inquisitionis dimitteretur.

PETRI GASSENDI *Institutio Astronomica*. Lond. 1653. 8. & alibi edita compendii loco sufficere potest, aut J. KEILII *Introductio ad veram Astronomiam*.

WILH. DERHAM *Astrotheology*, variis annis & linguis edita. Hæc vel sola Medico suffecerit, quæ facile intelligibili methodo Systema Universi exponit, & undique in magnificis suis operibus CREATOREM demonstrat, absque difficili calculorum apparatu.

Huc etiam quartus Tomus *du Spectacle de la Nature*, de quo superius dictum est.

CHRISTIANI HUGENII *Cosmotheoros*. Hagæ Com. 1698. 4. Planetarum cum tellure analogiam, atque conjecturas elegantes de eorum habitatoribus proponit, potestque vel voluptatis vel inde hauriendorum ad futuras veritates vestigiorum causa legi.

Ad Ignem.

Neque PAULI CASATI *de igne Dissertationem Physicam*. Venet. 1686. 8. editam, qua ignis omnium corporum gravissimum statuitur, proprietates tamen Ignis & luminis recensentur, neque nuperi Auctoris Galli labores hic laudare licet.

Aliqua historica etiam habet DOMINICUS BOTTONUS in *Pyrotophica topographica*. Neapol. 1692. 4. ubi lampyrides, flammæ ex animalibus & alia hujusmodi describit.

Ad Thermometra, sive caloris mensuram REAUMUR passim 1730. FAHRENHEIT *Phil. Trans.* 381. 382. Le BON in *Act. Monsp.* 1745. MICHELI *Description de la méthode d'un Thermomètre universel*. Paris 1742. 8. Infelix homo & seditiosus, sed ingenio acri, accuratius scalas fixit unde gradus inciperent numerari.

SECONDAT *observations de physique*, Paris 1750. 12. Ad aquas medicatas, thermometra, bitumen, lapides varios, egregiæ observationes.

C. AUGUSTI a BERGEN *de Thermometris mensura constantis*. Francof. ad Viadr. 1745. 8.

Denique ad omnem Ignem princeps Auctor est BOERHAAVIUS quem cum NEWTONO in luminis exemplo & REAUMURIO in ferri historia solum promovisse historiam naturalem subjecti sui, gravis testis est MUSSCHENBROEKIUS *Essais de Physique* p. 449. In Tomo priori *Chemia* suæ hujus elementi naturam per facilia, sed sapienter ordinata experimenta expiscatus est, materiam vero esse & verum Elementum contra CARTESIUM & Gallos. IDEM defendit, & nuper Vir peritissimus JO. HENR. POTTIUS in *Lithogegnosia*.

De Speculis ustoriis BUFFON *Phil. Trans.* n. 483. Restituit antiquum arcanum Speculorum planorum compositorum ope in magna distantia utendi.

Possunt conferri de materia ignis *Mém. de l'Acad. des Sciences* an. 1709. & multis aliis locis, ubi tamen ponderabilem & nescio quæ omnia facientem describunt.

GEOFFROI metallorum sub Speculo caustico observatio. *Mém. de l'Acad.* an. 1709. & HOMBERG in iisdem monumentis, sed ea cum opticis repetentur.

Ad Lucem & Colores.

IS. BARRCWS 18. *Lectiones in quibus Opticorum rationes investigantur*. Londini 1669. 4.

IS. NEWTON *Optiks*. Lond. 1701. 4. 1707. variis annis, & Lausannæ 1740. 4. & alibi. Ad naturam lucis, radiorum primigeniorum, refractiones, reflexiones, colores, solus est pro omnibus. Eadem experimenta eleganter VOLTAIRIUS in *Philosophia sua Newtoniana*. Fusius & per novum Heliostatem uberius s. GRAVESANDIUS habet. Sed in *Phil. Transact.* plurima etiam NEWTONIANA continentur, ut de Luce n. 80. 85. 88. 96. 97. 110. 121 123. 128. de Telescopiis n. 81. 82. 83. tum BOYLIANA n. 21. &c.

CHRISTIANI HUGENII *Traité de la Lumière*. Leid. 1690. 4. & inter Opera reliqua. Velocitatem luminis, undulatorium quem statuit motum, phaenomena crystalli Islandicæ & refractiones inprimis considerat.

impēdit in colligendis experimentis, non vacat inde systēma statim construere.

Ex

- ED. MARIOTTI Libellus superius excitatus. Parisiis 1681. 11. prodiit.
- LEONHARDUS EULER in Opusculis penitus novam hypothēsī, eversa NEWTONIANA, proposuit.
- P. CASATI dissertatio citata recusa est Francof. Lips. 1688. 4.
- MARTIN in *Physical Essays* de harmonia thermometrorum egit, laudes meritis DESAGULIERII (course II. pag. 296.)
- Traité des baromètres, thermomètres & hydromètres* par M. D. Amstelod. 1681. 12.
- Ad thermometra multa habent *Act. Stokh.* 1750. pag. 387. REVILLAS in *memor. di Valentuomini* Vol. III. *Phil. Transf.* n. 484. 485. A. SEGNER de *aquandis thermometris*, Götting. 1738. 4. de l'ISLE in propria locorum physicorum collectione.
- De speculis ARCHIMEDIS disp. G. B. BULFINGERI Tubing. 1725. 4. Possibilem esse eam vim.
- De speculis ustoriis TSCHIRNHAUSII Mem. 1702.
- Post EULERUM adde: de MAIRAN *traité de l'aurore boréale*, Paris 1733. 4. & in *Acad. Reg. Scient.*
- J. BERNOUILLI de mercurio in vacuo lucente, Basil. 1719. 4.
- J. MICH. HENSINGER de *noctiluca mercuriali*, Gieff. 1716. 4.
- JO. BERNOULLIUS, JOH. filius, *Recherches Physiques comment se fait la propagation de la Lumière*. Parisiis 1736. 4. Lucis planetarum celeritatem, vortices considerat. Huc etiam de carnibus lucidis. *Phil. Transf.* n. 125.
- De Lignis lucentibus n. 32. R. BOYLEI de Phosphoro. n. 121. 135. 296. & alibi. De lapide Bononiensi. n. 134. De refractione. n. 270. 328. Optica experimenta DESAGULIERI. n. 348. 374.
- IDEM de novis Phosphoris 1730.
- CL. NICOL. Le CAT. *Traité des Sens*. Rouen 1740. 8. Idem Opus a multis mendis repurgatum iterum prodiit Amstelodami 1744. Perspicax & ingeniosus homo, neque alienus ab experimentis. Reflexionem nempe fieri absque illusione in ipsum corpus, & a vacuo negat, substituta alia hypothēsi, deinde reflexibilitatem & refrangibilitatem in eadem ratione esse posse, non admittit, multa etiam ad modum visionis proposuit.
- Lites etiam a RIZZETTO motæ fuerunt, ut NEWTONUM defenderet Cl. RICHTERUS A. E. Supl. T. VIII. p. 228. 488. & 1724. n. 27. Contra eas objectiones dictum est in *Phil. Transf.* n. 406.
- RIZZETTI, quem citavimus, sunt de *luminis adfectionibus*, Tarvis. 1721. 8. de *refractione luminis disputatio anti-BERNOUILLIANA* A. E. 1726. Jun. de *luminis reflexione adversus NEWTONUM*, ibid. Suppl. Tom. IX. de *luminis refractione. contra BERNOUILLIUM*, ibid. eodem anno: de *systemate Optices NEWTONIANO & de aberratione radiorum in humore crystallino refractorum* GIORN. de lett. d' Ital. Suppl. & A. E. Suppl. Tom. VIII. *Responsio super disquisitiones RICHTERI*, ibid. Tom. VIII. pag. 703. & appendix pag. 394. & *responsio ad RICHTERUM de optice NEWTONIANA* pag. 485.
- P. Le FRANÇOIS *nouvelles découvertes sur la Lumière*. Parisiis 1700. 12. Invenit Lucimetrum ad gradus lucis definiendos.
- D. BOUGUER *Essai d'Optique sur la gradation de la Lumière*. Parisiis 1729. 12. Eleganter per experimenta comparat lucem solis, lunæ, candelarum, decrementa lucis, vim lucem frangentem laminarum vitrearum, per quas curvam gradilucicam determinavit.
- ALGAROTTI le *Newtonisme pour les Dames ou entretien sur la lumière, les couleurs, & l'attraction* 1741. 12.
- GAUTIER *Chroagéneste*, Paris 1749. 12. Contra Systēma NEWTONI, & radios coloratos invariabiles scripsit, quem nondum legi, auctor tabularum pictarum anatomicarum.

Ad Colores.

BOYLEUS in *Phil. Transact.* n. 70.

WALLER *Catalogus Colorum*. *Phil. Transact.* n. 179.

La

Ex hisce Auctoribus omnibus 1. colligenda experimenta sunt; 2. revocanda ad suos titu-

La HIRE de Coloribus. *Mém de l'Acad.* 1711. p. 9.

JAC. CHRIST. LE BLOND *Harmony of colouring*. Lond. 1737. Primus ex tribus coloribus primigeniis mistis omnes docuit componere.

P. CASTEL *Optique des Couleurs*. Parisiis 1740. 12. Ex theoria sola, colores ejus, uti sonos, omnino 144. ex sex primigeniis, flavo, rubro & cæruleo compositos, cum albo & nigro omnes nasci.

D. de BUFFON de Coloribus accidentalibus. *Acad. des Scienc.* 1743.

De arte tinctoria HELLOT in *Acad. des Sciences*. 1740. 1741. 1742. & DU FAY an. 1731.

De arte tinctoria integer egregius Lib. HELLOTI prodiit Par. 1750. 12. tum alius libellus *gründ. ichter unterricht von der färbekunst*, Francof. Lips. 1702. 8. in quo manus STAHLII fuit.

Ad Electricam materiam, quæ Igni aut proxima est aut eadem, & ejus attributa.

HAWKS BEE Lib. cit. & *Phil. Transf.* n. 305. 307. 308. 309. 310. 315. 318. 331. DU FAY in *Mém. de l'Acad. des Sciences* 1733. 1734. 1737. & in *Phil. Transf.* n. 431.

J. T. DESAGULIERS *Dissertation concerning Electricity*. London 1742. 8. & in *Phil. Transf.* n. 454. 459. 460. 462. 464. Præmium Burdigalense reportavit, experimenta tubo vitreo facta, ad adhæsiones utique & repulsionem omnia fere pertinent & lucem mollem innocuam.

S. GRAY de eadem Electricitate experimenta extant. *Phil. Transf.* n. 366. 417. 422. 423. 426. 436. 439. 441. 444.

WINKLERUS, quem inter scriptores de electricitate citavimus, etiam in *PH. TRAMS.* n. 484. 485, 486, 487. de ea re egit. NOLETTI *essais sur l'électricité* germanice versa exstat 1749. 8. In his cæterum *speciminibus* experimenta & deducta inde Corollaria proponit, quibus ostendat, materiem electricam ex eo corpore, quod *electratur*, exire sub specie penicillorum dirigentium, aliam vero materiem undique confluere, & æquilibrium amissæ materiæ electricæ reparare, ignem esse, figuram non adfectare, &c.

Cum infinita de electricitate opuscula scripta sint, pauca tantum tangam, & ea quidem, quæ cum medicina propius conjunguntur, & inter praticos repetentur. Sequentia ergo addimus.

WILL. WATSON *experiments on electricity*, Lond. 1746. 8. and *sequel to the experiments*, ib. 1746. 8.

F. de SAUVAGES de hemiplegia per electricitatem curata, Monspel. 1749. Explicat quomodo operetur in nervos electrica materies & paralyfin sanat.

JALLABERT *experiences sur l'électricité avec quelques conjectures sur la cause de ses effets*, Genev. 1748. 8. In priori parte phænomena recenset, triangula luminosa aliaque pulchriora describit fuisse & utiliter. In altera theoriam suam proponit, dari fluidum electricum, quod excutitur de poris vitri per elasticitatem particularum, id comprimere vicina strata ejusdem fluidi, ea condensare, atque iis iterum, fere ut in sono fit, repelli, adque corpus redire unde exiit, sic adtractionem fieri & expulsionem &c. Paralyticum hominem scintillæ electricæ ope sanavit.

J. JOS. VERATTI *osservazioni fisico-mediche intorno alla elettricità*, Bologna 1748. 8. Experimenta medica plurima continet, & curationes tum simplici excitatione electricitatis peractas, tum medicamentis illitis recto electrico aut manu retentis.

G. FRANCESCO PIVATI *riflessioni fisiche sopra la medicina elettrica*, Venez. 1749. 4. Exhalare omnino tubum balsamo obductum & vim medicam spargere ostendit, & experimenta curationum profert.

GR. WHEELER de iisdem 453. Confer variorum observationes n. 475. 476. 477. & olim 314. 321. 331. & in *Mémoires de l'Acad. des Sciences* 1707.

GEORG. MATTH. BOSE *tentamina Electrica tria*. Wittemb. 1744. 4. Stupendam vim scintillæ electricæ olea inflammantem, & halonem electricum primus descripsit. Ejusdem Auctoris *Dissertation sur la cause de l'Electricité*. Wittemberg. 1745. 4.

J. H. WAIZ *abhandlung von der Electricitet und deren ursachen*. Berolin. 1745. 4. Hæc Dissertatio præmium retulit a Societate propositum, cum vortices tamen electricos admittat, quos NOLETUS & alii refutarunt. Adjectæ sunt aliæ tres Dissertationes aliorum Auctorum. Quare fere omnia experimenta eo pertinentia hic habentur, si addideris formidabile illud ab aqua oriens fulmen MUSSCHENBROEKIANUM, cujus descriptionem dedit egregius vir LE MONNIER in Epistola quam Anglice redditam, & nuper an. 1746. in 4. impressam legi cum titulo *a letter from Paris concerning somme new experiments on Electricity*. Huc porro WINKLERUS Lipsiensis Profes-

titulos; 3. ordinanda in suas classes; & 4. retinenda sunt pro Historia naturali.

Hæc

for in variis Libellis, & in *Phil. Trans.* n. 483. NOLLETI *Essais sur l'Electricité*. Parisiis 1746. edita. G. WATSONI duo Opuscula & alia ex quibus integram Bibliothecam conficere possis.

Ad Magnetismum.

G. GILBERTI *Lib. de Magnete*. Londini 1600. fol. EDM. HALLEY *Theoria magneticæ oberrationis*. *Philos. Trans.* n. 148. 368. HAWKSBEË n. 335. DESAGULIERS n. 450. 454. MIDDLETON n. 393. DERHAM n. 303. 341. 344. 368. MUSSCHENBROEK l. c. n. 390. 418. 429. 432. tum inter *Dissertationes Physicas*. Porro Lord PAISLEY experimenta n. 412. & paradoxa illa fabricatoris magnetum GOWAN KNIGHT ib. n. 474. 476. 484. Tum DE LISLE *Acad. Royale des Sciences* 1712. DU FAY de iisdem 1730. 1731. Le MONNIER 1733. LA HIRE *Ac. Mémoires* X. Tomo, 1728. & passim alii.

A. DUFAY, quem eodem loco citavimus, labores seorsim, Erfurti 1748. 8. recusati sunt.

His ad magnetismum spectantibus scriptoribus addimus: JOHN MITCHELL *of artificial magnets*, Londini. 1750. 8. Satis singulare artificium describit, quo trabeculis chalybis vis magnetica communicatur.

OLAI CELSII experimenta passim in *Actis Stokholmienfibus*.

E. M. SWEDENBURGIUS in *principiis rerum naturalium*, &c.

Ad Aeris historiam.

BLASII PASCAL *Traité de l'équilibre des liqueurs & de la pesanteur de la masse de l'Air*. Parisiis 1663. 12. Posthumum Opus viri pietate & ingenii perspicacitate perinde insignis. In parte posteriori Opusculi aeris imprimis pondus & in eo diversitatem considerat, quæ pendet a varia columna aeris atmospherici. Hinc argentum vivum in Barometro ad pedem montis altius adscendere, subsidere in alto primus ad finis sui F. PERERII experimento, an. 1648. facto, docuit.

EDM. MARIOTTE *de la nature de l'Air*. Parisiis 1679. 12.

ROB. BOYLE quatuor integris Libris supra citatis.

WOLFERD SENGUERD *inquisitiones experimentales, quibus aeris natura explicatur*. Leidæ 1699. 4. Præter generales aeris proprietates imprimis ejus in respiratione efficacias describit, & per experimenta varia declarat. Plurcula in ejus *connubium rationis & experientia* recepta sunt.

CHR. WOLF. *Aerometria*. 1709. 12. qua Barometrica ad gravitatem & elaterem aeris pertinentia experimenta continentur.

R. COTES in *Lectionibus Physicis & Pneumaticis* supra citatis. Harum enim pars altera naturam & proprietatem aeris continet, pressionem, densitatem, elaterem, gravitatem, antliæ phænomena, aerem artificialem.

CAR. TAGLINI *de aëre ejusque natura & effectu*, Lib. II. Florent. 1736. 4. Historicam & physicam aeris descriptionem dedit, ex optimis scriptoribus selectam, & varias quæstiones uberius excussit, ut eam de aëre fixo corporum HALESI, quem ægre admittit, de aeris gravitate cum monacho Aurelianensi, &c. Meteorologicas tabulas adjecit. De sono fuse egit, non alienus ab hypothesebus.

Ad aeris historiam pertinent etiam libri de antlia pneumatica, ut dissertatio HENR. von SANDEN Regiomont. 1704. 4. MUSSCHENBROEKII libellus cum *essays de physique* excusus, BOYLEI, GERIKII.

HERM. BOERHAAVE in *Chemia* Tomo priori aeris elementum verum a vaporibus purum pondere destitui docuit. Et elaterem certe aeris a pondere omnino diversissimum esse, atque alteri forte materiæ inesse, confirmavit facillima respiratio in summis Alpibus, si comparaveris cum phænomenis aeris rarefacti. Nam in aere vulgari, cujus tertia pars per antliam ablata est, animalia fere vitam agunt, in aere vero Alpino, cui perinde una tertia pars ponderis decedit, & homo & animalia feliciter vivunt, ablatum pondus ergo reparat major elater: neque pulmo dilatari posset, quantum satis est, nisi elater ponderis jacturam repararet. Ergo pondus in vaporibus & aqua, elater in aere ipso residere videtur. Hæc addo quia a NOLETO PRÆCEPTOR refutatur. Quo vero modo is clarus vir aerem depuraverit a vaporibus, id quidem ignoro.

De Aere in liquoribus latente *Acad. des Sciences* 1731. & pluribus aliis locis.

Sed imprimis STEPHANI HALESI duo Opera huc pertinent, *Vegetable statics & hemastatics* quæ alibi laudabuntur. Aerem nempe inhærentem durissimis corporibus, coegit secedere &

ad

Hæc quatuor debent fieri, si quis in hisce legendis Auctoribus proficere velit, & ita
quon-

ad pondus ejus quantitatem revocavit, atque adeo præter omnem expectationem demonstravit, aerem in numero Elementorum esse, quibus omnia corpora consistentia aut pene omnia constant.

BOYLEUS præter Opera jam citata in *Phil. Transact.* n. 120. De debilitato elatere aeris, de ejus pondere vero & mutationibus in corpore humano natis. n. 91. De fermentatione in vacuo & qualitatibus aeris non prævisis. n. 122. Vide etiam de aeris compressione sub aqua. n. 73. 75. 108. DIONYSII PAPINI de aere in vacuum irruente n. 184.

DANIEL BERNOULLIUS de aeris *Elasticitate* egregia habet in *Hydrodynamica*, & de diverso calore aeris HAWKSBEË *Phil. Transf.* n. 315. & aliqua in Actis Parisinis REAUMURIUS.

De aeris effectibus in corpus humanum JOH. ARBUTHNOT *Essay concerning the effects of air on human body*. Lond. 1733. 8. Multum usus est HIPPOCRATE, BOERHAAVIUS, P. ALPINO, Gallice Parisiis prodiit an. 1742.

De spatio ab aere vacuo ejusque phænomenis OTTONIS de GERIKE *Experimenta nova Magdeburgica de vacuo spatio*, quæ Amstelod. 1672. in folio prodierunt. Tertius Liber huc pertinet, quo describit rationem, qua vacuum spatium post multa frustranea experimenta produxit, excogitata antlia, quæ etiam nunc varie mutata, solet pneumatica dici. Hinc miram pressionem aeris in vacuum, pondus, vim cohesionis hemisphæriorum evacuatorum, compressilitatem, dilatabilitatem aeris, mensuram vacui per subsidens Barometri argentum vivum, mortes animalium in vacuo & alia detexit. Electrica etiam experimenta ope sphæræ sulfureæ primus instituit, quæ rotata levia corpora & attrahebat & repellebat. l. c. p. 147. Sed in falsam hypothesin delapsus spe inveniendi veri excidit.

* *Nouvelles expériences sur le Vuide*. Paris 1675. 12.

Huc etiam referri oportet DIONYSII PAPINI *new Digestor*. Lond. 1681. 4. qui Parisiis an. 1682. 12. cum titulo *Nouvelle manière d'amollir les Os*. an. 1721. in 12. prodiit, tum auctior parte secunda Amstelodami 1688. & ejusdem *Augmenta circa antliam pneumaticam*, sive *continuation of the Digestor*. Lond. 1687. 4. quæ sub nomine *continuation du nouveau Digesteur* Parisiis sunt impressa. Ibi enim multa experimenta in vacuo facta habentur, & vapores in eo spatio videntur adscendere. Ejusd. in *Phil. Transf.* n. 121.

Huc GIACOMO BRACCHI *Pensieri Medico-fisici*. Venet. 1686. 4. * Quibus continentur experimenta in spatio vacuo facta in Academia.

J. MOSCA *dell'aria e de' mali dall'aria dipendenti*, Neapoli 1746. 8. *

STEPHEN HALES de ventilatore suo in *Ph. Tr.* n. 462. & in proprio libello.

S. SUTTON pro mutando aëre *Phil. Tr.* n. 462. & in *historical account of a method for extracting the foul air out of ships*, London 1749. 8. Ignis ope, qui adtrahit aerem frigidiorē & depurat, aerem corruptum de sentina emendare suscipit. Adde WATSON *philos. transact.* n. 463.

Barometrica.

EDWARD SAUL *Historical and Philosophical account of the Weather-Glass*. Lond. 1748. 8.

LUD. CHRIST. GERSTEN *tentamina Systematis novi ad mutationes Barometri*. Francof. 1737. 8.

D. de MAIRAN Dissert. de eadem re in Actis Burdigalensibus, ubi mutationes omnes Barometri deducit a Ventis.

GUNTER CHRISTOPH SCHELHAMMER *Epistola de motu mercurii in tubo Toricelliano*; Kilon. 1699. 8. Pro LEIBNITII explicatione, & contra eum B. RAMAZZINI *Ephemerides barometrica cum nova epistola*, Patav. 1710. 12.

LAUR. GOBART *tractatus philosophicus de barometro*, Amstelod. 1702. 8. *

J. SMITH *a compleat discourse of the nature and menagins of the baroscope or quicksilver weatherglass*, Londin 1688. 8. *. STAHL in opusculo *medphys.* de causis descensus Mercurii. De eodem theoria WOODWARDI in *posthumis*.

J. J. SCHEUCHZER *nova ex summis Alpibus*, nempe barometricæ observationes factæ in Monte Gotthard. Tigur. 1731. fol.

CL. HANOV in propria scheda & in Soc. Gedan. Actis de vi venti mensuranda egit, & in *Memoir. de l'Académie des Sciences* vir Gen. PAJOT D'ONZEN-BRAY.

quondam feci, cum eos legerem, calamo nempe praesente armatus conquirebam
in

De Ventis.

EDM. HALLEY *Phil. Transf.* n. 183.

Huc etiam pro Medico refertur S. MAR. LANCISII de *nativis & adventitiis aeris Romanæ proprietatibus*. Rom. 1711. 4. egregius labor.

F. BACO loc. cit. & DALEMBERTI scriptum ab Academia Prussica coronatum.

JACOBI SHORT *chronological history of the air, weather, seasons, meteors more particularly for the space of 250 years*, London 1749. 2. vol. Ad pathologiam magis spectat, & historias imprimis eminentium intemperie sua epidemiarum tradit, tum terræ motuum, annorum valde pluviorum, valde siccorum, &c.

J. BOHN de *aëris in sublunaria influxu*, Lips. 1685. 4.

De Frigore.

Ad Frigoris vim præter BOTLEI citatos Libellos, DAN. BARTOLI del *Ghiaccio e della congelatione*. Rom. 1681. 4.

DAN. BARTOLI citati libelli editionem Romanam non vidi, sed possideo Bononiensem, quæ annum habet 1683. 4.

D. DE MAIRAN de *la Glace* prodiit etiam 1749. 12, multum acutus, elegantissimus omnino, & lectu dignissimus.

Is. CONRADI de *Frigoris natura & effectibus*. Olivæ 1687. ut videtur. Frigore corrupta membra jubet nive operiri. *Journ. des Savans*.

Anmerkingar öfver motala ström stadnande. Stokholm 1708. 8. Auctor BLOCKIUS peculiarem effectum Frigoris demonstrat, quo aqua tota in foliatam glaciem vertitur, ut inferius alveus fluvii siccetur. Ea occasione de Frigoris natura multis agit, & etiam exhalationibus tribuit acidis volatilibus.

MICH. CHRISTOPH. HANOU. *Erläuterte merkwürdigkeiten der natur*, Ex magna parte versantur in phaenomenis Frigoris. Prodiit Gedani 1737. 4.

D. DE MAIRAN de *la Glace*. Parisiis 1735. 8.

Huc etiam MIDDLETON experimenta in *Phil. Transf.* 465. quæ in imo sinu Hudsoni fecit, & DERHAM n. 324. & DES MASTERS n. 246.

De aceto per Frigus concentrato. *Mém. de l'Acad. des Sciences* 1719. GEORG. ALB. HAMB. BERGER de *Frigore*. Jenæ 1702. 4.

De caverna per totam æstatem glacie plena. *Journ. des Savans* 1686. n. 19.

Ad Meteora & Aeris atque Siderum in Corpus humanum influxum, & Tempestates.

RICHARD MEAD de *imperio Solis & Luna* nuperrime an. 1746. 8. auctius prodiit. Solis & Lunæ in aerem imperium defendit, analogum illi quod in aquas marinas exercent, fluxumque hinc & refluxum in aere statuit, & ponderis imminutionem in noviluniis & pleniluniis, unde porro facile sequuntur in corpus humanum effectus varii, & periodicæ turgescentiæ humorum quoties aeris pondus diminutum est. Inde paroxysmi ad novilunia epilepsiæ, mensium, &c.

JOH. POINTER *rational account of Weather*. Oxford 1723. 8. Lond. 1738. 8. Nimis Virgilianas præfagitiones tempestatum ex brutorum animalium actionibus & signis naturalibus conquærit.

GEORGII-ERN. STAHL *Einleitung zur Witterungs deutung*. Halæ 1716. 8. WILHELMII COX viginti prius annis editam seriem observationum per triginta annos factarum recudi curavit, qua omnino planetarum influxus in temperiem atmospheræ adferitur, ut tamen Saturno, Jovi, & Veneri plus tribuatur. Deinde adjunxit MATTHEI SLUTERI Senatoris Hamburgensis versionem Coxianam, quam metereologicis tabulis unius anni & variis observationibus confirmare studuerat. Præfixit aliquas suas observationes, & prædictiones tempestatum testatur sibi feliciter cessisse, brevis tamen ipse & ultra præfationem vix progressus.

DAVIDIS GRIBNERI *Diarium Metereologicum Wratislaviense*. Breslau 1703. 4. Habet Metereologicas historias adjectis morborum recensitionibus.

Huc etiam observationes Metereologicæ accuratissimæ MUSSCHENBROEKII *Phil. Transf.* n. 381. 385. 425. 426. & in *Comment. Gall. Academia Parisina*. 1734. 1735. 1736. DERHAM in *Phil.*

Transf. n. 321. 341. 423. 429. POLLENI *Phil. Transf.* n. 448. REAUMUR in *Comment. Acad. R.* multis annis. LYNN *Meteorologia. Phil. Transf.* n. 460. SCHEUCHZER *Phil. Transf.* n. 344. HALLEY n. 447. REVILLAS n. 486. KANOLD & BUCHNER in omnibus *Diariis*.

Ad *Meteorologica* pertinent etiam observationes HOFMANNI in opusculis HUXHAMI in proprio libro, & P. VALCARENGHI: tum G. W. KRAFT observationes *meteorologica Tubingenses*, Tub. 1747. 4. EJ. de *vaporum & halituum elevatione disp.* *ibid.* 1745. WALLERII *meteorologia generalis*, Upsal. 1736. 4. *

J. TH. DESAGULIERS tractatus qui ad *pluvias & vapores* pertinet, in *Phil. Transf.* & in *Course of experim. philos.*

Huc porro ER. BARTHOLINI de *figuris nivis*, Hafn. 1661. 8.

JOH. SCHEUCHZER de *meteoris aqueis*, Tigur. 1736. 4.

J. NARDI de *rore* Floren. 1642. 4. theoreticum & philosophicum opus.

J. GESNER de *exhalationum natura*, Basil. 1729. 4.

CHR. GOTTLIEB KRAZENSTEIN vom *aufsteigen der dünste*, Hall. 1744. 8. quo scripto præmium meruit Burdigalæ.

LODOVICO BARBIERI *saggio intorno a i vapori e alle meteore*, Venet. 1748. 12. Solis adtractioni adscensum vaporum adscribit.

Ad Pluvias & Vapores.

J. TH. DESAGULIERS *Phil. Transf.* n. 407. HALLEY n. 212. quorum æstimationem init. n. 189. 198.

CHRISTIAN. LUDOV. GERSTEN *Tentamina & Diff. Roris decidui errorem excutiens*. Francof. 1733. 8. cum priori Opusculo de *Barometro* edita.

D. DU FAY. *Mém. de l' Acad.* 1736. & MUSSCHENBROEKIANA in *Essai de Physique*. Ad nivem JO. ENGELMAN *van den regt gebruyk der Naturbeschouwing*. Harlemi 1747. 8.

Ad Vapores noxios Fodinarum.

Phil. Transf. n. 119. 399. 411. 429. 442. 445. 450. 452. *Mém. de l' Acad. des Sciences* 1701. 1710. 1711. & justo atque curioso Libello LIONARDI del CAPOA, cui titulus est *Lexioni intorno alle mofete*. Neapoli 1683. 4. ubi agit de agri Neapolitani Vaporibus flammam & Animalia extinguentibus.

Cæterum citati libri L. del CAPOA editio recusa exstat Neapoli 1714. 8. In eo libro antra Charonea Italiæ describit, & fontes varios, in quibus venenatus vapor habitat. Causam noxiæ potentiæ ponit in sulfure & exhalatione surgente de metallo aut vitriolo, quod sales corrosivi acetosi solvant. Similes enim vapores produxit marcasita a spiritu nitri soluta.

LE MONNIER de la *Pouffe* in CASSINI *Méridienne démontrée*.

F. GOTTLÖB LEHMAN in nova editione ZACHARIÆ THEOBALDI vom *schwaden oder giftigen vvettern in bergverken*, Lips. 1750. 4. De vaporibus venenatis inprimis stannariorum fodinarum agit, ab arsenico soluto adscendentibus.

Ad Fulmen.

SCIPIONIS MAFFEI *Epistola qua nova theoria Fulminis ascendens continetur*. *Biblioth. Ital.* T. IV. & nuper integro Libro Veronæ 1747. edito, tum GEORG. FRID. RICHTER in Libro de *Natalibus Fulminis*. Lips. 1725. 8. quo novam sententiam defendit. Sed unde fulmina quæ in mare cadunt? fulmina Alpium adeo rupestrum, frigidarum?

Ad Aquam tanquam Elementum.

BOERHAAVIUS in *Chemicis* simplicitatem ejus, immutabilitatem, subtilitatem & meabilitatem qua aerem superat, contra & vulgi & Physicorum illustrium placita demonstravit. Addi potest *Notomia delle aque* incerti Auctoris edita a DIONISIO SANCASSINI MAGATI, quæ Patavii 1715. 8. prodiit. Paradoxa ibi de salibus, spiritibus, oleo, terra foliata, quæ in aqua chemicis experimentis detecta sunt, neque ad aquæ elementum purum, sed ad admista etiam in puriori aqua, fossilia animalia & vegetabilia pertinere videntur.

BOYLE de *aquarum examine*, *Phil. Transf.* n. 195. HAWSKBEE de *pondere, densitate & congelatione aquæ*, *Phil. Transf.* n. 319. 320. Huc etiam LE MONNIER de *diversa fluiditate liquidorum*. *Acad. des Sciences*. 1741.

Ad aquæ historiam adde: *Notomia delle acque* a MAGATI edita est VERATTI Medici Ravennatis opus (*GIORN. de LETTER.* Tom. 27. pag. 461.)

Aquarum Romanarum analyses chemicas dedit LANCIISI de *aëris Romani qualitatibus*.

Huc

Huc porro spectant: J. ALB. FABRICII *vvasser theologie, théologie de l'eau*, Hag. 1741. 8. NICOLAI WALLERII *hydrologia eller vvatturikes indelt oth beskrifvit*, Stolkholm 1748. 8. & Germanice, Berolini 1750. 8. Methodico libello primum aquam elementarem, tum aëream, terrestrem, fluvialem; denique aquas minerales varii generis, etiam ammoniacales, tum succos artificiales, & liquida corporum animalium breviter tradit: Adjicit modum, quo aquis admista aliena elementa separantur, aut exhalando æstimantur.

PAMPHILI HERILACII Reatini *Aquarum natura & facultates in V. libros digest.* Col. 1591. 8. De variis aquæ generibus agit, neque credit utile esse de scaturigine bibere. Experimentum pro analysi aquæ proponit per exhalationem, & per sæcum destillationem. Nitrum a crepitatione ab inflammabilitate argui credit, neque deesse in aquis aureas, plumbeas aliasve metallicas moleculas.

HENR. KUHN *vom ursprung der quellen*, Berolini 1746. 8. a mari fontes derivat theoreticus, ut per subterraneos canales in montium apices aqua urgeatur.

Contra NIC. GHEZZI, quem eo loco citavimus, HIERONYMUS LAGOMARSINI, & ejus commentator J. P. BERGANTINI dixit cum nova ed. EULALII SAVASTANI, Venet. 1749. 8.

De Fontium dulcium Origine.

Suffecerit supra citatus Liber VALISNERII, cum quo eristica aliqua Scripta conjunxit DANIELI in *Raccolta* quæ Venetiis 1728. 4. prodiit. Falsamenim hypothefin ROBERTUS PLOTIUS de Orig. Font. Oxon. 1685. 4. & CLAUDIUS PERALTUS defenderunt, & alius nuperrimus Auctor NICOLAUS GHEZZI *dell' origine delle Fontane*, Venetiis 1741. 12. In Alpibus ubi pleraque flumina Europæ scaturiunt, & immensa vis est rivulorum, vidi toties & videre facillimum est, omnium fontium & fluminum ortum unice a pluviis solutaque nive esse. Non alia Rheni origo nec Rhodani, neque Arolæ, quos glaciales rupes tabescendo generant. Lacus autem in summis Alpibus vel Fontes, frustra quæras: illos ubique circumstantium Scopulorum nives, hos confluentis madidæ & aqua ebriæ telluris sudor producit.

Huc etiam facit RAMAZZINI *De Fontium Mutinensium admiranda scaturigine*. Mutinæ 1691. 4. cujus observationes a ROBERTO SINCLAIR Lond. 1697. 8. auctius editæ sunt.

Ad Maris historiam.

LOUIS FERDINAND, Comte de MARSIGLI, *Histoire Physique de la Mer*, quæ procurante BOERHAAVIO Amstelodami 1725. fol. prodiit, postquam dudum ejus idea sive *breve ristretto intorno alla Istoria del Mare* prodierat Giorn. de Letterat. T. VIII. p. 1. seq. Tres priores partes huc pertinent. In prima alveum maris describit qualem propriis in ora Provinciæ Gallicæ captis experimentis invenerat. Strata vero hujus alvei eadem esse quæ terræ, summamque inter terram, montesque & maris alveum analogiam invenit. In altero sapor salis & pondus aquæ marinæ, quæ utraque in fundo maris majora sunt quam in superficie, salisque & bituminis quantitatem in aqua marina imitando definit. Multa ad salis marini naturam habet. Tertio de motu aquarum agitur, & torrentibus marinis. Gallice ex Italico vertit JO. CLERICUS.

Fluxum & refluxum explicavit NEWTONUS in *Principiis* suis. Experimenta quibus æstimatur maxima exhalatio marium habet HALLEY *Phil. Trans.* n. 189. 192.

URBANI HJÆRNE *Första flok om Warn, & sequentes*. Sunt experimentorum de aqua collectiones quæ exstant in ejus korta *Anledningen til atkilliga malm och Bergarters*. Stockholm 1702. 4.

E. M. SWEDENBORG *om vvatrens högd och forra vverldes starka Ebb och Flod*. Upsal. 1719. 8. Ex fabrica montium demonstrat Sueciam insulam fuisse, & lacus modernos marium sinus, sensimque recedere Mare, littusque nudare.

L. FERDINANDI Comititis de MARSIGLI *breve ristretto intorno all' istoria del mare* prodiit Venez. 1711. fol.

JANI PLANCI Ariminensis liber de conchis minus notis, &c. VITALIANO DONATI *saggio della storia del mare Adriatico* huc pertinet, egregius liber excusus Venetiis 1750. 4. grand.

J. SIGISMUND POPOWITSCH *unter suchungen vom meere*, Nürnberg 1750. 4. Ad mare pertinet descriptio Scyllæ & Charybdis: disquisitio quare ab Oceano in mediterraneum mare aquæ influant, cum tamen naturaliter ejus aquæ in mare Atlanticum se effundant: tum alia de utilitate montium, origine fontium ex vaporibus ibi collectis, &c.

Ad Fontes Medicatos.

In genere docimafiam eorum inprimis tradiderunt Academici Galli, deinde *FRIDERICUS HOFMANNUS*. Eo etiam pertinet *FR. SLARE*, qui ex primis alcalinam naturam acidularum agnovit, *Phil. Trans.* n. 337. & *URBANUS HIAERNE*, qui gas acidum in suo *lilla vwater* profuvare & in plerisque salem alcalinum fixum, cum spiritu sulphureo acido & ochra martiali invenit, *manuduct.* p. 3. 10. Nam veteres ad hanc historiam parum boni attulerunt, & imperiti chemiæ.

ANDREÆ ergo BACCII de thermis, lacubus, fluminibus, balneis totius orbis, compilationem, ad aliquam tamen cognitionem aquarum mineralium inprimis Italiae haud inutilem refero, Venetiis 1571. fol. & auctius 1711. Patavii recusam, cui accesserunt, præter censuras ad thermas & aquas medicatas ex *ACTIS LIPSIENSIBUS* desumptas, & monumentis Parisinis, etiam extracta variorum Opusculorum de thermis Italicis, & Valisnerianis itineribus. Erat autem *BACCIUS* infelix Medicus, vel *JANO NICIO ERYTHRÆO* teste. *GABRIELIS FALLOPII de medicatis aquis & fossilibus*. Venet. 1564. 4. editum Librum, collectionem de *Balneis* apud Juntas an. 1553. editam; *JOHANNIS BAUHINI de fonte Bollenfi tractatum*, cæterum pereruditum, Montispel. 1598. 4. & alios omitto.

URB. HIAERNE manuductio ad fontes medicatos aquasque minerales solerter investigandas, rite probandas & exacte applicandas adhibendasque prodit Stockholm. 1707. 12.

HENRY de ROCHAZ traité des Eaux minérales, Paris 1648. 8. Non serio, sed ad vendendas suas aquas minerales arte factas scriptum esse credo. Enormi labore ait se per terræ viscera secutum venas acidularum, & thermarum, donec ad salem hermeticum, sulfurque perveniret, unde vires aquarum derivarentur. Vitriolum omne cupro tribuit, & cupro pariter aquas vitriolicas adscribit. Aluminosas etiam & arsenicales aquas statuit.

Huc etiam *NICOL. WALLERII tentamina physico-chymica circa aquas minerales*, Leid. 1699. 8.

In *J. G. WALLERII hydrologia* varia huc pertinent, de acido universali aquarum, de alcali volatili, sale ammoniacali &c., modo explorandi aquarum contenta per reagentia, exhalationem, destillationem, &c.

AND. BACCII liber de thermis, &c. prodit etiam Rom. 1622. fol. Cæterum hic auctor analyses aquarum dat, ad seculi sui saporem, ut etiam alumen, nitrum, æs, plumbum in aquis repererit. Duccias etiam describit.

FRIDER. HOFMANNI plurima etiam in mineralium aquarum cognitionem merita sunt, qui acido carere, sed alcalescente fere semper sale plenas esse ostendit, modos inquirendi auxit, lacte admisto adhibere docuit. Huc ergo faciunt: *EJUS methodus examinandi aquas salubres recusa*, Leid. 1708. 8. *Alia de acidularum & thermarum ratione temperamenti & virium convenientia*, Hall. 1712. 4. Tum *observationes & cautela circa acidularum & thermarum usum & abusum, de connubio aquarum mineralium cum lacte longe saluberrimo*, ibid. 1726. 4. & in opusculis, Ulm. 1726. 8. & alias: *EJ. de imitandis fontibus medicatis in iisdem opusculis*. *EJ. dissertationes alia in opusculis medicis ad minerales aquas pertinentibus conjunctæ*. Anglice versæ prodierunt sub titulo *new experiments and observations upon mineral waters by F. HOFMANN extracted and illustrated by P. SHAW*, Lond. 1731. 8. & auctius 1743. 8. Adjecit *IDEM* translator methodum examinandi aquas salubres.

J. G. STEIGERTHAL de aquarum mineralium præstantia, Helmst. 1703.

J. VICT. JAEGERSCHMID mineralische wassernymphen, beschreibung vom mineralschen halt Kraft und tugend der sauerbrunnen, Augspurg 1712. 8. *

J. F. CARIETSER in specimine amœnitatum naturæ & artis agit de aquis mineralibus.

GUSTAV. HARMENS de elementis aquarum mineralium; Lond. Scanorum 1734. 4.

GOTTWALD SCHUSTER hydrologia mineralis medica, seu abhandlung von mineralischen kaiten wassern und vornemsten sauerbrunnen, Chemniz. 1746. 8.

DIEDERICK WESSELLINDEN gründliche anmerkungen über SCHUTTENS nachricht vom ursprung der mineralischen wasser, Amsterdam 1746. Acriter satis refutat alcali aquarum acidularum, & pro vitriolico acido earum sale pugnat, qui in ferratis aquis metallum dissolverit. *EJ. treatise on the origine, nature, and virtues of chalybeat waters and natural bolbaths*, Londin. 1749. 8.

Ad Fontes Medicatos Germaniæ.

Eo pertinet ejusdem *FRIDERICI HOFMANNI* Opuscula *Medico-physica*, Ulm. 1726. 8. secundum inprimis volumen, ubi decem Dissertationes collectæ habentur. Sal alcali in fontibus medicatis esse, non acidum, primus docuit, vimque fontium salutarium magna ex parte in sale neutro poni. Præter generalia Carolinas, Sedlicenses, quarum saltem loco salis Epshamensis in usum medicum introduxit, Lauch-stadienses describit seorsim, reliquos Germaniæ fontes collectim & breviter. Paulo numerosiores sunt Dissertationes in editione Genevensi *Operum omnium*. Ita vocant Opera *HOFMANNI*, nempe Latine edita, exclusis Academicis Dissertationibus.

J. GOTTLIEB SCHUSTER von *Kalten mineral-uvassern*. Chemnis. 1746. 8. Undecim præcipuos Germaniæ fontes medicos descripsit. Idem de thermis Wolkensteinensibus, aliisque peculiares Libellos edidit.

JOH. GODOFREDI BERGERI Bericht vom Carlsbade. Dresdæ 1709. 8. & Latine eodem anno 4. Vir elegantissime doctus calorem & efficaciam thermarum omnium deducit ex pyrite, qui sponte calorem conceperit, ferro adeo & sulphureo principio mistis. Acidulas a solo vitriolo derivat.

J. C. STRAUSS de thermis Carolinis. Lipsi. 1695. 8. Sunt præcepta practica absque analysi.

D. PLUMPTREE de iisdem Dissertatio, Halæ habita.

JOH. PHIL. SEIP, neue beschreibung der Pyrmontischen Stahl-brunnen, Hanov. 1719. 8. auctius vero 1740. Elegantissimo Libro inprimis sulphureum acidum, volatilem spiritum, a quo acidularum vires fere unice pendent, cum *W. CHROUETTO* adseruit. Auctor excerptum hujus Operis, in titulo a full account of the mineral wvaters of Pyrmont and Spa edidit *TURNERIUS*, London. 1734. 8.

De iisdem egit *F. SLARE*, *Phil. Trans.* n. 351. & Germanice, natur des Pyrmont-uvassers, 1718. 8.

J. GEORGII GMELINI plenissima experimentorum Dissertatio de acidulis Deinacensibus. Tubingæ 1727. proposita.

J. A. GESNERI Archiatri Wurtemberg. descriptiones fontis Wildbad. Stutgard 1745. 8. Hirschbad 1746. 8. Zaysenhauser-bad. ib.

RUDIG FRIDERICI OVELGUN entvurf der Wildungischen mineral uvasser. Mengerichsauer 1745. 8.

JOH. DAN. GOHL vom Freyenvvalder Gesund brunnen. Berolini 1716. 8.

SAM. SCHAARSCHMID de fonte medicato Freyenvvaldensi. Hall. 1729. 4.

PETRI WOLFART vom Brabacher sauer-brunnen. Herborn. 1721. 8.

THEOD. PHIL. SCHACHT acidularum Brabacensium salubritas. Herborn. 1720. 8.

JO. CAR. SOPES examen aquarum mineralium Furstenauensium & Vechteldensium. Helmst. 1724. 4.

JOH. CAR. WAGNER beschreibung der brunnen in Hofgeismar. Cassel 1725. 1732. 8.

C. M. ADOLPHI de fonte Kukußensi Dissert. *JOH. FR. HENKELII* (viri Chemiæ metallicæ peritissimi) Bethesda portuosa qua fons Lauchstardiensis & Freyburgensis describitur. Lipsiæ 1726. 8.

De Spadanis *CHARLES PERRY* enquiry into the nature of Spaw wvaters. Lond. 1734. Sunt analyses quatuor fontium, tum thermarum urbis Huy.

FRANCISCUS BLONDEL in enarratione Thermopotationis Aquisgranensis. Mastricht 1661. 12. repetitione medica de Thermalibus aquis Aquisgranensibus, Aquisgr. 1682. 4. & Thermarum Aquisgranensium descriptione, Mastricht 1685. 12.

FRANCISCUS BLONDEL in Thermarum Aquisgranensium elucidatione. Aquisgrani 1688. 4. & theoriam, & fusam historiam fontium, & modos utendi, uberius persequitur.

NIC. CAR. WALLERII Tentamina Physico-Medica cum aquis Aquisgranensibus, adjecto *ROB. BOILEI* Specimine aquarum mineralium. Habet analysin, sulfureos spiritus, saltemque lixivum cum marino.

HENR. DE HEERS Spadacrena, cum notis *WARNERI CHROUET*, a la Haye 1739. 12. huc pertinet. Antiqua editio dictionis se potius elegantia & adjectis rarioribus observationibus commendaverat. *CHROUETTUS* errores chemicos correxit, acidum, spiritum volatilem & alcalinam terram, & ferrum in aquis Spadanis contentum per experimenta adseruit; sed & ipse *W. CHROUET* proprio Libro, la connoissance des Eaux minérales d' Aix la Chapelle & de Spa, Leidæ 1714. in 4. edito & 1729. 4. singulares omnino & proprias observationes proposuit, quas *TURNERUS* Libro superius excitato inseruit. Innumeros alios recensere supersedeo.

Ad fontes medicatos Germaniæ adde: *F. HOFMANN* de præcipuis medicatis Germaniæ fontibus, Hall. 1724. 4.

POLYCARP GOTTL. SCHACHER *de thermarum Carolinarum usu in arthritide*, Lips. 1709. 4. *in renum & vesica calculo* 1711. 4. *in principis ventriculi & intestinorum morbis* 1716. 4. G. CASP. IHL. (vel J. JAC. BAYER) *de thermarum in Bohemia Carolinarum prerogativis*, Altdorf. 1719. 4.

J. CHRIST. ADOLPHI *de fonte molari ad Carolinas thermas*, Lips. & Uratis 1. 1733. 8. cum aliis thermarum historiis, tum in collectione disputationum an. 1747. recusarum. Præfert eum fontem vulgari.

IN GEYER *müßigen reifstunden exstat etiam dissertatio de thermis Carolinis*, quibus parum favet, calculi generationem tribuit, negat a pyrite calorem esse.

JACOBI SMITH *schediasma de sale medicinali thermarum Carolinarum rite depurato & crystallizato*, Prag. 1738. 4. Laudat CL. SPRINGSFELD.

IN GOTTL. SCHUSTERI *hydrologia minerali agitur etiam de usu thermarum Carolinarum*, Chemnitz 1746. 8.

F. HOFMANNI *dissertatio de sale medicinali Carolinarum*, Hall. 1734. 4. 1736. 4. & Germanice 1734. 4. ibid.

GOTTLOB CARL SPRINGSFELD *abhandlung vom Carlsbade*, Lips. 1749. 8. Detexit circa eas thermas cryptas charonias, salem naturalem Glauberianum thermarum Carolinarum calorem & contenta definivit, vitriolum aut ferrum negavit continere, terram vero alcaliscentem cretaceam tribuit, mistam selenite, tum sal medium amarum, sal alcalinum. Idem molaris fontis analysin dedit, fontemque novum invenit, paulo frigidiorum, minus terreum, & vicinas acidulas descripsit, cum morborum historiis.

Töplenses thermas etiam multi descripserunt.

POL. GOTTL. SCHACHER *experimenta cum aquis Töplensibus adornata edidit in programme*, Lips. 4.

FRANC. REMPFENS *beschreibung der natur und nutzens des Töplizer bades*, Berolini 1706. 8. *

J. HENR. de VIGNET *clare beschreibung von Töplizerbädern*, Prag. 1720. 8. & 12.

CHR. HENR. ERNDTEL *problema αὐτοσχέδιον de Töplensium thermis earumque origine & viribus*, Noriberg. 1723. 4. recusum in E. N. C.

J. WILH. SPARMANN *beschreibung aller in und vor der statt Töpliz befindlichen vvarmenbäder*, Dresd. Lips. 1733. 8. *

Ad Egranas Acidulas. CHRISTIANI LANGII *de genuino acidulas Egranas salubriter usurpandi modo* Lips. 1651. 4. *

J. CHRISTOPH. ETTNER *berchreibung des Egerischen sauerbrunnen oder schleder sauerlings*, Eger 1701. 12. Nurberg. 1701. 12. *

De aliis Acidulis Germaniæ. MARTINI PANSÆ *Badordnung und von den eigenschaften des Landekischen vvarmenbades in der Graffschaft Glatz*, Lips. 1612. fol. 1618. 8. *

CAR. OEHMBS *beschreibung des alten vvarmenbades nahe der statt Landek in der G. Glatz von dem innerlichen halt gebrauch und nutzen desselben*, Brieg 1705. 8. *

CARL VALENTIN KIRCHMAYER *uralter kukus brunn anjetzo erneuerter Gradlitzer brunnenquell*, &c. Prag. 1718. 8. *

F. HOFMANN *examen chymico-medicum fontis Sedlicensis in Bohemia*, Hall. 1724. 4. EJ. vom Sedlizer vvarasser 1725. 4.

J. ADAM GOERITZ *nachrichten von den Boehmischen bittervvarasser, dessen ursprung, gebrauch, purgierender kraft, &c.* Dresd. 1727. 8. Lips. 1730. 8. Regensp. 1738. 8. *

CHRISTOPH MICH. ADOLPHI *de fonte Kukussensi in Bohemia*, Lips. 1726. 4. cum analysi, & observationes, eas aquas aves necare, & aqua fontana leviores esse. Recusa est in tractatu de fontibus soteriis, Lips. 1733. 8. & in disputationibus collectis anno 1747. 4.

GOTTFRID HENRICH BURGHART *Medici abhandlung von den vvarmen bädern bey Landek in der G. Glatz*, Breslau 1744. 4.

Silesiæ Aquæ.

CASP. SCHWENKFELDS *Hirschbergischen vvarmen bades beschreibung*, Görliz 1607. 8. Lips. 1619. 8. 1708. 8. Thermarum, quas bibunt, & in Duccia adhibent, ad morem seculi absque analysi descriptionem dedit, tum mineralium circa urbem repertorum catalogum.

J. CASP. THYM'S *beschreibung des Schlesischen Altvvarasserischen sauerbrunnens*, Schwveidnitz 1698. 8. & 1723. 8. *

CHRIST.

CHRIST. MICH. ADOLPHI *de thermis Hirschbergensibus*, Lipsi. 1710. 4. & in iisdem collectionibus.

MAXIMILIANI PREUSS, GOTTFR. DAV. MAYER'S, GEORG ANTON VOLCKMANN'S und GOTTFR. ERNEST WILHEIM'S *beschreibung der in Fürst, Oels befindlichen gesund quellen zu Skarsine*, Oels 1716. 8. *

FRID. HOFMANNI *de fonte medicato Lignienfi*, Hall. 1729. 4. EJUSD. *de acidulis Vetera- quensibus in Silesia vulgo altwasser sauerbrunnen*, ibid. 1731. 4.

Raht wie der Charlottenbrunn bey Tannhausen in Schwednischen Fürstenthum zu gebrauchen, Breslau 1743. 4. *

Alii Fontes.

BERNH. ALBINI *de fonte sacro Freyenwaldensi*, Francof. ad Viadr. 1685. 4.

DAVID THEODOR. LEHMANN'S *beschreibung der Maisoischen Wiesenbades St. Annelberg* 1702. 4. *

J. HENKEL *der wieder lebendig gevordene Giesbüchel in dem neulich erfundenen Friederichs brunnen und dem Johann Georgen bade unweit Pirnain Meissen*, Freyburg. Dresd. cum continuat. 1730. 1731. 1732. Multa bona ab eo auctore spero, etsi non legerim.

GOTTWALD SCHUSTER *thermologia Wolkesteinensis oder abhandlung vom Wolkensteiner bade*, Chemnitz 1747.

GOTTLIEB BUDÆI *vom den mineralischen brunnen bey Radeberg*, Budiss. 1722. 8.

ABR. VATER *de fonte medicato Wittebergensi*, Witteb. 1748. 4.

J. GOTTL. NEUMANN *von dem über Pürschenstein bey Heidebach und Einsiedel im Maj neuerfundenen gesundbrunnen*, von dessen natur und eigenschaft, Freiberg 1732. 8. *

J. CHR. LEHMANN'S *beveiff dass der bey Reibottsgrün in Voigtlande erschürfte brunnen einer der gesündesten sey weil er das zarteste vitriolum martis in sich hält*. Lipsi. 1726. 4.

DAN. MULLER *vom Rahtmansdorfischen gesundbrunnen bey Starfurt*, Lipsi. 1701. 4.

FRID. HOFFMANN *de fontibus medicatis Lauchstadiensibus*, Hall. 1723. 4. & in collectionibus jam laudatis, & Germanice 1742. 4. ibid.

J. FRID. HENKEL *bethesda portuosa oder hülfreiches wasser im Lauchstätter brunnen bey Merseburg und im Schacken bade bey Freyberg*, Freyberg & Lipsi. 1726. 8. eximius liber.

HERM. FRID. TEICHMEYER *nachricht von dem zu Apolda entsprungenen mineralischen wasser*, Jen. 1737. 8.

GOTTWALD SCHUSTER *experimental untersuchung der zu Nieder Wiera entsprungenen Gesundheits quellen*, Chemnitz 1738. 4.

FRANCISCI PETRI SCRIBÆ *beschreibung des vor einigen jahren entdeckten sanerbrunnens unweit dem dorfe Godelheim*, Hoexter 1749. 8. Bona analysis. Salis marini partes in acidulis indicat, neque a solo pyrite oriri ostendit. Negat vitriolum posse ex acidulis educi. Analysin dat sui fontis multo ferro divitis, & sale marino, & terra alcalica, & volatili spiritu sulfureo, ut hujus tamen minor copia sit, quam in Pyrmontanis aquis.

LAUR. HEISTER *de aquis mineralibus Pyrmontanis*, Helmstad. 1732. 4.

Ad SEIPIANUM librum adde: J. CHR. PH. LUDW. *Pirmontische Krankengeschichte und merkwürdige cur exempel*, Hanover 1737. 8. & in nov. ed. 1750. 8.

FRIDER. GEORG. PHIL SEIP *de spiritu & sale aquarum mineralium presertim Pyrmontanarum*, Gotting. 1749. 8. bona disp. cum analysi ad paternum morem.

PETRI WOLFART *bedenken von dem bey hof Geismar liegenden gesund brunnen*, Cassel 1725. 8.

J. GEORG SCHUTTE *neue beschreibung des Schwalmer gesundbrunnens*, Iserlohn 1733. 8. *

EJ. *beschreibung de neu entdeckten Clevischen gesundbrunnens*, Clev. 1742. 8. & Amstelod. 1742. 8. Belgice. *

EJ. *von Kräftiger wüirkung desselben im sommer* 1742. Cleven 1743. 8.

EJ. *der rechte gebrauch desselben*, Clev. 1744. * cum historiis curationum.

J. BLANCKENHORN *acidula Clivenses* 1741. decreta, Heidelberg. 1742. 4.

J. HARTMAN DEGNER *acidula Ubbergenfes of kort verhaal van een minerale gezondbronn in de Gr. Ubbergen*, Nymegen 1745. 8.

J. B. ab HELMONT *de Spadanis aquis*, Leodii 1624. 8.

J. FRAN. BRESMAL *les circulations des eaux ou l'hydrographie des minérales d'Aix & de Spa*, Liege 1700. 8. 1717. 8. & *parallèle des eaux minérales du pais de Liege*, Liege 1721. 8. *

HENRY EYRE *account of the mineral wwaters of Spa*, Lond. 1731. 8. *

GEORGE

GEORGE TURNER *brief account of the waters of Spa*, Leod. 1733. 8. cum descriptione aquarum Pymontanarum.

CHARLES PERRY *enquiry into the nature and principles of Spa waters with a cursory enquiry into the hot fountains at Aix la Chapelle*, Lond. 1734. 8.*

Amusemens des eaux de Spa, Amstelod. 1734. 12. 2. vol. 1740. 2. vol. Auctor est HENRIC. de la RIVIERE, & Liber pro delectatione quidem scriptus, minime tamen inutilis est.

PHIL. LUD. le PRESSEUX *de aquis Spadanis*, Leid. 1736. 4.

ROB. PUGH (R. P.) *Bathoniensium & Aquisgranensium thermarum comparatio*, Lond. 1676. 12. Modum imprimis explicat, quo & in Anglicis & in Aquisgranensibus Thermis ægri aquis salutaribus utuntur.

J. F. BRESMAL *hydroanalyse des eaux minérales chaudes & froides de la ville d'Aix la Chapelle*, la Haye 1703. 8. Aix 1741. 12.*

W. CHROUET *connoissance des eaux minérales d'Aix la Capelle*, Leid. 1714. 8. Liege 1729. 8. *Amusemens des eaux d'Aix la Chapelle*, Amstelod. 1736. 12. 3. vol. Eodem modo & eodem auctore, quo Spadanarum aquarum recensita descriptio.

THOMÆ de SOINNE *de thermis Aquisgranensibus*, Leid. 1738. 4.

GOTTLÖB CAROLI SPRINGSFELD *iter medicum ad thermas Aquisgranenses & fontes Spadanos*, Lips. 1748. 8. Multa utiliter monet. Aquisgranensium thermarum alcali adparere demum post decoctionem. Salem inde obtineri & lixivum duplicem, & similem polychresto. Valere ad expellendum retentum in corpore argentum vivum. In Spadanis nonnullis etiam alcalinam terram invenit, & vitriolum demonstravit, quod solutum in iis aquis vulgare vitriolum pondere augeatur, sed id experimentum alii ad aquam in vitriolo auctam referunt, &c.

FRID. HOFMANN *gründlicher bericht von dem Selterbrunnen, dessen gehalt, vürkung und, kraft*, Hall. 1727. 4. gallice Nancy 1738. 8.

J. KILIAN *disputatio dequis Selteranis*, Argentor. 1740. 4.

JAC. THEOD. TABERNÆMONTANUS *inprimis egit vom neu erfundenen sauerbrunnen zu langenschwalbach*, Francof. 1605. 8. in opere de fontibus medicatis.

GUNTHER CHRISTOPH SCHELHAMMER *acidularum Schwalbacensium & Pymontanarum per experimenta exploratarum inter se collatio*, Kil. 1704. 4.*

J. THOMÆ HENSING *meditationes & experimenta circa acidulas Schwalbacenses*, Francofurt. 1711. 8. germanice.

FRIDERICI HOFMANNI *de fontis Spadani & Schwalbacensis convenientia*, Hall. 1730. 4. & *gründliche untersuchung des Spauwasser und Schwalbacher brunnens*, Lips. 1731. 8.

PETRI WOLFART *de thermis Embsensibus*, Cassel 1715. 4. & germanice, Cassel 1716. 8.

J. PETER WELCKER *beschreibung des Schlangenbades vermehrt von J. S. CARL Idstein* 1747. 8. ed. III.*

J. CONRAD WILHELM MOGEN *de aquis medicatis Fachingensibus*, Jen. 1749. 4. bona disputatio.

J. PHIL. BURGGRAU, CHRISTOPHLE CERF, & J. CHR. SENKENBERG *bedenken von den kräften des Fachinger sauerwassers unweit Diez*, Francofurt. 1749. 8. cum analysi.

ECKHARDT *differtationes de duobus Wetteravia fontibus*, Gieß. 1742. 4.* Laudat ILL. SEIPIUS.

J. JAC. SHURER *descriptio balnei Sulzensis prope Molsheim*, Argentor. 1726. 4.

R. JAC. CAMERARIUS *de acidulis Nideraouensibus*, Tubing. 1710. 4. Ej. de Blasiano balneo, Tubing. 1718. 4. cum aliqua analysi.

J. MATTH. FRAUENDIENER *beschreibung des Röthelbades zu Geislingen*, Ulm 1729. 8.*

J. CHRIST. EISENMENGER *leberbrunn*, Heilbrum 1632. 4.*

J. FRANK *beschreibung des Sauerbrunnens zu Überkingen nechst Geislingen Ulmischer her-schaft*, Ulm. 1710. 8.*

ALER. CAMERARIUS *de fontibus soteriis sulfureis Reutlingensibus & Balingensi*, Tubing. 1736. 4. cum analysi.

J. ZELLER & GMELINI *amici nostri de thermis Ferinis & Zellensibus*, Tubing. 1729. 4. Eximia disputatio.

J. VALER. BAUER's *beschreibung des Hiberacher heilbrunnens* 1710. 8.* cum historiis cu-ratio-

rationum. EJ. bericht von dem zu unter Espach in G. Hohenloh neuenstein entdeckten gesundbrunnen, Oehringen 1725. 8. *

GEOG. CHRIST. FEUERLEIN neuentdecker heilbrunn im kloster Heylsbrunn, Nunberg 1732. 4. *

GEOG. FRID. HOECHSTETTER aut J. J. BAIER de fonte salutari seu balneo Weissenburgensi. Altdorf. 1710. 4.

HENR. MART. THUMMIG observationes de acidulis Stebensibus, Cutiæ 1722. 4. *

THEOD. BALTHASAR nachricht von einem gesundbrunnen unweit Erlangen, Erlangen 1709. 4. *

FRANC. JOSEPH de OVERKAMP wahrer inhalt des Kissingen und Bockleter heilbrunnens, Wurtzburg 1745. 4. *

C. F. G. BETZ seu J. J. BAIER de aquis medicatis Burgbernheimensibus, Altdorf 1713. 4. cum analysi.

J. a MORASCH beschr. des Wildbades nebst Rab 1733. 8. *

J. BENED. GRIENDEL scrutinium medico-physicum in quo acidularum Roitschensum proprietates examinantur, Vienn. 1685. *

THOMÆ JORDAN Commentarius de aquis medicatis Moravia, Francof. 1586. 8. *

J. MAXIMILIAN DIETMAN's untersuchung des Niederoestereichischen Badmerbades, Vienn. 1734. 8. & latine 1732. 4. *

De thermis Plumbariensibus & Fabariensibus inter ZWINGERI dissertationes reperiuntur libelli.

LISTERI, quem ad Aquas Angliæ citavimus, de fontibus medicatis Angliæ. Exerc. II. prodiit etiam Lips. 1684. 8. utraque vero, Londini 1686. 8. IDEM in Libro de diabete egit de aquis Hoxtoniensibus & Streethamiensibus.

B. ALLEN natural history, &c. habet etiam analyses.

Post B. ALLEN adde: J. FLOYER inquisitio in verum usum & abusum calidorum, frigidorum & temperaturum Anglia balneorum, Amstelod. 1718. 8.

Ad quas Helvetia.

Ad aquas minerales Helvetiæ unicum excitabo J. JAC. SCHEUCHZERI Vernunft mässige untersuchung des baades zu Baden. Tiguri an. 1732. 4. editum. Salem cubicum amarum satis copiosum hæ Thermæ continent, calcariam terram, & pyritici aliquid. Accuratus in experimentis.

Ad Thermas & Aquas Angliæ.

Angliæ thermas & aquas minerales multi Scriptores tradiderunt.

Notissimus MART. LISTERUS in Libro de Fontibus Medicatis Angliæ, cujus Exercit. I. Eboraci an. 1682. exercitatio altera Lond. 1684. 8. utraque Leidæ 1686. 12. prodiit. Prior imprimis exercitatio huc facit. Thermarum vim ex pyrite fere explicat, in acidulis sal commune, nitrum, quod calcarium vocat, ochram aliquando volatilem, & lapidem calcarium admittit. Varia ad alias partes Physices pertinentia admiscuit. Huc etiam in tertia Exercitatione anatomica de Conchis bivalvibus experimenta adjecit.

TH. GUIDOT de Thermis Britannicis. Lond. 1691. 4.

CAROLI LEIGH tent. de aquis mineralibus. Lond. 1694. 8. Ejusdem Phthisilogia Lancastriensis cum tentamine de aquis mineralibus in eodem Comitatu observatis London. 1694. 8. Acidularum vires esse a vitriolo, ochra, & sulphure.

BENJAMIN ALLEN natural history of mineral waters of Great Britain. Lond. 1711. 8. Vim aquarum mineralium esse a spiritu illo sive Gas. Esse autem alias mere eo imprægnatas: alias ferratas; alias falsas purgantes: alias & ferratas & falsas: alias sulphure mistas. Secundum eas classes breviter & utiliter describit plurimas aquas minerales Angliæ.

ROB. PEIRCE Bath Memoirs en Obs. made in 43. years practice. Bristol 1697. 8. Sunt morborum historiæ quos Thermæ sanaverunt.

R. PEIRCE existat etiam, Bristol 1713. 8.

TH. SHORT Memoirs for the natural History of medicinal waters. Lond. 1709. 8. *

TH. SHORT natural History of the mineral waters of Yorkshire, Lincolnshire. Lond. 1733. 4. *

TH. SHORT natural History of mineral waters. Lond. 1743. 4. * Plerasque aquas Medicatas

catas Britanniae describit, & vires medicatas & elementa earum indicat. Plurimum & merito spiritui minerali volatili tribuit.

R. P. *Bathoniensium & Aquisgranensium Thermarum comparatio*. Lond. 1676. 8. In Transact. laudatur, neque enimvidi.

ALEXANDER THOMSON in Diss. Leidæ 1705. editarum *secunda de aquarum mineralium vi Medica in universum & peculiariter de Abrerbrothocensi Scotia fonte egit*, ejusque vim in vitriolo Martis poni demonstravit. In Actis Edimburgensibus Moffatenses & aliae aquae Scoticae descriptae sunt.

JOH. QUINTOON of mineral waters particularly of Bath. Lond. 1733. 8.

PETRI SHAW enquiry in to the virtues of Scarborough spaw waters. Lond. 1734. 8.

P. SHAW citato libro egit etiam de aquis Tumbridgensium.

Ad Aquas Angliae sequentia addimus. Ad Bathonienses.

Inter MAYOWII libellos exstat etiam de thermis Bathoniensibus.

THOMÆ GUIDOT discourse of the bathe and the hot waters there with some Enquiries into the nature of the water of S. Vincent's rock near Bristol and theat of Castle Cary, Londin. 1676. 8. * EJ. Liber de thermis Britannicis, accedunt observationes hydrostaticae, chromatica & miscellanea uniuscujusque balnei apud Bathonium naturam ornatus exhibentes, Lond. 1691. 4. * EJ. the register of Bath or 200. observations containing an account of cures performed by the Hotwells at Bath, London 1694. 8. 1697. 8. * EJ. apology for the Bath, Lond. 1708. 8. * EJ. collections of treatises concerning the city and waters of Bath, 1725. 8. *

WILL. OLIVER practical discourse of Bath waters containinſt the antiquities of Bathing, the cause of the hot Bath waters and of their ingrediens, London 1716. 8.

GEORGIUS CHERNE, qui Bathoniæ vixit, cum tractatu de podagra etiam de aquis Bathoniensibus egit.

WYNTER's treatise of bathing in the hotbaths at Bath 1728. 8. *

Aliae Aquae Medicatae.

Ad Aquas circa Scarborough.

ROBERT WITTIE Scarborough spaw or a description of the spaw at scareborough, York 1667. 8. Lond. 1678. 8. * EJUSD. pyrologia mimica or an answer to Hydrologia chymica of WILLIAM SIMPSON in defense of Scarborough spaw, Lond. 1669. 8. * cum vindicatione praxeos GALENICÆ, adversus chemicos. EJ. an answer to D. TONSTALL against scarborough spaw L. 1672. 8. *

WILLIAM SYMPSON in Zymologia chymica, Lond. 1675. 8. agit de aquis Scareburgensibus quas non valde probat. EJ. hydrologia chymica or the chymical anatomy of Scarborough and other spawes in Yorekshire with a discourse concerning the origine of hot springs and a vindication of chymical practice, Lond. 1669. 8. Verum acidum statuit. An EJUSD. a new years gift for D. WITTY or the dissector anatomized L. 1672. 8. *

G. TONSTALL Scarborough spaw spagirically anatomised, Lond. 1670. 8. *. HARL. Contra D. WITTY, ut videtur.

THOMAS SHORT in Libro de aquis in Derbyshire, Lincolnshire and Yorkshire inprimis agit de aqua Scarboroughensi, Lond. 1734. 8.

UNDERHILL SHORT account of the Bristol hotwell waters, Lond. 1703. 4.

P. KEIR an enquiry into the nature of the mineral waters of Bristol. Lond 1739. 8. *

HENR. EIRE's account of Holt waters, Lond. 1731. 8. *

Post scriptores Aquarum Angliae addimus librum ad Hispania aquas pertinentem.

THOMÆ FERRER de ESPARZA tractatus de la facultad medicamentosa que se halla en la agua de los banos de Teroel en el Regno de Aragon, Cæsaraug. 1674. 8. ANT.

Ad Suecicas aquas J. GÖDSCHALK WALLERII Descriptio fontis in Dannemark prope Upsalam, editam anno 1737. & recusam cum Germanica hydrologia versione.

Ad Gallia Aquas Medicatas adde.

NIC CHESNEAU observationes & epitome de natura & usu luti & aquarum Barbotanensium, Paris. 1673. 8. *

P. GIVRY arcanum acidularum idem videtur esse quod secret des eaux minérales acides, Paris. 1677. 8.

Ejusdem D. FOUER etiam est les secrets des bains de Vichi, Paris. 1677. 12. *

BARTH.

BARTH. LINAND jam citati *lettre écrite a Mr.* Paris. 1698. 8. huc etiam pertinet ; qua defendit historiam aquarum Forgensium.

NICOL. de MAILLY *des eaux minérales de Chenai pres de Rheims*, Reims 1697. 12. *

J. la ROUVIERE *nouveau système des eaux de Forges*, Paris. 1699. 12. cum analysi. *

PASCAL *des eaux de Bourbon l'Archambault*. Paris. 1699. 12. cum phænomenis ex reagentibus admistis. *

De ROUVEROI *des eaux minérales chaudes & froides d'Epinal* 1700. 12. 1737. 12.

TITOT *de scriptis thermarum plumbariarum in Lotharingia*, Basil. 1706. 4.

SAM BLANQUET *Examen de la nature & des vertus des eaux minérales qui se trouvent dans le Gévaudan*, Mende 1718. 8. PL.

JOHN SOAME *Hampstead wells*. Lond. 1734. 8. Aquæ sunt acidulæ ferratæ, quæ cum gallis purpureum colorem edunt, ex potentioribus ejus generis.

T. TAVERNIER *vvicham Spaw*. Lond. 1737. 8. JOH. SCHEBRE *new analyse of Bristol waters*, 1742.

W. HILLARY *contents of Lincomb Spaw water*. Lond. 1746.

Ex Transactionibus Philosophicis: De Fontibus Bathoniensibus. n. 49.

De Scarboroughens. n. 51. 52. 56. 59.

De causa Aquarum mineralium. n. 56. 57.

De Aquis mineralibus in Glamorganshire. n. 233.

LISTER de variis Aquis mineralibus. n. 245.

De Aqua minerali Cantuariensi. n. 312.

De Aquis Holtensibus. n. 404.

SENKENBERG *analysis aquarum mineralium in Chilterham*. n. 461.

GODFREY de aquis prope Westashton. *ibid*.

Collectionem vero majorem eo pertinentium Scriptorum vide in BIBL. HARLEY II. p. 852. *seq.*

Ad Gallia Aquas Medicatas.

D. DUCLOS *Examen des Eaux minérales de la France*. Parisiis 1675. 12. & Latine Leidæ 1685. 12. cum titulo *observationum super aquis mineralibus diversarum Provinciarum Gallie*. Examen chemicum & brevem descriptionem fere omnium aquarum mineralium Gallie continet, quæ in Academia Regia sumtu publico an. 1670. 1671. exploratæ fuerunt.

PETRI GIVRY *arcanum acidularum* 1682. 18. & Amstelodami 1705. 12. Negat vitriolum inesse aquis, quod omne sit a cupro: & vim acidularum ab alumine deducit. Laudat impense Pruvinienses aquas, describit etiam aquas de Vichi, de Ste Reine & de Forge.

CL. FOUEX *nouveau Système des Eaux de Vichi*. Parisiis 1686. 12. Habet analysin & salem nitro veterum similem.

LINAND *nouvelles découvertes des Eaux de Forges*. Parisiis 1697. 8.

LOUIS ARNAULDIN *des Eaux minérales de Provence*. Aix 1705. 14. Inesse nitrum, sulphur absque aliis principiis.

Observations sur la nature des Eaux minérales de Souche. Dole 1711. 12. Habent nitrum & sulphur. D. NORMANDE easdem aquas minerales descripsit in Libello edito Dole 1740. 12. cum titulo *analyse des Eaux de Souche proche de Dole*. Analysin habet & sal alcali & spiritum.

G. JAUTIER *sur les Eaux minérales de Bourbon*. Troyes 1716. 12. Calidas esse & plenas salem marino, odorem esse a sulphure & ferro junctis, per experimenta.

GOUTTARD *des Eaux minérales d'Abbecourt*. Parisiis 1718. 12. Frigida est, relinquit destillata sedimentum alcalescens ex terra & sale mistum, lactescit a mercurio sublimato.

Histoire naturelle des Eaux chaudes d'Aix, par HONORE'S-MARIE-LAUTHIER, Aix 1705, habet Antiquitates. Sed ANTOINE EMERIC in *analyse des Eaux minérales de la ville d'Aix*, Avignon 1701. habet analysin, alumen & nitrum.

RENATI CHARLES *Questio, an Therma Borbonenses, &c.* Besançon 1721. 8. A Pyrite esse, continere salem communem ad drachmam in libra & in limo sulphur.

EJUSDEM *de Fontibus medicatis Plumbaria*. Besançon 1746. 4.

Traité des Eaux minérales nouvellement découvertes a Passy. Paris 1735. Martiales sunt.

RENATI CHARLES etiam est *dissertatio sur les eaux de Bourbon*, nov. ed. 1749. 12. auctius quam prius recusa.

JEAN MOULLIN de MARQUERY traité des eaux minérales nouvellement découvertes à Passy, Paris. 1723. 12.

CAMILLE RICHARDOT nouveau système des eaux de Plombières, Nancy 1725. 8. Calorem ab igne centrali deducit, negat alia principia fontibus medicis inesse, quam sal elementare cuique aquæ proprium, nec sulfur inesse admittit. Mediocriter utilis auctor.

Ad ea quæ ex Mémoires de l'Acad. des Scien. citavimus, adde: 1744. de aquis M. aurei.

Adde deinde etiam: C. MUGHAN treatise of the nature and power of Barege-Baths and waters, Lond. 1742. 8.

HYAC. THEOD. BARON & F. NIC. GAUTIER an ut sanandis sic præcavendis morbis plurimis aquæ Passiacæ nova minérales, &c. Paris. 1743. cum analysi.

FRANC. NIC. GAUTIER du ROCHER an ventriculi & intestinorum ulceribus aqua Baregiensis, &c. Paris. 1745. cum analysi.

RATMUNDI JACOBI FINOT an phthisi aqua Caunteriensis, &c. Paris. 1746. cum bona analysi.

THEODORI du BORDEU lettres contenant des essais sur les eaux minérales du Bearn, Amsterdam. 1746. 12. Etiam de aquarum mineralium ortu in genere, deque variis fontibus medicatis Pyrenæorum montium & eorum analysi agit.

BLONDET sur la nature des eaux minérales de Segrai, Orleans 1747. 12.

CALMET traité historique des eaux & bains de Plombières, de Bourbonne, de Luxeuil, &c. Nancy 1748. 8. Theoriam causæ caloris habet, descriptionem aquarum, analyses, historiam utendi.

LE BAIG mémoire sur la nature des eaux de Bagnères, Paris. 1750. 8.

JEAN BETBEDER dissertations sur les eaux minérales du mont de Marsan, Bourdeaux 1750. 12. *

D. de SECONDAL Parisiis 1750. edidit observations sur les eaux minérales de Dax, de Bagnère, de Barege. Analyses earum aquarum habet, & gradus caloris, minores, quam in vulgi opinione, & vicinas aquis mineras.

JOH. GRATIANUM, quem ad aquas Italicæ citavimus, laudat VALISNERIUS.

FR. RONCALLI eodem loco citati est etiam de aquis medicatis ad oppidum Coldoni in agro Mediolanensi, Brix. 1713. 4.

P. FR. CANNETI libellus, hic dictus, Italice recusatus exstat Venet. 1749. 8. cum titulo dell' uso & dell' abuso delle acque minerali di Recoaro.

N. A. CATTANI edidit etiam dell' acqua volgarmente detta Mastella nella città di Jesi 1749. 4.

BAUDRY Traité des Eaux de Bourbonne. Dijon 1736. 8. Practicus.

JACQUES-FRANCOIS CHOMEL Traité des Eaux minérales, bains, & douche de Vichi, de Bourbon l'Archambault 1738. 12. Analysis aquarum: habere alcali & nitrum: inimitabiles esse arti.

Lettre de Mr. BAUX le fils sur les Eaux de Bourbon. Habere sulphur, ferrum & salem marinum. In Actis Academicis.

GEOFROI de aquis de St. Amand. Phil. Trans. n. 247.

Mém. de l'Acad. des Sciences. Aquæ Balarucenses. 1699.

1700. De Aquis Borboniensibus, Plumbariensibus, &c.

1701. HOMBERG des Eaux de Passy.

1702. GEOFROI des Eaux de Bourbon. CHOMEL de aquis Arvenis.

1705. Aquæ Iarense, Vezelai, &c.

1706. Denuo de Analysis aquarum mineralium.

1707. Aquæ Vichi & Bourbon.

1708. Aquæ minérales Forges, Bourbon, Vichi, Nuis, &c. MORINI.

1713. CHOMEL de aquis Jaude, S. Nectaire, &c.

1720. Aquæ Passiacæ novæ D. RENEAUME.

1724. BOULDUC de fonte prope Madrit.

LEMERY de aquis Passiacis & Borboniensibus.

1726. De aquis Passiacensibus.

1729. BOULDUC Description des Eaux de Bourbon l'Archambault.

1735. BOULDUC des Eaux de Fosse.

1743. Aquæ de S. Amand.

In Trivultinis 1735. p. 956. Aquæ du Capa de la Madelaine in Canada. Violescent cum gallis.

VIEUS.

- MEUSSENS des Eaux de Balaruc 1739. Aug. M.
- MATTHIEU de LIGNAC *Observationes de malo effectu Forgensium aquarum vetustarum* 1713. Egesta ut credit, inde pila ferrea, forte calculus bilarius.
- AUBERT de aquis de Lannion 1728. Jan. Martiales sunt.
- Lettre de Mr. WINSLOW a Mr. laudat aquas Passiacas, ob sanatam Surditatem suam.
- Ex Bitterrensibus Monumentis: Description des Bains de la Maloue.
- Ex Monspelienfibus 1743, descriptio aquarum de S. Laurent en Vivarais D. COMBALUSIER.
- Ad Aquas Italicas.
- JOH. GRATIANI *Thermarum Patavinarum examen cum Dissertatione de fonte Latio acido Recobario* 1701. 8. Thermas varias & aquas vicinas Patavio describit, calorem pugnae salium, Latio fontis vires vitriolo Martis tribuit.
- JOSEPHI DUCCINI de' bagni di Lucca trattato Chymico-medico. Lucca 1711. 8. Sulphur, nitrum, sal commune excludit.
- JOSEPHI ZAMBECCARI, celebris Anatomici, breve trattato di Bagni di Pisa e di Luc-ca. Patavii 1712. 4. editus. Sed ex veterum fere sententia.
- FLAMINII PINELLI Professoris Senensis lettera de' Bagni di Petriuolo. Romæ 1716. 4.
- FRANCISCIRONCALLI de aquis Brixianis examen Chymico-medicum. Brixia 1724. 4. & 1735. Fontis Esari vitriolati analysis, & aliæ aquæ vicinæ Brixia descriptæ. EJUSDEM de aquis Caldorii in Mediolan. Brixia 1724. 4. Sedimentum falsum nitrosum cum ferro aliquo.
- CAROLI EUCHERII de QUINTIIS Inarime five de balneis Pithecusarum. L. IV. Neapoli 1726. 4. Antiquitates, ortum, saporem, vires.
- BONAFEDE VITALI delle Terme del Masino. Mediolan. 1734. 8. Sunt experimenta chemica cum analysi Thermarum Valtelinæ nostræ.
- P. FRANC. CANNETI de usu & abusu aquarum Recoarensium. Roboreti 1735. 8. Utilis Libellus.
- NICOLAI ANTONII CATTANI Ragguaglio della natura dell'acque in Assisi, di Milano. Assi. 1734. 4. Frigidæ, vires a molli terra habent.
- JOH. FANTONI de Thermis Valerianis, aquis Gratianis, Maurianensibus. Genevæ 1738. 4. Illarum nomine celeberrimas illas Thermas describit, quæ in vico Subaudia Aix frequen-tantur. Ejectis fictitiis veterum principiis, terram, ferrum & sulphur Thermis invenit.
- JOH. FANTONI citatus liber prodiit prius Genevæ 1725. 8. Ejusdem nuper prodiit Com-mentariolum de aquis Vinaliensibus, Augustanis & Anfionensibus, Turin. 1747. 4.
- Ad Aquas Italiae adde: A. BACCI discorso dell'acque Albule bagni di C. AUGUSTO a Tivo-li, dell'acque di S. Giorgio a Capo di Bove, dell'acetose presso a Roma e dell'acque di Anticoli, Rom. 1567. 4. MANDOS. *
- ANTONII CRISPI de S. COSMÆ & DAMIANI thermalibus aquis & de iisdem aquis JOH. CRISPI compositiones, Drepan. 1684. 4.
- THEOPHILI GRIPHONII de AVENIONE observationes, Senis 1605. describit aquas Senen-ses. In nov. ed. BACC.
- CAMILLI MANARA Pharmaceutici Litubiani potus in quo natura, virtus & utendi modus con-riuentur, Ticin. 1687. 8. * EJ. viltà del fango ne' bagni di Returbio preziosa, Ticin. 1689. 8. *
- PANTHOT discours sur les bains d'Aix en Savoie, Lion 1700. 4. & de Ducciis ibi adhibitis.
- J. B. GASTALDI an salina sanguinis constitutioni aqua Medinenses, Avenione 1715. 12. parvi momenti.
- JOS. MAR. QUADRIO dell'acque termali di Masino Milan. 1745. 4. EJ. uso, utilità, e storia delle acque termali di Trascenio, Venez. 1749. 4. eruditum opus. Analysin habet, historias curationum & de balneis antiquorum antiquitates.
- ANTONIO COCCHI Mulgellano de' bagni di Pisa 1750. 4. quem librum lego laudari.
- Ad Aquas Hungaricas adde: GEORG. WERNHER de admirandis Hungaria aquis hypomne-mation, Vienn. 1551. 4.
- J. LAUR. STOCHE thermographia Budensis, Grätz 1721. 4. cum analysi.
- Adde ad Aquas Orientales: AND. HERMANNI de thermis Trentsinensibus, Lips. 1726. 4.
- JUSTUS JOH. TORKOS de thermis Posthinensibus, Poson. 1745. 8. EJ. de thermis Almasien-sibus, Poson. 1746. 8. Historia thermarum & analysis modusque utendi.
- Aquas Persicas aliquas descripsit KÆMPFERUS in Exoticis.

Ad telluris historiam pertinet etiam NIC. STENONIS filii *de solido intra solidum laudatus* inter scriptores testaceorum. Anglice existat *prodromus of a dissertation concerning solids naturally contained within solids*, Londini 1671. 12.

FLORIDI DE PLUMBIS *de saluberrima Nuceria erumpente latice*. Venet. 1745. 8. Terram famiæ sumtam cum multo alcalino sale huic dudum celebri aquæ tribuit.

I Bagni di Caldiero esaminati da D. BONAFEDE VITALI. Venet. 1746. 4. Subtilis Scriptor & Theoreticus Analysin habet & multas digressiones.

Compendio delle Acque acidule di Cilla. Venet. 1747. Præter aquas Cillenses Stiria, plurimæ celebriores aquæ Italia hic describuntur.

Plures, quia præsto non sunt, de industria omitto.

Ad Aquas Russicas.

GEORGII REMUS *Epistola de aquis martialibus Oconicensibus ad J. PHIL. BREINIIUM*. Lipsiæ 1722. 4.

Ad Suecicas.

URBANI HJÆRNE *Lilla vatten profuvare*. Stockholm 1680. 8. Vitriolicum acidum volatile acidularum ex primis descripsit. Item de *Acidulis Medericensibus* scripsit. Lincoping 1679. 12. Holm. 1680. 8. 1702. 4.

Ad Hungaricas.

De Thermis Herculanis extat *Dissertatio in Dissertationibus PASCALIS GARYOPHILI*. Mantuæ 1739. 4. Ultraj. 1746. 4. —

--- *Analysis earum aquarum cum variis ex antiquitate ad Thermas pertinentibus ibi continentur.*

Ad Orientales Aquas.

Aquarum Hammam Pharach descripsit PERRY Phil. *Trans.* n. 462. Denique collectionem integram in amplissimo titulo *acidula* habet JOH. CHRISTIANUS RIEGER in *introductione ad notitiam rerum naturalium & arte factarum* Tom. I. Indicem vero numerosissimorum Auctorum J. M. DROSSEN *Bibliotheca Hydrographica*. Norimb. 1729. in 4. edita.

Ad Telluris historiam.

Ad Telluris universæ historiam BERNARDI VARENII *Geographia* huc facit, & varia ad externam telluris fabricam facientia habet.

JOHAN. RAY *three physico theological Discourses*. Londini 1692. & auctius 1713. 8. An Diluvium universale causa sit lapidum figuratorum inquit, satis crediturus, nisi a LL. HWYDII argumentis, quæ recenset, turbaretur. Ideæ plasticas tueretur. De creatione mundi, de futura ejus conflagratione, montium ortu, utilitate, vulcanis, terræ motu, conchis quæ in montibus reperiuntur, sapienter, ut solet, ex propriis & optimis aliorum observationibus agit.

THOM. ROBINSON *anatomy of the Earth*. Lond. 1694. 4. * *EJ. observations on the natural history of this world of matter*, Lond. 1696. 8. * *EJ. vindication of the philos. exposition of the masaic system of creation* Lond. 1709. 8. Theorias miras habet, teleologias vero pene, quales DERHAMUS. Terram pro homine factam esse recte ostendit, neque metalla alteri usui posse destinata esse.

J. WOODWARD *historia naturalis telluris* Germanice prodit. Erfurt. 1745. 8. In editione postrema 1726. habetur *Responsio ad E. CAMERARII objectiones*, imprimis laborat in ea solvenda, quæ sumitur a situ stratorum, quæ non succedunt sibi in ratione specificorum ponderum, camque superare tentat, vel noviter supvenientibus illuvionibus, vel seriori & tardiori submersione. Terram in principio diluvii aqua tectam, sub finem dissolutam fuisse refert. A collibus, casu & a Vulcanis natis, stratorum ordinem abesse monet. Contrariam theoriam CAMERARII facile refutat. In *supplemento* varia notatu digna habet, de carduis, ut signis maledictionis divinæ fertilissimis, de vi irritabili, origine gentium, lapsu mercurii in barometro, (quem tempore humido factum a vaporibus abyssu lapsui aëris contrario deducit) de vaporum adscensu ex abyssu indeque ortis thermis. Testacea non soluta fuisse, cum metalla solverentur, ex fibrarum intricatione explicat. Cæterum omnium in fossilibus præcipuum scriptorem gnarus judex vocat J. HILL. in *Theophr. de lapid.* p. XXII.

JOH. WOODWARD. *historia naturalis Telluris*. Lond. 1695. 8. auctius vero, & cum vindiciis ad EL. CAMERARII objectiones. Lond. 1714. 8. iterumque auctius, cum *supplemento* variorum tractatum editus a BENJAMINE HOLLOWAY ibid. 1726. 8. & Gallice versa

versa cum multis appendicibus. Parisiis 1735. 4. Et si non ignoro, quam multa contrahunt Auctorem dicta sint, quam acriter contra dissolutionem diluvianam telluris sit disputatum & quam multa contra ejus subterraneam abyssum sursum vaporem emittentem dici possint: non ideo non video, virum in fossilium & concharum cognitione, per omnem vitam suam diligentissimum, de stratis telluris, de nutritio polline tenero, a quo omne vegetabilium incrementum est, de terræ mutatione lenta per pluvias & flumina, plurima bona nos docere. Cæterum testamento suo novam cathedram physices Cantabrigiæ de suo instruxit: an verum, obiisse eum in fide Romana? Ita Trivultienteses. 1736. p. 145.

LUDOVICI BOURGUET *Letteres Philosophiques sur la formation des Sels & des Cristaux*. Amstelod. 1729. 12. Varia continet boni hominis & inter mercatores literatissimi Opusculum. Ad nostrum scopum pertinet, imprimis *Mémoire sur la théorie de la Terre*, ubi non exquisita quidem aliqua, cum majora sola sequatur, sed non omnibus tamen aut animadversa aut collecta tradit. Sic in *Traité des Pétrifications*, qui Parisiis 1742. in 4. editus est, sententiam suam & diluvianum Systema defendit, & lapidum partim primordiale, partim feriolem generationem describit. Deinde in secunda Epistola inter Philosophicas modo dictas cristallorum formationem mechanicam ex triangulis explicat.

GUILIELMUS GODOFREDUS LEIBNITZ posthumam reliquit *Protogæam* quæ cura ILL. VIRI C. L. SCHEIDII prodiit Gottingæ 1749. 4. & quo brevi libello mira ubertas continetur singularium opinionum & observationum. Terram omnem in principio rerum inundatam, & planam fuisse, successisse incendium universale, multa vitrificata esse, aut certe ex aliqua parte in naturam vitri transivisse, ita nata metalla, lapides, mare falso empyreumate imprægnatum, montes primarios erupisse a vi ignis. Describit cavernas subterraneas, strata terrarum, sylvas fossiles & lapides figuratos varios, &c.

ANTONIUS VALISNERIUS passim, sed imprimis in tractatu de *Origine Fontium & de corporibus marinis, quæ in montibus reperiuntur*, telluris formationem adrigit, strataque passim & fabricam descripsit, osor equidem diluvianæ hypotheseos.

Huc etiam plurima conferri possunt, ex omnibus Operibus SCHEUCHZERIANIS, qui testaceorum indagator industrius fuit, & defensor diluvii. In Commentariis Bononiensibus ejusdem Dissertatio exstat eo faciens.

CAROLUS LINNÆUS de incrementis Telluris habitabilis. Leid. 1744. 8. com adjuncta Celsii Oratione. Terram olim undique aquis tectam fuisse, sensim eas recessisse. Nunc etiam recedere maria, & terras deoperire, uterque docet amicus.

Denique LAZARUS del MORO in L. II. de *crostacei e degli altri corpi marini che si trovano su' monti Venet.* 1740. 4. editis, dum BURNETUM & WOOLWARDUM refutat, & suam de ortu terrarum & testaceorum ex vulcaniis montibus sententiam proponit, multa passim collecta ad strata Terræ ejusque interiorem fabricam undique congeffit. Hujus Operis analysis dedit BALTHASAR EHKHARD *Nachricht von einer meinung, vvelche den ursprung der versteinten sachen betrifft.* Memming. 1745. 4.

Utcunque etiam huc pertinet NICOL, STENONIS fil. tum in *Tract. de Solido inter Solidum*, Florent. 1669. 4. edito, tum in *Myologia Specimine* pariter Florentiæ 1667. 4. excuso. In priori Opusculo imprimis de origine figuræ agitur, quæ in corporibus solidis est. Sed de Telluris universæ mutationibus & quidem numerosis, ut Hetruria v. gr. bis fluida, bis plana & sicca, bis aspera fuerit, ante recentiorum tempora peculiare cogitationes protulit. In posteriori Opusculo breviter terram fuisse olim aqua mistam, ex aqua vero in speciem sedimenti subsedisse ex conjectura propria docet.

J. G. SULZER *von Ursprung der Berge*. Tiguri 1746. 4. Ipse expertus Alpium fabricam, habitum, montium ortum tribuit inclinationi axis terræ, unde factum esset diluvium, &c.

Ad Terræ strata passim in *Transactionibus*, v. gr. n. 336. 341. 403. aliisque Scriptoribus. Vulcanorum eximia historia prodiit Neapoli versa a D. PERRON de CASTERA. Parisiis 1741. 12. Sub titulo *Historie du Mont Vesuve*.

J. GOTTLIEB KRUGER *allerälteste geschlechte der Erde*, Hall. 1746. 8.

In descriptione *thesaurorum Regionum*, primus Tomus D. de BUFFON *théorie de la terre* tota huc pertinet, plena singularibus opinionibus, & observationibus. Terram reliquosque errantes stellas ex sole emicuisse, excussas ab illapso cometa, adeoque terram in principio totam

totam arsisse, inde vaporibus condensatis in mare universale totam tectam fuisse, id mare sensim subsedisse, nudasse terram, deseruisse lapides figuratos testasque. Ventos æstumque & recessum maris congestisse sabulum partesve aquæ crassiores, & montes effecisse primævos, interceptasque valles, sic terram natam primo orientalem, sensim reliquam. Multa ab eo tamen tempore etiam mutata fuisse, multas terras submersas & maris prolatum imperium. Argillam ab arena negat differre, cretasargasque ex meris dissolutis testis natas esse credit, porphyritem ex aculeis echinorum. Sed ipsum opus oportet legere, Parisiis recusum 1750. 12. & Germanice versum Hamburgi 1750. 4.

FRID. CHRIST. LESSER *baumanshöhle*, Memming 1745. 4.

Istoria dell' incendio del Vesuvio dell' anno 1737. Neapoli 1738. 4. J. ALPHONSI BORELLI *historia & meteorologia incendii Ætnei anno 1669*. Regii Julii 1670. 4. *

FERR. IMPERATI *historia naturalis* exstat etiam editio 1610. 4. Neapoli.

J. GUIDII *de mineralibus Libri IV. Primus de metallareis, &c. II. de metallis, de auro & argento, gemmis, ferro & armis Sabinis, &c.* Venet. 1625. 4. *

Ad Fossilium historiam.

Ad formationem & Elementa Fossilium pertinet inprimis JOACH. BECCHER *Physica subterranea*, quæ Francofurti 1669. in 8. com duobus vero Supplementis 1675. & denique an. 1703. & 1735. cura G. E. STAHLII. Lipsiæ in 4. Hic vir peritissimus Chemiæ fidem suam pro veritate Theoriæ BECCHERIANÆ, quantum potest, gravissime interponit, eamque in specimen bono ordine conscriptam contraxit. Triplicem terram sive tres classes fossilium per experimenta constituit, a plerisque peritioribus ab eo tempore receptas, inflammabilium, vitrescibilium & mercurialium. Sed Sales ex terra & aqua componi, inflammabile principium vinculum esse mitionis metallicæ, & alia plurima & recondita ibi perspicua reperiuntur, ad putrefactionem, fermentationem, classes mineralium eorum mitionem, &c. pertinentia, ut tædium nos capere non oporteat obscurioris sermonis.

Ad omnia aut pleraque Fossilia.

GABRIELIS FALLOPII *de metallis atque fossilibus Liber*, Venet. 1564. editus. Posthumum Opus est, pars prælectionum in Dioscoridem, hinc in comparatione fossilium cum Veterum descriptionibus, maxima pars Operis versatur. Suas nonnunquam observationes adjecit, in Italicis fodinis & mineris factas, ut nihil tamen expectes nostro seculo valde utile aut reconditum. Dictio mala, qualem Discipuli fecerunt, qui sermonem excipiebant calamo.

CONRADI GESNERI Collectio, & in ea inprimis Jo. KENTMANNI *nomenclatura fossilium; quæ in Misnia & alibi reperiuntur, Observationes de metallicis rebus & nominibus ex Schedis GEORGII FABRICII & GESNERI ipsius de rerum fossilium figuris*. Tiguri 1565. 8.

FERRANTIS IMPERATI *Pharmacopolæ Neapolitani Naturalis Historia*, Neapoli 1593. & auctius Venet. 1672. fol. Totum fere ambitum rei naturalis complectitur, longe tamen copiosior est in fossilibus, quorum operationes metallurgicas, utilitates & sæpe figuras, uberime & plana simplicique dictione persequitur. Librum *de fossilibus*, Neapoli 1610. 4. impressum non vidi.

ANDREÆ CÆSALPINI *de re metallica*. Vide supra.

BERNARDI CÆSII *mineralogia*, Lugduni 1636. fol. edita. Collectanea habet ex miris sæpe Auctoribus, & tropicis Ecclesiæ Patribus. Cum rebus ipsis non consuevit.

ULYSSES ALDROVANDI *Musæum metallicum*. Bononiæ 1648. fol. Ex optimis hujus viri Operibus est, etsi posthumum prodiit, quo & metalla & fossilia reliqua & lapidum figuratorum magna vis describitur, & pingitur. Tædiosa vero ut alibi est fabularum farrago. Ejus Synopsin DAVID KELLNERUS edidit Lipsiæ 1701. 12.

PETRI MARIE CANEPARII L. *de Atramentis*. Lond. 1660. 4. Roterod. 1718. 4. De pyrite, vitriolo & inprimis ejus oleo, variisque coloribus, magna ex parte compilatio, spagiricus cæterum homo, & alchimistici ingenii, & confusiori ordine usus.

J. B. du HAMEL *de meteoris & fossilibus*, Paris. 1660. 4.

C. LINNÆI *systema natura* auctius recusum est 1748. Stockholm. 8. Hall. 1749. 8.

MAGNI von BROMEL *Mineralogia*, &c. ibi citata, continet lapides & metalla Sueciæ, fodinarum & lapidum figuratorum icones.

NICOLAI MERCATI *Metallotheca posthuma* edidit LANCISIUS 1717. Romæ in fol. Auctor

Stor anno 1593. mortuus, musæum collegerat ex genere inprimis fossili, maxime salium, terrarum, lapidum figuratorum, quorum icones dedit. Metalla ipsa intercedunt. Eruditæ adnotationes Editorum. Opus splendidum. Ejus viri vita extat *GIORNALE de' LETTERATI*. vol. XXIX.

JOH. WOODWARD attempt. to the natural history of Fossils of England. Lond. 1729. 8, & ejusdem *fossils of all kind digested in to a method*. ib. 1728. 8. Omnem metallorum lapidumque & mineralium ambitum in brevem tabulam & ordinatam coniecit, additis observationibus inprimis ad figuratos lapides pertinentibus. Adfinitas a figura externa notisque facilibus desumpta est.

CAROLI LINNÆI systema Natura P. I. prodiit Leidæ 1735. fol. tum Stockholm. 1740. 8. & auctius Parisiis 1744. 8. Cum botanicam methodum in universum ambitum rerum naturalium transferat, & ex uno caractere similitudines rerum definiat, valde apud alios harum rerum peritos offendit: ut in exemplo gemmarum, quas cum salibus intime conjunxit.

MAGNI BROMEL Mineralogia & Lithographia Suecana Germanice versa a *MICRANDRO*, Holmiæ 1740. 8. edita.

MUSÆUM RICHTERIANUM illustratum Iconibus & Commentariis *D. J. E. HEBENSTREIT*, Lipsi. 1743. fol. splendidissimum Opus, aliqua etiam alia continet: gemmas nempe sculptas, conchas marinas, plantas. Maxima tamen pars ad metalla & fossilia pertinet, quorum ex omni genere & mineralium inprimis ad metalla & semimetalla pertinentium, amplissimus hic & plenissimus catalogus est, sed brevis, ut fere nomenclator sit, quem icones pulcherrimæ passim exhilarant.

Huc pertinet catalogus metallorum & fossilium. *Phil. Trans.* n. 301. *E. LL HWYD* de variis fossilibus n. 291. conf. n. 100. 268. &c.

JOH. HILL general history of fossils, Londin. 1748. fol. Dignissimum opus, quo novo ordine distributa numerosissima, nova etiam fossilia distribuuntur ad botanicorum methodum, per classes, genera, species novis nominibus, multorum corporum analysibus, & iconibus adjectis. Mihi infiniti laboris & paræ utilitatis videtur.

J. GOTTSCHALK WALLERII mineralogia eller mineralriket indelt och beskriverit, Stockholm 1747. 8. & Germanice, Berolin. 1749. 8. paulo auctius. Et ipse novo ordine breviter fossilia distribuit, pondera specifica, chemicas analyses, observationes utiles adiecit, sententiam, quæ lapides figuratos diminuto mari tribuit, refutat, & ad diluvium refert.

J. LUCÆ WOLTERS DORF systema universale in quo Regni mineralis producta systematice per classes, ordines, genera & species proponuntur, Berolini 1748. fol. Brevis, & methodica enumeratio, facili & perspicuo ordine scripta.

Mineralia etiam apud *DIOSCORIDEM*, apud ejus commentatores, *MATTHIOLUM*, & alios scriptores materiæ medicæ descripta occurrunt.

GEORG. AGRICOLÆ Libri citati prodierunt anno 1546. & 1558. *BERMANNUS* solus, Lipsiæ 1546. 8. & Parisi. 1541. prodiit.

J. MATTHESII Sarepta recusa exstat Lipsi. 1619. 4. Is Auctor tamen inprimis de vallibus Joachimicæ metallis agit.

LAZARI ERKERS beschreibung, &c. prodiit prius Prag. 1574. fol. Cum hoc opere sæpe recusus est *CHRISTOPH. BERWARDT* interpres phraseologia metallurgica.

Ad historiam Fodinarum.

GEORGII AGRICOLÆ Libri V. de natura fossilium, de ortu & causis subterraneorum Libri X. de natura eorum qua effluunt ex terra L. IV. de metallis veteribus & novis L. IV. *Bermannus* sive *Dialogus de re metallica*, qui omnes an. 1546. Basileæ editi, anno vero 1657. cum sequente Opere conjunctim eodem loco recusi sunt, minus equidem nitide. In his Libris descriptio exstat fossilium, eaque cum antiquorum nominibus comparantur, catalogo per totam Europam compilato, in Germanicis vero utique plenissimo. Theoriam etiam suam de formatione fossilium adfert. Ejusdem vero de re metallica Libri XII. Basileæ an. 1561. & 1621. f. editi omnem laborem exponunt, qui a prima venarum indagatione ad plenam usque metallorum perfectionem requiruntur, & innumeris fere figuris machinas omnes quæ eo tempore & etiam nostro majori ex parte, eo scopo adhibebantur. Vitri etiam & salis præparationem ex analogia addidit. Vir quidem dictione eleganti usus est, &

veterum scripta diligenter legerat. Chemnitii in Misnia mechanicam fodinarum accurate didicerat, ut primi ordinis in his rebus, & classici Libri sunt, quos laudavi.

CHRISTOPHORI ENCELII *de re metallica* L. III. Francof. 1557. fol. Laudatus Liber a variis Auctoribus omnem rem fossilem ad medicinam spectantem complectitur.

JOHANNIS MATTHESII *Sarepta oder Berg-postille*. Norimb. 1578. fol. Fossilia eorumque præparationem & utilitatem in vita humana cum laude tractavit, & varia rariora continet, etsi Theologus & ibi maxime Concionator, ubi de fossilibus scribit.

LAZARI ERCKERS *beschreibung der vornehmsten Bergarten*. Francofurti 1629. fol. Docimasticen quidem inprimis scribere instituit, eoque labore plano sermone, candide & absque omni theoria defunctus est, varia tamen adspersit metallurgica, ad excoctionem metallorum & nitri, &c. pertinentia.

GEORGII ENGELHARDI LOHNEISEN *bericht von Berg-uverken*. Hamburg. 1672. & 1690. fol. Non solum mechanicam operam metallorum, sed juridica eo pertinentia habet, & ad practicam excoctionem fodinarum universalem perspiciendam solus sufficit. Docimasticen enim cum labore eruendi metalli & excoquendi conjungit. Sumtuum addit rationes & machinas post Agricola excogitatas describit, quo multum usus videtur.

JOH. WEBSTER *Metallographia*. Lond. 1670. 4. * Mineralium signa, species, generationem, utilitatem, procurationem exposuit, Scriptorum rei fossilis catalogum addidit, cum iudiciis, quem plurimi fecit MORHOVIUS *Polyhist.* L. II. P. II. C. 29.

ALONZO BARBA *arte de los metalos*, translated by the Earl of Sandwich. Lond. 1674. 8. T. I. II. Presbyter Potosinus, Encheireses describit, quibus Hispani in metallis Americæ utuntur.

ALVARO ALFONSO BARBA ibi dictus Gallice etiam prodiit Paris. 1730. 12. vertente HAUTIN de VILARS. & Germanice Francofurti 1739. 8.

ALONZO CAMILLO Y LUSO *tratt. de los antiquas mineras de Espania*. Madrit. 1729. 4. *

Hi Auctores conjunctim editi sunt nuper cum titulo *Collection of Scarce and valuable treatises upon metals* * Adjectus PLATEUS & HOUGHTON, egregii pro Anglia Auctores, quorum ille de omni minera in genere ab auro ad carbonem usque, iste de perfecto minerarum artificio agit (*complete miner*), Lond. 1738. 12.

CHRIST. AND. SCHLUTTERI citatum opus a D. HELLOT Gallice versum cum multis & utilissimis additamentis incepit edi anno 1750. 4.

FLSTA minor. &c. by JOHN PETTUS prodiit Londin. 1783. 8.

J. FR. HENKEL in *kleinen mineralogischen und chym. schriften* tradit etiam chemiam metallurgicam.

ABRAH. a SCHONBERG *ausführliche Berg information*. Lipsiæ 1693. fol*. describit etiam Opera metallica.

OL. BORRICHII *docimastice clara & compendiaria tradita*. Hafniæ 1677. recusa in MANGETI Theatro pharmaceutico, primo volumine.

URBANI HJÆRNE *manuductio ad varia metallorum, mineralium terrarum, genera investiganda*. Homl. 1694. 4. & *Responsio ad quaestiones ibi propositas*. ib. 1701. 1706. 4. *

F. E. BRUKMANN *magnalia Dei, oder underirdische Schatz-kammer* 1600. Berg-uverke. Wolfenb. 1727. 1730. fol. 2. vol. cum supplemento 1734. fol. Catalogus est omnium regionum, & locorum, in quibus per universum orbem, metallum aut fossile quodcunque utilius effoditur.

CHRISTOPH. ANDREÆ SCHLUTTER *gründlicher unterricht von Hütten-uverken*. Braunschweig. 1738. fol. Auctor olim rebus metallicis præfectus Goslaræ, maximam vim fossilium ex omni ambitu universi orbis collegerat. Hoc Libro non effodiendi quidem metalli rationem tradit, neque fossilium naturam, sed docimasticen, cujus inprimis cura ipsi commissa fuerat, & excoctionem metalli, cum novissimis ubique & suis inprimis inventis, in perficienda fornacum figura, in augenda tostione mineræ (qua magnum compendium plumbi fit), &c. Rem monetariam etiam docuit splendido, nec facile par habente Opere.

PEREZ de VARGAS *Traité singulier de Métallique*. Madrit 1568 *. recusus Parisiis 1743. 12.

FLETA minor sive *art in judging effaging, fixing minerals* by JOHN PETTUS. Est Liber ERKERI cum Dictionario metallico.

JOHANNIS ANDREÆ KRAMER *Elementa Docimastica*. Editio auctior, Leidæ 1744. in 8.

In eximio Libro continetur utilissima primum descriptio mineralium, deinde processus omnes chemici, & mechanici ad docimasticam pertinentes. Labores fodinarum sive qui in igne majore, magnisque massis metalli locum habent, non attingit.

CAROL. FRID. ZIMMERMANN *Berg. Academie*, cujus 3. tom. prodierunt Dresdæ 1746. 4.

SAMUEL KOLESER de KERESER *Auraria Romano Dacica Liburni*. 1728.

Ad fodinas in genere *Phil. Trans* n. 401. 403.

Ad fodinas Hungariæ *Ph. Tr.* 58. 59.

Ad mineras Americanas n. 41.

De iisdem FREZIER in itinere ad mare australe.

Huc porro pertinet J. FR. HENKEL in egregio Opere *Pyritologia sive Kieshistorie*. Lipsiæ 1725. in 8. edito. Pyritem, metallorum communem mineram, describit, experimentis usus in 60. speciebus factis, generari etiam nunc pyritem, martem semper inesse, non autem semper cuprum aut sulphur, in albo vero pyrite arsenicum, &c.

EJUSDEM *kleine mineralogische und chymische schriften*, posthum. editæ Dresdæ 1744. Theoreticum primo Opusculum de adpropriatione varia experimenta continet, deinde singularia corpora, arsenicum, cobaltum, lapides, jaspidem, &c. considerat.

EMAN. SWEDENBORG *Miscellanea circa res naturales & præsertim circa mineralia, ignem & strata montium*, Lipsiæ. 1722. 8. de stratis terræ, corporibus petrefactis, montium in Suecia ortu, vitrificatione, elementorum figuris.

EJUSDEM Auctoris *principia rerum naturalium & reliqua Opera* Dresdæ 1734. fol. 3. voluminibus prodierunt. Non hic de theoria Auctoris judicabo, qua ex simplici, infinito, motu spirali prædico, & ex activo, ex finito motum progressivum obtinente (sive igne) si tanquam principiis elementa generari demonstrat alia, & alio ordine, quam vulgo sumuntur. Reliqua volumina considero, quibus ferrum omnemque ejus elaborationem, docimastiam, producta medica, fusissime persecutus est, & cuprum simili modo multo adhuc splendidius, tum ex suis, tum ex aliorum observationibus descripsit.

JOH. HENR. POTT *Observationum chemicarum Collectio secunda*. Zincum, parum notum metallum, boracem, & pseudo galenam tractat. Laboriosus ut solet & candidus. In prima vero collectione operationes aliquas docet, quibus sulphur mercurii ope metallis detrahi nudumque denique fisci possit.

CASPARI NEUMANN *Lectiones chemicae, maxime de antimonio, ferro, nitro & sulphure*. Berolini 1732. 4. editæ. Pleraque equidem chemica magis sunt, sed ea a metallurgicis separare sæpe difficile est. Deinde in collectione Operum quæ a morte Auctoris Berolini an. 1740. prodierunt, plurima ad metalla & fossilia pertinentia, neque vulgaria habentur.

G. E. STAHLII varia & inprimis *Opusculum chymico medicum*, quod varia forma & pro parte menstruatim prodierat, a M. ALBERTI vero an. 1715. in unum volumen collectum est. Pulcherrimo hoc Opere plurima ad rem Physicam & Chemicam pertinentia continentur: ut fermentationis theoria generalis; experimentum sulphuris producendi: de minera ferri in bolo latente: fragmenta ad historiam naturalem nitri: vitulus aureus: denique Dissertationes variae, inter quas metallurgiæ, pyrotechniæ & docimasticæ metallicæ fundamenta, & de ortu venarum metallicarum huc spectant. Tractatio de nitro & altera de fermentatione, seorsim habentur Germanice editæ.

EJUSDEM STAHLII *experimenta, observationes, animadversiones chymico-physicae* CCC. Berolini 1731. 8. editæ. Hic inprimis phlogiston principium, in omni natura tribusque regnis ubique reperiundum demonstrat.

In opusculo *chymico-medico* G. E. STAHLII, quod ibi citatum est, continetur etiam tractatus de divisionis & diffissionis differentia. EJUS etiam sunt: metallurgia pyrotechnica & docimastica metallica fundamenta, Hall. 1700. 4. Germanice versa sub titulo *Anweisung zur metallurgie oder der metallischen schmelz und probier kunst*, Lipsi. 1744. 8. Rationes reddit encheiresion, additiorum pulverum, graduum adhibiti ignis, tostionum, quibus minera metallicæ præparantur & coquuntur, ut ex impura minera nobile metallum quam lucrosissime obtineatur novo studio, cum priores fere encheireses absque ullo ratiocinio proposuerint. EJUSD. programma de venis metallicis, Hall. 1700. 4. EJ. de metallorum emendatione modico fructu profectura in opusculis & Germanice 1720. 8. Noriberg. EJ. specimen BECCHERIANUM, &c. huc faciunt.

J. GOTTFR. JUGLER gründlicher und deutlicher begriff von dem gaanzen Bergbau schmelz-
vvesen und markscheiden, Berolini 1744. 4.

D. WESSEL LINDEN three letteres on mining and smelting, London 1750. *

C. E. GELLERT anfangs gründe zur metallurgischen chimie, Lipsi. 1750. 8. Laudatur a re-
rum peritis.

Ad singula Metalla & Mineralia reliqua.

Ad Aurum.

DURAND Histoire naturelle de l'Or & de l'Argent, extraite de Pline. Londini fol. 1729.

G. W. STAHL vitulus aureus igne combustus in opusculo.

J. PHIL. BURGGRAU de viribus auri medicis A. E. Suppl. T. IX. sperat ex auro parari posse
medicamentum mercuriale optimum.

Ad Mercurium.

HOMBERG de Mercurio, Mémoires de l'Académie des Sciences. 1719.

JUSSIEU de mineris Mercurii Hispanicis. 1709.

GROSSE de Mercurio ex plumbo. 1733.

BOERHAAVE de Mercurio, Mém. de l'Acad. 2734. & Phil. Trans. n. 430. 443. 444.

LEEUVENHOER de cinnabari nativa, Phil. Trans. n. 200.

GER. GORIS mercurius triumphator, Leid. 1717. 8. historiam totam metalli continet.

F. HOFMANN de Mercurio, Hall. 1729. 4.

HERM. KAAU nunc Archiatri Russici dissertatio de argento vivo, Leid. 1729.

M. TILING Cinnabaris mineralis, seu minii naturalis scrutinium, Francof. 1681.

GODFR. SCHULZE triga cinnabarina, Hall. 1680. 8.

J. BOECLER de cinnabari vulgari factitia preferenda naturali, Arg. 1749. 4.

Ad Plumbum.

Cerussæ præparatio. Phil. Transf. n. 137.

J. ZELLER docimasia, signa, cause & noxa vini lithargyrio mangonisati experimentis illustrata,
Altdorf. 1707. 1721. Germanice.

Ad Cuprum.

REAUMUR de viridi Æris naturali, Mém. de l'Acad. 1723.

POMEX de Cupri in Æs mutatione, Phil. Transact. 200. conf. 260.

LISTER de Cupro n. 200.

BEL de fontibus ferrum in Æs mutantibus, Phil. Transf. n. 456.

GEOFROI de metallo ex Cupro & Zinco conflato, Mem. de l'Acad. 1725.

Huc adhuc referendus est E. SWEDENBURG de cupro in magno opere & orichalco.

MATH. BELII de aquis Neosoliensibus vulgo Cementvasser in Lipsi. miscel. T. III.

J. LAUR. BAUSCH de cœrulco & chrysocollo, Jen. 1668. 8.

Ad Ferrum.

Ars temperandi Chalybem. LISTER Phil. Transf. n. 203.

J. H. ZANNICHELLII de Ferro. Venetiis 1719. 4. qui Libellus etiam in E. N. C. habetur.

REAUMUR Acad. des Sciences 1726. de Ferri usu ad exprimendos nummos, & ejus de Fer-
ro in Chalybem mutando Liber.

De Ferri fodinis. Phil. Transf. 137.

MOULIN de arena ferrifera. Phil. Transf. n. 197.

De Ferri minera. Mém. de l'Acad. des Sciences 1718.

De hæmatite ferri minera. Phil. Transf. n. 199.

LEMERY Acad. des Sciences, 1707. 1713. Ferrum omnibus plantis inesse.

GEOFROI de Ferro. ibid. 1708.

EJUSDEM Ferrum artificiale. ibid. 1705.

Ad REAUMURIUM adde: EJUS l'art de convertir le fer forgé en acier & l'art d'adou-
cir le fer fondu, Paris. 1722. 4. Marb. 1737. 8.

Adde etiam ad historiam ferri: E. SWEDENBURG de ferro in magno opere.

G. W. STAHL varia sunt hæc pertinentia, de modo generandi splendidissimam ferri mineram
ex vulgari bolo pigmentario, de croco martis apertivo: & de solutione martis in puro alcali:
in opusculis.

L. ROBERG de metallo Danemorensi, Upsal. 1716. 4.

WEST-

WESTMANN de ferro Suecico Osmund, Upsal 1725. 4.

C. NEUMANN de ferro 1732. 4.

J. G. WALLERIUS orsaken til Kallbräkt Järn, Stokh. 1750. 8.

Ad Stannum.

REAUMUR de præparatione Ferri & Stanño. Acad. des Sciences. 1728.

HELLOT analysi Zinci. *ibid.* 1725.

GROSSE de metallis a Stanño depurandis an. 1730.

GEOFROI de Stanño. 1738.

Stannum peculiare. 1741.

MALOUIN de Zinco & Stanño. Mém. de l'Acad. 1742.

De Stanni diversis generibus mistis. 1743.

MERRET de Stanni Mineris. Phil. Transf. n. 138. conf. 69.

Ad stanni historiam pertinent etiam MARGGRAF de stanno Mémoire de l'Académie de Berlin 1741.

Ad eos, quos ex Académie des Sciences citavimus, pertinet etiam MALOUIN, qui de zinco egit, *ibid.* 1746.

POTT de zinco in Exerc. II. MARGGRAF de eodem in Acad. Berolin. 1746.

Ad Semi Metalla.

De Pyrite, ex quo fulgura inquit oriri LISTER. Phil. Transf. n. 157.

POWER de lapide Calaminari. Phil. Transf. n. 198.

R. PLOT. de back-lead Phil. Transf. n. 290.

KRIEG de Cobalto & Arsenico. Phil. Transf. n. 293.

LINK de Cobalto. n. 396. *ibid.*

GEOFROI de Antimonio & Phosphoro detonante 1736.

MEUDER de Antimonio. Lond. 1747. 8. & sæpe alias, Chemicus inprimis est.

E. F. MEUDER ibi citatus prodiit etiam prius 1738. 8.

BAS. VALENTINI currus triumphalis antimonii, Amstelod. 1671. 8. &c.

G. W. STAHL de reguli stellati antimonii encheiresi & de regulis metallicis in opusculis.

MICH. ALBERTI de auripigmento, Hall. 1720. 4.

F. HOFMANN de analysi reguli antimonii, Hall. 1729. 4.

C. NEUMANN de antimonio 1732. 4.

ISAAC LAWSON de nihilo, Leid. 1737. 4.

POTT de auripigmento. IDEM de pseudogalena in Exercitationibus.

S. P. HILSCHER & FUCHS de partibus constituentibus antimonii, Jen. 1743. 4.

NIC. LEMERY traité de l'antimoine, Paris. 1707. Philosophiæ corpusculari theoreticæ addictus, hætenus utilis, quod nos levet onere repetendorum inutilium processuum.

Ad Sulphur.

HOMBERG du Soufre principe. Acad. des Sciences, 1703. 1705. 1706. 1710. & GEOFROI de Sulphure. 1704.

GUGLIELMINI de principio sulphuris. Venet. 1710. 8.

G. E. STAHL Zufällige gedanken vom sulfure. Hall. 1718. 8. de sulphure suo artificiali; de sulphure metallorum vere demonstrabili, & causa caloris atque vinculo partium chemica multa, sed aliqua tamen etiam ad perfectionem metallurgiæ. Dictio cæterum, qualis Auctori familiaris fuit subobscura, neque ordinem quæsit.

C. NEUMANN de sulphure. l. c.

WARN CHROUET sur l'analyse du soufre commun. Journ. de Trev. 1707. HOMBERGIUM refutat. Flores sulphuris dari ab omni acido puros adfirmat.

Opusculum G. E. STAHLII hic citatum exstat etiam in EJUS opusculis cum titulo Anatomie sulfuris communis 1732. 4. Ibidem etiam habetur experimentum novum sulfuris arte producendi.

Huc etiam referenda J. ANDR. SLEVOGT bona disputatio de sulfure Gostariensi, quæ prodiit Jen. 1719. 4.

Ad Succinum.

Sulphuri vicinum est Succinum, cujus vetustiores descriptiones omitto. PHILIPPI tamen HARTMANNI Succini Prussici historia, Francofurti 1677. ut & in Phil. Transf. n. 248. pro ea ætate

etate & exteriori hujus fossilis historia legi potest, qui perperam equidem Succinum lapidibus accensuit.

NATHANAEL SENDEL cum *Elestrologia* tribus missibus Elbingæ in 4. an. 1725. 1726. 1728. editus quasi prælufisset, bituminumque classi Succina recte inseruisset, majori denique Opere pro dignitate rem est persecutus. Lipsiæ an. 1742. fol. edito.

C. NEUMANN de Succino 1730. 4.

BONNAC de Succino. *Hist. de l'Académie*. 1705.

JOH. PH. BREYNE de succinea gleba rarissima. *Phil. Transf.* n. 395. conf. *ibid.* n. 249.

MALOUIN de Succino. *Mém. de l'Acad.* 1742.

J. WIGAND de succino Prussico, Jen. 1590. 8.

PH. JAC. HARTMANN de succino, Regiomont. 1677. 8.

J. FR. CARTHEUSER de succino etiam agit in *specimine Amœnitatum natura & artis*.

Ad Ambram, Petroleum, Phosphorum, &c.

C. NEUMANN de *Ambra grisea*. *Phil. Transf.* n. 433. 434. 435. cum BROWNII animadversionibus. NEUMANNI Libellus seorsim Dresdæ 1736. 4. editus est. Eo magis huc pertinet, quod eam Ambram Succini speciem fecerit.

De Ambaro etiam *Phil. Transf.* 290. 385. ubi tribuitur pisci cetaceo.

FRANCISCI ARIOSTI de *Petroleo*. M. ZIBINI a RAMAZZINO editus Libellus, Mutinæ 1698. 8. cum Opusculo suo ejusdem argumenti. Scripsit autem an. 1460. & an. 1690. Hafniæ editus est a JACOBÆO. Fontes nobiles illos Petrolei describit, de quibus etiam VALISNERIUS aliqua habet.

FR. ARIOSTI ibi citatus libellus editus etiam a SCHELHAMMERO. Kilon. 1699.

J. B. SCHRAMUCCI in *meditationibus familiaribus ad MAGLIABECCHIUM* Urbin 1697. 4. describit ligna fossilis bituminosa duo, quorum unum verum lignum fuit, alterum de carbonum fossilium genere, fontem denique flammiferum.

Description de la pièce d'Ambre gris pesant 182. livres avec un traité de son origine & de sa vertu par CHEVALIER, Amstelod. 1700. 4.

G. W. WEDEL de *petroleo*, Jen. 1709. 4.

FRANC. STELLUTI de *ligno fossili minerali* recus. in *Miscell. Nat. Cur.* D. I. Ann. III. opp.

De eodem Petroleo exstat D. GEOFFROI Libellus. *Mém. de l'Acad.* 1736.

A. J. G. KRUGER *Gedanken von den stein-kohlen*.

J. PHIL. BUNTING *sylva subterranea oder nutzbarkeit der stein-kohlen*, Hall. 1683. 8.

D' EIRINIS *Dissert. sur l'Asphalte*. Parisiis 1721. 12. Græcus homo & mendax, in Helvetia vitæ finem fecit; Neocastrenses bituminis fodinas descripsit.

De lapide oleum fundente. *Phil. Transf.* n. 228.

BOYLE de liquore bituminoso sponte moto. *Phil. Transf.* n. 176. de fonte ardente in Shropshire. n. 334.

L. F. MARSIGLI de *Phosphoro minerali*. 1702. 4. max. Descriptio, analysis & anatome Phosphori Bononiensis, & gypsi.

F. LICET *litheosphorus seu de lapide Bononiensi*, Vicent. 1640. 4. *

G. MENZEL *lapis Bononiensis in obscuro lucens collatus cum phosphoro hermetico*, Bielefeld. 1675. 8. *

NOLET de lapide Bononiensi. *Mém. de l'Acad. des Sciences*. an. 1743.

Alia de phosphoris monumenta recensui, ubi de luce egi.

De Salibus in genere.

De figuris Salium LEEUWENHOEK in *Phil. Transf.* n. 170. 173. 298. 311.

DOMIN. GUILIELMINI *Refless. filosof. intorno le figure de Sali*. Bononiæ 1688. 4. & Padoa. 706. 4. Itemque de *Salibus*. Venetiis 1705. 8.

De Salium solutione in aqua LEMERY. 1716. 1724.

De Sale. *Phil. Transf.* n. 103. 104.

G.E. STAHL'S *Beuveifs dass die Salze aus einer zarten Erden bestehen*. Hall. 1723. 8. Sales fossiles & aereos describit, omnesque ope separationis spirituum acidorum & mistionis cum terra alcalina in aqueum humorem & terram separari posse docet, qua occasione multa alia notatu digna interspergit.

J. F.

J. F. HENKEL von der Vervuandschaft der pflanzen, mit dem mineral Reich. Lips. 1721. 8. Mira equidem est Auctoris theoria, qui Archæum nescio quem telluris, & futuram totius orbis vitrificationem statuat, semi-BOEHMIANUS. Passim tamen metallurgica & chemica varia intercurrent, & Sal alcalinus salicorniæ huc inprimis pertinet, quem in ea planta, sed una salem marinum invenit, & pulcherrimum colorem cæruleum ex illis cum aceto effervescentia obtinuit.

DOM. GUILIELMINI, quem ibi citavimus, theoreticus est, quem acerbè refutat NEUMANNUS in pref. T. III. Adde ad hanc de salibus tractationem.

FRIDERICH HONDORPH beschreibung des Salzwerkes zu Halle in Sachsen, Hall. 1670. 4. & recuf. 1749. fol. cum CL. DREYHAUPT historia naturali des Saal Kreyfes. Bonus libellus ob historiam & encheireses.

J. W. KUNSTEL de salibus metallorum, Lips. 1711. 4.

FR. HOFMANN gründliche beschreibung des Salzwerkes zu Halle, Hall. 1708. 4. cum tractatu de origine fontium salforum modoque coquendi. EJ. de generatione salium, ibid. 1729. 4.

Prodromus principiorum rerum naturalium, seu nova tentamina chymiam & physicam experimentalem geometrice explicandi EM. SWEDENBURGII. Amstelod. 1721. 8. Mira theoria de figuris salium.

J. MICH. HEFFELMAIER historia salis quod Hala Suevorum coquitur, & varia tentamina & experimenta ejusdem naturam declarantia, Altdorf. 1731. 4.

A. BUCHNER de generatione & differentiis salium Resp. BRANDES, Hall. 1743. 4. bona disputat.

W. BROWNRIGG art of making common salt, Lond. 1748. 8. utilis liber tradit collectas encheireses pro sale marino parando, per totum orbem terrarum usu venientes. Analysis tradit salis communis, & modum, quo alcaliescentia ab exhalante spiritu impediatur lenta decoctione novoque sale adjecto.

J. GOTTFR. LICHT de sale communi ejusque existentia in omnibus rebus mundanis, Hafn. 1749. 4. bona disp. salem marinum habet pro sale fundamentali naturæ, eumque in plantis, in metallis ubique reperit, salemque marinum expositum aeri validiorem fieri observavit.

J. WALLERIUS om salternes orsprong, Stokh. 1750. 8.

De sale marino agit etiam WESSEL LINDEN in libello, quo de visco etiam & mineralibus aquis egit.

Ad Salem marinum.

Salis marini historia, ut in Gallia paratur perutilis. Journ. de Trevoux. 1744. P. 430.

DU HAMEL Sal alcali esse basin Salis marini. Mém. de l'Acad. 1736.

LEMERY, GEOFFROI & HELLOT examen Salis de Pecaïs. Mém. de l'Acad. 1740.

De fontibus falsis in Durhamensi Episcopatu. Phil. Trans. n. 163.

PETIT de præcipitatione Salis marini in fabrica nitri. Mém. de l'Acad.

De aquis falsis in Droytwhich. Phil. Trans. n. 142. in Staffordshire. n. 145.

De Sale & ejus fodinis. n. 156.

De Salinis Hungaricis. n. 413.

De coctione Salis in Gallia. Phil. Trans. n. 51. Anglia. n. 53. Polonia. n. 61.

Ad Salem mirabilem aliosque neutros.

BOULDUC de Sale naturali ex Delphinatu. Mémoires de l'Acad. 1727.

HELLOT de Sale mirabili in vitriolo. Mém. de l'Acad. 1738.

BOULDUC de Sale Epsoniensi. Mém. de l'Acad. 1718. 1732.

De Natro ibid. 1732. & de eodem LEIGH. Phil. Trans. n. 160. tum II. SALBERG Tal om natron. Stokh. 1745. 8.

J. GOTS. WALLERIUS Forsvarschrift vvorutinnan S. S. S. tala besvaras. Upsal. 1745. 8. & II. SALBERG ytterligare aterfvar. Stokholm. 1746. 8. Lis, orta de Sale quodam nativo, quem SALBERGIUS natrum vocat, negat natrum esse WALLERIUS, cum natrum alcali sit, Sal Suecicus vero de genere Salis mirabilis. Bona ea occasione experimenta facta.

E. BROWN de Sale cathartico amaro. Phil. Trans. n. 377. 378.

NEH. GREW de eodem, Londini 1695. 12. & in Bibliotheca Pharmaceutica MANGETI.

Ad

S. THEOD. QUELMALZ de salibus falsis, Lips. 1741. 4.

CHRISTIAN PAUL BOEHMER de salis medii genesi ex acido aëreo, Hall. 1737. 4.

Ad Salem Ammoniacum.

LEMERY de origine Salis Ammoniaci. Mém. de l' Acad. 1716. 1721.

GEOFFROI de eodem 1705. 1720. 1723.

DU HAMEL de eodem 1735. conf. 1700.

G. W. WEDEL de sale ammoniaco, Jen. 1695. 4.

Apud UNTZERUM varii modi parandi salis ammoniaci artificialis ex urina, sale, & fuligine exstat.

CHRISTOPH. DAV. MELTZER de salis ammoniaci natura & usu, Regiomont 1720. disp.

Ad Nitrum.

WILL. CLARKE natural history of Nitre. Lond. 1670. 8. * Parum laudatur a peritis.

WILL. CLARKE dictus liber latine etiam exstat, Francof. 1675. 8.

G. C. SCHELHAMMERI vero de nitro Libellus eruditus quidem, sed naturam intimam minus ingreditur. Amstelodami editus est 1709. 12. Nitrum nostrum novum esse, neque cognitum antiquis demonstrat. GUILIELMINI figuras Salium, & præcipitata inde corollaria deridet.

C. NEUMANN in proprio Libello. 1732. 4.

LEMERY de Nitro. Mém. de l' Acad. 1717.

POLI de generatione Nitri. ibid. 1719.

BOULDUC de aqua matre Nitri. ibid. 1720.

HELLOT de ejus rubris vaporibus. 1736.

F. HOFMANN de nitro. disp.

J. KUNKEL vom nitro, Witteb. 1678. 8.

R. J. CAMERAR. de nitro, Tubing. 1718. 8.

GEORG. WOLFGANG STAHL de nitro egit in opusc. med. chym. & germanice sub titulo von der natur, erzeugung, bereitung, und nuzbarkeit des salpeters, Franc. Lips. 1734. 8. utili, ut solet, labore.

Kongl. och Riksfens Knigs Collegii berättelse om salpeter, Stokh. 1747. 8. ad fabricam ejus salis.

J. G. PIETSCH abhandl. von der erzeugung des salpeters, Berlin 1750. 4. qua præmium meruit. Artificiale nitrum ex vitriolico acido, alcali animali & calce generavit, novam dat ejus salis analysin, modumque quo facillime ad usus oeconomicos paretur.

Ad Sales artificiales.

C. NEUMANNI de Salibus alcalinis fixis. Phil. Trans. n. 392. 393. & BOURDELIN de formatione Salium lixivorum. Mém. de l' Acad. des Sciences 1728.

M. BERNH. VALENTINI de magnesia alba, Giess. 1707. 4.

AD. SLEVOGT de sale cathartico amaro Anglico, Jen. 1715. 4.

J. ANDR. FISCHER tentamen circa sal petra spumofum, amarum, catharticum, Erf. 1724. 4. bona disp.

HERM. FRID. TEICHMEYER de sale de seignette, Jen. 1742. 4. recusa Germanice a GOTTFR. HENRICO BURGHARD cum notis & animadversionibus, Bressau 1749. 8. Fulse reffer- tus modus parandi hujus salis, & nascentis phænomena, & utilitates.

A. FR. WALTHER de nitroso sale plurium fontium, Lips. 1744. 4.

G. W. STAHL de arcani duplicati & tartari vitriolati genealogia egit in opusculis.

De Borace egit etiam POTT in Exerc. II.

Ad Salem acidum.

HOMBERG de acido minerali & vegetabili. Mém. de l' Acad. 1709.

Ad Boracem.

LEMERY de eo 1703. 1728. 1729. GEOFFROI. Mém. de l' Acad. 1732.

MODFLL de Borace nativa. Londini 1747. 4. Et in Borace & in Sale alcalino quodam fossili, cui pene idem nomen est, plurima experimenta fecit.

Ad vitriola.

- De Vitriolo. *Phil. Trans.* n. 103.
 LISTER de vitriolo albo. *Phil. Trans.* n. 256.
 De aluminis & vitrioli operibus. *Phil. Trans.* n. 142. De iisdem LEMERY. *Mém. de l'Acad.* 1636. GEOFFROI de iisdem. 1728.
 GEOFFROI de mineris Aluminis Italicis. *Mém. de l'Acad.* 1720.
 MELH. PHILIP. HARTMANN. de vitriolo, Regiom. 1714. 4. Vitrioli opera Aletana SAUVAGES *Mém. de Montpel.* 1746.
 J. J. BAJER de alumine, Altdorf. 1715. 4.
 Huc etiam pertinet CANEPARIUS de atramentis.

Ad lapides in genere.

- GEOFFROI de origine Lapidum. *Mém. de l'Acad.* 1716.
 JOH. FR. HENKEL *idea generalis de Lapidum origine.* Dresdæ 1734. 8.
 THEOPHRASTI *history of stones* cum versione & notis JOH. HILL. Lond. 1746. 8.
 JOH. HENR. POTT *Lithogognosia.* Potzdami. 1746. 4. Innumeris observationibus, classes terrarum & lapidum, alcalinæ, gypseæ, & vitrescibilis & argillaceæ naturæ definivit, earumque mixturas, indeque ortam phaenomenorum varietatem exposuit.
Histoire naturelle éclaircie dans la Lithologie & Conchyologie. Parisiis 1743. 4. Eximium Opus cum pulcherrimis testaceorum figuris, quæ Auctor tribuit Diluvio. Musæorum etiam Catalogum habet.
 P. LOBE de diversa lapidum origine, Leid. 1742. 4.
 THEOPHRASTI *περί λίθων βιβλ.* cum notis criticis & philosophicis J. HILL. London 1746. 8. Egregius liber, & ipsius quidem THEOPHRASTI, pro ea ætate, & imprimis HILLII, qui non solum critice atque physice obscura auctoris loca explicavit, verum de tota fossilium natura perite egit. Figuratos lapides diluvio adseruit, colorum in gemmis originem a suis metallis deduxit, petrificationes veras lignorum dari negavit, sapphirum a cupro tingi ostendit, & cuprum non a solo alcali sed a vitriolico etiam acido cum cœruleo colore dissolvi expertus est, turcoidem artificialem paravit, &c.
 PSELLUS de lapidum virtutibus. Gr. Lat. cum vol. PH. JAC. MAUSSACI & JO. STEPH. BERNARD Leid. 1745. 8.

Ad Gemmas.

- ANSELMI BOETHII de BOOT *historia Gemmarum & Lapidum.* Hanov. 1609. 4. & cum augmentis TOLLII & J. de LAETII. 1647. 8. Externa rerum persequuntur, tum ex antiquis, tum ex recentioribus monumentis Indicorum Scriptorum & Germanicorum, Physicæ interim non attigit, magis nomenclator.
 De Turcoide REAUMUR *Mém. de l'Acad. des Sciences.* 1715. & observationes aliæ MORTIMERII. *Phil. Trans.* n. 482.
 ROB. BOYLE Libellus de Gemmis supradictus.
 MAURICII ANTONII CAPELLERII viri doctissimi *Chrystallographia Prodrömus.* Lucernæ 1723. 4.
 HYACINTHI GIMMÆ *della storia naturale delle Gemme, delle Pietre e di tutti i Minerali.* Neapoli 1730. 4. Habet etiam ipsos animantium lapides, vulcanos, aquas minerales, &c.
 De interiori facie Adamantum LEUWENHOEK. *Phil. Trans.* n. 324. 374.
 De Adamantibus Brasilianis. *Phil. Trans.* n. 421.
 LISTER de Silicibus pellucetibus. *Phil. Trans.* n. 201.
 ROB. BOYLE libellus de gemm. prodiit Lond. 1672. 8. &c. J. FRIDERICI GRONOVII *index supellectilis lapidea quam collegit,* Leid. 1750. 8. qui inter musæorum etiam indices referri potest.
 M. A. CAPELLERIUS in libro citato agit de crystallis improprie sic dictis.
 Adde deinde Gemmarum historiam.
 A. GIMMÆ vastum opus est, & omnem historiam fossilium etiam sulfura & aquas, cryptas denique subterraneas, & Vulcanos tractat, & lapides animales, tabacum. Maxima pars tamen de lapidibus est, collecta ex antiquis atque recentioribus scriptoribus.
 THOM. NICHOLLI *faithfull lapidary,* Lond. 1652. 4. Germanice Culmbach, 1734.
 ERASMI BARTHOLINI *experimenta crystalli Islandici disdiastelastici quibus mira & insolita refractio detegitur,* Hafn. 1670. 4. utcumque huc pertinet.

CAROLI LINNÆI de generatione crystallorum, Upsal. 1747. 4. Bona disp. qua salium spati & crystallorum analogia & similis ex succo concretio ostenditur, & de vegetatio-
ne lapidum agitur.

J. de BAILLOU de gemmis in memorie di varia erudizione della società columbiana 1747.
Florent.

DAVID JEFFERIES of pearls and diamonds, Lond. 1750. mere pro artificibus.

Ad alios Lapidēs.

LA HIRE de Petrificatione. anc. Mém. de l' Acad. des Sc. X. p. 110.

De vi petrificante lacus Lough-Neagh. Phil. Trans. n. 158. 166.

JAC. MOCK de causis concretionis & dissolutionis rerum quarundam tam extra quam in-
tra corpus humanum, Freiburg 1696. 8. Collegit ex scriptoribus exempla aquæ lapidescen-
tis, & ligni aut concretionis cujuscunque.

SHIRLEY philosophical essay declaring the causes whereby stones are produced, Lond. 1672. 8.*

ABRAHAM VATERI historia filtri lapidis. Phil. Trans. n. 438. & de eodem disputatio
M. B. VALENTINI.

HOPPE vom filtrierstein, Lips. 1748. 4.

J. CIAMPINI libellum recudit in epistolis BRUKMANNUS Cent. II.

EJUSDEM BRUKMANNI de asbesto, Brunsvic. 1747. 4.

De sale calcis egit etiam MACQUER Mém. de l' Acad. 1745.

Lapidum etiam historiæ adde: TH. ERASTI de lapide fabuloso seu osteocolla in opuscu-
lis, Francofurt. 1590. fol. editis.

AUGERII CLUTH Calsvee seu dissertatio lapidis nephritici seu jaspidis viridis natura, pro-
prietates a GUIL. LAUREMBERG latine vers. Rostoch. 1627. 12.*

C. BARTHOLIN de lapide nephritico, Hafn. 1628. 4.*

J. GOTTSCH. TRANÆUS de calce viva Lutet. Paris. 1685.*

BRAND de calce Stockholm. handling. 1742. n. 2.

J. LAUR. BAUSCH de ætite, Jen. 1665. 8.

STOBÆI & RETZ historia naturalis Dendritæ, Lond. Goth. 1724. 4. De iisdem SCHEU-
CHZERUS in A. N. C. & in Mém. de l' Acad. 1745. ABBAS de SAUVAGES.

JOH. CIAMPINI de incombustibili Lino seu Amianto ejusque filandi modo. Rom. 1691. 4.
Habet descriptionem totius artificii.

Asbesti historia. Phil. Trans. n. 273. 276. conf. 72. 333.

DU FAY de Selenite Bernensi. Mém. de l' Acad. 1724.

IDEM de Sale calcis. Mém. de l' Acad. 1724. & 1732.

BURLET de aqua calcis. Mém. de l' Acad. des Sc. 1716.

PETIT Gypsi analysi. ibid. 1734.

JUSSIEU de eodem. 1719.

HAUTERIVE de lapide viridi ex Terra Amazonum. Mém. de l' Acad. 1724.

De Lapide fissili. Phil. Trans. 243.

A. BEURER & C. NEUMANN de Osteocolla. Phil. Trans. n. 476.

Ad eorum figuras.

REAUMUR de rotunditate Silicum. Mém. de l' Acad. 1723. de formatione eorum 1721. &
DE MAIRAN de iisdem.

Silex artificialis BAZIN. ibid. 1719. HENKEL. l. cit.

De Lapidibus figuratis metallicis. Phil. Trans. n. 129. 150.

LISTER de Lapidibus figuræ determinatæ. Phil. Trans. n. 200. conf. 243.

PIERRE BARRERE de l'origine des Pierres figurées. Paris. 1746. 8.

Ad Terras.

J. DAN. MAJOR. de lacte Lunæ. Kilon. 1667. 4.

P. BOCCONE della Pietra Belzoar minerale Siciliana. Monteleone. 1669. 4.*

REAUMUR de Terris. Mém. de l' Acad. 1730.

J. H. POTT. l. cit.

DAN. FISCHER de Terra medicinali Tocayensi. Vratislav. 1732. 4. Esse bolos metallicos
immaturos, absque auro.

De Terra Windesoriensi maximi ignis patiente. Phil. Trans. n. 483.

Nuper

Nuper etiam Cl. *HEBENSTREITUS* respondente *LUTHERO* de terris disputationem edidit & expectatur amici nostri doctissimi C. G. *LUDWIGII* plenum de eadem materia Opus. Inter Scriptores Musæorum & Regionum multi fossilia etiam descripserunt. *PLOTIUS*, P. du *TERTRE*, *SCHEUCHZERUS*, Is. *ACOSTA*, *BELLONIUS*, *EDWARDUS BROWN* (qui pulcherrimas fodinas Hungariæ, Istriæ, accurate descripsit), *JOH SWEIKHART*, de *VALVASOR*, *TAVERNIER* (ad gemmarum historiam), *RAJUS*, *FREZIER*, *LABAT* (in itinere Africano ex aliorum relationibus congesto), *FLACOURT*, *MONCONIS*, *KÄMPFERUS* (in Japoniæ historia), *M. B. VALENTIN*, *LEOPOLD. P. J. a STRAHLENBERG*.

Inter Musæorum Scriptores plerique fossilia recensuerunt, *GREVIUS*, *WORMIUS*, *CALCEOLARIUS*, *SEPTALIUS*.

CHRISTIAN GOTTLIEB LUDWIG terra Musæi R. Dresd. Lips. 1749. fol. In magno opere & collectæ *RIVINI* schedæ & icones reperiuntur & terræ ad methodum botanicam per classes, genera, & species, ordinatæ, earumque varietates pene innumeræ, maxime bolorum & terrarum sigillatarum, & generatio terrarum physica & utilitates adferuntur.

M. SCHOOK de turfis, Groningen 1688. 12.

JOACH. CAMERARII de bolo armena & terra lemnia, Norib. 1583. 8. *

HIERONYMI MONSCLARI dichiarazione contra il discorso de *PIER FRANC. GIRALDINI* sopra la sua ritrovata polvere che fu stimata Belzuar Minerale, Genua 1624. 4. *

Q. A. RIVINI de terris medicinalibus, Lips. 1723. 4. *

GOTTF. GEILFUS de terra sigillata Laubacensi, Gieß. 1714. 8.

ALOYSII della FABBRA de terra Nucetina, Ferrar. 1700. 8. bona diff. & per experimenta nata.

J. ADR. KULBEL Quæstio quænam sit causa fertilitatis terrarum, Dresd. 1740. 4. & Lat. & Gall. Leidæ 1742. 4. qua præmium anno 1739. Burdigalæ propositum meruit.

J. E. HEBENSTREIT de terris, Lips. 1745. 4.

Historia Animalium.

Cum anatome passim commista est, uti cum chemia fossilium descriptio. Hujus Auctores, quos cum fructu legi posse persuadeor, isti sunt.

Ad Animalium classes omnes aut plerasque.

ARISTOTELES jam citatus.

ARISTOTELIS de animalibus libri seorsim prodierunt Florentiæ 1527. fol. Gr. Lat. Idem interprete *J. C. SCALIGERO* cum ejus commentariis & animadversionibus *PHILIPPI JACOBI MAUSSACI* excusi sunt Tolosæ 1619. fol. Versio vero *TH. GAZÆ* prodiit Venet. 1476. fol. & sæpe alias.

ALBERTI MAGNI Lib. de virtutibus herbarum, lapidum & animalium: accedit opusculum de falconibus, asturibus & accipitribus variis annis, Lugd. 1596. 24. Amstel. 1648. 8. &c.

GEORGII AGRIGOLÆ de animalibus subterraneis L. Witteb. 1621. 8. & alias, non magni momenti.

J. HENRICI MAII historia animalium in sacro inprimis codice memoratorum ... opus quo *BOCHARTUS* per singula fere capita augetur & emendatur, Francof. & Spiræ 1686. Philologice inprimis scripsit.

ALIANOT περί ζώων. Editio pulchra *A. GRONOVII*. Londini. 1744. 4. supra citata est.

PHILE de Animalium proprietatibus. Gr. & Lat. editus a *C. PAAU*. Exscripsit fere *Ælianum*.

Opera *GESNERI* & *ALDROVANDI* supra recensita sunt.

E. WOTTON de differentiis Animalium L. XII. Parisiis 1552. ab eruditione magis, quam ab ipsarum rerum cognitione commendatur.

CASPARI SCHWENKFELD Theriotrophium Silesia. Ligniz 1603. 4. Historia satis plena, neque contemnenda, descriptiones breves, morum historiam, utilitates recenser.

J. JOHNSTON Historia naturalis de quadrupedibus L. IV. De piscibus & cetis L. V. De exsanguibus aquaticis L. IV. De Avibus L. II. De insectis L. III. De Serpentibus & Draconibus L. II. Francof. 1646. 1650. 1653. 1662. cujus novam editionem, additis iconibus Piscium Amboinensium auctam edidit *HENR. RUYCHIIUS FRID. fil.* Amstelod. 1718. 2. vol. Compilatio est, undecunque collecta, bonis malisque mistis, neque summa iconum fides est,

propria vix ulla, cæterum commodum quod maxima illa farrago Collectaneorum Aldrovandinorum abjecta sit.

WOLFGANGI FRANZII *historia animalium* in gratiam studiosorum theologiae, Amstelod. 1665. 12. Dresd. 1687. & *continuatio historia animalium*, Fr. Lips. 1688. 8. & cum commentariis & supplementis ex recentiorum historia naturali, ope J. CYPRIANI Fr. Lips. 1712. 4. & ipsum magis ad Philologiam & emblemata collectitium opus.

HENRICI RORARIJ quod animalia ratione melius utantur, Helmstad. 1728. 8. cum notis uberrimis J. H. RIBOVII.

G. C. KIRCHMAYER *zoologia phisica & de basilisco, unicornu, phœnice, &c.* VVitt. 1669. 8. Collectanea.

M. CATESBY *appendix* prodiit Lond. 1747. fol. qua viginti tabulæ continentur.

J. GOTTLÖB KRUGER *erklärung etlicher thiere*, Hall. 1746. 8.

C. LINNÆI *systematis Nat.* Ed. VI. prodiit Stokholm. 1748.

PHIL. CONR. FABRICII *de animalibus quadrupedibus, avibus, amphibis & insectis Veteravia indigenis*, Helmstad. 1749. 8. satis dives catalogus cum observationibus medicis.

J. DAN. MEYER pictor Noribergensis numerosa animalia edidit vivis coloribus picta cum sceletis, ab anno 1749. utili omnino instituto.

Huc denique pertinent dictionaria œconomica CHOMELII &c.; sed venatorii libri omnes huc spectant, & libri quibus domus rustica continetur. Verum hæc enarrasse vix licet.

HENRIC WILHELM DOBEL *jägerpractica*, Lips. 1746. fol. Per experimenta natus.

Inter domos rusticas HOCHBERGII GEORGICA, OL. du PRADEL, C. STEPHANI domus rustica recenseri merentur, quæ in botanicis dicuntur.

GUALTHERI CHARLETON *Onomasticon Zoicum*. Londini 1668. 4. vel, uti in auctiori Editione titulus est: *Exercit. de differentiis & nominibus animalium*. Oxonii 1677. fol. Classes & genera ex habitu fere constituit, & species generibus subordinat, absque tamen characteribus. Icones avium pulchræ, & dissertationes nonnullæ piscium intercedunt. Fossilium sequitur Catalogus, sed quo, meliores nacti, minus ægre caremus.

Mémoires pour servir à l'histoire des animaux. Parisiis 1676. fol. cujus aliqua pars Parisiis an. 1667. & 1682. in 4. prodierat, plenior vero multisque animalibus aucta editio inserta est in *Mémoires de l'Acad. avant 1699.* partemque tertiam constituit. Descriptiones sunt & dissectiones quadrupedum animalium, & avium, & piscium paucorum, qui in Regiis vivariis conservati, ab Academicis, PERRALTO maxime, & DUVERNEYO dissecti sunt. Splendidæ icones, dimensiones sollicitæ, anatome hinc inde paulo vitiosior, ut in posterioribus monumentis passim corrigi oportuerit. Eas descriptiones Anglice reddidit Alex. PITFIELD, & edidit Londini 1687. fol. Multa etiam animalia imitatus est M. B. VALENTINI.

MARCI CATESBY *natural history of Carolina*. 2. vol. fol. maj. Lond. 1731. seq. Singulis tabulis, quæ aliquot super ducentas sunt, additæ aves, & pisces ejus regionis ad vivum delineati, & suis coloribus picti ab Auctore. Splendidum Opus & fidele.

De animalibus Philippinarum Insularum Phil. Trans. n. 255. 285. 302. 303. 305. 311. 316. GEMELLI CARRERI in Itin.

A description of two hundred animals extracted from the best Authors. Lond. 1738. 8. * Anglica solum nomina, descriptiones breves, icones ex WILLUGHBEYO fere.

A description of some curious animals omitted in the former description with the natural history of Chimpanzee. Ibid. 1739. 8. *

DENYS de COETLOYON *tour trough the animal world*. Lond. 1746. 8 est compilatio cum iconibus mediocribus, animalibus fabulosis, & nonnullis Botanicis.

CAROLI LINNÆI *Systema natura*. Animalia in genera, speciesque ex methodi botanicæ rigore distribuit, characteribus in quadrupedibus a dentibus, mammis, & digitis desumptis.

EJUSDEM *Fauna Suecica*. Stokh. 1746. 8. Uberrimus catalogus est animalium Sueciæ, maxime in Insectis, quorum infinitæ species cum descriptionibus, omnia vetusta nomina ex methodi severitate disjecit, nova introduxit, species aliter ordinavit, multas veterum species in varietatum numerum detruxit.

S. BOCHARTI *hierozoicon*, LUDOLPHI *Historiam Æthiopicam*, FRANZII & MAII animalium historias omitto.

Plerique etiam regionum descriptores, & itinerariorum animalia utcumque descripserunt, acuratus vero LEO AFRICANUS, PIGAFETTA, JOHANNES LERY, PROSPER ALPINUS, FRANCISCUS HERNANDEZ cum notis RECCHI, P. du TERTRE, GEORGIUS MARCKGRAF de LIEBSTATT, Jesuitæ qui in regnum Siam profecti sunt, FRIDERICUS MARTENS, de FLACOURT, KÆMPFER, KNOX, BARRERE, SHAW, P. LABAT, ROBERTUS SIBBALD, R. PLOT, LIONEL WAFER, LUDOVICUS FEUILLE'E, KOLB, HANS SLOANE, alii.

Ex Museis vero huc pertinent GRAWIANUM, WORMIANUM, & inprimis thesauri PETTIVERI, VINCENTII, SEBÆ, & *Thesaurus animalium* primus RUYSCHII Amstelod. 1710. 4. editus.

Ad quadrupeda Animalia.

EL GOVERNO balladan los fieros animales sylvestres per FR. ANDRES de VALDELEBRO. Madriti 1680. 4. * cum pulchris iconibus.

JOH. RAII *Synopsis methodica quadrupedum*. Lond. 1693. & auctius edente S. JEBB. 1729. 8. Eximius Liber; ordinem a digitis sumtum non defendo, sed observationes laudo anatomicas, physicas, descriptiones cum summo judicio collectas.

JAC. THEODORI KLEIN *dubia circa Classes naturales quadrupedum & amphibiorum*. Gedani 1743. 4. max. Criticas observationes in systema novum LINNÆI habet, & aliquas rariorum animalium icones & descriptiones.

SAM. MOULINI *account of an Elephant burnd at Dublin*. ibid. 1682. 4. Elegantem Libellum Raius suæ synopsi quadrupedum inseruit, p. 131. seq. excepta descriptione nervorum, & ligamentorum oculi.

PATRIK BLAIR *osteographia Elephantis*, in *Phil. Transf.* n. 326. 327. multa ibi præter MOULINI observata, etsi anatome nimis præceps fuerit ob summam putredinem, seorsim etiam extat. De Elephanto porro *Phil. Transf.* n. 277.

WILHELMI STUCKELEY *anatomical observations made in the dissection of an Elephant*. Lond. 1723. apud HANSIUM SLOANE dissectus est Elephas, & genitalia quidem opera DOUGLASII, quorum elegantes sunt icones. Additæ aliquæ ex India orientali missæ observationes.

De cute Elephantis. *Phil. Transf.* n. 334.

De ossibus subterraneis Elephantis. J. P. BREYNE *Phil. Transf.* 446. ubi demonstrat non aliud animal esse Mammouth Russorum. Conf. 403. 404. & TENZEL de sceletto Elephantis. *Phil. Transf.* n. 234. & SLOANE de iisdem. *Mémoires de l'Acad.* 1727.

PETRI GILLI elegans libellus de Elephanto prodiit cum ÆLIANI editione; Lugd. 1562. 8.

A. MOULEN, quem citavimus, egregius liber est, ut mirum sit potuisse in tanta vitæ putredinis & ignis tam multa observare, quæ ad cranii cellulas, sceleton, renem multifidum, cæcum intestinum, hepar absque vesicula inprimis pertinent.

J. CHRISTOPH STURM de Elephantis, Altdorf. 1696. 4.

FERDINANDI POSTH *Elephas rationis experts deprehensus* Cölln an der Spree absque anno 4. WILH. ERN. TENZEL *Ep. de sceletto elephantino Tonna nuper effosso*, Jenæ 1696. 8. & contra ipsum *Epistel über den zu bergtonna ausgegrabenen Elefanten* 1696. 4. & responsio TENZELII *antwort auf die Epistel* 1697. 4. Tum J. SCARAMUCCI de sceletto elephantino a TENZELIO, &c. Urbin. 1697. 4. Verum nempe fuisse elephantum defendit.

JACOBI PARSONI de Rhinocerote *Phil. Transf.* 410. recusa nuper Germanice Norimbergæ. 1747. 4.

CAR. AUG. a BERGEN de Rhinocerote. Francof. ad Viadr. 1746. 4. Externas partes animalis diligenter describit.

FRID. GOTTHILF FREYTAG *Rhinoceros ex Vett. monumentis descriptus*, Lipsi. 1747. 8. philologice.

T. BARTHOLINI de unicornu, Amstelod. 1678. 12. eruditum opus.

APOLLONII MENABENI tractatus de magno animale alce: & rangifero: & gulone Vilfrans, Mediol. 1581. 4. Acc. R. DODONÆI de alce *Epist.* Colon. 1581. 8.

ANDR. BACCII de unicornu & magna bestia alce, Italice, Rom. 1587. 4. Latine autem a W. GABELHOVERO vers. prodiit Stuttgart. 1598. 8.

P. OLAI GRAAM *delineatio Rangiferi*, Uplal. 1685. 4.

PAULI LUDOV. SACHS. *Monocerologia* Razeburg 1676. 8. Refutat vulgarem opinionem de unicornu equo simili, describit piscem Narvval, & experimenta refert.

De *Hippopotami dentibus* exstat disp. C. A. a BERGEN Fr. Viadr. 1747. 4. de ejus capite in *Mém. de l'Acad. des Sciences* A. de JUSSIEU.

GRABA *Cervi descriptio medico-physica*, Jen. 1668. 8.

G. W. STAHL de cornu cervi deciduo, Hall. 1699. 4. bonum programma.

De equo pene infinita exstant, ut SOLEYSEL *le parfait maréchal*, Paris 1667. 4. 1733. 4. &c.

J. HEROARD *hippostéologie ou description des os du cheval*, Paris 1599. 8.

ALFONSUS de TORREZ integram bibliothecam Hippologorum edidit, Tolut. 1564. 4.

CAR. LINNÆI *Pan suecicus*, Upsal. 1749. 4. Continet experimenta instituta cum equis, bobus, capris, ovibus & suis, ut cognosceretur, quas plantas ex animalium species aut in cibum recipiant, aut recusent.

ARSCHIL NORDHOLM *jämtelands dūrfänge*, Upsal. 1749. 8.

JUSSIEU Caput Hippopotami. *Mém. de l'Acad.* 1724.

PHIL. ab HULDEN Rangifer. Jen. 1696.

SAMUEL DALE descriptio animalis Moosedeer. *Phil. Trans.* 444. DUDDLEY n. 227. 368.

SLOANE de maximis cornibus animalis parum noti. *Mém. de l'Acad.* 1727.

La Gloria del Cavallo PASQUALIS CARACCIOLI. Venet. 1586. 4. *

CAR. RUVINI *anatomia del Cavallo*. Venet. 1599. fol. De SNAPIO dicam inter Anatomicos.

De la GUERINIERE *Ecole de Cavalerie, contenant les maladies, l'ostéologie & la Chirurgie des Chevaux*. Parisiis 1731. 12.

PARSONS de *Quadrupede Bengalensi*. *Phil. Trans.* n. 476.

Aprolupicanivulpes. *Mém. de l'Acad. des Sc.* 1719.

PETRI CASTELLI *Hyana odorifera*. Messan. 1638. 4. Minime malus Libellus, in ea imprimis ætate. Hyanam Americanam & Africanam describit, tum folliculum glandulosum odoriferum, & sceletum.

SALV. MORAND de *saccò Civetta*. *Mem. de l'Acad. des Sc.* 1728.

J. THEODOR. SCHENK de *moscho*, Jen. 1668. 8.

W. WALDUNG *lagographia de natura leporum*, Hamburg. 1619. 4. *.

EDW. TYSON *anatomy of an Opossum*. *Phil. Trans.* n. 239. 290.

Et COWPERI *Masculi Opossum anatomie* in eodem numero p. 1576.

EDW. TYSON *anatomie Porci moschati valde accurata* n. 153. 349.

GEORGH MACKENZIE *historia Canum*. *Phil. Trans.* n. 377.

EDW. TYSON *Orang outang or the anatomy of the pigmy*. Lond. 1699. 4. Eximius Liber. Anatomie exquisita animalis, inter omnia hominum simillimi, viscerum maxime, musculorum & ossium comparatio cum simia, & cum homine, philologia denique doctissima.

HUNAUUD de *anatomie Simia*, *Mém. de l'Acad.* 1735.

Chimpansee Simiæ genus ad pedes quinque altum, ad Satyros spectans. *Act. Erud.* 1739. p. 564.

JOH. RAII de *Canibus Britannicis* L. I. De *variorum animalium historia* L. I. Lond. 1570. fol. & nuper Londini 1724. 4. edente SAM. JEBB.

PALÆMONIS *CYNOSOPHICA* Gr. Lat. ex IV. M. collatus .. a RUDB. a MOSHEIM, A. AURIFABRO, NIC. RIGALTIO atque ANDREA RIVINO, Lips. 1654. 4. prior enim editio AURIFABRI est, Witteb. 1548. 8. *

HIER. FRACASTORII de *cura canum venaticorum* ex *bibl. Medicea*, Lutet. 1612. 4. *

CHR. FERD. PAULINI *cynographia*, Norib. 1685. 4. & *cycographia* 1694. 8. compilata omnia.

JOC. THEOD KLEIN de *Sciuro volante*. *Phil. Trans.* n. 427.

JOH JAC. SCHEUCHZER de *Mure Alpino*. *Phil. Trans.* n. 397.

JOH. FRID. LOCHNERI *Malgos animalculum & radix*. Norimb. 1715. 4. Descriptio animalis adfinis Mustelis cum planta ex Valerianæ genere conjuncta.

SARRAZIN de *Ratto moschato*. *Mém. de l'Acad.* 1725.

REAUMUR de *Histrice* ibid. 1727.

- M. B. VALENTINI de lapide porcino, Gieff. 1690. 4.
 De O. WORMII mure lemm. confer etiam A. STOCK. 1649.
 P. J. de MARIO, quem ibi etiam citavimus, addimus, ipsum omnino inutilem esse, meramque formularum collectionem exhibere.
 Adde post hujus libri recensionem: S. P. HILSCHER de castorei natura & genuino usu, Jen. 1741. 4.
 P. WOLFART de Leone, Marb. 1711. 4.
 PHIL. JAC. HARTMANN de vitulo marino, Regiom. 1683. 4.
 CAR. FRID. MENANDER de arte coquendi adipem phocarum in Ostrobothnia, Abo 1747. 4.
 O. WORMII historia animalis, quod in Norvegia quandoque de nubibus decidit. Hafn. 1653. 4. Sceleti & aliquot officulorum icones eruditæ Dissertationi adjecit. Meliorem tamen historiam LINNÆO debemus, in Actis Stockholm. & Phil. Trans. n. 257.
 E. G. H. Dissectio Castoris, A. E. 1684. Phil. Trans. 430. SARRAZIN Mém. de l'Acad. 1705.
 JOH. MARII. Castrologia. Aug. Vindel. 1685. 8. & Parisiis 1746. 12. Posterior Editio melior est ob SARRAZINI, ex Monumentis Parisinis, additam historiam.
 Phocæ anatome. PARSONS. Phil. Trans. n. 469.
 Plurimas alias descriptiones minus fideles, & PAULINIANAS omnes, lubens omitto.

Ad Avium historiam.

- PIERRE BELLON histoire de la nature des Oiseaux avec leurs Portraits. Parisiis 155. fol. Icones, uti omnes quæ ab hoc Auctore profectæ sunt, malæ, nec opus maximi momenti.
 MARCI MALPIGHII de formatione fœtus in ovo. Lond. 1672. 4.
 FRANCISCI WILLUGHBY ornithologia L. III. ex editione JOH. RAIL. Lond. fol. 1676. & Anglice 1678. Posthumum Opus, sed a RAIL editore perfectum, egregium, cum exquisitis per numeros pennarum, colores, descriptionibus, cui aliquando anatome accessit. Nihil fabulosi, aut inaniter eruditi. Icones parvæ quidem, pleræque a WILLUGHBYO, multis per Europam itineribus, collectæ.
 El Gobierno hallada con las aves generosas, y el L. XIX. de las aves monstrosas per ANDRES FERRER de VALDECEBRO. Madriti 1683. 4. cum pulcherrimis iconibus.
 Ucelleria di Pietro OLINA. Rom. 1622. & 1684. 4. Proprietates avium edulium, & canorarum, iconesque celebris artificis Tempesta opera expressas habet, & capiendi artificia.
 JOH. LEONARD. FRISCH Vorstellung der Vogel in Deutschland Berolini 1733. & sequentibus annis. Duodecim classes avium proposuerat Vir insignis industria sua, & ab externo habitu, & a moribus, desumptas. Earum septenas vidi, quibus non Germaniæ folius, sed exoticæ etiam aves sculptæ, ab Auctoris filio vivis coloribus exprimuntur, addita brevi historia vitæ, morum, cibi, simplici, sed fideli.
 JOH. BARRERE ornithologiam nondum vidi.
 GEORG. EDWARDS historiam Avium 2. volum. in 4. cum pulcherrimis iconibus, suis coloribus pictis, edidit Lond. 1743. & 1747. Ad vivum factæ sunt, & pleræque novas species exprimunt.
 Natural history of the English Songbirds. Lod. 1737. 8. Cum vivis coloribus.
 JOH. ZINANNI delle nova e de' nidi degli uccelli. Venet. 1737. 4. Observationes habet varias, & Locustarum historiam accuratam.
 The natural history of English birds engraved and colored by ELEAZAR ALBIN. Lond. 1737. 4. cum 101. tabulis, a G. EDWARDS habetur pro plagiario, qui sua ex F. WILLUGHBY exscripsit, & pauca propria habuerit, ex collectione D. DANDRIDGE. T. II. p. 110.
 The natural history of Birds, Lond. 1738. 8. 3. volum. cum 306. Tabulis.
 MOULINI in capitibus Avium observationes anatomicæ. Phil. Trans. n. 137.
 De Avibus sedem mutantibus CATESBY. Phil. Trans. n. 483.
 PETRI BARRERE libri hic citati titulus est: ornithologia seu series avium in Ruscinone Pyrenæis atque Gallia æquinoctiali observatarum, Perpignan 1745. 4.
 GEORG. EDWARDS historia avium voluminibus tertium nuper accessit, Lond. 1750. 4. & quartum expectatur.

J. ZINANNI libro citato ovorum, neque tamen omnium, habet expressas icones; cum tempore ponendi ova, fere absque descriptione avis.

ELEAZARIS ALBIN etiam est *the natural history of English Songbirds*, Lond. 1737. 8. 1741. 8. Icones continet maris foeminaeque & ovi, & aliquam historiam naturalem, imprimis canarinorum passerum curam.

Adde etiam avium historiae: ZORNII *petino-theologia* Tom. I. Pappenheim 1742. 8. Tomus II. Schwalbach 1743. 8. * bonum, ut audio, opus.

ANDR. NORRELIUS *de avibus esu licitis*, Upsal. 1746. 4. eruditam dissertationem scripsit ex antiquitatibus imprimis desumptam.

Aves ex M. CATESBY naturali historia excerptis, & seorsim excusas dedit J. MICH. SELIGMANN, Norimberg. 1749. & 1750. fol. adjectis ex G. EDWARDI iconibus.

J. THEOD. KLEIN *historia avium prodromus*, Lubec. 1750. 4. Classes a pedum digitis, genera a variis fabricae avium partibus sumit, ad botanicorum morem, & aves tum Europaeas tum aliarum mundi partium recenset cum observationibus, & adjectis dissertationibus de avibus migrantibus, & hirundinum atque ciconarum latibulis hybernis.

Aves Hungaricas imprimis descriptas & depictas dedit A. P. MARSIGLI.

Avium singularium historia.

THOMAE BARTHOLINI *Cygni anatome*, Hafn. 1668. auctius a filio CASPARO edita. Anatome brevis, plus philologiae, & fabulosi cantus fere contra meliorem persuasionem defensio. Asperae arteriae curvaturam, quae hujus avis princeps singularitas est, ut vocant, dudum observaverat ALDROVANDUS.

HERVIEUX *nouveau Traité des Serins de Canarie*. Parisiis 1713. 8. Elegans Libellus.

De Anseribus. *Phil. Trans.* n. 137.

RAI de *Macreuses Gallorum*. n. 172.

LISTER de aliquot Avibus. n. 175.

Descriptio aviculæ *Hummingbird*. *ibid.* n. 200.

WALLERI Psittaci anatome n. 211.

CAMELLI aves Philippinae n. 285.

JAC. DOUGLASS anatomy of a *Flammingo* n. 350.

Lingua Pici in *Ant. Mém. de l'Acad. & Phil. Trans.* n. 350. WALLERI opera descripta.

Struthionis anatomen habent ED. BROWN in *Phil. Collect.* n. 5. WARREN *Phil. Trans.* n. 394. RANBY *Phil. Trans.* n. 386. 413. VALISNERI in *Operibus* & seorsim 1713. 4. Denique *Mém. pour l'Hist. des Animaux*.

Passeris, *Procellaria* dicti, descriptio. LINNÆUS in *Actis Stokholm.* & Phasiani Sinensis in *Museo Adolpho-Fridericiano* exhibuit.

DEMETRII *de cura accipitrum*, Lugd. 1562. 8. Lat. & Gr. Lat. Par. 1617. 4. cum reliquis rei accipitrariae scriptoribus, ea fere potius ad medicinam veterinariam pertinent.

HERVIEUX Germanice etiam prodiit Franc. Lips. 1728. 8.

Lingua Pici & a MERY apud du HAMEL descripta est.

MICHAEL MAJER *de volucris arborea in Insulis Orcadibus proveniente*, Franc. 1719. 8.

J. PRÆTORII *de crocotalistria tepidi temporis hospite*, Lips. 1672. 4. bona disp. Hyeme non avolare, sed latere, ut nuper KLEINIUS, docet.

FRANCISCI NIGRISOLI *de oncocotalo* in *Exercit. subcis.* Ferrar. 1720.

L. ROBERG & LITHENIUS *de lagopode*, Upsal. 1732. 4.

Aviculæ Remiz descriptionem dedit CAJET. MONTIUS in *Bonon. Comm.* Tom. II. Part. II.

Piscium historia.

OPPIANI *halieuticon* L. V. Pleraque Pliniana sunt, & in multis nimis artificiosa. Mores Piscium, vitæ genus, & piscationem epico carmine describit.

PAULI JOVII Novocom. Episcopi, *de Piscibus Romanis*. Rom. 1524. fol. 1527. 4. Basil. 1526. 8. Ital. 1560. 4. Philologus potius, quam physicus, & in descriptionibus solum fere saporem animadversione dignum habuit.

P. BELLON *des étranges Poissons marins* 1551. 4. Delphinum imprimis, & aliquot alios cetaceos Pisces describit.

EJUSDEM de aquatilibus. Parisiis 1553. f. * sive de la nature & de la diversité des Poissons. Parisiis 1555. 12. *

GUIL. RONDELETII piscium historia. L. I. II. Lugd. 1554. 1555. fol. 2. vol. & Gallice an. 1558. Danubii pisces a GESNERO habuit I. p. 424. A GOUPYLO adjutus (in pref.) opus suum scripsit in ædibus CARDINALIS de TOURNON. Eo Auctore didicerunt Medici ægris concedere pisces saxatiles I. p. 163. *BELLONIUM*, & *SALVIANUM* (Medicum Cardinalis a S. Cruce) plagii postulat. p. 115. 424. Dignum omnino Opus est, etsi ordine, & figuris, malis. Sed plurima eruditio, anatome aliquando exquisita, neque absque inventis propriis. Exemplo esse potest Delphini anatome, inque ea renum fabrica. In Castore fabulas Veterum refutat, folliculum demonstrat. Aquatica omnia, quadrupeda etiam, & insecta describit. Varietates nimis amavit.

HIPPOLYTI SALVIANI aquatilium animalium historia. Rom. 1557. fol. Splendidissimum Opus. Icones æreæ, pro eo sæculo valde pulchræ, explicatio erudita, more tamen sæculi docta potius quam physica. Sumtibus Auctoris prodit.

GREGOR. MANGOLD fischbuch von der natur und eigenschaft der fische, Tigur. 1576. 8. * inprimis de piscibus lacus Bodamici.

J. TAVERNER certain experiments concerning fisch and fischery, Lond. 1600. 4. *

FABER ad HERNANDEZ p. 826.

STEPHANI a SCHONEVELD Ichthyologia. Hamburg. 1624. 4. Pisces maris utriusque; quod Holsatiam adluit, multorum annorum mora, quam egit Slesvici, sibi cognitos alphabetico ordine descripsit, ad autopsiam & experimenta propria, multos etiam nitide depictos dedit, & anatomicas observationes passim adjecit. *LINNÆUS* monet *RONDELETII* descriptiones se passim exscribere.

CAR. FRANC. COPPINI prigione e morte de' pesci, Rom. 1655. 16. *

JANI DUBRAVII de piscinis Libri prodierunt primum Uratislav. 1547. 8. tum Hemstadii, ut diximus. Eleganter scripti sunt, & continent curam & propagationem piscium Bohemiæ, cum aliquorum piscium descriptione. *CONRINGIUS* in sua editione loca Geoponicorum similia adjecit, & doctas præfationes eorum descriptionibus.

F. WILLUGBY ichthyologia recusa fuit Oxon. 1743. fol.

M. A. SEVERINI antiperipateticus, sive adversus Aristotelicos de respiratione piscium diatribe. Comment, in *THEOPHR. de piscibus in siccis viventibus*. *Phoca anatomicè spectatus*. De Radio turturis marini. Neapoli 1649. fol. Posthumum Opus. Icones promissæ, quibus spatium relictum est, interierunt omnino. Pulmonem verum piscibus, præter bronchias, tribuit, & respirationem.

JANI DUBRAVII de piscinis L. IV. Helmst. 1671. *HERMANNUS CONRINGIUS* edidit conjunctos cum aliis hujus generis operibus. Ad œconomiam inprimis pertinet.

FRANCISCI WILLUGHBY de historia piscium L. IV. Oxon. 1686. fol. Idem, qui avium historiam, *RAJUS* edidit. Ad posthumas Schedas passim eruditi per Angliam Viri sua contulerunt ornamenta, ipsasque dissectiones piscium. Deinde descriptiones, & multo majores, quam in avibus, icones, novas alias, alias ex *SALVIANO*, *SCHONEVELDO*, & aliis exscriptas. Icones etiam seorsim prodierunt. Inserta est descriptio piscium Rhenanorum *BALTNERI*, cujus icones reliquis præstant.

JOH. RAI Synopsis methodica piscium Lond. 1713. 8. posthuma. Methodus a respiratione, deinde ab ovis magnis, vel parvis, inde a pinnis; descriptiones perinde a coloribus, figura. Cum compendii loco sit, mores & anatomen omittit. Rariorum aliquot dedit icones. Cæterum fere compendium est prioris operis, additis Americanis piscibus.

Poissons, Ecrevices, & Crabes, que l'on trouve autour des Moluques, & sur les côtes de la Terre Australe, exécutés sur les desseins de *BALTHASSAR COYET*, & d' *ADAM van der STELLE*, Amstelod. 1718. fol. edidit *IUDOVICUS RENARD* rerum Regis Britanniarum Procurator. Meræ icones sunt, in India pictæ, satis rudes, sed colores ita pulchri, figuræ corporum ita mirificæ, ut vix fidem inveniant. Ita ultima Tabula Syrenen veram exprimit ægre credibili cum Muliere similitudine.

LAUR. ROBERG Dissertatio de Piscibus. R. *JOH. GABR. GERING*, Upsal. 1727. ob aliquot piscium dissectiones, ligneis iconibus rudius expressas citare visum est.

J. E. HEBENSTREIT de organis piscium externis, Lips. 1733. 4.

ANDREÆ HELLAND *de modo piscandi in Norlandia*, Upsal. 1736. 4.

PETRI ARTEDI *Ichthyologiam* edidit CAROLUS LINNÆUS Leid. 1738. 8. Quintuplex Opus, & posthumum. Prima parte Bibliotheca Ichthyologica continetur, paulo brevior, cum judiciis. Altera Philosophia piscium, nempe earum partes & anatomice consideratæ, & in respectu ad classes & methodum, classiumque generum & specierum, LINNÆANA methodo, reformatio. Tertio genera habentur, & classes, primo a caudæ situ, deinde a bronchiis ossis & cartilagineis, inter priores vero a pinnis ossis, vel exossibus, &c. Nomenclator est, qualis in Botanicis sæpe habetur, in Flora Suecica, nominibus scientificis, observationibus adpersis, characteribus generum, speciebus fusiis descriptis. Quarta Synonyma habentur quæ maluisse inserta tertiæ suæ ad loca. Multa & iusta ibi dubitatio. Ultima, quam & ipsam conjunctam malles priori, continentur descriptiones accuratæ per numeros ossiculorum, mensuras, partes omnes, & sæpe anatome. Vel omnes pisces, vel plerique, qui hic describuntur, Suecicorum sunt litorum, & Anglicorum. Hæc pars utilissima, etiam Medico.

R. BROOKES *the art of angling rok and seafishing vwith the natural history of River Pond and seafish...* and 133. Londin. 1743. 12. * maj. 2da edit.

MARCI CATESBY pisces seorsim imitari ceperunt Noribergenenses adjectis etiam aliis, Noriberg. 1750. fol. Pisces Danubii expressit MARSILIUS.

JAC. THEOD. KLEIN *missus ad historiam naturalem piscium* I. IV. Gedan. 1740. 1741. 1742. 1744. 4. Reg. egregiæ icones, pisces nova methodo dispositi, & multa passim anatome.

J. TH. KLEIN *missus* V. editus est 1750. 4. Cæterum hic auctor pisces habet undique ex omnibus maribus conquistos.

Ad varias species piscium.

EDUARD TYSON *Phocæna*. Lond. 1681.

JOH. RAI *anatomy of a porpess*. Phil. Transf. n. 74. 76.

De ictu venenato dentis Tursionis ib. n. 233.

ROB. SIBBALD *Phalanologia*, sive de rarioribus Balanis in Scoticum littus egestis. Edimb. 1692. 4.

R. DUDLEY de Balæna, in qua sperma Ceti reperitur. Phil. Transf. n. 387.

Ad historiam Monocerotis Narval Phil. Transf. p. 447. ANDERSONIUS in Islandiæ descriptione.

LAMORIER Galeus glaucus. Mém. de l'Acad. 1742.

R. LISTER anatomy of the Yellow Gurnard. Phil. Transf. n. 293. & denuo n. 447.

OL. RUDBEKIT *de Ave Selau*, Upsal. 1705. 4. Plurima equidem philologica, pisces tamen varios describit, & pingit ex aliis. Aves illas Mosaicas habet pro piscibus volantibus.

STEPHANI LORENZINI *anatome Torpedinis* Anglice. Lond. 1705. 4. & de eadem REAUMUR Mém. de l'Acad. 1714. & KÆMPFER in exoticis.

PETIT *Anatome Carpionis*. Mém. de l'Acad. 1733. &c.

B. ALLEN de generatione Anguillarum. Phil. Transf. n. 221. 230. 238. Mém. de l'Acad. 1707.

De Lingua Pastinacæ marinæ. Phil. Transf. 232.

COLLINSON de Solea. Phil. Transf. 472.

Mola Salviani n. 456.

Pisces Philippini n. 302.

Pisces aliqui venenati LISTER l. c. n. 114.

Pisces varii descripti GRONOU in *Act. Upsal.*

Aliquot Piscium Anatome. PRESTON. Phil. Transf. n. 225.

ED. TYSON *phocæna* prodiit 1680. 4. (alius enim annus errore typographico positus est.) Bonus liber, quo splanchnologia hujus piscis & osteologia continetur, cum multa & memorabili observatione. Phocam pro Phocæna synonymo habere videtur.

SACHSII Lib. jam citatus in primis huc pertinet, ob refutatas fabulas, & adferrum pisci Narval unicornu. Manui etiam similem pinnam ejus piscis describit, & experimenta refert pro viribus eruendis facta.

STEPH. LORENZINI *anatome torpedinis* primum prodiit Florent. 1678. 4.

Adde deinde huic tractationi: M. SCHOOK de harengis, Groning. 1649. 12. *

P. NEUKRANZ de harengo, Lubec. 1654. 4.

J. PLANCI *anatome piscia mola* Comm. Bonon. T. II. P. 2.

L. ROBERG & BONGE de natura salmonum, Upsal. 1730. 4.

De anatome cyprini F. PETIT in *Mémoires de l'Académie des Sciences*.

Ad

Ad Serpentes & quadrupeda ovipara.

BALDI ANGELI ABBATII de admirabili natura Vipera. Urbin. 1589. 4. Rudes Veterum fabulas refutat. Ova Viperarum describit, penesque bifurcos, & anatomen, hanc quidem obiter.

HODIERNÆ partium Vipera anatome seorsim. Panormi 1646. 4. *

MARCI AURELII SEVERINI de Vipera natura & veneno. Patav. 1651. 4. Senile Opus plenum philologiis, quæstionibus, controversiis. Utilem tamen habet VESLINGII Dissertationem, tum HODIERNÆ, propria pauca, & figuras rudiores.

MOYSE CHARAS expériences sur la Vipère, Parisiis 1669. 8. & suite des nouvelles expériences 1672. & 1678. junctim utrumque Opusculum 1694. 8. Pharmacopola, sed homo non rudis. Anatome satis exquisita: glandulas, fontes veneni, descripsit. Venenum male in sola ira ponit, & pejus meliora docenti REDO contradicit, falsaque, ut videtur, experimenta opponit, quæ cum eo succo ait se fecisse. VIGANUS certe eum nimis vetusto, hinc effeto veneno Viperarum in experimentis usum esse objicit in medulla Chemia. REDUS vero eum omnino pro homine habet, qui suis pennis instructus volare sit conatus.

FRAC. REDI osservazioni intorno alle Vipere. Firenze 1664. 4. & Lettera sopra alcune opposizioni fatte alle sue osservazioni. Firenze 1670 4. Non in ira sola venenum Viperarum poni, sed etiam mortuæ succum salivalem, sanguini immediate mistum lethalem esse.

BOURDELOT observations sur les Vipères. Parisiis 1670. 12. Experimenta, eaque in Gallia facta, opponit Charasio, in ea tamen regione mitiores videri adfirmat. De iisdem MOLINEUX Phil. Transf. n. 271. LISTER n. 87.

J. TOWGOOD de vipera, Leid. 1718. 4. *

A BACK de morfu Vipera Æsping Stokh. handling. 1748. P. III.

CAR. LINNÆI Surinamensis Grilliana, Upsal. 1748. 4. fere Serpentum descriptiones sunt: VALISNERIUS cloacam viperæ descripsit, & detexit fraudem lapidum de Cobra, qui mera ustulata ossa bubula sint.

Recensioni ED. TYSON, quem anatomy of the rattel snake edidisse diximus, adde, quod de ejusdem anatome optime egerit MEAD of poisons, utriusque viperæ, hujus & minoris Europææ apparatus Veneni egregie descripserit.

ED. TYSON Anatomy of the rattel snake. Phil. Transf. n. 144. DUDLEY de eadem n. 376. HALL. n. 399. Ejus dentes venenique apparatus n. 401. & n. 456. de ejus vi incantante n. 430.

De morfu Serpentis venenati. ibid. n. 245.

De Serpentibus Ceyloniæ, &c. n. 278.

SPRENGEL de Vipera. Phil. Transf. n. 376.

CHARLES OWEN Essay toward a natural history, Lond. 1742. 4. * Continet Serpentium collectam historiam.

Osservazioni delle grue. CALDESI intorno alle Tartarughe. Firenze 1687. 4. Egregiam anatomen hujus continet: melior plerisque, quos unquam vidi, zoographis. Testudines tres describit, marinam, aquæ dulcis incolam, & terrestrem. Utiles digressiones miscet, ut eam de bilis organis. Memorabile est, quod refert de aëre in venis apparente, & de polypis.

De eadem DE LA FONT Mém. de l'Acad. 1729.

Crocodili anatome in observationibus Siamensium Jesuitarum, & apud BORRICHIIUM in L. de Sapientia Ægyptiorum & apud van HAMMEN de Lerniis.

PAUL WURFBAIN Salamandrologia Norimbergæ 1683. 4. Cum variis alienis & mythologicis, anatomen tamen Salamandræ & utilia conjunxit.

MAUPERTUIS de Salamandris. Mém. de l'Acad. 1727.

DU FAY de iisdem Salamandris. Mém. de l'Acad. 1729.

ANT. VALISNERI Istoria d'un Cameleonte Africano. Venet. 1715. 4. & 1728. A pulmonibus coloris varietates nasci demonstrat. Aures invenit, ignotas Parisinis. Pipam, bufonem, qui ova in dorso gerit, marem esse demonstravit.

Ad ejusdem Chamæleontis historiam. Phil. Transf. n. 137.

ANT. VALISNERI de cameleonte hic citatus, de eodem animali etiam egit in operum omnium Tom. II. de bufone egit etiam ibid. VOLPI.

BAKER de cutis mutatione in locusta aquatica. Phil. Transf. n. 483.

BUFO mas obstetrix foeminæ. Mém. de l'Acad. 1741.

OLIGERI JACOBÆI *de Ranis & Lacertis observationes*. Hafn. 1686. 8. Hæc editio priori Parisina auctior est. Ranæ, Salamandræ, Testudinis anatomen habet, non curiosissimam.

Ad Ranarum generationem & metamorphoses SIBYLLA MERIAN, sive SWAMMERDAM. CL. MENTZ in Dissert. de generatione Ranar. parad. Lips. RIVIN. Act. Erud. 1687.

Insectorum historia in genere.

ALDROVANDUM supra jam recensui. THOMÆ MOUFFET *Theatrum Insectorum*; sive *minimorum animalium*, Lond. 1634. fol. pro sua ætate satis copiosus, species multiplicavit, receptis varietatibus, icones dedit satis bonas, descriptiones nimis philologicas, neque copiosas satis, fabularum jugum non excussit; minime tamen sua laude fraudandus, & Entomologorum ante SWAMMERDAMMIUM princeps.

JOHANNIS GOEDART *metamorphoses Insectorum*, Medioburgi 1662. 1667. 12. Latine 1700. 3. tomis, quorum primus & tertius a JOH. DE MEY, secundus a PAULO VEEZÆDT Latine redditus est. Pictor fuit & erucas inprimis, earumque in papilionem metamorphosin observavit. Sæpe tamen ipsi ichneumones muscæ imposuerunt. Alibi observationes fecit suspectas, ut in Bombyliis. Ultima pars posthuma est. Idem in methodum redactus a LISTERO. Eboraci 1682. Lond. 1685. 8. prodiit. Retinuit veras metamorphoses, & descriptiones probabiles, de falsis monuit, observationes per classes animalium conjunxit.

IDEM ad *insectorum historiam in genere* citatus Medioburgi dictis annis prodiit cum titulo *historische beschryving van de oorspronk der vvormen Rupsen*, &c.

J. SWAMMERDAMMII *historia generalis insectorum* Leidæ recusa est 1733. 4.

FR. REDI *Esperienze intorno agl' Insetti*. Florent. 1668. 4. Generationem ex putredine refutat per experimenta, & vermes in putrescentibus nascentes demonstrat muscarum per aerem volitantium esse propaginem. Antiquæ tamen Sectæ vestigium in Gallis mansit, quarum Insecta credidit ab anima, nescio qua, vegetabili produci. Hunc errorem VALISNERIUS correxit, in *emendationibus* ad editionem Venetam adjectis.

PHIL. BONANNI *de viventibus in rebus non viventibus*, Rom. 1691. 4. huc pertinet. Vermium generationem æquivocam defendit.

ANT. VALISNERI *dialoghi degli sviluppi e de' costumi degl' insetti* auctius exstant in *EJUS* operibus omnibus. *EJUS* *nuove esperienze*, &c. recusæ sunt Patav. 1725.

JOH. SWAMMERDAMMII *algemeene verhandeling van bloedeloofse diertjens*. Ultrajecti 1679. 4. & sub nomine *historia generalis Insectorum*, Leid. 1685. 4. Insecta omnia primus ex transformationum diversitate in quatuor classes divisit: errores veterum, & inprimis generationem æquivocam refutavit, Insecta in Insectis latentia eduxit, aliquorum historiam dedit integram, & nitidissimas icones. In sequente Opere totus Liber repetitur.

Ejusdem *Biblia Natura*, sive *historia Insectorum*. Leid. 1737. procurante BOERHAAVIO edita. Opuscula varia sunt Clari Viri, quæ in Gallia latuerant, ubi secundum manifestam suspensionem Boerhaavii, varii Galli varia, & TOURNEFORTIUS iconem seminum Filicum habuit. Vis industriæ mira in dissectione minimorum animalculorum, & splanchnologiis apum v. gr. quas ne REAUMURI quidem solertia attingere potuit, qui de melioribus desperans, anatomicas figuras ex SWAMMERDAMMIO in Opus suum transtulerit. Princeps Opus est de Apibus, reliqua minora de Ephemero, Cochlea, Ranis, Acaro, Papilione intra Papilionem latente. Multa pulcherrima anatomica mista sunt, maxime Libro de Ranis.

MARTINI LISTER *historia animalium Anglia tractatus tres, de Araneis, Cochleis terrestribus, fluviatilibus, & marinis*. Lond. 1678. 4. Princeps est Aranearum historia, quarum mores, generationem, oculos, projecta in aerem fila, species plurimas pulchre describit, & depingit. Similis in Cocleis labor, earumque sexus androgynus, spicula, quibus se ad venerem invitant, varietatesque & species exprimuntur. Ad finem lapidum figuratorum Angliæ pulchræ icones & descriptiones accedunt.

Ejusdem *appendix historia animalium Anglia Tr. III*. Lond. 1685. 8. Continet Scarabæorum, Concharum, aliorum animalium Insectorum pulcherrimas icones, cum quibusdam prioris Operis emendationibus.

MARIÆ SIBYLLÆ MERIAN *histoire des Insectes de l'Europe*. Amstel. 1730. fol. Primæ editiones 1679. & 1684. in 4. Norimbergæ prodierunt. Icones sunt 184. plantarum totidem, & ultra, cum erucis, quæ iis plantis pascuntur, & papilionibus inde natis. Pictorium Opus. In explicatione nomina stirpium passim corrupta sunt.

Ejus-

Ejusdem *sur la génération & la transformation des Insectes de Surinam*. Amst. 1705. & Hagæ 1726. fol. anno 1699. Femina Insectorum avidissima Surinamum iter fecit, ut ibi nova & in regione æstuosa pulchriora colligeret. Vixit ibi duobus annis, sed ob æstus fere a Nigritis Servis unice Insecta habuit, cum aeris inclementiam fere non posset ipsa. Pinxit 72. figuris plantas Americanas aliquas nitide, tum pulcherrimos Papiliones, Scarabæum luciferum, Ranarum denique in Pisces metamorphosin.

PR. REDI *degli animali viventi, negli animali viventi*. Firenze 1684. 4. Lombricum, Pediculorum, ex variis animalibus historia. Intercurrunt alia ad varias dissertationes minutiorum bestiarum, & ad canalem inprimis alimentarium, piscium viscera, vesicas aëreas pertinentia. Adjecta est HIACINTHI CESTONI historia animalculorum, quæ in pustulis scabiosis habitant, sub nomine COSMI BONUOMO nescio quare, primum edita.

EJUSDEM *Opera omnia*. Neapol. 1687. 8. & Venet. 1742. 4. septem in 8. voluminibus junctim edita sunt.

ANTONIUS WALISNERI cum universam naturam amaret, Insectis tamen cognoscendis inprimis incubuit. Eo ergo pertinent, *Dialoghi delli Sviluppi e de' costumi degl' Insetti*. Pat. 1700. 8. Ex putredine nihil nasci, in clausis vasis etsi aeri perviis nihil produci vivi, absque aeris accessu excludi ova, sed animalia perire. De vermibus Equorum, Ovium, quos Veteres observaverunt ignorata matre. Historia Formicaleonis, Oculos Insectorum veros oculos non esse.

Nuove esperienze ed osservazioni intorno all' origine, Sviluppi, e costumi di varii Insetti, Patav. 1713. 4. Historia muscæ rosifecæ. Idea divisionis Insectorum in classes a loco natali desumptas. Pulicis ex ovo generatio (SWAMMERDAMMIO non ignorata), semen Fuci, Vermium in sinibus frontalibus pecudum natorum descriptio.

EJUSDEM *imeglioramenti e correzioni di alcune esperienze del Redi*. In Operibus omnibus exstant T. III. p. 617. Muscas detegit, quæ ova in foliis ponunt, & gallis originem dant, ignoratas REDO, causasque erroris de quo supra diximus. Alia plurima huc pertinentia per reliqua ejus Opera sparsa sunt. Felix in expedienda generatione, vita, moribus Insectorum, etiam felicior in enarrandis observationibus. Icones vero nitore sermonis non respondent.

JOHANNIS RAI *historia Insectorum*. Lond. 1710. 4. Posthumum Opus Synopsis reliquorum animalium simile, multo tamen præstantius, uberius. Primus Insectorum enumerationem justam dedit, cum priores paucas fere descripsissent species. Primus ea in methodum digessit, Botanicæ suæ equidem similem, & naturalem potius quam artificialem. Descriptiones breves & bonæ species numerosissimæ. Multa a WILLUGHBEYO habuerat, & a LISTERO, & priorum descriptiones, quoties ei bonæ videbantur, integras inseruit Operi. Adjectum est M. LISTERI de Scarabæis Britannicis Opusculum.

ELEAZAR ALBINI *natural history of English Insects*. Lond. 1720. 4. cum 110. Tabulis. Pictoris Opus, plantis quibus Papiliones pascuntur, & eorum Erucas ovaque, & historiam aliquam, sed absque ulla physica fere utilitate. Numero tamen Papilionum superat.

JACOB LADMIRAL *naauwkeurige vvaarneminge van veele gest alt vervuisselende diertjes*. Amstelodami ab aliquot annis prodire coepit in fol. Pictor est qui fecit, sed triginta annorum experimentis exercitatus. Figuræ nitidissimæ, historiæ accuratæ. Quas vidi Tabulas, numero quinque & viginti, eæ solos Papiliones expriment.

J. LEONH. FRISCH *beschreibung von allerley insecten in Teutschland* Tom. I. -- XIII. Bero- lini 1720 - 1738. 4. Dignum Opus, quod exteris, quibus minus notum est, commendetur. Trecenta Insecta describit, vitam, mores, transformationes, generationem, anatomen exteriorem, accurate tradit laboriosus Vir, & veri amantissimus. Icones a filio sculptæ fideles, & in posterioribus satis nitidæ.

DE REAUMUR *Mémoires pour servir à l'histoire des Insectes*. Parisiis 7. vol. in 4. 1734 - 1742. Notissimum Opus & omnium admirationem dudum nactum non laudo. Unice demonstrare visum est, quare reliquorum Insecta colentium Physicorum industriam unice superet REAUMURUS. Nempe Insecta ex omni Francia ad eum a curiosis mittuntur, itinere etiam publica lege expedito. Deinde non in vastissimo orbis ambitu vaga descripsit animalia, sed magnam certe partem in colonias, suis sub oculis, vitreis inclusas orbibus maximo & varietate deduxit. Ita transmutationes, generationem, mores, victum per otium observat, & eas observationes in Museo perficit, quæ integrorum dierum patientia, sub aeris solisve injuriis constabant SWAMMERDAMMIO. Duo volumina edenda supersunt, quorum priori Formicæ & Scarabæi, altero Insecta describentur, quæ nullam subeunt metamorphosin.

Théologie des Insectes de M. LESSER, avec des Remarques de M. LYONNET, a la Haye 1742. 8. LESSERUS, curiosus naturæ Theologus, admiranda Insectorum, & teleologias scripserat optimis usus Auctoribus. LYONNETUS, cui maximæ sunt delitiæ Insectorum observationes, & qui pulcherrime & pingit, & sculpsit, innumerabilia & ad generalem historiam Insectorum, & ad peculiare species pertinentia addidit: uti de Spermaticis Animalculis, de characteribus quibus insecta a reliquis animalibus separantur, &c. Cæterum LYONNETUS notas scripsit: ignotus vero est interpres, qui crassos passim commisit errores, Germanicæ Linguae minus gnarus.

J. ERN. HEBENSTREIT de insectorum natalibus, Lipsi. 1743. EJ. institutiones historia naturalis insectorum, ibid. 1745. 4.

AUG. JOH. ROESEL'S Insecten belustigungen Tom. I. Norimberg. 1746. 4. Eximium Opus. Hoc Tomo soli continentur Papiliones, cum Erucis suis & vitæ genere. Descriptiones, figuræ, vitæ, generationes Insectorum fideles, icones eximiæ, colores quibus ab Auctore ornantur, ita pulchri, ut nihil sit ad earum elegantiam ALBINI industria. In sequentibus Tomis nondum absolutis, plurima alia Insecta cum suis moribus, generandi ratione, & aliquando viscerum fabrica extant, cum iconibus pulcherrime ibidem depictis.

AUG. JOH. ROESEL'S insecten belustigungen Tom. II. Norimb. etiam 1749. 4. prodiit. Secundus hic tomus continet Scarabæos, hydrocantharos, libellas, plenissimam historiam locustarum, apes varias, muscas & pulices.

Adde etiam huic tractationi: CARL de GEER om nyttian som insecter tilskynda observ. Stokholm. 1747. 8. qui IDEM vir generosissimus passim insecta in Actis Stokholmiensibus descripsit.

CAR. FRID. MENANDER de usu cognitionis insectorum, Abo 1747. 4.

CHARLES BONNET Traité d'Insectologie, P. I. II. Parisiis 1745. 12. Experimentorum duo genera sunt. Priori historia continetur animalculorum, quæ plurimas plantas obsident, & vulgo Pediculi vocantur. Sexuum mira multiplicitas, & generatio absque venere ibi describitur, certisque evincitur & valde sollicitis experimentis. Altero Tomo dissectiones vermium aquaticorum habentur, qui in partes divisi, ex singulis in integrum animal renascuntur.

CAR. LINNÆUS in Fauna Suecica catalogum numerosissimum Insectorum edidit, cum descriptionibus. Plenior nondum novi. Multa ipse vidit, multa etiam debet generoso viro CAROLO DE GEER, qui miro amore Insectorum captus, multo sumtu & propositis præmiis conquirat undique & alit, & sollicite depingit & describit.

Ad varia etiam Insecta SEDILEAU Anciens Mém. de l'Acad. & LA HIRE, LISTER. Phil. Transf. n. 249. &c.

Ad Insecta Virginie varia BANNISTER. Phil. Transf. n. 270.

Ad singularia Insecta.

DIRK KLUIT naspeuring van de Byen. Ultraj. 1619. 8. *. a BOERHAAVIO laudatus, æconomica fere continet.

BUTLER Apum historia. Lond. 1673. 8. Primus, quantum novi, Apum tres sexus & reginam foeminam esse demonstravit.

JOH. SWAMMERDAMMI absolutissimus Liber de Apibus M. S. latebat, & a PETRO HOTTON ibi visus est cum iconibus suis. Phil. Transf. n. 257. Continetur in Operibus omnibus.

Traité des Mouches à miel, Parisiis 1690. 12. fere æconomicus.

MARALDI de Apibus Mém. de l'Acad. 1712. Histoire naturelle des Abeilles. Parisiis 1744. 2. vol. 12. Dialogi sunt, Auctore D. BASIN: maxima quidem pars ex REAUMURII Scriptis desumpta, additis ad sua loca, quæ sparsa in ejus Insectorum historia, eo referri possunt.

De melle & cera. Mém. de l'Acad. 1704. 1708.

CAROLI BUTLER libri citati titulus plenus est: Apum historia, seu feminine Monarchy or the history of the Bees. Recusus est hic liber Lond. Latine 1673. 12. versus a RICHARDSON, Anglice 1704. 8. Gallice 1740. 8. Hagæ. Scriptus est anno 1623. Nunc cum legerim, invenio, non totam rem adtigisse. Regem foeminam esse vidit, sed apes operarias perinde foeminas esse credidit. Examinum missionem curiose describit, & ipsos sermones petentis veniam Principis, & adnuentis aut negantis matris, supplici illas, has serio carmine expressas se audivisse sibi persuasit, singularis ingenii homo.

GIOVANNI RUCELLAI Le Api Vener. 1539. Padova 1718. 4. cum notis ROB. TITI.

REAUMUR Vesparum historia. Mém. de l'Acad. 1719. Ad easdem DERHAM. Phil. Transf. n. 382.

De succo Formicarum. Phil. Transf. n. 68.

- J. WILDE *de formica*, Amberg. 1615. 8. *
- PAUL. GOTTF. SPERLING *chymica formicarum analysis*, Witteb. 1689. 4.
- WILL. GOULD *history of English Arts*. Lond. 1746. 8. Neutra animalia, & alatas foeminas, & mares alatos describit. Similia in *Actis Stockholm.* habet LINNÆUS.
- Curculionis generatio LEEUWENHOEK. *Phil. Transf.* 213.
- JOH. SWAMMERDAM *historie van het Haft*. Amst. 1675. 8. Latine Lond. 1681. 4. & extat in *Operibus omnibus*. Anatomen persubtilem hujus animalis continet, quod longam quidem sub Vermis specie vitam vivit, ubi vero pennas explicavit, intra paucas horas venere defungitur, & aquis submersum perit.
- AUGERII CLUTII ejusdem *Insecti historia* edita in 4. parvi momenti est.
- GIOVANNI TARGIONI *Lettera sopra una numerosissima specie di farfalle*. Firenze 1741. 4. Est nubes minorum Ephemerarum æstivo tempore visa.
- POUPART de Libella. *Phil. Transf.* n. 261.
- Formicæ Leonis historia. POUPART *Mém. de l'Acad.* 1704. & alia species 1706.
- Libellarum Venus. HOMBERG *Mém. de l'Acad.* 1699.
- L. ROBERG *de libella lacustri*, Upsal. 1732. 4.
- STEPH. BLANCARDI *Schouplaats der Rupsen*. Amstelod. 1688. 8. Papiliones inprimis, sed etiam Locustam Pulicem, & alia similia describit.
- WILKES *English Moths and Butterflies*. Lond. 1747. fol. Sunt Papiliones egregie vivis picti coloribus, cum suis plantis, non omnes tamen ad naturam factæ. Primus tomus 120 tabularum prodiit.
- DE PUGET *Observations sur la structure des Yeux de plusieurs Insectes, & sur les trompes des Papillons*. Lyon 1706. 8.
- De Eruca *Connaught vorm*. *Phil. Transf.* n. 193.
- REAUMUR *Tinearum historia*. *Mém. de l'Ac.* 1728. IDEM 1730. de *Insectis folia convolventibus*. Ejusdem de *planta-verme*. *Mém. de l'Acad.* 1726.
- M. MALPIGHI de *Bombyce*. Lond. 1669. 4.
- De Serici fabrica. *Phil. Transf.* n. 252.
- De Serico in Anglia colendo. *Phil. Transf.* n. 362.
- M. MALPIGHI citatus hic liber de *bombyce* egregius est, & ex perfectissimis hujus scriptoris operibus.
- A. de SAUVAGES *mémoire sur les vers à soye*, Monspel. 4. 174...
- Locustæ-pulicis descriptio etiam extat in *Act. Stockholm.* opera CL. de GEER.
- De locustis plurimi Libri sunt J. PAUL. HEBENSTREIT *dissertatio de locustis*, Jen. 1673. philologica est. J. PHIL. TREUNERI *phenomena locustarum*, Jenæ descripta 1693. 4. bona sunt cum anatome. FRANCISCI SCUFONI *osservazioni intorno alle cavallette* prodierunt Rom. 1718. 4. in E. N. C. recusæ. *Relazione delle diligenze usate nell'anno 1716. per distruggere le cavallette*. Firenze 1716. 4. *
- In ZINNANI Libro de *avium ovis* bona continetur anatome locustarum.
- J. CHRISTIAN KUNDMANN *anmerkungen über die heuschrecken in Schlesien*, Bresl. 1748. 4. cum experimentis & anatome.
- E. LUDWIG RAHTLEF *Acridotheologie*, Hannover. 1748. & 1749. 8. 2. vol. & Belgice, Amstel. 1750. 8. historiam habet & naturalem & politicam.
- HENR. BARHAM *essay upon the silk vorm*. Lond. 1717. 8. similis scopi.
- De *Muscis Ichneumonibus in erucis nidulantibus*. LISTER. *Phil. Transf.* n. 76. 77.
- WALLER de *Cicindela*. *Phil. Transf.* n. 78. n. 167.
- De *Scarabæo pullatorio*. ALLEN *Phil. Transf.* n. 245. DERHAM *Phil. Transf.* n. 271. 291. STAKHOUSE n. 385.
- FR. POUPART *historia Hydrocanthari manus habentis, &c.* in *Journal des Savans*.
- Locustæ Pulicis descriptio. *Mém. de l'Acad.* 1705.
- JUAN de QUINNONES *Trattato de las Langustas*. * Madrit. 1720.
- De *Araneis & Scarabæis Philippinis*. *Phil. Transf.* n. 331.
- De *Araneis*. LISTER l. c. De iisdem *jaculantibus sua fila*. RAI, LISTER, & HULSE. *Phil. Transf.* n. 50. 65. 72. 160. De iisdem LEEUWENHOEK n. 272.
- LA HIRE de *Araneis*. *Mém. de l'Acad.* 1707.

ELEAZAR ALBIN *natural history of the spiders and other curious insects*, Lond. 1736. 4. grand. Figuræ coloratæ araneorum 181. quarum multæ varietates esse videntur, neque accuratæ sunt, & aliquando monstrosæ ut illa n. 168. Adjecti nonnulli scorpîi, & Rediannæ icones pediculi diversî generis.

Mémoires pour servir à commencer l'histoire des araignées aquatiques, Paris. 1749. 12. *

LUDOVICI VALLETTÆ laborem non laudat VALISNERIUS T. III. p. 464.

LE BON *Dissertatio* citata prodiit etiam Avignon 1748. 12. *Analyfin* chemicam araneorum, & consilium parandarum ex earum telis guttarum anglicarum dat.

Asellorum analysi, quam LEMERY dedisse dictum est, adde etiam J. S. HENNINGER *de millepedibus*, Argentor. 1711. 4.

J. SOUTHALL *a treatise of Bugs*, London. 1730. 8. Germanice versum Hamburg. 1737. 8.

CHR. FRANC. PAULINI *de lumbrico terrestri*, Fr. Lips. 1703. 8.

H. DETHARDING *de vermibus in Norvegia*, Hafn. 1742. 4.

J. DAN. GEYER *de cantharidibus*, Francof. 1687. 4.

W. SENGUARD *disquisitio de Tarantula*. Leid. 1668. 12. recusa cum experientia & rationis connubio. Unice physiologiam, eamque mechanicam habet.

GEORGII BAGLIVI *Dissertatio de anatome, morfu, & effectibus Tarantula*. an. 1695. scripta levem anatomen, nec hoc peculiare habet, nisi quod fraudem plerumque subesse monet, plura forte aperturus, si in ea regione licuisset. Observationes tamen peculiare, non diversas a vulgaribus historiis passim admisit.

De eadem GEOFROI. *Mém. de l'Acad.* 1732.

LUDOV. VALLETTA *de Phalangio Apulo Opusculum*. Neap. 1706. 8. Cum in loco natali hæc animalcula viderit, nidum satis artificiosum, victum, figuram & membra, arma & venenum describit, minutius prioribus, & vim Musices defendit.

LE BON *Dissertation sur l'utilité de la soie des Araignées*. *Mém. de Trevoux* April. 1719. *Phil. Trans.* n. 325. Levissimum & forte sericum præbere filum, neque animalculum venenatum esse; sed carnivorum animal absque enormi sumtu ali nequit. REAUMUR *Mém. de l'Acad.* 1710.

RANBY *de Cancro androgyno*. *Phil. Trans.* 413. *De Soleæ & Cancri conjunctione*. *Mém. de l'Acad.* 1722. *De Cancri oculis*. *Mém. de l'Acad.* 1709.

SIBBALD *pediculus Ceti*. *Phil. Trans.* n. 308.

RICHARDSON *de Squilla aquæ dulcis*. *Phil. Trans.* n. 433.

MAUPERTUIS *de Scorpiis*. *Mém. de l'Acad.* 1731.

Asellorum analysi. LEMERY. *Mém. de l'Acad.* 1709.

JOACH. JUNG *historia vermium* ex M.S. edita a JOH. VAGETIO Hamburg. 1691. 4. Nondum vidi.

Ad Lumbrici teretis anatomen. Ed. TYSON *Phil. Trans.* n. 147. & confer. *Phil. Trans.* n. 413. ubi de Luporum Lumbricis agitur.

A. VALISNERII *osservazioni intorno alla generatione de' Vermi nel corpo umano*. Patav. 1710. Vermes latos a primis parentibus ad nos congenitos descendisse: esse seriem Cucurbitinorum se comprehendentium. Os Cucurbitinorum, lactea vasa, ova, sexus organa describit.

De Lumbricis nobile Opus DAN. CLERICI alibi laudabo.

Lumbrici lati historiam dedit LISTER. *Phil. Trans.* n. 95. TYSON n. 146.

A. VALISNERII *nuove osservazioni intorno all'ova de' vermi tondi*. Patav. 1713. 4. Seminis organa & generationem Lumbrici teretis tradit. Et *nuove osservazioni fisiche fatte nella costituzione verminosa nelli cavalli*. Venet. 1715. 4. Epidemicam Equorum stragem derivat a vermibus, quorum mater musca est, quæ in ani orificium subit, ibique ova ponit. De Vermibus naves erodentibus, aculeo scorpîi, araneo-locusta etiam agit. Eiusdem Auctoris tres Epistolæ contra ANDRIUM satis acres, editæ cum Tractatu *de corporibus marinis, quæ in montibus reperiuntur*, ANDRIUM mendacii, invidiæ, plagii, falsarum observationum accusant.

SAM. ERNST *de tania*, Basil. 174. . . bonam disputationem qua multa propria habentur. Vasa taniæ replevit, unicum animal esse ex eorum continuitate confirmavit, & os unicum habere.

CAR. LINNÆI *disputatio de tania*, Upsal. 1748. 4. Tres species taniæ & fasciolam per suas notas separavit, ex animalibus inprimis experimenta sumit, ostendit his vermibus naturam reparabilem polypi inesse, neque caput habere.

- Vena Medinenfis. Proprius de ea Liber WELSCHII extat. Augustæ Vindelicorum an. 1674.
 4. & in *Phil. Transf.* LISTER n. 225.
 Hirudinis descriptio satis fusa. *POUPART Journal des Savans* 1697. n. 28.
 Anatome Hirudinis. MORAND *Mém. de l'Acad.* 1739.
 GARCIN de Hirudine marina. *Phil. Transf.* 415. *Mém. de l'Acad.* 1730. BACKER of the
Egesucker. Phil. Transf. 472.
 DESLANDES de verme singulari. *Mém. de l'Acad. des Sciences* 1728.
 Scolopendræ marinæ Hibernicæ historia. LOKE *Phil. Transf.* n. 225.
 De Scolopendra denuo. *Phil. Transf.* 251.
 De Scolopendra amphibæna & renascente. CARRE' *Mém. de l'Acad.* 1706.
 KLEIN de Scolopendra scutata. *Phil. Transf.* n. 447.
 Vermis aquaticus multipes se circumgyrans. *Mém. de l'Acad. des Sciences* 1714.
 De Dactylis intra lapides nascentibus. *Mém. de l'Acad.* 1708.
 GODOFREDI SELLII *historia naturalis Terebinthi*. Traject. 1733. 4. Cum annis 1731. & 1732. Te-
 redo valde invalesceret in aggeribus Belgicis, ad animalis istius, dudum a VALISNERIO descripti,
 historiam plurimi sunt excitati. Præferendus videtur SELLIIUS, accurata data anatome, neque
 inepta philologia. Recte tamen MASSUETUS prædixerat, sponte deflagraturum hoc periculum,
 cum instar epidemiæ, causa aliqua ignota, nimis multiplicationi hujus vermis, fuisset faventior.
 Experientia enim convenit, cum nullo invento remedio malum nihilominus extinctum sit. De
 iisdem scripserunt ROUSSET, MASSUET, & nuper JOB. BASTER. *Phil. Transf.* n. 446.
 CORNEL. BELKMEER *natuur kundige verhandeling betreffende de hout uytraspende en doorboo-
 rende Zeevvorm vvaarby gevoegt is een beschryving van desselfs Vyand*, Amstel. 1733. 8. *
 ROUSSET *observations sur l'origine, la structure & la nature des vers de Mer qui percent
 les vaisseaux*, &c. la Haye 1733. 8.
 PUTONEI (J. CHRISTOPH MEINIG) *beschreibung einer art Seevvürmer vvelche in den
 vereinigten Niederlanden .. schaden verursacht*, Lips. 1733. 8. *
 A. LEEUWENHOEK de aquaticarum plantarum animalculis, nempe Polypis campaniformibus,
 tum etiam vulgaribus. *Phil. Transf.* n. 283. omissa in collectione Operum. Vulgarem etiam mani-
 feste describit ANONYMUS n. 280. Deinde rotantia animalcula LEEUWENHOEKII ad Polypum
 aliquem etiam pertinent. *Phil. Transf.* n. 295. Idem de Polypis denuo. n. 337. sed etiam CL. JOBLLOT po-
 lypos videtur pinxisse P. 2. c. 32. T. 12. ubi novam polypi propaginem ex latere video prodire.
Mémoires pour servir à l'histoire d'une espèce de Polypes d'Eau douce par A. TREMBLEY.
 Leid. 1744. 4. Novi miraculi in generatione primus inventor. Animal muco simile, ægre
 mobile demonstravit, nec ova ponere, nec sexus differre, sed dissectum ex particulis Sui
 in nova animalia reintegrari, sponteque tubercula e corpore educere, quæ sensim aucta,
 & de corpore parentis delapsa, in propria individua convalescunt. Species Polypi descripsit
 quatuor. Experimenta sollicita, subtilia, neque cuivis imitanda. Icones pulcherrimæ,
 pleræque a LYONNETO sculptæ.
 A. TREMBLEY Parisina etiam extat editio ejusdem anni, 1744. nempe in 8. IDEM ali-
 qua addidit *Ph. Transf.* n. 484.
 HENRY BAKER *Essays on the natural history of Polypes*. Lond. 1743. & Parisiis 1744. 8.
 Experimenta in quinque speciebus Polyporum instituta. Anum Polypi, dentes, morbos
 quosdam Polyporum & exsiccationem addidit TREMBLEYI observationibus, quarum ple-
 rasque repetiit & confirmavit.
 Eo pertinent Dissertationes in *Phil. Transf.* n. 466. 467. tot. 469. 471. 474. *Mém de l'Ac-
 cad. des Sciences* 1741.
 HUGHES de Zoophyto ex Polypi genere simili flori ficoidis. *Phil. Transf.* n. 470.
 BONNET de Polypo, & variis Insectis. *Phil. Transf.* n. 470.
*Lettere intorno alle recenti scoperte degl' Insetti che si moltiplicano mediante le sezioni de' lo-
 ro corpi*. Venet. 1742. 12.
 Ad Cimices aurantiorum. LA HIRE *Anciens Mém. de l'Acad.* tum. an. 1699. 1704.
 HYACINTHI CESTONI *istoria della grana del Kermes*. Editæ est cum VALISNERI *histo-
 ria Chamæleontis*.
 CAR. PLUMIER contra POMETUM Coccinellam omnino animal esse defendit. *Journal
 des Savans* 1694. n. 15.

DE RUUSCHER *natuurlyke historie van de Cochenille*. Amst. 1729. 8. Magno sumtu & difficili labore conquisitis ab Hispanicis in America iudiciis & præsidiis testimoniis, demonstravit, esse, utique animalculum, non fructum plantæ, quod exsiccatum nomine Coccinellæ in arte tinctoria adeo celebri in usu est.

J. PHIL. BREYN *historia naturalis Cocci radicum tinctorii*, Gedani 1731. 4. Splendido Opere animalculum describit, quod in tertio stadio vitæ suæ *Knavvel* perennis flore majori radicibus adnatum in pilam immobilem abit, quæ perinde ut Coccus Tunæ, colore rubro tingit. Addidit allqua in *Phil. Transf.* 415.

De animalibus ad Vermes pertinentibus. LISTER *Phil. Trans.* n. 71. 73. 87.

J. PH. BREYN *historia suæ naturali*, &c. aliqua etiam addidit in *ACT. ERUD.* anno 1750. ubi se contra BURCHARTUM tuetur.

C. AUG. a BERGEN *de alchemilla & ejus cocco*, Fr. Viadr. 1748. 4. De iisdem CL. BURCHARTI observationes in *Act. Upsal.* 1742. extant.

LEEUVENHOEK de Cochinella. *Phil. Transf.* n. 292.

Ejus præparatio. *Phil. Transf.* n. 193.

CHRIST. FRID. RICHTER de Coccinella. Lips. 1707. 4. Esse Crysalidem animalis sui contendit.

Lettere di COSMO BONUOMO intorno a' pellicelli del Corpo umano 1687. 4. Animalcula describit, ex quibus scabies oriatur; sed sibi tribuit experimenta CINELLI, atque inde scabiem esse negat G. di PARMA 1689. p. 29.

ETTMULLER de Crinonibus. *Act. Erud.* 1682.

Des Pucérons, seu Aphidibus absque mare parientibus. *Histoire de l'Acad. des Sciences* 1741. & supra BONNET.

De Insecto Limacum REAUMUR. *Mém. de l'Acad. des Sciences* 1711.

De animalculis in hepate ovillo. LEEUVENHOEK *Phil. Transf.* n. 289.

BIDLOO *Brief aan LEEUVENHOEK vvegens de dieren in de Lever der Schaapen*. Delph. 1698. 4.

PECQUET de iisdem. *Anc. Mémoires*.

SNELEN de animalculis in ovium & aliorum animalium hepate, Leid. 1698. 4.

LEEUVENHOEK observationes in Acaro. *Phil. Transf.* n. 221. 333. in Insectis variis minutis inter dentes humanos viventibus. *Phil. Transf.* n. 159. 265. in arboribus frugiferis n. 266. in salicibus n. 269. in aquaticis plantis nascentibus n. 133. 134. 284. 286. & in *Flur. and collect of R. HOOKE* 1678. tum PARRIS *Phil. Transf.* n. 220. 223.

MALEZIEUX de animalculis minutissimis. *Mém. de l'Acad.* 1718.

JOBLLOT de animalculis nascentibus in variis infusionibus herbarum, proprio Libello, & similia. HUGENIUS in Operum fine.

SIMON WEISS de excrecentiis plantarum animatis, Lips. 1694. 4.

JOSEPH VIANELLI delle luci notturne dell'acqua marina, Venet. 1749. 8. Lumen, in aqua marina æstate enitescens, refert pertinere ad insecta anulata.

Ad Testacea.

MARTINI LISTER de Cochleis exercitatio anatomica maxime de terrestribus. Lond. 1694. 8. Viri ingenii singularis quidem, sed tamen vividi & laboriosi. Anatome Cochleæ cum figuris, per minutissima. Venas etiam aliquas lacteas describit, tum duos penes, hepar, &c. De respiratione magna digressionem agit, pulmonisque utilitatem facit parum probabilem, sanguinis recipere nimiam abundantiam. SWAMMERDAMII iconem Veneris mutantæ corrigit, & flagella recta facit non intorta.

EJUSDEM de Buccinis fluviatilibus & marinis. Lond. 1695. 8. Anatome hujus animalis exquisitior; & de more Auctoris confectaria physiologica paradoxa, de animalibus perpetuo foetantibus; de animalibus androgynis, sexu distinctis in se ipsis generantibus. Purpuræ vera sedes, contra cerebri usum ad sensus, &c.

De Conchyliis bivalvibus utriusque aquæ Exerc. III. Lond. 1696. Mytulorum, Pectunculorum, Pholadis, Conchæ margaritiferae anatome. Hæc animalia LISTERUS sexu distincta esse credit. Adjecta varia de Nitro, Aquis medicatis, ortu Lapidum constantis figuræ. In appendice tradit Loliginis anatomen. Adjectus est Libellus de Calculo.

EJUSDEM *Synopsis methodica Conchyliorum* L. I. 1685. L. II. 1686. L. III. 1687. append. 1688. L. IV. 1688. append. 1692. Lond. fol.

Totum

Totum Opus in ære sculptum est, delineationes manu filiarum Auctoris factæ satis subtiliter & numero maximo. Distributio methodica, copia ingens, descriptio præter nomen nulla. Tabulæ priorum Operum anatomicæ passim adjectæ sunt. Repete quæ de Araneis & Cochleis habentur in Libro *de animalibus Anglia*.

IDEM de Conchis & Murice egit. *Phil. Trans.* n. 197.

Testacea ex Infula Ascensionis. *Phil. Trans.* n. 225.

Catalogue raisonné de coquilles, Paris. 1736. 12.

F. CHRISTIAN LESSER *testaceotheologia*, Lips. 1744. 8.

Noribergæ pictor egregius FRANCISCUS MICHAEL REGENFUSS incepit insignem edere collectionem testaceorum splendide cum suis coloribus pictorum.

ANTONII de HEYDE *Experimenta circa sanguinis missionem, fibras morrices, urticam marinam, anatome mytuli, & centuria observationum Medicarum*. Amst. 1686. 8. Hæc melior Editio est & plenior, quam prior an. 1684. Multa ad circulationem sanguinis in Ranis, effectus venæsectionis, fibræ muscularis fabricam, & fibrillas simplices, urticæ marinæ simplicem structuram, mytuli que satis accuratam anatomen. Observationes alibi laudabo.

M. LISTER de Cochleis. *Phil. Trans.* n. 105.

Relazione del ritrovamento dell' uova delle Chioccioline di A. F. M. Bonon. 1683. 8. Est Abbatis MARSIGII Libellus Latine etiam versus, & Augustæ. Vindel. recusum.

S. MORAND de raro genere Limacis. *Mém. de l'Acad.* 1740.

De Limacum venere. SWAMMERDAM de respiratione *Mém. de l'Acad.* 1724.

FABII COLUMNA de Purpura. Rom. 1678. 4. Purpuram veram cum levi anatome, tum alias Conchas describit & depingit, colore non satis observato. Glossopetras Lamiarum dentes esse monet. Cæterum FABIVS & in calce *phytebalsani*, & in calce ecphrasedos primæ sub nomine observationum aquatilium, & ad finem ecphrasedos secundæ varia Insecta, Testacea, Pisces, Lacertas, & Hippopotamum descripsit, cum fidelibus, ut solebat, iconibus.

G. COLE de Purpura *Phil. Trans.* n. 178. REAUMUR de eadem. *Mém. de l'Acad. des Sciences* 1711. & du HAMEL 1716.

Huc etiam Perlarum piscatura. *Phil. Trans.* n. 147. & aliqua in ACTIS STOKHOLM.

LEEUWENHOEK de Ostreis. *Phil. Trans.* n. 235. de Perlis & Ostracodermatis. *Phil. Trans.* n. 311. Animalis testacei descriptio. *Phil. Trans.* n. 203.

SIBBALD de Testis Scoticis. *ibid.* 222.

Cancelli & Testacea Philippinarum. *Phil. Trans.* n. 299.

De Testaceis *ib.* n. 274.

De Conchis ad naves adnatis. *Mém. de l'Acad.* 1724.

De Testarum formatione. *Mém. de l'Acad.* 1712.

De mytulorum & similium animalium motu *ibid.* 1710. 1712. & modo quo se lapidibus adfigunt 1716.

Mytuli Anatome. MERY. *Mém. de l'Acad.* 1710.

BARTRAM de Mytulis. *Phil. Trans.* n. 474.

De Ostreis in Berkshire. *Phil. Trans.* n. 261.

C. GABR. FISCHER *nota ad Caput PLINII de Concharum differentiis*. A. ER. LIPS. 1733. p. 487.

LISTER anatome Lepadis (a Scollop.) *Phil. Trans.* n. 229.

DAUBANTON de Conchyliis. *Mém. de l'Acad. des Sciences* 1743.

J. PETER EBERHART *Abhandlung vom ursprung der perlen*, Hall. 1750. 8. Curam imprimis tradit unionum, qualem in Elastro exercent, ubi detracta pellicula incrementum ejus pretiosi lapidis promovent, flavam cuticulam cultro detrahunt, & alia curiose collegit.

Ad Testas Animalium testaceorum.

AUGUST. SCILLA *vera speculazione a disinganno del Senso circa i corpi marini petrificati*. Neap. 1670. 4. Pulchræ icones Concharum, & Pictoris, sed ingeniosi, Opus. Lapidés figuratos non lusu, sed ex Testaceis & Piscibus nasci. Nuper Latine recusum est.

Latina AUG. SCILLÆ editio, quam eo loco jam indicavimus, titulum habet *de corporibus marinis lapidescentibus qua defossa reperiuntur*. Accessit dissertatio FABII COLUMNÆ de Glossopetris, Rom. 1747. 4.

EB. RUMPH posterior, quæ dicta est editio, recusa est Hag. 1739. fol. cum titulo *The-saurus cochlearum, concharum, conchyliorum & mineralium*. Ad ostrea refert & Uniones.

M. GEIER de Margaritis, Monach 1637. 8.

J. PETER EBERHARDT.

PHIL. BONANNI *recreatio mentis & oculi ex observatione marinorum Testaceorum*. Rom. 1681. 4. Delineationes 406. satis nitidæ. Descriptio jejuna, dictio inficeta, plurimæ ubique pro æquivoca generatione ratiocinationes.

EB. RUMPH *Amboynische rariteyten Kamer*. Amstel. 1705. Edit. opt. Deinde in ordinem redactis tabulis cum latina explicatione. 1711. in fol. Nitidæ sunt figuræ Testaceorum, inprimis Amboinensium & Moluccanorum. Intercurrunt Cancri, historia maximæ glebæ Ambra griseæ, &c.

Conchylia Philippina. *Phil. Transf.* n. 311.

CAR. NICOLAI LANGII *Methodus nova Testacea marina in suas classes, genera, & species distribuendi*. Lucernæ 1722. 4. De generatione etiam eorum animalium agit.

EBERH. FRID. HIEMER de capite Medusæ. Stuttgartard 1724 4. Magnifica est Stellæ marinæ arborescentis in lapide fossili imago, quæ nunc in illust. Viri J. AUG. de HUGO thesauris extat.

J. HENR. LINK de Stellis marinis Libro singulari illustravit LUD. GABR. FISCHER. Lips. 1733. fol. Plurimæ & splendidæ tabulæ huc pertinent cum physicis nonnullis observationibus.

JAC. THEOD. KLEIN *Sciagraphia Tubulorum marinorum Musei KLEINIANI*. Gedan. 1731. 8. Tubulorum nempe diversorum a Belemnite. Accedit tractatus de Pila marina ex algarum fibris composita.

EJUSDEM *naturalis dispositio Echinodermatum*. Gedan. 1734. Dispositio Echinorum methodica ex charactere.

J. PHILIPP. BRAYNE pluscula Opera ad Testaceorum gentem pertinentia edidit, quorum unum excitamus. Prius de *Polythalamis*, nova Testaceorum classe, & de *Echinis* methodice disponendis. Methodum botanicam ad Testacea transtulit, genera per suos characteres definivit, subvertit species, icones perpulchras addidit.

J. P. BREYNE citatum hic opusculum prodiit Gedan. 1732. 4.

NICOLAI GUALTIERI *Index Testarum, Conchyliorum Musei sui*. Florent. 1742. Methodicus Catalogus sola nomina & pulchras icones 110. tabulis comprehensas continet.

JANI PLANCI de *Conchis minus notis* L. Venet. 1739. 4. Habet Conchulas minimas solo microscopio visibiles, & varias non inutiles cogitationes de maris mutationibus, &c.

Ad historiam Lapidum figuratorum perpauca Auctores excitabo, cum id studium nimium fere sit, & ad rem medicam puram faciat.

LAWRENCE disc. of the subterranean cockle muscle and Oystershells, Lond. 1664. 8. HARL.

C. GESNERUS de Fossilibus.

MERCATUS in *Metallorheca*. ALDROVANDUS in *Museo metallico*.

JOH. RAI in *discursibus Physico Theologicis*.

JOH. WOODWARD in *historia Telluris, Fossilium catalogo*, alibi.

JOH. QUIRINI de *testaceis fossilibus Musæi SEPTALIANI* & JAC. GRANDII de *veritate divini universalis e testaceorum qua procul a mari reperiuntur generatione* Ep. Venet. 1676. 4.

J. DAN. GEYER *montes conchiferi*, Francof. 1687. 4.

J. REISKE de *Glossopetris Luneburgensibus*, Norimb. 1687. 8.

SPLEISS de *cornubus & ossibus fossilibus*, Scaphus. 1701. 4.

LEONH. HERMANNI, hoc loco citati, etiam est de *conchyliis marmoreis* 1729. 4. EJUSDE de *sceletro seu ossibus Alcis Masla detectis* 1731. 4.

R. J. CAMERAR. de *lapidum figuratorum usu medico*, Tubing. 1718. 4.

J. H. LINK de *sceletro crocodili in scissili lapide*, Lips. 1718. 4.

J. HENR. SCHUTTE *oryctographia Jenensis*, Jen. 1720. 8.

Magnum animal in lapide expressum *Phil. Transf.* n. 360.

HIERONYMI ZANICHELLI *lithographia duorum montium Veronensium*, Ven. 1721.

J. PHIL. BREYNE de *melonibus petrefactis M. Carmel*, Lips. 1722. 4.

FR. ERN. BRÜCKMANN in plurimis libris, & de *arachneo litho*, Wolfenbittel 1722. 4. *historia lapidis numismalis Transylvania* 1727. 4. tum in *Epistolis itinerariis*, &c.

G. L. HUBER *lithographia Würtzburgensis*, Würtzburg 1728. fol.

J. G. LIEBKNECHT jam citati etiam est de *diluvio maximo*, Gieß. 1714. 8.

De Libro CL. D'ARGENVILLE fufe egit & ejus quasi analyfin dedit J. DANIEL DENSO in *physicalische briefen*, Stettin 1750. 4. & aliqua etiam propria addit.

Lapides diluvii testes sculpsit & edit G. WOLFGANGUS KNORRE Norimb. ab anno 1749. fol. cum fideli colorum expressione.

LEIBNIZII protogaam huc omnino referri oportet, qua multi lapides figurati exprimuntur & defenditur ipsa marina animalia istis lineis exprimi. Universalem autem submersiorem recipit, non diluvium.

CL. de BUFFON primum volumen huc pertinet, quo concharum & testaceorum maximam ubertatem ostendit, quam tamen non diluvio, sed recessioni successivæ aquarum tribuit.

EDWARDI LLHWYD *Lithophilacii Britannici ichnographia*. Lond. (& Lips.) 1699. 8. Commodum compendium, quod methodicum, satis copiosum, & nomina ad plantarum morem, scientifica habeat.

CHR. LANG *specimen historia naturalis Lapidum figuratorum Helvetia*. Venet. 1708. 4. cum appendice. Lucernæ 1735. 4. & *de origine Lapidum figuratorum*. Lucernæ 1709. 4. Contra diluvianos pugnat, & ortum lapidum figuratorum explicat, a seminibus piscium aut plantarum quæ vi plastica imbuta Lapides ipsos figurat. Cæterum methodo bona Lapides disposuit, bonas etiam icones dedit, & multorum meritis est vota.

J. JAC. BAIER *Oryctographia Norica*. Norimb. 1708. 4.

DAVIDIS SIGISMUNDI BUTTNER *Zeichen und Zeugen der Sündflut*. Lips. 1710. 4. Petrificatum etiam nidum habet aviculæ.

LEONHARDI HERMANNI *Mastographia*. Bresl. 1711. 4. & figurata & marmora aliaque fossilia describit.

EJUSDEM *de Corallitiis fossilibus, in specie vom hornstein*. Lips. 1714. 4.

G. A. HELWING *Lithographia Angerburgica*. Regiomonti 1717. 4.

JOSEPHI MONTI *de monumento Diluvii nuper in agro Bononiensi reperto*. Bonon. 1719. 4.

P. WOLFART *naturgeschichte von Niederhessen*. Cassel 1719. fol.

J. G. LIEBKNECHT *Hassia subterranea*. Giess. 1730. 4. Diluvianus est. Artificialia etiam habet.

GEORG. ANT. VOLKMANN *Silesia subterranea*. Lips. 1720. 4.

J. J. SCHEUCHZER fere in omnibus Operibus, maxime in *Herbario Diluviano*, Leid. 1723. fol. quo impressiones plantarum in lapides inprimis fossiles, receptæ exprimuntur. Huc pertinet etiam ejus *Specimen Lithographia Helvetica curiosa*. Tiguri 1702. 8. *Museum diluvianum*. ibid. 1716. 8. & *piscium querela & vindicia*. Tig. 1708. 4. In *Itineribus Alpibus*, in *historia naturali Helvetia*, in primo Volumine *Sacra Physica* plurima eo pertinentia dedit.

Porro huc pertinet Ejusdem J. J. SCHEUCHZERI *Nomenclator lapidum figuratorum*, auctus a J. TH. KLEINIO. Gedan. 1740. 4. accessit M. A. CAPPFLER *de Entrochis & Belemnitis Epistola*. 1716. 8.

J. CHRIST. HARENBERG *de generatione Lapidum figuratorum* A. E. R. 1727. Contra Systema Diluvianum pugnat, vidisse se testatur Lapides peculiare intra breve tempus increvisse ex parvis. EJUSDEM *Encrinos, sive Liliun lapideum*. Wolfenb. 1729. 4.

ANT. VALISNERI *de corporibus marinis qua in montibus reperiuntur*. Venet. 1728. 4. ubi systema diluvianum impugnat.

La Lithologie & Conchyliologie. Parisiis 1743. 4. Pulcherrimæ icones Testaceorum ordine methodico dispositorum. Systema Diluvianum. De Lapidibus & eorum ortu nihil præcipuum. Auctor D. D'ARGENVILLE magistratu Parisiis defunctus.

Traité des Pétrifications. Parisiis 1742. 4. maj. Auctor est L. BOURGUET. Dissertationes tres præmittit, quarum una Lapidum generationem tradit, altera Testaceorum ortum a Diluvio confirmat. Deinde abundans satis catalogus Lapidum, & inprimis figuratorum sequitur, cum copiosis iconibus.

DE SAUVAGES *de figuratis Lapidibus*. Acad. Roy. des Sciences. 1743.

Corporum Lapidifactorum agri Veronensis catalogus, quæ apud J. JAC. SPADAM adservantur. Edit. II. Veron. 1744. 4.

P. BARRERE *sur l'origine de la formation des Pierres figurées*, Parisiis 1746. 8. Ex marinis utique animalibus, & testis, in quarum poros particulæ terreæ, lapideæ, & seleniticæ sint depositæ, explicat ortum figuratorum Lapidum.

Huc

Huc etiam A. de JUSSIEU de *Petrefactis*, in quibus plantæ & animalia in Gallia non nascentia reperiuntur. *Mém. de l'Acad.* an. 1721.

IDEM de Cornubus Ammonis 1722. De lapide figurato in Wallia reperto. *Phil. Trans.* n. 252. *Musea*.

MUSEUM FR. CALCEOLARII junioris a BENEDICTO CERUTO inceptum, & ab ANDREA CHIOCO perfectum. Veron. 1622. fol. Continet Corallia, Testas, exuvias animalculorum variorum, fructus rariores exoticos, Fossilia, passimque egregias icones. In explanatione nimis multa Veterum verba inserta sunt.

GAZOPHYLACIUM rerum naturalium nunquam editarum cum figuris aeneis. Opus MICH. RUPERTI BESLERI. Nuremb. 1642. fol. Meræ icones sunt, cum nudis nominibus aut brevissimis descriptionibus. Plantas aliquot raras malis nominibus, deinde aves, pisces, conchas exprimit, raro Libro.

RARIORA MUSEI BESLERIANI quæ M. Rupertus & Basilius Beslerus collegerunt cum commentario JOH. HENR. LOCHNERI Nuremberg 1716. fol. Prioris Operis plerasque icones, exclusis tamen plantis, tum alias a BASILIO BESLERO præparatas habet, Fossilium, Animalium, Concharum, cum Commentario pro LOCHNERI more docto, & ex bonis Auctoribus collecto.

MUSEUM WORMIANUM, sive Historia rariorum adornata ab OLAO WORMIO. Leid. 1655. fol. Posthumum Opus, editum a Wilhelmo, Auctoris filio. Non merus est Catalogus rariorum, quæ congefferat OLAUS, sed eorum rariorum undique conquistata descriptio. Multa ad lapides, terras, plantas exoticas cum iconibus De LÆTIANIS, animalia Septentrionalia, cum pulchris adpersis horum iconibus.

Musea. MUSEI WORMIANI, quod hoc loco citatum est, prima initia sunt in GEORGII SEGERI *synopsi methodica rariorum musæi O. WORMII*, Hafn. 1653. 4.

J. TRADESCANT *Musæum*, Lond. 1656. 12.

Memorie del Museo di LUDOVICO MOSCARDO. Padoa 1656. fol. Præter naturalia, plantas nempe, testas, mineras, multa artificialia continet, statuas, nummosque. Icones minus elegantes sunt.

NEHEMIÆ GREW *Musæum Regiæ Societatis*. Lond. 1681. fol. Egregius Liber. Collectionis equidem rariorum nomenclator est, quam in æde GRESHAMIANA ex donis variis collegerat Societas. Sed pretium addit curiosa sedulitas GREWII, qui dimensiones rerum, figuras, fabricas, accurate exponit. Plantas, fossilia, animalia inprimis, eorumque exuvias habet. De adnexa Intestinatorum anatome comparata, proprius dicendi locus erit.

LORENZO LEGATI *Museo Cospiano annesso a quello del famoso ULISSE ALDROVANDO*, e donato dal S. FERDINANDO COSPI, Bologna 1677. fol.

MUSEUM REGIUM descriptum ab OLIGERIO JACOBÆO. Hafn. 1696. fol. Pleraque artificialia, sed rariorum tamen animalium aut monstrosorum, & mineras aliquas continet. Additamentum adjectum est 1699. fol.

LEVINI VINCENT *Wondertoneel der Natuur*. Amst. 1706. 4. Fere nudæ icones, animalium, maxime serpentum, quos magna inprimis copia possidebat.

LEVINI VINCENT. est etiam *Elenchus tabularum, pinacothecarum, atque nonnullorum aliorum cimeliorum LEVINI VINCENT*, Haarlem. 1719. 4.

ATHAN. KIRCHERI *Musæum de PHILIPPO BONANNO* editum Rom. 1709. fol. Continet Opera Bonanni pleraque, tum aliqua ad nummos, instrumenta & alia istiusmodi curiosa spectantia. Cæterum illius vanissimi hominis immeritas laudes vide apud REGNAULT. *Origine ancienne de la Phys. mod.* I. p. 102.

ALBERTI SEBA locupletissimus *Rerum naturalium Thesaurus*. Amst. 1734. 1735. fol. max. splendidissimum Museorum, sed imperfectum, ob mortem Editoris, ex quo factum est, ut duo posteriora Volumina suppressa sint. Priori quadrupeda, avesque & lacerti, ex omnibus Indiis undique conquistati habentur. Altero volumine serpentes continentur inprimis, magno numero & varietate, additis nonnullis iconibus anatomicis. Ubique adpersæ icones stirpium, sed ad sicca exemplaria, neque sollicitè depictæ. Ad animalium vero historiam, ob divitias Specierum, qua facile superat, perutile est Opus.

Musæi Imperialis Petropolitani, Petropol. 1742. &c. editi quatuor mihi volumina sunt, quibus lapides, plantæ, arte facta, nummi recensentur.

CAR. LINNÆI & BALKE. *Musæum Adolpho-Fridericianum*, Holm. 1746. 4.

Nunc maxime cepit edi *Description du Cabinet du Roi*, cujus auctores sunt CL. BUFFON & DAUBENTON. Hactenus ex III. tomo huc pertinent anatomica aliqua & morbosa, sed tota series divitiarum Regiarum succedet.

Microscopici Auctores.

ROBERTI HOOKE *Micrographia or Physiological descriptions of minute bodies*. Lond. 1665. fol. cujus tabulæ nuper a BAKERO cum brevissimo sermone editæ sunt an. 1745. Homo antiquis moribus & facetiis, sed egregius observator. Neque enim unice objecta auctius vidit, sed ad physicos usus & quæstiones experimenta applicavit. Oculos insectorum, plantas minutas, semina, scintillas ferri, poros carbonum, & plurima alia Naturæ Opera mirifice & enormiter aucta depinxit.

HENRICI POWER *Experimental Philosophy containing new microscopical, mercurial, and magnetical experiments*. Lond. 1664. 4. Non attigit HOOKII industriam, & longe citra eum sublitit. Prima pars sola huc pertinet.

ANTONII van LEEUWENHOEK Opera, varie & confuse edita, ut certe in ordinem ea conjici, & indice ornari omnino sit e re publica. Ejus Opera, in Belgicis editionibus longe melioribus, accurate ita se habent.

Ontleedinge van levendige diertjens in de deeldeelen van het hout, &c. Leidæ 1686. 4. Sunt collectæ Epistolæ 27. ad 52. & prima data est 25. Aprilis 1679. quarum pleræque seorsim prodierunt. Priores ante 27^{am} a familia Auctoris suppressæ sunt. HARTSOEKER *Extrait critiq.* p. 3.

Inde sequitur *vervolg der brieven aan de Kon. Societyt*, qui comprehendit Ep. 53 -- 60. Leidæ 1688. 4.

Tum *Natuur verborghenheeden ontdekt zynde, de tweede vervolg der brieven aan de Kon. Soc.* Delph. 1684. Continet Epistolas 61. 67.

Derde vervolg der brieven, &c. Delph. 1693. Epistolæ 68 -- 75.

Vierde vergolg. Delph. 1694. Epist. 76. ad 83.

Vyfde vervolg. Delph. 1696. Epist. 84. ad 96.

Sesde vervolg van brieven aan hooge stands personen. Delph. 1697. Epist. 97. -- 107.

Sevende vervolg van brieven aan de Societyt, &c. Delph. 1702. Epist. 108. -- 146.

Tunc *Zendbrieven aan de Societyt, en aan anderen.* Delph. 1746. quo tomo 46. Epistolæ ultimæ continentur. Latinæ editionis hæ sunt, quæ alio ordine prodierunt.

Anatomia & contemplationes. Leidæ 1685. 1687. 4. Partes duæ Epistolas absque numeris continent 18. scriptas 1684. 1686. Deficiunt vero primæ 26. Epistolæ, ut prius.

Arcana Natura detecta, sive *Epistola ad Societatem Reg. Anglicam scripta ab an. 1680. ad 1695.* a numero 55. ad. 92.

Continuatio Epistolarum ad Societatem Regiam. Leidæ 1689. 4. Habet Epistolas octo, anno scriptas 1687.

Continuatio Arcanorum Natura edit. 1697. Continet Epistolas 16. a 93. ad 107. scriptas annis 1695. 1696.

Continuatio mirandorum arcanorum, sive *Epistola ad Societatem Regiam XL.* ab 108. ad 146. scriptæ annis 1697 -- 1702.

Epistola Physiologica super compluribus Naturæ arcanis. Delph. 1719. 4. sunt omnino 46. ad varios curiosos datæ.

Multæ vero Epistolæ ex imperitia Belgicorum Editorum nunquam seorsim editæ, unice in Philosophicis Transactionibus habentur. Catalogum habes in *Phil. Trans. abridgd.* by LOWTHORP III. p. 683. *seqq.* De LEEUWENHOEKII etiam microscopiis vid. *Phil. Trans.* n. 380. 458.

Notissimum est cæterum bonum Senem, totam vitam, quæ ipsi prælonga fuit, in his observationibus trivisse, & excelluisse tum arte parandi sibi microscopia, tum utendi, Solis lumen apte adhibendi, &c. Etsi vero rudis literarum homo fuit, & sæpe in valde paradoxas abierit opiniones (ut v. gr. tunicam villosam intestinorum musculum esse, arterias non pulsare sed venas), plurima tamen partim vera, partim certe a plurimis recepta magni momenti inventa ipsi debentur. Hujus modi sunt sanguinis in circulum motus oculo demonstratus, vermiculi spermatici, post HAMMII paucas observationes. Contra eum HARTSOEKERUS proprium Libellum scripsit cum titulo *Extrait Critique*.

A. van

A. van LEEUWENHOEK, inter microscopicos auctores citati, *Arcana Nat. detecta*, S. Ep. ad Soc. R. Angl. script. prodierunt Delph. 1695. 4. EJSUSDEM. etiam observationes aliquæ gallice versæ prodierunt sub titulo A. van. LEEUWENHOEK *observations faites avec le microscope sur le sang, le lait, le sucre, le sel & la manne*, trad. par M. MESMIN 1679. 12.

PHIL. BONANNI *micrographia curiosa*. Rom. 1691. 4. Ad rem nostram faciunt aliqua ad pilos, ad salium figuram, ad staminum pulvisculos. Destitutus mente philosophica, & pro præjudiciis scribens, non valde utilia præstare potuit.

MARSHALLI *Microscopium*, Trevult. 1701. sept. oct.

HAUTEFEUILLE *Microscope micrométrique*. Parisiis 1703. * Suum inventum facit micrometrum.

LAURENT. JOBLOT *descriptions de plusieurs Microscopes simples & composés*, &c. Parisiis 1718. 4. Descripsit imprimis insecta microscopica aceti, aquæ infusis variis corporibus mutata. Mira gens est animalium simplici figura, nulla fere hætenus demonstrata partium distinctione, nulla nota sexuum diversitate, rotunda vero sunt & undique similia. J. LEONHARDUS FRISCH non imperitus harum rerum æstimator, ea omnia animalcula pro unius speciei varietatibus, contractis modo, & modo elongatis habuit.

HENRY BAKER *the Microscope made easy*. Lond. 1743. 8. Pleraque ex aliis collecta; commoda tamen accedit introductio pro nondum adsuets, & insigne a LIEBERKUHNII microscopio solari & ad opaca ornamentum, quæ hic describuntur. Plurimum usum est LEEUWENHOEKIO. Idem microscopium catoptricum descripsit. *Phil. Transf.* n. 442.

J. NATHANAEL LIEBERKUHN microscopii anatomici descriptio. *Mém. de l'Acad. des Sciences de Berlin* T. I. p. 16. seq.

TURBERVILLE NEEDHAMS *new microscopical discoveries*. Lond. 1745. 8. Valde singularem imprimis fabricam vasorum seminalium polypi calamarii describit.

NEEDHAM. Hæc descriptio recusa est cum ejus *Nouvelles observations microscopiques*, Paris. 1750. 12. adjectis auctoris, & interpretis Gallici prioris editionis Leidenensis 1747. 12. animadversionibus, de concha polypea *Barnacle*, &c. Sed in novo opere imprimis & novum de generatione systema habetur, quod in anatomicis laudabimus: & physica multa pertinentia ad animalia microscopica, tum spontanea, tum non spontanea vegetationis cum incremento & generatione analogia, causis utriusque mechanicis expandente & resistente, aliisque difficilioribus rebus physicis.

GEORG. ADAMS *micrographia illustrata*. Lond. 1746. 4. 1747. 4. Artifex, varia Microscopia recenter inventa describit, & compilat observationes aliorum, & JOBLITI maxime, quarum aliquæ sunt rarissimæ.

GRAI *Microscopia*. *Phil. Transf.* n. 221. 228.

JACOB WILSON de Microscopiis. *Phil. Transf.* n. 281.

ARCHIBALD ADAMS of making microscopes. *Phil. Transf.* n. 325.

Itinerum Scriptores.

Porro ad historiam naturalem pertinent Scriptores Itinerariorum & peculiarium Topographiarum. His enim sæpe metalla, animalia, plantæ, enumerantur. In illis plurima rariora neque alibi occurrentia phænomena, & semina rerum reperiuntur, & magna mea utilitate sæpe a me percurta sunt. Ecce, quæ ego meliora legi, omisiss, quæ unice res politicas describunt.

Le navigationi e viaggi di L. BAPTISTA RAMUSIO. Venet. 1553. 1563. 1588., &c. Sæpius enim ediderunt Junta. 3. vol. fol. Egregia collectio cum intermistis Dissertationibus Editoris. Primo Tomo, primi fere Scriptores Itinerum in Asiam novumque orbem habentur, inter quos AMERICI VESPUTII est navigatio. Alter minoris fere momenti est, & itinera Tartarica illa Veterum habet, & Russica cum SEBAST. CABOTI itinere Americano. Tertius utilior, cum GONZALI FERDINANDI OVIEDI historiam naturalem Indiæ occidentalis, XX. Libris contentam, Hispanorum navigationes Americanas fere omnes, & CARTERII Canadensia itinera, aliquot etiam rerum naturalium descriptionibus & iconibus comitata contineat. Primus vero Auctor, qui plantas, & animalia Americæ aliqua cum cura descripsit, OVIEDUS est, etsi rudes sint icones, neque descriptiones satis aut physicæ aut botanicæ. Seorsim prodiit Salamancæ 1546. fol. Hispanice.

OVIEDUS, de quo dictum est ad J. B. RAMUSIUM, seorsim prodiit sub titulo nempe GONZALVO FERNANDEZ de OVIEDO *hist. general de las Indias*, Hispali 1535. Salmanticae

cæ 1547. fol. * qua editione Libri 19. continentur cum reliqui perierint.

THEVETI cosmographie du Levant prodiit Anvers 1556. 12.

JOSEPHI a COSTA hist. naturalis & moralis India & de natura novi orbis prodiit primum Salmanticæ 1589. & 1595. 8. tum Hispali (Sevilla) ut diximus, 1590. 4. Madriti autem recusa exstat 1608. 4. 1610. 4. *ANT.* In *TH.* de *BRY* collectione habetur, & gallice Paris. 1608. 8. prodiit, versa a R. *REGNAULT.*

PIETRE BELLON Observations de plusieurs singularités trouvées en Grèce, Asie, Judée, Egypte, Arabie, &c. Parisiis 1553. & 1588. 4. & in Operibus *CLUSII*, demptis mappis Geographicis. Multo prioribus melior, & cum *RAWOLFIO*, & *KÆMPFERO* ad Scriptores primi ordinis, certe in usus Medicos, pertinet. Plantas cujusque regionis, aut raras, aut vulgares, recensuit, Creticas maxime, eas cum veteribus contulit, Metalla, Terram Lemniam, animalium omne genus, observavit, descripsit. *CLUSIUS* adjecit observationes suas, & amici errores aliquos correxit, multas figuras omisit, alias dedit accuratiores.

THEVET singularités de la France Antarctique. Parisiis 1558. 4. Antvverp. eodem anno, 8. Brasiliam describit. Multæ ab eo rudes icones animalium, & plantarum provenerunt, inque Libros rariora continentes undique transferunt. Ejus *Cosmographie du Levant* inutilis est compilatio, ex Veteribus facta. Ineptissime sæpe antiqua nomina novi orbis productis tribuit.

JOSEPHI a COSTA historia naturalis & moralis India. Seville 1580 4. Barcelon. 1591. 12. Parisiis 1600. 8. & in *THEODORI* de *BRY* collectione, alibique. Tertio quartoque Libro continetur historia naturalis Americæ, & Peruvix imprimis, descriptio nempe metallorum, animalium, stirpium, quarum in œconomicis, vel in Medicina aliquis usus est, absque iconibus tamen. Minime inutilis Auctor, satisque verax.

LEONHARDI RAUWOLF beschreibung der Reys in die morgenländer. III. theile Francof. 1582. 4. & addito Tomo IV. Lavving. 1583. 4. Eximius & paucis inferior Auctor. Cum enim Galliam calidiorem, Syriam, Mesopotamiam, Palæstinam, Ægyptum, obambulare, ubique rariores spontaneas plantas conquirit, recensuit, icones etiam plantarum 42. in quarto tomo addidit, quæ in *LUGDUNENSEM* plantarum historiam receptæ sunt, summæ fidei, industriæ eximiæ Medicus. Herbas siccas nunc etiam extare, & Leidæ adservari in publica Bibliotheca, audio. *RAIUS* in II. Tomo Collectionis itinerum, novam hujus Libri editionem dedit.

AUGERII de BUSBEQ Epistola & Opera reliqua. Antvverp. 1582. 8. & apud *ELZEVI* 1633. 12. Orator *FERDINANDI* I. apud Turcas per 10. annos vixit, judicio pollens & auctoritate, qui multis rarissimis Libris in Oriente coemtis Bibliothecam Viennensem ditavit. Historiæ naturalis studio tedium mitigavit captivitatis, animalia etiam, plantas aliquas, in locis natalibus passim a se ipso lectas descripsit.

AUGERII de BUSBEQ Ep. & Opera prodierunt primum Antvverp. 1581.

CAPT. FORBISHER last voyage into the North and North-west regions, London 1577. 4. Fretum ab ipso nomen habens, quod nuperi nolunt admittere, & aureas marcasitas retulit ex itinere, quæ evanuerunt.

FRANCISCI DRAKE iter in Indias Occidentales anni 1585. Leid. 1588. 4. Aliqua equidem ad rem medicam collegit, misitque *CLUSIO*, sed in itineris historia vix rem naturalem adtigit.

JEAN LERY Voyage en la terre du Bresil autrement dite Amerique (qui verior titulus est) Parisiis primum prodiit 1578. 8. Genevæ vero latine, anno quo dictum est, nempe 1594. gallice vero 1600. 8.

JEAN LERY Voyage en Amérique. Parisiis 1585. 8. Genevæ 1594 8. & in Collectione *TH.* de *BRY.* Egregius Liber curiosi Viri, etsi religionis Ministri. Brasiliæ animalia, arbores rariores aut medicas, mores, morbos Incolarum satis accurate describit; famis etiam a se ipso sociisque navalibus perpeßæ, utilem Medico descriptionem dedit.

Relazione del reame del Congo e delle circonvicine contrade per *PHIL. PIGAFETTA* Rom. 1591. 4. & in *THEODORI* de *BRY* collectione Asiatica. Accesserunt icones plantarum & animalium.

THEODORI de *BRY* & filiorum, *America Tomi XI.* Oppenheimi & Francofurti 1590. seq. In hac collectione multa itinera continentur, ex quibus huc ad nostrum scopum facit *THOMÆ HARIOTI* de *Virginia* commodis Liber brevis equidem, & fere nomenclator, tum *LERY*, *JOSEPHI a COSTA.* Reliqua historiam unice ornant, aut Geographiam.

THEODORI de **BRY** *India Orientalis* Tom. XIII. fol. In hac collectione fere Belgarum & Anglorum prima itinera habentur, sterilia ea. Ad rem naturalem facit. **ED. LOPEZ** *historia Regni Congo*, jejuna quidem ea: **HUGONIS** van **LINSCHOTEN** iter mox excitandum, Guineæ descriptio ex Belgico versa, & Septentrionalia aliqua itinera.

PH. PIGAFETTA in **TEOD.** de **BRY** collectione Asiatica prodiit Francof. 1598. fol. Cæterum hic adnotamus, multos scriptores hoc opere usos esse.

PIETRO della **VALLE** celebria cæterum itinera nihil ad rem nostram habent. Nova editio prodiit Paris. 1743. 8. vol. 12.

HUG. van **LINSCHOTTEN** *navigatio* prodiit etiam Amstelod. 1614. fol.

RICHARD HAWKLUTT *the principal Voyages of the English Nation*. Lond. 1598. fol. 3. vol. Fidelis Auctor, qui pars magna fuit eorum, de quibus scribit, & ipse Indias cum Imperio adiit.

HUGONIS van **LINSCHOTEN** *Navigatio in Orientalem Indiam*. Hag. 1599. fol. & Belgice Amst. 1644. fol. Tredecim annis vixit Goæ, idemque Septentrionale iter tentavit, cum via ad Chinam propior quæreretur. Fidelis & morum, & rerum, observator, fructus etiam & proventus regionum describit, inprimis autem ea lectu utilia sunt, quæ de frigoris enormi rigore in Septentrione observato habet. Sed ea in compendio tantum retulit. Fusius ex relatione **GERARDI DE VEER** apud **TH.** de **BRY**, & in *itineribus Septentrionalibus* habetur.

Peregrinacão da FRANC. MENDEZ PINTZO Ulyssipon. 1611. 4. fabulosum iter.

Voyages de CHAMPLAIN. Parisiis 1614. 4. Ex præcipuis qui Canadam detexerunt. Bella inprimis, sed etiam aliquas plantas describit, & pingit, Vir verus & indefessus.

SAMUEL PURCHAS *pilgrim containing a history of the world in sea voyages and Land travels by Englishmen*. Lond. 1613. 1624. 5. vol. Hæc collectio brevia fere itinera continet absque fere historia naturali, cum a mercatoribus in usus politicos & ad augendas divitias, portus ignotos primum adeuntibus, scripta sint. Deinde an. 1704. alia V. in fol. voluminibus collectio edita est, quæ multa habet non alibi extantia. Nunc maxime alia Collectio Londini in 4. prodiit, recusa variis linguis, etiam Germanica, quæ excerpta tantum laborum habet, & pauciora ad rem naturalem.

Beginne ende voortgang van de vereenighde Neederlande. 1646. 2. volum. & sub titulo, *Recueil des Voyages faits pour l'établissement de la Compagnie des Indes Orientales*. Amstel. 1702. 12. 10. vol. Prima Itinera **OLIVIERII** de **NOORT**, **JACOBI LE MAIRE**, aliorumque, tum per Fretum Magellanicum, tum rectiori via in Indiam Orientalem suscepta, continet. Sed parciora sunt, quæ argumenti physici.

Voyage de FRANÇOIS PYRARD de Laval. Parisiis 1611. 4. sed legi editionem Parisiis 1679. 4. Maldivas insertas solus fere Europæorum vidit, earumque historiam scripsit, idiota, & proletarius, homo.

PYRARD, idiota quidem, ut diximus, satis tamen recte mores hominum observavit. Consilia etiam dedit pro servanda valetudine & suo more aliquas arbores descripsit.

THOMÆ GAGE *a Survey of Westindia*. Lond. 1648. fol. Mexicani Regni divitias & felicitatem enixe laudavit, ad excitandam **CROMWELLII** cupidinem; rerum naturalium minus peritus.

Rélation véritable de l'Ile de Madagascar & du Bresil. Parisiis 1651. 4. Iter continet, cum aliis, **FRANCISCI COUCHE**, quo pluscula ad historiam plantarum, & animalium Insulæ Madagascar pertinentia habentur.

Celebre iter **ADAM OLEARII** *Mosc. und Pers. Reisebeschr.* Schlevisci editum 1656. fol. Hamburg 1696. fol. gallice versum a **WICQUEFORTIO** & excusum est Amstelod. 1666. 4. 1727. 4. Solet adjungi **A MANDELSLO** iter, nobilis viri, qui & ipse rerum naturalium minus curiosus fuit.

J. GREAVES *journey through Greece: description of the Pyramids*, &c. vix ad rem nostram facit. Recusum est Londini 1731. 8.

RICHARD LIGON *true and exact history of Barbados*. Lond. 1657. fol. & Parisiis 1674. 4. Simplex homo & verus. Plantas etiam satis multas depinxit, & descripsit, curiose inprimis Sacchari fabricam tradidit, arbores & plantas ad æconomiam utiles describit, omnemque fere operam unice describendæ agriculturæ Americanæ impendit.

R. LIGON prodiit etiam Paris. 1684. 4. cum aliis itineribus.

DE FLACOURT *histoire de l' Ile de Madagascar*. Paris. 1658. 4. Troyes 1661. 1664. 4.
Inter meliores, etsi a Mercatore scriptus Liber, & minutarum simultatum fusiori Historia
molestus. Historiam naturalem studiose persecutus est. Plantas ad ducentas, ruditer tamen
pictas, dedit, tum animalia, & inprimis fossilia, aurum & reliqua.

Voyages de Thevenor. Rouen 1665. 4. 1674. 2. vol. & auctius Parisiis 1696. 4. 2. volum.
Asiae inprimis curiosus, & verus per multa itinera observator, in quorum ultimo media in
Persia, morbo est extinctus. Res naturales, ventos, plantas passim indigenas utiliter observat.

Voyages de M. de MONCONIS. Lyon 1665. 4. 2. vol. Parisiis 1695. 4. vol. 12. Europam
fere omnem, Asiam minorem, Aegyptum adiit, arcanorum & raritatum curiosus homo,
non tamen satis cautus ab Impostoribus, credulus enarrator tot vanissimorum arcanorum
ad cogendum argentum vivum, &c. superstitiosus etiam & absque ullo ordine. Mul-
ta tamen semina inventionum, aliaque ad historiam naturalem & Litterariam pertinentia
continet, minime inutilis.

Rélation de divers Voyages curieux. Parisiis 1666. fol. & auctius an. 1696. 2. vol. fol. Au-
ctore est THEVENOTIUS patruus prioris. Continentur hac Collectione in I. Tomo HAWKCLUY-
TI, & PURCHASI pleraque additis variis ex recentioribus Belgarum, vetustioribus vero
Arabum, Lusitanorum. Tertius Tomus Chinae descriptionem MICHAELIS BOYM, cum
plantarum iconibus, Nieuhofium, praeter alia ad Physicam facientia minus, Acarettae Inter-
cettae valde vero confuse prodiit, ut Tomos vix definias.

JOH. NEUHOF *Legatio Batavica ad Tartaria Chamum*. Amstelod. 1668. fol. Gallice vero
Leidæ 1665. fol. Germ. 1669. fol. Praeter plurimas urbium Sinicarum delineationes, habet
inprimis plantarum etiam, & animalium, & aliorum naturae donorum aliquas icones &
descriptions. In 2. & 3. itinere an. 1676. impresso nihil fere hujus argumenti habetur.
Et ejusdem *Brasiliansche See en Land reize*. Amst. 1682. fol. huc pertinet.

Voyage de Francois BERNIER contenant la Description de l' Indostan. Parisiis 1670. 1671.
4. vol. 12. Et nuper Amstelodami 1724. Medici & Philosophi Opus ad intelligendam Brach-
manum Philosophiam, Medicinam, ad Aquas, Aeres, locosque Indiae, qui primus philo-
sophico oculo eas res viderit.

DENIS *Description des côtes Septentrionales de l' Amérique*. Parisiis 1672. Piscaturam in-
primis Asellorum describit.

Huius versio adjecta est editioni ZORGDRAGERI. Valde ei displicet piscatura asellorum
DENISII, quam non satis lucrosam putat.

Hic etiam addendum est REGNARD iter Laponicum, quod inter ejus opera descriptum
habetur, quo Suecicae etiam fodinae, & animalia Laponiae adtinguntur, cum innumeris
nominum vitiis.

W. TEN RHYNE ibidem dictus, brevem habet istoriam naturalem, etiam de plantis, de
arte medica incolarum, nymphis foeminarum prominentibus, &c.

JOHN. RAI *Topographical Observations*. Lond. 1673. 8. & nuper 1746. 8. Simplex &
verus. Historiam naturalem, & Botanicam Helvetiae, Germaniae superioris, Italiae, Gal-
liae Meridionalis insigniter ornat, reipublicae etiam ubique, vitiorumque & virtutum Na-
tionum non rudis observator.

FRID. MARTENS *Spizbergische reise beschreibung*. Hamburg. 1675. 4. Egregius Liber,
variis etiam linguis, Bononiae, Londini, Amstelodami, recusus. Fuit enim melior, quam
a Chirurgo nautico sperasset, observator. Omnem ambitum naturae attigit, animalia ta-
men maxime plantasque ultimi Septentrionis, & in illis Balanae historiam. Adjutoris au-
tem FOGELII operam ipsi utilem fuisse, certa fides est.

Voyages de JEAN BAPTISTE TAVERNIER. Parisiis 1676. 1680. 4. 1724. 12. &c. Mer-
catoris Opus, & aliena industria ad editionem praeparatum. Cum tamen lapidibus
pretiosis, aliisque rarioribus Indiae mercibus, coemendis unice studuerit & sex itineri-
bus Asiam ulteriorem, Indostanici regni viscera, & Goncoldanas adamantum fodinas solus
haecenus inter Europaeos viderit, plenusque sit observationibus ad rem naturalem perti-
nentibus, utique legi potest.

Contra TAVERNERIUM scripsit, & Belgas defendit HER. van QUELLENBURG *refuta-
tie van TAVERNIER*, Amstelod. 1684. 4. *

EDWARD BROWNS *travels*. Lond. 1677. 4. 1685. fol. Germanice etiam reddita. Utilis
Liber, maxime ad historiam Mineralium, Hungariae, Istriae. Plantas non attigit.

Voyage d'Italie, de Dalmatie, de Grèce, & du Levant, par M. JACQUES SPON & GEORGE WHEELER. Lyon 1678. 4. vol. 8. Iter susceptum an. 1675. omnino nostri scopi. Coralliorum, sacchari, saponis, vini, olei fabricas, piscationem, chamæleontis phænomena, ventos veterum Græcorum, nummos, & inscriptiones, ad historiam medicam pertinentes, morborum rariorum historias, continet.

GEORGE WHEELER *Journey into Greece*. Lond. 1682. fol. & Parisiis 1689. 12. 2. vol. Itineris Sponiani socius, diutius tamen in Græcia moratus, & naturalis historiæ atque plantarum multo magis gnarus, quarum plurimas suis locis recensuit, aliquarum etiam icones dedit.

ROBERT KNOX *Relation of Ceylon*. Lond. 1681. fol. cum præfatione R. HOOKII. Plantarum, animalium, agriculturæ, hujus felicissimæ Insulæ non inutilem descriptionem continet.

HENNEPIN *Description de la Louisiane*. Parisiis 1683. 12. Fluvii Mississippi detecti gloriam sibi tribuit.

DELON *Rélation d'un Voyage des Indes*. Parisiis 1685. 2. vol.

W. TENRHYNE de *Hottentottis & Capite Bona Spei*. Schaffhus. 1686. 8. Notas addidit HENR. SCRETA a ZAVORZIZ.

Voyage de Siam par les PP. Jesuites. Parisiis 1686. & *second Voyage des mêmes*. Amstel. 1689. 8. Omnino nostri scopi, plantarum icones continet, & animalium dissectiones.

Voyage de Perse du Chavelier CHARDIN. Lond. 1686. fol. Pauca physica habet.

SOUCHU de RENNEFORT *histoire des Indes Orientales*. Lugduni Batavorum 1688. 8. & Parisiis 4. nimis amplius titulus. Solam enim Insulam Madagascar describit, & sola pars prima Auctori propria est.

DE LA LOUBERE *Description du Royaume de Siam*. Parisiis 1691. 12. 2. vol. 1714. 2. vol. 8. Legatus fuit Regius, & reliquis accuratius tum politicam, tum naturalem hujus Regni historiam, Animalia, Plantas etiam nobiliores, descripsit, integri judicii homo, & in omnibus curiosus.

Observations de Physique & de Mathématique, des PP. Jesuites. Parisiis. 1692. 4. 1737. 8. & totus etiam Liber insertus est Tomo 1693. Commentariorum Acad. Reg. Pleraque astronomica, accurata tamen, adjecta Crocodili dissectio cum JOS. DUVERNERY observationibus.

FROGER *Voyage made in the years 1695. 1697. to the coasts of Africa, streight of Magellan, Brasil, Cayenna the Antilles &c.* Lond. 1698. 8. & Parisiis 1698. 12. Icones etiam plantarum, & animalium habet.

FROGER recusum etiam exstat Amstel. 1699. 12. 1715. 12. Iter molitus per fretum Magellanicum a contranitentibus ventis repulsus, Brasiliam vidit, Guyanam, & partem Africæ. Plantas & animalia suo modo, ut miles, descripsit.

Versio quæ exstat J. OVINGTON, Paris. 1725. 12. mendosa est.

WILHELMUS DAMPIER, cujus citatum ibi est itinerarium, primum iter ad isthmum Americanum fecerat anno 1674. alterum prælongum anno 1683. ad 1691. secundum oram Peruvix, ad Philippinas insulas, salutata N. HOLLANDIA, quam tertio itinere an. 1699. adiit, & naturæ opera collegit, quæ recensuit cum nominibus J. WOODWARD. Ventos constantes imprimis proprio tractatu persecutus est, quem rerum gnari plurimi faciunt. In ultima hujus libri editione 1729. multa alia itinera adjecta sunt FUNNEL, C. COWLEY, C. SHARP, C. WOOD, L. WAFER.

CORNELII de BRUYN citatum utrumque itinerarium junctum Gallice prodiit Haag. 1732. 4. 5. vol.

ERIC. TILLEMANN *beretning om det landtskab Guinea*, Copenhagen 1697. 8. Oram Guinæ accurate describit, de plantis vero & animalibus breviter agit.

Collectionum, quæ citatis hoc loco *lettres curieuses & édifiantes* continentur, compendium edidit anonymus cum titulo *Recueil d'observations sur les mœurs, &c. de plusieurs peuples de l'Asie, de l'Afrique & de l'Amerique*, Paris. 1749. 12. 4. vol. non sine vitiis.

JOH. FUNNEL recusum est Lond. 1729. 8. successerat hic auctor W. DAMPERIO, oramque occidentalem Americæ a 20. ad 40. describit.

OVINGTON *Voyage to Surat*. Lond. 1696. 8. Describit & historiam naturalem Golcondæ, Pegu, Aracan, & cultum Bombycum.

WILLIAM DAMPIER *Voyage round the world*. Lond. 1697. 8. 1703. 8. 3. vol. 1729. 4. vol. 8. Aliquot sunt diversa itinera, quorum unum Terras Australes adigit, cujus plantas aliquas

aliquas & animalia descripsit militaris homo, neque tamen incuriosus, qui arcanum ex Lichene terrestri ad rabiem caninam præparaverit.

JOHN. FRYER *new account of India and Persia being nine years travels*. Lond. 1698. fol. Tragici quid habet & adfectati, neque interiora Botanices aut Anatomies attigit. Aliqua tamen de Medicinæ statu, plantis sponte nascentibus, Thermis, aeribus, aquis, locisque intermixta habet.

Reizen van CORNELIUS de BRUYN, *door klein Asien, Egypten, &c.* Delph. 1698. fol. 8. EJUSDEM, *Reisen door Moscovien, &c.* Amst. 1714 fol. Pictor, ignarus homo, qui Caiagrippam pro hominis nomine in inscriptione habuerit, cum legere oporteret, KAI AΓΡΙΠΠΑ. Magnam vim delineationum urbium, templorum, aliquas etiam animalium & plantarum dedit, totusque ad nostrum finem parum facit.

Curiosités de la Nature & de l'Art, apportées dant deux voyages aux Indes, l'un fait en 1698. l'autre en 1701. 1702. Parisiis 1703. 12. Rariora aromata, animalia &c. descripsit.

LIONEL WAFER *Description of the Isthmus of America*. Lond. 1699. 8. Chirurgus, casus in interiora regionis Darien delatus, ibi aliquot annis vixit, moresque hominum, qui sibi insigniter placuissent, satis accurate descripsit. Plantas etiam vulgo notas attigit, verus & simplex. Alia editio prodit 1704. auctior catalogo rerum naturalium Americæ, Auctoris anonymi.

MARTINI LISTER *Journy to Paris*. Lond. 1699. 8. Hæc secunda est editio Libri lectu dignissimi, quo præter naturæ opera, status maxime Medicinæ, & Chirurgiæ, & historia continetur novorum conatuum F. JACOBI, MERYI, & aliorum.

OLAF RUDBEK *Laponia illustrata*. Upsal. 1701. 4. Titulum non explet, prima enim pars est inter duodecim, quibus iter Laponicum debebat contineri, solamque Uplandiam describit. Icones Sceptri Carolini, & avium nonnullarum pretium addunt Opusculo. Codex vero, quo icones plantarum, animalium, insectorum, quadrupedum, itineris hujus continebantur, anno 1707. adhuc apud Auctorem visus est a LEOPOLDO in itin. Suec. p. 40.

GEMELLI CARRERI *Viaggi*. Neapoli 1701. Parisiis 1719. 6. vol. 8. Homo mihi displicet, aliquid habet vani. Plantas, maxime arbores fructibus edulibus, cum iconibus fere habet, & historiam naturalem Insularum Philippinarum, quæ princeps hujus Operis laus est.

Lettres curieuses & édifiantes. Parisiis 1702. seqq. 12. Plurima volumina prodierunt, quorum aliqua huc pertinent, ut confectio Porcellanæ Chinensis valde studiose descripta. Pleraque tamen vaga sunt, & sublestæ passim fidei.

D. MAUNDRELL *Iter Jerusalemense*. Oxon. 1703. 8. ad antiquitates magis pertinet.

PAULI LUCAS *itineraria in Orientem*, quæ Parisiis 1704. 2. vol. 1719, 12. 3. vol. & aliis annis 5. vol. in 8. prodierunt, vix cito, qui vanum hominem esse, multis notis teneo, v. gr. sicco sub Cataractis Nili transitu.

GIOV. BORGHESI *medico della missione Lettera scritta da Pondisceri* *. Rom. 1705. 12. Observationes medici, anatomici, & botanici, argumenti continere dicitur.

GUIL. BOSMANN *Voyage de Guinée*. Trajecti 1705. 8. (LINNÆUS editionem memorat 1650. 4. mihi non visam.) Diu in ora aurifera Guineæ vixit. Veri amans homo, & satis rerum naturalium curiosus. Animalia, plantas, mores Africæ occidentalis, copiose descripsit & fideliter, ut plurimi ipsum faceret BOERHAAVIUS.

JOH. FUNNEL *Voyage round the world*. Lond. 1707. Est continuatio DAMPERII, & habet icones aliquas animalium & plantarum.

PETRI VAN DER AA *naauwkeurige versameling van Reizen*. Leidæ 1707. 14. vol. 8. Fere omnia itinera seculi decimi quinti, & decimi sexti collegit, pauca vero nuperiora. Sed neglexit fere curam rerum naturalium, & icones eo pertinentes omisit.

Sir HANS SLOANE, *Voyage to Jamaica, Madera, Barbados, &c.* Lond. fol. T. I. 1707. T. II. 1725. Vir illustris, qui in beato senio, nunc, cum scribo, laborum mercedem colligit, annis juvenilibus Jamaicam inprimis, tum Insulas vicinas adiit. In hac nova fertilique regione ita se gessit, ut non alius ditiores itineris sui relationem ediderit. Plantas inprimis numerosissimas descripsit, expressit iconibus, & insecta testacea, animalia reliqua, aerem, aquas, locosque, & morbos minime neglexit.

J. LAWSON *new voyage to Carolina containing the natural history of the country*, Londini 1709. 4. *

J. J. SCHEUCHZERI *itineraria Alpina primum Tiguri prodierunt* 1702. 4.

DIEREVILLE *Rélation du Voyage d'Acadie*. Rotomagi 1708. 12. Amstelod. 1710. 8. Mercator, sed elegantioris ingenii. Libellus ex prosa versuque mistus. Pauca vero ad rem naturalem habet, notior plantis, quas ad **TOURNEFORTIUM** multas misit, qui amici nomini Dierevillam dicavit.

JOH. JAC. SCHEUCHZER *Itinera Alpina*. Priora tria Lond. 1708. prodierunt. Sequentia sex, quorum vero nonnisi quatuor ad Alpes spectant, Leidæ 1723. & nuper rejectis alienis & botanicis, & plerisque iconibus, a Viro doctissimo **JOHANNÆ GEORGIO SULZERO** Germanice versa, notisque ditata, qui & proprium iter suum addidit. Maxima pars pertinet ad naturalem historiam & quidem omnem, sed imprimis tamen crystallos, lapides figuratos, & aquas minerales. Grata varietate, novitate rerum, mire se commendat.

Ausführliche berichte von der Tranquebarschen Mission. voll. LXI. Hall. 1710-1746. 4. Et si scopus sit describere, quibus modis causisque Ethnici vicini Tranquebariæ ad Religionem Christianam convertantur, multa tamen, & inter ea egregia ad rem naturalem pertinentia passim miscentur, tum ad historiam medicam, tum ad plantas, aquas, locos, morbos, artes, harum Gentium pertinentia. Sed in ipso Opere legere oportet, non in compendiis, quæ Germanica & Gallica Lingua prodierunt.

CHRIST. HENR. ERNDLET *Iter Anglico-batavum*. Amstelod. 1711. 8. Juvenis tunc, postremo Archiater Saxonius, an. 1706. 1707. Angliam & Belgium adiit, multaque vidit notatu digna, etsi dudum alii demonstraverint, in fide, eruditione, & accurata rerum indagine plurima desiderari posse. Meliora vero sunt, quæ de chirurgicis operationibus **RAVII**, de anatomicis inventis, de Libris quibusdam raris, de hortis medicis retulit, quæ tamen & ipsa non absque judicio & discrimine recipere oportet.

ENGELBERT KÆMPFER *amœnitates exotica*. Lemgo 1712. 4. Dignissimus Liber & nulli secundus, Scriptoris indefessi, & in omni re naturali pariter curiosi. In Persia petrolei & naphthæ fontes continet, & capreolum bezoardicum, & plantam assæ foetidæ, & thermas, & moros ex quorum cortice Japonenses chartam conficiunt, Torpedinis porro, & Dracunculi perfici, sanguinis Draconis veras historias, theæ plenissimam & unicam hactenus, & palmæ uberrimam descriptionem, denique plantarum Japonensium insignem Catalogum, cum fidis ubique characteribus, & iconibus propria Auctoris manu pictis.

HENRI de ROUVIERE *Voyage autour de la France*. Parisiis 1712. 12. Pharmacopola, in medicas ubique res & naturales inquisivit.

LOUYS FEUILLE'E *Journal des observations physiques faites sur les Cotes Orientales de l'Amérique méridional*. Parisiis 1714. 4. & *suite du Journal*. Parisiis 1725. 4. melioris notæ. Pulcherrimam floram Peruvianam cum nitidis iconibus habet, multas etiam & satis exquisitas dissectiones animalium, & alia physici & medici generis, præter astronomica & geographica. Meliora fere in tanta opportunitate præstitisset, si methodi Botanices peritia accessisset industriæ, quæ ipsi summa fuit.

Recueil des Voyages faits au Nord. Amstelod. 1715. 12. Et veteres navigationes Belgarum continet, & **ISBRANDI IDES** iter Sinense, & **HENNEPINI** descriptionem Canada, & **MARTENSHII** iter Spitzbergicum, & alia.

J. TOLLII *epistola itineraria* a **HENNINIO**, Amstelodami 1714. 4. recusæ parum habent, quod huc faciat.

J. P. de TOURNEFORT Anglice etiam prodiit 1741. 8.

ANTON. ZUCHELLI *Viaggio e missione del Congo*. Venet. 1712. 4. minime inutilis Liber, etsi Monachi Opus, nec omnino rerum naturalium periti. Morbos æstuosiorum climatum describit ipse expertus.

Voyage de l'Arabie heureuse, &c. Parisiis 1716. 8. Duo itinera continet Meccham suscepta, tertium vero ad urbem regiam Principis Yemen. Caffæ historia naturalis imprimis hic primum describitur, cujus etiam potus historia & progressus, ex Arabico versi & prius editi Cadomi (Caen) subjuncta habentur.

J. P. de TOURNEFORT *Rélation d'un Voyage au Levant*. Parisiis 1717. 4. Lion. 1717. 8. 3. vol. Anglice 1718. 4. &c. Excellentissimum Opus, etsi posthumum. Plantas, nummos, antiquitates, tum passim rariora animalia, fossilia, Archipelagi, Ioniæ, Armeniæ, Ponti, describit sermone amœno, iconibus additis perpulchris.

FREZIER *Rélation du Voyage à la Mer du Sud*. Amst. 1717. Parisiis 1716. 4. Mathematici

tici & Physici elegans Opus, quo inprimis ditissima fodina Peruviana describuntur, deinde plantae aliquae rariores pictae exhibentur. Libere scripsit, & veritatis amans fuit, hinc invidiam passus Monachorum & calumnias D. FEUILLEE'E.

PETER KOLBENS *Beschreibung des Vorgebürgs des guten hofnung*. Nuremberg. 1719. fol. Amstelodami vero an. 1741. 8. editum est Compendium hujus Libri, inutilibus rejectis. Præcipuus quidem laboris finis est Hottentottorum historia, quam dedit omni numero absolutam. Animalia tamen Capiensia, & Catalogum plantarum ex OLDELANDIO desumptum, ab Auctore auctum, & Ventorum, atque reliquæ historiæ naturalis hujus Promontorii compendium dedit.

Majoris editionis itinerarii PETRI KOLBII, &c. compendium, quod Amstelodami editum esse diximus, Germanice etiam recusum est Norimberg. 1745. 4.

JOH. FRID. LEOPOLD. *relatio de itinere Suecico*. Lond. 1720. 8. Fossilium inprimis & vastas illas in Suecia fodinas cupri & argenti describit, tum figuratos lapides.

Voyage de Marseille à Lima, Paris. 1720. 12. Tribuunt in præf. chirurgo Bachelier qui ab anno 1707. ad 1711. Bonum Aerem & Peruviam adierit, sed infinita ex aliis compilata intercedunt, cum ridiculis erroribus. Ita Orseille confundit cum Phalaridis semine, & Picum Teneriffæ altum facit 47812.

LABAT *nouveau Voyage aux Iles de l'Amérique*. Parisiis 1721. 12. 6. vol. Plagiarius in multis ex P. du TERTRE, aliisque plerasque plantarum & animalium icones exscripsit. Cum tamen aliquot annis ipse in America vixerit, & Sacchari inprimis fabricam recentissime descripsit, atque aliqua inventis passim addiderit, poterit legi, si per tadium minutiarum admistarum licet. Nova Editio 1742. 8. vol. 12. Aucta est historia Caffæ, Sacchari præparatione paulum uberiori, & aliis accessoriis ornamentis. Contra cum plurimis numeris inductus est, & crassos ejus errores detexit P. LE BRETON, & meliores dedit plantarum descriptiones, neque eas tamen satis botanicas in *Journ. de Trevoux* 1727. Jul. 1730. art. 7. 15. 29. 48. 58. 1732. Jul. Aug. Sept. Oct. Novemb. Decemb. 1733. Mart. April. Jun. Jul. Aug. Oct. Nov. magnam viam plantarum his numeris descripsit.

AUBRY de la MOTTAIE *travels*. Lond. 1723. fol. Alioquin veracis, & indefessi Auctoris Opus parum habet ad rem nostram.

FRAC. VALENTYN *Beschryving van Oostindien*. Amst. & Dordr. 1724. & seq. fol. 8. vol. Splendidissimum Opus, civili equidem & ecclesiasticæ Historiæ inprimis destinatum. Plantas tamen & animalia, sed pisces maxime Amboinenses brevissime descriptos & pictos in tertio volumine continet, sed ea quæ ab Auctore ignaro rei naturalis proficiscuntur, non possunt plene utilia esse.

ALEX. HAMILTON *new account of the East indias*, Edimburg. 1727. 8. 2. vol. Erravit per Indiam Orientalem a capite bonæ spei ad Japoniam usque ab anno 1688. ad 1723. & oram omnem Asiæ descripsit, superstitiosus, neque nostri scopi.

LE GENTIL *Voyage autour du Monde*, Amstelod. 1728. 12. 3. vol.

LAVAL *Journal du voyage de la Louisiane*, Paris. 1738. 4. Astronomicum est & geographicum.

H. EGEDE prodiit etiam, Francofurti 1729. 8.

EDWARD WRIGHT *observations made in travelling through France ad Italy*, London 1730. 4. Picturas inprimis & sculpturas habet, sed tamen plantas rariores arboreas inprimis & modum observat, quo agri vitesque coluntur.

BERGERON *voyages faits en Asie dans les XII. XIII. XIV. & XV. Siècles par plusieurs célèbres voyageurs*, Haag. 1735. 4. 2. vol. & ni fallor Leid. 1729. 4. 2. vol.

P. J. von STRAHLENBERG recusum est, Lipsi. 1736. 4.

GOTTFR. HENRIC. BURGHART *reise nach den Zotenberge*, Breslau 1736. 8. cum catalogo stirpium.

TH. SHAW gallice prodiit Hag. 1743. 4.

LABAT *nouveau Voyage de l'Afrique Occidentale*. Parisiis 1728. 5. vol. Ex Commentariis D. COMPAGNON & BRUE historiam oræ scripsit, in qua Niger fluvius mare adit. Multa ex priori itinere & ex aliis repetita, aliqua tamen peculiariora, & inprimis de regionibus auriferis Africanis, quas adiit COMPAGNON, de Gummi Arabici arbore, avibus, animalibus rarioribus, nec alibi descriptis.

HANS EGEDE *Gamle Groenlands nye perustration*. Hafn. 1729. (ANDERSON p. 148.) &

& 1741. quam Editionem legi. Viri pii, & curiosi, & demum Chemici, descriptio regionis miserrimæ Omnem naturam, quatenus ad vitam humanam pertinet, breviter persecutus est, plantas, cœlum, fossilia, pisces, & hominum genus.

LABAT *Voyage de Guinée, par le Chev. des MARCHAIS*. Parisiis 1730. 8. Guineæ regna, deinde Guianam imprimis describit. In illa pisces imprimis aliquos marinos, in ista etiam ligna tinctoria & varia animalium genera. At semper memor sis omnis methodi ignarum fuisse.

EJUSDEM *Voyage d'Espagne & d'Italie*. Parisiis 1730. 12. 8. vol. Amstel. 1731. 8. vol. Plurima equidem minuta habet, & monastici argumenti. Fodinas tamen aluminis Tolfenses, mannæ Calabricæ collectionem, & aliqua alia ex propria observatione describit.

EJUSDEM *Rélation historique de l'Ethiopie Occidentale*. Parisiis 1732. 5. vol. 12. Ex Libro Italico CAVAZZII, qui circa an. 1660. eas regiones adiverat, conversa sunt, veram autem Editionem ignoro. Pleraque plena miraculis & fabellis. Sed in primo Tomo historia naturalis aliqua, qualis a Monacho sperari potest, continetur.

PHIL. JOH. von STRAHLENBERG *das Nord und Westliche theil von Asia*. Stockholm. 1730. 4. Vir militaris, sed gnarus Linguarum antiquarum, & in omni etiam naturali historia curiosus, ad quam multa habet pertinentia, ex animalium & plantarum genere, & fossilium, alphabetice digesta.

JOH. RAI *Collection of travels*, recusa an. 1738. 8. Primus Tomus priorem Librum; secundus Tomus primum editus an. 1693. 8. præter RAUWOLFIIUM excerpta varia ex D. GREAVES, BELLONII, WHEELERI, SMITH, & aliorum Operibus continet, cum variis Stirpium Orientalium Catalogis.

THOM. SHAW *travels and observations relating to several parts of Barbary and the Levant*. Oxford 1738. fol. Africæ Septentrionalis, in qua multis annis vixit, Ægypti, & Palestinæ naturalis historia. Plurima notatu dignissima ad thermas, & animalia, deinde uberrimus Catalogus plantarum, quarum nomina DILLENIIUS adposuit, cum nonnullis iconibus. Vir Doctus & veri amans.

JOH. GEORG. KEISLER *neueste reise durch Teutschland, Boöhmen, Ungarn, Italien, &c.* Hanover. 1740. 1741. 4. vul. In egregio itinerario passim ad lapides figuratos, fodinas, musea, aliaque naturæ Opera respexit.

PIERRE BARRERE *Essai sur l'histoire naturelle de la France Equinoxiale*. Parisiis 1741. 12. & EJUSDEM *nouvelle Rélation de la France Equinoxiale*. 1743. 12. In summa brevitate ditissimus, animalium maxime & plantarum descriptionibus, & istarum ad vera genera revocatione exemplo Ypecacoanhæ, Simaroubæ, Mechoacannæ, &c.

An CAROLI PERRY *historia Orientis*, cujus prospectum Londini 1741. edidit, unquam prodierit, nondum rescivi.

CAROLI PERRY *historia Orientis*, cujus editionem nondum resciveram, utique prodit Londini 1743. fol. cum titulo *a view of the Levant*. Quæ ad nos faciunt, tangunt imprimis Ægypti morbos, & Nili adscensum VANSLEBIUM & J. SICARD passim mendacii accusat.

RICHARD POCOCKE in secundo descriptionis suæ volumine Asiam minorem & Græciam describit. Plantas plures, depictas, aut recensas exhibet, & de terra Lemnia & Mastiche observationes.

Observationes, quas præter astronomica contineri diximus in *La méridienne de Paris*, &c. par Mr. CASSINI, factæ sunt a Medico D. le MONNIER.

RICHARD POCOCKE *a description of the East*. 2. vol. fol. Lond. 1743. 1745. In priori volumine Ægyptus describitur, sæpe longe aliter quam solet, Nili mirandæ cataractæ, plantæ paucae, sed bene sculptæ. Antiquitatis vestigiis imprimis delectatus est.

P. CHARLEVOIX *Histoire de la nouvelle France*. Parisiis 1744. 4. 3. vol. Pleraque equidem ad historiam civilem faciunt. In itinere tamen a Canada ad ostium fluvii Mississippi passim naturæ opera observavit, plantarumque fere centenarum dedit descriptiones, & compilatas icones.

La Méridienne de Paris vérifiée par Mr. CASSINI DE THURY. Parisiis 1744. 4. Præter astronomica, continet egregias observationes, ad aquas minerales, mineras, earumque vapores, mercurii altitudines, plantas indigenas.

Journal d'un voyage au Nord par M. OUTHIER. Parisiis 1744. 4. Pauca ad rem nostram, hominum enim vitæ rationem moresque magis, quam naturam, observavit.

Voyage d'Egypte par le S. GRANGER. Parisiis 1745. 12. Breviter idem & veraciter. Miracula rerum minuit, quæ vulgo solent augere.

Rélation d'un voyage dans l'intérieur de l'Amérique Méridionale, par Mr. de la CONDAMINE. Parisiis 1745. 8. Partem magni itineris, ad dimetiendos gradus sub æquatore suscepti, exiguam continet, qua nempe iter a Peruvia ad Guianam secundo Amazonum flumine describitur. Ad historiam naturalem pauca adspersit, undique parvus verborum, veneni tamen Americanarum sagittarum vires, velocitatem soni, ponderum sub æquatore diminutionem observavit.

CAROLI LINNÆI Oelanska och Gorthlandica resa. Stockholm. 1745. 8. Scopus itineris uni-
ce historia naturalis est. Plurimæ ibi descriptiones insectorum, animalium, plantarum, fossilium, eæque, pro more Auctoris, exquisita cura scriptæ.

PETRI KALMS Wästgöta och Bahuslændska Resa. Stokh. 1746. 8. Iter factum an. 1742. argumenti botanici, œconomici, & ad fossilia artesque pertinentis, omnino Linnæana methodo.

CAR. LINNÆI Wästgöta Resa. Stockholm. 1746. 8. Pleraque ad insecta, & plantas, & formationem montium pertinent.

In *Philosophicis Transactionibus* etiam multa itinera describuntur.

Iter ad Caraibicas Insulas. n. 27. 36. 37.

Ad Bermudas. n. 30. 40.

Mexicanum. n. 41.

Helveticum. n. 49.

Ex Ægypto superiori. n. 71.

Nova Zembla. n. 101.

Barbadeses observationes. n. 117.

HENRICI ELLIS voyage to Hudsons Bay, Lond. 1748. 8. Gotting. 1750. 8. &c. Cum inutili labore fretum ad mare Occidentale ducens quæreretur, & hibernaret in sinu HUDSONIS, observavit frigoris inclementiam, aves, animalia, maris fluxum & refluxum, mineralia.

An account of a voyage for the discovery of a Northwest passage by the Clerk of the California, Lond. 1748. 8. Perpetua censura operis ELLISIANI, quo ipse aufertur inveniendi freti. Et ipse fibros, aves aeresque & locos describit.

CAROLI HORLEMAN Dagbok öfver en igenom atskillige Rikets Lundkaper gjord resa, Holm. 1749. 8. Rem inprimis œconomicam sub oculis habuit, aliqua tamen ad rem naturalem faciunt, conchas fossiles, arborum altitudines, &c.

J. G. GMELIN & in præfatione floræ Sibiricæ historiam naturalem ejus vastissimæ, quam peragravit, regionis dedit, & in programme, Tubingæ 1749. f. & 1750. & Germanice Gottingæ 1750. 8. edito descripsit iter suum Petropoli ad Chinæ confinia ab anno 1733. ad 1743. absolutum, quo nova plurima & enormis inprimis atque absque exemplo frigoris memoria continentur.

In *relationibus Salisburgensium colonorum* in Georgia exstant etiam plurima quæ ad rem naturalem, terræ fruges, ventos, meteora, &c. pertinent.

T. VERNON Iter Adriaticum & Græcum. n. 124.

TH. GLOVER account of Virginia. *ibid.*

TAVERNIER on some considerable parts of Asia n. 129. 130. & fodinarum adamantum n. 136. ubi Medicina ejus regionis habetur.

Iter in Chinam & Tartariam. n. 189.

SMITH iter Constantinopolitanum. n. 230.

HILLIER de ora Guineensi n. 232.

BULLIVANT in novam Angliam. n. 240.

J. FRYER ex itinere Persico & Indico. n. 244.

Observationes Marylandicæ. n. 259.

Iter in Darien. n. 262.

Observationes Italicæ. n. 265.

JOH. MARSHALL de Bramanibus. n. 268.

J. CUNNINGHAM iter Cheusanense. n. 280.

STRAHAN observationes Ceylanenses. n. 279. 282.

WILL. OLIVER iter Danico-Belgicum. n. 282.

Ex itinere Belgico observationes. n. 286.

- J. MAXYELL de capite Bone Spei. n. 310.
 J. P. BREYNE iter Italicum. n. 334.
 E. LLHWID iter Wallicum. n. 334. 335. 337.
 MATHER ex nova Anglia. n. 338.
 EDENS iter in M. Picum Teneriffæ. n. 345.
 T. ROBINSON ex itinere Italico observationes. n. 349.
 De Finnonibus Norvvegicis (ut vocant). n. 400.
 Iter in Derbyshire. n. 407.
 EHRHARD iter Alpinum. n. 458.
 MIDDLETON iter in Hudsonsbay, ubi intensi frigoris phænomena, & magnetica experimenta habentur. n. 415.
 Elegantissima etiam VALISNERII itinera in Apenninum describuntur in *Galeria di Minerva*, *Raccolta del Danieli & Operibus omnibus*.
 Itinerum scriptoribus adde: *A gemeine historie der Reisen zu wasser und lande*. Anglice prodiit, tum gallice, & belgice. Septimum nunc volumen legi. Undique compilatum esse, vitio non vertendum est: fontibus autem non semper bonis usos esse auctores, & ad naturæ inprimis dona non adeo respexisse, multa vero repetiisse potest. Quare fonte potius quam hujusmodi compilationes adeundum, cum inprimis res naturales negligentius descripserunt.
Topographia ad rem physicam.
 P. PARACELSI descriptio Carinthia huc pertinet. Spectat ad rem mineralem, Argentorati 1575. 8.
 J. LEONIS descriptio Africa Gallice prodiit Lugd. 1556. fl. 1564.
 ODOARDO LOPEZ *regal of the kinglydom of Congo and of the countries round about the same*, Lond. 1597. 4. *
 ANT. de HERRERA etiam est *novus orbis, seu descriptio Indiæ Occidentalis*, Madrit. 1601. 1615. fol. versa a J. BARLÆO, Amstel. 1622. fol. quæ breviter naturæ fructus enumerat. In Belgica editione una prodiit Jac. le MAIRE iter, quo celebre fretum invenit, jucundum lectu, & P. BERTII brevis Americæ descriptio.
 DIDACI de CISNEROS *sitio naturalez y propiedades de Mexico*, Mexic. 1618. 4. ANT.
 EUSEBII NIEREMBERG *historia natura maxime peregrina*, Antvverp. 1653. fol.
 ROB. ASHLEY *Cochinchina containing many admirable varieties and singularities of that country*, Lond. 1633. 4. *
 ALFONSI de OKALLA *Jesuitæ Chilensis, historia y relation del Reino da Chile*, Rom. 1646. 4. *
 JULII JASOLINI *de' rimedj naturali che sono nell' isola di Pittecura oggi detta Ischia*, Libri II. Neapol. 1689. 4. *
 J. de LÆT. Libri XVIII. prius belgice prodierunt, Leid. 1630. fol.
Topographia melioris nota ad rem physicam.
 PELRI QUIQUERANI *de laudibus Gallo provincia*. Parisiis 1551. fol. Meretur legi. Quicquid enim Provincia Gallica perfectius, in animalibus, plantisque producit, id fere recenset, inter quæ aliqua rariora inveni, neque expectata, eo præsertim sæculo.
 OLAI MAGNI Archiepiscopi Upsaliensis *historia de Gentibus maxime Septentrionalibus*. Rom. 1555. 4. Habet fusam etiam, sed passim fabulosam, historiam animalium.
 JOH. LEONIS *descriptio Africa*. Antvverp. 1556. Brevis equidem, neque nostri sæculi acutioris, tamen artibus satis imbuti, & ferri oportet, qui unicus Atlantis & Maroccani Regni interioris descriptor sit.
 ANT. DE HERRERA *historia general de los Lechos*, &c. Madriti 1601. fol. Anglica 1725. 6. vol. 8. Historicus, enarrat prima in Americam itinera, COLUMBI VESPUTII, MAGELLANI, & CORTESII, PIZARRIQUE victorias. Ad historiam naturalem parum confert, & vix utilis, nisi quatenus fidelis, & fere reliquis loco fontis fuit, unde haurirent.
 BARLÆUS Amstelod. 1622. fol. Compendium edidit topographicum, auctum navigatione MARII, qui novum Fretum invenit.
 PROSPERI ALPINI *historia naturalis Ægypti*. Leid. 1735. 4. Posthumum Opus. Præter Medicinam, plantas Ægyptiorum, dudum editas, habet etiam animalia & politica. Sed icones

icones partim malæ, partim ex recentioribus a Bibliopola additæ, impar Opus reliquis, quæ ab Auctore scripta sunt.

FRANCISCI HERNANDEZ *nova plantarum, animalium, & mineralium historia*. Rom. 1626. 1651. quæ editiones nihil differunt, monente etiam JANO PLANCO *præfat. ad phytobasium COLUMNÆ* p. II. HERNANDEZ primum regio sumtu collegerat plantarum icones, descriptiones. Earum brevius compendium decem Libris composuit NARDUS ANTONIUS RECCHUS, cujus scripta servata sunt ope nepotis M. ANTONII PETILII.

FABER in HERNANDEZ (p. 788.). Numerosæ sunt fere Mexicanæ plantæ, cum barbaris nominibus & iconibus malis. Editionis sumtus erogavit FREDERICUS CÆSIUS primus Lynceorum. Addidit notas JOANNES TERENCE Constantiensis Suevus, breves eas, idemque aliquot icones addidit. Accesserunt elegantissimæ JOANNIS FABRI Bambergensis ad animalium historiam commentationes, ex dissectione plerumque natæ, quibus ad fabricam foetus humani, ovum incubatum, cor testudinis, monstrorum formas, multa pulcherrima continentur. Deinde FABIIUS COLUMNÆ annotationes & additiones adjecit, in quibus multa reconditæ sapientiæ, icones etiam plantarum novæ plusculæ. Tandem FREDERICI CÆSII tabulæ phytoscopicae adfunt, quibus passim etiam recentiorum observationes præcessit.

JOH. de LÆT *descriptionis India Orientalis* L. LXVIII. Amstelod. 1633. fol. ipse non excessit patriâ LÆTIUS, sed usus est priorum operibus, Herrera, Ximenez, aliis, atque historiam civilem & naturalem per regiones descripsit, bono ordine & simplici sermone. Multos fructus a CLUSIO habuit.

GUILIELMI PISONIS *de Medicina Brasiliorum*. Leid. Elzevir 1648. fol. Medicus Belga, qui cum Comite MAURITIO in Brasilia fuerat, medicatas inprimis & utiles plantas describit. GEORGIUS vero MARCGRAAF de LIEBSTAT in *historia naturali Brasiliae* cum PISONE edita copiosam animalium & simplicium historiam dedit posthumam quidem. Icones equidem parvæ, neque botanicæ, sed necessarium tamen Opus. In posteriori editione PISQ. sua repetiit, sed ex Marcgravianis multo auctiora, cujus brevissimus tantum tractatus Meteorologicus superest distinctus. Additur in ista BONTIUS & PISONIS *mantissa aromatica* ex Orientalibus plantis collecta. Prodiit Leidæ an. 1658. fol.

JAC. BONTII *historia naturalis & medica India Orientalis*. Amstelod. 1658. fol. Ergegium undique Opus. Observationes medicæ raræ, & in morbis Indicis fere unicæ. Plantarum & animalium descriptiones quidem, & icones, non nostri sæculi, sed plerumque tamen primæ. Ad GARCIAM ab ORTA utiles notas fecit, cum ipse in Batavia Indica BONTIUS Medicinam fecerit.

GERARD BOATE *Ireland's natural history vvith a vvay of manuring and improving* published by SAMUEL HARTLIF. Lond. 1652. 8.

Histoire des Iles Antilles, par le P. du TERTRE. Parisiis 1654. 4. & plenius 4. volum. 1667. & 1671. Secundum volumen solum nostri scopi est, reliqua fere historica sunt, & in minutiis versantur: sed id volumen perutile est, & ex eo reliqui Scriptores fere hauserrunt. Plantas & animalia satis copiose describit, & depingit ex propria observatione.

G. BOATE pleraque habuit a fratre ARNOLDO BOOTIO. Paludes varii generis, fodinas, agri cultum, morbos (inter quos *irish ague*, & rachitis) bono ordine describit.

ROCHEFORT anglie prodiit, multis tamen figuris mutilatus, cum titulo *the history of Caribbea Islands... rendered into English by JOHN DAVLES*, Lond. 1666. fol.

ARNOLDII MONTANI *beschryving van America on t' Suydland*, Amstelod 1671. fol. Collecta undique descriptio, qua inprimis res Brasiliæ fuse repetuntur, cum aliqua historia naturali, & nitidis iconibus.

An huc referam MERRETI *Pinacem rerum Britannicarum*, quo brevis catalogus non plantarum solum, sed aliarum rerum ad historiam naturalem Angliæ pertinentium continetur?

CAROLI CLARAMONTII *de aëre, locis & aquis terra Anglia*, Londin. 1671. 12. Lotharingus medicus fuit, qui aliquamdiu in Anglia vixit. Cælum & aquas insalubres esse, vites non muturari quæritur, ingenia incolarum, nobilium quidem vegetum similis Galliæ, plebis lentum, ad chronicos morbos aptius depingit, &c.

BALDÆI *beschryving van Malabaar en Coromandel*, Amstelod. 1672. fol. Magis ad historiam facit. *

OLIV. DAPPER multas historias regionum compilavit, quibus solet aliquas stirpium icones, & alia ad rem naturalem conjungere. Huc ergo *beschryving van t' ryck van den grooten Mogol*, Amstelod. 1672. fol. * *beschryving van Syrien en Palestina* 1671. fol. * *beschryving van Africa* 1676. fol. * *beschryving van Asien* 1680. fol. * *beschryving van de Archipel* 1688. fol. * gallice recusum 1703. fol. ibid. *beschryving van Morea* 1688. fol. *

W. J. MULLER in Libro citato habet etiam commercium, quod auro fit. LUC JAC. DEBES multa habet ad maris historiam, ad vortices, pisces, etiam morbo regionis, superstitiosus omnino auctor.

J. J. WAGNERI *Helvetia curiosa* omnino huc pertinet, Tigur. 1680. 12.

The present state of the fertile Island of Tabago, Lond. 1683. 4. An idem qui, recusum in *Hamb. Mag. T. IV.*, continet arbores & animalia.

J. FORTUNATO ALAMANDINI *istorica descrizione de' tre regni Congo, Matamba ed Angola, e delle missioni apostoliche de' Cappuccini compilata da G. ANT. CAVAZZI*, Bologn. 1687. fol. Hic est, quem gallice libere vertit LABATUS.

LIGON huc referatur.

ROCHEFORT *histoire naturelle & morale des Antilles*. Roterod. 1658. in 4. & denuo 1687. 4. Non placet, compilat priores, in physicis parum vidit, icones habet fictitias, miscet aliena, & fabulosa, & ipsa dictio aliquid habet ficti & theatri.

JOSSELYN *new England rarities*. Lond. 1672. 8. Aves, quadrupeda, pisces, plantas, describit. OTTO KETENS *Kurzer entwurf von Guiana*. Lipsi. 1672. 4. versum ex Belgico. Continet agriculturam & laudem divitiarum, quas regiones calidiores suppeditant.

The American Physician by W. HUGHES, Lond. 1673. 12. habet plantas, arboreasque, & historiam naturalem Americæ Anglicæ.

JOHANNIS SCHEFFERI *Lapponia*. Argent. 1673. 4. Ipse Lapponiam non vidit. Usus est autem commentariis a TORFÆO & RHEENIO, Pastoribus Ecclesiæ Torneensis & Pitheensis suppeditatis. Maxima pars ad historiam, moresque pertinet. Aliqua tamen ad historiam medicam, naturalem, botanicam, spectat, quæ omnia multo uberiora a CL. LINNÆO speramus.

WILL. JOH. MULLER *Africanische Landschaft Fetsu*. Hamburg. 1673. 12. Habet etiam plantas aliaque naturæ opera.

W. CAMDENS *Britannia*. Editio nostra Lond. 1695. prodiit: historicus equidem, cum Topographia tamen passim aliqua miscuit ad naturæ historiam. Huic Editioni variæ plantæ ex RAIO adjectæ sunt.

LUCAS JACOBSON DEBES *description of the Islands of Fere Englished*. 1675. 12. Auctor M. A. fuit, & Ecclesiarum in ea Insula Præpositus. Observavit utique naturam, plantasque ibi raras nasci, & maxime radicem Rhodiam monuit, aves descripsit, &c.

ROB. PLOT *natural history of Oxfordshire*. Oxford. 1627. fol. & 1705. Vir curiosus & mineralium peritior, in quibus, & in lapidibus figuratis magnam partem operis consumsit. Plantas tamen rariores, pisces, monstra, aerem & aquas minime neglexit, & primus in historia peculiaris alicujus regionis studiose se gessit.

ETJUSDEM *natural history of Staffordshire*. Oxford. 1686. fol. Hoc Opus magis mistum est, & multa historica, heraldica, topographica habet, in naturæ tamen operibus fontes, eorumque origines, vitiosa quidem usus hypothesi, metallorum fodinas & labores, terræ indolem, animalium rariores, longævitates, morbos, studiose descripsit.

BERNIER *histoire de Blois*, 1682. 4. * continet etiam historiam naturalem.

ROB. PIBBALD *prodromus historia naturalis Scotia*. Edimb. 1684. fol. Etsi asperam satis expertus sit satyram, non tamen penitus inutilis est. Plantæ equidem paucae, & fere ex RAIO sunt, neque ulla fere Scotiæ propria Animalia paulo uberius tractavit, cum nonnullis nec optimis iconibus.

JOBI LUDOLPHI *historia Æthiopica*. Francof. 1681. fol. & *commentarius in historiam Æthiopiam*. Ibid. 1691. fol. Vir pereruditus, usus iis quæ a Gregorii Abbatis Abbyssinico didicerat, inque libris undique eruerat, etsi pauca, aliqua tamen ad animalium imprimis historiam pertinent.

C. GERVAISE *histoire du Royaume de Siam*. Parisiis 1688. 4. * Habet etiam naturæ opera.

JOH. WEICHARD von VALVASOR *Ehre des herzogthums Crain*. Laibach & Nuremberg. 1689. fol. 4. vol. Splendidum Opus, maxima quidem parte ad topographiam historicam pertinet, multa tamen habet ad historiam naturalem, tum universam, aerem, aquas, locosque, tum particularem, lacus Czirnicensis, cryptarum, fluviorum subterraneorum, fodinarum, mercurii, &c.

DANIEL TOUSCHER *alpes Jämtlandia*, Upsal. 1694. 8. BENJ. CONNOR lecto nunc invenio paucissima ejus viri esse, qui utique medicinam in aula Polonica fecit, neque historiam naturalem fere adtingi.

BENJ. CONNOR *history of Poland*. Lond. 1697. 8. * Physica etiam varia & epistolas medicas habet.

JAMES WALLACE *account of the Islands of Orkney*. Lond. 1700. 8. Historiam naturalem habet, & plantas indigenas, maxima tamen pars est historica.

CHARLES LEIGH *natural history of Lancashire, Cheshire and Derbyshire*. Lond. 1700. fol. Plotianis laboribus multum cedit, tum eruditione, tum curiositate, tum artium cognitione aquas minerales & metalla fere unice secutus est, in istis morbisque copiosior.

History of Virginy. Lond. 1705. *Histoire de la Virginie*. Amstelod. 1707 12. Auctor indigena fuit, naturam & plantas, sed idiotarum more describit.

Le GOBIEN *histoire des Iles Marianes*, Paris. 1701. 8. *

TH. ROBINSON, cujus hoc loco naturalem historiam Cumberlandiæ, &c. recensuimus, singularis homo fuit, sed in fossilibus utilis. Montes secundum classes nonnullas describit, & cupri labores, & mundik mineralis Angliæ proprii Plantas habuit a THOMA LAWSON.

M. B. VALENTINI *historia naturalis Hassia inferioris*, Gieff. 1709. 4.

J. J. SCHEUCHZERI etiam huc pertinet disputatio *de Helvetia aëribus, aquis & locis*, Tigur. 1728. 4.

Post DAN. TYSELIUM adde: C. G. ZORGDRAGER *alt und neue Grönlandische fischerey mit einer beschreibung von Groenland, Island, Spitzbergen, Nova Zembla .. der strasse David aus dem holland übersetz durch A. MOUBACH*, Lips. 1723. 4. Bonus liber scriptus equidem ad docendum modum, quo Balænae utilissime capiantur, multa tamen admista habens ad historiam naturalem Islandiæ, & frigoris septentrionalis.

The british Empire in America, Londini 1741. 2. vol. 8. Germanice etiam versum fructus naturæ breviter recensos solet enumerare.

THOMAS ROBINSON *essay toward a natural history of Cumberland and Westmoreland*. Lond. 1709. 8. Mineralia quidem inprimis describit, sed & plantas, fere octodecim, a RAJO prætermittas continet.

JOH. MORTON *natural history of Nottinghamshire*. Lond. 1712. fol. Omnem naturam descripsit, solum, lapides figuratos, plantas, etiam rariores ex muscorum genere, aves, monstra, rariora hominum & animalium.

RALPH THORESBY *Topography of Leeds and the Westending of York*. Lond. 1715. fol. Rariora etiam ad Plotii modum descripsit, tum Museum proprium.

M. MARTIN *description of the Wester Islands of Scotland*. Lond. 1716. 8. Nobilis Auctor, rei naturalis minus peritus, plantas etiam utiliores non exprimit, nisi barbaris nominibus. Victum tamen artemque medicam earum gentium sollicitè exposuit.

J. JAC. SCHEUCHZER *beschreibung der Elementen Grenzen und berge Schwveizerlands*. Tiguri 1716. *seq.* nam de priori Opere, quod hebdomadatim prodiit, supra diximus. Tomo primo aliqua de aere, maxime vero montium Helvetiæ descriptio habetur. Altero aquæ, thermæ, acidulæ, flumina, lacus. Tomo III. meteora, & fossilia, lapidesque inprimis figurati recensentur copiose ut solet & diligenter, tum ex suis, tum ex aliorum conquisitis experimentis.

Historia naturalis curiosa Regni Polonia, opera P. GABRIELIS RZACZYNSKI. Sendomir 1721. 4. & auctarium ad eandem historiam Gedani 17... 4. Compiler, vix ullo usus judicio, neque propriis experimentis: id meritum habet, quod unicus sit in hac historia Auctor. Plantarum satis multos Catalogos habet, sed passim suspectos, in monstis & rarioribus fabulosus, & credulus, qui urnas subterraneas vegetasse dicat.

DANIEL TYSELIUS *beskrifning öfver Sion Wetter*. Upsal. 1723. & *yttre ligare forsök* 1730. 4. Ebullitiones spontaneas & catabathra describit, & aliqua habet ad historiam naturalem vicinæ regionis.

P. LAFITAU *mœurs des Sauvages Américains*. Parisiis 1729. 4. 2. vol. Miro instituto Irokesios facit Lycios ex Asia ortos, & superstitionis eorum vestigia ex media Græcia repetit. Res tamen ad victum, agriculturam, medicam artem pertinentes passim addit, ex suis etiam observationibus.

ENGELBERTI KÆMPFERI *history of Japan translated into English*, by J. G. SCHEUCHZER. Lond. 1727. fol. 2. vol. Posthumus laboriosissimi viri labor, quo præter veram & exquisitam historiam hujus Imperii, & aliqua botanica, fere ex Exoticis fasciculis excerpta, historia fossilium, animalium, & aliarum rariorum rerum naturalium Japoniæ hic continetur.

ALOYSII FERD. MARSIGLI *Danubius Pannonico Mysicus*. Hag. 1726. seq. fol. 6. vol. cujus prodromus an. 1700. fol. prodiit. In ultimo tomo historia naturalis imprimis continetur. Aves nempe, pisces, insecta cum dissectionibus, plantæ Danubianæ, meteoræ, &c.

SAMUEL DALE *history and Antiquities of Harwich and Dovercourt*. Lond. 1730. 4. Habet testacea, animalia alia, plantasque ejus regionis.

Description générale Historique, Chronologique, Politique & Physique de la Chine, par le P. J. B. DUHALDE. Parisiis 1735. fol. maj. 4. vol. Hag. 1736. 4. 4. vol. In Libro nitide omnino & ornatè scripto, ut ex variorum Patrum Soc. Jesu monumentis nato, pauca satis physica habentur vel sparsa per itinerum in Tartariam descriptiones, & Topographiam Chinesem, vel collecta ad Titulos, Theam, Rheum, Xylon, pauca alia utcunque descripsit, sed etiam inde abest ea curiositas, quæ utilitatem publicam sola efficit, & icones malæ, ex NIEUHOPIO. De animalibus & mineralibus parvus est. Uberior in Medicinæ Chinesi descriptione & exemplis.

COKER *survey of Dorsetshire cont. the natural history of that Country*, Lond. 1732. fol. * DUHALDE Germanice versus liber, male truncatus, & alienis rebus auctus est.

JOHN BRICKWEELL *natural history of north Carolina*. Dublin. 1739. 8. Arbores etiam & plantas habet. Aerem etiam locosque Carolinæ describit in altero volumine CATESBY.

J. G. GMELINUS in pulcherrimæ suæ *floræ Siberica* T. I. in præfatione multa perpulchra habet de ejus regionis naturali historia, miro frigore, falsis aquis, plantarum indole, &c. Ex *Phil. Trans.* huc pertinent ad Lacum Carniolæ celebrem. n. 109. 191.

MURRAI descriptio Hirtæ. n. 137.

GUATTANI & DION. DE PIACENZA plantæ & animalia Regni Congo. n. 139.

Descriptio of Penparkhole. n. 143.

Lacus Loughneagh. n. 173.

Vesuvius Ternatensis. n. 216.

Notabilia Comitatus Lincolnensis. n. 223.

MARTIN de Insulis occidentalibus Scotiæ. n. 273.

Ad VVetterum Lacum. n. 298.

KINNALDER description of Shropshire. n. 310.

Hibernica varia. n. 320.

De Scotiæ ericetis. n. 730.

RICHARDSON de Comitatu Eboracensi. n. 337.

Historia naturalis vici Bridgnorth. n. 463.

PRESTON descriptio Zetlandiæ. n. 473.

Mémoires pour l'histoire naturelle de Languedoc. Parisiis 1737. 4. Maxima pars Operis ad antiquitates pertinet. Aerem tamen, ventos, fontes, thermas & aliqua vegetabilia etiam describit, animalia & fossilia vix adtigit, præter dissertationes de piscibus fossilibus, & aliam de mugilum piscatura.

DE MAILLET *description de l'Egypte*, Paris. 1735. 4. Hag. 1740. 12. fabulosus homo & nugator.

JOHAN. ANDERSON *nachrichten von Island, Grönland und Strasse Davis*. Hamburg. 1746. 8. ad piscaturæ maxime descriptionem, aves boreales, sulphur & alia fossilia Islandiæ, verax, pius & venerabilis Auctor.

Addere hoc loco visum est aliqua Lexica philosophica, in quibus fere definitiones rerum physicarum continentur, & elementa, non inutilia tironibus. Huc ergo STEPHANI CHAUVIN *Lexicon Philosophicum* pertinet. Roterodami 1692. fol. editum, quod physica, logica, & mathematica continet. Deinde multo plenius *Lexicon Technicum* JOHANNIS HAR-

in indice (a) horum Auctorum, quæcunque ad unam rem spectabant, hæcque in
sparsim.

HARRIS Soc. Reg. Secret. Londini 1710. 2. vol. fol. editum, quo integri tractatus continentur inprimis mathematici, sinuum & tangentium tabulæ: de conicis maxime necessariae proportionales, &c.

ANTONII ROSCHMANN regnum minerale, vegetabile & animale Tirolensis comitatus nunquam vidi A. E. suppl. IV. S. 6.

J. C. TRUMPH historia naturalis urbis Verda, Norimb. 1744. 4. & in E. N. C.

CAR. FRID. MENANDER & GADD. observ. physico-œconomica in Satagundia collecta, Abo 1747. 8.

A. BERCH Angermanna hushollning, Upsal. 1747. 8.

Ab anno 1749. cepit edi liber cum titulo Versuch einer beschreibung natürlicher merkwürdigkeiten der Landschaft Basel 8. cujus quinque partes prodierunt. Plantarum rariorum & vulgariarum etiam catalogum, & conchas rariores, & alios lapides peculiare describi video.

In J. CHRISTOPH. v. DREYHAUPT beschreibung des Saalkreyses, Hall. 1749. fol. bona historia naturalis continetur.

PETRI SCHISSLER halsinga hushollning, Stokh. 1749. 8. huc etiam facit.

ROBERT HEATH natural history of the Islands of Scilly, Lond. 1750. 8. Legi meretur descriptio insularum parum notarum, quarum etiam plantas sponte nascentes recensuit.

GRIFFITH HUGHES description of Barbados, Lond. 1750. fol. Acriter video censer, sed certe plurimas raras parumque notas plantas describit, pingit, animalia, aerem, aquas locosque refert, melius, quam in plurimis id genus libris, etsi methodum desideres.

EGERHARD OLAVI Enarrationes de natura & constitutione Islandia formata & transformata per eruptiones ignis, Hafn. 1750. 8.

Ad Lexica quæ hoc loco citavimus, referri adhuc meretur G. HENRICH ZINCK deutsches real manufactur und handverks lexicon, Lips. 1735.

Ditior adhuc ut recentior est E. CHAMBERS Cyclopædia sive universale scientiarum Lexicon, Londini 1743. 2. vol. fol. & sæpe ibi recusa. Ad mathesin inprimis & medicinam spectat, & Transactionum inventa complectitur suis sub titulis. Parisiis etiam an. 1745. 2. vol. fol. & in Italia recusus est.

Dictionnaire des Arts & des Sciences, quod Parisiis an. 1731. 4. vol. fol. prodiit. Mechanica magis artiumque voces & Gallicas rerum ideas habet.

Plenius est & medico utilius le Dictionnaire universel de Commerce, quod sæpe Parisiis, Genevæ vero uberius prodiit an. 1742. 4. vol. fol. Ad materiem vero inprimis medicam pertinet & utilissimum est, quo loco idem repetito laudabo.

Minoris momenti compendia ob numerum & imperfectionem omitto, & de CHOMELII Dictionario œconomico, Lugduni 1719. fol. 2. vol. & alias edito, alibi dicam.

Huc refero nondum visum Opus JOHANNIS HILL, novi Plinii, qui omnem historiam naturalem tribus in folio voluminibus complectitur.

(a) In ordine legendi methodoque magna pars utilitatis librorum ponitur. R. HOOKIUS, vir, uti notum est, ingeniosissimus, jubet historias rerum in Schedulis describi, signis & steganographica aliqua compendiaria notarum ratione. Deinde Schedulas illini in Librum, cui in singula pagina proprius sit Titulus, ut una pag. congeneres observationes contineat. In Operibus posthumis p. 64. JOH. DE GORTER propria dissertatione paulo aliam methodum collectaneorum descripsit.

Ego vero variis tentatis hanc optimam inveni. Libri boni & methodici omnino non sunt excerpenti, ne succumbamus oneri, & fugiamus laborem, quem eo majorem experimur, quo melioris notæ scriptum est: sed in Miscellaneis, Itineribus, Topographiis, Observationibus, Diariis legendis Schedulas præsto habeo numerosissimas. In iis vel brevem descriptionem rerum præcipuarum, vel si ea longior sit titulum cum monito conjicio, in ea parte Libri de ea re utilem haberi tractationem. Has Schedulas in propria scrinia distribuo, quæ in loculos divisa sunt, quorum singuli aliquam, non nimis amplam partem alicujus artis continent. Sic Thesaurus absque labore nascitur observationum, quas data occasione consulere, ordinare, iisque uti liberum sit. Collectanea, ut vocant, nimis laboriosa sunt, quod ad quemlibet alicujus Auctoris locum, longa opera, necesse sit quærere titulum.

sparsis circa me foliis in liberis chartis suo loco adnotabam: Habebam enim parata uudique folia sparsa, singula suo titulo notata, ut v. g. in uno scriberem omnia, quæ inveniebam de aqua, in altero, cui titulus erat de aere, omnia quæ inveniebam de aere, & sic porro, deinde ordinabam ea quæ collegeram, & hac ratione omnia experimenta colliguntur & revocantur ad suos titulos, ut aliquid certi habeat auro non vendibile, qui sibi talem indicem construxit. Neque major labor est, quam is ipse quo Libri leguntur, nam dum legis v. g. historiam naturalem, & parata habes folia titulis suis inscripta, ut v. g. AER, in singulis annota quod de ea materie invenitur, & deinde ad singulares titulos omnia adcuratius revocanda sunt. Quando colligo, nullo ordine hoc facio, sed quando omnia collegi, tunc ea ordino. Quomodo eadem & ad quænam capita revocanda sint, hic indicabo.

Dividitur ergo Physica experimentalis, quatenus ad Medicinam spectat 1. in Astronomiam, 2. in elementalem Physicam, 3. in Chemicam, 4. in qualitates omnium corporum. Sic divido totum Opus, & proinde ex indice horum Auctorum quatuor generalia capita in nostro indice constitui debent, & sic in meum usum tria volumina confeci in folio, quæ dividuntur in quatuor partes, & quidquid in mutatione Physica in meis experimentis deprehendo ex Sole & Luna, &c. hoc revoco ad Astronomiam. Objicies, nihil Astronomiam ad Medicum facere. Verum meliora docent, qui nostro sæculo scripserunt, & demonstraverunt actiones Astrorum in nostra corpora. Non dico de CARDANO, qui omnino nugax est in hisce, neque de HELMONTIO (a), sed de MEADIO (b), qui demonstravit imperium Solis & Lunæ in corpora humana. 2. Ad elementa Physica revoco omne, quod ad ignem, aquam, aerem & terram spectat. 3. Ad Chemica statim dicam, quæ eo spectent. 4. Ad qualitates corporum revoco omnia, quæ sensu percipiuntur, ut colores, odores, sapores, & omnes porro sensibiles qualitates.

Altera pars Physices, quæ nempe ratiocinatur ex prioribus, & ipsa suos Auctores habuit. Supra dixi totam Physicam constare duabus partibus, quarum una colligit experimenta, hanc absolvimus, & dedimus consilia eam acquirendi; altera utitur ratiocinio, in illo experimento fundato, indeque deducit aliqua quæ ex priori parte cognosci neutiquam poterant. Hæc etiam ut a nobis addiscatur, eget prudentissimo consilio, etenim hæc est ea pars in qua longissime errare possumus, vel incidere in hujusmodi homines, qui nos in errores ducunt facilius, quam in præcedenti parte, nam raro erratur in colligendis experimentis, sed sæpe turpiter erratur a vero ratiocinio. Quinam ergo hi sint, qui commendari possunt in hac parte diutius certe hæsi electurus.

1. Quæ-

(a) FRANCISCUM MERCURIUM vult Præceptor, cujus an. 1685. 8. Londini impressi sunt *Discourses concerning macro and microcosm, and their union*. Deinde Amstel. 1697. 8. *Cogitationes supra quatuor priora capita L. I. MOYSIS*. Denique *observationes de homine & morbis*. Mira hypothese imbutus, Solem marem, Lunam foeminam, illum ignem & principium activum, hanc aquam, sive principium passivum, in homine & animalibus regere docuit, & nescio quæ alia mentis emotæ ludibria,

(b) De eo Auctore jam supra dixi.

1. Quæcunque GALILÆUS GALILÆI scripsit ad Physicam spectantia, ea omnia bona sunt; nam quæ veteres quidem ratiocinati sunt in Physicis, ea nullius sunt momenti, iste vero vir primus ratiocinari, & rigore mathematico egregia deducere incepit, quæ omnia certe examen sustinere possunt.

2. Ejus discipulus nobilissimus TORRICELLIUS in hac parte etiam primum tenet locum, sequutus enim suum Præceptorem, ratiocinatur nihilo minus severe, quam Mathematicus, sed Opera ejus rara sunt.

3. BENEDICTUS CASTELLUS, qui in *tractatu aquarum* jam commendatus fuit, egregius est Physicus, & nihil ex hypothesi, sed tantum ex experimentis concludit.

4. JOHANNES ALPHONSUS BORELLUS hic etiam egregie scripsit, sed tamen hoc dolendum est in eo, quod nimis Chemicis speculationibus indulserit (a).

5. LAURENTIUS BELLINI, qui exempla dedit certa, quomodo ex datis Physicis possimus ratiocinari (b).

6. MARIOTTE in tractatu *Essais de Physique*.

7. PERRAULTIUS in tractatu ibidem inscripto *Essais de Physique*, & in omnibus etiam suis tractatibus (c).

8. Meretur & hic laudem primam Clarissimus des AMONTONS, regiae Societatis Socius, ob egregia sua inventa, quæ reperiuntur in Libro dicto, *Mémoires de l'Académie des Sciences*.

9. PHIL. DE LA HIRE, ejusdem Academiae celeberrimus Sodalit in suis Operibus (d).

10. Magnus HUGENIUS in omnibus tractatibus, quos edidit, ut de *Motu*, de *Pendulis*, de *Horologiis*, quod Opus nunquam sane peribit, quamdiu mortales scientias adsequentur. Idem de *Ludo*, & *Calculis inveniendis in Ludis*, de *Luce*, de *Gravitate*, &c. ubique optime scripsit.

11. Verum qui in hac parte primum fundamentum jecit & princeps haberi debet, est ISAACUS NEWTONUS, qui unum tantum hic potest, quantum omnes mortales simul junctis viribus. Hoc docent ejus *Elementa Philosophiæ Mathematicæ*. Qui hujus viri experimenta incomparabilia in Historia naturali & ratiocinia egregia nosse voluerit, videat ejus tractatum de *luce* seu *Opticam* ejus primo Anglice conscriptam, deinde in linguam Latinam translata. Quando primum hæc Opera vidi, obstupui certe, quia nunquam apud Philosophos hujusmodi videram leges, neque ita castigata omnia ratiocinia & ad Mathematicam limam revocata vidi, & nullibi severius ex ipsis experimentis ratiocinia deducta adverti, adeo ut semper futurum sit optimum omnium exemplar, quod haberi possit.

Dixi ergo, quibus opus habeat Medicus ex Mathematicis, & quibus ex physicis; at quibus ex Chemicis indigeat, nunc docendum venit.

(a) Nempe in explicando motu muscolari, quod posthumum Opus passim mistum est semiveris hypothesibus.

(b) Mathematica potius forma, quam vera methodo usum esse ex multis apparebit, quando ejus Opera recensimus.

(c) Valde Theoreticus, neque felicissimus in hypothesibus.

(d) Aliter de ipso sentit LEIBNIZIUS in *Commercio Litterario*, quod ipsi cum BERNOULLIO intercessit. Cæterum judicia nostra de physicis Scriptoribus superius legi possunt.

METHODI STUDII MEDICI PARS V. CHIMIA. CAPUT I.

De Chemia in genere.



Hemia methodum exhibet rerum corporearum indagandarum tam in Physicis quam in ipsa Medicina. Hæc etiam est ratio, cur a Physicis ad Chemica transire debeat tiro Medicus, quia nempe Chemia exhibet methodum, qua Medicus & Physicus experimenta addiscere possunt. Nihil est aliud Chemia, quam corporum sensibilibus conjunctio & separatio per quosdam motus excitatos, qui præsertim diriguntur per ignem, eaque ars suppeditat hominibus modum, ea corpora, quæ examinat, detegendi, & deinde exhibet motus, qui ex separatione & compositione horum corporum observantur. Cum etiam tota Physica nihil sit nisi observatio motuum & mutationum, nemo dubitat, quin hæc scientia Chemica maximum sit adminiculum ad hoc Medium, quo discuntur corporum singularium vires & facultates. Didicit enim Medicus corporum naturam ex Mathematicis, deducit observationes ex rerum natura, deinde ratiocinatus est ex prioribus. Verum, ut, quæ propria sunt cuicque corpori, definiat, arte eget, qua componere diversa corpora, composita sejungere, movere quiescentia, ad quietem mota reducere possit, & dum hoc arte utitur, est ipsi animadvertendum, quid ex his compositionibus sequatur, hocque modo cognoscere poterit plurima in corporibus, quæ alias certe non cognosceret.

Dico nunc in hac paragrapho, Chemiam æque facere ad Physicum, quam ad Medicum; nam Chemia omnia corpora examinat, & inquit, & nullum discrimen facit, siue plantas, siue animalia, siue mineralia tractet, habet ubique easdem operationes & instrumenta, quibus tentat ea cognoscere.

Chemia indagat maxime singulares corporum indoles, unde pendent præcipuæ actiones. Hæc maxima Chemiæ laus est, quod indaget & detegat corporum proprietates, quæ nisi per experimenta Chemica investigarentur, cognosci non possent. Si pergas quærere, quid Chemia tanti emolumenti præstet? respondebo facile: Mathematici nullam ideam corporum potuerunt dare nisi generalissimam, quæsi verunt enim tantum, quid sit illud, quod vocatur corpus, & demonstraverunt ejus aliqua attributa, sed tantum communia, quæ in genere corpus

con-

constituunt: quid vero in hoc dato corpore sit, quod hoc corpus faciat esse illud corpus, Mathematici non attigerunt.

Verum Physico hæc illaque singularia corpora observanda sunt; hinc utitur Chemia; illa enim maxime hoc facit, quod Physicus non generalia modo observet, sed perscrutetur indolem corporum singularem. Corpora enim, quæ in natura operantur, diversa inter se sunt, indole, & agunt per illud, quod quodque singulare habet, non per illud, quod generale & commune iis est. Vides Medicum debere scire, quid illud singulare in quocunque corpore sit, per quod edat actionem diversam ab ea, quam aliud quodcunque corpus edit. Ita scio corpus esse grave, mobile, & hanc cognitionem applicari jam corpori, habebit utique actionem communem omnibus corporibus ex duobus illis attributis. Verum hæc cognitio parum juvat. Applica v. gr. corpori humano arsenicum, corrodet cutem, ventriculum, occidetque. Sed pondus & generalia illa non docebunt, quare arsenicum tantos edat effectus; nam ex Mathematica non patet, quare non æque arsenico ac nive uti liceat. Chemia autem in arsenico invenit per sua experimenta vim deleteriam inesse huic arsenico. Hoc nunc voco singularem naturam corporum cognoscere, quam nunquam per generalia corporum attributa cognoscere possum.

Illa ergo scientia, quæ naturam singularem, unde actio singularis corporum pendet, explicat, utilissima est totius Physices, & Chemia vocatur. Ita nemo certe sciret in rerum natura esse tale principium motus, ut se tanta vi associarent corpora conjuncta sine causa externa, ut nunquam iterum disjungi ulla arte possint; nemo, inquam, hoc unquam scivisset a priori, neque unquam ex principiis Mathematicis & Mechanicis deduceretur; sed a posteriore docet Chemia talia esse, nemo enim nescit, duo corpora simul mixta ita se adsociare per operationes Chemicas, ut separari nequeant, & in unum tertium corpus confluant: verum hoc cognosci non potest per communes seu generales corporum, sed per singulares duorum horum corporum proprietates, sive quod eodem redit, hoc non potest dignosci nisi per Chemiam, naturam enim aquæ, oleorum, spirituum, salium, terræ, &c. sola fere Chemia detegit. Quanti sit hæc cognoscere omnes norunt, quia hæc præcipua elementa sunt, quæ ingrediuntur in corpus humanum, & unde actiones nostræ omnes pendent.

Chemia describit modum, quo possunt excitari actiones corporeæ, quas exercere vult & Philosophus & Medicus. Pone Medicum velle in stomacho excitare motum, quo liquida ingesta a se mutuo separentur, & eorum partes a se mutuo & a circumjacentibus partibus stimulentur, nisi Chemicus sit, hanc actionem novisse non potest. Facile vero est Chemico. Sume aceti destillati unciam unam, spiritus salis ammoniaci drachmas quinque, & misce, bibat æger primo drachmam unam, deinde alteram, sicque sursum deorsumque omnia movebuntur & effervescent; si hujusmodi motus exigeretur, solus eum producere novit Chemicus. Iterum pone Physicum velle uno momento excitare ignem, seu tonitru. Sume adeo olei caryophyllorum drachmam unam, & duplum salis nitri rectificati; excitabitur ignis citissime. Sine Chemiæ vero cognitione hoc nullo modo effici poterit.

Chemiæ adeo maxima utilitas est, quæ docet, quomodo excitari possint quidam motus & actiones, quas ars imperat; in his enim producendis Chemia sola aliquid præstare poterit, quod exemplis confirmare necesse non est, cum vulgo notum sit Medicos remedia adhibere composita in curatione morborum, quorum ope sanantur ægri; Physicos vero, si experimenta rerum naturalium velint facere, etiam Chemicis uti operationibus, & mixtis corporibus.

Chemia indagat per experimenta naturam ipsam, & vires vel actiones nostrorum alimentorum, potulentorum, humorum, remediorum, venenorum, vix imitabili aliis artibus auxilio.

Novit Physicus, naturam corporum tunc dici cognosci, quando figura, pondus, soliditas, rigiditas, porositas explicantur: verum illud omne imprimis facit Chemia, dum tentat hæc corpora mutare, immutabilia reddere, mutata examinare, &c. Deinde quomodo tentamus indagare corporum proprietates; illud nempe fiet, dum hæc corpora mutata & separata iterum miscentur. Hoc optime facit Chemia post singulam applicationem corporum separatorum, mutatorum ad se invicem, sic Chemia fere omnia perscrutatur in natura. Si quis nosse velit, quibus partibus constet panis, id efficiet per operationes Chemicas, & eadem ratione nostri corporis humores non melius cognoscuntur, nisi per Chemica experimenta. Non ideo Chemia promittit se docturam, ex quibus elementis humores constent, id tamen potest, panem his fieri saporibus, qualitatibus, hæcque producere actiones, hanc aliam naturam sanguinem possidere, &c. Idem de omnibus phænomenis valet ad Physicam & Medicinam pertinentibus, quod exemplis quidem ostendere necesse non est, unicum tamen addam. Pone te scire datum fuisse mercurium sublimatum, rogo omnes Medicos quid dandum sit in hoc casu, seposita una Chemia? filebunt equidem rogati, Chemicus vero promptus respondebit: Mercurius sublimatus est acidum, quod corrodit viscera, ergo sume salis tartari drachmas quinque, solve in libra una aquæ, & da bibendum ægro, hoc assumpto fiet ipso momento pulvis subflavus, & ex aqua Mercurius solus præcipitabitur; nam alcalia hæc acidum corrosivum involvunt. Si vero arsenicum datum esset, tali quoque ratiocinio cognosceret, qua arte esset demendum.

Ut ergo tam nobilem & necessariam atque utilem artem, breviter atque integre addiscat in suos usus Medicus, debent primo doceri Chemiæ generalia, quæ absolvuntur pertractatione instrumentorum, objecti, atque operationum ipsarum, harumque productis.

Has pertractationes docuerunt candidissime (nempe ea, quæ de instrumentis, causis, objectis, productis agunt), sequentes Auctores.

1. NICOLAUS le FEVRE, edito Opere Parisiis 2. vol. in 12. repetita impressione Lugd. Bat. 2. vol. in 12. (a).

2. De-

(a) Non quidem scopus est, neque satis instructus sum in hac parte historiæ Medicæ,
ut

2. Descripsit eadem optime CL. LEMERY pater (a), recuso multoties Opere, emendata etiam est ultima editio, quotannis enim fere novam Auctor edidit, atque adeo ultima editio plura habet observata, quibus carent aliæ. Editio ultima est Lugd. Bat. 1716., bona tamen est etiam Lugd. Bat. 1697. quæ inscribitur acsi Parisiis edita esset, & tamen Lugduni Batavorum prodiit.

3. Liber etiam editus est a CHRISTOPHORO MORLEY (b), Doctore Britanno, in 4. cui titulus est *Collectanea Chemica Leidensia Mætsiana, Marcgraviana, & le Mortiana*, in quo Libro etiam quæ ad hanc rem pertinent, nonnulla habentur. Editus est Lugd. Bat. in 4. postea *Amstelodami* in 8. adornante editionem D. M. GKENs.

4. Pariter satisfaciunt huic parti *Chemix Elementa Pyrosophix* CONRADI BARKHUSEN, Libro in 4. Lugd. Bat. editio an. 1717. apud Haak (c).

C A

ut fuse Chemicos Scriptores omnes recensere suscipiam, eroque in hac parte hujus Commentarii quam alibi brevior, uti & ipse PRÆCEPTOR valde obiter Scriptores hujus artis recensuit. Compendiorum Chemicorum Scriptores, & qui instrumenta Chemica & processus vulgo dictos descripserunt aliquos excitare jubet ordo. N. le FEVRE cujus hic mentio fit, Gallus fuit & Pharmacopola, & primus forte in ea Lingua edidit compendium processuum chemicorum vulgatiorem, secundum ordinem corporum, quorum analysin describit. Editio mea Leidæ prodiit 1669. 2. vol. 12. Parisiis autem impressa fuerat 1660. 2. vol. 8.

Citatus hic le FEVRE Anglice prodiit 1670. 8.

(a) Multo melior NICOLAUS LEMERY, qui in Gallia Chemicas Lectiones aperuit, non sine magno & gentis suæ & exterorum applausu: facile, planum & ex magis utilibus selectum compendium scripsit, quod Parisiis 1675. 1679. 1682. 1683. 1690. 8. & alias, & undecimo post mortem Auctoris Leidæ prodiit 1716. 8. Hoc habet incommodum, quod Cartesianas & corpusculares eventuum rationes debilesque ætiologias ubique admisceat; quod processus absque præposito aliquo fine recenseat unice historicus; neque reconditas magis Germanorum operationes habeat, aut rariorum paulo corporum analyses, Zinci, Boracis. In usus tironis aptissimus est.

N. LEMERY compendium prodiit etiam Parisi. 1681. & ibid. 1697. 8. 1701. 1713. 8. 1730. 8. opt. Genev. 1691. 12. 168. 8. Latine, Germanice, Dresd. 1734. 8. EJUSDEM etiam est *recueil de curiosités*, Amstel. 1697. 8. 2. vol.

(b) Merus catalogus processuum Chemicorum & Pharmaceuticorum 543. Editio mea prodiit an. 1702. Antvverpiæ, 8. prior Leidæ 1684. 4.

(c) Inimici sui Librum optimus hic commendat PRÆCEPTOR, hominis cæterum, in cujus omnibus scriptis confusum aliquid & inordinatum subest. Nempe J. CONRADI BARCHUSEN *Pyrosophia* prodiit Leidæ 1698. 4. Varia vana habet. Aurum dicit ab ventriculo humano subigi posse. Ceterum Alchemiam metallurgicam, & Iatro-Chemiam continet. Ejusdem Libri compendium est *ratiocinii Chemici more geometrico concinnatum* excusum est Leid. 1712. 8. Id experimenta continet, non geometricas demonstrationes.

Sed recentiora tempora, alia compendia Chemica minime negligenda proutulerunt, quorum unum STAHLII est, cujus *Fundamenta Chemia dogmatica* quæ nuper Norimbergæ 4. 1746. & 1747. recusa & tertia parte aucta prodierunt. Multa hic recondita neque nudi processus, sed ad detegendam naturam principiorum mixtorum corporum sagaciter selectæ encheireses.

Hujus Libri quasi compendium est in *Introductione Chemica* GODOFREDI ROHTII, quæ Germanice Lipsiæ variis annis ab ipso anno 1717. in 8. prodiit. Gallica vero versio a D. CLOUSIER edita est Parisiis an. 1741. 12. Instrumentorum, operationum encheiresium bonam descriptionem, multa etiam ex interiori Chemia continet.

Inter compendia etiam referri visum *Nouveau Cours de Chymie suivant Neuvton & Stahl*. Parisiis 1736. 12. p. 11.

Sed & D. MALOUIN *Traité de la Chymie*, Parisiis 1734. 12. * laudatores invenit, et si per censuras, quas solas vidi, Auctor non videatur satis literis imbutus.

HELFRICI JUNKEN *Chemia experimentalis curiosa*. Francof. 1681. 8.

CAR. MÆTS (P. T.) *Chemia rationalis & Praxis Chemicæ rationalis*. Leidæ 1631.

4. describit processus, deinde remedia secundum ordinem morborum dispositos.

JAC. LE MORT *Compendium Chemicum*. Leid. 1682. 12.

GEORG. WILSON *complete Course of Chymistry*. Lond. 1699. 8. * Opus 40. annorum, sæpe recusum, suum peculiare Systema habet.

G. WEDEL *Compendium Chemia theoretica & practica*. Jenæ 1715. 4. *

Ad compendia Chemica sequentia addimus.

CONRAD KUNRAHT *destillir und arzneymbuch*, Hamb. 1638. 4. Francof. 1703. 4.

J. SIG. ELSHOLZ *destillatoria curiosa*, Berolin. 1674. 8. Anglice, Lond. 1677. 12.

HERMAN NIC. GRIMM *compendium medico-chymicum*, Bataviæ 1679. 8.

MICH. ETTMULLER *Chemia rationalis*, Leid. 1684 4. EJ. op. *Pharmaceutico-chymica*, Lugd. 1686. 4.

JACOB BARNER *Chimia philosophica*, Norimberg. 1689. 8. Laudari video.

STAHLII etiam est *einleitung zur chymie*, Lips. 1729. 8.

GODOFRIDI ROHTII *gründliche anlsitung zur chymie*, Lips. 1720. 8. 1745. 9. &c.

Nouveau cours de chymie, &c. primum prodiit Parisiis 1723. 12. opus SENACI.

PETER SHAW. *new method of chymistry*, Lond. 1727. 8. EJ. *chymical lectures read in* 1731. 1732. 1733. Lond. 1734. 8.

CL. MALOUIN etiam est *Chimie médicinale*, Paris. 1750. 12. 2. vol.

J. JUNKER *conspectus* auctior prodiit Hall. 1749. & 1750. 4. 2. vol.

BOERHAAVII *Elementa Chemica* recusa etiam sunt Paris. 1733. 4. 2. vol. Anglica hujus operis versio, præter eas quas diximus, exstat etiam Londini 1741. 4. a P. SHAW data.

GOTTFR. HENR. BURGHART *destillirkunst*, Bresl. 1736. 8. & *zusätze zur destillirkunst*, ib. 1748. 8.

J. JUNKER *Conspectus Chemia theoreico practica*. Hal. 1730. 4. Usus est STAHLIO & BECHERO, tum GLAUBERO, KUNKELIO, StahlII inprimis peculiaria inventa habet.

Denique inter antiquiores FRANCISCI VIGANI Itali *Medulla Chemia*. Lond. 1687. 8. ex brevitate & facilitate laudatur; sed sparsos tantum, ut vocant, processus continet.

Sed multis annis post has prælectiones BOERHAAVIUS ipse *Elementa Chemia* edidit quæ an. 1732 Leidæ 4. 2. vol. prodierunt, inde fere ubique per Europam recusa sunt, & reliqua PRÆCEPTORIS Opera ut mole, ita perfectione superant. Tomo I. historia Chemiæ & nova Theoria Elementorum Physico-Chemica traditur; altero encheireses. Sed ab Empiria BOERHAAVIUS Chemiam revocavit inprimis ad fines Medicos, Physiologicos, arque Physicos, & ad detegendam rerum naturam. Dictio purissima, vulgatiores tamen encheireses, & ad usum tironum inprimis continet, rariora metallorum & semi-metallorum Chemica phenomena potius apud Germanos quæras. Hoc Opus ab anonymo Anglo excerptum & in compendium digestum, prodiit Londini 1732. 8. cum variis & criticis satis asperis notulis, ad quas pro PRÆCEPTORE respondet P. ROGERS. Aliam versionem edidit TIMOTHEUS DALLOWE, addiditque aliquas correctiones, cum Auctoris consensu editas. Lond. 1735. 4.

Ejus Libri compendium edidit de la METTRIE, *Abrégé de la Theorie Chimique, tiré des Ecrits de Boerhaave*. Parisiis 1741. 12. Nuper autem integra versio prodiit.

CASPAR NEUMANNUS in posthumis prælectionibus Chemicis, non solum pharmaceutice, sed chemice etiam omnia fere corpora, quorum aliquis usus est in Chemicis, explicavit magno Opere, quod Berolini an. 1740. 4. sed maculose prodiit, ut Illustris TREWIUS observat. In Metallis multa minus vulgaria, tum omnium fere simplicium Medicamentorum Analyses aliquas, plantarum extracta gummosa & resinosa, & in vires medicatas bonas animadversiones continet, ad usum tironum pariter commendabilis, si alia Lingua extaret. Aliqua mineralia, ut sales alcalinos fixos, sulfur, ferrum, antimonium, deinde ex Vegetabilibus vinum, cerevisiam, theam, coffeam, opium caryophyllos, ex animalibus formicas, castoreum, peculiari cura & fusius descripsit propriis Libellis, sed hic una recusis. Censorius cæterum, & dictione neglectissima, sive ad posthuma Opera respexeris, sive ad ea quæ ipse edidit.

CAPUT II.

Experimentorum Chemicorum Auctores.

HI Auctores sufficiunt pro primo fundamento: Quando ex hisce Auctoribus operationes addidit Medicus, tunc legendi sunt ii Auctores, qui per experimenta hanc artem illustraverunt, hoc est, debet legere eos viros, qui omnem partem Medicinæ & Physicæ per egregia experimenta decorantes continuo nova inventa addiderunt.

1. Eminent princeps omnium **ROBERTUS BOYLEUS** (a), jam alibi laudatus, in omnibus suis Operibus, qui plus solus præstitit quam omnes alii; ex hoc Opere collecta sunt chemica Londini Lingua Anglica, & dicitur *Chemia contracta*.

2. Præter hunc extat **KUNKELIUS** (b), Chemicus famigeratissimus, & omnium forte laboriosissimus, & mirificus in experimentis. Multum ille aurum impendit ad arcana possidenda in Chemia, verum hoc dolendum est, unice quæsisisse Lapidem Philosophorum. Hunc virum aluit Serenissimus Rex Borussiae **FREDERICUS**, & pater ejus Elector **FREDERICUS WILHELMUS**.

Opera

NEUMANNI citatum opus multo auctius nunc recuditur, & Berolini anno 1749. & 1750. tria jam volumina eo pertinentia prodierunt.

J. H. SCHULZE *chemische versuche*, Hall. 1745. 8.

MACQUER *Elémens de Chymie théorique*, Paris. 1749. 12. Bono ordine scriptum compendium & periti viri cum variis in tabulam adfinitatum **D. GEOFROI** animadversionibus, explicationibus phaenomenorum, experimentis propriis in calce, in arsenico institutis, &c.

FRID. HOFMAN *Chymia rationalis & experimentalis*, Leid. 1748. 8. Breve & ordinatum, etsi non plenum compendium.

Leçons de Chymie de l'université de Montpellier, Paris. 1750. 12. Opus **D. GONTARD**.

(a) Vide in Physicis suo loco.

(b) Videtur **PRÆCEPTOR** hic imprimis *Laboratorium Chemicum* velle, quod in 8. cura **D. Engellederi** an. 1716. & 1722. prodiit, vel *Opuscula Chemica minora*, Francofurti an. 1721. impressa, quorum passim aliqua polemica sunt. Industrius certe vir per suos labores ad equestrem dignitatem evectus, & ex arte vitriaria atque noviter invento colore vitri rubineo, tum ex phosphoro urinoso quem inter primos descripsit, clarus, cui tamen **STAHLIUS**, peritus harum rerum iudex, **BECCHERUM**, maxime in definiendis rerum principiis, præfert. Sulfur nescio quo motus odio expunxit ex numero principiorum metallicorum, neque præter terram, sal & mercurium quidquam admisit in metallis. Mercurium currentem se ex metallis habuisse; metalla transmutasse affirmat. Acidum pro calido, alcali pro frigido habet, magno, cum ad hominem referat, errore. Cæterum opificum & adeptorum more inordinatius scripsit & plebeia dictione usus est.

KUNKELII *Laboratorium* prodiit etiam 1728. 8. **EJUSDEM** etiam sunt *observation von den fixen und flüchtigen salzen*, Hamburg. 1676. 8. *de principiis chemicis salibus acidis*, &c. **VVittemb.** 1677. 8. *de nitro & de phosphoro minerali*, Lips. 1678. 8. **EJ.** *experiments of chymical philosophy*, Lips. 1705. 8.

Cæterum **KUNKELIUS** vir industrius fuit, uti diximus, & recte opportunitatibus usus est, iudice **NEUMANNO**, etsi theoria minus bona usus.

J. BECCHERI quidem est *Chymischer Glückshafen oder grosse chymische concordanz*, sed ad alchemiam pertinet. Editio hujus Libri Hallensis 1726. 4. loco citato dicta est cum præfatione **STAHLII**. **BECCHERI** etiam est *tripus Hermeticus seu laboratorium portatile*, Francof. 1689. 8. **EJ.** *experimentum chymicum novum* 1671. 8.

Opera ejus dignissima sunt, quæ legantur, five habeamus ejus Opera in ANTONII NERII, *artem fornacariam & vitriariam*; five habeamus ejus *Experimenta Chemica*, optima sunt omnia. Laboriosus enim vir fuit, per totum orbem litterarum commercia aluit, itinera varia instituit, & candide omnia nota revelavit. Nisi semper inhiasset conficiendo Lapidem Philosophorum, plura præstitisset orbi litterato, & forsan ipsum BOYLEUM superasset; sed nimis huic Alchemiæ deditus erat.

3. Sequitur NEHEMIAS GREW, qui huc referri meretur, in omnibus suis Operibus, qualia sunt ejus *Opera botanica* (a) in folio, & ejus *Cosmologia sacra*, in qua pulcherrima experimenta inveniuntur, & *Anatomia Plantarum*, qui Liber editus est a BOYLEO.

4. Inter principes Chemicos habetur etiam HOMBERGIUS (b), vir egregius, versatissimus & accuratissimus, qui liberalitate LUDOVICI XIV. instructus pulcherrima instituens experimenta candidissime descripsit; ejus Opera sparsim inveniuntur in Libris dictis, *Mémoires de l'Académie des Sciences*.

5. Huc quoque refertur D. GEOFFROY (c), Professor Regis Parisinus. Ejus Opera in dictis Libris *Mémoires*, &c. reperiuntur.

6. NERIUS de arte vitriaria etiam legi meretur (d). In Anglia floruit præterea GEORGIUS STARKEY, & reliqui etiam, qui in *Actis Philosophorum* inveniuntur, sed eos non citabo, quia breviter scripserunt, eorumque Libellos

ex

JOACHIMUS ergo BECCHERUS acris vir ingenii, nimis tamen & gloriæ & pecuniæ cupidus, sæpe spes potius suas quam experimenta edidit, observante LEIBNIZIO in *Miscellaneis Berolinensibus* I. p. 95. Præter varia Oeconomica, inprimis scripsit *Physicam subterraneam* quam, cum 1669. 1675. Francofurti prodisset, dignam judicavit STAHLIUS, quam suo cum addito quasi compendio ederet an. 1703. 8. & 1738. 4. Idem edidit *Metallurgiam*, Francofurti 1661. 8. *Chymischer Glückshafen*, Francofurti 1682. 4. Halæ 1726. 4. & minora ejus Opuscula collegit D. ROHTSCHOLZ Norimbergæ 1719. 8. Tria principia chemica ita mutavit, ut tres terras, vitrescibilem, mercurialem, & inflammabilem pro corporum elementis exhiberet, experimentis confirmaret. STAHLII ibi, NEUMANNI, ROHTII & fere omnium recentiorum consensum meritus est. Ferrum etiam artificiale ex oleo lini & argilla, atque artificiale sulfur ex carbonum pulvere & oleo vitrioli invenit.

(a) NEHEMIAS GREW paucos nec magnos Libellos Chemicos scripsit, industrius tamen ubique naturæ observator. Ejus extat Libellus *de Sale cathartico Ebeshamensi*. Lond. 1695. 12. & *of the nature proces and cause of mixture*. ibid. 1675. 8. Gallice versus aut compilatus (*Journ. des Savans*. 1679. n. 14.) Denique ejus experimenta de solutione salium in aqua extant, cum ejus *anatomie plantarum*. Londini 1682. in fol. edita.

(b) WILHELMUS HOMBERGIUS, Parisinus Academicus, homo industrii & ardentis in experimenta animi, ut apparet ex iis quæ suscepit cum humano stercore, sed non ubique satis patiens contrarii eventus expectator, & in theoriis nimius. Inde aliqua ejus experimenta in dubium vocata sunt, ut auri exhalatio in speculo caustico. Scripta ejus omnia in Monumentis Regiis continentur.

(c) STEPHANUS FRANCISCUS GEOFFROY, Medicus, & Academicus Parisinus, Pharmaceuticen & Chemicam docuit, de adfinitatibus metallorum, vitriolo & ferro observationes aliquas edidit, posthumum denique Opus de materie medica scripsit, imperfectum equidem, sed quo omnium plantarum officinalium analyses chemiciæ continerentur, nisi aliqua pars perisset.

(d) De arte vitriaria longe accuratius scripsit KUNKELIUS, cujus *glas kunst* five *ars vitriaria* prodit Lipsiæ an. 1689. 4. Veterem rubineorum vitreorum fabricandorum artem revocavit. Mechanice magis de eadem arte scripsit H. D. de BLANCOURT de *l'art de la Verrerie*. Paris. 1697.

ex illis Actis unice excerpere oportet. Illi sunt præcipui inter Chemicos, qui ita instituerunt experimenta, ut dirigerent ea ad certum scopum. Potest addi OTTO TACHENIUS (a), quoad experimenta, sed non valet in theoria.

Y Expen-
12. Eo etiam pertinent GEOFROY de Vitro, *Mém. de l'Acad.* 1744. De Vitri fabrica ibid. 1737. REAUMUR de Porcellana 1727. 1729. & de Vitro ex Porcellana mutato 1739. 1743.

(a) OTTONIS TACHENII extat, Brunsvicæ editus ann. 1668. 12. *Hippocrates Chemicus*, deinde *Clavis Medicina Hippocratica*, Francofurti 1669. 12. tandem *de morborum principe* Libellus. Osnabrug. 1679. 12. Acidum & alcali pro principiis rerum habuit, ab acido morbos omnes fere deduxit, HIPPOCRATI suas opiniones adfinxit, & experimenta pauca, conviciorum vero protulit plurimum. In hoc ordine vix merebatur recenferi. Ignarus Anatomes, pancreas cartilaginem quamdam esse coram Brunsvicensi DUCE non erubuit dicere. SCHELHAMMER *Physiolog.* p. LX. Salem, viperarum, quem adeo eleganter parabat, & cujus occasione lites cum ZWELFERO enatæ sunt, fraudulente cum spiritu acido fixatum fuisse STAHLIUS, gravissimus Auctor, in tertio volumine *fundamentorum Chemicæ* monet.

OTT. TACHENII *Hippocrates chymicus*, Parisiis recusatus est 1669. 8. & recognitus a F. BURRHO, Bruxell. 1690. 12.

De J. B. van HELMONT adhuc adnotamus, non posse etiam dissimulari in BUTLERO, in Libro *de magnetica vulneris curatione*, in *alcahesti* historia, multa ab eo in nimium aucta esse.

Sed oportet utique hunc Chemicorum, qui experimenta descripserunt, numerum augere. Primo loco dicendus est JOHANNES BAPTISTA VAN HELMONT, cujus vita & merita inprimis PRÆCEPTOR descripsit in primo tomo *elementorum Chemicæ*. Vanitatem equidem & nimias laudes eorum, quæ non erat expertus, in tanto Praxeos suæ frigore (BECCHER *Physica subterranea*. p. 92.) omnino non laudamus. Sed acuti vir ingenii Scholarum qualitates, fraudesque & inutilem verborum per experimenta & sua, & aliunde ingeniose collecta primus impugnavit, totamque inprimis fere physiologiam suis paradoxis nec per omnia veris, sed multa sparsa utilia habentibus, dissertationibus illustravit. Plurimæ sunt scriptorum editiones. Mea est apud Elzevirios 1652. 4. cui adjungere oportet Belgica Opera, Roterodami 1660. 4. edita.

Huc denuo pertinet GEORGIUS ERNESTUS STAHLIUS, in aliis etiam Medicinæ partibus celebris, sed in Chemicis eximius, longeque futurus celebrior, nisi dictione obscura aliquid de utilitate Operum suorum detraxisset.

De ejus Libellis, *de Sale*, *de Sulfure*, & *Fundamentis* diximus. Scripsit autem præterea eximium illud Opus, cui titulus est *Opusculum Chemicum physicum*, supra laudatum, quo continentur egregia experimenta de fermentatione, nitrove sulfuris aurum destruyente, opportunioribus modis parandi aliqua chemica, sulfure ex carbonibus cum acido vitrioli parato, &c. Deinde *experimenta*, *observationes*, *animadversiones chemica & physica*, Berolini 1731. 8. impressæ huc faciunt quibus inprimis phlogiston tamquam novum elementum adseritur. Alia de Sale & Sulfure Opuscula alibi laudavi.

HELMONTII opera Roterodami edita, eo loco dicta, priorum quoddam, sed in variis mutatum compendium sunt. Recudit M. B. VALENTINI Hafniæ & Francof. 1707. 4. & alia est editio Lugd. 1655. fol. Anglica etiam Lond. 1662. 4.

ANGELUS SALA primus inter Chemicos desit ineptire CONRINGIO judice. EJUS opera omnia pertinent ad medicamentorum præparationem. Libri sunt *Anatome essentiarum vegetabilium*: *Hydrolaologia*: *Tartarologia*: *Saccharologia*: *Explicatio 7. planetarum terrestrium*: *Aphorismi Chymiatrici*: *Chrysologia*: *de antimonio*: *Anatome vitrioli*: *de natura & proprietatibus vitrioli*: *ternarius laudanorum*: *Exegesis chymiatrica*: *Myrothecium spagyricum*, &c.

FRIDERICUS HOFMANNUS amicum, deinde æmulum STAHLII expertus est. Ejus multa etiam in Chemicam sunt merita, uti vicissim per Chemicam opes & auctoritatem & amata vulgo medicamenta quæsit. Ejus viri *observationum Physico-Chemicarum*. L. III. extant, Halæ an. 1722. in 4. editi. Miscellanea est materies, & passim in parandis elegantioribus medicamentis occupatur, cum STAHLIUS magis in formas & misturas principiorum inquirat. *Opuscula Physico-Medica*, Ulmæ an. 1723. & 1726. 8. & alias duobus tomis edita inprimis ad aquarum mineralium historiam pertinet. Denique P. POTERII Opera omnia *practica & chemica*

Expendimus nunc qua ratione primo Chēmia addiscenda. Artificia nempe operationes dictæ, systematice nobis sunt addiscenda, & hac occasione indicavi Auctores, unde hæc petere possimus. Dixi secundo, quando studium istud absolutum est Medico tyroni, eos Auctores esse evolvendos, qui non systematice scripse-

chemica cum adnotationibus & additamentis F. HOFMANNI. Francof. 1698. 8. multa perpulchra remedia viri clarissimi & Tractatum de Felle continent. *Dissertationes de generatione salium, analysi reguli antimonii mineralis, & de mercurio, & medicamentis mercurialibus,* Halæ collectæ prodierunt an. 1729. 4.

J. FRID. HENKELII & POTTII scripta in physicis laudavi, quæ partim metallurgiam, partim chemiam & analysin corporum fossilium modumque fiendi respiciunt, plena experimentis, quorum, quæ HENKELII sunt, ad Theoriam potius ornandam, POTTIANA ad simplicem rerum eventum enarrandum, fere scripta sunt.

Sed neque S. A. GLAUBERI Opera 2. vol. 4. Francofurti an. 1658. 1659. junctim edita sperni merentur, etsi paulum justo liberalior in promittendis effectibus medicis fuerit, & spem passim pro eventu videatur expressisse; cæterum merus operarius, & literarum expertus. Notum certe est, nos huic viro varias aptiores novasque præparaciones chemicas debere, nitrique parandi rationes, acidorum vires medicas, &c. Adeo multa sunt ut Catalogum non ferat nostra brevitās.

GLAUBERI opera plurima sunt, qui Amstelodami in præparandis remediis vitam trivit. Conjuncta opera prodierunt Lond. 1689. fol. & extractum seu GLAUBERUS concentratus Lips. 1715. 4. Ecce nomina: *Fumi novi philosophici*, Amstel. 1651. 8. partes V. cum appendice & adnotationibus, germanice Prag. 1707. 8. 5. tomis recusi, & Anglice Lond. 1651. 4. *Opus minerale*, Amstel. 1651. 8. & pars 2. 1657. germanice Prag. 1658. *De medicina universali*, ibid. 1651. 1658. 8. seu *de auro potabili vero* Germanice 1652. 8. *Miraculum mundi* 1653. *Pharmacopœa spargirica*, Amstel. 1654. 8. Germanice 1654. & partes reliquæ ad annum 1663. *Explicatio miraculi* 1656. *Continuatio* 1658. de mercurio nempe philosophorum. *Apologia contra FARNERUM* 1655. 8. *Prosperitas Germania*, ib. 1657. 1659. 8. Germ. Prag. 1704. 8. Amst. 1639--1661. 8. *Consolatio navigantium*, Amst. 1657. Germanice 1657. 8. *Descriptio tartari ex vini facibus*, ib. 1655. 8. *De natura salium* 1659. 8. *De signatura salium, metallorum & plantarum* 1659. 8. *Arca thesauris opulenta* 1660. 1661. 8. Germ. 1660. 8. index in libros proprios. *Ars destillatoria nova* 1661. 8. *Lib. dialogorum* 1663. 8. *de hermetis tinctura universali* 1663. 8. Germ. recusa. *Explicatio verborum in verbis, herbis & lapidibus magna est virtus* 1664. 8. Germ. 1663. 8. *Novum lumen chymicum* 1664. 8. *Explicatio verborum Salomonis* 1664. 8. *De tribus principis metallorum sale, sulfure & mercurio* 1667. 8. *De purgatorio philosophico* 1668. 8.

PETRI POTIER, qui in primis chemica ad medendum & ad efficacia remedia inveniendā usus est, opera omnia variis annis prodierunt, Francofurti 1676. 8. & cura F. HOFMANNI 1698. 4. Nimium laudatorem suorum fuisse vel ex antihectico suspecto remedii genere adparet. EJ. *Manes Poteriani*, Fr. Lips. 1692. Quis alius fuit MICHAEL POTERIUS celebris Chymicus a PIERRE de la POTERIE, nostro nempe PETRO, diversus, dictus a D. MALOUIN loco citato, p. 154.

GUERN. ROLFINK *non entia chymica*, Jen. 1645. 12.

Inter STAHLII opera etiam huc pertinet *billiges bedenken von BECHERS naturkund der metallen* Fr. Lips. 1723. 8. EJ. tractatus varii in *opusculis Chymico-Physicis*.

G. STARKEY Anglice primum prodiit, Lond. 1658. 8. cum titulo *Pyrotechnie asserted and illuctrated*. EJ. etiam est *arts triumph over natures infirmities*, Lond. 1696. 8.

J. FREINDII Liber citatus anglice etiam recusus est, Lond. 1729. 8.

JO. VIGANI *Medulla Chemia*. Lond. 1683. 8. Est confusa experimentorum farrago.

GEORGII STARKEY *Pyrotechnie ofte vuer 'stook-kunde vastgesteld en opgehelderd*. Amst. 1687. Neque enim editionem priorem habeo. In prima parte de alcahesto loquitur. Nihil autem declarat. In altera de alcali volatili reddendo cum oleo terebinthinæ agit. EJUSDEM *het pit der vvaare Chymie*. Leovard. 1687. 8. Ibi commendat iterum sua alcalia fixa, cum oleo terebinthinæ digesta, & multa agit ænigmatice.

scripserunt, sed qui per illas operationes a prioribus Auctoribus præceptas & demonstratas corpora examinarunt, tam pro Physica, quam pro Medicina. Impossibile enim esset hos Auctores intelligere; nisi prius perciperemus præcedentes; nemo enim BOYLÆUM intelligeret, ubi de sanguine agit, nisi artificia chemica intelligat; nam nescimus quid velit, ubi experimenta chemica citat, si ignoremus, quomodo experimenta illa fiant.

C A P U T III.

Specialium Inquisitionum Scriptores.

Post duas primorum Auctorum classes evolutas, ordo jubet, ut illi consulantur Auctores, qui ita scripserunt de Chemia, ut partem aliquam Medicinæ emendarent, quantum *Chemia* permetteret.

Hæc est tertia classis, inquam, Librorum quos digessi, pro construenda Bibliotheca Auctorum chemicorum. Primi operationes, instrumenta, & objecta describunt; secundi experimenta pulchra invenerunt; tertii ita in Chemia operati sunt, ut scopus eorum fuerit, aliquam certam Medicinæ partem emendare, quantum per Chemiam fieri potest. Ita BOYLÆUS scripsit de experimentis in genere, sed idem de sanguine singularem Libellum edidit; quod ad priora ergo opera, respicit classem Auctorum, qui experimenta tradiderunt, sed quatenus sigillatim agit de sanguine, eatenus pertinet ad hanc classem tertiam. Tales etiam ad hanc classem pertinentes egregii Auctores memorandi sunt, & ita recensebo juxta diversas Medicinæ partes.

Y 2

De

JOHANNIS FREINDII Liber *pralectionum chemicarum*, inprimis modum mechanicum tradit, quo variae mutationes in corporibus ab igne perficiuntur. Contra eum vehementer scripsit J. le MORT, & titulum fecit *facies ac pulchritudo Chemie ab affectis maculis depurata*. Lond. 1710. 8. Sed & in Actis Eruditorum minus benigne recens, defendit se ipsum in Philosoph. Transactionibus num. 331.

J. JOACH. BECCHER *tripus hermeticus* fatidicus. Francof. 1689. 4. posthumus Libellus continet instrumenta, furnos, terras etiam.

URBANI HÆRNE *tentamina Chemica in laboratorio Stokholmienfi elaborata*. Holm. 1706. 1712. 4. Penitus PARACELSICUS, habet sal astrale ex plantis deciduum, sulfur universale a materie salari & astrali aliasque theorias, tum analyses corporum, & aliqua de igne centrali. Idem etiam *defensionis Paracelsitica prodromum* edidit Holm. 1709. 4. & *meletemata elementorum IV. cum influentiis eorum, & arcanis Chemicis sulfuris & mercurii*. ib. 1712. 4. conjunctim cum auctorum Laboratorii parte II.

J. MAUR. HOFMANNI *acta laboratorii Chemici Altdorfini*. Norimb. 1719. 4. Peculiaria aliqua continet ad medicamenta. J. ANDR. STISSER *acta laboratorii Chemici in Acad. Jul. in tribus specimenibus* edita Helmst. 1690. 1693. 1698. 4. medica aliqua propria sed arcana continet.

B. GODEREY *miscellaneous experiments ad observations on various subjects* * Lond. 1737. multa egregia habet.

AMBR. GODFREY *proposals for printing a Course of Chymistry*. Journ. des Sav. 1744. Junio Mense. Nisi fallor nunquam repleverunt spem eruditorum.

Chymie hydraulique pour extraire les Sels des végétaux, animaux, & minéraux Paris. 1745. 12. Auctor est Comes de la GARAYE, & solo tritu utitur ad obtinendas stirpium vires.

J. A.

De Sanguine.

1. Inter Auctores qui de Sanguine chemice tractarunt, eminet primo Illustrissimus BOYLEUS in Libello, cui titulus est, *apparatus ad naturalem Sanguinis humani, ac spiritus præcipue ejusdem liquoris historiam*. Liber est Londini editus in 8. anno 1684. Sed ita latet ubique in Bibliothecis, ut venalis haberi non possit. Verum an. 1685. etiam Genevæ est editus cum appendice sua, in qua plura egregia Nobilissimus Auctor proponit; primo mechanice, hydrostatice, physice, examinat Sanguinem, deinde per chemicas operationes; secundo inquit, quid contineat ille liquor, & quomodo in qualibet parte se habeat, & quid ejus sint separatæ partes, & quid conjunctæ iterum præstent. Non novi in republica scientiarum aliquem Libellum plus bonæ frugis continere, nam certe non tantum examinat singulas partes, sed quod quælibet pars agat, definit; neque hoc solum, sed Nobilis Auctor iterum partes separat, hasque rursus componit, unde demonstrat sanguinem non constare illis partibus, in quas Chymia illum resolvit, adeoque Sanguinem non operari per principia chemica, nam ex admixtis partibus, quas prius ignis separavit, non fit sanguis: & tamen BOYLEUS plura definit, quam ullus alius Auctor, quo usque illa experimenta seu principia possint inservire. Hic ergo Libellus optimus est inter illos, qui Sanguinem chemice, non medice, examinant, ubi nempe non quæritur, quales partes habeat ferofas, & rubras globulosas, &c. (a).

2. Per-

- J. A. STISSER *acta laboratorii*, &c. Helmstad. recusa etiam sunt 1701. 4.
Comitis de la GARAYE *Chymie*, &c. Germanice etiam exstat Francof. 1749. 8.
JOEL LANGELOTT *epistola de quibusdam in chemia prætermisissis, quorum occasione secreta haud exigui momenti candide demonstrantur*, Hamburg. 1672. 8.
J. BOHN *de acidi & alcali insufficientia*, Lips. 1675. 8. EJ. *dissert. chimico-physica* XV. Lips. 1685. 4.
LOVE MORLEY *collectanea chymica Leidensia*, Leid. 1684. 4. collectio nempe processuum, recusa cum operibus la MORTII. 1696. 4. ibid.
CHRISTIANI DEMOCRITI *analysis cramentis harmonici. d. i. chymischer versuch zu destilliren*, 1729. 4. 1734. 4.
PETRI SHAW *chymical lectures publicly read in London annis 1731. 1732. and in Scarborough 1733. Lond. 1734. 8* utile chemiæ compendium, ex quo multa didici, v. g. salis ammoniaci compositionem ex spiritu salis & sale volatili ossium bubulorum, tum consilia de phosphoro, arte tinctoria, &c.
J. HENR. POTT *observationum chemicarum collectiones* II. Berolin. 1739. 4. & 1741. 4. de terra foliata tartari, acido vitrioli vinoso, acido nitri vinoso, &c. Perindustrio viro ipsum multa debuisse NEUMANNUM a gnaris audio.
C. ANDR. MANGOLD's *chymische erfahrungen und vorthelle bereitung einiger bewährten arzneymittel*, Erfurt 1748. 4. & EJ. *fortgesetzte chymische erfahrungen*, ibid. 1749. 4. De oleo vitrioli dulci, naphtha vini, de oleo animali DIPPELII, tincturis antimonii aliisque minus notis medicamentis lites aliquas cum CL. J. H. LUDOLPHO agitavit.
(a) Analysin sanguinis chemicam utique proposuit primus, ni fallor, sterilibusque theoriis Galenicorum Chemicorum vero hypothesibus vera experimenta substituit; proportionum elementorum sanguinis, pondus specificum, eventus ex commistione cum variis liquoribus acidis & alcalinis, primus exposuit. Spiritum sanguinis inprimis accuratius descripsit, sed multa passim hiulca, & quæ recentiorum industria correxit. Prodiit Lond. 1684. 8.

2. Pertinet huc HIERONYMI BARBATI tractatus de Sanguine ejusque sero (a); Libellus est in 12. editus Francofurti an. 1667.

3. Legendus est super hanc rem JOHANNES BAPTISTA HELMONTIUS, ubique in suis Operibus, in quibus, multis in locis, per Chemiam plura Sanguinis principia inventa detexit. Ita, quantum novi, primus est Auctor, qui observavit insignem illam sanguinis humani proprietatem, quod volatilis sit, natus ex fixis. Ita ait HELMONTIUS, „ sales in vegetabilibus igne combusti, concreto sulphuri, re fixi fiunt, iidem autem sales in officina humana sic mutantur, ut fiant volatiles, & quidem ad eum gradum, ut per calorem ex corpore perspirent “. Hæc certe egregia observatio est, qua pulchrior non datur in historia Sanguinis, & verissima, dum nempe v. gr. triticum comburitur, sal ejus jungitur sulphuri, id est igni, & cum eo concrevit; itaque fit sal fixus, secundum sententiam HELMONTII: verum hic idem istius plantæ sal fixus actione vasorum & liquidorum humanorum reducitur ad eam volatilitatem, ut perspirando insensibiliter per cutem sponte absque facibus exhalet (b).

4. Commendandi itidem hic sunt OTTONIS TACHENII tres Tractatus, primus est *Hippocrates chemicus*, alter Tractatus, cui illud idem nomen quasi dedit, est proprie defensio prioris Libelli contra ZWELFERUM, hique duo Tractatus una sunt compacti; tertio titulus est *morborum princeps*, seu *Tractatus de podagra*. Hi tres Tractatus satis frequentes venales sunt, sæpius impressi, lectuque dignissimi. Fateor hoc habere vitii, quod incautum lectorem facile deducant in sententiam de alcali & acido: verum debemus Auctori ignoscere hunc errorem, nullus enim Auctor de sanguine, urina, calculo, &c. secundum analysin chemicam fidelius scripsit TACHENIO. Tractatus iste ultimus de *principe morborum* non est ita vulgaris, attamen omni studio inquirendus est, quia de salis volatilis ex ægrotantium sanguineeducti natura tractat, ibique operationes multaque egregia habentur.

5. JOHANNES LAURENTIUS BAUSCHIUS, Germanus, scripsit Tractatum de *Lapide hæmatite*, & de *aëtite lapide aquilino dicto*; in eo Tractatu præmisit *Tractatum seu Proæmium Hæmato-traumatologicum*, hoc est, de Sanguine dissertatio admissis experimentis plurimis. Liber est in 8. editus Lipsiæ 1665. cum figg. (c).

6. Clarissimus VIEUSSENS edidit Librum satis magnum, de *Sanguinis humani natura* (d), in quo voluit demonstrare, in sanguine multum acidi inesse; in quo

(a) Serum sanguinis ad ignem coagulabile esse demonstravit, ex eo omnes reliquos humores in corpore humano generari docuit, cum prius pro excremento haberetur. Vera editio mihi deest. Nuper etiam cum JOSEPHI del PAPA Libello de humoribus corporis humani prodiit. Leidæ 1736. 8

(b) Quæ HELMONTIUS de natura acida panis & chylo, de alcalina vero volatili sanguinis passim scripsit, in multis Libellis, ita legere oportet, ut semper simus memores, hypothese hunc virum nimis servasse.

(c) In Libello de *hæmatite* aliqua de hæmorrhagiis & vulneribus lethaliibus & non-lethaliibus, eaque non magni momenti addidit.

(d) Variis Libris VIEUSSENSIUS analysin Chemicam sanguinis tradidit, dissertationibus *touchant l'extraction du sel acide du sang*. Monspel. 1698. 8. & Latina Epistola ad Lipsiensem Academiam data utraque 1698. 1704. 4. & in majori demum Opere *Tr. des liqueurs*. Tolosæ an. 1715. 4. Proportionem inter aquam, spiritum, oleum, salem volatilem, fixum, terram, sanguinem.

quo deceptum fuisse Auctorem, omnes Chemici hodie norunt, acidumque sanguinis unice deberi sali marino; sed tamen ea occasione experimentis plurimis, ad trutinam & stateram exacte captis, sanguinem resolvit humanum, & docet, quomodo constitutus sit; qua de causa hoc Opus satis bonum est. Hi Auctores scripserunt in Chemia, ita ut tractarint historiam sanguinis pro usu theoretico.

7. Vetustus Auctor ISAACUS HOLLANDUS in codice MS. in folio, quem possideo, habet Tractatum, cui titulum dedit, *quinta essentia ex Sanguine humano conficiunda*, eum Libellum Belgico sermone scripsit: verum in eo plurima egregia reperiuntur nova inventa, quæ recentiores sibi adscribentes, pro suis vindicant: &, quod mirum est, ad phosphorum usque novit.

De Urina.

BOYLEUS (a) optima experimenta ubique in suis Operibus de Urina adnotavit. Verum etiam LAURENTIUS BELLINUS (b) optime scripsit de hac re, in egregio illo Tractatu *de pulsibus & urinis*. Præcedentes Chemici fere tantum per Chemiam Urinam examinabant, sed ille tantum per accuratum examen avolantis aquosi principii, & restantis, optime omnium, quos novi, diversos gradus coloris, spissitudinis, &c. hac methodo observavit, & explicavit: nam prout Urina plus aquæ vel minus continet, eo plus etiam vel minus ad Urinam sani hominis accedere annotavit, ex quo certe experimento, fructum non exiguum in praxi decerpere possumus. Primum ejus capitulum hic inferendum est, nam est ex Chemia; in eo docet si Urina straminei coloris ad stateram examinetur, paulo graviores esse aqua, & parum odoris saporisque habere, qualis urina maxime pro sana habetur. Deinde ex illa eadem Urina exhalat pars aquæ. BELLINUS vero examinat, quid supersit & qualem gradum

sanguinis, accuratius per majores destillationes definire aggressus est, idemque acidam partem sanguinis demonstravit, quam, cum sali marino & bolo tribueretur a variis, in ultimo adhuc Opere defendit, neque absque ratione. In eo Opere etiam plerique liquores corporis humani analysi subjiciuntur.

Addere vero oportet Libris qui de natura sanguinis Chemica experimenta protulerunt, præter VERHEYENIUM ex II. L. p. 36. &c. ANTONIUM de HEYDE in *observationibus*, BAGLIVIIUM, HOFMANNUM in *observationibus Chemicis*; HOMBERGIUM in *Comment. Acad. Reg. Scient.* 1712. JURINUM in *Phil. Trans.* n. 361. FREINDIUM in *Emmenologia*; PITCARNIUM in *elementis*; inprimis vero D. BROUWNE LANGRISH, qui pondera specifica, gradus cohesionis, portiones elementorum in hominibus sanis & ægris accuratius tradidit, ex Libro quem inscripsit *modern practice*. Lond. 1732. 8. Deinde CL. THOMÆ SCHWENCKE *hematologia*. Hagæ edita an. 1743. cum analysi chemica multa utilia habet de numero pulsum, calore, reagentibus, grumo arterioso, venoso, ponderibus specificis globulorum & feri, & incremento globulorum, densitatis, salis, sulfurisque in febribus.

(a) In Libro de *Sanguine humano*, *Chemista sceptico*, *hist. fluiditatis & firmitatis*, & de *infido experimentorum successu*.

(b) Non valde laudo, quod BELLINUS mutationem urinæ in febribus fere unice decremento aquæ tribuerit. Etsi enim color intendatur aquæ portione diminuta, non ideo alium doses augentur ex ea causa, neque oleum ex blando fit foetidum aut acre. Analysin Chemicam etiam consulto omittit.

dum odoris, coloris, saporis, & spissitudinis habeat, unde docet, si Urina hac data ratione in corpore mutetur, his ergo datis principiis constitui. BOYLEUS Urinam unice examinat per Chemiam, sed præmittendus erat hic Tractatus BELLINI, ut distincta Lotii posset haberi cognitio.

THOMAS WILLISIUS etiam ubique fere per omnes suos Tractatus tanquam chemicus multa de Urina ejusque salibus habet (a).

Optime etiam JOHANNES BAPTISTA HELMONTIUS in nobili illo Tractatu, quem sæpius allegare soleo pro optimo specimine in Chemia, in Tractatu nempe de *Lithiasi, seu ortu Calculi* (b), Urinam chemice resolvit. In eo scilicet Tractatu optima experimenta, quæ apud nullos Auctores inveniuntur, habentur; nam recentem, putrefactam, hominum, brutorum, urinam omni indagine chemica accurate resolutam ad sua principia revocans ad usum medicum applicat.

Illi ergo viri in hac parte consulendi sunt; si nunc a me petantur alii Auctores pro reliquis liquoribus corporis humani, certe nullos novi citandos; San-

(a) Proprium Librum scripsit de *febris & urinis*; qui subjectus habetur Libro de febris edito Londini 1662. 8. Sequitur fere HELMONTIUM, & ex Theoria contra propria experimenta admittit inter elementa urinæ spiritum ardentem.

(b) Utrique errores suos admiscuit, ut spiritum ardentem urinæ, qui cum alcalino volatili in lapidem coaguletur, nemini visum. Sed egregia varia ramen, & nisi fallor primus hic præstitit, & bilem ex elementis urinæ proscripsit.

Ceterum inter recentiores Scriptores analyses urinæ dederunt varii, ut LEMERYUS in Chemia sua; F. HOFMANNUS in medicina physiologica; HENR. POTTIUS in *Miscellaneis Berolinensibus*, & noster in Chemia sua PRÆCEPTOR.

De phosphoro qui ex urina paratur, præter BOYLEI noctilucam etiam D. COMIERS & J. S. ELSHOLZ, Berolini 1677. 4. proprios Libellos scripserunt; JOH. HENR. COHAUSEN in *novo lumine phosphori accenso*, Amstel. 1717. & compilavit observationes variorum Auctorum. In *Trans. Phil.* extant BOYLE de modo parandi phosphori. n. 196.

De Luce phosphori in vacuo. n. 296. FROBEN & GODFREY ad phosphorum & liquorem æthereum. n. 428.

HANKEWITZ de eodem phosphoro urinoso. n. 428.

In *Mém. de l'Acad. des Sciences* huc pertinent: HOMBERG *Anc. Mémoires* X. p. 84. 110. 427. IDEM de novo phosphoro 1709. (nempe pyrophoro) 1712.

LEMERY de phosphoris 1714.

Le FEVRE de phosphoro ex ferro & sulfure 1728.

Du FAY de novis phosphoris (nempe variis corporibus noctu lucentibus) 1730.

Le FEVRE de suo phosphoro. *ibid.*

HELLOT analysis urinæ & de phosphoro KUNKELII 1737.

In *Journal des Savans*: LEMERY præparatio Lapidis Bononiensis 1690. n. 22.

BERN. ALBINUS edidit de phosphoro Libellum.

De calculo, qui ex urina coalescit BOYLEUS scripsit de *utilit. Philosoph.* & FR. FLAKE in *Phil. Trans.* n. 157. STEPH. HALES in *vegetable statics*; & nuper plurimi, qui de eo dissolvendo cogitarunt, inprimis THEOPHILUS IOBB. & amicus noster STÆHELINUS.

SIM. P. HILSCHER & MARHEINEKEN de phosphoris, Jen. 1744. 4.

J. G. BRENDEN de *sale & spiritu acido phosphori*, Gotting. 1747. 4.

J. GOTTLÖB LEHMANN *abhandlung von phosphoris*, Lipsi. 1750. 4. omnis nempe generis, urinoso phosphoro, cujus multas dat encheireses, lapideo, vario, etiam minus noto ex nonnullis Saxonis glebis, ex auripigmento, ex alumine, vino parato, &c. utiliter scripsit.

Sanguinem enim & Urinam, qui præcipui sunt liquores & præsto sunt, unice examinaverunt Scriptores, quos ego quidem novi.

De Sudore.

Unicus, quem novi, qui de Sudore scripsit, est OTTO TACHENIUS (a), qui egregio experimento dicit, se apud indusiorum lotrices sumfisse lixivium, in quo indusia tempore æstivo ab hominibus sanis gesta maceraverant; coxit illud lixivium leni igne, hocque facto adscendit sal similis sali urinoso. Hoc est unicum experimentum, quod novi. Novimus enim, si gerantur indusia aliquamdiu, & si homines fuerint robusti, flava illa fieri præsertim ad axillas, & si diu gerantur, partes illas sudoris tenaciter adhærere. Lotrices hæc indusia in lixivio macerantes postea exprimunt, ita ut id, quod in iis aderat salis humani jam sit saponi permistum; nunc novimus, saponem vulgarem, quatenus est sapo, non dare salem volatilem, sed illud lixivium, infectum sudore, dabat utique salem volatilem urinosum, unde nos clare docemur, in sudore sales esse, ut in urinis.

De Bile.

Bilis curioso examine, & magno studio examinata fuit a BOHNIO (b), sed optime a VERHEYENIO (c) in novæ editionis suæ anatomiae parte secunda, qui non caute quidem & perfecte, satis tamen fideliter experimenta tradit.

SYLVIUS (d) etiam de Bile examen instituit in suis Operibus.

De Solidis.

De solidis non novi bonos Auctores, quia putarunt omnes solida ex principiis

(a) In *Hipp. Chem. C. XII.*

(b) In *Circulo Anatom. Progr. X. XVII.*

(c) In II. Libro *Anatomes. T. I. C. 19.*

(d) FRANCISCUS SYLVIUS de le BOE, multa quidem; maxime de modo generationis bilis habet, non analyseos parum *Diff. II. VIII. X. Tr. de Ictero, &c.* Sed plurimi alii experimenta cum bile fecerunt; BAGLIVIVS *Oper. omn. p. 439. &c.* HELMONTIVS in *sextupl. digest. & alibi.* D. DEIDIER *expériences sur la bile des pestiférés*; ALOYSIVS della FASEXTRUPL. *digest. & alibi.* D. DEIDIER *expériences sur la bile des pestiférés*; ALOYSIVS della FABRA de aqua Nucarina, du HAMEL in *hist. Acad. Regia Scientiarum. p. 76.* HOMBERGIUS *ibid. 1709.* F. KOFMANNUS in *Observationibus chemieis*; VIEUSSENSIVS in *epistola de Bile & Phil. Trans. n. 241.* CAROLUS DRELINCURTIUS post L. de Lienosis; PECHLINUS, S. LEONICENUS de metamorphosi Apollinis & Æsculapii.

Ad alia liquida humana quod attinet, omnia attingit VIEUSSENSIVS in *L. des liqueurs*, tum VERHEYENUS, & ALBINUS in *dissert. de corpusculis massa sanguinis.* Salivam seorsim examini subiecit NUCKIUS, ANT. de HEYDE, BAGLIVIVS, C. DRELINCURTIUS post Libellum de Lienosis. De succo pancreatico fere solus egit BRUNNERUS, cum difficulter ejus aliqua copia colligatur.

clipsis chemicis constare, cum tamen Chemia doceat, solida unice ex terra (a) constare, sine admistione principiorum; nam, si accurate tollantur omnia liquida, quæ in osse sunt, os manebit adhuc integrum; jam vero nihil nisi terra in eo reperietur

Z

(a) De ossium analysi egit FRIDERICUS SLARE in *Phil. Trans.* n. 157. (qui observavit nullum ex iis salem fixum habere) GEOFFROY *Mémoires de l'Acad. Royale des Sciences* 1710. 1732. & is quidem egregie. J. SAM. CARL in *lapide lydio philosophico ad ossium fossilium docimasiam* Francof. 1703. 8. MORLEY in *collect. Leidens.* BROWNE LANGRISCH l. c. BARCHUSEN in *Experiment post Physicam Acroamaticam*. C. NEUMANNUS in *Operibus ad suos titulos*. Et huc omnino etiam pertinet DIONYSII PAPINI *art d'amollir les Os*, qui variis annis & Parisiis an. 1721. 12. prodiit, novamque analysin ossium, solo vapore aquæ calentis factam continet. Cæterum plurima inde portio salis volatis alcalini habetur, & oleum empyreumaticum, & spiritus, uti ex sanguine, & reliqua in eundem modum. Hæc omnia glutinis modo terram simplicem connectunt, & hætenus pro ossium partibus possunt haberi. Seorsim cerebri examen diligenter scripsit HENSINGIUS in *dissertatione*. Sed cum hoc loco destituamur ab optimo PRÆCEPTORE, omissis forte ex codicis vitio reliquis classibus Chemicorum, liceat aliquos excitare, qui chemica de aliis, præter humanum, corporibus experimenta utilia reliquerunt.

Ad metalla & fossilia G. E. STAHLIUS in omnibus scriptis. J. St. POTTIUS in omnibus, ut *observationibus Chemicis & earum continuatione*. Berolini 1708. & 1741. 4. quibus Zincum, Auripigmentum Borax, Pseudo Galena describuntur.

GEOFFROY de tincturis metallorum 1713. HOMBERG de mercurio metallorum. *Mém. de l'Acad.* 1702. J. WOLFG. KUNSTEL de salibus metallorum. Lips. 1711. 4. insertus etiam in ROHTII versionem.

De Auro.

HOMBERG de separatione auri. *Mém. de l'Acad.* 1713. STAHL in vitulo aureo.

De Mercurio.

HOMBERG de solutionibus Mercurii. 1700.

GEOFFROY de sublimatione Mercurii. 1713.

BOULDUUC de eodem. 1730.

LEMERY de Mercurio præcipitato. *Mém. de l'Acad.* 1712. 1714. de sublimato. 1709.

BOERHAAVII experimenta circa mercurium seorsim prodierunt, Lips. 1734. 8.

J. FRID. HENKEL de mediorum chymicorum appropriatione in argenti cum acido salis communis combinatione, Dresd. 1737. 8.

De Argento.

HOMBERG de solutione Lunæ. *Mém. de l'Acad.* 1706.

Ad preparata ex Ferro.

GEOFFROY de Cœruleo Prussico. *Mém. de l'Acad.* 1725. 1743. de eodem BROWNE *Phil. Trans.* n. 381. Porro GEOFFROY de Vitriolo Martis. 1713. Refutatio transmutationis Ferri in Cuprum, quam Parisiis propria Societas moliebatur. *Journ. de Trev.* 1730. art. 44. De scintillis Chalybis, REAUMUR 1736. Vegetationes metallicæ, CHARAS *Anc. Mémoires*. vol. X. HOMBERG an. 1710. PETIT an. 1722. CONDAMINE 1731. MOREL. 1727. LEMERY de Ferri arbore 1707.

De analysibus Corporum, GEOFFROY *Mém. de l'Acad.* 1717.

LEMERY contra utilitatem analysium vulgarium, ibid. 1715. 1720. HOMBERG de Plantarum analysibus 1701. BOULDUUC de iisdem 1734.

De rubeo liquore ex sulfureo spiritu & alcali. *Phil. trans.* n. 228.

De

tur, ut in ossibus a pluvia & rore maceratis, vento & sole iterum exsiccatis apparet, & in cœmeteriis ipsi rustici docent; si hujusmodi ossa examinentur igne, nihil

De materie quæ metalla penetrat. *Mém. de l'Acad.* 1713.

HELLOT de atramento sympathetico. 1737.

De solutione in Menstruis. *Phil. Trans.* n. 181.

GEOFFROY de analogia corporum mineralium. *Mém. de l'Acad.* 1720.

MALOUIN de unione Mercurii cum Antimonio. 1740.

JOH. WOLFG. KUNSTEL de sal. metall. Lipsiæ 1711. 4. CASP. NEUMANNUS in prælectionibus de ferro, sulphure, nitro, antimonio, Berolini 1732. 4. J. FR. HENKEL in omnibus scriptis. P. HOFMANNUS de generatione Salium, analysi Reguli Antimonii, de Mercurio. Halæ 1729. 4.

Auctoribus citatis ad præparata ex ferro addi meretur G. E. STAHL de solutione martis in puro alcali, Hall. 1712. 4. & in opusculo Chymico-physico.

Ad peculiaria aliqua Fossilia & Sales.

Ad Sulfur STAHLIUS Libello Germanico Zufällige gedanken vom Schwefel. Halæ 1718. SECHL de modo parandi acidum volatile Sulfuris. *Phil. Trans.* n. 472. & Lond. 1744.

8. LE FEVRE de sale Sulfuris. *Mém. de l'Acad.* 1744.

De Vitriolo & ejus præparationibus, ut olei vitrioli rectificatione. GEOFFROY. *Mém. de l'Acad.* 1742.

FROBENIUS & AMBROSIUS GODFREY ad Phosphorum & spiritum Frobenii æthereum. *Phil. Trans.* n. 428.

Du HAMEL & GROSSE de eodem æthereo liquore; *Mém. de l'Acad.* 1734. HELLOT de eodem 1739. Du HAMEL & NAVIER de eodem 1742.

G. CHRISTOPH. DETHARDING & HYNKE de sulfure præstantissimo bezoardico, Rostoch. 1746. 4.

HERM. FRID. TEICHMEYER de anodynis quibusdam spiritibus mineralium, Jen. 1736. 4.

C. F. HUNDERTMARK de specie sulfuris anodynæ, Lipsi. 1748. 4.

A. SALÆ anatomia vitrioli, Lid. 1617. 8.

G. E. STAHL de spiritu vitrioli in copia parando, in opusculo. EJ. de analysi acidæ vitriolici: de arcano duplicato & tartari vitriolati genealogia.

J. WOLFG. KUNSTEL de salibus metallorum Lipsi. 1711. 4.

J. GOTTFR. WENDELIN de nonnullis medicamentis metallicis eorumque effectu in Corpore humano, Hall. 1743. 8.

MICH. ALBERTI de solutione succini fere radicali, Hall. 1739. 4.

Ad antimonium LEMERY, *Traité de l'Antimoine*. Parisiis 1707. 12. ad quem Libellum edidit notas criticas Anonymus. Parisiis 1707. 12. ad quem respondit LEMERYUS, ut tamen se victum non obscure fateatur. BASILII VALENTINI cursus triumphalis Antimonii ex edit. KERKRINGII. Amst. 1671. 8. De eodem LAMY an. 1682. edidit *Traité de l'Antimoine*. 12. quo contra PATINIANOS defendit non esse venenatum.

G. E. STAHL de regulo antimonii stellato, in opusculo.

MEUDERI citatus ibi libellus de antimonii analysi primum Dresd. & Lipsi. prodiit 1737. 8.

ROTHII etiam est von antimonialischen tincturen, Dresd. 1735. 8. Germanice.

LEMERY de Kermes mineralis præparatione, *Mém. de l'Acad.* 1720. GEOFFROY de eodem 1734. 1735. MEUDERI Liber de Antimonio totus practicus editus Anglice Londini 1747. 8. & in ROHTII versione Gallica. HOMBERG de acido Antimonii 1700.

Ad Lapidés.

J. HENR. POTT. de Lithogognosia. Potzdam. 1746. 4.

HENKELIUS in Libellis chemicis minoribus editis an. 1744. 8.

DUFAY de tincturis Lapidum. *Mém. de l'Acad.* 1728. Adde quæ supra in physicis dicta sunt.

hil exit, quod est contra MATTHÆI sententiam, qui de chemica cranii humani resolutione scribens, postquam ex illo osse res varias arte chemica eduxisset, solebat concludere, cranium constare ex illis principiis eductis. Nos autem novimus medullam & liquida, quæ in ossium vasis continentur, varia principia unice suppeditare.

Ad Sales.

G. E. STAHL *vom Salze*. Halæ 1727. 8. C. NEUMANNUS] *de Salibus alcalinis fixis*. JOHANNES BROWNE *historia Salis Ebshamenfis*. *Phil. Trans.* n. 377. 378. & de eodem Sale NEHEMIAS GREW. Londini 1695. 12.

AMAND de Aqua forti. *Mém. de l'Acad. des Sciences* 1728.

Le FEVRE de Cremore Tartari 1728.

Alcali fixum naturale non dari, & de Salibus. *Phil. Trans.* n. 107.

HOMBERG de Sale acido, minerali, sicco.

IDEM de mensura Salis volatilis acidi in spiritibus contenti. *Mém. de l'Acad.* 1699. *Phil. Trans.* n. 202.

IDEM de mensura virium alcalium terreorum. *Mém. de l'Acad.* 1700.

ROBIE de Sale alcalino ex usto ligno putrido. *Phil. Trans.* n. 351.

LEMERY de cinere. *Porasse. Mém. de l'Acad.* 1727.

BOURDELIN de Sale lixivo Guajaci. 1730.

GEOFROY de mutatione acidi in alcali. *Mém. de l'Acad.* 1717.

HOMBERG de volatilizatione Salis fixi plantarum. *Mém. de l'Acad.* 1702. 1714.

LEMERY de actione Salium in materias inflammabiles. 1713.

BRANDMULLER de nitro jam laudatus est.

CHRISTOPH. CARL STRUMPF *nonnulla de sublimationis apparatus*, Hall. 1745. 4.

Ad Vegetabilia.

G. WEDEL de Sale volatili oleoso. Jen. 1711. 4. Describit Sylvianum, & adfines, & eorum usum. Exploratio spiritus vini. *Mém. de l'Acad.* 1718.

Salés volatiles plantarum. 1701.

HOMBERG de Oleis essentialibus plantarum. 1700.

GEOFROY de iisdem 1707. 1721. 1728. De iisdem 1741.

Le FEVRE de Tartaro solubili. 1732. Du HAMEL & GROSSE de eodem. 1732. 1733.

GEOFROY de extractis plantarum. *Mém. de l'Acad.* 1738.

De Hydromelite LEMERY 1707.

De fermentatione & effervescentia. W. SYMPSON *Zymologia*. Lond. 1675. 8. Inter acidum & sulfur fermentationem esse. STAHLII *Zymotechnia* in Opusc. med. chem. & in tertio tomo *Fundamentorum*. JAC. LE MORT *idea actionis corporum motum intestinum præsertim fermentationem delineans*. Leidæ. 1693. 12.

STAHLII hic citata *zymotechnia* seorsim etiam prodiit, Hall. 1697. 8.

Adde etiam huic tractationi: H. FRID. TEICHMEYER *de arcano tartari vel sale essentiali vini*, Jen. 1730. 4.

B. DAVID MAUCHART *de vini turbidi clarificatione*, Tubing. 1742. 4.

G. E. STAHL de vini dephlegmatione, in opusculo.

J. JUNKER *disquisitio analytica arcani tartari*, Hall. 1743. 4.

C. A. a BERGEN *de fuligine*, Francof. Viadr. 1750. 4. & de eadem BAIER, Altdorf. 1722. 4.

J. BERNOULLI *Diff. de effervescentia & fermentatione*. Basileæ. 1690.

De fermentationibus. *Mém. de l'Acad.* 1701. De analysibus post fermentationem, LEMERY 1713.

De effervescentia vaporum in aere. *Mém. de l'Acad.* 1713.

De Oleorum per acida inflammabilitate. *Mém. de l'Acad. des Sciences*. 1726.

Experimentum pro explicando fulmine. *Mém. de l'Acad.* 1700.

De igne ex mistione liquorum. *Phil. Trans.* n. 213.

De frigore ex oleis essentialibus cum spiritu vini mistis. *Mém. de l'Acad.* 1727.

De fermentationibus frigidis. GEOFFROY *ibid.* an. 1700. DES AMONTONS, 1705. & 1727.

LEMERY de præcipitatione. 1611. 1727.

Consilia pharmaceutica.

PRO Pharmacia medica scripserunt Chemici quam optime.

Pharmacia vocatur apud Medicos ars cognoscendi, debito tempore colligendi, asservandi, & præparandi medicamenta. Has quatuor partes habet vera Pharmacia, in quibus ipsi inservit Chemia.

Primo inservit Chemia Pharmaciae pro resolvendis simplicibus & inveniendi eorum principiis. Deinde ad dandam rationem, cur hoc & illo tempore sint colligenda simplicia. Porro ad indicandum quænam pars asservanda sit, & quomodo, & quænam partes plus & minus volatiles sint. Ultimo ad præparationem medicamentorum inservit Chemia. Si ulla pars est Chemiæ & Medicinæ, in qua Chemici laudem meruerunt, hæc est, ibi enim eos non facile quis erroris infimulabit. Ordine vero recensebo, quos oporteat legere.

Prima pars Pharmaciae ea est, quæ docet cognoscere simplicia in sua intima natura, quatenus illam Chemia adjuvat: quæ nempe per experimenta accurate capta definit principia, ex quibus corpora componuntur, & quinam adeo ad dato corpore in Medicina effectus sperari possint.

Quomodo vegetabilia nunc ope Chemiæ in suis principiis cognoscantur, optime docuit Clar. TOURNEFORTIUS, in illo laboriosissimo tractatu, *Histoires des plantes qui naissent aux environs de Paris*; est Liber in 8. editus Parisiis 1698. (a). Non novi ullum tractatum unquam editum esse, qui chemice ita indagavit notas plantas, & easdem ita chemice examinat; nam diversos stirpium succos composuit cum salibus diversis, & cum variis principiis chemicis; & cum per BOYLEUM novisset, quænam mutationes acidam aut alcalinam naturam proderent in vegetabilibus, didicit ea ratione, quales sales essent in succo nondum per chemiam turbato. Ita Rosæ vim habent adstringentem, sumit ergo TOURNEFORTIUS succum earum, & componit cum diversis solutionibus salium, tunc demonstrat, esse salem in Rosis, qui ad aluminosum salem accedat; hinc concludit, huiusmodi salem Rosæ insitum hunc determinatum effectum in sanguine producere. Ea etiam ratione cum Fumaria, Veronica, & infinitis aliis plantis egit. Opus certe incredibilis laboris est; verum cum impensas suppeditaret Regia liberalitas, par fuit elaborando; nunquam autem tantum onus solus ferre potuisset.

Pro eadem parte cognoscendarum plantarum videantur NEHEMIAS GREEW, ROBERTUS BOYLE, & D. DEDU, quorum Opuscula conjunctim edita sunt an. 1691. in 12. Titulus est *l'Anatomie & l'ame des Plantes*, par NEHEM. GREEW,

(a) Excerptis TOURNEFORTIUS BOURDELINI aliorumque Academicorum Parisinorum observationes, in thesaurum repositas. Sed eadem observationes multo uberius continentur in D. GEOFFROI materia medica, in qua fere omnium simplicium analyses, & in quinque quidem cujusque plantæ Libris institutæ habentur.

GREEW, ROBERT BOYLE, & NICOLAS DEDU (a). In eo tractatu simpliciter ex Botanica, & re herbaria enumerantur plantæ, per chemiam resolvuntur, indagantur, & reducuntur ad principium suum, quamvis in eo etiam plura physica experimenta reperiantur.

Scripsit etiam hac de re DODARTIUS, eminens & nobile membrum Academiæ Parisinæ, in tractatu suo tam in folio, quam in 8. edito, cui titulus est *l'Histoire des plantes* (b). Tum etiam Dn. du HAMEL sparsim in *Historia Academiæ Regiæ Scientiarum* quædam habet.

Poterit etiam hac de re videri Dn. GEOFFROY membrum etiam prædictæ Academiæ Regiæ Scientiarum, cujus inventa in iis Monumentis inveniri poterunt: sed ante aliquod tempus fatis cessit. Nunc Clar. BOULDUC, etiam membrum ejusdem Academiæ, hoc opus absolvendum in se suscepit.

Si quis nunc Libros emere velit, qui sine nugis sunt, & unde ingentem fructum percipere queat, legat istos & omittat reliquos, ibi enim invenitur Pharmacia, quæ ope Chemiæ simplicia sic resolvit, ut eorum habebatur cognitio a Pharmacopæo, quid contineat singula planta, estque hoc fundamentum Pharmaciæ.

Secunda pars pharmaciæ est, quæ docet plantas debito tempore colligere. Sed etiam ista habet adminicula ex Chemia. Nam præter aquam & terram, salem volatilem & fixum, oleum & terram, nihil in plantis est. Chemia vero demonstrat, quid per tempus de plantis avolet, quid fixum supersit. Galenici nihil noverant de his corporibus, nisi aromaticarum plantarum particulas medicas celeriter avolare, & stirpium aromaticarum flores mane coquendos esse, prius quam sol eduxerit partes meliores. Sed longe plura Chemia docuit; ostendit enim, quo tempore sal, quo alio oleum in stirpibus dominetur. Totum negotium in iis

NEUMANNUS etiam fere omnium medicamentorum analyses & extracta stirpium gummea & resinosa cum ponderibus habet.

FRANCISCI ALEXANDRI *Apollo compositorum & simplicium examen suo fulgore irradians*, Venet 1565. fol. Francofurti 1613. 4. Dispensatorium est, cum historia omnium simplicium medicamentorum, quæ formulas subeunt.

JOH. RENODÆI *Institutionum pharmaceuticarum Libri V. & de materie medica L. 4.* Parisiis 1608. 4. EJ. *institutionum pharmaceuticarum Libri IV. & antidotarium seu dispensatorium absolutissimum*, Paris. 1623. 4. Anglice etiam 1657. fol.

BRICH BAUDERON *pharmacopœa & du BOIS de miscendis medicamentis*, Lond. 1639. fol. gallice, Lion 1663. 4. Rouen 1644. 4. qua lingua scripta & hispanice versa a JOH. de CASTILLO, Gadibus 1671. 4.

J. R. GLAUBER *pharmacopœa spagirica* p. 3. Amst. 1654. seqq. 8.

J. PRÆVOTI *tractatus posthumus de compositione medicamentorum*, Pat. 1666. 12. Hanov. 1666. 12.

A. Q. RIVINI *manuductio ad chemiam pharmaceuticam*, Norimb. 1718. 8.

FELIX PALLACIOS *palaestra pharmaceutica chymico Galenica* III. ed. Madrit. 1730. 4. *

J. FRID. CARTHEUSER *pharmacologia theoretico-practica*, Francof. Viadr. 1745. 8. Commodus imprimis liber, & fidus

(a) Opusculum prodiit Parisiis 1682. 12. & Leidæ 1691. 12. Continet imprimis compendium Opusculorum phytologicorum GREWII, deinde ejus observationes de mitione, quæ cum titulo *Discourse concerning the nature causes and power of mixture* prodierunt Lond. 1675. 8.

(b) Utique, hique viri primi hic glaciem fregerunt, dum reagentia chemica, Salium & Sympliciorum, cum succis plantarum phænomena, & analyses susceperunt, in aliquot mille Stirpibus elaborandas. Pars magna laboris absoluta, sed adgnita plerarumque analysium inutilitate suppressa est. Singularium vero stirpium & imprimis purgantium analyses, passim in Commentariis Regiis, nonnullas etiam in Germanorum Academicis disputationibus reperias.

in iis consistit, inquit HELMONTIUS (a), quæ dicam. Verno tempore easent plantæ oleis, & abundant sale, sed toto æstivo tempore principia maxime volatilia calore solis sensim abeunt, ut sunt sal & aqua, & concentrantur maxime fixa & tenacia, quæ sunt oleum inprimis & sal oleis implicitum, sicque circa autumnum abundat oleum in planta, quod illi conservandæ a natura destinatur, quando in solo suo remanet: Si quis nunc velit de planta aliqua habere salinam materiem, is circa vernum tempus juxta HELMONTII sententiam eam legere debet. Qui vero oleum & resinam & balsamum desiderat, illi circa hyemem planta legenda est.

Deinde Chemia etiam demonstrat quænam plantæ alicujus partes plus salis, quæ olei plus habeant. Semini plurimum olei inest, terræ, aquæ & salis minus. Qui ergo oleum de planta desiderat, semina sibi sumat, & quidem, uti dictum, autumno, quo oleum, tamquam balsamum, ad avertendas hyemis injurias, plurimum feminibus circumfunditur. Si quis me rogaverit, ubi hæ notæ characteristicæ apud Auctores reperiantur, vix novi; sed si absque jactantia dicere liceat, nostra Chemia hoc docet. Verum Auctores, qui symbolam ad hanc partem attulerint, fane non novi.

Tertia pars Pharmacis est, quæ docet asservare debite collecta simplicia. Chemia certe optime hæc docet, quando demonstrat, plantam & semina alterne & repetito exsiccata, & iterum humectata, & denuo exsiccata, omnem virtutem amittere; hinc indicat, nihil plus vires materiæ Medicæ labefactare, quam repetitam exsiccationem. Inde patet, ligneas capsulas maxime aptas esse ad conservandas plantas. Quod ad locum, ubi servari debent, iterum demonstrat Chemia, loca nimis calida huic rei non conducere, quia ignis omne volatile assumens salia alcalia reddit. Deinde cum hyeme frigus semper humiditatem afferat; hinc loca frigida non conducunt servandis stirpibus. Sed borealia loca sunt eligenda, ut semper Veteres annotarunt.

Quarta pars Pharmacis tradit præparationem Medicamentorum ex materia Medica, hinc Medicamenta per primam partem cognita, collecta per secundam, asservata per tertiam, per quartam in usum medicum præparanda sunt.

Hic indicandi sunt Auctores qui per artem chemicam Medicamenta præparare docent. Nullibi certe plus Chemia inservit Medicinæ, quam in excolenda hac parte Pharmaceutices, & quodcunque otores opponant, certe fateri coguntur se Chemia hac occasione indigere, nam ex ipsis rebus vegetabilibus, mineralibus, animalibus, si aliquid præparare velint, id sine Chemia certe perficere nequeunt. Cinamomi oleum habet vires medicas, id omne, quod vetustas excogitavit, superantes. Quis mortalium haberet contra nervi puncturam medicamentum, nisi spiritum ex terebinthina æthereum? hunc vero Medici ex nulla alia arte didicerunt, nisi a Chemia. Qui hoc experimentum instituerunt, invenerunt etiam unam vel alteram olei Fœniculi guttam sanare ægrum flatibus ex pituita laborantibus. Itaque Auctores in hac parte præstantiores indicabo.

Si

(a) Propriis scriptis hæc exposuit J. LUDWIGIUS de radicibus officinalium bonitate. Lips. 1743.
4. Huc etiam CL. RICHTERI Libellus pertinet de corruptelis medicamentorum. Dres. 1732. 8.

Si ergo quis velit videre, quomodo hodierna Chemia pro praxi inserviat, & doceat elegantissima ex omni rerum genere Medicamenta præparare, videat ANGELUM SALAM, cujus *Opera omnia Medico chemica* in 4. sunt edita *Francos.* an. 1647. (a). Auctor in his rebus exactissimus est, tam in colligendis præparandis, quam accuratus in describendis arcanis omnibus. Docet, planissimo fermone, tractare omne genus vegetabilium, animalium, mineralium, & omnes eorum partes ita perficere, ut Medicamentis inserviant. Auctor natione Italus est, sed in Belgio clarus, ubi diu vixit, dignus certe est, qui omni studio perlegatur.

Similia peregit JOHANNES SCHROEDERUS in sua *Pharmacia Medico-chemica* (b), quæ ultimo *Frankofurti ad Menum* edita est an. 1685. in 4. Ea enim editio indicem locupletissimum habet, sed etiam *Lugd. Batavorum* idem ille Liber prodiiit in 8. an. 1672. neque multum refert, utram harum editionem habeamus, utraque est bona. Nulla Pharmacia, quod scio, melior est, & nemo clarius, candidius, exactius scripsit, quomodo Chemia ex qualibet re educat Medicamenta; hinc superat certe ANGELUM SALAM, qui systematice, & magis pro Chemicis scripsit. SCHROEDERUS autem brevissime, & tamen omnia difficillima annotavit; nam nemo est, qui parvo compendio plura docuerit. Methodus ejus duplex est, 1. omnia describit sub suis titulis, & deinde 2. sub suis simplicibus: v. gr. dicit Absinthium esse colligendum eo tempore, & habere has vires in forma cruda, & illas in simplici infusione. Deinde recenset ea, quæ ex Absinthio in medicos usus præparantur. Scribit adeo, fit ex Absinthio talis tinctura, talis aqua, spiritus, sal, essentia alcalina, atque quinta essentia, & omnia describit exactissime & nervosissime.

Eandem rem peregit JOHANNES ZWELFERUS (c) in *Pharmacia Regia* quam

(a) ANGELI SALÆ *Opera Medico-Chemica* conjunctim prodierunt *Frankofurti* 1647. 4. Numerosa sunt Opuscula, quæ partim ad regnum vegetabile, partim ad fossilium historiam pertinent. Ad priora anatome essentiarum vegetabilium, Hydrelæologia, Tartarologia, Saccharologia, Exegesis chemiatriæ, Mirothecium spagiricum pertinent. Ad fossilia etiam hæc duo scripta, anatomia vitrioli & de natura vitrioli, tractatus de antimonio. Descriptio auri potabilis, chrysolgia, septem planetarum terrestrium explicatio, &c. Primus inter Chemicos desinit ineptire, si credis CONRINGIO. Aliqua alia pharmaceutica Opera hac occasione adducam.

Compositiones etiam medicas ex Chemia maxime repetitas, multas habet HADRIANUS AMNSICHT in *thesauro & armamentario medico-chemico*. *Lubecæ* 1646. 4. & alibi edito. Sed cavendum a nimis laudibus.

(b) Notissimus labor, frequentissime *Ulmae* & nunc maxime *Norimbergæ* 1746. & 1747. in folio editus. In quinque Libros dividitur. Primo continentur generalia quædam & vocum explicatio. Altero materia medica, tum simplicium catalogus, tum compositorum formulæ. Tertio, quarto, quinto, simplicia trium regnorum cum eorum præparationibus officinalibus, viribusque; Simpliciter omnia, paulum tamen credule & nimis alchemice scripta. Voces exoticæ sæpe corruptæ. Nihil valde arcani aut reconditi. FRIDERICUS HOFMANNUS, celebrioris FRIDERICI pater, *clavem in Opus SCHROEDERI* edidit *Halæ* 1675. & 1681. auctius in 4. quo auctaria continentur varia & chemica præparationes medicamentorum corriguntur, illustrantur.

Recensus hoc loco J. SCHROEDERUS editus est *Norimb.* Germanice 1685. 4. tum *Francos.* 1669. 4. Lat. *Norimb.* 1693. cum HOFMANNO *Fr. Lips.* 1718. 4.

(c) *Animadversionibus in Pharmacopœam Augustanam*. *Norimb.* an. 1675. 8zc. Augustanum dispensatorium hæctenus classici fere Libri loco fuit in Germania. ZWELFERUS gnarus, vel

quam edidit Norimbergæ in folio, anno 1675., neque tamen meretur comparari SCHROEDERO, nimis enim numerosas & difficiles præparationes congeffit, ut pro Galenica & Arabica Pharmacia bonus esset; ἀντίβεια vero artis nostræ splendet apud SCHROEDERUM. Hi bini viri, ANGELUS SALA & SCHROEDERUS, tam perfecti sunt, ut plurimi totam eruditionem suam illis debuerint.

Legatur etiam JOSEPHI QUERCETANI *Pharmacia Dogmaticorum restituta*. Liber est Parisiis editus, & iterum in Germania in 4. (a). Editio utraque æque plena est. Egregia est ejus *Pharmacia Hermetica*, uno volumine in 4. comprehensa. Ubi emetur unum Opus, sæpe simul habebitur alterum. Vir iste habet quædam, quæ in reliquis scriptoribus non reperiuntur, laboriosissimus fuit, & cum in magna fama viveret, multa cum auctoritate scripsit, ut Hermetis Dogmata; hinc etiam voluit inter Adeptos recenseri, & sententiam PARACELSI amplexus est. Apud eum omnes sententiæ Alchemistarum Germanorum antiquorum inveniuntur.

Supra omnes vero commendandus est DANIEL LUDOVICI in *Pharmacia moderno sæculo applicanda*. Gothæ Saxonicæ. 1685. 8. (b). Hic Auctor compendium totius Bibliothecæ Chemicæ & Pharmaceuticæ scripsit, & vocavit suum Opus Phar-

STAHLIO judice, homo, fund. Chem. T. III. p. 340. vitia & ambages compositionum demonstrare suscepit, novamque Regia nomine edidit *Pharmacopœam*. Norimb. 1667. fol. Nimio tamen ardore nimique temeritate usus nihil effecit, neque ipse aut satis chemicus, aut a farragine seculi sui repurgato fuit ingenio.

Editiones *Pharmacopœæ Augustana* sunt numerosissimæ, & nuper 1673. 1684. 1694. 1710. fol. Causam ejus egit contra ZWELFERUM WELSCHIUS an. 1675. Nuper aliæ successerunt similes *Pharmacopœæ*, ut ERNESTI FAGINI (BUECHNERI) *dispensatorium Regium Brandenburgicum* 1734. fol. prius an. 1698. editum quo Stahlianæ etiam præparata continentur.

Dispensatorium medico-pharmaceuticum Regium. Bresl. 1744. fol. *Dispensatorium Württembergicum*. Stutg. 1741. fol. *Pharmacopœa Regalis Lond.* 1746. 4. ex qua inutiles, & nimis fusæ compositiones ejectæ sunt, egregio omnino instituto.

J. ZWELFERI *animadversiones* Norimb. recusæ sunt 1693. 4. EJUS etiam *Pharmacopœa Regia* recusa est ibid. eodem anno 4.

Adde etiam huic tractationi CL. GALENI libri de *theriaca* quos in practicis recensui, tum de *antidotis* & de *substitutis medicinis*.

A. M. BRASSAVOLÆ *examen omnium syruporum quorum in medicina usus est*, Lugd. 1540. 8. MICHAELIS VILLANOVANI (celeberrimi illius SERVETI) *syruporum universorum ratio ad GALENUM diligenter exposita & vera purgandi methodus*, Paris. 1577. 8. Venet. 1545. 8. Lugd. 1546. 8.

MOYSE CHARAS de la *theriaque d'Andromachus*, Paris. 1685. 12. de simplicibus medicamentis, quæ eam formulam ingrediuntur, non inutiliter.

A. Q. RIVINI *censura medicamentorum officinalium*, Lips. 1701. 4.

SALOMON JACOBSON de *syrupis officinalibus*, Hall. 1739. 4. bene.

(a) *Pharmacopœa Dogmaticorum restituta & Hermeticorum floribus illustrata*. Paris. 1607. 4. & alias. Vanus homo & jactator, cujus tamen plusculæ compositiones auctoritate recentiorum Medicorum conservatæ sunt.

(b) DANIELIS LUDOVICI Medici Gothani *Diff. III. de Pharmacia moderno sæculo applicanda*. Sæpissime editæ sunt, Gothæ 1671. 12. Hamb. an. 1688. 8. & Francofurti, denique in Operibus omnibus 1712. 4. Inclaruit inprimis ob liberum judicium, quod de farraginibus incommodis medicamentorum interposuit, & utique simplicitatem, elegantiam, gra-

Pharmaciam moderno sæculo applicandam. Nempe considerat quam diversis & operosis Medicamentorum formulis tota nostra ætas aggravetur. Hinc ipsi animus est, ex his omnibus tantum id elicere, quod necessarium & optimum Chemici habue-

A a

bue-

gratiam secutus est. Turbant sermonem Parentheses. In hunc Auctorem ETTMULLERUS commentatus est, minus feliciter, si fides STAHLIO in *mat. med.*

D. LUDOVICI Dissertationes III. ibi recensæ cum ETTMULLERI commentario Gallice editæ sunt Lyon 1710. 8. Germanice vero J. HEIMREICH qui idem LUDOVICUM proprio libello defendit 1714. 8. In eum alterius commentarii NENTERIANI specimen exstat, Argent. 1708. 4.

VALERII CORDI dispensatorium sæpissime recusum, uti jam dictum est, mihi Leid. 1651. 12. cum P. COUDENBERG MATTH. LOBELII notis & G. RONDEL. Libro de theriaca.

A. P. COUDENBERG etiam Gallice versum est, Antwerp. 1575.

ADOLPHUS OCCO, ADOLPHI filius, ADOLPHI N. primum Pharmacopœam Augustanam edidit A. Vind. 1574. fol. recusam 1580. 12. 1597. Inde versa a Coll. medico prodiit 1613. fol. 1622. fol. 1646. Goudæ 1653. 8. A. Vind. 1673. 8. 1684. fol. 1694. fol. 1710. fol. & renovata Aug. Vind. 1734. fol. ed. 1673. prodiit defensio L. SCHRADERII. Medullam ejus contraxit VITUS RIEDLINUS, Ulm. 1707. 8. nempe utiliora medicamenta.

Il Ricettario medicinale Fiorentino per ordine del Gran Duca, Florent. 1567. fol. Latine versum a CLUSIO, Lugd. 1587.

M. CHARAS citata pharmacopœa Gallice prodiit Paris. 1682. 8. Anglice 1678. fol. Opera vero EJUS omnia Genevæ 1684. 4. 3. vol.

DE MEUVE prostat etiam Paris. 1689. 4.

N. LEMERY Pharmacopée prodiit etiam Venet. 1728. 4. Italice.

J. QUINCY lectures in Pharmacy. An idem opus Pharmacopée universelle raisonnée traduite par CLOUZIER, Paris. 1749. 4. an potius opus quod Pharmacopœa officinalis inscribitur, Lond. 1719. 8. Angl.

Verum, cum Pharmaceutice adeo necessaria & accepta pars Medicinæ sit, omnino non videtur posse nos omittere commendationem aliquot Auctorum ex omni tempore, qui formulas officinarum descripserunt. Initium potest fieri a JOHANNE MESUE, a J. SYLVIO, Parisiis an. 1562. 8. & Venetiis an. 1602. in fol. edito, & a NICOLAO MYREPSO, cujus Opus Medicamentarium a FUCHSIO Basileæ an. 1549. fol. editum est.

Ab istis enim Auctoribus multæ in Pharmacopolia compositiones transferunt.

Sæculo XVI. ex Dispensatoriis suffecerit VALERII CORDI Dispensatorium posthumum infinitis locis editum, bene vero & cum COUDENBERGII & LOBELII Scholiis an. 1652. 12.

M. CHARAS Pharmacopée Royale Galénique & Chymique. Parisiis 1676. 4. minime rudis hominis Opus.

JACOBI LE MORT Pharmacia & Chymia rationibus & experimentis instructa. Leid. 1684.

8. Multum habet Theoriæ, & tria elementa viscosum, ramosum & terrestre. Cæterum plantarum vires & præparationes describit; recusa est auctius ibid. 1688. 8.

DE MEUVE Dictionnaire Pharmaceutique, Parisiis 1677. 8. est quasi Bibliotheca Auctorum eo pertinentium.

ANT. de HEYDE nieuwv licht der Apothekers. Amstelod. 1682. 8. Habet etiam observationes Physicas.

N. LEMERY Pharmacopée universelle. Parisiis 1697. 4.

J. ALLEYNE English Dispensatory. Lond. 1733. 8. quo etiam materia medica & formularum systema conjunguntur.

SHAW Dispensatory of the Royal College of Physicians. Lond. 1721. 8. sæpissime editum; & omnibus aliis, nisi fallor, utilius, cum & Theoriam & Praxin Pharmacis, & materiam medicam novis inventis, ditiores, & Dispensatorium, & denique formulas extemporaneas contineat, sitque cauti & gnari hominis Opus.

buerint. Neque novi apud aliquem Auctorem tale quid absolutum esse. Omnia enim summo expendit iudicio, arcana candidissime tradit, inprimis in additamentis ad Pharmaciā suam; etiam hoc egregium est quod indicem habeat.

Id

ROBERTI de FARVAQUES *Schatkammer des Geneeskunst*, nuper auctius edita. Leida 1741. fol.

Compendii vice placuit mihi inter nuperos, JOH. FRID. CARTHEUSERI *Pharmacologia theoretico-practica*. Berolini 1745. 8. Verax nempe Auctor & fidus, neque nimius laudator.

Pro Dispensatorio JOH. HENR. SCHULZE *praelectiones in Dispensatorium Brandenburgicum*, Norimbergae 1736. editae, quae iudicium in compositiones continent. Artificia vero, quibus obtinetur, ut quam integerrimae vires corporum, & quam aptissime in medicamenta transeant, tradidit G. W. WEDEL in *Pharmacia in artis formam redacta*. Jen. 1677. 4. & in *Pharmacia in Acroamatica*. ibid. 1686. 4.

JOHANNIS QUINCTI *lectures in Pharmacy*. Londini 1723. 4. Brevis & dilucidus; sed posthumo Libello Auctor fere eodem scopo quo D. LUDOVICI rationes compositionum & vitia tradidit, & demonstravit, qua ratione quodvis medicamentum ad praescriptos fines duci possit, atque farraginem confusam ex magnis compositionibus officinalibus expulit.

Denique laboriosus compiler J. JACOBUS MANGET in Bibliothecam suam pharmaceuticam plurima congestit ad materiam medicam & artem pharmaceuticam pertinentia.

In ea vero Pharmaceutices parte magis medica, quae docet modum simplicia medicamenta in efficaces, neque tamen ingratissimas formulas componendi, sufficiunt G. W. WEDELII *de medicamentorum compositione extemporanea* L. II. Jenae 1678. cum tabulis synopticis. Jenae 1677. fol.

Clariss. viri HIERONYMI DAVIDIS GAUBII *de methodo concinnandi formulas*. Leid. 1739. 4. Formulas vero paratas selectiores habet *Pharmacopœa Bateana* (Opus Archiatri Caroli II.) edidit a J. SHIPTON. Londini 1688. 8. Auctior edita Anglice Londini 1694. & 1706. 1713. 8. & alias, tum J. FULLER *Pharmacopœa extemporanea*. Londini 1702. 8. Sed ista valde saepe inconcinnae & mistae alienis aut nimis ingredientibus, ut vocant, formulas continet. *Pharmacopœa Bateana* hic dicta prodiit etiam recusa Lond. 1691. 12. 1694. 8. aucta a GUIL. SALMON cum posologicis tabulis, Francof. 1702. 12. Auctior vero Anglice etiam recusa est, Londini 1720. 8.

Pharmacopœa Persica, Paris. 1687. 8. curiosa ob orientalium medicamentorum cognitionem. *Pharmarii collegii Regii Medicorum Edimburgensis*, Edimb. 1722. 8. 1735. 8. 1744. 8. Gotting. 1742. 8. Inter concinniores.

Dispensatorium Regium & Electorale Borusso-Brandenburgicum, Berolin. 1741. fol. Erford. 1734. fol. curante A. E. BUCHNERO, quam editionem passim carpit C. NEUMANNUS. In IDEM exstant *praelectiones* J. H. SCHULZE, Hall. 1736. 8.

THEODORI BARON *codex medicamentarius Parisinus*, Paris. 1732. 4. Regia auctoritate confirmatus, recusus anno 1749. a J. BAPT. THOMA MARTINENQ. 4. auctius & emendatius. Continet catalogum simplicium medicamentorum etiam recentiorum: inde praeparationis modus Galenicus, tunc chemicus. Multas adhuc compositiones, etiam praelongas conservarunt.

Pharmacopœa Würtembergica, Editio II. (prior est 1741. fol.) Stuttgartard 1750. fol. inter commodissima & plenissima dispensatoria, novis parumque notis medicamentis locupletata cum meliori plantarum memoria. Bene de opere meruit J. A. GESNER.

Ad cognitionem concinnandarum formularum sequentia adjicimus.

Plurimas CELSUS habet & AETIUS, omnesque pene veteres.

JULII DELPHINI *de ratione medicamentorum praescribendorum*, Venet. 1557. 4. * CONR. GESNERI *Evonymus de remediis secretis*, dictus in vita EJUS viri, recusus cum P. de VEGA, Lugd. 1620. 8. Anglice versus Lond. 1559. 4. AMES. & gallice 1555. Lugd.

De dosibus collectio opusculorum illustrium virorum, Venet. 1579. 8. nempe M. CURTII *methodus dosandi*, BENED. VICTORII, B. MONTAGNANÆ, GENTILIS FULGINATIS *de dosibus libelli*, RONDELETII *de ponderibus*, ALKINDI & T. GRADO *de gradibus virium* & P. GORRAEI *formulae*.

Id unum in LUDOVICI Opere mali est, quod stylo intricatissimo conscriptum sit; quum enim omnia ut helluo devoret, quæcumque ante eum ab aliis scripta fuerant, adeo intricate scribit, ut vix intelligatur, nisi ab iis, qui sententiam præcedentium Auctorum cognoverint. Verum qui aliquid de Pharmacia & Chemia callet, facile videt eum palmam omnibus præripuisse, & eo certe Libro nemo carere potest.

Absolvi jam enarrare id quod Chemia ad Medicinam faciat, divisi enim in generale emolumentum, quod Chemia Medicinæ præstat, & id quod singulare singulis Medicinæ partibus tribuit; utroque hoc iterum absoluto, habemus Medicum præparatum fere, ut suo se accingat studio. Habet enim animum nunc imbutum Mathematicis, Physicis, Historia naturali, ratio-

A a 2

cinio

SEBASTIANI CORUILLAT *materia & forma medicamentorum tum quæ intro assumuntur, tum quæ foris exhibentur*, Lugd. 1557. 16.

C. BAUHINI *de remediorum formulis Græcis, Arabibus & Latinis usitatis ad plerisque morbos accommodatis*, Francof. 1619. 8.

NICOLAI EPIPHANII *Pharmacopœa empirica seu formulæ & arcana cum RENODÆO* 1623. 4. Paris. Francof. 1726. 8.

MARCI BANZER *fabrica receptarum, i. e. methodus præscribendi formulas*, Aug. Vind. 1622. 8.

PETRI MORELLI *systema parascevasticon ad praxim .. continens rationem præscribendi formulas secundum normam practicandi Monspeliæ usitatam*, Genev. 1628. 8. 1650. 8. Amstelod. 1659. 12. Lips. 1645. 8. opera J. FAC. a BRUNN.

J. VARANDÆI *formula remediorum* 1658. fol. in operibus omnibus.

J. MICHAELIS *opera in quibus apparatus formularum seu annotationes in MORELLUM de præscribendis formulis*, Norimb. 1688. 4.

HADRIANI a MYNSICHT *Thesaurus & armamentarium medico chemicum*, Lubec. 1662. 4. 1638. 4. Francof. 1675. 8. Venet. 1718. 8. 2. vol. Remediorum chymicorum satis etiam nunc celebres formulæ.

JOH. PREVOT *medicina pauperum & de remediis facile parabilibus & EJ. selectiora remedia exstant in opusculis*, Hanoviæ 1666. 12. excusis

HENRICI TENKE *formules de médecine tirées de la Galénique & chymique*, Lion 1682. 12. 1690. 12. & Latine *instrumenta curationis morborum*, Lugd. 1683. 12. 1687. 12.

EMANUEL KOENIG *thesaurus remediorum ex triplici regno* Basil. 1694. 4. Pharmacopœam Bateanam operi inseruit, & chemica BOHNII & alia.

J. J. MARCGRAF *materia medica*, Leid. 1716. 4. continet artem formularum concinnandarum. *Thesaurum Ludovicianum* seu DANIELIS NEBELII *pharmacia LUDOVICI* edita est Norimb. 1720. 12. nempe bonorum remediorum selectus.

THOMAS FULLER *pharmacopœa extemporanea*, Lond. 1701. 12. 1710. 8. 1714. 12. 1719. 12. (cum Bateana) 1723. 8. Roterod. 1719. 8. Amstelod. 1731. 8. Lauann. 1737. 8. Mille sunt formulæ validiorum medicamentorum, sæpe tamen Germanico palato ægerrime offerendæ.

HIERONYMI ZANICHELLI *promptuarium remediorum chymicorum*, Venet. 1701. 8.

PET. JOSEPH. RODRIGUEZ *apis Hyblæa*, Madrit 1706. 4. Formularum collectio *

Pharmacopœa Radeliffiana from his original recepit P. I. Lond. 1716. 8. secunda 1719. 8. tum a STOTHERO editæ *præctical dispensatory* ejusdem, Lond. 1730. 8. & Germanice versa Lips. 1721. 8.

J. JUNKER *conspæctus formularum medicarum* 1723. 4.

HERMANNI BOERHAAVE *materia medica*, Leid. 1729. 8. & alias formulas continet ad aphorismorum ordinem.

J. F. CARTHEUSER *tabula formularum præscriptioni inservientium*, Fr. Viad. 1740. 8.

HIERONYMI DAVID GAUBII *methodus concinnandi formulas*, Leid. 1739. 8. Franc. 1750. 8. Galliçe Paris. 1749. 12. commodissimum ad hanc artem compendium.

Ad

cinio & Chèmia. Hæc etiam scire oportet, ut perfectus evadat Medicus, iis destitutus æternum ignorabit Medicinam, qualis hodie nota est; neque enim scopus noster est scire unice, quomodo præscribendum sit medicamentum, & quomodo tractandus sit æger, sed quærimus quid hodie in Medicina notum sit. Si tamen aliqui ea nolint admittere, quæ exposita sunt hactenus, minus rerum curiosiarum cupidi, saltem nunc sequantur ea, quibus ne ipsi quidem carere poterunt.

Ad doses etiam pertinet G. COCKBURNÆ de purgantium & emeticorum dosibus determinandis pro ætate & temperamento. Phil. Trans. n. 307. & THEOD. BALTHAZAR de dosibus medicamentorum diatribe. Lipsiæ 1719. 8. ubi ex Algebra compositio medicamentorum in venientes fines & formularum structura determinantur.





C A N D I D O
L E C T O R I
ALBERTUS HALLER,
S.



BOERHAAVIUS paucissimis vocibus Botanicae attigit. Cum vero ea Medicinae pars utilitate alias aequet, omnes vero amoenitate superet; fusiorum Librorum eo spectantium catalogum addere eo minus dubitavi, quod in iis scriptis multum & cum voluptate versatus, proprium de multis iudicium potuerim interponere. Cum vero mea supellex non satis plena esset, supplevi praecipuos, ut quidem mihi videbatur, Auctores, ex JOH. FRANCISCO SEGUIER, aliisque fide dignis Scriptoribus, repetitos: eos autem omnes Asterisco signavi, quotquot non penes me fuerunt. Non omnes aut Libros, aut editiones.

tiones, aut disputationes academicas, quæ plurimæ apud me sunt, enumerare visum est, ne infinitus fieret labor. Selectam enim, non plenam, Bibliothecam promisi, & limites, in hac parte, potius produxi, quam justo arctius contraxi.

Cæterum occasionem nactus cum Medicinæ Cultoribus colloquendi nolui dimittere. Est aliquid, quod dudum male me habuit, & in dies gravius menti meæ incumbit. Nescio qua arte inimicorum meorum, aut quo demum parum benigno mihi fato, fit dudum, ut iniquior, ingrator, & æmulus denique dicar BOERHAAVIO. Famam sprevi diu, nunc autem video, & in Litteris minacibus, & in Diariis, & imprimis in rumoribus doctorum Belgarum hanc increbescere calumniam. Non molliorem vocem meretur hæc adeo injusta exprobratio. Multi BOERHAAVIUM audierunt, coluerunt, nemo me amavit magis. Nemo me majores labores toleravit in emendandis ejus codicibus scriptisque, quos subii, nulla mea cum fama, nullo inclarescendi ductus studio, qui potueram meas opiniones, meam phænomenorum & experimentorum collectionem alio ordine meoque proposuisse: quem nulla certe cura mei jubebat breves horas, neque reditura tempora in ingratis emendandorum codicum labore consumere: qui id consilium potuissem a principio sequi, quod sero sequor, ut ad propria elementa cogitationes meas ordinarem.

Sed quidnam demum posset in meis de BOERHAAVIO amoris & venerationis testimoniis desiderari, aut ab iniquissimo homine ultra postulari, ego quidem non video. Omnes mihi notos colores effudi, quibus summam de eo viro existimationem vivide depingerem. Nulla cito loca, omnia enim scripta mea iis testimoniis replentur.

Sed

Sed diffensi a VIRO OPTIMO, sed ultra videre volui, aut citra eius opiniones consistere, aut aliter describere partes, aut definire utilitates partium. Non patienter fero adeo immodestam petitionem. Mene vero præferre aliquem, qui me ipsum vero non præferam, qui de sententia mea decedam cupide, quoties nova experimenta lucem adfuderunt novam, ad quam menda opinionum mearum perspicerem? Potestne a bono viro quidquam exigere simile? An ii viri, quos ajunt conspirasse in meam existimationem, serio unquam ipsi ita se manciparunt BOERHAAVIO, ut meliora viderent, PRÆCEPTOREM sequerentur?

Sed extat in Diario quodam, Lingua scripto Gallica, nescio quæ comparatio BOERHAAVII cum meis *Commentariis* iniquior PRÆCEPTORI. Imo alias novi extare multo iniquiores. In ea enim, de qua queruntur, neque ego, neque amici, quos ingenii acerrimi, integerrimi judicii, me habere inter summas meas laudes duco, quidquam aut indecenter animosum, aut petulanter iniquum in BOERHAAVIUM invenire potuerunt. Plura ipse D. MATY (si est Auctor *Elogii Critici* BOERHAAVII), & in elogio quidem, in magno viro carpserunt, & ea omnia, quæ in *Diario* minus probantur, ea omnia prior monuit, etsi ejus Opusculum posterius prodiit.

Sed ego quidem videor mihi eam rem perspicere. BOERHAAVII nomen, Belgis venerabile, sumunt sibi inimici mei, qua, quasi larva, mihi terribiles fiant, Civibus suis honesti Præceptoris sui videantur defensores. Alia secta est, neque BOERHAAVII curat aut famam, aut sententias. Nam & has frequenter deferit, ubicunque sibi videtur, & illam mihi ipsi, si iis laqueis me irretiri passus essem, amicisque meis prodit. Nulla enim alia ratione vehementius ad demon-

stran-

strandos errores PRÆCEPTORIS provocari possem, quam hac artificiosa exprobratione meæ, ad eum virum relatæ, tenuitatis.

Neque tamen eum quidem finem attingit ea secta. BOERHAAVIUM amavi, veneratus sum, carus ipsi fui, in prima mea juventute. Multis nunc annis officiis publicis admotus, nihil decedere passus sum de justa pietate in Virum bonum, modestum, veriamantem, eruditionis variæ, eloquentiæ singularis, ardoris in Artem Medicam incredibilis, Botanici diligentis, Chemici indefessi, Medici theoretici in Europa principis, Practici inter illustrissimos. Nunquam dedidici uti PRÆCEPTORIS nomine. Menda Viri texi, invitus ab eo dissensi, sæpe adhæsi non satis firmæ opinioni, quoties vel aliquo modo auctoritatem tueri licuit. Nunquam etiam ab eo tempore, quo indigna varia, ob eam imaginariam æmulationem, sum passus, aliter sensi, aut sentiam unquam.

Potero dissentire, potero aliter aliqua videre, docere, nunquam vero eo me abripiet ullus mentis error, ut ex diminutione famæ PRÆCEPTORIS voluptatem famamque capiam.

Atque ita valere Te jubeo, Lector candide, & ad sextam partem hujus Operis transeo. Dabam in Georgia Augusta die 28. Junii 1748.

METHODI STUDII MEDICI

PARS VI.

Botanica.



ORDO jubet, ea primum disci debere a Medico, quæ remotiora a Medicina sunt, & inter hæc ea, quæ simplicissima. Huc vero pertinet studium Botanicum & materia Medica; hæc ergo jam pertractanda veniunt.

Multi quidem Botanicam addiscunt, qui Medici neque sunt neque fuerunt, exemplo est MORISONUS, FABIVS COLUMNA, &c. potest enim addisci hæc scientia, sicut historia naturalis; ergo Botanica est remota a Medicina. Sed simplicissima est, itaque ab illa incipiet Medicus, non enim petit hoc studium magnum ingenium, sed tantum memoriam, & bonam methodum (a).

Postquam Medicus futurus omnium rerum præcedentium cognitione imbutus est, nempe scientia Mathematica, Physica, & Chemica, ordo jubet ut addiscat ea, quæ pertinent ad simplicium medicamentorum cognitionem, & sciat unde materies petatur, ex qua conficiuntur omnia ea, quæ vocantur medicamenta. Medicamentum vero, ut omnes norunt, est id, quod applicatum corpori valet & in sano futurum morbum arcere, & in ægro morbum tollere, qui jam adest.

Ex hac definitione statim videmus, hæc medicamenta vel esse corpora, quæ applicantur vel ingeruntur corpori: vel, ut ita dicam, spiritualia, quæ per rationis judicium sic mulcent. Verum prima classis proprie est medicamentorum.

Verum sanare quid est? ita tollere morbum, ut restituatur æger, & is omnis in corpore status destruat, qui per morbum prius adfuit; sanare ergo non est simpliciter morbum tollere, sed ita tollere, ut id, quod per morbum corrumpebatur, restituatur in integrum; debet ergo, ut sanatio fiat, morbus tolli & sanitas labefactata restitui in integrum, per illud corporeum, quod corpori sive interius sive exterius applicatur. Cum ergo medicamentum sit corporeum aliquid, materies Medica (quam DIOSCORIDES prius vocavit ὕλην ἰατρικὴν, hoc est, *sylvam materiei Medicæ*, ὕλην ἰατρικῆς, hoc est, *sylvam Medicinæ*, a qua Græca voce mansit hodierna vox materiei Medicæ,) est collectio omnium illorum corporum, ex quibus

Bb

bus

(a) Summam difficultatem hujus Studii demonstrat exiguus numerus eorum, qui in eo excelluerunt. Qui deinde ex notis singularibus specierum notas generum, ex generibus notas classium & adfinitates constituere tentat, is satis experietur, & vastam memoriam & vividam, quæ tot singularia conjuncta repræsentet, imaginationem & non obtusum denique judicium requiri.

bus petitur medicamentum; hinc, ut addiscamus materiam medicam, debemus adire Pharmacopœum instructum his omnibus.

Verum hæc phrasis non tantum sylvam sive acervum simplicium significat, sed etiam collectionem compositorum & præparatorum, quæ ex hac materia Medica componuntur & parantur; & quando Medici dant materiam medicam pertractandam, tunc non tantum hunc acervum describi volunt, sed historiam etiam tradi medicam omnium horum simplicium, tam quod ad eorum notas, quam vires & facultates. Si nunc inter ea omnia medicamenta aliquid reperiatur non præparatum, sed ita recipiatur in Medicinam, uti a natura datur, vocatur illud *simplex*. Referuntur huc etiam, quæ in varias partes resolvuntur. Ita Antimonium crudum *simplex* vocatur, sed tamen constat sulphurea & metallica parte: itaque Antimonium *simplex* dicitur, non quod ex partibus proprie simplicibus constet, sed quod a natura absque humanæ artis officio nobis suppeditetur; & illud est, quod Galli vocant *Drogues*, nempe omne, quod pertinet ad acervum, unde colliguntur medicamenta, & simplicia, & præparata.

Distinguitur nunc materies Medica 1. in descriptionem simplicium, id est enarrationem omnium, quæ non præparata a natura suppeditantur, eorumque notas ac characteres. 2. In præparationem & resolutionem simplicium, hoc est, docet hæc pars adhibere medicamenta & simplicia & composita per artem. Jubet ordo, ut dicamus primo de descriptione simplicium medicamentorum, qua occasione monemur addere studium Botanicum, non quod absolute a Medico scitu necessarium requiratur, sed quod ipsi multum profit, ut videbimus (a).

De materia hacce simplicium scripserunt plurimi Auctores, qui tironibus & jam provectioribus legendi sunt. Eos vero ita distinguo. Scripserunt omnino diverso modo,

(a) Alia sunt officia Botanici inventoris, sive hominis qui plantarum cognitionem perfectam ambit: alia Medici practici, qui prioris inventa recipit, inque suos usus convertit. Ille prior tenetur, quantum fieri potest, omnes in orbe terrarum plantas ita nosse, ut characterem cujusque undique teneat, & ut nomen specificum, genericum, classicum imponere possit cuique, & adsignare scriptorum synonyma, descriptiones, & denique utilitates physicas, œconomicas, medicas adjicere. Quare cum plantarum multa millia nota sint, eæque in diversissimis regionibus nascantur, nec facile cuique sub oculos cadant pleræque, & multæ sibi similes sint, & scriptorum sæpe confusæ descriptiones, notæ imperfectæ, nomina mala, apparet enormis labor qui incumbit Botanico.

Medicus autem a Botanico recipit definitas jam descriptasque plantas, quarum vires cognitæ, vel propriis erutas experimentis ad curandos morbos admoveat. Cum ergo inter millenas stirpes vix centum sint quarum medica vis nota sit, sublevatur enormi onere stirpium exoticarum plerarumque, muscorum, fungorum, graminum. In eo vero laborat, quod nisi methodum teneat, paucae illæ plantæ, non fere supra mille, enormem difficultatem pariant cognituro. Si solas enim cognoscendas receperit absque methodo, signa, ex quibus plantæ dignoscuntur, composita, vaga, imperfecta sunt. Quare etiam ad eas paucas plantas cognoscendas methodum quivis Medicus addiscere tenetur. In ea cuius stirpi adsignatus a natura character, quo inspecto & ab omni alia planta citissime separatur, & ad verum nomen pervenitur. Prima enim inspectio v. gr. petali rejicit plantas apetalas, & monet ut in petalodeis quæratur: deinde petalorum numerus, fabricæ staminum, numerus & proportio, ducunt ad classem & genus, ut inter paucas plantas optio superfit, quæ inter decies mille foret, si methodus abesset.

modo, nonnulli difficili operē rediguntur in concinnum compēdium; unde aliquis compendiaria via materiam Medicam discere possit; verum alii ita scripserunt, ut nihil omittant de natura ejus rei, quam pertractant; hinc, quando hæc ars addiscitur, debemus accurate distinguere, quinam ab incipiente, quinam a magis provec̃to legendi sunt Auctores.

MARCGRAVIUS (a) edidit tractatum in 4. Lugduni Batavorum, cui titulum dedit *Materiam Medicam contractam*, qui Libellus est sic digestus, ut omnia fere simplicia, quæ in pharmacopœis Europæ præscribi solent, certe nomine tenus ibi contineantur; deinde, quod ad characteres notasque melioris suæ & pejoris conditionis describantur; & brevissima denique eorum historia, & vires tradantur. Super hoc Opus solebat Auctor prælegere, quamdiu Lugduni Batavorum docuit.

Ad hanc rem etiam maxime pertinet SCHROEDERUS in Pharmacia sua, eodem nempe Tractatu nuper commendato, ad cujus certe ordinem tiro utilisissimum manuscriptum ad suum usum compilare potest; nam ille ex omnibus optimis Auctoribus locum natalem simplicium collegit, tunc adjunxit notas optimas, inde exhibet modum colligendi, adservandique ea, tandemque vires, quatenus ex simplicibus illis dependet, egregie descripsit.

Si MARCGRAVIUS legatur cum SCHROEDERO in parte ad simplicia pertinente, & colligere animus sit, quidquid commune habent, & sic quotidie horam unam aut duas huic labori impendat tiro, habebitur elegans schema materiæ medicæ, quoad simplicia.

Scripsit etiam SAMUEL DALE (b) *Pharmacologiam seu Manuductionem ad materiam Medicam seu Pharmaciā*. Est Liber in 12. editus Londini anno 1693. In eo brevi stilo nec divertente a scopo proponuntur simplicia, ad classes reducuntur brevissime, recensentur vires, & de notis & characteribus optime & summo cum ingenio scribitur.

Plurimi alii (c) scripserunt, de materie Medica, verum hi tres sufficere possunt

Bb 2

(a) CHRISTIANI MARCGRAVII *Materia Medica contracta*, variis annis & Leidæ an. 1716. 4. edita, omnia complectitur, quæ ad Pharmaceuticē pertinent, catalogum simplicium cum aliquibus notulis: virium generalia secundum veterum methodum, formularum rationem & tabulas dosium quæ quamlibet ingrediuntur, dispensatorium denique sive formulas officinalium compositionum. Sed nimis breviter describit simplicia, & multa nunc addita sunt a Botanicis & Chemicis, quæ apud ipsum desideres.

(b) *Supplementum* prodiit Londini an. 1705. & totum Opus Londini an. 1710. 12. & Bremæ recusum est an. 1713. 2. vol. 8. Auctius vero recusum est Londini 1737. 4. & vero an. 1739. 4. in qua editione supplementum suis locis insertum, nova varia addita, synonymina multum aucta sunt ab ipso, jam provec̃tæ ætatis Auctore. Continet enumerationem simplicium, quæ in Medicinam recipiuntur, valde copiosam, ex Rajanis operibus & Pluknetianis, aliisque nuperioribus ditatam, ordine botanico Rajano dispositam.

Supplementum ad DALE pharmacologiam prodiit etiam Bremæ 1705. 8. Totius autem operis exstat etiam editio, quæ prodiit Londini anno 1718. 12.

(c) In *Pharmacobasano* FLOYERI. Lond. 1691. 8. D. H. habentur etiam minime male plantarum vires ex sapore & odore determinatæ, cum propriis variis de earum utilitate observationibus.

possunt pro tironibus. Si vero pro dignitate & cum eruditionis laude velimus hanc materiam pertractatam, adire tunc alios debemus.

Ex

G. E. STAHLII Materia Medica. Dresdæ 1728. 8. Germanice edita ex Codice M. S. Auctoris minime inutilis est, quæ fideles cautelas, & vanarum laudum refutationes, & modum extrahendi vires stirpium sapienter tradit. Chrysellum montanum valde laudat, viribus tamen humanæ digestionis duriores.

J. H. SCHUIZE Materia Medica posthuma. Halæ an. 1746. 8. edita, imprimis plantas officinales tradit non absque utilibus observationibus. Rudes errores, v. gr. nomen Cayennæ pro arbore datum, quod insulæ est, Auctori non tribuo.

Verum copiosiores nunc extant materiæ Medicæ Auctores, *MICHAEL BERNARDUS VALENTINI*, *PAULUS HERMANNUS*, *CASPAR NEUMANNUS*, *PETRUS POMET*, & *STEPHANUS GEOFFROI*. Eorum primus dictaverat Discipulis, *Cynosuram materia Medica*, Argentinae an. 1710. 4. editam, in qua simplicia Medicamenta, secundum vires in classes disposita, deinde eorum composita, formulæque variæ habentur. Pretium addit cognitio rerum, quam per propria itinera Auctor adsecutus est. Hoc Opus in immensum auctum *JOHANNIS BOECLERI* industria an. 1726. & seq. tribus voluminibus in 4. Argentorati prodit, ubi vix ulla plantula omittitur, quæ unquam fuerit formulis inscripta, & historia simplicium undique habetur congesta.

MICH. BERNARDI VALENTINI Museum Museorum. Hujus prima pars Francofurti 1704. altera ibidem 1714. in folio prodit. Vastum Opus, neque sola Medica continet, recipit autem totum Opus *POMETI*, tum varia ex *JÆGERO*, *CLEYERO*, *RUMPHIO* de plantis Indicis, & infinita alia undique congesta, de conchis, lapidibus figuratis, animalibus variis, technicis etiam omnium generum.

CASPAR NEUMANNUS in *praelectionibus chemicis* totam materiam Medicam complexus est, satis cautus & verax, noxorum inventorum minime ignarus, analysi simplicium adjecta propria. Berolini prodit 1740. 4.

Denique *STEPHANI FR. GEOFFROI* Opus brevius est & multo certiores habens simplicium exoticorum historias, ex nuperrimis itinerum & rei naturalis Scriptoribus, analyses etiam, ut alibi dixi, & vires medicatas ex observationibus congestas.

PETRUS POMET Aromatarius Parisinus, vir a musis alienus, satis vero suarum rerum peritus, origines simplicium, loca natalia, signa genuinae aut sublestæ mercis habet. Sed plantarum Icones sæpe valde rudes sunt, multaque fabulosa credulus recepit. Ejus Opus cum titulo *histoire générale des Drogues* prodit Parisiis an. 1694. fol. & nuper a filio utilitatibus nonnullis & dosibus auctum 1735 aliquid habet a *BOURDELOTIO* & aliis.

NICOLAI LEMERI Dictionnaire des Drogues simples. Parisiis an. 1698. 1714. 4. variis linguis redditum.

Vastum etiam Opus materiæ Medicæ sub nomine *Introductionis in historiam rerum naturalium & arte factarum* aggressus est scribere *J. C. RIEGERIUS*, quo fusissime omnem undique materiam Medicam erat complexurus: sed in litera C. Opus substitit. Hagæ prodit an. 1742.

Eam vero partem solam, quæ ex plantis repetitur, *CHOMELIUS* tractavit cum titulo *histoire des Plantes usuelles*, quæ Parisiis an. 1715. in 2. vol. 12. Deinde Parisiis 1730. 3. vol. Amstelod. 1736. in 3. vol. 12. cum supplemento prodit brevis ea & unice in virium enumeratione occupata.

CHOMELII histoire des plantes usuelles prodit etiam Parisiis 1738. 3. vol. 12.

Huc etiam posthumus Liber *TOURNEFORTII*, qui sub nomine *matière Médicale* cura *D. BESNIER* a morte auctoris prodit Parisiis 1717. 12. 2. vol. quo descriptiones stirpium continentur & vires habentur & formulæ, quas planta quæque ingreditur.

Post *TOURNEFORTIUM* adde: *ERNESTI ANT. NICOLAI systema materia medica*, Hall. 1741. 4. quod in practicis repetetur.

BARTHOLOMEUS ZORN, *SIMON PAULI* in *quadrupartito Botanico* & plerique Botanici Scriptores, vires etiam plantarum descriptionibus addunt.

Ex optimis huc pertinentium Scriptorum est GABRIEL FALLOPIUS (a) in Operibus suis in folio tribus voluminibus, aut uno majore tomo editis. Scripsit *Tractatum de simplicibus & materia Medica in Dioscoridem*, eruditissimum & profundæ contemplationis. Scripsit etiam *Tractatum de Aquis thermalibus*, etiam nervosissimum, in quo ex aquis medicatis & aquis thermalibus colliguntur medicamenta; hic *Tractatus* seorsim etiam editus est, in Operibus tamen omnibus perinde invenitur. Tertius *Tractatus de Fossilibus* ejusdem Auctoris habetur, in quo etiam de illis omnibus optime & eleganter dicit; hinc, qui emunt Libros, eruditorem dissertatorem super hisce rebus non invenient, quam hunc Auctorem nunc maxime commendatum.

Qui plenissimam hanc historiam desiderat, legat DIOSCORIDEM cum notis MATTHIOLI (b) ex editione CASPARI BAUHINI, habebit, quidquid optare

(a) Anatomica equidem quam chemica aut botanica laude magis floruit Vir præstantissimus, etsi minime rudis fuerit herbarum, quem adiutorem suum laudat MATTHIOLUS præf. ed. 1554. Liber ejus de *Medicamentis simplicibus* non nisi in primum Librum Dioscoridis commentatur, quem Ferrariæ interpretatus est FALLOPIUS (*Amatus Lusitan. in Dioscorid. p. 322.*) neque ab ipso Auctore editus est, sed a Discipulo aliquo posthumus prodiit. Liber de *Aquis thermalibus* ab ANDREA MARCOLINO editus, ejusdem est conditionis, natus ante tempora verioris Chemiæ & Aquarum medicatarum Italiæ historiam secundum sæculi ingenium continet: stillicidium etiam describit. Liber de *Metallis & Fossilibus*, qui Venetiis an. 1564. 4. primum prodiit, editore eodem, veterum descriptiones cum ipsis naturalibus comparatas tradit. Liber de *Purgantibus simplicibus* multum equidem habet ratiocinationis, sed effectus tamen veros, in artis exercitio a FALLOPIO compertos, hinc fideles tradit.

(b) DIOSCORIDIS de *materia Medica* L. V. ejus alexipharmaca & theriaca infinitis locis prodierunt prioribus sæculis, nunc enim fere negliguntur veteres. Prima est editio Aldina an. 1499. Deinde Latinam versionem edidit JOHANNES RUELLIUS Parisiis anno 1516. fol. qua plerique usi sunt. MARANTA tamen in præf. se deceptum esse queritur. Alia cum HERMOLAI BARBARI erudito corollario, eodem anno Venetiis edita est in folio; sed & ipse naturam non est indagatus. Anteriorem autem eam editionem esse lego in GIORN. de' LETTER. T. XXVIII. & absque anni indicatione. Corollarium ejusdem viri cum MARCELLI VERGILII editione Argentoratensi editum est. Aliam vero editionem MARCELLUS VERGILIUS Florentiæ edidit 1523. fol. & Coloniae 1529. fol. antiquo usus codice M. S. sed grammaticus qui non stirpium adeo cognitionem quam genuinam lectionem adjuverit, aliam iterum JANUS CORNARIUS notis etiam adjectis Basil. an. 1557. in folio edidit. Aliam ANDREAS LACUNA, parum versatus in Botanicis, J. BAUHINI judicio I. p. 529. Alii certatim eo sæculo in Dioscoridem commentati sunt, ut GUALTERUS RYFF. Francof. 1543. fol. Tum AMATUS LUSITANUS primo JOH. RODERICI de CASTELLO ALBO nomine, deinde suo, qui *enarrationes in Dioscoridem* edidit 1557. Venetiis in 4. etiam Argentorati 1554. 4. & Lugduni 1558. cum Fuchsi iconibus excusas. Is Judaicus homo Pharmacopolis fere usus est, aliqua tamen ex nuperis inventis ejus ævi bona habet. RONDELETTI prælectiones in Dioscoridem TOURNEFORTIO dictæ (Isagog. p. 31.) nunquam prodierunt. In Dioscoridem etiam breves, sed utiles *castigationes* dedit JACOBUS GOYPYLUS in editione Græco-latina, Paris. 1549. 8. in qua RUELLII habetur versio quam editionem omnibus præferunt CAMPII.

Prima editio DIOSCORIDIS, quam diximus anno 1499. prodixisse, Græca est cum NICANDRO fol. Latina autem versio, quam J. RUELLIUS dedit, prodiit etiam Francof. 1543. fol. & Lugduni 1590. 8. Editio autem, quam M. VERGILIUS dedit, primum excusa est 1518. fol. Florentiæ, deinde secuta ea est, quam diximus. LACUNÆ vero DIOSCORIDIS editio

tare poterit circa hoc negotium, etiam si eam rem deberet pertractare pro munere Professoris, in eo tamen Libro haberet quodcunque indigeret, & nihil certe

editio prodiit Salmanticæ 1566. fol. & Valentia 1636. fol. ANT. G. RYFF, quem commentatum esse in *DIOSCORIDEM* diximus, *RUELLII* versione usus est. De *A. LUSITANO*, quem ob bona, quæ ex inventis ejus ævi habet, laudavimus, id nunc addimus, ridicule tamen fuisse credulum, qui struthion ex passerum semine vere nasci credat p. 268. In *DIOSCORIDEM* etiam exstant *H. SMETII* commentarii qui miscellaneorum Libros IX. efficiunt.

Florentiæ codicem *DIOSCORIDIS* vidit *CAIUS* de l. progr. p. 195.

DIOSCORIDES ipse penus prima est virium, quales nostro ævo plantis adscribimus, & quæ fere eadem nunc solent in stirpibus poni, quas iisdem cum nominibus *DIOSCORIDES* conjunxerat, nominibus inquam, cum in plurimis sit incertissimum, an easdem, an diversissimas plantas iis designaverit nominibus hic Auctor, quæ nos ad plantas nobis notas adscribimus. Vir cæterum militaris, qui fama potius quam propriis experimentis usus est, nec modum, quo medicamenta adhibenda essent, exposuit, neque morborum, quibus prodesse, distinxit status, & causas. Descriptiones pleræque leves & superficiales & per comparationes dedit, quæ ab ignoto ad ignotum remittunt. Vixit ante *Plinium* potius, cum pauciores plantas habeat. Opera omnia *DIOSCORIDIS* absque iconibus optime Græce & Latine habentur ex *JOHANNIS SARACENI* editione an. 1598. Francofurti in fol. edita, nisi quod ad naturam notasque nobis plantas nos non ducat. Liber de alexipharmacis & theriacis, qui vulgo pro VI. numeratur, suspectus fuerat, sed a conjectura sua ipse recessit *LAMBECIUS* Comment. de bibl. Vindob. L. VI. P. 2. p. 146. ob præfationem ad *AREUM* & styli similitudinem. Deinde parabilium L. II. a *JOHANNES MOIBANO* versi, & a *C. GESNERO* editi Argentinae an. 1565. 8. secundum morbos medicamenta simplicia collocata habent. Eos, aliis suspectos, pro legitimis habet *CAS AUBONUS*. Manuscriptus cæterum *DIOSCORIDIS* codex in Cæsarea bibliotheca latet antiquissimus, Justiniani ævo scriptus & anno forte 505., a cujus tamen iconibus non multum spei est, si ex iis æstimandæ sunt, quas *DODONÆUS* passim sculptas dedit, & ex Mandagora, quam solam icone expressit *LAMBECIUS*. Ejus codicis fufissimam descriptionem dedit *PETRUS LAMBECIUS* L. II. C. VII. p. 489. a. ex qua apparet, non ipsum Opus esse, sed compendium alphabetico ordine digestum, excerptum vero ex *Dioscoride*, unice plantas tradens. Alium vero similem codicem, sed hujusmodi, qualis vulgo extat, continet ea Bibliotheca. Eum reliquerat nimio pretio absterritus apud Judæum *AUG. A. EUSBEQ* in fin. Epist. alium Neapoli apud *S. JOHANNEM CARBONARIUM COLUMNA* vidit, cum egregiis, siquidem eas laudat, figuris. Fratres porro *CAMPII* recensent quinque codices *M. S. DIOSCORIDIS*, & præferunt *ALDINUM*, Paludani ajunt pessimum esse, *CORNARIANUM* post *ALDINUM* (*Spicileg.*) p. 56. seqq.

Quod nunc commentatores attinet doctissimus equidem *CORDUS* est, sed brevis, *GUALTHERUS RYFF* nihil de suo adtulit, jam *CONRADO GESNERO* observante (in præf. ad *CORDUM* & *TRAG.*) figuras ex *EGENOLPHIANIS*. *JANUS CORNARIUS* naturæ parum curiosus ex Libris explicavit Libros. *SARACENUS* doctus vir imprimis ex aliis veterum locis comparatis *Dioscoridem* illustravit magis quam ex plantis. *RUELLIUS* & *VERGILIUS*, ut alias dictum, antiquorum scriptorum longe quam plantarum gnariores fuerunt. *AMATUS* neutra laude clarus. *P. A. MATTHIOLUS* Libros Arabum & recentiorum in numeratis habuit: *THEOPHRASTUM*, *NICANDRUM*, aliosque Græcos, apud quos sparsa de plantis monumenta extant, vix adtigit. Plantarum cognitione neque valde excelluit, neque tamen fuit penitus ignarus, certe eo sæculo. Id vitium commisit maximum, quod & imponi sibi sit passus, & aliis imposuerit. Primum vitium fecit, ut multas ab aliis communicatas secum fictitias plantarum icones Operi inferuerit: alterum, ut ad descriptiones veterum finxerit & distorserit passim figuras, & mera figmenta pro veris plantis obtulerit. Sed non ideo absque usu est grande hoc Opus, & multa experimenta continet, & ad cognitionem plantarum insignissime majorem ea, quæ in *MANARDO*, *RUELLIO* aliisque vetustioribus fuit, & *DIOSCORIDIS* plerasque stirpes declaravit additis iconibus, & ipse alpinas aliquas suis

te ultra sperare potest, si habeat illam Librum ex recensione CASPARI BAUHINI (a), qui vir fuit eruditissimus, tam quoad sententias veterum, quam neotericorum, sua addidit, & castigavit omnia summo cum rigore, ita ut inde confecerit Librum in folio, & plus quam 110 figuras addiderit, adeo ut pro perfectissimo Opere de descriptione materiei Medicæ jam habeatur, illoque ideo ad hanc rem carere nemo poterit.

Huic eruditissimo Operi addere possumus CLAUDII SALMASII *Exercitationes Plinianas in SOLINUM & CAIUM PLINIUM* (b). Hoc Opus Lugduni Batavorum & Parisiis, an. 1642. editum est, & est eruditissimum, continet quidquid apud veteres historicos, poetas, &c. de materia Medica invenitur; verum etiam hoc fatendum est, errores inesse plurimos, doctissimus enim vir fuit, sed minime Botanicus, scripsitque de plantis, quas nunquam viderat.

AGRICOLA in folio etiam est optimus Auctor de *historia Metallifodinarum* quod ad Simplicia.

Hi Auctores sunt, unde fatendum est, nos omnia hausisse, quæ de hac re hodie traduntur.

Sufficiunt ad hoc studium hi imprimis Auctores, si legantur ordine recensito, & deinde ex iis Medicus compendio excerpserit accuratissime, quidquid proprie ad scopum Medicum pertinet. Quando Medicus vult multa habere perspecta de Absinthio, videat MARCGRAVIUM, is dicet ejus proprietates & qualitates: verum si velit scire, an sit eadem planta, de qua PLINIUS scribit, sub eo nomine, eruditiores Auctores tunc adeat, & legat MATTHIOLUM in DIOSCORIDEM ex recensione BAUHINI, qui vir eam plantam correxit in DIOSCORIDE MATTHIOLI, & vobis dicet, quid agendum sit, ut habeatur, & cognoscatur verum Absinthium Ponticum veterum. Hinc necessario debent tirones in usum suum in compendium redigere materiam Medicam ex iis Auctoribus, nempe brevissimo verbo excerpere, quale sit simplex veterum, & videre, an conveniat cum descriptione recentiorum; ita denique certi erunt de pharmacia veterum, utendum etiam est DALEO, in quo veteres cum recentioribus brevissime comparantur.

Si vero præter generalem hancce materiæ Medicæ contemplationem, desiderat præterea tiro Medicus cognoscere rem Botanicam singulatim, super hac re da-

fuis locis legit. Modestior etiam in veterum plantis definiendis fuit, etsi cæterum plurimum sibi ipsi tribuat. Obiit an. 1557. annos natus 77. *RAI. Topogr. obs.* 389. 390. postquam magnam partem vitæ partim in Bohemia, partim in Comitatu Gorizienti vixerat.

(a) CASPAR BAUHINUS Matthioli Opera junctim edidit Basileæ 1598. fol. addidit stirpibus icones Tabernæmontani & de suis, quas BOERHAAVIUS citat, nomina aliorum scriptorum subjunxit & species ejusdem generis alias. In errores etiam MATTHIOLI & figmenta animadvertit, utilis utique Auctor, sed quantum remotus a plena historia materiæ medicæ! cui plus altera medietate novarum stirpium & minerarum a Dioscoridis ævo accesserit. Huic editioni etiam epistolæ MATTHIOLI subjectæ sunt, quæ seorsim prodierant Pragæ 1561. fol.

(b) Alibi diximus, consentiente ibi BOERHAAVIO, SALMASII Opus ad conciliandas opiniones veterum *concordantia* loco esse posse, ad naturam autem minime ducere, neque stirpes veterum cum iis quas nos experiendo cognoscere didicimus, ullo modo revocare.

re dabo consilia. Primum est (a), ut eligat Magistrum, viva voce, & digito indicem monstrantem quamlibet herbam, nunquam vero incipiat ab Auctoribus legendis.

Si intelligamus per Botanicam cognitionem sensibus acquisitam omnium plantarum, quæ inventæ, detectæ, & cognitæ sunt, tunc hæc ars ad Medicum non pertinet, nam potest aliquis perfectus esse Medicus, licet nesciat, quot sint v. gr. plantæ Africanæ, Americanæ, &c. sufficiet Medico scire, quid cognitum sit hoc tempore ad usum Medicum; hinc sufficient forsan 100. vel 200. plantæ, quas si noverit Medicus distinguere a reliquis, habebit, quod sufficiat. Verum, qui dedignatur eam cognitionem stirpium, quæ satis sit Pharmacopœo, & vult omnes cognoscere plantas notas, is demum Botanicam scire vult: id autem tunc studium non tam proprie ad Medicum, quam ad historiam naturalem pertinebit. Quid enim juvat Medicum, si describuntur tot species Tuliparum, Hyacinthorum? nihil quidem. Non tamen ideo, si cognoscatur planta aliqua per generalem doctrinam Botanices, mereretur repudiari. Si vero Medici, qui animum suum huic studio unice dederunt, ægre sui instituti inveniunt legitimam, nisi eam, quam nunc dicam, adferant rationem. Plurimæ plantæ descriptæ sunt apud veteres, & apud HIPPOCRATEM nonnullas invenimus. Quando nunc Medici harum dictarum plantarum volunt effectum cognoscere, oportet utique, ut eas notas habeant. Veteres enim eas cognoverunt, alioquin non potuissent in usum revocare. Verum non sufficit cognoscere nomen; si velles HIPPOCRATIS aliquam herbam mihi cognoscendam exhibere, non sufficeret, si mihi obtruderes plantam eodem nomine donatam a recentioribus; verum requirerem, ut tutus adfirmares hanc esse veram plantam HIPPOCRATIS, & tuas rationes adderes. Et si diceres, en Absinthium HIPPOCRATIS! deberes prius cognoscere omnes species Absinthii, & ita distincte cognoscere, ut scires, quænam species esset Absinthium HIPPOCRATIS; en hæc est tota ratio, cur omnino plurimi Medici Botanicæ totos se dederint, nempe ut ingenio suo distinguerent omnes herbas, & recte cognoscerent, quænam plantæ essent veterum. Horum primus fuit FABIVS COLVNA (b).

Ex

(a) De ea methodo alibi scripsi, qua pervenitur ad cognitionem solidam stirpium. Princeps opera ponenda est in colligendis stirpibus, quarum si plurimas & ex diversissimis regionibus potuerimus comparare, plurimum adjuvabitur studium. Triginta veronicæ species si coram habuerim, facilius certe determinabo singulas, quam si decem tantum in collectione fuerint, quas oporteat cum triginta descriptionibus conferre. Earum omnium recentium characteres sollicite describere oportet. Deinde methodus tenenda est aut naturalis, aut certe aliqua, & ex ea methodo plantas ad genera reducere necesse est. Species vero denique determinabimus, quando plantas siccas, auctas descriptione floris in recente planta facta, secundum methodum naturalem, cum descriptionibus & figuris optimorum Auctorum comparaverimus, donec per suas quæque notas singulæ nostræ plantæ cum singulis Auctorum plantis unitæ fuerint & confluerint. Si Præceptore, quæ rarissima fortuna est, in tanto Botanices neglectu, frui licuerit, magnum erit laborum compendium, imprimis in magnis familiis, quarum difficillima solet esse tironi evolutio. Verum quum PRÆCEPTOR hic præeat in exponenda bibliotheca Botanica, liceat in labore gratissimo sequi virum optimum, deque Scriptoribus rei herbariæ paulo uberius, & cum sincero iudicio scribere, quod ex ipsis Scriptoribus perlectis natum sit.

(b) Sæculo XVI. plerique Botanici, maxime priores, id unicum sibi studium fecerunt, ut plantas inve-

Ex viva voce docentis Magistri, qui nomina det plantæ, & digito indice eas demonstret, debet tiro Medicus Botanicam addiscere, nunquam incipiendo a lectione Auctorum; eo enim modo hanc scientiam addiscere nunquam poterit. De industria hoc monitum repeto.

Nam licet viderit tiro plantam cum figura (a) apud Auctorem aliquem, non poterit cognoscere, an sit eadem ac veterum planta, omnes enim figuræ recentiorum Opera sunt, si excipias figuras in DIOSCORIDIS vetustissimi manuscripto codice, qui in Imperatoris Bibliotheca servatur; nam antiquis figuris caremus, neque ullam apud THEOPHRASTUM habemus, nisi forte in ejus manuscriptis codicibus.

Ergo tironem oportet discere apud Magistrum docentem, & horum similia præcepta accipere; „ hæc herba, quæ vocatur ex. g. Absinthium, est hujus figuræ, & hujus
Cc „ sapo.

Invenirent, quibus veterum nomina congruerent. Neque certe immerito. Ridiculum enim est, in medicas formulas recipere v. gr. Epithymum, & iis destinare indicationibus Medicis, quibus veteres epithymum destinaverunt, si id Epithymum diversum est ab Epithymo veterum: miraculo enim foret simile, si alia planta vires haberet easdem. Verum sensim recessum est ab hoc studio. Nimis senserunt rerum gnari, descriptiones veterum fere omnes imperfectissimas esse a colore, a comparatione, a rudi foliorum aut caulium figura defumtas: accedere difficultati, quod Veteres stirpes Græcas, Syriacas, aliasque calidarum regionum cognitas habuerint, quæ nobis exoticæ sunt, & parum notæ. Incepit ergo remittere de hac curiositate CLUSIUS, & eum potius sibi finem ponere ut stirpes a DEO creatas ita describeret & depingeret, ut ab omni curioso homine possent agnosci. FABIVS equidem COLUMNA renovavit studium explicandorum veterum, motus miro desiderio inveniendæ plantæ, quæ morbo suo mederetur, & dicitur laboris sui præmium tulisse, etsi JANUS PLANCUS suspicatur, infidelem fuisse medelam & seniori COLUMNÆ recidivum morbum omnem animi vim oppressisse. A COLUMNÆ vix cogitatum est de veterum plantis. PETRI BELLONII, JOSEPHI TOURNEFORTII, & aliorum in orientem itinera auxerunt desperationem, cum neque eo, raro & pretioso labore Helleborum, aut Sesamoides, aut Centaurium majus, aut alias veterum plantas definiri posse appareret. Sed non ideo inutile est studium. Medicamenta pleraque & præcipua sunt ex vegetabilibus. Opium, Cortex Peruvianus. Ut plantas Medicas curationi adhibeat Medicus, debet eas cognoscere. Sed stirpes unius generis omnes cognoscere oportet, aut nullam. Inter triginta Hieracia nunquam firmiter *myrorum* illud Hieracium cognosci poterit, nisi cognitis adfinibus omnibus. Adde quod cultus Botanicæ accuratior augeat medicamentorum potentium numerum, debilius minuat. Obtulit Botanica Medicis stirpes efficaces, & in suo genere principes, Absinthium alpinum, Bidentem, Scordium, Hippocastanum, Melissophyllum, Orchidem, Millesfolium nobile, tot alias stirpes, quæ singulæ aut suas proprias vires habent, aut vulgaris speciebus ejusdem generis præstantiores. Si nondum in Praxin Medicam aut satis communiter aut satis confidenter sunt receptæ, Medicos est cur accuses, non Botánicos. Infinitos etiam errores ex pharmacopolis lux Botanica dispulit. Ejecit ex officinis Iridem palustrem pro Acoro venalem, Polygonatum pro Helleboro, Lychnidem arvensem pro Nigella, & venena pro medicamentis, aut inertes plantas pro heroicis dedocuit adhibere.

(a) Figuræ apud veteres imperfectæ valde & fere inutiles fuerunt, ipso dudum arguente PLINIO, & confirmante codice Cæsareo. Rudissimas etiam invenies in IOH. CUBÆ horti sanitatis. Primus ad naturam aliquas depictas dedit civis meus OTHO BRUNFELSIUS, sensim vero artificium perfectione crevit. Circumscriptiones FUCHSIUS castigatiores dedit, flores plantasque primus GESNERUS. Deinde fide iconum & specie inclaruerunt CLUSIUS, JOACHIMUS CAMERARIUS, FABIVS COLUMNA; JACOBUS ZANONI (Indicis exc ptis), HORTI MALABARICI AUCTORES, MARCHANTIUS, PAULUS HERMANNUS, & inter nuperiores RIVINUS, JOHANNES JACOBUS DILLENIIUS, qui propria manu pinxit & sculpsit;

„saporis, &c. Ubi addidicit nempe facies illas stirpium, & curiosus vult videre, an Magister bene docuerit, ibit in hortum Botanicum, cum suo DIO-SCORIDE (a) seu alio Auctore, & videbit, an convenient characteres cum iis, quos dedit Magister; ita faciet, ut studium, quod alias difficile videtur & confusum, facile & distinctum reddatur.

Explicui nunc, qualis cognitio herbarum requiratur exquisitè ad studium Medicum, quomodo nempe ille Medicus, qui officinales hodie dictas plantas tantum novit, possit quidem inquirere, & experimenta capere de earum virtutibus, ne-
tquam vero scire, an sint eadem, quas descripsit verustas, ut aptas ad sanandos nonnullos morbos. Verum, si quis velit hanc etiam partem Botanices tenere, totum utique systema (b) Botanices addiscere debet, non enim aliter eo perveniet, ut sciat, an plantæ cujusque nomen a veteribus datum sit. Adeoque, ne oneremus nos maximo labore, credo ad praxin medicam non opus esse cognitione totius Botanices, etsi ad rem medicamentariam veterum bene cognoscendam hæc cognitio absolute requiratur.

Ille, qui sequitur methodum Magistri indicantis, sequitur optimam eo ipso viam ad studium Botanicum, & omnia eo pertinentia addiscet accuratissime. Si vero optimus Magister, bonam methodum secutus, ipsi non contingeret, ut plerumque fit, tunc oportet cognoscere paucissimis, quænam sint elementa sic dicta Botanices, & fundamenta methodi.

Methodus doctrinæ plantarum vocatur instructio, juxta quam plantæ, hætenus cognitæ, optime in memoria retinentur, & novæ detectæ, quales quotidie innotescunt, facillime ad veteres cognitæ referuntur. In hac methodo opus non est, ut explicentur vires herbarum, nam cum ad Aconitum revoco Anthoram salu-
tiferam herbam, non putandum est, me Anthoram eo referre, quia easdem habeat vires. Procul abest, nam, si Napelli exhibuerim radicem, occidet hominem, quod non facit Anthora (c). Ita porro quoque Solani species est Belladonna dicta, letalis & furiosa herba, cum Solanum (d) officinale dictum, multum ab ea dif-
ferat,

sculpsit; JOSEPHUS PITTON de TOURNEFORT, SEBASTIANUS VAILLANT, pictores CODICIS ICONUM REGIARUM, D. EHRET in horto CLIFFORTIANO & iconibus in Anglia prodientibus. Meas, fides non destituit, artem æstimare nolo. Utilitas iconum quoties bonæ sunt, summa est, unica enim inspectio imaginem animæ imprimit longe meliorem longissima descriptione, quæ ipso tædio legenti fit inutilis. Plantas, quibus unica species vel paucæ certe genus componunt, subito ex iconibus cognoscere facile est. Si genera composita fuerint, juvabit addidisse bonæ iconi brevem descriptionem & notam discriminis.

(a) Frustra certe in excursionibus circumferet DIOSCORIDEM, vagum illum absque characteribus Auctorem. Sed JOHANNEM BAUHINUM domi consulat, ibi reperiet cumulate collecta veterum loca cum sapientis viri censura conjuncta.

(b) Ne tunc quidem eruet stirpes veterum: nunc etiam minus postquam nomina Pliniana & Dioscoridea LINNÆUS ad nova genera arbitrario jure designanda adhibuit, absque ullo ad aliquam veteris novæque stirpis analogiam habito respectu.

(c) Anthoram & ipsam suspectam esse alibi ex FRIDERICI HOFMANNI, & aliorum observationibus adduximus. *Enumer. Stirp. Helveticar.* p. 313.

(d) Solanum hortense non absque vi venenata esse eodem loco ex idoneis Auctoribus confirmavimus. Non ideo non vera sunt, quæ observat PRÆCEPTOR. Nam dulces Ranunculos inter acres, insipidos Tithymales inter acerrimos, reperiri certum est. Longe
tamen

ferat, habet enim refrigerandi vim gratissimam, unde in summo æstu gratissimum refrigerium persentiscunt ægri, a Belladonna vero rabies excitatur, quæ plerumque summa cum anxietate hominem occidit.

Adeoque non putandum est per suum systema Botánicos voluisse tradere cognitionem virium plantarum (a). Sed cum infinitæ sint plantæ, aut certe supra 11000, impossibile est nomen singulare iis omnibus dare, & tamen oportet imponere nomina, quibus una ab altera dignoscatur, ut adeo neque plantæ absque nominibus vagarentur, neque obrueret memoriam nominum multitudo. Botanici nomen primum generale dederunt ex notis in foliis & floribus & fructibus positis, omnesque plantæ, quæ in his partibus eundem characterem habent, ad idem nomen referebantur. Deinde addiderunt adjectivum aliquod, quod distinguit unam plantam ab alia, uti v. gr. in Solani genere plures plantæ sunt, quæ hoc nomen generale Solani habent; nam unam speciem voco Solanum fo-poriferum, alteram speciem Solanum scandens, &c. In nostro adeo exemplo nomen Solani significat genus, cui additur adjectivum, quod speciem distinguit (b).

Nunc vero quæritur, unde hoc nomen repetendum sit; & cum nomen non detur ut explicetur virtus, sed, ut retenta facie unius plantæ reliquæ ad eam revocentur; optimum omnino est Systema TOURNEFORTII, quoties tantummodo nomen plantæ imponendum est (c).

Cc 2

Videa-

tamen plerumque vires sequuntur adfinitatem, ut totarum classium consentientes potestates Medicas pridem in *Philosophicis Transactionibus* JACOBUS PETIVER n. 255. & nuper in *fundamentis suis* CAROLUS LINNÆUS in regulæ formam constituerit C. XII. n. 336. *seqq.*

(a) Generum & specierum divisionem veteres vix tenuerunt. Pauca exempla sunt, plures eos sub eodem nomine conjunxisse species, & tunc numero inprimis usi sunt, in quo nulla nota inest discriminis. Primus, qui plantas aliquot, ex convenientia in flore & fructu in idem nomen docuit conjungere, CONRADUS fuit GESNERUS *Epist.* p. 39. b. Conf. nostrum de hoc viro inter Physicos elogium.

(b) Absque systemate Botanicen addiscere impossibile est, quidquid contradicant harum rerum ignari C. HOFMANNUS & HIER. FANTASTI in *Giorn. de' Letter.* Tom. XVII. p. 249. Nulla memoriæ felicitas sufficeret retinendis notis discriminis, tot millium plantarum, si cuivis suum nomen esset, neque multæ uno comprehenderentur vocabulo. Hæc enim summa utilitas est methodi, quod nominum numerum insigniter contrahat, & hæc ipsa nomina per conspicuos characteres in classes uniat, adeoque modum doceat, quo ex inspecto flore & fructu quamvis obviam plantam primo ad summam, deinde ad inferiores classes reducere, tandem genus ipsi suum assignare possimus. Specificum demum nomen discitur ex longe faciliori paucarum stirpium comparatione, quæ unius generis sunt.

(c) Methodus TOURNEFORTIANA a flore & a fructu desumpta est. Flos autem in eo systemate præcedit. Ex flore secundum figuras perennitatem, numeros, & adfinitates, TOURNEFORTIUS classes constituit. Ex figura flores fecit campaniformes, rotatos, infundibuliformes, hypocrateriformes, caryophyllæos, rosaceos; ex adfinitate liliaceos; ex numero tetrapetalos; &c. ex perennitate apetalos. Arborea a plantis reliquis seposuit, eas a fructu disposuit. Generi cuilibet suam præfixit iconem, quæ florem fructumque exhiberet, de aliqua specie sumtos. Stirpes in methodum digessit plures, quam priores Botanici, ex itineribus Hispanicis, Græco, Asiatico, ex PLUMERIANIS. Non facile stirpes veterum repudiavit, & CASPARI BAUHINI plantas repetiit, non quod vidisset unquam, sed quod nollet tantum virum deferere. Varietates non conjunxit, sed subjecit tamen veræ speciei. Synonima pauca, & fida, adjecit. Methodum naturalem, quantum potuit, conservavit.

Hinc

Videamus nunc nominationis fundamentum ; nomen unice designat ; convenientiam inter quasdam plantas , propter proprietates nonnullas , quibus conveniunt , v. gr. Solanum habet florem monopetalum multifidum ; pistillum convertitur in baccam mollem rotatam ; fructus est bacca membranacea pulposa , foeta feminibus compressis & ovatis ; hinc jam nomen illud Solani datur plantæ, cui dictæ notæ conveniunt, non vero ei plantæ, quibus virtus Solani convenit.

Si nunc nomen plantæ habetur, tunc facile, quoties videmus plantam, his datis notis inscriptam, licet nondum noverimus, qualis planta sit, scimus eam pertinere ad Solanum; sumimus ergo indicem, quo species quamplurimæ continentur, & inquirimus per omnia Solana. Pone nunc illam plantam, de cujus nomine specifico inquiris, præter dictos Solani characteres, esse flore Borriginis & spinosis foliis, video certe in indice plantam existere inter Solana, cui hæ notæ in nomine tribuantur, & concludo, id nomen meæ Solani speciei competere. Si vero aliquid aliud habet, quod in Solanis, in indice meo descriptis, non invenitur, erit nova species, referenda ad genus Solani.

Sic nunc videamus etiam methodum practicam, qua plantæ ad genera sua revocentur :

Genera a **TOURNEFORTIO** descripta sunt fere 700. ad summum, si nunc unius cujusque generis nomen noverimus, cum fundamento, ob quod hoc nomen accepit, facile erit plantæ inventæ nomen dare ex characteribus. Si inveniam plantam, quæ calicem decaphyllum, florem rosaceum pentapetalum habuerit, cujus fructus ex pistillo oriatur, sitque factus pulpa molli carnosâ, in qua multa semina sunt, post unum florem, quis non Fragariam eam vocabit, quia in systemate generali **TOURNEFORTII** vocatur eo nomine Fragariæ ea planta, cui hi characteres adsunt.

Ergo sufficit 700. nomina generum in memoria habere, atque tunc quamcunque viderim plantam, eam facile revoco ad id genus, cui **TOURNEFORTIUS** definitum per suas notas nomen dedit. Si adeo memoria hæc 700. nomina ferre possit, eorumque notas, systema Botanicum tenemus memoria.

Si

Hinc Liliaceorum genus ex floribus omnis figuræ & numeri compositum, hinc Papilionaceorum. Primus genera firmiter constituit, apud ipsum **RAIUM** laxa vagaque. Structuram florum numero prætulit exemplo Caryophyllatæ, Pulsatillæ, Sedi (*de optim. method.* p. 24. 25.) Hæ fuerunt viri laudes. Sed non ideo facile est, hujus Systematis ope plantas continuo determinare. Arbores primo a plantis humilibus incommode sejunxit **JOSEPHUS**, & contra systema proprium, ut in Papilionaceis, adeo flore & fructu similibus, a sola statura separatis apparet. Deinde figuras aliquas florum parum diversas constituit, ut Hypocrateriformes ab Infundibuliformibus, a Rosaceis Caryophyllaceos. Aliqua genera valde imperfecte tractavit, ut Cryptogamiam, Gramina. Descriptiones characterum genericorum nimis dedit similes sui, & plenos repetitionibus, quæ non satis definiant characterem, nisi a figuris juvantur, exemplo definitionum floris rosacei, quem floribus tribuit adeo diverso numero petalorum præditis: neque cum eo auxilio satis definiti sunt characteres, ut ex iis facile sit plantas v. gr. Verticillatas, Tetrapetalas, Siliquosas, Cardui species, &c. ad suum genus referre. Nomina minime scientifica, & inutilia, conservavit. Hæc vitia sunt, quorum cum pleraque a **LINNÆANO** systemate absint, factum est, ut undique deseratur **TOURNEFORTIUS**, cujus veras tamen laudes alibi repetemus.

Si rogas, quænam methodus Botanica optima sit? omnis methodi scopus est, levare memoriam, & plantam quamlibet facile redigere ad suum locum; ergo systema est optimum, quod ad hunc finem facillime ducit.

Si jam inquiramus facillimum (a) omnium systema, inveniemus in methodo TOURNEFORTII paucissima nomina dari, & tamen plantas ita distingui, ut facile possint ad data nomina reduci, quæcunque plantæ inventæ fuerint; sed ea methodus, quæ omnes plantas ad genera paucissima reducit, & tamen redigit omnes, ea optima est, nam requiritur tantum memoria, & revocatio plantarum ad digestas classes. Nunc cum TOURNEFORTIUS omnes classes plantarum seu genera secundum flores suos & fructus distinguat, & ad paucissima nomina seu genera revocet, omnes certe plantæ, quæ definitum fructum & florem habent, ad definitum, huicque figuræ respondens genus facile revocantur. Si nunc quærat, an hoc systema perfectissimum sit, hoc est, an ad paucissima & distinctissima genera plantas revocaverit TOURNEFORTIUS? nondum licet respondere, nam certe non sufficiunt unius Auctoris vires, ut omnino absolvat omnia, hætenus tamen TOURNEFORTIUS est optimus in his Auctor, & viam facilem monstravit.

Ergo, si velimus addiscere principia Botanica, hoc est leges, juxta quas plantæ ad distinctissimas, & facillimas classes, & justum locum referri possint; legatur præfatio TOURNEFORTII in ultima ejus Operis editione; & *Appendix post elementa ejus Botanica* (b), ubi explicuit omnem diversitatem florum & fructuum, & terminos artis quibus utitur. Si hæc duo legerimus, quod intra spatium duorum vel trium dierum fieri potest, omnia sciemus quæ TOURNEFORTIO intelligendo sufficiunt, reliquum erit tantum index legum, juxta quas hoc systema condidit.

Methodus, quam secutus est JOHANNES (c) RAJUS, omnino etiam digna est,

(a) Facillimum systema est, in quo notæ generum optime definiuntur sive ea complexæ sint, sive simplices, dum certitudinem habeant, neque destituant utentes eo filo. Ab hac laude TOURNEFORTIANUM longe abest, nimis vagum laxumque. Sed ipse BOERHAAVIUS eo tempore, & cum ederet primam editionem catalogi horti, propior TOURNEFORTIANÆ methodo, cujus omnia genera recepit, recessit sensim, & ad methodum quidem HERMANNIANAM, ita tamen stirpes proposuit, ut nullam notam neglectam vellet, atque adeo ad methodum naturalem deflecteret.

(b) Editiones methodi TOURNEFORTIANÆ tres sunt, quæ recensentur inferius, suoque loco. Plurcula nova genera inserta sunt *Monumentis Academiae Scientiarum* anni 1105. & 1706. quæ DILLENIIUS expressit in *Appendice sui catalogi plantarum circa Gieffam nascentium*.

(c) JOHANNES RAJUS minoribus longe quam TOURNEFORTIUS prædiis instructus ad rem herbariam accessit. Hortum non habuit, ruri vixit, Libris paucioribus usus est, itinera etsi multa fecit, non ita tamen vasta, neque in adeo felices regiones suscepit. Characteres propria observatione infrequentius investigavit. Plurimum usus est JOHANNIS BAUHINI & CHUSII inter veteres laboribus, singulari etiam industria flores undique collectos in sua Opera collegit. In methodo perpetuo vacillavit. Et primo quidem ita laxam coluit, ut tot fere genera haberet, quot species. In ultimo senio HOTTONI, & TOURNEFORTII observationibus plurimum usus, methodum HERMANNIANÆ similem, genera TOURNEFORTIANA fere recepit. Auctor habetur naturalis methodi, quam hic rejicit BOERHAAVIUS. Ejus ea lex est, ut ad finitates a NATURA creatas sectemur, plantasque sibi pluribus ad fines notis jungamus, etsi una differant: Pluribus notis diversas separemus, etsi

est, quæ cognoscatur. Lis ingens exorta est inter duos principes Botánicos elapsi sæculi: JOHANNES RAJUS id habebat propositum, ut putaret fundamentum similitudinis, non ab una & duabus notis, sed ad omnibus esse desumendum; hinc nolebat ex convenientia floris, & subsequenti fructus totum genus definiri, omnes vero notas voluit esse simul considerandas, ut est modus crescendi, facies plantarum, fructuum, florum, &c. & legem posuit, ut plantæ, quibus plura communia essent, revocarentur ad eandem classem. Hanc methodum RAJUS naturæ magis congruam esse credidit, quia axioma esse videtur, quo plura attributa similia duo entia habuerint, eo plus convenire inter se. Optima certe methodus esset, si memoriam sublevaret. Nunc cum ad radices, & folia integra, & hujusmodi alias externas stirpium notas attendendum sit, debent necessario nasci plura genera in methodo RAJANA, quam in TOURNEFORTIANA, neque tam facile est, omnes characteres illos ita in memoria habere. Fatendum est adeo, methodum quam secutus est TOURNEFORTIUS, meliorem esse, quia memoria levatur, & plures plantæ ad pauciora genera reducuntur. Et satis differentiæ notarumque est in flore & fructu, ut inde genera constituam. Interim utile erit addere methodum RAJANAM TOURNEFORTIANÆ, & sic intra biennium totam Botanicam intelligemus.

Verum erit, qui objiciet, si argumentum propositum valeat, non optimam esse TOURNEFORTIANAM methodum, cum facilior alia methodus sit, RIVIANA nempe, qua plantæ tantum a flore distinguuntur, aut aliorum, qui a fructu tantum, ut HERMANNUS. Utique, si hac ratione plantæ ordinari possent, sane longe facilius foret opus Botanicum: verum, qui hoc fecerunt, non potuerunt servare leges sui systematis, sed alia addidere ad distinctionem specierum. Ita in flora HERMANNI (a) subdivisiones generum invenimus, adeoque imperfecta est doctrina.

AN-

etsi una conjungantur. Omnis vero artificialis methodus ex una, duabusve notis plantas conjungit aut separat, nullo ad reliquas, aut exiguo habito respectu. Quare faciliores istæ videntur ob paucas notas, sed vere difficiliore sunt & infideles, quia aut a suis regulis coguntur dispensare, aut enormiter divellere plantas plurimis notis simillimas. Nemo fuit artificialis Auctor methodi, qui naturalem clanculum non adhibuerit. Solo excepto KNAUTIO, quem ob abnormes arbitrarias sejunctiones generum ex una nota factas, deseruerunt omnes. TOURNEFORTIUS, LINNÆUS, reliqui utique naturales adfinitates suis propriis systematibus in praxi præferunt. Exemplo sit apud LINNÆUM *Tussilago*, *Convallaria*.

(a) PAULI HERMANNI methodus cum MORISONIANA aliqua communia habet, ut loculamentorum enumerationem, Gymno-tetraspermas, Bacciferas, plurima tamen meliora. Ex papilionaceis & Liliaceis Gymnopolyspermas eruit, loculiferas distinctius disposuit, arbores addidit, has more fere TOURNEFORTIANO. Ea methodus extat in *Flora Lugduno-Batava floribus*, quos LOTHARIUS ZUMBACH edidit anno 1690. & AUCTOR ipse incipiebat emendare, sed intermortuus est editioni *Flora Leidensis secunda* anni 1695. OLAUS RUDBECKIUS eam methodum amplectitur in *Diff. de fundamentali plantarum notitia acqui-renda*, Upsaliæ edit. anno 1690. & 1691. 12. Augustæ in Vindelicio recusa. BOERHAAVIUS pleraque de Hermanni methodo retinuit, & classes omnes; genera aliqua, ex suis & HOTTONI observationibus correxit, marinas addidit, arbores ex TOURNEFORTIO disposuit, characteres naturales adjecit stirpibus. Id habet in universum proprium, quod semina nuda deinde vasculis tecta, hinc eorum & loculorum numerum, horum longitudinem, & invo-

ANDREAS CÆSALPINUS (a) primus eam methodum invenit distinguendi a fructu. Archiater Pontificis fuit, idemque cui prima cognitio circulationis adscribitur, quamvis falso. Scripsit egregium Librum *de plantis*, qui rarissimus est, & carissimus; hunc descripsit MORISONUS (b), nam primus CÆSALPINUS a fructu stirpes digessit.

Ex MORISONO pleraque habuit HERMANNUS, qui per omnia eum secutus est, nam ipsa nomina MORISONI proponit; non vero nomina BAUHINI, & aliorum, & in flora generales etiam MORISONI characteres exponit.

Veteres, jam a 2400 annis, scripserunt de re Botanica, ut THEOPHRASTUS. HIPPOCRATES per experimenta jam didicerat datam herbam, in hoc dato morbo, hunc datum effectum producere. Nunc recentiores in Botanica demonstrant herbam aliquam, cui applicant nomen istud HIPPOCRATIS, easdemque ejus salutares vires expectant. Verum planta, quam recentiores adferunt, etsi forsan easdem virtutes habuerit, quas illa habuit ab HIPPOCRATE descripta, potest tamen alia esse ab Hippocratica, hinc alia argumenta requiruntur, ut istius rei certiores esse possimus. Ergo nunc *studium Botanicum antiquitatis* vocatur illud, quod per argumenta solida demonstrat, veterum plantam esse eam, quæ ab hujus studii (c) Auctoribus, cum eo nomine demonstratur, necessitas ejus studii facile ap-

involucrum succulentum pro fundamento ponat. A naturali differt, quod nimium tribuat loculorum numero: quod genus bacciferum, & unisiliquarum arbitrarium sit, arbores separentur a plantis umilibus, &c.

(a) Primus de methodo cogitavit CONRADUS GESNERUS, eaque de flore sumpta & a fructu. *Enum. stirp. helv.* præf. p. 4. Primus aliquam in Botanicen adtulit utique ANDREAS CÆSALPINUS, de quo supra actum est. p. 83. Classes naturales invenit plurimas Amentaceas, Apetalas, Herbaceas, Cucurbitaceas, Umbelliferas, Tetrapetalas, Cruciatas, Liliaceas, Gymnotetraspermas, Asperifolias, Didynamias, Radiatas, Acana-ceas, Gymnopolypermas, Filices.

(b) ROBERTUS MORISONUS in magno Opere, cujus partem alteram ipse edidit, JACOBUS BOBARTUS tertiam, prima periit, a fructu conatus est plantas disponere. Ex eo fundamento multa genera male disposita BAUHINGIORUM emendavit, classes paulo comtius quam priores disposuit. Multum tamen de adfinitatibus naturalibus, ut videbantur, retinuit, unde inconditæ classes Scandentium, Bacciferarum, Vasculiferarum: inmixta Quinquefolia Papilionaceis, Ranunculi Liliaceis inserti, & alia ejus generis vitia. Quare methodus equidem pro imperfecta potest haberi. PAULUS AMMANUS totam, tantum ordine mutato, transtulit in suum *characterem naturalem*.

(c) Hoc loco incipiemus botanica scripta recensere, ordine, qui temporum est, quo ipso series inventorum sponte apparet. EPIMENIDES radices legisse dicitur, eo tempore, quo dormire credebatur, DIOGENE LAERTIO teste. Sed ea omnia perierunt. DEMOCRITUS varia scripsit de plantis & experimenta incepit in classes digerere. Ita arbores omnes brevis ævi esse dixit, quibus caules recti forent, quem locum excitat & refutat THEOPHRASTUS L. II. *caus.* c. 16. Ejus Geoponica varia apud CASSIANUM BASSUM extant, plantarum vero, & fabulosæ sæpe, proprietates, apud PLINIUM, quæ etiam huic viro ridiculæ viderentur. HIPPOCRATES, quem hic excitat PRÆCEPTOR, & imprimis alii Auctores librorum *de morbis* & *de passionibus*, & *de feminarum morbis*, plantas utiq; bene multas in medicinam receperunt, sed nominaverunt unice, rarissime vel colore floris,

le apparet: Impossibile enim est alias dicere, hic est Helleborus HIPPO-
CRA-

ris, vel natali loco definiverunt. Quare commentarii loco DIOSCORIDES & GALENUS hic legendi sunt: & cum his etiam auxiliis major pars latet earum stirpium, & latebit æternum, cum levissimis designentur notis, quæ infinitis plantis perinde conveniant. THEOPHRASTI ERESII scopus fuit Philosophiam scribere stirpium, sic colligere ea, quæ plantæ communia haberent aut diversa. Sed eas communitates in vita, perennitate, surculorum copia, foliorum lapsu & hujusmodi externis notis quæsit, quæ ad nullas naturales classes ducere possunt. Plurcula tamen elegantia de plantis Indicis, & aquaticis, intersperfit, & utcunque passim stirpes suas descripsit. Editio plenissima Operum hujus Philosophi est, quam dedit DANIEL HEINSIUS Leidæ 1613. in folio excusam ex codice Heidelbergensi, non optimo, cum brevibus notis: mendosa tamen CONFRINGIO iudice. Duæ etiam editiones operum THEOPHRASTI prodierunt Basil. 1541. fol. cum & sine præf. GEMUSÆI. THEOPHRASTI ERESII opera Hanov. 1605. Gr. Lat. interpretibus DAN. FURLANDO & ADR. TURNEBO cum FURLANDI uberibus commentariis. J. C. SCALIGERI animadversiones in THEOPHRASTUM de causis plantarum editæ sunt Lutet. 1556. fol. Genev. 1566. & in historias Genev. 1584. 8. In V. Libros priores plurima notavit SOLENANDER Paschal. Gallus p. 268. Post THEOPHRASTUM addantur KRATEYA ριζοτόμος libri qui in bibliotheca Constantinopolitana exstant & EJUS ιατροσόφιον περὶ ὕλης ἰατρικῆς Viennæ LAMBEC. II. p. 556. Eum virum temporibus MITHRIDATIS vixisse, & male ab auctoribus spuriarum epistolarum, quæ HIPPOCRATI tribuuntur, ad COI ævum translatum fuisse, satis nunc notum est. Mithridatiam inscripsit MITHRIDATI PLIN. L. 25. n. 26. STAPELIANA vero, quam posthumam pater edidit JOHANNIS BODÆI a Stapel, & CORVINUS Amstelodami 1644 fol. solos habet Libros X. de historia plantarum, cum commentariis & SCALIGERI grammaticis fere, & P. CONSTANTINI ex collatione cum Plinio natis, & fusissimis JOHANNIS BODÆI notis in quos omnem suam sapientiam effudit, & PLINIUM NICANDRUM aliosque veteres cum Theophrasto comparavit. Indicas etiam aliquas descripsit, & depinxit. Vitiosas tamen omnes esse Theophrasti editiones, antiqua querela est. Latet alicubi CASPARI HOFMANNI codex, ad editionem paratus, viri ad ejusmodi labores aptissimi. (J. A. FABRIC Biblioth. Græc. L. III. p. 237.) BELLONIANA editio, quam promiserat, nunquam prodiit (BELLON de neglect. cultur. Pr. XXI.) Libri VI. de causis plantarum fere ad agriculturam pertinent. THEODORUS GAZA, ut doctissimus fuerit utriusque Linguae, nimis tamen audax fuit in vertendo & fingendis novis vocibus Latinis, quæ nemo facile intelligat. Prima editio Theophrasti, sed Græca, Aldina est an. 1498. fol. JACOBUS vero GREVINUS in 2. Libro de Venenis, quos Gallice Antvverpiæ anno 1568. 4. edidit, nihil nisi commentarium in NICANDRUM dedit, quem etiam in gallicos versus, ex seculi genio formatos, conjecit, & una edidit.

EUTECNII sophistæ paraphrases in theriaca & alexipharmaca cum pulcherrimis animalium figuris, quæ Viennæ exstant MSS. LAMBEC. II. p. 594. Porro addendi sunt ARISTOTELIS L. 2. de plantis Basil. 1539. J. C. SCALIGERI in Libros II. de plantis ARISTOTELIS commentarii Paris. 1556. 4. Marpurg 1598. 8. Libri ipsi omnino spurii sunt, & parum digni nomine Aristotelis. SCALIGERI commentarius non maxima parte ad rem herbariam pertinet, neque ab experimento natus est, qui degeneraciones in alienas species admittat.

Inter Agricolas posset HESIODUS recenseri, sed ob brevitatem parum utilis. Ad VARONEM adde EJUS opera omnia, quæ cura J. C. SCALIGERI prodierunt apud H. STEPHANUM 1518. 8. & Dordraci 1619. 8.

NICANDER Colophonius circa Olympiadem CLX. vixit, Medicus & Poeta. Ejus extant Oniaca cum doctis Scholiis græcis & ΑΛΕΞΙΦΑΡΜΑΚΑ. In priori Libro proprie animalia venenata describit, etiam iconibus additis: in altero antidota. Multas tamen plantas recenset, & utcunque poetice, describit tamen, quæ in Scholiis uberius sæpe declarantur, & pertinet ad integriorem historiam originum Botanices. Prima editio Græca Aldina est an. 1499. cum Dioscoride; altera, qua utor ibidem 1523. 8. tertia Colonienfis 1530. 4. Latino carmine reddidit EURICIUS CORDEUS Francof. 1532. 8. & denuo GORRÆUS alexipharmaca vertit, & an. 1549. 8. theriaca 1557. 4. Parisiis edidit: proliam vero Latinam dedit JO. LONICERUS Coloniae 1531. 4.

CRATIS, & hæ sunt vires hujus Hellebori, nisi evidentissimis argumen-
Dd tis

Auctores Latinos rei rusticæ hoc loco jungam, etsi tempore diversos. Et primus *M. PORCIUS CATO* ante *NICANDRUM* vixit. Ejus de re rustica L. cum reliquis huc pertinentibus Auctoribus prodiit primo an. 1470. Venetiis apud Janson, tunc sæpe, & ultimo in collectione Lipsiensi, quæ ex *MORGAGNI* & *PONTEDERÆ* additionibus, & his quidem forte non satis excitatis ab editore, Lipsiæ prodiit 4. 1735. Et *CATO* quidem de sola re familiari cogitavit, potest tamen legi, ut antiquissima stirpium Latina nomina teneamus: eritque utilior si accesserit præstantissimi viri *JULII PONTEDERÆ* Opera, qui in *Antiquitatibus Græcis & Latinis* inque Epistolis, quæ sequuntur a tertia ad septimam, plurima loca Catonis correxit & illustravit pro sua in antiquissimo sermone Italico, Osco, & Etrusco maxima peritia, & perinde singulari rei herbariæ & rusticæ cognitione.

M. TERENCEIUS VARRO, Ciceronis amicus, de eadem *re rustica* L. III. eodem fere fine scripsit, doctior idem Græca Latinaque Lingua, hinc vario magis sermone usus, & ad multa utilis, etsi L. II. huc non adeo, quam ad animalium educationem pertineat.

ANTONIUS MUSA dicitur de *Betonica* Libellum scripsisse, quem vero ob summam dictionis similitudinem alii *L. APULEJO* tribuunt, brevis vero est, & vires medicas cumulas habet. Extat cum *PLINIO VALERIANO* Basileæ editus. 1528. fol.

P. VIRGILIUS MARO in *Georgicis* partem aliquam agriculturæ attigit, quem nuper commentariis a botanica repetitis illustravit *J. MARTYN*. Londini 1746. 8.

Idem *MARTINIUS*, quem commentarios botanicos in *Georgica VIRGILII* edidisse diximus, eodem modo *bucolica VIRGILII* notis botanicis & nonnullis florum iconibus ornata edidit, Lond. 1746. 4.

CLAUDII NERONIS ævo scripsit *L. JUNIUS MODERATUS COLUMELLA*, qui multo propius ad rem medicam pertinet, cum agriculturam non solam, sed inprimis proprio Libello arborum cultum per singula persequatur, deinde *L. X. de re rustica* hortorum elegantissimo carmine tradat, Olerum etiam singulorum hic nomen, & colendi rationem disertissime proponat. Et in eum & priores, extant, utinam plures, *PONTEDERÆ* observationes, tum in Lipsiensi collectione, tum in antiquitatibus. Vitium etiam anatome, & nomina partium hujus arboris in ea collectione, quam modo excitavi, ad eum virum pertinent. Prima editio est Veneta 1472. fol.

Cum *PALLADIO COLUMELLA* solus prodiit quantum video Lugdun. 1548. 8. *BYNK. COLUMELLA* Gallice etiam versus est Paris. 1552. & 1556.

PALLADIUS RUTILIUS TAURUS recentioris fuit ævi, ipso nuperior Apulejo, Agriculturam in menstruos labores divisit, & easdem utilitates præstitit botanico, cum nomina, cultumque stirpium tradat utiliorum. Cum *CATONE*, *VARRONE* & *COLUMELLA* prodiit apud Aldum 1533. & collectio veterum rusticorum, commode edita habetur apud *COM-MELINUM*. Heidelbergæ 1595. 8.

Seorsim etiam prodierunt *PALLADII RUTILII TAURI ÆMILIANI de re rustica* Libri IX. Lugd. 1549. 8.

F. L. VEGETII de mulomedicina Liber Basileæ an. 1528. 4. editus, & in universum medici omnes aliquid præstant similis utilitatis.

Denique *CASSIANUS BASSUS* Scholasticus Græcam collectionem reliquit veterum Geoponicorum viginti Libris comprehensam, quorum nitidissimam & cum multis manuscriptis codicibus perfectiorem editionem procuravit *PETRUS NEEDHAM* Cantabrigiæ 1704. 8. impressam, qua multa veterum, etiam Democriti, Hippocratis veterinarii, Sotionis fragmenta conservantur. Cæterum inter recentiores Græcos fuit *CASSIANUS*, qui Constantino Porphyrogennetæ Librum suum dicaverit.

Editio etiam existat nomine *CASSII DIONYSII Uticensis de agricultura* Libri XX. Lugd. 1543. 8. *Geoponicor.* Basil. 1539. 8.

VITRUVIUS, Cæsaris præfectus fabrum, de quo alibi dictum est, aliqua ad arbores materiarias, & ad colores spectantia habet.

Istis in unum fasciculum conjectis & recensitis, de *CELSEO* alibi dicturi, de *PLINIO* præter priora monemus, plurimum ad plantarum historiam pertinentia habere, cum integri Libri, qui a 13. ad 27.

cis evincatur, hanc ipsam plantam ab HIPPOCRATE Hellebori nomine venisse.
Qui-

ad 27. intercedunt, eo unice spectent, *THEOPHRASTUM* copiosissime, etsi passim vitiose, exscripsit, & aliis etiam ignotis fontibus usus est. Ejus in re herbaria peritiam præter *COLLENUTIUM* defendit *CIGALINUS* de patr. Plin. T. II. ad Commelin. p. 1682. Sed errores ejus, & *NICOL. LEONICENUS* proprio scripto, & *MANARDUS* L. IX. Ep. 3. L. XVI. c. 14. & *PAULUS HESSUS* in defens. probl. Guil. & inprimis *DODARTUS* *Projet de l'histoire des plantes* p. 146. & alii merito accularunt.

GALENUS equidem ad medicas potius utilitates, quam ad botanica ornandam respexit: in Libris tamen de simplicium medicamentorum facultatibus Catalogum stirpium medicatarum alphabeticum habet, cum virium compendio. Is in *ORIBASIUM* & in *ÆTIUM* & in *PAULUM ÆGINETAM* transit vix mutatus, estque tanquam basis eorum, quæ Medici Arabes de medicamentis simplicibus habent.

In *GAL.* Libros V. priores de simplicium medicamentorum facultatibus commentarius est *F. VALLESII* Francof. 1645. fol. & eisdem in XVI. disputationes resolvit *MELCHIOR SEBIZ* Argentor. 1651. 8.

L. APULEJUS, dubiæ ætatis Auctor, de herbarum historia Librum reliquit, cum *Plinio* seniori editum Basileæ 1528. fol. in quo nomina stirpium medicatarum, *Dioscoridis* modo, multa habentur, deinde vires fusissimæ. Codex M. S. cum pulchris figuris fuit apud Comitem de Neuenaar, qui passim eum laudat apud *BRUNSFELSIUM* Tom. II. p. 232. 236. Sed is ipse, quisquis est, *PLINIUS*, & *SCRIBONIUS LARGUS*, & *MARCELLUS EMPIRICUS* ad medicam partem historiæ stirpium faciunt.

CAROLI MAGNI capitulare de villis suis ab *H. CONRINGIO* recusum, Helmst. 1647. 4. continet brevem descriptionem agriculturæ & designationem stirpium hortensium eo ævo familiarium.

Arabum sequuntur tempora, quibus Orientis aliquæ plantæ & aromata ad medicinam accesserunt, pleraque tamen ita parce descripta, ita barbare Latine reddita, ut quid inde utilitatis veræ sequi possit, ægre perspiciam. Plurima habet *AVICENNA*, ut vulgo vocatur, qui XI. ineunte sæculo floruit, *ALKINDO* recentior, compiler ingens, in cujus Operibus Lexicon medicamentorum simplicium extat. Tabulas habebat pictas, in quibus medicamenta simplicia demonstrabat discipulis. In *Progm. Can.*

SERAPIO, cujus extat *L. simplicium Venetiis* 1558. fol. editus, itidem est compiler ex Græcis aliisque. *JOHANNES MESUE* a *J. SYLVIO* Parisiis 1561. & alias editus, & Venetiis in collectione an. 1603. cum *J. COSTÆI* notis, in L. II. habet plantas purgantes *EBNBITARIS* de simplicibus medicamentis codex ex Oriente a *G. FOSTELLO* relatus, mire laudatur a *C. GESNERO* præf. ad *CORD.* expectationem fallit, cum mera sit compilatio, *TOURNEFORTIO* teste *Isagog.* p. 18. *SIMEONIS SETHI* *Lexicon botanicum* Græco-barbarum, cujus codex extat Vindobonæ C. P. *LAMB.* L. VII. P. 2. p. 117. hætenus latet. Opus vero de Alimentis vulgo notum, cujus etiam codex in eadem Bibliotheca habetur, compilatum est.

EBNBITAR, cujus codicem de simplicibus medicamentis indicavimus, vixit anno 1187. *SALADINI* ævo. EJUS Lib. de limonibus latine versus ab *ANDREA ALPAGO* Parisiis prodit 1602. 4. *

Ad Arabes adde: *ABUL FADLI* de medicina & de re herbaria exstantem codicem M. S. quo multum usus est in Hierobotanico *CELSIUS*.

ÆMILIUS MACER vires herbarum illepidio carmine cecinit, quem mireris a *THOMA BARTHOLINO* ubique pro vero *MACRO* Ovidiano habitum esse, Galeno adeo manifesto posteriorem, & ex asperrimo carmine ferrei sæculi convictum. *STRABO GALLUS*, cujus hortulus cum *Macro* prodit Basileæ 1527. 8. & Hamburgi 1596. 8. ejusdem est furfuris, neque plura tribuo *D. WALEFRIDI*, cujus codicem possidebat *T. BARTHOLINUS* qui idem *STRAB.* M. S. cum notis erat editurus.

Sed latiora nunc tempora redeunt, quæ primus orditur *PETRUS* de *CRESCENTIIS*, Senator Bononiensis, qui sæculo vixit decimo quarto, cum librum *CAROLO* Regi Siciliæ dicaverit, qui anno 1385. vivere desit. *PETRI* de *CRESCENTIIS* Libri XII. gallice editi sunt

Quicumque, his de methodo Auctoribus perlectis, antiquitates plantarum scire
Dd 2 vult,

sunt Paris. 1486. fol. Germanica vero editio est anni 1493. fol. & usus veterum Geoponicorum scriptis integrioribus, varia habet, ex quibus & ipsi emendari possint, & quæ non alibi nunc extant. Libri sunt XII. qui variis annis prodierunt. Prima editio est in *HARLEJANIS* notata, Lovaniensis an. 1474. fol. Mea vero anno 1538. Basileæ prodiit 4. Sed plenior Basil. 1548. fol. excusa est.

Sub finem decimi quinti sæculi vixit *NICOLAUS LEONICENUS*, cujus egregios Libellos alibi laudavimus. Correxuit autem Plinium, male Græcis usum, non adeo ex ipsa natura quam ex Græcis Auctoribus.

Sed eodem tempore barbara nescio quæ herbaria inceperunt edi, quibus continebantur stirpium nomina, vires & rudissima ad singulas icon. Primum Germania parturivit, & ipse perfectior artis typographica *JOHANNES SCHOIFFERUS*. Hujus exemplum penes me est, Moguntia an. 1483. in folio editum (& 1484 *CAT. HARL.*) Continet materiam medicam in 337. capita divisam, cum iconibus unice stirpium, sed rudissimis, vivis pictis coloribus, & sæpe ad descriptiones potius quam ad naturam, vel ad antiquum forte codicem fictis.

Similis est *Herbarius Patavii impressus* an. 1485. 4. qui 150. capita cum totidem iconibus habet, rudioribus multo quam in Germanico Libro.

JO: CUBÆ Hortus sanitatis sæpe prodiit, & Augustæ in Vindelicis an. 1486. fol. Meæ editiones sunt Moguntina 1491. fol. cum avibus, Lubecensis 1492. fol. & 1517. & 1520. pariter folio. Auctor, vanus promissor, materiam medicam per itinera sua perfectam adnunciat, & icones addit 528. Earum multæ ex *SCHOIFFERO*, aliæ nugacissimæ & summe ridiculæ sunt, exemplo *Mandragoræ* & *Narcissi*. Editio Germanica plenior est, capita habet 542. altera nonnisi 530. & icones animalium, quæ & ipsæ ab ista absunt. Aliam adhuc editionem possideo *hortus sanitatis de herbis, plantis, animalibus & lapidibus, avibus, &c.* folio absque anno editam similem alteri editioni absque anno, sed adjuncto tractatu de animalibus cum eorum iconibus & humano sceletro.

CONRAD von Megenberg buch der natur, Augsburg 1489. fol.

JOVIANI PONTANI horti hesperidum Libri II. quibus agitur de citri fructu & arbore, Florent. 1514. 12. *

The great herbal. . knowledge of all manner of herbs, London 1516. fol. 1527. fol. 1529. fol. AMES.

GABRIEL ALFONSO de HERRERA agricultura del campo laboranza y crianza, Toleti 1520. 1551. &c. Madrit 1620. fol. Italice etiam Venet. 1568. 4. Laudat *N. ANTONIUS*.

Medicinarium S. das buch der Gesundheit Argentorati an. 1505. fol. prodiit. Multa habet communia cum *BRUNSVICENSI*, de quo continuo dicitur, icones easdem, initia eadem & verba. Sed figuræ pauciores sunt, & subjectus *MARSILIUS FICINUS* de producenda vita. Nomen Auctor non præfixit.

SYMPHORIANI CHAMPERII Hortus Gallicus in quo Gallus ex Gallia remedia omnium agritudinum reperiri docet, Lugduni 1533. 8. & *EJUSD. Campus Elysus Gallicus, in quo Herbarum quidquid apud Arabes reperitur, apud Gallos reperiri demonstratur* ib. eodem anno 8. *

HIERONYMUS SALERUS Brunsvicensis, quem vulgo *Hieronymum Brunsvicensem* vocant, in posterioribus editionibus auxit modo dictum Opus, cujus secundus Liber plantas continet, & icones ex Cuba sumtas, ex quo magna pars operis translata est. Prodiit sæpe: meum exemplar unum absque anno est, aliud vero 1532. Argentorati folio impressum iconibus caret. Apodixes *SALERUS* non indoctas addidit secundo Tomo *BRUNFELSII* operis. Argentorati vixit, Pharmacopola & Chirurgus. *Thesaurum* proprium placere sibi demonstrat *C. GESNERUS* Epist. p. 69.

Nempe *OTHO BRUNFELSIUS* primus serio botanice post decem sæcula ornavit, laboriosus homo, & candidus, vel *TRAGI* coævi testimonio, quem ad edendum suum Opus adhortatus est. Ejus extant *Nova herbarum Icones*, quarum tomus III. alias annos 1532. 1536. & 1540. alias 1530. 1531. & 1536. præfixos habent, alias conjuncti annum 1539. fol. Primo tomo stirpium icones & de viribus collectionem dedit. Altero compilationem ex variis scriptori-

vult, legat Opera FABII COLUMNÆ, qui vix habet similem, sed quidem imitato-

ptoribus recentioribus. Tertio icones & defensionem a MICHAELE HERO ordinatas. Iconum pleræque minime malæ sunt, & aliquæ FUCHSIANAS æquant superantve. Eum virum jam EURICIUS CORDUS laudavit in *Botanologico* p. 15. & icones GESNERUS in præf. ad *TRAGUM*, etsi non probet Onomasticon.

OTH. BRUNFELSII *Onomasticon* prodiit Argent. 1543. fol. Quid est OTTO BRUNFELS *kraüterbuch* quod lego Francofurti 1516. prodiisse 8. ? IDEM incerti auctoris libellum *de Centaureo* cum Arabum Libris *de simplicibus medicam.* edidit Argent. 1531. fol.

EURICII CORDI, qui a *Cordo* freno nomen traxit, quod filiorum natu minimus esset, *Botanologicum* recusum est Paris. 1551. 12.

EURICIUS CORDUS vero nomine HENRICUS URBANUS (M. ADAM p. 24.) non vulgari eruditus homo, Poeta, Medicus & in horto suo & ruri etiam Botanicus, an. 1534. 8. Colonia paulo ante mortem edidit *Botanologicum* suum; discipulus fuit NICOLAI LEONICENI. Multa in plantis corrigit, & negat respondere veterum stirpibus plantas nostras, quæ in officinis veneunt. Ejus *judicium de herbis & medicamentis simplicibus* extat cum Dioscoride RYFFII Francof. 1549. fol. CL. KAHLERUS nuper vitam ejus diligenter descripsit.

LEONH. MARSHALL *of the art and manner how to plant and graft all sorte of trees how to setle stones and sovv Pepins*, L. 1529. 4. HARL. 1582. 4. HARL. sed annum 1592. habet AMES 1651. 4. * HARL.

GARSIAS PEREZ de MORALES M. D. *del balsamo y de sus utilidades para las enfermedades des cuerpo humano*, Hispal. 1530. 4. N. ANT.

DONATI a MUTIIS *Epist. de terebinthina resina facultatibus*, Lugd. 1534. 8. *

ANTONII FUMANELLI *de vino & facultatibus vini*, Venet. 1536. 4.

CAROLI STEPHANI *seminarium*, &c. prodiit etiam Parisiis 1548. EJ. *arbustum* recusum est Parisiis 1542. 8. EJUS est etiam *pratum lacus arundinaceum*, Parisiis 1543. 8. EJUS vero botanica scripta a JOH. LIEBAUT Gallice versa prodierunt Lyon 1578. 4. Paris. 1565. 8. Rouen 1625. 4. Genev. 1639. 4. Paris. 1670. 4. Germanice *der feldbau*, Marb. 1551. 8. & auctius *funfzehn bücher vom feldbau*, Argent. 1588. fol. In hac editione ex GEORGII MARIII *horticultura* & J. FISCHART *feldbau* multa accesserunt. Pleraque botanica sunt, imprimis L. 3. 4. 9. 10. 11. 12. Cæterum omnem agri cultum ex veteribus sumit, eum sæpe qui suæ Galliæ minime conveniat. Anglice idem Liber prodiit Lond. 1616. 8.

HERMANNUM etiam Comitem a NEUENAR fas sit laudare, qui, tanta familia natus, literas amaverit, & censuras aliquas herbarum in Tom. II. Brunfelsii ediderit.

Eo tempore miser status fuit botanices, cum nobilissimæ plantæ vulgo ignotæ essent, cum pro Helleboro Polygonatum venderetur, pro Iride Napellus (l. B. III. p. 139.) pro Acoro Iris palustris, &c. Verum etiam nostro tempore pro Centaurio minori Lychnis viscosa latifolia, pro Silere montano semen Phellandrii (RIVIN. *de cens. medic. offic.*), pro Nigella Stramonium, pro Saponaria Been passim venit. Primam opem attulit tantis malis, quod veterum monumenta in hominum manus sint reddita. Alterum excursiones in montes & naturæ expiscatio a CORDO filio, GESNERO aliisque repetita. Tertium hortorum cultus, qui eo tempore inceperunt publicos in usus condi. Patavinus omnium primus, instigante D. BARBARO a Republica Veneta BONAFIDÆ opera fundatus est. BELLON *de neglect. plant. cul.* p. XX. Deinde Pisanum hortum COSMUS Medicus construxit, & CÆSALPINUM præfecit (lege ROLFINKIUM *de veget. in gener.* p. 136. seqq.) Reliqui sensim secuti sunt. RENATUS BELLAI insignem in Gallia coluit. (C. STEPHANUS *de re hortens.* p. 36.) In Germania CORDUS pater & RALLA, in Helvetia C. GESNER & alii quos ipse laudat, instruxerunt hortos medicos.

JOANNES MANARDUS vixit Ferrariæ, & obiit an. 1536. Ejus *Epistolarum medicinalium* extant L. XX. in quibus plurimæ sunt argumenti botanici. Veteres explicat, Marcellum Vergilium refutat, & MESUEN, defendit HERMOLAUM, non tamen satis in ipsa natura doctus. Prodierunt Venetiis 1542. fol. & Basileæ an. 1549. fol. cum L. XVIII. an. 1535. prodiissent.

CAROLI STEPHANI, magis ex anatomico opere noti, *de re hortensi libellus & de cultu hortorum* prodiit Paris. 1539. 8. (& prius an. 1535. 8. tum 1545. 8. &c.) Eiusdem *semina-*

tatores. Ibi inveniet, quidquid excogitari potest in eam questionem, quænam plan-
ta

narium & *de conferendis arboribus* ib. 1540. 8. Ejus *Arbustum*. Parisiis 1538. 8. *Sylva* ib. 1538. 1543. 4. *De nutrimentis* L. III. Parisiis 1550. 8. quæ omnia in *Prædium rusticum* collecta an. 1554. 8. an. 1570. 4. 1625. 1629. prodierunt, deinde sæpissime aucta a JOH. LIEBAUT Gallice sunt versa.

Unice usus est S. RUELLIO (etiam C. GESNERO monente præf. ad TRAG.) & antiquis, & simili, ut ille, studio vulgaria nomina Latinis adspersit. Ejusdem de *Græcis & Latinis nominibus, arborum, fructuum, herbarum, & avium*. L. an. 1536. & 1554. non est apud me. Aliqua de ejus vita habet CL. ZINK *Leipziger Samlungen*. III. p. 241.

ANTONII MUSÆ BRASSAVOLÆ *Examen medicamentorum simplicium*. Romæ an. 1536. prodit, conscriptum an. 1534. (SEG.) Mæ editiones sunt Veneta, 1545. 8. & Tigurina, 1555. 8. hæc omissa a D. SEGUER. Aliqua habet ex propriis observationibus, & plantis Italicas passim legit, MANARDO iniquior.

JOHANNIS RUELLII de *natura stirpium* L. III. Parisiis an. 1536. fol. maj. & Basileæ an. 1537. fol. prodierunt. Canonicus fuit, homo sedentarius, qui naturæ minus quam Librorum veterum peritus esset. (A. M. BRASSAVOLA *examen simpl. med.* p. 51.) Descriptiones Auctorum antiquorum in sua scripta inserit, ut quid proprium habeat vix separet, cum præterea docta dictione utatur, uti doctum esse defendit QUIQUERANUS p. 50. b. Id GESNERUS olim observavit in præf. ad TRAGUM. Ex eo LEODIGARIUS a QUERCU epitomen scripsit Parisiis an. 1539. & 1544. editam.

EUCHARII RHODIONIS sive Roeslin *Krauterbuch*. Francof. 1533. f. 1536. f. & alias prodit. Hoc Opus primo Cubæ fuit, inde a Roeslino auctum, inserto opere Hieronymi Brunsvicensis pene toto. Icones additæ sunt meliores, ad ipsas herbas pictæ parvæ, etiam umbris additis sed fere absque floribus. Hoc idem Opus THEODORUS DORSTENIUS an. 1540. fol. Latine edidit, cum pessimis nominum transpositionibus, qui v. gr. pro Helleboro Polygonatum pingat. Inde in LONICERI herbarium eadem icones receptæ sunt.

BARTHOLOMÆI MARANTÆ *Methodi cognoscendorum simplicium* L. III. Venetiis prodierunt 1539. 4. Admirator Dioscoridis, quem diligenter videtur legisse. Aliquas tamen suas in stirpibus observationes adspersit, raro, eo ævo, exemplo. Errores epidemicos refutat p. 84. agnoscit folia pro varietate loci natalis ludere magnitudine II. c. 8. A. C. GESNERO in præf. ad CORDUM prolixè laudatur.

FALLOPII amicus fuit & literarium commercium cum eo aluit.

HIER. TRAGI Germanicæ editiones exstant etiam Arg. 1546. fol. 1587. fol. 1630. fol.

BENEDICTI TEXTORIS Segusiani *florum differentia ex Dioscoride*. Parisiis 1534. 16. & Venet. an. 1537. in 16. editæ & additæ TRAGI editioni KYBERIANI, an. 1534. in ædibus JOH. TAGAULTII scriptæ, non inutiles certe sunt partium plantarum definitiones, a principio extant, deinde plantarum differentia a folio, flore aliisque partibus desumptæ, tum adfinitates, & comparationes, ut indicis methodici loco sit ad Dioscoridem.

ALPHONSI FERRI de *Ligni sancti medicina & vini exhibitione* L. IV. Basil. 1538. 8. *

HIERONYMI BOCKS (vulgo TRAGI) *Herbarum aliquot dissertationes & censura* cum BRUNFELSII Tomo II. p. 272. prodierant. *Historia vero plantarum* prima editio Germanica an. 1539. in folio prodit, quæ duos tantum Libros habet, & capita 319. multo minus plena sequente, eademque absque iconibus est. Medicus & verbi divini Minister, vixit Hornbaci apud Bipontinos, neque in solis Libris, ut fere priores, sed in natura ipsa, itineribus per Vogesum montem & in Rhætiam usque susceptis (*Hist. Lugd.* p. 92. & TRAGUS ipse apud BRUNFELS. II. p. 275.) satis amplam etiam rariorum stirpium cognitionem sibi comparavit, quo studio, & bonis descriptionibus, & quod plurimas stirpes inter recentiores descripsisset, & facultates addidit ex propriis observationibus, laudatur a C. GESNERO in præf. Nomina veterum Germanicis stirpibus paulo liberius adhibuit. Deinde an. 1550. icones ex Fuchso receptas, & alias proprias, easque satis bonas, in 4. edidit, quæ icones accesserunt editioni a DAVIDE KYBERO Latine versæ, ornatae C. GESNERI præfatione, & BENEDICTI TEXTORIS differentiis stirpium. Hæc editio multo auctior III. centum undecim capitibus ditata est, & eam fere citant. Aliæ plurimæ Germanicæ, stylo joculari scriptæ, passim prodierunt, quarum penes me est an. 1572. fol. prima

ta recentiorum fit planta HIPPOCRATIS, GALENI, DIOSCORIDIS ;
PLI-

Prima vero est 1551. fol. (BIBL. UFFENB.) Ita explicatum est, quod conciliare non potueram, qua ratione TRAGUS & prior sit FUCHSIO, & ab eo citetur, & tamen etiam posterior sit. (Præf. WEINMANN. OP.) Obiit an. 1554.

C. GESNERI *historia plantarum ex THEOPHRASTO aliisque collecta*, junctis in unum dispersis partibus descriptionum, eodem anno prodiit Tiguri 8. Sed etiam Parisiis prodierat an. 1541.

ROBERTI BRITANNI *agricultura encomium*, Paris. 1532. 4. *

JO. AGRICOLÆ (Paiürle) *Ammonii medicina herbaria Libri II.* Basil. 1539. 8. quo nostras plantas cum antiquorum stirpibus comparat, non absque utilibus observationibus admittis.

CAROLI FIGULI *herbarum methodus*, Colon. 1540. 4. *

LEONHARDI FUCHSII Wemdinga Suevi sed Professoris Tubingenfis extant *adnotationes aliqua de simplicibus perperam intellectis* in Tomo II. BRUNFELSII. *Historia vero plantarum* Basileæ prodiit an. 1542. præter alia multa scripta, pleraque compilata. Ea ex Dioscoride, aliisque descripta, paucissimis de suo additis, habet icones elegantia circumscriptarum linearum insignes, plerasque proprias, paucas ex BRUNFELSIO, in quibus fere utilitas Libri ponitur. Id Opus altero anno Germanice, aliquot auctum figuris prodiit, deinde frequenter & sermone vario, iconibus minoribus Lugduni an. 1546. & 1549. & 1595. 8. recusum est. Inceperat augere Opus & quingentas super mille icones paraverat, tribus tomis edendas (GESNER. Epist. p. 137. b.) quarum an. 1551. jam 300. perfectæ erant (GESN. Epist. p. 115. b.) Earum bene multæ sunt in manibus JOHANNIS GESNERI, nepotis ex fratre CONRADI, candore & virtute simillimi, a quo expectamus hanc utilem rei herbariæ accessionem. In *paradoxis* etiam aliqua botanica habet, quæ prodierunt 1540. Cum JANO CORNARIO suo in edendo Dioscoride æmulo, multæ ipsi lites intercesserunt. Contra eum scripsit *Cornarium furem* Basil. 1545. 8. * CORNARIUS vero primo *Vulpeculam excoriatam* * Francof. 1543. 4. quo historiam plantarum carpit, deinde *Nitrum & Brabyla pro Vulpecula excoriata* ib. 1545. 4. * quo ad *Cornarium furem Fuchsi* respondet. Idem FUCHSIUS contra GUALTH. RYFFUM *apologiam* edidit. Basil. 1536. 8. * qua refutat reprehensiones suæ historiæ in Dioscoride Ryffiano obvias, & anno 1535. 8. *adversus Egenolphi calumnias* (NICER.) *Historia Fuschiana* a JOH. JARAVA Hispanice versa prodiit Antvverpiæ 1557. 8. * (SEG.) Sui plenus cæterum vitia, etiam monitus, nolebat emendare, neque gratus adgnoscebat amorem monentis C. GESNERI Epist. p. 61.

Ipse CONRADUS sub ea tempora cœpit inclarescere, edito an. 1542. *indice plantarum quadrilingui* 4. Tiguri, sed longe super eum Librum posteriori ætate se extulit.

ALOYSII MUNDELLÆ Præfecti II. horti Patavini *Epistolarum* L. I. & in *examen simplicium BRASSAVOLÆ adnotationes* prodierunt 4. Tiguri 1540. Ab Arabibus ad veteres Græcos inter primos rediit, cæterum ex Libris unice botanicus.

VALERIUS CORDUS natus an. 1515. 18. Febr. obiit Romæ annos natus vix 29. Restaurator certe botanices, magno ardore in Germania, deinde in Italia plantas rariores & plerumque nemini tactas (nam de Scordio desperat diserte, & de Thlaspi & de Dictamno MANARDUS Epist. L. VI. n. 3.) collegit proprio labore, collectas egregie descripsit. Sed posthumum reliquit Opus, quod fidei debemus CONRADI GESNERI, nempe breviora quædam Scholia in Dioscoridem, Libros vero *historia plantarum quinque*, quorum ultimus an. 1563. seorsim prodiit, omnes vero Argentinæ in folio impressi sunt, tum Sylvarum rariorum observationum. Sextus enim Liber qui autographus extabat (MEICH. ADAM. p. 47.) nunquam prodiit. Princeps futurus Botanicorum & posteris venerabilis, nisi ætatem fors invidisset, etiam nunc princeps Auctor est Floræ Germanicæ, & ejus studii, quo raræ plantæ per itinera in aviis & ex ipsa natura repetuntur. Etiam reliqua naturæ opera amabat, & *aquatilium* pulchras paravit icones, quas vidit C. GESNERUS Epist. p. 13. Varia ad vitam ejus utilia vide apud A. KÄHLERUM in vita patris EURICII p. 33.

VALER. CORDUS obiit febre maligna, a pota frigida, præsentem, ex quo hæc decerpo, PETRO FORESTO præf. ad Lib. I.

PLINII Opuscula ejus duo prostant nempe I. *Phytobasanos*, Neapol. 1592 in 4. & 3.

LEODEGARII a QUERCU in RUELLIUM epitome & volatilium, gressibilibus, piscium & plantarum magis frequentium apud Gallos nomina, Paris. 1544. 8. PL.

REMACLI FUCSII Libellos de herbarum notitia, natura atque viribus. Antvv 1544. 16. Nomenclaturam plantarum ibid. 8. eodem anno, & de simplicium Medicamentorum delectu ibid. 8. eod. anno, non vidi, citatos ex LINDENIO. Sed compilatorem fuisse credo C. GESNERO candidi judicii viro, præf. ad TRAGUM.

GISBERTI HORSTII de Turperho & Thapsia Libellus Rom. 1545. 4.

Eorum temporum est PETRUS ANTONIUS MATTHIOLUS, cujus commentarius in Dioscoridem supra tactus, primum Italice in 4. dicitur prodierisse Venetiis (ap. SEGUIER) an. 1548. & Mantuæ an. 1549. 4. UFF. Deinde Latine primum an. 1554. in fol. cum parvis iconibus an. 1562. vero Bohemice omnium primo cum magnis illis & splendidis figuris ab eo, vario tempore, nempe an. 1563. Germanice ibidem cum magnis figuris, anno vero 1565. omnium nitidissime cum iisdem apud Valgrisios Venetiis est editus, & sæpe recusatus, etiam nuper Venetiis an. 1712. Adjectæ sunt Epistolæ, quæ Pragæ an. 1561. seorsim in folio prodierant, & notæ variæ a C. BAUHINO adjectæ, qui Opera omnia MATTHIOLI Francofurti edidit an. 1598. fol. cum aliis & partim suis, partim TABERNÆMONTANI iconibus. Librum alibi laudavi, icones elegantes, surculosæ, ad hortenses plantas factæ, mistæ vero sat multæ falsæ figuræ, ad veterum descriptiones fictæ, aut ab illudentibus amicis missæ. Epitome, quæ an. 1571. Venetiis 4. prodit, habet icones minores, cum brevi descriptione. Apologia adversus Amatum an. 1558. Venetiis in 8. seorsim prodit, eristicus Libellus & calidior. Opus majus in varias linguas traductum, Gallice etiam ab ANTONIO PINETO versum est Lugduni 1561. 16. &c.

P. ANTONII MATTHIOLI commentarius in DIOSCORIDEM Italice etiam excusus est 1604. fol. Epistolæ EJUS, quas Pragæ seorsim prodierisse diximus, Lugduni etiam prodierunt 1564. 8. Opus majus Gallice a J. de MOULINE etiam versum prodit Lyon, 1572. 1655. fol.

FITZ HERBARDE ryghthe profytable booke of husbandy, Lond. 1546. 8. HARL.

LUIGI ALAMANNI Coltivazione Poema Georgicum apud Italos celebre, prodit Parisiis 1546. 4. sæpissime recusum, & nuper cum ejus vita a MAZUCHELLIO scripta, & notis JOSEPHI BIANCHINI an. 1745. 8. cum notis vero eruditis VINCENTII BENINI Patavii 1746. 8. editum.

LUIGI ALAMANNI coltivazione Patavii recusa prodit 1718. 4. quæ mea est editio.

WILH. TURNERI antiquius opus nunc aliud AMESIUM citare video, nempe names of herbs in Greck, Latin, Englisch, Dutche and Frenche, L. 148. 12.

GUALTH. HERM. RYFF Kurtzer Auszug der Wurzel China. VVurtzburg 1548. 4. Non vidi, est versio Libri Italici & Latine editi.

WILHELMII TURNERI nev herbals cœpit prodire Londini an. 1551. Liber secundus secutus est Coloniae an. 1562. non Londini. Liber tertius, (quo destituor) Londini demum an. 1568. prodit, in folio omnes. Vir eruditus, qui GESNERI amicitiam laudesque meruerit (præf. ad TRAG.) In Germania, Helvetia, Italia, Anglia stirpes collegit, cum Græcis Scriptoribus contulit, aliquas etiam primus depinxit, etsi plurimum Tragi iconibus sit usus.

Eo etiam tempore primum scribere cœpit REMBERTUS DODONÆUS, cujus de frugum historia L. II. anno. 1552. Antvverpiæ prodierunt, rudes habentes icones, sed concinni & non absque novis inventis. Deinde ejus de stirpium historia commentariorum imagines anno 1552. editæ sunt, quarum altera pars an. 1559. Antvverpiæ prodit, versio vero Gallica utriusque tomii an. 1553. a CLUSIO facta, & in folio Antvverpiæ edita est. Brevis est descriptio, cum quatuor linguarum nominibus stirpium 884. Icones ex FUCHSIO. Tum in altero tomo propriæ non malæ aliquæ ex propriis laboribus, arborum, & paludosarum stirpium, neque tamen in pemptades translata.

JACOBUS DALECHAMPIUS ad editionem Dioscoridis Lugdunensem an. 1552. 8. addidit icones triginta stirpium parvas, quarum aliquæ Alpinarum plantarum sunt, eæque primæ.

Rediit eo tempore ex itinere orientali, quod sumtibus Cardinalis Tournonii suscepit (observat. & sing. p. 468.) PETRUS BELLONIUS, vir perindustrius, discipulus CORDI (de

& 3. *Ecphrasis, id est, Historia plantarum minus cognitarum*, Romæ 1616. in 4.
Nemo

(de funere medic. p. 36. & de conif. p. 246.) cujus L. de arboribus coniferis. Parisiis 4. adjecto L. de medicato funere, & observations & singularités trouvées en Grèce &c. eodem anno (SEGUIER tum an. 1555. 4. editæ sunt & an. 1588. 4. recusæ. Eiusdem remontrances sur le défaut de labour, Parisiis an. 1558. 8. impressæ sub titulo de neglecto cultu stirpium a CLUSIO versæ an. 1589. 12. & in magnis ejus Operibus extant. Omnem quidem naturam coluit, neque solum Græciam, Asiam minorem, Ægyptum vidit, sed in Arvernix etiam & Sabaudix & Delphinatus montibus plantas quæsit, & bis emensus est Italiam (de neglect. stirpium cult. Problema 9.), Germaniam etiam & Angliam adiit (de Conif. p. 24. b.). Icones equidem dedit satis malas, in coniferis tamen enodandis utiliter laboravit, de conditione cadaverum doctissime scripsit, & multas pulcherrimas calidarum regionum stirpes primus in patrio solo vestigavit, indicemque plantarum indigenarum in quavis parte Orientis nascentium omnium primus scripsit. In editione observationum CLUSIANA varia mutata, icones passim suppositæ meliores, errores aliqui correcti, & notæ ex Arabico sermone adjectæ, quas amicus fecerat.

GUIL. RONDELETIUS nihil quidem de plantis scripsit, earum tamen cognitionem amavit & docuit, & censuram plantarum officinalium edidit in Libello de Theriaca, qui cum dispensatorio CORDI prodiit. Obiit an. 1565. occisus a famulo, cum regios hortos vellet visere sibi commissos, si fides MIZALDO Med. artif. p. 10.

DAVIDIS KYBERI, qui Tragum Latine reddidit, Lexicon botanicum trilingue prodiit cum GESNERI tabulis collectionum an. 1553. Argentorati 8. Juvenile Opus, cum annos natus 28. inter edendum Opus obierit: continet nomina plantarum vulgarium, partiumque plantarum, & voces ad earum cultum pertinentes Latinas, Græcas & Germanicas.

GONZALI FERDINANDI de OVIEDO dicti DI VALDE, Rectoris urbis S. MARTHÆ historia Indiarum Librum XX. jam laudavi.

CONR. GESNERUS an. 1553. edidit Tabulas collectionis stirpium, Tigur. 8. recusæ an. 1587. cura CASPARI WOLFII, multo ibi auctiores, etiam rarioribus stirpibus: definitiones etiam partium plantarum habet etiam nunc receptas. IDEM an. 1555. edidit de herbis noctu lucentibus Libellum cui adjectum iter M. Fracti, & RHELLICANI STOKHORNIIAS. Icones ibi cœpit edere CONRADUS, nondum tales, quales maturior dedit, & stirpium Alpinarum fere quinquaginta descriptionem. Sed etiam RHELLICANUS anno jam 1536 Orchidem nigram nominavit, & Gentianam luteam. IDEM GESNERUS an. 1557. suas & GUILLANDINI de aliquot stirpibus epistolas Tiguri edidit, 8. anno sequente Venetiis recusæ. De Doronico, Thrafi aliisque plantis in his epistolis pugnatur & placet videre jam tunc superiorem recedere GESNERUM: placet videre tuentem adeo aliter de se merentem MATTHIOLUM. In Bibliotheca sua L. II. etiam aliqua habet de plantarum classibus constituendis.

AUGERII FERRERII de radice china liber quo probatur diversam esse ab apio, Tolos. 1554. 8.

JOH. de JARAVA historia de las hierbas y plantas, Antvverp. 1557. 8. * ex DIOSCOR. & aliis.

JOHANNIS DU CHOU de descriptio Montis Pilati an. 1555. a GESNERO edita, aliquam stirpium memoriam, & non bonas habet icones. Eadem conjuncta cum varia quercus historia prodiit eodem anno Lugduni in 8. De Quercu scripsit philologice.

BERNARDI DESSENI Cronenburghensis de compositione Medicamentorum L. X. Francof. 1555. (Lind) & Lugduni an. 1556. 8. prodierunt, boni senis, non ineruditi neque in classicis Scriptoribus, neque in botanicis, plantarum aliquot locos natales circa Coloniam designavit, officinales etiam descripsit, monita addidit pharmaceutica. Vulgo negligitur.

JOHANNES & ADAMUS LONICER eo tempore vixerunt. Ille anno 1543. fol. Dioscoridem cum suis Scholiis & HERMANNI RYFFII adnotationibus edidit, additis iconibus ex Fuchio & Trago. Uterque loca similia Galeni & Nicandri contulit, LONICERUS etiam Hebræa nomina fictitia. ADAMUS gener EGENOLPHI Egenolphianum herbarium ex EUCHARIO RHODIONE, THEOD. DORSTENIO & JOHANNES CUBA natum repetito edidit, anno etiam 1560. fol. postquam sub nomine Historia naturalis de Plantis T. II. jam anno 1551. & 1555. stirpium Latinam historiam dederat, cum variis variarum Linguarum nominibus. Nomina mala, stirpes confusissimæ, compilatio mera.

In ea

Nemo certe æque bonas figuras unquam fecit, ac eæ sunt quæ in hoc Libello
E e inve-

In ea tempora cadit GEORGIUS KENTMANNUS, CONRADI GESNERI amicus, sed durior, & ab optimo viro posteriori ævo abalienatus (*Epist.* p. 5. b.) sexcentas plantas habuit miro artificio pictas (*ibid.* p. 24.) nihil autem edidit.

De HIERONYMO HEROLDO, qui icones plantarum confecerit (*GESNER.* l. c. p. 64. b.) nihil ultra innotuit, nisi epistolæ botanicæ, quæ sunt inter MATTHIOLANAS.

CASPAR COLLINUS, qui Valesiacas stirpes misit GESNERO, obiit ante annum 1561. (*IDEM* in præf. CORDI) JOHANNES FABRICIUS catalogum plantarum montis Galandæ confecit, qui extat cum GESNERI *L. de hortis Germania.*

BENEDICTUS ARETIUS, itineris in Nessum & Stockhornium Auctor, quod extat cum C. GESNERI hortis Germaniæ, plusculas in eo itinere pulchrasque stirpes primus descripsit, & fatentem habuit amicum, ab eo solo se proficere. (*GESNER.* *Epist.* p. 186.)

J. BACCHANELLI de consensu medicorum in cognoscendis simplicibus, Venet. 1553. 8. Dictionarium stirpium, cum locis veterum, & opinione auctoris, num nota planta sit, num ignoretur, quod sæpe de se ipso fatetur.

AMATUM IUSITANUM, quem temerarium & indoctum vocat idem GESNERUS (*l. c.* p. 105.) alibi tetigimus.

MELCHIOR GUILANDINUS Borussus, sed ab an. 1561. Patavii horti custos, acer MATTHIOLI inimicus, præter epistolas, anno 1588. *Theonem* contra ipsum eodem anno Venetiis edidit, quo cursim aliquos, neque eos certe gravissimos, errores MATTHIOLI, ut vocat, perstringit. Et erat quidem GUILANDINUS per itinera varia exercitus, quia an. 1558. iter Constantinopolin paraverit (*Theon.* p. 17. b.) nomen suum in pyramide reliquerit (*P. ALPIN.* l. p. 29.) an. 1560. Hierichunte fuerit (*de papyr.* p. 49.), in Africa naufragium fecerit (*p. 56. ib.*), ex captivitate Mauritanica, de qua videatur *P. HESSUS* p. 70 71. an. 1562. redierit, beneficio FALLOPII. Insigniter etiam valuit lectione Librorum, etiam extra vulgarem medicorum cognitionem positorum. Sed durus & asper homo, & promissor, & descriptor obscurus. Denique a morte conjectanea synonymia plantarum edita sunt an. 1608. a J. G. SCHENKIO apud de Bry. quæ species est alphabetici sed exigui pinacis. Idem redux an. 1572. edidit Venetiis in 4. *Commentarium in aliquot Plinii capita*, Lausannæ recusum an. 1576. 4. quo de papyro agit eruditissime, sed plantam papyriferam, quod mireris, describit nuspiam. Ejus causam contra MATTHIOLUM Paulus HESSUS suscepit, cum in Oriente abesset, & defensionem XX. *Problematum Guilandini* edidit Patavii 1562. 8. Nimis ipse acutus & in minutiis diligens, etsi Græcos melius legerit MATTHIOLO.

HIERONYMUS CARDANUS in *Lib. de subtilitate* variis locis plantas adtigit, ut v. gr. quærat *Lib. VIII.* quare calyce multæ destituantur. Inter *opuscula medica*, Basil. 1559. 8. edita extat liber de cyna radice seu de decoctis. Libellus idem cum altero de sarza parilla recusum est cum *Lib. II. contradicentium*, Paris. 1565. 8. Marpurg. 1607. 8. Uterque etiam extat Antvverpiæ 1564. 8.

J. CÆSAR SCALIGER Lutetiæ an. 1556. in 4. edidit *L. duos* in *L. de plantis* Aristotelis inscriptos, variæ omnino sententiæ, neque in plantis manentes, naturæ vero, etiam de industria negligentiores. De *commentariis in Theophrastum* dictum est.

JOH. CURIONIS conservanda sanitatis præcepta. Francof. 1557. 8. *. Est Schola Salernitana cum iconibus Dorsterii.

ANDREAS THEVETUS præter iter Orientale etiam Americani itineris dedit descriptiones sub nomine, *les singularités de la France Antartique, autrement nommée Amerique*. Parisiis 1554. 4. (*SEG.*). Antvverp. 1558. 8. Nempe cum D. VILLEGAGNON Brasiliam adiit, eruditulus homo, qui passim fusos veterum locos apte ineptè inferat operi, & v. g. Betulæ Plinii descriptionem alienissimæ Americanæ arbori tribuat. Proprias tamen etiam habet plantarum & animalium historias & rudes icones.

ANTONII MIZALDI historia hortensium junctim an. 1557. Coloniae prodierunt, seorsim vero *Artificia conservandorum fructuum*. Parisiis 1564. 8. de hortensium arborum insitione 1560. *Secretorum agri Enchiridion*, quo hortorum cura continetur ib. eodem anno. *Artificia compa-*

inveniuntur, ab Auctoribus ipsa manu depictæ, & per minimas circumstantias descri-

comparandorum fructuum, olerum, &c. ib. 1564. 8. Alexikepus 1565. 8. Hortorum secreta. 1575. Compilatio ex veteribus Geoponicis inutilis, artificia varia, vires medicæ ridicule, descriptiones variæ, proprii nihil.

ANT. MIZALDI Gallicæ etiam editiones sunt *le jardinage contenant la manière de cultiver les jardins*, Paris, 1578. 8. & *le jardin médicinal enrichi de plusieurs remèdes & secrets*, 1778. 8.

ANTONY ASKAM *little herbal of the properties of herbs*, Lond. 1559. 8. AMES.

BENEDICTI CURTII *hortorum* Lib. XXX. Lugd. 1560. fol.

A. 1561. ALOYSIUS ANGIULLARA *Libellum de simplicibus*. Venetiis 1561. 8. & 12. cui editioni paucae icones accesserunt (SEG.) alicujus usus esse confirmant frequentes citationes C. BAUHINI, a quo an. 1592. editus est Basileæ in 8.

CÆSARIS ODONIS *Theophrasti sparsa de plantis sententia, in continuam seriem ad propria capita digesta. Accessere diss. dua.* Bonon. 1561. 4.

GIOV. TATTI *dell'agricoltura*, Venet. 1561. 4. *

ANTONII DONATI ab ALTOMARI *de manna differentiis & viribus*, Venet. 1562. 4. SEG. Non malum opusculum, quo per experimenta ostenditur, Mannam arboris suæ sudorem esse, non cælestem rorem.

An. 1561. & 1563. edidit C. GESNERUS posthuma Opera VALERII CORDI, summa fide, nisi quod vitia irrepperint per absentiam & lacunæ manserint. Addidit elegantem l. *de hortis Germania*, quo catalogus plantarum Alpinarum ex suis itineribus collectarum, & Helveticarum & hortensium demum, & plurimarum stirpium memoria ante CLUSII labores continetur. Anno vero 1565. in libro *de fossilibus* marinarum quarundam stirpium icunculas adjecit. Idem, cum an. 1565. peste periisset, reliquit *Epistolarum collectionem* ad varios, cujus L. III. an. 1577. 4. Tiguri sunt editi, alius vero ad KENTMANNUM, VVitembergæ an. 1584. prodiit; aliæ epistolæ ad J. BAUHINUM a fratre CASPARO Basileæ an. 1591. 8. luci sunt commissæ publicæ. In iis omnibus plurima habentur botanici argumenti, & Tigurinis illis accessit de *Aconito* l. *adseveratio* contra MATTHIOLUM, qua defenditur, hoc nomen Thoræ convenire, eaque ipsa describitur. In *vita etiam* GESNERI a JOSIA SIMLERO scripta, Tiguri an. 1566. 4. edita, icones aliquæ habentur, & primitiæ secuturi operis. Nempe laboraverat C. GESNERUS in universali stirpium historia, ad quam scriptores equidem omnes collegerat, in ordinem disposuerat, plantas vero ex omni Europa conquissiverat, vel suis itineribus, quæ plurima suscepit, vel cura amicorum. Etsi enim myopem se fuisse fateatur ipse (*Epist. p. 136. b.*) pulcherrimas tamen & rarissimas plantas, neque facile ab eo tempore lectas, ex itinere inprimis Rhætico retulit. Methodum primus in natura latentem vidit, inque flore & fructu constituit, plantas ad fines in genera univit, hæc in classes, exemplis variis, (*Epist. p. 107. b. 39. b. 113.* ubi *Consolidam* regalem & *Staphidem* agriam a flore fructu & semine *σύνφυλα* esse monet), tum characterem in iconibus nitide expressit fructus nempe & seminis (*Ib. p. 107. b.*), quarum iconum magna pars in JOACHIMI CAMERARII epitomen plantarum transit, pleræque vero & ad mille & quingentas, etiam nunc conservantur apud CHRISTOPHORUM JACOBUM TREW, virum omnis naturæ peritissimum. Calamo eæ figuræ ductæ sunt, & pictæ suis coloribus, non absque multis manus GESNERIANÆ vestigiis, ea subtilitate, super quam nihil est. Editionem certe selectiorum iconum VIR ILLUSTRIS non jubet sperare, & non mediocre specimen edidit iconum 216. quas GESNERUS sculptas reliquit.

Q. APOLLINARIS *handbüchlein* &c. recusum est cum TARQUINII OCYORI (*Schnellenberg*) *experiment büchlein von 20. pestilenz wurzeln*, Argentin. 1607. 8.

Q. APOLLINARIIS *Kurzes handbüchlein vieler Arzeneyen*. Francof. 1563. 8. (priorem enim editionem non vidi), præter farraginem formularum habet in secundo Libro stirpium icunculas ex BRUNFELSIO, & aliunde descriptas aliquas proprias, sed monstruosas, cum virium enumeratione. Novi nihil, jam GESNERO monente (*in præf. ad TRAGUM*).

GASPARIS FALLOPII, cum an. 1640. lectionem simplicium esset nactus (THOMASIN

scriptæ; cumque veterum plantis collatæ. Parvus Liber est in quarto: verum aliquan-

E o 2

p. 42.) hortoque præfectus esset, commentarius in primum L. Dioscoridis. Venetiis 1566. 4. editus est. Ejus L. de medicamentis purgantibus & Epistola de Asparagis ad H. MERCURIALEM extant in Tomo II. Operum omnium, neque absque bona fruge sunt, etsi nimis copiose mista sit theoria more Veterum. Præceptore usus est LUCA GHINO, suafore ad botanicen MARANTA. Ad MATTHIOLUM etiam codicem misit, in quo excerpta erant ex manuscriptis DIOSCORIDIS & ORIBASII Libris (MATTHIOL. p. 850.), & ab eo inter adjuutores suos laudatur præf. Ed. 1554.

ADRIANI JUNII phallus ex fungorum genere. Delphis 1564. 4. * unica scheda cum iconne, quæ extat recula apud DODONÆUM.

JOH. LANGII Lembergii Epistolarum medicinalium Libri sunt III. quorum primus Basileæ 1554. 4. tres vero procurante Wirthio Francofurti apud Wechelios an. 1605. & 1689. 8. prodierunt, huc a me referuntur, cum obierit Auctor an. 1565. In miscellaneis istis multa omnino sunt botanici argumenti, tum ex veteribus collecta, tum aliqua ad naturam ipsam descripta, ut adonis perennis est.

ALFONSI CICCARELLI Opusc. de tuberibus. Patav. 1564. 12. (SEG.) *

FRANCISCI ALEXANDRI APOLLO compositorum & simplicium normam suo fulgore irradians Venetiis 1565. fol. editus est. Dispensatorium sub hoc nomine habetur, in quo veterum more secundum ordinem compositionum simplicia describuntur, quæ mista formulas majores componunt. Lites plurimas & convicia habet, plantas in collibus Crepacorianis suis paucas vidit, & vulgares. Dicitur hic Liber anno 1604. recusum fuisse Francof.

HENR. CROLACH de Isatide Tiguri 1565. (GESNER ad KENTMAN. p. 65.)

GUIL. GRATAROLI de vini natura energia & ej. temperatura. Basil. 1565. 8.

GARCIAE ab ORTA Coloquios dos simples o drogas da India Goæ prodierunt an. 1563. 4. (CAT. THUANI); sed innotuerunt demum, quando CAROLUS CLUSIUS rejectis inutilibus hanc Aromatum & simplicium aliquot medicamentorum apud Indos nascentium historiam Latine vertit, & edidit Antverpiæ an. 1567. deinde an. 1579. ibid. in 8. Libri duo sunt, capita 81. Auctor, gnarus satis doctrinæ Arabum, plantas viderat ipse Goæ & apud regem Decani, utrobique enim medicinam fecit inque Bombaim prædium habuit, in quo rariores arbores alebat (p. 188.) Primus Aromatum historiam aperuit: CLUSIUS icones addidit & an. 1582. notas, in quibus icones sunt ALPHONSI PANCII, & plantæ aliquæ, a FR. DRAKE acceptæ. Ad eundem GARCIAM notas scripsit JAC. BONTIUS, breves & bonas; sed ad paucas plantas.

GARCIAE ab ORTA Coloquios &c. Italice versus est ab ANNIBALE BRIGANTIO, Venet. 1605. 8. Gallice vero sub nomine du JARDIN versi sunt hi dialogi, Lyon 1619. 8.

DODONÆUS an. 1566. frumentorum, leguminum, palustrium herbarum historiam, apud Plantinos recudi curavit. Subjecit an. 1569. florum & coronariarum herbarum historiam & anno 1574. purgantium & deleteriarum herbarum historia L. III. cum appendice rarissimarum herbarum. Mire nitidæ figuræ sunt ad naturam factæ, sed non paucae ex CLUSIANIS, descriptio brevis, sermo facilis. In ultimo Opere multas etiam umbelliferas habet.

NICOLAI MONARDI de vena secunda in pleuritide, de rosa & de malis citris, & limoniis. l. Antverp. 1564. 8. prodiit *.

BERNARDI de PALISSI, figuli, sed ad maxima negotia nati, Abregé d'Agriculture Rupellis an. 1564. 4. & ejus Traité de la manne & sur la nature des eaux & des fontaines, Parisiis 1580. 8. (SEG.) non vidi, quod doleo, cum eum virum, primum ad parandum in Gallia sericum suaforem, plurimi faciam.

ANT. MUS. BRASSAVOLÆ de usu radicis China cum questionibus de ligno sancto, Venet. 1566. fol. * (SEG.) practici sunt argumenti.

MATTH. DURASTANTE de aceti scillitici compositione ... de aloës Substantia, Venetiis 1567. 8. &c. *

Le safran de la Rochefoucault, Poitiers 1568. 4. *

MAR.

quando 25. florenorum pretio constat. Ratio, qua motus COLUMNA tanto cum

MARCELLI DONATI de Mechoacanna Libellus, Mantuæ 1568. 4. editus, potius ad medicinam pertinet.

LEVINI LEMNII similitudinum qua in Bibliis ex herbis & arboribus desumuntur explicatio. Antvverp. 1569. 8. Utilitates plantarum œconomicas & ceremoniales, & Philologiam tradit, maxime sacram.

NIC. MONARDI de lapide bezoar & herba scorzonera. Sevellæ 1569. 8. *

FRANCISCI CALCEOLARII Iter M. Baldi prodiit Venetiis Italice 1566. 4. deinde cum Matthioli epitome an. 1571. Plantarum in ditissimo Monte numerum posteriores superaverunt. De Museo alibi.

PETRI VICTORII della lode e della coltivazione degli Ulivi: doctissimus Liber Florentiæ 1569. 4. prodiit *.

NICOLAUS MONARDEZ obiit an. 1578. Ejus historia medicinal de las cosas que se traen de las Indias Occidentales, prodiit Sevellæ sive Hispalian. 1569. 4. Id Opus titulo Simplicium medicamentorum ex novo orbe historiam CLUSIUS an. 1582. edidit, duos Libros priores ex Anglico, tertium an. 1579. ex Hispanico sermone conversum. Auctor ipse futilis est & superstitiosus, qui fructum arboris Draconis ait Draconi simillimum esse, & descriptiones dedit pene inutiles. Pulchras icones CLUSIUS adjecit. Ejus L. de herba Petum & radice Mechoacanna Gallice vertit JACOBUS GOHCR & dedit Parisiis 1572. 8.

NICOLAI MONARDEZ opus quod CLUSIUS edidit sub nomine historia simplicium &c. Gallice vertit COLIN, Lion 1619. 8. EJUSDEM MONARDEZ est de dos medicinas excellentissimas contra todo veneno la piedra bezoar y la yerva escorzonera, Hispali 1569. 8. 1580. 8. * N. ANT. EJUSD. tractatus del efetto de varias yervas, Hispali 1571. 8. * ANT.

C. HERESBACH Anglice versus est a GOOGE, Londin. 1577. 4. 1586. 4. 1596. 4.

A. MIZALDI opusculum Parisiis recusum est 1607. 8. 1649. 8. cum PHIL. GUIBERTO.

Huc refer BENEDICTI PATINI disp. de acetosa, an scilicet alvum cieat an sistat, Brix. 1572. 8. *

CONRADI HERESBACH rei rustica L. IV. Colonia 1571. 8. aut 1570. 8. (NICER) * & Heidelbergæ an. 1603. 8. Agricolationem veterum cum Germanorum rationibus confert, non inerudito neque inutili Opere.

NICOLAI WINKLERI Chronica herbarum Augustæ Vindel. 1571. 4. excusa exigui momenti, plantas habet vulgares, primum secundum menses digestas, quibus florent, deinde secundum eos, quibus fructus ferunt, aut quibus radices oportet effodere. Loca natalia aliqua VVürtembergica sunt, cum Forchemiensis fuerit Auctor, & discipulus FUCHSII.

ANTONII MIZALDI de Senna Opusculum, anno 1572. 8. Parisiis impressum, non illepidum, & Sennæ & Coluteæ continet descriptionem.

JOH. FRAGOSI discursos de las cosas aromaticas arboles frutes y medicinas simples de la India an. 1572. Madriti 8. prodiit (SEG.); sed an. 1601. recusum est Latine Argentorati. Compiler fuit, & usus MONARDES GARCIAE ab HORTO & CLUSII labore (CLUS. ad G. ab H. p. 1. c. 26.).

NICOLAI HOVEL de la composition du Mithridat, Parisiis an. 1573. in 8. editus ex veteribus inutilem continet enumerationem simplicium medicamentorum, quæ theriacam ingrediuntur, fere ex Dioscoride exscriptam.

JODOCI HARCHII Encheiridion de simplicibus, Basil. 1573. 8. Lexicon est in quo præmissa epigrammata, tunc brevis historia, descriptio & utilitatis recensio cujuslibet plantæ.

R. SCOT. Perfect plateforme of a hopegarden and necessarie instructions for the making and mayntenance thereof, Lond. 1574. 4. HARL.

CHRISTOPHORI ENCELII de uva Quercina Libellus extat cum ejus L. de re metallica. Francof. 1577. 8.

JOSIÆ SIMLER descriptio Valesia & Alpium. Tiguri 1578. 8. Minime botanicus aut fuit aut voluit videri. Nam catalogum stirpium Alpinarum, quem CLUSIUS solet citare & alii, ex ARELIO, FABRICIO & C. GESNERO exscripsit.

cum ardore se dederit huic negotio, videtur hæc fuisse. Vexabatur diro illo morbo

CAROLI CLUSII magis & magis inclarescebat nunc fama. Itineris an. 1565. absoluti divitias in II. L. *rariorum stirpium per Hispaniam observatarum* edidit Antvverpiæ an. 1574. 8. Plantæ novæ in calida & ignota regione numerosæ, descriptiones fideles, summa in iudicando sobrietas, icones supra fidem nitidæ.

PETRI PENÆ & MATTHIÆ de LOBEL *nova stirpium adversaria* Antvverpiæ an. 1576. fol. min. & prius prodierunt Londini, quam editionem non vidi, publicatam jam anno 1570. PENÆ videtur plantas Galliæ calidioris suppeditasse, LOBELIUS Anglicas, Belgicasque, etsi idem in posteriori & auctiore editione, omisso PENÆ nomine, omnia sua faciat. Stirpes ex beata illa Provincia plurimæ primum descriptæ, multæ fraudes Matthioli detectæ, Graminum historia primum tentata, observationes undique propriæ, sed icones malæ, parvæ, descriptiones asperæ & ingrati styli, neque in assignandis locis natalibus semper fidus Auctor, observante RAJO.

MATTHIÆ de LOBEL *plantarum historia* eodem anno Antvverpiæ fol. edita præter proprias Auctori, vulgares etiam plantas habet, & icones earum, quibus in pemptadibus usus est DODONÆUS, aliasque ex Plantinianis.

Krauterbuch durch Philomusum anonymum durch D. TOXISTEM in druk gegeben. Strasburg. 1576. fol. Lego CARRICHTERI Opus esse, sed ab eo Opere in præfatione distinguitur. Paracelsistici hominis labor est, & plantarum vires per Planetas & Zodiaci signa explicatæ. Icones paucæ ad Fuchianas.

BARTHOLOMÆI CARRICHTER *groß kraüterbuch nebst dem neuerlichen kraüterbad* THEOD. KRAFTEN, Francof. 1573. 4. non vidi, neque *kraüter und arzneybuch*, Tubing. 1739. 8. recusum, sed ejus compendium edidit.

MICH. TOXITES absque iconibus, quo plantæ cuilibet suum, si Diis placet, zodiaci signum, cui subjecta sit, & in signo ipse gradus assignetur: deinde signa & tempus, quo quamlibet colligere oporteat, cum viribus sæpe nimis & infidis, etsi passim ad suam experientiam provocet, & v. g. mentha quadam polypum narium se sanasse adfirmet.

Circa hæc tempora credo primum editum esse ADAMI van BODENSTEIN Basiliensis *kurze beschreibung der kraüter so den 12. hauptzeichen in ihrer eigenschaft sich vergleichen*, cujus editionem habeo, Amberg. 1611. 8. Etsi in plerisque veteres sequitur & APULEJUM, ipse tamen plantas in Helvetia & Germania legit, & aliquoties loca natalia definit.

THEODORI ZWINGER *methodus rustica CATONIS atque VARRONIS præceptis illustrata*, Basil. 1576. 8. *

CHRISTOVAL a COSTA *de las Drogas de las Indias* Burgi in Castilia editus est Liber anno 1578. 4. CLUSIUS excerpfit Librum, & eximie contraxit, rejecit plurima, quæ erant ex GARCIA ab HORTO, icones adjecit, retinuit quæ propria essent Auctori, ordinem mutavit, aliqua & unam iconem L. colubini addidit, Antvverpiæ 1582. 8. Auctor indoctus fuit Chirurgus, figuræ tamen, quas LUGDUNENSES receperunt, potius rudes quam fictitiæ.

De CHRISTOVAL a COSTA, cujus *de las drogas* &c. librum citavimus, nunc adjicimus, Lusitanum eum fuisse, sed in Africa natum; eumque libellum Gallice versum prodidisse Lion 1619. 8.

J. de BAVERDE *ARRIETA de la fertilidad y abundancia de Espanna y la raxon por que se dido marciendo con el remedio*, Madrit 1578. 8. * N. ANT.

LEONHARDUS THURNEISER ZUM THURN Basiliensis, celebris inter Alchemistas, Archiater aliquando Brandenburgicus, Berolini an. 1578. Librum edidit, quem vocat *descriptionem plantarum omnium* fol. Solæ sunt umbelliferæ, fraudesque nugacis Auctoris detexi. Nam v. g. quam Oenanthem Sobolem vocat, cum mirificis nominibus & alienissimis virtutibus, verissimum est Bulborastanum. Reliquæ icones (habebat enim omnino 1921. in præf.) transferunt in PANCOKII herbarium. Magni facit EJUS opera T. REINESIUS Var. v. 664.

JOHANNIS LERYI iter Brasilianum variis annis & an. 1578. 8. (SEG.) editum est & in collectione T. de BRY recusum. Plantas etiam ejus regionis recenset.

JOHAN-

JOHANNIS COSTÆI, qui etiam in Mesuen commentatus est, de *stirpium natura* L. II. Turini editi 1578. 4. ex veteribus, & ex inanibus ratiociniis confarcinati sunt.

REMBERTI DODONÆI *historia vitis vinique*. Colon. 1580. 8. Primo colligit brevem vitis & eorum quæ ex ea arbore producuntur, historiam ex veteribus. Deinde aliquas alias stirpes describit pari modo, ut in pemptadibus, Vaccinia, Ligustrum & affines, Gale, Isatidem, aliasque. Denique observationum medicarum variarum exempla sequuntur.

CYRIACI LUCII de *CLAF de natura & usu ligni coronei*, Ingolstat. 1580. 4. *

J. de RAMINGEN lib. de *aromatibus & simplicibus Germania*, Argentin. 1580. 8. **PASCUAL.**

T. TUSSE 500. *points of good husbandry as wvel for the champion or open country as also for the vvoocalland*, Londin. 1580. 4. 1585. 4. **HARL.**

MATTHIÆ de **LOBEL** *Kruytboek*, Belgica Lingua, duobus vol. in fol. an. 1581. apud Plantinum prodit, qui Liber omnium plenissimus est inter Lobelianos. Continet Adversaria & historiam & alia, quæ in neutro reperias, eaque rariorum stirpium Belgicarum monumenta, icones vero **CLUSII**, **DODONÆI** & **LOBELII** omnes, cum **PLANTINUS** communis esset omnium Bibliopola. Ejusdem Libri quoddam compendium est, quod in *forma longa*, ut vocant, eodem anno prodit, & icones habet prioris, cum brevissimis descriptionibus. Hoc Opus plerique solent citare.

LEONHARD RAUWOLF Augustani *Morgenlendische Reys*. Primi tres Libri an. 1582. Francofurti in 4. prodierunt, ultimus in editione Lavingensi an. 1583. accessit, qui icones 43. continet, quas Lugdunenses etiam in tomo secundo receperunt. Iter suscepit an. 1573. vir optimus in Syriam, Mesopotamiam, Palæstinam, Ægyptum, rediit an. 1576. ubique plantas medicas notavit, vires œconomicas & medicas adjecit, officinales multas primus descripsit (ut Ribes verum, Behen album), naturam universam coluit, vir fidus, candidus, & inter Itinerum scriptores eximius. In varias Linguas translatus iter cura etiam **RAU**, sed absque iconibus recusum est. Discipulus **RONDELETII** fuit, patria ob religionem reformatam ejectus. Obiit demum an. 1606. Ejus plantæ siccæ ad **ISAACUM VOSSIUM** (Occo in *vita Med. August.*) inde in bibliothecam Leidensem venerunt.

CAROLI CLUSII *rariorum plantarum per Austriam, Pannoniam, &c. observatarum* L. IV. eodem anno 1583. in 8. apud Plantinum prodierunt. Plantas Alpinas hic plurimas descripsit, an. 1574. lectas, & sequentibus annis. Hinc post **C. GESNERUM**, & **JOH. BAUHINUM**, quos autem prævertit edendo suas icones, dum Helvetiorum, quos dixi, opera latebant, & certe non plurimas stirpes posteris addendas reliquit. Aliæ etiam sunt ex Austria calidiori, Pannonicæ paucæ. Icones etsi minus nitidæ, bonæ tamen.

J. BAPTISTÆ PORTÆ *villæ* primum prodit Neapoli 1583. 4. (**SEG.**), & Francofurti recusa est an. 1592. 4. sed eam nondum legi.

J. BAPT. PORTAM propria experimenta negat habere **CONRINGIUS**.

REMBERTUS DODONÆUS eodem anno 1583. *stirpium historia pemptades* VI. sive Libros XXX. apud Plantinum in fol. edidit, quæ a morte an. 1616. apud Moretos, hæredes Plantini, cum accessionibus 12. paginarum, & phalli, & potamogelonis alterius, & quarundam marinarum stirpium, anno vero 1644. Belgice enormi corollario virium inprimis medicarum onerata recusa est. Opera priora collegit in unum, addidit vulgatas, iconibus ex **MATTHIOLO** descriptis expressas, **CLUSIANAS** etiam bene multas, & in palustribus inprimis & Belgicis aliquas invenit, bonus, sobrius & utilis Auctor, etsi non eminuerit in arte. Anglice versus a **HEN. LYTE** prodit an. 1586. & 1595. (**AMES. CAT. HARL.**)

REMB. DODONÆUS Anglice versus a **H. LYTE** prodit etiam 1578. fol. & 1619. fol. Deinde **GUILLIELMUS RAM** epitomen ex **DODONÆO** exscripsit, cui titulum fecit *little Dodeen*, Londin. 1606. 4. *

ANDRÆ CÆSALPINI LUCÆ GHINI discipuli, qui horti Pisani primus præfectus fuit, bis jam laudati, de *plantis* L. XVI. eodem etiam anno 1583. Florentiæ in 4. sunt excusi. De methodo dixi. Plantas fere absque ulla aliorum recentiorum Auctorum memoria, aut citatione, ex ipsa natura diligenter, & cum optimis notis descripsit, nomina prefixit Hetrusca, addidit vetusta sæpe valde paradoxa. Ob defectum synonymorum difficilis est intellectu, maxime exteris, cum Alpinas sæpe vocet plantas, quæ nobis abunde in planitie calida proveniunt. *Appendix*, quæ Romæ an. 1603. 4. prodit, brevissima, **BOCCONIA-**
NO etiam Museo adjecta est.

JULIUS ALEXANDRINUS Cæsareus Archiater & **CRATONIS** æmulus, jam an. 1575. ediderat de *sanitate tuenda* L. XXXIII. sive diæteticon, quæ plantas etiam edules completitur, frigide satis compilatam ex veteribus. Idem an. 1584. Francofurti in 8. edidit *epistolam apologeticam ad R. Dodonaum* & ipsum Collegam suum. Inprimis de fabis agit veterum, quas negabat Dodonæus, adfirmat **JULIUS**, esse vulgares nostras fabas, argumentis a pondere, &c. sumtis.

BALTH. PISANELLI *della natura de' cibi & del bere* Venet. 1584. 4. Varie recusos etiam Latine extat.

SALOMONIS ALBERTI *oratio de cognitione herbarum* extat Wittembergæ 1585. 8.

CASTOR DURANTE an. 1585. Romæ edidit *herbario nuovo* in fol. Plantæ sunt vulgares, quales in officinis extant, cum subjectis exoticis ex C. a **COSTA**, & iconibus Matthiolianis parvis, magnaue virium enumeratione, Venetiis an. 1667. auctus a **J. M. FERRO**, & Romæ an. 1684. paulo auctior, etiam figuris nonnullis additis, in folio prodiit. Id ipsum Opus a **P. UFFINBACH** recusum esse & anno 1609. Francofurti prodisse lego, sed eo careo. **ETUSDEM CASTORIS** *Tractatus de usu radicis Mechoacanna* Antverpiæ prodiit 1587. 8. (SEG.)

CASTORIS DURANTE, quem medicum **SIXTI V.** fuisse nunc addimus, *erbario nuovo* a **J. M. FERRO** auctus primum prodiit Venetiis anno 1636. 4. deinde ibidem eo anno quo diximus, & Hispanice Venet. 1667. 4.

BALDINI BACII *tractatus de cucumeribus*, Florent. 1586. 4. *

D. DIDIMUS MONTANUS *the gardeners labyrinth containing a discourse of the gardeners life in the yearly travels to be bestowed on his plot of Earth*, Lond. 1586. 4. **AMES**.

The profitable art of gardening, Lond. 1586. 4. **AMES**.

JOACHIMUS CAMERARIUS *de plantis epitome*, P. **ANDRÆ MATTHIOLI** auctam edidit anno 1586. Francofurti in 4. Icones compendii Italici Matthioli hic aliquæ habentur, interque eas nonnullæ spuria & malæ. Sed maximum pretium accedit operi ex **GESNERIANIS** figuris, quarum quingentæ & ultra hic habentur, nitidissimæ & elegantissimæ cum characterum fida expressione. Harum similes aliquas **CAMERARIUS** adpersit, perinde perpulchras, ad plantas horti sui, quem egregium aluit delineatas (**M. ADAM** p. 349.), neque fere cedentes prioribus. Multæ inter illas Alpinae intercedunt, etiam rarissimæ. Obiit an. 1598.

MARCELLI SQUARCIALUPI *de Amygdalarum amararum in ebrietate vi* *. Puselavii in Rhætis 1586. 8.

Anno 1587. prodiit in 2. vol. fol. Lugdunense Opus, sive *Historia generalis plantarum* edita apud Rouille. Origo operis est in **JACOBI DALECHAMPII**, Pliniani commentatoris & botanici non indiligentis, molimine, in quo omnes priores botanicorum labores cum suis inventis conjungere constituerat. Sed pertæsus laboris commisit opus imperfectum **JOHANNI BAUHINO**, qui Lugduni praxin medicam secutus erat & pestilentiarius fuit Medicus (**GESN.** Epist. p. 47. b.) Deinde, eo ob religionem abeunte in Helvetiam, **MOULINO** nescio cui tradidit, ut tamen operas dirigeret (**PONS.** l. c.). Iste homo impar oneri toties plantas repetiit, toties nova icone expressit, quoties ex alio Auctore erat citata aliqua a **DALECHAMPIO**, denique & ipse operi est immortalis (**PONS.** l. c.). Inde inconcinnum chaos natum est, ex quo oportet eruere stirpes Gallia & Lugdunensis, & Narbonensis, a **DALECHAMPIO** & **VALERANDO DOUREZ**, Hispanicas a **MYCONIO** missas, & stirpes demum **J. BAUHINI**, quas habebat omnes editor (**J. B. pref. ad font. Bol.** L. IV.) Operi insertas, & rudiuscule quidem depictas, sæpe tamen rarissimas & passim hodie ignotas, Adversaria **IOBELII** verbotenus in Lugdunensem historiam inserta sunt. Adjecerunt etiam figuras **RAUWOLFIANAS**. *Animadversiones* in hoc Opus utiles edidit **C. BAUHINUS** an. 1601. 4. & passim characteres ita describit, ut etiam stamina numeret. Sed multa reliquit emendatione digna, & inprimis reconditas illas **DALECHAMPII** stirpes.

Eodem anno prodiit Opusculum **ÆGIDII EVERARDI** *de herba panacea, quam alii Tabacum, Petum, aut Nicotianam vocant*. Antverpiæ 16. Accessit narratio de Mechoacanna & alia. Nova aliqua habet certe suo tempore.

ÆGIDII EVERARDI, quod citavimus opusculum, Anglice prodiit Lond. 1659. 8. sub titulo *the virtues of smoaking tobacco*.

*LAUR. SCHOLZII catalogus arborum, fruticum, & plantarum medici horti aliquoties editus est an. 1587. & 1594. **

LAUR. SCHOLZII citatus catalogus in 4. est, brevis & duorum fere foliorum.

*JACOBI HORST de vite vinifera cum descriptione vini, musti Passularum, Helmst. an. 1587. 8. editus est Libellus **

*JULIANI PALMARII de vino & pomaceo Lib. II. Paris. 1588. 8. **

JOACHIMI CAMERARII, cujus gens antiquitus *LIEBHARD* vocata fuerat, & ex officio nomen mutaverat, *hortus medicus & philosophicus* anno 1588. prodiit Francofurti. Iconum adjectarum major pars Opus est *CAMERARII*, cum noviter inventas & *RAUWOLFIANAS*, aliquas exprimant, eaque eximiae sunt. Opus ipsum ex *ANGUILLARA*, *CORDO*, *CLUSIO*, *GESNERI* schedis, & propriis nonnullis observationibus coaluit.

Cum eo Libro prodiit *JOHANNIS THALII sylvæ Hercynia*, cujus novam editionem an. 1654. (1674. *SEG.*) Northusæ factam & auctiorem, mihi vero nunquam visam, adducit Auctor nuperæ vitæ hujus viri *CL. FRIDERICUS LESSERUS*. Certe a fratre *WENDELINO THALIO* Medico Northusano, novam parari editionem copiosiore, jam *PASCHASIUS GALLUS* Auctor est *Bibl. med.* p. 194. Magna industria *THALIUS* in promontoriis Hercyniæ, in Bructero Monte & in vicinia suæ Northusæ stirpes raras collegit, quarum nonnullæ ad nostra usque tempora a nemine sunt visæ, exemplo *Sisymbrii* quod in itinere Hercynico nuper pictum dedi. Sed breves descriptiones, & nimis vasta genera, passim faciunt, ut nemo intelligat: ut experiri facile est in Graminibus, Intybis, Chondrillis. Icones 14. ex *GESNERO* accesserunt. Vitam *THALII* nuper descripsit *CL. FRID. LESSER*, Northusæ 1747. 4.

J. BAPTISTÆ PORTÆ Phytognomica octo Libris contenta Neapoli an. 1588. fol. prodiit, & Francofurti an. 1591. 8. multo vilius recusa est. Inanis argutia quidem erat, qua plantarum aliorumque corporum vires medicas ex facie & habitu conatus est indicare. Icones tamen non pessimas habet, &, ut solet, aliqua passim utilia.

ZACCH. ROSENBACH paradis gärtlein darinne die edlesten kraüter abconterfeytet und beschriben sind, Francofurti 1588. 12. Icones & versiculi partim medici, partim emblematici sunt stirpium vulgatiorem, in quibus ætas & conditio auctoris simplicitatem excusat.

JACOBI THEODORI TABERNÆMONTANI Kraüterbuch primum prodiit Francofurti anno 1588. Tom. II. fol. Discipulus *TRAGI*, triginta sex annis in eo opere laboravit, adjutus liberalitate *MARQUARDI*, Spirensis Episcopi. Icones sunt ad 2255., pleræque ex *MATTHIOLO*, aliquæ ex *CLUSIO* & *LOBELIO* descriptæ, nonnullæ tamen ad ipsam naturam, eaque minime malæ. Repetitiones bene multæ irreperunt, & varietates a coloribus. Sermonem, quo vires laudantur stirpium ad Tom. I. Auctor ipse scripsit, ad secundum & tertium *D. NICOLAUS BRAUN* Marburgensis. Id Opus, varie auctum encomiis virium medicarum; sæpe Basileæ prodiit, anno 1613. 1664. & iterum 1731. Sed icones solas an. 1590. in forma longa dedit Francofurti *BASSÆUS* Bibliopola, cum nudis nominibus. Ea editione fere unice utuntur Exteri.

PETRI ANDRÆ MATTHIOLI partem, qua plantæ describuntur, *HANDISCHIUS* Germanice vertit: *JOACHIMUS* vero *CAMERARIUS* additis iconibus *GESNERIANIS* suisque, & plantis adeo a *Matthiolo* neglectis, aliisque observationibus, edidit an. 1590. fol. tum an. 1626. eadem forma & alias. Aromatum aliquas figuras noviter addidit.

P. A. MATTHIOLI editio quam *J. CAMERARIUS* dedit, primum prodiit 1586. fol. Eiusdem libri editiones annorum 1586. & 1626. possideo sui simillimas, & citat alias ab amicis visas annorum 1590. & 1600. & 1611. *HEISTERUS* (ad *BURCHART* pag. 23. 24.)

P. ALPINI de balsamo dialogum Gallice vertit *COLIN*, Lion 1619. 8. Cæterum Balsamum apud *P. ALPINUM* floruisse, & de vulneribus stillasse *J. BARTHOLINUS* auctor est in II. diff. de Theriaca.

JOH. CUNONIS hoffsarts laster an einem vundergevvächse so in Seltvedel gevachsen, VVittemb. 1590. 4. *

JOHANNIS VIGANDI Vera historia de Succino Borussico, de Alce Borussica, de herbis in Borussia nascentibus. Edidit *JOH. ROSINUS* Jenæ 1590. 8. Sed Liber (ex præf.) scriptus est an. 1584. Catalogi plantarum spontanearum Prussiæ tres, inter eas aliquæ, certe eo ævo, memorabiles.

bo epilepsia (a), plura frustra instituerat, legit tandem DIOSCORIDEM, & vidit
F f

PROSPERI ALPINI de Balsamo dialogus. Venetiis an. 1591. 4. prodiit. Pulcherrima opportunitate usus tribus annis Cairi vixit apud Consulem Venetum Hemum (THOMASIN. in Elogiis II. p. 303.) cum quo Ægyptum petiit an. 1580. & rediit an. 1584. Sed botanicus imperitus non ea præstitit, quæ promittebat occasio. Iconem Balsami & descriptionem perinde obscuram dedit.

Eodem anno idem de Medicina Ægyptiorum L. IV. sequente vero de plantis Ægypti L. I. scripsit, ideo utilem, quod officinalium plantarum in ea regione provenientium, aliquas descriptiones & icones dederit, etsi nimis aliquando minutas, exemplo v. gr. Coffeæ, quam nullo modo agnosces, plerumque tamen, ut ea ætate, satis fideles. Iterato hoc Opus prodiit Patavii an. 1640. & VESLINGIUS, qui & ipse in Ægypto vixit, an. 1638. annotationes edidit ad easdem Alpini Ægyptias plantas, cum emendationibus iconibus & descriptionibus. Nuper cum historia naturali Ægypti an. 1735. Leidæ idem Opus recusum est, quam cum quarto Libro Medicinæ Ægyptiorum inter schedas posthumas fuisse legimus apud THOMASINUM. l. c. p. 304. Aliquot iconibus hæc editio auctior est.

ANTONII PASINI Annotationes & emendationes in versionem Dioscoridis a Matthiolo propositam. Bergomi 1591. 4 *

JACOBI ANTONII CORTUSI Catalogus horti Patavini, Venet. 1591. 8. Italice, Latine vero. Francofurti 1608. 8. brevissimus est, & unice nomina habet. Hunc amicum MATTHIOLI deridet LOBELIUS in Advers. p. 64. sæpe eum MATTHIOLUS laudat (pag. 349 & alibi,) & ab ejus nomine CORTUSAM dixit.

JOHANNIS BAUHINI de plantis a Divis nomen habentibus ex magno volumine de consensu & dissensu Auctorum circa stirpes. Addita C. GESNERI Epistola hætenus inedita. Edidit Basileæ CASPARUS frater an. 1591. 8. In specimine magni operis Pinax habetur synonymorum, nominum a Divis repetitorum plus, quam expectares, sæpe obscurorum, & observationes aliquæ ad declaranda loca quædam MATTHIOLI, aliorumque. In epistolis, quæ scriptæ sunt ab an. 1560. ad 1565. multa ad plantas Alpinas, historiam botanices, & interiora vitæ CONRADI pertinent.

JOH. de CARDENOS problemas y secretos de las Indias 1591. 8. EJ. del chocolate que por vechos haya y si es bebida saludable o no, Mexici 1609. N. ANT.

ANTONII MARIA BETTI de rhabarbaro contra communem opinionem questio, Bonon. 1591. fol. An nempe magis in substantia an in infuso alvum solvat.

JOH. WITTICH bericht vom bezoar stein: vom ligno guajaco, Lips. 1592. 4. In priori libello egit etiam de tacamahaca, mechoacanna & tabaco, & nonnullis novis balsamis, medico imprimis scopo.

THO. HY L profitable arto of gardening, Lond. 1593. 4. HARL.

HIERONYMI MINETTI Questio de sarsa parilla & ligni sancti viribus, Senis 1593. 4. *

Absque titulo anno 1592. in forma longa Liber prodiit, cujus fronti inscriptum est: Vivitur ingenio, cetera mortis erunt. In eo insecta imprimis, sed plantæ etiam exque sæpe eleganter exprimuntur, sed partes fere & rami.

(a) FABIVS COLUMNÆ cum ad epilepsiam sibi conatam quæreret remedium, botanicus factus est, & magno conatu & in natura stirpes inquisivit, & in Libris descriptiones veterum cum suis inventis conatus est comparare. Primum Opus, juvenis 25. annorum nunc primum plantas circa Neapolin conquirentis, quo audacior fuit in definiendo de plantis veterum & paradoxus nonnihil, Phytobasanos dictum est, & prodiit Neapoli an. 1592. 4. Omnes fere receptas sententias mutavit, sollicitè intimis partibus stirpium comparatis cum veterum descriptione. Addidit accuratas icones, quas ipse delineasset. Omnium primus, quantum vidi, dedit plantarum icones æri incisas. Plantarum vera genera constituit, Cymbalaricam v. gr. ad Linarias revocavit, Acinon suam Veronicæ accedere vidit, styli, staminum, petalorum nomine usus est (ad. HERNANDEZ p. 853.) & ea nomina constituit. Differentias plantarum a florum figura, a numero petalorum vidit (ib. p. 854.) Nomina clarorum virorum stirpibus imposuit ut Cæsæ p. 148, Columniæ p. 75. quam amicus ejus CÆSIUS eo nomine

dit ibi aliquando plantam commendari ad epilepsiam, & rogavit Medicos, an conduce-

nomine dixit. Petalorum nomen constituit, ut partes floris significarent (p. 853.) Tenera valetudine fuit, cui SEVERINUS anno 1629. vel 30. ulcus femoris exusserit, torridis lateribus admotis de *efficac. medic.* p. 141. In senio ἀναλφάβητος evasit, & circa an. 1650. obsoleta jam fama obiit. Appendix marina nonnulla continet. Rarissimum Libellum nuper an. 1744. recudi curavit Florentiæ 4. suo sumtu JANUS PLANCUS Ariminensis, additis TOURNEFORTII nominibus, & vita FABII. Præter botanica Musicam etiam amavit & Heronis paravit editionem (SEVERIN. *Medic. effic.* L. I. P. III. c. VI.

ADAMI ZALUZIANSKY a ZALUZIAN M. D. *Methodi herbaria* L. III. Pragæ an. 1592. 4. editos video passim laudari. Sed inutilissimus mihi videtur labor occupatus in DODONÆI stirpibus secundum inuilem ordinem disponendis. Quæ laudatur muscorum aut orchidum divisio, nihil habet veræ utilitatis, cum neque species enumerentur, neque notæ divisionum addantur, & alienissimæ plantæ muscis accenseantur.

JOHANNIS BAUHINI de plantis absinthii nomen habentibus caput ex L. de consensu & dissensu Scriptorum: & CLAUDII ROCCARDI Trecensis L. de absinthii Montisbelig. 1593. 8. Habet sententias breves Auctorum, & epicrises, descriptionem brevem absinthii, Muttellinæ. ROCCARDI Opus fere versatur in veterum homonymiis, & inter quatuor absinthia secundum agnoscere nequit.

HORATII GUARGANTI de mechiocani radice seu Rheu indo, Venet. 1594.

JOH. FRANCI hortus Lusatia five catalogus plantarum in Lusatia nascentium a C. BAUHINO sæpissime citatus, nunquam a me visus est. Prodiit Budissinæ 1594. 4. *

CASPARI BAUHINI phytopinax five enumeratio plantarum nostro saculo descriptarum Basileæ prodiit an. 1596. 4. Tentamen est ad futurum Pinacem, plantarum 2700. cum synonymis paucioribus sed descriptionibus nonnullis, iconibus paucis, nominibus sæpissime a numero solo desumptis. Ejusdem editio operum Matthioli, Basil. 1598. fol. Nomina ibi addidit nova, icones ex Tabernæmontano, & aliquas suas, tum quas in prodromum receperit, tum alibi non extantes.

PAULI MINII della natura del vino, Firenze 1596. 12. *

PHIL. ST. SPRENGER dictum catalogum nunc cum nactus sim, reperi alphabeticum esse, in quo aliquot plantæ, aut plantarum varietates recensentur, quas primum nominavit.

ANDR. BACCII Lib. VII. de factitiis vinis & de cerevisia.

CASPARI SCHWENKFELT de thermis Hirschb &c. libellum, quem dum hæc scripsi, nondum videram, nunc legi, titulumque meæ editionis addo, qui est hirschbergischen vvarmen bades in Schlesien beschreibung, Görlitz 1619. 8. Catalogus est omnium plantarum in montibus Silesiacis & circa Hirschbergam nascentium, rariorum & vulgarium.

ANTOINE CONSTANTIN brief Traité de la Pharmacie provinciale. Lyon 1597. * Purgantia sola tractat, more veterum.

PHIL. STEPHANI SPRENGER horti medici Heidelbergensis catalogus arborum, fruticum, plantarum indigenarum & exoticarum. Francof. 1597. 4. * Eo ægrius careo, cum aliquot stirpes primus descripserit, Auctore JOHANNES BAUHINO.

JOH. GERARDI herbal. Londini an. 1597. fol. prodiit, sed vide JOHNSTONI editionem.

ANDR. BACCII de naturali vinorum historia. Rom. 1597. fol. Compilatio. *

PETRI PION Phytologia five theses de plantis. Herbipol. 1598. 12. Compilatio ex LOBELIO, TABERNÆMONTANO, absque propria observatione.

JOHANNIS BAUHINI historia admirabilis fontis Bollenfis. Montisbeligardi 1598. 4. In appendice fructuum horarum varietates plurimæ, plantæ hortorum Bollenfium, deinde sylvestres ex vicinia stirpes, & inter eas nonnullæ rariores & plusculi fungi, ibi enumerantur.

RICHIER de BELLEVALL nomenclatura stirpium, quæ in horto medico Monspeliensi coluntur. * Monspel. 1598. 12. (Tourn.) Condidit hortum Monspeliensem quem pro exemplo horti medici proponit OLIVERIUS des SERRES p. 731.

FERRANTIS IMPERATI historia naturalis L. XXVIII. Neapoli 1599. fol. & plenius, variis ab ANTONIO FERRO additis auctus, Venetiis 1672. fol. Bremæ 1695. 4. hic Latine. In L. XXVIII.

duceret, & ut hanc ipsi darent; verum irrito successu eam, quam Medici suaferant,

F f 2

cor-

L. XXVIII. plantæ maritimæ, sed etiam rariores Creticæ nonnullæ pinguntur. **FERRI** icones plantarum plusculæ diu superfuerunt **ROBINSON** ad **RAJUM**.

SIMON BERGER von der paeonien Wurzel. Francof. 1599. *

JACOBI PONS in historiam generalem plantarum Lugdunensem observationes breves. Lugd. 1600. 8. maj. Emendationes titulorum continet, & supplementa, & additamenta ex **C. DURANTE**, quæ partim parata fuerunt apud **DALECHAMPIUM**, partim ab Auctore sunt addita, cui schedæ posthumæ traditæ fuerunt. Promittit novam editionem p. 22. cui destinabat **Nardi Montani** duas meliores icones ab **AUGUSTINO LEONE** ex Hispania missas.

CASPARI SCHWENKFELT Catalogus stirpium & fossilium Silesiæ. Lipsiæ 1660. 4. Stirpes tum hortenses Silesiæ, tum sylvestres, inter quas depromptæ ex montibus Sudetum variæ raræ. Sed synonyma omisit, descriptiones dedit brevissimas. Ejus de thermis *Hirschbergensibus* & de plantis in vicinia earum reperiundis Germanicum Libellum. Gorlitzii 1607. 8. editum & a **CL. viro C. J. TREWIO** citatum, nondum vidi.

JO. BRUYERINI de re cibaria. Francof. 1600. 8.

ADRIANI TURNEBI L. de vino. Parisiis 1600. 8. eruditissimus sed philologicus, a Meibomio recusatus.

OLIVIER des SERRES du PRADEL Théâtre d'Agriculture & maison des champs. Parisiis 1600. fol. (SEG. mea vero editio est an. 1611. 8.) Vir bonus, simplex, gnarus, curiosus, jussu regio jam an. 1603. publicaverat artem bombycum educandorum & conficiendi ferici. Omnem rem rusticam complectitur, nulla parte omissa, simplices & minime sumptuosas commendat methodos, cœlo vero suo scripsit, non nostro.

IDEM an. 1603. 8. * edidit Libellum titulo *seconde richesse du Meurier blanc*, quo ex cortice mori docet telas conficere.

OLIV. des SERRES du PRADEL Theatre d'Agriculture &c. editum est Rouen 1663. 4.

SEXTILII PICCOLHOMINI de natura & facultatibus ligni sancti, Rom. 1602. 4. *

THEOD. de **BRY** itinera circa hoc tempus edita, inter Physicos Libros sunt recensita.

PAULI CRASSI de lolio Tr. cum Epistola **ULYSSIS ALDROVANDI**. Bonon. 1600. 4. *

CAROLI CLUSII varios amicos, Botanicos, nominasse non ingratum erit. Ii fuerunt **BERNHARDUS PALUDANUS**, Frisius, qui in Syria & Ægypto aliquandiu vixit, & multa ex Oriente ad virum optimum vegetabilia attulit.

De **CAR. CLUSIO** addimus, nobilibus a **CÆSARE** ob merita adscriptum esse. **EJUS** lib. de fungis exstat in bibliotheca Leidensi, **BREYNE** de fung. offic. pag. 32. Exotica **CLUSII** sub titulo *histoire des Drogues, Espiceries & de certains médicamens simples qui naissent es Indes tant Orientales qu'Occidentales*, Lyon 1619. 8. vertit **ANTOINE COLIN**.

JOHANNES DORTMANNUS aliquot plantas raras palustrium Frisiæ invenit, Gladiolum lacustrem, saxifragam, flore luteo, lineato &c. quæ apud **CLUSIUM** extant. Historiam stirpium Friscarum sibi sumserat edendam, & reliquit **CLUSIO** (de hemerob. in præf.); sed cum eo interiit.

HONORIUS BELLUS VICENTINUS, Cydoniensis Medicus, Creticas stirpes in aliquot ad **CLUSIUM** Epistolis descripsit.

JACOBUS PLATEAU, Tornacensis, & indigenas & hortenses stirpes aliquas invenit, quæ cum ejus viri nomine, apud **CLUSIUM** extant, cui stirpes iconesque miserat. Idem de **THOMA PENNÆO** (vel **PENIO**, ut vocat **LOBELLUS**, qui & ipse plantas ab eo viro habuit), Londinensi Medico dixerim.

GREGORIUS a REGIO, Capucinus, multas Alpinas aliasque raras stirpes & ad **COLUMNAM**, & ad **CLUSIUM** misit. Ejus Libellus de *Capsico*. Bonon. 1613. (**BUMALD**) editus, extat cum curis posterioribus **CLUSII**.

N. PEIRESCUS, qui styracem indigenam sui fundi ad **CLUSIUM** misit (in vit. Peiresci).

Hujus Botanici suo tempore principis, qui suo labore duplo plures addiderit stirpibus prius notis, senex nunc & undique auctus suppetiis, quas certatim mittebant humanissimo viro, ex India & Europa Botanici, an. 1601. edidit *stirpium rariorum historiam* L. VI.

com-

corpori suo applicuit, unde dubitavit, an quidem vera esset **DIOSCORIDIS** plan-

comprehensam. Ea Pannonicæ priores & Hispanicæ continentur, & multæ præterea hortenses, aut vulgatiores stirpes, cum fidis, ut solebat, iconibus & descriptionibus. Varietates incepit suæ speciei subjicere. Fungorum copiam primus descripsit.

Deinde anno 1605. Leidæ, in altera Plantinianæ typographiæ colonia, edidit *Exoticarum* L. X. Eorum sex priores continent fructuum, stirpium, avium, piscium, animalium, per navigationes Belgarum ex India advectarum descriptiones. Reliqui sunt citati prius N. MONARDIS, G. ab ORTA, C. a COSTA, P. BELLONII Libri. Hi Libri Gallice versi prodierunt Lugduni 1619. 8. Accesserunt BELLONII de neglecto stirpium cultu & N. MONARDIS de ferro, nive & Scorzonera Libelli.

Denique, ne separem ultro magni viri labores, Leidæ, ubi vitam clausit senex decrepitus an. 1611. prodierunt cura posteriores, cum oratione in obitum. In his curis flores fere describuntur, & novæ aliquæ plantæ.

J. ROBINI catalogus stirpium indigenarum & exoticarum quæ Lutetia coluntur, Parisiis 1601. 12. prodit, teste TOURNEFORTIO.

JACOBI FERRARII idea theriaca & mithridatii, Venet. 1601. 4. Nonnullas rariores plantas etiam recenset, quæ theriacam ingrediuntur.

J. SIGFRID de genere aromatum quæ cortices sunt, Helmstad. 1602. 4. *

JOH. POMÆ iter Montis Baldi, scriptum an. 1595. extat cum CAR. CLUSIO, idemque auctius Creticis quibusdam stirpibus an. 1608. Basileæ 4. multis vero ex horto Contareno, iconibus & plantis, tum Alpinis nonnullis locupletatum, curante filio JOHANNES BAPTISTA editum est Venetiis an. 1617. 4. Sub nomine Monte Baldo descritto. Ob rariores Alpinas fideliter pictas, & numerosas, necessarius est. In duabus posterioribus editionibus NICOLAI CAROGNA Medici Veronensis L. de Amomo Dioscoridis & Plinii adjectus est.

DEMETRII CANEVARI de Ligno sancto Comm. Rom. 1602. 8. Lignum quoddam nuper adlatum in Italiam falsum esse defendit, neque differre Lignum sanctum a guajaco, etiam si paulum colore & densitate distingui videantur; lignum vero nuperum noxium esse, calidum, mali effectus, non indocto libro, opposito, ut videtur, Picolhomineo.

PETRI PAVII (conditoris horti Leidensis, si fides NEANDRO, & Theatri) horti publici Academia LUGDUNO-BATAVÆ iconographia & stirpium nomina (C. B. præf.) Leid. 1603. 8. * Fraudes hujus viri, & demonstratam pro Terebintho Fraxinum, arguit ROLFINKIUS de veget. in gen. p. 99.

NICOL. GUIBERT de balsamo ejusque lacruma quæ opobalsamum dicitur. Argentor. 1603. 8. *

The fruiteses's secrets containing directions for the due thime and mannes of gathering alle kinds of fruite. Lond. 1604. 4. cum historia malorum Cantiani agri.

Discourse of husbandry used in Braband and Flandres, (Hal.) 1605. 4. *

In J. TALENTONII thesauro rerum reconditarum, Francofurti 1605. 8. huc pertinent imprimis multa de chondro & alica veterum.

MATTHIÆ LOBELII in Rondeletii pharmaciam animadversiones; accedit adversariorum vol. & pars altera. Londini 1605. fol. septuaginta & sex paginis auctior editio, graminibus maxime Anglicis & Danicis, & eorum, atque Liliacearum iconibus & Lib. de balsamo ad CLUSIUM, qui Londini an. 1598. 4. seorsim prodierat (C. B. præf.) Quare hæc editio utique melior est.

ULYSSES ALDROVANDI Opera huc pertinent, ut qui obierit diem suum an. 1605. Et quidem cum avibus plusculas icones stirpium conjunctim dedit, sed valde parvas & imperfectas. Deinde ex ejus schedis posthumis OVIDIUS MONTALBANUS Dendrologia L. II. edidit an. 1668. fol. Francofurti recusos an. 1690. Loquax & inficetum Opus, philologicum, cum iconibus rudibus, descriptionibus vix ullis. Glandiferæ sunt arbores, & ex pomiferis paucae. Alias adhuc collectiones plantarum & scriptorum eo pertinentium idem MONTALBANUS laudat in Bibliotheca sua p. 26. edit. SEG. & stirpium collectiones egregias MONTIUS in Comment. Bonon. T. II. pag. 3.

planta; hinc ut certiora inveniret, evolvit omnes Botanicos, & tandem invenit veram

HIERONYMI RUBEI Archiatri de melonibus, Venet. 1607. 4. quo anno obiit auctor * MANDOS. *Flora's Paradise beautified and adorned vvith sundry sorts of delicate fruits and flowers*, Lond. 1608. 8. * HARL.

THEODORI a MUYDEN tractatus della natura del vino, Parma 1608. 8. *

THOMÆ MONSTANT le jardin Senonois, cultivé d'environ 600. plantes qui croissent a moins d'une lieue de la Cité de Sens 1604. 12. (SEG.) *

CECHINI MARTINELLI de Amomo & Calamo aromatico. Ven. 1604. Et contra eum anonymi examen. Mantuæ 1605. 4. (C. B. Præf.) *

RICHERI de BELLEVAL recherches des plantes du Languedoc. Monspeli an. 1605. cum 5. iconibus editas TOURNEFORTIUS memorat. *

ANDRÆ SPIGELII ad rem herbariam Isagoge primum prodiit an. 1606. 4. qua editione destituor. Vires medicas, etiam artificia aliqua ad conficiendos hortos siccos habet, & inter ea id, quo a planta ipsa fuliginis ope icon exprimitur.

ANDRÆ SPIGELII ad rem herbariam isagoges editionem quam diximus, secutæ sunt duæ aliæ, quarum una Leid. 1633. 12. altera vero Helmstad. 1667. 8. prodiit.

Le Jardin du Roi Louis XIII. or recueil de figures gravées par PIERRE VALLET. Paris. 1623. fol. Hic idem Liber prodierat sub nomine Jardin du Roi Henry IV. ou recueil de fleurs gravées & décrites par JEAN ROBIN. Paris. 1608. fol. (C. B. præf.) Sunt 92. tabulæ plantarum, bulbosarum, cum vivis coloribus, & addita methodo pingendi. Pleræque Caule, radice & foliis carent. In mea editione nomen ROBINI omissum est.

JOH. STURMII de rosa Hieriuntica. Lovan. 1608. 8.

Instructions for the incroasing of mulberrietreies and the breeding of silke vvorms, Lond. 1609. 4. *

SIMON PARLASCA il fiore della Granadiglia spiegato e lodato, Bologna 1609. 4. *

OCTAVIANI LEO vere regole per fare i vini ottimi, Ven. 1610. 4

The manner of vvinter and summer droovning of mendovv and pasture by R. VAUGHAN Lond. 1610. 4.

NICOLAI CLAVENNA de absinthio umbellifero & scorzonera Italica. Ven. 1610. 4. *

NIC. CLAVENNA, quem citavimus, pharmacopola fuit, & privilegium obtinuerat pro vendenda confectioe ex absinthio umbellifero, quod ostendit novum esse & a CLUSIANO diversum. Inde scorzoneram Italicam describit, quæ humilis secundæ CLUS. & aquam stillatitiam mire laudat

G. MARCKHAM Country contentments or che husbandmans recreations, Lond. 1611. 4. 1640. 4. EJ. cheap and good husbandry, Lond. 1631. 4. a EJ. farevel to husbandry or the enrichment of all sorts of barren grounds, Lond. 1631. 4. HARL. * EJ. inrichment of the vvald of kent, Lond. 1631. 4. HARL. EJ. vvhole art of husbandry, ib. 1631. 4. HARL. EJ. Engliscb housevvife, ibid. 1631. 4. EJ. vvay to vvwealth, ib. 1658. 4. HARL.

POMPEII SPRECCHI Antabsinthium Clusii, quo absinthium umbelliferum in Italia ortum sit idem cum A. Alo. umb. Clavenna, &c. Venet. 1611. 4.

EUGENII PETRELLI narratio fruticum, florum fructuumque, inprimis in Occidentali India nascentium. Colon. 1610. 8. (SEG.) *

BAPTISTÆ CODRONCHS L. de Elleboro. Francof. 1610. 8. prodiit. Commendat usum medicamenti, & ipse propinavit, sed rarioribus exemplis.

CASPARI PILLETERII plantarum exoticarum & patriarum Walachria synonyma. Middelburg. 1610. 8. Monspeliensis, Richerii aliquando vicarius, deinde Middelburgensis physicus. Non solas Walachricas neque primario, sed omnes sibi notas, suasque inprimis Aquitanicas recensuit cum paucis novarum stirpium descriptionibus, paucisque observationibus. Nomina prima sæpe valde barbara sunt. Promittebat methodum generalem cognoscendarum plantarum, & dat descriptionem Hyacinthi cum staminibus. p. 204.

PAULI RENE ALMI specimen historia plantarum. Par. 1611. 4. Elegans Libellus. Species generibus suis adjecit, ordines subalternos, quibus MICHELIUS, & DILLENJUS ante me sunt usi, primus adhibuit, stamina & ipsam inæqualitatem gnarus observavit. Centaurium minus in caractere Gentianis adjecit, icones bonas dedit, & descriptiones accuratas. Synonyma addidisse oportuerat.

EMMANUELIS SWEERT florilegium, Franc. 1512. fol. P. II. ib. 1614. Splendidæ sunt tabulæ, maxime

veram illam plantam DIOSCORIDIS, qua etiam se ipsum fanasse dicitur.
CO.

maxime bulbosarum, quibus commercium faciebat Auctor, eo Libro maxime curiosos emtores invitaturus. Recusum est an. 1635. & an. 1674. nihil mutatum.

JOHANNIS THEODORI de *BRY florilegium novum* an. 1613. editum, renovatum vero & auctum an. 1641. duplo fere plenius. Tabulae sunt florum, magna ex parte compilatae ex CIUSIO, aliae tamen propriae & meliores. Nomina non optima, varietates plurimae. In posteriori editione tabulae ex FERRARII flora accesserunt omnes, tum aliae stirpium bulbosarum. Ibi tabulae sunt 176. Omnes insertae sunt *Viridario VALENTINI*.

BASILII BESLERI *hortus Aichstettensis*. Norimb. fol. Atlant. 1613. & paucis mutatis, additis numeris Tabularum an. 1640. ibid. Splendidissimas 356. Tabulas suo sumtu addidit CONRADUS a GEMMINGEN, spontanearum plantarum & hortensium, quarum pleraeque ad naturam, aliqua tamen ex aliis imitatae, nonnullae fictitiae & monstruosae sunt. Descriptionem & synonyma, non optima, BASILIUS BESLERUS adjecit, impar operi & latinae linguae ignarus, ut praefationem scribendam reliquerit fratri HIERONYMO. LUDOVICUM JUNGGERMANNUM & CASPARUM HOFMANNUM manum adhibuisse vix crediderim, cum tantos errores non viderentur toleraturi fuisse. Et tamen CL. BAYERUS JUNGGERMANNUM verum hujus horti auctorem vocat *biograph. Prof. Altdorf.* p. 81. 82. 83. Vitas in *Praef. ad Gazophylacium LOCHNERUS* dedit.

JOHANNES BAUHINUS obiit an. 1613. Huc ergo refero illustre Opus, cui non aliud novi comparabile. Nempe an. 1560. Tubingae FUCHSIUM primo audivit (GESNER. Ep. p. 99. &c.) ab anno 1561. quo cum CONRADO GESNERO Alpes summas adierat, totis 52. annis Lugduni, Monspeli, Ebroduni, Genevae, Montisbeligardi, in VVurtembergia plantas quaesiverat, contulerat Auctores omnes. Et in Lugdunensi Opere manum habuit, & icones varias ad C. GESNERUM misit, quarum aliquae exstant inter CAMERARIANAS v.g. foeniculi tortuosi. Ita natum est ingens Opus, cujus *prodromus* an. 1619. 4. prodiit. Sed ipsa *historia plantarum* tribus voluminibus in folio comprehensa, demum an. 1650. & 1651. procurante FRANCISCO LUDOVICO de GRAFFENRIED, Cive meo, & tunc maxime Praefecto Ebrodunensi, opera DOMINICI CHABRAEI edita est. Et JOHANNES equidem sapientissimae omnium fere Auctorum operibus usus, crisi adhibita accuratissima, optimis descriptionibus aut confectis aut receptis & interpolatis, id praestiterat, ut fere omnia, quae eo tempore nota erant, breviter & nitide ordinata exstent. Plurimas novas plantas vel ipse invenit, vel Gener JOH. HENRICUS CHERLERUS. Icones propriae, etsi male sculptae, satis tamen bonae, multae autem Fuchsianae aliaeque parvae & rudes sunt. Deinde plurimas & saepe rudissime transposuit editor. JOHANNES RAIUS plurimum hoc Opere usus est.

In itineribus D. CHAMPLAIN Parisiis an. 1613. aliquot icones plantarum habentur.

CRISPINI PASSAEI junioris *hortus floridus secundum quatuor anni tempora*, Arnheim. Hujus Libri *Ver.* 1614. fol. long. *Aestas* an. 1617. *Autumnus* an. 1616. prodiit. Tum altera pars *horti floridi*, cui titulus est *Cognoscite Lilia Agri*. Ita omnino se habet exemplar, quod coram est. In horto florido nitidissime caelatae exstant plantae speciosis floribus praeditae, cujuscunque generis, in altero etiam arbores. Hujus alterius dimidia pars, icones nempe 60. cum carminibus nonnullis expuncto PASSAEI nomine, prodierunt Bruxellis an. 1640. & 1609. 4. ut alii citant.) cum titulo ANSELMII BOETII de *BOOF herbarum & fructuum icones*. Artificium multo quam in *horto florido* vilius.

MICHAELIS REUDENII de *novo gummi purgante*, Lipf. 1614. 8. * cum W. BAYERI descriptione Thermarum Bohemicarum.

ABRAHAMI ORTELII *syntagma herbarum encomiasticum*, Leid. 1614. 4.

The pleasure of Princes or gardener's recreations, Lond. 1615. 4. HARL.

C. HOFMANNI *catalogus Plantarum circa Altdorfium nascentium* LUDOVICI JUNGGERMANNI. Altdorf. 1615. 8. Raras aliquas & nuper detectas plantas continet. Idem Opusculum an. 1646. 4. sub nomine *Catalogi plantarum in horto medico Altdorfino* LUD. JUNGGERMANNI prodiit, redeuntis tunc maxime in eum hortum. Et hortenses & spontaneae ibi continentur, multis ad priores adjectis. Idem catalogus, sed multum auctus, in HOFMANNIANUM catalogum transit.

COLUMNÆ adjungatur JOHANNES BAUHINUS, vir fuit celeberrimus
in

P. ALPINUS hoc anno obiit, teste THOMASINO. Huc ergo referri debent L. II. de plantis exoticis, qui an. 1627. prodierunt, aucti ab ALPINO, ALPINIO, Prosperi F. quæ stirpes aliquas sua manu delineatas adjecit. Plantæ sunt calidarum regionum & Creticæ, adjectis Alpinis nonnullis.

FABII COLUMNÆ Ecphrasis stirpium minus cognitarum I. & II. Editio mea an. 1616. prodit Romæ 4. & præfatio tomi prioris non anni 1606. est, sed 1616. data est. In Tomo II. multæ sunt stirpes F. GREGORII de REGIO. Notum est, quanta peritia & fide plantarum raras descripserit FABIUS, cum veteribus contulerit, propria manu delineaverit, characteres ipsos expresserit, ut sui similem priori ævo neminem, paucos habeat sequente. Sunt autem partim calidarum regionum, partim Alpinae.

JO. OLORINI centuria herbarum mirabilium oder hundert vvunder kraüter, Magdeburg 1616. 8. Undique sua collegit.

BARTHOLOMÆI MARRANDAN dial. del tabago los dannos que causa y del chocolate, Sevilla 1616. 8. *

Cum LOBELIUS eodem anno obierit, Posthuma ejus Opera hic dicere oportet. Et quanta eorum pars apud PARKINSONUM exstet, alias dicetur. Hic stirpium volo illustrationes Londini an. 1655. 4. editas. Raras describit stirpes, partim a BOELIO ex Bætica & Africa missas, partim a se ipso lectas, alpinas & gramina; sed descriptiones breves, & obscuræ sunt.

MENZELII Synonyma plantarum circa Ingolstadium sponte nascentium. Ingolst. 1618. 8. Plantæ paucæ, nomina fere ex Lugdunensibus, mixtæ tamen rariores. Auctores PHILIPPUS & ALBERTUS MENZELLI pater & filius.

LUPUS DEZA gobierno politico de agricultura, Madrit 1618. 4.

JOH. FRANKEN signatur d. i. gründliche beschreibung der von Gott gebildeten Gevvächsen, Rostoch 1618. 4. 1645. 4. Fere ex figuris & odoribus ad vires stirpium concluditur. Ita præoniæ fructus cum cranio comparatur &c. similia habet OSWALDUS CROLLIUS de signaturis rerum seu de vera & viva anatomia majoris & minoris mundi. EJ. FRANKENII disp. de virtutibus nicotiana, Upsal. 1633. 4.

Ad MICH. DÖRING adde librum EJUS de opii usu, qualitate calefaciente & ipsum corrigendi modo, Jen. 1620. 8. Calidum esse & corrigi debere acidis & lenientibus.

NICOLAI MUTONI collectanea Cum auctario duplici de opii usu & de opobalsamo syriaco, Jenæ 1620. 4. *

GREGORII de los RIOS agricultura de jardines que trata de la manera se an de eriasgo-bernar y conservar las plantas, Madrit 1620. fol. * Collectanea esse N. ANT.

JOH. de CASTRO historia de las virtudes y propiedades del tabaco, Corduba 1620. 8. * ANT.

MART. MYLII hortus philosophicus, Argentin. 1621. 8. An huc pertinet?

GAUFROI LINOCIER histoire des plantes augmentée de plusieurs plantes des Indes cultivées au Jardin de M. ROBIN. Paris. 1619. 16. & EJUSDEM histoire des plantes trouvées en l'Isle de Virginie cultivées au Jardin du dit ROBIN. ibid. 1620. 16. (SEG.) *

JOHANNIS STEPHANI STROBELBERGER de cocco baphica & Confectionis Alkermis usu, Jenæ. 1620.

Ejusdem Gallia descriptio 1616. Plantas Galliæ Narbonensis & agri Genevensis, partim ex LOBELIO, partim ex proprio itinere, nominibus unice recensuit. Auctius recusa est an. 1621. 12. Jenæ.

MICHAELIS DÖRING de opobalsamo, balsamo Judaico, Ægyptio, Peruviano. Jenæ. 1620. 8.

GUIL. JOH. KNYF Goylandia L. II. Amstelod. 1621. 4. * Eo continentur plantæ indigenæ ejus regionis. (LINN.)

CASPARI BAUHINI prodromus Theatri Botanici. Francof. 1626. 4. & Basil. 1671. 4. Plantarum descriptiones sexcentæ, non ad nostri sæculi morem, & sæpe ad siccas stirpes factæ. Icones bonæ, pro ea ætate, & fideles. Passim dudum notas, CLUSIANAS, aliasque, pro novis describit, aliquas vero ibi habet, quæ ab eo tempore omnino intercederunt.

EJUS-

in hoc studio, & tribus voluminibus in folio *Historiam plantarum* scripsit, ubi habe-

EJUSDEM Catalogus plantarum circa Basileam nascentium. Basil. 1622. 8. Dives omnino stirpium etiam rariorum catalogus, nisi multiplicasset species, & passim aliquas recensisset, quas nullo nunc labore invenias, neque recentiores ullibi repererunt. Quare in difficilibus generibus, Allio, Orchine, Gramine, &c. caute legendus est.

Ejusdem Pinax Theatri Botanici. Basil. 1623. 4. 1671. 4. Opus, ut vocat Auctor, quadraginta annorum, & ultra certe, cum an. 1579. Monspelii plantas jam collegerit (*Phytologia* p. 149.) & *GUILANDINO* plantas aliquas demonstraverit. p. 153. Hoc Opere imprimis effecit *CASPAR BAUHINUS*, ut vix ulla planta absque ejus nomine recenseretur. Synonyma nempe priorum Auctorum sub unum nomen collegit, sic multo labore nos levavit, quem posuisse oporteret in intelligendis veteribus. Verum an eo officio ita sit functus, ut fama vulgo fert, judicabit expertus. Mihi videtur repetitiones ejusdem plantæ innumerabiles ibi reperiri, & difficiliores Thalianas & alias ejusmodi minime enodari, & omnino hanc clavem non respondere nostris desideriis.

EJUSDEM Theatri Botanici P. I. Basil. 1658. fol. Sed obiit Auctor an. 1623. Duodecim justis voluminibus destinabat edendam plenam historiam plantarum, cujus pars unica, graminum imprimis, in lucem prodit. Figuræ bonæ, plantæ plurimæ, etiam in hoc difficili genere, descriptiones breves, & mancæ.

JOH. OBERNDORFER horti Medici qui Ratisbona est descriptio. Ratisb. 1621. 8. Catalogus nominum. *

RENATI MORIN. Catalogus plantarum horti. Paris. 1621. 4. SEG. *

ISIDORY BARREIRA tratado das significações das plantas flores e fructos que se renferma na sayonda Escritura, Ulyssipon. 1622. 4.

JOH. SCHOEPP Ulmischer Paradis garten. Ulm. 1622. 8. * Describuntur 600. plantæ partim hortenses, partim spontaneæ circa Ulmam natæ.

GIOV. PONA del balsamo vero degli Antichi. Venet. 1623. 4. * Defendit Meccanum balsamum cum veterum balsamo convenire.

FRANCISCI PONA il Paradiso de' fiori e catalogo delle piante che si possono avere dal M. Baldo. Venet. 1622. 4.

JOH. MANHELPHI de helleboro. Rom. 1621. LINN. 1622. SEG. *

PETRI CASTELLI de nomine hellebori simpliciter prolato. Rom. 1622. 4. SEG. *

Theatrum flora, quo ex toto orbe selecti flores proferuntur. Parisiis 1622. fol. cum tab. 69. SEG. *

VEASPASIANI ROBINI Enchiridion isagogicum ad facilem notitiam stirpium qua coluntur in horto JOHANNIS & VESP. ROBINI. Paris. 1629. 12. SEG. *

OVID. MONTALBANI index omnium plantarum exsiccatarum qua in proprio Museo conspiciuntur. Bonon. 1624. 4. *

LUDOV. JUNGERMANN Cornucopia flora Giessensis. Gieff. 1624. 4. (LINN.) *

JOSEPHI de AROMATARIIS de generatione plantarum Epistola. Venet. 1625. 4. Coburgi nuper recusa, brevis, unice continet opinionem Auctoris, semina nempe plantarum esse parvos uteros sive ova, in quibus spiritus generet minimam plantam, reliquum in alimentum convertat.

J. B. CORTESIUS in Miscell. Medicis quæ Messanæ prodierunt an. 1625. in Dec. VIII. Tr. 4. de Mechoacanna egit, & in eandem Decadem inseruit Tractatui X. *JOSUÆ FERRI de Contrayerva & Bezoar* excerpta, & suas de iisdem cogitationes, in quorum opusculorum posteriori occidentale Bezoar describitur, & animal, in quo id concretum repertum est.

Descriptio rariorum plantarum qua continentur in horto Farnesiano Auctore *TOBIA ALDINO* ejus horti Praefecto. Rom. 1625. fol. Indicas aliquas plantas hic descripsit *PETRUS CASTELLUS* qui sub *ALDINI* numine latet.

ZACHARIÆ ROSENBACH catalogus plantarum circa Herbornam nascentium. Herborn. 1626. 8. *

JOHAN-

habetur quidquid potest expectari de plantis, & earum a veteribus Auctoribus
G g descri-

JOHANNIS NEANDRI *Tabacologia*. Leid. 1626. 4. & 1644. 12. Ultraj. Tres species Tabaci depingit, cultum tradit, vires medicas fusc congerit. In adjectis epistolis aliqua anatomica non mala habentur.

JOHANNIS NEANDRI quem diximus *Tabacologia* Gallice prodiit Lyon 1630. 8.

WILL. LAWSON *Orchard and garden* 1626. 4. L. 1656. 4. HARL.

GUIL. LAUREMBERGII *Botanotrophia*, sive *modus conficiendi herbarium vivum*. Rostock 1626. 12. Additum est etiam S. PAULI *Quadrupartito*.

PETRI ANDREÆ CANONHERII de *admirandis vini virtutibus*, Antvv. 1627. 8.

ALEX. PECCANÆ de *Chondro & Alica* L. 2. Veron. 1627. 4. *

ARNOLDI GISLENI *hortus* Cassell. 1627. 4. Brevissimus catalogus.

J. COLERI *calendarium perpetuum & sex lib. æconomici*, VVittemberg. 1627. fol. EJ. æconomia ruralis & domestica, Mogunt. 1645. fol. Germanice. A patre multa bona & experimento confirmata habuit, quæ admittis aliis corripit potius quam locupletavit. Agricultura partes ceterum breviter tradit, plurima vero alia ad animalia, ad coquinariam artem, ad medicinam pertinent.

JOH. CAR. ROSENBERG *Rhodologia*. Argent. 1628. 8. Francofurti 1631. 8. Omnis generis compilatio.

JOH. NEANDRI *Jassafrologia*. Brem. 1627. (LINN.) *

JOH. STEPHANI STROBELBERGER *Masticologia*. Lipsi. 1628. 4. Brevis, nec bona, Lenciscii descriptio; sed multa enumeratio compositionum, quas ingreditur Mastix.

Les Oeuvres de JACQUES & PAUL. CONTANT. Poitiers 1628. fol. Sunt commentarii in Dioscoridem, Synopses plantarum cum etymologicis, & alia.

GEORGII FUIRIENII anno 1628. mortui *planta itineris Gothici*, *Blekingensis & Norvegiæ* enumeratæ exstant in Cista medica Bartholini. Multas elegantes & novas plantas prius habet, non tamen semper facilis intellectu. Lego seorsim Hassniæ prodiisse an. 1661. 4. *

GUI. de la BROSSÉ de *la nature des plantes & dessein d'un Jardin Royal de Médecine*. Paris. 1628. 8. Stirpes rariores aliquas & observationes de virtutibus plantarum habet, & documenta moliminum suorum, quibus a RICHELIO hortum Medicum pene extorsit. Eiusdem *icones posthumæ*, quarum meminit TOURNEFORTIUS, non totæ perierunt. Possideo enim volumen in folio artificiose sculptarum stirpium exoticarum hujus Auctoris, quarum plussculæ imperfectæ sunt.

Hortus, quem GUI. de la BROSSÉ a RICHELIO sollicitasse diximus, anno 1626. conditus est.

ZACCHARIÆ de PUTEO de *Gumma Indica radice anthasthmatica & de Michiocan & de Jalapa*. Venet. 1628. 4. (SEG.) *

PETRI CASTELLI *discorsi delle differenze tra li semplici freschi e secchi e il modo di seccarli*. Rom. 1629. 4. *

PROSPER RONDELLA *tract. de vinea & vini generibus*, Venet. 1629. fol. ajunt 1679. fol. *

AGOSTINO GALLO (nobilis Brixiani) *vintigiornate d'agricoltura*, Venet. 1629. 4. Multa superstitiosa & vana. Medicæ cultum commendat, quam non definit.

JOHAN. PARKINSON *Paradisus terrestris* 1629. fol. Parte prima continentur plantæ flore suo conspicuæ; Parte altera hortus olitorius, tertia viridarium. Icones multæ, confusæ, non bonæ, parvorum ramorum, descriptiones breves, nomina ex C. BAUHINO, & LOBELIO.

THEOPHILI KENTMANNI *Tabula locum & tempus quibus planta spontanea proveniunt*. VVittemb. 1629. 4. *

ERN. ABR. von DEHN *Weinbau* Lipsi. 1629. 8. Cultum Vitium in Misnico agro describit & fructus horraeos.

ERN. A. von DEHN *weinbau* recusum est cum notis JULII BERNARDI de ROHR, Lipsi. 1730. 8. Experientiam 30. annorum citat DEHNIIUS, loco tamen parum opportuno, in Saxonia vixit.

BARTHOLOMÆI AMBROSINI de *capsicorum varietate cum iconibus suis & Panacea ex herbis a fructu denominatis*. Bonon. 1630. 12. SEG. *

descriptis virtutibus, adeo ut sint Pandectæ Botanicae, & nemo eo libro carere possit.
Post

Herbarium Horstianum, sive de selectis radicibus & plantis L. II. aucti per GREGOR. HORSTIUM. Marpurg. 1630. 8.

MAURITII TIRELLI *historia vini & februm*, Venet. 1630. 4. Inanis compilatio.

JACOBUS HORSTIUS prius Opusculum jam an. 1587. Helmstadii scripserat, quod medici fere argumenti est, secundum menses distributis plantis. Ejusdem JACOBI de Vite dissert. antiqua methodo scripta hic recusa est. Accessit ad finem CAROLI CLUSII Epistola ad Electorem Palatinum, cum quibusdam de cultu plantarum monitis. J. GREGORIUS HORSTIUS promiserat etiam *Pinacem Pinacis*, nominibus, quam apud C. BAUHI- NUM melioribus, sed ea nunquam prodiit.

ANTONII DONATI *Tr. de' semplici che nascono nel lido di Venezia*. Venet. 1631. 4. Rudissimus equidem Libellus Seplasiarii, nominibus corruptissimis agyrtica jactantia deformis; sed icones satis bonæ stirpium calidarum, & maritimarum hæc vitia redimunt.

ANT. COLMENERI de LEDESMA *tratado de la natura y calidad del Chocolate*. Madr. 1631. 4. recusatus an. 1644. a Volcamero Norimbergæ.

ANT. COLMENERI de LEDESMA Gallice versus est a R. MOREAU, Paris. 1643. 4.

MARTINI BLOCHWITZ *Anatomia Sambuci*. Lips. 1631. 12. Paracelsicus Libellus, an. 1677. Anglice editus.

PETRI LAUREMBERG *Horticultura & Apparatus plantarum* L. III. Francof. 1632. 4. Elegans Libellus & jucundæ lectionis. Continet icones liliaceorum non malas & varietates.

JOH. FREYTAGII de *Opii natura*. Groening. 1632. 8. Practicus.

JOH. MOUSIN *Hortus Jatrophyiscus, sive de floribus in Sylvis sponte nascentibus*. Nanciæ 1632. 8. SEG. *

JOH. JONSTON in *Thaumatographia*. Amstel. 1632. 12. edita etiam plantarum admiranda habet.

J. BAPTISTÆ FERRARIJ de *Florum cultura* L. IV. Rom. 1633. 4. Poeta & Orator, latinissimo & cincinnato sermone instrumentum hortense & artem educandorum florum dixit, non sine plurimis aut variis aut proletariis artificiis raras aliquas plantas ea occasione descripsit & depinxit.

ADOLPHI VORSTII *Catalogus plantarum horti Leidenfis* prodiit. an. 1633. 16. & 1658. (Trevv.) pauper adhuc, neque qualem colit ROYENIUS.

MICHAEL CAXA de LERVELA *restauracion de la abundancia antigua de Espanna y far il o prestantissimo reparo de su carestia presente*, Neapoli 1631. 4.

DAN. SENNERTUS in *physicis* etiam de plantis egit.

MART. BLOCHWITZ anglicam versionem dedit SHERLEYUS.

J. FREYTAGII de *opii natura* prodiit etiam Lips. 1635. 8.

A. VORSTII *catalogus plantarum* recusatus etiam est 1649. 16.

JOANNIS de LAET *descriptio Americae fructus* imprimis habet iconibus expressos. Prodiit apud Elzevir. an. 1633. fol.

GUIL. MARQUIS *aloë morbisfuga in sanitatis conservationem concinnata*, Antvverp. 1633. 8. *

WILLIAM LANGHAM *garden of health containing the virtues and proprieties of all kinds of simples and plants*, 1633. 4. HARL.

The herbal or general history of plants gathered by JOHAN GERARD, enlarged and amended by THOMAS JOHNSON. London. 1633. fol. Primum Opus erat versio Dodonæi facta a D. PRIEST, quam eo intermortuo sibi tribuerat ignarus Chirurgus GERARDUS. Erat autem maculosa omnino versio in qua v. gr. legeres pro auctore CÆSARIUM Archiatrum ubi de JULIO ALEXANDRINO scripserat DODONÆUS. Figuræ ex Tabernæmontano. Nonnulla tamen propria habet GERARDUS. Reformavit omnia pharmacopola, sed minime rudis vel indiligens, JOHNSONUS, addidit Lobelianas tabulas, icones, & plantas, ad aliquot centurias. Ejusdem JOHNSONI est *Mercurius Botanicus, sive descriptio itineris* anno 1634. plantarum gratia suscepti. Lond. 1634. 8. & *Mercurii Botanici pars altera, sive plantarum itineris in Walliam suscepti descriptio*. ibid. 1641. 8. edita. In primo Opusculo exstant

Post hunc habemus MORISONUM, cujus historia universalis plantarum
G g 2 conti-

stant plantæ Bathonienses & Rupis S. Vincentii prope Bristoliam. Catalogus minime pauper, etiam rariorum stirpium. Alterum an. 1639. susceptum iter, uti amplius, ita pulchrarum plantarum feracius fuit.

Ejus *Ericetum Hamstedianum*. Lond. an. 1632. 8. * & iter in agrum Cantianum, ib. 1629. 4. & Descriptionem itineris investigationis plantarum in agrum Cantianum. 1632. * Non vidi.

PETRI CASTELLI discorso dell' elettuario Rosato di Mesue nel quale si ragiona delle Rose e della scammonea. Rom. 1633. 4. *

AUGERII CLUTII de Nuce Medica & de Hemerobio. Amstel. 1634. 4. Heteroclitus paulum Auctor, RICHERII DE BELLEVAL in horto Monspeliensi aliquando vicarius, in Africam excurrit, ut hortum Monspeliensem ornaret, sed ter captivus omnibus exutus est. Duas Cocco Maldivicas, amplissimam unam, alteram parvam donatas sibi describit, & vires tribuit maximas.

JACOBI CORNUTI Canadensium plantarum historia & Enchiridion Botanicum Parisiense. Parisiis 1635. 4. Plantas a ROBINIS & aliis ex noviter inventa America Septentrionali adlatas describit & satis bene depingit. In Parisino Botanico paucae stirpes & brevissime nominatae ad suas natales sedes traduntur.

DAN. WINCKLER de Opio Tr. Lipsi 1635. 8. contra FRETTAGIUM & ex genio seculi B. RIV. *

JOH. HARTMANNI Tr. de Opio Wittemb. 1635. 8. B. RIV. *

OVIDII MONTALBANI Speculazione circa le Biade ovvero Geoscopia Cereale. Bonon. 1635. 4.

GUL. DE LA BROSSE description du JARDIN Royal. Paris. 1636. 4. Nomina absque iconibus.

PIETRO DE LA CHENA rara virtù che si cava dal Rosmarino. Rom. 1636.

PIETRO della CHENA libellum nunc, dum lego, video minime botanicum esse, sed Galli, chemici, laudes sui medicamenti prædicantis.

OVID. MONTALBANI Geoscopia Ampelite ovvero speculazione circa le viti. Bonon. 1636. 4. *

HENR. KARAIX Index plantarum indigenarum prope Lugdunum Batavorum, ibid. 1636. 4. creditur ad VORSTIUM spectare. *

PETRI CASTELLI relatio de qualitatibus frumenti cujusdam Messanæ delati. Neapol. 1637. 4. B. RIV. *

F. STEPHANI de VILLA monachi Rumillere de plantis, Burgos 1637. 4. * EJ. simplos incognitos con la medicina 1643. ibid. * ANT.

JOHN. PARKINSON Theatrum Botanicum. Londin. 1640. fol. BAUHINIANSIS & LOBELIANIS plantis (quas ex schedis posthumis coemtis collegerat) addidit ALPINI & CORNUTI novas stirpes. Cæterum ignarus compilator, in repetitiones innumeras incidit stirpis ejusdem, diversis ab Auctoribus descriptæ, & caute admodum legi debet.

OVID. MONTALBANI Keposcopia ov. speculazione degli orti. Bonon. 1636. 4.

JACOBI GREGORI hortus pharmacenticus Lutetianus. Paris. 1638. 16. *

BOYCEAU traité du jardinage selon les raisons de la nature & de l'art, Paris. 1638. fol. *

D. RHAGOR pflantz garten prodiit etiam Mogunt. 1651. 8. Describit autem pomonam, vites, olera, & denique calendarium dat hortulanorum, & agricolarum.

The exact gardiner, Lond. 1640. 4. * HARL.

SIMONIS PAULI Quadrupartitum Botanicum. Rostoch. 1639. 4. Argentorati 1667 4. & Francofurti 1708. 4. editum. Nomen habet a quatuor anni tempestatibus, secundum quas Liber distributus est. Plantas vero medicas recenset earumque vires, aliquando etiam non vulgares, tum alia miscet senili facundia.

DAN. RHAGOR, civis mei, & Præfecti Thorbergensis, Pflanz Garten. Bern. 1639. 8. 1650. &c. Cultum vini, arborum, & olerum ad clima Niviticum descripsit.

OVIDII MONTALBANI Choragonoscopia ovvero speculazione dell' interna proprietà dell' Erbe mediante gli oggetti de' sensi. Bonon. 1640. 4. *

STEPHANI de GASTARIS liquoris artificialis pro opobalsamo Roma adhibiti oppugnatio. Rom. 1640. 12. Non indocta pro aromatariis apologia.

Contra STEPHANUM P. CASTELLUS scripsit Opobalsamum examinatum. Messan. 1640. & Opobalsamum triumphans eod. anno 4. Lites nempe exortæ erant inter aromatarios Romanos

continetur binis & tribus voluminibus in folio. Tres quidem tomi sunt, fed

manos, & Manfredum & Panutium socios, qui Theriacam cum balsamo de Meccha paraverant. Pro illis causam dixit STEPHANUS de GASPARRIS, & verum esse negat, quo usi fuissent Manfredi opobalsamum, aut notas habere a veteribus designatas. Contra CASTELLUS dari utique opobalsamum verum, & notas plerasque in Manfrediano convenire adfirmat nec reprobari debere, aspero satis sermone usus. Ab eo tempore balsamum Mechanum videtur in Medicinam frequentius receptum esse.

EJUSDEM CASTELLI Hortus Messanensis 1640. 4. cum figuris areolarum.

TRIVULTII GIAQUINTII ragguaglio primo sopra il balsamo d' Arabia. Trento 1640. 4. Ad eandem litem pertinet, tum distrusione del falso ragguaglio. Costanza 1640. 4. contra priorem. *

L'ouverture du jardin Royal de Paris pour la démonstration des plantes medicinales. Paris. 1640. 12.

FRANCISCI PERLÆ de orientali balsamo in theriaca adhibito dissertatio, Rom. 1641. 12.* Pro balsamo Mascardorum.

JACOBI BONTII de Medicina Indorum. Opus primum prodiit Leidæ an. 1642. in 12. tum Parisiis an. 1646. 4. & in P. ALPINI Medicina Ægyptiorum. Deinde ejus *historia naturalis & medica India Orientalis* a GUIL. PISONE in sex libros divisa, edita est Amstelodami an. 1658. fol. In iis Libris elegantissimis tribus quidem prioribus medica historia, quarto observationes in G. ab ORTA, quinto Animalium historia, sexto plantarum, sed ex cum rudibus iconibus exstant, quas in Java Insula collegerat.

MICH. RUPERTI BESLERI Gazophylacium rerum naturalium ex regno vegetabili, animalii, & minerali. Nuremberg. 1642. fol. magn. Aliquot icones stirpium continet, Gentianam aliasque.

PEREGRINI PITTORI opobalsami censura contra CASTELLUM. Ven. 1642. 12. SEG. *

OTH. SPERLING Hortus Christianus. Hafn. 1642. 12.

Ejusdem Catalogus stirpium Dania indigenarum, quas in horto aluit an. 1645. Exstat in cista Medica BARTHOLINI & raras aliquas stirpes continet.

DANIEL BECKER nützliche haus apothek oder beschreibung des vvachholders, Königsberg 1642. 8.

J. MEURSII arborum sacrum seu de arborum, fructuum & herbarum conservatione, proprietate, usu & qualitate Lib. III. Leid. 1642. 8. Ad philologiam.

DOMINICI PANAROLI Plantarum amphitheatralium catalogus. Rom. 1643. 8. (LIND.) ejusque de necessitate Botanices praludium recusum Hanovix 1654. 4. Brevissimus ille est catalogus nominum pariter brevissimorum.

NICOLAI OELHAFII elenchus plantarum circa Dantiscum nascentium. Gedani an. 1643. 4. editus, paucas & fere vulgares plantas continet. Auctiorem esse a LAURENTIO EICHSTADIO in 8. forma editum an. 1656. 4. lego, sed nondum vidi. *

JOSEPHI DONZELLINI lettera familiare sopra l' Opobalsamo Orientale adoperato in Roma. Rom. 1643. 4. Ad eandem litem pertinet.

R. THORII judicia de tabaco, & de ejus abusu, &c. Ultrajecti an. 1644. 12. prodierunt, poetica.

R. THORII judicia de tabaco &c. poetica sunt, & ex variis collecta.

LUD. NONNII de re cibaria L. IV. Antverp. 1644. 4. Ex veteribus collegit, neque incommo- das de plantarum diætetica utilitate, neque tamen valde reconditas enarrationes habet.

JOH. VESLINGII Opobalsami veteribus cogniti vindicia, & Paranesis ejusdem ad rem herbariam. Patav. 1644. 4. In priori Opusculo eandem, quam CASTELLUS, sententiam tenet, eo firmior, quod in oriente balsamum ipsi propius innotuisset. EJUSDEM catalogus plantarum horti Patavini ejusdem anni 12. citatur a LINNÆO. *

Opobalsami Orientalis examen & sinceritas reddita a S. G. VOLCAMERO. Nuremberg. 1644. 12. Eandem causam MANFREDI defendit P. ZACCHIAS, quorum Opuscula hic collecta habentur.

sed plerumque duobus voluminibus compacti, pretiosissimum est Opus.
Sequi-

- De legitimo Alois charactere*. Pompejopoli 1644. 8. *
- PETRI RICARTI *botanotrophium sive hortus Medicus cura GEORGII WIONI descriptus*. Addita planta, quæ prope Lillam nascuntur. Lillæ 1644. 12. SEG. *
- PETRI FORMII *Tr. de l'Adianton*. Montpel. 1644. 12. *
- LOUIS FERRANT *traité du tabac en sternutatoire*, Bourges 1645. 4. *
- J. JAC. CUFFARI *i biasimi del tabacco, ovvero l'uso pernicioso di esso*, Panorm. 1645. 4. *
- In. C. HOFMANNI librum, quem diximus, animadvertit G. H. WELSCH *de agagropil.* pag. 25.
- JAC. ANT. CLAVENNÆ theologi *clavem* nunc legi, quæ index est in Lugdunensem stirpium historiam, cujus plantas secundum morbos enumerat, quibus mederi dicuntur.
- J. B. FERRARI *hesperides sive de malorum aureorum cultura & usu*. L. IV. Rom. 1646. fol. (& 1656. f. CAT. HARL.) Multa ad philologiam & ad horti culturam habet, tum magnam vim varietatum ex gente hesperidum dedit depictam, utilis in eo Auctor.
- BALDI BALDI *del vero Opobalsamo Orientale. discorso apologetico*. Rom. 1646. 4. Ad prius dictam litem spectat.
- JOH. SNAPPENDAEL *catalogus horti Amstelodamensis*. Amst. 1646. LINN. *
- C. HOFMANNI *de medicamentorum facultatibus*. L. II. Paris. 1646. 4. Cautus, incredulus, vetustatis peritissimus senex, acuto & brevi stylo virtutes plantarum descripsit. Utinam plus tribuisset experimento & Naturæ!
- LEVINI FISCHER *Methodus nova herbaria plantarum ad septem summa genera redactarum*. Brunsvic. 1646. 8. Inficetissimæ classes pro plantarum serie disponuntur, quibus subjectas supponit stirpes. Icones & nomina mala.
- HENRICI MUNTING *hortus & gazophylacium materia medica*. Groning. 1646. 12. Stirpes raræ ex spontaneis non multæ, ne Dortmannia quidem, paradoxæ plusculæ, ut *Alitaria coronaria*.
- C. STENGELII *hortensius & dea flora*, Aug. Vind. 1647. 8.
- Phytologia sive Philosophia plantarum a GUILIELMO DUVAL*. Parisiis 1647. 8. Opus posthumum, & superstitiosi hominis vulgatissima compilatio.
- JOH. BROSTERHUY *Catalogus plantarum horti Medici illustris Schola Auriaca qua Breda est*. Bredæ 1647. 12. *
- SIMONIS PAULLI *flora Danica let er Dansk Urtebog*. Hafn. 1648. 4. A quadrupartito penitus differt. Icones Lobelianas 393. officinalium stirpium, emtas a MORETTO, alias a TABERNÆMONTANO imitatas, nonnullas proprias habet cum descriptionibus.
- Catalogus plantarum horti Medici Oxoniensis*. Oxon. 1648. 8. Hortum condiderat Comes Danbi, Catalogum scripsit BOBARTUS senior. Continet plantarum 1600. nomina, computatis varietatibus & Canadenses plusculas. Idem duplo priori auctior; accedunt plantæ minimum sexaginta, quæ nullibi memorantur cura PHILIPPI STEPHANI M. D. & GUIL. BROUNEI. ib. 1658. 8. prodiit BOBARTUS uterque verus Auctor esse videtur. Plantæ adjectæ 400. Sed earum multæ omnino meræ sunt vanitates.
- JAC. ANTONII CLAVENNÆ *clavis, sive thesaurus natura de plantis*. Tarvisii 1648. fol. * (BIBL. SLUS.)
- GUILIELMI PISONYS & GEORGII MARCGRAVII *historia naturalis Brasilia*. L. VIII. Amstelod. 1648. fol. Fere toti botanici sunt argumenti. Plurimæ ibi stirpes iis temporibus lectæ, quibus Comes Mauritius in Brasilia imperavit, ibi descriptæ, & rudiuscule pictæ habentur.
- Idem Opus mutatum, & Marcgravianis multis in Pisonianam historiam transfumtis, prodiit 1658. fol. ibid.
- JOH. CHRYSOSTOMI MAGNENI *de Tabaco Exercitationes XIV*. Ticini 1648. 4. (SEG.) Amstelodami 1669. 12. Neque plantam descripsit, neque analysin suscepit, neque proprias observationes habet, sed formulas unice & medicamenta variè ex ea herba parata compilavit.

Sequitur celeberrimus RAJUS. Et in his, tamquam in pandectis, omnia, quæ hic

JOACHIMUS BURSERUS, nihil equidem de plantis ipse scripsit, sed multas misit CASPARO BAUHINO, multas etiam in hortum siccum collegit, qui post varios casus Upsaliæ nunc conservatur, triginta voluminum. Ex vita decessit 1649. postquam magnam partem Europæ stirpium legendarum causa peragraverat. Non descriptarum stirpium nomina *Upsalienfibus Aëtis* inseruit PETRUS MARTIN an. 1724. p. 487. 530. Deinde filius MARTINI ROLANDUS, præside LINNÆO, accuratius descripsit eundem in disputatione habita Upsaliæ 1745. in qua eadem plantæ cum nuperis & Linnæanis inprimis nominibus habentur.

J. C. MAGNENI de tabaco exercitationes prodierunt etiam Ticini Regii 1658. 12. EJUSDEM etiam est Liber de manna, Jen. 1658. 12. Male contendit, contra ALTOMARUM, mel utique rorem esse, & quidem certa dosi ex cera primigenia, melle primigenio, pingui halitu, nitro & sale ammoniaco compositum.

A. SEVERINI Epistola, de quibus ad CAR. AV. RHODIGINUM diximus, recusæ sunt VVolfenbuttel 1728. 4.

HENR. REGII Hortus Acad. est ichnographia & catalogus stirpium perbrevis.

CAROLI AVANTII RHODIGINI nota in J. B. FIERÆ Cœnam. Patav. 1649. 4. Scripserat sæculo XVI. ineunte FIERA de ciborum viribus medicis versiculos, quos suos fecit CASTOR DURANTES. Eos CAR. AVANTIUS notis Botanicis & Philologicis doctis satis illustravit, & figuras nonnullas addidit. Posthumum Opus edidit JACOBUS AVANTIUS frater. Accesserunt M. A. SEVERINI de lapide fungifero & de lapide fungi mappa minime inutiles Epistola quibus varia ad fungorum & tuberum historiam pertinentia continentur. Idem SEVERINUS minime incuriosus fuit stirpium. Tunæ folium in Sceleton reduxit ante RUYSCHIIUM (WORM. Mus. p. 148. 149)

HENRICI REGII Hortus Academicus. Ultraj. 1650. 8. *

CHRISTIANI MENZELII Centuria plantarum circa Gedanum. Dantisc. 1650. 4. Pulchræ stirpes appendicis loco ad OELHAFII elenchum hic recensentur.

LAUR. EICHSTETT de camphora an HIPPOCRATI & aliis priscis nota fuerit & quid de ejus ortu & natura recentiores medici prodiderint, Gedan. 1650. 4.

Mexicana FR. HERNANDEZ editio est 1615. 4. FRANCISCI XIMENEZ apostoli Indi de la naturaleza y virtudes de la arboles, plantas y animales de la nuova Esppaña en especial de la provincia de Mexico de que se aprovecha la medicina HERNANDII nempe opus versum a F. XIMENEZ.

S. HARTLIB legacy Londini recusum est 1655. 4. *

MELCHIORIS SEBIZII de alimentis. Argent. 1650. 4. Eruditum & plenissimum Opus.

Phytologia Britannica. Lond. 1650. 8. Habet locos natales plantarum indigenarum, rariorum, quæ multæ a LOBELIO PENNÆO & aliis collectæ hic recensentur. Auctor est GUILLELMUS HOW.

FRANCISCI HERNANDEZ nova plantarum, animalium & mineralium Mexicanorum historia. Rom. 1651. fol. Hoc Opus posthumum Medici Hispani diu latuerat, quando primo CÆSII principis cura, tandem etiam eo intermortuo, sero editum est. Continet plantas cum barbaricis nominibus & malis iconibus insignes multas. Deinde NARDI ANTONII RECCHI & JOH. TERENCEII notæ. JOHANNIS vero FABRI de animalibus pulcherrimæ observationes, tum de iisdem & plantis FABII COLUMNÆ notæ, & denique FREDERICI CÆSII tabula phytoscopica accesserunt principis nempe Lynceorum, qui etiam fungorum volumina collecta habebat. (JAN. PLANC. Pref. ad Phyllobas. p. XXVII.) Et ipse & FABIUS multas observationes ad characteres & classes plantarum perutiles & nuperis inventis persimiles adperserunt.

J. JAC. CHIFLET pulvis febrifugus orbis Americani ventilatus 1651. 8. *

SAM. HARTLIB legacy. Lond. 1651. 4. Commendat Anglis varia rusticæ rei compendia ex agricultura Belgica.

EJUSDEM Essay for advancement of husbandry and learning. Lond. 1651. 4. *

EJUSDEM reformed husbandman or the errors of Englisch husbandry. ib. 1651. 4. * Omnia Opera egregii, candidi & patriæ amantissimi viri, in magno pretio habentur.

PIERRE MORIN Catalogue de quelques plantes a fleur qui sont au jardin de P. M. Paris. 1651. 4. (SEG.) *

GEOR G. KIRSTENNI exercitatio phytophilologica de Colocynthide & Cocco. Stettin 1651. 4. *

hic quærimus, inveniri possunt. MORISONUS quidem habet plures plantas recensentes.

CL. SALMASII Opera omnia huc referantur, cum obierit an. 1652. Ad philologiam plantarum plurimum faciunt, ad cognitionem vix quidquam. Vide ejus de Saccharo & Manna Libellum. Parisiis an. 1663. 8. & alias.

JOANNIS CHEMNIZ Index plantarum circa Brunsvigam nascentium cum appendice iconum. Brunsvic. 1652. 4. Stirpium non contemnenda multitudo & elegantia. Icones indigenarum tres omnino.

SILAS TAYLOR common good or the improvement of commons Forests and chases by inclosure, Lond. 1652. 4. HARL.

W. BLITH the English improved improv'd or the survey of husbandry surveyd, Lond. 1652. 4. Contra HARTLIBIUM. *

AGOSTINO MANDIROLA Manuale de' Giardinieri. Vicenz. 1652. 12. * Florum, hesperidum, olerum cultum, cum variis arcanis describit. B. R.

MARTINI BERNHARDI a BERNIZ Catalogus stirpium in horto regio Warsoviensi. Dantisci 1652. 12. Recusus a SIMONE PAULI.

PETRI CASTELLI de smilace aspera botanico-physica sententia. Messan. 1652. 4. SEG. * Ad do ad eum locum illud alterum CASTELLI Opus de plantis, quod ignorat D. SEGUIER, esse omnino TOBIÆ ALDINI Librum supra citatum.

P. CASTELLUS dedit etiam catalogum plantarum Ætnearum in BARTHOLINI Epistolarum Centuria I.

J. ROYER beschreibung, &c. primum prodiit Halberstat. 1648. 4.

J. BAPT. ZANONI observationes aliqua circa plantas novas & non vulgares in Bononiensi agro nascentes. Bonon. 1652. fol. Italice SEG. *

JOHAN. ROYER beschreibung des Fürstl. Garten zu Hessen. Brunsvic. 1653. 4. Legi meretur ob plantarum in vicinia & in Bructero Monte nascentium Catalogum, quas equidem non omnes eo loco nascentes inveni. Multas elegantes plantas primus in Germania videtur invenisse. JOHANNES FRANCISCUS SEGUIER ait ejus plantas montis Bructeri & viciniae seorsim an. 1657. 4. Brunsvvici prodiisse.

SIMONIS PAULI viridaria varia. Hafniæ 1653. 12. Continetur parvo volumine Catalogus plantarum horti Hafniensis: tum Parisini a G. de la BROSSÉ editus. Warsavienses tres, hortensium duo, unus spontanearum, non satis, ut probabile est, verus. Quis enim Allium Alpinum VVarsoviæ expectet? aut Ariam majorem, aut Asclepiadem flore nigro, aut Blattariam flore albo? Porro catalogi Oxoniensis horti & Patavini, qualis erat an. 1642. & Leidensis a 1642. & 1649. & Groningensis, jam dicti: & LAUREMBERGII demum Botanotheca.

SAMUEL HARTLIB design for plenty by an universal planting of fruit trees. Lond. 1654. 4. *

Le jardinier François qui enseigne a cultiver les arbres avec la suite, Amstelod. 1654. 8. 2. vol. & 1662. 8. Paris. 1666. 8.

J. THOMASII de mandragora recusa est est Hall. 1739. 4. Philologica.

JOS. GALEANI Smilacis aspera & Sarsaparilla Causa. Panorm. 1654. (SEG.) *

MICHAELIS & BALDASSARIS CAMPI spicilegio Botanico. Luccæ 1654. 4. Fratres erant Botanici, quorum superstes editor fuit MICHAEL, docti Arabicam & Dioscorideam Botanice. Sed etiam in Alpes excurrerunt, plantas ibi repererunt varias. Finis scribentis princeps fuit, ostendere diversum esse Cinnamomum recentiorum a veterum Cinnamomo.

JOHANNIS LOESELII flora Prussica. Prima editio prodiit in Regio Monte absque iconibus an. 1654. 4. Longe melior altera, ornata 88. tabulis ære regio redemptis. ibid. an. 1703. 4. procurata est a Professore Philosophiæ JOHANNÉ GOTTSCHED, qui tamen nihil addit de suo, BREYNO teste. Plantæ paucæ, nempe 761. sed raræ plurimæ, imprimis ex muscorum, fungorum & aquatiliū grege, quarum plurimas primus descripsit & hinc depinxit.

THOMÆ PANCOVII Herbarium primum prodiit Ulmæ 1654. 4. auctum deinde a BARTHOLOMÆO ZORN Colonia ad Spream an. 1673. 4. Icones continet 1356. parvas nec optimas. Multæ sunt ab ipso retro THURNEISERO, aliæ, satis multæ, ex LOBELIO, nonnullas etiam

cēntiores , & mēthodum CÆSALPINI : BAUHINUM tamen, quod ad vires
inpri-

etiam muscorum propriæ. ZORNIUS vires medicas & Synonyma addidit . Miscentur aliquam multæ ignotæ, & proculdubio fictitiæ plantæ.

JOH. DAN. HORST *Malva arborescens lutea*. Gieß. 1654. 4. In THONERTUM proprie in-
vectiva est, cui pauca verba de Malva illa accesserunt.

J. THOMASII de *Mandragora*. Lipsi. 1655. 4.

JEAN PREVOT *Catalogue des plantes qui croissent en Bearn, Navarre & Bigorre*. Pau. 1655. 8. *

HONORATI FABRI *Pulvis peruvianus febrifugus vindicatus*. Rom. 1655. Contra Plem-
pium.

S. ANTIMI KONYGII pseudonymi.

JO. NARDII de *China China*. Bonon. 1655. SEG. *

J. THEOD. SCHENK. *historia plantarum generalis in Synopsis redacta*, Jen. 1656. 4.

W. COLES *introduction to the Knowledge of plants*, Lond. 1656. 12. Theologi exiguum com-
pendium, non optimi botanici, qui adfirmet in Anglia Rheum nasci nihilo Chinenfi de-
terius, & alias αὐραρξία patriæ suæ nimis ornet, signaturas tueatur, &c. EJ. *history of*
plants, fruits, herbs and minerals, ibid. 1657. fol. *

MICH. BOYM paucas plantas habere lego.

ROB. AUSTEN *on fruittrees*, &c. habet etiam editionem 1653. 4. HARL. & 1667. 4.

MICHAEL BOYM *flora Sinenfis flores fructusque porrigens*. Ven. 1656. fol. *

JOH. PFAUZ *descriptio Graminis medici plenior*. Ulm. 1656. 4. Brevis Libellus, neque ti-
tulo respondens, cum plantam suam parum definiat. Ampeloprasen proliferum pro appen-
dice descripsit, qua videtur Allii speciem inodoram describere.

JOHAN. TRADESCANT *Museum Tradescantianum*. Lond. 1656. 12. Præter varia alia Na-
turæ & artis Opera, continet etiam catalogum horti sui, quo etiam spontaneæ aliquæ
Anglicæ stirpes continentur. Is jam an. 1586. 8. prodiisse dicitur. (LINN.)

ROBERT AUSTEN *on fruittrees and some observations on Bacons natural history*. Lond. 1657.
1658. 4. Non malus & verax Auctor. Primo libro de inoculatione agit, & de pomaceo.
Altero multa, quæ aliena fide receperat F. BACO, merito perstringit, ut artificia varia ad
flores plenos, nucleos exosces, &c. arte & mangonio procurandos.

JOACHIMI JUNGII *Isagoge Phytoscopica recensente* JOH. VAGETIO. Hamburg. 1679. 4. Sum-
mas laudes posthumo hoc Opere meruit Auctor, anno jam 1657. extinctus. Supra fidem
in minutiis staminum, tubarum, florum, curiosus fuit, & dialecticam suam in excogi-
tandis definitionibus partim plantarum feliciter adhibuit. Multa inde in methodum rece-
pit RAJUS. Leges Linnæanis non dissimiles passim sanxit. Stamina coeuntia in Borragine,
Solano, floribus compositis vidit. c. 22. Differentias a spinis, colore, odore, sapore, fa-
cultate medica, loco natali, tempore, numero florum & fructuum accidentales esse, ne-
que sufficere ad verum discrimen observavit IDEM.

EJUSDEM *præcipua opiniones physica*. Edidit MARTINUS VOGEL. Hamburg. 1679. 4. Frag-
menta hæc sunt, in quibus varii errores epidemici refutantur, stirpes ad naturalia genera
revocantur. Suas etiam observationes addit passim JUNGIUS, multum usus foliis.

EDMUNDI CASTELLI *or. ad botanologicam S. Scripturæ partem*, Londin. 1657. 4.

The Hereford orchards a pattern for vvhole England. Lond. 1657. 8. Continet cultum arbo-
rum, & malorum genera, ad parandam Siceram apta.

OV. MONTALBANI *Bibliotheca Botanica* sub nomine JOH. BUMALDI prius edita, ut se
ipsum laudare posset Auctor. Bonon. 1657. 24. Cum SEGUIERII Opere recusa est. Vide in
MONTALBANUM MALPIGHII censuram, in *Posthum.* p. 161.

In FLACOURT *relation de Madagascar* Parisiis 1658. 4. excusæ icones stirpium multæ,
& parvæ, & malæ habentur, descriptiones vero ob raritatem stirpium, & veracitatem
Auctoris bonæ.

JOSEPHI FAULISI de *viribus Salapæ, quod non sit venenosa*, Panorm. 1658. 8. MONG.

PASCHASII SPILLIMBENI *Tr. de Balsamo*. Burgis 1658. 8. SEG. *

inprimis exscripsit. Idem verum est de RAJO, adeo ut vera gloria debeat JO-

Hh

HANNI

DIONYSII JONQUET *hortus, sive index plantarum, quas colebat an. 1658. 1659. Accessit stirpium obscurius denominatarum per C. B. explicatio.* Parisiis 1659. 4. Divitiæ horti, modo triennis fere nimix. Bauhinianas enim stirpes omnes habet, etiam, quas satis novi, nunquam exstitisse, tum alias raras Gallicas stirpes, quarum magna pars a BERARDO est. In appendice JONQUETUS ex Pinace nomina quædam Arabica, Italica, & officinalia explicat.

JOH. FRANCKENII *speculum botanicum renovatum.* Upsal. 1659. 4. Jam anno 1638. ediderat in 4. hunc catalogum Latinum, & Suecicum, stirpium vulgatorum & officinalium. Paucas rariores & Sueciæ proprias primus continet.

ROLANDI STURM *corticis China China descriptio.* Antvverpiæ 1659. 12. Sed nostra editio est 1689. Haag. 12. Cum ANTIMUS CONYGIUS pro cortice, contra eum CHIFFLETUS & MELIPPUS (PLEMPIUS) scripsissent, ROLANDUS in prima parte sua cortici faventes observationes proponit, in secunda vero theoriam subjungit, vimque antipyreticam resolutioni tribuit, practicis potius adnumerandus.

PHIL. DOUTE *diatribe de succo Cyrenaico adversus Bertinum Deuxivoye.* Parisiis 1659. 4. SEG. *

BERTINI DEUXIVOTE *Appendix de liquore Cyrenaico adversus Philippum Doute.* Parisiis 1659. 4. SEG. *

SAM. HARTLIB *compleat husbandman vvherein many secrets are laid open.* Lond. 1659. 4. SEG. *

ROBERT LOVELL *παμβοτανολογία seu a compleat herball,* Oxford. 1659. 12. 1665. 12. Auctor qui se φιλοθεολογιατρόνομον vocat, dat varia dictionaria inprimis stirpium, cum aliqua historia viribusque.

JOH. GUDRII *zuvvey tractaten von den signataren aller gevvächse,* Stuttgartard 1659. 8. *

J. THEOD. SCHENK *catal. plantarum horti Medici Jenensis earumque qua in vicinia proveniunt.* Jen. 1659. 12. B. RIV. *

OV. MONTALBANI *nova Dendranatomes delineatio.* Bonon. 1660. fol. (SEG.) *

AUG. MARCELLI *hortus plantarum Patavinus.* Patav. 1660. 8. (LINN.) *

GOTH. MOEBII *Anatome Camphora.* Jen. 1660. 4.

Catalogus plantarum circa Cantabrigiam nascentium. Cantabr. 1660. 8. Primum futuræ peritiæ in Botanicis specimen JOH. RAIL, in quo magnam satis historiæ Botanicæ, plurimam vero insectorum cognitionem demonstravit, plantas veras a dubiis, dubias a falsis separavit, exquisite minus cognitæ descripsit, salicum genus emendavit. Totum Opus in *Catalogum stirpium Anglicarum* transiit. *Appendicem* anno 1685. 8. editam non vidi.

Le GENDRE *manner of ordering fruittrees,* Lond. 1660. 8. * Gallice *la manière de cultiver les arbres fruitiers,* Paris. 16... 1676. 8. Germanice cum von ENGELN.

In DEUSINGII collectione edita 1660. 12. 1664. 12. *sen fasciculo dissertationum selectarum* exstat etiam de manna, de saccharo, de mandragora pomis pro Dudaim vulgo habitis, de mandragora mangoniis pissediefjes, de agno vegetabili.

OVIDII MONTALBANI *hortus Botanographicus.* Bonon. 1660. 8. Index est Operis majoris, quod in tribus voluminibus octavæ formæ 2000. plantas continebat. Sed id intercidisse videtur. Plantæ aliquæ monstrosæ aut raræ. De Alsine flore fugaci nugax opinio, esse hyssopum Salomonis.

THOMÆ BARTHOLINI *Medicina Danorum domestica.* Hafn. 1660. 8. Hic tangere visum, quod stirpium aliquarum septentrionalium natalia & vires medicas tradat.

Viridarium Lusitanicum GABRIELIS GRISLEY. Ulyssipon. 1660. 8. & in Belgio recusum. Mirus homo & ægre Latinus, plantas habet ad 2000, quarum plurimas nota N. D. insignivit, sed absque descriptione, ut nihil inde utile elicias nihilque certum.

G. GRISLEY *Viridarium Lusit.* recudit anno 1749. 8. Veronæ J. F. SEGUIER, cum nonnullis ex TOURNEFORTIO obscurarum plantarum declarationibus.

PHILIPPI JACOBI SACHS *Ampelographia.* Lips. 1661. 8. Multa, ut solet, compilatio, philologica & medica, & fabulosa. Botanici vix quidquam.

HERM. CORNELII *Catal. plantarum horti Amstelodamensis.* Amst. 1661. 8. *

KENNELMI DIGBY *discourse concerning the vegetation of plants.* Lond. 1661. 12. Celebris variorum arcanorum patronus.

KEN. DIGBY *discourse,* &c. recusum est Amstel. 1669. 12. 1678. 12.

STE-

HANNI BAUHINO, quod ita rem herbariam perfecerit. Sed recentiores nova quæ-

STEVENSON's twelve months or a pleasant and profitable discourse of every action proper to each particular month, Lond. 1661. 4. HARL. *

MAUR. HOFMANNUS, cujus floram ibi recensuimus, hortum ipse condidit.

J. JOACH. BECCHER plurimos errores commisit, ut ignarus rei herbariæ, multasque icones, quas ex CAMERARIO sumsisse diximus, sibi non intellectas, absque interpretatione reliquit.

GUIL. PISO in itinere Brasilico, Cliviæ 1661. 8. edito, descripsit Mandihotam, arundinem sacchariferam, &c.

HOBII van der WORM *Atriplex falsum vulgo Soutenelle primum descriptum*. Amstel. 1661. 4. Rector Gymnasii Nardensis plantam in Zeelandia natam habet pro degeneratione Atriplicis vulgaris, a maris fluctibus mutata. Vires ad scorbutum laudat. Argutula dictio.

JOH. JONHSTON *notitia regni vegetabilis*. Lipsi. 1661. 12.

GAUDENTII BRUNACLI *de China China & pulvere ad febres*. Ven. 1661. 8. SEG. *

SIMON PAULI *de abusu Theæ, & Tabaci*. Rostoch. 1661. 4. Argent. 1665. 4. Londini 1746. 8. & passim recusum cum Quadrupartito. Pro Thea perperam ex rudi foliorum similitudine habuit Gale, neque quidquam valde utile hæc satyra habet.

THOMÆ BELLUCII *Index plantarum horti Pisani*. Florent. 1662. 12. B. RIV. *

MAURICII HOFMANNI *flora Altdorfina delicia sylvestres & hortenses*. Altdorf. 1662. 4. 1667. 4. & Hortenses prius seorsim an. 1660. 4. Ad Jungermannii catalogum multa addidit, ut ex optimis floris sit, si numerum, fidem, pulchritudinem plantarum spectes. Fungorum inprimis copiam paucissimi recentiorum adtingunt. Appendices accesserunt hortensium inprimis an. 1691. & 1703. hæc. ab J. M. Hofmanno filio.

HENRY STUBBE *discourse concerning the Chocolate*. Lond. 1662. 8. *

GEORGII a TURRE *Catalogus horti Patavini novo incremento locupletior*. Patav. 1662. 12. Veslingii ab anno 1649. Successor, in horto consenuit, magis tamen in Libris, quam in natura se exercuisse videtur amator Mathematicum (PATIN.) Stirpes satis numerosæ. Nomina a C. B. Varietates plurimæ. Exemplar apud me est, multis plantis descriptis, ab ipso Auctore ditatum.

CAROLI SCHÆFFERI *delicia Botanica Hallenses*. Hall. 1662. 12. Brevissimus catalogus, sed varietates plurimæ, etiam elegantiores, & pulchræ omnino intermixtæ plantæ.

JOH. JONSTONI *historia naturalis de fructibus & arboribus*. L. X. Francof. 1662. fol. Compilatio mera. Utilis ad complendum MORISONUM, similisque fere instituti. Hujus Syntagmatis Dendrologia specimen. Lesnæ 4. absque iconibus & anno prodierat.

J. JOACHIMI BECCHER *Parnassus Medicinalis*. Ulm. 1663. fol. Est trium regnorum descriptio diætetica, medica. Ad plantarum historiam icones addidit Camerarianæ Epitomes.

IDEM posthumum codicem reliquit *Genealogia botanica plantarum 6000. ex C. BAUHINI Pinace concinnatum*.

SEB. BALDI *Anastasis corticis Peruviani contra Chisletum & Plempium*. Genuæ 1663. 4. Practicus.

SEB. BALDUM ajunt præluxisse SYDENHAMO.

JOHANNIS SIGISMUNDI ELSHOLZ *flora Marchica*. Berolin. 1663. 8. Hortenses fere habet, spontaneas paucas & vulgatiores.

J. F. HELVETII *Amphitheatrum physiognomia medicum & Xystus herbarum*. Hag. 1664. 8. *

ABR. HAGER *Aloe Chora Salitiana*. Alteburg. 1663. 4. Aloes, quæ Choræ in Thuringia floruit descriptio. *

JOH. LIPPAY *hortus Posoniensis*. an. 1664. flores & plantas hortenses habet Jesuita. *

ANTONII DEUSING *fasciculus disputationum*. Groning. 1664. 12. De Manna, Saccharo, Mandragora philologice agit.

HORTUS REGIUS PARISINUS. Parisi. 1665. fol.

ANTO-

quædam habent, & methodum aliquo modo perfectiorem; hinc & ipsi
Hh 2 magni

ANTONIUS VALLOTUS, emissis undique peritis viris, qui plantas conquirerent; horum regium fere ab interitu vindicavit, adjutus Opera FAGONII, & ita ditavit, ut catalogus sit 4000. stirpium. In lucem edidit DIONYSIUS JONQUET. Quod prodiit, tomus primus est, hesperides, pomona, Bacchique dona non sunt edita. Stirpes Europæ; Canadenses, sed varietates multæ, neque pauca nomina plantarum, quas novi existare nuspiam.

JOH. THEOD. SCHENK *Marathrologia*. Jen. 1665. 8. LINN. *

RUTGER HERMANNIDÆ *hortulus Velavicus*. Hardervic. 1665. 8. Sunt orationes de plantis. *

JOH. REA *flora*, sive de *florum cultura*. London. 1665. fol. 1676. fol. SEG. *

PHILOSOPHICÆ TRANS ACTIONES eo anno prodire inceperunt. Fieri nequit, ut omnia enumerem, quæ ad Botanicen pertinent, & quæ ad suos Auctores retulit SEGUIER. Plurimas autem plantas Indicas, itinera botanica nonnulla, & integra pene opera ibi contineri interim monuisse sufficiat. En aliqua.

Varia ad historiam vegetationis. n. 43. 44. 46. 57. 58.

LA QUINTINIE *Epistola de Melonum cultu*. n. 45.

J. EVELYN *descriptio Sembradoris*. n. 60.

De motu Succi in Arboribus. n. 68. 70. 71. 79. 90. 95.

Fungi *descriptio* LISTERI. n. 89.

Descriptio Cacao. n. 93.

Ad Vitis historiam, n. 93.

De Salibus volatilibus plantarum. n. 101.

De flore & semine Fungorum. n. 110.

De pomo ex Aurantio & Limonio in una arbore nascentibus P. NATI. n. 114.

De plantis Indicis & aliis. n. 117.

BEALE *Animadversiones in Vinetum Britannicum*. n. 124.

BEAUMONT de plantis rupestribus & earum incremento. n. 129.

BEALE *observationes ad agriculturam pertinentes*. n. 133. 134.

C. HOWARD de cultu Vini. n. 138.

PITTI *Sorbus piriformis*. n. 139.

VINTHÖRP de cultu Mayz & Malthæ. n. 142.

De Frigoris noxa in plantis. n. 165.

De Saccharo ex Acere. n. 171.

De Pluvia granifera. n. 186.

BROTHERTON de incremento arborum. n. 187.

HANS SLOANE *descriptio arboris Pimentifera Jamaicensis*. n. 192.

EJUSDEM *descriptio duarum arbuscularum coniferarum*. n. 198.

BANISTERI *Catalogus plantarum Virginiarum*. ibid.

Tuberum tena icones. n. 202.

Mali effectus Mercurialis Sylvatica. n. 203.

H. SLOANE *historia corticis Winterani*. n. 204.

RAI de cultu Mayz. n. 205.

LEEUWENHOEK de seminibus variis. n. 205. 221.

De Ulmorum Satione. n. 205.

H. SLOANE *icon & descriptio Coffeæ*. n. 208. Sed absque flore.

EVELYN *descriptio novi repidarii*. n. 212.

Phytologia Tingitana. n. 220. Auctore SPOTSWOOD.

ED. SMYTH de usu Opii apud Turcas. n. 221.

Fruetuum in Hiberniam a mari adlatorum descriptio. n. 222.

M. LISTER de Succis plantarum variarum *observationes*. n. 224.

H. SLOANE de malis effectibus Cicuta. n. 231.

J. SMITH *Catalogus plantarum in Guinea lectarum*. n. 232.

magni æstimandi sunt ; verum , ut videamus quænam fuerit planta veterum ,

- SOUTHWELL de arte conservandi fructus . n. 237.
 De Oenanthes cicutæ folio vi venenata . n. 238.
 J. NEWTON de noxia vi Glaucii . n. 242.
 T. BENT de modo faciendæ picis . n. 243.
 De rusma & alcanna . n. 243.
 HUGH. JONES animalia & plantæ Marylandicæ . n. 246.
 G. CAMELLI descriptio Amomi sive Tugus . n. 248.
 EJUSDEM de faba S. Ignatii . n. 250.
 H. SLOANE de modo propagandi speciem in quibusdam plantis Americanis . n. 251.
 J. WOODWARD experimenta de vegetatione . n. 253.
 J. PETIVER de classibus plantarum vi medica consentientibus . n. 255.
 J. HOUGHTON de Coffea . n. 256.
 J. HOTTON de Acmeilla & Faba S. Ignatii . n. 257.
 SIBBALD de plantis quibusdam Scoticis . n. 266.
 O. HOTTON de Acmeilla . n. 268.
 J. del PAPA de noxio effectu Vernicis . n. 274.
 SAM. BROWNE plantarum circa Madras repertarum catalogus cum notis PETIVERI . n. 244. 264. 267. 271. 276. 277. 282. 287.
 STRAHAN de Tabaci in Ceylonia cultu . n. 279.
 J. FLOYER de plantis dulci sapore præditis . ibid.
 JAC. CUNINGHAM de variis speciebus Theæ , agricultura Chinensi , &c. n. 280.
 J. de la PRYME de vegetatione . n. 281.
 J. PETIVER Coralliorum & plantarum marinarum Philippinarum & Cheusanensium Catalogus . n. 286.
 LEEUWENHOEK de germinatione feminis Aurantiorum . n. 287.
 WILL. OLIVIER de cortice Peruviano . n. 290.
 CAMELLI plantæ scandentes Philippinarum . n. 293. 294. 295. 296.
 A. van LEEUWENHOEK de succo flavo Chelidonii majoris . n. 295.
 EJUSDEM de cortice arborum . n. 296.
 EJUSDEM de capsula feminali polypodii . n. 297.
 J. P. BREYN plantarum in Hispania repertarum catalogus . n. 301.
 A. van LEEUWENHOEK observationes in feminibus quibusdam exoticis . n. 305.
 De cortice Peruviano . n. 312. & Coralliis rubris . n. 316.
 J. PETIVER de Styrace liquida . n. 313.
 EJUSDEM de plantis rarioribus in hortis Angliæ . n. 332. 337. 343. 344. 346.
 E. LLHWYD plantæ raræ Vvallicæ . n. 334. 337. & Cornubicæ 336.
 TENISON de cultu Phalaridis . n. 237.
 HELVETIUS de pareira brava . n. 346.
 RICH. BRADLEY de motu succi plantarum & mucore . n. 349.
 SAM. BROWNE plants about Fort S. George . n. 244. 264. 267. 271. 274. 276.
 C. NEUMANN de Camphora . n. 389.
 VAILLANT & SHERARD descriptio Ginseng . n. 354.
 DESAGULIERS de veloci vegetatione Raparum .
 PAUL DUDLEY de Saccharo acerno . n. 364.
 P. BLAIR de cognoscenda vi plantarum ex fabrica externa . ibid.
 CANE de coloris mutatione in floribus . n. 366.
 P. DUDLEY descriptio of the Poison wood Tree . n. 367.
 PATR. BLAIR de generatione plantarum . n. 369.
 A. V. LEEUWENHOEK de feminibus plantarum . n. 368.
 J. BROWN de refina corticis Elaterii .
 P. DUDLEY de syrupo ex Prunis . 374.

rum, sufficeret **FABIUS COLUMNA** & **JOHANNES BAUHINUS**.
Si

- J. DOUGLAS** Croci historia. n. 380. & 405.
TH. FAIRCHILD de motu succi in plantis. n. 384.
P. DUDLEY de plantis in nova Anglia, &c. n. 385.
BARREL de propagatione Visci. n. 397. 405.
MILLER de educandis feminibus exoticis. n. 403.
SEBÆ ad arborem Cinnamomiferam observationes. n. 405. 409. & ad Anatomen vegetabilium. n. 416.
J. DOUGLAS de Ypecacoanha. n. 410.
 De arteriis & venis foliorum. n. 414. 461.
 De Aqua Laurocerasi venenata. n. 418. 420.
GARCINI descriptio Mangostan. n. 431. Oxyoidis. n. 415.
 Contrayerva five Dorteniæ species depicta. n. 421.
H. SLOANE de noxa seminis Hyoscyami. n. 429.
C. NEUMANN de Camphora thymi. n. 431.
 De plantis in aqua educandis **TRIEWALD**. n. 418. **CURTEIS**. n. 432.
V. BACON de noxio usu Napelli. n. 432.
JAC. LOGAN de imprægnatione seminum. n. 440.
WILL. ARROT de cortice Peruviano. n. 446.
TH. STEWARD Coronopi vis in morfu canis rabidi. n. 457.
J. RUTTY aqua Laurocerasi venenata. n. 452.
MOEHRING Salicorniæ character, & Hippuridis, & Ruppia, & Illecebræ Jacobæ ejusdem descriptio n. 455.
NICHOLSON de Cochlearia. n. 456.
BAKER de planta in semine. n. 457. (est unice semen ipsum graminis tremuli cum tubis intra valvas suas).
EJUSDEM de utilitate Ribesii nigri olentis in angina. n. 459.
H. MILES de semine Filicum. n. 461.
S. C. HOLMAN de sceletis foliorum. ibid.
MILWARD de Mimosa antidoto. n. 462.
HOBSON de multiplicatione plantarum ex feminibus. n. 468.
PICKERING & WATSON de feminibus Muscorum. n. 471. 472. 473.
NEEDHAM de pulvello Liliorum. ibid.
FOTHERGILL de Manna. n. 472.
 Catalogus plantarum ex instituto **SLOANII** in horto Chelsejano cultarum habetur in n. 376. 383. 388. 395. 399. 407. 412. 417. 422. 427. 431. 436. 440. 445. 447. 452. 455. 457. 471. 472. 476.
WATSON venenati ab Hyoscyamo homines. n. 473.
PARSONS de feminibus. n. 474.
WATSON Geaster. n. 475.
MARTYN novus Fungus. n. 476.
GMELIN de Ypecacoanha. ibid.
COLLINSON de pollinis staminum mistura. n. 477.
BONNET de satis in musco feminibus.
C. ISNARD *mémoires & instructions pour le plant des Meuriers*, Paris. 1665. 8. *
R. RAPINI hortor. L. IV. Parisiis 1665. 4. (editionem enim 1661. 4. non vidi). Elegantissimus Poeta & natura, & veterum monumentis, ad pangendum carmen perinde feliciter usus est. Infinitis annis locisque recusum est, & a **JACOBO GARDINERO** Anglice versum prodiit. Londini 1706. 8.
DAN. MAJOR de planta monstrosa Gottorpiensi. Kiel 1665. 4. Circulationem succi plantarum proponit.
DOMINICI CHABRÆI stirpium icones & sciagraphia. Genevæ an. 1666. & 1667. fol. **JOHANNIS BAUHINI** Opus in compendium redegit, icones excerptit, adjecit breves descriptiones, transpositiones iconum ita non correxit, ut etiam auxerit.

Si brevi studio & paucis impensis, vires plantarum cognoscere in votis sit, tunc pretio

HYACINTHI AMBROSINI Phytologia P. I. T. I. Bonon. 1666. fol. Alter tomus, quo arbores erat descripturus Auctor, nunquam prodit. In isto equidem C. *BAUHINI* pinax, secundum alphabeti literas disiectus, exstat, cum etymologicis, tum paucae plantae rariores, & ex rudissime sculptae.

J. *SIGISMUNDI ELSHOLZ neu angelegter Gartenbau*. Berolini 1666. 4. 1672. 4. Lips. 1715. fol. &c. Liber simplex nec malus, dictio mira. Catalogi plantarum multi per olitorias classes dispositi fere vulgationum, quarum fere sola nomina habet.

HONORATI FABRI de plantis & de generatione hominis. Paris. 1666. 4. Norimb. 1677. 4. Acutulus homo, audax definire de obscuris rebus & dubiis, abstractas fere ideas & inutiles tractat.

PETRI BORELLI hortus five Armamentarium. Castris 1666. 8. Plantarum officinalium catalogus cum brevi virium medicarum memoria.

OL. RUDBEK delicia vallis Jacobae M. G. de la *GARDIE* 1666. 12.

LAUR. STRAUSS & PETERS de potu Coffi, Giesl. 1666. 4.

JOH. MICHAELIS FEHR Anchora Sacra vel Scorzonera ad normam N. C. Jen. 1666. 8. Melior reliquis sui similibus, in qua flora Svinfurtenensis habetur, & icones Scorzonerarum aut rariores aut novarum. Ceterum nimis plenus laudibus, digressionibus.

The english Vineyard vindicated by *JOHN ROSE*. Londini 1666. *

WERN. ROLFINCK Hortum medicum condidit anno 1624.

URSINI descriptio Tulipae de Alepo. Lips. 1667. 4. *

F. REDI notizie intorno alle palme. Florentiae 1666. & in Diario Veneto.

P. du TERTRE histoire générale des Antilles habitées par les François. Paris. 1667. 4. 3. vol. Supra in physica classe excitatus est, cujus secundus Tomus solus huc pertinet. In plantis medicatis & oeconomicis recentioribus Botanicis fere pro fonte fuit, ex quo hauserunt omnes.

WERNERI ROLFINCK de purgantibus vegetabilibus L. Jenae 1667. 4. Multa, ut in omnibus hujus viri scriptis, eruditio Graeca, Arabica, medicatae compositiones fusa, in parte Botanica deficit.

Prior Academia Scientiarum Parisina hoc anno coaluit, cujus monumenta collecta nuper prodierunt in X. & XI. vol. Parisiis an. 1730. recusis continetur *MARCHANTI* descriptio quorundam tumorum in Quercu natorum.

TOURNEFORTII descriptio Boleti. p. 101. 119.

EJUSDEM de quibusdam in plantis vasis.

EJUSDEM de plantarum musculis.

MARCHANTI de productione praeternaturali Fraxinellae.

HOMBERG experimenta de elevatione succi in plantis.

EJUSDEM de germinatione.

DODART descriptio Lichenis Agarici reticulati.

J. DANIEL MAJOR rei herbariae cupidus. Kiel 1667. fol. Est *JOH. KENTMANNI* opusculum, quod an. 1609. Gieslæ & an. 1629. VVittembergæ prodierat. Continet catalogum plantarum primo secundum menses & loca, tunc alterum alphabeticum vulgationum Germaniae stirpium. Adjecta versio poematis.

P. von ENGELN der uber die 12. monate verständige Gartenmeister. VVolfenbuttel 1667. 12. 1695. 8. 1734. 8. Primam editionem Belgicam non vidi. Olitor superstitiosus, ignarus, pessime Germanice redditus: ceterum enarrationem stirpium habet cum medicis viribus. Adjectus est Liber D. le *GENDRE*.

CHRISTOPHORI MERRET pinax rerum Britannicarum. Londini 1667. 8. Plantas plurimas habet, Muscos hactenus neglectos accuratius coepit recensere. Sed plurimas dubias falsasque stirpes continet.

JOH. MICHAELIS FEHR de Absinthio analecta. Lips. 1668. 8. Ex more, qui eo tempore in Germania epidemice saevit, collectanea sua de Absinthio ejusque viribus medicis

pretio nimio esse videntur MORISONUS quidem & JOHANNES BAUHINUS.

cis huc effudit, de ipsa planta unice securus, ut omnem Absinthiorum historiam vix una absolvat pagina.

ABRAHAMI COWLEI *poema de plantis*. Londini 1668. 8. Magis in peculiare singulorum stirpium laudes, quam RAPINUS, descendit, singularis acuminis poeta.

EDM. BAILLARD *Traité du tabac & . . du tabac en poudre*, Paris. 1668. 12. *

FLORENTII SCHUYL *catalogus plantarum horti Lugduno-batavi*. Leidæ 1668. 8. & 1672. 8. Sola nomina, sed adjectæ sunt spontaneæ, paludum & arenosorum vicinorum incolæ.

J. GOTTFR. OLEARII *specimen flora Hallensis, sive designatio plantarum hortuli sui*. Hal-læ 1668. 12. B. RIV. *

P. BOCCONE *manifestum Botanicum de plantis Siculis*. Catenæ 1668. fol. SEG. *

JOH. DAN. MAJOR *de aloe Americana*. Kiel. 1668. 4. Germanice.

HERMANNI GRUBE *Analysis mali citrei*. Hafn. 1668. 8. Nullius momenti.

J. van der GROEN *Nederlandzen Hovenier, den verstandigen Hovenier, &c.* Amstelod. 1668. 4. Integra domus rustica, simplicis hominis & olitorii.

ROBERTI MORISON *hortus Blesensis auctus, accessit index plantarum in horto contentarum nemini scriptarum . . . & observationes generaliores, sive Præludiorum P. prior*. Londini 1669. 8. Novas plantas promittit 260, quarum tamen non paucæ etiam nostro tempore ignotæ sunt. Hallucinationes vero J. & C. BAUHINORUM invidiose vocat, quoties ad alia genera plantas revocassent, quem ea, quæ placerent sibi. Non male tamen Characterem generum inesse fabricæ florum defendit, & methodum naturalem adumbrat. Prior editio *horti Blesensis* est. Paris. 1665. fol. curante D. BRUNYER. De eo horto habet etiam aliqua MONCONIS *Iter. Ital.* p. 6.

In MORISONUM animadverterunt RAYUS & RIVINUS.

JOH. LUD. GANS *Coralliorum historia*. Francof. 1669. 8. mihi, nam 1635. 8. editam habet SEG. *

JOHN OVINGTON *essay upon the nature and qualitys of Tea*. Londini 1669. 8. *

JOHN OVINGTON extat recusum Lond. 1705. 8. *

TIMOTHEI a ROLL. *neues blumenbüchlein*. Constantiæ 1669. 12. 1687. 12. cultum Tunicarum & Olerum, florum coronariorum tradit, &c.

BENEDETTO STELLA *il Tabacco nel quale si tratta dell' origine, istoria, cultura, qualità, &c. delle Pianta del Tabacco*. Rom. 1669. 8. (In Diario TINASSI.) *

GEORG. CHRISTOPH. PETRI *de Carduo benedicto*. Jenæ 1669. 8. Ex more sæculi & Naturæ Curiosorum.

JOH. SPERLING. *carpologia physica posthuma*, edita a G. C. KIRCHMAIERO, VVitteberg. 1669. 8. Compilatio mera, nihil habens vel utilis vel reconditi.

PETRI NYLAND *Nederlandisch Kruytboek*. Amstel. 1670. 4. & Germanice Osnabrug. 1676. 4. Dodonæum exscribit, plebeius Auctor & inutilis.

WERNERI ROLFINK *de vegetabilibus in genere* L. II. Jenæ 1670. 4. Senilis confabulatio, in qua historia hortorum Germaniæ, Italiæ, Belgii, cum Custodis & Professorum memoria continetur.

CHRIST. HEINSII *de manna nostra cum manna Israelitarum convenientia* F. Viadr. 1670. 4.

In Vol. VIII. Eph. Nat. Cur. reperitur etiam flos Musæ ex descriptione J. P. BREYNI.

J. FERD. HERTODT *Crocologia* edita est Jen. 1671. 8.

EPHEMERIDES NATURÆ CURIOSORUM ab anno 1670. edi cœperunt. In iis aliqua, etsi non plurima ad rem herbariam facientia exstant.

JAC. BREYNI icones aliquot exoticarum & indigenarum stirpium Dec. I. Ann. IV. V. Arniciæ historia Ann. IX. X.

JÆGERI *de Sementina*. Dec. II. Ann. III.

E. RUMPHII *de plantis Indicis variis*. ibid. & plurimis locis.

GRIMMII icones plantarum Japonicarum plurimæ. Dec. II. Ann. III. &c.

A. CLEYERI plantæ Indicæ aut Japonicæ Dec. II. Ann. IV. VI. VII. VIII. IX. X. Dec. III. Ann. II. III. V. VI. &c.

NUS. Compēdit ergo loco SCHROEDERUS legatur ad vires cognoscendas,
nam

G. G. LEIBNIZII de Ypecacoanha Dec. III. Ann. II.

R. JAC. CAMERARII de Sexu plantarum Dec. III. Ann. II. de Urtica & Spinachia :
Ann. V. VI.

VOLCAMERI de *Acmella* Dec. III. An. VII. VIII.

REISSELI de poline plantarum coniferarum.

SCHELHAMMERI Iter ad Mare Balthicum cum observationibus Botanicis . Dec. III.
Ann. IX. X.

ANT. VALISNERII de floribus Lenticulæ aquaticæ Cent. I. II.

LOCHNER de Pareira brava. Cent. I. II. de herba Paragai Cent. V. VI. de Orobanche,
Liquitaja, &c. Acriviola. Cent. VII. VIII.

DILLENII eximiae observationes de propagatione plantarum. Cent. V. VI.

Ibidem TOURNEFORTIUM ob neglecta stamina accusat, sexus dignitatem inculcat in II.
Epistola.

J. P. BREYNI de Ribe Arabum, &c. Cent. VII. VIII.

De Cinnamomi speciebus vol. I.

C. J. TREWII Cerei historia vol. III.

C. H. ERNDETEL catalogus plantarum circa Thermas Carolinas nascentium. vol. III.

MOEHRINGII observationes Botanicae vol. VI.

D. MITCHEL nova genera plantarum vol. VIII.

ANDREÆ KEMPE anatomica de Gran. Holm. 1671. 12. LINN. historia Abietis *.

FAUSTI NAIRONI BANESII de salutari potione Cahve. Romæ 1671. 12.

DOMINICI NAGRI virtù del Caffè, bevanda introdotta nuovamente nell' Italia. Romæ
1671. 4. (Tinassi.) Ed. II.

JOH. FERDINANDI HERTODT *Crocologia*. Ad modum N. C. scripta. Hoc anno coepe-
runt edi *Acta Hafniensia*, ex quibus nonnulla huc pertinent, ut OL. BORRICHII plurimæ
varietates stirpium, & de earum vi medica observationes. PETRI KYLLING plantæ do-
mesticæ raræ. ARNGRIMI de Alga saccharifera, plantæ aliquæ Africanæ, &c.

WENCESLAI MAXIMIL. ARDENSBACH *tartaro clypeus excipiens tartaro mastigenos* HER-
TODTII acc. diff. in ejus *crocologiam*, Prag. 1671. 8. *

OVID. MONTALBANI dell' *Issopo di Salomone*. 1671. 4. in actis Academiae Getatorum.

ABRAHAMI MUNTING *vvaare oeffening der planten*. Amstel. 1672. 4. Leeuvvaarde 1682.
4. Editio posterior non ditior est, sed meliori ordine. Fidelem esse ajunt periti aliqui in
herbarum cultu. Sed superstitiosus fuit signorum observator. Stirpium nomina mire cor-
rupit, ut mireris in Professore, & icones non paucas suspectissimas dedit.

ROBERTI MORISON *plantarum umbelliferarum distributio nova per classes affinitatis*. O-
xon. 1672. fol. Ex seminibus genera definit, icones Seminum ad 150. nitidas addit, stir-
pes breviter describit, pingit aliquas, miscet alienas, ut Pimpinellam, &c.

W. HUGHES *the American physician*, Lond. 1672. 12. fere unice de plantis agit, easque
ad propriam, ut testatur, experientiam describit.

SIMON de Molinaris, &c. potius ad medicinam & diætam pertinet. Florem tamen theæ rosæ
similem & fructum describit, & recte refutat SIMONEM PAULI, qui theam pro Gale habuerat.

ARISTOTLE *instruction ou l'art de cultiver toutes sortes de fleurs*, Paris. 1672. 12. * H.
VON OSTEN Anglice prodiit anno 1711. 8.

ROBERT SHARROK *hystory of propagation and improvent of vegetables*. Oxon. 1672. 8. *

WILLIAM HUGHES *compleat vineyard and flowergarden*. Lond. 1672. SEG. *

JACOBI BARRELIER *Planta per Hispaniam, Italiam & Galliam observata*. Ed. ANTO-
NIUS de JUSSIEU. Parisiis 1714. fol. Monachus, multis in Italiam, in Hispaniam susceptis
itineribus, lectis ubique raris plantis, consilium iniit depingendarum plantarum suarum,
quibus CLUSIANAS aliasque rariores adderet. Cum intermortuus esset labori an. 1671. post
quadraginta annos nomina Turnefortiana & ordinem addidit ANT. de JUSSIEU, non ubique,
ut ajunt periti, Auctorem adsecutus. Varietatum immensam vim habet BARRELERIUS, ut
cum cautela oporteat legere, multa tamen propria, & Gramina maxime pulcherrima.

JOHN

nam ex BAUHINO & DODONÆO collegit; huc refertur etiam MARCGRAVIUS.

I 1

S1

JOHN JOSSELEYN *new England rarities*. Londini 1672. 12. Plantas spontaneas describit. *

FRANCIS DROPE *sure guide in raising land ording fruittre*. Oxon. 1672. 8. *

J. DAV. PORTZII *vini Rhenani inprimis Bacharacensis anatomia Chymica*. Heidelberg. 1673. 12. SEG.

JOHN. RAI *topographical moral and physiological observations made in a journey, &c.* Londini 1673. 8. Simplex munditiis. Politica non tango, quæ, quod ad mores attinet, sapienter fere dicta, in forma vero Reipublicæ passim vitiosa sunt, ex festinatione necessaria in tutore morum nobilibus junioribus dato. Historiam naturalem ad usus humanos utilem, & stirpes spontaneas ubique diligenter indagavit, in Belgio, Germania, Italia, Gallia calidiori, sed maxime Genevæ immensam plantarum rariorum vim suis collegit laboribus.

HENRICH VON OSTEN *Niederlandischer Gaertner*, Germanice an. 1673. 8. & sæpius alias, & an. 1728. prodiit. In N. I. de cultu florum brevis & bonus est. N. II. Tulipas fuscæ, sed olitoria eruditione tractat. N. III. Tunicarum cultum perinde ampliter. IV. De inoculatione arborum agit. V. de Hesperidum cultu. Pleraque simpliciter satis scripsit.

JOHN ARCHER *every man his own doctor with an herbal*. Lond. 1673. obscurissimus Auctor. *

LIV. IGNATIO CONTI *il vero Pilfio overo Laserpizio nuovamente scoperto*. Venet. 1673. *

E *Lettere sopra la detta scoperta*. ibid. an. 1674. 4. *

E *Risposta a questa lettera* ibid. 1674. ed *Aggiunta sopra l'istessa scoperta* ibid. GIORN. DE LETTER. SEG. *

JOS. GALEANI *il caffè con più diligenza esaminato*. Palerm. 1674. 4. SEG.

VALENTINI ANDREÆ MOELLENBROECK *Cochlearia curiosa*. Lips. 1674. 8. & 1746. 8. Species Cochleariæ male depinxit, distinxit, farraginem congeffit formularum. Anglicetamen reddidit T. SHERLEY & edidit Londini 1677. 8.

J. STEPH. RUDOLP *de Christopomis*, Bareith 1674. nempe malis florentibus sub CHRISTI natalitia.

WILH. PITHOPOEI *vincetoxicum*, Hamburg. 1674. 8. * Germ.

G. FRANK *de soldanella*, Heidelberg. 1674. 4. *

P. BOCCONE *icones & descriptiones*, &c. prodierunt Oxon. 1674. 4.

PAULI BOCCONE *Icones & descriptiones rariorum plantarum Sicilia, Melita, Gallia & Italia*. Magni operis, quod offerebat PAULUS, primitiæ, a MORISONO editæ, cum præfatione botanici argumenti, stirpes raræ, aliquando novæ, aliæ notæ, sed cum novis nominibus. Icones parvæ rudelque.

PETRI NATI *Phytologica observatio de malo limonio citrato vulgo Bitarria*. Florent. 1674. 4. Habet etiam epistolam insertam PAULI BOCCONE. *

OBADIAH BLAGRAVE *description, and physical virtues of all trees herbs, &c.* Londini 1674. 8. *

J. G. Saintfoyne *improved*. Londini 1674. 4. *

FRIDERICH MARTENS *Spizbergische Reisebeschreibung*. Hamburg. 1675. 4. Raræ industriæ & optimi ingenii Chirurgus, omnem rem naturalem in itinere ad capiendas Balænas an. 1676. suscepto observavit, maxime equidem animalia. Stirpes paucas, omnium mortalium polo hætenus proximus, observavit similes Alpinis.

MARCELLI MALPIGHII *Anatome plantarum*. P. I. Lond. 1675. fol. P. II. an. 1679. fol. Fabricam partium plantarum diligenter & solerter microscopii ope exposuit. Sexum plantarum inter primos adsecutus est, tubas & stamina in dignitatem constituit, multarum plantarum characteres fideliter expressit, minimas aliquas depinxit.

FRANCISCI van STERREBECK *Tonneel des Campernoelien*. Antvverp. 1675. 4. 1712. (1654. 4. SEG. sed vidi id errore typographi fieri). Homo illitteratus, adjutus CLUSII posthumis Fungorum iconibus, non alibi unquam editis, & propria etiam in nemoribus Brabantiaë investigatione, plurimos omnino Fungos descripsit, depinxit. Methodum ignoravit, qui ne lamellas satis a tubulis separavit, simplex cæterum & candidus.

GIA.

Si quis velit vires omnes videre, legat DODONÆI *Opus Antverpiæ editum an-*
no

GIACOMO ZANONI *Istoria Botanica*. Bonon. 1675. fol. & multo plenius curante CAJETANO MONTIO 1742. fol. Indicas varias accepit a MATTHIA de S. JOSEPHO, qui varias & ipsi plantas misit, & in itineribus VINCENTII de S. CATHARINA descripsit, ad hortum etiam Malabaricum multum contulit. Sed Ragusinas etiam aliquas & Italicas & Helveticas demum ZANONUS pulchre depictas dedit. In posthuma editione, quæ tunc quam maxime edebatur, quando de edenda spem meam sum testatus (*Enum. Helv. Nomina scripta* 112.) expuncta est magna pars laboris, quem in adferendis aliquot veterum plantis nimium, & nimis precarium posuerat. Adjectæ sunt tabulæ propriæ plurimæ & nitidæ cum rudes sint, quas a M. de S. JOSEPHO habuerat Auctor. Elegantem se editorem gessit MONTIUS.

MICHAEL TOGNI *raccolta delle singolari qualità del Caffè*. Venet. 1675. 12. SEG. *

DOMINICI VIGNA *Animadversiones in Theophrastum*. Pisis 1675. 4. Herbas veterum ad Italica nomina refert. *

C. BARTHOLINI *Exercitationes miscellaneæ*. Leid. 1675. 8. In iis herba Fumana, Helianthemum nempe species describitur, depingitur.

J. WINSIUS *de corallis*, Jen. 1675. 4. *

COTTON *the planters manual*, Lond. 1675. 8. *

PAULI AMMANN *suppellex Botanica & Manuductio ad materiam medicam*. Lips. 1675. 8. In illa catalogus horti Lipsiensis repetitionibus onustus rædiosus, in isto observationes criticæ non certe contemnendæ continentur.

HUGH PLAT *the garden of Eden* 2. edit. Lond. 1675. 8. Domus rusticæ officia, imprimis compendia rerum & lucrosa arcana, in arte hortensi descripsit. *

J. B. *Epitome of the vvhole art of husbandry*. London. 1675. 8. Agriculturae systema. 8.

EUGENII MICHELI *Lexicon Botanicum complectens nomina, &c. Simplicium expositorum in publico apparatu*. Rom. 1675. 12. * SEG.

Mémoires pour servir a l'Histoire des Plantes. Paris. fol. magn. 1676. Auctor est DODARTUS, cujus opusculum Paris. an. 1679. 12. seorsim prodiit. Pertinet ad an alysin chemicam plantarum, a qua eo tempore cognitio virium medicarum fidelior expectabatur, nunc vero quidquam firmi obtineri posse desperatum est. Utebantur vero plurimum noviter inventa succorum cum variis liquoribus commistione. Aliqua tamen etiam ad characteres pertinent. Radiatarum, laciniatarum nova nomina tunc innotuisse observat ibid. p. 133.

Cæterum ab hac epocha an. 1670. nova incrementa res Botanica sumsit, quæ ab excessu BAUHINORUM languerat. P. HERMANNUS enim, & Auctores HORTI MALABARICI, & RAJUS, & BOCCONE, & TOURNEFORTIUS, & alii vim magnam stirpium detexerunt. Magnates imprimis in Belgio hortos suos Indicis plantis cupide instruxerunt. De methodo serio cogitatum est. Figuræ etiam multo nitidiores coeperunt parari. Icones subjectas pulcherrimas & supra fidem nitidas, dedit MARCHANTIUS, qui Hispaniam, Italianam, Germaniam, Ægyptum, Asiam, Africam jussu GASTONIS BOURBONII peragravit (SCHELHAMMER *ad introd. Conring.* p. 334) Earum aliquæ ad Gastonianas expressæ sunt. *Mémoires*, &c. p. 136.

ROBERTI PLOT *natural history of Oxfordshire*. Oxon. 1676. fol. & 1705. fol. (paulo auctius). Auctor omnis historiæ naturalis satis curiosus, maxime quidem lapidum figuratorum, & fossilium, plantas tamen ibidem breviter depinxit, & earum varietates.

WORLIDGE *treatise of cyder* Lond. 1676. 4. *system of agricultur* 1697. fol. *art of gardening*, ib. 1700. 8.

P. NATI *intorno alla natura del Pepone*, Firenze 1676. 12. *

AUG. HENR. FASCH *de myrrha* Jen. 1676. 4.

Nouveau Traité des Oeilletz & de la façon de les cultiver. Paris. 1676. 12. Cum nominibus varietatum in Tunicarum genere.

VINCENTII MENAGOTI *Postilla ad alcuni capi del Zanoni*. Padova 1676. 12. SEG. *

J. COMMELYN *Nederlandse hesperides*. Amstelod. 1676. fol. Lond. 1683. 8. Anglice. Brevis & simplex, paucorum Pomorum aureorum icones dat perpulchras, præcepta pauca, sed ab experientia nata, de hybernaculis & morbis plantarum.

H. H.

no 1664. in folio. Ibi non tantum reperitur Auctoris sententia, sed quidquid
 Ii 2 CLU-

H. H. CAUSE *Koninglyke Hovenier*. Amstelod. 1676. fol. Enumeratio brevis stirpium hortensium & spontaneorum, cum cultus compendio. Figuræ paucæ, manu D. CAUSE sculptæ.

J. CHRIST. BECMANN in *Memorandis suis Francofurtensibus*, (ad Viadr.) an. 1676. editis unam schedam habet, plenam nominibus stirpium sponte ibi nascentium.

EDME MARIOTTE *Essay Physique sur la végétation des plantes*, prodiit. Paris. 1676. 12.

J. G. MULLER *Blumen-Arzney-Kuchengarten und Baumgartenlust*. Multis annis, sed primum ni fallor Stuttgartiæ an. 1676. 12. prodierunt. Auctor V. D. M. Botanicus non valde gnarus, qui Thoram vocet Napellum cœruleum, & Anthoram ipsi foliis & floribus dicat esse quam simillimam.

MAURITII HOFMANNI *Tabula locorum & mensium*. Altorf. 1676. 4. brevissime.

J. W. Viretum Britannicum 1676. 8. Historiam Vini, Siceræ, & succorum vinosorum indigenarum Angliæ continet.

W. COOKE *manner of raising and improving forest trees*. Lond. 1676. 4. Mechanica etiam ad materiem pertinentia habet.

CASP. POSNER *disputatio de manna*, Jen. 1677. 4.

HENRICH BARSTEIN *tobaks vvunder ... und arzney mittel*, Erfurt 1677. 8. *

SHERLEY *history of the saurry grasse*, Lond. 1677. 8. ni fallor ex *MOELLENB.*

J. MAR. CIASSI *Meditationes de natura plantarum*, &c. Venet. 1677. 12. Aliqua ad fabricam subtilem. Pulpam seminis non in plantam abire, sed in duo folia seminalia, semen vero sive primordium plantarum esse signaturas quasdam, a quibus, pervadenti spiritui seminis futuri sigilla imprimantur, & habitare in germine, non in pulpa, ita dispositas particulas, ut accedente motu fingantur in radices; causam vero motus esse elasticas in radice particulas, &c.

GIOV. GIACOMO ROGGIERI *catalogo dell' erbe native del suolo Romano*. In *JOS. DONZELLI* *Theatro Pharmaceutico* editionis 1677. reperitur, brevis equidem & paucas neque raras plantas habet. Scorsim exstat 1681. 4. Venet. (*LINN.*), & Venet. 1704. 4. *SEG.* *

JOH. RAI *catalogus plantarum Angliæ & Insularum adjacentium*. Lond. 1677. 8. Ex Cantabrigiensi flora natus, sed multo auctior, tum per Auctoris itinera, tum ex collatio curiosorum labore. Accessit appendix an. 1688. 8. ex *VVallico* itinere, & fungorum muscorumque ab amicis acceptis speciebus orta. Eoque opere perpetuo aucto factæ sunt *synopses stirpium Britannicarum RAI*, quarum 1. editio, Lond. 1690. 8. aliquas icones habet, quibus destituuntur reliquæ, altera est anni 1696. 8. de tertia, quam *DILLENIUS* edidit, seorsim dicetur.

J. LUDOV. HANNEMANNI *nova methodus cognoscendi vegetabilia*. Kiel. 1677. 4. Recedit partem ad Botanicam pertinentem Introductionis *Conringianæ* ad historiam medicam: tum varia alia adversaria.

J. W. *systema horticulura*. Lond. 1677. 4. Arborum & oleorum cultum describit. *

JOH. MATTHIÆ FABRI *strychnomania*. Aug. Vind. 1679. 4. Plusculas observationes habet hominum, quos Belladonna exstinxit, aut certe multis malis affecit. Adjecta adversaria & icones multarum plantarum ex gente solanacea collatitiæ.

JACOBI BREYNI *Exoticarum & minus cognitarum stirpium Centuria I.* (quam nulla alia secuta est). Gedan. 1678. fol. Splendidum Opus quo Indicæ plantæ rariores ex Belgicis hortis, aliquæ etiam Pruthenicæ & Schvvalbacenses descriptæ, & pulchre depictæ habentur. Viginti novæ tabulæ, quas edere promittebat *BREYNIUS* *Phil. Transf.* n. 334. nondum adparuerunt.

BERNH. VERZASCHÆ *neuvollkommenes Kräuterbuch*. Basil. 1678. fol. Figuræ *Camerarianæ*, cum virtutibus.

Instruction pour le jardin potager, Paris. 1678. 12. *SEG.*

P. MORIN *Remarques sur la culture des fleurs*. Paris. 1678. 12. Poetaster, & vanus, nova tamen, certe eo tempore, aliqua habet in *Tr. de Tunicis*.

CLAUDE MOLLET *Théâtre du jardinage*. Paris. 1678. 12. Simplex & absque eruditionis adfectione cultum vulgatorum arborum & plantarum & bombycum tradit.

J. JACO-

CLUSIUS, ÆGINETA, ORIBASIUS habuerunt, invenitur in hac ultima editione

J. JACOB. WEPFER de *cicuta aquatica*. Basil. 1679. 4. Anatomicum equidem argumentum in hoc pulcherrimo Libro regnat, bonas tamen icones plantæ suæ tradit, ut non adgnitam fuisse mireris, viresque per experimenta detegit.

MATTH. TILINGII *Rhabarbarologia curiosa*. Francof. 1679. 4. Compilatio.

M. PRADÉ *histoire du Tabac*. Paris. 1679. Encomium Tabaci continet, cum medicis viribus & compositionibus hujus herbæ. *

CASTILLON *Question de Médecine*. Aix 1679. Condemnat Coffeam. *

JOH. CONRADI AXT de *arboribus coniferis*. Jen. 1679. 12. Minime male & duarum Abietum discrimen, & sylvicularum Thuringiæ modum parandæ picis describit. Cum vero inficetam historiolum de GUIDONE PATINO miscuisset, coactus a Jenensibus Medicis palinodiam cecinit. (C. PATIN. *Lyc. Patav.* p. 103.)

GIORNALE DE' LETTERATI dell' an. 1668. fino all' an. 1675. Roma per il Tinassi. Est Diarium Parisinum (J. des Sav.) & in fine ex Transactionibus aliqua accesserunt, cum additamentis Librorum Italicorum, & aliquando nonnullis observationibus, sed rarius, propriis factis a Medicis Italicis.

BENJAMINI S. HART *Αρκευθολογία*, sive *Juniperi descriptio curiosa*. Jen. 1679. 8. Inutilis, ut solent compilati Libri: formularum plurimum, descriptionem nullam habet Juniperi.

JOHN. EVELYN *Silva: an essay on earth: Pomona: and Calendarium hortense*. Lond. fol. 1679. & repetito etiam 1729. quæ editio penes me est. Postquam sylva an. 1664. & 1667. & tractatus de Teriaca an. 1676. 8. & Kalendarium an. 1664. Londini prodierant, conjunctim prodierunt, his, quos dixi, annis. Scopus Auctoris non Botanicus adeo quam œconomicus, & politicus est, & in sylva quidem Anglos, quibus nullæ sunt, ad ferendas sylvas hortatur, dicitque modum, quo ferantur optime: In Pomona vini pomacei præparationem describit. Laudat eum auctor epistolæ ad ELLIS.

EJUSDEM *french gardener*, Lond. 1691. 8. EJ. *Sylva* 1706. 8. EJ. *gardeners almanach* 1699. 8. 1706. 8.

In VERBRUGGII *land en zee Chirurgie* exstat etiam historia stirpium medicatarum Indiæ utriusque.

BARTHOLEMI PIELAT *Insula Ceylonia Thesaurus Medicus*. Amstel. 1679. 12. Ex GRIMMII, non citati, laboribus compilatum opusculum; cinisfloris & alchemistæ calamo exceptum. Præparationes varias ex Aromatibus, stirpibusque indigenis Indiæ continet.

ROBERTII MORISONI *Plantarum historia universalis Oxoniensis* Tom. II. Oxon. 1680. fol. Primus Tomus, quo arbores oportebat contineri, nunquam prodiit. Alter iste, a MORISANO editus, continet scandentes, papilionaceas, tetrapetalas siliquosas, liliaceas, farraginem variam. Descriptiones ex J. BAUHINO aliisque collegit, suas tamen miscuit, icones plurimas sculpi curavit, partim collatitias, partim suas: nomina longa & paradoxa imposuit, in critica specierum historia nihil valuit, hinc in multas incidit repetitiones: in eo commodus, quod plurimas plantas & numerosissimas icones contineat. Hortolanus cæterum, & in seminibus unice, neglecto flore, occupatus.

HENRICI MUNDII de *aere vitali, esculentis & potulentis*. Oxon. 1680. 8. Francof. 1685. In parte diætetica habet plantas edulas. Sed vulgaria fere sunt, quæ adfert.

JACOBI BREYN *Prodromus rariorum plantarum* I. Gedan. 1680. 4. maj. & *Prodromus* II. ibid. 1689. 4. junctim vero 1689. 4. & 1739. 4. Egregiæ plantæ Indiæ pleræque ex Beaumontii & aliorum Magnatum Belgarum hortis, aliquæ tamen Borussicæ.

EM. KOENIG prima editio *Regni vegetabilis*. Basil. 1680. 4.

JOH. JAC. WAGNER *historia naturalis Helvetiæ curiosa*. Tiguri 1680. 12. Arbores paulo fusius, reliquas stirpes brevissime tradidit, nomina nempe Alpinarum ex BAUHINIS collectarum, cum quibusdam novis paradoxis, nemini satis intellectis.

JAC. AUGUSTI HUNERWOLT *Anatome Pœonia*. Arnstalt. 1680. 12. Plurimus in formulis. Sed analysin etiam chemicam duasque species Pœoniæ describit.

ne DODONÆI cum Scholiis, quæ optima est. DIOSCORIDES cum annotationibus

Histoire des plantes de l'Europe & des plus usitées qui viennent d'Asie, &c. Lyon 1680. 12. 2. vol. (SEG.) 1707. & 1726. 12. Icones minutæ ex MATTHIOLO ad 860. nomina & ordo C. B. Errores potius aucti quam correcti.

Secret pour teindre la fleur d'immortelle de diverses couleurs. Paris. 1680. 12. *

A. CLEYER parvum herbarium vocabulis Sircis constans. Francof. 1680. 4. *

A. CLEYER quære, an idem sit herbarium, quod cum specimine medicina Sinica prodiit Francofurti 1672. 4. & quo 289. nomina stirpium cum medicis viribus continentur.

LANGFORD plain and full instructions to raise all sorts of fruit trees that prosper in England, Lond. 1681. 8. HARL. 1690. 8.

AMBROSII HEIGEL disputatio de opio, Altdorf. 1681. 4.

EHRENFRIED HAGEDORN Cynosbatologia. Jenæ 1681. 8. Non quidem in Botanicis laudem meruit, qui Mespilum misceat Rosis, harum nullam speciem distinguat, iconem ne pinatam quidem foliorum faciem exprimat. In spongiolis curiosior est, inque formulis.

JAC. MARTINI die fruchtbare Boriza oder das heilsame Kraut lunaria. Brig. 1681. 8. Alchemicum opusculum. *

NEHEMIÆ GREW Anatomy of plants with an idea of a philosophical history of plants, and several other lectures. Lond. 1682. fol. Auctoris studiosi, & in observando diligentissimi natural history of roots prodierat an. 1673. 8. The anatomy of plants begun. Lond. 1671. 12. & comparative anatomy of trunks. 1675. 8. &c. Hæc omnia nunc in unum collecta habentur. Præcedit Idea Philosophicæ historiæ plantarum, quæ compendium est sequentium & aliqua de modo inquirendi consilia, aliquas de analogiis, de plantarum partibus essentialibus duabus, ligno & utriculis, cogitationes habet. Deinde Anatomy of plants begun (quam eandem vertit Latine LE VASSEUR, & Parisiis an. 1679. 12. edidit & 1682. 12. cum DE DU de l'ame des plantes Libello qui ZOD. MED. GALL. Tomo IV. M. Majo insertus est, & Parisiis 1682. 12. recusum & Leidæ an. 1685. & 1691. 12. &c.) . Continet prima elementa anatomies plantarum, partium omnium, ordinis & progressionis in vegetatione, radiculae seminalis, plumæ, lorum cotyledonum, anatomen radicum, circulationem succi. III. Anatome trunci, medullæ, vasorum ligneorum, aereorum, lacteorum, lymphaticorum, medullæ, corticis. IV. Anatomen folii, floris, fructusque. Hæc pars uberior est & ditior. Ibi stamina, flosculos, semiflosculos, tubasque describit, non alienus a theoria D. MILLINGTON, qui pulverem staminum pro semine mare habuit, ut tamen ipse GREWIUS stamina pro organo excretorio partium quarundam nimis volatiliū habuerit, (ut ab eo TOURNEFORTIUS), quæ semina præterea fecundarent (p. 173.) . In seminum historia imprimis copiosus fuit, & in fructibus, nimis tamen theoriæ indulgit, qui a mechanicis figuris salium figurationem partium in plantis conatus sit explicare. Cæterum mascule se ab omni suspitione imitationis MALPIGHII vindicat, & monet II. Maji 1671. primas observationes se dedisse Societati, quum MALPIGHIANÆ advenerint 1. Novembris: sua de trunco & radicibus inter an. 1672. & 1674. lecta esse, de foliis vero, floribus & fructibus inter 1676. 1677. MALPIGHII primum tomum an. 1674. demum esse editum. Denique addo Librum GREWII primum, secundum & tertium in E. N. C. DEC. I. Ann. VIII. appendice prodiisse, vitiose & non sine querela GREWII: a NIGRISOLIO vero (p. 245.) promissam novam editionem cum suis observationibus, in lucem non venisse.

In F. BAYLE dissertationum physicarum P. II. quæ Tolosæ anno 1681. 12. prodiit, dissertatio est de forma plantarum, in qua generatio fungorum mechanica ex succo salicis in fibras densa o explicatur.

WOLF. HELM. de HOCHBERG Adeliches Landleben. Nuremb. 1682. fol. 3. vol. 1701. Omnem demum rusticam continet.

W. H. de HOCHBERG quem citavimus libellus recusum est etiam Nur. 1716. Præter agri autem, horti, nemoris, vineæ cultum, catalogum etiam plantarum medicatarum continet, & icones plusculas, sed fere ex aliis supplementum. Ad singulos Libros adjecit MARTINUS ENDTER; dictio vero ERASMI FRANCISCI est.

TIMOTHEI a ROLL Schveizerischer Botanicus, aus seinen hinterlassenen Schriften. Zug. 1682. 12. *

CHRISTIANI MENZEL Index plantarum universalis polyglottus: accessit pugillus plantarum rariorum.

nibus MATTHIOLI perfectum etiam est Opus ad vires cognoscendas. Denique Clar.

rariorum. Berolini 1682. fol. & 1696. 1715. paulo auctius nempe duabus tabulis stirpium exoticarum. Hic titulus est *Lexicon plantarum polyglotton universale*. Illo quidem Lexico parum utilitatis rei herbariæ attulit, isto magis, quo plantas raras itineris sui Italici, Tirolici, & Marchicæ Ditionis recensuit, & aliquas depinxit. Pleraque equidem ab aliis cum aliis nominibus editæ fuerunt pridem, raræ tamen sunt & pulchræ.

The natural history of Coffee, quem ea pagina citavimus librum, quære an idem *the natural history of Coffee, tea, chocolate and tobacco vvith a tract of the Elder and juniper Berries*, Lond. 1683. 4. *

LA FONTAINE *Poème sur le Quinquina*. Paris 1682. 12.

LA FONTAINE *poème*, &c. foterium est lepidissimi poetæ quem is cortex sanaverat.

FRANCISCI van STERBECK *Citricultura ofte regeeringh der uytheemsche boomen*, &c Antverp. (1682. 4. SEG.), 1712. 4. Ignarus homo super omnem fidem, qui v. gr. Herodianum dicat scripsisse de Conrado Imperatore. Hesperides ex FERRARIO sumit, arbores exoticas hinc inde compilavit.

J. SIGISMUNDI ELSHOLZ *neues Tischbuch*. Colon. Berol. 1682. 4. Omnes quidem cibos practice & œconomice considerat, primo tamen loco eos, qui ex plantis petuntur, cibos potusque.

The natural history of Caffee. Lond. 1682. 8. Compilatio. *

GEORG. WOLFGANG WEDEL de Opio, & MICHAELIS ETTMULLER de virtute Opii diaphoretica. Jenæ 1682. 4. prodierunt. Collectanea sunt ex genere practico, neque aut satis bona historia naturalis Opii, aut analysis, quæ desideria impleat, ibi traditur.

G. W. WEDEL de sale volatili plantarum. Jenæ 1682. 12. (prius edita. Francof. 1672. 12. PH. TR.). Eleganti Libello Isatidis, in Thuringia vulgo cultæ, historiam, & observationem alcali de planta stillantis, tunc novam, continet.

JEREMIAE LOSS disputatio de nuce vomica, VVittemberg. 1682. 4.

SAM. GILBERT *florist's vademecum being a compendium of vvhatsoever vvorthy notice has been exstant* Lond. 1682. 8. * HARL. alibi 1683. 8.

JOH. RAI *Methodi plantarum* prima editio Londini prodiit 1682. 8. Rudimenta imperfecta methodi, generibus per minura & externa signa laxè distinctis, ex unicis fere foliis & fructu, nulla pene floris mentione facta. In præfatione aliqua habentur, ad cotyledones, & germinationem plantæ facientia, quæ in posteriori editione desiderantur.

MICHAELIS ETTMULLER *Schröderi dilucidati Phytologia*. Exstat cum Operibus omnibus Francofurti an. 1688. porro Genevæ & Neapoli editis. Ad practicam partem pertinet, officinalium plantarum historia satis fusam, & ex alienis & ex propriis observationibus congestam tradit.

In GEORGII WHEELERI *itinere Græco*, Londini 1682. 8. edito, plusculæ icones plantarum habentur.

DEDU de l' Ame des plantes. Paris. 1682. 12. Acidum aereum fermentescens cum alcali terreo excitare semen, ut crescat & alatur, &c.

ABRAHAM MUNTING de vera herba Britannica dissertatio. Accessit Aloidarium. Amstel. 1681. Sed mea editio anni 1698. 4. est, & Auctor obiit an. 1683. Opus pene historicum. Lapatæ icones aliquæ bonæ, aliæ dubiæ fidei, ut ipsa, de qua inprimis agitur, Britannica, ut Auctoris Opere dignosci fere nequeat.

EJUSDEM *Naauvkeurige beschryving der aerdtgevvassen*. Leidæ an. 1696. fol. prodiit, cum magnificis tabulis. Nempe Opus supra recensitum (*oeffening van de planten*) revisum & auctum, tum numero plantarum, tum viribus, reliquerat moriens MUNTINGIUS. Id splendide editum est. Inde rejecta Belgica tota scriptione, solæ icones an. 1727. & alias cum synonymis a KIGGELAARIO collectis prodierunt. Fabulosæ plantæ immixtæ sunt, & in iconibus sæpe aliquid nimii & poetici inest.

JAMES SUTHERLAND *hortus Medicus Edinburgensis*. Edinb. 1683. 8. Satis & copiosus catalogus & fidelis, neque oneratus spuriiis stirpibus aut nominibus. Varietates continet & nimis paucas septentrionales aut Scotiæ indigenas.

ELIÆ

Clar. TOURNEFORTIUS egregia præstitit in Libello in 12. de Plantis cre-
scen-

ELIÆ FILLANDS *Catalogus plantarum, quæ circa Aboam in cultis & incultis inventa sunt* Auctior. Abo 1683. 8. (prius anno 1673. LINN). Plantæ vulgares, pleræque hortenses, propriæ Finniæ vix ullæ, icones ex aliis imitatæ, non bonæ.

JOH. COMMELINI *Catalogus plantarum indigenarum Hollandiæ*. Præmittitur LAMBERTI BIDLOO *diff. de re herbaria*. Amstelod. 1683. 12. In catalogo stirpes 776. & inter eas nonnullæ non descriptæ marinæ, apetalæ, aut musci.

MATTHIÆ TILINGII *lilium curiosum*. Francof. 1683. 8. est compilatio.

MATTH. TILINGIUS edidit etiam *opiologiam novam*, Francofurt. 1697. 4.

J. FRID. ORTLOB *de analogia nutritionis plantarum & animalium*, Lipsi. 1683. 4.

P. SYLV. DUFOUR *de l'usage du thé, &c.* auctius etiam recusum est Hagæ 1693. 12. adjec-
ta ST. DISDIER *méthode pour composer d'excellent chocolat*. Nonne idem *beschreibung des*
caffée, the, chocolate und tabaks? Hamburg 1684. 12.

R. J. CAMERARII *disputatio de helleboro a nobis citata*, habita est sub B. MEZGER,
& ad praxin spectat.

BERN. ALBINI *disputatio de thea* Francof. Viadr. 1684. EJ. *de tabaco*, ibid. 1695.

De la RIVIERE du MOULIN *de la culture des arbres*. Paris 1683. 4.

L'Art de tailler les arbres familiers avec un Dictionnaire des mots dont se servent les Jar-
diniers. Paris. 1688. 12. *

ROBERTI SIBBALD *Scotia illustrata*. Edimburg. 1684. fol. In Parte Botanica, sive L.
I. P. II. plantæ indigenæ, fere ex RAIIO & SUTHERLANDIO, nimis paucæ neque fere ul-
læ propriæ recensentur. Icones paucæ, rudes, observationes practicæ & æconomicæ aliquæ.
Acerba censura in SIBBALDUM est, quam PITCARNIUS sub titulo *diff. de legibus histo-*
ria naturalis edidit.

GUNTHERI CHRISTOPHORI SCHELHAMMERI *Catalogus plantarum horti Academici*.
Helmstad. 1684. 4. Etsi Botanica non fuerit inter principes Auctoris labores, habet tamen,
ut acuti erat ingenii, observationes suas non inutiles.

S. NICOLAI PECHLINI *Theophilus bibaculus*. Francof. 1684. 4. Poeticus stylus. Theam
non esse Myrtum Brabanticam contra SIMONEM PAULI demonstrat: explorat vires per
reagentia: usus medicos Theæ laudat, in ea laudanda nimius, neque monet nocere ventri-
culo aut hypochondriacis.

PAOLO BOCCONE *osservazioni naturali*. Bonon. 1684. 12. Continet, præter physica mul-
ta, catalogum plantarum in itinere ad Alpes Venetas lectarum, iconem Bupleuri in Cor-
fica nascentis, vires medicas nimias. Pleraque in Musæis suis repetiit.

GEORG. WOLFG. WEDELII *amœnitates materia medica*. Jenæ 1684. 4. Continent stirpes
officinales secundum classes virium distributas.

PAUL SYLVESTRE DU FOUR *de l'usage du Thé, Caphé, Chocolat*. Lyon. 1671. & auctius
1684. & 1688. 12. Cum in prima editione Librum Fausti Naironi versum edidisset proprio
deinde labore Librum perfecit. Vires medicas valde laudat, analysin chemicam addit ali-
quam Caffæ: de Thea & Chocolata valde jejunos.

Hunc Libellum JACOBUS SPONIUS Latine reddidit & edidit cum titulo *Tr. novi de po-*
tu Theæ, Chocolata, Caffæ. Paris. 1685. 12. cujus partem, quæ ad Caffeam pertinet JAC.
MANGETUS iterum edidit an. 1705. 4. Additæ huic editioni icones non bonæ diversarum
arboris, si fides esset, specierum.

R. J. CAMERARII *disp. de Helleboro*. Tubing. 1684. 4.

GEORGII a TURRE *Dryadum & Hamadryadum Chloridisque triumphus*. Patav. 1685. fol.
Vires stirpium ex veteribus compilat.

J. BAPTISTÆ TRIUMPHETTI *Observationes de ortu & vegetatione plantarum*. Rom. 1685.
4. Horti Romani præfectus, qui eo præsidente ita floruit, ut 6000. stirpes continere scri-
pserit BAGLIUS *Oper. p. 432*. Hoc Opusculo MALPIGHIIUM impugnatur: experimenta pro-
fert, quibus demonstrari credit, ex putrefactis plantis speciem reparari absque semine,
& absque aere semina germinare. Inde sequitur catalogus stirpium Alpinarum, quas a
fratre

ſcentibus circa Parisios. Ibi indagat vires Simplicium ex Chemia. LOBELIUS etiam com-

fratre LÆLIO, Canonico habuit, cujus in Botanicis peritia laudatur in *GIORN. de' LETTER. XXXV. Art. 14.* & tandem icones & descriptiones ſtirpium rariorum fere triginta. Earum aliquæ non ſunt niſi varietates. Iter Botanicum *TRIUMPHETTI*, in Agrum Romanum ſuſceptum, deſcribitur in *BOCCONIS Muſeo de Fiſica. p. 241.*

J. HENRICI URSINI arboretum biblicum, Norimberg. 1685. 8. & *continuationem historia plantarum biblica*, ibid. eodem anno cum iconibus. Ad philologiam pertinet.

PAUL. AMMANNUS, horti Lipſienſis bis præfectus, quem ex *MORISONO* characteres deſcripſiſſe eo loco dictum eſt, ejus methodum in longa præfatione laudat, characteres a foliis ſumptos vero rejicit. Inde 220. Canones, nempe totidem genera a ſemine conſtituta; inde exempla Canonum 1273. Nomina nempe reducta ad methodum *MORISONI* cum nonnullis ſuis obſervationibus, ut flores ſeſami, de thea S. *PAULI*.

PAULI AMMAN Character plantarum naturalis. Lipſiæ 1685. 12. quem an. 1700. Francofurti auctiorem edidit *DANIEL NEBEL*. *AMMANNUS* unice ex *MORISONO* deſcripſerat characteres, & ſecundum alphabeti ordinem diſpoſuerat plantas veterum & officinarum, ſubjectas generibus *MORISONI*. *NEBELIUS* characteres *TOURNEFORTII* & *HERMANNI* adjecit.

G. FRANCI de FRANKENAU flora Francica Argentor. 1685. 12. iterum edita 1698. 12. & Germanice verſa a *JOH. THILE* Lipſ. an. 1715. 8. (Primum autem prodierat Argentoratian. 1672. 12. *Lexici Botanici* nomine). Auxit *GEORG. FRIDERICUS GEORGII* filius. Ipſum opusculum exigui momenti & erroribus plenum eſt, ſed adjecta in editione 1698. erudita ſatis ſeptem programmata, & catalogus plantarum Heidelbergienſium.

OL. RUDBEK hortus Botanicus variis exoticis & indigenis plantis inſtructus. Upſal 1685. 8. Nomina breviffima, & ſæpe propria. Plantæ novæ aliquæ aut rariores ſed abſque ſynonymis. Cæterum idem catalogus jam prodierat Upſal. an. 1658. 12. & auctarium 1666. 12.

PETRI PETITI carmen de Thea, & *JOH. GEORG. HERRICHEN de Thea excomiis*. Lugdun. 1685. 4.

Hac collectione præterea *PETRI FRANCI* Anacreontica oda in theam, & inſcriptio *PECHLINI*, & loci ad theam ſpectantes ex *PISONE*, *BONTIO* & *TULPIO* continentur, Edidit *FRIDERICUS BENEDICTUS CARPZOV*, & iconem plantæ addidit cum fructu, ni fallor *BREYNIANAM*.

J. CHAMBERLAYNE manner of making Tea, Coffy and Chocolate. Lond. 1685. 12.*

LUD. FERD. MARSIGLI, della pozione Aſiatica Covave. Veron. 1685. 12.*. Oſtendit non eſſe Bun Avicennæ, ut crediderat *P. ALPINUS*.

MOYSE CHARAS de la Thériaque d'Andromachus. Pariſ. 1685. 8. Carmen cum commentariis non ineruditis & plantis nonnullis, tum in Languedocia, tum in M. Genevre lectis.

CORN. BONTEKOE van The, Coffy en Chocolate. Haag. 1685. 8. Hæc tertia erat editio. Vir acer, & ſuarum opinionum non ſatis æquus deſenſor. Tenuitatem ſanguinis habet pro ſummo bono, hinc theam præſcribit ad 100. 200. cyathos: & ea copia habet pro panacea, etiam calculi. Nihil recipit virium debilitantium. Botanici nihil.

DAVID ABERCROMBY nova Medicina Clavis. Lond. 1685. 8. Explicat vires plantarum a ſapore, & vires medicas adſignat, quæ amaro, dulci, acerbo, acido ſapori ſtirpium reſpondet.

ROBERTI PLOT natural history of Staffordhire. Oxon. 1686. fol. Priori etiam melior Liber, plenus obſervationum ex naturæ operibus & artis. Plura quidem de foſſilibus, de fontium origine ex mari, &c. de plantis pauca habet, eaque ad Cryptogamiam pertinent.

PETRI MAGNOL Botanicon Monſpeliense cum appendice. Montpel. 1686. 8. Egregius Liber, & inter floras unius urbis eximius, qui ſtirpium ſpecies contineat 1354. quarum pauciſſimæ ſunt ex Cryptogamia. Plurimas plantas noviter invenit in beatiffimo ſolo, aliquas etiam Africanas adjecit. Icones minus pulchræ.

PAULI AMMAN hortus Boſianus. Lipſ. 1686. 4. Raras plantas pluſculas cum deſcriptionibus continet ex ingenio *MORISONIANÆ* methodi. Hortus etiam nunc ſuper eſt.

OLAI

commendandus est in suis Operibus editis in folio. Titulus est *Stirpium observationes*
K k

OLAI RUDBEK, OLAI filii *de propagatione plantarum*. Upsal. 1686. 8. Juvenile Opus, quo Oeconomia vegetabilis continetur, inprimis ex MALPIGHIO, modus etiam inferendi & ablactandi stirpes fuse describitur.

STEPH. BLANKAART *gebruyk en misbruyk van de Thee*. Haag. 1686. 8. *

SIMON ABBES GABBEMA *Friesche lustgaarde ofte boom heester bloem en kruyt ovaarende*, Leuvvaarde 1687. 4. Plantarum non quidem descriptiones, sed philologiae & vires variae.

Cum collegio anatomico edidit J. MURALTUS *beschreibung der vornemsten kraüter*, Norimb. 1687. 8.

R. TURNER *the british physician or the nature and virtues of English plants*, Lond. 1687. 8. *

JOH. DANIEL GEYER *Dictamnologia*. Francof. 1687. 4. Fraxinellæ icon, cum nonnullis collectaneis. Artem imprimendi plantas siccas habet, sed CONRADO GESNERO jam notam, & SPIGELIO, & BOYLEO *de util. Phil. exper.* p. 540. & MONCONISIO in *Itin.* T. IV. p. 458. & aliis].

J. B. TRIUMPHETTI *syllabus plantarum horto Romano additarum*. Rom. 1687. 4. SEG. 1688. TOURN. *

PAULI HERMAN. *Catalogus horti Academici Lugduno-Batavi*. Leid. 1687. Eximium Opus, quo plures quam 100. novarum plantarum ex Africa, India Orientali adlatarum icones continentur, & descriptiones, ad rariora genera ex fructus indole relatæ.

P. HERMAN Germanus fuit, sed in Belgio vixit. *Catalogus EJUS* recusatus est Leidæ 1720. 8. sub titulo *indicis plantarum quæ in Horto Acad. L. B. aluntur*, omissio HERMANNI nomine, & adiecta historia horti ex BOERHAAVIANO indice sumpta.

JOHN FLOYER *Pharmacopæas*. P. I. Lond. 1687. 8. In ista parte fere ex solo sapore & odore plantarum vires definire conatur Auctor, indeque secundum certas harum qualitatum classes, certa etiam medicatarum virium genera eruere.

Oeffening der vrugtboonen door den H. le GENDRE vertaalt en met aantekeningen verykt door J. COMMELYN. Amstelod. 1687. 12. Primam editionem ignoro, quæ ante an. 1650. videtur prodiisse. Hanc aliquanto meliorem reddidit expertissimus COMMELYNUS. Opusculum mere practicum, hinc non inutile.

Le GENDRE hic recensendus referendus est ad annum 1660.

NIC. BLEGNY *du bon usage du Thé, du Caffé & du Chocolat*. Lyon. 1687. 12. Compiler. Eodem anno prodiit *abrégé du Traité du Caffé*. Lyon 1687. 12.

HENRICI COSMII *magna natura æconomia cum demonstratione Theæ, Coffeæ, Chocolatæ*. Francof. Lips. 1687. 12. *

OL. BROMEL *Lupulologia*. Stokh. 1687. 12.

J. BATT. SCARELLA *Lettera apologetica intorno ad una pianta anonima*. Padova 1687. 4. *

CHRISTOPHORI KNAUT *Enumeratio plantarum circa Halam nascentium*. Lips. 1687. 8. Plantæ non inelegantes, subinde tamen paradoxæ, secundum methodum MORISONI, quam in arboribus ex fructu supplevit.

R. JAC. CAMERARII *disp. de plantis vernis*. Tubing. 1687. 4.

Huc refero JAC. SINNIBALDI Professoris simplicium Romani *de plantarum metamorphosis lectionem* & aliam *de synonymis simplicium extrinsecis* quas citat P. MANDOSIUS Cent. V. n. 40.

G. F. FRANCI *de herbis circa Heidelbergam nascentibus*. Heidelb. 1687. 4.

PETRI KYLLING *viridarium Danicum*. Hafniæ 1688. 4. Rarus Liber, qui non meretur latere. Hominis fuit non valde eruditi, sed indefessi & industrii, & plures plantas continet, quam ab eo coelo speres, parum tamen dilucide designatas, quæ rariores. Varietatum vis magna. Exemplar penes me est, ab Auctore ad novam editionem præparatum cum augmento non exiguo, donatum a discipulo olim industrio D. J. R. HENRICI.

VALNAY *connoissance des Tulipes rares, Anemones, Ocillets fins, &c.* Paris. 1688. 1689. 12. Pro florum amatoribus. *

nes MATTHIÆ de LOBEL, *Antuuerpiæ anno 1576*. Ille quoad vires fidelissimus

OLAI BORRICHII *de usu plantarum indigenarum*. Hafn. 1688. 8. Non qualem ab Auctore expectes.

CHRIST. F. PAULINI *nobilis Salvia*. August. Vind. 1688. 8. Compilatio.

R. JAC. CAMERARII *disp. de Mimosa*. Tubing. 1688. 4.

S. W. *Schola Botanica*, sive *catalogus plantarum*, quas in horto Parisino demonstrat TOURNEFORTIUS. Amstelod. 1689. 12. Rudimenta methodi Tournefortianæ continet, expressa in plantis pene innumerabilibus, multis quidem perpulchris pyrenaicis, aliisque, nonnullis vero, quæ satis certo non distinctæ sunt, sed BAUHINIANÆ notarum stirpium repetitiones.

JOH. COMMELYN *Catalogus plantarum horti Medici Amstelodamensis*. Amstel. 1680. 8. & nihil mutatus 1702. 8. Non valde, pro fama, dives, cum characteribus subjectis ex RAJO.

P. PETIT *Nepenthes Homeri*. Ultraject. 1689. 8. Eruditissime defendit ad plantam pertinere hoc nomen, incertum esse ad quam speciem.

JAC. TAPPII *oratio de Tabaco*. Helmstad. 1689. 4.

PETRI MAGNOL *prodromus historiæ generalis plantarum*. Monspel. 1689. 4. Nihil habet commune cum ordine posthumi Operis, & methodus desumitur a partibus plantarum omnibus, ut naturalem quærat Auctor, imitatus partim RAJUM, partim HERMANNUM. Errores plurimi & gravissimi interveniunt, cum v. gr. Tribulum terrestrem ranunculis accenseat, Centaurium luteum Polypetalis.

PHIL. CAVALLINI *Enumeratio plantarum quæ an. 1689. in hortum redacta a P. Sapien- tia ostenduntur*. Rom. 1689. B. RV. & ejus pugillus Melitens, sive *herbarum in Ins. Melita nascentium*. ibid. Nuper a CL. BRUKMANNO in epistolarum Centur. II. recusatus est, brevissimus & absque observationibus.

GEORG. GRAU *Panacea vegetabilis calida, sive Majorana*. Jen. 1689. 12.

HENRICH HESSENS *teutscher Gaertner*. Lips. 1690. 1710. fol. (SEG.), recusatus 1740. 4. ex codice M. S. Auctoris. Hortum oleraceum, floridum & arboretum describit, neque desunt rariorum, quas vix alias descriptas reperias, plantarum monumenta. Icones malæ. Potuerat omisere descriptiones fructuum Indicorum, qui nunquam in hortis nostris convalescunt.

H. HESSENS etiam est *neue garten lust*, Lips. 1714. 4. recusa, cum secundo tomo addito, & titulo *neue unterweisung vom Blumenbau*, Lips. 1712. 4. qui alterius auctoris est. In priori illo Mechanica hortorum cultus ad ornamentum pertinens traditur, deinde arborum olerumque vulgarium cura.

DANIEL TAUVRY *traité des médicamens, & de la manière de s'en servir*. Paris 1690. 12.

R. J. CAMERARII *de cichoreo dissertationes* II. recusæ sunt Tubing. 1691. 4. EJUS etiam sunt *de scordio* 1706. *de ustilagine frumenti* 1709. *de fumaria* 1710. *de cervaria nigra & pini conis* 1712. 4. *de rubo idæo* 1721. 4. Pleræque melioris notæ sunt.

LOTHARII ZUMBACH *flora Lugduno-Batava flores, sive stirpes anno 1689. demonstratæ a PAULO HERMANNO*. Leid. 1690. 8. Vid. supra pag. 207.

JOSEPHI LANZONI *Citrologia*. Ferrariæ. 1690. 12. Ad morem Naturæ Curiosorum satis inutilis compilatio. Aliqua tamen monstra hesperidum vidit.

FRID. SCHRADER *de nova methodo botanica*, Helmst. 1690. 4.

BAPT. CODRONCHI *de baccis Orient.* editionem Jenensem citavi, veram enim editionem ignoro.

Horti HERBERTII van BEAUMONT *catalogus*. Haag. 1690. 8. Auctor est celebris hortulanus FRANCISCUS KIGGELAAR.

AUGUSTI QUIRINI RIVINI *Introductio ad rem herbariam* 1690. fol. & variis annis 12. etiam 1720.

EJUSDEM *Ordo plantarum flore monopetalo irregulari* fol. magn. 1690. Sumtu suo pictores & sculptores aluit, icones procuravit speciosas, in flore exprimendo satis fideles, ad naturam factas. Id vitii est, quod *summitates* fere solas, neque adeo habitum plantæ exprimant.

mus est, tum etiam ad pensitationem pertinet, an plantæ pro veterum plantis a
Kk 2, recen-

mant. Nomina etiam sibi propria brevia absque synonymo addidit, characteres artificiales, a solo flore sumtos, neque in spontaneis videtur satis fuisse exercitatus.

EJUSDEM Ordo plantarum quæ sunt flore irregularitetrapetalo. Ibid. 1691. Studium idem, plantæ papilionaceæ, cum paucis siliquosis tetrapetalis, & tithymalis.

OLAI RUDBEK de fundamentali plantarum notitia. Aug. Vind. 1691. 12. Est disputatio *OLAI* junioris, Ultrajecti an. 1690. 4. habita, qua præceptorem *HERMANNUM*, neque male eo tempore, præfert omnibus. Contra *RIVINUM* dixit, inprimis nomina damnavit, quæ a voce *Pseudo* incipiunt. n. 43. Ordo tamen non optimus. Carduos a *Discoideis* longissime removit.

MARCI MAPPI catalogus plantarum horti Argentinenfis. Argentin. 1691. 12. Brevior.

PAULI GOTTLIEB MANITII de statibus Zedoariæ. Dud. 1691. 12. Verbosior paulo & poetica, minime tamen inerudita Zedoariæ descriptio.

BAPT. CODRONCHI de baccis Orientalibus. Jenæ 1691. 4. SEG. *

SEUTER de nuce vomica. Leid. 1691. cum icone.

MARCI MAPPI de Thea. Argentor. 1691. 4.

THEODORI SCHOON. vvaare ontleeding der planten. Haag. 1692. 4. Inprimis equidem *Tabaci* historiam molitur, multa tamen de aliis plantis interspergit, etiam quam maxime aliena, denique in historiam modi degenerat, quo medicamenta diversarum classium operantur.

GEORG. MEISTER Ostindischer kunst und lustgaertner. Dresdæ 1692. 4. Vixit apud *CLEYERUM* decem annis, Japoniam etiam vidit, plusculas ibi plantas & arbusculas collegit, in Europam retulit. Sed vir analphabetos adeo olitorie descripsit & depinxit, quæ viderat pulcherrima, adeo barbaris usus est nominibus, adeo parum addidit observationum, ut labor omnino inutilis sit.

Nouvelle instruction pour la culture des Figuiers. 1692. 12. *

Nouveau Traité de la culture des Jardins. Paris. 1692. 12. *

FRANC. CUPANI Catalogus plantarum Sicularum noviter inventarum. Panorm. 1692. fol. *

J. F. H. der curieuse und kluge gaertner, Lips. 1692. 8.

HORTUS MALABARICUS P. I. ad XII. Amstelodami 1676. ad 1693. etsi mea editio sit 1703. Sumtus pingendis plantis & concinnandi operis præbuit, regia fere liberalitate, *HENRICUS* van *RHEEDE* tot *DRAKENSTEIN*, Indiæ Senator, Malabariæ Gubernator. Stirpium icones primas pinxit *MATTHÆUS* de *S. JOSEPHO* in *Cochin Missionarius*. Descriptiones correxit & icones *JOHANNES CASEARIUS* in eadem urbe V. D. M. Voces declaraverunt & nomina Medici indigenæ. Synonyma recepta addiderunt *JOH. COMMELYN*, *ARNOLDUS SYEN*, *WILHELMUS TEN RHYNE*, *THEODORUS* ab *ALMELOVEEN*, *FRIDERICUS RUYSCHIIUS*, & alii: Incomparabile Opus, five numerum figurarum, five novitatem, five fidem consideraveris, quæ mihi, inprimis in adornando characterē naturali, miraculo videtur proxima.

Indicem in folio 1696. & in 8. edidit *flora Malabarica* nomine *CASPARUS COMMELYN*; alphabetico ordine & adjectis synonymis.

CAROLI PLUMIER description des plantes de l'Amérique. Paris. 1693. fol. Splendido Libro icones plantarum per itinera sua observatarum, sua etiam manu factas, continet, paucarum tamen, cum posthumæ tabulæ, quas pinxerat pulcherrimas etiam nunc in Gallia fervari legam, & subinde sculpi aliquas, vix tamen juris fieri publici. Earum enim decem volumina, refutantibus typographicis, similia editis, parata habebat *PLUMERIUS*. *LISTER Journ. to Par.* p. 75. ut essent 1400. fere icones. *PH. TRANS.* n. 276. Plantas autem siccas amiserat naufragio, solasque chartas conservaverat. *LISTER* p. 73. Vir industrius cæterum, etiam in aliis artibus, qui aves etiam pulchre pinxit, sed simplex, ut ex *LABATI* itineribus adpareret. *SURIANUS* Medicus, socius itineris, scribere contra *PLUMERIUM* constituerat, & vindicare multas ab ipso ad *PLUMERIUM* missas plantas (*J. des Sav.* 1694. n. 35.) Sed ea disputatio cum Auctore intercidit.

JOHAN-

recentioribus commendatæ, sunt veræ plantæ veterum. Hoc est totum, quod spectat ad studium Botanicum.

VI-

JOHANNIS RAI Historia plantarum generalis, P. I. II. Londin. 1693. fol. (lego autem apud alios etiam 1686. 1688. prodiisse). Insigne Opus, quo *JOHANNIS BAUHINI* descriptiones in compendium redactæ continentur, & adjectæ sunt nuperæ ex cryptogamia, ex itineribus detectæ stirpes, magna prudentia & candore, cum omnes plantas sibi minus notas asterisco signet Rajus. Multas etiam ad medicas, & œconomicas utilitates ex adversariis addidit. Methodum autem post hoc Opus insigniter mutavit.

SAMUELIS DALE Pharmacologia. Londini 1693. 12. repetitio edita Londini 1737. & Leidæ. 1739. 4. quæ editiones valde auctæ sunt, & insertum suo loco habent auctarium, quod Londini an. 1705. prodierat. Melior prioribus & plenior materia medica, qua omnia simplicia ex tribus regnis in suas classes & genera distribuuntur, cum brevi descriptione. Plantas disposuit ex *RAII* præceptis. Nunc utique ex nuperrimis inventis multa accesserunt.

BAILLARD discours du Tabac & particulièrement du Tabac en poudre. Paris. 1693. Vires imprimis medicas considerat. *

G. C. SCHELHAMMER catalogus plantarum Helmstadii sponte nascentium. Helmst. 1693. 4. SEG.

MARC. MAPPI de Coffea. Argentor. 1693. 4.

CHRISTIAN JOH. HORB de febrifuga virtute chinachina, Altdorf. 1693. 4. bona disputatio.

SAMUEL SCHROER de opii natura & usu, Erfurt. 1693. 4.

J. IGN. WORP. BEINTEMA von PEIMA panacea oder das allgemeine hulfs mittel oder lob des tobaks ins teutsche aus dem holländischen übersetzt durch J. S. D. Leipz. 1691. 12.

DAN. NEBEL de novis inventis botanicis hujusæculi, Marburg. 1694. 4. oratio. *EJ. dissertatio de plantis verno tempore efflorescentibus*, Heidelberg 1706. 4. *de plantis vergente æstate efflorescentibus* 1707. 4. *de rore marino*, ibid. 1710. 4.

WONDEREN der natuur van . . . fruchten planten en kruiden door J. H. S. M. F. Haag. 1694. 4.

J. PHIL. BURCGRAF de malo sinensi aureo, Leid. 1694. 4.

JOSEPHI PITTON TOURNEFORT Elémens de Botanique ou méthode de connoître les plantes. Paris. 1694. 8. 3. vol. Brevior multo, plantis pauperior, neque adeo multo melioribus iconibus, quas habet 422. ut nihil sit, quare *Institutiones rei herbaria*, cum tabulis 473. non præferas, quæ Parisiis an. 1700. prodierunt 4. 3. vol. Vir per itinera varia in Pyrenæos montes, in Hispaniam, circa Parisios doctior, horto pulcherrimo præfectus, ex integro & pinacem scribere plantarum & methodum suscepit. Et hanc supra tetigimus. Enumeratio ditior est 4000. plantis, quam *BAUHINIANA*, quarum multæ sunt Pyrenaicæ & Hispanicæ, absque descriptione vel synonymo unice nominatæ. Hoc vero nocuit, quod *C. BAUHINI* stirpes, tamquam undique firmas, repetierit omnes, & in Opus suum transtulerit, dubias & varietates signo nullo distinxerit. Gramina & cryptogamia imperfectiores sunt. Editio Lugdunensis 1719. ditior est adjecto *Corollario* & tabulis 17. & additionibus nonnullis ad elegantem historiam Botanices, quæ præfecta est Operi cum nomine *I/agoges*. Anglice redditæ *Institutiones* prodierunt an. 1730. 2. vol. 4. & totæ etiam *KOENIGII* regno vegetabili insertæ sunt. Præter Opera *TOURNEFORTII* vulgo nota, exstat ejus epistola in *Aph. crismum* XXI. *Seß. I. Hipp. in Galer. di Minerv.* IV. p. 233. edita. Characterum icones *ROBE RGIUS* ligno exprimere & edere constituerat. Usus est duobus Sculptoribus, quorum alter eximius artifex. *TOURNEFORTIUM* contra duas Epistolas Anonymi P. C. qui epitomistam *RAII* esse scripserat, recte defendit *CHOMELIUS Journ. des Sav.* 1697. n. 20. Sed *NICERONIUS* ipsi *TOURNEFORTIO* Libellum tribuit.

JOH. RAI sylloge stirpium extra Britanniam nascentium. Londini 1694. 8. Catalogus stirpium hic redit, qui in observationibus topographicis reperitur; præterque proprias a *RAIO* extra patriam repertas stirpes, adjiciuntur plantæ *COLUMNÆ*, *CLUSII*, *BAUHINORUM*, *M. HOFMANNI* & aliorum, quæ Angliæ desunt. Adjectæ *GRISLEII* Lusitanicæ & aliquæ, perpulchræ, Genevenses *JO. SHERARDI*. Difficiles illas *CORDI*, *THALII*, *CÆSALPINI* vix attigit.

Vidimus jam omnia, quæ extra corpus humanum Medico sunt cognoscenda
Jam

OLAI BROMEL *Chloris Gothica*, five *Catalogus plantarum circa Gothoburgum*. Gothob. 1693. 8. Plantæ pauciusculæ, aliquæ tamen parum notæ: nomina Rudbeckiana, spuria multa.

J. PECHER *compleat herbal of physical plants*. Lond. 1694. 8. Ad pharmaceuticam pertinet. *

MAURITII HOFMANNI *Catalogus plantarum M. Mauritiani*. Altdorf. 1694. 4. Non inutilis, neque in tanta angustia pauper.

SAMUEL LEDEL *Centaurium minus*. Goerliz. 1694. 4. Ad morem sæculi.

EL. CAMERARIUS in *dissertationum III.*, Tubingæ 1694. 8. editarum, in tertia agit de Thea & Coffea.

RUDOLPHI JACOBI CAMERARII *de sexu plantarum Epistola*. Tubing. 1694. Elegantissimum Opusculum, eruditum, dictione ipsa amœna, neque absque experimentis propriis, per quæ constitit dejectis staminibus in Mayz, Mercuriali, Moro, aut nulla semina ad frugem pervenisse aut paucissima. Candide etiam fatetur, aliqua experimenta minus ex sententia sibi cessisse in Cannabi. In numero etiam staminum ita versatus, ut systematis Linnæani quoddam rudimentum tradat. Classes enim androgynarum, monœciarum, diœciarum constituit.

AUGUSTI QUIRINIRIVINI ad JOHANNEM RAJUM *Epistola*. Lipsiæ 1694. 4. Minime inutilis. Arbores cum plantis humilioribus oportere conjungi recte demonstrat, exemplo inconstantis in diverso solo staturæ arborum; fatetur numerum segmentorum, in quæ flos dividitur, non separare genera, obsequens adgnitæ naturæ voci. Contra naturales classes aliqua objicit.

SAMUEL MULLER *Vade mecum Botanicum*. Francof. Lips. 1698. 8. Rudes icones officialium cum virium compilatione.

GUNTHERI CHRISTOPHORI SCHELHAMMERI *Epistola ad RAJUM*. Hamburg. 1695. 4. Vacua observationibus, & inutiliter curiosa in distinctionibus arboris, fruticis, herbæ.

PETRI POMET *histoire générale des Drogues*. Paris. 1694. fol. & recusa auctius 1735. 4. Auctor non quidem eruditus, & Pharmacopola, neque ubique fideles dedit plantarum icones, aliquas tamen bonas, notasque legitimæ mercis, & loca natalia.

F. HOFMANN *de infuso Veronica*. 1694. Halæ. Disp.

PAULUS HERMANNUS hoc hanno obiit. Quare huc refero posthuma ejus Opera. Primum *Paradisus est Batavus*, cujus prodromus cum *Schola Parisina* prodierat. Paradisum a morte Auctoris edidit W. SHERARD. Leidæ 1698. 4. pulcherrimam nempe collectionem plantarum rariorum cum elegantissimis iconibus.

Deinde prodiit *Museum Zeylanicum*, five *Catalogus plantarum in Zeylana sponte nascentium*. Leidæ 1717. editore incerto. Prima pars hujus Opusculi continet indicem horti ficci HERMANNIANI, in cujus tribus voluminibus in folio plantæ ab ipso Paulo ab an. 1670. ad 1677. lectæ continentur, nominibus unice designatæ indigenis, cum Latinis nominibus & brevissima descriptione. Hæ eadem plantæ cum iconum volumine in LINNÆI manus nuper inciderunt, qui easdem, characteribus inspectis, collatis aliis Auctoribus, in genera & species reductas edidit *flora Zeylanica* nomine, editæ Stokholmia 1747. 4. Reliquæ plantæ Musei a p. 39 ad finem perierunt omnino.

Deinde *catalogus plantarum Capitis Bonæ Spei PAULI HERMANNI* exstat cum thesauro Zeylanico BURMANNI, & plantæ, quas ficas COMMELINO miserat HERMANNUS, cum ad BURMANNUM pervenissent, insertæ sunt eidem Operi.

Denique ex prælectionibus HERMANNI materiam medicam conscripserunt discipuli, quæ an. 1710. edita est Argentorati. Acerbam in hoc Opus censuram vide apud NEUMANNUM *Oper. omn.* 1044.

JACOBI PETITVER *Musei sui Centurias X.* edidit ab an. 1695. ad 1703. Eo mille rariores species ex Animalium & Vegetabilium classe continentur, & inter istas tum Musei, tum exoticæ plantæ non paucæ, undique magno labore collectæ, sed sola nomina, cum paucissimis iconibus.

PETRI HOTTEN *de fatis rei herbaria Oratio*. Leid. 1695. 4. Historias inprimis breves habet hortorum Botanicorum.

Jam vero sequitur aliud consilium, in quo corpus humanum pertractabitur :

M. MAPPI de Chocolata. Argent. 1695. 4.

Instruction du plantage & des propriétés des muriers & du gouvernement des vers à Soye ; Lyon. 1695. 8. *

MICH. BERNH. VALENTIN de china china, Gieß. 1695. 4. de hypecacoanha, ibid. 1698. 4.

J. HARDR. SLEVOGT de nuce methel AVICENNÆ, Jenæ 1695. 4. esse nempe modernorum Daturam. De acmella zeylanica remedio fluoris albi 1703. de balsamo vero 1705. 4. de urtica 1707. 4. (bona disputatio) de lino sylvestri cathartico Anglorum 1715. de ruta 1715. de opobalsamo 1717. 4. de momordica 1719. programma de bandena Ceylanensium 1719. 4. de gentiana 1720. 4.

PETRI WOLFART de china china, Gieß. 1695. 4.

La culture des fleurs & arbrisseaux à fleurs. Bourg en Bresse. 1695. 12. *

RUDOLPH EYSSON de arboribus glandiferis. Groning. 1695. 12. SEG. *

R. J. CAMERARII de frumenti semente. Diff. Tubing. 1695.

LEONHARDI PLUKNET *Almagestum Botanicum*, sive *Phytographia Pluknetiana onomasticon* Londini 1696. 4. cum iconum tabulis 250. fol. Maximum laborem posuit Auctor, ut ex omni orbis ambitu quam plurima stirpium specimina sicca colligeret, collecta sculperet. Plures ergo stirpium dedit figuras proprias quam ullus ante eum Botanicus, sed parvæ sunt, ad ramulos factæ, & ad ficas plantas, neglecto passim charactere. Indicas autem habet, & raras Anglicas, & Helveticas. Finxisse aliquas aut ad ingenium reformasse vide apud H. SLOANE præf. ad vol. 2. *Itin. Jamaic. In Phil. etiam Trans.* fuse in PLUKNETIUM animadvertitur n. 264. multiplicasse nempe species, & ne proprias quidem plantas satis cognititas habuisse.

ROBERTI MORISON *almagestum Botanicum*, sive *Onomasticum phytographia Pluknetiana*. Oxon. 1696. fol. habet SEGUIER, sed eo tempore MAURISONIUS dudum mortem obiebat.

THEODORI ZWINGERI *Neuvollkommenes Kraüterbuch*, sive *Theatrum Botanicum*. Basil. 1696. fol. Ediderat an. 1678. BERNARDUS VERZASCHA cum eodem nomine icones epitomes CAMERARII, adjectis historicis viriumque encomiis. Hoc Opus auxit ZWINGERUS speciebus ex C. BAUHINO desumptis, & virium ad novam theoriam reformata enarratione, & copia majori. Paucas Icones addidit, sed nuper an. 1745. filius FRIDERICUS ZWINGERUS denuo auxit Opus paternum, & minime inelegantes, etsi ligno insculptas icones addidit exoticarum fere ex horto Carlsruhensi plantarum.

G. W. LEIBNITZ de *Antidysenterico novo*. Hannover. 1696. 8. Ad primam famam novæ Ypecacoanhæ scriptum.

SAM. SCHROEER *libera in naturam Opii inquisitio*. Lips. 1696. 8. Ex acido-volatilibus particulis ejus vires exponit.

SAM. SCHROEER *libera in naturam opii inquisitio*, videtur idem libellus esse, qui prius citatus fuit.

R. DAHURON *nouveau traité de la taille des arbres fruitiers* prius prodiit Cell. 1692. 8. deinde recusus est Liege 1698. 8. quæ mea editio est.

JOH. de la QUINTINIE *instruction*, &c. recusus existat 1730. 2. vol. 4. Anglice vero versus ab EVELYNO prodiit Londin. 1697. 4. cum titulo *complete gardener*; Germanice *gründliche anleitung zum gartenbau*, Hamburg 1727. tractatus vero de melonibus, Lips. 1712. 4.

Traité des drogues qui ont rapport à la médecine, Paris. 1697. 8. An forte LFMERYI dictionarium.

G. W. WEDEL de camphora, Jen. 1697. 4. & numerosæ disputationes de jalapa 1678. de camphora 1694. de aro 1701. de terebinthina 1701. de musco terrestri clavato 1702. de maro 1703. de salvia 1703. de ypecacoanha Germanica & Americana 1705. de cubebis 1705. cinnamomo 1707. serpentaria virginiana 1710. contrayerva 1712. plantagine 1712. centauro minori 1713. sabina 1713. cuscuta 1715. hyoscyamo 1715. de hyperico 1716. glycyrrhiza 1717. de viola maritima purpurea 1717. 4. de allio 1718. colchico malo & veneno 1718. sambuco 1720. polypodio 1721. ETJUS etiam numerosa sunt ad rem herbariam programmata de amello VIRGILII 1688.

tetra.

tetragono HIPPOCRATIS 1688. *herbis germ.* OVID. 1689. *nepenthe* HOMERI 1692. *cirsio* DIOSCORIDIS 1700. *pane dyrrhachino* CÆSARIS 1700. *bulbo veterum* 1701. *thyso* HOMERI, *lignis thymis* 1707. *rhabarbari genere*, *differentia*, *virtute* 1708. 4. *thesio* THEOPHRASTI 1708. *oenanthe* DIOSCORIDIS 1710. *lilio convallium* SALOMONIS 1716. &c. quæ fere in *Exercitationibus philologicis* recusa exstant.

GEORG. CASP. KIRCHMAYER *de arte propagandi vites*, VVittemberg 1697. 4.

FRANCISCI CUPANI *Hortus Catholicus Principis Catholici*, &c. Neapoli. 1696. 4. cum *Supplemento primo*. Alterum vero *Supplementum* Panormi prodiit an. 1697. Continet plantas Siculas, numerosas certe, & pulchras nominibus sæpe novis & perplexis, quibus varietates non raro significantur additis synonymis idiomate Siculo. *Pamphyton* Auctoris *Siculum* quod in præfatione promisit CUPANUS, prodiisse non videtur: observante etiam FRANCISCO SEGUIER. De eo lege GIORN. de LETT. vol. XXVIII. p. 398. & XXIX. ubi septingentæ tabulæ numerantur. CUPANUS 600. fecerat.

HANS SLOANE *Catalogus plantarum quæ in Ins. Jamaica sponte proveniunt vel vulgo colluntur*, cum aliis quæ in Madera, Barbados, Nevvis & S. Christophor. nascuntur. Lond. 1696. 8. Nomenclator splendidi Operis, & quo alibi synonyma, ex propriis Auctoris laboribus nata, numerosissima. Multæ Europææ intermiscuntur.

A. Q. RIVINI *Epistola de methodo Botanica* & J. RAII *responsio*. Londini 1696. 8. exstat cum *synopses* editione II. Ad RIVINI epistolam supra memoratam, fuse & erudite responderet J. RAJUS, & defendit, a nulla plantæ parte sola characteres desumi posse. Videas tamen ægrius paulo tuentem se contra TOURNEFORTIUM, neque forte satis gnarum fabricæ florum.

RENE' DAHURON *nouveau Traité de la taille des arbres fruitiers*. Paris. 1696. 12. sæpe in Germania, nuperque an. 1743. recusus, cum titulo *vollständiges gartenbuch*. Discipulus Domini de la QUINTINIE in insitionis inprimis artificio aliquid potuisse videtur. Cæterum plantarum nomina barbara habet, neque ad Botanicos usus utilis.

JOSEPHI PITTON TOURNEFORT *de optima methodo instituenda in re herbaria Epistola*, in qua respondetur RAJO de variis plantarum methodis. Paris. 1697. 8. Increpat RAJUM nimis laxis usum, a foliis, coloribus, saporibus sumtis characteribus. Demonstrat, se minime contemnere habitum, quem tamen non nimis oporteat urgere, exemplo Ranunculorum, Geraniorum, quibus essentialis character idem sit cum diversissimo habitu. Ergo partem aliquam plantæ seligi oportere, quæ dux viæ sit tironibus, eosque ad classes & genera quasi manu ducat. Fabricam numero petalorum præferri oportere, Sedi exemplo demonstrat Caryophyllatæ. Docta Epistola, & principe digna Botanicorum.

JOH. COMMELYN & CASP. fil. *Horti Medici Amstelodamensis rariorum plantarum descriptio & icones*. Amstelod. fol. vol. I. an. 1697. vol. II. an. 1701. Ducentæ & viginti plantæ Indicæ, quarum multæ non descriptæ, hic splendide pinguntur.

JOHANNIS de la QUINTINIE primarii Hortulani Regis Ludovici XIV. *Instruction pour les Jardins fruitiers & potagers*. Variis annis editus est: auctior cultu florum Paris. 1690. & 1695. 2. vol. 4. & iterum cultu Melonum addito Amstelodami 1697. 4. 2. vol. Expertissimus & elegantissimus, uti notum est, hortorum cultor fuit. In arte ferendi & colendi arbores pomiferas inprimis excelluit, & in ea classicus est Auctor.

SILVII BOCCONE (priusquam in cœnobium se abdiderat PAULI) *Museo di Pianta rare*. Ven. 1697. 4. Multa quidem habet a D. BARRELIER, a CUPANO (*pref. ad hort. Cathol.*) ab aliis, neque icones florum ubique sunt, quales mavelles, in characteribus inprimis: sed plurimas tamen & pulcherrimas Alpinas & Italicas plantas invenit, aut depinxit primus, & descripsit quidem breviter. Defenderunt ejus famam contra Gallos Auctores Diarii GIORNALE de' LETTERATI vol. XXIV. p. 214. In viribus medicatis superstitiosus est.

DAVIDIS ABERCROMBY *clavis medicina*, sive *ars explorandi plantas* cum eo Museo recusa est.

EJUSDEM BOCCONE *Museo di Fisica*. Venet. 1697. 4. Stirpes hic non plurimas describit, & satis ruditer depingit. Sunt tamen ex cryptogamia, quibus carerenolis, tumiis, quæ de Coralliorum lacte habet.

PETRI MAGNOL *Hortus Regius Monspelienfis*. Monspel. 1697. 8. Hic TOURNEFORTII methodum & nomina recepit, ordinem tamen alphabeticum servavit. Plantas pulchras habet, exoticas & Alpinas, & nitidas icones.

JOH. ANDR. STISSER *Botanica curiosa*. Helmstad. 1697. 4. Est Catalogus stirpium quarundam rariorum, quarum cultum præcipit. Icones addidit ex HERMANNO, aliisque.

In W. DAMPIERI *itineribus* Londini 1697. 8. editis aliquæ stirpium novarum Guineæ novæ icones continentur.

MATTH. TILING *Opiologia nova*. Francof. 1697. 4. Compiler.

CHRISTIAN LUD. WELSCH *basis Botanica, sive brevis ad rem herbariam manu ductio*. Lipsiæ 1697. 12. Inutilis Libellus ex MONTINGII Catalogo horti fere descriptus, additis, quibus carere possit, maxime nominum repetitionibus. Dat vero tabulas RIVINIANAS pro flore, & HERMANNIANAS pro fructu.

VIRGILII FALUGII *Prosopopœia Botanica, sive Nomenclator Botanicus ad methodum A. Q. RIVINI*. Florent. 1697. 12. 1699. 12. Poema, quo secundum Rivini methodum tres ab eo descriptæ classes recensentur.

VIRG. FALUGII, quod citavimus poema, mire rude est & ingratum ex meris epigrammatibus compositum. Novam editionem paravit LAURENTIUS PATAROL, qui botanicen amavit.

HUNAULD *dissertation physique, &c.* multa chemica, etiam physiologica admista habet, ad TACHENII mentem, cum analysi & compositis ex salvia medicamentis.

J. P. TOURNEFORT *histoire des plantes qui naissent autour de Paris*. Parisiis 1698. 12. Elegantissimus Liber, quo majorem, quam in magno Opere, demonstravit peritiam stirpium, & Auctorum cognitionem criticam. Icones, descriptiones, conjunctiones sapienter trutinavit, descripsit eximie, etiam multas, quas in *Institutionibus* omisit. Adjecit analyticos compendium ex Academicorum experimentis decerptum. An. 1725. a BERNARDO de JUSSIEU paulo auctior, duobus voluminibus editus est: & an. 1732. a D. MARTIN Anglice recusus Londini 8. 2. vol. cum additamentis variis.

NICOLAI LEMERY *Traité universel des Drogues simples*. Parisiis 1698. 4. 1714. Roterod. 1715. 4. Parisiis 1733. 4. auctus a BERNHARDO DE JUSSIEU. Stirpium, quæ ullo modo medicinam contingunt, descriptiones fusiores, virium enumerationes breves, icones malæ.

STEPH. BLANCARD *Herbarius Belgicus*. Amst. 1698. 8. *

HUNAULD *Dissertation physique sur les propriétés de la Sauge*. Parisiis 1695. 12. *

ROBERT. MORISON *historia generalis plantarum* Tomus III. Hunc edidit JACOBUS BOBART junior Oxonii an. 1699. Priori tomo facile præstat, plurimas enim stirpes habet nuperius inventas, & inprimis Graminum numerosas & pulchras icones, Muscorum etiam depictorum primus aliquam ubertatem.

A. Q. RIVINI *Ordo plantarum quæ sunt flore pentapetalo irregulari*. Lipsi. 1699. fol. maj. Umbelliferarum pulchræ icones, minus bona Geraniorum dispositio, Pirolarum confusissima. Plantarum *Flore hexapetalo* aliqua exemplaria, sed perpauca prodierunt, & inter inedita referuntur cum supplemento tabb. 112. in præf. ad Cat. Bibl. Riviniana. De conatibus viri in publica commoda liberalissimi legatur CL. HEBENSTREITUS de *continuada Rivinorum industria*. Videas ibi unice voluisse stirpes flore irregulari edere RIVINUM: exstare plurimas adhuc alias vel in posterioribus tabulis insculptas icones, vel ineditas, quarum, & Orchidum inprimis, catalogum addit.

GUIDONIS CRESCENTII FAGON *Quæstio med. an ex Tabaci usu frequenti vita brevior*. Parisiis 1699. Eandem, ut credo, *Thesin* vidi, sed anno 1711. editam. Laudat depletionem humoris nimii, culpatur inutilem potentiam & sulphur narcoticum.

J. ANDR. STISSER *horti Medici Helmstadensis catalogus*. Helmst. 1699. 8. Enumerat brevissime nomina stirpium, quas ab anno retro 1692. in horto suo coluerat. Varietates multæ. Observatio nulla.

RICH. RICHARDSON *de cultu horticorum*, Lond. 1699. 4. *

Fruitvuls improved by inclining them to the horizonte, Lond. 1699. 4.

F. MAR. NIGRISOLI *de charta ejusque usu apud antiquos*, Venet. 1699.

Traité de l'origine & du progrès du Caffé, tiré d'un Manuscrit Arabe de la Bibliothèque du Roi. Caen 1699. 12. Omnino meretur legi. GALLANDI Opus.

Hoc anno cœperunt edi les *Mémoires de l'Académie des Sciences*, & pergunt quotannis. In iis plurima & pulcherrima ad rem herbariam pertinentia. Ecce brevem Catalogum.

1699.

1699. DODART de situ perpendiculari arborum; De eodem *IDEM* an. 1700. 1702. & de la HIRE 1708. & *ASTRUC* ibid.
TOURNEFORTII Tamarindi descriptio.
1700. BOULDUC *Analysis Hypecacoanhæ*.
 DODART de fecunditate plantarum, & iterum an. 1701.
TOURNEFORT de plantis marinis.
1701. BOULDUC *analyses Colocynthidis, Jalapæ, Hellebori nigri, Gummi Guttæ*.
 HOMBERG de *analyfibus plantarum*.
 LEMERY *Nasturii aquatici analysi*.
 MARCHANT demonstravit *Liquitajam* esse *Schrophulariam aquaticam*. De eadem LEMERY an. 1702.
1702. LEMERY fil. de *analyfibus plantarum fermentatarum*.
 BOULDUC *analysis Veratri & Scammoneæ*.
1703. LEMERY *analysis Groffulariæ*.
 BURLET de *Camphorata*.
 Funesta vis *Belladonnæ*.
TOURNEFORT descriptio *Perficariæ Orientalis Nicotianæ folio*.
1704. MARCHANT *Prunus in Cydoniam feliciter infita*.
TOURNEFORT descriptio *Chamærhododendri orientalis*.
1705. LEMERY *analysis Camphoræ*.
 BOULDUC *analysis Gratiolæ*.
 LIPPI *Fungi Coccinei Melitensis descriptio*.
TOURNEFORT descriptio *Caryophylli Sinensis*.
 EJUSDEM genera *Morfus ranæ, Menispermii, Chrysanthemoidis, Chamæbuxi, Camphorata, Ficoidis constituta*.
 CHOMEL descriptio *Limodori montani & Conyzæ montanæ*.
1706. GEOFFROY *spongiæ analysis*.
TOURNEFORTII constituti characteres *Gale, Orobanchoidis, Ternatiæ, Luffæ, Dier-villæ, Chelonæ, Valantiæ, Lavateræ, Methonicæ, Conyzoidis, Solanoidis*.
 CHOMEL descriptio *Orobi Sylvatici, nostratis RAI*.
 MARCHANT de *viribus Valerianæ ad epilepsiam*.
1707. *TOURNEFORT* de *educatione & cultu Fungorum*.
 RENEAUME de *succo nutritio plantarum*.
 DE PAS de *Chamalegua*.
 MARCHANT *Rosa monstrosa*.
1708. BOULDUC de *Aloe*.
 LEMERY de *Manna*.
 GEOFFROY in *analyses Coralliorum*.
 HOMBERG de *natura acidi & alcali*.
 IDEM de *melle Aurantiorum*.
 GEOFFROY de *Noftoch*.
1709. BOULDUC de *Cachou*.
 MARCHANT de *plantarum partibus monstrosis*.
 DODART & PERRAULT de *circulatione succi in plantis*.
Hyoscyami vis noxia.
Ulmus excorticata absque noxa.
 MAGNOL de *usu medullæ in plantis*.
1710. De *nuce Bicuiba*.
 BOULDUC de *Rhabarbaro*.
 TACHARD & LEMERY de *Lacca*.
 MARSIGLI *analysis Corallii*.
 GEOFFROY de *pareira brava*.
 De *Secalis corniculati noxis*.
 PARENT de *motu plantarum*.
 MARSIGLI de *plantis marinis earumque floribus*.

1711. **BOULDUC** de Mechoacanna.
LEMERY analysis Coralliorum.
 De Gallarum vi febrifuga.
GEOFFROY de Tuberibus terræ.
MARCHAND Lichenagarici descriptio.
RENEAUME de vegetatione.
GEOFFROY pro sexu plantarum.
REAUMUR de Algis marinis.
PARENT pro descensu succi nutritii.
HOMBERG de plantis Hybridibus, & 1712.
NISSOLE genera Coriariæ, Jasminoidis, Ficoideæ, Partheniastri.
1712. **BOULDUC** analysis Bryoniæ.
REAUMUR de floribus & granis Fuci.
 De la **HIRE** stamina florum.
GEOFFROY experimentum in Mayz pro sexu demonstrando factum.
BOULDUC fructum papaveris Rhœados subire posse vices Opii.
 De Sexu Palmarum experimentum.
 De la **HIRE** de Catalepsi in flore Dracocephali.
JUSSIEU genus Corispermii.
NISSOLE descriptio Ricinoidis & Alypi.
1713. **RENEAUME** de cortice Peruviano.
POLI de oleo Lauri.
MARCHANT descriptio Marchantiæ.
REAUMUR de majori Pruni sylvestris specie.
EJUSDEM Boletus ramosus Coralloides foetidus.
JUSSIEU descriptio.
1714. **GEOFFROY** de Lacca.
BOULDUC analysis Agarici.
EJUSDEM de floribus Perficæ.
RENEAUME Spongia fluviatilis ramosa.
JUSSIEU duorum Galliorum descriptiones.
1715. Mors ex Cicutaria palustri (ut videbatur).
1716. De **RESSONS** de destruendis arborum Lichenibus.
 De Apallachina.
 De **RESSONS** de insitione.
JUSSIEU Cereorum descriptio.
D'ISNARD Evonymoidis genus.
1717. **JUSSIEU** descriptio Kali Aloniensis.
DANTY descriptio duarum specierum Lamii.
 De Cornu quod credebatur vegetasse & radices egisse.
1718. **VAILLANT** de Ginseng.
RENEAUME de methodo Botanica.
MARCHANT descriptio Indici.
VAILLANT plantarum cinarocephalarum constitutio,
DANTY D'ISNARD Cynoglossoidis duæ species,
1719. **BOULDUC** Elaterii analysis.
EJUSDEM Chacrillæ descriptio.
MARCHANT, noviter, ut credit, natæ species Mercurialis.
VAILLANT descriptiones plantarum aquaticarum ex 14. generibus.
EJUSDEM classis plantarum discoide Pore.
DANTY D'ISNARD descriptio Calcitrapoidis, & speciei Amberboi.
1720. **JUSSIEU** historia Catechou.
VAILLANT classis plantarum flore radiato.
D. D'ISNARD Euphorbii genus constitutum.
 Le **BON** de Hippocastani utilitate in vita humana. Conf. 1721.

1721. REAUMUR de Sylvarum cura.
 VAILLANT classis flore planipetalo.
 DANTY D'ISNARD Monospermaltea.
1722. ALEXANDRE de Gale cerifera. ID. an. 1725.
 REAUMUR de Nostoc.
 JUSSIEU de Vanilla.
 VAILLANT classis Diplacea.
 EJUSDEM crisis in methodum Tournefortianam.
1723. MARCHAND genus Ricino-Karpi.
 NISSOLE Arachnidoidis Americanæ descriptio.
1724. HAUTERIVE radix ad Serpentum morsum.
 GEOFFROY de vesicis Ulmi.
 JUSSIEU de vi tinctoria Chrysanthemi segetum.
 De Piris monstrosis.
 TRANTII Candiospermum.
 DANTY D'ISNARD descriptio Erucae singularis.
1726. DANTY D'ISNARD de usu olei fagini.
1727. REAUMUR de Corallio.
 MARCHANT Mucilaginis species in polline coriario nascent.
1728. DU HAMEL de planta quæ crocum destruit, Tuberoide.
 EJUSDEM de multiplicatione specierum fructuum.
 Lignum viride.
 JUSSIEU de genere Fungorum.
1729. JUSSIEU de Simarouba.
 Du HAMEL de augmento plantarum, quod a pluvia accipiunt.
 REAUMUR de Lichenibus murariis,
 De MAIRAN de Mimosa.
1730. DU HAMEL de inferendi artificio continuato 1731.
 EJUSD. anatome Piri continuata an. 1731. 1732.
 STÆHELIN de annulis elasticis Filiculæ corniculatæ.
 EJUSD. de vi elastica seminis Equiseti.
 SARRAZIN de Acere saccharifero.
 GARCIN Mangostan.
 NISSOLE descriptio Phaseoli peregrini semine tomentoso & Luffæ Momordicæ folio.
1733. MARCHANT descriptio Bicucullatæ.
1735. EJUSDEM Prunus absque nucleo.
1736. Du HAMEL de Mimosa.
1737. De BUFFON & DU HAMEL de incremento arborum.
 PATROUILLAD de noxis Hyosciami.
 Vitis amplissime ramosæ historia.
1738. DE BUTTON & DU HAMEL de incrementis motus succi nutritii.
 De la CONDAMINE descriptio Quinquinæ.
1739. De Amylo ex Solano tuberoso.
 DU HAMEL de utilitate Polygalæ vulgaris medica.
 DE BUFFON de cura Sylvarum & 1742.
 B. de JUSSIEU historia Pilulariæ.
 SAUVAGES DE LA CROIX de vi venenata Coriariæ, & Christophoriana.
1740. GEOFFROY de modo præparandi nonnullas radices.
 B. de JUSSIEU descriptio Lemnæ.
 De BUFFON de robore Ligni.
 DU HAMEL de visco.
1741. De conserva molli.
1742. B. de JUSSIEU Plantago palustris monanthos.
 EJUSD. de Coralliorum ortu ex Polypis.

1743. HELLOT de oleo Bibo.

BARRERE de cultu Orizæ.

Illis quæ ex *Mémoires de l'Académie des Sciences* recensuimus, adde 1744. DU HAMEL de furculis ablaqueandis, BOUVART de polygalæ viribus, GUETTARD de cuscuta de franca, JUSSIEU de contrayerva.

1745. GUETTARD de filis plantarum & glandulis.

L. LIGER parum fidum esse monet DECOMBE, *Ecole du jardin potager*, p. 28.

THEOD. a ZELST de tartaro, Leid. 1700. 4.

MARCI MAPPI de rosa de Jericho, Argent. 1700. 4.

GEORG. DEXBACH de cassia cinnamomea & malabathro, Gieß. 1700. 4. bona disputatio.

CHRISTOPH. MAXIMILIAN. SPENER Epistola ad M. B. VALENTINUM de akmella, ypecacoanha, &c. Amstelod. 1700. 4.

R. J. CAMERARII convenientia plantarum in fructificatione & viribus. Tubing. 1699. 4.

PITSCHMAN vermuthung von einem gewächse der Erden welches in einem garten Schle- siens gefunden worden. Lips. 1700. 8.

J. CHRIST. SCHROER Scrutinium de natura Trifolii fibrini. Guban. 1700. LINN. *

CAROLI LEIGH natural history of Lancashire, Cheshire and Derbyshire. Lond. 1700. fol. Non valde Botanicus, & in aquis mineralibus potius exercitus.

FRANC. NOURSE on the improvements of husbandry. Lond. 1700. 8. *

JO. GEORGH VOLCAMERI flora Norimbergensis. Norimb. 1700. 4. Bonum Opus. Continet exoticas stirpes horti Volcameriani, cum bonis iconibus, & indigenas ditioni Noricæ, a D. BESLERO & SCHEURL inprimis collectas. Seminum fere ubique descriptiones adjectæ sunt.

LEONARDI PLUKNET Mantissa Almagesti Botanici. Lond. 1700. 4. maj. Appendix stirpium exoticarum fere mille inferendarum inter lineas Almagesti.

MICH. BERNH. VALENTINI Polychresta exotica. Accedunt Diss. Epistolica varii argumen- ti. Francof. 1700. 4. Disputationes aliquas prius habitas collegit, edidit. Ad rem herba- riam pertinent, quæ agunt de Faba S. Ignatii, Ypecacoanha, China Chinæ. Reliqua par- tim anatomica, partim alio pertinent.

LOUIS LIGER nouvelle maison rustique. Parisiis 1700. 4. 2. vol. Amstel. 1701. 2. vol. 4. Sæpius recusa, & anno 1721. 4. deinde mutato nomine in CHOMELII abiit Dictionaire Oeconomique. Collector, qui non plurima sibi ipsi deberet.

J. B. TRIUMPHETTI Prolusio publica ad publicas herbarum ostensiones habita in horto Me- dico. Rom. 1700. 4. In oratione, nondum oblitus litium contra MALPIGHIIUM, deprimit inutilitatem Anatomæ subtilioris in Praxi & Malpighii, ut vocat, infelicitatem pungit in medicando. Sex stirpium icones subjicit.

JOH. WALLACE description of Orkney. Lond. 1700. 8. Catalogus plantarum indigena- rum Orcadum Insularum ibi reperitur.

J. PHIL. BREYNE de Acemella & Ginseng. Disput. Leid. 1700. 4. recusa cum patris. Prodromis.

JOH. FRANCI Veronica theizang. Coburg. 1700. 12. Nimis in laudibus Veronicæ ma- ris vulgatissimæ. Parisiis tamen recusatus est sub titulo le Thé de l'Europe. 1704. 12.

Nonne idem N. HANIEL die preiswürdige veronica oder Europäische thee wie selbige an statt des Indianischen mit fuge gebraucht werden kan, Dusseldorf 1692. 4. *

J. C. SCHROER in botanicis confusior est, habet tamen analysin plantæ & corticis.

Le bon usage du Tabac en poudre. Parisiis 1700. 12. Historia & præparatio Tabaci. Ad- jecta Disp. supradicta FAGONII *

JOHN. JONES the mystery of Opium revealed. Lond. 1700. 8. Practice.

J. JONES editionem anni 1701. habet Cat. PL.

FRANC. MARIAE NIGRISOLI febris China China expugnata. Jenæ 1700. 4. Est collectum Opusculum ex BREGNY & RESTAURAND & aliis.

F. M. NIGRISOLI quod diximus opusculum, ad praxin pertinet.

DAN. SCHEFFER de Chamamelio. Argentor. 1700. Disp.

RUD. EYSSONII de Fago. Groning. 1700. 12. SEG. *

J. CHRIST. SCHROER beschreibung des Eschenbaumes. Francof. ad. Oder. 1700. 8.

OLAI RUDBEKII Campor. Elyseorum. L. I. II. Priorem anno 1702. editum LINNÆUS recenset, qui de Graminibus agit, & cujus tria tantum supersunt specimina, quem
vero

vero nunquam vidi. Sed alterum an. 1701. impressum de bulbosis plantis agentem, etiam rarum, possideo. Pater, filius & nepos cognomines, in hoc Opere laborarunt, cui undecim mille destinabant icones. Quas hic habemus, eas compilaverunt fere ex omnibus Scriptoribus, Lobelio, Fuchsio, Svveertio. Propriæ paucae sunt aut ad Burserianas stirpes pictæ. Descriptio vix ulla. Repetitiones frequentes. Ita v. gr. *Orobanthe funboensis* flore suaverubente, est ipsissima *Squamaria*.

EJUSDEM Laponia illustrata. 4. Nihil quidem hic Liber ad Laponiam pertinet, duodecim enim tomos destinabat Operi Auctor, cujus hic primus solus prodiit, continens iter Uplandicum. In eo catalogus exstat baccarum edulium Septentrionis, & icon Sceptri catolini.

MELCH. FRICCHII de virtute venenorum medica. Ulm. 1701. 8. habet etiam plantas venenatas.

TIMOTH. NOURSE Campania felix or a discourse on the improvements of husbandry. London. 1701. 12. *

PETRI COLET catalogue des Plantes qui croissent autour de Dijon. Dijon. 1701. 12. SEG. *

IDEM contra *TOURNEFORTIUM* nescio quid scripsit, ad quod respondit *J. B. CHOMEL* in *Journal des Savans*, ut supra dictum est.

LOUIS LIGER culture parfaite des Jardins fruitiers & potagers. Parisiis 1702. 12. 1714. 12.

JAMES PETIVER Gazophylacii natura & artis Decades X. Lond. 1702. seqq. fol. Centum sunt tabulae, in quibus insecta non pauca, multae tamen etiam plantae, eaque exoticæ & raræ depictæ exstant, etsi paulo rudius ad sicca exemplaria expressæ sint.

LOUIS LEMERY Traité des alimens. Parisiis 1702. 8. & auctius 1705. Chemicus filius; Chemicus & ipse. Vulgaria hic habentur, & ridiculae passim etymologiae.

P. BOCCONE appendix ad suum Musaeum de plantis Siculis cum observationibus Physicis nonnullis. Venet. 1702. 8. B. RIV.

J. HENR. BURCHARD Epistola ad LEIBNIT. 1702. 4. Characterem non sumendum esse a partibus plantae accidentalibus.

FRID. HOFMANNI disputatio de terebinthina, Hall. 1699. *de sacchari historia naturali* 1701. *de caryophyllis aromaticis* 1702. 4. *de natura & praestantia vini rhenani* 1703. *de praestantia malorum citrinorum* 1715. *de vini Ungarici natura* 1721. *de manna ejusque usu in medicina* 1725. 4. *de veronica, camphora, aliisque in opusculis medicis* Hall. 1739. 4. recusae disputationes. In aliis opusculis Ulmae recusa est compendiosa methodus indagandi vires plantarum.

CAR. FRID. LUTHER de potu theae, Kiel. 1702. 4.

OL. CELSII Botanici sacri Exercit. I. de Malo Hierichuntino. Ups. 1702. 12. & aliae. Theologus, Philologiam Botanicam sacram imprimis coluit, & nunc maxime edidit an. 1745. 4. *Hierobotanon*, eruditum Opus, quo plantas biblicas ex linguis Orientalibus declarare conatus est.

ÆGIDII de KOKER Catalogus plantarum Horti Harlemensis. Harlem. 1702. 12. Paucae plantae 314. & fere officinales. Aliquae tamen cum locis natalibus memoratu dignae.

G. W. WEDEL de Musco Clavato. Jen. 1702. 4. Disp.

J. P. BREYNE de Fungis officinalibus. Leid. 1702. 4. Disp.

JOH. RAII methodus plantarum emendata & aucta. Londin. 1703. 8. Insigniter mutata a priori editione. Hic enim *TOURNEFORTIANAS* florum fabricas, *HERMANNIANAS* aliquas classes naturales recepit, & omnia in melius, inque methodi naturalis leges disposuit. Falsos tamen *PRESTONI* Characteres optimus senex adhibuit, & solent ipsi anomalae classibus subjunctae plantae vitio dari. Graminum dispositio a *SCHEUCHZERO* emendatius proposita est. Conf. not. 174...

EJUSDEM hoc ipso anno vita functi *Historia Plantarum* T. III. sive supplementum duorum praecedentium. Lond. 1704. fol. Hoc volumine plantas ab an. 1688. inventas collegit, & ad ordinem priorum disposuit. *BANISTERI* Virginicas, *VERNONI* & *KRIEGII* Marylandicas, *HANSII SLOANE* Jamaicensis, sibi mutuo datas, *TANCREDI ROBINTONI*, *SAMUELIS DALE*, *EDUARDI LLHWYDII* Anglicas, tum exoticorum Auctorum noviter inventas stirpes continet. Omnia in ordinem coniecit & emendavit *WILHELMUS SHERARD*. Utinam editio exstaret, quae haec supplementa propriis locis inserta contineret! Ad calcem exstant *Corollarium TOURNEFORTII*, *CAMELLI* catalogus plantarum in Philippinis Insulis nascentium, tum *PETIVERI* hortus ficcus, & alia.

EJUSDEM RAII *Philosophical letters with those of WILLOUGHBY* published by W. DERHAM, Londini 1718. 8. Plurima hic habentur, quæ partim ad historiam Auctoris, partim ad stirpes, earumque locos natales pertinent, & grandes mistæ sunt PLUKNETII, PETIVERI, PRESTONI de stirpibus Dissertationes.

JOS. P. de TOURNEFORT *Corollarium* J. R. H. Parisiis 1703. 4. & Lugduni 1719. 4. Continet novas species itineris Græci, & aliqua nova genera.

Dictionnaire de tous les termes propres à l'agriculture, Paris. 1703. 8. *

J. ULR. HEGNER *analysis fructuum amygdalarum*, Basil. 1703. disputatio.

JOHANNIS BAPTISTÆ TRIUMPHETTI *Vindiciarum veritatis pars prior*. Rom. 1703. 4. MALPIGHIO respondet, qui in Posthumis se contra priores TRIUMPHETTI de ortu & generatione vegetabilium observationes erat tutatus. Experimenta profert contra cotyledonum cum plantarum partibus analogiam, stirpis in semine delineationem, foliorum ad gemmas perficiendas necessitatem.

J. M. HOFMANNI *appendix ad delicias floræ Altdorfinae hortenses*.

HENR. van OSTEN *register van alle de sorten der vornehmsten fruchten, Abricosen, Persiken, &c. en een Register der saden*. Leid. 1703. 8. *

ANDRÆ ANDALORII *il Caffè descritto ed esaminato*. Messan. 1703. 12. * Vim omnem esse potius ab aqua calente.

MICHAELIS BERNHARDI VALENTINI *Museum Museorum oder schaubühne aller materialien und Specereyen, &c.* fol. Francof. T. I. an. 1704. T. II. & III. an. 1714. In primo tomo tria regna & officinalia omnia percurrit, totumque exscribit POMETI Opus. In appendice utile adest commercium epistolicum inter HERBERTUM de JAGER, ANDREAM CLEYERUM, WILHELMUM ten RHYNE, & EVERHARDUM RUMPHIUM, de Indicis ad rem Medicam aut certe ad Seplasia pertinentibus naturæ operibus. Hic tomus sub nomine *historiæ Simplicium reformata* recusum est Latina lingua. Alter Tomus ex omnibus regnis compilationem undique corrasam habet, rariorum eo pertinentium. Tertio Opera potius artis describit.

MICH. BERNH. VALENTINI primus tomus, quem sub nomine *historiæ simplicium reformata* recusum diximus, iterum recusum exstat cum titulo *Aurifodina medica*, Gieß. 1723. fol. nonnullis additamentis & recusis disputationibus auctior.

GEORG. FRID. REICHNAY *de opio*, Leid. 1704. 4. *

Le jardinier solitaire, Parisiis recusum prodiit 1737. 12. Bruxellis vero 1706. 8. 1721. 8. Anglice etiam versus exstat *the carthusian gardner*, Lond. 1706. 8. Nonne idem *the retired gardener by LONDON and WISE* 1706. 8. HARL. recusum ibid. 1717. 8.

L. LIGER *le jardinier, &c.* Parisiis recusum est 1719. 12. 1748. 12. Germanice vero versus prodiit Lipsi. 1716. 4.

NIC. HARTSOEKER *pourquoi les boutons des arbres ne peuvent pas résister au froid au printemps*, Républ. des Lettres 1705.

P. de VALLEMONT Germanice prodiit VALLEMONT *von der gärtneren*, Budissin. 1716. 8.

J. M. LANGII disputatio I. docta est de Kali, saponaria, struthio. Borith interpretatur de Kali Syriaco RAUWOLFII. Posteriores duæ disputationes nihil huc faciunt.

J. JAC. MANGET *Bibliotheca Pharmaceutico-medica*. Genev. 1704. fol. Præter vim magnam aliorum insertorum chemicorum tractatum, ad nos tamen pertinent icones plantarum propriæ quarundam Alpinarum, aliarum vero exRAIO & J. BAUHINO petitæ descriptiones.

R. WIL. KRAUSE *de Cardamomo*. Jen. 1704. 4. Disp.

C. T. PAULINI *de nuce moschata*. Lipsi. 1704. 8.

JACOB GOTTSCHALK *verzeichnuss des gartenz zu Leiden*. Ploen. 1704. 8. In hortulanorum gratiam stirpium horti Leidenensis brevem scripsit catalogum.

Le Jardinier solitaire. Parisiis 1704. 12. Auctor Fr. FRANCISCUS GENTIL Carthusianus. Ex propriis experimentis de arborum fructiferarum & horti olitorii cura multa utilia habet.

LOUIS LIGER *le Jardinier fleuriste & historiographe*. Parisiis 1704. 12. Amstelod. 1708. 12. Poetica & fabulosa varia habet, minus dives experimentis.

SIBYLLÆ GRAAF, natæ MERIAN, *metamorphoses insectorum Surinamensium* an. 1705. Belgice. Gallice vero an. 1726. editæ, pulcherrimas stirpes conjunctas habent cum insectis. Eodem dudum ediderat insectorum Europæorum metamorphoses, quæ Amstel. 1730. fol. recu.

recusæ exstant, cum adjectis stirpibus fere 200. quarum aliquæ raræ sunt. Sed explicatio minus bona est.

CHARLES PLUMYER *Traité des Fougères de l'Amérique*. Paris. 1705. fol. Ex ultimis itineris divitiis immensam vim Filicum Americanarum pulchris figuris expressit, tum Europæas aliquas, Fungosque paucos. Causa fuit æmulatio, Operis HANSII SLOANE (præf. ad It. Jamaic. Vol. II. LABAT T. II. p. 24.)

LEONHARDI PLUKNET *Amalthæum Botanicum stirpes novas tradens* 1200. Lond. 1705. fol. cum iconibus 600. Plantæ fere omnes exoticæ.

J. GODFRID GRUHLMAN *de remedio contra caliginem oculorum*. (Herniaria) Jenæ 1706. 4.

R. J. CAMERARII *de Scordio*. Tubing. 1706. 4.

RUD. CHR. WAGNER & STARKE *de gyris Convolvulorum*. Præf. WAGNER Disp. Helm. 1705. 4.

VIRGILII FALUGII *profopœia botanica methodo Tournefortiana disposita*. Florentiæ 1705. 12.

PETRI DE VALLEMONT *Curiosités de la nature & de l'art sur la végétation*. Parisiis 1705. 12. 1708. 8. deinde 1734. & alias. Compilatio mera, absque propriis experimentis, & adfirmatio temeraria palingenesiæ, circulationis succorum in plantis, multiplicationis feminum, &c.

BESNIER *le Jardinier botaniste*. Parisiis 1705. 8.

JOH. MICH. LANGII *Diff. botanico-theologica tres de herba Borith &c*. Altdorf. 1705. 4.

DANIEL DUNCAN *avis contre l'abus des choses chaudes*. Roterodami 1705. Culpas imprimis Coffeam. *

JOH. SIRICII *beschreibung dreyer bluhenden Americanischen Aloe*. Slesvvig. 1705. 4. Cum in ea descriptione WALDSCHMIDIUS in sua aliqua carpsisset asperere respondit in Libello an. 1706. edito, cum titulo *Kurze beantwortung &c*.

EMANUELIS KOENIG Basiliensis Professoris *schweizerisches hausbuch, seu Georgica Helvetica curiosa*, Basil. 1705. 8.

FRID. MENTZ *de plantis ad rem magicam pertinentibus*, Lips. 1705. 4.

W. ULR. WALDSCHMIO est etiam *de sexu ejusdem plantæ gemino*, Kiel. 1705. 4. EJ. programma *ad excursiones botanicas* 1712.

J. EVELYN obiit eodem anno quo EJ. *gardener almanach* prodiit, nempe 1706. 27. feb.

J. VANIER *prædium rusticum* recusum est Parisiis 1746. 12.

J. J. BAIER etiam sunt *problemata quadam medica*. Huc pertinet *de viribus theæ*, Altdorf 1706. 4. *de asparago* (sub nomine ANT. a CLERICIS) 1715. 4. *lilio convall.* 1718. *lupulo* 1718. *de artemisia* 1720. 4.

WILH. ULR. WALDSCHMID *beschreibung der Aloen insgemein, insbesonder aber der Americanischen*. Kiel. 1705. 4. Descriptio Aloes quæ Goltorpi floruerat. Idem in Libello *Americanischer in Gottorf blühender Aloe fernere beschreibung*. ibid. 1706. 4. scripsit contra SIRICIUM.

LUD. FERD. MARSIGLI in Ep. 18. Dec. 1706. data ad ABBAT. BIGNON describit *ramum florentis Corallii*. Vide *Journ. des Savans* 1707. Febr. & Maj.

J. EVELYN *gardener Almanach with a discourse on fallers*. Lond. 1706. 8. Continet Operum rusticorum catalogum, tum descriptionem esculentarum plantarum plerarumque. Habetur etiam in Operum collectione in folio.

JAC. VANIER *Prædium rusticum*. Poematis Georgici ingeniosi certe & elegantis, nisi sparsas passim haberet nimii in alienissimo loco zeli scintillas. Libri duo primi Tolosæ prodierunt 1706. 12. decem autem omnino Paris. 1707. 12. & deinde sæpius 1730. 12. &c.

J. J. BAIER *de Visco* Disp. Altdorf. 1706. 4.

SAL. HOTTINGER *onologia seu dissertatio de vino*, Tigur. anno 1707. ad 1712. 4. *

AL. C. GAKENHOLTZ in *dissertatione de vegetabilium indole exploranda*, Helmst. 1706. 4. & in Libro *de emendanda & rite instituenda medicina* proposuit methodum plantas a radicibus disponendi. IDEM scripsit etiam *definitiones Tournefortianas* HEISTERO teste in *method.* Linn. quæ non integre prodierunt.

HANS SLOANE *Voyage to Madera, Barbados, Nieves, S. Christopher and Jamaica with the natural history*. P. I. Lond. 1707. fol. P. II. ibid. 1725. fol. Etsi nullam partem rei

naturalis neglexit clarissimus Auctor, qui optimo omnibus bonis exemplo in venerabili senio superest, in Botanicis tamen maximum laborem posuit, eamque partem Physices plurimum illustravit. Stirpes *RAJANO* ordine disposuit numerosas, novas fere omnes, egregie depictas, ut ex collatione cum siccis speciminibus ipse testor. Synonyma omnium plenissime ex incomparabili Bibliotheca congeffit: vires medicas, & œconomicas utilitates ex sua observatione & consuetudine in coloniis recepta adsignavit. Nova genera vix condidit, sed ab adfinitatibus temporaria nomina imposuit.

BARTHOLOMÆI de MARTINIS Specimen plantarum inventarum a Verona ad M. Baldi. Veron. 1607. 4. *

J. A. SLEVOGT de Urtica. Jen. 1707. elegans disputatio, cum characteribus.

OL. RUDBEK fil. de Hedera. Upsal. 1707.

G. W. WEDEL de Cinnamomo. Jen. 1707. 4.

J. MELCH. VERDRIESS de succi nutritii in plantis circuitu, Gieff. 1707. 4.

J. CHRISTIAN LEHMAN de balsamo peruviano nigro, Lips. 1707. 4.

BOUCEAU de la BARAUDIERS Traité du Jardinage, &c. Parisiis 1707. 12. (SEG. etiam 1689. 12.)

J. M. the vvhole art of husbandry. Lond. 1706. Rem hortensem & rusticam habet. *

DAN. LANGE Catalogus der gevvächse so in den Lastrophischen garten zu Eimsbüttel gevvachsen. Hamburg. 1707. 8. *

In Tomo Diarii *GALERIA* di *MINERVA*, qui hoc anno prodiit, exstat *Catalogus plantarum circa Liburnum a VALISNERIO lectarum.* p. 46.

Ex Tomo III. Diarii *GAL.* di *MIN.* quod ibi citavimus, huc pertinet *de sarsaparilla tract. CESTONI.*

JOSEPHUS PITTON TOURNEFORT præmaturo fato abreptus obiit an. 1708. Huc ergo posthuma oportet referre. Iter primo Orientale, cujus Relatio Parisiis an. 1717. 4. 2. volum. Lugduni 1717. 3. vol. 8. & alias edita est. In eo pulcherrimo & amœnissimo Opere plantæ supra centum, pleræque novæ, egregie describuntur & depinguntur.

EJUSDEM Matière medicale eodem anno 1717. Paris. 2. volum. in 12. edita. Continet descriptiones stirpium quas non alibi habemus, vires & præparaciones Pharmaceuticas. Libro tertio fere eadem alio ordine, & nonnihil aucto plantarum numero, repetita habentur.

J. JACOBI SCHEUCHZER Itinera Alpina tria. Lond. 1708. 4. In primo & secundo itinere magna vis stirpium, etiam rariorum & novarum, exstat descripta cum nonnullis non optimis iconibus, quas etiam *PETIVERIUS* habet in *Gazophylacio*. Plantas etiam recensuit in *GAL.* di *MIN.* T. VI. p. 48.

J. SCHEUCHZERI prodromus Agrostographia. Tiguri 1708. fol. cum majoribus iconibus prodiit, quæ repetuntur in *Agrostographia*.

EMANUELIS KOENIG regnum vegetable quadrupartitum. Basil. 1708. 4. Secundo Libro institutiones rei herbariæ Tournefortianas repetit; Quarto vires stirpium ex variis compilat.

CHRISTOPHORI HELWICH de cicuta, antimonio, siluro, Gryphisvald. 1708. 4. *de ligno brasiliensi* 1709. 4. *de charophyllo* 1711. 4. *de quinquina Europaorum* 1712. 4.

La théorie & la pratique du Jardinage. Parisiis 1709. 4. Ad ornamentum & ad ordinem. *

ERN. WILH. WESTENBERG viridarium Academia quæ est Harderovvici. Eo loco 1709. 4. Locos natales nullos habet. (TREW.)

La théorie & la pratique du jardinage, cujus editionem Parisinam citavimus, prodiit etiam la Haye 1711. 4. 1715. 4. 1739. 4. quæ editio multo auctior est. Anglice etiam prodiit sub titulo *the theory and practice of gardening translated by J. GAMES* Lon. 1712. 4. Magna pars versatur in hortorum ornamentis, viis, sepibus, aquis. Arborum tamen etiam & herbarum cultum docet.

J. FRANCI alleluja, quam acetosellæ descriptionem esse diximus, enormem virium hujus plantæ habet catalogum.

J. POLY LECAAN Advice to the gentlemen in the army of her Majesty in Spain and Portugal. London. 1708. 8. Plantas Hispaniæ indigenas recenset, quæ Angliæ exoticæ sunt. (*Journal des Savans* 1709.)

NATALIS CHOMEL (Sacerdotis) Dictionaire œconomique. Lyon 1709. fol. cum supplemento 1712. fol. deinde Parisiis 1718. fol. 2. vol. Lugduni & Amstelodami an. 1732. fol. 2. vol.

2. vol. Vasta collectio artis venatoriæ, agriculturæ, horticulturn, utilitatum œconomica-
rum, medicarum, &c. Sed qualis ab homine minime botanico potest expectari.

N. CHOMEL *dictionnaire* Anglice vertit BRADLEY Lond. 1722 fol. Nec fidem laudat DECOMBE
THOM. ROBINSON *Essay toward a natural history of Cumberland and Westmorland*. Lon-
don. 1709. 8. Huc inprimis pertinent plantæ 18. a RAIO prætermiffæ.

J. JAC. SCHEUCHZER *herbarium diluvianum*. Tiguri 1709. fol. auctius recusum Leidæ
1723. fol. Icones sunt plantarum varii generis, sed inprimis tamen Filicum, & Crypto-
gamiarum, quarum multæ in Europa nullibi proveniunt.

JOH. FRANCI *Alleluja*. Ulm. 1709. 8. Descriptio Acetofellæ.

CHRISTOPH. LUDW. GOELLER *de cinnamomo*, Utrecht. 1709. 4. bona disputatio.

LONDON and WISE *compleat gardener adde: or directions for cultivating and right orde-
ring of fruit and flower gardens*.

J. BATT. SCARELLA *historiam aloes plantarum quæ unquam floruisse, & ex VA-
LISNERIO observationes continet, de succo dulci ex floribus destillante*.

WILLIAM SALMON *English herbal*. Lond. 1710. fol. Carolinam viderat Auctor, hinc
passim aliquas Americanas plantas describit. Cæterum Officinis receptas stirpes secundum
alphabeti ordinem disponit, collectas undique nominibus & exscriptis iconibus. Errores
habet maximos, ut videre est in Virga aurea foliis ferratis (pro qua Bidentem flore ra-
diato pingit) scordio aquatico (pro quo Lamium exprimit) Sophia Chirurgorum, pro
qua MATTHIOLI Symphytum petræum pingit.

LONDON and WISE *compleat Gardener*. Lond. 1710. 8. Ad culturam olerum, & arbo-
rum pomiferarum. *

J. BATT. SCARELLA *breve ragguaglio intorno al fiore dell' Aloe Americano*. Patavii
1710. 12.

Lettres d'un Medecin du Roi a ses amis. Namur 1710. 4. In Epistola III. Cl. PETITUS,
qui Auctor est elegantissimi Libri, plantas nonnullas paludosas & novum characterem
Dantiæ, Arique palustris pingit & describit.

JOHANNIS de MURALTO *Physices specialis P. IV. sive Helvetia Paradisus*. Tig. 1710. 8.
Circa Scaphusium & in Toggicis atque Abbatiscellanis montibus, in Gotthardo denique
& Lucumonio Monte stirpes collegit raras, & a paucis in Helvetia lectas. Nomina sæpe
incredibilia, & aliena, ut cum prudentia legi oporteat & uti.

Nie erhöhte wunderbare Gartenlust. Hamburgi 1706. fol. De Pyramidibus procurandis
per gemmarum insertionem.

BLASII CARYOPHYLLI (Garofalo) *de Origano, Ricino, Lilio, Mandragora* in Dissert.
suis Miscellaneis. Rom. 1710. 4. & *de Hyssopo*. 1718. fol. Rom. Philologus. *

R. I. CAMERARII *de Lolio temulento*. Tubing. 1710. 4. Diss.

OL. RUDBECK *de Mandragora*. Upsal. 1720. 8.

MATTH. ERN. BORETII *de Hieraciis Prussicis*. Regiom. 1710. 4.

Hoc anno cœpit edi GIORNALE de' LETTERATI, in quo passim varia Botanica occurrunt,
ut FR. FANTASTI descriptio Colocasiæ T. XVII. UBERTINI LANDI Diss. de Fungis,
ubi defenditur, eos absque semine provenire Suppl. 3. deinde vitæ clarorum virorum.

J. HENRICI HEUCHER *Index plantarum horti Medici Wittembergensis*. VVittemb. 1711.
4. & *Novi proventus horti*. 1711. 4. & alii *Novi proventus* 1713. 4. Prima parte RIVINI
methodus tota explicatur, ipso approbante & genera atque species enumerantur, secun-
dum eam methodum digestæ. In sequentibus observationes exstant variæ. Sed minima laus
hujus Archiatri fuit a Botanicis.

LUC. WOLLEB *de methodo herbas lustrandi cum corollariis anatomicis*, Basil. 1711. 4. EJ.
de belleboro disputatio.

J. RUD. SILTEMANN *de cortice Winterano*, Erfurt. 1611. 4.

F. EULALII SAVASTIANI Libri IV. prodierunt etiam Venet. 1749. 8. Placet anatome
in egregio & heroico hoc carmine, quo etiam MALPIGHII laudes in fabulam conjecit,
& eleganter cecinit.

SABLET apud TREVULTIENSES *de Senna & Colutea*, quæ viribus sit par Sennæ, agit
an. 1711. Octobr.

LUD. FERD. MARSIGLI *osservazione intorno al mare ed alla grana del Chermes*. Ve-
netiis

netiis 1711. 4. Hæc posterior Differtatio huc pertinet, & apud GARIDELLUM exstat recusa.

J. AUG. de HUGO *Diff. Botanica de variis plantarum methodis*. Leid. 1711. 8. *

CAR. FRANC. COGROSSI *della natura ed uso della Correccia del Perù*. Cuma 1711. 4. 1718. 4. Practice.

ENGELBERTI KÆMPFER *Amœnitates exotica*. Lemgov. 1712. 4. Laudes incomparabilis viri aliquas jam diximus. Ad Botanicen pertinent; plena historia Aſiæ foetidae, Sanguinis Draconis, Theæ, Palmæ dactyliferæ: tum fasciculus plantarum Japonicarum, cum multarum integris descriptionibus, characteribus & fidiſſimis iconibus.

JACOBI PETIVER *Pterigraphia Americana*. Londin. 1712. fol. Tabulæ ſunt viginti, cum iconibus parvis, nitidis tamen, fere quadringentis, plantarum ex cryptogamia, maxime tamen Filicum Americanarum. Sola nomina adjecta ſunt. Acceſſerunt inſerta aliqua.

JOH. MORTON *natural history of Northampton-Shire*. Lond. 1712. fol. Continet Catalogum plantarum rariorum hujus Comitatus, aliquarum etiam, ut credit Auctor, non deſcriptarum, ex Muſcorum genere, & varietatum; deinde ad Agriculturam varia. Icones plantarum paucae.

GEORGII ANDREÆ HELWING *flora Pruſſica quaſi modogenita*. Gedan. 1712. 4. cum Praef. J. P. BREYNI. In ea præſatione Catalogus habetur Scriptorum rerum naturalium Boruſſiæ, & corriguntur aliqui errores LOESELII. In Catalogo exſtant ſtirpes 247. quarum multæ hortenſes ſunt, & multæ aliæ ad varietates pertinent, aliquæ tamen pulchræ & raræ.

J. BAPT. CHOMEL *Histoire des plantes uſuelles*. Pariſiis 1712. 12. deinde 1715. 2. vol. tum 1730. 3. vol. 12. & Amſtelodami 1736. Plantæ diſponuntur ſecundum operationes ſuas in corpore humano: datur brevis enumeratio virium medicatarum, & ſynonyma nonnulla. Multa habet ex propriis experimentis. In ſupplemento varia ex GARIDELLO SCHROEDERO, pauca de ſuo addit. Utilis Auctor.

ROBERT *Inſtruction ſur les Arbres fruitiers*. Pariſiis 1718. 12.

FRANCISCI EULALII SAVASTANI *Botanicorum ſive Inſtitutionum rei Herbariæ*. L. IV. Neapol. 1712. *Historia generum ſecundum Methodum TOURNEFORTII*, virium in alimentis, in Medicina, Carmine continuo deſcriptæ.

ANGRAND de RUENEUVE *Observations ſur l'Agriculture & le Jardinage*. Pariſiis 1712. 2. tom. 12. De optima ad ſolem expoſitione, de ſatione, inoculatione arborum aliqua operibus olitoriis præcepta dat.

JACOBI PETIVER *Herbarii Britannici Catalogus cum iconibus*. Lond. 1713. fol. Mihi ſunt Tabulæ 50. Cl. vero SEGUIER vidit 72. Commodum cæterum Opus, quo plures rariores ſpecies aut varietates non alibi deſcriptæ exhibentur, ſecundum RAJANUM Synopſeos ordinem. Icones mihi 600.

JOH. CHRISTOPHORI VOLCAMER *Hesperides Norica*. Norimb. 1713. 1714. fol. 2. vol. Non ſolum Hesperidum ex tribus generibus vim maximam deſcripſit & depinxit, ſed Cereos etiam, Meſembryanthema, Ananas aliasque plantas Indicas cum cultu adjecit ſplendidifſimo Opere.

JOH. CAROLI A CARLOWITZ *anweſung zur wilden Baumzucht*. Lipſ. 1713. fol. 1731. fol. Demonſtrat equidem funditus perire ſylvas, magna cum infelicitate patriæ, ſuadet novarum ſylvarum culturam, arborum Catalogum dat. Sed vir nobilis, Botanicæ ignarus, turbat omnia. Pinus & Abietes confundit. Mannam fraxineam cum Manna graminea Boruſſorum conjungit. Habet tamen artem carbonariam, picariam, & ſerendarum arborum artificia.

LOUIS LIGER *nouveau théâtre d'Agriculture*. Pariſiis 1713. 4. Meruit laudes Diarii Eruditorum.

L. LIGER *nouveau théâtre d'agriculture adde: & menage des champs*. Recuſus eſt hic liber Pariſ. 1723. 4. EJUSDEM etiam ſunt *moyens faciles pour rétablir l'abondance de toutes ſortes de graines*. Suadet ſerere Mayz.

J. CHR. OLEARII *aloëdarium historicum*, Arnſtatt. 1713. 8. *

Le jardin de Hollande, &c. Leidæ recuſus eſt 1728. 8. Cæterum ex QUINTINIO exſcriptus liber eſt.

J. HIER. ZANICHELLI in Libro citato ex itinere maritimo fungum marinum deſcribit, & plantæ genus, cujus ſemina & flores ex MICHELII obſervatione deſcriptas addit.

ANFO-

ANTONII TITÆ *Catalogus Plantarum horti Mauroceni*. Patav. 1713. 4. Moribus antiquis, & nominibus usus veterum. Adjecit iter suum in Alpes Vettias Venetorum, quo multæ, & nonnullæ novæ stirpes enumerantur, solis tamen nominibus.

MHKONONPAIGNION sive MICHAELIS FRIDERICI LOCHNER *Papaver ex omni antiquitate erutum*. Norimb. 1713. 4. (ACT. LIPS. Nam mea editio annum habet præfixum 1719.) Hoc Opusculum, ut omnia hujus Auctoris, plus Philologiæ ad somnum, & papaver pertinentis, quam Botanicarum descriptionum habet.

G. W. WEDEL de *Centaurio minori*. Jen. 1713. 4. Disp.

J. A. SLEVOGT de *Lino cathartico*. Jen. 1713. Disp.

HEUCHERI vel THRYLLITII de *historia plantarum fabulari*. VVitteb. 1713. 4. Plantas aliquas descripsit.

Le Jardin de Hollande garni de fleurs & de fruits, &c. Leidæ 1714. 8. *

LUD. FERDINANDI MARSIGLI de *generatione Fungorum Epistola cum responsione LANCISII*. Rom. 1714. fol. Icones vix possunt ad suas species referri, semina Fungorum prompta visu, non detexit, ut non maxima in splendido Opere sit utilitas.

LANCISIUS in alia Epistola agit de plantis in Plinianæ villæ ruderibus repertis.

J. HIER. ZANICHELLI de *Myriophyllo pelagico*. Venet. 1714. 8. ex GIORN. de' LETT. XX. *

BARTHOLOMÆI ZORN *Botanologia Medica*. Berol. 1714. 4. Germanice. Virium incredibilis compilatio cum citatis Auctorum locis, ad PANCOVIANUM Opus ordinata, de quo alibi.

LAUR. ROBERG de *Picea*. Upsal. 1714. 4.

J. J. BEYER & LANG de *Millefolio*. Altdorf. 1714. 4.

J. PHIL. EYSEL multæ disputationes sunt *Bellirographia*, Erfurt. 1714. 4. de *fuga demonum* 1714. bono *henrico* 1714. filio ante patrem 1714. rore solis 1715. *betonica* 1716. *trifolio fibrino* 1716. *veronica* 1717. *agallocho* 1717.

JOHN LAURENCE *gardening or Clergyman's recreation*, Lond. 1714. 8. EJ. *fruit gardeners kalendar*, ibid. 1718. 8.

ANT. de JUSSIEU *histoire du jardin Royal de Paris avec une introduction à la botanique jointe à l'éloge de feu M. FAGON*. Paris. 1714. 4. *

JACOBI PETIVER *plantarum Italia nomina & icones*. T. V. Lond. 1715. fol. Icones 80. *marinarum stirpium & Graminum*. Reliqua mihi non sunt ad manus, nempe *Hortus Peruvianus medicinalis*. T. 5. 1715. fol. (cujus tamen icones spurias esse plerasque memini, maxime *Kinkinæ*). *Graminum, Muscorum, Fungorum concordia*. Lond. 1716. fol. *Plantarum Ægyptiarum icones*. T. II. Lond. 1717. T. 2. & aliæ apud CL. SEGUIER recensæ.

CASPARI COMMELINI *Icones plantarum præsertim ex Indiis collectarum*. Amst. 4. 1715. & 1716. nam uterque numerus reperitur, & EJUSDEM *Preludia Botanica*. Plantas Indicas pulchre describit & depingit, in utroque Opere, maxime *Euphorbium*. In eoquod priori loco recensui flores aliquot specierum *Aloes* pinguntur, quæ in posteriori absque flore sunt.

PETRUS MAGNOL anno 1715. mortuus est. Ejus observationes in *Pinacem*, & repetitionum censuræ, multis ante annis a SCHELHAMMERO indicatæ (ad CONR. INTR. p. 337.) nunquam prodierunt. Sed novus character plantarum *Monspeli* an. 1720. 4. a filio editus est, rarus tamen, quod dicant specimina Libri minus perfecti redempta esse a filio, quem proprii consilii poenitentia ceperat. Numerosas habet descriptiones florum, & TOURNEFORTIUM passim emendavit. Methodus, quam a calyce cognominat, potius a flore est, & nimis hiulca, in Arboribus imprimis.

PIERRE GARIDEL *Histoire des Plantes qui naissent autour d'Aix*. Aix 1715. fol. & Parisiis 1723. fol. ut in multis catalogis lego. Splendidum Opus, centum fere tabulis novis ornatum, sed passim vitiosum, neque, in adeo beata regione, satis multa habet propria.

MICH. FRID. LOCHNER *Mungos animalculum & radix*. Norimb. 1715. 4. Radicem *Mungos* a KÆMPFERO Europæ illatam in purpura maligna non absque fructu ægris exhibuit.

BERNHARDINI ZENDRINI *della China China*. Venet. 1715. 8. Practice. *

CHRIST. BERNH. VALENTINI *Tournefortius contractus*. Francof. 1715. fol. Tabulæ sunt methodi Tournefortianæ, & quædam aliena, Chemica, aliaque.

G. W. WEDEL de *Plantagine*. Jen. 1715. Disp.

Et EJUSDEM de *Hyoscyamo*. Ibid. anno eodem.

J. T. GRONOVIIUS *de Camphora*. Leid. 1715. 4. Disp. Habet modum, quo præparatur & depuratur.

MICH. FRID. LOCHNER *de Ananasa*. Norimb. 1716. 4. Libellum, qui cum Hesperidibus VOLCAMERI exstat, recudit auctiorem cum pulchris iconibus.

EJUSDEM *Nerium sive Rhododaphne veterum & recentiorum*. Norimb. 1716. 4. Pene unice philologicus. Icones & hic & fere ubique, alienæ.

IDEM, ut supra dictum, *rariora Besleriani Musei*. an. 1716. a filio JOHANNÆ FRIDERICO descripta fol. edidit, cum plantarum marinarum & fructuum nonnullis iconibus.

R. MORTIMER *art of husbandry*. Lond. 1707. 1716. 8. 2. vol. SEG. Ex aliorum experimentis & opinionibus DALRYMPLE ad ELLIS.

GEOR. ANDR. AGRICOLÆ *versuch der universal vermehrung*. Ratisbon. 1716. fol. & Tom. II. ib. 1717. fol. Novam artem in immensum multiplicandarum arborum proposuit, ex radicibus dissectis, & inoculatis in ramos; deinde foliis cum vel sine oculo infitis, tum alia arcana varia, quæ vero, quantum video, in experimento non responderunt. Conf. BRESL MISC. 1723. Jul. In Anglicam tamen linguam translatus est a R. BRADLEY & editus Lond. 1721. 4. tum in Gallicam.

G. A. AGRICOLÆ Anglice editus titulum habet *a philosophical treatise of husbandry and gardenirey*. Gallice autem sub titulo *l'agriculture parfaite* prodiit Amstel. 1720. 8.

CHRISTIANI KNAUT *Methodus plantarum genuina*. Hall. 1716. 8. Artificialis methodus a numero unice partium floris & involucrorum fructus desumpta, hinc contraria naturæ, quæ numerum sæpius contemnit, quam figuram & proportionem.

J. BOECLER *de vino Argent.* 1716. 4.

Dictionnaire botanique & pharmaceutique, Paris. 1716. 8. *

G. FRANK a FRANKENAU *palingenesia von der künstlichen auferweckung der pflanzen* (fabuloso experimento) versa a J. C. NEHRING, Lips. 1716. 4.

J. A. WEDEL etiam disputationes huc pertinentes sunt: *de calamo aromatico*. Jen. 1718. *Helenio* 1719. *Vincetoxico* 1720. *verbena* 1721.

DE LA ROQUE *Voyage de l'Arabie Heureuse avec un Mémoire concernant l'arbre & le fruit du Caffé* Parisiis & Amstel. 1716. 8. Optimæ notæ, inprimis Appendix, quæ D. GALAND, Librum supra laudatum continet.

J. B. COGROSSI *giunta al Tr. della China China*. Crema. 1716. 4. & *nova giunta*. Crema 1718. 4. Practice *

C. H. ERNDL *flora Japonica*. Dresd. 1716. 4. In ea describitur herbarium Japonicum cum 1360. figuris inter MENZELII schedas repertum, tum herbarium pictum CONR. JOHRENI, denique Theatrum rerum naturalium Brasiliæ COMITIS MAURITII NASSOVICI, cum 555. egregiis stirpium iconibus, quæ omnia Berolini conservantur.

OL. RUDBEK *Rubus humilis Fragaria folio*. Respondit D. KELLANDER. Upsal. 1716. 8. Bona icon parum notæ plantæ.

D. W. TRILLER *de moly Homericæ*. Lips. 1716. 4. eruditissima Disputatio.

G. H. SIEGESBEEK *de rorella*. VVittemb. 1716. 4. Disp. & ipsa ob experimenta utilis.

J. A. WEDEL *de Scordio*. Jen. 1716. 4. Disp.

SAMLUNG *von Naturgeschichte* Breslau 1717. ad 1727. Ad cultum agrorum multa hic habentur, tum ad aliquas plantas œconomicas, v. gr. Onobrychidem, monstra etiam stirpium, &c. de viribus plantarum passim experimenta intercedunt.

M. D. JOHRENI *Vade mecum Botanicum*. Francof. Oder. 1717. 8. Flora ejus loci pauper, secundum TOURNEFORTII classes & genera. In præfatione aliquot plantarum rariorum characteres a GUNDELSHEIMERO suppeditati. Ejus herbarium pulchre delectum ab H. RIBBING Berolini adfervatur. ERNDL *de flor. Japonica*.

M. D. JOHRENI *vade mecum botanici* aliam editionem, quæ citata hic fuit, Colbergæ prodiisse video.

ABRAHAMI REHFELD *Hodegus Botanicus mensstruus*. Hall. 1717. 8. Flora Hallensis, sed nomina mala, plantæ mixtæ hortensibus.

J. FRANCI *de euphrasia*, Francof. 1717. 8.

ALEX. CAMERAR. *de beronica*, Tubing. 1717. 4.

MICH. FRID. LOCHNER *Bellilli Indicum* Nuremb. 1717. 4. Describit speciem Tethyos, qua præparata in India utuntur ad febres ardentes. EJUSD.

EJUSD. de novis Thea & Coffea Succedaneis, Botry Mexicana, Capraria Peruviana Agerati folio, Coffea a la Sultane &c. ibid. eod. anno. Novas aliquot plantas, aut nuper inclarescentes, describit & depingit.

EJUSD. de Acriviola. Exstat etiam in E. N. C.

M. F. LOCHNER etiam est de pareira brava, Norimb. 1719. 4. Eam ostendit esse Campebam PISONIS, non autem BUTUA ZANONI, & observationes practicas pro confirmandis viribus antinephriticis addit.

FRID. FRISIUS Zvey Wundervvürdige gevvächse Cereus Peruvianus angulosus minor und Ananas, so an. 1717. zu Altenburg geblüht. *

URB. HIÆRNÆ de Nylobalsamo ab Auctore invento. Helm. 1717. 8. *

BARTHOLOMÆI de MARTINIS nuovo invento cioè aggiunta al genere delle Anagallidi acquatiche di due non più prodotte in luce. Veron. 1718. 8. cum icon. SEG.

CAROL. NIC. LANGII beschreibung des schädlichen genusses der Kornzapfen. Lucern. 1717. 8. Bona descriptio Clavi fecalini, sive grani luxuriantis, unde morbus stupidus & gangrænosus artuum sequitur.

R. J. CAMERARII de Ulmaria. Disp. Tubing. 1717. 4.

JULII PONTEDERÆ compendium tabularum botanicarum. Patav. 1718. 4. maj. Cum de vacua cathedra concertarent JOH. SCHEUCHZERUS, LUD. a RIPA, & JULIUS, omnes scripto aliquo famam augere tentarunt: & iste quidem a patre LAURENTIO ad Agriculturam educatus, matre ita Botanica, ut filio etiam nunc in Alpibus absente, horti Patavini curam gerat (Antiquitat. p. 3.) Stirpes in Baldo Monte & Alpibus collectas, quarum promittebat tabulas, descripsit. Istæ nunquam editæ sunt: plantæ vero hoc Libro recensitæ multas varietates habent admixtas.

LUDOVICI a RIPA historia universalis plantarum prop situm. Patav. 1718. 4. Ex J. BAHUINO & veteribus conscripsit Librum, & Philologica aliqua adpersit.

ROBERT sur la culture des Arbres fruitiers. Parisiis 1718. 12. SEG. *

Discours sur le progrès de la Botanique par M. de JUSSIEU. Paris. 1718. 4. Brevis & historicus.

La Manière de cultiver la vigne & faire le vin de Champagne. Parisiis 1718. 4. *

Four essays on English grapes shovving they vvill make the best of vvines. Lond. 1718. 8. SEG. *

SEBASTIANI VAILLANT Sermo de structura florum. Gall. & Lat. Leid. 1718. 4. & ejusdem duo novarum plantarum genera Hanover. 1718. 4. (SEG.), Araliastri nempe & Boerhaaviæ. Acerbior equidem in TOURNEFORTIUM, de se certe meritum, cæterum plenus egregiarum observationum, in arctissimum spatium stipatarum, & per inductiones ad totas classes adplicatarum. Subjecta sunt duo genera Boerhaaviæ, quod nomen male inconstans postea mutavit Auctor, & Araliastri, nempe GINSENG.

Hæc celebris planta tunc maxime innotuerat, cujus loco KÆMPFERUS similem non tamen bacciferam, adeoque diversam descripserat. Veriorem P. LAFITAU in Canadensibus sylvis reperit (Journ. de Trevoux 1718. Janv.) & descripsit an. 1718. 12. cum titulo: Mémoire concernant la plante de Ginseng découverte en Canada, KÆMPFERIQUE errorem vindicavit, qui Libellus recusatus est in collectione des voyages au Nord. Objectionem contra plantam suam, repetitam a pelluciditate celeberrimæ radicis, quæ non esset in Canadensi, diluerat IDEM P. LAFITAU in iisdem Diariis Trevultiensibus 1718. Mense Martio. VAILANTIUS Botanico more novum genus constituit, audax in mutando, Aurelianæ nomine, quod imposuerat Jesuita.

HENRICI BERNHARDI RUPP Flora Jenensis. Prima editio a H. SCHUTTF edita est Jenæ an. 1718. altera auctior a D. FROELICH an. 1726. 8. tertiam ego ex schedis Auctoris posthumis, meisque observationibus tertia parte auctiorem edidi Jenæ an. 1744. 8. Vir ad Botanicen natus, non aliam spirabat felicitatem, indefessus laboribus, memoriæ tenacissimæ, qui plurimas pulchras Stirpes Germaniæ adseruerit. In magnis generibus, & in cryptogamia minus valuit, cum stirpes siccas negligenter conservare.

De moribus RUPPII vide HOPPE von den vveidenrosen p. 4.

J. CHRISTIAN LEHMAN blumen garten im vvinter, Lips. 1718. 1750. 4. sive nicuvve volmaakte plantagie in den vvinter, Amstel. 1718. 8. Utitur diviso tepidario, in quo varii gra-

gradus caloris stirpibus impertiri possunt, solo situ mutato. Re ipsa fidem fecit verbis.

WILH. FORSTER EMANUEL de *aristolochia*, Altdorf. 1748. 4.

S. SWITZER *Noblemans gentlemans and gardeners recreation*. Lond. 1718. 3. vol. Continet totam rem rusticam, & nemorum hortorumque cultum.

R. BRADLEY *the gentleman and gardeners Kalendar*. Lond. 1718. 8. (SEG.) Gallice vero Parisiis 1743. 8. cum descriptione hibernaculi.

PIETRO VETTORI *delle lodi degli Ulivi*, nova editio colle annotazioni del D. GIUSEPPE BIANCHINI. Florent. 1718. Vide supra suo loco.

JOH. CAR. SPIES *Roris marini coronarii historia medica*. Helmstad. 1718. 4.

PATRICK BLAIR *miscellaneous observations in Physic Anatomy Surgery and Botanic*. Lond. 1718. 8. In elegante Libro Botanica aliqua continentur, ex itinere decerpta WALLICO.

JOH. FRANK *erhöhetes flachsseiden Kraut*. Ulm. 1718. 8. Loquax & inanis.

CORN. de BRUYN *iter posterius Russicum, Persicum, & Indicum* hoc anno in fol. descriptum, habet aliquas stirpium icones.

G. W. WEDEL de *Colchico*. Jen. 1718. 4. Disp.

J. A. WEDEL de *Calamo aromatico*, ibid. Disp. 4.

HOLSTEIN de *Rhabarbaro*. Leid. 1718. 4. Disp.

In KOLBI itinere ad C. B. S. plantarum Catalogus habetur ex herbario OLDENLANDII.

JOH. SCHEUCHZER *Methodus Graminum & adfinium*. Tig. 1719. 8. & EJUSDEM *Agrostographia*. ibid. 1719. 4. Prius Opusculum est idea posterioris, incredibili nati labore, quo quadringentæ plantæ per minutissima, & ipsos intimos florum characteres terminantur. Icones & specierum & characterum fidissimæ. Exotica Gramina paulo pauciora, neque synonymorum satis, neque satis explicatæ notæ specifici discriminis plantarum similitum.

JOSEPHI MONTI *Catalogi stirpium Agri Bononiensis prodromus*. Bonon. 1719. 4. Hoc nomine Graminum historia continetur, inter quæ pulchra aliqua ex beatissima Italia.

GEORGII ANDRÆ HELWINS *Flora campana, sive Pulsatilla*. Lips. 1719. 4. Aliquæ species Pulsatillarum septentrionalium, cum varietatibus, iconibus expressit.

JOHANNIS JACOBI DILLENII *catalogus plantarum circa Giessam nascentium*. Francof. 1719. 8. & ejusdem *Appendix*. Hoc primum Opere innotuit novum Botanicæ fidus. Stirpes in universum in angusto spatio terræ habet plurimas: inter eas numerosas de minimarum gente, & nova genera, lynceis eruenda oculis, bene multa. Muscos primus ita disposuit, ut omnes recentiores imitati sint: Fungos, ut multi. De methodis agit in *præfatione*, pronior in *RAJUM*. Contra *RIVINUM*, impatientem liberius judicantis juvenis, acriter se tuitus est. Nova genera, quæ deessent in *TOURNEFORTIANIS* Institutionibus, undique collegit & characteres definivit, & ipse sculpsit. Vir cui ob varia beneficia, sed inprimis ob amicitiam, plurimum debeo, quem virum laudavi, extinctum desidero & veneror.

M. LIBENTANS de *Rachelis deliciis Dudaim*, VVittemb. 1719. 4. philologice.

In B. S. ALBINI *oratione de anatome comparata*, Leid. 1719. 4. exstat œconomia vegetabilis Vaillantiana.

CONC. MICH. VALENTINI de *macis*, Giess. 1719. 4.

JOH. HENR. COHAUSEN *nieuwe Thee Tafel*. Amstelod. 1719. 8. & Germanice an. 1718. 8. Compilatio formularum, quibus infusa varia theiformia continentur.

GOTTLIEB CHRIST. von HAPPEN *beantwortung auf C. WOLFS erläuterung der entdeckung von vermehrung des getraides*. Berolin. 1719. 4. *

J. A. WEDEL de *Vincetoxico* Disp. Jen. 1719. 4. & de *Helenio* ibid. Disp.

M. ALBERTI de *vero usu Arnica*. Hall. 1719. 4. Disp.

PETSCHKE de *Millefolio*. Hall. 1719. 4. Disp.

MICH. BERNH. VALENTINI *Viridarium reformatum*. Francof. 1720. fol. Splendidum Opus cum numerosissimis tabulis. Harum aliquas ab illustrissima persona accepit, partim a MERIANO sculptas, partim ex aliis Libris descriptas, etiam ex LÆMPFERO & FRANCISCO HERNANDEZ. Totum etiam florilegium THEODORI de BRY repetitum inseruit Operi. Ad icones MERIANEAS, ex TOURNEFORTIO ordinem addidit bonus senex, & vium enumerationem, & aliarum specierum catalogum. Errores plurimi intercurrerunt.

Ita

Ita Julia herba cum Agrimonix nomine, Locusta cum titulo Rubix lutea spinosa, Rosa cum Pæoniæ feminæ alterius titulo sculpta exstant.

JULII PONTEDERÆ Anthologia L. III. & *Dissertationes botanicae* XI. Patav. 1720. 4. Priori Libro describit characteres plantarum multarum, novarum etiam aut varietatum, & agit de methodo, atque *TOURNEFORTIANAM* reformat: in sexum iniquior. In altera flores compositos disponit, sed ut quidem mihi videtur, minime feliciter. Turbat enim classes naturales, capitatas aliquas miscet planipetalis, quæ vel lacte suo coherent, scabiosas infert corymbiferis, adeo distinctas staminibus liberis, &c. Etiam ibi bonas observationes aliquas habet characterum.

HERMANNI BOERHAAVE Index alter plantarum Horti Lugduno-Batavi. Leid. 1720. 4. Prior Index an. 1710. prodierat, hic multum auctus & reformatus plantas habet secundum *HERMANNIANAM* methodum dispositas. Characteres generum præfigit naturales, primus aut inter primos, staminibus tubisque minime neglectis, icones rariorum addidit, speciosissimum genus Lepido-Cono & Hypophyllo-Carpodendrorum constituit, species novas plurimas & rarissimas recensuit.

JOHANNIS de BUCHWALD specimen Medico practico-botanicum. Hafn. 1720. 4. & 1721. 8. Est index quadrilinguis stirpium officinalium, cum adglutinis secundum paginas stirpibus, non absque quibusdam erroribus. Vires adjecit ex bonis Auctoribus, & propriis experimentis, sæpe minus vulgo notas. *

PATRIK BLAIR Botanical Essays. Londini 1720. 8. Maxima pars pertinet ad fabricam subtilem. Sexum tuetur, atque vim fecundantem pollinis staminum, cui tamen veras Gemmas inesse negat, cum *VAILLANTIO*. In III. specimen de methodis, de partibus plantarum erudite disputat, *MORISONO* tamen, quam *RAIO*, iniquior.

GEORGII WOLFG. WEDELII Exercitationum Philologico-Medicarum Cent. I. prodiit an. 1702. Jenæ 4. & *secunda pars* I. 1720. 4. Hoc nomine collectio venit programmatum, quibus varia amœniora ex re herbaria, aliisque artibus cum medicina cognatis, tractavit, stirpes etiam numerosas veterum eruere, & ad cognitarum aliquas referre tentavit, non absque acumine, quantum quidem id fert institutum.

A. Q. RIVINI responsio ad objectiones DILLENII. Lips. 1720. 12. Responsio senis bene meriti sed irati, quem naturam consulere vetabat ætas.

Histoire naturelle du Cacao & du Sucre. Amstelod. 1720. (& Parisiis, nisi fallor, an. 1719.) Opus Anonymi, nisi fallor, Chirurgi, Chemiæ non penitus imperiti. Notitiam florum & fructus Cacao meliorem dat, quam *TOURNEFORTIUS*, tum analysin chemicam: & Sacchari fabricam ex propria observatione. Aliqua etiam interspergit de utilitate balsami Copaii, ejusque analysi, de Banana, Papaia, Manihoc, &c.

OLAI RUDBEK Index plantarum itineris Laponici an. 1695. suscepti exstat in *ACT. SUEC.* an. 1720. Raras stirpes habet, etsi paucas icones duas eximias.

JOH. LINDER Szwänska färga konst. Stockholm 1720. 8. Continet descriptionem plantarum sponte in Suecia nascentium, quarum in arte tinctoria usus est, ubi meminisse oportet, ad minorem illam tincturam pertinere: nam constantes inde colores & perpetui non obtinentur, nisi forte ex Alni cortice.

R. BRADLEY the compleat Seedsman. by *BENJ. TOWNSHEND*, cum catalogo seminum L. 1720. 8.

JOH. FRANK de Momordica, & *JOH. JACOBI KLEINKNECHT de Scordio*. Ulm. 1720. 8.

FRANC. ERN. BRUKMANN Tubera terra. 1720. 4.

GEORGII CRUMP (Americani) de Arundine saccharifera. Leid. 1720. Disp. Cocturam Sacchari describit, non valde Botanicus.

DAN. KELLANDER PETRI F. de seminibus, Leid. 1720. 4.

JUL. BERNARD. v. ROHR Einleitung zu der allgemeinen land und feld wirthschafts kunst der Teutschen, Lips. 1720. 8.

ABRAHAMI VATER eruditæ disputationes de coralliorum natura, preparatis & usu, VVittemb 1740. 4. *de balsamo de Mecca* progr. ibid. 1720. 4. *ypecacoanha vi febrifuga & antidysenterica*, 1732. *laurocerasi indole venenata* 1737.

MATTH. ERN. BORETII disp. de hieraciis Prussicis, Regiomont. 1720. 4.

J. J. BAJER (eruditi viri) de Artemisia. Altdorf. 1720. 4. Disp.

- J. A. SLEVOGT de *Gentiana*. Jen. 1720. 4. Disp.
- A. VATER de *balsamo de Mecha*. VVittemb. 1720. 4. Disp.
- G. W. WEDEL de *Sambuco*. 1720. 4. Disp.
- LALROT de *Gestrucia*. Upsal. 1720. Habet etiam stirpes indigenas. *
- GOTTLOB SCHOBER de *periculo a seminibus liliaceis & secalinis nigris corruptis cum farina commistis, & loco alimenti adsumptis*. A. E. 1723. p. 446.
- J. FRID. HENKEL *flora saturnizans, oder verwandschafft der Pflanzen mit dem Mineral-Reich*. Lips. 1721. 8. Paulum BOHEMIANUS, archæum terræ statuit & futuram orbis terrarum vitrificationem. Ortum spontaneum plantarum defendit. Salicorniam descripsit, ejus herbæ dedit analysin chemicam, inque ea salem marinum invenit cum sale fixo, ex isto cum acido spiritu cœruleum colorem obtinuit.
- JOH. CHRISTIANI BUXBAUM *enumeratio plantarum agri Hallensis accuratior*. Hall. 1721. 8. Vernilior paulum, & morum dissolutiorum; cæterum minime contemnendum numerum, nec ubique vulgarium stirpium, circa Halam invenit, in quibus etiam novæ aliquæ, earumque nonnullæ ex cryptogamia exstant: cum iconibus paucis. Properato vero studio Librum edidit, quem COSCHWIZIUM noverat sibi subrepturum.
- CHRISTOPHORI HELWIG *monatliche kraüter lust oder neu angelegter nutz und lustgarten*, Zittau. 1721. 8. In primo opusculo plantas & secundum mentes, & alphabetico ordine, cum brevi virium enumeratione: tum exotica ex eo opere excerpta tradit, quod statim dicam. Nempe EJ. *Exotica curiosa oder beschreibung der ausländischen dingen aus dem naturreiche* prodiit F. Lips. 1719. 8. simplicia medicamenta secundum alphabeti ordinem disponit, rapsodus. EJ. sub nomine VAL. KRAUTERMANN, est *blumen und kraüter buch* F. Lips. 1733. 8. Aliqua de plantarum figura & viribus, vulgaria.
- J. C. SPIES de *Vanigliis* Helmstatt. 1721. 4. de *radicibus antinephriticis* 1722. de *fructibus & arboribus antinephriticis* 1722. *herbis & floribus antinephriticis* 1722. de *valeriana* 1724.
- J. CHRISTOPH. SCHMIDT de *analogia regni vegetabilis cum animali*, Basil. 1721. 4.
- MOOR'S *Englands interest or the gentleman and farmers friend*, Lond. 1721. 8. HARL.
- L. P. THUMMIG de *anatome foliorum*. A. ERUD. 1721. Jan.
- L. P. THUMMIG etiam sunt *meletemata varii argumenti*, Brunsvvic. 1721. 4. de *arboribus ex foliis educandis &c.* quæ fuit *disquisitio de arboribus ex foliis educandis*, Hall. 1721. 4.
- W. B. NEBEL etiam est de *plantis dorsiferis*, Heidelberg. 1721. 4.
- LEONH. FRID. MEISNER de *Thea, Coffea, Chocolata*. Nuremb. 1721. 8. Est disputatio inauguralis Pragæ defensa ex SPONIO, BREYNIO & aliis compilata
- R. BRADLEY *the virtue and use of Coffee*. Londini 1721. 8. *Historia Coffeæ ex Auctoribus variis*. Satis negligens.
- CHRIST. LUD. WILHELM *Colchicum Alexipharmacum & Venenum*. Lips. 1721. 4. Vannum satis Opusculum.
- G. W. WEDEL de *Polypodio*. Jen. 1721. 4.
- W. B. NEBEL de *Helleboro nigro*. Basil. 1721. 4. Disp.
- ANTONII van LEEUWENHOECK observationes huc refero, quod eo anno ultimæ, nisi fallor, prodierint. Pertinent ad fabricam subtilem ligni, medullæ, corticis, feminum, gallarum. Ecce brevem catalogum.
- PH. TR. 1676. de *textura arborum & Vite*.
- N. 136. de *Moxa*.
- N. 148. de *apparatu vasorum in plantis*.
- N. 205. de *variis feminibus*.
- N. 213. de *diversitate ligni pro diverso tempore quo cæditur*.
- N. 235. de *radicibus vegetabilium*.
- N. 287. de *femine Aurantiorum & ejus germinatione*.
- N. 296. de *cortice arborum*.
- N. 297. de *capsulis feminalibus Polypodii*.
- N. 316. de *Coralliis rubris*.
- N. 367. de *vasis ligni & de feminibus plantarum*.
- N. 369. de *spiraculis foliorum Buxi*. Sed tota Opera evolvere oportet.

SEBASTIANUS VAILLANT obiit an. 1722. Huc ergo pertinet *Botanicon Parisiense*. Leidæ 1727. fol. curante **BOERHAAVIO** editum, qui schedas confusas & oppignoratas icones, redemit & quantum potuit ordinavit. Icones pulcherrimæ & Muscorum plurimæ, & optimæ, plantæ subtiliores numerosæ, multum characterum & observationum. Dolendum est autem, adeo multa confuse, vitiose edita, icones absque interpretatione relictas, plantæ repetitas, vitia passim intercurrisse in descriptionibus.

JOH. BARTH. ADAMI BERINGERI *Plantarum exoticarum perennium catalogus*. Herbi-pol. 1722. fol. Brevis & solorum nominum.

J. AHLICH. *hortus Suecicus*. Stokh. 1722. 8. hortulani Opus. *

JOH. GEORG. DUVERNOI *designatio plantarum circa arcem Tubingensem florentium*. Tübing. 1722. 8. Nomina Tournefortiana: plantæ, ut in angusto loco, paucae, raræ tamen aliquæ.

A. VATER *Catalogus horti Wittembergensis*. VVittemberg. 1722. 4. & 1738. 8. cum icone.

LAUR. HEISTER *de collectione simplicium*, Helmst. 1722. 4.

J. HENRICISCHULZII, non quidem botanici, eruditi tamen viri numerosissimæ sunt disputationes botanicæ, ut de elaterio, Altdorf. 1722. sub nomine **EVERHARDI**. De aloë ibid. 1723. de colocynthide, Hall. 1734. de ruta medicamento & veneno. 1735. 4. de persicaria acida **JUNGERMANNI**. 1735. de fructibus borais 1737. de scilla 1739. de melissa 1739. de asaro 1739. de radice iridis 1739. de chamamelo 1739. de oleo olivarum 1740. de lilio convallium 1742. de convenientia kermes & cochenilla 1743. de ypecacoanha Americana 1744. de rubo idæo 1744.

J. MILLER *Compendious herbal*. Londini. 1722. 8.

Le SAUSSAY *Tr. des Jardinages*. Paris. 1722. 12. *

Anonymi *conjectures physiques sur les raisons pourquoi on laboure les terres*. J. de **TREV.** 1722. p. 509. ut nempe secundum Auctorem aer terræ misceatur.

MICHAELIS ANGELI TILLI *Hortus Pisanus*. Florent. 1723. fol. Per Africam itinera fecerat (**REDI** vol. Op. V. p. 128.) felix horti Pisani restaurator. Excellit imprimis in stirpibus Italicis, ab indefesso **MICHELIO** congestis. Accedit **J. PONTEDERÆ** epistola, in qua sexus ope Acetosas a Lapathis distinguit. Sed repugnat natura, cum acido sapore & androgyna & dioica dentur Lapatha. Miror apud Tillium numerum stirpium, & quod nulla fere eorum desit, quas habet **TOURNEFORTIUS**, etiam quas certo novi, nusquam in rerum natura existere.

JOH. JACOBI SCHEUCHZER *novem itinera per Alpinas regiones facta*. Leid. 1723. 4. 2. vol. Hac editione priora continentur itinera, cum iisdem iconibus: acceperunt vero sex alia, quorum in Alpes sunt quatuor priora, & easdem observationes botanicas habent, plurimas tamen & pulchriores sextum. Vix alias unquam Auctor longioribus itineribus Alpes percurrit, & majorem partem earum vidit, maxime Rheticas stirpium rariorum feracissimas. Hinc multa cum videret primus, & plantas invenit & characteres perfecit. Meditabatur historiam stirpium Helvetiæ, sed ea cum ejus vita intercidit. Cum inmensa suscepisset Opera, passim ultima desideratur manus.

CHRIST. HENR. ENRDTL *plantarum circa thermas Teplicenses elenchus*, Norimb. 1723. 4. prodiit cum **EJUS** αὐτοσχέδιο de iis thermis.

J. ALB. GESNER. *de zingibere*, Altdorf. 1723. 4.

CHRISTIAN GOTTFRID STENZEL *de salvia in infuso adhibenda*, VVitteb. 1723. 4.

JACQUES BOULLAI *Manière de bien cultiver la Vigne*. Orleans 1723. 8. Vinitoris Opus. *

GEORG. KNOWLES *materia medica*. Londini 1723. fol. Plantæ exoticæ quadringentæ poetice describuntur.

JOH. MAR. ROSSI *de interpretandis Simplicium facultatibus*. Patav. 1723. 4. ex Act. Erud. *

P. A. MICHELI *relazione dell'erba Orobanche*. Fiorenz. 1723. 8. 1743. 8. Modum indicat, quo hæc noxia planta possit deleri.

SEBASTIANI VAILLANT *Botanicon Parisiense*. Leid. 1723. 8. Est prodromus magni Operis.

LUD. THUMMIG *versuch einer gründlichen Erläuterung, &c.* Hall. 1723. 8. De arboribus ex foliis educandis: de modo flores & fructus in arena conservandi: de plantatione arborum inversa.

PATRICK BLAIR *Pharmaco-botanologia*. Decad. I. ad VII. Lond. 1723. & 1728. 4. Meum exemplar in Hedera definit, & una pauciorum partem habet **SEGUIER**, ut credam ibi Opus abruptum fuisse. Descriptiones stirpium, quæ in officinis veneunt, virium enumeratio ex propriis nonnunquam experimentis. Croci fusa historia.

J. FRANCI de *Urtica*. Diling. 1723. 8. *

THOMÆ DALE de *Pareira brava*. Leid. 1723. 4. Disp. Compilatio, absque proprio experimento.

The natural history of chocolate, Lond. 1724. 8. * **HARL.**

RICHARD BRADLEY *new improvements of planting and gardening*. Lond. 1724. 8. In tres partes divisus Liber. In primo Auctor defendit circulationem succi: varietates tribuit miscelæ pollinis masculini diversarum. In altero enumerat hortenses stirpes, quæ ornatui serviunt, & cultum præcipit. In tertio cultum stirpium exoticarum in hybernaculis tradit: præcoces plantæ ut obtineantur docet. Viridarium Herefordiense satis utile videtur. Sed quidem.

EJUSDEM *Treatise concerning the manner of fallowing ground, raising of grass seeds, and training of line and hemp*. Lond. 1724. 4. *

EJUSDEM *new experiments and observations relating to the generation of plants*. Lond. 1724. 8. *

J. M. VERDRIES *pulvisculi staminum*. A. ERUD. 1724. p. 409.

JOH. RAI *synopsis methodica stirpium Britannicarum*. Ed. III. Lond. 500. plantis auctior. 1724. 8. Editor **DILLENII**, quinquagesimo, & quod accedit, a prima editione catalogi anno, Librum recolens, addidit observationes numerosissimorum amatorum rei herbariæ, qui in omnibus Angliæ angulis interim stirpes erant rimati. Adjecit plurimos inprimis Muscos, icones bene multas, propria manu sculptas, notas characteristicas, varietates demum, justo frequentius pro speciebus habitas.

COCK *the manner of raising ordering and improving forest trees*, Lond. 1728. 8. *
Treatise concerning the manner of fallowing ground raising of grass seeds and training of Lint and Hemp, Lond. 1724. 8.

HIERONYMI LUDOLF de *fabis Caffæ*, Erfurt. 1724. 4.

N. K. P. S. *der edle scharboks oder fieberklee*, Gorliz. 1724. 8. Plurimæ historiæ curationum ope menyanthi peractarum.

JOH. CASPARI GEMEINHART *Catalogus plantarum circa Laubam nascentium*. Budissin. 1724. 8. Minime dives flora, cryptogamia omnino destituta, male aucta hortensibus plantis.

CHRISTOPHORI CONRADI SICELLI *diatr. de Belladonna*. Jenæ 1724. 8. Propriam de noxia vi hujus plantæ observationem habet.

C. COMMELIN *horti medici Amstelodamensis plantæ usuales*. Amstelod. 1724. 8.

Index materia medica. Lond. 1724. 4. Habet nomina plantarum.

STEPHEN SWITZERS *practical fruitgardener*. Lond. 1724. 8. *

R. CHAMBERS de *Ribes Arabum & Ligno Rhodio*. Leid. Disp. 1724.

B. STÆHELINI *specimen anatomico botanicum*. Basil. 1724. 4.

JACOBI DOUGLAS *Lilium Sarniense*. Lond. 1725. fol. Duo sunt Libelli viri eruditissimi, & in omnibus laboribus patientissimi. Primo unicam plantam fusissime describit, historice & botanice. Altero baccam Coffeæ bilocularem dipyrenam, cum Synonymis.

STEPH. SWITZER *practical Kitchengardener*. Lond. 1725. 8. *

LUD. FERN. MARSIGLI *histoire physique de la Mer*. Amstelod. 1725. fol. Splendido Opere varia quidem continentur, sed inprimis multæ Coralliorum icones, cum ea observatione expansionis floris, quæ nunc ad Polypos traducitur.

LOVIS FEUILLEE *Journal d'un voyage du Sud*. Paris. 1714. 4. Suite du Journal. Ibid. 1725. 4. In utroque tomo nitidissimas icones habet plantarum Peruvianarum, quas prope mare nascentes reperit.

De la **FERRIERE** *le menage universel de la ville & des champs, & le jardinier au gout de temps*, Bruxell. 1725. 8. *

CHRIST. WOLF II. *phenomenon singulare de malo pomifero absque floribus ad rationes phisicas revocatum*, Marburgi 1727. 4. huc etiam facit.

DESCHIZAUK *mémoires &c. adde: & description d'un voyage fait à Petersbourg*.

CHRISTIAN WOLFENS *entdeckungen der wahren ursache der vermehrung des getreydes*. Hall.

Hall. 1725. 4. & *Erläuterung der Entdeckung*. Lips. 1730. 4. Inventum est, augeri fecunditatem Tritici, & Cerealium, quando & raro feruntur, & profunde, aut nodi aliquot terræ immerguntur: ita fieri, ut tot culmi repullulent, quot nodi radices egerint. Altero Opusculo objectiones resolvit. Anglice versum Opus prodiit Londini 1734. 8.

J. F. *Untersuchung der Sonnenblume (Helianthe)*. Ulm. 1725. 8. *

MATTHÆI HILLER *Hierophyticum*. Ultrajecti 1725. 4. Collectio ex herbariis & antiquariis, cum catalogo plantarum in Palæstina nascentium.

DESHIZAUX *Mémoires pour l'histoire naturelle des plantes de Russie*. Petrop. 1725. 8. *

FR. E. BRUKMAN *de lapide violaceo*. VVolfenbittel 1725. 4. Lichene nempe pulverulento rubro, qui certæ lapidum speciei copiosissime adhæret in ea parte, quæ soli obvertitur, circa Andreasberg in Hercynia, & alibi frequens.

EJUSDEM *de Fungo hypoxylon digitato*. 1725. 4.

J. JAC. FICK *de rore marino*, Jen. 1725. 4.

Hoc etiam anno lego impressum esse BEATI FR. LANGII *catalogum plantarum circa Lucernam Helvetia collectarum cum descriptione itineris in Monte Pilati*. Sed negant amici unquam impressum esse, etsi passim in Diariis recensetur & habeat SEGUIER. ad annum 1724.

JOH. LAWRENCE *new System of agriculture*. Lond. 1726. fol. Libris quinque describit omne arborum genus, sive sylvestrium sive hortensium, plantas porro olitorias, & aliquas coronarias, cum cultu & utilitatibus. Multa etiam & magna non raro fragmenta aliunde collegit. In artificiis Hortulanorum diligens & multus est.

RICHARD BRADLEY *Survey of antient husbandry*. Lond. 1726. 8. Hic Auctor plurima scripsit de re rustica, sed paulo plura ex lectis Libris & aliorum sermonibus, quam ex proprio experimento. In hoc Opere exscribit veteres Georgicos, satis nonnunquam ruditer, ita iis usus, ut ad Angliæ solum ditandum adplicet omnia, properatis nonnumquam usus consiliis, ut in eo loco, ubi Vites jubet ferere in nimis boreali, & humida regione.

EJUSDEM *general treatise on husbandry and gardening*. Lond. 1726. 8. T. I. Parte prima de villa instruenda præcepta tradit, quæ ad curam Animalium ad ferenda Trifolia, ad fecundandum quodcunque ingratum soli genus, & hujusmodi adminicula telluris pertinent. In altera parte varia compilat, de sexu, circulatione succi. T. II. Arborum fructiferarum locos natales, species ex Gallia repetitas laudatiores, earum cultum tradit, & ignis in præcipitando tempore ferendi fructus efficaciam. Ananasæ porro cultum, & Coffeæ; utilitates pulveris coriacii, thermometri usum ad imitationem climatum docet.

JOH. MARTYN *Tabula synoptica plantarum ad methodum Rajanam*. Lond. 1726. fol. brevissime. *

PAOLO BARTOLOMEO CLARICI *istoria e cultura delle piante più ragguardevoli pe' l'fiore*. Ven. 1726. 4. Sacerdotis Opus posthumum. Eruditionis satis abunde, botanicæ utilitatis minus, florum plenorum plurimum. Tournefortium vero sequitur. In Hesperidum cultu fusus.

COSMA TRINCI *l'Agricoltura sperimentata, che insegna la maniera la più sicura di piantar piante utili, &c.* Lucca 1726. 8. 1736. 8. SEG. quod maxima pars in arborum cultu versetur.

P. Le Breton *Observations sur la plante qui porte le Caffè*. J. de TREV. 1726. p. 466. Cujus etiam aliæ observationes contra LABATUM in eodem Diario plurimæ habentur.

In LUDOVICI FERDINANDI MARSILII *Danubio Pannonico Mysico*, Hagæ 1726. folio max. edito, Tomus VI. continet catalogum plantarum spontanearum Hungariæ, pauperem & suspectum, valde enim dubium videtur, Malvam v. gr. arboream provenire Budæ.

JOH. JACOBI BAÏER *historia horti medici Altdorfini*. Altdorf. 1726. 4.

GEORGII ANDRÆE HELVING *supplementum flora Prussica*. Gedani 1726. 4. Theologi quidem, neque tamen imperiti in artificiis ad colligendas & conservandas stirpes pertinentibus. Pleræque plantæ, hic recensitæ, varietates sunt omnino: icones aliquas adjecit.

DAVID WIPACHER *flora Lipsiensis*. Lips. 1726. 4. Methodus Rivini, plantæ aliquæ raræ, novæ nullæ, nomina mala.

J. E. HEBENSTREIT *de continuanda Rivinorum industria*. Lips. 1726. 4. RIVINI posthumas tabulas schedasque scribit.

BATTY LANGLEY *Pomona*. London. 1727. fol. magn. In theoria ab HALESIO recepit, quod folia

folia attrahant succum, ejusque adscensum accelerent. Inde multa concludit ad methodum corrigendi luxuriam foliorum, ad amputationem, &c. Icones porro & descriptiones dedit optimarum specierum ex omni genere arborum fructiferarum, cum foliis. Adjecta est *HUGONIS STRAFFORD* Diss. de optimis speciebus pomorum ex quibus fiat Sicera, agrestibus nempe vel spontaneis, vel certe ex feminibus natis.

JACOBI DOUGLAS description and history of the Coffytree. London. 1727. fol. Eruditissima collectio omnium fere, quæ de Coffea scripta sunt, descriptione partium omnium, & cultus, & historia invalescentis sensim bibendi moris, &c.

S. J. *The vineyard in 4. parts*. Lond. 1727. 8. Vini novum proventum in Anglia & parandi modum describit in P. III. *

STEPHEN HALES vegetable Statics. London 1727. 8. & Gallice redditæ a D. de *BUF-FON*. Paris. 1733. 4. nuper vero Germanice. Hall. 1747. 4. Eximium Opus & unicum. Experimentis novis, repetitis, ad summam certitudinem evexit transpirationem stirpium: vim qua succum attrahunt radices, qua idem adscendit, qua a foliis attrahitur: directionem succi, alternatim adscendentis in calore, in frigore descendente per eadem vasa: attractionem aeris. Ea occasione aeris fixi in corporibus copiam infinitis experimentis demonstrat: aliqua etiam de acidulis addit.

RICHARDI BRADLEY history of succulent plants. London. 1717. ad 1727. Quinque sunt Decades iconum, totidem plantarum ex genere succulento, cum dictione Latina valde barbara.

EFJUSDEM compleat body of husbandry. London. 1727. 8. Plurima de arte emendandi solum, de variis generibus fimi, de solorum indole, de correctione paludum, ericetorum utilitate, necessitate mutandorum per annos seminum, &c.

CALEB THRELKELD synopsis stirpium Hibernicarum. Dublin. 1727. 8. Neque dives flora, neque casta, scripta ab Auctore, qui vix unquam domum reliquit, sed collatis undique stirpibus & manu D. *MOLYNEAUX* scriptis codicibus usus est, rudis in generibus difficilioribus, & tamen temerarius, in definiendo de synonymis, in corrigendo *DILLENIO*. In appendice pulchriores & rariores exstant stirpes D. *MOLYNEUX*. Nomina tamen ficta non invenies apud *THRELKELDUM*.

JOH. MARTYN Methodus plantarum circa Cantabrigiam nascentium. Londin. 1727. 12. Species Rajani catalogi, dispositæ in ordinem *BOERHAAVII*, characteres adjecti, nomina generum nova, aliqua inventa.

ICONUM REGIARUM hoc anno in *Commentariis Academia Regia Scientiarum* historia exstat. Nihil pulchrius vel cogitari potest, cum a summis artificibus & pingantur, & sculphantur. Sed pretium tantum est, ut apud privatos vix possint expectari. Inceptæ sunt jubente *GASTONE BORBONIO* a *ROBERTO*, continuatæ a D. *JOUBERT* & *AUBRIET* (*GARIDEL* præf.)

HERMANNI BOERHAAVE historia plantarum. 1727. cum falso titulo *Roma*. Turpissimus est codex prælectionum *BOERHAAVIANARUM* in horto Academico habitarum, neque tamen absque utilibus tum practicis, tum botanicis observationibus.

JOH. HIERONYMI ZANICHELLI de Rusco. Venet. 1727. 8. Baccas Rusci tostas, & ad modum Coffeæ paratas, gratum præbere potum, & valde diureticum expertus est. Icones addidit.

J. de la *CROIX* *Connubia florum*. Paris. 1728. *

JEAN BOUILLET Lettre écrite au sujet de la Rubarde. Beziers 1727. 4.

C. J. *TREW. beschreibung der grossen Americanischen Aloe*. Nuremberg. 1727. 4.

C. J. *TREW* citata aloës descriptio valde accurata est, cum iconibus characteribus in flore, staminibus & fructu, & tabulis diurni incrementi.

MATTHIÆ ERNESTI BORETII de analoga plantarum & animalium anatome, Regiomont. 1727. 4.

PETRI HAMNERIN de viribus plantarum indigenarum, Upsal. 1727. 4.

MART. ANASTASII ORTH montes Franconia vitibus fertilissimi, VVurtzburg 1727. 4.

BATTY LANGLEY newv principles of gardening adde: or the laying out and planting pastures, groves, vvildernesses, labyrinths, Parks, &c.

J. *ADOLPHI JACOBÆI de structura & vegetatione plantarum*. Hafn. 1727. 8. LINN. *

- MAGNI STRIDTBERG *grundelig Kunskap om Svenska akerbruket*. Stokh. 1727. 8. SEG. *
- F. E. BRUCKMAN *de fructu Coszodrevina*. Brunsv. 1727. 4. Est Pinus humilis.
- EJUSDEM *de Arbore Limbouve Drevvo*. ibid. Est Pinaster Bellonii.
- BATTY LANGLEY *fine method of improving Estates by plantation of oak elm, &c.* Londini 1728. 8. Valde commendat sylvas, laudat raram sationem, quæ transpirationem expediat, experimenta aliqua sua adducit, modum meliorem metiendorum lignorum docet. EJUSDEM *new principles of gardening*. Londini 1728. 4. SEG.
- JOH. MARTYN *historia plantarum rariorum*. Lond. 1728. fol. Hujus splendoris Operis Decades quinque, nisi fallor, prodierunt, vivis expressæ coloribus, exoticæ pleræque.
- R. BRADLEY *Dictionary Botanicum*. Lond. 1728. 8.
- JOHAN. DIETRICI LEOPOLD *delicia sylvestres flora Ulmensis*. Ulm. 1728. 8. Plantæ multæ, absque tamen cryptogamia, aliquæ etiam raræ, ordo alphabeticus, observatio nulla.
- JOHANNIS LINDER *flora Wikstergensis*. Stockholm 1728. 8. Ingeniosus cæterum Medicus, sed Botanices pene ignarus. Nomina perversa, species falsæ, varietates infinitæ.
- JOHAN. GEORG. HENRICI KRAMER *tentamen Botanicum, sive methodus Tournefortio-Riviniana*. Dresdæ 1728. 8. auctius recusum 1733. & fol. 1744. Viennæ. Plantas in tabulas disponere conatur, a situ florum desumfit methodum, quæ omnia genera, etiam maxime naturalia, lacerat, & a minima varietate loci cultusve mutat. Præfationem addidit valde iracundam, & vitium varietates, vinaque Austriaca descripsit. An credibile quemquam ab usu split rejuvenescere? An vere CÆSALPINUS an. 1603. natus est, qui anno 1583. de plantis scripsit? An datur Alstrantia aliqua luteo flore? & quæ alia hujusmodi.
- FRANCISCI BALTHASARIS de LINDERNTournefortius *Alsaticus*. Argentor. 1728. 8. qui auctior titulo *horti Alsatici* prodiit 1747. 8. In beata regione plantas multas, elegantes, aliquas etiam novas, ex aquaticarum genere, detexit, & in priori editione delineavit, in altera alias adjecit icones, quarum vim collegit immensam. Hæc etiam in eo melior est, quod loca natalia adjecta habeat.
- JOH. CHRISTIANI BUXBAUM *plantarum minus cognitarum Centuria V.* Editæ sunt Petropoli ab an. 1728. ad 1740. Plantas descripsit itineris Thracici, Bithynici, Armeniaci, tum Muscos, fungosque Europæos. Descriptiones brevissimæ, icones minimarum non bonæ.
- Ab eo anno etiam inceperunt edi ACTA PETROPOLITANA, quorum nuper decimus Tomus prodiit, cum primus an. 1728. impressus sit. In iis multa Botanica, & novarum plantarum descriptiones, a BUXBAUMIO primum, deinde ab AMMANNO suppeditatæ. Aliqua etiam ad Fungos habet BUXBAUMIUS.
- CASPARI BOSE *de motu plantarum sensus amulo*. Lips. 1728. 4.
- CHRISTOPH DANIEL METZGER *de coralliis*, Regiomont. 1728. 4.
- GIOV. BATTISTA FELICI *Parere intorno all'uso della cioccolata*, Firenze 1728. 4. Contra usum Chocolatæ ut nimis calidæ viscidæ & indigestæ.
- LAUR. SERAFINI (anonymi) *lettera in cui si esamina le ragioni addotte da G. BATT. FELICI nel suo parere sopra la cioccolata*, Firenze 1728. 4.
- F. C. C. S. J. *altro parere intorno alla natura ed all'uso della cioccolata*, Firenze 1728. 4.
- GIUSEPPE AVANZINI *lexione accademica in lode della cioccolata*, Firenze 1728. 4. Omnis contra Felicem, & pro innocentia chocolatæ.
- In Bibliotheca Italica, quæ circa hæc tempora edita est, in T. XI. p. 192. GARCINUS scripsit contra D. PINGRE' novum systema Botanices adfectantem, & mediocriter Botanices peritum.
- PETRI ANTONII MICHELII *nova plantarum genera*. Florent. 1729. 4. Olitoris equidem & illiterati hominis Opus, & pauperis (COCCHII Opusc. scientif. vol. 19. qui calamum suum commodavit), cujusque alter tomus intercidit, (de quo vide TARGIONII promissa in *Comm. Lit. Nar.* 1739. heb. I.) marinas plantas & itinera Botanica comprehensurus, immensa vis habetur Lichenum, & Fungorum, & tota cryptogamia (exceptis Muscis) ex fundamentis subruta in nova genera disposita est, adhibito microscopio, quo feminalem fabricam detegeret. Alia etiam passim genera ad TOURNEFORTIANUM pinacem complendum adjecta sunt. Varietates pro speciebus paulo liberalius adhibuit. Aliqua ad vitam MICHELII pertinentia habet SCIPIO MAFFEI in Diarii sui quod Veronæ prodit T. III. tum de hor tis medicis Europæ quædam.

J. H. SPREKELSEN *Tucca Draconis folio*. Hamburg 1729. fol. Unica pagina cum iconē, quæ recusa est cum DILLENII H. E.

Der neu angekommene Holländische gärtner. Nuremberg. 1729. 12. Prima parte florum bulbosorum, altera arborum cultus describitur, vere, ut videtur, & perite.

JOH. MARTYN *first lecture of a course of botany being an introduction to the rest*, Lond. 1729. 8. Breves definitiones partium plantarum cum iconibus Tournefortianis.

R. BRADLEY *explanation of the richness of a hopgarden*. Lond. 1729. 8. *

EJUSDEM *true account of the Aloe Americana which is in blossom in Couvels garden*, Londini 1729. 8. *

JOH. MARTYN *lectio botanica prima*. Lond. 1729. 8. cum ic. LINN.

JOH. COLBATCH *of misspeltæ*. Londinensis editio mea anni numerum additum nullum habet. Parisiis hoc habito in 12. forma prodiit Laudes Visci ad Epilepsiam & ad morbos convulsivos extollit.

J. COLBATCH nunc lego Londini prodiisse 1729. 8.

A. V. ROYEN *oratio qua commendatur ars botanica*, Leid. 1729. 4.

V. LEAULTE *Ergo SAGOU phthisicis prodest*, Paris. 1729. 4. An idem P. J. MALOUIN *an sagou phthisicis prodest*, ibid. 1734. 4.

PHILIP. MILLER *catalogus plantarum officinalium &c.* plantæ sunt 518. earumque multæ exoticæ, cum uno cognomine C. BAUHINI aut simili aliquo, enumeratæ.

PH. MILLER *Catalogus plantarum officinalium horti Chelseyani*. Lond. 1730. 8.

THOMÆ SHORT *of Tea*. Lond. 1730. 4. Ac. ER. Laudat Theam, floris petala sex facit, Japonensem imprimis describit. *

SAMUEL DALE *post history and antiquities of Harwich and Dovercourt*. Lond. 1730. 4. Continet plantarum sponte in ea vicinia nascentium catalogum. Pleræque marinæ sunt, neque numerus magnus est.

JOH. HIER. ZANICHELLI *Opera posthuma*. Venet. 1730. 4. Quinque sunt itinera Auctoris, unum in Istriam, alterum in Montem Caballum Bellunensem, tertium in Vettarum Montes, quartum in Montem Baldum, quintum in Summanum. Pulchræ plantæ ubique, & aliquæ, ut videtur, novæ, sed absque observationibus.

EJUSDEM *Istoria delle piante de' lidi Veneti accresciuta dal figliuolo GIANJACOBO*. Venet. 1735. fol. Obierat Auctor an. 1729. Hic in præfatione enumeratio florum habetur, deinde descriptiones stirpium paucarum, quæ, cum viribus, sæpe ex TOURNEFORTII Catalogo Plantarum circa Parisios nascentium desumuntur, icones 311. non optimæ. Novi vix quidquam adest, neque stirpium numerus, quæ in beata regione expectares.

EJUSDEM *de Hippocastano*. Venet. 1733. 4. Edidit posthumum Libellum filius JOH. JACOBUS. Experimenta exhibet, per quæ constitit, easdem fere in Hippocastano vires esse, quæ sunt in Cortice Peruviano, & ad febres æque valere.

JOSEPHUS LANZONUS an. 1730. extinctus, *de venenis* Librum posthumum reliquit, compilatitium.

JOSEPH SEKER *lettera sopra le bevande del Caffè Europeo, &c.* Veron. 1730. 12. Commendat succedanea quædam Coffeæ ex Secali tosto, Theæ vero loco folia Rosæ caninæ. *

JUL. PONTEDERA in *Diario Veneto Albrizziano* hujus anni egregia varia botanici argumenti habet. *

H. TEICHMEYER *de caapeba s. pareira brava*, Jen. 1730. 4.

In COMMENTARIIS AC. BONON., quæ hoc anno inceperunt prodire, multa huc faciunt, de gummi populi, vite Caroliniana, convolvulis, florum pulchritudine servanda. POZZI de malo Punico, & opere fecundationis, de florum in coralliis absentia &c.

CASP. NEUMANN *de opio, caryophyllis aromaticis*, Berolin. 1730. 4.

CHRISTIANI HENRICI ERNDTEL *Varsavia physice illustrata; accessit Viridarium*. Dresd. 1730. 4. Stirpes paucæ: fungi ex M. HOFMANNO exscripti, & pro VVarfaviensibus venditati.

THOMÆ COWELL *curious and profitable gardener*. Lond. 1730. 8. Cultus in varia tellure: cultus Bananæ, Ananasæ, Guajavæ, breviter & simpliciter: commendatio sationis stirpium bulbosarum ut novæ obtineantur species (aut potius varietates), observationes de arboribus pomiferis: Aloes Americanæ historia, & Cerei sexangularis. Olitoria descriptio Oxyacanthæ bifloræ. Simplex homo, & candidus.

THEODORI KLEIN *an Tirhymaloides*. Gedan. 1730. 4. Plantam succulentam, adfinem Cacaliæ, egregie describit & pingit, quæ nunc **KLEINIA** vocatur.

LAURENTII HEISTER *Catalogus plantarum horti Academiae Juliae*, annis 1730. 1731. 1732. 1733. editus. Horti cultissimi dives catalogus: genera subjecta nova, eo fere consilio, ut minuantur nimis ampla genera.

Grundvahl till Plante kaenningen of Eluebemes. Upsal. 1730. forma minima. Sunt classium Tournefortianarum in ligno sculptæ icones.

L. HEISTER *de medicamentis Germaniæ indigenis*. Helmst. 1730. 4. Disp. Ref. **HENGST-MANNO**. Gallice versa est & edita Parisiis.

JETHRO TULL *neuv horse hoeing husbandry or an essay on the principles of tillage and vegetation*, Lond. 1731. 4. & *EJ. supplement to the essay on the horse hoeing husbandry*, ibid. 1734. f. Gallice versa cum titulo *traité de la culture des terres suivant les principes de M. TULL par M. du HAMEL du MONCEAU*, Paris 1750 12. Princeps inventum **TULLII** est, agrum non totum ferere, sed relictis satis latis fasciis alterne incultis, in quas possint se radices cerealium dimittere. Porro arationem frequentem idem quod finis credit præstare, ut nempe terra laxetur & rareseat. Varia intercurrent contra circulationem succi nutritionis, contra vim radicum, quæ sibi aptum succum solum de terra trahunt, contra opinionem, cuilibet herbæ diversum succum convenire, pro usu cistæ seminariæ &c. **IDEM** de cannabe egit in l. *de la fabrique des manœuvres pour les vaisseaux*.

MARCI CATESBY *natural history of Carolina*. Lond. fol. 1731. Cœpit edi an. 1731. inde sensim prodiit magnificum Opus, cui nuper an. 1748. viginti tabularum appendix accessit. Mihi in duobus tomis an. 1731. & 1743. editis sunt ducentæ tabulæ animalium Carolinæ, quarum quælibet, paucis exceptis, adjunctam habet imaginem plantæ alicujus in ea regione natæ, quam Auctor sua depinxit manu, in duobus quæ eo suscepit itineribus. Etsi artificium Sculptoris omnino desit, magnæ tamen & fideles sunt icones plantarum parum notarum, quarum maximus in arte medica usus est, uti v. gr. Cascarillæ, Elemiferæ, Serpentariæ Virginianæ, Sassafras, Myrti ceriferæ, Corticis VVinterani, Ligni rubri & Brasilitto, Campechiani, Mahogany, Pattatas veræ, Liquidambar, Mancanillæ, &c. Colores in pictis exemplaribus viridissimi. In charactere sæpe deficit. Ad finem subjicitur historia naturalis aeris, aquarum & locorum.

PAULI HERMANNI *Cynosura materia medica* ab **HENNINGERO** an. 1710. edita, & ab **EDUARDO STROTHER** Anglice versa, 1727. 8., diffusius explanata a **JOH. BOECLERO** cum *Continuatione I. & II.* Primum volumen an. 1728. tertium an. 1731. prodiit Argentinæ 4. Codex Materiæ medicæ vitiosus satis, neque pro fama tanti viri, exceptus est ab aliquo discipulorum. Eum in immensum auxit **BOECLERUS**, descriptionibus, characteribus, virium collectionibus, adjectis etiam iis simplicibus medicamentis, quæ raro & nunquam in medicina adhibentur.

STEPHANI HENRICI GEOFFROY *Materia medica*. Paris. 1741. 3. vol. 8. **ANTONIUS** de **JUSSIEU**, Auctoris an. 1731. extincti, codicem conservavit, adjecit ad exotica varia ex recentissimis itineribus, & documentis: periit tamen pars dimidia stirpium indigenarum, & omne animale regnum. Ad singulas stirpes analyses habentur ex Academia Scientiarum thesauris excerptæ, & in exoticis multa, quæ apud alios deficient.

S. SWITZER *diff. on the Cytisus of the antients*. Lond. 1731. 8. *

GIO. BAT. CIVININI *Storia del Caffè*. Turin. 1731. 4. cum icone florentis plantæ.

J. J. SCHEUCHZER hoc anno consilium suum edendi historiam stirpium Helvetiæ publicavit in *Phil. Trans.* n. 421. Sed morte interruptus nihil edidit, præter icones varias stirpium exoticarum Operi Biblico insertarum.

JOH. PHILIPPI BREYNI *historia Cocci radicum*. Gedan. 1731. 4. Continet historiam insecti, quod radicibus Knavel perennis innascitur.

J. CHRISTOPH. LISCHWITZ *de virgis aureis genuinis & spuris*, Lips. 1731. 4. de plantis anthelminticis, Kiel. 1742. 4.

MELCHIOR SCHERB *de loco & situ plantarum*, Basil. 1731. 4.

P. MILLER *Gardeners Kalendar* prodiit etiam Lond. 1748. 8. Dublini vero 1735. 8. Nunc vero a **CL. BUTTNERO** Germanice Gotting. 1751. 8. recusum est.

Hoc anno incepit **COMMERCIIUM LITTERARIUM PHYSICO-TECHNICO-MEDICUM**, quod

quod præfidente Operi C. J. TREWIO quindecim annis continuatum est. Egregia in eo botanica exstant, Aloes flores, aliarumque bulbosarum, Musæ, Epipactidis, de nova etiam methodo cogitatio, a calyce desumpta simplici, duplici, triplici, deinde perianthio, &c.

OL. CELSII *flora Upsaliensis*. A. SUEC. 1732.

OL. RUDBEK f. *sceptrum Carolinum*. Upsal. 1731. 4. Disp.

B. STÆHELIN *specimen anatomico-botanicum*. Basil. 1731. 4.

AIGNAN an *Ananas alimentum medicamentosum*. Paris. 1731. Disp.

J. E. HEBENSTREIT *definitiones plantarum*. Lips. 1731. 4. Disp.

J. E. HEBENSTREIT *disputatio citata RIVINIANAM continet methodum*.

J. FRID. SCHREIBER *frutex ad verum suum genus redactus*. ACT. ERUD. 1731. Kleinia descriptio.

J. JAC. DILLENII *hortus Elthamensis* JACOBI SHERARD. Londini 1732. fol. maj. Descriptiones per omnes partes & anni ætates perfectæ stirpium 437. cum totidem figuris, propria Auctoris manu pictis & sculptis, synonymorum plenissima collectione, dijudicatione. Pleræque hæc stirpes Indicæ fuerunt: multæ novæ Americanæ. Acerrime, & subtilius quam quisquam alius minimas specierum differentias pervidit.

P. MILLER *Gardeners Kalendar* Lond. 1732. 8. 1734. 8. Opera rustica cujusque mensis pro hortulanis recenset.

JULII BERNHARD von ROHR *geschichte der Bäume in Teutschland*. Lips. 1732. fol. Prodiit cum CARLOWIZII nova editione. Non satis & ipse Botanicus fuit ROHRRIUS, quæ eas plantas, de quibus agit, neque nominare noverit, neque ita describere, ut agnoscas. Utilitates œconomicas imprimis persequitur.

JOH. BOECLER de *fœniculo*, Argent. 1732. 4. de *neglecto usu vegetabilium circa Argentinam nascentium* 1732. de *chocolata Indor*. 1736. de *coriandro* 1739.

In VALISNERIANIS operibus, quorum collectio Ven. 1732. fol. prodiit, huc pertinent varia: historia muscæ rosiferæ & adeo conservæ Rosarum DILL. de gallis: plantis Indicis: Kermes: Lenticulæ arcan: semine: pino VALISNERIANA, MASSONNEAU de cascarilla, quæ sit verus cortex febrifugus, DIACINTO CESTONI de sarsapariglia, &c.

JOH. GER. WAGNER *arboreti sacri specimen sistens Laurum*. Helmst. 1732. 8. A. ER. *

AUG. FRID. COELER de *Usnea*, sive *Musco cranii humani*. Leid. 1732. Disp. Plantam suam non satis definit.

LAUR. HEISTER de *foliorum utilitate in constituendis generibus*. Helmst. 1732. 4. Disp.

B. FELDMAN *comparatio plantarum & animalium*. Leid. 1732. 4. Disp.

A. van. ROYEN de *plantarum amoribus carmen*. Leid. 1732. 4.

De la BAISSE *sur la circulation de la seve des plantes*. Bourdeaux. 1732. 12. Inter omnes in hoc Diario repositas Dissertationes excellit. Plantarum vim foratricem, succi nutritii per vasa lignosa iter, in medullam, redditum probabilem succi lactei, & nutritii, denique per experimenta adstruxit.

JOH. PHIL. BURGGRAV *Lexicon Medicum*. Tom. I. A. B. Francof. 1733. fol. Plantarum descriptiones ex J. BAUHINO cum copioso virium catalogo habet.

JAMES ALLEYNE *Englich dispensatory in 4 parts*. Londin. 1733. 8. Brevem catalogum continet stirpium medicatarum methodo BOERHAAVIANA, absque solita encomiorum farragine.

A treatise Shewing the nature and method of planting manuring and dieting of a vineyard by a Gentleman. Lond. 1733. 8. *

FRIDERICI RUYSCHII præparationes selectorum fructuum & foliorum, cryptarum in plantis aliaque hujusmodi huc pertinent.

F. E. BRUKMAN *sendschreiben an D. J. HIERONYMUM KNIPHOF*. VVolfenbuttel 1733. 4. & KNIPHOFII *antwort auf H. BRUKMANS schreiben*. Erfort. 1733. 4. Agitur de arte plantas imprimendi, ad ipsa viva specimina, cujusmodi collectionem KNIPHOFIUS edidit cum nomine *lebendiges officinal Kraüterbuch*. Erfort. 1733. fol. Sed levia folia, & character a fuligine vix exprimuntur. De eadem arte anno 1730. in BUCANERI *miscellaneis* p. 1346. uterque egit. Vide etiam 1729. p. 179.

LEONH. DAV. HERMANN *gedanken über F. E. BRUKMANN Ocymastrum*, Massel 1733. fol. OL.

OL. RUDBËK tr. om. *Dudaim*, Upsal. 1733. esse rubum *hallon*.

HERMANN PAUL JUCH de genuino amygdalarum usu medico, Erfurt. 1733. 4. de coronopo saluberrimo coeliacorum acetario 1739. de ebulo 1145. 4. de analysi rhabarbari 1745. 4.

J. RUD. TIDEMANN historia sambuci vulgaris, Groning. 1733. 4.

The flower garden displayed in above 400. repres. &c. lego etiam anno 1732. 4. proditiisse HARL.

GEORGH CIVININI della Storia degli Agrumi. Florent. 1734. 4. Diligenter & eleganter in eo Opere versatus est brevi tamen omnino.

GEORGIUS CIVININI l. cit. ostendere vult, citrea nostra malum medicum esse, & paulo ante ALEXANDRI tempora in Græcia innotuisse, mala vero aurea Africana esse aurantia.

EICHROHTII & THRANII horti Caroliruhensis Catalogus 1733. 8. nuper cura CL. RISLERI Loeraci recusus 1747. 8. Ex pulcherrimis Germaniæ hortis, Africanis a THRANIO relatis spoliis dives, sed multum continet varietatum.

LEONHARD DAVID HERMANNUS gedanken uber F. E. BRUKMANN Ocymasticon flore viridi. Massd. 1733. quod in folio cum icone ediderat CL. BRUKMANN. *

AMBROSII ZEIGER vernünfftige Einleitung zur Oeconomie. Eisleben. 1733. 4. Multa ad agriculturam sed nimix laudes muriæ nitrosæ. *

KORONZAI de erroribus ex ignorantia Botanices ortis. Hall. 1733. 4. Disp.

C. BOSE de Calice Tournefortiano. Lips. 1733. 4. Disp.

D. PLAZ historia Radicum. Lips. 1733. 4. Disp.

ALBERTI SEBA Thesaurus rerum naturalium. Amstelod. 1734. 1735. fol. max. Passim intercurrent icones plantarum Indicarum, sed rudiores.

HENR. CANNEGIETER de herba Britannica in Procopio memorata cum notis ad MÜNTINGII de eadem l. Hag. 1734. 4. SEG. *

The flower garden displayed in above 400. representations of flowers with the history of the plant. London. 1734. 4. Icones rudes, in magna muscaria & eropæa congestæ. Descriptiones breves, aliqua tamen ad cognoscendas non inutilia plantas, quas hoc sæculo vulgo amant. Adjecta est ars aquæ ope media hyeme hortos floridos educandi.

The Practical husbandman and planter monthly continued by a Society of husbandmen and farmers. London. 1733. 1734. 8. Apud hortulanum STEPHANUM Suvitzerum venit Opus non optimum. Ridicula eruditionis ostentatio in mediis erroribus. Mayz pro re nova. Spergula pro Esparsette (Onobrychide) habita. Generatio spontanea defensa. Continentur tamen aliqua utilia, ut LAWSONI Catalogus stirpium nova Anglia, de Croci cultu consilia, & Rubiæ, & Glycyrrhiæ, & Trifolii, & Glasti, &c.

JOH. JULII HECKER Einleitung in die Botanic. Hall. 1734. 8. Methodus Riviniana in tabulis proposita. Catalogus stirpium medicatarum.

Icon Musa sive Pisang qua in horto Casparis Bosii floruit. ACT. ERUD. 1734.

JOH. HIER. KNIPHOF Botanica in originali. Erfurt. 1734. 1736. Trecentæ sunt imagines stirpium artificiose ad ipsas siccas plantas nigro colore expressæ quas supra jam citavi.

C. REICHART lebendiges kraüterbuch, Erfurt. 1734. fol. Nunquam satis plene prodit & multa a bibliopola recusa fuerunt in kern auferlesener wissenshaften Libro, qui prodit Erf. 1745. 8. 2. v.

J. BAPT. KARCHER de anetho, Argent. 1734. 4.

S. SWITZER compendious method for the raising of the Italian Broccoli, Spanish Cardon, Celeria Finocchi and other foreign kitchen vegetables, Lond. 1735. 8. Semina vendebat auctor, hinc plurima ex aliena fide laudat. De cytiso (Marantæ) fuse differit, quem pro optimo pabulo jumentorum seri suadet, absque certo experimento.

CHRISTIAN ERNST KUNHOLD dem tractate HEN. ZIEGERS entgegenesetzte æconomia experimentalis, Erfurt. 1735. 4.

WOLFG. ADOLPH SCHROENII syntagma de rebus rusticis, Erfurt. 1735. 8. Collectio ex veteribus.

BURCH. DAV. MAUCHART de butyro cacao, Tubing. 1735. 4.

AUGUSTINI FRIDERICI WALTHER designatio plantarum horti sui (qui nunc est LUDWIGIANUS) Lips. 1735. 8. Ditissimus hortus: nomina sæpe paulum detorta, icones mediocres: observationes vix ullæ.

CAROLI LINNÆI historia natura. Leidæ 1735. fol. Holmiæ 1740. 8. Parisiis 1740. 8. & alibi. Hoc primum Opere innotuit celeberrimus Auctor, qui fortissimo consilio Botanice funditus eruere, & ordinare de integro sibi sumsit. Hoc Opere totam naturam in nova genera novasque classes redegit, in animalibus & mineralibus idem, quod in plantis, secutus consilium. Nova ab eo tempore epocha in Botanicis numerari potest in qua auctoritas traducta ad stamina tubasque, & varietates undique proscriptæ sunt, & ad novas leges nova nomina excogitata, proscriptis iis, quæ regnaverant, *TOURNEFORTIANIS*.

Eodem anno, ut priori 1732. in Upsaliensibus Actis itineris sui Laponici plantas nominibus designavit.

Catalogue des arbres & arbrisseaux qui peuvent se cultiver en pleine terre. Parisiis 1735. 8. *

J. H. SCHULZE de persicaria acida Jungermanni. Hall. 1735. 4. Disp.

JOH. GEORGI SIEGEBECK de Majanthema. Petropoli 1736. 8. Libellus.

EJUSDEM Primitia flora Petropolitana. Rigæ 1736. 4. Genera naturalia in subalternas familias disposuit, hinc nova nomina passim excogitavit, stirpes aliquas novas in Siberia lectas primus recensuit.

CAROLI LINNÆI Musa Cliffortiana. Leid. 1736. 4. Musa nitidissime sculpta: constituta classe *Spathacearum* sive *Palmarum*, ea solo habitu naturali.

EJUSDEM Bibliotheca Botanica & fundamenta Botanica aphoristica. Amstelod. 1736. 8. prodierunt. Illius ingeniose quidem, sed paulo minori cum otio scriptæ, defectus promittit corrigendos Auctor in A. E. Lipsiensibus April. 1736.

Hoc anno, nisi fallor, coepit scribere non minimus in agricultura practica Auctor *WILLIAM ELLIS*, variis Operibus clarus. Ejus *modern husbandman or the practice of farming* continet duodecim Libellos pro singulis in anno mensibus, quibus partim eorum mensium Opera, sed multa tamen alia continentur, quibus nihil cum his mensibus commune est, nova nempe præsidia in agri, hortique cultura. Deinde ejus *Agriculture improved* etiam an. 1736. coepit iterum secundum menses edi, & Majo, Junio, Julio, Augusto respondet. Porro pro quinto tomo ad *Modern husbandman* accessit *the Timber tree improved in two parts.* Lond. 1742. & 1747. 8. quibus cultum sylvarum ad materiem docet: & aliud denique volumen *containing chistern and vale farming explained.* Londini recusum 1747. 8. quo cultus agri quibusdam provinciis peculiaris describitur. Expertus ubique colonus, omnia ruminans, quibus majori compendio ditior ex agro proventus possit obtineri. Paulum tamen mihi in suis inventis confidenter videtur, & nonnullis non satis firmis nimis tribuere, exemplo formularum, quas ad istum locum impense laudat, & ob nomina unice popularia sæpe vix potest intelligi.

RICHARD BRADLEY the country Gentlemen and farmers monthly director. Lond. 1736. 8. Sexta editio est, sed prima destituor. Non inelegans certe Libellus, de avium educatione, & apum, & isatidis cultu: ita ut sis memor omnia ad cælum Anglicum pertinere, quo video, scæna præcocius, frumenta tardius, quam in Helvetia maturari.

EJUSDEM Auctoris, valde polygraphi, posthumum codicem sub nomine, *Course of Botanical lectures explaining the principles of vegetation.* Cum iconibus possidet *ILLIS* de *BERGER*.

C. de AQUINO nomenclator agricultura, Rom. 1736. 4.

JOHANNIS WILHELMI WEINMANN Phytanthozaiconographia coepit edi hoc anno, & quarto cum tomo finit an. 1745. Ratisbonæ. Continentur eo Opere 1025. Tabulæ iconum vivis coloribus pictarum. Vitia hujus Operis non mei est detegere, qui sim præfatus. In Belgicam linguam redditum coepit edi an. 1736. Amstelodami; an absolutum sit, non satis novi.

JULII BERNARD von ROHR vom Nutzen und der benennung der Gewächse. Coburg. 1736. 8. Habet aliqua vulgaria de usu œconomico, tinctorio, medico, plantarum: deinde sua mirifica de mutandis nominibus consilia, quæ jubet a radice, foliis, &c. perinde summi & folia ipsis præfert floribus, ut etiam eas plantas jubeat separari, quæ flore, & fructu consentiunt, dummodo foliis discrepent.

In *P. DU HALDE* descriptione Chinæ, herbarium Chinense *Chin Nong* continetur, & citantur alia ut *song seu song*, plantæ etiam aliquæ describuntur.

JAC. FRANC. VANDERMANDE & de SAINT VAST. Ergo infirmis a morbo viribus reparandis *Ginseng*, Paris. 1736. 4.

In *Speſtacle de la Nature* etiam ſtirpes pluſculæ eleganter pictæ exſtant.

GOTTFRID HENRICH BURGHARD *Reiſe auf den Zotenberg*. Breslau 1736. 8. Catalogum ſtirpium ſatis egenum continet, lectarum in eo monte.

ALB. HALLER *de methodico ſtudio Botanices*. Gotting. 1736. 4. Occaſione data explicata eſt familia Gentiarum: poſita fundamenta Diploſtemonum, Mejoſtemonum, &c.

LUDWIG *de vegetatione plantarum marinarum*. Lipſ. 1736. 4. Diſp. cum icone.

PLAZ *hiſtoria Seminum*, Lipſ. 1736. 4. Diſp.

J. JACOB KIRSTEN *de ſtyrace*, Altdorf. 1736. 4. *de areca Indorum* 1739. 4.

CAROLI LINNÆI *hortus Cliffortianus*. Amſtelod. 1737. fol. ſplendido Opere continentur ſtirpes & floridi, & ſicci horti GEORGII CLIFFORT. Species plantarum ad genera Linnæana ductæ methodum declarant, & aliquæ in rarioribus obſervationes intercedunt.

EJUSDEM *Genera plantarum earumque characteres naturales*. Leid. 1737. 8. cum *Corollario* auctius recuſa an. 1742. Characteres ſunt naturales generum omnium, in quæ plantas hætenus cognitæ diſpoſuit LINNÆUS. Perinde vero omni methodo inſerviunt, cum nulla pars fructificationis prætermittatur.

EJUSDEM *flora Laponica*. Amſtelod. 1737. 8. In eam regionem itinere facto an. 1732. collegit ibi ſtirpes 536. paucas quidem, ſed raras & novas pluſculas, viresque œconomicas & medicas diligenter adſperſit.

EJUSDEM *critica Botanica*. Leid. 1737. 8. Acutiſſimus Auctor proponit hic rationes, quare nomina & in generibus & in ſpeciebus mutare neceſſe ſit.

GEORGII SIEGESBEK *de tetragono Hippocratis*. Petropoli 1737. 5. Habet pro Larice.

EJUSDEM *botanophia verioris ſciagraphia*. ibid. eodem anno. In prima parte RIVINI methodum contra DILLENIIUM tuetur. In altera LINNÆUM accuſat. Idem an. 1729. in BUCHNERI miſcellaneis aliqua contra methodos dijudicandi vires attulerat, & an. 1730. p. 1330. de ſexu plantarum. Flora vero Seehuſana, quam promittit BRESL. SAML. 1726. in Mart. ea quidem non prodiit.

PHILIP. MILLER *Gardeners Dictionary*. Lond. 1737. fol. & 1742. fol. Belgice 1746. fol. ſecunda eſt editio. Habet cultum ſtirpium, maxime vero Vineæ, ſpecies Boerhaavianas cum multis varietatibus.

P. MILLER *gardeners dictionary* prius prodiit Lond. 1731. fol. Idem liber Norimbergæ Germanice editur, verſus a CL. GEORGIO LEONHARTO HUTH. Primus tomus prodiit 1750. fol.

J. BLACKSTONE *faſciculus plantarum circa Harefield ſponte naſcentium*, Lond. 1737. 12. II.

JACOB BERLU *Treasure of Drugs unlokd*. Lond. 1737. 12. eſt altera editio. *

DE MONTVILLE in *Diario Trivultienſi*. 1737. p. 827. conſilia ſua aperuit de modo præparandi ad uſum fructus Cacao, quem optimum ait naſci in Cayenna.

J. FRANC. LE FEVRE *de natura, uſu & abuſu Caffæe, Theæ, Chocolatæ*. Veſuntione 1737. 4. Practice.

D. BAZIN *Obſervations ſur les Plantes & ſur leur analogie avec les Inſectes*. Strasburg. 1737. 8. Radicum directionem unice refert ad attractionem humidi, & experimenta ſua in eam ſententiam proferit: incrementum vero plantarum ab aeris in conicis tracheis compreſſi elatere.

JOHANNIS BURMANNI *Theſaurus Ceylanicus*. Amſtelod. 1737. 4. Splendidum Opus natum eſt ex herbariis vivis variis ab HERMANNO & HARTOGIO Amſtelodamum miſſis. Plurimæ novæ & rariffimæ ſtirpes hic deſcribuntur, depinguntur, & ſynonymis illuſtrantur.

CAR. FRANC. EICHROHT *de tertianaria herba*, Baſil. 1737. 4.

BALTHASAR EHRHARD *Zugabe zu Lonicers Kräuterbuch*. Ulm. 1737. fol. Practicas & œconomicas plantarum utilitates continet.

CHRISTIANI GOTTLIEB LUDWIG *definitiones plantarum*. Lipſiæ 1737. 8. Sed multo auctius editæ 1747. ibid. Genera ſunt plantarum, per characteres definita, tum Linnæanos, tum naturales, & diſpoſita in ordinem partim RIVINI, partim LINNÆI.

JOH. GOTTLIEB GLEDITSCH *Catalogus plantarum quæ in horto D. de ZIETEN, tum in vicinis locis ſponte naſcuntur*. Lip. 1737. 8. Ingens enumeratio, in qua multæ etiam varietates, & quam breviffima nomina.

PAULI HENRICI MOEHRING *prima linea horti privati*. Oldenburg. 1737. 8. Rariores etiam palustres & septentrionales aliquas recenset, & nonnulla nova genera proponit.

D. WORT *Gazophylacium*. Königsberg 1737. 4. In hoc materiae medicae compendio etiam plantae officinales cum suis viribus recensentur.

C. G. LUDWIG *de sexu plantarum*. Lipsi. 1737. 4. Progr.

A. HALLER *de Veronicis Alpinis specimen I. II. & de pedicularibus*. Gotting. 1737. 4. Specimina sunt enumerationis stirpium.

HENRICI SENKENBERG *de Lilio convallium*. Gotting. 1737. 4. Vires antifebriles & antilepticas baccarum laudat, varietates in flore recenset.

A. VATER *de Lauroceraso*. VVittemb. 1737. 4. Disp.

THOMÆ SHAW *travels to Barbary, &c.* Oxon. 1738. fol. & *Supplementum* 1746. fol. Insignem numerum stirpium in Africa maritima legit, quarum & nomina addidit DILLENIIUS. Icones aliquæ adjectæ sunt. Is etiam catalogus seorsim prodiit Oxon. 1738. fol.

C. DEERING *Catalogue of plants naturally growing in England more specially about Nottingham*. Nottingham 1738. 8. Adjutus ab Amicis, plantas enumeravit pauciores, Muscos tamen, & Fungos aliquos, quos pro novis habet, aut certe omissis in synopsi RAJANA. Observationes aliquas adpersit.

JEAN ASTRUC *histoire naturelle du Languedoc*. Parisiis 1738. 4. Celtidis cultum & vires œconomicas, & pauca alia descripsit, huc facientia.

JOH. BURMAN *plantarum Africanarum Dedaces X*. Amstelod. 1738. 4. Icones pulchrae ex HERMANNIANIS, ut alibi dictum.

CAROLI LINNÆI *classes & systemata plantarum*. Leid. 1738. 8. Primo systematum omnium analysin & dispositionem generum adfert. Deinde fragmenta naturalis methodi; denique harmoniam generum, qua cuique plantarum generi nomen ejus generis opponitur, quo a TOURNEFORTIO, RAJO, aliisque methodicis Scriptoribus est appellata.

D. ROSCHMAN *regnum animale, vegetabile, minerale, Tirolis Comitatus*. Oeniponti 1738. 4. A. ER. *

H. TEICHMETER *fundamenta Botanica*. Jen. 1738. 8. RIVINI Auditor fuit, & ejus ordinem recepit.

JOH. ERNST. PROBST *Verzeichnis der ausländischen Bäume, stauden und sommer Gevvächse des Bofischen Gartens*. Lipsi. 1738. 8. Prius ab AMMANNO & ELIA PEIN descriptus hortus, hic recentissime recensetur, dives certe, si plantæ omnes adsunt, quas designat. Adjecta icon Bosæ.

J. E. PROBST *verzeichniß, &c.* prodiit etiam Lipsi. 1747. 8.

LUDWIG PHIL. KRAUSE *kluger und sorgfältiger gärtner*, Langensalz 1738. 8. 1741. 8. Plantarum & arborum & elegantiarum etiam horti curam docet hortulanus, cujus longa in arte experientia est.

DE LA RIVIERE & DU MOULIN *Méthode pour bien cultiver les Arbres a fruit & pour élever les Treilles*. Parisiis 1738. 12. Bonum compendium eorum, quæ alii optima observarunt. *

Dictionnaire Botanique & Pharmaceutique, contenant les propriétés des Minéraux, Animaux & Végétaux. Parisiis 1738. 8. *

DE LA RIVIERE & DU MOULIN *méthode, &c.* prodiit etiam Ultrajecti 1738. 12. iterumque nihil mutato libro 1739. 12.

PETRI HOTTON *Thesaurus Phytologicus*. Norimberg. 1738. 4. Germanice. Nomen fraude adfectum, & Liber idem qui Zornianus 1714.

FRANC. JAC. SACHS *de ulmo*, Argent. 1738. 4.

LAUR. ROBERG *de generatione plantarum*, Upsal. 1738. 4.

GEORG. AUG. LANGGUTH *antiquitates plantarum feralium*, Lipsi. 1738. 4.

JOH. ENGSTROEM *de quercu*, Londini 1738. 4. philologiæ.

ALBERTI HALLER *Iter Hercynicum*. Gotting. 1738. 4. Aliquot plantarum rariorum historias criticas continet, & iconem Sisymbrii post THALIUM nemini dicti.

P. A. BOEHMER *de Cascarilla*. Hall. 1738. 4. Disp.

ELISABETH BLACKWELL *curious herbal*. Lond. 1739. 2. vol. fol. Cum maritus per tristia fata notissimus, in carcere langueret, optima fœmina vitam ex pingendis plantis alebat, quas accipiebat a RANDIO & MILLERO. Quingentas ergo ad naturam cum charactere delineavit, & propria manu

manu in ære aquâ forti designavit, & coloribus vivis illustravit. Multæ inter eas rarissime alias in Europa floruerunt. Sermo brevis ex MILLERO. Hoc idem Opus C. TREWIIUS emendatius & auctius Norimbergæ edere coepit an. 1747. cujus nunc triginta plantæ prodierunt.

Catalogue of American trees and shrubs that will bear the Climate of England. Lond. 1739. fol. Icones plantarum Americanarum cum vivis coloribus. *

E. BLACKWELL *curious herbal* a TREWIO emendatius & auctius editi, nunc omnino, dum hæc scribo, 105. plantæ prodierunt, ornatus sculptæ, tum characteribus stirpium, tum synonymis & descriptionibus auctæ.

JOHANNIS AMMAN (J. C. F.) *icones & descriptiones stirpium rariorum Ruthenicarum.* Petrop. 1739. 4. Opus natum est ex siccis plantis ab HEINZELMANNO, MESSERSCHMIDIO & GMEIÑO ad Academiam missis. Hinc in characteribus nonnunquam laborat. Multa vero & rara & nova habet.

JOH. FRID. GRONOVII *flora Virginica exhibens plantas a JOHANNNE CLAYTONO lectas.* Leid. 1739. 8. & Tom. II. an. 1743. Stirpes Virginicas, partim similes Europæis, partim novas rarasque in catalogum secundum methodum LINNÆI disposuit, adseclorum novi systematis primus, & addidit descriptiones ex LINNÆANIS legibus factas.

ISAACI RAND *Index horti Chelsejani.* Lond. 1739. 8. Alphabeticus & dives nomenclator horti inter pulcherrimos eminentis.

SAMUEL TROWEL *of husbandry, gardening, &c.* Lond. 1739. 8. *

SAM. TROWEL Germanice nunc prodiit Lipsi. 1750. 8.

JOH. EBERHARDI FERBER *Hortus Agerumensis.* Holmiæ 1739. 8. Videtur potius JOH. ROHTMANNI quam FERBERI Pharmacopolæ Opus esse. Nomina cum unico synonymo secundum LINNÆI methodum disposita.

J. RUD. AHLEFELD *de Fungis ex Salice nascentibus.* ACT. ER. 1739. p. 336.

JOH. LINDER *de Venenis a STENZELIO auctior editus.* Lipsiæ 1739. 8. Collectio, ad plantas venenatas.

C. FRID. LOEW *ad floram Pannonicam invitatio* Sempron. 1739. 4. & in E. N. C. vol. V. Append. Effectum nullum habuisse videtur.

Parnassus hortensis oder vollkommene gartenschule, Magdeburg. 1739.

CHRIST. HENR. HÆNEL *de camphora,* Leid. 1739. 4. practica.

SALOMON de MONCHY *de opio,* Leid. 1739. 4.

D. ERNSTING *de Phellandrio.* Brunsvv. 1739. 4. Descriptio fabricæ & virium cum icone.

W. B. NEBEL *de Acmedla Palatina (varietate Bidentis).* Heidelberg. 1739. 4. Disp. Credit vires inesse Acmedlæ, & analysin dat.

D. KRATZ *de Onopordo.* Francof. ad Viadr. 1739. 4. Disp.

MICH. ALBERTI *de Belladonna tanquam specifico in cancro.* Hall. Disp. 1739. 4.

D. KIRSTEN *de Areca Indorum.* Altdorf. 1739. 4. Disp.

ADR. van ROYEN *flora Leidensis prodromus.* Leid. 1740. 8. Elegantissimo Libro divitiæ veræ horti enumerantur, exclusis varietatibus. Rarissimas plurimas primus aut indicavit, aut definivit. Genera & nomina LINNÆI recepit, sed classes naturales secutus est: iis nomina nova, simplicia fecit.

JULII PONTEDERÆ *antiquitatum Latinarum Græcarumque enarrationes & emendationes præcipue ad veteris anni rationem pertinentes.* Patav. 1740. Eruditissimum Opus viri in Hetrusca, Osca & antiquissimæ Italiæ reliquis linguis expertissimi. In Catonem, Varro-nem & Columellam emendationes plurimas profert, & nomina ab ALDO corrupta adque recentioris linguæ similitudinem distorta, ubique restituit, sic de Agricultura Romano-rum multa utilia adspersit.

MATTHIEU FABREGOU *description des Plantes qui naissent autour de Paris.* Parisiis 1740. 6. vol. 12. Pessimus Librorum, hominis imperiti, & perinde temerarii: miscentis exotica indigenis, exscribit TOURNEFORTIUM & VAILLANTIUM, dum uterque carpitur. Ita rudis Auctor ut v. gr. Frangulam velit vocari *Alnus prunas ferens.*

JOHANNIS FRANCISCI SEGUIER *Bibliotheca Botanica; accessit OVIDII MONTALBANI Bibliotheca Botanica.* Hag. 1740. 4. Laude certe dignus Liber, quo vis enormis continetur librorum, ad plantarum enumerationem, vires, & cultum pertinentium, decerptorum ex Regia Gallica, Sloanea, aliisque ditissimis Bibliothecis, quas vidit Auctor, cum per Europæ regio-

regiones varias iter faceret, socius *SCIPIONIS MAFFEI*; tum ex Diariis, catalogis *RIVINI*, aliorumque. Ordo alphabeticus, judicia nulla, menda, ut in magnis Operibus fit, tamen aliqua, in *NEUMANNI* Operibus plurima ad analysin plantarum earumque partes resinosas & aquosas definiendas pertinentia habentur.

J. A. KULBEL sur la fertilité des terres, Dresd. 1740. 4. quo scripto Burdigalæ præmium reulit.

ERN. EHRENFRIED GEYER de vestigiis porus *Cassia* apud Hebraeos, VVittemb. 1740. 4.

HENR. CASP. ABEL medicinisches krauter paradies gärtlein, Francof. 1740. 8.

J. CASP. FEISTL vegetabilia recentia siccis præferenda esse, Altdorf. 1740. 4.

F. LUDW. MILHAU de carvo, Argent. 1740. 4.

GEDANKEN uber das reich der Blumen. Dresd. 1740. 8. Auctor est *JOH. CHRIST. BENEMANN*. Theologice magis & Philologice scripsit, quam Botanice.

BARRERE question de Medicine, si la connoissance des Plantes est necessaire à un Medecin. Perpignan 1740. 16. Recte monet pleraque medicamenta omnino a plantis sumi. *

JOH. GOTTLIEB GLEDITSCH consideratio *Epicriseos Siegerbeckiana*. Berolini 1740. 8. Linnaeanum systema tuetur, defendit seminum & staminum dignitatem.

ALBERTI HALLER Iter Helvetieum. Gotting. 1740. 4. Musci aliqui hic primum describuntur, & evolvuntur stirpium aliquot Synonymiæ.

J. E. HEBENSTREIT de methodo ex fructu optima. Lips. 1740. 4.

CHR. GOTTL. LUDWIG de minuendis speciebus plantarum. Lips. 1740. 4.

D. PLAZ historia florum. Lips. 1740. 4. Disp.

JOH. GEORGI SIEGEBECK vaniloquentia *Gleditschiana* specimen. Petropol. 1741. 4. Argumenta contra seminis dignitatem sumfit a cryptogamia, a stolonum vi reparabili, a seminibus evanidis. Nomina mutata, ut *Droseram*, *Oenotheram*, damnat p. 50. Generum conjunctiones improbat, e. gr. *Cuscutæ* cum *Basella*, *Cucubali* cum *Been*, *Vaccinii* cum *Oxy-cocco*, *Convallariæ* cum *Unifolio*, *Chamædaphnes* cum *Poliifolia*. p. 40. seqq.

JOH. JAC. DILLENII historia Muscorum. Londin. 1741. 4. Nulla pars Botanices nunc illustrior est, quam ea, quæ fuerat obscurissima. Muscorum, Lichenum & adfinium species fere 600. plerasque indigenas, aliquas tamen Americanas, aut aliis ex terris advectas, accurate in species digessit, depinxit, per omnes plantæ partes, nomina omnia evoluit. An licet de opere omni laude dignissimo addere, varietates aliquando in specierum honorem constitui, exemplo *Lichenis corniculati*; a *MICHELIO* dubias aliquas stirpes repeti, deficere *Lichenes* ex genere subtiliori pulverulento?

A new method of improving cold wet and barren land particularly clayey grounds practised in North Britain, Lond. 1741. 8. Auctor est celebris ille infortunio suo *ALEXAND. BLACKWELL*. Contra eum virum, nescio autem an contra idem scriptum prodiit *LARSUL KULLIN* ovvåldige Tankar of over A. B. för sok till Land bruckets bärping, Upsal. 17... 4. *BLACKWELLIUS* finem omnem rejicit, & omnia compendia agriculturæ refert ad terræ friabilitatem & repetitam arationem fere ut *TULLIUS KULLINUS* ostendit, salem marino affinem in destillata humo contineri, & finem habere partes aliquas essentielles plantarum.

HIERONYMI BARUFFALDI il Canapajo. Bonon. 1741. 4. Poema de cultu Cannabis. *

HERBARIUM AMBOINENSE continens plantas in ea & adjacentibus Insulis, opera *GEORGI EBERHARDI RUMPHII* edidit & latine reddidit *JOHANNES BURMANNUS* Amstelod. fol. T. I. 1741. T. II. 1743. sive Libri VI. Rumphii vita habetur E. N. C. Dec. II. ann. I. obs. 21. Exemplar, in Europam missum, teste *J. HOTTONO*, periit naufragio. Aliud, ex thesauris Societatis Indicæ acceptum, hic cum sua versione edidit *J. BURMANNUS*, Synonymis & observationibus additis. Continet plantas Indiæ maritimæ sive insulanæ, calidioris quam Malabarica, hinc diversas arbores numerosissimas, sæpe tamen charactere destitutas, Palmas, Cocos, Sagu, Manga, Mangostan, pomiferas Indicas omnes: tum Aromata, Caryophyllos, Nucem moschatam, Culilavam, Cajeputi, Colubrinum, Tamarindos: arbores conspicuo flore, Corallodendra: arbores lactiferas, inter quas venenata illa *Macassarica*; arbores alias miscellas, inter quas *Ebenus*. Tum fructices, inter quas *Arundines* Indicæ sunt. Reliqua exspectamus.

G. E. RUMPHII herbarium Amboinense a *BURMANNO* tum temporis nondum totum editum erat, nunc vero anno 1750. totum opus completum est, & in ultimis duobus tomis stirpes non arbo.

arbores interque eas pruinæ medicatæ traduntur. Scripsit etiam libellum belgicum de plantis Moluccarum & Amboina jam AMMANNO dictum in *Charact. Natur.*

PIERRE BARRERE *Essai sur l'histoire naturelle de la France Equinoxiale*. Parisiis 1741. 12. Enumeratio plantarum hoc utili Libello continetur, inter quas Ypecacoanha, Simarouba, Mechoacanha, & aliæ medicatæ sunt. Promittit majus Opus cum iconibus.

MAGNI OLAI NORDENBERG *kort anledning huru gräsuvaxten ook mulbetet kan förbättras*, &c. Stockholm. 1741. 4. Serotina damnat pascua, commendat divisionem pratorum, ut alternatim & requiescant plantæ, & radices convalescant. Vinum ex Rubo Idæo casu detectum, valde laudat, & cultum hujus Rubi commendat Civibus.

F. E. BRUKMANN *Centuria Epistolarum* I. Brunsvic. 1741. 4. Huc pertinent Epistolæ ad DILLENIIUM, ad GRONOVIIUM, ad LINNÆUM, ad me, ad alios, quibus in Pinacem C. B. animadversiones, & Musci aliqui describuntur; porro itineris Hungarici descriptio & aliqua alia sparsa.

F. E. BRUKMANN *Centuria Ep.* i. quam citavimus eo loco, continet etiam animadversiones in RAIUM, KÆMPFERUM, KNAUTIUM, in RUPPIUM denique meum. Ad illas ad RUPPIUM certe minus æquas carptiones respondi in *Nov. Lit. Gott.* 1749. p. 766.

Anonymi wörterbuch worinne der kraüter nahmen beyworte ins teutsche ubertragen sind nebst einer kurzen beschreibung von den geschlechtern der kraüter, Lips. 1741. 8.

Die Tulpe zum ruhm ihres schöpfers beschrieben, Dresd. 1741. 8. Simile priori BENEMANNI Opusculum.

LAUR. HEISTER *Animadversiones in methodum Linneænam*. Helmst. 1741. 4. Disp.

EJUSDEM *de nominum mutatione noxia*. ibid. Disp.

EJUSDEM *de Aurantiis*. ibid. Ad methodum pleraque pertinent. Disp.

J. ANDR. UNGEBAUER *de cultura plantarum*, Lips. 1741. 4.

ANDRÆ ELIÆ BUCHNER *de arnica*, Erfurt. 1741. 4. *de fraxinella* ibid. 1742. 4. *de nucce juglande* 1743. 4. *de ypecacoanha* 1745. 4. *de genuinis viribus tabaci* 1746 *de curcuma officinarum*, Hall. 1748. 4. *de genuinis opii effectibus in corpore humano*, ibid. 1748.

JOH. GESNER *de Vegetabilibus*. Diss. II. Tiguri 1740. & 1741. 4. recusæ sunt an. 1743. Leidæ 8.

Dictionnaire universel du Commerce ex editione Genevensi 1742. fol. 4. vol. Egregia ad usus æconomicos pertinentia hic habentur, & multa, quæ spectant ad Indiæ plantas, communicata a Cl. GARCINO.

MARCI MAPPI *Catalogus plantarum Alsaticarum*. Edidit EHRMANNUS. Argent. 1742. 4. Plantæ multæ, etiam rariores, cum paucis iconibus, varietates plurimæ, nomina Tournefortiana, ordo alphabeticus. Opus, etsi posthumum, satis tamen perfectum.

ALB. HALLER *enumeratio plantarum indigenarum Helvetiæ*. Gotting. 1742. fol. In nulla regione hætenus idem numerus stirpium repertus est. Sed non novi solum, sed & monui in præf. idem mihi, quod omnibus aliis systematum Auctoribus, accidisse, ut & omitant multa, & de multis loqui cogantur, quæ non perspexerint. Confer. *PHIL. TRANS.* n. 468.

HANS EGEDE *gamle Grönlands nye perustration*. Hafniæ 1742. 4. Continet etiam icones aliquas plantarum indigenarum.

C. GOTTL. LUDWIG *Institutiones regni vegetabilis*. Lips. 1742. 8. Egregium Opus, parte prima agit de methodo, altera describit æconomiam vegetabilem, de germine, vi feminalli, cellulosa tela, vasis retifoliorum, & præclara multa & nova habet.

JOHN TENNENT *Epistle to RICHARD MEAD concerning the efficacy of seneca snackeroot*. Edimburg. 1742. 8. Polygalæ speciem, a sylvicolis Indis Seneca dictis, ad morsum Viperae caudifonæ laudatam ad peripneumoniam, pleuritidis & podagræ curationem transtulit, ea felicitate, ut imitati Galli similem fere in Nostrate Polygala ad pleuritidem virtutem detexerint.

J. G. GLEDITSCH *de methodo Botanica*. Francof. Oder. 1742. 4. & Lips. 1742. 4. LINNÆUM sequitur.

F. JOS. de OVERKAMP *de remediis specificis inprimis de simarouba*, VVürtzburg. 1742. 4.

LAURENT. ANTON. DERCUM *fundamenta rei herbariæ*. VVürtzburg. 1742. 4. ex Tournefortio.

D. KOENIG *de Lamio Plinii*. Argentor. 1742. 4. cum icone Melissophylli.

Lettre sur les arbres des Indes qui portent la Toile. TREVOUX 1742. p. 978.

FR. M. MAZZUOLI de *Coralliorum natura & Fungorum origine*, dissertationem anno 1742. in *Opusculi scientifici* edidit, recusam in memorie di Lucca.

PHIL. CONR. FABRICII *primitia flora Butisbacensis*. VVetzlar. 1743. 8. Continet supplementum ad floram Giessensem DILLENII, deinde descriptiones plantarum quarundam rariorum, maxime ex genere cryptogamiæ, inter quas *BUXBAUMIA*: denique subriles animadversiones in characteres DILLENII & LINNÆI.

BERN. de JUSSIEU & PERSON, Ergo ut in America sic in hac regione *Apalachines* potus salubris, Paris. 1743. 4.

CADWALLADER COLDEN plantæ Coldinghamiæ in Act. Soc. Reg. Ups. 1743. huc omnino pertinent.

FRANC. PRINCE de vino Neocomensi, Basil. 1743. 4. cum analysi.

J. G. GLEDISCH de Fuco subglobofo molli. Berolini 1743. 4.

VINCENTII LAGUSII *Erbario Italo Siciliano di moltissime Piante*. Palermo 1743. SEG.*

Die Rose zum rhum des Schöpfers beschrieben. Lips. 1743. 8. Ejusdem Auctoris, qui de Tulipa scripsit.

JOHANNIS BROWALL *epicriseos Siegesbeckiana exam.* Leid. 1743. 8. defendit LINNÆUM, genera subordinata Siegesbeckiana adgreditur.

C. LINNÆI de utilitate peregrinationis per patriam. Eodem anno ibidem recusa est.

EJUSDEM de *Betula nana Suecorum*. Upsal. 1743. 4. cum icone Disp.

J. BAPTISTÆ MORANDI *historia botanographica stirpium atque herbarum*. Mediolan. 1744. fol. Pictor, qui tamen plantas amavit, vimque magnam in suos hortos collegit, dedit hic icones novas, sed parvas, neque optimas stirpium officinalium 600. dispositas in BOERHAVII ordinem.

J. CHRIST. RIEGER *historia naturalium & artefactorum*. Hagæ 1744. 4. 2. vol. ad Literam C. in plantis parcius fuit.

D. Le MONNIER *observationes editæ cum CASSINI Méridienne de l'Observatoire de Paris*. Paris. 1744. 4. continet plantas Bituricensis Agri, montium Arverniæ, & Ruscinonensis Comitatus, cum observationibus Botanicis.

P. CHARLEVOIX ad tomum II. *historia America septentrionalis* icones & descriptiones stirpium 98. addidit, quarum pleræque ex CORNUTO sumtæ sunt, & D. CATESBY. Prodiit Paris. 1744. 4.

CAROLI AUGUSTI a BERGEN *Catalogus stirpium quas complectitur hortus medicus Academia Viadrina*. Francof. Viadr. 1744. 4. Nomina ex meo Opere & LINNÆO. Observationes ad characteres pertinentes passim adpersæ.

CAR. AUG. a BERGEN huc pertinet etiam programma *utrum TOURNEFORTII vel LINNÆI systema præferendum*, Francof. ad Viadr. 1742. 4. EJ. etiam est *lapis lydius medicamentorum vegetabilium* I. & II. ibid. 1744. 1746. 4.

SEYFFERT de Fungis. Jenæ 1744. 4. Habet meas divisiones, & mea genera, cum aliis nominibus, nullibi me citato.

J. JUNKER de masticatione tabaci, Hall. 1744. 4.

LECHE *primitia flora Scanica*. Leradin. 1744. 4. Continet multas stirpes, ab Auctore primum in Suecico solo lectas cum LINNÆANIS nominibus.

EBERHARD ROSEN de *Cortice Peruviano*. Londini 1744. 4. Disp.

C. LINNÆI de *Peloria* (mira nempe mutatione Linariæ vulgatissimæ in aliud toto flore diversum genus.) Upsal. 1744. 4. Disp.

LIBERATI SABBATI *synopsis plantarum quæ in solo Romano luxuriantur*. Rom. 1745. 4. Superstitiosus, methodo Tournefortiana usus, plantas depinxit vulgares, exoticas pro Romanis dedit,

JOH. FR. SEGUIER *Planta Veronenses*. Veron. 1745. 8. 2. vol. Cum ibi dudum vivat vir Cl. in Montem Baldum & beatum Agrum Veronensem excurrit frequenter, collegit stirpes, ordinavit secundum methodum JULII PONTEDERÆ, figuras rariorum addidit. Adjecit indicem stirpium dubiarum: alterum Chalceolarianum, ultimo appendicem ad Bibliothecam suam.

J. FRID. CARTHEUSER *disputatio de cassia aromatica*, Francofurti ad Viadr. 1745. 4. EJ. de *eximia mirrha genuina virtute medica*, ibid. 1746. 4.

CHRI-

CHRISTIANI CAROLI SCHARMER gedanken über die conservation der alten und anlegung der neuen holzungen, Francof. 1745. 8. Experimenta in Holsatia facta sunt. Quercetum autumnalium glandium ope ferere docet, indeque tondere, transferre, resecta parte radicis mediae. Alias etiam arbores laudat, salices imprimis. Adjectæ sunt notæ Agricolaæ expertis.

Traité de la culture des Pêches. Parisiis. 1745. 12. Laudem meretur a styli elegantia, a consiliorum fide.

Libri, quem sub titulo *traité de la culture des Pêches* citavimus, auctor est DECOMBE.

JACÖBI PARSONS *microscopical theatre of seeds.* Lond. 1745. 4. Semina officinalium stirpium per microscopium picta, modice augens. Bona passim aliqua, ut capsulæ balsamiferæ in gymnodispermis, fructificatio Filicis, &c.

CAROLI LINNÆI *Oelandska ock Gothländska Resa.* Stokholm. 1745. 8. Plantas primotistorias, & ad œconomiam utiles, deinde etiam alias raras, denique omnes obvias fere descripsit, ut floram patriæ perficeret.

EJUSDEM *Corallia Balthica.* Disp. Upsal. 1745. 4. Disp.

EJUSDEM *de Ficu ejusque fecundatione per Culices.* ibid. Disp.

EJUSDEM *hortus Upsaliensis.* ibid. Disp.

EJUSDEM *Passi flora.* ibid. Disp.

EJUSDEM *Acrostichum.* ibid. Disp.

CAR. LINNÆI etiam est *Flora Suecica*, Upsal. 1745. 8. enumeratio nempe stirpium spontanearum.

OLAI CELSII *hierobotanicon* P. I. Upsal. 1745. 8. P. II. ibid. 1747. 8. Theologus, Orientalium linguarum peritissimus stirpes biblicas in Arabum imprimis, & inter eos ex ABUL FADLI M. S. codice de stirpibus medicis illustravit.

GUSTAV. WESTBECK *yttre ligare underrättelse om en pofunnen tvänne slags Bomull som ymneft växer ofver hela Riket*, Stokholm 1745. 4. Laudat pappum salicis luteæ folio crenato, pro vestibus sarciendis, ellychniis faciendis, tum pappum epilobii flore difformi ad facienda tibialia, denique usneam viridem pro duplicandis vestibus in quibus rigiditas requiritur.

DAVID de GORTER J. F. *flora Gelrica*, Harderovic. 1745. 8. Methodus catalogi LINNÆANA, numerus stirpium 601. characterem Antherici emendavit.

Musei Imperialis Petropolitani Vol. I. Petrop. 1745. 8. continet catalogos herbarii vivi Ruyschiani & Ammanniani, quod rarioribus imprimis americanis abundat.

GUALTH. van LIS *de aloë*, Ultraj. 1745. 4.

ARNOLD FRIDERICH von HARTENFELS *Gartensaal.* Francof. 1745. 8. Auctor neque Hortulanus, neque Botanicus, dedit tamen catalogos plantarum bulbosarum, tuberosarum, fibrosarum, perennium, annuarum, culinarum, coronarum, cum cultu. Rariores miscet aliquas an veras? Caryophyllum aromaticum, arborem meloniferam, cucumiferam. Experimenta fere ex aliis, neque satis fida.

JULII BERNH. von ROHR *Phytotheologia.* 1745. 8. editio II. nam priorem ignoro. Collectio utilitatum œconomicarum, & medicarum, ex itinerum Scriptoribus aliisque.

JULII HERCULIS MÜLLER *catalogus plantarum horti sui.* Ulm. 1745. 8. Nomina plurima vitiosa.

ALBERTI HALLER *de Allii genere naturali.* Gotting. 1745. 4. Allium officinarum esse staminibus alterne semitrifidis: idem sæpe in Cæpa vulgari reperiri, non ergo separari posse tria genera Allii, Porri, & Cephæ.

In POCKOCKII *historia Orientis*, Londini 1745. fol. plurimæ arbores & plantæ ab EHRETTO delineatæ reperiuntur.

De MILHAU in *trois dissertations* editis Monspel. 1746. descripsit florem Cacao, aliter quam TOURNEFORTIUS.

De RATTE ibid. in *Artis Societates* explicavit velox Aloes incrementum.

D' ARDENNES *Traité des Renoncules.* Paris. 1746. 8. cultum & hortensium varietatum historiam dedit.

B. de MONTFAUCON *Diff. sopra la pianta dinominata papiro*, recusa est seorsim. Venet. 1747. 4.

J. BLACKSTONE *specimen Botanicum, quo plantarum plurium rariorum Angliæ indigenarum loci natales illustrantur.* Lond. 1746. 8. Continet plantas in synopsi Rajana omittas, fere ex genere cryptogamio.

JOHN MARTYN in sua editione Georgicorum Virgilii, Londini 1746. 8. & eruditum, & Botanicum commentarium adjecit, & in isto plantas Virgilianas declarare, iconibus illustrare, operas agricultorias exponere adnifus est.

JOHN MARTYN nuper 1749. 4. simili modo quo Georgica VIRGILII edidisse diximus, Eclogas ejusdem auctoris splendide edidit.

D. STEVENSON *gentlemans gardeners director*. Lond. 1746. 8. Cultum arborum, oleorum florumque dat.

JAMES *tr. on tobacco, tea, coffee and chocolate*, Lond. 1746. 8.*

PEHR KALM *Wästgötha ock Bahusländska Resa*. Stockholm. 1746. 8. Auctor, nunc Professor Oeconomiae Aboensis, plura jam itinera Botanica suscepit, & nunc se ad Canadense iter præparat: Idem Peloniam invenit. Hic plantas itineris sui an. 1745. facti recenset, vires addit medicas, tinctorias, ad alenda armenta, descriptiones nullas.

MICHAELIS MATTHIÆ LUDOLF *Catalogus plantarum Berolini demonstratarum*. Berolin. 1746. 8. Plantas horti Regii, & aliorum Berolini florentium habet. Nomina TOURNEFORTIANA, ordo alphabeticus. Subjuncta Dissertatio de methodo, in qua sexum & cotyledones rejicit.

Vom Kornregen. Tiguri 1746. 4. Est explicatio physica miraculosæ, ut videbatur, pluviae frumenti. Erant denudatæ radices Chelidonii minoris, cujus icon adjecta est.

L. HEISTER & J. S. LEINKER *de Simarouba*. Helmst. 1746. 4. Disp.

CAR. LINNÆI *sponsalia plantarum*. Upsal. 1746. 4. Disp.

WHALTHER *de Silphio*. Lips. 1746. 4.

De ELSHOLZII Iconibus & plantis siccis, aliisque M. S. & stirpibus Bibliothecæ Berolinensis videatur J. C. W. MOEHSEN in epistola. Berol. 1746. 4.

PETRI KRETSCHMAR *oeconomische vorschläge wie das holz zu vermehren*, Lips. 1746. 8. insignis novorum inventorum auctor, nondum, quantum novi, faventem experientiam habuit. EJUSD. *oeconomische practica*, Lips. 1749. 8. Laudat duplices facere in arando sulcos, ut terra nuper confita sepeliatur, nova exponatur aëri.

HEINRICH WILHELM DOEBELS *jägerpractica*, Lips. 1746. fol. Arbores sylvarum germanicarum etiam recenset folis cum vernaculis nominibus, ut ægre dignoscas, quas velit.

In J. GODESCH. WALLERII hydrologia succi etiam plantarum varii recensentur. Succos acres, ut tithymali, habet pro alcalinis.

J. GEORG. GMELIN *flora Sibirica* T. I. Petrop. 1747. 4. Exemplissimo itinerum Botanicorum, quæ unquam facta sunt, decenni, in novas, & a nemine scrutatas regiones suscepto, comitibus Pictoribus, & sodalibus Botanicis gnaris, inprimis STOELLERO & MARTINIO, Opus natum est primi ordinis, cujus hæc quinta fere pars est. Continet stirpes ordine ROYENIANO, cum descriptionibus, & synonymorum excussione, & rariorum iconibus pulcherrime pictis. Non alibi plus novi reperitur.

CAROLI LINNÆI *Wästgöta Resa*. Stockholm. 1747. 8. Simile priori iter, cum plantarum etiam observationibus & icone Zosteræ.

EJUSDEM *flora Ceylanica*, de qua alibi.

EJUSDEM *novæ plantarum genera*, partim nata ex Ceylanicis, partim ex aliis, aliqua tamen etiam communicata a GMELINO, D. de SAUVAGES, aliis. in disp. 1747. 4.

CAR. LINNÆI etiam sunt vires plantarum, Upsal. 1747. 4.

CAR. FRID. MENANDRI *disputatio de foliis plantarum*, Abo. 1747. 4. *de radicibus plantarum*, ibid. 1748. 4.

J. GEORG. KOELDERER *de visco*, Argent. 1747. 4. bona disputatio.

J. HIERONYMI KNIPHOF *disputatio de succedaneis corticis peruviani*, Erfurt. 1747. 4.

S. PAUL HILSCHER *de gramine dactylo seu manna*, Jen. 1747. 4.

J. ERNST. PROBSTENS *gärtners wörterbuch*, Lips. 1747. Exponit methodum RIVINI, dat catalogum vocum latinarum & germanicarum, quæ ad hortorum cultum pertinent, tum stirpium quæ in horto Bosiano anno 1747. vixerunt.

J. WOLFG. WEDEL *tentamen botanicum flores plantarum in classes dividendo*, &c. Jen. 1747. 4. & iterum 1749. 4. emendatius. Methodum proponit ex RIVINIANA & LINNÆANA mistam, ex solo flore, excluso a prima editione fructu, quem in altera recepit.

In RONCALLI *Europa medica*, Brix. 1747. fol. continetur catalogus stirpium indigenarum agri Brixiani.

In *Actis Societatis Columbaria* lego CL. de BAILLOU refutare flores coralliorum, & polyporum in iis gignendis efficaciam.

JAMES WHEELER *the modern Druid containing instructions for the better culture of young Oaks*, Lond. 1747. 8. Ramos minores, anulum excorticando vel contundendo germen, jubet delere ut recta arbor crescat: auget incrementum longis scarificationibus corticis.

XAVERIUS MANETTI horti Florentini præfectus solet quotannis edere *catalogum plantarum nonnullarum horti Academia Physico botanica Florentina* qui unico folio continetur.

THOMÆ SHORT *Medicina Britannica*. Londin. 1747. 8. Catalogus stirpium officinalium cum collectione virium.

CHRIST. LUD. ROLOFF *Index plantarum quæ continentur in horto Krausiano*. Berolin. 1747. 8. Plantarum alphabetica recensio cum iconibus rariorum.

CHRIST. LUD. WILLIG. *Observationes Botanico-medicae*. Gotting. 1747. 4. Lichenis agrici species nova, & de Myrrhide tuberosa observationes, & alia ad characteres pertinentia diligenter notata.

D. HEINZE de *Muscorum notis & salubritate*. Gotting. 1747. 4. Disp.

J. GEORG. HEINZE etiam est de incrementis botanices ex consideratione muscorum 1747.

P. C. FABRICII *Sciagraphia historiae naturalis Butisbaci*. VVezlar. 1747. 8. Adjecit observationes, inter quas flos Charæ describitur.

WAITMILL *Kalendarium universale*. London. 1747. 8. Opera hortensia secundum menses descripta.

TOBIÆ CONRAD HOPPE *bericht von den Erdäpfeln*. VVolfenbuttel. 1747. 4. Historia Solani tuberosi.

TOB. CONR. HOPPE edidit etiam *nachricht von den vveiden und den rosen*, Lips. 1748. 4. & *defensionem von den vveiden rosen*, Gera 1748. 4.

In *versuch einer beschreibung historischer und natürlicher merkwürdigkeiten der landschaft Basel*, cujus ab anno 1748. quatuor partes Basileæ 8. prodierunt, multa huc faciunt, imprimis ad fungos, & plantas agri Basiliensis rariores. Eas CL. FRIDERICUS ZWINGERUS fere recenset.

De incremento plantarum ex aqua in *Actis Acad. Berol.* hujus anni experimenta sua proposuit CL. ELLERUS.

ARTHUR CONRAD ERNSTING *prima principia botanica*, VVolfenbuttel 1748. 8. Explicatio vocum technicarum rei herbariæ; catalogus præcipuorum scriptorum eo pertinentium: methodorum clavis, cum sua, simili BOERHAAVIANÆ.

LAURENTII HEISTER *systema plantarum generale ex fructificatione*, Helmstadt. 1748. 8. bis excusum. Defendit methodum naturalem & characterem ex foliis desumptum. Nomina LINNÆANA accusat, methodum BOERHAAVIANÆ similem proponit.

CAROLI LINNÆI *flora æconomica*, Upsal. 1748. 8. Suecice recusa, Holmiæ 1749. 8.

CAROLI DAHLMAN *enledning til svenska humle gards skogs ock ængs skötsel*, Holm. 1748. 8. sylvestres laudat lupulos, cultumque hujus plantæ describit. Pratorum cultum docet, laudat Lathyri lutei utilitatem.

ULRICI RUDENSCHIOLD *tal om skogaener ryttiande ock vword*, Holm. 1748. 8. Ad Politicam equidem imprimis pertinet, docet tamen utilitates œconomicas sylvarum, modumque quo sylvæ destructæ reparentur.

PETRI GERIKE de *usu medico camphoræ*, Helmstadt. 1748. 4.

GEORG SAMUEL KECHELEN de *genesî & rafinatione camphoræ*, Argentor. 1748. 4. bona disp.

CAROLI LINNÆI *amœnitates academica*, Stockholm 1749. 8. Octodecim sunt disputationes, quarum multæ botanicae, cum variis augmentis, cæterum jam indicatæ, Leidæ eod. anno 8. recusæ sunt. EJ. *materia medica ex plantis*, Holm. 1749. 8. qua plurimæ officinarum plantæ ad sua genera primum relatæ sunt, cum brevibus virium indicibus. EJ. disp. cui titulus *lignum colubinum*, Upsal. 1749. 4. cum descriptione trium plantarum quæ eo nomine veniunt. EJ. *radix senega*, ibid. eod. anno, nempe species polygalæ antipleuritica. EJ. (aut respondentis LÖFLINGII) *gemma arborum* ibid. eod. anno bona disp.

EBERHARDI ROSEN *observationes botanica circa plantas quasdam Scania non ubivis obvias*, Londini 1749. 4. Stirpes multas raras accurate secundum flores & fructus describit.

Nögen försök om skogs planteringen ock skörsel, Holm. 1749. 4. sylvarum sationem, cultumque docet, & jubet decidere folia, lignaque in sylvis relinquere.

CAROLI SWEDENSTIERNÆ *medel ock utväge til rikets uphiälpande genom landböckers upodling*, Stockholm 1749. 4. Laudat cultum pratorum, eumque promovere jubet, effossa terra, fossis lapidibus repletis, terra iterum super strata, quam egregie fecundam esse observavit, quod inventum etiam habet **TROWEL**. Alia ad agri cultum consilia proponit.

BIOERNE PAULI *specimen observationum qua circa plantarum quarundam maris Islandici & speciatim Alga saccharifera dicta originem, partes & usus collegit*, Hafn. 1749. 4.

GEORGII DIONYSII EHRET *icones stirpium*, quarum 16. tabulæ prodierunt, pulchras & raras stirpes splendide & fideliter exprimunt. Cum **WILKESII** papilionibus etiam icones arborum & stirpium ad naturam delineatæ prodierunt.

DALIBARD *flora Parisiensis prodromus*, Paris. 1749. 8. secundum **LINNÆI** methodum.

DAVID. de GORTER *Elementa botanica*, Harderovic. 1749. 8. ad mentem **LINNÆI**, ut tamen faciem alicujus momenti esse agnoscat.

ALBERTI HALLER *opuscula botanica*, Gotting. 1749. 8. Itinera Alpina duo, Hercynicum unum, disp. de methodo discendi botanice, & de aliis libellum hunc ornatius & emendatius recusum dedi.

J. GEORGII GMELIN *sermo Academicus de novorum vegetabilium post creationem exortu*, Tubing. 1749. 8. Varietates noviter pronasce, etiam hybridas species, ex planta mare & femina diversi generis, ostendit exemplo Delphinii, verbenæ.

GEORG. RUD. BOEHMER disp. de plantis caule bulbifero, Lips. 1749. 4.

Kurze anweisung wie die vveissen maulbeerbäume von den saamen gezogen, gepflanzt und gevvartet vverden sollen, Stuttgart 1749. 8. Cultus mororum qualis VVürtembergicis terris convenit.

J. A. HERZOG *neue acker theorie*, Magdeburg 1749. 4. aliquæ in methodum **KRETSCHMARI** animadversiones.

J. FRIEDER. NEUMANN *erfahrungsmässiger bevvais von dem ungemein schlechten kornbau*. **EJ.** *Discurs über seinen bevvais*, Berolin. 1748. 4. **EJ.** *Vorschlag der möglichen verbesserung des ackerbaues*, ibid. 1749. 4. Profundam arationem commendat, ut plures nodos pars culmi defossa generet.

DECOMBE *Ecole du jardin potager qui comprend la description exacte de toutes les plantes potageres*, Paris 1750. 12. 2. vol. Fimo calefactas primum areolas fuse describit, tunc stirpes oleraceas & earum varietates, ad propria, quantum video, experimenta.

C. LINNÆI & LAUR. MONTIN *splachnum* (novum musci genus), Upsal. 1749. 4.

C. J. TREW *selectarum plantarum decades*, August Vindel. 1750. fol. Egregiæ rariorum stirpium, fere ab **EHRETIO** paratæ icones. **IDEM** Norimbergæ edere cepit *amænißimorum florum imagines*, fol. nempe hortensium varietatum flore pleno.

CAR. AUG. a BERGEN *Flora Francofurtana*, Francof. Viadr. 1750. 8. Post lexicon botanicum habet enumerationem stirpium spontanearum agri sui multo quam **JOHRENIUS**, plenior cum synonymis recentissimis, methodo dispositam, quæ **TOURNEFORTIANÆ** propior sit, cum generum characteribus. Hortenses plantas adjecit.

GEORG. RUDOLPH BOEHMER *Flora Lipsiæ indigena*, Lips. 1750. 8. Methodus est, quæ **LUDWIGH**, adfinis **LINNÆANÆ** & **RIVINIANÆ**, observationes multæ, tum in doriferis fungis & graminibus **GLEDITSCHIANÆ** experimenta, synonyma etiam selecta adhibuit.

PHIL. CONRAD. FABRICIUS in disp. continente *observationes quasdam circa constitutionem epidemicam* anno 1750. Helmstad. 1750. 4. dedit catalogum stirpium sponte circa eam urbem nascentium.

J. SIGISMUNDUS POPOWITSCH in *untersuchung vom Meere*, Norimb. 1750. 4. dedit aliquas in **LINNÆUM** animadversiones, & de fungis in alium ordinem constituendis prodromum.

J. AUGUST. GROTIAN *physicalische vvinter belustigung*, Nordhausen 1750. 8. De artificiiis quibus hyberno tempore plantæ in aqua florere coguntur, & inprimis Hyacinthi.
Bonum

Bonum cultum dedit Caryophyllorum hortensium & leucoiorum hybernorum, senam viridem vivadivandi rejicit, utilis & expertus auctor.

SENDSCHREIBEN an Herrn KRETSCHMAR Berolin. 1750. 4. Laudat, ad Anglorum exemplum, sationem naporum ad agros arenosos.

TOBIAS CONRAD HOPPE von den grossen nutzen der Linagrostis und... dem vürzelthee, Berolin. 1750. 4. Linagrostidis vires ad ambustionem laudat.

CHRISTIAN REICHARDT abhandlung von allerhand saamenvverk, Erfurt 1751. 8. sationis modum & seminarii condendi rationem docet, & multa artificia ad semina immatura maturanda; semina minora tuto terræ committenda, vitanda infecta, &c.

Les agréments de la campagne, Leyde 1750. 4. Plenum opus de omni opere hortensi, etiam de vite, & hesperidibus, cum nonnullarum iconibus.

HUGHES GRIFFITH natural history of Barbados, Lond. 1750. fol. maxima ex parte botanici argumenti est.

THOMÆ SHORT discourse on the sugar milk tobacco, Londin. 1750. 8. magis ad diætetica pertinet, & de thea inprimis fusius agit.

CAROLI LINNÆI semina muscorum, Upsal. 1750. 4. nempe in Polytrichis scobs illa fusca, tum in Moriis.

VITALIANO DONATI storia naturale marina dell' Adriatico, Venet. 1750. 4. Eximius liber, quo triplex classis marinarum stirpium, fucorum, coralliorum, & spongiarum in methodum naturalem ex intimo charactere disponuntur, & inprimis polypos coralliorum incolas. LEONARDUS SESLER nomini CL. VIRI Vitalianam, novum genus, inscripsit.

Plantas aliquas marinas descripsit, viresque laudavit CL. RUSSEL in Libro de re glandulari.

LAUR. HEISTER & BRUKMAN been album, Helmstad. 1750. 4.

LAUR. HEISTERI præfatio ad BURCKHARDI Epistolam jam dictam, multa habet ad commendationem botanicorum Germanorum, maxime JOACH. CAMERARII & J. JUNGII, & nova duo genera stirpium, JUNGIAM atque BURCKHARDIAM.

CL. GLEDITSCH in actis Berolinensibus 1747. de saccharo dauci & fisci, anno 1748. de semine & flore fungorum egit.

In nuperis diariis Germanicis multa botanica sunt, ut in Hamburger Magazin MOELLERI argumenta contra stirpium sexum, & pro eo CL. KÆSTNERI, &c. Neue Oeconomische nachrichten quæ anno 1749. Lips. 8. edi ceperunt, & etiam nunc continuantur, tota huc pertinent, ad varia artificia pro cultu sylvarum, agrorum, medicæ, de vario fimo genere, animadversiones in CARLOWITZII & ROHRII culturam sylvarum, in REAUMURI de eadem re consilia, &c. in Oeconomische samlungen quæ Stuttgartiæ edi ceperant 1749. 8. aliqua huc faciunt de sylvarum satu, inoculatione vitium, torfa.

EVER. JAC. VAN WACHENDORFF horti Ultrajectini index. Ultraject. 1747. 8. Plus in Libro est quam promittebat titulus, plenum nempe novum systema Botanicum, cujus classes ex sexu, ex ratione staminum ad petala, ex situ floris in fructu vel super fructum, ex numero staminum, ex naturalibus tribubus collectæ sunt, ut interim petalorum minor, quam vulgo, habita sit ratio. Genera & species pleræque ex LINNÆO.

D. GUETTARD observations sur les Plantes. Parisiis 1747. 12. 2. vol. Catalogum plantarum Stampensium D. DESCURAIN, Aurelianensium D. CHAMBRAI, & Gallicarum ex variis Provinciis Galliæ, proprio labore lectarum tradit. Pilos prioribus diligentius rimatus, ex iis, varie ramosis, aut figuratis, classum ordines minores constituere suscepit.

ERNEST GOTTLÖB BOSE de nodis plantarum. Lips. 1747. Diff.

J. V. W. (van VVyck) Vertoog, betreffende ongemeene schadelyke planten. Rotterdam 1747. 8. cum maximis erroribus.

Beschreibung historischer und natürlicher Merkvürdigheiten der Landschaft Basel. Erstes Stück. Basil. 1748. 8. Continet vitiosum catalogum plantarum Montis Muteti.

MARK CATESBY Appendix to the natural history of Carolina. London. 1748. fol. Viginti sunt plantæ, quarum plures Londini in hortis curiosorum floruerunt, interque eas nobilissima Ginseng, tum Stevvardia, Meadia, aliæque.

CAROLI LINNÆI Hortus Upsaliensis exhibens plantas exoticas horro Upsaliensi a sese illatas ab anno 1742. ad 1748. Stokholm. 1748. 8. Multæ plantæ hic primum deter-

determinantur, multæ ex prioribus mutantur & in speciebus, & in nominibus specificis.

CASIMIRI CHRISTOPHORI SCHMIEDEL Icones plantarum & analyses partium æri incise, adjectis indicibus nominum, figurarum explicationibus, & brevibus animadversionibus. Norimberg. 1748. fol. Tres tabulas vidi, perpulchras, cum ditissima omnino partium fructificationis anatome, & egregiis iconibus.

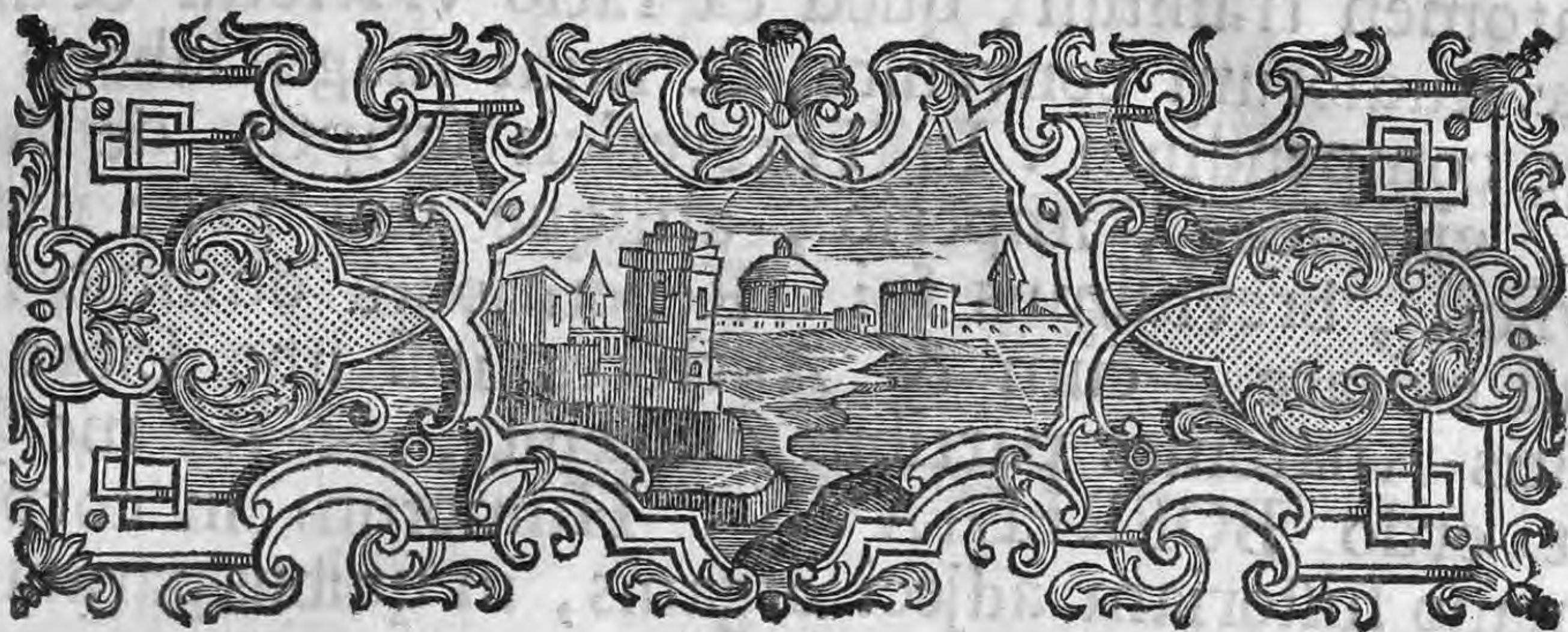
C. J. TREWII icones posthuma Gesneriana. Norimberg. 1748. fol. Ducentæ & 16. Icones jam ligno insculptæ fuerunt; earum ligneos typos redemit vir *ILL.* & edidit, nihil cedentes reliquis Gesneri operibus. Spes est, etiam reliquas figuras, quæ vel in ligno delineatæ fuerant, vel in charta descriptæ, hujus præstantissimi viri cura prodituras.

JOHANNIS MICHAELIS SELIGMANN Nahrungsgefaesse an den Blättern der Bäume nach ihrer unterschiedlichen Austheilung und zusammenfügung abgedruckt. Norimberg. 1748. fol. Sceleta sunt foliorum ex diversis arboribus, per macerationem parata. Præfationis loco historiam hujus artificii pro sua eruditione præmisit *C. J. TREWIUS.*



Hieronymus Clapp M. D.

CAN-



C A N D I D O
L E C T O R I
ALBERTUS HALLER,
S.



ÆC VII. pars, qua anatomici Auctores continentur, fusior est omnino reliquis. Sed veniam me impetraturum spes est, cum æquum videatur in eo studio me paulum luxuriasse, in quo maximam partem vitæ meæ trivi. Et ne sic quidem permisi mihi, ut vel ea scripta omnia reciperem, quæ in mea Bibliotheca sunt: omisi Disputationes quarum immensa vis in Germania prodiit, neque exigua in Gallia Belgioque, & selegi, quantum licuit eas, quæ plus habere utilitatis viderentur. In ordine mihi aliquam libertatem indulsi. De Theoria nempe medica Partem primam, qua Physiologia continetur, evulsam ad
Ana-

Anatomen transtuli, quod ea ratio videretur & analogiæ studiorum convenire, & mihi magni laboris faceret compendium. In Theoreticis scriptis, de Anima, ejus sede, imperio, aliisque jam pene metaphysicis, brevissimus fui. Repetitiones omnino non potui evitare, cum & Auctores ipsi uno Libro de multis Anatomies partibus dixerint, & ita me jufferit ordo BOERHAAVII. Humorum in corpore humano historiam adjeci organis, in quibus parantur.

Dedi die 25. Octobris 1748.



M E T H O D I S T U D I I M E D I C I

P A R S VII.

Consilia Anatomica.



Medicus, prædictis cognitionibus imbutus, instructus est iis dotibus, quæ in ipso requiruntur, ut possit cum fructu suum proprium studium aggredi. Dixi jam antea, quid ipsum ex mathematicis meris scire oporteat, tum quid ex physico-mathematicis, tum ex physicis ipsis, tum postea, quid sciendum sit ex illis, quæ materia medica præscribit ex tribus classibus, & quo ordine se instruere hac disciplina debeat. Verum hætenus de studio medico nihil dixi, nam ea, quæ recensuimus, æque pertinent ad Philosophum, quam ad Medicum. Nunc ipsum studium medicum, stricte dictum, dicendum est, quod rationem eo deducit, ut sciat, quid sit corpus humanum, quo modo constructum sit, quid & quomodo agat, quando exorbitet in actionibus suis, quibus remediis instructum corpus pergat agere, quibus modis destruat. In hac parte artis medicæ requiritur, ut sciamus, quid discendum habeat Medicus, & quo ordine discere debeat. Itaque indicandum est:

1. Quomodo labore facillimo,
2. Impensis minimis,
3. Tempore minimo;
4. Cum maximis memoriæ sublevamentis, scitu necessaria absolvere possit Medicus.

Quicumque has omnes dictas perpendit conditiones, & ad omnia, quæ in medicina se offerunt, cognoscenda attendit, videbit facile, primum omnium, quæ discere debet, esse anatomen: Hanc magnus RIOLANUS vocabulo optimo *Anthropographiam* vocat; nam *anatomie* tantum *dissectionem* significat, nos autem quærimus proprie sic dictam *ἀνθρωπογραφίαν*, hoc est, descriptionem hominis seu corporis humani, quæ per *ἀνατομὴν* innotescit. Vocari quoque posset jure merito *θρῶποσωματολογία*, hoc est, *sermo de corpore humano seu de corporis humani fabrica*, uti etiam magnus VESALIUS suum Librum inscripsit, quem vocat *corporis humani fabricam*.

Omnes enim Medici fere conveniunt, incipiendum esse studium medicum proprie dictum ab illa scientia, sine qua nihil potest Medicus, & omnia tantum tumultuarie agit. Reperiuntur equidem, qui contrarium dicant, sed eorum ab eruditioribus exploditur ubique sententia; nec igitur argumenta,

quibus sententiam nostram confirmare possumus, afferemus, cum satis per se pateat veritas.

Per *Anthropographiam* intelligimus descriptionem materiæ, figuræ, structuræ; nexus illarum partium, quæ corpus humanum vivum constituunt, quantum manu artificiosa, ipsi oculo exercitato exponi possunt.

Dico, quantum artificiosa manus hæc omnia ipsi oculo in corpore exponit; non ergo, quæ per ratiocinia indagat, sed quæ disseccando corpus artificiose, oculo partes detegendas ita præbet ut describi possint. Hoc nobis est studium anatomicum; & de eo studio nunc dabimus consilia, quo modo adquiri possit, quod certe non nisi multa lectione & magna meditatione fit.

Vel detegit illa artificiosa sectio partes in toto corpore firmas, & cohærentes, quæ vocabulo usu recepto nunc vocantur solidæ, invenitve partes, quas magnus HIPPOCRATES τὰ ἰσχυρὰ, hoc est, *continentia*, id est *partes continentēs & coercentes* vocavit. Vel in nostro corpore deteguntur per anatomiam partes fluidæ, quæ vocantur Latinis *humores*, & hodie vocabulo minus Romano, *liquida* seu *fluida*, & HIPPOCRATI τὰ ἐνισχύμενα, ut optime FOESIUS emendavit, id est, *intus contenta*. Hisce addidit idem HIPPOCRATES τὸ ἐνὸρμον, seu *impetum faciens*. Nos autem credimus HIPPOCRATEM (a) intellexisse impetum, quem facit mens, quum aliqua pars movetur. Ita, quum movetur digitus, requiritur motus solidorum & fluidorum, (nempe ut fluida copiosius in vasa fluant), & simul mentis directio, qua moveantur solida & fluida. In hac actione quod nobis ignotum est, & quod mens non mechanice, sed incognita ratione in solida nostra & fluida agit, credo HIPPOCRATEM intellexisse per τὸ ἐνὸρμον. Neque enim noverat spiritus animales, sed ὁρμὴ significat *impetum cum desiderio*, qualem etiam habet mens, quando partes corporis nostri movet.

Anatome ipsa dividitur in duas partes.

1. In partes solidas (recepto nunc, sed minus apto vocabulo, fluidorum enim partes etiam sunt solidæ) dictas: firmæ vocantur Latinis, & hæ sunt partes *continentes*.

2. In reliqua *contenta*, quæ intra hæc vasa sunt. Si nunc velimus etiam cum Scholasticis addere τὸ ἐνὸρμον, habebimus liquidum tenuissimum totius corporis, id est spiritus animales.

Ergo tota anatomia pro diversitate harum duarum partium detectarum, etiam se ipsam distribuit. Consilia igitur circa hoc studium erunt, quo modo discamus cognoscere τὰ ἰσχυρὰ, tunc quo modo τὰ ἐνισχύμενα, & apud quos Auctores ea quam facillime discantur.

Prima ergo anatomix pars detegit sectione, describit verbis, materiam, figuram

(a) Locus exstat in Libro spurio, nempe *sexto Epidemicorum* Sect. 8. aph. 19. ed Foef. Graves autem sunt rationes, quæ non suadeant τὰ ὁρμώντα aliter intelligere quam de spiritibus. Nam & GALENUS ita sumit, adeo propior Hippocrati, & ARETÆUS simillima loca habet, in quibus σπερμὰ & πνεύματα manifesto Hippocraticis vocibus substituuntur. Vide FOESII dictum commentarium ad Epidemicos loc. citato; tum in *Oeconomia* ad vocem ἰσχυρὰ, & adde plurali numero ὁρμώντα de voluntate non posse dici, ut quidem ἐνὸρμον paulo probabilius liceret sumere.

guram, structuram, nexum partium firmarum, quæ ad constitutionem hujus corporis concurrunt. Invenitur ergo primo in his partibus materies. Per *materiem* intelligimus omnes partes, quæ concurrunt ad constituendam unam firmam partem corporis, sensibus detectam. Hæc materies nondum; ab anatomicis descripta est. Quando enim *musculum* describunt, dicunt corpus esse hoc dato modo apparens, constans arteriis, venis, nervis. Verum si nunc rogem, quid *arteria* sit, dicunt esse corpus constans membrana inflexa cavum conicum formante. Sed rogo iterum; quid est illa membrana? & si eadem ratione pergam quærere, pervenio ad ultimam simplicissimam partem hunc musculum constituentem, quam cognoscere deberem, sed nullibi descriptam invenio ab anatomicis. Anatomici vero de his ultimis minime solliciti, quando arteriam describunt, non membranam simplicem, sed vas constans ex membrana aliis vasis conflata describunt, & hinc errarunt, quando materiam descripserunt. Aliud dabo exemplum in simplicissimo corpore; rogo anatomicos, quid sit *os*? dicunt *os* esse corpus durissimum, firmissimum, ad sustinendum corpus ipsum factum. Si nunc rogo, quænam est *ossis materies*? dicunt, si *os* per chemiam examinetur, dat aquam, salem, oleum, terram, hanc adeo materiem ossis esse. Sed certe errant quam maxime, nam docemur in cœmeteriis ossa sole exsiccata, pluvia humectata, sole iterum exsiccata, rore iterum humectata, tumque vento & sole iterum exsiccata, tamen adhuc ossa esse. Si tunc chemici velint ex hujusmodi multiplici aeris ævique labore præparatis ossibus educere salia & oleum, non possunt, sed materies manet fixa, omni sale & oleo privata, & tamen *os* adhuc erat integrum. Ergo patet, quid sit materies ossis, terra nempe, quam anatomici nunquam curarunt. Alterum exemplum est, si rogaverim anatomicos, quid est *vas*, dicunt, membranam esse sic involutam, ut canalem conicum formet, & sic faciat vas arteriosum. Tunc rogo, quid est *membrana*? debent dicere rogati, esse texturam vasorum plurimorum arteriosorum, venosorum, &c. quæ liquida ferunt, & transudant humores, & iterum forsan aliorum adhuc vasorum quidem, quod ignoro. Ut sciamus ergo materiam membranæ, debeo tollere omne fluidum, & patet, materiam membranæ iterum terram esse, æque ac in osse.

Dixi in definitione, figuram etiam debere describi, & in hoc unus BELLINUS ex sola consideratione arteriæ plus perfecit, quam reliqui anatomici sua descriptione.

Sed *structura* etiam examinanda est, quæ est accommodatio materiæ. Nam figura est tantum superficiiei definitio, sed structura est compositio. Hoc etiam per solum MALPIGHIUM & RUYSCHIUM descriptum est, quod suo loco dicemus.

Nexus etiam est considerandus, quod iterum multum facit.

Nunc operam dedi meditatus, ut consilia darem fidelia, ex quibus discerent tirones, apud quos Auctores anatomiam invenire possint; & si audeam jactare, supplebo hic quosdam Auctorum defectus.

Ut ordine procedam, revocandum est animo, me nuperrime, de dirigendo

studio anatomico dixisse, oportere omnium primo examinare partium firmarum naturam; nunc consilia dabo, quo modo hoc peragendum sit.

Ut addiscat tiro quam felicissime harum firmarum partium totam naturam, oportet ut prius cognoscat illas partes, ex quibus minimis omnes componuntur majores, & in quas rursus resolvuntur corpora. Disputatio acerrima certe hic est, neque unquam lis adhuc composita fuit, quænam sint elementa corporum, ex quibus corpora conflarentur. Per *elementum* etiam intelligimus partis cujuscunque firmam originem & stamina. Illa, inquam, firma immutabilia quibus tanquam rerum natura persistit, prima exordia, primas particulas, quæ sua aggregatione corpora constituunt, vocamus elementa rerum. Sunt ergo quædam partes primæ minimæ, quæ nostras partes firmas constituunt, nam pars sensibilis nobis in corpore non est unica pars, sed plures aggregatæ partes; has ergo cognoscere debemus, ut naturam partis cognoscamus.

S E C T I O I.

De solidis partibus.

HÆ partes sunt corpuscula exigua, satis inter se similia, simplicissima, terrestria, ex fluidis humoribus advectis ad singula loca secreta, & adposita cunctis partibus, & hæc sunt prima elementa, ex quibus hoc nostrum corpus fit. Si rogetur, quænam sint *ultima stamina* minimarum partium nostrarum; dicemus corpora esse exigua, & hoc clare demonstratur apud anatomicos, nam maxima pars corporis fit ex vasis, vasa fiunt ex membranis, quæ involutæ faciunt cavum; hæc etiam membranæ fiunt iterum ex vasis, quæ vasa membranam constituentia iterum constant membranis, hæc iterum ex vasis; donec ad ultimum vas perveniamus, quod habet membranam, non ex vasis jam amplius (aliter enim non esset ultimum vas), sed ex fibris compositam, quæ ergo fibræ, ultimam membranam constituentes, non sunt cavæ, aliter essent vasa, sed mera filamenta solida (a). Hæc vero fibræ (b) constant ex me-

(a) Non necesse est fuscè hic repetere quæ alibi dixi de membranarum compositione. Eæ certe neque omnes, neque sola vasa, habent, ex quibus componantur. In Arachnoidea membrana, adeo magna, quæ post duram Membranam longissima sit in corpore humano, vasa nulla demonstrata sunt. Deinde membranæ veræ, quæ vasa habent, pinguntur & percurruntur, vasis non constant. Maceratio vero, analogia cum membranis per morbos natis, similitudo cum laminis cellulosis, demonstrant membranas ex brevibus filis cellulosis fieri, in se invicem stipatis, atque se comprehendentibus, sive nunc præterea vasa ad membranas constituendas accedant sive secus. Vide nostros commentarios in *Inst. Boerb.* n. CCCCXXXIX. CCCI. &c. & DAVIDIS CHRISTOPHORI SCHOBINGERI *Diss. de tela cellulosa dignitate.* Gotting. 1748. 4. & video nunc ex CL. ROGAAR *Diss. de nutritione eandem mentem esse* B. S. ALBINO.

(b) Fibræ veteribus satis neglectæ & sub ipsa simplicitate sua latentem FRANCISCUS GLISSONIUS primus contemplatus est, & de fibra ejusque natura animali irritabili in *L. de Ventriculo & intestinis* dixit.

Deinde LAURENTIUS BELLINUS *L. de contractione naturali* præter vim irritabilem, per expe-

meris partibus solidis minimis, exiguis, &c. Ultimæ ergo partes nostrorum solidorum particulæ valde exiguæ sunt, quod erat demonstrandum. Sed præterea hæ partes sunt inter se *satis similes*, nam certe examinavi per ignem chemicum ultimum solidum omnium fere animalium, & constitit, si os omni membrana sua, omni liquido suo orbatum fuisset, idemque tam diu coqueretur in aqua donec aqua tandem adfusa æque clara & insipida inde rediret, tunc semper fibras solidas sibi ubique similes remanere. Idem etiam verum erat de aliis partibus, v. gr. fumo musculi unciam unam, & coquo in aqua, & coquendo repeto, tam diu addendo nempe continuo novam aquam, prioris adfusa, donec ebulliens cum musculo aqua, æque insipida, & pellucida inde redeat, tunc certe supersunt fibræ vasorum, sed omni materie in aqua solubili privata.

Neque hoc tantum verum est, sed maxima mutatione, quæ in natura contingere potest, ad eandem simplicitatem omnia solida redeunt. Quando musculus comburo, non destruuntur hæ fibræ, sed rectæ & extensæ manent quasi integræ, & ubique in una parte & in omnibus eadem sunt. Nam & ex osse, & ex arteria, vena, musculo, pilo capitis, &c. ubique eadem fibræ habentur eandemque præbent in conspectu materiem. Adeoque id, quod nostro corpori firmitatem dat, fere ubique idem est. Hoc mirum videbitur iis, qui putarunt singulæ parti corporis humani adesse singularem firmitatem, seu singularem materiem pro singulari firmitate danda. Verum & ratio & experimentum nobiscum pugnant. Si ipsum embryonem iisdem experimentis subjeceris, arteriæ ejus ipsæ fibras dabunt, & membranæ ustæ eadem elementa demonstrabunt, quæ membranæ in adulto, & ex omni denique parte, utcunque diversa, eadem

experimenta cognitam, etiam hypothesin de fibræ fabrica mechanica pro ea vi explicanda proposuit. Eum virum plerique recentiorum imitati sunt.

JOHANNES QUINCY in III. *Essay*, qui prodiit cum commentario in traspirationem Sanctorii, fere sequitur BELLINUM.

De fibris earumque intervallis & ex nervis origine etiam conjecturam adfert GUILIELMUS COLE.

J. DOMIN. SANCTORINUS in *Opere de structura, & motu fibra* & in *Tractatu de nutritione*, Venet. 1705. 8. Fibram omnem habuit pro vase nerveo minimo, & ejus fabricam fere Belliniano more contemplatus est.

GEORGIUS BAGLIVUS in *L. de fibra motrice & morbosa*, Rom. 1702. Ultrajecti 1703. 8. edito, fibras membranæ duræ & musculorum imprimis considerat.

HERMANNUS BOERHAAVE de fibra mere terrea, cum glutine aqueo & oleoso, ejusque compositione in vasa & membranas & rigescentia successiva, theoriam novam & in hoc nostro opere proposuit, & in aphorismis. Eum Cl. a SWIETEN & plurimi recentiorum secuti sunt.

GEORGIUS CHEYNE de *fibra natura ejusque laxa morbis*. Lond. 1725. 8.

G. CHEYNE libro hic citato dat theoriam fibræ, quam nervosus succus extus irroret, &c.

MICH. ALBERTI *theoria generalis motus partium solidar.* C. H. Hall. 1730. 4.

CL. WEISS de *discrimine motus elastici & vitalis fibrarum*. Altdorf. 1735. Diss.

JOH. de GORTER in *Exercitatione de motu vitali*. Amstel. 1737. 4. flamen sive fibram primigeniam describit, ejusque vim contractilem distractioni musculosæ oppositam, unde omnis in corpore humano alterna motuum series & perpetuitas in motu oriatur.

J. H. SCHULZE de *tono partium* C. H. Hall. 1737. 4.

HIERONYMUS DAVID GAUBIUS in *Diss. Inaug. de solidis corporis humani partibus*, Leidæ 1725. 4. nitido sermone Præceptoris sententiam proposuit.

eadem semper habetur materies, five in adulto, five in embryone fuerit. Ergo id, quod maximum & firmissimum est in corpore, constituitur ex eadem materie, ex qua id fit, quod in corpore minime firmum est; nam membrana ex vasis lymphaticis constans, est ex eadem materie facta, qua maximum os, & partes nostræ firmæ majori unice minorive aggestione & compositione eorum minimorum corpusculorum differunt. Hinc ergo tuto concludimus, ultima corpora, ex quibus majores nostræ partes constant, esse corpora valde parva, & satis inter se similia.

Verum 3. dico, hæc elementa corporis satis simplicia esse. Quod nempe in omni corporis puncto præbet eandem materiam, illud vocatur *simplicissimum* five illud vocatur simplicissimum, cujus pars est ejusdem cum tota massa naturæ.

Verum partes corpus nostrum constituentes, sunt etiam in hac ipsa definitione *simplicissima*. Si enim arteriam sumserim & simul os aliquod, & utrumque combusserim igne, remanebit pars fibrosa in utroque, ubique, eadem simillima.

Tandem dico *partes terrestres* esse, & hoc vocabulo utor, quia melius non novi, quo hanc materiem exprimam, nam chemici vocant terrestria corpora, seu partes terrestres, quæ neque igne, neque aqua solvi possunt, sed immutabiles sunt in utroque. *Salinas partes* vocant, quæ igne & aqua solvuntur, iterumque coeunt in materiem lapideam. *Olea* denique vocant corpora, quæ igne solvuntur & comburuntur, sed cum aqua non miscentur.

Spiritus sunt corpora aquæ miscibilia, & combustibilia ad ignem. *Aqua* est corpus, quod ad minimum ignem liquefit, & avolat absque odore & sapore. Atqui nullis nostrarum ultimarum partium hi characteres conveniunt, cum in igne & aqua insolubiles sint, hinc eas partes terrestres vocare cogimur.

Si jam quærat, quid sint partes in nobis simplicissimæ: Veteres dixerunt *partes elementales*, sed ex partes elementales sunt terrestres; nam has ultimas partes unice in omni parte easdem, similesque ubique, & immutabiles invenimus, eæque dant firmitatem nostro corpori. Recentiores equidem aliqui (ut

JO.

J. F. SCHREIBER de fibra, glutine, causa firmitatis, & debilitatis, compositione fibræ, in *Elementis* suis acute dixit.

PHILIPPI CARON, Ergo a vario fibrarum contextu & elatere diversa temperies, Paris. 1741. 4.

CLETON WINTRINGHAM in enquiry into the exility of the vassels in human body, London. 1743. 4. stamina corporis humani & minima, & perpetua facit, certe magna ex parte & fundamentum esse *natura individuum*, & specierum perennitatis.

CL. KAAU in L. de perspirat. versus finem, gluten fibramque describit. 957. 961.

JACOBI VERDELIAN des MOLES, Ergo temperamenti diversitas a diversa fibrarum constitutione, Paris. 1744. 4.

J. CHRISTIAN LEONHART de constitutione fibrarum naturali & præpostera. Erlang. 1743. Disputat. *.

CL. BROWNE LANGRISH in nuperrimis Cutlerianis lectionibus anni 1747. aliqua de fibra habet.

JOSEPHUS DUVERNEY, quod miror, nam eum certe pro principe anatomicorum habeo) dixerunt, partem simplicissimam corporis os esse: verum profecto in osse sunt adhuc membranæ, medulla, lymphæ &c. quibus omnibus, si privetur os, remaneret tantum pro ultimis staminibus pars fibrosa terrestris, ut in omni alia corporis parte.

Denique dico ex *fluidis adveſta*, novimus enim, hoc nostrum corpus, quod nunc tantæ molis est, antea fuisse minimum, & millesies minus uno grano sabuli, & ex tantilla molecula adcrevisse; hocque omne factum esse adpositione minimæ moleculæ ad priores, nam si fibræ non adponerentur aliæ partes, longior ea fieri non posset, & una in partibus suis coherere; ergo hujusmodi adpositione partium increvit hæc machina, hæc omnia fuerunt elongata, aucta, ampliata, vasa, unde & reliquæ partes componuntur. Cum autem omnia vasa debuerint increſcere ita æquabiliter, ut videmus; hinc ad singula vasa distinctæ debuerint adplicari particulæ, quod fieri non potuisset, nisi illæ partes cum fluido, per vasa recta eo deductæ fuissent.

De natura harum ultimarum partium nulli Auctores scripserunt, quantum novi; forte possem commendare hic. 1. Ea quæ hinc inde in theoricis & institutionibus meis habeo. Tum 2. ea quæ in praxi præmissi ad historiam morborum de morbis fibrarum, nec non. 3. Tertium, quartum, & quintum processum nostri collegii chemici, ubi omni accuratione (a), qua possum in ultima rerum stamina inquirō.

Alios quos novi, super hac re, non possum commendare Auctores.

Postquam anatomes tiro percepit hæc, tunc demonstranda & explicanda clarissime est fibra minima partium firmarum, quæ non potest ulterius resolvi, nisi in elementa modo descripta, ex quibus fibris cum aliis compositis minimæ membranulæ oriuntur, & quidem simplicissimæ.

Quæritur ex quibus constet hæc ultima fibra, ex qua, per combustionem, constat constitui minimum vas. Respondetur, minima membrana constat ex fibris (per antecedentia) illa membrana convoluta facit minimum vas; ergo minimum vas constat ex minima membrana, quæ ex minimis fibris fit, quæ fibræ ex mera terra constant; ergo fibræ minimæ sunt terrestræ. Nunc ex fibræ, ex terra factæ, sunt filamenta solida, oblonga, non cava, quæ sibi mutuo applicata cum aliis fibris conjunguntur & intertexuntur, & sic faciunt membranam, uti fila lini intertexta lintea efficiunt; hæc membrana convoluta facit cavum, sicque jam habemus minimum vas, minimum autem vas, diu coctum cum aqua, semper repetita adfusionē recentis aquæ, soluto sic omni solubili, orbatum denique omni suo succo, & arefactum omnino, si deinceps cum suis partibus firmis oculo exponatur, & microscopio examinetur demum, nos docet,

(a) *Aphorismi de cognoscend. & curand. morb.* n. 21. 38. 39. cum suis commentariis. *Element. Chem.* II. p. 360. 361. Ed. Leid. *Institut. Medic.* cap. de *nutritione* imprimis n. CCCCLIII. Confer. Cl. KAAU de *perspirat.* n. 957. ad 961. & alibi, & SCHOBINGERI nostri *Disputationem* modo citatam.

BARTHOLOMÆI MURRY, *Ergo in celluloſo textu frequentius morbi & morborum curationes*, Paris. 1749. 4. Omne humanum corpus ex celluloſitate fieri nobiscum adserit.

cet, quid ultimum vas sit. Si pilum comburamus ad flammam alcoholis, ne inquinatio fiat, dissipantur liquidissimæ partes, & si tenacula subtiliter teneatur pilus, exterius adhuc cohærebit, retinebit figuram pristinam tenaciter, & hinc liquet, ultimum vas habere membranam constantem fibris, quæ constant partibus, nec aqua, nec igne, solubilibus; ergo terrestribus.

Super hac re, Auctores qui ad manus meas pervenere, nulli omnino scripserunt.

Verum tribus locis, supra citatis, in exercitationibus nostris hæc iterum poterunt inveniri.

Postea docenda erit canalium minimorum, antea descriptorum, textura varia, secundum varios modos, quibus fibræ vel canaliculi sibi mutuo attexuntur, cursu nempe parallelo, cursu intertexto, & cursu spirali. Jam diximus, quo modo vasa ex membranis, &c. constent, sic enim se habet negotium. Materies ultima terrestris constituit primo fibras, hæ sibi mutuo applicantur, & constituunt simplicem membranam, hæc simplex membrana constituit, si involvatur, vas, quod primum est & minimum. Hujusmodi vasa jam plura sumamus, ex intertextu suo constituent membranam, jam non ex fibris, sed ex vasis, constantem, illa involuta faciet etiam vas: hujusmodi nunc vasa plurima ex membranis non fibris, sed vasculosis constantia, si sumamus, & intertexamus, fiunt iterum membranæ, inde iterum vasa, & sic porro.

Intertextus horum vasorum, æque ac in linteis & pannis triplici modo fit (a) 1. Nonnulla vascula parallelo situ decurrunt, & ad se invicem cohærent. 2. Alia vascula inter illa parallela decurrunt recta, situ opposito, & angulos varios priora secant. 3. Alia sunt, quæ spiraliter intorquentur, & ita inter præcedentia decurrunt. Hocque vasorum intertextu fiunt majores membranæ, unde vasa majora, unde viscera & reliquæ partes. Si fibræ tantum sibi applicantur per parallelismum, tunc membrana fit simplicissima, & respectu fibrarum & nexus. Si vero fibræ sibi interserantur cursu intertexto, tunc membrana respectu nexus non est adeo simplex, ac præcedens. Et si denique fibræ spiraliter se mutuo involvant, tunc fibra est maxime composita.

Videbimus etiam, quid sit vas simplicissimum. Vas est omne illud, quod format cavum, in quo contineri potest aliud corpus, & ut plurimum fluidum. Ergo simplicissimum vas est, quod componitur ex membrana minima, & simplicissima, convoluta, sic ut cavum formet. Substantia hujus vasis sunt fibræ simplicissimæ, non iterum cavæ. Hic jam est finis vasorum, nam in infinitum hoc non progreditur, nullus enim alioquin terminus daretur nostro corpori, ergo nulla figura.

Jam intelligitur simplex membrana. Dicendum nunc, quid sint aliæ membranæ compositæ. Eæ non ex fibris compositæ sunt, alioquin essent membrana simplex.

Si

(a) Anatome nullum hujusmodi intertextum invenit. Pleræque membranæ, & maxime ipsa cutis, unice stipato villosi celluloso fiunt, absque ulla fibrarum longitudinem sequentium suspitione, & longe magis absque intertextis fibris. Eæ membranæ vero, quibus conspicuæ fibræ sunt, & inter quas sunt dura membrana cerebri, valvulæ arteriarum majorum, eæ alium omnino modum texturæ nactæ sunt, neque intertextum, neque spiralem, sed varie dispersæ per inorganicam membranam tendinæ fibræ modo parallelæ sibi adjacent, modo se secant, vario, & inconstanti modo.

Si vero penultima membrana fuerit, ea constabit ex vasis, quorum membranæ sunt simplicissimæ, hoc est ex fibris constantes. Hæc vascula jam iterum & secundum parallelismum decussim contortimque sibi mutuo applicata inveniuntur.

Membrana, quæ jam sequetur penultimam, constabit ex vasis, quorum membranæ non ex fibris, sed ex minimis vasculis constant, hanc jam membranam constituentia vasculosa vasa rursus secundum triplicem dictum modum intertexta esse possunt. Et tali modo pergimus ad crassissimas membranas, quæ ex maximis constant vasis, & intortu suo iterum maxima vasa constituunt, & viscera & reliquas corporis partes.

Hæc est omnium accuratissima idea, quæ de natura solidorum tradi potest. Anatomici enim nunquam vasa minima, nunquam membranas minimas, vel fibras minimas, sed tantum partes, quæ ex hisce comparantur, demonstrant.

Si nunc quærat, quænam sit causa roboris in homine; respondetur facile, oriri a compressione, & propinqua adunatione vasculorum minorum, expulso suo liquido concretorum, & constituentium fibram fortiolem, ita ut plurimæ fibræ, fiant in unam fibram, quæ tanto robustior erit, quo plures canales ex fibris constantes proinde plures fibræ concreverint. Tunc enim sequitur, unam chordam, si ex 100. prius fibris constaret, nunc constare ex 1000 fibris, adeoque 100000^{ies} nunc fortiolem esse, idemque in toto corpore fieri.

Vascula minima corporis humani neque oculis nudis, neque per microscopia visibilia reddi possunt; quare accurato tantum argumento, ex majoribus vasis cognitis deprompto possunt indagari. Demonstrari debet severissimo argumento, in corpore humano vasa esse, nimis minuta, quam quæ microscopiis videri queant. Ut id faciam, oportet, ut advocem microscopiorum opem.

Sit ergo A unus pollex geometricus, hic dividi potest in 100 partes geometricas adhuc conspicuas; sumo hujusmodi centesimam partem pollicis, ea sit B. Hoc posito sume corpus cubicum, cujus longitudo sit ea $\frac{1}{100}$ pars pollicis, & pone ante microscopium, deinde ejus magnitudinem visam retine. Ut nunc videas, quot vasa in hoc spatio contineri possint, invenies diametrum unius globuli rubri, in sanguine conspicui, esse centuplo minorem diametro talis cubi B, vel granuli sabuli, hoc est, diameter hujus globuli centies repetitus æquabit tunc diametrum grani sabuli, quale granum æquat $\frac{1}{100}$ partem pollicis (a). Ergo globus sanguineus habebit diametrum decies millesimæ partis pollicis, hoc est, si 10000 globuli ponerentur juxta se invicem efficerent lineam æqualem pollici. Ergo 10000. 0000. poterunt in uno quadrato pollice contineri globuli. Hinc demonstratur, quot vasa, quæ unicum globulum sanguinis capiunt, in uno pollice contineri possint. Nempe ostendit EUCLIDES, superficies esse ut quadrata diametrorum, ergo in spatio quadrato pollicis possunt contineri 100, 000, 000 vasorum, quæ singula adhuc capiunt unum globum sanguinis.

R r

Cum

(a) Diametrum æqualem facit $\frac{1}{1240}$ uncia HALESIUS *Hamastat.* p. 58. & totum globulum $\frac{1}{25000}$ arenulæ LEEUWENHOEKIUS *Phil. Transf.* n. 106. Sed hoc loco non quæritur de arithmetica certitudine, quo unice exemplum traditur.

Cum enim vasis minimi membrana tenerrima sit, negligi poterit, & tot adsumi vasa in dato spatio, quot sunt globuli.

Hæc sunt quæ oculus microscopio adjutus, quoniam sunt opaca, videt. Verum, si nunc 100. milliones vasorum videt in uno quadrato pollicis, non tamen ea sunt minima, vehunt enim sanguinem. Hæc ergo vasa adhuc maxima sunt in nostro corpore, quod longe minora sanguineis continet. Id inde patet, quia hæc, quæ videmus, rubra vasa, edunt vasa lymphatica, quæ liquorem ferunt de lato in angustum. Videmus enim venas lymphaticas, quæ ab arteriis lymphaticis recipiunt, & necessario recipere debent. Verum LEEUWENHOEKIUS demonstrat, globulum lymphæ habere diametrum sextuplo minorem diametro globuli sanguinis; ergo vasa lymphatica tanto minora erunt sanguineis. Deinde serum sponte exhalans, multo adhuc est lympa tenuius, quæ coagulatur ad ignem, cum serum ad ignem exhalando evanescat. Ergo vasa, quæ hoc tenue liquidum vehunt, parvitatem vasorum rubrorum immense superant, ita ut numerus incredibilis vasorum feri exhalantis capacium, possit contineri in spatio, in quo centum milliones vasorum sanguiferorum continentur. Quin denique his vasis multo minora adhuc & liquida & solida in corpore reperiuntur. Ita de tenuitate filamentorum cerebri videatur LEEUWENHOEK in epistola ad Societatem Anglicanam, in primi Tomi suarum epistolarum quarta parte aut circiter (a). Hic egregius vir dicit sibi constitisse experimentis sensibilibus, microscopii ope, filamenta in cerebro esse tam parva, ut in spatio unius pollicis quadrati contineri possint 409600000000, qui calculus, etiamsi non sit Auctoris, deductus est tamen exactissime, ex ejus primis calculis. Verum, si quæras nunc, an hæc sint minima, in nobis & in animalibus? respondebo adhuc differre a minimis vasis, nihilo minori ratione, quam ea, qua terra differt a grano fabuli, & hoc jam demonstraturus sum. Ponamus, quod constat per experimentum Domini GOKKORS (b), animalculum in semine deprehensum esse basin totius nostræ machinæ; horum animalculorum, quæ in semine deprehenduntur, diameter, deprehensa per microscopium, est $\frac{1}{10000}$ unius pollicis. Quæritur nunc, quot ergo esse possunt in pollice cubico. Si multiplicentur in cubum, hoc est, ter in se ipsa ducantur, dabunt numerum $\frac{1000000000000}{1000000000000}$. Nunc in hoc animalculo, quod basis est corporis humani, probabile est contineri id, quod dicitur oculus, auris, nasus, &c. Si quis objecerit ex MALPIGHIO, in foetu partes non ita contineri fabrefactas, quales in adultis conspiciuntur, non disputabo, sed id saltem non negabunt adversarii, esse in illo animalculo illam partem, quæ fiet olim oculus, & sic porro, adeoque omnia discrimina rerum, quæ in hoc animalculo adsunt, & cum tempore tantum sensibilia fiunt, constant ex diversis vasis & distinctis, quæ cum tempore extenduntur. Si enim rudimenta ista non constarent ex vasis, quomodo increfcere possent? Cogitemus ergo, qualia illa vasa esse debeant, & quot

(a) Credo velle PRÆCEPTOREM locum in *Anatom. & Contemplat.* p. 31. ubi vasa cerebri 512^{es}. minora globulo sanguineo facit, quæ ratio si sumatur cubica, utique valde magna est.

(b) Neque novi, quis sit Auctor, neque aliam conjecturam habeo, nisi GARDENIUM voluerit PRÆCEPTOR, cujus nomen parum bene expressit ignarus Discipulus.

& quot hujusmodi vasorum milliones in uno pollice contineri possint. Si nunc mihi aliquis peritissimus Anatomicus diceret, dum demonstraret mihi vasa summo artificio repleta, en ibi vasa minima, & ea microscopio demonstraret, nunquam concederem ipsi hæc minima vasa esse, id unice darem, esse vasa rubra minima: ea vero non sunt minima, nisi in suo genere, nam habemus adhuc vasa lymphatica, quæ videri non possunt, & præterea adhuc minora, quæ perspirabile SANCTORII vehunt, & forte adhuc minora.

Hoc ergo modo conficitur nostra machina ex infinite fere tenero, & quasi tremulo opere, nam utcunque nos putamus stabiles, ex his tamen tenerrimis elementis constamus.

His præmissis pergam in historia injectionum. Totum studium anatomicum, tironi tantum dabit vasa oculo conspicua, sive per se, sive per liquidum opacum injectum. Hoc dico, ne quis putet cum magnis nonnullis viris, injectiones nobis vasa minima in conspectum præbere. Id enim minime verum est, nam jam olim GALENUS, & inter recentiores SWAMMERDAMIUS, & alii postea, ut RUYSCHIUS, inceperunt injicere materiem aliquam in vasa majora, tanta vi, ut distenderent vasa extra statum naturalem; alii injecerunt liquidum crassum, opacum qualis cera est, cum oleo terebintinæ mista, alii alia. Sed optimi inter istos artifices viri facti sunt, se nihil, quam maxima minimorum vasorum replevisse, ut nunc vi aliqua distenta, & liquido opaco repleta, melius visui se præbeant, quam ante. Inter eos tamen Anatomicos nonnulli sunt, qui negant alia dari vasa, præter ea, quæ repleta demonstrant, eaque inter omnia minima ajunt esse. Cogitent ii, injectionem tantum id posse, ut distendat hæc vasa, quæ satis magna sunt, ut crassam hanc materiem recipere possint, quæ injicitur; raro quidem ea materies ad sanguifera minima vasa pervenire potest, cum ne ex mille injectionibus semel ex arteriis in venas perveniat(a). Quo modo ergo ad minima omnium vasa perveniret, quod ad sanguifera minima non perveniat? Deinde demonstravimus a priori, præter hæc rubra minima vasa, esse adhuc infinites minora, si minus id verum esset, unde ergo exhalaret perspirabile SANCTORII? & si illud vas SANCTORIANUM esset æque magnum, ac vas minimum sanguiferum, cur sanguis non exiret ipse ex vasis exhalantibus? Ergo vasa, quæ replentur injectionibus, nondum minima sunt. Si vero ceræ loco per vasa trajiciatur mercurius vivus, nihilo fere plus perficietur, quam cum cera, neque multo plura detegi poterunt. Ergo concludo, totum studium anatomicum nos nihil docere, quam vasa, quæ & per se spectabilia sunt, & liquido opaco injecto spectabilia fiunt.

Totum hoc nunc studium anatomicum, ut a nobis recte addiscatur, in quatuor partes divido. Prima pars agit de ossibus, horumque propriis partibus. Secunda de musculis, & partibus eo spectantibus. Tertia, de visceribus eo & partibus spectantibus. Quarta, de vasis extra ossa, musculos & viscera,

R r 2

in

(a) Res ipsa, quam tuentur PRÆCEPTOR vera est, etsi certum sit, materiem ceraceam absque ulla difficultate & in vasa minora sanguiferis urgeri, v. gr. in vasa iridis, & in venas rubras longe facilius, quam Anatomicis sit commodum, cum hæc ipsa facilitas felicitati injectionum plurimum noceat.

in corpore humano deprehensis. En conspectum totius studii anatomici.

Prima pars anatomes debet agere de *ossibus* horumque propriis partibus. Ordinis hujus hæc ratio est, ut Anatomicus omnium primo ideam excitet loci, situs, & mensuræ partium de quibus scribit, & quas demonstrat. Ita, si de corde dixerit, dicere eum oportet, ex quibus partibus firmis pendeat, & inter quos retineatur. Verum hæc omnia, a quibus cor cum vasis suis firmatur, ossa sunt, vertebræ, sternum, costæ & earum cartilagine. Si cerebri situs requiratur, ossa assignare oportet, inter quæ ponitur. Ergo nullius partis in corpore situs potest assignari, nisi respectu ossium. Nemo itaque proficere potest in studio anatomes, nisi ab ossibus inceperit, & ejus sunt sententiæ maximi quique Medici, ut HIPPOCRATES, ORIBASIUS, PAULUS ÆGINE-TA, VESALIUS, & multi alii. Verum præterea ossium cognitio est basis totius praxeos Medicæ, cum basis indagandi locum adfectum in corpore dependeat ab accurata ossium cognitione.

Hæc pars anatomes vocatur *Osteologia*. *Ὀστέον* est *os* & *λόγος* sermo. *Osteologia* igitur est tractatus de ossibus, hanc absolvam, ubi dixerò tres partes continere, quibus continentur omnia, quæ ad ossa pertinent. Prima pars osteologiæ dicitur *Osteogenia*, quæ designat 1. quænam sit materies ossium, 2. quæ origo, 3. quæ conditio ossium in sua substantia, quando jam formata sunt. Secunda pars osteologiæ est *Osteographia*, quæ cognitionem dat structuræ, qualis in adultis est, hinc delineat fabricam & diversitatem partium in ipso osse perfecto. Tertia pars est *Synosteologia* seu *Synosteographia* (a), quæ explicat omnes partes in osse, quæ faciunt, ut os ossi adnectatur, cum motu & sine motu, cum cartilagine & sine ea.

Altera pars anatomes dicitur *Myographia* seu *Myologia*. Musculus nempe, sive pars carnosa mobilis, & ossa movens, similis est muri, habet enim corpus, & caudam, & quum *μῦς* apud Græcos sit illud animalculum quadrupes, hinc Latine *musculus* vocant partem carnosam muri similem; & doctrina de musculis est *Myologia*. Hæc pars continet duas partes.

Prima est *Sarcologia*, hoc est, descriptio carnis. Secunda est *Aponeurosiologia* (b) id est, descriptio tendinum, seu partium, quæ musculos alligant ossibus, & punctis fixis; *Ἀπνεύρωσις* enim est carnis musculosæ mutatio in nervum, & nervi nomine intelligunt veteres tendinem, hinc *ἀπνεύρωσιολογία* est descriptio tendinum.

Tertia pars anatomiae agit de visceribus. *Visceris* nomine intelligitur corpus notabili magnitudine, una superficie communi descriptum, constans vasis plurimis, & ut plurimum glandulis, in unum corpus adunatis, in effectum mutationis insignis & secretionis cujusdam. Anatomes vero pars, quæ de visceribus agit, vocatur *Splanchnologia* a *σπλάγχνον*, *viscus*, dicta, quæ situm, nexum, figuram, vasa adducentia, reducentia, deducentia, &c. describit. Huc referuntur cerebrum, cerebellum, pulmones, ventriculus, pancreas, hepar, lien, intestina, mesenterium, & in

(a) Huc referimus descriptionem ossium recentium cum suis cartilaginibus & ligamentis, qua *Syndesmologia* continetur & *Osteologia recentior* WINSLOWI.

(b) Insolita nomina, cum aponeuroses soleant misceri in myologiam.

in feminis etiam uterus. Si quis requirat, quare cor non vocemus viscus, respondeo, quia viscus non est, sed musculus, hinc ad musculi descriptionem refertur.

Quarta pars anatomiae est, quae agit de vasis, adeoque occupatur in descriptione vasorum. Per *vasa* hic intelligo canales, qui ponuntur extra ossa, extra musculos, extra viscera, nam reliqua angiologiae seu descriptionis vasorum pars invenitur in descriptione viscerum; hic autem intelligimus *vasa nuda*, quatenus nempe hic quaeritur, unde oriantur, quo modo fulciantur, ubi alias partes intrent. Nomen *ἀγγειολογία* est ab *ἀγγεῖον*, vas (*a*).

Oritur hic illud dubium, quorsum nervos referamus, an ad viscerum historiam, an ad *Angiologiam*? Sane, cum nobis omnes nervi mediate, & immediate sint verae productiones cerebri & cerebelli, hinc ad descriptionem horum viscerum possunt referri. Si vero seorsim nomen volueris imponere huic scientiae, dices *Neurographiam* seu *Neurologiam*. Denique cum nervi, mea sententia, etiam sint vasa, liquidum ferentia, etiam nervos possumus referre ad *Angiologiam*; ita tamen, ut quivis pro arbitrio, ad viscera vel vasa referre, aut proprio loco eorum historiam describere possit.

S E C T I O II.

DE OSSIBUS CORPORIS HUMANI.

C A P U T I.

de Osteogenia.

Osteogenia est descriptio omnium mutationum, quae a primo conceptu in ovo, usque ad ultimam hominis proceritatem, in ossibus observantur. Tradit autem, 1. originem materiemque ossium; 2. seriem successivam omnium mutationum, quae unicuique ossi a prima origine & materie ad ultimum incrementum usque accedunt. En haec duo requiruntur in hac parte osteologiae. Si scire volueris, quid ex labore tot Auctorum acquirendum sit in hac historia, en haec sunt. Os vocatur, omni durissima, candidissima, levissima, seu minime ponderosa corporis pars; ergo ubi has notas quis inveniet, erit os. Quaeritur, quo modo os factum sit. Ad obscuram hanc quaestionem respondebo. Primo observatum est, nullum os factum fuisse, quin, antequam esset os, fuerit cartilago (*b*) *Cartilago*

(*a*) Truncos nempe majores vasorum a corde adusque eas partes, quibus alendis destinantur. Divisio vero vasorum in ipsis iis partibus, a WINSLOWO aliisque, utique in *splanchnologiam* rejicitur.

(*b*) Hanc totam de ossium fabrica tractationem, satis eo tempore, quo scripta est, novam, relinquo, ab eo aëvo multa addita sint, quae ad anatomen pertinent, non ad anatomes historiam. Neque hanc controversam regulam *PRÆCEPTORIS* credo necesse esse deferere. Nam in ipsis ossibus sincipitis & frontis, quae negant nonnulli cartilaginea fuisse, vidi fibras osseas radiatas in extremitate, ubi suturarum est locus, flexiles, plicatiles, cartilagineas fieri, demumque ultimam extremitatem incurvam membranescere.

tilago vero est corpus duritie ossi proximum, magis plicabile, & inter omnes partes in nostro corpore maxime elasticum. Cum vero ita plicabilis & elastica sit cartilago, habet usus incomparabiles in corpore. Ita, exempli loco, si vis trahens, seu motus perennis esse debet, ibi est cartilago, nam ubicunque cavitas est recipiens tuber ossis, ibi cartilaginea crusta obducitur os, tam ad epiphyseon, quam ad apophyseon, ut motu artus peracto, & illa crusta cartilaginea distenta, resiliat eadem, & sic motum perennet. Absque cartilagine os extra locum quasi maneret, nunc vero retropellitur in situm. Ita porro ad nostras costas posuit DEUS cartilagines, ad angulum obtusum, ut, cum in inspiratione cartilagines costarum vim patiuntur, eadem, desinente nunc vi musculorum distrahente, se restituant, & costas iterum deprimant, sicque motus continuo fieri queat, quæ unica vera causa est, quare respiratio in nobis fiat tempore somni. Ergo cartilago est pars duritie ossi proxima, sed maxime elastica, & nulla pars est in corpore, unde globi tornando fieri possint, qui æque resiliant, resiliunt enim in incredibili certe elatere.

Versamur nunc porro in eo, ut describamus omnes mutationes observatas in osse, dum crescebat.

Tertia series mutationis hæc est, omnis cartilago, sive omnis *χόνδρος*, antequam cartilago sit, proximum fuit membranæ. Sic in fetu unius mensis nullum invenitur os, sed pauca puncta cartilaginea, quæ sunt ossea, proximum vero corpus cartilagini est membrana.

Membrana Græcis vocatur *ὑμῶν* (ita enim non solum claustrum illud virginitatis, sed omnis membrana vocatur) vel *μηνίγξ*, neque enim tantum cerebri & cerebelli membranæ dura & tenuis illud nomen meningis merentur, sed idem omnibus corporis membranis convenit. Hoc vero nomine dicitur corpus plicabile admodum, atque proximum cartilagini; aliter definire non possum membranam; inciderem in descriptionem alteri parti applicabilem.

Verum quarto, dico omnis membranæ sic cognita est textura & vasorum & fibrarum. Constat enim ex vasis, uti linteum ex filis intertextis, quæ adunata simplici modo inter se membranam constituunt, ita nostræ membranæ ex fibris & vasis implicatis constant; ex his sunt reliqua.

Adeoque hic est ordo, primo habetur os, secundo illud os semper prius fuit cartilago, tertio cartilago antea fuit membrana, quarto hæc membrana fuit ex vasis & fibris composita. Ergo os fit ex vasis & fibris, verum jam membrana fuit ex vasis & fibris composita. Ergo os fit ex vasis & fibris, verum jam membranæ horum vasorum, unde os dico componi, sunt ex aliis iterum vasis & fibris, & si me rogaveris, quid ea vasa sint, quæ suo intertextu membranam sensibilem constituunt? respondebo, esse membranas minores, similes majoribus, quæ etiam ex minoribus vasis constant; sed ita sunt involutæ, ut cavum contineant. Sed etiam hæc minora, nunc citata vasa, iterum constant ex membranis, quæ ex aliis minoribus vasis constantur, & ultima membrana, primum vas constituens, non amplius est vasculosa, sed fibrosa: Per *fibræ* enim intelligimus corpus oblongum, non cavum; hujusmodi fibræ plurimæ constituunt membranam primorum vasorum. Demonstravimus, partes fibrarum esse

esse terrestres, absque oleo, & sale; ergo ultima materies ossis est terra, quod jam antea clare docuimus.

Postquam ex principiis hæc repetivimus, redimus ad cartilaginem. Cartilago est duritie ossi proximum, sed magis plicabile, & valde elasticum corpus, uti supra definivimus. Hæc cartilago paulo prius membrana fuit, & omnis membrana nihil fuit paulo prius, nisi vasa soluta; quæ vasa ex aliis vasis, tandem ex fibris componuntur; omnis autem fibra fuit ante materies soluta, intra solida contenta, unaque cum humoribus nostris fluens, & fibris applicata, estque illa materies nutritia materies terrestris. Omne vas, sive ex vasis, sive ex fibris constet, fit fibra hac ratione. 1. Si exprimatur omne liquidum, quod efficiebat, ut latus a latere distaret. 2. Si ejus latera ad se invicem adprimantur. 3. Si ea latera coeant, & concrecant inter se. Hæ tres conditiones, ubi adsunt, fibram ex vase facere possunt. Hæc ergo fibra erit tanto plus elastica, quanto ejus crassities est major prima crassitie. Si v. gr. minimum vas in embryone constet ex mille filamentis, exprimatur, latera concrecant, fiet ex hoc vase una fibra, ergo mille fibræ fient una fibra: verum elasticitas semper hæret innata in unaquaque harum fibrarum, singulæ adhuc sua vi agunt, ergo in una fibra jam mille vires junctæ agunt; ergo erit millies plus sui situs tenax hæc ultima fibra, ita ex mille aliis composita, quam erat ante, & crassior erit, & plus renitens, ergo plus resiliens etiam, & plus elastica. Hinc iterum videmus, si membrana aliqua, textura talium vasorum constet, & plurima vasa fiant in fibras, tunc hæc membrana fiet solidior, durior, candidior, magis elastica, & tunc est cartilago.

Cartilago fit hac ratione, quando vascula, quæ sua textura faciebant membranam, non manent vasa, sed concrecant & solidescunt. Hæc nunc verissima esse videmus, quod plurimis potest probari exemplis. Ita docet MALPIGHIUS in osse bregmatis, quod in foetu adhuc membranosum est, in medio nasci stellam albam, ex qua exeant radii albi. Si nunc microscopium applicetur, videbitur, illam stellam, & illos radios ibi poni, ubi vasa plus compingi incipiunt, & ibi etiam majores arterias pulsantes adesse, quæ hanc compressionem excitent.

Ultimo dico in hac cartilagine, dum hoc modo ex membrana fit, strata quædam fieri ex vasis compressis, & simul alia strata adesse vasorum non compressorum, sed comprimentium; nam per hæc fluunt liquida pulsantia. Ergo cartilago constat stratis solidis perfectis, & intercapedine stratorum, in qua vasa sunt, quæ vasa liquido adhuc plena motu suo & pressione reliqua compresserunt vasa, ex qua vi comprimente illa strata perfecte solida conflata sunt. Et sic lamellatim conflatur cartilago, ita ut inter lamellas solidas sint vasa liquidum ferentia. Si nunc illa strata cartilaginea magis magisque comprimuntur inter se, tunc fiunt corpora candidissima, durissima, compactissima, siccissima, & vocantur ossa. Os nunc nihil aliud est, quam conflatio & adunatio plurium membranarum, quæ lamellatim sibi mutuo incumbabant, & quarum nonnullæ jam consolidatæ erant, & lamellas duras componebant, inter
quas

quas lamellas intercapedines sunt, ubi vasa, adhuc tuto suum liquidum ferentia, continentur, & totum os nihil aliud est.

Si quæras, cur os in medio solidius sit, quam ad epiphyfes; respondebo, quia semper in medio incipit durescere. Verum cur incipit in medio prius durescere? Demonstravit CLOPTON HAVERSIUS, in medio esse maximam arteriam, hinc ibi maximum esse pulsum, ibi adeo omnium primo fieri cartilaginem, quam pergit comprimere illa arteria; & hinc in medio ossa ubique durissima, & compactissima sunt. Cur vero etiam ibi tenuissima? quia ibi os citissime durum factum non crescit ultra in infante, sed statim consolidatur, dum reliquæ ossis partes adhuc molles, extendi pergunt.

Postquam explicata fuit ratio, cur omnes cartilagines, & quæ inde fiunt ossa, diversis constent sibi mutuo incumbentibus stratis, ulterius videndum & examinandum est, an inter strata & lamellas sint in nonnullis locis decurrentia vasa majora, plusque liquidi vehentia quam reliqua, quæ distendant a se invicem lamellas, & forment quædam cava. Ego vero huiusmodi vasa inter strata ea & lamellas ossium demonstrari dico anatomice. Quare, cum in nonnullis locis decurrant vasa majora, quam in reliquis partibus, adeoque, quæ velociori & copiosiori fluido trajiciuntur; sequitur ut ibi ubi hæc vasa sunt, major sit distentio partium, inter quas decurrunt, quam alibi: ideoque illa strata, inter quæ decurrunt illa majora vasa, magis a se invicem removentur; dum id fit, fiunt aliqui quasi sinus, qui, mirabile dictu, in primordiis non adsunt in osse, sed diu post os factum ibi reperiuntur. In exemplo hoc patebit. Qui Osteographiam norunt, sciunt, os frontis constare uno osse, & norunt ex Osteogenia, os frontis, contra naturam aliorum ossium, hic supra supercilia prius ossefcere, cum in aliis ossibus, ut in osse bregmatis, in medio primo stella ossea appareat; sed os frontis hic ad inferiora prius incipit naturam induere osseam. Nunc, si in infante trium & quatuor annorum os frontis examinetur, infra supercilia non invenies sinus, nullamque cavitatem; verum si postea in homine viginti annorum & ultra illud os examinaveris, invenies sinus infra supercilia, qui in prima origine nondum adfuerunt, sed, postquam jam os factum est, ibi nascuntur. Præterea os maxillæ superius in infantibus nullum conspicuum habet cavum, sed post sexdecim & ultra annos, hoc, quod prius tuberculum cavum in eo osse erat, jam specus capax & cavum mucum continens fit, & mirum hoc est, in infante cavum ibi nullum esse, cum adsit in adulto. Adeo non mirum in Osteogenia est, quod lamellæ, quæ prius erant complicatæ, nunc ipso ab incremento ossis a se invicem removeantur, qua remotione fit intercapedo, quæ est ipse sinus. In osse basilari, sub sella turcica, in infante pariter os est ad nostros sensus solidissimum, nam perfecte solidum non est: verum in adulto, si inquirimus, erit ibi os excavatum uno & duobus sinibus, septo intermedio accurate distinctis, qui si nus investiuntur intus membrana, plena glandulis, & quidem mucum stillantibus, ad nares determinatum, ut defendat nervos olfactorios.

Ergo clare videmus, vasa sanguinea in ossibus ipsis maxima linesse, & ibi sensim

fenfim incipere pulsu suo dilatare a se mutuo lamellas, & licet sint pulsus molles, arteriosi, & os jam durum sit, nihilo minus, cum illi ictus bis milles repetantur una hora, quod 48000 est una die, fenfim fieri cavum: sic etiam nascuntur sinus & cavernæ medullofæ; nam cavitates ossium medullofæ non sunt tam magnæ in infante pro corporis portione, quam in adultorum ossibus, sed ipsæ arteriæ medullares extendunt spatia, quibus continentur, & sic tandem majores fiunt cavitates.

Dedi nunc schema totius Osteogeniæ, & quidquid ex Auctoribus ad hanc rem spectat, exposui, nempe dixi materiem ossium terram esse, quæ per canales minimos cum fluido adveheretur, & fibris applicaretur; ex ea dixi fibram fieri, ex qua, cum aliis sui similibus intertexta, fiunt membranæ, ex quibus membranis convolutis fiunt vasa, ex quibus vasis hætenus minimis fit membrana penultima, ex qua alia vasa, ex quibus aliæ membranæ, ex quibus strata membranosa, quæ, si emungantur suo succo, duriora fiunt, unde strata fiunt cartilaginea; quæ, cum ad se mutuo comprimuntur, osseas faciunt lamellas, quæ nonnullis locis arterias minores, aliis majores habent; hinc, in uno loco statim consolidescunt, alio loco serius.

Objici posset aliter rem se habere, si fides habenda sit magno MALPIGHIO; qui in operibus posthumis, ubi tractat Osteogeniam, concipit os constare ex lamellis, nec de vasis loquitur, sed dicit, succum osseum ibi intra has lamellas stillare extravasatum, eumque succum tanquam gluten ferruminare unam lamellam ad aliam. Verum magnus ille vir hæc coactus fuit credere, cum attenderet animum ad regenerationem ossium fractorum; nam in ossibus fractis observatur liquorem quemdam effundi circa fracturam (a), & intra lamellas extravasari, unde major oritur in sede calli tumor, qui tandem, coalito iterum osse, durior est osse ipso; his argumentis bonus ille vir, naturæ fidus indagator, credidit succum osseum adferri, & os concrefcere. Sed succus ille osseus nullibi est, quam ubi fracti sunt fines arteriarum, ibi ubique ad fracturam rupta sunt vasa, & ibi tumor fit. Cum porro ex HAVERSIO constet, millenas lamellarum unum componere os, & vasa inter lamellas nunc sint rupta, manifestum est tumorem oriri, quia vasa illa, solutis ipsis lamellis, minus comprimuntur, hinc distenduntur magis, & ipsas lamellas cogunt plus adfurgere, ut necesse est, quam ante fiebat; hinc series lamellarum omnes elevantur hic ad locum ruptum, & inde fit tumor; qui ergo non designat succum osseum effundi inter lamellas, sed vasa in statu naturali compressa inter lamellas jam libera esse, unde tument, & faciunt omnia tumere.

Porro dixi, os incipere durescere in eo loco, in quo stella alba nascitur. Id vidi in osse tibiæ, in medio erat punctum album cartilagineum, circaque fines os adhuc erat membranofum; post mensem vero aderat in eadem tibia stella cum radiis,

S f

diis,

(a) Succum istum osseum omnino non admitti a præstantissimo HAMELIO, & totam fabricam renascentis ossis unice tribui crassescenti & durescenti periosteo, notissimum est. Sed ad hanc totam theoriam Osteogeniæ nimis longum fuisset commentari, & multa sunt quæ possunt objici, aliqua etiam nuper objecit. CLAR. VIR BENJAMIN BOEHMER, Lipsiensis, in Progr. de callo ossium. 1748. 4.

diis in medio ossea, & versus fines cartilaginea, cum nempe radii inciperent durescere, & ad fines adhuc cartilaginei essent, ad extremas vero radiorum partes adhuc erant membranosa. Id fit in omni osse, & ubique primo cartilagine nascentur, quæ sensim durescunt in osseam naturam.

Hanc Osteogeniam methodo descripta addiscere ex scriptis & Libris non est adeo commodum, ob inopiam bonorum auctorum, habent enim observata quædam, sed vix ordinem observant, & quæ inde sequuntur corollaria non deducunt. Dicam tamen ordine, qui de hac re scripserint.

THEODORUS KERKRINGIUS (a), Amstelodamensis, vir anatomia pariter & chemia clarus, edidit anno 1670. optima quædam opuscula, quæ iterum impressa sunt an. 1673. Tractatus in quarto est, cui titulus *Spicilegium anatomicum & Osteogenia fetuum*. Prima editio melior est, ultima habet figuras meliores sed in hanc plurima vitia, ut plerumque fit, irrepperunt. In hoc tractatu describit, (non perfecte, sed quantum fere ullus alius anatomicus fecit,

(a) Ante **KERKRINGIUM** Osteogeniam scripserunt, princeps **FALLOPIUS**, qui primus eam adtigisse videtur, & accuratius observavisse ossium ex cartilaginibus indurationes, quæ epiphyfes dicuntur, & plurimum in fetu ossium in unum coalitum. Experimenta exstant in principio *observationum*.

ANDREAS VESALIUS de punctis a quibus ordiatur ossescentia, & a quibus principiis paulatim progrediens mutatio cartilagineam excludat, aliqua habet in *Fallopianarum obs. ex an. ine.*

B. EUSTACHIUS varias observationes ex ossibus teneribus tabulis suis inseruit, ut sterne fetus figuras. Aliqua etiam habet in *ossium examine*, ad excusandum **GALENUM**, tum de dentibus fetus & eorum generatione in proprio Libello.

Plura edidit **VOLCHERUS COITER**. Primus etiam icones dedit ossium fetus. Exstant in ejus *tabulis anatomicis*. Norimb. 1572. F. ubi Systema omnium ossium fetus, tum sceleton infantis dimidii anni bis depictum dedit, atque duas figuras capitis infantis seorsim expressas, & observationes ad omnem Osteogeniam, natas in sceletis Bononiæ a se ipso paratis. Eas tabulas de ossibus & partibus externis clam Bononiæ impressas esse, uti ipse ediderat eas Auctor, **GUILELMINUS** filius in nupera oratione ex proprio exemplare testatur.

JOH. RIOLANUS in *Osteologia*. Paris. 1614. 8. in prima parte opusculi ita describit Osteogeniam, ut mutationes ossium ad septimum usque annum contineat. **IDEM** in *Enchiridio Anatomico Pathologico* L. I. subjicit ossium descriptioni eorum ex fetu initia a c. 26. ad finem, quo prior Libellus repetitus habetur, quem in magna operum collectione omiserat, quæ in folio prodiit.

HENRICI EYSSON de ossibus infantis cognoscendis & curandis. Groning. 1659. 12. Unico quidem, neque eo satis pleno sceletio infanti potitus, diligenter tamen & veraciter peculiarem conditionem ossium maturi fetus observavit. Recudi curavit Libellum **COITERI** supra relatum.

THEODORUS KERKRINGIUS, singularis homo, qui decimum octavum annum agens dum Latine didicerit (*Præf. ad Liceti L. de Monstr.*); deinde mutata religione, non absque suspitione occisæ propriæ uxoris, ut ejus sororem sibi jungeret, Hamburgi vixit, cum Legati Florentini titulo, ibique ejus thesauri anatomici etiam nunc venales servantur. **PINÆUM** quidem exscripsisse non credo **DRELINCOURTIO**, (*de Fœm. ovis* p. 602. edit. an. 1727.) sed usum esse industria Ruyschiana in præparandis partibus, vel ex iis constat, quæ in utriusque viri scriptis reperiuntur, sceletio cacodæmonis aliisque. Sunt qui stilum **PECHLINO** tribuant. Osteogeniam, quod attinet, nata, ut testatur de se ipso **KERKRINGIUS**, ex septuaginta fetuum dissectionibus, ordinata habet per singulos menses fetuum incrementa, ut seriem mutationum majorem, quam ullus alius, ab ipsis primordiis adducat: in quibus tamen plerumque videtur ætates fetibus justo teneriores tribuisse. Icones paucae, neque valde bonæ. Prodiit cum *spicilegio observationum* an. 1670. 4. Amstelodami.

In *Anthropogenia*, quæ an. 1671, prodiit, teneriorum fetuum sceleti aliqui habentur. Observationes ad Osteogeniam pertinentes omnes exscripsit in anatome **STEPHANUS BLANCARD**.

fecit, alii enim minus fecerunt) originem ossium, & quæ mutationes ipsis accidant ab embryone usque ad integram perfectionem. Edidit etiam idem Auctor anno 1670. alium tractatum in quarto, cujus titulus est, *Anthropogenia ichnographia*, hoc est, delineatio describens hominis genesin successivam; in eo opere describit, ab ovo fecundo usque ad nonum mensem, successivam corporis humani mutationem. Tractatus hi elegantissimi sunt, sed non soli Auctori adscribendi, neque enim iis temporibus unus homo ita perfecte callebat anatomiam. KERKRINGIUS autem usus est multis observationibus anatomicis aliorum, qui Amstelodami tunc vivebant, unde hæc opera construxit. Eius etiam Opera, jam citata, possunt inveniri in *Bibliotheca anatomica* a MANGE-TO conscripta.

Tunc ad eam rem legi potest MALPIGHIUS, qui optimus est in *Tractatu posthumo*, ubi commentatur de natura ossium, tum etiam in historia illa, ubi de cornu, in collo bovino crescente, scribit. Ibi optime docet, papillas nerveas complicari, & protrudi, & sic complicatas in os abire, unde quidem videmus, ossa prius ex vasis constitisse. MALPIGHIUS equidem nondum cogitavit de hac re, sed ex ejus tamen systemate deduci potest, ossa prius fuisse vasa nervea. Erat nempe bos jugo adfuetus, ibi loci, ubi jugum imponebatur, filamenta nervea prius adfuerant ad sensum, quæ sensim compressa, ab inferioribus protrudebantur, & sic tandem ad superiora, continuo magis & magis compressa, iterum etiam extrudebantur, ut denique ea pars ad collum, quæ nervea fuerat, superius cartilaginea, & hic ad fines ossea, cum tempore omnino tota ossea facta fuerit. Hunc virum oportet super hac re videre primo in *Posthumis*, tum in *Epistola ad SPONIUM* (a), ubi scribit de illo cornu, quod in thesauro ALDROVANDINO adservabatur, denique in scriptis de *Ovo incubato*, ubi perfunctorie narrat, quo modo ossa fiant in pullo.

Videatur etiam CAROLUS DRELINCOURTIUS in tractatu in 12., hic Lugduni Batavorum edito apud Boutestein, anno 1685., cujus titulus est *Conceptus de Conceptu humano* (b), egregius certe est supra hac re Libellus; ibidem etiam habemus diversitates plurimas circa ossa notatas.

Omnium optima super hac re dixit DUVERNEY (c), vir incomparabilis in anatomia, sed dolendum est, magnum virum tantum de suo otio sumere noluisse,

S f 2

fe,

(a) MARCELLUS MALPIGHIUS in *Posthumis* in primis ossium generationem persecutus est, ex reticulatis fibris, quarum intervalla succus replet ossis. Dentes etiam, & ungues, & cornua, & pennas, analogia ossium corpora, descripsit.

Pauca præterea sunt, quæ de monstroso cornu in propria ad JACOBUM SPONIUM epistola habentur, & de ungulis, in ea de tactus organo. In historia ovi incubati ossa vix adtigit.

(b) Nihil quidquam ibi invenio.

(c) DUVERNEY inventa enarrantur in Libello Parisiis in diario *Journal des Savans* 1689. & seorsim ibidem 1689. 4. impresso, sub titulo, *Lettre a Monsieur * *, contenant plusieurs nouvelles observations sur l'Ostéologie*, qui quasi appendix est prioris dissertationis. Agit de periosteis, ejus petiolis nervosis & vasculosis in os defixis, de modo quo ossa fiunt ex fibris teneris membraneis, non ex tendinibus, &c. Magis autem, uti inferius apparebit, ad historiam ossium jam formatorum, quam ad Osteogeniam pertinet.

*Lettre à Mr. * *, &c.* hic dictam recudi feci in VI. tomo Disp. Anat.

se, ut inventa sua in lucem ederet. Discipuli vero hinc inde, plura inventa ejus, suppresso semper magni viri nomine ediderunt, inter quos est.

Le CLERC, qui scripsit *la Chirurgie complete* (a). In hujus Libri parte osteo-

(a) Plenam satis Osteologiam laudabimus. Ad Osteogeniam vero vix quidquam habet.

Cæterum plurima huc pertinentia habet DOMINICUS GAGLIARDI Medicus Romanus, cujus opusculum, *Anatome nempe ossium*, Romæ prodiit an. 1689. 8. & nuper Leidæ 1723. 8. Fabricam ossium subtilem & maxime laminarum ordinem seriemque exposuit. Deinde ad Osteogeniam omnino pertinent hi nuperiores scriptores, CLOPTON HAVERS in opere proxime uberius dicendo, cujus secunda Lectio huc inprimis facit, ubi incrementum ossium singulari satis modo exponit, ex viscida nempe materia, quam arteriæ adferunt, nervi vero circumgyratione propria circa axin suam cogunt proximis parietibus adhærere.

J. BAPTISTA VERDUC in *nouvelle Ostéologie*, Parisiis anno 1690. & iterum 1693. in 8. excusa, Osteogeniam ex KERKRINGIO exscripsit.

ULR. SIGISM. NIMTSCH de *fontanella infantum*, Altdorf. 1695. 4.

FRIDERICUS RUYSHIUS multa passim ad hanc rem adsperxit, maxime vero in *Museo rariorum*, in quo passim sceletos fetuum ita describit, ut breviter notet ea quæ eo mense magis notabilia visa sint, aut ab adulti hominis fabrica recesserint.

A. VATER de *ossium in corpore humano generatione & diminutione in alveolis inprimis dentium oblitteratis*. Progr. VVittemb. 1728. 4. * & Diss. de *Osteogenia*. ibid. 1730. 4.

ALEXANDRI MONROO of *human bones* multa huc pertinentia habet.

JOH. BASTER de *Osteogenia*. Leid. 1731. 4. Nunquam vidi, sed nihil mediocre ab eo Auctore exspecto.

JOH. BASTER citata de *osteogenia* disp. egregia est, recusa nunc in VII. Disp. mearum volumine.

J. B. WINSLOW Osteogeniam non dedit, sed ad fabricam ossium multa utilia in expositione sua docuit.

ROBERTI NESBIT *Osteogeny*. Londini 1736. 8. max. Ossa ex cartilagine fieri negat, sed nasci ex succo osseo vel inter membranas, vel inter cartilagines deposito, cartilaginem vicinam protrudente, arctante, absque mutatione naturæ cartilagineæ in osseam. In altera parte semestria incrementa ossium, fusius longe quam KERKRINGIUS, a primis rudimentis per subsequentes gradus maturitatis deducit, & iconibus numerosis exprimit, non tamen perinde artificiosis. Egregius in universum Auctor.

BERNARDI SIEGFRIED ALBINI *Icones ossium fetus*, Leidæ an. 1737. editæ ad miraculum pulchræ sunt, cum nova arte, ad ipsum objectum sculptæ, tenerrimis ductibus naturam ipsam talem expriment, qualem se peritissimo anatomico ipsa ostendit. Augmenta etiam ossium & successivam formationem ex cartilagine novis experimentis demonstrat. Ætates in descriptione varias, in iconibus paucas exprimit. Cartilagines summo artificio depingit. Sterni historiam fusius, quam alias, est persecutus. Princeps in his rebus Auctor.

J. FRIDERICUS CASSEBOHM in suis de *Aure humana* tractatibus, incrementa successiva ossium ad auditus organum pertinentium, minute exprimit.

G. CHESELDEN in *anatomy of human body* & in splendido opere *Osteography* de originibus & formatione ossium aliqua habet.

J. E. HEBENSTREIT progr. de *Præcipuis ossium momentis*, in quo variæ observationes exstant, fetus octimestris, cui sternum perfectum fuit, fonticuli in adulto capite in os undique circumscriptum mutatio, & aliæ. in Progr. de *diploe ossium* etiam alia ad fabricam adtulit.

Huc etiam pertinet experimentum factum cum rubia tinctorum, quæ ossa animalium, sæcula hujus radicis pastorum, profunde tinxit. Exstant in *Phil. Trans.* n. 442. 443. & repetita a D. DU HAMEL, valdeque sollicitè capta *Mém. de l'Acad. Royal. des Sc.* 1739.

Sed inprimis DU HAMELII monumenta Academiae Parisinæ missa an. 1742. 1743. magnam in Osteogenia mutationem induxerunt, cum succum osseum omnem neget, & incrementum earum partium, atque calli regenerationem periostei laminis, sensim in cartilaginem, tunc in osseas laminas abeuntibus, post plurima in vivis animalibus capta experimenta

osteologica, omnia sunt DUVERNEY, sed tamen gratias illi debemus, quod nobis tradiderit inventa hujus magni viri. Osteologia ejus ceterum bona non est, nam VESALIANA melior est. Verum Osteogenia egregia multa habet, de mense enim ad mensem ossa adnotat, & indicat, quo tempore ossa adsunt, & quo modo stella fiat.

Quantum nunc hæc ad praxin faciant, nemo non videt, mederi enim ossium morbis in infante non poterimus, si nesciamus, quo modo se ossa ibi habeant, aliter enim infantis ossa tractanda sunt, aliter adultorum ossa. Qui hæc scire recusant, nunquam certe perfecti erunt medici; ergo, qui progressus in hoc studio facere cupiunt, hac methodo primam historiæ ossium partem adgrediantur.

C A P U T II.

De Osteographia.

QUum noverit Medicus, quo modo ossa nascantur, nunc opus habet, ut cognoscat, qualis ossibus jam factis structura sit: hoc est, quo modo os sit unum corpus; nondum enim os consideramus, quatenus jungitur alteri.

Ut Medicus cognoscat fabricam ossium, debet statim distinguere os, 1. in corpus ossis. 2. in adnatum ossi. *Corpus ossis* vocamus, quod una fibrarum serie a stella illa ossea enascitur. *Adnatum ossis* est, quod ad juncturas ponitur, id est, illud caput cartilagineum, quod cartilagineam naturam conservat.

Corpus ossis consideratur dupliciter, 1. ut durum solidum, 2. ut cavum. Volo os humeri examinare, ergo epiphysin ad scapulam, alterumque ad radium examino. His capitibus excussis considero corpus ossis, illud habet 1. partes solidas. 2. cavas. Primum inter partes ossis occurrit velamentum externum, quod est periosteum, græcum nomen, quod significat aliquid circa os (*περί ὀστέου*). Id ergo periosteum est 1. æquabile. 2. inæquabile.

Si æquabile est, tunc est omnium vasorum se intra os immergentium & ex eo emergente textura. Textura ergo vasorum est, quæ os intrat ad ejus vitalitatem & nutritionem; sed præterea est textura exeuntium venarum rubrarum & lymphaticarum. Nervos etiam hic recensui, quia in ipsa medulla sensus acutus est, adeoque & nervus. Æquabilis membrana dicitur periosteum, ubi sine tumore æquabiliter ubique ejus fibræ decurrunt, & sic æquabiliter os involvit; id fit, ubi nullus musculus periosteo incumbit, neque ulli adnectitur musculo, nam si musculus adnectatur, æquabile non est.

Quid inæquabile vero sit periosteum, nunc dicam. Concipiamus periosteum æquabile, deinde ponamus musculum ossi adfigi; hoc fit per tendinem, qui sæpe paral-

menta tribuat. Alteram autem speciem incrementi refert ad crassescentiam laminarum ossearum natam ab introfuscepto succo nutritio. Primam vero originem ossium fibris membraneis reticulatis, gelatina quadam conjunctis, tribuit, quæ & ipsa, & una fibræ sensim indurescant.

Osteologiæ denique scriptores plerique aliquid habent, quod huc pertinet, aut certe ad fabricam & incrementa ossis illustranda faciat.

Osteogeniam, ad modum fere DU HAMELII tradidit CL. DAUBENTON, *descr. du Cabinet du Roi* III. p. 23. seqq.

parallelo situ adcumbit periosteo, tunc suas fibras illi jungit, & sæpe se subducit infra periosteum; unde periosteum hic crassius videtur. Quo plures nunc & minores muscoli circa aliquam partem sunt, eo periosteum plus & minus inæquabile est; hinc intelligitur quæstio anatomica, de periosteo, & pericranio, nam pericranium ubique est idem, sed ubi muscoli, v. gr. temporales, sunt, ibi eorum tendines se jungunt pericranio, hinc crassius fit, unde plura nomina membranæ circa ossa capitis, ut periostei, pericranii, sed quod variet pericranium, causa unica est, quam diximus.

Auctor jam qui hoc primus animadvertit, & descripsit, fuit RIOLANUS, sed nemo accurate descripsit præter CLOPTON HAVERS in suis *Prælectionibus ad Societatem Britannicam* datis.

Sequitur nunc, ut consideremus os, prius tanquam solidam substantiam, deinde ut cavum, porroque ut apophyses habens, & denique ut aliis junctum. Descriptionem ossium incepimus ab iis, quæ extrinsece ossi adhærent, vasaque ossi adferunt, & ex eo deferunt: verum nunc, quomodo ipsam ossium descriptionem addiscere debeamus, demonstrare pergo. In ipso ossis corpore, spectatur ipsa ossium substantia dicta, hoc nomine intelligo hoc durum, siccum, friabile, leve seu minus ponderosum, omnibus vasis orbatum, corpus, quod vocamus os. Hæc ossium substantia (hacce definitione primo intellecta) est in medio corporis ossis. 1. semper & ubique solidissima, 2. maxime compacta, 3. maxime unita. Verum ad loca extrema, ubi juncturæ sunt, & ubi os alteri ossi necitur; ibi ipsa ossium substantia minus solida est, valde porosa, atque multis intercapedinibus, hoc est spatiis vacuis intermediis, interrupta. Ibi ergo prope circa juncturas (hocque in omni semper osse observabitur) ea substantia non est unita, quia spatia intermedia sunt. Hic tantum ossea propria substantia consideratur, nihil de vasis sanguiferis, medullofis, lymphaticis, &c. dicendo.

Nunc, quæ dixi, de ossea illa substantia, vera sunt. Si vero quæsieris, unde contingat, quod os, v. gr. femoris, in medio suo solidissimum & compactissimum sit & ponderosissimum? Responsum nullus Auctor adfert, nisi optimus HAVERSIUS, qui demonstrat, omnia ossa, ut in Osteogenia visum est, fuisse strata membranacea, sibi mutuo imposita; hæc strata per vim arteriarum fuisse compacta ad se mutuo, quatenus arteriæ periostei, & quatenus arteriæ per illas membranas percurrentes, pulsu suo omnia illa strata ad se mutuo compingere valent. Ergo ubi illæ vires pulsantes validissimæ fuerunt, ibi illa compactio erit maxima. Demonstrat autem CL. HAVERS, arterias periostei & ad medullam pergentes in medio ossis maximas esse; ergo illæ hoc stratum medium condensantes compingent (a); hinc in medio suo ossa durissima & solidissima sunt. Verum circa juncturas arteriæ divisæ sunt in ramos minores; hinc ibi causæ com-

(a) Nolo omnino me hoc loco diffundere in ossium anatonem. Certum tamen est, neque in medio osse arteriam magnam medullæ, neque unicum in magnis ossibus, neque videri, quæ tantula sit, multum posse in mutandis ossibus. Musculos, quorum carnes validæ mediis ossibus, graciles tendines epiphyseis adjacent, mallet advocare, quos certum est, & absque dubio, ossa longa ex terete figura, quæ in feru est, in triangularem deprimere, valere ergo in mutanda ossium forma.

comprimentes minores sunt, hinc ex ea mechanica, uti patet, sequitur, solidam ossis substantiam in medio ossis solidissimam esse, maxime unitam & durissimam. Huc accedit quod observat Auctor, si os aliquod longum, v. gr. femoris sumferis, & fideris per medium juxta totam longitudinem, tunc in medio ossis æque multas lamellas esse sibi mutuo impositas, quam circa extrema ossis, cum tamen circa extrema os maxime in sua substantia expansum sit, & majorem diametrum habeat. Sed eadem lamellæ hic ad extrema minus compactæ sunt; hinc magis distant, plus spatii occupant: ergo ossa ibi plus sunt expansa; hinc quo majus est os, ceteris paribus, eo magis distant eorum lamellæ. Hinc deducit hic vir clarissimus, quare ossium structura sit in medio densissima, quod nempe arteriæ in medio lamellas magis comprimant, sed versus extrema singuli arteriosi rami dispersi intra lamellas eas disjungant, & faciant os & crassius, & minus solidum. Hisce nunc positis sequitur, in loco ossium medio & densissimo, ubi perfectæ sunt ossa, primo vasa decurrere omnium minima inter lamellas, sed ubi lamellæ remotæ sunt, ibi vasa sanguifera habent spatium, ut se maxime extendant; etenim ubi vasa ita compressa sunt propter lamellas tam firmiter ad se invicem complicatas, ibi ea vasa omnium minima esse oportet. Sed lamellæ proxime sibi incumbunt in medio osse; hinc videmus in omnibus ossibus, si ea findamus juxta longitudinem, ibi in media ossea substantia vix vasa etiam microscopio reperiri, sed ad ossium extrema plurima apparent vasa inter lamellarum spatia, quæ omnia vasis plena sunt. Non tamen, quod in ipsa origine ossis, in medio non æque magna vasa fuerint, id enim præter verum adfirmaretur, ut apparet ex iis quæ KERKRINGIUS de hac re observavit, sed propter causas, statim enarratas, comprimuntur ibi vascula, suo liquido emunguntur, & concresecunt. Ubi vero lamellæ minus comprimuntur, ibi vascula se expandunt.

In substantia durissima ossis est candor, & ad extrema rubedo. Findatur iterum os quodcunque, uti femoris os, per medium, videbitur, in medio ossis substantiam esse solidissimam & candidam, circa juncturas vero, ubi cellulosa & spongiosa est substantia, ibi ea apparet rubra, propter vasa plurima sanguifera, ibi adhuc plena suo sanguine.

In medio ossis nunc durities summa, circa juncturas compages mollissima natura est, nam ibi ossa facile possunt in pulverem conteri; ergo friabilia sunt. Quæritur, quid boni hoc faciat? Mechanices peritus facile respondebit, si quis velit baculum frangere, & illum in medio apprehenderit, non poterit frangere. Si vero utrumque bacilli extremum apprehenderit, & in medio sustentaculum apposuerit, jamque vim faciat in illud sustentaculum, tunc rumpitur utique baculus. Eadem ratione ossa nostra se ut vectes habent, ad utraque extrema retinentur, interim moventur, & in medio maximam vim recipiunt, unde facile ibi frangerentur, nisi essent durissima.

Eo nunc deinde posito sequitur, quod ultimo loco dictum est; in medio vix aliquid deprehenditur liquidi inter lamellas, circa extrema vero omnia vasis & sanguine plena sunt. Si iterum findatur os, & sumatur etiam microscopium, & inspicatur substantia ossis circa medium, vix aliquid observabitur liquidi. Videatur dein-

deinde, quo modo circa extrema se habeat, reperiuntur certe omnia liquido sanguineo osseo, medullosa plena. In medio tamen osse etiam liquida sunt & vasa, sed vasa ita compacta, ut vix videri queant, & liquida tam tenuia, ut vix appareant. Ut demonstraretur autem, etiam in medii ossis substantia hærere vasa, hoc agat Anatomicus, sumat os femoris animalis, curet fragmentum excindi securi, liberet illud ab omnibus externis incumbentibus vasis & membranis; sumat microscopium, videbit liquidum adesse; conjiciat tunc illud fragmentum in ignem, videbit ardere, transsudare medullam, & cum combustum sit os, habebit spatia intermedia in sua substantia; unde liquet prius ibi fuisse vasa.

Ultima proprietas & consideratio est hæc, quod ossa in medio cavum relinquunt, ad fines minime. Ita se res habet, lamellæ omnes in medio osse sic compressæ sunt ad se invicem, ut solidissimum ibi os sit, & tamen æque magna copia lamellarum, ac versus fines adest; ergo, si plus comprimantur ossa, quam ad fines, ibi cavitas remanere debet. Circa fines vero non una cavitas adest, sed plures, inter duas quasque vicinas lamellas; hinc ossa in medio habent puram cavitatem, ad fines vero non puræ sunt cavitates; ergo medulla apparet in medio; non ad fines, ubi tamen adest medulla, sed magis dispersa inter lamellas; hinc in medio medulla in unam aggregatur molem, sed ad fines apparet minus olei, & plus vasorum liquidum fecernentium.

Hæc nunc sunt, quæ Medicus scire debet de ossibus, neque scio quid ultra desiderari possit de substantia ossium. Eadem etiam sunt fundamenta in chirurgicis ad morbos ossium, hinc enim patet, cur os circa medium ruptum facile reponatur, & concreascit. Cur facilius circa fines putrescat. Cur caries ossis tenacissima hæreat in medio, sed facilius abradatur, circa fines vero difficillime, & plurima in hunc sensum. Reliqua, quæ ex his deduci possunt, facile dabit meditatio.

Nunc si quæ in Osteogenia dicta sunt, conferantur cum hisce, habebitur clara structuræ ossium cognitio. Verum in corpore ossis non est tantum 1. substantia illa media solida, & 2. porosa ad extrema, sed 3. sunt etiam clavi intermedii ossei, in ipsa media substantia detecti. Si quis voluerit medullam ex ossium cavis educere, cultro suo aliquando ad fines usque provenire nequit, quia adsunt trabes & clavi in cavo ossis, quæ ab una parte cavitatis ad alteram vergunt, & lamellas ita sustinent, ut os non facile frangatur, neque recedere lamellæ a se invicem possint, eodem certe artificio, quo architecti in extruendis ædificiis utuntur: hi enim cauturi, ne paries ad oppositum parietem ruinam faciat, interponunt trabes, quæ impedian. Noster autem OPIFEX ossibus tales trabes dedit, omnibus quidem, sed illis tamen, quæ sustentant pondus corporis, ut ossi femoris, tibiæ; non ita radio atque ulnæ, nam hæc ossa etiam si exerceant motum, pondus tamen majus sustinere non debent. Quid sint hi clavi & hæ trabes, solus demonstrat HAVERS, nempe laterales quædam series lamellarum ossæarum quando nondum omnino ossæ sunt, deprimuntur propter incumbens corporis pondus; nam si quodcumque corpus fibrosum sustineat totum pondus, facile fit, ut hæc & illa fibra deprimatur. Sic itidem hic interne in ossibus illis, aliqua pars laminarum depressa, si alteri occurrat ab altera parte

parte ossis similiter depressa, tunc oriuntur hujusmodi trabes “. Hi iidem sunt illi clavi, qui intus in quibusdam ossibus reperiuntur, absque ordine dispositi, sed tamen omnes ex stratis dictis ita depressis nati.

Nunc considerari debet *medulla*, de qua dabo, quæ exactissima cogitatione adsecutus sum circa rem, de qua aliis plurimum disputatur. Omnia ossa motui destinata, habent duplex cavum, ut vidimus. Si enim os findatur, reperitur majus cavum in medio ossis, & aliud genus cavitatum in ipsa ossea substantia. Illud cavum intermedium continet inter se in omni animali sano, quiescente, bene saginato, & juvenili, suavissimum, blandissimum, tenuissimum, insulsum, subtilissimumque sanguinis oleum. Sed ossa duplex cavum habent, nempe 1. in medio, & 2. circa juncturas in substantia ossea. In his scilicet ossibus, quæ motibus destinata sunt, si sanum, quiescens, juvenile, (hæc enim omnia requiruntur), fuerit animal, tunc cavitas illa media repletur materie, quæ dicitur medulla, & oleum est blandissimum, minime acre, subtilissimum, id est, in toto sanguine oleum tam mobile, flexile non reperitur, & præterea nullum oleum tam insulsum, quam illud datur quod medullam dicimus. Hæc nunc tota est medullæ historia. Ex periosteio, per densitatem lamellarum, facta sunt foramina obliqua, per quæ foramina arteriæ magnæ ex periosteio exeuntes se insinuant, & ultimo desinunt in cavitatem internam & mediam ossium. Quando hæ arteriæ per cava ipsa ossea se insinuarunt, applicant ramos suos superficiei concavæ ossis, atque furculis, intertextis innumeris faciunt membranam crassam quæ est periosteum internum ossis, & totum cavum ossis internum & medium obvelat. Sumatur enim ex ovillo armo, & ex ovilla coxa, os femoris & coccygis, apparebit membranam in osse per medium fisso, superficiei concavæ adhærere, rubram, sanguineam, in cujus medio cavo medulla est. Ex hac membrana, ita facta, rami infiniti excurrunt, qui anastomosibus suis faciunt globos, & sphaeras membranaceas cavas. Ex sphaerulæ fiunt a membranis quibusdam, quæ eadem sunt ipsum intertextum harum arteriolarum opus. Porro sanguis arteriosus, eo delatus per vasa perforantia ossis substantiam, quæ fecerunt periosteum internum, adfert tenuissimam suam partem versus has membranas, in medio suo cavas, quæ recipiunt oleum descriptum, quatuor illis proprietatibus donatum, quas diximus, idque his sacculis continetur. Hi nunc sacculi omnes communicationem inter se habent, & deponunt tandem illud oleum per quosdam canales, sed quo versus? Omnia emissaria horum sacculorum se ad periosteum internum applicant, & novam sic adunatam membranam faciunt, quæ medullam vestit. Ita medulla ponitur in vagina membranosa, quæ tenuissima est, & constat ex emissariis medullosis intertextis, & unica est illa ordinata omnium medulloforum emissariorum adgestio. Ita arteriæ feruntur ex periosteio externo versus interiora ossis, & tandem usque ad medullam, ubi, ut in aliis omnibus arteriis fit, secedunt, & deponunt succum tenuissimum (a).

T t

Quo-

(a) Medulla continetur in vera cellulositate, qualis pinguedo est, sed quæ magna ex parte non solis membraneis, sed osseis etiam fiat cellulis. Vasa has cellulas pingunt, non constituunt.

Quonam vèrsus feruntur nunc venæ & ubi hærent? Respondetür facile, venæ incipiunt, ubi arteriæ desinunt, ergo recipiunt sanguinem hoc oleo privatum; hinc constituitur membrana illa interna, seu periosteum internum, ex venis & arteriis; arteriæ pergunt, ut dictum est, venæ etiam iterum exeunt per alia cava, quam per quæ arteriæ transeunt, & desinunt in periosteum externum.

Quæritur nunc, ubi maneat medulla, & quo vèrsus deferatur? Possem plures meditationes meas supra hanc rem adferre, sed unum tantum experimentum citabo. Sint in castris duo equi, si eorum alter bene saginatus fuerit, & forte vulneratus perierit, ossa ipsi erunt plena medullæ. Verum alterum equum perinde sanum, pone celerrimum iter fecisse per tres quatuorve dies, deinde etiam ex vulnere læsum periisse, hujus certe os, quodcunque sumferis, nunquam habebit cavum medulla repletum, sed simplici fero tenui. Si vero idem animal, post cursum, per aliquot dies in stabulo quievisset, habuisset, rursus medullam in ossibus. Ita docemur, oleum hoc posse expelli, si multum moveatur animal, neque in ossibus manere, sed distribui, idque ad triplicem, quem dicemus, locum.

1. Per lamellas suas, ad vasa sua, sed nobis invisibilia; hinc transsudare nobis apparet medulla. Sumatur enim armi ovilli os, quod nobis os humeri est, privetur ab omni involucro, quod externe adhæserit, tunc ad ignem calefiat, videbitur oculis per substantiam osseam transsudare medullam. Si objeceris, inde non patere, ferri medullam per ipsum os, sed id unice apparere, transsudare utique ex cavo medio vèrsus exteriora, sumatur ergo hoc secundum exemplum. Os fissum privetur omni medulla, & omnibus membranis internis, imponatur carbonibus ardentibus, tunc videbitur, etiam nunc transsudare ad exteriora; id quidem non fieret, nisi essent ibi vasa. Si enim liberum adesset oleum, utique per locum apertum posset exhalare. In sceletis idem experimentum fieri potest. Postquam ossa bene depurata sunt, ut albescant, post mensem iterum incipiunt flavescere, ita ut inter lamellas clare appareat oleum. Ex his exemplis nunc videmus, medullam ex suis vasis ad membranam illam tenuem, medullam investientem, arachnoidem, omnino deferri in periosteum internum, & sic tandem ad lamellas ossis venire. Hoc est primum iter medullæ, & facit, ne ossa fragilia, fiant, nam os siccum potest conteri, si vero os illud exsiccatum immergatur oleo, non frangetur & duritiem priorem recuperabit. Sumatur iterum os ovillum, comburatur, erit os friabile; mittatur idem in aquam, jam durius fiet, si vero in oleum merferis, longe melius iterum erit, & integrius.

2. Vèrsus periosteum, nam eo ferri & redire in venas patet, cum osse cremato appareant foramina, per quæ fertur medulla ad periosteum. Quando animal multum currit, oleum illud vèrsus extrema hæret. Hoc oleum facit, ne sacculi membranacei contra se mutuo conterantur.

3. Tertium iter hujus medullæ, & illud maxime notabile, & maxima copia, est vèrsus cava juncturarum, eo etiam deferatur, ut lubricentur & incabiles ibi sint partes conjunctæ, & mobiles supra se mutuo, ut sine attritu & sine dolore supra se invicem commode moveri queant, hinc nunc, quo animal movetur plus, eo plus indiget hoc oleo, quia eo celerius consumitur medulla, adeo ut tandem defi-

deficere incipiat, ut fieri sentimus post validissimos & diuturnos motus, tunc enim rigidae incipiunt fieri illae partes, cum incipiat deficere medulla, & aliquando crepitant ossa articulata, ut in rotis currum. Quando enim incepit deficere illud serum, quo illiniri solent rotæ, tunc incipiunt crepitare; si pergatur, adteritur axis & rota, & utraque sæpe inflammatur.

Causa medullam adferens, est arteriosus succus. Loca eam continentia sunt acini medullofi. Causæ, quæ medullam factam propellunt ad tria loca enarrata sunt; omnis nempe motus quicumque validus arteriarum, qui semper increfcit, quando valido motu movetur animal. Hæc medulla adjuvat motus animalis & sanguinem oblinat, ne acer fiat motu suo, eodem tempore, quo motus animalis viget, & augetur etiam motus per vasa ossium & medullæ.

De medulla etiam, si quis velit legere Auctores, hi sequentes sunt eligendi. Palmam omnibus præripuit clarissimus ille Medicus Britannicus CLOPTON HAVERS in *Osteologia* sua, edita Londini in 8. anno 1691. qui Liber habet tractatum unum dicatum medullæ describendæ (a).

Tum Clarissimus DUVERNEY, sed tantum in privatis suis scriptis (b); unde tantum a nonnullis ejus discipulis, inventa clari viri, habere debemur, proinde invenientur ea DUVERNEYANA in primis Tomis du *Journal des Savans*. Deinde apud PALFINUM in sua *Osteologia*, tum etiam in memorato jam libello Domini le CLERC, nempe *la Chirurgie complete*, quod opus etiam in primis DUVERNEYO debetur. (c)

Scriptit etiam de hac re MALPIGHIUS in *Posthumis*, hinc inde, sed tamen non ita absolvit, uti reliqua sua polire solebat (d).

Adgredior nunc alteram partem ossium, nempe *epiphyses*. In omnibus ergo ossibus fere ad extrema, atque etiam hinc inde ad latera, adhærent ossa adcreta quæ epiphyses dicuntur ab Anatomicis.

Dico præter ea, quæ dicta sunt de periosteo, de ossis corpore, de medulla, de capite ejus, sunt inquam, adhuc alia officula adcreta ossi, & dicuntur epiphyses. Adcrefcunt duobus locis diversis, primo ad extrema ossium, & dein etiam ad latera. *Epiphysis* est vox Græca, & significat *aliquid supernatum*, est ergo ac si diceret, *os ossi supernatum & superadcretum*. Epiphysis suo ossi adhæret ope juncturæ, quæ ex natura sua vocari debet *Indentatio*; si enim sumas femur, v. gr. ovis

T t 2

vide.

(a) In *Discursu* III. Naturam cellulofam docuit, & exsudationem in cavitationem articulationis.

(b) Observationes ejus de medulla continentur in *Journal des Savans*, 1689 n. 19. *Mém. de l'Acad. Royale des Sciences* 1700. p. 202. Non alere demonstrat, transpirare, obitare fragilitati. Dudum autem non alere scripserat JACOBUS de MARQUE in *Paradoxe ou Traité medullaire*, auquel il est amplement prouvé que la moelle n'est pas la nourriture des os. Paris. 1609. 8. (DOUGL.)

Contra JAC. de MARQUE prodiit *Réponse au paradoxe de JACQUES de MARQUE où il dit que la moelle n'est pas la nourriture des os* 1607. 4 *

(c) Paucas habet paginas, 15. seu 16. & minus quidem plenas.

(d) In *Traçtatu de Omento & adiposis ductibus* cellulofam fabricam habet, & negat alere.

Adde nunc Diss. L. LEMERY de la nourriture des os, qui experimento ostendit, per motum dissipari medullam, eamque a gelatina nutritia ossium distinguit. Porro RUYSCHIIUM in *Advers.* III. n. IX qui & in mediis ossibus, & in epiphysi repertam medullam, nihil differre a sebo demonstravit, WINSLOWIUM, & alios Osteographos, & FRANCISCI GRUTZMACHER de ossium medulla Diss. Lips. 1748. 4. qui medullæ fabricam, vasa, analysin chemicam, utilitatem in alendo, diversitatem ab adipe demonstravit.

videbis caput istius ossis posse excuti, illa tunc excussa pars vocatur *Epiphysis*. hanc examina epiphysin, patebit ex parte, ubi aderetum erat illud caput ossi femoris, adesse plura cava, & plures eminere dentes in tota illa separata superficie, ut & ad margines; sic tunc etiam os, cui adhærebat hoc caput, si examinetur, inveniuntur in ea parte, ubi separatio facta est, plura cava & similes dentes eminentes, uti in capitulo dictum est, adeoque unum recipit alterum, & recipitur simul ab altero, & fibræ sunt inter hos dentes, nectentes unum ad alterum. Hæc una species est epiphyseos, quæ nempe ad extrema ossium hæret.

Altera species epiphyseos est, quando ad latera ossium supernascuntur alia ossicula, ut in osse femoris, ubi nempe duo tubercula sunt, unum, quod dicitur trochanter major, alterum vero trochanter minor, reperiuntur infra cervicem istius ossis; hæc tubercula etiam in indentationibus adnexa sunt ossibus majoribus.

Hæ epiphyses ergo per indentationem, & partim etiam per cartilaginem adhærent, & ille nexus ope cartilaginis vocatur *Synchondrosis*. Verum cum adolevit os, tunc omnia ita comprimuntur, ut totum fiat osseum, quod prius erat cartilago, & junctura etiam disparet, tunc vero epiphysis ea vocatur *Apophysis*, quia os adnatum est alteri ossi, non per juncturam, sed per continuitatem, & in quodam processu. His conceptis intelligitur, quanam sint epiphyses, sunt nempe ossa circa juncturas, & ossa circa insertionem juncturarum adnata; ergo de epiphysibus notanda sunt duo: primo modus jugendi cum aliis ossibus, qui est indentatio; deinde ope cartilaginis, quæ se interferit.

Si finem requiras, quare epiphyses factæ sint? Optime certe magnus ille Anatomicus COLUMBUS (a) primus hoc considerasse videtur. Ubi scilicet os alteri ossi jungitur, adest ligamentum, quod semper diversum est a periosteo, nam periosteum est membrana continens vasa intrantia os, & osse exeuntia, ergo differt multum a ligamento; hoc ergo ligamentum, quod circa juncturas reperitur, non procedit ex periosteo (b), juxta longitudinem ossi adnatum, verum inter epiphysin & os, ubi conjunguntur, exeunt, fibræ, quæ amplectuntur epiphysin alterius ossis, & se inferunt juncturæ utriusque ossis, & sic fibræ illæ ligamentum constituentes, nectunt unum alteri. Ratio etiam, cur hæ fibræ radicanter in juncturis apophysium, non ad extrema ossium, est, ne occallescant facile, cum motus partium exercitatur. Finis ergo apophysium est duplex, primo, ut os nectant ossi, secundo, ut tendines musculorum nectant ossi, quæ altera est speculatio. Ubi scilicet muscoli adfixuri sunt tendinem suum validum alicui ossi, ibi excrescit tuber osseum. Vide modo trochanteres in osse femoris, finemque inquire, propter quem adsunt, ut nempe punctum directionis emergat super reliquum os, hisce enim tuberculis adfiguntur tendines musculorum,

(a) De re anatomica L. I. p. 5. Sed eam sententiam dudum refutavit ALBINUS icon. off. fet. & demonstravit nihil sani in iis utilitatibus esse p. 158. & epiphyses lege naturæ necessario nasci, tanquam imperfectionis in osse signa, & nondum absolutæ ossificationis. Si vero aliqua utilitas assignari potest, ea erit, quod in ossibus longis oporteat plura centra esse ossificationis, ne nimis longa cartilago consumi non possit a subnascente ossea parte: deinde, ne prius perfectus & rigidus esset fetus, quam in lucem educatur.

(b) Repugnat anatome, quæ manifesto demonstrat præcipuum stratum periostei capsulas articulationum constituere, quod in fetu facile est demonstratu.

lorum, qui debent femur invertere tum ad interiora tum ad exteriora. Quum ergo puncta hæc ita emineant, demonstratur facile ex mechanicis, directionem tractionis longe faciliorem & meliorem fieri, quam si chorda & tendo trahens plano ossi applicaretur. Id patet in pluribus ossibus. Epiphyses hæc ad extrema ossium teguntur cartilagine, ne coalescant facile inter se juncturæ, quod etiam non fit, nisi in valde vetulis animalibus. Sed cartilaginee hæc sunt elasticæ; hinc facile resiliunt ab omni compressione, inde fit, ut non facile compressæ ibi maneant partes, sed se restituant, & ut major sit mobilitas.

Non ossescunt tam cito illæ cartilaginee, propter liquidum ibi adfluens, nempe 1. mucosum ex glandulis mucosis ibi positis, & 2. medullosum ex medulla eo delata, ut docuit HAVERSIUS.

Super hanc rem legi potest REALDUS COLUMBUS *capite de epiphysi, & junctura ossium*.

Omnia nunc descripta de periosteio, ossium substantia duplici, de epiphysibus, apophysibus, huc usque tractata, vera sunt, de omnibus ossibus, ea lege, variis locis, variis formis & modis, eadem se ubique habeant, ut v. gr. videre est in ossibus cranii. In cranio dicitur vulgo cerebrum se habere pro medulla cranii, sed falsissimum est, nam singulum os cranii est proprium os, cum periosteio suo interno & externo, & unum os cranii est epiphysis radiatim adhærens alteri. Sed prius ex iis, quæ docuimus, erat ibi in prima formatione hominis intermedia membrana, quæ cartilaginea facta est, postea ossea, & tali modo constitutæ, ut indentata iterum ibi fiat junctura; & hac ratione omnia magna cranii ossa cohærent. Loca vero ubi junguntur, vocantur futuræ, & illæ sunt in hunc finem constitutæ, ut exitus daretur vasorum ex cranio vergentium ad periosteum externum, & ex partibus anterioribus ad periosteum internum & ad sinus duræ matris tendentium. Medulla vero horum ossium in diploe est. Si secatur os cranii aliquod transversim, tunc apparet clare constitui os ex duplici lamella, & inter utrasque lamellas esse cellulosa & medullosa substantiam, quæ diploe dicitur.

Hicce nunc probe instructus animus accingat se synosteologiæ addiscendæ.

Synosteologia nempe cum *synostosis* est ossium inter se pro efficiendis motibus connexio. Considerari hic debent sequentia, 1. considerari debent epiphyses (consideratio etiam ossis ipsius hic non multum facit ad intelligendas juncturas, nam horum ope non fiunt), 2. apophyses, 3. tubera, 4. capita, 5. ossium cava, 6. ossium carinæ seu *κοτύλαι*, ut vocarunt Græci, 7. crustæ cartilagineæ, quibus capita obducuntur, 8. ligamenta, & denique, 9. modi juncturarum. Hæc omnia consideranda sunt, antequam tiro claram ideam juncturarum habere possit, nam omnis junctura fit per extrema ossium, sed extremitas ossis semper est epiphysis, quæ postea fit apophysis; ergo nemo intelliget juncturas, nisi apophyses cognoscat, & sic optime, qui discendæ anatomiae se tradit, poterit demonstrare, quo modo ejus prima pars, sive Osteologia, in partes dividatur, & has iterum partes dicto modo adsequi, ut clara sit cognitio.

Tum 3. cognoscenda sunt tubera, 4. carinæ, cava, & *κοτύλαι*, sic optime scripserunt veteres. Omne os, quod movetur, motum eum perficit cum summa facilitate, adeo ut nullibi in natura a priore demonstret ullus mechanicus hujusmodi

di instrumentum, quod ad usum motumque adeo egregie accommodatum sit, ut v. gr. videmus in scapula; ibi non est cavum, sed est aliquod planum potius, cui os humeri committitur, quod est adeo rotundum, ut in motu suo caput rotetur super hoc plano facillime, & uno tantum puncto semper acetabulum contingat, unde motus facillimus est. Sed exorbitaret jam facile de suo loco. Verum apposuit DEUS *cartilagines*, corpora nempe elastica, quæ eam luxationem impedian. Hæ nempe cartilagines, cotylas, seu carinas efformantes, exsurgunt e latere supercilii ossis, & sic os movendum ad latera, in substantia semper reprimente, hæret, adeo ut, cum humerus motus appellat ad hæc latera, ab iis in locum reprimatur. Tum addidit etiam DEUS, ut dixi, duplex liquidum, glandulorum scilicet & medullosum. Porro *Ligamenta* perspicenda sunt, in quibus aliquid mirabile est, nempe glandulæ, quæ iis adhærent ea parte, qua ossa spectant, non enim tantum sunt fibræ, uti veteres putarunt, quæ ossi os nectunt, sed ut CLOPTON HAVERS demonstravit, habent ligamenta glandulas in ea parte, qua spectant juncturas, quæ stillent liquidum lubricans; ergo sic ligamenta debent cognosci; modi quoque, quo modo jungantur ossa, facillime & distinguendi & concipiendi sunt: verum si aliter fiat, hic certe magna erit confusio.

Quando os jungitur alteri & minimum tantum habet modum, conjunctio ea vocatur *articulatio*, quæ dicitur fieri 1. per *συσσάρκωσιν*, hoc est, per intermediam carnem, ut v. gr. scapula adnectitur costis ope musculorum: verum ille non est nexus, qui vocari possit articulatio. Nam scapula tantum costis nectitur, ut trahi possit, & tamen manere in loco, non vero articulatur cum costis ad motum; ergo proprie non datur hujusmodi species juncturæ, quamvis veteres ita dixerint. 2. Per *συννεύρωσιν*, hoc est per vinculum & ligamentum medium, sed neque hujusmodi species nota est. 3. Per *συχόνδρωσιν*, hoc est, per cartilaginem, id est, quod cartilago intermedia ex uno osse in aliud transeat. Verum hi tres modi, non possunt dici modi, ad nectenda ossa movenda perzinentes, sed simpliciter ad nectenda ossa aliis ossibus referuntur, absque respectu ad motum. Ergo non videntur referri ad articulationes. Nunc vero omnium ossium, quæ ad motum exercendum junguntur, juncturarum modus hic est; 1. vel modus tantummodo flexus & extensionis. 2. Rotationis, & tunc semper, si modus conjungendi sit ad rotationem, unum cavum est in uno osse, quod recipit, & unum caput extuberans in altero osse, quod recipitur. Hæc junctura proprie vocatur *ἐνάρθρωσις*, sive inarticulatio, uti est ossis femoris cum acetabulo, ut & ossium metacarpi supra carpum. In priori vero, quem diximus, modo, scopus tantum fuit, ut flectantur retrorsum & antrorsum membra; sed tunc duo sunt cava, & duo capitula, quæ recipiuntur, ut sit ad motum digitorum super os metacarpi, & in junctura cubiti ad os ulnæ cum osse humeri, & vocantur hæ juncturæ *γυγλυμοί*, *ginglymi*.

Reliquæ juncturæ ab antiquis dictæ sunt, quando junguntur ossa sine motu, ut futuræ, symphyfes, harmoniæ, gomphoses. Sutura dicitur, quando unum os dentibus emissis occupatur ab altero osse in cavo aliquo. Symphysis dicitur, quando unum os alteri increfcit, non dentatim, sed superpositione ut os tempo-
rale

rale cum osse bregmatis, sed proprie talis junctura nulla est, nam etiam hic dentes sunt, quæ juncturam faciunt. Harmoniæ etiam nullum exemplum est, nam iterum per indentationem fit. Gomphosis dicitur, quando unum longum corpus in quodam cavo insertum juncturam facit, uti contingit inter dentes & maxillas.

Sed alia supersunt, de juncturis ossium dicenda. Observatum est ab omni sæculo, inter extremas ossium partes, & lubricas cartilagineas, quæ ibi apponuntur, inveniri liquidum quoddam, quod nec aquosum, nec sapidum, nec oleosum, nec etiam glutinosum est, sed quod inter digitos tractatum utique etiam lubricum & tenax apparet, sed tamen non cum magna cohæsione, pellucidum præterea. Id inter omnes juncturas quorumcunque animalium reperitur. Si vero defecerit, advertitur juncturas crepitare in motu, & motum earum etiam retardari, ut artus moveri nequeant, quod contingit in scorbuto, in morbo hypochondriaco diuturno, ut & in lue Neapolitana frequenter. Egregius ille anatomicus CLOPTON HAVERS hujus liquidi naturam invenit, cujus doctrina circa hoc negotium ista est. Ossium structuræ duplici se habent modo: 1. Vel sinum habent exsculptum, in medio cavo, inter juncturas, ut os unum ab osse moto contingi nequeat. 2. Vel sinum habent nullum, ita ut os motum ubique contingat alterum in suo motu.

Os femoris v. gr. jungitur ita cum osse coxendicis, ut caput suum intra cotylam recondat; sed in medio cavo illo (quod cavum fit a juncturis ossium) ibi in medio cavo istius ossis innominati est cavum aliud, quod retrocedit, ut innascatur ligamentum teres, quod jungit os femoris acetabulo medio; intra hunc recessum, sic exsculptum, hærent glandulæ, quæ tantum digito pressæ transfudant liquidum unctuosum, nullo modo tamen oleosum, sed pellucidum, quod liquidum, dum movetur os, lente sic exprimi solet. Idem liquidum, ita expressum, miscetur oleo medulloso, quod transfudat per ossa, dum major fit motus ejus partis; ergo etiam partes ossis tunc moventur. Hoc oleum medullæ occurrit illi glutini & intime permiscetur, eaque liquida permista, constituunt oleum ambo ossa lubricans, ne in motu se mutuo conterant, adterant, & calecant a nimio motu.

Alia ossa ita junguntur, ut se immediate contingant, ubi os humeri cum plano in homoplata cotyla, & majore supercilio cartilagineo retinetur; sed ibi nullum cavum reperitur, præter hoc magnum cavum, quod cotylam diximus, secus ac in ossis coxendicis cum osse femoris articulatione, nam hic mutuo ossa se contingunt, & in medio cavo nullus est recessus simile ligamentum recipiens, nec glandulas continens; sic etiam, ubi os femoris ossi tibiæ nectitur, nullum cavum in medio cavitatis os femoris recipientis habetur.

Porro in omnibus ossibus sic conjunctis, ut cavum os recipiens in se alterum sinum non habeat, ibi ligamenta sunt, que nectunt os recipiens ossi recepto, & in his ligamentis, qua parte os spectant, sunt glandulæ, quæ liquidum hoc fundunt, ita ut ligamentum hujusmodi, prudenter solutum, si paululum prematur digitis, transfudet hoc liquidum mucilaginosum, dictum ab HAVER-SIO. Hæ sunt illæ glandulæ mucilaginosæ, huic viro dictæ. Ergo glandulæ in hoc ligamento, quod ossa inter se nectit, semper adsunt; sed ubi ligamentum est in cavo acetabuli, ibi in utroque sunt glandulæ, nempe & in cavo, & cir-

ca cavum; ubi vëro ligamentum teres intra cavum non adest, ibi hæ glandulæ sunt in parte interiore ligamentorum ossa nectentium.

Harum nunc glandularum effectus est, separare hunc mucum, nam plane hujusmodi, insipidus, pellucidus, moderate tenax liquor est. Hujus liquoris nunc est utilitas. 1. Derivare hoc liquidum intra cava juncturarum. Quando ossa circa ligamenta moventur, tunc exprimitur hoc liquidum, & fluit intra cava juncturarum. 2. Effectus est misceri cum oleo medulloso. 3. Effectus est, cum ita intime admixtus est ope motus ossis, cum oleo medulloso, componere tertium corpus, quod neque unice oleosum, neque mucosum est, sed conflatum ex hisce duobus. 4. Hoc liquidum compositum motu ossium fit subtilius, motu enim debet atteri, & attenuari; ita vero attenuatum hoc liquidum per vasa resorbentia aufertur, & miscetur iterum sanguini, quod si non fieret, oriretur hydrops interosseus, & colligeretur ibi liquor, ut in practicis sæpe observatur.

Videatur ergo de hisce CLOPTON HAVERS, vel in *Actis Londinensibus*, ubi per partes prælegit hanc doctrinam Societati Londinensi, vel etiam in suo Libello, edito sub titulo *Osteologiae novæ & glandularum mucosarum descriptionis* (a).

Hisce omnibus peractis de Osteogenia (b), Osteographia, & Synosteologia, & his omnibus bene explicatis, superest, ut dicam de præcipuis Auctoribus sub uno capite, qui hic requiruntur. 1. Primarius omnium est ANDREAS VESALIUS

(a) *Discourse* IV. post brevem memoriam harum glandularum apud C. STEPHANUM, (citata tam a MORGAGNO, qui suas etiam observationes adjecit ad has glandulas *Advers. II. anim.* 23.) Ad earum etiam historiam pertinet diff. CL. PITSCHEL de *Axungia articularum*. Lips. 1740. 4. A. KAAU de *perspiratione* n. 870. 871. J. Z. PLATNER in *Chirurg.* n. 1133. ad costarum articulationes. CAJETANUS TACCONUS in *Comment. Bononiensibus*. COWPERUS, alique.

Ad glandularum mucosarum historiam pertinet etiam HENRIC CHRISTIAN. ANGELOCRATOR de *glandulis HAVERSII mucilaginosæ*, Marburg. 1695. 4.

(b) Osteologiae in universum plurimi exstant Auctores, cum multa facilia habent, & nihil in præparatione, si a quibusdam ossibus capitis recesseris, valde difficile. HIPPOCRATES ossa non ignoravit, ex cujus operibus integram Osteologiam excerpserit RIOLANUS, & qui sceleton æneum Delphis dedicaverit. PAUSANIAS L. X. Inprimis autem scripsit L. de *ossium natura*, brevem & in universum, si subtiliora non requisiveris, satis verum. Sed in L. de *articulationibus* & in *mochlico* multa passim, etiam melioris notæ, ad Osteologiam pertinent.

A. CORNELII CELSI Liber VIII. de ossibus unice agit, eleganter equidem, ut ea ætate, vere, si non subtiliter. Eum Libellum PAVIUS cum commentario recudit sub nomine *succenturiati anatomici*. Leid. 1616. 4.

Et GALENUS Libellum de ossibus reliquit, in quem exstat JOH. SYLVII, GABRIELIS FALLOPII, J. PHIL. INGRASSIÆ, & JOHANNIS RIOLANI Commentarius, plenissimum cæterum erroribus, ut abunde in Lib. de *radicis china usu* demonstravit VESALIUS, & nec ipse potest dissimulare EUSTACHIUS, GALENI Patronus.

GALENI de ossibus libellus excusus etiam est Helmstad. 1549. 8. & gallice versus a JO. CANAPE, Lyon. 1583. 4.

RUFUS aliqua habet, quæ ad eam historiam pertinent.

ORIBASIUS, uti notum, GALENUM sequitur, tum Arabes, Sed & JACOBUS BERENGARIUS aliqua huc spectantia habet & rudia quædam AL. ACHILLINUS, proprii tamen experimenti, & icones nonnullas JOHANNES DRYANDER.

JACOBI SYLVII, quem modo dixi, *Commentarius*, prodiit Parisiis 1561. 8. eruditus est, sed plenus præjudiciis, cum os incisivum, distinctum ab osse maxillæ, uno die quater se vidisse, contra omnem experimentorum consensum dicat, & quæ similia sunt. Habet tamen aliqua

LIUS (a), *Bruxellensis*, incomparabilis anatomiae restaurator, cujus Libri *de corporis fabrica* nunquam satis commendari possunt, ita ut bibliotheca Medici illis carere nequeat, quin primario instrumento se instruendi privetur. Editus est ejus Liber in folio *Basileae* apud *Oporinum*, anno 1543., & iterum ibidem apud eundem, anno 1555. Primae editionis figurae & icones sunt nitidissimae, etiamsi ligneae sint, & praeferendae sunt figuris alterius editionis, nam in secunda editione crenae, quae umbras facere debent, magis sunt confusae, unde saepe maculas habent loco linearum (b). Verum in secunda editione hoc damnum facile compensatur, nam textus est accuratus, & emendatior multo, quam in prima editione. Supervixerat Auctor scilicet 12. annos primo suo operi, objectiones plurimas audiverat, hinc supplevit plurima, emendavit alia, & nitidius fecit opus hinc, qui utramque editionem sibi comparare possit, secundae textum & tabulas primae, consulere deberet. VESALII nunc Liber primus de fabrica ossium elegantissimus est, & nullum opus in medicina unquam plures laudes meruit, quam hic tractatus; nam ibi habetur, quidquid vetustas unquam de ossibus noverat.

V u

2. RE-

aliqua propria & ex brutis Animalibus & ex sceletis. Deinde *calumniarum depulsio* an. 1551. (DOUGL.) Parisiis edita, maxima ex parte contra VESALIUM, & quidem pro GALENI L. de ossibus scripta est, quam autem vana sit, dudum innotuit, cum sternum antiquis quam nobis longius fuisse non erubuerit adfirmare, ipsum plerumque VESALIUM exscribat, dum eum quam saevissime carpit. Sinus tamen sphenoides melius describit. In *dissectionibus* denique cum *Isagoge* editis. Parisiis 1561. 8. aliquas proprias ad Osteologiam pertinentes observationes habet.

CAROLUS STEPHANUS in L. III. de *dissectionibus corporis humani* Parisiis an. 1545. fol. Latine, & an. 1546. Gallice editis. L. I. Ossium historiam tradit, quae pars Libri optima est, & icones magis tolerabiles, quam CARPIANAE sunt. Aliqua etiam habet peculiaris, ut glandulas nonnullas HAVERSII, meniscum maxillae inferioris, &c.

(a) ANDREAS VESALIUS in magni operis L. I. eximiam Osteologiam dedit, cum figuris, ossium artuum imprimis, nitidis, firmis, artificio summo sculptis, quas omnes fere posteriores Anatomici imitati sunt. Doctus pariter sermo, & minime contemnendae sedulitatis, si a capite recesseris. Nam in ea historia utique, cum ossa non dissolveret, minutiolem divisionem ossium superioris maxillae, & subtiliores particulas non attigit. Deinde in epistola *de radicis China usu* Basileae an. 1546. fol. min. & Lugduni an. 1547. 16. edita, GALENI Osteologicos errores refutat. In *Examine* denique *observationum Fallopii*, Venet. an. 1564. 4. excuso, aliqua miscet ad ossa pertinentia, fere ex brutis animalibus, cum in Hispania ne cranium quidem reperiret. Auditus organum ex animalibus describit. Nitidissimae denique sceletorum imagines in ejus Chirurgia magna habentur. De Epitome alias dicitur.

(b) In Iconibus utriusque editionis longe minorem diversitatem reperio, quam putassem, dum comparo utramque. Posterior vero 1555. in folio multo plenior, & nitidior prodiit. Cavendum autem esse moneo ab omnibus editionibus alibi factis. Veneta anni 1568. fol. Parisina anni 1564. f. 1569. f. Antvverpiensi anni 1572. f. parv. Norimbergensi 1551. fol. quae omnes penes me sunt. Nupera vero, ALBINO & BOERHAAVIO procurante, Leidae, 1725. fol. edita est, in qua praeter VESALII Opera Anatomico-Chirurgica etiam Fallopii, Cunei, Heneri, & alia opuscula habentur. Haec editio artificiosissimas habet icones.

LEONHARDI FUCHS *Epistola Anatomica* L. I. (& II.) Tubingae prodiit an. 1551. 8. (non Lugduni ut DOUGL.) Ex VESALIO totus Libellus est, ne ipso diffidente Auctore.

AMBROSIUS PAREUS in *Administrationibus Anatomicis*. Paris. 1549. 8. fere VESALIUM sequitur. Sub finem sceletopoeiam addit. In collectione operum fusior ejus est anatome.

LUDOVICUS COLLADO in *enarrationibus in GALENI L. de ossibus*. Valent. 1555. 8. (DOUGL.)*

FRANCISCI MARTINI de CASTRILLO de *dentitione & ordine quo dentes prodeunt*. Pinciae 1557. 8. Madrit, 1570. 8. (DOUGLAS). *

2. REALDUS COLUMBUS, Cremonensis (a), qui discipulus fuit VESALII. VESALIUS quidem plerumque degebat Patavii, neque tamen ibi Professor fuit, verum patiebatur se accersi, modo in hanc, modo in illam Academiam, ad quam

(a) REALDUS COLUMBUS ex Pharmacopola auditor JOH. ANTONII PLATII Chirur-
gi (p. 24. L. I.), & VESALII (p. 43. L. I.) hinc anatomes anno 1544. Professor evasit. Scripsit de re anatomica L. XV. Venetiis an. 1559. fol. deinde Parisiis 1572. 8. (DOUGL.) denique Francofurti an. 1590. & 1593. 8. editos, quæ ultima editio laudem meretur, ab adjectis observationibus anatomicis JOHANNIS POSTHII. Eum virum CARCANUS valde parvi fecit, insciumque & indoctum fuisse scribit: Et utique vani quid habuit, nimiusque fuit omnium aliorum Anatomicorum, ipsiusque VESALII contemtor. Ad Osteologiam L. I. & IV. ad cartilagine L. II. ad ligamenta L. III. pertinet. Inter ossa stapedem sibi tribuit, sed paucis consentientibus. Cartilagine (sive, ut loqui amat), Larynges numerat quinque. Os sacrum diligenter descripsit. Sceletorum fabricam docuit.

GABRIEL FALLOPIUS hic laudandus est. Et primo *observationes anatomicae* huc spectant, quæ Venetiis 1561. in 8. minori, inde variis locis editæ a J. SIEGFRIDO in ordinem conjunctæ, & an. 1585. Helmstadii excusæ, nuper cum VESALLIANORUM operum editione conjunctæ prodierunt; quo opere nullum facile præstantius ante hæc nostra tempora prodiit, adeo multa, & adeo bene, in minutioribus correxit in ipso restauratore anatomes VESALIO, vir simplex, candidus & diligentissimus in humana anatome, Pisanus & Patavinus, post COLUMBUM Professor. Ante diem obiit, annos non amplius 39. natus, quod contra DOUGLASSIUM, qui septuagenarium facit, observare oportet. Ad ossa pertinet pars prima. Articulationum novam tabulam adornavit, adjecit trochoidem ginglymum. Stapedem suo Marte invenit an. 1548. gloria tamen inventi cessit INGRASSIÆ, fenestras tympani constituit, aquæductum, canales semicirculares, vestibulum; partes ossis cribrosi & os spongiosum superius primus vere descripsit. Osteogeniæ, uti dixi, primus est Auctor. Deinde in posthumo L. an. 1570. Venet. 4. a FRANCISCO MICHINO de S. ANGELO edito (DOUGL.) cum nomine *expositionis* in GAL. de ossibus, & in L. de partibus similibus, pariter posthumo, utroque valde incompta dictione edito, eadem ossa retractat.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS, Anatomicorum sui sæculi facile princeps, qui copia, subtilitate observationum longe omnes superaverit, Osteologiæ & ipse multis modis profuit. Primo quidem in L. de ossium examine GALENUM contra VESALIUM docte tuetur, & ostendit minime Simias ab eo viro describi: etsi nimium ibi studium non probem, cum nihilo minus sit vitium ubicunque hominem non vere describit GALENUS; etsi Simias ibi non habet præ oculis. Tarsi certe octo ossa & sacri ossis tres partes tuetur EUSTACHIUS, quod non decebat virum candidum. De articulatione capitis cum occipite, brachii cum carpo fusius agit, & de sesamoideis ossibus aliisque. Deinde in L. de auditus organo tubam, stapedemque describit, quem sibi tribuit. In L. de dentibus eam materiem pene exhaustit, & accuratissimi Libri dedit exemplar. In iconibus denique posthumis præter emendatiores sceletos & figuras ossium capitis dissolutorum egregias, maxime ossis multiformis, ossis palati, alia etiam ad hominis & animalium Osteologiam pertinentia inseruit. Cæterum opuscula priora prodierunt Venetiis, & conjuncta quidem an. 1564. 4. quæ editio ob præfationes & adnotationes PINI quibus continentur antiquorum scriptorum loci ab EUSTACHIO absque nomine citati, multo melior est, quam BOERHAAVIANA, Delphis 1707. 8. recusa.

VIDUS VIDIUS Parisiis docuit, & an. 1567. diem obiit. Diu a morte Libri VII. de Anatomie corporis humani, Venetiis an. 1611. in fol. prodierunt. FALLOPIANA habet inventa, eaque iconibus declarat, quas nullas dederat ejus Præceptor. Icones novæ quidem pleræque, sed incomptæ & rudes. Os palati tamen cum portione orbitaria, os cribrosum cum septo & ossibus papyraceis, vomeremque seorsim a reliquis ossibus primus expressit.

VOLCHERUS COITER Groningensis, FALLOPII etiam discipulus, plurimum Osteologia delectatus est. Ejus duo exstant volumina. Primo titulus est *externarum & internarum partium corporis humani tabula*, Norimb. 1572. fol. In iis ad rem nostram pertinent *tabula ossium corporis humani*, cum quatuor iconibus adjectis, quæ VESALLIANÆ sunt. Deinde *analogia ossium humanorum simia & vera & caudata*, cum istius icone, ad GALENI loca intelligenda non inuti-

quam iter faceret, & ibi per sex aut octo septimanas anatomiam doceret, & tunc omnia, quæ docuit, in unum illum egregium Librum transtulit. Habuit etiam plures alios auditores, ut GABRIELEM FALLOPIUM, & hunc COLUMBUM. Hicce Liber de re anatomica ter editus est. Primo uno volumine in folio, Venetiis anno 1559. quæ editio est rarissima, sed absque figuris. Potest etiam comparari editio ejus in 8. apud Wechelium, celebrem illum Typographum, quæ facile acquiritur.

3. Memorari hic etiam debet JOHANNES PHILIPPUS (a) INGRASSIAS, Siculus; scripsit enim *Commentaria in GALENUM de ossibus*, qui Liber forte rarissimus omnium, quos quærimus. Editus est anno 1603., Panormi in Sicilia, apud Johannem Baptistam Maringham, & iterum Venetiis in folio apud Societa-

V u 2

tem

inutilis, sed ex EUSTACHIO fere defunctus Libellus. Porro de *auditus organo*, alibi dicemus. De Osteogenia dictum est. Alterum opus COITERI cum hoc titulo prodiit *Lectiones Fallopii de partibus similaribus Corporis humani*, Norimb. 1575. fol. Eo opere plusculi sceleti avium & quadrupedum continentur, egregie depicti. Denique COITERI de *Cartilaginibus Tabulas V.* Bononiæ 1566. fol. editas memorat DOUGLASSIUS, quas non vidi.

7. JASOLINI *Osteologia parva cum 1. Quaestione* prodiit. Neapoli 1573. 8. * & recusa est Hanoviæ 1654. 4. Francofurti 1668. 4.

(a) JOHANNES PHILIPPUS INGRASSIAS Rachalbutensis Siculus, Neapoli docuit, & obiit senex an. 1580. cum 34. antea annis invenisset stapedem. Ejus *Commentarii in L. GALENI de ossibus* edidit Messanæ Nepos NICOLAUS an. 1603. in folio. Doctus Liber, inprimis Galenice: neque absque candore, cum in VESALIUM, ubi vera dixit minus, quam reliqui coævi Anatomici, cavillettur. In minutiis, divisionibus, numeris, linearum descriptione, processibus valde studiosus fuit. Iconibus usus est VESALIANIS, præter rudem sui stapedis imaginem. Utilis Scriptor. Os cribrosum bene descripsit. In EUSTACHIUM, cum quo de praxi dissenferat, valde iniquus est.

URBANI HEMARD *recherches de la vraye anatomie des dents, & propriétés d'icelles, avec les maladies, qu'ileur adviennent.* Lyon 1582. 12. Non ignarus homo, qui semina dentium in alveolis puerorum teneriorum quæsierit, & duplicem descripserit eorum ordinem.

FELICIS PLATERI de *corporis humani structura & usu Tabula.* Basil. 1583. fol. min. Icones equidem ex VESALIO sunt, paucissimis additis ad organum auditus. Ossa fetus ex propria industria descripsit PLATERUS, icones recepit a COITERO. Descriptiones fere ubique VESALIANÆ sunt, in tabulas concisæ, ne ipsæ tamen absque suis additamentis.

SALOMON ALBERTI in *historia plerarumque partium corporis humani* VVittembergæ an. 1585. & denuo an. 1601. edita in 8. præter VESALIANAS icones aliquot etiam a propria industria profectas addidit ad organa auditus, ossicula, fenestras, cochleam pertinentes, quam, si EUSTACHIUM omiseris, primus icone expressit. Idem L. GALENI de *ossibus*, VVittembergæ anno 1579. in 8. cum præfatione edidit (LEHMANN BIBL.)

JULII CASSERI Placentini varia Opera plena sunt artificiosis iconibus, quas ad cadavera a pictore proprio exprimi jussit, rarissimo eo seculo instituto, quo omnes fere VESALIUM recudebant. Dedit etiam multas icones in Tr. de *Larynge & vocis organo & de auditus organo.* Ferrar. 1600. fol. reg. In posteriori organo novas icones & hominis & animalium plurimas proposuit, non quidem perfectissimas, multo tamen, quam descriptiones, meliores, quæ obscuræ & theoriis obrutæ solent esse. In priori os hyoides & larynx inprimis multis figuris & ex multis pariter animalibus exprimitur. in L. III. de sensibus narium fabricam osseam expressit. Aurium historiam non mutatam repetiit. Magnæ tabulæ posthumæ ex VESALIO defunctæ sunt.

ULYSSES ALDROVANDUS passim, & maxime in Ornithologia, sceletos habet animalium.

JOH. MATTHÆI VIRINGI *tabula anatomica ossium corporis humani.* Duaci 1597. in fol. * (DOUGLAS).

JAC.

tem anno 1604. nam mox per totam Europam venditus fuit, sed iterum editus. Commentatus est in GALENUM de ossibus, sed nullus Liber est, qui curiosius collecta omnia veterum contineat; verum raro habetur, nam latet hinc inde in bibliothecis, & vix spes est eum iterum impressum iri, propter magnitudinem voluminis; hinc si acquirere quis potest, emat; sed non auctor essem, ut tanto pretio emeret, nam RIOLANUS, qui quadraginta & septem annis postea vixit, collegit etiam omnia ex eo, inde omnia, quæ optima habet INGRASSIAS in RIOLANO inveniuntur, unde nescio, cur periti viri tanto labore eum quærant, & tanto pretio emant, quia omne, quod eximii habuit, in suum opus traſtulit RIOLANUS.

4. JOHANNES RIOLANUS (a) Parisiensis, filius (pater enim ejus fuit Professor

JAC. HORST de aureo dente maxillari pueri Silesiaci, Lipſ. 1595. 4. vix potest huc revocari, cum fabulæ nimis credulus eventum nunquam viſum laborioſus explicet.

JEAN HEROARD hippostologie ou discours des os du cheval, Paris 1599. 4.

BAPTISTÆ CODRONCHI de morbo novo, sive prolapsu cartilaginis mucronata. Bon. 1603. 4. cum commentariis de morbis Imola grassantibus prodiit. Habet descriptionem ejus cartilaginis.

JOHANNIS JESSENI de JESSEN L. de ossibus. VVittemb. 1603. 8. Eruditus vir, plurimum usus est VESALIO.

Osteologie du Corps humain. 1604. 8. bene spissum volumen, incerti Auctoris apud Nobilem Virum J. S. a BERGER vidi.

(a) JOHANNIS RIOLANI Osteologia anno jam 1614. Parisiis in 8. prodiit. Ea continentur isagogica de Ossibus tractatio, cum Osteologia adusque septennium: Commentarius J. SYLVII in L. Galeni de ossibus, & J. RIOLANI explanationes apologeticae pro Galeno: Simia Osteologia, & hominis Osteologia ex Hippocrate collecta. In magno opere omiſſa est prima pars, sed inserta enchiridio RIOLANI Parisiis 1648. 12. (DOUGL.), & Leidæ an. 1649. 8. edito. Altera, rejecto SYLVII & GALENI textu, ut vocant, retractata & ornatior in magnam operum collectionem an. 1649. editam recepta est. Sic ultimæ duæ, non mutatæ. Cæterum ad Osteologiam RIOLANUS plurimam eruditionem attulit, & undique ex GRÆCIS, & recentioribus ornamenta adſperſit sermoni. Nova vix ulla ſua arte invenit, & in ſubtilioribus, ut auditus organo, craſſiſſimis erroribus ſe implicavit. GALENI in univerſum ſtudioſior, quam cura veri pateretur.

In Enchiridio, modo dicto, ſextus Liber iterum Osteologiam continet, sed recentem, offium musculis ſuis modo nudatorum, cum cartilaginibus & ligamentis, utile, & novum eo tempore compendium. Officula etiam dixit, peculiaria inſidentia ossibus petrosiſ ad tranſitum carotidis. Ipsi etiam tribuitur Gigantologie, ou hiſtoire de la grandeur des Geans. Paris. 1618. oppoſita HABICOSIO. Ea in collectione operum omiſſa est.

POST RIOLANUM PETRUS PAVIUS, conditor Leidensis Theatri, de ossibus primitias Anatomicas ſcripſit. Leidæ 1615. 4. cum figuris quibuſdam ſinuum cranii propriis, non cæterum diſtiſſimis propriis obſervationibus. Ejus in CELSUM Commentarium alibi excitavi.

HIERONYMI FABRICII ab AQUAPENDENTE de offium dearticulatione Libellus cum L. de musculorum artificio, anno 1614. Patavii editus, ſenile & Galenicum opus est. Idem in L. de grefſu, Patav. 1618. 4. aliqua omnino notatu digna habet ad anatomem comparatam, ad femoris hiſtoriam, &c.

CAROLI GUILLEMEAU ostomyologie ou discours des os & des muscles, Paris 1615. 8. ſatis ſpiſſum volumen collectitium.

Cum BARTHOL. CABROLII Alphabeto Osteologia etiam contracta prodiit, Monſp. 1604. 4.

CASPAR BAUHINUS in anatomico theatro, Francofurti an. 1621. excuſo diligentiffime, ut ſolet, obſervationes clarorum virorum ad oſſa congeſſit, VESALIANIS quidem inprimis verbis in ſermone uſus, tum FALLOPIANIS in notis. Obſervationes interſperſit chirurgicas aliasque.

C. BARTHOLIN de Unicornu. Hafn. 1621. 8. reſcuſus & auctior, cura filii prodiit.

NICO-

fessor Regius). Ejus opera anatomica in folio edita sunt Parisiis, anno 1649. Illo Libro nemo Medicus etiam carere debet, & si vel munus Professoris anatomiae conferretur Medico, nihil haberet, cur erubesceret, si tantum ordinem hujus Auctoris

NICOLAI HABICOT *Gigantosteologia* an. 1613. edita, & ejus *discours apologétique contre la Gigantomachie*. Paris. 1615. & *Antigigantologie ou contre-discours de la grandeur des Geants*, Paris. 1618. Riolano oppositus, pertinent ad fabulosum sceleton Regis Teutobochi, cujus ossa vere humana & Gigantis fuisse male defendit HABICOT. Neutrum vidi. IDEM ligamenta passim in carpo & alibi in sua *Septimana* describit.

ANONYMUS contra HABICOTUM scripserat *Gigantomachie*, pour répondre a la *Gigantosteologie*. 1613. 8.

GUIL. FABRICII HILDANI *beschreibung der furrreflichkeit der Anatomie*. Bern. 1624. 8. Magna pars in Osteologia versatur. Modum sceletos nitidos parandi describit, supellectilem Osteologicam suam recenset, & in eam observationes adspersit. Sceletos varios compexit, tres Coloniae (p. 139.), Bernae unum, in quo fractae a tortura scapulae. Idem alibi iconem dedit patellae. in Epistolis ad PAVIUM varia de sceleti fabrica habet.

C. HOFMANNI *perpetua adnotationes in L. de ossibus Galeni*. Francof. 1630. & ejusdem *L. de thorace* exstat. Francof. 1627. f. Grammatica aliqua ipse expers anatomes.

LUDOVICUS SEPTALIUS *de morbis ex mucronata cartilagine provenientius*. Mediol. 1632. 4. (DOUGL.)*

CÆCILII FOLII *nova Auris interna delineatio*. Venet. 1645. 4. Rarissimus Libellus, minime malas figuras habet, inter quas musculus & processus anterior mallei, & cochleae melior figura.

JOH. VESLINGII *syntagma anatomicum*. Patav. 1641. 12. & 1647. 4. Inelegantissimo, quod alibi laudabo, compendio anatomico, etiam varia ad Osteogeniam & Osteologiam habentur, & auris internae cum processu FOLLANO, cochleaeque Icones.

In JOHANNIS FABRI additionibus ad Librum FRANCISCI HERNANDEZ. Rom. 1651. excusa varia Osteologica, & sceleti animalium continentur. Eos paraverat THEOPHILUS MOLITOR p. 488. & sculptos dedit PHILIPPUS de LEANO p. 530.

CONRADI VICTORIS SCHNEIDERI plurimae dissertationes huc pertinent *de capite*. VVitemberg. 1643. *dissertatio Osteologica* 1649. *de osse frontis* 1650. *de ossibus sincipitis* 1653. 8. *de osse temporum* ib. eodem anno, tum *de osse occipitis*, doctae omnes, neque absque experimentis in sceletis adultorum hominum & puerorum captis. Tædio sunt fusa fragmenta aliorum Scriptorum, quae passim suo sermoni inseruit, Ejus *demonstratio osteologica* habet sceletopoiien. EJUSDEM *de osse cribriformi* L. 1655. 8. describit ossa spongiosa variorum animalium. De sinu frontali varietates habet. Pervium hoc os esse aut vapores ad cerebrum admittere negat; tum neque sordes cerebri per os cribriforme ad nares deponi permittit.

In opere doctissimo C. V. SCHNEIDERI *de catarrhis* pertinet huc etiam L. I.... *de osse unciformi per quod catarrhi decurrere finguntur*, VVitemberg. 1660. 4. Erudite de antiquitatibus ossis sphenoidis, deque foraminibus veris & falsis sellae Turcicae, & contra vias catarrhorum ad palatum ducentes scribit. EJ. L. II. *quo Galenici meatus catarrhorum perspicue falsi evincuntur*, ibid. eod. anno. Duram membranam cerebri cranio pertinaciter innasci docet, foramina cribriformis ossis a natura accurate claudi, neque a ventriculis cerebri ad glandulam pituitariam viam patere, neque adesse VESALII vias, aut alias, quae a cavea cranii in fauces ducant.

MELCHIORIS SEBIZ *de dentibus* Disp. 4. Argentor. 1645. 4. Eruditus vir, parum usus propriis experimentis.

NATHANAEL HIGMOR sinum nemini veterum ignotum ea felicitate descripsit, ut proprium nomen impositum retinuerit.

In JOHANNIS ANTONIDAE VAN DER LINDEN *Medicina physiologica*, quae Amstelodami an. 1653. 4. prodiit, plurima eruditio Graeca de ossibus habetur, aliqua etiam subtilia & propria v. gr. de officulis auditus.

SIMON PAULI proprium Libellum edidit cum titulo *machina anatomica*, sive *descriptiones instrumenti ad ossa*. Hafniae 1668. fol. 1673. 4. & in *Aët. Hafn.* II. sua consilia publicavit.

storis sequeretur; nam ibi reperitur quidquid ad eruditum Anatomicum pertinet; ibi enim invenientur ea, quibus alii se ornaverunt. Editio illa in folio præ reliquis commendanda est, licet decies forte fuerit impressus Liber, id enim semper

DOMINICI de MARCHETTIS *Anatomia*, Patavii an. 1654. excusa & sæpe typis in Belgio edita, multa ad Osteologiam & ad ligamenta pertinentia, etiam propria habet.

INTER GUERNERI ROLFINK *dissertationes anatomicas*, Jenæ 1656. 4. editas Dissertatio II. de ossibus agit erudita potius quam anatomica.

HERMANNI CONRING *de natura & dolore dentium*, Helmstad. 1662. 4. erudita disputatio.

ARNOLDI SENGUERD *Osteologia Corporis humani*, Amstelodami 1662. proprias observationes vix habet, litium plurimum.

CL. GALENI *de ossibus* L. Gr. Lat. Accedunt Vesalii, Eustachii, Sylvii, Heneri *exercitationes*. Hæc collectio recusa est Leidæ 1665. 12.

MICHAELIS LYSER *culter anatomicus* eodem anno Hafniæ excusus est in 8. Plurima habet anatomica, & imprimis modum parandi sceleti, nomina ossium carpi. Variis annis recusus est.

GODOFR. MOEBII *Odontologia*, sive *de dentium statu naturali & præternaturali*. Jen. 1661. 4.

HIERONYMI SIGISMUNDI SCHILLING *Osteologia* excusa, Dresdæ 1668. 4. omnino inanis & inutilis.

H. MEIBOHM *de ossium constitutione naturali & præternaturali*, Helmst. 1668. 4. aliqua conservatu digna habet.

In TRANSACTIONIBUS PHILOSOPHICIS varia huc pertinentia extant.

ANTONII van LEEUWENHOEK *de ossibus* n. 102. 366. & *de fabrica, dentium ossium, eboris*, in *Phil. Collect. and Lectur. HOOKII* an. 1678.

Caput giganteum *Phil. Trans.* n. 285.

Ossa humana amplissima *Phil. Trans.* n. 333.

Sceletus amplissimus n. 400. petrefactus n. 391.

P. BLAIR organum auditus elephantis n. 358.

WASSE & BECKET *de longitudine corporis variabili ab elatere cartilaginum inter corpora vertebrarum positarum* n. 383.

Cornua bovis extraordinaria *Phil. Trans.* n. 426.

Sceletus amplissimus n. 400.

HUNTER *de fabrica cartilaginum* n. 470.

Bregma Gigantum n. 456.

PETRUS ANTONIUS MOLINETTI in *Dissertationibus Anatomico-pathologicis* non absque observationibus est, quibus ossa declarentur.

De THOMÆ BARTHOLINI *anatome QUARTUM renovata* Leid. 1674. 8. alibi fusius: Pars Osteologica minus plena est.

Idem in *domo anatomica, historicis Epistolis* sparsim, aliquas observationes habet, & in istis FOLII epistolam.

In Parisinis animalium dissectionibus multa ad historiam ossium ex anatome comparata pertinent, imprimis ex elephanto, cujus in cranio cellulas observarunt.

G. W. WEDEL *Diff. de dentitione infantum*. Jen. 1678. 4. *

C. BARTHOLINUS in *Diff. de olfactus organo* edita Hafniæ 1679. 4. habet cornicula ossis cribrosi ex animalibus.

J. HENR. GLASER in L. posthumo *de cerebro*, Basileæ 1680. 8. edito habet Osteologiam capitis, & eam, cui nomen dedit, fissuram in circulo, qui membranam tympani comprehendit.

CL. PERRAULT in *Libro du bruit* icones minus pulchras organorum auditus habet, etiam massarum, quæ cavitatibus infusæ impressionem retinuerunt.

Idem in III. Tomo *tentaminum physico-rum* de dentibus ex anatome comparata erudite & utiliter agit.

per cum multis erroribus fieri contigit. Ceterum avidissime contra HARVEJUM scripsit, sed tandem circa finem vitæ illi cedere debuit, & edidit hoc opus, tuncque emendavit optime. In eo volumine tractatus unus est, quem vocavit Com-

DANIEL BARTOLI in *L. del suono*, Venetiis 1680. 4. habet etiam icones aliquas ad organum auditus spectantes.

B. MARTIN *Diff. sur les dents*. Paris. 1679. 12. * Brevis & absque operationibus (*FAUCHARD*).

CORNELII van *DYCK* *geraamden van dieren*. Amstelod. 1680. 8. Pharmacopola, viginti sceletos satis ruditer expressit cum explanatione nullius momenti. An idem opus est, quod in *Bibl. Rivini* citatur sub nomine, *Sceletographia variorum animalium* Hagæ Com. 1682. 4.

Het pratyk der Medicynen en een korte beschryvinge van een sceleton, Amstel. 1690. 8. Autor unice se designat L. S. M. D.

In *G. BLASII* *anatomie animalium* compilatitia Amstelodami an. 1681. 8. excusa, multa sceleta & osteologica observationes habentur.

NEHEMIÆ GREW *musæum Greshamense*, Londini 1681 f. varia rariora osteologica ex homine & brutis animalibus continet.

DIONYSII PAPINI Liber de emolliendis ossibus omnino conferri meretur ad analysin & gelatinam, quæ ossæarum partium gluten est.

JOSEPHI DUVERNEYI *L. de l'organe de l'ouïe*. Paris. 1683. 12. habet *SEBASTIANI CLERICI* pulcherrimas icones organi auditus. Vide suo loco.

GUNTHERI CHRISTOPHORI SCHELHAMMERI *L. de auditu*, Leidæ 1684. 4. editus, minus anatomicus quam physicus est, & *DUVERNEYI* de tuba lapsum corrigit, adeo cæterum rudis, ut nec stapedis musculus, nec chordam tympani post tot aliorum scriptorum descriptiones reperire powerit.

In *GODOFREDI BIDLOO* *Anatome corporis humani*, Amstelodami 1685. fol. edita, multæ & nitidæ icones habentur ossium, quas in theatrum anatomicum transtulit *MANGETUS*. Veritas tamen anatomica deficit, & in universum nimis teretia & levia pinguntur.

In *RAIMUNDI VIEUSSENI* *Neurographia universali*, Lugduni 1685. fol. impressa, finis ethmoidæ aliique describuntur.

Anatome ISBRANDI van *DIEMERBROEK* eodem anno Ultrajecti edita fol. observationes aliquas rariores sparsim continet. Sic in magno *Systemate anatomico SAMUELIS COLLINI*, Londini 1685. excuso de vasis ossium aliqua reperi.

GEORG. BALTHASAR MIZGER *sciographia suturarum cranii humani, earumque usus*. Tubing. 1684. Disp. *

EJUSDEM *anatomie dentium humanorum*. ibid. 1685. *

STEPHANUS BLANCARD in sua *hervormde ontleetkonst*, Amstelodami 1686. 8. & alias edita, Latine vero an. 1688. 8. merus est compilator animadv. in *Malp. posth.* p. 321. 322.

ANDREAS SNAPE in sua equi *anatomy of a horse quæ*. Londini 1686. fol. edita est. Osteologia suspecti alias Libri fidem videtur mereri.

ANTONII de HEYDE *anatomia Myruli & observationes medicæ*. Amstel. 1686. 8. In his observationibus habentur experimenta, de modo, quo ossa fracta ranæ coaluerunt.

M. LAMI *explication de l'ame sensitive*. Paris. 1687. 12. Ad finem adnexa est descriptio auris internæ cum iconibus, *MERYI* opus, quod videtur jam an. 1677. ante *DUVERNEYUM* scriptum esse. In eo cochlea integra, liberata a cortice osseo habetur, & scalarum cochleæ ope foraminuli communicatio, & lamina spiralis semiossea, & semicartilaginea.

Anatomia Chirurgica, sive Istoria anatomica dell'ossa, e muscoli e vasi del Corpo umano di *BERNARDINO GENGA*. Rom. 1687. 8. Anatome non maximi momenti, sed observationes Chirurgicæ utiles.

Curious observations on that part of Chirurgery relating to the rectb. Londini 1687. 4. *

DOMINICI GAGLIARDI *Anatome ossium*, Romæ 1689. Leidæ 1723. 8. recusa, tota est in subtili fabrica harum partium. Sola ossa sicca contemplatur: laminas in varia genera distinxit, claviculos excogitavit, quadruplices, qui conjungerent laminas. Ossium etiam diversorum diversam fabricam persecutus est.

mentaria in GALENUM. Qui ergo cupit videre plura, quam VESALIUS dixit, videat eum, nam, cum ejus opera edita sint fere centum annis post VESALIUM, habet ex eo, & ex aliis, quidquid boni apud omnes reperit. Valde de-
ditus

Lettre ostéologique supra citata, edita Parisiis 1689. 4. continet inprimis dentium ex variis animalibus historiam. *EJUS* compendium exstat & in VERDUCI Osteologia & apud VAUGUYON *Tr. des opérations de Chirurgie*, p. 650. IDEM D. VAUGUYON habet etiam historiam foraminum Cranii p. 315. cum nonnullis rarioribus.

BERNARDINO GENGA *anatomia*, &c. Romæ 1691. fol. Paravit corpora GENGA, sermonem addidit J. M. LANCISIUS. Icones ossium novæ, nitidæ, nimis tamen teretes, & pictoriæ.

CLOPTON HAVERS *Osteologia nova*, Londini 1691. 8. a GEUDERO primum versa Ulm. 1692. 8. deinde a J. F. SCHREIBERO Latine reddita, recusa est, & nuper Londini, sermone patrio an. 1729. 4. Fabricam ossium laminatam, medullam, mucilaginis fontes & glandulas, tum compositas, tum disgregatas, & cartilaginum fabricam descripsit, per experimenta. Miras admiscuit Theorias de liene secernente mucum articulare.

DIEDERICH GOTTSCHALK *de ossium generatione & corruptione interna*. Leid. 1691. 8. Anatomie nulla est: aliqua sed neque ea maximi momenti Chirurgica habet.

M. HOFMAN *de futuris cranii*. R. Dan. Henr. MEIBOM Altd. 1691.

G. BAPTISTÆ VERDUC *nouvelle Ostéologie*. Paris. 1690. & denuo 1693. 8. *avec une dissertation sur la machine de l'homme*. Plagiarius est. Motum animale describit ex BORRELLO, icones habet ex VESALIO, COITERO. Contra hanc Osteologiam Mr. DROUIN censuram, & aliam descriptionem foraminum cranii dedit in *JOURNAL des SAVANS* 1690. n. 27.

J. FAC. RAU *de ortu & regeneratione dentium*. Leid. 1694. 4.

J. J. RAU citata disputatio recusa est in *collect. Disp. nostr.* T. VI.

J. PHIL. VERHEYEN *Corporis humani anatomie*. Lovan. 1693. 4. & auctius Bruxell. 1710. 4. In celebri compendio, quod alibi recensetur, pars non pessima est Osteologia, quæ proprias etiam de Sinubus pituitariis, & de osse sacro observationes & icones habet.

WILLIAM COWPER *Anatomy of human body*. Oxon. 1697. & Leidæ 1737. fol. magn. Tabulas priores 105. BIDLOI esse satis constat, quodcunque contra suadere tentaverit COWPERUS. In appendice sceleti propriæ icones, quæ etiam cum Myotome anno 1695. prodierant, in qua inprimis asperitates circa Epiphyses, & insertiones musculorum exprimuntur.

DAN. HENR. MEIBOM *de patella*. Franeker 1697. 4.

D. H. MEIBOM *disp. de patella etiam excusam* dedi in *collect. Disp.* T. VI.

FRID. SCHRADER *de brutorum armatura*, Helmstad. 1697. 4. describit dentes variorum animalium.

In MALPIGHII posthumis ossium fabrica subtilis describitur, dentium inprimis.

FRID. HOFMANNI *historia dentium physiologica & pathologica*. Han. 1698. 4.

EDMUNDI TYSON *Anatomy of a pigmy*. Londini 1699. 4. In elegantissimo Libro etiam Osteologia animalis, hominis simillimi, cum humana & cum Pygmæi Osteologia comparatur.

G. E. STAHL *de cornu cervi deciduo*, Hall. 1699. 4. omnino legatur ad anatomen & historiam cornuum.

De PRE' in *Journal des Savans* 1699. describit ligamenta vertebrarum.

In Monumentis Academiæ Regiæ Scientiarum plurima exstant osteologici argumenti.

PHIL. de la HIRE *de fabrica dentium* 1699.

DUVERNEY *de fabrica Medullæ* anno 1700.

REAUMUR *de Turcoide*, quam gemmam ad ossa animalium refert 1715.

EJUSDEM *de ortu testaceorum*, quæ multa cum ossibus habent communia 1716.

J. B. WINSLOW *descriptio cartilaginum semilunarium tibiæ* 1719.

EJUSDEM *de variis ossibus corporis humani*, osse palati, vertebra, costis, futuris cranii 1720. & denuo 1722. *de scapula, ossis humeri, cubiti, radii, manus, tibiæ situ, & de cranio hominis Americani.*

Altus fuit GALENO, neque facile aliis cessit; hinc omnia detorsit in sententiam GALENI, quem volebat omnia scivisse; sed hoc facile huic condonamus, propter usum, quem præstitit in anatomia ingentem. Si quis huic addat VESALIUM, optime faciet, nam RIOLANUS figuras nullas habet; hinc debet addere VESALIUM pro figuris, & RIOLANI textum legere, tum in RIOLANO, quidquid ad perfectionem studii in hoc casu desiderari potest, reperiet.

5. Hisce Auctoribus addatur exiguus Libellus Medici Regii Dn. le CLERC, editus: titulus *Ostéologie complete* anno 1706. Parisiis in octavo (a). Nullus est
X x
omnium

MORAND de ossibus narium in quadrupedibus. 1725. & Caput Hippopotami ANT. de JUSSIEU eodem anno.

SLOANE de ossibus subterraneis. 1727.

HUNAUULD observ. de ossibus cranii 1730. & aliqua 1734.

Varia EJUSDEM ad formationem ossium 1740.

DU HAMEL de ossium incremento. an. 1742. 1743.

Observatio de osse parietali crassissimo 1742.

A. FERREIN an. 1744. fuisse scripsit de articulatione, ligamentis, motu maxillæ inferioris, & eodem anno J. E. BERTIN duo ossicula, quæ in maturiori ætate cum sphenoides coalescunt, accurate prosecutus est.

ANDRÆ JUL. BOETTICHER de ossibus Dispp. III. Helmst. 1699. seqq. & de cranii ossibus anno 1718.

JOHANNIS PALFYN *beschryving van de beenderen*. Gandavi an. 1702. 8. & Leidæ 1727. 8. Auctior 80. paginis recusa, tum Germanice. Breslav. 1730. 8. & Gallice. Paris. 1731. 8. Bonus Auctor solebat per itinera colligere novas observationes anatomicas & Chirurgicas. Varia ergo hic habet Parisiis, & a RAVIO tradita. Icones pulchræ ossium cranii, in cujus etiam descriptione fusior est, in artubus imprimis brevissimus. In priori editione RAVIANAM articulationem maxillæ inferioris habet, in altera, monitus ab ALBINO, receptam sententiam restituit. Gallicam editionem Auctor, qui anno 1730. obiit, ipse ad prælum paraverat. In ea aliqua accesserunt, quæ ad observationes Chirurgicas pertinent.

JOSEPH. de la CHARRIERE *anatomie de la tête de l'homme*. Paris. 1703. 8. Ad Osteologiam tum aliqua communia de fabrica ossium pertinent, tum historia ossium capitis.

JOH. SAM. CARL. *Lapis Lydius ossium fossilium*. Francof. 1703. 8. Distinguere docet vera animalium ossa a mineralibus, quod illa alcalina volatilia principia fundant destillata.

J. SAM. CARL. *lapidis Lydii &c.* editionis Francof. alii annum habent 1704.

LOUIS LEMERY de la nourriture des os. Paris. 1704. 12. Leidæ recusa an. 1709. 8. Medullam non nutrire docet, ut supra diximus.

L. LEMERY germanice prodiit Dresd. 1711. 8.

ANTONII MARIE VALSALVA de aure humana L. Bonon. 1704. 4. tum Ultrajecti 1707. 4. & alias, & cum additamentis MORGAGNII, Venetiis 1740. 4. 2. vol. Præter organa auditus, in quibus multa minutius descripsit, etiam aliqua ad Osteologiam capitis habet, ut v. gr. foramen Mastoideum.

JOH. JOSEPH COURTIAL *nouvelles observations anatomiques sur les os*. Paris. 1705. 12. Leidæ 1709. 8. cum PETITO. Quæ ad fabricam pertinent, non maximi momenti sunt: Meliora quæ ad morbos, optimæ, quæ subjectæ sunt operi, observationes Medicæ-Chirurgicæ. Multa tamen ab aliis habet.

GE. DESHARDING de fontanella infantum. Rostoch. 1705. Disp.

R. WILH. CRAUSE de dentium sensu. Jen. 1704. Disp.

(a) LE CLERC *Chirurgie complete* Tom. II. contenant l'*Ostéologie exacte & complete*. Paris. 1706. 12. Omnino ex DUVERNEYI codicibus manuscriptis desumpta, ut monet Auctor Præf. ad PALFYNI Osteologiam Gallicæ editionis. Adeo vero crassis mistam esse erroribus, ut ibi

omnium Librorum, qui brevius inservire possit memoriæ ejus, qui priores novit. Neutiquam aptus est pro discipulis instruendis, nam caret figuris, & brevissimus est textu, sed incomparabilis est Liber ei, qui Osteologiam jam novit, nam egregie refricat memoriam. Duo vero præcipua habet ille Libellus. 1. Ubique adcuratissime nova inventa habet, ut non norim aliquid deficere, & habet emendatissime ea omnia, ita ut VESALIO, RIOLANO, COLUMBO anteposendus sit. 2. Sed alterum est egregium in eo, quod nempe designat ad apicem digiti, ubi aponeuroses seu tendines musculorum se ossibus inferunt, & hoc brevissime peragit. Nam non potest unum verbum demi, quin statim pereat totus sensus, & hoc consulo, ut non semel quis eum perlegat, sed si adcuratus sit, sæpius hoc faciat, & charta alba, si involutum habeat, pro adversario inservire poterit eorum, quæ leguntur apud Auctores.

6. Editus est similis Libellus, nempe opus PALFYNI, Lugduni Batavorum, titulo *Osteologia*, apud Vivien impressum, & antea Gandavi. Omnia etiam DUVERNEYI inventa continet, uti Dn. le CLERC.

7. Hisce addatur CLOPTON HAVERS *Osteologia nova*, Londini an. 1691. utilior autem est iis, qui linguam Anglicam norunt, nam editio, quæ translata est in linguam Latinam, hinc inde deficit, quod translator non adsequutus fuerit textum Auctoris (a).

Hi

ut ibi additur, nondum reperi. Mihi vero prima alicujus momenti Osteologia post VESALIUM visa est, qua plenissime recensentur omnes ossium foveæ, asperitates, insertiones musculorum, &c. Multa, quæ passim pro novis habentur, ibi reperies, v. gr. ascendentes partes ossis palati. Ad morbos etiam utilissimæ observationes adjiciuntur. Quantavis pretii Liber & immerito rarus.

(a) OLIGER JACOBÆUS in diss. de distinguendis cadaveribus per crania. Hafn. 1709. 4. Varia habet non vulgaria de Sururis jam in bimestri infante visis, de futuris sponte descendentibus, &c.

J. BAPTISTÆ MORGAGNI *Adversaria Anatomica*. Prima pars prodiit Bononiæ 1706. 4. Reliquæ ex ordine Patavii, ad usque annum 1719. 4. Nullam non partem anatomes attingit vir præstantissimus, neque Osteologiam inornatam reliquit, maxime in VI. *Adversario*, quo capitis habetur anatome, & narium sectio repræsentatur, & ossa spongiosa suprema constituuntur. Sed etiam ad HAVERSII glandulas, ad articulationem tibiæ ejusque cartilagine semilunares, ad meniscum & articulationem inferioris maxillæ aliasque ossium partes observationes adjecit.

JAMES DRAKE *new system of Anatomy*. Lond. 1707. 2. vol. 8. aut *Anthropologia nova* Vol. II. 1727. 2. vol. 8. 1737. 3. vol. 8. Ex COWPERO habet sceletos, anatomen narium cum nova ratione curandæ ozænæ evulso dente molari, & adacta terebra in finem Highmori, ubi mali sedes.

PHIL. BALESTRINI *l'anatomia moderna dell'osse, delle cartilagini, de' ligamenti*, Genova 1708. M. ANG. *

GUIL. COWPER *Myotomia reformata*. Londin. 1724. fol. Plurima habet ad Osteologiam, sceletos, insertiones musculorum, officula auditus, aliaque ossa per occasionem depicta.

In *Miscellaneis Berolinensibus*, quorum primus tomus anno 1710. Berolini prodiit, septimus ab a. 1743. Continuatio II. habet Clar. BUDÆI egregiam descriptionem & icones novas sinuum cranii: Continuatio IV. Ejusdem Dissertationem de modo quo ossa præternaturalia, vel concretiones ossibus similes generantur.

C. H.

Hi sunt Libelli, quibus carere non debent Medici tirones. Si hoc ordine eos legant, habebunt intra bimestre tempus, cognitionem eorum omnium, quæ Medici hæcenus de ossibus sciverunt, & si possint videre simul sceleta, jucun-

Xx 2

C. H. ERNDL in itinere *Anglico-batavo* an. 1711. edito, varia ad Ravii mentem habet de dentibus, articulatione maxillæ inferioris, carpo, &c.

PATRIK BLAIR *Osteographia Elephantina* seorsim etiam prodiit. Londini 1711. 4. Animalis vastissimi, quod in Scotia perierat, brevem anatomen, sed doctam & diligentem Osteologiam tradit Chirurgus.

Suite de la nouvelle Ostéologie, contenant un Traité de Myologie. Parisiis 1711. 12. Auctor est VERDUCIUS Chirurgus. Editor Frater J. Baptista, Medicus, qui historiolas aliquas intermiscuit. Nihil aut exquisitum, aut novum. Adjecta aliqua de ligamentis corporis humani.

D. MUSTINGERI *Diff. inaug. de articulationibus artuum.* Argentor. 1712. 4. Ex optimis, ad ligamenta, & articulationes.

CARL. FRANC. a VOLCKERSHOVE de *juncturis ossium.* Leid. 1713. 4. dentium fabricam subtilem ad RAVII nutum describit, & articulationem maxillæ inferioris Raviano more, uti simili modo descripsit D. ARDINOIS *Diff. de medicina fundamento anatomia* pag. 18.

CHRISTIANUS FOISIUS de *ossibus.* Hafn. 1714. 4.

AUG. CAROL. CUMME *dentium historia.* Helmst. 1716. 4. aliquas observationes habet.

C. N. LANGIUS in *lap. helv.* describit costas aliquot bifidas.

In GUIELMI DERHAM *physico-theology.* Lond. 1713. & sequentibus sæpe annis excusa, exstat descriptio organi auditus variorum animalium.

C. JAC. TRAW. in *Diff. inaugurali de chylosi fetus.* Altdorf. 1715. 4. aliqua de ossibus sesamoideis rarioribus habet, quibus etiam usus est HEISTERUS.

In GOUY *Chirurgien véritable* habentur ejus nova inventa sur l'*Ostéologie & la Myologie.* Rotomagi 1716. 8.

GOUY nova nomina aliqua habet. Articulationem femoris synneuroen arthrodialem, in humero synneuroarthrodialem vocat, &c.

AUGUST. CARL. GEORG. CUMME *dentium historia,* Helmstad. 1716. 4.

WAGRET in *obss. de médecine & de chirurgie,* Paris 1717. 8. habet longissimam digressionem de ossibus.

S. REININGER de *cavitatibus ossium cranii* scriptum est J. H. SCHULZII.

DAVID HERMAN *Tabula osteologica* BUDISSIN 1717. 4. Foveas inprimis & depressiones ossium diligenter enumerat.

HERMAN *Tabula osteologica* cum spurio titulo CHRISTIANI HEISTER *anatomia succincta corporis humani,* Freybergæ 1726. 4. recusæ sunt.

JACOBI MANGET *Theatrum Anatomicum* habet ad ossa icones BIDLOI.

J. SALZMAN & REISSEISEN de *articulationibus analogis* (sive post fracturam nascentibus). Argent. 1718. 4.

MICH. BERNARDI VALENTINI *Amphitheatrum Zootomicum.* Francof. 1719. & 1742. fol. præter sceletos & dissectiones animalium habet inprimis appendicem, in quam receptus est lectionum J. JAC. RAVII codex eo anno notatus, quo Auctor obiit (p. 114.): cujus pars de ossibus agit, minime certe inutilis.

SCHMIDT de *periosteo ossiculorum auditus.* Leid. 1719. 4. Satis rudes habet figuras variorum in iis ossiculis.

ARENT CANT *impetus anatomici primi.* Leid. 1721. fol. Juvenis primi conatus: icones propria Auctoris manu pictæ. Sexta tabula varia habet huc pertinentia, iconum processus longissimi mallei: ossis palati integri, articulationes aliquas.

In ANTONII van LEEUWENHOEK epistolis, variis & sparsis locis anatome ossium traditur. Plerosque ex *Transactionibus Philosophicis* citavimus.

J. DOMINICI SANCTORINI *Observationes anatomica.* Venet. 1723. 4. multa habent ad

jucundissime & optime omnia brevi cognoscent, quæ hîc requiruntur, hinc si quis sibi proponeret intra paucas septimanas Osteologiam omnino cognoscere, quotidie deberet tantum binas horas impendere in hisce Aucto-

ad foramina cranii, ossa vomeris, palati, spongiosa, laryngis subtilem dissectionem; &c.

SEBAST. REININGER *de cavitatibus ossium cranii*. Altdorf. 1722. 4. Describit ad naturam sinus maxime ethmoideos & alia minime inutilia.

LUD. PH. THUMMIG *versuch einer gründlichen erläuterung*, &c. Hall. 1723. Habet etiam de succi ossei motu secundum longitudinem fibrarum, circulatione sanguinis per ossa, &c.

In BERNHARDI SIEGFRIDI ALBINI *Indice suppellectilis Raviana*, Leid. 1725. 8. maxima pars de ossibus agit, quorum multæ rariores mensuræ & formæ hic describuntur.

EJUSDEM *de ossibus corporis humani* L. Leid. 1726. 8. recusus Viennæ 1746. 8. Purissima & Celsiana dictio, descriptiones quasi picturæ sunt ossium. Artus inprimis, male vulgo neglecti, & thorax hic sollicitè describuntur & telilogiæ adduntur.

WIL. CHESELDEN *Anatomy of human body*. Lond. 1726. 8. & 1741. 8. In prioribus editionibus satis adhuc rudes icones ossium, in posteriori valde nitidæ habentur, & multæ explicationes & observationes de causa fabricæ.

In *Actis Literariis Suecicis* an. 1726. aliqua Osteologica exstant de ossibus sesamoideis rarioribus.

CL. a DEVENTER in *posthumo* L. *de ossium morbis* aliqua ad fabricam habet. Medullam valde dolere punctam expertus est.

In *actis Petropolitanis*, quorum X. Tomus nunc editus est, bonæ habentur CL. WEITBRECHT de ossibus carpi, metacarpi, costis, sterni, &c. in Tom. V. observationes, & eximia Osteologia Cameli Bactriani in X.

D. PETSCHKE *sylloge observationum anatomicarum*. Hall. 1727. 4.

HENRICI FAUCHART *Chirurgien dentiste*. Paris. 1728. & 1746. 8. 2. vol. Plurima habet ad dentium rariora, & repositi dentis facile comprehensi historiam, &c.

D. LOESCHER *de dentibus sapientia eorumque morbis*. VVittemb. 1728. Disp.

AUG. FRID. WALTHERI *de articulis & ligamentis pedis*. Lips. 1729. 4. cum iconibus ligamentorum. Supplementum adjecit an. 1731. 4. ibid.

JEAN BAGET *Ostéologie, Premier Traité*. Paris. 1731. 12. Prima tantum pars hujus operis videtur lucem vidisse, qua Osteologia sicca continetur. Etsi pro tironibus unice scriptum esse legam in *Journal des Savans*, non tamen credo id nos judicium sequi debere. Diligenter certe ossium eminentias, foveolas, confinia describit. Paradoxus tamen, qui v. gr. Ossibus etiam cranii articulationes veras tribuat, nec absque vitiis, cum os sphenoides ad articulationem maxillæ inferioris processum dicat mittere.

Ecole de Cavalerie, contenant l'Ostéologie, &c. par de la GUERINIERE. Paris. 1731. 12.*

ALEXANDRI MONROO *Anatomy of human bones*. Edinburg an. 1732. 8. (& prius 1726. & nuper 1741.) Egregius labor, ad capitis historiam, ad articulationes, ad varietates, ad vasa & membranas ossium recentium, non adeo ad artus. Editio 1731. priori melior est, nupera nihil auctior.

In *examen de divers points d'Anatomie, de Chirurgie...* Paris. 1725. 12. & in *Diff. au sujet du Livre sur les maladies des os*. Paris. 1726. 12. minutius multa in PETITO carpuntur, & defenditur articulatio maxillæ inferioris cum tuberculo ossis temporum.

JACQUES BENIGNE WINSLOW *Exposition Anatomique*. Paris. 1732. 4. & 12. nuper emendatior Amstelod. 1743. 12. 4. vol. Primus Tomus eximiam habet Osteologiam, in qua inprimis pars posterior sive recentium ossium descriptio, & cartilaginum, & ligamentorum, ab ipso retro RIOLANO fere a nemine tacta, ab Auctore vero nostro perfectioni proxima reddita est.

In J. ADAMI KULMI *anatomici tabulis*. Lips. 1732. 8. & alias editis passim etiam ligamenta subjiciuntur ossium descriptioni.

Auctoribus, & bis in septimana adire theatrum anatomicum publicum, colligendo & conferendo ibi in sceletis ea quæ legit, & in memoriam revocare, an invenire possit, quod legit, & hoc modo brevi haberet scientiam perfe-

MATTHIÆ SAS de partibus manducationi inservientibus, Harderovic. 1743. 4.

CAROLI PAYEN, estne eadem in ossibus quam in aliis partibus nutritionis ratio? Paris. 1736. 4.

W. CHESELDEN *Osteographia* in titulo annum præfert 1733. licet tabulæ diu antea confectæ fuerint. Splendidissimus certe Liber, iconibus ad naturam ope lucernæ magicæ paratis, copiosis, amplissimis, egregie sculptis, ornatur etiam sceletis animalium nitidissimis, & figuris Ossium morbosorum. Plurimæ etiam observationes mechanicæ & teliologicæ interspersæ sunt. Ligamenta etiam aliqua pinxit.

Contra hunc Librum JOHANNES DOUGLAS anno 1735. 8. edidit Londini Libellum Satyricum cum titulo *Remarks on a late pompous work*, quo ejus vitia, sunt enim non pauca, produntur. Nam descriptiones fere nullæ, icones etiam non satis anatomicæ, & in minutiis vitiosæ sunt, ut in ossibus, quæ caput componunt, & in historia anatomes non exigui errores hæserunt, cum v. gr. credat CHESELDENIUS alios Anatomicos ossa maxillæ superioris pro uno osse habuisse.

Cæterum in DOUGLASSII Libello proponitur editio Osteologiæ a fratre ipsius JACOBO edendæ, cujus jactura eo tristior est, quo major hujus viri ardor, & quo ampliora subsidia fuerant, quibus suffultus anatomen ornabat. Vidi ipse apud virum humanissimum sceletos recentes in muria conservatos, flexiles, ossa humana infinitis modis secta & divisa, figuras copiosissimas ossium & ligamentorum. Regia etiam liberalitate 500. annuarum Librarum sublevabatur in conatibus (vide ipsius DOUGLASSII verba post L. de lilio *sarniensis*.) Sed dilapsus ad amorem humaniorum Literarum, subitoque ereptus est rebus humanis, neque quidquam præter descriptionem patellæ reliquit, parvo in fol. vol. editam, qua invitissimus careo.

In Edinburgensis Societatis Actis, quæ an. 1733. prodire cœperunt, multa huc pertinentia exstant, maxime AL. MONROI de articulatione maxillæ inferioris observationes. In I. Tom. etiam de robore ossium calculus habetur.

In FRIDERICI RUYSCHII, an. 1733. mortui, operibus plurima sparsis locis non ad Osteogeniam solam, sed ad vasa, membranas, medullam, morbos ossium pertinentia reperiuntur. Infecta quæ in mediis ossibus reperit, sunt scarabeoli, inimicissimi præparationibus anatomicis, quorum vermes hujusmodi hirsutas exuvias relinquunt. Diploen esse in tibia inter medias duas tabulas passim docuit & Thes. VIII. n. 8.

GEORGII THOMSON *Anatomy of human bones*. London. 1734. 8. In tractatu de ossibus plerumque ipsa WINSLOWI verba exscribit.

JEAN PALFYN *Anatomie Chirurgicale augmentée & refondue par M. BOUDON*. Paris. 1734. 8. In secundo tomo Osteologia habetur, cum iconibus ex Osteologia PALFYNII, & descriptione fere ad WINSLOWUM imitata.

JOH. FRIDERICUS CASSEBOHM in Libellis *de aure humana*, qui an. 1734. & sequentibus prodierunt, præter organa auditus etiam os temporum ex adulto, ex fetu, & ex monstro descripsit, magna, ut solebat, diligentia.

A. OTTOM. GOELICKE *de ossium structura & usu*, Francof. Viadr. 1735. 4.

M. ALBERTI *de dentibus serotinis*, Hall. 1737. 4.

ANDRÆ OORTMAN disp. *de dentibus*, Ultrajecti 1738. 4.

De ROBERTI NESBIT & B. S. ALBINI Osteogenia diximus.

In postrema parte Ichthyographiæ ARTEDIANÆ, quæ Leidæ an. 1738. prodit 8. etiam Osteologia piscium egregia habetur.

GOTTLIEB METII *de construendo scelero*. Disp. Erford. 1736. 4.

J. ZACH. PLATNER *de ossium epiphysibus*. Disp. Lips. 1736. 4.

J. LUD. PETIT in L. *de morbis ossium*. Paris. an. 1705. 8. & 1736. 12. tertio recuso multa passim utilia ad ossium fabricam adpersit.

perfectissimam eorum, quæ hætenus haberi possunt pro morbis ossium a Chirurgis & Medicis; dico eorum, quæ hætenus haberi possunt, nam scopus hoc tantum est, omnia, quæ hætenus nota sunt, demonstrare, & viam indicare, quo modo ea acquirenda sint; de iis autem, quæ postea invenientur

tur

GERAUDLY *art de conserver les dents*. Paris. 1737. *

KNOLLE *de luxationibus artuum superiorum*. Disp. Argent. 1738. 4. Anatomen etiam habet & ligamenta.

M. VERDIER (Chirurgi Parisini) *Abregé de l'anatomie du corps humain*. Paris. 1739. 8. 2. vol. Fere WINSLOWUM in compendium redegit. Germanice etiam versus exstat.

J. H. SCHULZE *de consideratione ossium recentium utili & necessaria resp.* CAR. WILH. KOLBE, Hall. 1739. 4.

B. S. ALBINI *Tabulæ ossium corporis humani*. Tres sceleti icones hætenus vidi pulcherrimas, ut omnia solent, quæ ab eo Viro profecta sunt. Sequuntur, ut audio, reliqua ossa singulatim.

In NIC. ROSEN *beskrifning of hela människan cropp*. Stokh. 1738. 8. Osteologia varias utiles observationes habet.

ABRAHAM KAAU de modo, quo periosteum se ad articulationes habet, egit in L. *de perspir.* n. 856. &c. & alibi de ossibus utiliter meruit.

J. E. HEBENSTREIT *de dentitione secunda juniorum*. Lips. 1738. 4. cum iconibus.

IDEM *de ossium diploe* jam laudatus est.

IDEM *de basi calvaria* describit foramen vicinum meatui auditorio interno, in duas quasi cameras divisum, quarum altera cum aquæductus fissura conspirat.

IDEM *de capitonibus difficili partu nascentibus*. Lips. 1743. 4.

Inter icones anatomicas, quas ADMIRALITUS edidit an. 1738. & seq. est etiam icon capsulæ articulationis femoris, duæque figuræ valorum duræ Meningis, sive periosteii interni crani.

UNGEBUR de ossium trunci corporis humani Epiphysibus. Lips. 1739. 4.

J. A. UNGEBUR disp. recusam dedi in collect. Disp. Vol. VI.

J. B. MORGAGNI editio Operum A. M. VALSALVÆ. Venet. 1740. 4. 2. vol. Undecim Epistolæ ad Tr. de aure humana pertinent, quibus ossæ minutia hujus organidescribuntur, & historia inventorum suppeditatur.

JOH. FAC. GRAMBS *Osteologische tabellen*. Francofurt. 1740. 8. Compendium tabulare.

D. PITSCHER de *Axungia articularum*. Lips. 1740. 4. Disp. Continet multa ad glandulas Haversii.

GIUSEPPE LARINI Tr. *sopra le qualità de' denti, e'l modo di cavarli*, &c. Firenze 1740. 4. Aliquas in radicibus dentium varietates habet, quas nimis urget & extollit.

J. THEOD. KLEIN *historia piscium missus*. I. Gedan. 1740. 4. Continet descriptionem organi auditus piscium & lapillorum, quos habet pro ossiculis ad auditum pertinentibus.

LAURENTII HEISTERI *Compendium anatomicum* ultimo an. 1741. editum Norimbergæ 8. ab Osteologia etiam incipit, iconesque habet aliquas ossiculorum sesamoideorum rariorum, &c. Ductum incisivum recte negat apertum esse.

C. A. a BERGEN de *methodo ossa crani diffuendi*. Francof. Od. 1741. 4. Machinam ad eum scopum invenit.

JOSIÆ WEITBRECHT *Syndesmologia*. Petropol. 1742. 4. Eximii laboris Opus, quo solo icones habentur omnium in corpore humano ligamentorum, & descriptiones ad naturam factæ.

In D. LIEUTAUD *Essais Anatomiques*, quæ anno 1742. Parisiis prodierunt, Osteologiæ compendium minime malum habetur, ut viri, qui 1200. cadavera secuerit, cum administratione organi auditus, &c.

CL. HUNAULD in dissertatione *de anchylosi* edita 1742. describit ligamenta intervertebralia.

CL. HENSING de *Apophysibus*. Giesl. 1742. 4. Docta Disputatio.

HEN-

tur adhuc sermo hic non est. Absolvi pensum illud de studio anatomiae ad-
discendo de ossibus.

HENSING disp. recusam dedi in collect. mea Tom. VI.

D. FISCHER de modo quo ossa se accomodant partibus. Leid. 1743. 4. cum iconibus cra-
niorum ex variis gentibus barbaris.

NICOLAI ROSEN de ossibus calvariae P. I. Upsal. 1746. 4.

AUGUSTI SCHAAKSCHMIDT Tabula Osteologica. Berolin. 1746. 8. compendii loco in-
servire possunt, & muscutorum etiam insertiones indicatas habent.

J. FRID. CRELL Disp. de ossibus sesamoideis. Helmst. 1747. 4.

J. F. CRELL in programme etiam anno 1742. edito peculiarem canalem pro carotide a
processibus clinodeis factum & alias varietates describit.

THOMAS SCHWENKE in perpulchra hamatologia Hagæ 1743. 8. edita, ligamenti tere-
tis femoris novam descriptionem dedit.

In syllabo partium corporis humani Petropoli ante paucos annos edito multæ peculiares
habentur & propriæ ossium imagines.

BUNON in Essai d'Odontechne. Paris. 1743. 8. & in expériences & démonstrations. Paris.
1746. 8. varia adtulit de modo quo dentes secundarii priores expellunt: quo radices con-
sumuntur: quo eroduntur in ipsis alveolis suis: de dentium radicibus, crassitie partis
vitreae, septo alveolorum, &c.

CL. LANGGUTH de luxatione patella, ligamentum a muscutorum tendine distinxit, quod
exterior est.

Cranium enormiter crassum descripsit CL. SCHAAKSCHMIDT in nupero Tomo VI. Berli-
ner Nachrichten.

B. D. MAUCHART in Diss. de articulatione capitis cum prima vertebra, & in ea de la-
xatione Nuche. Tubingæ an. 1747. habitis, multa in iis ligamentis correxit & noviter
invenit, & de motu capitis erudite disputavit.

BERNHARDI JELGERSMA de dentibus, Leidæ 1747. 4.

MATTHÆI BAZZANI de artificio ossium per radicem rubia colorandorum Comm. Bonon. T.
II. p. 124.

HIERONYMI LUDOLF de mirabili fabrica articulationis maxilla inferioris cum ossibus tem-
porum, Erfurt. 1749. 4. Pro nostra sententia.

GOTTFRIED WILHELM MÜLLER vier und zwanzig kupfer tafeln vvelche die knochen
des ganzen menschlichen körpers vorstellen, Francof. 1749. 4. Præter tabulas CASSERII et-
iam suas habet fetuum, ossis sphenoidi, orbitalium, cavitatis narium, vomeris, ossis pa-
lati & aliorum.

Multa CL. DAUBENTON habet ad sceleta, inprimis morbosa in T. III. descr. du Cab.
du Roi.

CAROLI ERN. AUGUSTI LOSSAU de optima ossium in sceleto artificiose jungendorum ratio-
ne, Erfurt. 1749. 4. bona disp.

Inter expectata opera sunt JOSEPHI EXUPERII BERTIN Osteologia, cujus primam par-
tem, quæ capitis continebit ossa, eximia curiositate descriptam possideo. Plurima bona
tristissimus morbus hujus Anatomici nobis invidet.

C. JAC. TREWII splendida tabulæ Osteologicae sculptæ totæ, dudum & avide exspe-
ctantur. Inter meas icones, si mea licet citare, icon ossium narium non mala exstat.

DE MUSCULIS CORPORIS HUMANI.

C A P U T I.

De Myologia.

ORdo nunc exigit, ut futurus Medicus addiscat omnia, quæ spectant musculos, & hæc pars anatomicæ scientiæ vocatur *Myologia*. Nempe græcè *mūs* est *mus*, notaverunt etiam Latini hoc nomine animalculum quadrupes, & ab hoc nomine vocaverunt *musculos*, eas partes, quas alii anatomici vocarunt lacertos carneos.

Nomen hoc musculis dederunt, quia musculus cum tendinibus suis separatim non absurde formam muris exhibet, nam brevis tendo est, quasi caput, tum est pars carnosa eminens, quasi corpus repræsentans, & cauda repræsentatur per tendinem longiorem.

Ex hac nunc vocis origine diviserunt medici musculum, nempe dixerunt, est mus, hinc habet caput, hoc nomine intelligebant brevior tendinem, habet corpus, hoc nomine intelligebant partem carnosam eminentem, & habet caudam, seu tendinem longiorem.

Omnia consilia ad studium anatomicum dirigendum, quatenus musculos spectat, dividuntur in duas partes. 1. In *Myologiam* seu *Myographiam*, hoc est, descriptionem omnium eorum, quæ pertinent ad historiam musculorum. 2. In *Myotomiam*, illa est descriptio adcurata ordinis & modi, quo cadavera debent tractari, ut musculi non turbati possint reddi conspicui.

C A P U T II.

De Myographia.

PRima pars myographiæ, hoc est, descriptionis omnium eorum, quæ pertinent ad musculos, docet musculorum materiem.

Illæ materies est primo arteria, deinde nervus, tum lymphatica vasa, quæ sæpe voco arteriosa & venosa, porro tendines, & pinguedo cum suis vasis, tandem membranæ. Hæc considerantur ut materies constituens musculum. Arteria in musculis dividitur, uti alibi in corpore, in sanguiferas & lymphaticas, & forte etiam in spirituosas. Ut rem ita dicam, uti se habet, arteriæ plurimæ ad musculos feruntur, dividuntur in ramos, sunt tum ubique venæ, quibus occurrunt, & in quas abeunt. Sed alii rami arteriarum abeunt in lymphatica vasa arteriosa, & forte ad eorum fines sunt etiam tandem spirituosæ arteriæ; ut enim id suspicer, rationes plurimæ sunt, quæ me hoc credere instigant. Ubi nempe in cerebro sunt arteriæ ultimæ, quæ spiritus ferunt, si nunc ubique ad ultimum tubulum arteriosum oriatur canaliculus, qui tam tenuis est, ut unice liquidum ferat tam tenue ac spiritus

ritus est, etsi hujus modi canalis nunquam detegatur, (nam sunt plures rationes, quæ instigant, ut hoc adferamus), tunc arteria ista erit vas spirituosum, & venæ erunt etiam spirituosæ, quæ arteriæ respondeant (a).

Nervi etiam ad musculos veniunt, & fibrillæ eorum junguntur cum aliis fibris; unde oritur structura musculi nervosa. Pinguedinosa vasa adsunt, quæ inter fibras carneas inferuntur, uti medulla inter lamellas osseas, & idem utrobique usus est, nempe, cum moveantur inter se mutuo fibræ, possunt atteri & ex parte exficari. Sed exprimitur pinguedo, dum motus exercetur, ut defendantur fibræ ab attritu, & motus facilitetur. Inter has fibras decurrunt membranæ, quæ fiunt ex vasculis minimis intertextis, & reliqua, quæ in musculo sunt, vocantur fibræ, quæ tantum sunt ultima vasa recta & minima.

De structura hac enarrata musculorum legendi sunt sequentes Auctores (b).

Y y

I. RI-

(a) Ita credo intelligendum esse PRÆCEPTOREM, & hic, & in *Institutionum Medicarum* n. CCCIII. ut arteriæ spirituosæ sint arteriæ minimæ. Nam veros spiritus motores in musculis parari, & experimento, & ipsi BOERHAAVIUS testatissimæ menti omnino adversatur. Confer CCCC. CCCCII. CCCCIII.

(b) Fabrica musculorum veteribus omnino ignota fuit. Carnem enim pro parenchymate habuerunt, circumfuso fibris, quas ipsas efficeret nervus, ex principio musculi divisus, in fine iterum collectus in tendinem. Cæterum GALENUS in L. II. de motu musculorum dudum minime mala experimenta dederat, quibus & antagonismi naturam, & nervorum in movendis musculis efficaciam demonstravit. In fabrica omnino in aliena abiit. Liber etiam spurius exstat de motibus manifestis & obscuris.

GALENI lib. de motu musculorum exstat etiam a JOH. CANAPE versus Paris. 1541. 4. Eos libros citat GALENUS in Lib. de propriis scriptis.

JAC. FONTANI responsio ad disp. SEPILLONII de motu musculorum, Avenione 1603. 8. *

HIERONYMUS FABRICIUS ab AQUAPENDENTE scripsit unum de motu locali animalium L. Patav. 1618. 4. quo hominis gressus, & femoris musculosa vis, & animalium, inprimis vero avium, modus quo corpora transferuntur, satis bene describitur. Sed altero inprimis Libro de musculi artificio, Vicetiae 1614. 4. edito, multos veterum errores refutavit, & inprimis ostendit, fibras musculares non oriri a ligamento, uti GALENO visum, neque nervos unice in principium musculi se immittere, verum tendinem esse, qui ab osse oritur, in fibras abeat laxatus, & in tendinem alterum iterum contrahatur.

J. D. HORSTII de natura motus animalis & voluntarii exercitatio singularis. Gieff. 1617. 4. *

FRANCISCI ANTONII CASERTÆ de natura & symptomatibus motus animalis, Neapoli 1620. 4. vacuus omnino fructu Liber est.

RENATUS CARTESIUS in Libro de homine a FLORENTIO SCHUYL Leidæ an. 1662. 4. a LUDOVICO vero de la FORGE plenius anno 1677. 4. Amstelodami edito, habet theoriam motus muscularis cum gratuitis valvulosis ductibus communicantibus inter antagonistas musculos.

GUALTHERUS CHARLETON in history of nutrition life and animal motion. Lond. 1659. 4. & in exerc. phys. anat. de Oeconomia animali. Leidæ 1659. 12. etiam de motu musculari Libellum habet, cum aliquo matheseos usu & observationibus teleologicis.

D. CROONE Libellum exiguum de ratione motus musculorum edidit, Londini 1664. 4. quem Belgæ cum editione VVillifiani de cerebro Libri an. 1664. recuderunt, tum an. 1667. 12. ut lego, etiam auctiorem, neque enim ipse vidi. Aliqua mathematica habet, ut augmentum virium natum ex majori tumore musculi, quam est moti ossis circa hypomochlion iter. Cæterum nihil invenit in fabrica musculi, & falsam attulit hypothesin motus nempe originem esse a stagnante & rarefacto in fibrarum intervallis nerveo cum sanguine liquido. Ejusdem viri lego an 1695. prodiisse an hypothesis of the structure of a muscle and the reason of its contraction, eundemque in Phil. Collections n. II. suas de musculis observationes retractasse & correxisse: sed ea legisse non contigit.

CROO-

1. RICHARDUS LOWERUS (a) in Tractatu suo *de corde*. Primus enim fere ideam dedit claram, quam ratione omnis fibra carnosae abiret in unam fibram tendinosam & carnosam, & tendines suos partibus adpositis semper adfixos haberet, quod nemo ante eum æque exacte fecerat.

2. Videndus super hac re pariter GUILLIELMUS COWPERUS (b), Anatomicus Britannus. Edidit Libellum in 8. Londini an. 1694. Anglico idiomate, in cujus præfatione de structura ultimorum musculorum plura egregia habet.

3. Huic addatur HENRICUS RIDLEIUS, pariter Britannus. Edidit

CROONE *de ratione motus muscularis* Belgicam editionem anno 1667. quam auctiorem esse legeram, nunc video, non auctiorem esse, nisi epistola & nomine CROONII.

JOH. CONRADI STETTERI Oppenheimensis *Censura argumentorum GALENI de motu musculorum*. Francof. 1665. 8. Inutilis Auctor, qui animam ait non musculorum ope sed absque medio ossa movere.

In Phil. Transactionibus varia huc pertinentia habentur inprimis.

JACOB KEIL de viribus cordis n. 361.

De iisdem JURIN n. 358. 359.

In EPHEMERIDIBUS NATURÆ CURIOSORUM JOHANNES CHRISTOPHORUS STURMIUS Borelliana theoremata experimentis, ad imitationem naturæ captis, confirmavit, quæ exstant in *Decuria* II. Ann. II. III. V.

N. STENONIS in *Tr. de muscul. & gland.* p. 14. carnem a fibris minime differre ostendit, fabricam etiam musculi in universum, tum cordis, linguæ, musculorum respirationi servientium describere est adgressus. Idem in *Elementorum Myologiae specimine*, Florentiæ 1667. 4. & Amstelodami 1669. 8. edito, inprimis compositionem musculorum demonstravit, qua nempe ratione fibræ carneæ in tendinem vel continuarentur, vel inferrentur ad angulos obliquos, quos musculos dixit *pennatos*, vel in multos lacertos ordinatæ in unum tendinem consentirent. Theoriam etiam ad explicationem motus musculorum obtulit, qua in mutatione angulorum fibrarum omne arcanum intumescentiæ musculorum poni credidit. Verum dudum demonstratum est, non posse obliquangula parallelogramma in quadrata abire aut rectangula, quin vera materies accedat, qua eæ areæ repleantur. Plurima pulchra ad anatonem comparatam eo Libro continentur. Cæterum utique in præparatione musculorum exercitatus, duo corda coctione præparata, ut fibrarum decursus appareret, F. RUYSCHIO dono dedit. *Catal. Mus. rarior.* p. 181.

(a) RICHARDUS LOWER in *L. de corde*, Londini 1669. 8. edito, pennatos etiam & compositos musculos describit, absque theoria. Fabricam cordis, sed vulgo nunc emendatam, ibidem proposuit.

(b) GUILLIELMUS COWPER in myologicis inprimis scalpellum & ingenium exercuit. Et primo in *Myotomia reformata*, quæ in 8. an. 1694. Lond. prodiit, sed uberior est cum eodem nomine editio, quam ex posthumis schedis edidit vir ornatissime doctus RICHARDUS MEAD. Huic præfixit CL. HENRICUS PEMBERTON *Introductionem ad motus muscularis rationem*, qua plurima in BORELLIANIS calculis carpuntur, aliqui etiam casus considerantur, ab eo viro omissi, & causa hujus actionis in dubio relinquitur.

Idem denique COWPERUS in *Anthropographia* sua, jam citata fabricam musculorum, & actionem leviter tangit, & in illa quidem cellulosa telam lacertis interjectam sibi passus est imponere. Omitto propriam theoriam COWPERI, qui a pondere sanguinis musculus distendi credidit.

RICHARDI BOULTON *Tr. of the reason of muscular motion*, Londin. 1697. 12. Explicavit motum musculi a spiritu copiosius veniente ad glandulas quasdam fibris vicinas, & cum fibris communicantes, inde in fibras erumpente quas distendat, quia plus advenit, quam venæ revehunt.

(a) H.

dit Libellum in 8. quem vocat *anatomiam cerebri* (a), in eo ibidem habet
 Y y 2 caput

(a) H. RIDLEY in *cerebri anatome*, quam alibi laudabimus, theoriam dat fabricæ motusque musculorum a BOERHAAVIANA non valde diversam.

ANTONII DEIDIER de *motu musculorum* Diff. defensa Monspeli an. 1699. Refutat VVilifianam theoriam.

JOHANNES BERNOULLIUS de *musculorum motu* an. 1694. Groningæ disputationem edidit, quæ sæpe recusa fuit, & a P. A. MICHELLOTTO cum commentario suo subjecta Operi de *separatione humorum*. Theoriam causæ motus muscularis temporibus tribuo, sed mensuram contractionis fibræ, mensuram elevationum a datis dilatationibus vesiculæ muscularis definitam gratus adgnosco. Sed idem MICHELLOTTUS in *apologia* pro BERNOULLIO, Venet. 1727. edita 4. cum rarioris morbi uteri historia & *appendice apologia* A. E. 1728. p. 518. demonstravit, BERNOULLIUM fibræ motricis inflatæ curvaturam recte demonstrasse, & PEMBERTONI (RICHARDUM vocat MEAD editorem) objectionibus continuo dictis respondit.

G. BAGLIVI pauca habet de carne Leonina, vi contractili fibræ, &c.

JOHANNES ASTRUC in *Diff. de motu musculari*, Monspel. 1710. 12. & in *MANGETI Theatro*, suas de motu musculari cogitationes proposuit, vim nimiam ventriculi a PITCHARNIO receptam refutavit, circularem fibram negavit constringi, experimentum Stenonianum explicavit unice ex compressis arteriis medullæ spinalis: theoriam dedit motus muscularis, a spiritibus vesiculam inflantibus, a quibus magnum sequatur virium compendium, & majus robur requiri posuit ad motum minorem, quam pro earatione sequeretur ad motum majorem requiri, sic compendium fieri jacturæ spirituum.

ANTONIUS van LEEUWENHOEK in omnibus operibus, & in *Transactionibus Philosophicis* innumeris locis n. 252. 293. 334. 336. 339. 367. 368. , &c. fabricam musculorum descripsit, ex variis animalibus, a balæna ad pulicem, & lacertos ex fibris, has ex minoribus constare filis, cellulositatem interponi singulis lacertis docuit, aliaque.

JACOBUS KEIL in *tentaminum* anno 1708. 8. editorum eo, quo motum muscularem explicat, theoriam novam dedit causæ, quæ inflat agentem muscolum, desumptam ab aere rum-pente bullas sanguinis, & vesiculam muscularem inflante. Vesicularum catenam recipit, contractionem minorem esse tertia parte longitudinis demonstrat, quod experimento manifesto repugnat.

JOHANNES GOTTSCHED in *Diff. de motu musculorum*, Regiom. an. 1715. proposita, Mathesin ad explicandum eum motum adhibuit, & probabilem sententiam confirmavit, a sola nempe inflatione fibræ explicari posse.

D. BERTRAND in *Trivultino Diario* an. 1712. m. April. edito theoriam suam de motu musculari proposuit, contractionem nempe esse naturalem actionem musculi, relaxationem statum violentum, in quo spiritus & sanguis muscolum subeant, antagonistam vero contrahi suo robore absque spiritibus relaxato adversari, & in contractione vesiculas super se replicari, &c. In multis PERRALTUM sequitur.

JOHANNES TABOR in *exercitationibus Medicis*, quas, Londini an. 1724. 8. edidit, motum muscularem de integro consideravit. Vesiculas refutavit, cylindricas fistulas recepit, Contractionem a malo experimento nimis parvam definivit. Motum cordis ejusque vim a resistentia valvularum Aortæ facile definienda æstimavit.

DANIEL BERNOULLI in *Actorum Petropolitanorum* Vol. I. theoriam motus muscularis dedit, cujus vim deducit a nervis annularibus cylindricam fibram strangulantibus, ut in vesiculas mutetur. Contractionis magnitudinem ex subtili experimento denuo æstimavit.

AUGUSTINI BUDDÆI de *musculorum actione & antagonismo*. Leidæ 1721. 4.

B. ROBINSON in *œconomia animali* etiam musculi actionem breviter attigit, & ad vibrationes elastici ætheris reduxit, tendinem parum sensilem esse, & irritatum parum mutari experimento confirmavit.

JOH. POLENUS in *fasciculo Epistolarum mathematicarum*, Patavii 1729. 4. editarum unam habet, qua demonstrat recte æstimasse JOHANNEM BERNOULLIUM, duplicem, aut multiplicem elevationem ope fibræ factam minorem quam duplicem, vel æque multiplicem inflationem musculi requirere.

B. BER-

caput de musculari motione, in quo plurima egregia supra eadem docet.

Hi

D. BERTIER in Actis Burdigalensibus, ubi de respiratione agit, spiritus animales negat, musculi inflationem a sanguine explicat, retento in arteria a nervo constricta, &c.

M. ALBERTI theoria generalis partium solidarum corporis humani, Hall. 1730. 4.

BROWNE LANGRISCH in newv. essay on muscular motion founded on experiments and Newtonian Philosophy, Londini 1733. 8. explicavit muscularem motum a spiritibus æthereis augmentibus vim contractilem elementorum fibræ carneæ, ut in se ipsa retracta reduplicentur, ab arterioso autem sanguine & ab antagonista musculo in priorem statum restituantur. Aortæ ligaturam musculos resolvere docuit, non ita peculiaris alicujus arteriæ.

IDEM vir Clar. in Croonian lectures on muscular motion, quæ pro supplemento adjectæ sunt Transf. Philos. n. 1747. eandem hypothesein ornavit, & subjecit aliqua de corde experimenta.

A. OTT. GOELIKE de tendinis structura & usu, Francof. ad Viadr. 1734. Disp.

BERNARDUS SIEGFRIED ALBINUS in historia musculorum hominis fabricam simpliciter & vere descripsit, quatenus humana industria & vero experimento potest erui.

FRIDERICUS WINTER in celeberrima Leidensi Academia nunc Medicinæ Professor, in inaugurali specimine de motu musculorum, Leidæ 1736. edito, & in collectione nostra recuso vol. III. mensuram contractionis muscularis correxit, ampliorem fecit, theorias non firmas ab ejus explanatione removit, simplicissimam ipse dedit, quam & ego, sed ejus opusculo non viso proposui.

ALEXANDRI STUART Diff. de structura & motu musculari. Lond. 1738. 8. Pretium retulit ab Academia Burdigalensi. Habet aliqua a Boerhaavio: habet etiam experimenta in nervis, & in vivis animalibus capta, musculos convelli, irritata medulla spinali, nervum non esse elasticum. Sed vesiculæ musculares, vis elastica sanguinis, motus musculorum compositus ex dilatatione arteriosa sanguinea, & nervea, & ex systole elastica vesicularum, ea omnia in sola theoria fundantur. Ejusdem Libri quasi compendium pro appendice vol. XI. Transact. Philosoph. recusum est.

ALEX. STUART, cujus dissertationem de structura & motu musculari recensuimus, jam anno 1711. 4. Leidæ de eadem materia disputaverat.

J. B. WINSLOW de motu musculari aliqua habet Mémoires de l'Acad. 1720. & in BORELLUM dixit in Comment. Acad. Scient. an. 1738. & contra pro BORELLO in D. PARENT BERNARDINIS ZENDRINI in Giorn. de' Letter. L. XVIII.

GUILLIELMI WIERI MYSII investigationis fabrica musculorum Diff. I. de carne musculoſa. Leid. 1738. 4. Ampli Libri, cujus dudum & in Trivultianis Januar. 1715. & in Journal des Savans 1718. & in Phil. Transf. n. 358. anno 1713. edito exstant primitiæ, & cujus impressio anno jam 1717. ad p. 120. deducta est, sculptæque tabulæ (MYS præf.) pars prima sola prodit. Continet enormi labore factam compilationem omnium, quæ de fibra musculari scripta fuerunt, & minutam imprimis Leeuwenhoekianorum & Heydianorum experimentorum epicrisin; tum vero proprias microscopii ope factas observationes, ex quibus octo constantes ordines fibrillarum describit, successive in fibram majorem sub certa proportionem unitarum: deinde proponit fibras laminares non cylindricas cordis & ventriculi, & linguæ, & reticulatas fibras cordis, has quidem cum LEEUWENHOEKIO.

STEPHANUS HALESIUS de vasis musculorum, de vi constrictoria ope microscopii observata, aliquas utiles observationes habet.

R. JONES de motus muscularis causa, Leidæ 1735. 4 *

R. JONES loco citato motum muscularem explicat retardato motu spirituum, qui vulgo tribuitur accelerationi, inde enim villum, aucta laterali pressione, distendi contendit &c.

F. C. QUEISEN de musculorum structura & usu, Hardervic. 1736. 3.

ABRAHAMUS KAAU in L. de perspiratione, Leidæ an. 1738. edito 8. etiam ad musculorum fabricam & cellulositatem aliquas utiles observationes adjecit, & refutavit imprimis imaginarias nerveas fibras, quas carneas fibras circumambire dixerunt plerique.

MICHAEL JOSEPH. MAJALUT & le MONNIER, Ergo musculorum momentum a longitudine & dispositione fibrarum, Paris. 1738. 4.

ANTONIUS CÆLESTINUS COCCHI in lectione de musculis & de motu musculorum, Romæ an. 1741. habita, & an. 1743. 4. edita, nihil valde lucis huic materiæ attulit.

A. HERINGA de motu musculorum, Leidæ 1741. 4. *

JACOBUS PARSONS an. 1745. 4. edidit, recusas cum Phil. Transact., Croonian lectures on mu-

Hi nunc primarii (a) sunt, quibus lectis multam referemus utilitatem, ut intelligatur historia musculorum, quatenus partes constituentes musculos quærimus.

Alte-

muscular motion. Cellulosas fibras facit, quas inflat spiritus animalis aereus, & cellulas dilatat. Ligamentum teres uteri pro musculo habet.

JULIANUS HINGANT in *Diss. an actio muscularis a solis spiritibus*, Paris. an. 1745. defensa explicavit experimentum STENONIANUM, ejusque vim a spirituum systemate repetiit. In nupero tomo *Act. Petr. X.* habetur CL. WEITBRECHT *Dissert. de viribus musculorum compositis*.

J. THEOPHILUS DESAGULIERS in *cursu naturalis Philosophia* in adnot. ad lect. IV. varia ad inflabiles vesiculas, ad virium veram mensuram in corpore humano, ad universam musculorum actionem attulit.

J. TH. DESAGULIERS l. c. theorematum quidem fere ex BORELLO sumit, experimentis autem ad mensuram roboris humani inveniendam propriis usus est, quam multo majorem invenit, quam CL. de la HIRE.

CL. SEGNERUS Gottingensis Professor, in editione nupera Operis NIEUWENTYDIANI novum calculum dedit virium, quas in agendo musculus frustra infumit, & figuras BORELLI correxit.

In nova editione *Oeconomiae* D. QUESNAI habetur explicatio motus muscularis a fibris plenis cylindricis, quas nervi circumligati stringant, ut repleantur vel sanguine vel lymphâ, fere uti D. BERNOULLIUS.

In Monumentis *Academiae Parisinae*, huc pertinent, præter priora.

ABB. de MOLIERES explicatio motus muscularis an. 1724.

Sed etiam in *Anciens Mémoires de l'Académie*, exstat systema JOHANNIS MERY desumptum a transversis fibris, pro tendineis habitis.

(a) THOMAS WILLISIUS de *accensione sanguinis & motu musculari* scripsit, Lond. 1670. 8. & Leid. 1671. 12. Theoriam adfert, qua motus muscularis per effervescentiam inter sanguinem & spiritus explicatur.

JOHANNES MAYOW ex primariis est Auctoribus, qui huc pertinent. Inter tractatus nempe suos Oxonii an. 1676. 8. & recusos an. 1681. Hagæ 8. de motu musculorum non solum parum utilem theoriam, sed etiam experimenta ex dissectis brutis animalibus adducit.

In FRANCISCI GLISSONII *L. de ventriculo & intestinis*, Lond. 1676. 4. & Amstelod. 1677. 12. multa huc pertinent. De motu musculari celebre experimentum instituit, quo constitit musculi molem in universum sumtam in motu musculi potius decrescere: quod equidem experimentum alii CL. GODDARD tribuunt, & citant *Register of the Royal Society* vol. IV. p. 95. (B. LANGRISH) Irritabilitatem fibrarum inter primos vidit.

JOHANNES SWAMMERDAM in posthumis illis *natura libriis* habet in ranis capta experimenta, quibus musculos detumescere in contractione confirmat, & STENONIANUM illud pro efficacia arteriarum in motu musculari propositum refutat.

JOH. ALPHONSUS BORELLUS in *Libro primo de motu animalium*, Romæ 1680 4. edito, primus motum muscularem ad matheseos regulas examinavit. Causam quidem theoretice dedit minus veram, sed considerationem hujus efficaciam ex natura vectis, hopomochlii, funis repetitam, hinc æstimationem virium impensarum, earumque discrimen ab effectu, qui obtinetur, per plurimos casus instituit. Rhomborum seriem, & multiplicata strata recepit ex hypothesi. In descriptione gressus, volatus, actionis cordis, &c. & in universum in II. L. Romæ 1681. 4. edito minus accurate versatus est. In Belgio sæpe recusatus est, cum tabulis, in prioribus editionibus valde vitiosis. Multæ enim editiones prodierunt, in Belgio an. 1685. & Neapoli an. 1734. 4. 2. vol.

PETRUS PERRAULT in *Essais de Physique* novam theoriam produxit, qua motum muscularem explicat ex contractione naturali musculi, sequente dilatationem, quam in antagonista musculo spirituum influxus faciat.

ANTONIUS HEYDE in *Experimentis circa sanguinis missionem, fibras motrices, urticam marinam*, &c. Amstelodami 1686. 8. excusis, fibras musculares ex fibrillis minoribus componi ex insectorum fabrica demonstrat.

RAL-

Altera pars Myographiæ docet musculorum nexus ad bases suas firmas, & ad partes movendas.

Prima pars explicuit quid sit musculus, quod Anatomico primo loco est sciendum; hoc facto, debet nunc demonstrare nexus musculorum ad suas bases, ubi immobiles quasi adhærent, & alios nexus musculorum ad partes, quas movent. Nimirum nullus est musculus major, demto corde, quin offi cuidam adfigatur (a), & partes habeat præterea firmas, versus quas trahit. Solum cor, cum dicatum sit liquoribus movendis, non firmis partibus, nullum habet os, versus quod trahat. Reliqui muscoli omnes, unam partem firmam habent, alteram mobilem, libere suspensam (b); iidemque, dum movent partem, semper partem mobiliorem versus alteram, firmam, quam basin vocamus, movent. Uterque finis, ubi muscoli inferuntur, puncta vocantur, quamvis puncta non sint, fixum, alterum, alterum mobile. Itaque etiam Anatomicus debet hæc duo in musculis considerare.

Illæ partes musculorum, quæ junguntur ossibus, vocantur *Aponeuroses* (c), voce antiqua græca, veteres enim vocarunt tendinem *vsūpov*, scilicet nervum, quia GALENUS & alii putarunt tendinem nervum esse. Sed STENO demonstravit, tendinem non nervum esse (d), sed aggregationem tantum & compactionem fibrarum ipsius musculi. *Aponeurosis* musculi est ergo pars tendinosa, quæ basi nerveæ quasi, & puncto mobili musculos locis oppositis adfigit, & aponeurosis proprie notat *enervationem* seu exitum nervi; nam, uti modo dixi, putabant veteres illos tendines esse nervos. Nulla nunc pars accuratiori studio addiscenda est, quam hæc, nam scire locum, ubi inferuntur tendines, est habere animum instructum in Chirurgicis, & in Physiologicis, pro medicina facienda.

Scripserunt etiam de hac re multi Auctores anatomici. (e) I. VE-

RAIMUNDUS VIEUSSENS in *Neurographia*, & theoriam motus muscularis, & aliqua experimenta eo facientia profert.

Sic LAURENTII BELLINI celebre de nervorum influxu experimentum, quod alibi laudabitur, hic etiam citari meretur.

IDEM LAURENTIUS BELLINUS breves *Theses de motu musculorum* proposuit, neque valde utiles, neque vera hypothese fultas.

EJUSDEM de motu musculorum sermo exstat inter posthuma, Venet. an. 1742. edita.

CL. VARIGNON *Projet d'une nouvelle mécanique avec un examen de l'opinion de BORELLI sur les propriétés des poids suspendus par des cordes* prodiit Paris. 1687. 4. quo in primis duplicationem virium purarum musculorum refutat, &c.

Sic D. PARENT in *Recherches de Physique & de Mathématique*, T. II. contra aliquas propositiones BORELLI dubia movit.

Contra PARENTIUM, quem dubia movisse contra BORELLUM in *recherches* &c. diximus, CL. ZENDRINI pro BORELLO scripsit in *Giorn. de' letterati* Tom. XVIII.

J. B. LAMZWEERDE in *respirationis Suvammerdammiana Expiratione* arteriarum ramos constrictos a nervis musculus in tumorem attollere, &c. fuse docet.

(a) Huc in primis WINSLOWI faciunt dissertationes insertæ *Commentariis Academicis*, & ipsum magnum opus.

(b) Videatur ultima Nota præcedens (a).

(c) Solent nostris temporibus per aponeuroses intelligere latas tendineas membranas, in quas musculus aut tendo expanditur. Quæ vero teretes, firmæ, angustæque partes ossibus adhærent, eas tendines vocant.

(d) Ut supra Not. (b) pag. 353.

(e) Diximus scriptores fabricæ subtilis musculorum. Sequuntur ii, qui myologiam vulgarem, sive

I. VESALIUS (a), quo post GALENUM nullus melior, imo huc usque nullæ tabulæ editæ sunt, quæ magis naturam exprimant ratione Myologiæ & Osteologiæ. *Secundus* ejus *Liber* dicatur musculis, quos egregie pertractat & demonstrat; verum habet unum & alterum errorem, ad quem attendendum est, uti est ille error de musculo recto abdominali (b) non condonandus certe viro, qui ubique infurget contra GALENUM, quod, ubi hominem describit, simia utique sit usus. Verum ipse bonus VESALIUS hunc musculum rectum depingens, describit, ac si recta usque ad claviculas seu supremam sterni partem transi-

sive musculorum majorum figuram, situm, directionem, officia, partes, descriptas dederunt, & quorum numerus multo major est. Lubenter vero omittimus eos, qui universum ambitum anatomes complexi, musculos etiam, sed ita recensuerunt, ut non multum propriæ observationis adjecerint.

Ante VESALIUM vero dicere oportet, GALENUM, qui antiquissimus est myologorum, amissis LYCI, & PELOPIS operibus, in musculorum cognitione excelluisse, & adjecisse varia prioribus, v. gr. latissimum colli musculum & rectum anteriorem lateralem, interosseos, lumbricales (de prop. lib.) &c. Legitimum de ea re Librum edidit de *musculorum dissectione*, ubi ex simiis, & brutis animalibus multa præter rem recepit, recti musculi abdominis ortum a summo thorace, levatoris scapulæ ab occipite, &c. Multa etiam sparsa exstant in ejus L. de *usu partium*, de *administrationibus anatomicis*, de *vocis instrumentis*, alibique.

Addi debet ORIBASIUS, qui Galenicæ musculorum descriptiones in concinnum ordinem disposuit, vel ideo utilis, quod omissis tricis litibusque, anatomica pura suppeditet. Commoda editio est anatomicorum ORIBASII, quam GUILIELMUS DUNDASS emendatam, & collatam cum GALENI locis locupletiore, Leidæ edidit 1735. 4.

In P. de ABANO conciliatoris antiquis editionibus reperiuntur etiam figuræ musculorum abdominis ad differentiam 199.

JACOBUM BERENGARIUM CARPENSEM ideo nomino, quia primus icones aliquas, etsi valde incommodas, musculorum in utroque opere *Isagoges* & *commentariorum* dedit, ut alias, non valde meliores, STEPHANUS RIVERIUS, quæ cum CAROLO STEPHANO exstant. RIVERII enim esse, & lite apud Judicem mota ipsi vindicatas, cum descriptio relinqueretur STEPHANO, discimus & ex præfatione, &c. *Mémoires pour les D. Rëggs. de la Faculté de Paris*, edito an. 1744. p. 105.

Musculos cæterum ex GALENO fere descripsit, icones & in systemate dedit, & seorsim separatorum de ossibus musculorum, rudis præcursor COWPERI & ALBINI. Pollicis etiam flexorem caput alterum habere ab ossis humeri condylo, extensoris pollicis pedis duos tendines esse, quorum alter in tarsum inferatur, & alia dudum vidit.

(a) ANDREAS VESALIUS in II. Libro tabulas dedit musculorum XVIII. inter quas vividum vitæ robur exprimunt I. II. III. & IX. quas adeo pro exemplaribus receperunt Pictores, & infinitis in Picturis imitati sunt. Interiores quæque, & quæ strata profunda repræsentant, eæ minus accuratæ sunt, ut ad naturam factæ oblectis ossibus, neque finibus satis circumscriptis. In minoribus musculis oculi, partium genitalium, laryngis, & in universum in minutiis minus fuit, ut in tantilla ætate, felix Anatomicus. Descriptiones egregiæ sunt, & longe accuratiores, quam vulgo post eum sunt factæ, & omnem circumscriptionem situmque sollicitè exprimunt. Aliqua etiam ad motum musculorum experimenta exstant in fine L. VII. Cæterum alias icones etiam musculorum dedit in *Epitome*, inverso stratorum ordine, & ex prioribus varie compositas.

De musculorum antiquissimorum temporum nominibus vide RUFUM in *app.* I. pag. 35. 40.

(b) Lapsus memoriæ hic fuit. Nam pinxit quidem VESALIUS hanc recti musculi partem T. V. Sed in animalibus aliis reperiri, in homine vero nullum esse diserte monuit p. 336. edit. 1555. & etiam in icone finem verum insertionis quæ in homine est, definivit appposita littera r. Sed in oculo utique erravit, cui musculum bulbosum, tribuit, ex bove descriptum, & etiam a FALLOPIO monitus noluit errorem deferere.

in brutis quidem verum est, non in hominibus. Porro VESALIUS describit musculum collum flectentem, & elevantem costas, qui quidem in brutis iterum reperitur, ubi claviculae non adsunt, sed non in homine, in quo claviculae adsunt, quae costas elevant ope cujusdam musculi. His erroribus condonatis, Auctor ille optimus est in anatomicis, sed tamen non utilis tironibus, quia secundum eum memoria retinere non possunt musculos partibus singulis dicatos. Neque enim nomina musculis imposuit aut ex functione, aut ex partibus, quibus inferuntur, sed tantum ex ordine, quo sese exhibent secanti Anatomico. Ita VESALIO deltoides est primus musculus brachium elevans, & sic porro nomina a solo ordine petita sunt. Ita damnum intulit suo lectori, & inutile fere reddidit tantum Opus.

2. Habetur itaque, ut hoc damnum refarciatur, GABRIEL FALLOPIUS (a), qui accuratae descriptionis nitore, non modo VESALIUM est adsecutus, sed fere praevit. Non vidi alium Auctorem, qui mentem suam clariore & distinctiore sermone proponeret. Idemque plurima invenit. Ejus Opera edita sunt tribus voluminibus, vel uno volumine, in folio an. 1584. Venetiis. Sed rara haec est editio. Mox iterum edita sunt an. 1596. (b) itidem Venetiis, quae editio perinde rara est. Tertia prodiit Francofurti apud heredes Vvechellii anno 1600. cum appendice adjecta, & haec editio est commendatissima, quod plenissima sit. In eo Libro, qui naturam volunt addiscere musculorum, desiderio

3. B. CANNANI citatam musculorum H. C. picturam dissectionem in Bibliotheca Dresdensi exstare ab ILL. MORGAGNO disco, foliis sex constantem, tabulis aeneis 27. in quarum singula singula etiam figura est; omnes vero ad musculos artus superioris pertinent, & ad latus tabellae cuique sua explicatio additur. Non valde perfectae sunt MORGAGNO judice in literis.

(a) Ante FALLOPIUM, ut senior, dicendus est EUSTACHIUS, cujus tabulae perpetua censura sunt VESALIANARUM, numerosae utique & secundum strata dispositae. Multo certe VESALIO curiosiorem fuisse, & in minutiis rerum subtilibusque musculis extricandis veriore, facile apparet, cum praeter VESALIANOS musculos, habeat numerosissimos alios propriae descriptionis in facie, uvula, larynge, manu, dorso, auricula, partibus genitalibus, osse hyoide, oculo, maxilla inferiori, &c. in quibus partibus plerisque etiam recentiorum Anatomicorum industriam praevit. Sed id inprimis nobile habuit institutum, ut plerisque musculos cum ipsis suis ex ossium definita sede prodeuntibus originibus exprefferit, quam industriam nemo ab ejus aetate ad ALBINUM est imitatus. Videntur autem omnino non ad naturam, sed ad praefixam sceleti iconem musculos transtulisse, atque adeo artificiose ex cadavere & ex icone suam figuram composuisse. Legendus est autem B. EUSTACHIUS cum ALBINI commentario, qui Leidae prodiit an. 1744. fol.

FALLOPIUM quod attinet, ejus utique observationes plurimos in VESALIO errores emendant. Breviter, simpliciter, vere correxit musculos oculi, faucium, ossis hyoidis, colli, capitis, abdominis, & in universum cum EUSTACHIO consentit, & cum natura uterque. Ergo occipiti-frontalem, auriculae musculos, palpebrae levatorem, pterygoideum externum, geniohyoideum, stylohyoidei insertionem in laryngem, circumflexum palati, levatorem ejus, rectum capitis anteriorem lateralem, trachelomastoideum, pyramidalem, aliosque primus descripsit.

(b) Editio optima observationum est Veneta 1561. 8. Opera autem omnia utique Venetiis an. 1584. & 1606. tribus in fol. voluminibus, Francofurti vero 1600. edita sunt, qua collectione plurima, ex ore magni viri excepta, satis deformia continentur, quo etiam anatomicas institutiones, & de ossibus commentarios refero. Observationes vero in methodicum ordinem redactae, Helmstadii an. 1588. 8. recusae sunt, & nuperae editioni Vesalianorum operum adjectae.

REAL-

rio suo satisfaciunt, & hoc habet boni, quod corrigat VESALIUM, & quæ nova invenerit, addat. *Observationes* imprimis in VESALIUM utilissimæ sunt, nam ibi, quidquid VESALIO deest, supplet, & ubi errat, corrigit. Sed neque FALLOPIUS facit, ut memoria retineantur muscoli, licet utique, si habeamus cadaver, & in cadavere investigemus, omnia, quæ describit, inveniemus. In memoria vero eos musculos, quos describit, retinere difficillimum experimur, nam ipse FALLOPIUS similia musculis nomina tribuit, a numeris desumpta.

3. Hinc haberi simul debet JOHANNES RIOLANUS, filius, quo Medicus carere non potest. Opus est in folio editum Parisiis anno 1650. In hoc Libro *Anthropographiam* (a) habemus, in qua adquiescamus. RIOLANUS secuerat supra centum & quinquaginta cadavera, antequam hoc opus conscriberet; adverterat, non posse tot musculorum nomina retineri; vidit defecisse VESALIUM in eo, quod a serie numerorum musculis imposuerit nomina, in quo instituto nihil erat, memoriam quod firmat. Ut huic difficultati mederetur RIOLANUS, optima musculis nomina imposuit; hinc figuras VESALII, ejusque textum, & ex parte aliqua FALLOPII egregium textum consulere debemus, qui sua plurima addidit; apud RIOLANUM vero accuratissime excogitata, & vel a functione deducta, vel a basi firma, & parte movenda ficta nomina inveniemus. Ita styloglossum dixit muscolum, qui adfigitur basi firmæ processus styloformis, & parti mobili laterum linguæ; nomen ergo finxit RIOLANUS ab hoc stilo, & a lingua, quæ Græce dicitur γλῶσσα: hoc nomine recepto, nemo facile hujus musculi obliviscetur unquam: Eadem ratione nominatur basioglossus, seu qui oriretur ad basin ossis hyoidis, & punctum mobile ad medium fere Linguæ haberet. Qui nunc ex osteologia novit, hæc puncta musculi, firmum & mobile, hoc est, qui ossa nota habet, idem percipiet claram rationem, cur hujusmodi nomina imposita fuerint; hæcque facile memoriæ suæ implantabit. Ita coracohyoidei musculi facile retinentur memoria, si tantum noverimus scapulam habere processum quemdam, quasi rostrum, quod Græce dicitur κόραξ, & si cognoscamus os hyoides (b). Iste enim musculus coracohyoideus adfigitur puncto

Z z

fixo

REALDUM COLUMBUM ut antecessorem in officio FALLOPII addo, qui multa in VESALIO emendando est molitus. Occipiti frontalem etiam descripsit, sed longe infra priorum industriam substitit, passim ne graviorum quidem errorum contumeliam effugit.

LEONHARDUS FUCHSIUS in L. de Musculis, qui cum eo de Ossibus prodiit, unice VESALIO usus est.

(a) In *Enchiridio* utique & in *Anthropographia* L. V. musculis sibi notis nomina imposuit, quorum pleraque hætenus conservata fuerunt ab Anatomicis: adeo ab ea, quam sibi sumebat, perfectione remotus, ut ne FALLOPIO quidem & GALENO notos musculos omnes retinuerit, neque enim v. gr. rectos laterales, aut minores anticos habet, & scalenum unum facit, quem in tres diviserat FALLOPII industria. Utile cæterum institutum fuit, quo nomina imposuit, cum ante ea tempora a solis numeris arbitrariis, & nihil significantibus, sumerentur nomina, iisque numeri a diversis Auctoribus alii & alii adhiberentur.

(b) Aliqui musculi antiquissimis jam temporibus nomina habuerunt, deltoides, psoas, meseter, temporalis, &c. Aliqua, & imprimis in artu inferiori addidit utiq; JACOBUS SYLVIVS in *Isagoges An. L. II.* nempe carnem quadratam, originem recti tibiæ, quadrati femoris. Simiæ etiam musculos cum

fixo illi rostro scapulae, & puncto mobili ossis hyoidis; hinc musculus coracohyoideus est ille musculus, qui trahit os hyoides versus processum scapulae. Hoc maximum commodum debemus magnifico illi viro, quod nomina musculorum tam egregia invenerit.

Non ignoro JACOBUM SYLVIIUM (a), Anatomicum Parisinum, in *Isagoge sua*,

cum humanis comparavit. Alia nomina musculorum pharyngis, linguae post J. SYLVIIUM addidit MICHAEL MARESCOTUS, discipulus SYLVII, CASPARI vero BAUHINI Praeceptor, qui Chirurgos Parisiis instruxit, & Anatomicum docuit RIOLAN *schol. anat. praef. Anthropogr.* p. 63. in SPIGEL. p. 742.

(a) Auctores vero eo seculo varii suos labores contulerunt ad illustrandam musculorum historiam. VIDUS VIDIUS Fallopianas, ut solet, observationes iconibus illustravit. Earum aliquae ex VESALIANIS sunt, pleraque novae, sed haec imprimis, paucis exceptis, rudes. Elevatorem palpebrae primus depinxit, & alios.

J. BAPTISTAE CARCANI TEONIS *Anatomes* L. II. Ticin. 1574. 8. In secundo Libro musculos palpebrarum oculi describit. VESALIUM corrigit, aliqua etiam in Praeceptore FALLOPIO emendat.

J. BAPTISTAE CANNANI *Musculorum humani corporis picturata dissectio*, Ferrariae anno 1572. 4. edita, in qua dicuntur muscoli artus superioris eleganter esse expressi, nunquam a me visa est. (DOUGLAS).

VOLCHERI COITER corrugator notus est, quem in observationibus descripsit.

JULIUS CAESAR ARANTIUS in *observationibus anatomicis*, Ven. 1595. 4. editis varia ad myologiam adjecit. Coraco-brachialem pro novo musculo descripsit, & obturatorem externum, & indicatorem, & levatorem palpebrarum sibi tribuit. Genioglossi verum officium definivit, & constrictorem vaginae (si EUSTACHIUM exceperis), glutaei magni insertionem in fasciam latam, hujus in tibia invenit, & alia innovavit.

FELIX PLATER in tabulis anatomicis in plerisque VESALIUM, in nonnullis FALLOPIUM sequitur. Iconem peculiarem dedit levatoris palpebrae, cum VIDIANA (ut in posthumo opere) lateret.

ARCHANGELUS PICCOLHOMINEUS in *praelectionibus anatomicis* icones aliquas dedit musculorum abdominalium, eorumque utilitatem in convertendo corpore docuit.

JOH. POSTHIUS in *observationibus anatomicis*, quas addidit Francofurtensi editioni operum COLUMBI anni 1593. 8. aliquos musculos aut novos, aut raros descripsit, in naso, pene, quadratum femoris, originem biventris a processu mammillari, quae tribuebatur styloideo, &c.

JULII CASSERII *de vocis & auditus organis historia anatomica*. Ferrar. 1600. fol. Plurimos musculos in utroque opere pinxit, colli musculos, & faciei, & laryngis, horum quidem aliquos male, eos vero ex variis animalibus & homine. In isto externos auriculae musculos, & internos, interque eos eum, quem sibi tribuit, exteriorem mallei, & stapideum.

IDEM in *Pentasthesio*, praeter tabulas laryngis & aurium priores, musculos etiam linguae, ossis hyoidis, nasi, manus aliquos & pedis expressit splendidis utique & ad naturam factis, neque quidquam a VESALIO habentibus iconibus, sed saepe ex situ remotis, & paulum obscurioribus. Descriptiones nullius momenti sunt.

Denique *tabula Casseriana*, quae SPIGELIANO operi adjecta exstant, posthumae, totam Myologiam de integro recensitam continent, inque ea multas icones, quae primum hic apparent, ut musculorum dorsi, & longe meliores sunt antiquioribus. Sed etiam aliqui muscoli hic primum depicti exstant, ut levatores costarum, interspinales colli breves, transversalis pedis. Caeterum in universum icones in situ saepe incommodo, & ultra necessitatem multiplices, & denique ossa non satis mundata, ut circumscriptiones musculorum nitide appareant, quod certe caput rei est.

PHILIPPI MULLER *de usu musculorum Epistola* prodiit cum GREGORII HORSTII observationibus medici.

HENNINGI ARNISAEI tabulas anatomicas viva magnitudine expressas cum vivis coloribus

sua, jam aliqua nomina exposuisse, sed maxima parte deficiebant: verum omnia supplevit RIOLANUS. Ergo ex VESALIO petere debemus figuras; ex eo & ex

Zz 2

FAL-

ribus vidi Helmstadiæ, diminuto numero, de quibus CL. SCHMIDT in *Diff. de Germanorum in anatomen meritis* egit & A. O. GOELIKE in *anat. hist.* p. 145. sed iste eas parvi facit, musculos inprimis depinxit, sed antiquo more, non satis definitis limitibus.

C. GUILLEMEAU *ostomyologie* cujus altera pars est de musculis; Edit. est, Parisiis 1618. 8.

HIERONYMUS FABRICIUS ab AQUAPENDENTE ad myologiam crassiore pauca contulit. Musculum externum mallei CASSERIANUM sibi etiam tribuit. In L. de *respiratione* egit de diaphragmate & musculis intercostalibus. In Tr. de *motu locali animalium* musculos femoris aliquos descripsit, & varietates, ut duplicem popliteum. Ejus icones myologicas ineditas possidebat THOMAS BARTHOLINUS *Cent. III. Epist. XCII.* & inæstimabiles vocat LINDEN *Med. physiol.* p. 286.

NICOLAUS HABICOT in *septimana anatomica* varia bona huc contulit. Coracohyoidei verum ortum constituit. Levatorem ani intra pelvim jussit præparari, quæ utilissima est parandi ratio. Stylopharyngæi in cartilagine scutiformem insertionem vidit, & levatorem scapulæ duplicem, & verum ordinem interosseorum.

C. BAUHINUS, SPIGELIUS, J. VESLINGIUS, nihil valde proprii habent.

PHIL. QUARRE' *Myographia poetica*, Paris. 1638. 4. (B. REG. HANOV.)

CÆCILIUS FOLIUS in *delineatione auris internæ*, Venetiis an. 1647. 4. impressa musculum & processum suum expressit.

DOMINICUS PANAROLUS in *Iatrologismis*, observationes de psoa parvo, de musculis nonnullis frequenter deficientibus attulit.

JOHANNES RIOLANUS, præter ea, quæ laudavimus, merita, e propria dissectione parum profecit. Pectinalem musculum sibi tribuit. Ligamentum a processu styliformi ad maxillam inferiorem euns observavit. Lumbricalium, interosseorum, & extensoris longi conjunctionem vidit.

DOMINICUS de MARCHETTIS in *compendio anatomico*, Patavii 1645. 4. edito, ad RIOLANI historias musculorum animadvertit.

WERNERUS ROLFINKIUS fere RIOLANUM exscripsit. T. vero BARTHOLINUS in *anatomie sua* VESALIO multum utitur & aliis, Psoam parvum sibi tribuit.

JOH. ANT. VONDER LINDEN rariorum nomine in *physiologia reformata trachelo-mastoideos* descripsit.

J. van HORNE perpulchræ tabulæ musculorum laudantur in *Epistolis Bartholini* (*Centur. III. Epist. XCI.*) Eæ ad Boerhaavium pertinuerunt, multum nobis commendatæ ad edendum a Comite THOMASIO.

NICOLAUS STENONIS filius in *observationibus de musculis & glandulis*, musculos dorsi ad novas leges revocavit, levatores costarum descripsit.

JOHANNES RHODIUS in *Mantissa* quæ cum T. BARTHOLINI historiis prodiit, observationes aliquas myologicas adpersit.

P. PETIT de *motu animalium spontaneo* L. I. in quo nova motus musculorum ratio investigatur. Paris. 1660. 8. *. Contra CARTESIUM pro ARISTOTELE dixit.

In MICHAELIS LYSERI *cultro* præter Myotomen, cui inprimis destinatur is labor, aliquas etiam Myologicas observationes reperi, v. gr. de Psoa parvo.

In *Philosophicis Transactionibus*, huc pertinent.

JURIN de cordis viribus n. 358. 359. jam laudatæ *Diff.*

KEIL de viribus cordis n. 361.

LEEUVENHOEK de fabrica septi transversi n. 379. 380.

AL. STUART de fabrica cordis n. 460.

In THOMÆ BARTHOLINI *Actis Hafniensibus* inprimis Aquilæ Myologia STENONIANA habetur.

Sic varia huc pertinentia, maxime ad oculi musculos, reperiuntur in *Dissections des animaux*, Parisiis editis, & aliqua propria etiam in BLASII *animalium anatome*.

J. THEO.

FALLOPIO descriptionem musculorum, & ex RIOLANO eorum nomina, & hi tres Auctores haberi debent conjunctim. Si enim unum demamus, non addis.

J. THEODORUS SCHENK *de diaphragmatis natura & morbis*, Jen. 1671. Disp.

C. BARTHOLINI *de diaphragmate* Liber, Parisiis an. 1676. 8. editus, continet inprimis decussationem appendicum septi, quæ sub Oesophago est, cum mediocri cæterum nobilis hujus musculi historia, & ex brutis desumpta, variisque aliis ad chyli & sanguinis motum, artem injiciendi, &c. pertinentibus dissertationibus. CAROLUS DRELINCOURTIUS apud MANGETUM in *Bibliotheca plagii* accusavit BARTHOLINUM, cujus hoc juvenile opus est.

FRANCISCUS GLISSON in *L. de ventriculo & intestinis* ad musculos abdominis aliqua habet.

WILLIAM MOLLINS Chirurgus, Lond. 1670. 8. * & 1676. 12. edidit *Myotomia or the anatomical administration of all the muscles in an human body*. Catalogus est cum brevi descriptione musculorum omnium, & aliquorum etiam administrationibus. Duos in palpebra semicirculares distinguit. Ligamentum forte a spina Ilium ad os pubis euns manifeste describit. Flexores pollicis plurimos habet.

LEONHARDUS TASSIN in *administrations anatomiques*, Paris. 1678. 12. 1723. 12. observationes etiam adpersit, tricipitem extensorem Cubiti constituit, decem numeravit interosseos, ex bicorni fecit seminervosum indicis & radiæ externum. Procerum etiam habet musculus vaginæ constrictorem, & alios.

In P. PERRAULT *Essays de Physique* varia huc pertinent, ad musculos oculi aliosque.

JOHANNES MAYOW variorum musculorum utilitatem, & verum intercostalium & respirationis mechanismum docuit; quam ab eo plerique receperunt, in *L. de respiratione*, Oxon. 1668. 8.

JOHANNES BROWNE in *Myographia*, quæ Londini 1681. fol. Anglice, & an. 1697. fol. & Latine ibid. 1684. prodiit, & Amstelodami an. 1694. a CHRISTIANO vero MAXIMILIANO SPENER Germanice versa, Berolini an. 1704. fol. & Lipsiæ an. 1715. icones ex CASSERIO, neque interruptas repetiit, paucissimis additis ex CROONIO ad uvulæ duos musculos, quos propria icone expressit.

J. BROWNE *Myographia* præter omnem rem a KÆSTNERO laudatur in *Bibliothec. Med.* pag. 417.

JOSEPHUS DUVERNEY musculos organi auditus & inprimis stapedium melius depinxit. Idem de musculis palpebræ internæ singularem opinionem prodidit. *Anciens Mém. de l'Acad.* Vol. X.

AMATUS BOURDON grandes, sed satis vacuas, musculorum tabulas dedit, Parisiis 1683. fol.

GUNTHERUS CHRISTOPHORUS SCHELHAMMER musculus CASSERII contra DUVERNEYUM restituere conatus est.

ISBRANDUS DE DIEMERBROEK in *anatomie corporis humani*, Ultrajecti 1685. fol. recusa, cervicalem descendentem descripsit, multum usus VESALIO, cum aliqua tamen sua observatione.

GODOFREDI BIDLOO *anatomie corporis humani*, Amstelodami 1685. fol. grand. edita, habet etiam artificiosas, neque tamen utilissimas, musculorum figuras. Meliores aliquæ sunt quæ ad penem anumque pertinent. Trachelomastoideum habet.

In MERYI tractatu de aure, qui cum LAMYI *explication de l'ame sensitive*, Paris. 1687. 12. prodiit, musculi auris internæ pro uno musculo describuntur.

In *Anatome*, quæ Romæ an. 1691. fol. a BERNARDINO GENGA & J. MARIA LANCISIO edita est, musculi etiam nitide, & pro sculptoribus, expressi habentur. Idem D. GENGA *myographiam* dedit in sua *Anatomia chirurgica*, sive *Istoria anatomica dell'ossa e muscoli del corpo umano*, Rom. 1687. 8. Rariores ibi aliquas observationes admisit.

FRANCISCUS BAYLE in *Diff. sur quelques questions de Physique & de Médecine*, Tolosæ 1688. 12. edita, antiquam de actione musculorum intercostalium internorum opinionem renovavit, iisque depressionem costarum tribuit, mathematica nonnulla demonstratione usus.

LAURENTIUS BELLINUS in *præf. ad lectorem* cum *Tr. de urinis & pulsibus* edita, respirationem, quæ a thoracis motu pender, descripsit.

discemus accurate historiam muscutorum; nam addiscere non tantum voco descriptionem videre muscutorum, sed eos ita intelligere, ut memoria retineri queant.

4. Sed non alius melius nomina muscutorum designat, ut facilius memoria retineri

J. PHILIPPI VERHEYEN non quidem in *anatomie corporis humani*, Lovanii an. 1693. 4. sed in editionibus posterioribus 1710. varia ad muscutorum historiam attulit, sternocostalium descriptionem, & depressorum costarum, quos jam *EUSTACHIUS* habet, & levatorum.

GUILLIELMUS COWPER ab integro adgressus est muscutorum descriptionem. In *myotomia reformatâ* prima editione, Londini 1694. 8. brevem muscutorum historiam, cum administratione dedit. In ea multa fidelius ad naturam reparata sunt. Recti laterales antici minores, levatores labii inferioris proprii, interspinales colli, inventi vel restituti; aponeurosis bicipitis altera addita, aliqua emendata in musculis faciei. Idem in *Anthropographia appendice* easdem icones cum aliis grandioribus systematis muscutorum figuris proposuit. In *Myotomia vero reformatâ* editione in fol. Lond. 1724. sexaginta & octo tabulas muscutorum ad naturam, & quidem plerumque ad proprios labores factas dedit, qui & in Syntaxi variis faciebus, & dissoluti musculi depinguntur, pleraque equidem meliora prioribus, sed caveant contendere *ALBINI* iconibus: defectus enim justorum limitum, ossiumque indefinitæ circumscriptiones valde nocent operi. Sermo ipse parum mutatus est.

In *EMANUELIS KOENIG* regno animali exstat myologia Chirurghi Galli nomine *LE SCOT*, quæ tamen parvi momenti est, & fere ex *RIOLANO*.

EDMUNDUS TYSON in pygmæi sive simiæ anthropomorphæ anatomie, analogiam comparatam accuratissimam habet.

VERDUC in *suite de la nouvelle Ostéologie*, Paris. 1698. 8. edita, habet *un Traité de myologie raisonnée*, quod non vidi.

Syllabus muscutorum corporis humani, Londini 1698. 4. *

In Commentariis Academiae Regiæ Scientiarum Gallicæ varia huc facientia exstant.

POUPART de ligamento quod sibi tribuit 1705. De Lingua pici *MERY* *Mém. de l'An.* 1709.

PETIT de oris functionibus, & modis deglutendi liquida 1716.

WINSLOW de motu scapularum 1719. 1723. 1726. de musculis capitis collique 1730.

IDEM de incurvatione colli a mastoideo altero debilitato 1735.

IDEM de musculis humeri, interosseis 1720. 1722.

IDEM de pronatione & supinatione 1729. de musculo digastrico 1742.

De musculis aliqua *DUPUY* an. 1726.

SENAC de organis respirationis 1724.

MALOET de suctione 1727.

HUNAULD de musculo sublimi, de vaginis flexorum, de lumbricalibus 1729.

IDEM de quibusdam simiæ musculis 1735.

De musculo in radio peculiari 1736.

COURCELLES de peculiari musculo 1743.

FERREIN de musculo biventre, ejusque usu vario, imprimis ad elevandam maxillam inferiorem.

DUPRE *histoire des cinq muscles qui servent au mouvement de la tête*. Paris. 1698. 12. Descripsit rectum lateralem, internum minorem, & intertransversales; sed obliquum etiam superiorem, & recti minoris partem pro novis musculis habuit. Contra eum *COWPERUS* in *Phil. Transf.* 251. dixit, & quod boni erat separavit ab inanibus novitatis adfectionibus.

EJUSDEM DUPRE descriptio muscutorum dorsi in *Journal des Sav.* 1699. reperitur, qua etiam intertransversales continentur.

CAROLI SPON *Myologia* heroico carmine expressa, & muscutorum corporis humani origo & insertio exstant in Bibliotheca *MANGETI*.

ANTONIUS MARIA VALSALVA musculos organi auditus pinxit, externum *CASSERII* restituit, in musculis pharyngis & uvulæ primus post *EUSTACHIUM* curam adhibuit aliquam, glossostaphylinos, pharyngostaphylinos invenit, levatorem & circumflexum noviter descripsit, &c.

J. BAPTISTA MORGAGNI in *Adversariis Anatomicis*, & in epistolis, plurima in muscu-

neri sint quam le CLERC (a), tum in *Chirurgia sua completa*, tum in *Osteologia completa*, & de *musculis*. Hos duos Tractatus simul legere debemus.

Tertia

scalorum historia emendavit, maxime vero in adversariis quidem in musculis genitalium partium & ani, in posterioribus vero in musculis uvulæ, & pharyngis. Azygon invenit palati mollis, aliosque.

J. WILHELMUS PAULI in *prefatione* ad eam, quam Lipsiæ an. 1707. dedit, editionem microcosmi JOHANNIS VAN HORNE, varias observationes adpersit. Tres extensores pollicis constituit, tres flexores, & epiglottideos.

In JACOBI DRAKE *Anthropologia nova*, Londini 1707. 1717. 1727. 1737. edita in 8 exstant icones aliquæ & observationes COWPERIANÆ. In ipsa editione Auctor extinctus est.

JAMES DOUGLAS *Myographia comparata specimen*. Lond. 1707. 12. Egregius labor, et si juvenutis opus. Habet musculos hominis ad sex cadavera sollicite descriptos, & cum canis musculis comparatos. Adhæssiones ad ossa bene & sollicite expressit, directiones minus. Nova multa habet, & musculos inprimis pharyngis minores, palatostaphylinum, coccygæum aliosque, aut novos aut renovatos. Inter compendia excellit. In ea editione, quam JOH. FRIDERICUS SCHREIBERUS Leidæ 1728. & 1738. 8. procuravit, latino sermone, adjectæ sunt aliquæ observationes & tabulæ EUSTACHII comparatæ. IDEM Tr. de actione musculorum, & catalogum musculorum secundum strata adjecit.

LAUR. HEISTERUS in *Diff. de masticatione*, Altdorf. 1711. 4. vires eorum musculorum per experimenta definit, qui maxillam elevant.

Contra citatam L. HEISTERI disputationem exstat M. ALBERTI *censur der disp. L. HEISTERS de masticatione*, Landek 1711. 4. recusa in *EJUSD. med. und philos. Schriften* ex æmulatione aliqua nata, & minutissima quæque carpens.

(a) *Suite de la nouvelle Ostéologie de LE CLERC, contenant une myologie*, Paris. 1711. 12.

In GOUY *Chirurgien véritable* adjectæ sunt *nouvelles découvertes sur la myologie*, Rotomag. 1716. 8. *

GOUY l. c. aliqua habet de musculis illis minoribus capitis, negat dari Rectum anticum minorem, unicum facit intercostalem omnium intervallorum, unicum interosseum. Gibbos tribuit musculorum abdominis spasmodicæ contractioni.

R. J. C. GARENGEOT *myotomie humaine & canine* multum aucta recusa est Paris. 1705. 12. 2. vol.

In P. DIONIS *Cours d' Anatomie*, Paris. 1715. 8. & sæpe alias excuso aliqui muscoli ex Parisinorum anatomicorum observationibus describuntur, ut uvulæ.

J. JACOBUS MANGET in *Theatro Anatomico* usus est Bravvianis, pessimis illis, iconibus musculorum, & icones COWPERI ex minori opere adjecit.

In PRATISLAVIENSIVM collectionibus an. 1724. observationibus aliquæ rariores exstant, ut v. gr. bicipitis cubiti caput tertium ab osse humeri ortum, & EUSTACHIO olim visum, tum similia an. 1722.

In RAULANO codice posthumo, qui exstat cum VALENTINI *Amphitheatro Zootomico*, etiam non inutilis myologia habetur, in qua splenius colli, & alii minus in vulgus noti musculi describuntur.

ARENT CANT in *impetubus anatomicis* musculos faciei, & pharyngis novis iconibus illustravit, nimis obscuris & indefinitis limitibus, & incommodo usu ob literarum defectum.

J. DOMINICI SANTORINI observationes ad omnem equidem subtiliorum particularum descriptionem, sed magis tamen ad musculos pertinent, quos in facie, auricula, larynge, pharynge, palato, partibus genitalibus, ano, subtilissime descripsit, multaque nova nomina invenit, tanto studio inveniendi, ut nuperiores Scriptores eum passim deferere sint coacti. Ad musculos abdominis & diaphragma aliquas observationes adpersit.

J. A. CULMUS in descriptione monstruosi foetus rariores observationes addidit, inter quas duplex trochlearis (olim MOLINETTO dictus) & varietates in musculis dorsi continentur.

In WILHELMI CHESELDEN *anatomy of human body*, Londini 1726. 1741. & alias edita, & in ejus *Osteographia*, supra laudata, musculorum egiguæ descriptiones, icones in ultima

Tertia pars Myographiæ explicat usum, id est effectum muscutorum. Optimi Auctores in hac parte legendi, sunt sequentes.

1. RICHARDUS LOWERUS de cordis musculis.

2. De

ultima editione nitidiores, sed inprimis teleologiæ aliquæ, & de utilitate non spernendæ monitiones continentur.

In Actorum Petropolitarorum vol. IV. JOSIAS WEITBRECHT observationes accuratas de musculis lumbricalibus interosseis, palmari, aliisque brachii musculis dedit. In vol. V. D. DUVERNOY aliquas observationes muscutorum in dorso, osse hyoide, nobiscum communicavit. In VII. iterum D. WEITBRECHT de musculis palpebrarum egit, & in IX. de musculi digastrici varietatibus. In *syndesmologia* idem aliqua ad musculos sparsa habet.

GEORG. ERH. HAMBERGER an. 1727. de respirationis mechanismo dissertationem dedit Jenæ, qua, secundum præcepta BAYLEI intercostalium internorum actionem definivit. Contra eam sententiam exstant mea de *respiratione experimenta* I. & II. Gotting. 1746. 1747. 4.

R. J. C. GARENGEOT in *splanchnologia* an. 1728. & 1742. edita, ad musculos abdominis, & diaphragma, figuras mediocres & descriptiones dedit. Ejus *Myotomie humaine & canine* ex deterioribus ejus operibus est. Prodiit Paris. 1728. 12.

In H. FRANCISCI le DRAN *parallèle de la taille* icones muscutorum ani & vesicæ occasione data adjectæ sunt.

AUG. FRID. WALTHER de articulis & ligamentis pedis, Lips. an. 1729. 4. Musculi fere ad COWPERI modum. EJUS porro exstant *supplementum* 1731. 4. *Obss. nova de musculis*, Lips. 1733. *Historia suffocationis* 1729. 4. *Anatome muscutorum teneriorum*, Lips. 1731. 4. *Disp. de obesitate & voracibus* 1734. tum *Diff. de deglutitione*, Lips. 1737. 4. de *oscitatione* 1738. de *vomitibus* 1738. de *larynge & voce* 1740. denique observationes in *Act. Lips.* 1733. p. 263. In his scriptis continentur muscutorum pedis, laryngis, faucium, faciei, aliorumque subtiliorum descriptiones.

In *Diff. HEISTERO* Præside, Respondente D. MOEBIO, Helmstadii 1730. 4. edita, de musculis manus veræ & utiles observationes exstant.

OTTO JUST WREEDEN *Kurtzer unterricht von der structur und action der Muschel*, Hannover. 1731. 8.

JACOBI BENIGNI WINSLOW *exposition anatomique* Tomus II. huc pertinet. Præter muscutorum descriptionem excelluit inprimis in eorum utilitatibus, quatenus vel unus pro variis conditionibus varia subit officia, vel multi in unum officium conspirant.

In EDIMBURGENSIUM ACTIS VOL. III. ALEXANDRI MONROI exstat fusa de musculo biventre dissertatio, contra WINSLOWIUM, ad quam is clarus vir nuper in Actis an. 1742. respondit. De diaphragmate ego an. 1732. & 1738. *Diff.* edidi, cum icone mediocri, & descriptione. Illam correctam restitui in *Fasciculo* I. an. 1741. fol.

Descriptionem meam *diaphragmatis* recusam dedi in *opusculis anatomicis* editis 1751. 8.

BERNHARDI SIEGFRIDI ALBINI *historia muscutorum hominis*, Leid. 1734. 4. cum tabulis magnis, quarum XXVIII. nunc prodierunt, perfectissimum componunt muscutorum systema, descriptiones fusissimas, accuratissimas, optimum ordinem, tabulas muscutorum vel conjunctorum, vel seorsim pictorum nitidissimas, & cum ossibus nudis conjunctas. Neque facile aliud opus majoris pretii aut in Anatome, aut in alia historiæ naturalis parte habetur.

B. S. ALBINI tabulas ausus est temerario consilio carpere JULIANUS OFFERAI *ouvr. de Penel. suppl.* pag. 177. * CHAP. V. *

D. WEISS *Diff. de usu muscutorum abdominalium*, Altdorf. 1733. 4.

In JOH. PAIFINI editione nova, quæ Parisiis an. 1734. 8. prodiit musculi fere WINSLOWIANI exstant, a D. BOUDON suppositi pro vetere descriptione Verheyeniana. Aliqua rariora de musculis intercurrunt, capite tertio bicipitis, supernumerariis muscutorum rectorum capitis, &c.

J. SALZMANN de plurium muscutorum pedis defectu, Argent. 1734. 4.

JOH. FRID. CASSEBOHM musculos internæ auris dedit descriptos in suis de aure humana tractatibus.

In Commercio Norico aliqua huc pertinent, v. gr. 1726. h. 43. de interosseis.

FRANC.

2. De musculo in genere; VESALIUS, FALLOPIUS, RIOLANUS, le CLERC, & omnium maxime GUILIELMUS COWPERUS in *Myologia* ejus *reformatata*, ibi enim paucissimis verbis quam optime post singulos musculos usus eorum tradit, & meretur utique vel ideo, post reliquos jam enarratos commendari, quod plures notatu dignissimas observationes circa usum musculorum habeat. Ita muscoli obliqui abdominis ab omnibus Anatomicis tantum pro compressoribus abdominis habiti fuerunt, ille vero, qui mechanicos Anglos confu-

FRANC. NICHOLLS in *œconomico compendio* paradoxas opiniones varias, inprimis de musculo pyramidalis utilitate tradidit.

F. BERN. ALBINI *Disp. de deglutitione*, Leid. 1740. 4. habet præcepta fratris, & emendationem BOERHAAVIANÆ descriptionis. J. ZACHARIAS PLATNER de musculo digastrico, Lips. 1737. 4. habet historiam inprimis opinionum quas de hoc musculo Anatomici reliquerunt. In *Disp. de hydrocele* annulum abdominis describit.

CORNELII de COURCELLES *icones musculorum pedis*, Leid. 1739. 4. Descriptiones meliores sunt, quam ars Pictoris. Nitidiores vero dedit *icones musculorum capitis*, Leidæ 1743. 4. editas, satis certe & puras, & pulchras, si situm tibi familiarem reddideris.

VERDIER fere compendium est WINSLOWI.

PEAGET & GEVIGLIAN *an actio musculorum intercostalium & diaphragmatis sympathica?* Paris. 1740. 4.

In CL. JUSTI GODOFRIDI GUNZII de *herniis* Libello follicita annuli abdominis descriptio continetur.

In LAUR. HEISTER *compendio anatomico* posteriorum editionum, observationes singulares, icon musculorum interosseorum, non optima ea & ab alio profecta, & musculorum uvulæ cum peculiaris ibi muscoli observatione exstant.

JOH. JAC. GRAMBS *tabula musculorum*, Francof. 1741. 8. adhæSIONES ad ossa, directiones, actiones brevissime habet, & ipsos musculos parum plene.

Mastoideum musculum ad processum ensiformem usque descendentem vidit vir C. P. C. FABRICIUS *id. anat. præf.*

D. LIEUTAUD *myologia* in *Essays d'Anatomie*, Aix 1742. propria est, neque absque observatione nata.

In *Memorie sopra la Fisica*, quæ Luccæ prodeunt, exstant TABARRANI de musculis dorsi observationes.

Exstant etiam CL. BIANCHI observationes de musculis partium genitalium minoribus, quos dudum propositos hic emendat & repetit.

CAR. A. a BERGEN *pentas observationum*, Francof. ad Viadr. 1743. 4. varias observationes ad musculos Palmarem, Iliacum, alios.

CL. SEGNERUS & in *Comm. Lit. Nor.* & in nova editione operis NIEUWETDIANI iconem dedit transversæ septi.

D. DEIDIER *Anatomie raisonnée*, Paris. 1742. 8. brevem habet musculorum descriptionem, & disseccandi rationem.

In T. XIV. *Syllabi partium* C. H. Petropoli editi musculus intertransversales alique dorsi musculus noviter, ni fallor, depicti exstant.

D. GAUTIER *Essays en Tableaux imprimés*, Paris. 1745. & seqq. fol. grandi, musculos habet ad similitudinem vitæ coloribus depictos. Sed rude & indoctum opus est, si cum ALBINO compares. Imo in arte imprimendi cum coloribus ADMIRALII elegantiam minime adsequitur. Nova autem ars est, qua colores omnes ex apta mistione flavi, rubri, nigri, & cœrulei componuntur. Ejus artis specimen in genitalibus in unica tabula edidit in Anglia inventor LE BLOND, Parisiis autem in alia de intestinis JOURN. DES SAVANS 1722. Jul. GAUTIER in præf. KUNDMANN *varior.* p. 693.

D. SCHWARZ *Diff. de vomitu & respiratione*, Leid. 1745. 4. plena est bonis de motu septi experimentis.

fuluit super hoc negotio, docet, musculum obliquum oriri ex tota spina ossis ilium, adeoque facere, ut corpus, pelvi firmo manente, ad latus converti possit, quia hic musculus costas ad pelvim movet (a). Ita musculus rectus ad flexuram corporis, versus interiora inservit, neque unice ad compressionem abdominis facit. Similes harum, de pluribus musculis habet rationes exactissimas, & cogitationes supra horum usum, COWPERUS.

3. Ad hunc scopum etiam consulendus est ALPHONSUS BORELLUS in Tractatu de motu animalium (b). Nemo enim est, qui lumine hujus viri carere possit, nisi in tenebris degere voluerit. Quæ habet de musculis, sunt certissime egregia; scripsit enim in Pisana cathedra, cum frequentissime Florentiam veniret, ubi vivebat STENO, qui non alia parte anatomes magis excelluit, quam in musculis: aderat quoque FINCHIUS ex Societate Londinensi, & MARCELLUS MALPIGHIUS, & hi omnes sua inventa & demonstrata ad oculum BORELLO exhibenda dederunt; unde opus suum composuit, non facile tantum opus absoluturus, nisi cum his auxiliis.

D. AUGUSTUS SCHAARSCHMID Berolini editit *Myologische Tabellen* 1747. 8. in quibus brevis, fere ad WINSLOWI observationes facta, recensio musculorum corporis humani habetur.

JACOBUS PARSONS in Tr. de physiognomia, Lond. 1747. 8. musculos oculi & faciei, eorumque motus, quibus adfectus animi exprimunt, fuse consideravit.

FRANC. MICH. DISDIER *sarcologie ou traité des parties molles*, Paris 1748. 12. non qualis hoc seculo expectari posset, exemplo musculorum auriculæ, quos ægre recenset, epiglottidis, quos præter rem admittit, & uvulæ, quos imperfecte describit.

(a) Minime quidem laude sua vellem fraudari COWPERUM. Sed quod hic commendat inventum PRÆCEPTOR id utique est ARCHANGELI PICCOLI HOMINEI *Prælect. Anat.* VIII. p. 49. deinde FRANCISCI GLISSON de Ventric. & intest. p. 98. Laudem vero in efficacis minus in vulgus notis musculorum alibi meretur, tum WILHELMUS CHESELDEN: & omnium maxime WINSLOWUS, ut supra dictum est.

(b) ALPHONSI BORELLI laudes vide supra, pag. 357. (a). Ad intelligendas vero actiones singularium musculorum parum contulit.

C A P U T III.

De Myotomia.

AUCTORES sequuntur, qui optime de Myotomia scripserunt, hoc est, qui legendi sunt medicinæ studioso, qui non tantum ab aliis demonstratos musculos cernere cupit, sed ipse de artificio doceri vult, quo invenire, distinguere, separare, spectabiles musculos reddere possit.

De ea arte scripsit optime magnus VESALIUS (a), & JOHANNES RIOLANUS, qui cum internecinus inimicus esset VESALIO, fassus tamen est, neminem melius hanc partem anatomes docuisse. Ordo VESALII hujus modi est. Ubi primum describit musculos, v. gr. abdominis octo musculos

A a a

(nam

(a) Olim GALENUS *administraciones anatomicas* dederat musculorum corporis humani.

Deinde ANDREAS VESALIUS singulis utique musculis *administraciones* suas adjecit, & ita vulgo eo tempore factum est, imprimis a JOHANNES BAPTISTA CARCANO.

Administraciones etiam anatomicas dedit AMBROSIIUS PAREUS, quæ primum prodierant Paris. 1549. 8. Deinde NICOLAUS HABICOT in septimana superius laudata adpersit methodos diffecandi musculos.

(nam nonum & decimum FALLOPIUS postea modo invenit), dicit, enarratis his musculis, si invenire omnes velis, sic perges, sic tolles pinguedinem, tum sic seca, tum sic subductis digitis infra primum separa, & pervenies ad secundum, & sic porro. Similia etiam docuit RIOLANUS. Nemo tamen hoc officio melius functus est COWPERO; scripsit enim diserte, non ita pro demonstrandis musculis, quam pro secandis; hinc minutissimas circumstantias accurate addidit (a).

Videatur etiam MICHAEL LYSERUS (b) in *Cultro Anatomico*, edito Hafniae an. 1653., & iterum an. 1665. denique Francofurti anno 1679., & Trajecti ad Rhenum anno 1706. Vir fuit juvenis, qui collegerat sibi methodum cadaverorum dissecandorum, & ita agit, ut nos doceat, quo modo preparari debeat, v. gr. calvaria, ut optime conservetur, & sic porro quo modo agendum sit, ne inter operandum unus musculus obsit dissectioni alterius; omnia haec ibi inveniuntur.

Tabulae musculorum insigni etiam sunt praesidio pro musculis addiscendis, quando cadavera non sunt praesto; vel quando inquirendum est in cadavere, indigemus quoque tabulis, impossibile enim est anatomes junioribus cultoribus tantum textum in memoria habere, & egent schemate aliquo, ut, si brachium quis examinet, habeat tabulam, in qua videre possit brachium, cui detracta est prima cutis, & cujus certa figura est, quam possit conferre cum brachio cadaveris; in secunda vero tabula, brachium, cui pinguedo est ablata, datis etiam cum limitibus figuris & umbris apparet, & in tertia tabula apud VESALIUM v. gr. apparet sic situm esse hunc musculum & hunc. In his tabulis videat junior anatomicus, an in suo, quod fecit brachio, eadem ratione res se habeat. Qui insurrexerunt in usum tabularum, id tantum fecerunt (ut

FAL-

(a) Utique in Myotomia minori sollicitè eam administrationem proposuit. Paulo antea tamen LEONHARDUS TASSIN, Parisiis an. 1678. in suis *administrationibus* jam citatis modum secandi musculos, sed rudem dederat. Negaverat musculos uvulae exhiberi posse, neque arytaenoideum, neque in pharynge musculos praeter stylopharyngæum & Oesophageum habet.

(b) Utique Professor iste BARTHOLINI magnum adplausum reperit, cujus *cultus* & Trajecti 1706. 12. & nuper an. 1740. Londini Anglice versus in 8. prodierit. De ossibus & musculis imprimis, quales tunc cogniti erant, administrationes scripsit, reliquas partes Anatomes vix attigit.

Sed post ea tempora J. R. C. GARENGEOTI in *myotomie humaine & canine*, Parisiis 1728. 12. edita musculorum, quales Parisiis vulgo demonstrabantur, preparationes tradidit, fuscæ, & ampliter.

JOHANNIS FRIDERICI CASSEBOHM *methodus secandi musculos*. Hall. 1739. 8. & Germanice cum titulo *Kunstmäßige anweisung zur zergliederung der Mäuslein*, Hall. 1740. 4. paulum mutata & parum aucta. Breviter scripsit, & aliqua in ALBINIANO ordine carpsit, & semina quaedam encheireseon sparsit, in musculis uvulae fusior.

D. LIETAUD cum *tentaminibus* suis administrationes etiam difficiliore musculorum organi auditus aliorumque conjunxit.

HENRICI FRIDERICI PETERSEN *Grundliche anweisung zur zergliederung des mauslein des menschlichen körpers*, Hamb. 1749. 8. cum illarum partium nominibus germanicis, atque minutiarum negligentior.

(a) RIO-

FALLOPIUS & RIOLANUS) (a), quia forte impensas ferre non potuerunt; aut quod artem hanc facilem reddere noluerint.

1. Hic laudandus est unice VESALIUS, sed non contractus ille (b) VESALIUS, nam in illis tabulis deficiunt multa, ut ipse protestatus est, cum eas publice editas videret.

2. SPIGELIUS Amstelodami editus est anno 1645., a JOH. van der LINDE, medicinæ olim Professore Lugduni Batavorum: tabulæ proprie sunt CASSERII Placentini, detectæ sunt per DANIELEM BUCRETIIUM: inde vero ad SPIGELIUM pervenerunt. Hic Auctor quoad figuras optimus est, non ita quoad textum (c).

3. Huc referantur Clarissimi BIDLOI tabulæ, quæ habentur elegantissimæ. Editus est ejus Liber Amstelodami an. 1685. & mox divenditus fuit, sed impressus est Londini an. 1698. cum nomine COWPERI; ea enim editio fuit certe tantum furtiva seductio COWPERI, & dolendum est, quod tantus vir eo descenderit (d). Tabulas certe habet optimas, descriptiones BIDLOIANÆ nullius sunt momenti.

Aaa 2

COW.

(a) RIOLANI locum vide *Anthropograph.* p. 53. ubi judicium suum interposuit, de iis, quæ tunc exstabant, anatomicis iconibus. Neque tamen omnes icones proscripsit, & laudavit, quæ merebantur, & unice monuit, ne nimis figuris fideretur.

Difficultas, credo, eos viros absterruit. Icones enim anatomicæ, ut experiendo didici, parari nequeunt, nisi conjunxeris nitidam omnino præparationem, cum lenta & prudenti periti Pictoris opera. Otium præterea requiritur, quo sæpe Professor, docendæ juventuti destinatus, omnium minime abundat. Pauci adeo in iconibus felices fuerunt, ARISTOTELES multis locis suas excitat *hist. anim.* L. I. c. 17. L. III. c. 1. L. IV. c. 1. EUSTACHIUS inprimis hic excelluit, qui VESALIANAS ut expungeret, vasa nervosque in suo inter musculos situ, perutili instituto, musculos vero cum suis ad ossa adhæSIONIBUS expressit, mira aliquando in intricatis partibus peritia usus.

(b) Editiones nempe solæ adhibendæ sunt, quas laudavimus, Basilenses 1543. 1555. Pulchras præterea icones habet *Epitome* Bas. 1542. Abstinentum autem ab omnium aliarum editionum usu. Veneta qua opus de corporis humani fabrica recusum est 1568. fol. & in qua figuræ valde diminutæ sunt. Germanica BAUMANNI opera Norimb. 1551. fol. excusa, satis cæterum elegante. Anatomes totius ære incisam delineationem dedit etiam JACOBUS GREVINUS. Paris. 1569. fol. & icones epitomes & operis ipsius VESALIANI satis nitide, sed sæpe contracte in æs incisas habet. *Viva denique imagines corporis humaniformis expressa prodierunt* Antvverp. 1572. 4. maj. in quibus VALVERDIANÆ tabulæ exscriptæ habentur. De VESALIANIS cæterum iconibus judicium supra tulimus. Vasorum & nervorum figuras penitus inutiles & falsas esse expertus sum, neque bonas viscerum. Musculi, ad habitum exprimendum, & ossa præstant reliquis. Musculorum etiam tabulas exscripsit TORTEBAT in *Abregé d' Anatomie accommodé aux arts de peinture & de sculpture*, & edidit Paris. 1668. fol. Sed eas a TITIANO delineatas fuisse male addit, cum Pictoris sui nomen minime dissimulaverit VESALIUS.

(c) JULIUS CASSERIUS multis annis Pictorem Eduardum Fialettum, & Sculptorem Franciscum Vallesium domui aluit (BUCRETIIUS in præf. ad edit. Venetam iconum CASSERIANARUM). Paucis in figuris ossium inprimis VESALIUM expressit, plerasque novas dedit, non raro vitio Sculptoris corruptas maxime in Angiologicis, cæterum nitidas & magnificas. JOHANNES BROWNIUS CASSERIANAS multo corruptiores reddidit.

(d) Merito carpit COWPERUM PRÆCEPTOR. Etsi enim BIDLOUS Chirurgus ante honores suos fuerit (SCHELHAMMER *progr. de proport. destruct.*) icones suas male subinde explicaverit, ut erat vitæ solutioris, non ideo SWAMMERDAMII fuerunt opus, quod minime vere ipsi tribuit COWPERUS (*Euchar.* p. 25.), neque probari potest, quod solo nomine BIDLOI erasementas ab Amstelodamenfi Bibliopola centum & quinque tabulas COWPERUS pro suis ediderit. Vide de ea re querelas BIDLOI in COWPERO citato coram tribunali. Leidæ 1700. 4. & responsum, minime

COWPERUS equidem multa addidit, ut fatear, sed tamen totum opus est BIDLOI, ejusque editio optima est, sed tantum illis, qui Anglicam Linguam intelligunt; & meretur vel ideo præferri primis editionibus, quia litteras multas addidit COWPERUS, ubi deerant, & quia egregia observata Chirurgica post singulam partem adjunxit (a).

minime firmam COWPERI in Eucharistia, quæ Londini 1702. 4. prodiit cum *glandularum ductuumque excretoriorum* descriptione. Judicium supra dedimus.

(a) Posteriores COWPERI icones in myologia magna, inter mediocres refero: MORGAGNIANAS, quæ paucae sunt, ad nitidas & elegantes, SANTORINI ad minutas, doctas & divites, CANTIANAS & CHESELDENIANAS ad eas quæ sunt infra optimas, D. GAUTIER potius ad inferiorem classem, CORNELII de COURCELLES in capite ad elegantes & speciosas, ALBINIANAS ad primum ordinem pulchritudinis, utilitatis & raritatis recenseo.

S E C T I O IV.

DE VISCERIBUS CORPORIS HUMANI.

C A P U T I.

De Splanchnologia in universum.

Hisce cognitis ordo vocat ad intellectum viscerum. Vocant aliqui hanc partem anatomiae *Enterologiam*, nam *έντερον* non tantum designat intestinum, sed omnia viscera; hinc *Enterologia*, λόγος enim est sermo, est dissertatio de visceribus internis; vocatur quoque *Splanchnologia*, nam *σπλάγχνον* viscus est.

Objicies studiosis tutius esse *Angiologiam*, seu distributionem vasorum prius indicare; verum difficulter id fieri poterit, cum vasa plurima per viscera transeant, iisque adiaceant; nam quomodo arteria pulmonalis, arteria magna, vena portarum, &c. possent describi, nisi descripta prima essent illa viscera, ubi transeunt, aut oriuntur? hinc medicinae studiosis optime consultum habetur, si post myologiam, adjiciatur hæc anatomiae pars.

Viscerum nomine intelligitur machina major, vasis constans, cujus effectu mutantur humores, in emolumentum totius corporis.

Multa ubique ajunt de viscere, sed meliorem definitionem exspectamus. Pulmo certe est viscus, quia humores chylosos mutat, & musculosa machina est mutans humores crudos in emolumentum corporis. Ob eandem rationem hepar, lien, cerebrum, &c. sunt viscera.

Cum dicimus esse machinam vasculosam, viscera ab ossibus & cartilaginibus distinguimus, quæ non habent tot distincta vasa.

Quum dicimus esse machinam mutantem, hoc fit, ut distinguamus a musculis, nam illi etiam corpora admodum vasculosa sunt.

Quando dicimus majorem machinam, &c. hoc fit, ut a reliquis glandulis distinguamus.

Egregius campus sese offert de inventis circa viscera; sed brevi compendio tentabimus enarrare omnia inventa, quæ inclaruerunt in historia cujusque visceris, tumque Auctores adjungemus.

C A P U T II.

De Corde.

SOlet memorari inter viscera princeps cor, quod quidem proprie non vocandum est viscus, ex definitione data, & potius musculus dici meretur; hinc ejus substantiæ, quatenus musculosæ cognitio ex myographia haurienda est. Sed tamen, qui accurate hoc viscus, quatenus numeratur inter viscera, cognoscere vult, legere debet Libellum LOWERI (a) antea citatum *de Corde*, in quo Libello cordis integumenta, substantia, vasa, &c. descripta continentur, melius quam alibi.

(a) Antiquissimus Libellus *de corde* exstat inter Hippocraticos, quo in primis valvulæ venosæ & arteriosæ describuntur, & humor pericardii & ventriculi, eorumque proportio. Spurius autem est, neque GALENI tempore agnitus.

In corde etiam anastomoses fetus proprias satis accurate descripsit CL. GALENUS in L. *de usu partium*. Idem de usu valvularum venosarum cordis recte sensit, & ex iis minorem circulationem eruit, in eodem *de usu partium opere*. De osse cordis egit etiam in Elephanto quaesito.

Libellus *de corde*, qui inter Hippocraticos exstare dictus est, spurius omnino videtur, etsi cum triumpho & querimonia cordis GEORGIUS SEGERUS ediderit dissertationem de HIPPOCR. lib. περὶ καρδίας ortu legitimo, Basil. 1661. 4. qua eum libellum defendit, & silentium GALENI & EROTIANI excusat. In eundem librum in nocte X. commentatur J. NARDIUS, & contra HARVEIANAM circulationem sanguinis aliqua non gravissima objecit.

ANTON. LUDOVICUS *de re medica* Ulyssipon. 1540. fol. habet de corde L. * DOUGL.

ANDREAS VESALIUS in L. VI. de hoc viscere egit, ejusque situm, externas & vulgatiore conditiones, anulum venosum, quem in valvulas triglochinæ vel mitrales dividunt, pericardium, mediastinum & alia rectius proposuit. Cor in diastole brevius, in systole longius fieri dixit, quem RIOLANUS & nuper clari viri sunt secuti.

IDEM in *examine observationum Fallopii* non bene de anastomosis egit, uti ne FALLOPIUS quidem. Motum denique cordis in vivis animalibus descripsit L. VII. *de fabr. corp. hum.*

JAC. MILICHII oratio *de cordis partibus & moribus*. VVittemb. 1551. 4. (B. LEHM.) *

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS cordis arterias duas, venam anteriorem, inferiorem, pulmonales quatuor, situm transversum cordis, valvulam venæ coronariæ, valvulam denique suam depinxit & descripsit in L. *de vena sine pari*, & in Tabulis posthumis XV. XVI. Situm etiam transversum adseruit COLUMBUS, de quo inter circulationis Auctores agitur.

JULIUS CÆSAR ARANTIUS notissima corpuscula in valvulis arteriosis nominavit, circulationem minorem pervidit, in *observationibus anatomicis*.

VOLCHERIUS COITER experimenta in cordis motu in animalibus fecit, præcedere systolen auriculam systolen in corde demonstravit.

JOHANNES BAPTISTA CARCANUS in *Anatomes* suæ Ticini editæ 1574. 8. L. I. Chartis impresso 44. accuratius paulo foramen ovale, & ductum arteriosum descripsit, VESALII & FALLOPII errores correxit, quorum iste foramen ovale omiserat, ille canalem arteriosum in foramen mutaverat. Valvulas etiam venæ sine pare refutat. Directionem tamen sanguinis per arteriosum ductum euntis invertit.

SAMUEL WEISSEMANNI *de facultatibus & operationibus cordis tractatus cum brevi cordis anatome*, VVittemb. 1592. 8. * B. PL.

NICOLAI TAURELLI *de cordis humani natura & viribus*, Altdorf. 1585. 4. *

LEGNHARDUS BOTALLUS foraminis ovalis iconem cum mala theoria dedit, non meritis honorem ut particulæ dudum notæ nomen imponeretur. Editio prima est cum L. *de Catarrhis*, Lugduni 1565. 16. Mea ab HORNIO procurata est.

alibi. Verum tamen fatendum est, illum prætermisisse quædam, quæ postea ab alio

JULII JASOLINI de aqua pericardii & cordis pinguedine Quaestiones anatomica, Neapoli 1573. 8. (DOUGL.) & Hanoviae 1654. atque Francof. 1668. 4. editæ nullius momenti sunt.

SIMONIS PIETRE de vero usu anastomoseon cordis in fetu. August. Turon. 1593. 8. & nova demonstratio & vera historia anastomoseon vasorum cordis in embryone cum corollario de facultate vitali cordis in embryone non otiosa, Turon. 1613. 8. * (DOUGL.)

EUSTACHII RUDII de naturali & morbosa cordis constitutione, Venet. 1600. 4. quod in Bibl. Platn. inscribitur *de virtutibus & vitiis cordis*, Venet. 1587. 4. *

FRANCISCI ROUSSET Exercitatio medica, sive assertiones novæ veri usus anastomoseon cardiacarum fetus ex utero materno sanguinem trahentium in suos pulmones cordi præparaturos, Parisiis 1603. 8. *

JAC. COCUS de corde & arteriis & pulmonibus, VVittemb. 1604. 4. * (B. RIV.)

HANNIBALIS ALBERTINI de adfectionibus cordis L. III. & problema de membrorum principatu, Venet. 1618. 4. Cæsena 1648. 8. * (DOUGL.)

JULIUS CASSERIUS icones aliquas cordis cum nervo recurrente dedit, ovalis vero foraminis & Præceptor ejus *FABRICIUS & ANDREAS LAURENTIUS*, & *MICHAEL RUPERTUS BESLER*, & *CÆCILIUS FOLIUS* in *L. de sanguinis via a corde dextro ad sinistram*, Venet. 1639. 4. Francof. 1641. 12. qui per totam vitam patere credidit, non bene.

CÆCILII FOLII l. c. editio Veneta legi debet, cum in Francofurtensi editione icones vitiosæ sint.

P. GASSENDI de sepro cordis pervio, Leid. 1639. 12. & cum Pinæo. Leid. 1641. 12.

GALENI sententia de nupero Botallianorum invento, Patav. 1640. 4. * videtur contra *FOLIUM* esse.

CONRADUS VICTOR SCHNEIDER eruditam de corde disputationem scripsit. VVittemb. 1641. 12.

JOH. FABER post *FRANCISCI HERNANDEZ* historiam Mexicanam minime malam anatonem dedit cordis testudinis.

PETR. OELHAFIUS de corde, Dantisc. 1643. 4. * B. PLATN.

NATHANÆL HIGHMOR Isthmi *VIEUSSENI* non optimam dedit iconem, cum nomine strigæ. Cor in systole brevius docet reddi.

Lymphatica vasa cordis pinxit *OL. RUDBEKIUS* in *duet. serof. iconibus*, deinde *ANTONIUS NUCKIUS* in *adenographia*.

GUILIELMUS HARVEY, præter experimenta ad circulationem, quæ alibi laudavimus, plura ad motum cordis contulit explicandum, tum *JOHANNES WALÆUS* in duabus epistolis.

MAUR. HOFMANNI de motu cordis & cerebri, Altdorf. 1653. 4.

M. AUR. SEVERINUS in *L. de piscium respiratione* cor piscium descripsit.

ECCARDUS LEICHNER de cordis constitutione, Erfurt 1657. 4. *

G. SEGERI triumphus & querimonia cordis cum *Diff. de HIPPOCR. L. περὶ καρδίας* ortu legitimo, Basil. 1661. 4. post editionem minus plenam Hafniensem 1654. ad controversiam de ortu venarum ex hepate imprimis pertinet.

NICOLAUS STENONIS F. primus cor subtilius dissecare adgressus est, in *specimine observationum anatomicarum*, Hafniæ 1664. 4. Fibrarum descriptionem dedit. In epistolis ad *BARTHOLINUM* experimenta etiam ad motum cordis confert *Cent. III. ep. 99. Cent. IV. ep. 24.* & alias. In *Actis Hafniensibus* II. n. 46. motum cordis & venæ cavæ egregie descripsit: tum in *Myologia specimine*.

Nervos cordis, neque nimis vere depinxit *T. WILLISIUS* in *L. de cerebro & nervis*, & in iis ligatis aut sectis experimenta fecit.

ANT. DEUSINGII *Diff. de motu cordis & sanguine*, Groning. 1651. 1655. 12. *EJ. Disp. antisyloiana de calido innato & aucto in corde sanguinis calore*, Groning. 1663. 12. & alia *Disp. Antisyloiana de motu cordis & arteriarum*, ib. eod. anno, theoriæ meræ.

ANT. DEUSINGII etiam est in *sylvam Echo*, Groning. 1663. 12. & *sylva cadua jacens*, ibid. 1665. 12.

SAM. HASENREFFER de corde, Tubing. 1656. 4. *

alio descripta sunt; hinc addantur RAYMUNDI VIEUSSENS *Observationes de cordis*

Primus iusto opere anatomen cordis adgressus est RICHARDUS LOWER. Is prodiit cum titulo *de corde, motu, colore & transfusione sanguinis*, Lond. an. 1669. 8. Amstel. eod. anno, & capite *de catarrhis* auctior, Leidæ variis annis, iterumque Londini 1680. 8. Gallice etiam redditus Parisiis recusus est 1679. 8. Fibras musculosas cordis ex brutis animalibus, & non verum tuberculum descripsit, & in universum neque bonas icones dedit, neque descriptiones accuratas. Sed experimenta per vivorum corporum sectiones facta curiosa & perutilia addidit ad motum cordis, chyli & sanguinis facientia, multasque eo tempore epidemicas opiniones expunxit. Transfusionum & infusionum Auctor ex præcipuis fuit. Iudicium vero acerbum non moror C. BARTHOLINI, qui Libellum *de corde* dum promittit & icones, LOWERIANA vel erronea esse, vel a STENONIS F. profecta objecit (BLAS. *anat. anim.* p. 5.)

Sed ante LOWERUM anno jam 1657. innotuisse sibi fabricam cordis (similem fere LOWERIANÆ & perinde habentem rectas in superficie fibras) scribit BORELLUS *de mot. anim.* L. II. Prop. XXXVII. Vires vero ejus musculi ex propria theoria primus æstimavit, & pene immensas fecit; contractionis genus adsignavit pene occultum, ut interne turgeret, cavitates evacualet, extus parum mutaretur.

Londinensis editio LOWERI anni 1680. 8. citata est, cum iconibus minoribus in unam tabulam conjectis. Leidæ etiam nuper 1749. 8. nitide idem liber recusus est.

AMSTELODAMENSES in collegio anatomico; JOHANNES de MURALTO in *vademecum anatomico*; FRANC. SILVIUS in *diff.* VII. JACOBUS BACK in suo *de corde* Libello; PETER in *pareg.* VII. cordis motum in vivis bestiis observarunt.

De Pericardio etiam J. C. PEYERUS egit in *Parergo* III. De valvula venæ coronariæ ISAAC CATTIER in *observationibus*. De cordis motu philosophatus etiam est in *Tr.* IV. CL. MAYOVVIUS.

In *Philosophicis Transactionibus* præter plurima loca ad infusionem vide TEMPLER *de motu cordis* n. 93.

Icones cordis & vasorum COWPER n. 270.

Valvula EUSTACHII eodem Auctore n. 280.

JAMES DRAKE de respirationis influxu in cordis motum n. 281.

LEEUVENHOEK de motu cordis in piscibus n. 319.

BUSSIÈRE anatomen cordis testudinis terrestris n. 328.

Experimenta cum ligatis nervis cordis capta n. 335.

JURIN de viribus cordis egit, & IDEM de iisdem contra MORLANDUM & KEILIIUM n. 358. 362.

NICHOLLS mensuræ sinuum & vasorum cordis n. 410.

AMYAND foramen ovale apertum n. 439.

CL. NIC. LE CAT de foramine ovali icones novæ & observationes n. 460.

AL. STUART cor artificiale *ibid.*

THEODORUS KERKRING in *spicilegio observat.* cordis triventris valde paradoxam observationem habet, & duarum arteriarum pulmonalium.

JAC. DENYS in *confer.* XIV. de cordis motu experimenta habet, & brevius agendo fieri defendit.

JOSEPHI MAGNASSI *disq. physic. de motu cordis & cerebri*, Paris. 1673. 4. * PLATN.

In THOMÆ BARTHOLINI *anatomie* posterioris editionis, Leid. 1674. 8. in descriptione fibrarum cordis sequitur NICOLAUM STENONIS F. & proprias addit icones. Experimenta etiam ad motum utilia habet.

JACQUES CHAILLOU in *recherches sur le mouvement du sang, du Cœur, & de ses vaisseaux*, &c. Paris. an. 1675. & 1699. edito, HARVEIANA placita defendit.

In Parisinis dissectionibus ex anatomie comparata valvulæ Eustachii aliqua memoria reperitur, & foraminis ovalis, ut in amphibiiis se habet. PERRALTUS etiam in *mécanique des anim.* de corde, ejus valvulis, & motu egit, *Essays de Phys.* T. III.

NICOL. PECHLINUS in *diff. de cordis motu* Kilon. 1676. 4. & in *collect. disp.* T. II. & fibras

cordis structura interiori, vasorumque non ita descriptorum & detectorum. (a) In Libro EJUS in folio de *Neurologia*, quædam etiam de cordis structura inveniuntur, quem Librum commendabimus, quando de nervis agemus. Verum præter hunc tractatum eadem longe melius descripsit VIEUSSENIUS in Libro de *principiis mixti* (b), qui Liber est in quarto, & in quacunque Bibliotheca meretur contineri, editus Lugduni in Galliis an. 1688 A pagina 79. hujus Libri, usque ad paginam 120. Auctor occupatur in describendo corde, cum eo titulo nihil minus expectaretur. In eo Libro egregiæ sunt observationes de decursu vasorum, & fibrarum, & efficacia ipsius cordis. Fateor equidem, sententias proponere omnibus non æque arridentes, ut de fermento cordis (c), sed non faciunt hæc ad illud, quod quærimus, cum structuram tantum velimus; hinc quatenus anatomicè tantummodo agit VIEUSSENIUS, multa egregia habet. Ibi videbimus, cor trudere sanguinem, ut transsudet in ipsa cava cordis, quod antea nemo, quantum novi, observaverat, nempe per arteriam, non modo in venas coronarias, & in auriculam dextram protruditur sanguis, sed etiam liquidum injectum per arteriæ coronariæ fines in cava cordis, & cava auricularum, non modo per arterias, sed per ductus

& fibras & motus in vivo animale observationem descripsit. Apicem ad cordis basin inquit accedere.

Apud J. JAC. WEPFERUM in L. de *cicuta aquatica*, Basil. 1679. 4. plurimæ ad motum cordis ex vivis animalibus exstant observationes, tum experimentum de motu cordis per flatum suscitabili. Hoc etiam BRUNNERUS habet de *pancreate*, & PEXER *parergo* VII.

MARTINI LISTER in variis de insectis aquaticis Libellis multa ad anatomen cordis comparatam contulit. In *Journy to Paris* an. 1699. 8. edito ad MERYANAM litem observationes adspersit. In *Cochlea anatome* motum cordis voluntarium huic animalculo tribuit.

PETR. HOUFWENII de *corde ejusque structura & usu*, Upsal. 1681. 8. * BIBL. PLATN.

D. LAMY in *discours anatomiques*, Bruxell. 1679. 12. utilitatem pericardii longo, & Lucretiano sermone, negavit.

In *Diario Eruditor.* 1681. n. 14. catellorum historia habetur, quibus cor nudum extra pectus pendebat.

SAMUEL COLLINS multa ad anatomen comparatam in primis piscium addidit.

MARCELLUS MALPIGHIIUS cordis bombycum motum accurate descripsit in *posthumis*.

GUALTERUS CHARLETON *Three lectures on the motion of blood, structure of the heart and causes of the pulse*, Londini 1684. 4. Mucronem basi inquit accedere.

J. STEPH. ADAMI de *osse cordis Cervi*, Gieß. 1684. 4.

(a) RAIMUNDUS VIEUSSENS in *Neurographia* experimenta per vivorum animalium sectiones habet, nervos cordis multo plenius LOWERO descripsit & WILLISIO. Fibras etiam in homine omnes spirales, in animalibus aliquas rectas esse observavit. Stimuli vim agnovit.

(b) Idem in *Tractatibus de remotis & proximis mixti principiiis, & de natura, differentiis & causis fermentationis*, Lugd. 1688. 4. fibras cordis describit, aliter quam prius factum & isthmum suum. Icones rudes malæque.

IDEM in *nouvelles découvertes sur le cœur*, Paris. 1706. 12. ingressum sanguinis & liquorum injectorum ex arteriis coronariis in cor, fibras cordis musculosas denuo, & causam motus cordis multiplicem describit.

IDEM in *Tr. de la structure & des causes du mouvement du cœur*, multo plenius historiam anatomicam cordis exposuit. Prodiit Tolosæ 1715. 4. Arterias cordis exhalantes repetit. Arterias coronarias cordis & venas follicite describit, addit arteriam profundam, venas innominatas, sinus venosos auricularum. Fibrarum descriptio intricata est. Multum etiam observationis ex morbose fabrica habet: sed nimium utique theoriæ.

IDEM in *Tr. des liqueurs*, eodem anno edito experimenta chemica in aqua pericardii facta, & ductulos ejus aquæ excretorios descripsit, sed istos, credo, suspectos.

(c) Nempe sanguinem arteriarum coronariarum sanguinem venosum reliquum perficere.

ductus & sinus transit, hinc in corde duplex detegitur circulatio, nempe. 1. Cor sinistrum pellit sanguinem in arteriam coronariam, quæ eum ubique defert ad venas coronarias & auriculam dextram: ea via apud omnes Auctores describitur; verum 2. ex VIEUSSENII observatione primo, quantum novi, constitit, sanguinem pressum in arteriam coronariam consuetissima quidem, frequentissima & maxima via, per venas coronarias transire, sed per arterias quasdam, nemini prius dictas, etiam sanguinem in cavitationem cordis protrudi; hinc sanguis duplex in cor stillat, 1. qui per auriculam dextram in cor dextrum, & per auriculam sinistram in cor sinistrum effunditur, & 2. qui per arteriæ coronariæ fines ultimos in cavitates cordis immittitur. Hæc verissima esse etiam postea in hac Academia per experimenta plurima probavit in thesi sua inaugurali *de Circulo sanguinis in corde* A. C. THEBESIUS an. 1708. Hoc nunc experimento aliqui stabilire fermenta voluerunt, ut nempe ille sanguis, qui per vasa minima, a VIEUSSENIO detecta, in cavitates cordis stillat, permistus alteri, esset fermentum mutans sanguinem venosum, qui per auriculas influit. Hæc est VIEUSSENII sententia, quæ certe non est probabilis, neque ullo ratiocinio, neque ullo experimento ab Auctore suo demonstrata.

Qui præter hos de corde scripserunt non multi sunt, qui novi & boni quoddam habeant (a). Clarissimus tamen & indefatigabilis anatomicus FREDERICUS
Bbb RUY-

(a) J. B. SCARAMUCCI *de motu cordis* Sinogalliæ 1689. 4. *recusum in Diario Parmensi 1689. p. 163. seqq. Pro alterno motu ejus musculi explicando obscuram sententiam proposuit, in contractione sanguinem in venam coronariam impelli docuit, venas vero repleri a constrictione arteriarum.

FOREST *de motu cordis*, Præside J. BOHNIO 1690. 4. mucronem basi vidit accedere.

J. M. HOFMAN *de pericardio* Altd. 1690. *

G. C. SCHELHAMMER in *Disp. de aqua Pericardii*, Jen. 1694. 4. aliqua de ejus natura & origine experimenta chemica & anatomica protulit.

De LAUR. BELLINI opusculo de motu cordis alibi dicitur.

In CAR. DRELINCOURTH *canicidiis* habentur historiæ observati motus cordis.

Eo tempore incepit lis de MERYANO systemate. Et JOHANNES quidem MERY, dexter anatomicus, quem cum RUYSCHIO aliqui compararent, (HEUCHER op. p. 787. LISTER *Journey to Paris*) cæterum mediocri judicio & parum practicus homo, (eodem teste HEUCHERO), in *Anciens Mémoires de l'Acad.* 1692. & in *Progrès de la Medecine*, Paris. 1697. & in *Mémoires de l'Acad. des Scienc.* 1699. & fusius in *Libello de la circulation du sang*, Paris. 1700. 12. motum sanguinis per foramen ovale inverso modo proposuit, ut a sinistro sinu in dextrum rediret, qua occasione diligenter foramen ovale descripsit. Suam etiam sententiam valide tuitus est in *Mém. de l'Acad.* 1699. & 1703. ubi fuse DUVERNEYUM refutat, & in *Réflexions sur la description du cœur de la Tortue faite par M. BUSSIÈRE*, & sur la Lettre approbative de M. PETIT (JOURN. de TREV. 1713.) ubi unum esse ventriculum negat, quatuor non tres esse arterias docet, &c. & in *Tr. Physique*, &c. Paris. 1705. 4.

Sed etiam ipsa ACADEMIA fere in ejus sententiam transit, & demonstravisse eum, quæ descripserat, testata est, BOURDELINUS inprimis, & LITTRIUS, qui an. 1701. pro eo, amico suo, dicit. Deinde PETRUS SIMON ROUHAULT Chirurgus, qui Turini vixit, novis argumentis a robore sinuum ductis aliisque sententiam MERYI confirmavit in suis *osservazioni anatomico-fisiche*, Turin. 1724. 4. n. IV. & V. in *discours sur les changemens qui arrivent dans la circulation du sang*, Turin 1718. 8. & in *réponse à la Critique de M. Winslow*, ibid. 1728. 4.

Sed

Sed contra, ab ipso retro anno 1697., cohors scriptorum in *MERYUM* incubuit. Et *DURVERNETUS* quidem princeps est, dum cor Testudinis & aliorum animalium amphibiorum in Monumentis an. 1700. describit. Tum *M. SYLVESTRE* in *Lettre à M. Regis où l'on examine le sentiment de M. Mery*, Paris. 1699. (J. des Sav. 1700. p. 202.). Et *M. BUSSIÈRE* in *Lettre à M. BOURDELIN pour servir de réponse à M. MERY*, Paris. 1698. 12. in qua passim *MERY* observationes in dubium revocat, & de corde Testudinis cum ipso pugnat: motum etiam alterum cordis cum auriculis observat, & in *nouvelle description anatomique du cœur de la Tortue d'Amerique*, Phil. Transf. n. 328. & Paris. 1713. 12.

Deinde *PHILIPPUS VERHEYEN* in *Lettre écrite à un M. Chir.* Paris. 1698. 12. & in *seconde Lettre à un anatomiste de Gand*, Paris. 1698. 12. in Tomo II. *Anatomes suæ*.

Denique *DAN. TAUVRY* de la génération, &c. Paris. 1700. 12. & alii, majorum operum scriptores *MORGAGNUS* & *C. J. TREWIUS*, in *MERYUM* scripserunt. Ego nuper an. 1748. in *programme*, cui icones adjectæ sunt ovalis foraminis & Eustachianæ valvulæ ad hanc litem aliquam lucem adferre conatus sum.

JACOBUS vero *BENIGNUS WINSLOW*, cum mediam sententiam proposuisset, qua *MERYANA* cum *HARVEIANA* conciliatur, in *Mémoires de l'Acad. des Sciences* 1717. & 1725. & ea a *H. A. NICOLAI* reciperetur in *Diff. de vaser. directione*, tamen offendit. Fusc enim contra eum scripsit *LUDOVICUS LEMERY* in *Mém. de l'Acad.* 1739.

Contra *JAC. BEN. WINSLOW* scripsit etiam *P. SENAC* in *Libro du cœur*.

De lite autem *MERYANA* & *MERYI* præparationibus & experimentis pro suo systemate legatur omnino *LISTERI* iter in *Phisicis* jam laudatum, qui sub initio litis, cum ea maxime ferveret, *MERYI* testimonia propius vidit, non valde ab ejus opinione alienus.

In *Acad. Regia Scientiarum Parisina monumentis*, anni 1699. habetur cor in fetu triventre, seu quale testudini est.

PARENT Descriptio fibrarum cordis 1702.

Ligato nervo intercostali cordis quies in fele 1706.

Cor pericardio adnatum 1706. 1712.

Musculorum cordis duorum descriptio, & ventriculos separandi modus, & valvularum venosarum artificium *WINSLOW* 1711.

Cor extra pectus 1712.

ROUHAULT de causa motus sanguinis in fetu 1714.

WINSLOW de valvula Eustachii 1717. & 1725.

J. A. HELVETII mensuræ ventriculorum cordis 1718.

HUNAULD & *BASSUEL* Cor in motu suo contrahi & brevius fieri 1731.

WINSLOW ibid. potius angustius reddi.

Nervus ex plexu semilunari abdominis ad cor redux *HUNAULD* 1734.

Foramen ovale apertum in adulto 1735. 1740.

LE CAT vena coronaria subclaviæ inserta 1738.

Ad motum cordis experimenta *DE BREMOND* 1739.

Cor sub dextra papilla saliens 1743.

Cor brevius reddi in systole *FERREIN* & *PERSON* ibid.

G. BAGLIVUS cum *Libro de fibra motrice & morbosa* edidit de circulatione sanguinis in testudine experimenta cum ejus animalis cordis anatome, Perusiæ 1700. 4.

In *J. FANTONI dissertationibus anatomicis*, quæ an. 1701. 8. Turini prodierunt, & quarum eæ, quæ de abdomine & thorace agunt an. 1711. recusæ sunt 4. titulo *anatomia C. H.* & hic & ubique potest conferri.

HORATIUS de *FLORIANIS*, in sua pro *MALPIGHIO* adversus *SBARALEAM* apologia, fibras rectas cordis ad bubulum genus recte relegavit.

C. BARTHOLINUS in *Anatomico specimine*, Hafniæ 1701. 4. Amstelodami 1702. 8. papillares musculos cordis dextri plures, sinistri pauciores, fibrarum cordis simplex stratum in se ipsum redeuns, fere ut *STUARTUS* descripsit.

PETRI CHIRAC Libellum de corde prodiisse lego an. 1701. (4. nisi fallor). Ejus autem experimenta aliqua, quibus demonstratur cordis motum non pendere ab arteriis Coronariis, habet *BESSE* in *Disc. analytique*. Ipsum Libellum nunquam apparuisse *DEMETRIUS* Auctor est. *Machiavel en Médec.* I. p. 122.

De P. CHIRAC PETRUS SENAC scribit, eum archiatrum fermentationem in corde stauisse ex materia acida de sanguine natam, quæ in loculos fibrarum fluat.

HENRICUS RIDLEY in *obss. de asthmate, hydropo, &c.* Londini 1703. 8. editis foraminis ovalis icones & descriptionem dedit, non absque utilitate futuram, si obscuritatem aliquam superaveris, chordulas etiam seu cornicula valvulæ ovalis ostii invenit.

J. B. MORCAGNUS in cordis historia multa illustravit, foramen ovale, ejus valvulam, & chordulas & valvulas arteriosas, globulos Arantii, alia. In epistola vero posthuma XV. cum VALSALVÆ sinubus aortæ conjunxit observationes plurimas de cordis sinubus, auribus, foramine ovali, Eustachiana valvula, septo cordis, ejusque poris, LANCISIANA hypothese.

JACOBUS DRAKE in *Antropologia nova*, Lond. 1707. 8. heteroclitam de respirationis & pulsus concentu opinionem proposuit. Cor in situ ad COWPERI delineationem expressit.

CHRISTIANUS STROEM in *nova theoria machina animalis*, Amstelod. 1707. 12. motum perpetuum cordis & respirationis per causas mechanicas explicare conatus est.

JACOBUS KEIL in *tentaminibus physicis*, Lond. 1708. 8. Anglice editis, & sæpe recusis, virium cordis æstimationem inivit, NEWTONIANA de æstimanda vi liquidum projiciente formula usus, valde certe parcam, & alienissimam a BORRELIANA, velocitatem vero sanguinis insignem demonstravit, per experimenta & calculos.

G. ALB. HAMBERGERI *Diff. de Deo ex conspectu cordis demonstrato* in fasciculo exstat, annum non novi.

CHRIST. ADAM THEBESIUS in *Diff. de sanguinis circulo per cor*, Leid. 1708. habita & Leid. 1716. 8. recusa & Lipsiæ 1739. 4. & JOH. MUNNIK in *Diff. de circul. sang.* Traject. 1709. proposita vasa sanguinem in cordis ventriculos exhalantia repetierunt, & denique D. ROCHET in VII. volumine Diarii Veneti, quod *Galleria di Minerva* dictum est.

GUIL. COWPER in *Myotomia magna posthuma* præter fibras cordis, magis quam alibi fideliter expressas, valvularum etiam arteriosarum naturam, & morbos, & valvulam Eustachii pictam dedit.

J. PHILIPPUS VERHEYEN exhalationem arteriarum minimarum in cor in *anatomye* sua experimenta confirmavit.

P. DIONIS cordis motum observavit, digitum conprimi in actione sensit, & brevius fieri docuit.

In J. J. MANGETI *Theatro* observationes nonnullas ad Morgagnianas icones adpersit J. B. BIANCHI.

MICH. ERN. ETTMULLER de *circulatione sanguinis in fetu*, Lips. 1715. 4.

J. MARIA LANCISI de cordis historia optime meritis est. Posthumo enim opere *de corde & aneurysmatibus*, Romæ 1728. fol. Venet. 1739. fol. Leid. 1740. 4. (quod promissum in editione operum PACCHIONI, Pagliarini Bibliopolæ castigatius ediderunt Romæ 1745. 4.) edito anatomen totam hujus visceris ab integro orsus, fibrarum ordines, valvulam Eustachii, sinus venosos, valvularum situm, morbos & nervos cordis, vaginas vasorum pulmonalium adgressus est describere. Minime tamen dissimulo, aliqua ita se habere, ut etiam invitatus fatear, plenam apud me fiduciam non invenire v. gr. glandularum, quibus humorem pericardii tribuit, excretorios canales: opinio de motu auricularum cum motu cordis homochrono, &c. Observationes aliquas, & eam de valvularum in vividioribus animalibus situ, ut venas tegant, sibi vindicat PETRIOLUS in sua editione EUSTACHII p. 91.

J. M. LANCISI opus *de corde & aneurysmatibus* prodiit etiam Neapoli 1738. 4. quod quidem opus jam in conclavi 1700. scribere cepit.

CHARLES MALOUEN in *Tr. des corps solides & fluides, ou examen du mouvement du cœur, des artères, &c.* Paris. 1717. 12. quantum ex Diariis video, habet ad BORELLUM animadversiones, arteriarum elaterem removet a numero resistentiarum, quas cor superat, &c.

ADAMUS BRENDDEL in *Obs. anat.* Dec. III. vasa exhalantia cordis descripsit, ex suis experimentis.

ABR. VATER in *prog. ad Diff. de anatomico acerbins castigato*, VVittemb. 1719. 4. aliqua ad valvulam foraminis ovalis adpersit.

ARENT CANT in *impetuum* Tom. IV. pericardium & verum cordis situm, quem anatome comparata corruerat, bene expressit.

P. ANT. MICHELOTTI de viribus cordis in KEILIIUM animadversiones dedit.

JOH. JAC. PEYER *observationes anatomia*, Leidæ 1722. 8. etiam ad motum cordis in vivis animalibus lucem adfundunt.

J. DOMINICUS SANTORINUS aures & ventriculos dimensus est & arteriosa venosaque vasa cordis; cordis dextri majorem amplitudinem ad suas causas revocavit, glandulas cordis & pericardii negavit; arteriarum coronariarum originem super valvulas recte adsignavit, in *observationibus anatomicis*.

WILLIAM STUKELEY *Description of the spleen*, cor, valvulas, & venosarum valvularum chordas in Elephanto descripsit.

MARTINI MARTINEZ *observations de corde*, Madriti 1723. 4. editæ, rariores aliquas in corde varietates, & cor extra thoracem continent, &c. Recudi curavi in *Diff. selectarum*. T. II.

JOH. TABOR in *experimentationibus Medicis*, Londini 1724. 8. Vim cordis definire aggressus est per resistantiam, quam illi præstant valvulae: valde minutam etiam descriptionem dedit fibrarum musculosarum. Sed hæc quidem falsa est, ex icone 23. fibrasque rectilineas; illam ad minimum duplo minoris fecit, cum valvulae aorticæ ad summum dimidiam contractionis aortæ vim ferant.

H. A. NICOLAI *Diff. de directione vasorum*, Argentor. 1725. 4. habet dimensiones cordis utriusque, sed erroneas aliquas ad ejus valvulas observationes.

J. WOODWARD reliquit egregia experimenta, quæ in *supplement and continuation of an essay towards the natural history of the earth* excusa sunt Londini 1726. 8. Plurimis exemplis ostendere conatur in sanguine & in singulis partibus, non in nervis vitam sedere. Ea experimenta ostendunt extracto corde, deletis nervis magnam vitæ partem superesse.

STEPHANUS HALES propius, quam quisquam ante eum ad æstimandam vim cordis accessit, incisus vivorum animalium arteriis, mensurato saltu, ad quem sanguis adscendit, eoque comparato cum area cordis, unde exsilit. Vide pulcherrimas observationes in ejus *Animal statiks*, Londini 1733. 8.

D. SENAC in suis *physiologicis Dissertationibus*, quæ cum titulo *commentarii in HEISTERI anatome* an. 1724. & auctius an. 1735. Parisiis in 8. prodierunt, multa ad motum cordis & sanguinis tum experimenta attulit, tum etiam ratiocinia. Causam pulsus Cordis novam dedit. Nuper audio magnum opus de corde edidisse, quod nondum vidi.

D. SENAC opus de corde prodiit Parisi. 1749. 4. 2. vol. In primo tomo inprimis & in fine secundi historia cordis continetur. Omnes priorum scriptorum, quos legat, descriptiones acriter & cum animo, ut videtur, carpendi examini subjecit, ut ne minutiis quidem parceret. Ipse novam anatomen proposuit pericardii, fibrarum cordis, venarum, arteriarum, valvularum arteriarum cordis, nervorum, hanc imperfectiorem. Cordis motum recte ab irritabili deduxit, non perinde vere arteriis tantas partes in circulatione promovenda tribuit, ut etiam absque corde sufficerent.

A. B. HEIMAN *de pericardio sano & morbo*, Leidæ 1729. 8.

J. G. DUVERNOY in *Actor. Petropolitanor.* Vol. II. cor Elephanti descripsit, glandulasque, quas suspicatur tinctorium sanguinis liquorem parare. In VII. v. Tomo JOS. WEITBRECHT *de auriculis cordis* egit.

In *ACTIS SUECICIS* anni 1730. cor Testudinis descripsit STOBÆUS.

W. WOOD *mechanical essay on the heart*, Lond. 1729. 4. nihil valde proprii continet.

Huc JOSEPHI LANZONI de pericardio tractatus pertinet qui in operibus omnibus reclusus est.

D. FERREIN in *duodecim questionibus* quas occasione vacuæ cathedræ Monspeliæ defendit an. 1732. 4. duos novos motus cordis consideravit, rectum, quo ad pectus accedit & ab eo recedit, & motum conversionis, quo totum cor in priori motu antrorsum se convertit. Utriusque etiam motus causam adsignavit, illum a sinibus venosis dilatatis cor repellentibus antrorsum, hunc a sinu sinistro magis quam dexter educto, ob resistentes vertebrae.

In *HENRICHI BASSII observationibus Anatomico-chirurgicis*, Hall. 1731. 8. minuta descriptio valvularum arteriosarum cordis cum duplici earum musculo reperitur.

ANDR. ERHARD HEINRICH *phenomena cordis*, Erfurt. 1734. 4.

WINSLOWI *expositionem* non pergo laudare, quod ubique commendare necesse foret.

In opere Danubiano Hufonis cor glandulis oblitum describitur, quæ liquorem aquæ Pericardii similem generent.

RUYSCHIIUS (a), in descriptione cordis & præparatione ejus consulendus est, ubi

CL. CROESERUS de *transitu sanguinis per foramen ovale*, Groningæ 1735. 4. Dissertat. edidit.

F. NICHOLLS in *compendio anat. œconomico*, Londini 1736. 4. novam sententiam de motu cordis proposuit, nempe alterne dextrum & sinistrum ventriculum contrahi & dilatarî, non ut prius putabatur, simul utrumque. Ea opinio, nata ex æstimatione celeritatis, qua sanguis per pulmones circumducitur, a me olim expensa est in *Diff. de motu sanguinis per cor* 1737. 4. In *Edimburgensibus* etiam Tentaminibus Vol. III. aliqua contra eam opinionem dubia mota sunt.

In opusculor. Scientif. & Philol. T. IV. habet aliqua de motu cordis HYACINTHUS de CHRISTOPHORO.

C. A. a BERGEN in *progr. Fr. ad Viadr.* 1737. 4. quod de *difficultatibus controversiarum anatomicarum* inscribit, de modo agit, quo vires cordis ad calculum possunt revocari, tum phenomena in vivo animale describit, in *Comm. Lit. Bor.* 1738.

J. G. HAHN in *Disp. de aëris inspirati effectu*, quæ cum ejus descriptione febrium epidemicarum prodiit, aliqua contra KEILIIUM de motu cordis monuit.

(a) FRIDERICUS RUYSCH ad arterias coronarias, earumque ramos, ad venam anteriorem cordis, ad vascula vasorum magnorum, cordis verum situm, venas pulmonales quatuor, &c. in *Epistolis*, *Thesauris*, & *Adversariis* observationes & icones proposuit.

Corda Insectorum descripsit ILL. de REAUMUR.

C. J. TREW. in *Tr. de differentiis hominis nati & non nati*, Norimb. 1736. 4. infinitas fere icones & veras observationes ad vias cordis proposuit, quæ fetui peculiare sunt, tum ad valvulam Eustachii.

G. W. MUYS, alibi citatus, carnem cordis reticulatam observavit, & in causam perpetui mobilis cordis inquisivit.

CHRISTIAN PHILIPPUS GLASS in *Diff. de circulatione sanguinis*, Hall. 1736. 4. habet plusculas CASSEBOHMII observationes.

J. WILH. ALBRECHT in *Paranesi*, Gotting. edita 1736. 4. Isthmum VIEUSSENII pro nova valvula descripsit.

J. SAM. SCHAARSCHMID in *disquisitione num pulsus cordis in ejus systole an in diastole sit*, Berolin. 1736. 4. post PERALTUM, & ante HAMBERGERUM, musculos dilatatores cordis adsumsit.

Ad arteriarum coronariarum situm passim aliqua in COMMERCIO NORICO 1737.

J. SAM. CRELL de *valvula Eustachii*, an. 1737. VVittemb. disputavit, an. vero 1739. de *motu cordis Lantifiano* contra eum novatorem dixit.

A. F. WALTHER in *Progr. de fabrica auricularum cordis*, Lips. 1738. fibras musculares septi & valvularum Eustachii, idemque de *erubescentiis & venarum capitis tumore*, Lips. 1739. 4. vim auriculæ dextræ sphincteris modo in cavam agentem proposuit.

J. G. BRENDLIUS, Collega noster clarissimus, *valvula Eustachiana* novam iconem & descriptionem dedit, VVittemb. 1738. 4.

Et ego an. 1737. de *vasis cordis* *Diff.* scripsi, cui an. 1739. iteratas addidi observationes. In iis arteriæ coronariæ earumque exhalantes rami, vena media cordis, & vena sinus dextri, & innominatæ, & annulus venosus cordis describuntur. An. 1738. de *valvula Eustachii* observationes edidi, Lipsiæ etiam eodem anno recusas.

DANIEL BERNOULLI in *hydrodynamicis* correxit formulam mensurandæ celeritatis, qua liquor ex foramine effluit, & eam, qua usus erat KEILIIUS, rejecit, aliamque dedit, cujus ope ex saltu sanguinis arteriosi velocitas sanguinis æstimari potest.

AB. KAAU de *perspiratione*, Leidæ 1739. 8. aliqua ad pericardii aquam, ad vasa cordis exhalantia, fibrarum transversalium absentiam monuit.

J. EXUP. BERTIN in *Disp. an causa motus cordis multiplex*, Paris. 1740. arterias coronarias in systole cordis repleri, neque adeo vel ab hac theoria vel a nervis cordis compressis perennitatem hujus visceris in motu pendere docuit.

PETRIOLUS, Chirurgus Romanus, in editione sua *EUSTACHIANARUM TABULARUM*, Rom.

ubi videmus, quam ingenti numero vasorum arteriosorum & venosorum cor constat.

Rom. 1740. fol. varias sibi tribuit LANCISII de corde observationes, & particulas aliquas aliter interpretatur, nonnunquam valde paradoxus.

D. SCHUSTER de aqua sive liquore pericardii 1740. 4. hujus aquæ in recens natis alibi frequenter repertæ exempla adducit.

EMMANUEL SHWEDBERG in æconomia animalis, quæ Amstelodami prodiit, Part. I. 1740. 4. Omnium scriptorum maxime paradoxus est. Sanguinis globulum fieri ex cubo salis marini tanquam basi, cui varii sales infixi sint & sulfura ad perficiendam figuram sphaeræ, circulationem sanguinis per cor ita fieri, ut sanguis ex corde per lacunas in ductus carnosos penetret, tunc in arterias, perque eas in aortam redeat, &c.

LEANDER PEAGET, Parisiis an. 1741. 4. defendit sanguinem a dextra in sinistram cordis auriculam per foramen ovale transire, non contra.

D. KYPER in Diss. de humorum pericardii, Leidæ 1741. 4. aliquas observationes attulit.

HYAC. THEOD. BARON in Disp. an, dum cor contrahitur, dilatentur arteria, Paris. 1741. 4. arterias coronarias cum reliquis corporis humani arteriis synchronas facit.

D. LIEUTAUD in Essais d'Anatomie valvulam venosam dextram sinistramve unicam esse, fibras cordis vix in ordinem redigi posse, ventriculos æquales esse, & alia utiliter monuit. In systole cor brevius fieri monet. Valvulas arteriarum claudere credit arterias coronarias.

D. BLOEMESTYN de humorum motu per vasa sanguinea, Leidæ 1744. 4. aliquas ad globulos Arantii observationes adfert.

D. GEISLER de motu sanguinis per vasa coronaria, Gorliz. 1743. 4. experimenta de vasis exhalantibus cordis instituit, & aliqua in aliorum observationibus mutavit.

CAR. AUG. A BERGEN in observat. anat. physiol. Pentade, Francofurti ad Viadrum an. 1743. edita, utiles ad foramen ovale observationes attulit.

FERREIN & PERSON in thesi anno 1743. 4. per experimenta demonstrat cor brevius fieri.

J. E. HEBENSTREIT de venis communicantibus, Lipsi. 1744. 4. fibras carneas valvulae EUSTACHII ab auricula ortas descripsit.

AL. MONROE apud CHESELDENUM de relaxatione cordis eam hypothese sequitur, quam BOERHAAVIUS, tum SWIETENIUS II. p. 18.

In syllabo partium corporis humani Petropoli edito T. XV. XVI. figuræ fibrarum cordis, & vasorum thoracis cordisque habentur.

CL. SAUVAGES in notis suis & dissertationibus ad HALESII hæmostaticam adjectis motum cordis definire adgressus est noviter, comparando cor cum folle, qui compressus a pondere liquorem per tubum propellit. Ita valde exiguum vim invenit & in JURINUM, KEILIIUM, BORELLUM observationes adpersit, ut integram contractionem iste, KEILIIUS vim columnæ sanguineæ per aortam pulsæ, JURINUS vim definiret, qua cor sanguinem ex suis thalamis exprimit.

ABRAH. ENS de causa motum cordis alternum producente, Ultraj. 1745. 4. varia experimenta in corde animalium vivorum instituit, eam a nervis pendere demonstravit, &c.

GEORG. LUDWIG. de MOUGE' de corde in genere, Basil. 1745. 4.

BRYAN. ROBINSON in nupero L. of food and discharges cordis rationem ad reliquum corpus definivit, idque ostendit in junioribus majus esse tum in avibus, in piscibus minimum.

ANTONII PETIT & de VALLUN ergo an in systole sua cor decursetur, Paris. 1746. 4.

BROWNE LANGRISH in nuperrimo supplemento Phil. Transactionum anni 1747. hypothese de motu cordis alterno protulit, negavit sanguinem causam ejus motus esse, fibras cordis laxatorias dari suspicatus est, phænomena motus observavit.

DANIEL PASSAVANT in Diss. de motu cordis, Bas. 1748. vim, quam cor exercet ad calculum noviter revocavit, non valde magnam esse ostendit, ex subsiliente ad perpetuam docuit referre. Vim stimuli agnovit.

CL. KRUGERUS in nova editione suæ Physiologia multa experimenta ad motum cordis pertinentia citat, quæ WOODWARDO tribuit. In quonam vero Libro existent, nunc mihi quidem non occurrit.

D. BUTTNERUS Regiomonti de corde & pericardio extra corpus pendente an. 1747. Diss. edidit

stet. Qui hos conatus vult persequi, cor coquat, sanguine orbet, pinguedinem aufe-

edidit 4. Germanica lingua cum titulo *beurveys dass ein Kind mit dem aus der brust geu- chsenen herzen leben könne.*

J. J. HUBER de foramine ovali suas cogitationes edidit Casselis 1747. 4. in quas alibi iudicium meum dedi (prog. de for. ov. & valv. Eust.) ubi hoc scriptum tum anatomicis, tum physiologicis erroribus plenissimum esse demonstravi.

J. JAC. ROHT de liquore pericardii, Argentor. 1748. 4.

In SELECT. FRANCOF. de valvulis aortae quaeritur, & concluditur posse tegere ostia arteriarum coronariarum Auctor CL. GIERING.

De pulsu & motu cordis adeo plerique veterum practici scripserunt GALENUS, ACTUARIUS alique, quos in practicis repetemus.

JOH. ARGENTERIUS de calido innato, Florentiae 1566. 4. cum aliis Libellis. *

J. FRID. SCHROETER de natura seu origine calidi innati, genae 1583. 4.

SALUSTII SALVIANI de calore naturali L. II. Romae 1586. 8. *

CAMILLI THESAURI pulsum opus absolutissimum. Neapol. 1594. 4. DOUGLAS *.

PETRUS PAULUS GALLIO de pulsibus. Perusiae 1597. 4. DOUGL. *

ALFONSUS NUNESIUS de pulsibus. Salmanticae 1606. 4. DOUGLAS huc serviat. *

ANTONII MERINDOLI de calido innato & humido primigenio. Lond. 1655. 8. DOUGL. *

POMPEII CAIMI de calido innato. Venet. 1626. 4. Pro GALENO.

JAC. MOEBII disquisitio calidi innati & influentis. Marpurgi 1627. 4. *

SANCTORIUS de SANCTORIUS in suo Comment. ad I. Fen. Avicenna, pulsilogium describit (p. 21. 22. 78. quod C. BARTHOLINUS vidit Probl. VIII. Exerc. IX.) ad differentias motuum aequalium inveniendas excogitatum.

J. HENR. BRONZER de calido innato & principatu jecoris. Patav. 1627. 4. in Tr. de hepate repetemus.

HERMANNI CONRINGII L. de calido innato. Helmst. 1647. 4. Habitare in septo cordis ponit.

CAESARIS CREMONINI de calido innato pro Aristotele adversus Galenum. Leid. 1634. 4.

CAES. CREMONINI l. c. calidum innatum verum elementarem calorem esse defendit.

F. LICETI Responsa septem quaesitis de motu sanguinis. Utini 1647. 4. *

PAUL. AMMANNI de caloris nativi natura. Lips. 1657. 4.

C. HOFMANNI de calido innato & spiritibus. Francof. 1667. 4.

Non alibi nempe opportunius disponere licuit eos Auctores qui de motu sanguinis, & circulatione, ut vocant, & calore, aliisque cum motu cordis connexis actionibus scripserunt, omissis tamen practicis. Plerique vero recentioris sunt aevi.

Spiritus per pulmones motum in sinistrum cor primus GALENUS vidit & descripsit de usu partium. L. VI. c. 10. 15. ut tamen sanguinem crederet per septi poros imaginarios venire. It. de utilitate pulsus nonnulla L. II. huc spectantia habet, ut anastomosis venarum & arteriarum, tum de facultatibus naturalibus L. III.

ERASISTRATUS experimentum fecit, quod poterat ad circulationem sanguinis facere: ligavit femora & brachia in sputo sanguinis. CELSUS L. IV. c. 4.

ANDREAS VESALIUS non solum septum cordis contra veteres impervium esse defendit (de Corp. hum. fabr. p. 274. 734. 746.), sed etiam CARPENSIS BERENGARIUS ejus poros aegre in homine apparere monuerat in MUNDINUM p. CCCXLI. VESALIUS autem de vera circulatione non obscuras cogitationes aluit, sanguinem nempe, certe sub quibusdam conditionibus ex ramis venarum in truncos venire (p. 443.)

G. FALLOPIUS arteriam infra vinculum non pulsare, neque eam ergo vim insitam esse expertus est (de part. simil. p. 170.), de quo etiam experimento HARVEIUS egit & R. VIEUSSENS in Neurologia.

MICHAEL SERVETUS de VILLA NOVA, GUINTERI Andernacensis discipulus (quem iste in praefatione suarum institutionum edit. Basil. VESALIO laudat) GALENI sententiam de sanguinis motu per pulmones ornatus proposuit in L. V. de Trinitate, cujus fragmen-

tum

auferat, & suspendat in aqua tepida, & aquam continuo renovet, hocce modo
pergat

tum apud J. DOUGLAS, & apud S. R. MOSHEMIUM exstat in *anderuweitigem versuch einer Ketzer historie*. Helmst. 1748. 4. Hic homo omnino non partem sanguinis ex dextro corde egressi, sed eum sanguinem in pulmone ad flavedinem erectum, & pro spiritu vitali præparatum, omnem ad sinistrum sinum venire scripsit ob arteriæ pulmonalis molem nimiam, quam pro nutriendo pulmone sufficeret.

REALDUS COLUMBUS eam circulationem, quam voco *minorem*, & ipse confirmavit in *de re anatomica* L. VII. p. 177. argumento sumto & a magnitudine nimia arteriæ pulmonalis, & a sanguine, quem in pulmonali vena repperat, cum secundum GALENUM spiritus solum deberet continere.

Ad Auctores, qui circulationem minorem receperunt, pertinet etiam CASP. PEUCER *de variis divinationis generibus*, p. 245.

Ea ipsa sententia ante HARVEIUM frequenter recepta est. Eam JULIUS CÆSAR ARANTIUS satis veram esse vidit, cum poros septi cordis negaret, arteriæ pulmonalis magnitudinem observaret, & valvularum venæ pulmonalis situm, qui nihil a corde transmitteret *Observat. anat.* XXXIII. non tamen ausus est viam ingredi, quam certam esse videbat. Eam circulationem minorem receperunt etiam J. VALVERDO (qui COLUMBUM citat auctorem L. VI. c. 14.), FELIX PLATERUS p. 114. L. MERCATUS L. *de pulsu* (apud C. B. *Theatr.* p. 224.), ADRIANUS SPIGELIUS p. 278. JOH. LANGIUS apud FOLIUM. PIGAFETTA Falloppii Discipulus apud MONAVIUM in *Ep. Craton* L. V. p. 313. C. HOFMANNUS *Apolog. pro Galeno* p. 117. *de Thorace* p. 45. *de usu partium* p. 107. qui & ipse septi foramina rejecit *Apolog.* p. 121., & H. CONRINGIUS in *Diff. de calido innato*, Leidæ jam an. 1627. edita n. 20.

Denique ANDREAS CÆSALPINUS non circulationem solum minorem docuit, ut notissimum, (in Q. *Peripat.* V.) sed in somno sanguinem per venas in cor redire, uti in vigiliis per arterias exierat, docuit in *Quæst. Medica.* 17. L. II. p. 234. argumento a ligatura venarum in venæ sectione sumto. In L. I. c. 2. *de plantis* alimenta per venas ad cor venire dixit. Verum id possis Galenice interpretari. De LEONHARDO BOTALLIO diximus. Ejus liber *de via sanguinis a dextro in sinistrum cordis ventriculam* recusatus est Ven. 1690. 4.

Verum anno 1628. GUILIELMUS HARVEIUS Francofurti *Exercitationis Anatomica de motu Cordis & Sanguinis*, vitiosam satis & imperfectam editionem dedit in 4. quo non minorem solum circulationem, sed majorem per omnia corporis vasa, in summam lucem constituit. Argumento usus est ligaturarum quas venis injecerat, valvularum, &c. Recusa est Leid. 1739. 4.

Cum vero JOHANNES RIOLANUS varia contra HARVEIUM moliretur, respondit vir magnus, & prioribus disputationibus duas alias addidit, quibus difficultates RIOLANI solveret, CARTESII admistas vero scorias refutat. Hæ tres Dissertationes infinitis locis recusæ sunt sub titulo *de motu cordis, & sanguinis circulo exercitationes anatomicae* III. Lond. 1660. 8. Roterodami 1649. 12. 1659. 1661. 1671. 12. & nuper procurante ALBINO, Leid. 1736. 4. tum Anglice sub titulo *anatomical exercitations concerning &c.* Lond. 1653. 8.

Verum, ut fieri solet, contra novam veritatem plurimi Medici insurrexerunt. Et alii quidem unice HARVEIO laudem inventi studuerunt eripere. Ergo ad HIPPOCRATEM retulerunt circulantis sanguinis cognitionem plurimi, & antesignanus J. ANTONIDES *van der LINDEN*, cujus *Hippocrates de circulatione sanguinis* 29. disputationibus prodiit Leidæ 1659. seq. Alia etiam & alia loca subjecerunt nuperi, PHILIPPUS JACOBUS HARTMANNUS *de perit. vet. Anat.* p. 62. JOH. ab ALMELOVEEN *invent. nov. antiq.* p. 241. PETRUS BARRA *Hippocrate de la circulation du sang & des humeurs*. Lyon 1682. 12. *. CAROLUS DRELINCURTIUS in *epimetris ad diff. de lienosis*. CAROLUS PATINUS *circulationem sanguinis veteribus cognitam fuisse*. Patav. 1685. 4. * LAURENTIUS HEISTERUS in *p. an sanguinis circulus veteribus incognitus fuerit*. Helmst. 1721. 4. conf. *Annal. Jul.* I. p. 146. P. REGNAULT *Origine antique de la Physique moderne*. Entret. I. p. 156. 157. NEMESIUM excitant alii, ut ipse doctissimus J. G. BERGERUS *de natur. hum.* p. 55. & Editor Oxoniensis Nemessii.

pergat per aliquot septimanas; ita fit glomer vasorum, pinguedo enim sensim
Ccc tolli.

Mihi vero omnino visum est, & HIPPOCRATEM & GALENUM & veteres aliquos aliquam habuisse suspicionem de sanguinis ex minimis arteriis in venas commearu, sed eum motum reciprocum statuisse, & in universum iis vocibus esse usos, quas de circulatione majori nemo ante HARVEIUM intellexerit.

Inter primos, qui HIPPOCRATI circulantis sanguinis cognitionem tribuerent, fuit J. NARDIUS Noët. medic. X.

Huc etiam referendus est G. C. STENZEL de vestigiis circulationis sanguinis apud HIPPOCRATEM, VVittemb. 1731. 4.

Denique NATALIS FALCONET in libello, qui cum ejus opere des fevres prodiit, ostendere conatur ex voce πάλιστον, ex tardiori reditu (δειχόμενον) sanguinis refrigerati, aliisque boni senis locis, eandem gloriam Coo vindicare nuper anno 1723. conatus est.

Alii ad F. PAULUM SARPI retulerunt inventum, ut ULMUS, WALÆUS, THOMAS CORNELIUS, personatus ille LEONICENUS, sive PECHLINUS fuerit, sive DRELINCURTUS Metamorph. Apollin & Æsculapii. p. 76. (qui longam historiam narrat ut habuerit a SARPIO HARVEIUS), J. VESLINGIUS in Epist. a BARTHOLINO editis Cent. 1. Ep. 26. (qui etiam codices manu SARPI scriptos citat). Alii ad THOMAM HARRIOTUM referunt, ut LINDENIUS l. c. n. 19L.

Verum de iis omnibus viris nemo experimenta citat, per quæ ad cognoscendum verum pervenerit. Et, si valvulæ a FABRICIO inventæ PAULO oculos aperuerunt, cur demum ipse FABRICIUS tanto SARPIO vicinior, nihil de sui inventi splendida utilitate suspicatus est? Et J. DOUGLAS ex Patre FULGENTIO Auctore vitæ SARPI demonstrat, non circulationem sibi SARPIUM tribuisse, verum valvulas. Aliqui, ut CL. SENAC (Essais de Physique), p. 416. suo HON. FABRO circulationem sanguinis tribuunt, anno 1638. publica thesi defensam, duobus annis antequam HARVEIUS scripsisset (FABER ipse de homine Lib. I. prop. 2.) Verum boni viri ignorant HARVEIANUM scriptum decem ante annis, anno nempe 1628. prodiisse.

Ad auctores qui SARPIO circulationis sanguinis inventionem vindicare student, pertinet CL. GEMMA, sed neque iste ullum idoneum pro SARPIO testimonium protulit, cum de ea lite in Italia letterata disquireret, p. 696.

PETRUS LAUREMBERGIUS in Collegio Anatomico. Rostoch. 1636. 4. circulationem sanguinis pro re nova describit, & fuse tuetur nullo inventore nominato.

Alii, ut WEDELIUS de circulatione sanguinis ÆGIDIUM GUTHMANNUM, fanaticum hominem citant, qui in offenbahrung göttlicher Majestät circuli nomen habet.

Alii HELFRICUM DIETERICUM habent, qui anno 1622. vel 1624. de circulatione cum CASPARE HOFMANNO egerit.

HELFRICUS DIETERICUS, quem aliquos pro inventore circuli sanguinis habere diximus, deque eo cum C. HOFMANNO egisse, unicus in vindiciis adversus TACHENIUM sibi testis est, ubi ex vivis canibus anno 1622. conatum fuisse probare repugnanti HOFMANNO.

Alii refutaverunt omnino novum inventum, & vel veteres theorias defenderunt, vel luce nova abusi, proprii aliquid loco HARVEIANI inventi subicere sunt conati.

Primus in HARVEIUM arma movit JACOBUS PRIMIROSE. Ejus viri sunt Exercitationes & Animadversiones de motu sanguinis contra HARVEIUM Londini 1630. 4. Leid. 1639. 4. & Animadversiones in Walai disp. quam pro sanguinis circulatione Harveiana proposuit. Amstelod. 1639. 1641. Leid. 1656. 4. & Observationes in theses quas pro circulatione sanguinis defendit Henricus le Roi. Leidæ 1640. 4. 1656. 4. & in antidoto adversus H. Regii venenatam spongiam. Leid. 1644. 4. varia objecit. Ligata vena plus ex parte fluere quæ cordi est propior, quam ex ea quæ remotior, &c. Pleraque tamen theoretica sunt & captiunculæ.

ÆMILIUS PARISANUS de cordis & sanguinis motu lapidem lydiu edidit Venetiis 1635. fol. recusum Leidæ 1693. 4. Sed eum Auctorem etiam tunc nemo legebat, quando de novo invento adhuc certabatur.

C. HOFMAN in Apolog. pro Galeno L. II. Sect. IV. c. 48. in digressionem ad circulationem

collitur, & fibræ extricantur a se mutuo, unde clarissima & distinctissima cordis oritur idea.

nem sanguinis, Parisiis edita 1647. 4. & cum novis Opusculis Riolani recusa 1652. 8. Sanguinem non moveri, ut aqua in fluvio, sed fluctibus excitari, ut mare, docuit Apolog. pag. 106.

ECCARDI LEICHNER de motu sanguinis exercitatio antiharviana. Arnstad. 1647. 12. Jen. 1653. 12. Amstelod. 1665. 12. (LIND.) Cavilli sunt, sumti a tormentis pereuntis animalis, quæ motum sanguinis confunderent.

J. RIOLANI Opuscula anatomica. Londini 1649. 4. habent novam doctrinam de motu circulatorio sanguinis in corde. Notas in duas J. Wallai Epistolas de circulatione. Hæc etiam cum Anthropographia exstant. In novis Opusculis, Parisiis 1652. habentur notationes ad primam Exercitationem Harveii: Responsio ad duas exercitationes anatomicas postremas. Not. in Tr. Gassendi de circulatione sanguinis: admonitio ad P. Guiffard de officio cordis novo. Defensio adversus inquisitionem Slegelii de motu sanguinis. Argumentum a varicibus sanguinis motum non penitus intercipientibus, ante PISONEM protulit de circulat. sang. p. 576. Arteria ligata venam incisam tamen sanguinem suppeditare, ligatura injecta sanguinem nunquam non fluere, ut oporteat remove vinculum, & alia objecit. Novam autem circulationem docuit, ut in vena portarum quidem sanguis maneat, nec ad cor redeat, septum cordis sit pervium, & sanguinem a dextro cordis in sinistrum transmittat.

HIERONYMUS FRANZOSIUS de motu cordis & sanguinis in animalibus pro Aristotele & Galeno adversus neotericos scripsit L. II. an. 1651. editos. *

NICOLAI PAPINI cordis diastole adversus Harveianam circulationem defensa. Alençon 1653. 4. *

FRANCISCI ULMI in circulationem sanguinis Harvejanam Exercitatio anatomica. Augustoriti Pictonum 1659. 4. *

Minabatur etiam se contra circulationem scripturum M. AUR. SEVERINUS Ep. VII. apud SEGERUM post. l. de Lympha Bartholiniana quiditate, ei parum tribuebat GUIDO PATINUS.

Ab eo tempore rari fuerunt, qui HARVEIO obloquerentur. FRIDERICUS SCHLLING an. 1679. Basileæ contra HARVEII circulationem disputavit.

RAYMUNDUS RESTAURAND in Zodiac. Med. Gal. P. V.

LUDOVICUS HANEMANNUS de motu cordis. Kiloni 1706. 4. * Dicitur apud STOLIUM contra circulationem scripsisse.

HOMOBONUS PISO in ultione antiquitatis, Cremon. 1690. 8. & in nova disquisitione de circuitu sanguinis, Patavii 1726. 4. objectiones partim suas, partim RIOLANI reposuit, & etiam cum MORGAGNO experimenta faciente ausus est contendere. Objicit venena aliqua aliis celerius necare, quod fieri non oporteat, si communi via ferantur: lac injectum venæ brachii in brachium esse relapsum: venam supra ligaturam sanguinem dedisse, & inter duas ligaturas. Reliqua fere ex theoriis sumsit.

PETRUS ANTONIUS de MARTINO in responsione ad trutinam medicam MUSITANI tractavit de morbis corporis humani & impugnavit HARVEIANAM sanguinis circulationem Neapoli 1699. 4. *

JOS. BROWNE in lecture of anatomy against the circulation of the blood. * Annum non novi, sed hujus sæculi esse apparet ex libello Discourse concerning the circulation of the blood in Answer to D. BROWNE's lecture by J. GARDENER. Lond. 1700. 4. (HARLEY).

Denique LYSERUS in primis Systematis novi medici lineis. Argentorati 1722. 4. circulationem sanguinis in dubium revocare sustinuit, & in BORELLI calculos de motu cordis animadvertit.

Contra veritatem agnoverunt, & novum de motu sanguinis venosi inventum receperunt meliores animæ.

Inter primos fuit ROGERIUS DRAKE in disp. de circulat. naturali. Lond. 1643. 4. 1656. 4. & vindic. contra animadversiones Primirofii in Theses suas. Lond. 1641. 4. * Leid. 1647. 4. * 1656. 4.

Tum JOHANNES WALÆUS primus SYLVIO monente circulationem sanguinis in cathe-
dras intulit (*BARTHOLIN. Orat. X.*) Ejus Epistola I. & II. de motu chyli & sanguinis
ad Bartholinum, & sola cum Bartholiniana Anatomia edita est Leidæ 1641. 1643. 1651.
1669. 1670. 8. Hag. 1656. & 1663. 8. * Hæ duæ & cum SPIGELIO Epistolæ plenæ sunt
experimentis egregiis, vinculorum ope factis, fere in omnibus totius corporis venis. Ad
PRIMIROSII etiam objectiones respondet.

F. SYLVIVS ex primis circulationem se docuisse & ADOLPHUM VORSTIUM convicif-
se testatur *Disp. V. n. 15.* Hypothesin idem adhibet in *Disp. VIII.* ad causam motus cor-
dis.

GEORGIUS ENT in *Apologia pro circulatione sanguinis.* Lond. 1641. 8. & in operibus om-
nibus præter rationes pro veritate inventi, laudem etiam primæ demonstrationis HARVE-
JO adseruit, non tamen absque anachronismis. Idem Biolychnium defendit.

JOHANNES TRULLUS, eximius Chirurgus & lithotomus, Romæ novam veritatem ex
primis defendit. SINIBALD in *Geneanthropia.* p. 523.

HENRICUS REGIUS in *Thesibus* Ultrajecti defendit CARTESIANAM de motu sanguinis
hypothesin. IDEM scripsit spongiam qua eluuntur sordes animadversionum JACOBI PRIMI-
ROSII adversus *Theses de circulo sanguinis in Academia Ultrajectina nuper disputatas.* Lei-
dæ 1640. 4. 1656. 4.

HERMANNUS CONRING de sanguinis generatione & motu naturali. Helmstadii 1641. 4.
Leid. 1646. 8. Pro HARVEJO.

JOH. MARQUARD SLEGEL de motu sanguinis commentarius. Hamburg. 1650. 4. RIO-
LANI circulationem refutat.

V. FORTUNATUS PLEMPIUS dubitabat de circulatione apud BEWERWYCHIVM de Cal-
culo & contra scripserat in *fundamentorum Medic.* editione I. an. 1638. Sed idem victus a
vero in nova editione, II. *Fundamentorum*, anni 1644. & passus est errorem, & experi-
menta pro HARVEJO attulit p. 113. & refutavit poros septi cordis, quos O. HEURNIVS
& FALLOBURGIUS stylo fingeant (*DIEMERBROEK Anat. p. 278.*), & retinebat ROLFIVS,
& ipse BARTHOLIVS, p. 378. 401. *Anal.* IDEM jam an. 1642. Jenæ primus cir-
culationem defendit in dissertatione, cujus respondens fuit J. T. SCHENK (Schenkio te-
ste in *Schola part. p. 57.*)

PETRUS GASSENDUS in *L. de sanguinis circulatione*, qui prodiit cum ejus *Philos. Epi-
curea.* Lugduni 1649. fol. a me nondum lectus est.

RENATUS des CARTES de motu cordis & circulatione sanguinis inter Epistolas a JOH.
BEVERWYCK editas, Roterod. 1665. 8. Cordis quidem motum habet erroneum, cum in
diastole sanguinem exire doceat. Reliquam tamen circulationem recepit. In *L. de formato
feru* eadem habet, & calorem innatum cordis adfirmat.

JACOBUS DE BACK de *Corde.* Roterod. 1648. 1659. 1660. 1671. 12. &c. Cartesium &
Biolychnia refutat, cæterum de bile & succo pancreatico infelicem theoriam habet, neque
valde scio, quomodo nervosi nomen adeptus sit.

JOHANNES PECQUETUS in *Exper. anat. T. BARTHOLIVS*, CAROLUS DRELINCOURT
in *Canicidiis*, J. G. BERGER, P. DIONIS, JOH. PHIL. VERHEYEN, R. VIEUSSENS neu-
rograph. p. 26. experimenta in vivis animalibus pro demonstrando sanguinis per venas re-
gressu proposuerunt.

GUILLIELMI de HENAUT *Clypeum*, quo tela in PECQUETI Cor a Car. le Noble conjecta
infringuntur. Rothom. 1655. 12. * non legi, & forte pertinet ad ductum thoracicum.

MAURICIUS HOFMANNUS de transitu sanguinis per medium cordis septum impossibili con-
tra Galenum & Riolanum. Altd. 1659. 4. & EJ. de transitu per medium pulmonem facili
eodem anno B. PLATN.

Denique contra ultimum hostem PRONEM & MORGAGNIUS experimenta fecit, & re-
spondit J. JACOBUS MANGET in *Bibl. an.* p. 955. & experimenta etiam protulit.

Etiam nunc tamen teste CL. HIFFERNAN of man Hispani non valde credunt circula-
tioni sanguinis, & vidit ipse medicum, qui ad demonstrationem responderet, videri si-
bi, neque tamen se credere, p. 42.

Inventionis vero gloriam HARVEJO adseruit ARCHIBALDUS PITCARNE in *Diff. de In-
ventoribus*, & Hippocrati non fuisse notam circulationem ostendit ANDREAS OTTOMA-
RUS

RUS GOELICKE *Period. V. Hist. Med.* p. 498. & DANIEL CLERICUS *histoire de la Médecine*. p. 127. G. C. SCHELHAMMER in *Physiolog.* p. CLIV. Legi etiam potest ILL. C. J. TREWHIS de *diff. hom. nat. & non nat.* p. 60.

Ad historiam inventi HARVEIANI legi etiam potest P. GERIKE de *circulatione sanguinis*, Helmstad.

Modestissimum vero virum fuisse HARVEIUM ipse, qui tamen contra novum inventum scripsit, testis est J. NARDIUS *Noct. genial.* p. 274. conf. p. 54. Bustum HARVEI in coll. CUTLERIANO consecravit R. MEAD *tour through great Brit.* II. p. 435.

ALEX. de VICENTINIS de *calore per motum excitato atque de cœli influxu*. Veronæ 1664. 4.

In GUALTHERI CHARLETON *Oeconomia animalis*. Lond. 1658. 8. Amstelod. 1659. 12. quæ eadem pro titulo habet *of nutrition and voluntary motion*. Lond. 1659. 4. & in *inquiry into humane nature*. London. 1680. 4. habetur etiam de *circulatione caput*. Flamulam vitalem defendit.

FRANCISCI FOLLI *recreatio Physica, in qua de sanguinis & omnium viventium analoga circulatione differitur*. Florent. 1665. 8. PLATN. *

M. MALPIGHIIUS in *Epist. II. de pulmonibus* primus microscopio usus est ad demonstrandam sanguinis circulationem.

PHILIPPI JAC. SACHS *Oceanus macro-microcosmicus*. Breslav. 1664. 8. Compilatio.

ANT. DEUSING de *motu cordis & arteriarum*. Groning. 1663. 12. jam dictus est. IDEM in *exercitationibus physico-anatomicis*. Groning. 1660. 12. egit etiam de *sanguificatione*, &c.

HENRIC. MEIBOM de *motu sanguinis naturali & praternaturali*. Helmstad. 1668. 4.

R. LOWER de *motu sanguinis caput* habet lectu dignissimum.

GUALTHERUS NEEDHAM *Biolychnium* refutavit, quod J. HOLST (apud BARTHOLINUM de *luce hominum & brutor*. Hafniæ 1669. 8.) adhuc defenderat.

Sic etiam C. BARTHOLINUS de *Diaphragmate*, de humorum motu a fibra motrice, de corde, &c. aliqua capita habet. IDEM peculiari figura viscera, per quæ circulatio fit, expressit in *Historia Anatomica*.

J. BOHN. de *circulatione sanguinis*, Lips. 1671. 4.

STEPH. BLANCARD de *circulatione sanguinis per fibras & de valvulis in iis repertis*. Amstelod. 1676. 12. Hypothesis est, refutat tamen fermentationem cordis.

CHRIST. JOH. LANG de *circulatione sanguinis*. Lips. 1680. 4. Disp.

J. ALPH. BORELLUS in L. II. de *motu cordis*, uti jam monuimus, deinde de *motu sanguinis ab arteriis*, de *ratione impetus cordis ad resistantiam arteriarum*, aliisque huc pertinentibus egit.

J. SWAMMERDAMMIUS *Thermometrum* pro addiscendis gradibus caloris ægrorum & animalium proposuit (de *respirat.*), quod deinde inventum insigniter auxit BOERHAAVIUS, & in praxi adhibuit.

R. W. KRAUSE de *fermentatione sanguinis non existente*. Jen. 1682.

ANTON FILIPP. CIUCCI filo d'Arianna... al quale si aggiunge un breve trattato della *circolazione del sangue*, Macerata 1682. 12. *

ANTONIUS de HEIDE in *observationibus*, quæ Amstelodami 1684. 8. & 1686. 8. prodierunt, aliqua ad explicandam mutationem motus sanguinis a venæ sectione experimenta ex vivis animalibus habet.

Cum ANDRÆ SNAPE *Anatomy of a horse* prodiret ejus *Diff. on the motion of chyle and blood*. Nihil valde singularis, nisi quod neget arteriarum venarumque anastomoses.

G. WEDEL *Physiologia pulsus*. Jen. 1689. 4.

LAURENTIUS BELLINI de *urinæ & pulsibus & vena sectione* L. Bonon. 1683. 4. Lips. 1685. 4. Leidæ 1717. 4. In Tr. de *pulsu* physiologiam motus arteriosi habet. In eo de *vena sectione* mutationes a venæ sectione in motu sanguinis ortas ita considerat, ut ejus theoria a plerisque Medicis recepta sit. EJUSDEM *Opuscula ad ARCHIBALDUM PITCARNE*, Pist. 1695. & Leid. 1696. 1714. 4. Huc pertinent libelli de *motu cordis*, & de *motu liquidorum*. In illo aliquam de *motu cordis alterno theoriâ* habet. In isto arteriarum conice decrecentium resistantias, areas & anastomoses arteriarum, harumque effectus considerat. Ubique tragicus, parvus in experien-

periendo, plurimus in admirando, & verbosus demonstrator. Ab eo provenerunt falsæ theoriæ, celeritatem sanguinis in inflammatione augeri, quod pars canalium obstructa sit: plicam quamlibet in vase de velocitate tota liquoris per vas fluentis eam partem deterere, quæ sit ad velocitatem, ut unitas ad plenum numerum, &c.

RAIMUNDUS VIEUSSENS de causa pulsus, de motu cordis experimenta habet. *IDEM* in *Tr. du Cœur* & alibi Cordis fermentationem defendere est conatus.

G. C. SCHELHAMMER de pulsu. Helmstad. 1690. 4. ex impulsu sanguinis & arteriæ figura conica pulsum & ejus adfectiones explicat.

SPOLETUS, quem de *Secretionibus* citabimus, huc etiam pertinet. Retardari sanguinem in minimis & resolvi docet.

G. COWPER in introductione ad anthropologiam & in *Phil. Transf.* n. 285. de circulatione egit, eamque posteriori loco per microscopia defendit.

JACQUES CHAILLOU *Recherches sur l'origine du mouvement du Sang, du Cœur & de ses vaisseaux, du Lait, des Fièvres intermittentes & des humeur.* Paris. 1664. 8. (*HÆNEL. B.*) 1679. 12. 1699. 12. Theoreticus, circulationem, rem tunc novam, defendit, lac ex chylo parari demonstrat, &c.

ANTONIUS van LEEUWENHOEK circulationem sanguinis microscopii ope in animalibus variis, sed piscibus imprimis, magis conspicuam reddidit, motum retrogradum observavit in languentibus, & vasculorum minimorum structuram cylindricam absque valvulis. Ultimo bonus senex eo delapsus est, ut sanguinem in arteriis lente, in venis celeriter moveri, & in istis pulsare docuerit.

In *Phil. Transf.* experimenta microscopica varia huc pertinent.

Calorem animalium in pulmone generari n. 27.

LEEUWENHOEK de circulatione sanguinis. n. 260. (in *Girino*) 263. 316. 319. & alibi.

MOLINEUX *circulatio sanguinis in lacerta visa.* n. 177. *Circulatio etiam in piscibus visa.* n. 280. 281. 286. 288. & denuo 460.

MORTIMER de calore animalium. n. 476. Contra Boerhaavium & systema frictionis scripsit.

GEORGIUS ERNESTUS STAHLIUS magnam vim librorum de motu sanguinis scripsit; ut *vindicia theoria medica vera motus tonici vitalis.* Hall. 1692. 4. de commotione sanguinis, & circulatorio & translatorio motu ibid. 1694. 4.

De Mechanismo motus progressivi sanguinis, quo motus tonici partium porosarum necessitas, utilitas & habilitas ad motum sanguinis ostenditur. Hall. 1695.

De astu maris microcosmici, seu de fluxu & refluxu sanguinis. Hall. 1696. 4. qua etiam theoria febrium continetur.

De commotione sanguinis activa & passiva. 1698. 4.

De motu sanguinis particulari. Hall. 1702. 4.

De motibus humorum spasmodicis. ibid. 1707. 4.

De preparatione artificiali pro circulatione humorum vital. Hall. 1710. 4. parenchyma statuebat, quod vi animæ stringi, & laxari, & sanguinem facilius, ægrius, vario gradu transmittere posset.

De proportionem humorum ad motus. 1711. 4.

STAHLII etiam huc pertinet theoria mortis, in qua a cordis quiete non omnem actionem, imo nec excrementorum quidem expulsionem cessare fatetur.

ARCHIBALDI PITCARNE de circulatione sanguinis per vasa minima. Leid. 1693. 4. (*B. RIV.*) & in opusculis. Refutat figuras pororum ob vices frequentes exclusionis. De circulatione sanguinis in genitis & non genitis, inter opuscula. Aortam esse apicem coni, indeque sanguinem in amplius revera spatium diffundi, hinc retardari recte vidit.

ARCH. PITCARNE de circulat. sangu. in genitis & non genitis prodiit Leid. 1693. 4. EJUS etiam est de causis diversa molis qua sanguis fluit in natis & non natis per pulmonem.

J. W. WEDEL de circulatione sanguinis, Jenæ 1696. 4.

JACOBI GAVET explicatio materia & motus sanguinis, motus cordis & arteriarum, &c. Genev. 1700. 12. cum nova febris idea.

In Academia Regia Scientiarum Parisina, præter ea quæ de foetus circulatione citavimus, extat de circulatione sanguinis Dissertatio an. 1718. & de sanguinis in pulmone circulatione. DUVERNEY an. 1701. Caloris humani mensura REAUMUR 1734. p. 562.

ASCANII MARIÆ BAZZICALUVE *novum systema medico-mechanicum & nova tumorum methodus*. Parm. 1701. 4. Inflammationem, ante **HAMBERGERUM**, explicavit a globulis sanguineis in extrema vasa stipatis, hinc ignem exsudentibus, quem in membrana inclusum gerebant. Velocitatem in vasis minimis majorem esse credit ob minorem diametrum. Barbarus & maculosus.

FRIDERICUS HOFMANN *Disp. pulsuum theoria*. Hall. 1702. **EJUSD.** *Disp. de causa caloris naturalis & praternaturalis*. ibid. 1699.

PETRUS MATTHÆUS *Consentinus in animadversionibus physico-medice*, Neapoli 1704. 4. historiam etiam habet viscerum hæmatopoiëticorum.

ALEXANDRI THOMSON *Dissertationes medicae*, Leidæ 1705. 8. In *Diff. I. de moru quo renituntur canales in fluida corporis animalis*, inquit in causam motus in vasis tenuioribus, & eum arteriis adscribit, non cordi.

JOHN FLOYER *the physicians pulse watch*, London 1707. 1710. 2. vol. Venet. 1715. 4. sub titulo *orivolo del polso*, 4. Etsi credulus acido & temperamentis antiquorum, utilis tamen Auctor, multo labore pulsuum numerum definivit in variis, ætate, senio, temperamento, hominibus, vario tempore diei, in animalibus, in morbis variis. Experimento etiam demonstravit, quod sanguis in arteriis pulsus, in venis continuo fluxu moveatur. Aliqua de pulsu etiam habet in *Gerocomico*.

Aliqua etiam de pulsu habet **WAINRIGHT** in *Tr. de nonnaturalibus*.

A. RUDIGER *de reditu sanguinis mechanico per vices*. Hall. 1704. 4.

Ipse **PRÆCEPTOR** in *Diff. de ratiocinii mechanici usu*, circulationem sanguinis in Rana & retrogressionem observavit. De calore animali in *Chemia* egit.

Apud **GEORGIUM BAGLIVUM**, jam excitatum, reperitur *Systema de alterna vi cordis & duræ matris, oscillatione solidorum, vi arteriarum in movendo sanguine (de fibra motrice)*.

G. FRANK in *anastomosi recta*, circulationem in visceribus singulis & in toto corpore consideravit. Sed nondum legisse contigit.

D. SANDRIS in *Libello de sanguine citato* aliqua etiam de velocitate sanguinis theoremata habet.

JAC. FINKENAU *de pulsu*, Regiom. 1706. 4. Vidit cor pericardio destitutum.

CHRIST. WARLIZ *valetudinarium senum Salomoneum in quo itinerarium sanguinis microcosmicum seu circulus sanguinis notus detegitur*, Lips. 1708. 4. * Circulationem a **SALOMONE** describi contendit.

JACOBI KEIL pleraque huc pertinent, in *account of animal secretion*, &c. Lond. 1708. 8. Prima dissertatio agit, de celeritatum decremento in sanguine, quæ oriuntur a ramorum magnitudine, qua truncos superant. Inde a tarditate nata attractiones partium similes, ad secretionem præparant. In alio *Libello* habetur de copia sanguinis calculus, quam mire augeat **KEILIUS**, supponendo membranas vasorum ex vasis fieri minoribus. In *Lib. de velocitate sanguinis* quærit, per experimenta, & observato saltu arteriosi sanguinis, celeritatem, qua sanguis uniformi celeritate spatia percurreret, si eam retineret quam a corde accipit. In altera editione Londini 1717. 8. edita, cujus titulus, *essay on several parts of animal œconomy*, & Leidæ 1725. recusa est, auctus est tractatus de velocitate sanguinis, & vis cordis æstimata, tanquam pondus cylindri fluidi, cujus basis orificio cordis æqualis, altitudo dupla est lineæ, a cujus longitudine descendens sanguis eam celeritatem adquisivisset, qua ex corde fluit. Ita ad paucas uncias cordis vim æstimat, quia molem resistentiarum minuit. Hic etiam statica accessit.

J. GEORG. a BERGEN *de circulatione sanguinis*. Francof. Viadr. 1709. 4.

J. MARIA LANCISIUS in *Dissertatione de Secretione*, & in *Lib. de corde & aneurismatibus*, utique consuli meretur.

NICOLAUS CRESCENTIUS (*Cressenzio*) in tractatu physico-medico *de februm ratione*, Neapoli 1711. 4. *de corde & pulsu* egit, & non inutiliter vidit, arteriarum motum peristaltico similem esse, ut prope cor incipiens sensim ad extrema vasa pergeret.

S. DURY *de motu vitali*, Leid. 1711. 4.

J. SAM. a BERGER *de transitu sanguinis per vasa minora*. VVittemb. 1713. 4.

D. SIEVERT *de morbis a motu humorum circulatorio abuto oriundis*. Basil. 1714.

WEDEL

WEDEL de circulatione sanguinis, Jenæ 1714. 4.

M. ERN. ETTMULLIER de circulatione sanguinis in fœtu, Lips. 1715. 4.

P. SENAC in magno opere de corde plurima huc nova adtulit & arteriis magnam partem motus progressivi sanguinis tribuit, calculos CL. JURINI & aliorum refutat, agit de secretionibus, retardationibus sanguinis, &c. Respondit CL. JURINUS in *Lettre a M. BUFFON ou réponse a quelques censures de M. SENAC*, qua ostendit verba sua a P. SENAC, mathematicum ignaro, in malum sensum detorta esse, & varios errores ab eo commissos.

G. FRANK diapedesis restituta. Hafn. 1716. 4.

F. HOFMANNUS in physiologia sua de motu humorum capita habet aliqua, & celeritatem in minimis majorem admittit.

GEORG. ANDR. ORLOVIUS de motu sanguinis in arteriis & venis geometricè determinato. Regiomont. 1718. 4. (PLATN.)

G. A. ORLOVIUS l. c. BELLINIANO more celeritates sanguinis & pressionis in cor & arterias definit.

P. ANTONII MICHELOTTI Lib. de separatione fluidorum totus huc pertinet. Multa in KEILIO & PITCARNIO correxit, aliaque recepta in calculos vi motrice Leibniziana emendavit, consideravit vim contractilem arteriæ, sanguinem non in lineis, sed vorticosè per vasa fluere contra BELLINUM monuit.

GEORG. CHEYNE a theory or account of acute and slow fevers. London 1722. & alias. Belliniana theoria est, velocitatis in obstructione auctæ ex minuto canalium numero. Vim mercurii a pondere specifico explicat; robur animalis a copia sanguinis unice deducit.

J. GOTTLÖB NEUMANN vom Umlaufe des geblütes. Dresd. 1728. 8. *

A. HELVETIUS de l'Oeconomie animale. Boerhaavianam theoriam inflammationis habet ab errore loci, & vasa minorum generum.

SENAC in *Essais de Physique* in nova editione multa habet huc facientia, & imprimis contra systema derivationum Bellinianarum pugnat. Parum nempe omnino valere omnes vel revulsiones, & derivationes, ob valde parvam celeritatem sanguinis in vasis minimis. Facto ostio sanguinem non facilius effluere credit, quod sæpe ligatura sit opus. Verum, qui vasa replevit unquam, novit insignissime augeri celeritatem illabentis liquidi, si alicubi vas recipiens pertusum fuerit.

JOH. TABOR in *exercit. medicis*, de motu quidem cordis jam excitatus est. Circulationis velocitatem etiam æstimat, & pressionem sanguinis in valvulas aortæ consideravit.

J. B. BIANCHI in *Dissert. de impedimento circulationis sanguinis* in genere habet affectiones canalis conici ab illisionibus particularum sanguinis.

J. GODOFREDI ARNOLDI de vi viscerum in fluida. Regiomont. 1726. 4. Vim considerat, quam contracti canales cylindrici & conici in sanguinem exercent.

J. de GORTER in Lib. de secretionibus animalibus, de perspiratione & alibi, varia Boerhaaviano fere modo, philosophatur. Generari calores unice docet in solidis se alterne contrahentibus & laxantibus.

THEOPHILUS LOBB in Lib. de februm curatione Anglice edito. Lond. 1734. 8. de calore animali multa habet, fere ad Boerhaavii modum, & de effectibus venæ sectionis simpliciter & dilucide agit.

STEPHANUS HALES princeps hic Auctor, ob experimenta subsultuum sanguinis ex arteria vivi animalis exeuntis, traducta ad æstimandam celeritatem, & vim cordis; tum ad observatam in pulmone sanguinis circulationem. In C. I. *vegetable statics* calorem animale æstimavit.

JURINUS in locis, quos de motu cordis excitavi, etiam celeritatem sanguinis in pulmone, vena cava, & alibi æstimavit.

TH. MORGAN in *philosophical principles of medicine*. London 1725. 8. plurima huc pertinentia habet, & cum ROBINSONO passim pugnat. Arterias successive contrahi secundum seriem appulsuum sanguinis, recte, nisi fallor docuit. Æstimavit decrementa velocitatum in vasis minimis Keiliano more.

An essay on the transmutation of blood, Lond. 1725. Causam caloris sanguinis in Chymia quærit.

In Actis Petropolitanis, Vol. VII. VIII. CL. WEITBRECHT agit de cordis vi in sanguinem arte-

arteriosum, eamque in principio arteriarum exstingui dicit, secretionem vasorum capillarium negat, quia plena sunt. Tubum æquicrurum *GUILIELMINI* refutat. De pulsu egit, & in eo arteriam non unice dilatari, sed situm mutare inquit. In Vol. V. idem de motu sanguinis per sinus auresque scribit.

G. E. HAMBERGER de *vena sectione*, Jenæ 1729. 4. Negat derivationem per experimenta in canalibus vitreis facta.

J. S. WREEDEN *unterricht von der circulation des Geblütes*. Hannov. 1729. 8.

J. O. WREEDEN olim amici nostri citatus libellus agit de sanguinis in nato & non nato homine circulatione, cum organorum descriptione.

J. B. MAZINUS in *mechanica morborum* ad motum sanguinis aliqua habet, quæ citare potius, quam commendare sustineo.

J. F. SCHREIBER in *Elementis* legatur, Bellini & Boerhaavii discipulus.

LINGUET *an omnes animalium motus ab aëre*. Paris. 1731. Thes.

BRYAN ROBINSON *Tr. on animal oeconomy*. Dublin. 1732. & auctius. Lond. 1738. 8. 2. vol. Tota pars prior est consideratio hydraulica motus sanguinis, & velocitatum, viriumque. Pro fundamento adsumit, omnem velocitatem fluidi esse in ratione composita ex subduplicata ratione vis moventis, & inversa subduplicata longitudinum & diametrorum. Inde vim revulsionum declarat. Experimenta etiam adducit, facta in fistulis mechanicis, quæ sic satis calculo respondent. Pulsuum etiam varietatem consideravit. Quod vero obstructo aliquo tubo reliquam celeritatem augeri, in angustato tubo celerius liquidum fluere scribat, id utique ad eum unum casum pertinet, in quo vis movens ita magna est ut resistentiis abunde sufficiat. In *Tr. of food and discharges*. Londini 1748. 8. etiam aliqua de retardatione in minimis, calore animali & pulsu habet.

B. ROBINSON *animal oeconomy* editio anni 1738. multa aucta habet ad motum sanguinis, pulsum, utilitatem venæ sectionis, cujus potestatem revulsoriam demonstrat. Refutatio *MORGAGNI* fere hydraulica est.

In altera parte tractatus de febribus ad circulationis leges agit de fabrica & vi cordis & arteriarum *CL. HUGO GOIRAIGNE*, fere ad *BOERHAAVII* modum, cujus fabricam vasorum vasculosam & *KEILIANAS* retardationes recipit. Prodiit Monspel. 1730. 12.

In *Edimburg Essays* præter *MARTINII* aliqua inprimis *CL. STEVENSON* in vol. V. P. 2. exstant de calore, contra Boerhaavium, quam putredinoso motui intestini sanguinistri-
buit.

JUSSIEU *an non suus proprius lymphæ, ut sanguini, per corpus circulus*. Paris. 1728.

Auctores qui de venæ sectione nuper scripserunt hic legi possunt.

J. BAPT. SYLVA de *l'usage des différentes sortes de saignée, principalement de celles du pié*. Paris. 1727. 8. Ex principiis Bellinianis revulsionis vires extollit, in pedis venæ sectione contra vitia capitis, contra derivationem vero pugnat, adeoque contra sectionem venæ jugularis. Ea occasione multa physiologica & anatomica intercurrunt. In posthumis operibus, & in altero tomo etiam Dissertatio apologetica habetur de venæ sectione pedis.

In *TREVULTINIS* anni 1729. artic. 92. 97. pro *SYLVA* contra *HECQUETUM* habetur Apologia.

PHILIPPE HECQUET *observations sur le saignée du pié*. Paris. 1724. & alias 8. tum *Prémière & seconde Lettre sur la revulsion*, & III. L. *sur la saignée*, quæ prodierunt cum L. *de la trituration*. Paris. 1730. 8. Laxus in anatomicis & demonstrationibus. Venæ in pede sectionem ex nonnullis, valde flaccidis, principiis physiologicis reprobatur.

CHEVALIER *reflexions critiques sur le Tr. des usages de la saignée*. Paris. 1730. 12. Pro *HECQUETO* contra venæ sectionem pedis, quæ in partes infra cor sanguinem coacervat. Venæ jugularis etiam sectionem defendit. Bellini principia idem recipit.

FRANÇOIS QUESNAY *Observations sur les effets des saignées, avec des remarques critiques sur le Livre de Mr. Sylva*, Paris. 1730. 8. In primis quidem practice scripsit, pro derivatione, & *SYLVAE* paralogismum, quo certum gradum velocitatis sanguinis a venæ sectione subtrahi gratis adsumserat, utique redarguit.

JULIEN MORISSON *Lettres sur le choix des saignées*, Paris. 1730. 12. Opus *CL. SENAC*, de quo in practicis agitur. Revulsionem unice statuit, quæ sanguinem ex minimis vasis in aortam revocat. Derivationem & reliquas revulsiones parvi facit.

R. BUTLER *Essay on bloodletting*. Lond. 1734. 8. Sylvæ principia sequitur & venæ sectionem

nem pedis defendit, jugularis arguit, revulsionem explicat pro diversitate originis humorum arteriosorum, quorum focia venae secantur, vel omnium vel plerorumque. Celeritatem in venis increfcere recte observat.

ROWLAND JACKSON *de vera phlebotomia theoria sanguinis circulationis legibus innixa tentamen*, Londin. 1747. 8. Physiologia fere ad BELLINIANAM sententiam est. In pra-xi secedit, multumque discriminis facit inter sectionem venae ligatae & non ligatae. Vide in Practicis.

BALTHASAR LUD. TRALLES *de vena jugulari frequentius secunda*. Uratisl. 1735. 8. Ex mechanicis illis & facilibus principiis docte demonstrat, venae jugularis sectionem sanguinem congregare in externam carotidem, adeoque utilem esse in congestionibus ad cerebrum.

MARTIN Tr. *de la phlébotomie & de l'artériotomie*. Paris. 1741. 12. Et SYLVÆ & QUESNAY & SENNACI adversarius, in universum tamen docet, accelerari sanguinem in arteria, cujus vena secatur, brachii tamen venae sectionem praefert ex principiis physiologicis, maxime vero arteriae radialis incisionem.

BROWNE LANGRISH in *modern theory of physik*. Lond. 1738. 8. refutat venae sectionem derivatoriam, & revulsoriam commendat. Calorem a sanguine generari defendit. Pulsuum mutationes definit, & investigat causas.

A. VATER & PAUL. HENR. GER. MOEHRING *de inflammationis sanguinea theoria mechanica*, VVittemb. 1733. 4.

J. GEORG. MAURER *de pulsu cordis*, Altdorf. 1738.

J. A. WEDEL *de velocitate sanguinis a statu vasorum diverso dependente*. Jen. 1734. 4. ostendit longitudinem canalium, motum fluidi tardare, flexiones & angulos ramorum nihil valde mutare.

Oeconomy of humane frame mirificam theoriā dedit circulationis sanguinis, in qua cor nihil operetur, sed vires contrariae vim omnem perficiant, hinc chyli adfluentis, inde resistentis atmosphærae.

ANDREÆ PASTA *de motu sanguinis a morte, post mortem* Epist. Bergami 1747. 4. Brevi epistola per experimenta motum considerat, ex pondere ortum, quo post mortem liquida in cadavere moventur.

BARTISCH *de calore corporis humani*, Leid. 1737. 4. Pro caloris in sanguine origine & adfrictu.

DAN. BERNOULLI in *hydrodynamicis* principia tradit, ex quibus velocitas sanguinis in aorta, & vis cordis posset ex saltu observato erui, & celeritates quibus liquor ex cono truncato profilit.

G. MARTIN *de similibus animalibus & animalium calore* L. II. Lond. 1740. 8. Simplex, neque tamen inutilis. In priori quidem Libello unice usus est theoremate, quantitates sanguinis in animalibus similibus esse in ratione triplicata longitudinum, unde varia deduxit; sed in altero qui gradus cuilibet animali naturalis sit, quos gradus caloris animalia ferant, per experimenta certe boni usus explicat. Calorem a frictione deducit. Sanguinem celerius credit fluere & altius salire, quam KEILIUS, sanguinem ubique in corpore æquo gradu celeritatis circumferri adfirmat, cum ubique æque calidus sit.

EJUSDEM *Essays medical and philosophical*, Lond. 1740. 8. In quinto specimine de calore animalium agit, deque gradu quem eorum sanguis motu suo generat, & eo quem ferre possunt. Aves calidiores quadrupedibus, Pisces paulum calentes invenit. In *Edimb.* vol. III. etiam de calore animali egit.

A. F. WALTHER *de erubescens & venarum capitis subitaneo tumore*. Lipsiæ 1739. 4. Ej. Disp. *de sanguine in suo per vasa progressu retardato acceleratoque*, absque anni numero.

P. GERIKE *de circulatione sanguinis*, Helmst. 1739. 4.

EMANUEL SWEDBORG in *Oeconomia animalis* P. I. Amstelod. 1740. valde peculiararia habet. Circulationem per fibras statuit celeriolem, quam in vasis majoribus, & motum accessorium ab arteriis & a corculis cerebri sanguinem ex cordis cavo proprie in ductus carnosos, inde in arterias coronarias, hinc in aortam venire docet; arteriae membranam intimam in venae membranam externam mutari.

J. SEBAST. EDLEBER *de sanguinis circulatione majori. qua fit per aortam & venas cavas*, Dis. VVurzburg. 1740.

MAIQUER *an ab imminuta velocitate sanguinis secretio faciliior*, Paris. 1740.

BERTIN *an causa motus cordis alterni multiplex*, Paris. 1740.

QUELMALZ *de adjumentis sanguinis ad cor regressus*. Lips. 1741. 4.

ABR. FRANCISCUS COL de VILLARS *Ergo a vorticoso sanguinis motu calor*, Paris. 1742. 4.

J. SCHWENKE in *hamatologia* varia habet de calore animali, de dilatatione ramorum lateralium arteriæ ligatæ, novisque adeo truncis nascentibus de pulsuum numeris, febreque naturali vespertina.

ANTONIUS FIZES variis locis, ut in *conspectu Physiologiae L. de Liene*, varia huc pertinentia habet, retardationes motus sanguinis in canale conico a vi, quæ consumitur in figura mutanda, de frictione theses, de ejus incremento in canalibus minimis, de efficacia retardatoria fluxionum, &c.

G. A. LANGGUTH *de circulatione sanguinis specim. II. VVittemb. 1743. 4. & de arteria a motu cordis amulo remota. VVittemb. 1745. 4.*

G. E. HAMBERGER *de cordis diastole a sanguine per venas, &c. Jenæ 1744. 4. statuit a nemine visas fibras dilatatrices cordis.*

G. E. HAMBERGERI etiam disputatio est, qua considerat, *unius pulsationis predicata quatenus est actio*, Jen. 1749. 4.

F. de SAUVAGES in *Theoria febris*, respondente FRANCISCO la MURE, Monspel. 1738. 12. recusa cum HALES *hamastatiks*, & in *Disp. de inflammationis theoria* edita Bourg St. Andeol. 1743. 8. & cum eodem Libro recusa, ex præcipuis huc pertinentibus Auctoribus est. Vim cordis nova causa motus accesserit, frictionum vim, caloris gradus, plurima alia, inprimis in *Diss. de inflammatione* ex novis principiis explicat. Causam pulsus a celeriori progressu sanguinis a corde noviter advenientis, & tardiore præcedentis sanguinis explicat. Eam retardationem in minimis, experimentis confirmat. Denique in *Disp. de vasorum capillarum corporis humani usu*, Resp. le BRUN Monspel. 1747. 8. Sugere vasa minima ex majoribus, experimentis etiam nonnullis adlatis, docet.

J. BARBENES *de circulatione sanguinis in adulto*, Arg. 1742. 4.

J. H. SCHULZ & A. SCHAARSCHMIDT *nonnulla ad motum cordis & circulationem sanguinis spectantia*, Hall. 1742. 4.

J. AUG. LANGGUTH *meditationes de circulatione sanguinis*, VVittemb. 1743. 4. duæ disput.

J. ADAM KULMUS *de circulatione sanguinis*, Gedani 1744. 4.

CHRISTIAN ALB. GOTTH. GRÜNER *de motu periodico sanguinis*, Altdorf. 1745. 4.

GOTTFRIED FERDINAND FOERSTER *de calore animali*, Erfurt. 1746. 4.

J. RUDOLPH. STÆHELIN *de pulsibus*, Basil. 1749. 4. bona disputatio. Ostendit, qua ratione pulsus indicia fallere queant, & corrigi ope respirationis. Vim cordis contractilem derivat a vi electrica ex nervis adfluente, quæ pereat a contactu sanguinis non electrici, & ex eadem causa reparetur. Motum successivum constrictionis arteriarum adgnovit. Agit de vi flatus.

LOESEKE *de motu sanguinis intestino*, Lips. 1745. 4.

CL. G. van SWIETEN arterias in pulsu vere longiores reddi observavit, & retrogressionem ex ramis in truncos.

G. ADAMS in microscopicis suis observationem habet circulationis sanguinis in rana, & distinctionem arteriarum & venarum ab acceleratione in illis solis observata. Sic etiam CHESELDENIUS in nova edit. *Anat. T. 30. f. 2.* piscium circulationem exprimit; & PARSONS in *T. I. f. 3. de motu musculari*, & BAKER in *microscope made easy*. SALMON *de fluxu menstruo*, Monspel. 1745. 8. ex D. FERREIN experimentis docet, quid mutetur in celeritate sanguinis exsecta vel ligata arteria.

LE CLERC *an pulsationis adfectus ab æquabilitate motus sanguinis*, Paris. 1745. Experimentum habet, quo liquor per arterias mesentericas subsultim impulsus per venas continuato ductu rediit. Sic spongia interposita pulsum absorbet. Sed hoc experimentum jam PLEMPIUS habet in *fundam.* & simile FLOYER l. c.

J. A. NICOLAI *betrachtung des puls-schlages*, Hall. 1746. 8. Cum KRUGERO sanguinem arteriosum fortius venoso moveri dixit, quod iste pressione seu mortua vi, ille celeritate quadrata moveatur, nempe vi viva. Pulsus physiologice considerat, & ad paucas species reducit.

R. DOUGLAS *Essay concerning the generation of animal heat*. Lond. 1747. 8. Satis singularis theoria, calorem nempe unice generari in extremitate vasculorum minimorum, ubi contra frigidum aërem fricatur sanguis.

De nutritione, vita, incremento, decremento, morte, cum titulos nullos præfixerit PRÆCEPTOR, hoc etiam loco agamus. Plerasque autem Galenici suas de rore, glutine cambio observationes in scriptis dispersas habent. De iis etiam succis SCHROETERUS scripsit in *Lib. de humoribus*.

HIPPOCRATIS περί τροφῆς obscurus Libellus est, quo vestigia luculenta perspirationis, multo vero magis dubia circulationis sanguinis continentur. Cum H. CARDANI *Commentario* prodiit Basileæ 1582. 8. (B. RIV.)

In citatum HIPPOCRATIS libellum περί τροφῆς Comm. IV. scripserat GALENUS (*de libr. propr.*) Pulchra etiam exstat editio STEPHANI GOURMELENI e Græco in Latinum *versus commentariis illustratus*, Paris. 1572. 8. De nutritione agit, cibo, ejusque vi, formatione fetus, perspiratione, alimentis partium ossiumque, facultate cibum vincente.

ARISTOTELES de proceritate & senectute, de longevitate & brevitate vitæ Libellos reliquit.

PLINIUS, ut in universum rariora varia, ita L. VII. longævus, valde proceros, pygmeos, & alia hujusmodi rariora recenset. IDEM perspicax ante VERULAMIUM vidit, diutius grandescere animalia, quibus longiora sint vitæ spatia.

ALBERTI DURER vier bücher von menschlicher proportion, Norimb. 1528. fol. (B. PLATIN.) Gallice, *Traité des proportions*, Arnhem. 1614. fol. Latine vero Norimb. 1532. fol. Pictorium equidem opus, huc tamen numerandum, quod omnes partium magnitudines & proportionem in utroque sexu diligentissime doceat.

J. CORNARI de utriusque alimenti receptaculis contra quam sentit PLUTARCHUS, Basil. 1544. 8.

Experimenta de reparatione nasi ex cute brachii huc pertinent, quibus fidem denegare non licet, cum tot testes habeant. Nam ALEXANDER BENEDICTUS fuse in *Anatomereparationes* nasi describit, quæ suo ævo vulgo fiebant. BRANCA Siculum, nasos inferere CALENTIUS apud GOURMELENIUM auctor est in *Chirurg.* p. 73. MONGITORIUS eundem BRANCA Siculum, seculo integro antiquiorem TAGLIACOTIO nasorum resartorem laudat, a quo BALTHASAR PAVONUS habuerit, ab eo vero TAGLIACOTIUS LICETUS de monstris. p. 108. sæpe vidit TAGLIACOTII artificia, & FABRICIUS ab AQUAPENDENTE *musc. artif.* p. 95. & similia testatur MOLINETTUS *Diff. anat. pathol.* p. 174. G. F. HILDANUS *Cent. III. obs.* 31. & M. ANTONIUS ULMUS *physiol. barb.* p. 233. qui & ipse eam artem exercuit. Denique SANCASSANUS in *dilucidationibus* p. 154. testis est, Bononiæ TAGLIACOTIO statuum positam esse, quæ nasum, tanquam donum viri, manu teneret. FLAMINIUM vero CRASSUM Calabrum Tigriensem curtorum instauratorem citat M. A. SEVERINUS de *occult. abscissibus* c. 18. JOH. B. CORTESIUS PETRUM BOSANUM Turpiensem auctorem operationis laudat, in cujus familia artificium diu manserit, quod copiose describit *Miscell. Dec. III.* Doctam collectionem locorum huc pertinentium apud PLATNERUM vide *Chir.* 379. 380. Ita olim pinnas & ungues evulsos accipitris insertos comprehendere vidit DEMETRIUS de *curat. accip.* p. 600. 609. & ungues & cornua capis inserta FRANCISCUS REDUS, & VALISNERIUS *Galleria di Minerva* P. VII. p. 151. Exstat etiam de hoc artificio Disputatio J. B. du BOIS an *curia nares ex brachio reficienda*. Parisiis 1742. 4. ubi MOLINETTUS dicitur idem artificium exercuisse.

ANTONII MIZALDI de hominis Symmetria, proportionem & commensurabilitate, Lutet. 1575. 8. *

LUPI SERRANO de senectute & aliis utriusque sexus aratibus & moribus Libri XIV. Ulyssip. 1579. 8. Medici Lusitani carmen.

PETRI LAUREMBERG *Pascompsæ nova, sive pulchritudinis delineatio*, Regiom. 1672. 8. *

F. BACON de VERULAM. *historia vitæ & mortis*, Lond. 1623. 8. Systema fuit, esse in homine spiritum vitalem aere tenuiorem, mitiorem igne, qui sensim avolet, erosus viticidis particulis quibus irretiebatur, mortem vero sequi ubi avolavit. Eum spiritum conservari immittendo impetum vitæ, opio, purgantibus, nitro. Sed per occasionem plurima bona intersperfit Auctor de longevitate hominis & animalium, diætæ laxioris laude, vitæ periodis, &c.

C. BAUHINUS in I. de hermaphroditis historiam gigantum & pygmarum attigit. C. BARTHOLINUS vero de pygmeis scripsit, Hafn. 1628. 8. *

De morte naturali a rigiditate aliqua habet *SANCTORIUS* in *L. de Stat. med.*

Huc *N. HABICOT* *gigantosteologie*, Paris. 1613. & reliqua scripta citata pertinent, eum de ossibus ageremus. Sed fabula omnino fuit *PEIRESCO* teste *vit. p.* 153.

F. GLISSON, *GEORGIUS ENT*, *T. WILLIS*, *G. CHARLETON* & reliqui Angli ejus ævi, novam theoriam nutritionis introduxerunt, nempe succum nerveum alere. *T.* etiam *CORNELIUS* in epist. ad *GLISSONIUM* & *WILLISIUM* sanguinem non alere docuit.

ALOYSII ALBERTI de *nutritione*, *augmento* & *generatione* Disp. Venet. 1627. 4. * *DOUGL.*

GABRIELIS NAUDÆI Quæst. II. *an vita hominis hodie quam olim brevior* Cesenæ 1634. 8. * sed exstat apud *BEVERWYCH*.

J. v. BEVERWYCK de *vita termino fatali* & *immobili*, cum doctorum virorum responsis. Dordrac. 1634. 8. Leid. 1636. 4. 1639. 4. & conjunctim 1651. 4. 2. vol. Collectio opusculorum partim theologicorum, partim medicorum de quæstione, an terminus mortis ulla arte produci possit.

J. v. BEVERWYCK l. c. magis ad theologiam & fati naturam pertinet, quam ad rem medicam.

Cum *JUL. CÆS. CLAUDINI* *Responsionibus* & *consultationibus* prodiit *FLORII BERNARDINI* *brevis exercitatio de ultimo corporis alimento*, Venet. 1646. 4.

HERM. CONRING de *nutritione hominis*, Helmstad. 1639. 4.

FRANCISCI SANCHEZ de *longitudine* & *brevitate vita* in opusculis, quæ recusa sunt Rotterod. 1649. 12.

MELCH. SEBIZ & *HIER. WELSCH* de *senectute* & *senum statu*, Argent. 1645. 4.

C. NILOE librum de *fermento* & *nutritione* belgice scriptum non legi.

Ervas neues vom tode. 1650. 4. Est historia *Elisabethæ Green*, quæ in theatro anatomico expergefacta, sub cura *VVillisii* sanata est. Legi meretur. Prodiit Anglice Oxon. 1650. 4.

R. CARTESIUS de *formato fetu* causam mortis senilis perspicax vidit, quæ est a porulis excæcatis, qui inter fibrillas sunt, & adeo a portione solidæ fabricæ aucta.

P. GASSENDI de *nutritione animalium*, &c. Lugd. 1649. fol.

J. SIGISMUND ELSHOLZ *anthropometria*, Patav. 1654. 4. Francof. 1663. 8. fere similia ut *DUPERUS* habet, etiam propria industria factas dimensiones. Sexuum diversitatem omisit, & aliqua vana intersparsit.

J. SIG. ELSHOLZ *anthropometria* Germanice etiam prodiit *Meskunst des menschlichen Körpers*, Nürnberg. 1695. 8.

GUIL. CHARLETON *natural history of nutrition, life, and voluntary motion*, Lond. 1659. 4. ex parte recusa sub titulo *inquiry into human nature*. Londini 1680. 4. Tres de nutritione Dissertationes sunt, de vita una.

ANTONII DEUSING de *nutritione animalium*, Groning. 1660. 12. ut omnia Auctoris.

SEPTIMI ANDRÆ FABRICII de *vita humana termino*, Rom. 1666. 4. *

HENR. MEIBOM, de *longævis*, Helmst. 1669.

N. STENONIS de *fabrica testarum* (in *Myolog. Spec.*)

A. Q. RIVINI *Diff. de nutritione*, Lips. 1678. 4.

J. PANCR. BRUNONIS de *liquore nutritio* & *animali*, Altd. 1678. Disp.

F. BAYLE inter *Problemata physico medica*, Tolosæ 1677. 12. edita, etiam de physiognomia egit, & in *Diff. VI.* ibidem editis, de nutritione in sexta *Diff.*

CL. PERRAULT præter *Tr. de nutritione*, qui in *mécanique des animaux* exstat, scripsit de *la régénération des parties* in *Essays* T. IV. in quibus de partibus renascentibus agit, cauda lacertæ, cornu, plumis. Fieri adeo extensione partis abruptæ, prodeuntibus in apricum partibus, quæ latebant.

DUCLOS *sur les principes*, in vetustioris Academiae monumentis. De fibra universali fabricæ animalium, vegetabilium & mineralium fundamento egit.

JOH. GRAUNT *observations upon the bills of mortality*, Lond. 1676. 12. Novam artem creavit, tabulis nempe libitiniariis, quæ Londini auctoritate publica procurantur, usus est ad inveniendos numeros vivorum, parientium, morientium, longævitarum, periculi mortis in varia hominis ætate, rationem periculi morborum, censum civium utriusque sexus, quo mares superant.

WILHELMUS PETTY iisdem usus est, non adeo ad scopum nostrum, quam ad civilem arithme-

arithmeticam. Ab eo tempore plurimi hoc studium sunt imitati. In *BRESLAUENSIBUS* Actis *KANOLDUS*, *KUNDMANNUS* in suis memorabilibus, diaria pleraque.

J. FR. ORTLOB de analogia nutritionis plantarum & animalium, Lips. 1683. 4.

Les proportions du corps humain, mesurées sur les plus belles figures de l'antiquité, Paris. 1683. fol. (J. des Sav.)

CLOPTON HAVERS cum *Osteologia* editus sermo II. paradoxam theoriam nutritionis habet & incrementi, ex succo viscido, quem arteriæ separant, nervi vero motu circa axin suam rotatorio adponant partibus solidis.

Ad longavos, gigantes, & hujus modi *R. PLOT* in utroque opere, descriptionem nempe *Oxfordshire & Staffordshire R. THORESBY* in descr. topographica *Duc LEED*, *OLIG. JACOBÆUS* in *Auctario musæi Regii*. *MARTIN* in descr. insular. occid. *Scotiæ*. *T. BARTHOLINUS* hist. 98. Cent. I. C. III. L. 88. *MORTON* in *Nottinghamshire*. *KUNDMANNUS*, &c.

ARCHIBALDUS PITCARNE solida tantum dilatari neque mutari statuit, & in *BOERII* Dissertatione de excacatione vasorum aliqua habet.

J. BOHN in *programmate* succum nerveum alere, non generari, nec reparari solida, sed unice gluten mutari docuit, quem *KEILIUS* multis argumentis additis, & nutritione in sola dilatatione vasorum posita, & *CHEYNIUS* secuti sunt.

GUIL. COWPER in magno opere *anthropographia* proportionem dedit partium corporis humani.

G. COLE de febribus intermittentibus habet theoriam nutritionis a succo nerveo, lente moto, subeunte in cavernulas inter solidam substantiam interjacentes.

B. CONNOR in *Evangelio Medici* de nutritione partium corporis egit, & primæva stamina negavit mutari, sed repleti, quæ etiam *LISTERI* in *anatom. Exercit. II.* & *KEILII* de quantitate sanguinis est opinio.

In *Journ. des Sav. an. 1692.* de sceletto giganteo 17' 2" relatio habetur.

J. BERNOULLI Groningæ disputationem defendit de nutritione, quæ recusa est in rempe *Helveticis*. In ea per calculum indagat consumptionem corporis, quæ a perspiratione fit, velocitatem mutationum partium vetustarum cum novis. Protrusione nutriri credit, & alimentum ad basin & radicem fibrarum adponi, inde propelli fibram & longiorem reddi, solida reparari adfirmat.

J. MOEBIUS de grandævis, Lips. 1689. disputat. I. & II. & de longævis, ibid. 1689. 4.

J. G. de BERGER in *Diff. de polypo*, *Vittemb.* 1689. & de nutritione 1708. 8. de vita longa 1708. & in *Physiologia*, de nutritione agit. Novas fibras generari admittit & succum nutritium lymphaticum, gelatinosum, exsudantem de poris, effusum in intervalla fibrarum, incrementum cum fibris. Eandem sententiam *RUYSCHII* habet, qui idem vasorum ab ætate diminutionem per experimenta invenit.

J. G. BERGER de succi nutritii per nervos transitu, *Vittemb.* 1695. 4.

C. BARTHOLINUS de triplici corporis alimento ejusque organis *Disp. Hafniæ* 1695. *

Et de vita & nutritione animalium *Disp. ibid.* 1697. B. RIV.

G. FRANK *disquisitio de succi nutritii transitu per nervos expendens*, Lipsiæ 1696. 12. Contra vim nutritiam succi nervei.

G. COWARD de fermento volatili nutritio conjectura rationalis, Lond. 1695. 8. verum nutritionis instrumentum credit esse spiritum volatilem oleosum cum sanguine confusum. *

Ad pygmæorum historiam doctissimus Liber *EDUARDI TYSON* legi debet, quem in historia animalium laudavimus.

In Acad. Parisina.

An. 1699. Senex rejuvenescens. *POUPART*.

Ancylosis universalis & novus tamen callus ex osse efflorescens. ibid.

1706. Sceletus incurvatus *MERYI*.

1709. *GEOFFROY* de novo ventriculo cancrorum, mutatione calculorum, &c. similia habet *C. NEUMANN* in *oper. chemicis* p. 1292. & olim *J. J. WEPFER & HELMONTIUS*.

1712. *REAUMUR* de reproductione chelarum cancri.

1714. *IDEM* de Calabris nasorum reparatoribus.

1716. *IDEM* de ortu testarum.

1717. *IDEM* de unionum formatione.
 1718. *IDEM* de induratione novi thoracis cancerorum, ventriculo, calculis cancri. *Ibid.* lacertus bicaudis.
 1715. *LITRE* de modo nutritionis per poros vasorum.
 1718. De membrana non naturali hydropicorum, & 1723. de earum membranarum productione ex lymphâ.
 1725. *FONTENU* de alterno corporis incremento & decremento. Sed *CL. MORAND* in Domini *PLANQUE* Bibliotheca medica eam Dissertationem sibi tribuit, quam *AB. FONTENU* unice ornaverit.
 1730. *WINSLOW* de eodem incremento & decremento.
 1737. 1739. & 1743. Phænomena animalium rubia pastorum, cura *DU HAMELII*.
 1740. Spina dorsi flexa a sola perpetua fessione. *HUNDAULD* de membrana quæ foramen trepani claudit.
 1744. Puer nimis adultus, sic. 1708. 1736. 1739. 1741.
FRIDERICUS RUYSCHII præter varias observationes decrefcentium ossium, imminutæ maxillæ inferioris, etiam theoriam nutritionis habet, per rorem exsudantem ex arteriis. *Thes. VI. &c.*

In Actis Anglicis.

- N. 44. historia Th. *PARRE* Senis 151. annorum. Eadem extat, una cum dissectione cadaveris, cum *BETTI* de sanguine Libro.
 N. 168. os Frontis giganteum. Conf. de proceris n. 233. 240. 456.
 N. 217. Puella super ætatem adulta. *ibid.* 261. 307. 471. 475.
 N. 221. 228. historia *Jenkinsii* senis annorum 169.
 Emortuales Libelli n. 229. 260. 261. & alibi, imprimis autem 169. 198. ubi *HALLERI* tabulæ habentur ex *Uratislaviensibus* Libellis collectæ.
 N. 306. Anatome hominis 108. Annorum.
 N. 328. de regularitate partium ex duobus sexibus.
 N. 337. secunda dentitio.
 N. 376. anatome decrepiti.
 N. 380. *WASSE & BECKET* de incremento & decremento alterno somni & vigiliæ.
 N. 450. *KERSEBOOMII* calculi aliqui.
 N. 442. 443. 457. ossa rubefacta in animalibus sæcula rubiæ pastis observata a *BELCHIER & du HAMEL*. *CARDANUS* vim rubiæ urinam tingentis, si vel manu teneretur, jam dixerat de subtilitate, p. 517. De eadem rubia dissertatio propria extat *CL. LUDWIGII*.
 N. 478. *P. COLLINSON* de modo, quo cancerorum partes reparantur.
F. HOFMANNI annorum climactericorum explicatio rationalis, Hall. 1704. 4. Disp.
J. J. BAIER de longavitate medicorum, Altorf. 1705. 4. Exempla.
J. D. SANTORINUS in opusculis, Venet. 1705. editis & sæpe citatis, habet etiam dissertationem de nutritione. Totum corpus cavis fistulis nerveis fieri: succum nerveum alere in intervalla fibrarum depositum, solida omnino mutari concinne docuit.
J. PHIL. BURGGRAV. de morte & ejus præfensione commentatio, Francof. 1706. 8. *
 N. *HARTSOEKER* in suite des conjectures physiques, etiam causam mortis senilis ex conjectura deduxit, a liquoribus nutritiis in fibrarum intervallis inactis. Totum corpus ex vasis & cellulositate fieri recte docet.
POUPART Journal des Sav. 1709. modum descripsit quo guttæ sanguinæ ex intestinis natæ carnem fecerunt coalitæ, quæ tegeret intestina.
 In *J. de Trevoux*, 1708. m. Nov. exempla habentur rejuvenescentium.
J. W. PAULI de nutritione naturali & præternaturali, Lips. 1709. 4.
ALOISII della FABBRA de terminis vitæ humanæ in Dissert. & de nutritione, Ferrariæ 1701. 4. 1712. 4.
HERMANNUS BOERHAAVE egregium Systema de nutritione proposuit, totum nempe corpus humanum fieri vasis, ac fibris, in quorum intervalla abrasione facta succus gelatinosus deponeretur. Decrementum vero mortemque senilem fieri vasis minoribus, quæ majora component, elisis, exsiccatis, hinc rigiditate tarda nata in arteriis, ut cor eam resistantiam superare nequeat. Eam theoriam plerique receperunt, etiam in physiologia *J. HENR. SCHULZE*.
C. J.

- C. J. de WACHTENDORFF de *natura solidorum & fluidorum eorumque mutua actione in variis ætatibus*, Ultraj. 1734. Disp. *
- ROB. WELSTED de *ætate vergente*, Lod. 1724. 8. *
- C. G. STENZEL περί εὐφύας καὶ ἀφύας, VVittemb. 1724. 4. Græce. EJ. de lacte & succo nutritio, ibid. 1727. 4.
- EDW. BERRY account of *nutrition* prodiit cum tractatu de *consumptione*. Lond. 1727. 8.
- F. HOFMAN de *proceritate corporis & ejus causis & effectibus*, Hall. 1726. Disp.
- GEORGII CHEYNE de *fibra laxa*, Lond. 1726. 8. De *nutritione*, *senio*, *morte naturali*, aliqua habet, & de *glutine partium*.
- PEITALOSSII (vel HAGUENOT) de *nutritione*, Monspel. 1727. 8. succum nerveum alere.
- J. QUINCY ad SANCTORIUM Theoriam *nutritionis* habet e succo effuso in fibrarum intervalla & adhærente.
- J. de GORTER variis locis in *Compendio de perspiratione & Chirurgia*. Ut BOERHAAVII theoriam explicavit, telam tamen firmam solidam pro fundamento corporis accipit, absque vasculis.
- JOHANNIS OSTERDYCK SCHACHT oratio qua *senile fatum inevitabili necessitate sequi demonstratur*, Ultraj. 1729. 4. & *mortem ex hominis structura sequi*. Ultraj. 1739. 4. cum ejus instit. pract. recusum ibidem an. 1747. 4. Theoria Boerhaaviana.
- JOH. PRINGLE de *marcore senili*, Leidæ 1730. Disp. Itidem ad mentem BOERHAAVII.
- JOH. AUG. STOLLER Untersuchung des *wachsthums der menschen in die länge*, Magdeburg 1729. 8. Inprimis ad *proceritatem* spectat.
- NIC. CORN. ANT. de COURCELLES de *nutritione*, Leid. 1730. 4.
- LAUR. ETLINGER de *nutritione*, Erfurt. 1730. 4.
- OTTO JUST WREDEN von der *nutrition*, Hanover 1731. 8. BOERHAAVIANUS.
- F. HOFMANNI *vita animalis consideratio*, Hall. 1731. Disp.
- HUTTER *Senectus ipsa morbus*. Hall. 1732. 4.
- FRID. SALOMON SCHOLL de *origine, nutritione, incremento, decremento hominis*, Basil. 1733. 4.
- H. P. JUCH theoria *ætatum*, Erfurt. 1733. 4.
- J. BAPT. MAZINI in *Institutionibus-medico mechanicis*, non inutiliter de *nutritione* egit.
- G. MUYS de *fibra & membrana aliqua habet*, (in *musc. fabr.* p. 284.) & huc facientia, tum ad *nutritionem*, *mortemque*.
- ABRAHAMUS KAAU de *perspiratione*.
- G. G. RICHTER de *morte sine morbo*. Gottingæ 1736. 4. *mortis a rigore vasorum historia*.
- CAROLI PAYEN. Est ne eadem in ossibus quam in aliis partibus *nutritionis ratio*? Paris. 1736. Disp.
- LUD. JAC. PIPEREAU. Ergo *solus succus alibilis nervorum*. Paris. 1737. Diss.
- LAURENTII FERRET. Ergo *senium a fibrarum rigiditate*. Paris. 1739. Disp.
- SENNAC in *comment. ad Heist.* *Nutritionem* fere Boerhaaviano more explicat.
- CLIFTON WINTRINGHAM patris L. de *podagra*, in quo de *ultimis vasis & liquidis*, & *succo nutritio tractatur*, Eboraci 1714. 8. *vasa minima & reliqua fere ad mentem Boerhaavii*, *fibras autem* describit in *exility of human vessels* toties citata. Theoriam *nutritionis* etiam habet, *vasa distendi unice*, quod KEILIIUS statuerat, certe negat, æquilibrium finem esse *incrementi* docet. *Stamina primaria autem corporis & pro fundamento individualitatis esse*, & *conservari*.
- In Cent. IV. *Miscellaneorum Berol.* citatis extat CL. BUDDEI *Dissertatio de ossificatione præternaturali*.
- Observations sur l'accroissement du corps humain*. Strasbourg. 1741. 8. Auctor est D. BAZIN qui cum plusculis aliis Libellis edidit.
- In *uyrgeleezene aanmerkinge*. T. I. habetur Tr. de *cohesionem partium in corpore humano*.
- In *opusculi scientifici*. T. V. p. 25. de *causa mortis naturalis* egit PHILIPPUS GOBBI.
- WILH. KERSEBOOM *verhandeling tot een proeve om te vveeten de probable menigte des volks, & vveede verhandeling & derde verhandeling*. Haag. 1743. ni fallor 4. (BIBL. RAIS. 1743. Trim. I. p. 181.) Valde solidis *nexus fundamentis rationes nascentium ad viventes definit*, ut 35. ad 1. *vices morientium in singulis annis ætatis determinat*. Conf. etiam BIBL. RAIS. 1745. Trim. II. p. 402. ubi docetur STRUYCKIUM *plagiarium esse*, & *usum calculis KERSEBOOMII*.

LUDOV.

LUDOV. LEMERY Ergo proxima, qua corpus alitur, materia a rubra sanguinis parte diversa. Parisiis 1741. Disp.

P. le TONNELIER & du BOIS Ergo nutritio tantum in minimis vasis. Paris. 1741. Disp.

J. MARTIN de fato senili, Leid. 1741. 4.

J. PET. SUSSMILCH Göttliche verordnung in den veränderungen des menschlichen geschlechts. Berolini 1742. 8. Ex pluribus, quam reliqui, fastis emortualibus plurima utilia digestit. Numeros morientium in ratione ad viventes: vices morum in varia ætate hominum, vices morborum, salubritates regionum, &c.

TH. SCHWENKE in hamatologia nutritionem & fungorum productionem explicat.

GERARDUS van SWIETEN vasorum obliterationem senilem docet, nova in cicatrice nasci tamen fatetur.

ANT. FIZES in conspectu mechanico sæpe citato nutritionem BOERHAAVII modo explicat: Sic JOHANNES ARBUTHNOT in L. de alimentis.

LALLEMANT & LALLOUETTE an nutrimentum tandem detrimenti causa. Paris. 1743. Boerhaaviana Thesis de fibra rigida causa mortis.

J. THEOD. KLEIN de termino vite humana egit. Gedani 1742. 4. post dubia circa classes quadrupedum & animalium.

CAR. FRANC. BOUTIGNY DESPREAUX. Ergo in qualibet ætate hominis idem succus nutritivus. Parisiis 1743. 4.

L. HEISTER de mutationibus corporis humani ab ortu ad occasum. Helmstad. 1744. 4. Est eadem fere de nutritione theoria, quæ Boerhavii.

BORDOLO de morte ejusque causis. Erfurh. 1745. 4.

J. F. CRELL de viscerum nexibus insolitis. Helmstad. 1743. vasa vacua concreescere a liquo in fibras coacto adnascente.

CL. de REAUMUR in historia insectorum de vita & retardatione periodorum vitæ multa notatu dignissima observavit.

CL. S. SCHARSCHMIDT in Berlin. Sammlung. IV. novas carnes ex lymphâ generatas mechanice describit.

ROGAER de nutritione. Leidæ 1744. bene restrinxit eam nutritionis theoriam, qua sola vasa in corpore ponit.

L. HEISTER de mutationibus corporis humani naturalibus ab ortu usque ad obitum, Helmst. 1744. 4.

A. E. BUCHNER & J. NIC. ZERENER cur femina corpore debiliores eundem vite terminum cum viris adtingant, Hall. 1745. 4.

JUSTI van der HOEVE de vita, Leid. 1746. 4.

PETRI DOZY ortus & occasus vite humana. Leid. 1746. 4.

DESPARCIEUX Essai sur la probabilité de la durée de la vie humaine. Paris. 1745. 4. familia KERSENBOOMIANIS, tabulas nempe habet numeri morientium, in quavis ætate, de spe vitæ, &c.

JACQUES JEAN BRUHIER de l'incertitude des signes de la mort. Supplement & additions. Paris. 1742. 1745. 8. Exempla numerosa habet hominum, qui pro mortuis habiti couvaluerunt, inde monet Magistratus, ut lege caveatur, ne adeo præcociter cadavera inferantur tumulto. Fundamentum fuit in Thesi WINSLOVIANÆ, mortis incerta signa minus incerta a Chirurgicis & aliis experimentis. Paris. 1740. 4.

Puer super morem adultus. Act. Stokh. 1745.

ERNST ANTON NICOLAI von der Schönheit. Hall. 1746. 8. De Symmetria & proportionem partium; de voluptatis natura & causa mechanica.

CL. HANOU in erläuterung der naturgeschichte de alterno incremento & decremento proceritatis agit.

QUESNAY in Oeconom. animale nutritionem describit.

CL. QUESNAY, cujus æconomia animalis hic citata est, huc etiam pertinet traité de la suppuration, ubi fuse agit de renascente in ulceribus carne, ab incremento & dilatatione vasorum sanguine minorum.

POHLIUS de fibra senili. Lips. 1746. disputavit.

BROWNE LANGRISH in L. de motu musculari Sect. I. London 1747. 4. Theoriam HALESI confirmavit, qua aer pro vero glutine animalium fibrarum habetur.

J. GES-

J. GESNER de termino vite. Tiguri 1748. 4. De causa mortis naturali, numero mortium, spe vite, &c. tabulas & regulas condidit ad HALLEY, & reliquorum morem quos laudavimus.

BRYAN ROBINSON de fibra solida & ejus incrementis in duritate egit in *Anim. œconomy*.

In *Description du Cabinet du Roi* T. II. egit CL. de BUFFON de hominis natura, infantia, pubertate, ætate virili, senio, de incremento veloci juniorum, proportionibus quas sculptores observant, causa longævitatis ante diluvium ex minori densitate alimenti. Tabulas etiam emortuales satis vitiosas D. de S. PRE profert.

De proportionibus statuariorum sculptor LICHTENSTEGGER non ita diu tabulas edidit.

P. van MUSSCHENBROEK in dissertationibus egit de causa cohesionis partium in corporibus, ad finem aliqua addo, quæ cum nutritione conjunguntur. Et primo experimento olim constiterat dentes extractos & in alveolum repositos comprehendere. Locos & exempla habet S. SALZMANN de *chirurgia curtorum*, & post SCULTEUM append. obs. 64. observatio adjecta est. Negaverat in cursu operationum DIONISIUS, multis autem exemplis confirmavit D. FAUCHARD in *Chirurgien dentiste*.

Deinde olim PLINIUS, ÆLIANUS, OPPIANUS, PHILE, CARDANUS polypo renasci dixerant devorata brachia. Hoc experimentum nemo repetierat. LEEUWENHOEKIUS equidem & Anonymus in *Phil. Trans.* n. 283. 288. 295. 337. & *J. des Sav.* 1678. p. 107. descripserat animalculum multis brachiis præditum. Observavit etiam ex ipso corpore juniore animalia germinare & decidua augeri.

Deinde CL. TYSON tæniæ duos articulos abruptos seorsim vixisse, vidit n. 146. *Phil. Trans.* & in *Hist. de l' Acad. des Sc.* 1706. n. 8. vermis amphibæne fit mentio, multipedis, cujus dissecti alterutra pars vivit & movetur.

Sed inprimis CL. TREMBLEY in stagnis Batavis viso animalculo, & casu facto experimento an. 1740. 25. Novembr. didicit, dissectum animal compleri, ipsique tantumdem restitui, quantum esset detruncatum. Deinde, ut est perindustrius, variis experimentis animal torquere cœpit, didicitque propagari absque sexuum commistione, ad arborum morem, segmina in animal integrum reparari, monstra inde fieri posse, &c. quæ continentur in *Mémoires pour servir à l'Hist. d'un genre de Polypes*. Leid. 1744. 4. Paris. 1744. 8. eximio & curiosissimo Libro. Magna, ut merebatur, fama experimenti fuit. In *Phil. Trans.* n. 466. 467. 469. 470. 471. 474. (ubi hirudines etiam compleri docetur) experimenta eo pertinentia recensenter.

Similia reperias apud NEEDHAMUM in *microscopical discoveries*. CL. HENRICUS BAKERUS suas observationes adjecit illis D. TREMBLEY in L. Anglice edito Lond. 1743. 8. qui Gallice versus inscribitur *Essais sur l'histoire naturelle du Polype insecte*. Paris. 1744. & ubi dentes & aliæ partes prætervisæ, ut vult vir CL., a D. TREMBLEY, adduntur, & apud MAFFEIUM de fulmine.

CL. LYONETTUS Polypum etiam trisectum, aliumque aquaticum vermem compleri in animal observavit, in notis ad *Insecto-Theologiam* Lesseri.

In Gallia CL. de REAUMUR (ad *hist. insector.* præf. T. VI.) varia huc pertinentia habet, qui nomen etiam imposuit, adparuit duas medietates urticarum marinarum etiam in unum animal abire, Lumbricos truncatos compleri, & Millepedes vermes, & Hirudines, & brachia Urticarum & Stellarum marinarum reparari.

Deinde CAROLUS BONNET in *Phil. Trans.* n. 470. & in parte II. *Traité d'insectologie*. Paris. 1746. 12. experimenta plurima in variis vermium aquaticorum speciebus fecit, ex quibus constitit, plurima animalium genera ea lege facta esse, ut resectæ partes renascantur, mutilumque corpus redeat in priorem perfectionem. Quo ipso invento plurima in theoria nutritionis, incrementi, multiplicatæ speciei, utique mutata sunt.

Lettere intorno alle recenti scoperte degl' Insetti, che si moltiplicano mediante le sezioni de' loro corpi. Venet. 1747. 12.

CHRIST. GOTTLIEB KRATZENSTEIN *physicalische briefe*. Hall. 1745. 8. de Polypis aliqua ex aliis habet. De iisdem A. BÆCK in *Academ. Stokholmiensi*. in Gottingensibus novellis CL. UNGERUS, & alii.

THEODORI ERNESTI JOSEPHI MOERS *idea generalis nutritionis*, Heidelberg 1749. 4.

CAR. AUG. a BERGEN *mensuram & proportionem membrorum corporis humani non admittere rigorem mathematicum*, Francof. Viadr. 1750. 4.

C A P U T III.

De Cerebro.

NON possumus recte cerebrum pro viscere, sed pro motore ad viscera habere, non enim sanguinem mutat, sed liquida promovet ad totum corpus: verum quia Auctores omnes ad viscera retulerunt, licuit & nobis ad eandem classem revocare.

Cerebrum voco, omnem massam simul sumtam, quæ intra cranium & intra vertebrarum thecam continetur. Utor hac voce cerebri, quia voce aliqua egeo, qua hoc totum continuum viscus exprimam; quando vero cerebrum distincte a cerebello dicere volo, tum vocabulum quoddam addimus, ut cerebrum animale, & cerebrum vitale pro cerebello.

Quando encephalon dico, id vocabulum est omnium commodissimum, eoque usi sunt antea veteres, quia designat quidquid intra cranium seu caput continetur: verum ego nomine cerebri complector omnem appendicem, quæ a cerebro orta est, & per thecam vertebralem usque ad os coccygis descendit.

Ut cognosci possit quam exactissime cerebri descripta fabrica, concipiendum est cranium, & tenendæ vertebræ; tum utræque meninges, tum cerebrum & cerebellum, & cortices & medulla utriusque, & medulla collecta, & medulla oblongata, & medulla spinalis, & nervorum egressus, & eorum distributio debent intelligi, nihil horum est omittendum, nam omnia hæc faciunt ad intellectum cerebri hic allegati; & qui aliquid horum omittit, nunquam perfecte scire poterit, quid cerebrum sit. Nunc legantur ab unoquoque, qui de his institui vult, quos nunc laudabo scriptores.

1. Ratione cranii & vertebrarum accuratissime scripsit *le CLERC* in sua *Osteologia* (a), accuratissima quippe enumeratione omnia, quæ de cranio & vertebris in minima quaque particula vera dici possunt, quatenus ad arterias, nervos cerebri, ejusque undas faciunt, exponit; hinc primis quatuordecim diebus hunc tractatum oportet legere, quatenus exponit cranium & vertebrae; nam licet ante annum intellectus fuerit in lectione ad *Osteologiam*, non ita nunc in memoria hærebit. Iste solus sufficit, nisi adjungere quis voluerit *JOHANNEM PALFYNUM* (b), qui exquisitè etiam ad calvariam scribit. Huc etiam legi potest *THOMAS WILLISIUS* (c) *de anatome cerebri*, maxime editio *Londonensis*

(a) Hæc historia quærat in *Osteologicis*.

(b) Pulchras utique dedit ossium cranii icones. Sed vide pag. 346. not. (b), &c.

(c) Ante *WILLISUM* plurimi de cerebro, neque contemnenda scripserunt. *HEROPHILUM* omitto qui sinus invenisse videtur. *GALENUS* in L. VIII. *De usu part.* & in anatomicis *ORIBASII* ab init. diligenter satis varias cerebri regiones descripsit. Idem de spiritibus passim egit & in LL. *de facultat. naturalibus*. Ventriculorum etiam cerebri minime mala descriptio *ERASISTRATI* exstat apud *GALENUM* *de placit. Hipp. & Platon.* L. VII. uti *HEROPHILI* observationes ab eodem & ab *ORIBASIO* recensentur. In L. VIII. *de administrationibus anatomicis* experimenta in nervis facta proponit.

GALENUS ad cerebri tractationem hic citatus, primus etiam ventriculi quarti, venæ magnæ, quæ orditur sinum quartum, & aliarum particularum cerebri meminit.

dinensis anni 1670 si adquiri possit, illa enim optima est, quo ad textum : prius jam editus fuit Liber Londini anno 1664. sed in ea editione in textu aliquid hinc inde deficit, quod postea additum fuit. Utriusque vero editionis figuræ cujuscunque partis tam vividæ sunt, ut non alius Liber figuris magis
Eee 2
excel-

CASSIUS Jatrofophista nervos decussatim oriri ex resolutione lateris non adfecti deduxit. **JACOBUS BERENGARIUS CARPENSIS** medullæ spinalis finem, qui in caudam equinam resolvitur, lineamque bipartientem egregie vidit, & aquæductum.

Post reparatas literas **ANDREAS VESALIUS** in L. VII. cerebri icones primas dedit utcunque tolerabiles, & multa vidit, quæ vulgo aliis tribuuntur. Ita in *examine observationum Fallopii* finum quintum invenit. Experimenta ad vim nervorum in motu musculari pertinentia fecit.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS multa in cerebri anatome correxit. In Tab. XV II. XVIII. Eminentias mammillares prope infundibulum expressit, & cornua ventriculorum tria, veramque ventriculi tertii rationem, & venas duræ matris & corpora olivaria, & pyramidalia, & commissuram cerebri anteriorem, & plexus choroideos, medium, & laterales, aliaque.

GABRIEL FALLOPIUS finuum numerum auxit, quatuor ad sellam equinam additis finibus, quos paradoxis iconibus expressit **VIDUS VIDIUS**. Arteriarum etiam Carotidum & Meningeæ imprimis, longe quam **VESALIUS** meliorem, dedit descriptionem. Idem in obss. de venis venas sinusque medullæ spinalis minime male descripsit.

CONSTANTIUS VAROLIUS in Libello de nervis opticis, Patavii an. 1573. 8. & vitiosis cum iconibus Francofurti 1591. 8. recuso. In ea nobili & merito a **N. STENONIS F.** laudata epistola, novam cerebri administrationem a basi cerebri incipientem proposuit: nervorum opticorum a thalamis ortum indicavit (sed minime ignotum **EUSTACHIO**), radicem longiorem nervi olfactorii, ventriculorum veram figuram, glandulas choroidei plexus, pontem cui nomen dedit, & a quo omnes nervos demonstravit oriri, arachnoideam membranam aliaque dixit.

VOLCHERUS COITER in observationibus de medulla spinali observationes habet, minus candidam esse in parte interna vidit, & percurri internis vasis, & posterius findi, & in fibras solvi. Experimenta etiam fecit, motum cerebri ab arteriis oriri vidit, & cerebro exento vitam superesse.

DOMINICI BERTACCI de spiritibus nec non de facultate vitali. Venet. 1584. 4. *

ARCHANGELUS PICCOLHOMINEUS solet citari, quod corticem a medulla voce nova distinxerit, quem tamen in iconibus semper exprefferant vetustiores.

JULIUS CÆSAR ARANTIUS sinus cerebri anteriores cum cornubus suis inferioribus, pedes hippocampi, ventriculum quartum fuisse descripsit.

JULIUS CASSERIUS cerebri nitidas icones dedit, in quibus arachnoidea membrana cerebri, radices plurimæ nervi accessorii, circulus, ut vocant, Villisii, eminentiæ mammillares, & alia habentur, quæ recentius inventa fuisse creduntur.

ANDREAS LAURENTIUS non contemnendam dedit medullæ spinalis iconem.

JOHACHIMUS OELHATEN de motu cerebri. Dantisc. 1615. 4. *

JOACH. OELHATEN l. c. cerebrum statuit refrigerandi cordis causa factum esse.

HENNING ARNISÆUS in obss. post. I. de partu, caudam equinam recte descripsit: processus mammillares cavos esse negavit.

C. HOFMANNUS in Disp. de usu cerebri secundum Aristotelem. Altdorf. 1618. 4. Lips. 1619. 8. Ej. Tr. de cerebro, medulla spinali & nervis, primum disputationis specie editus. Altdorf. 1622. 4. tum recusus Francofurti 1665. antiquo more eruditus absque anatome.

C. HOFMANNI disputatio de usu cerebri secundum Aristot. Leidæ recusa est 1693. 12. In hac quidem disputatione sententiam proponit, qua credit cerebrum spirituum calorem temperare ut sensui apti fiant, & cordis calorem moderari. EJUSD. est disputatio de nervorum origine, Norimb. 1615. 4.

FORTUNII LICETI de motu sanguinis, origine nervorum & cerebro leniente cordis astum, Utini 1647. 4. *

excellat; nam CHRISTOPHORUS WREEN, summus in Anglia mathematicus, & Reginae Britanniae architectus, designavit ipse sua manu partes anatomicas, quas vidit apud LOWERUM & WILLISIUM. In editionibus hujus Libri, quae in Batavia excusae sunt, textus quidem recte se habet, sed mire muta-

J. BAPTISTA CORTESIUS in *Miscellaneis medicis* Dec. I. Messanae 1625. fol. editis, rogante C. BARTHOLINO, sed anno jam 1585. scriptis, ut ipse fidem facit, novam dissectionem cerebri proposuit, VAROLIANAE similem, ut resecta basi cranii solum cerebrum in dura meningē comprehensum superesset, figurasque proprias cerebri addidit. Ossicula in Carotide, quibus aperta teneretur, nervum quartum, nervum sexti paris ad oculum euntem, cornu descendens ventriculi & alia aut invenit, aut rara renovavit.

JOH. RIOLANUS eadem ossicula sesamoidea Carotidis, quae & ipse vidi, descripsit, in *Enchiridio* & alibi.

JOHANNES VESLINGIUS figuras nonnullas cerebri non incommodas dedit, & aliqua nondum vulgaria expressit, eminentias papillares, cornua posteriora ventriculorum, &c. Vulnus cerebelli sanatum vidit.

DOMIN. de MARCHETTIS easdem glandulas sibi tribuit inventas.

RENATUS DESCARTES animae sedem, uti notissimum est, in conario posuit, & ea occasione physiologiam cerebri ex arbitrariis hypothesebus proposuit.

TOBIÆ LUDOVICI KOLHANS L. de spiritu animali ad J. D. HORSTIUM 1658. 8. *

J. J. WEPFER de apoplexia, Scaphus. 1658. 8. & 1675. 8. Venas, quae ab ipso nominantur, & arterias cerebri varias descripsit. Rete mirabile refutavit. Spirituum sedem in ventriculis cerebri refutavit.

F. SYLVIVS de le BOE in THOMÆ BARTHOLINI editione *institutionum* patris CASPARI, facta Leidæ an. 1641. & saepe recusa, & in *Dissertatione anatomica* IV. varia aut nova, aut peculiaria descripsit, fossam quae dicitur Sylvii, aquæductum, non ignotum veteribus, sinus laterales minores tentorii, limbos thalamos amplectentes, &c. Icones etiam aliquas addidit.

CONRADI VICTORIS SCHNEIDERI non oportet oblivisci, qui in Libro II. recte ostendit duram membranam pertinaciter cranio hære, foramina cranii clausa esse, in ventriculis cerebri catarrhi materiem non colligi, nullam inde ad infundibulum viam descendere. Tabulam etiam dedit ponderum cerebri & glandulae pituitariae, & istam non esse in ratione ponderis cerebri ostendit, sed in carnivoris parvam, magnam in ruminantibus esse.

WREENIUM, cujus in recensione WILLISII mentio facta est, celebrem architectum, anatomes peritum fuisse, confirmatur in nupera historia familiae WREENIORUM.

Denique T. WILLISII de cerebro & nervis, Londinensis Edit. 1664. 4. & 8. optimas habet icones. Titulus est *cerebri anatome, cui accessit nervorum descriptio & usus*. Recusa eadem est (præter Londinensem ed. 1670. mihi non visam) & in Belgio, & cum reliquis operibus WILLISII, Genevæ 1676. 4. & Amstelodami 1682. 4. figuris valde corruptis. Hoc cæterum opus inter WILLISIANA optimum est, & plurimam naturæ observationem habet. Admiscuit equidem multas descriptiones ex animalibus desumptas, vel confessus, vel nihil monens. Nervos imprimis in bonum ordinem primus constituit, repositis in suam sedem primo, quarto & sexto. Habet etiam geminum centrum semicirculare transversa stria junctum, separavit corpora striata a thalamis. Corporis callosi nervum & lineas transversas habet. Arteriam vertebralem non bene per aliud a magno foramen ducit. Sinus aliquos Fallopianos neglexit, vertebrales vero imprimis constituit, deterioribus cum figuris. Cæterum WREENII delineationes, & LOWERI socium laborem, in præfatione laudavit.

IDEM in Libro de anima brutorum Exerc. II. Londin. 1672. 8. Amst. 1674. 8. varias novas dedit icones cerebri, striam a natibus ortam tribus fibris in corpora striata disjectam, alia. Plurima ibi etiam ex insectorum anatome, Astaci, Lumbrici, Ostrei. Adjutum se fuisse fatetur ab EDMUNDO KING & a JOHANNE MASTER. Aliqua etiam huc pertinentia exstant in WILLISII pathologia cerebri. Oxon. 1667. 4.

mutatæ sunt figuræ, ita ut omnino decipiant. Notandum interim velim, de prima parte hujus Libri hætenus tantum locutos nos esse, nam in ea sola de hac materia agitur.

2. Quando accurate lecti sunt præcedentes, tunc adjungatur RAYMUNDI VIEUS-

Post WILLISIUM adde: A. DEUSING de spiritibus animalibus, Groning. 1665. 12. cum sylva cædua jacente & alibi:

WALTH. CHARLETON Diff. dua, anatome cerebri pueri de caloriæ, & altera de proprietatibus cerebri humani. Lond. 1665. 4. Cerebrum humanum majus esse, firmitus, frequentioribus gyris præditum, lobis subdivisis, radices medullæ oblongatæ ampliores, magis distantes, ad angulum conjunctas. Aliqua deinde in utilitatibus cerebri VVillisianis corrigit. Corporibus humanis fatetur se parce usum esse.

GERARDUS BLASIUS in anatome medullæ spinalis & nervorum inde provenientium, Amstel. 1666. 8. multa in melius restituit. Arachnoideam membranam ibi primum descripsit, in Collegio privato Amstelodamensi inventam, cujus fuerat sodalis. Piam matrem fissuras medullæ subire & cavitatis aliquid simile subesse, & ligamentum denticulatum dixit. De equina cauda dubius est, quia sola animalia secuit. Multa, & vasa inprimis ex WILLISIO habet.

MARCELLI MALPIGHII epistola anatomica de cerebro ad FRACASSATUM, quæ prodiit Bon. 1665. 12. & Amstelodami 1669. 12. observationes ex animalibus varias de fibris cerebri & medullæ fabrica & nervo optico continet. EJUSDEM L. de cortice cerebri inferius dicitur.

CAROLI FRACASSATI epistola de cerebro, quæ in editionibus plerisque cum MALPIGHIANA epistola conjuncta est. Bonon. 1665. 12. Meatus statuit, qui aërem ad cerebrum ducant. WILLISII theoriam a cerebello sumtam refutat.

RICHARDUS LOWER in L. de corde vasorum ad cerebrum introitum expressit. In L. de catarrho qui 1671. 8. Londini prodiit, resorptionem humoris cerebralis ad glandulam pituitariam descripsit, indeque in venas jugulares sinusque cerebri varios.

In ANTON. MOLINETTI Diff. anatom. physica de sensibus, Patav. 1669. 4. exstat etiam cerebri anatome, & paulo accuratior tæniæ in pede hippocampi descriptio.

NICOLAUS STENONIS F. in Discours sur l'anatomie du cerveau. Paris. 1669. 12. & operi inserta WINSLOWIANO, multa in VVillisio accusavit, figurasque malas carpsit: multa superesse monuit invenienda, nervorum ortus veros, &c. aliaque via adgrediendam esse veritatem, neque partes ex situ suo movendas. Cæterum monita potius quam anatonmen proponit, non tamen nullas observationes suas dedit. Legitur apud T. BARTHOLINUM, NICOLAUM vasa lymphaticis similia in plexu Choroideo vidisse.

CAROLUS DRELINCOURTIUS in præludiis anatomicis subtiles passim de cerebro, valvula cerebelli, pediculis glandulæ pinealis aliisque striis medullofis, glandula pituitaria duplici, observationes habet. Idem in canicidiis, duram membranam absque magno malo animalis incidi posse observavit.

JOSEPHI BURRHI de cerebro & oculis Epistola, Hafniæ 1669. 4. Vana varia. Analysis cerebri, cujus quartam partem pinguedinem esse præter veri speciem adfirmat. Contra eum J. DANIEL MAJOR eodem anno Kiloniæ in 4. edidit considerationem physiologicam quorundem occurrentium in duabus epistolis Burrhi de cerebro & oculis, satis absque experimento.

J. BOHN de spirituum animalium elaboratione, Lips. 167... 4.

GOTTFRID WELSCH anatomia cerebri, Lips. 1674. 4.

J. JAC. WALDSCHMID de glandula pinealis statu naturali & præternaturali, Marb. 1680. 4.

DANIEL DUNCAN explication des actions animales, Paris. 1678. 12. fere WILLISIUM Gallice reddidit, modum disseccandi cerebri fuisse proposuit, ridiculas opiniones miscuit, cum e. gr. colorem cinereum corticis explicet a salis ammoniaci abundantia.

JOHANNES HENRICUS GLASER de cerebro, Basil. 1680. 8. In vasis VESALIUM, in cerebro WILLISIUM sequitur, proprii vix quidquam habet, præter fissuram in circulo, quo tympani membrana comprehenditur.

J. JAC. WALDSCHMIDT Disp. de glandula pinealis statu naturali & præternaturali, Marp. 1680.

CL. PERRAULT in Essai de Physique III. ex anatome comparata aliqua de piscium & avium cerebris habet.

In JOSEPHI DUVERNY L. de audito propria baseos cerebri tabula reperitur.

VIEUSSENII (a) *Neurographia universalis*, qui Liber editus est Lugduni in Galliis anno 1685. in folio, & hæc editio, licet triplo carior illa, quæ est in octavo (b), ematur potius, quia eam procuravit ipse Auctor ex præsentibus cadaveribus in Academia Monspeliensi factis. In anatomia certe & botanica præferre debemus editiones ipsorum Auctorum, quia sculptores novarum editionum figuras archetypi unice describunt, & sæpius mentem Auctoris non percipiunt; hinc depravantur illæ editiones (c).

Hi sunt duo Auctores primo legendi. Deinde legat Medicus (neque enim eo carere

Traité de la circulation des esprits animaux, Paris. 1684. 12. nullius momenti theoria est, spiritus per vasa lymphatica ad cerebrum redire, Auctor Monachus fuit ex Conventu Divi MAURI.

MARCELLUS MALPIGHIUS & BELLINUS (in lemm. ad nervos pertinenti) non bene humorem viscidum medullæ spinali circumpositum pro nervo liquore venditarunt. Sed BELLINUS utile in nervo diaphragmatico experimentum instituit, in præf. ad TAURYI anatomen & a BOHNIO recensum.

G. C. SCHELHAMMER de spiritibus animalibus Disp. Helmstad. 1682. 4. Idem in Physiologia posthuma medios spiritus inter corpus & animam fecit.

De motu cerebri utique in Tr. IV. habet J. MAYOW.

(a) RAYMUNDI VIEUSSENS *neurographia universalis*, Lugdun. 1685. fol. & an. 1715. cum novo titulo edita, opus est eximium magnique laboris, natum ex quingentorum corporum dissectionibus (la METTRIE comm. p. 43.) WILLISII vitia pleraque emendavit, humano unice cerebro usus est, ejusque varias omnino superficies, per strata dissectas, fideliter, etsi non nitide, pingi curavit. Sinus FALLOPII restituit, addidit receptacula ad latus sellæ equinæ, & sinum transversum ejusdem sellæ, vasa quæ nervos duram Matrem perforantes comitantur, & alia. Multas particulas cerebri minus notas noviter descripsit, ut centrum ovale, corpus rhomboideum cerebelli, fibras a cruribus cerebri ad corpora pyramidalia. In medulla spinali etiam fideliter versatus est, ligamentum denticulatum, arterias, caudam equinam, duos lobulos terminantes utiliter proposuit. Passim experimenta a vivorum corporum sectionibus repetiit. Theoriis minus tribuimus. Idem in novo systemate vasorum aliqua ex ligatis nervis experimenta attulit, corticis fabricam explorare adgressus est, & eadem repetiit in Tr. des liqueurs, atque succum nervum destillatione paratum proposuit. Asperam vero censuram PETRICHIRAC, qua Neurographiam sibi & D. SYLVANO REGIS, Librum de fermentatione BAYLIO, proportionem sanguinis FABRIO & aliis, acidum ex sanguine sibi ipsi tribuit (in I. Lettre contre VIEUSSENS) eam equidem contentioni tribuo, quæ inter eos viros fuit maxima.

(b) Ulmensem procul dubio vult PRÆCEPTOR, a MELCHIORE FRIDERICO GEUDERO 1690. 8. tabulis quæ in neurologia inprimis inmensæ sunt, vehementer contractis.

(c) Post VIEUSSENIUM SAMUEL COLLINS in magno systemate anatomico. Lond. 1685. fol. diligenter inprimis cerebra piscium descripsit & picta dedit. Lymphatica etiam cerebri vasa credidit se vidisse. Systema WILLISIANUM de nervis vitalibus a cerebello, animalibus a cerebro ortis, bonis certe experimentis refutavit.

Contra BIDLOI icones, in magno opere, lectores monere oportet.

J. JACOBUS HARDER in observationum apiario, Basil. 1685. 4. glandulas duræ matris, quas PACCHIONO tribuunt, luculenter descripsit.

In J. HADRIANI SLEVOGT Disp. de dura Matre, Jen. 1690. 4. laminarum discriminis, fibræ, sinus conjungentis transversos exstat descriptio.

C. BONTEKOE in posthumis sedem animæ in corpore calloso posuit, Leid. 1688. 8.

CHRISTIANI VATER Disp. de existentia & motu spirituum animalium in nervis, VV ittemberg. 1687. 4.

DRGUIN description du cerveau (& organum sensuum cum iconibus,) Paris. 1691. 12. JOURNAL DES SAVANS. *

carere potest Auctore) clarissimi RIDLEY *anatomiam cerebri*, editam Londini in 8. anno 1695. (a).

Non possum pulchrius dare consilium, ut res intricatissima intelligatur, quam ut legantur hi Auctores, cum eorum figurae ita vividae expressae sint, ut in nullo cadavere luculentius videri possint. Ordo in his Libris optimus est quem dicam.

WILLISIUS praecessit VIEUSSENIUM, hinc VIEUSSENS nonnulla observavit, quae WILLISIUS non habet, v. gr. sanguinem a cerebro reducem, non tan-

(a) H. RIDLEY *anatomy of the brain*, Lond. 1695. 8. Latine recusa in *EPHEMERIDIBUS NAT. CUR.* & nuper Leidæ 1725. 4. sed iconibus paulo obscurioribus, quae a COWPERO pictae ipso in Praef. RIDLEYO teste in vera editione valde tenerae sunt, & male intellectae a sculptoribus editionum secundarum. Eadem etiam icones bene se habent in W. COWPERI *Anthropographia* appendice. Multa equidem omittit, dicta a VIEUSSENIO, neque erroribus, etiam ægre excusandis, caret, qualis est nervi primi cervicalium origo assignata infra primam vertebra, & rete mirabile, quod omnino adesse vult. Habet tamen sinum circularem, plexum choroideum medium, aliquas strias in medulla spinali orientem melius expressas. Varia physiologica passim admista sunt. In *Phil. Transf.* n. 287. experimenta contra mobilitatem duræ membranæ attulit. Translator non optime functus est officio.

COWPERUS in *Phil. Transf.* n. 280. bulbosam cavitatem venæ Jugularis expressit vasaque capitis.

JOH. FRID. ORTLOB in disputationibus, quas cum titulo *historia partium corporis humani*, Lipsiæ an. 1697. 4. edidit, sinus polymorphos anteriores occipitis descripsit.

MARTINUS LISTER in variis exercitationibus & in *L. de humoribus* defendit cerebrum unice humorem lubricantem secernere, qui nerveas fibras molles conservaret.

EL. CAMERARII *Dissertatio exhibens spirituum animalium statum* (quos aereos facit). Tubing. 1694. 8. mere theoretica est.

JOH. MERI de medulla spinali aliqua, & de cauda equina habet, & non bene negat rachnoideam in *Progrès de la Médecine* 1697.

In *Monumentis Academia Regia Scientiarum Gallica* exstant experimenta in ranarum nervis capta 1700.

MERY de glandulis duræ matris 1701. & de iisdem LITTRE 1704.

MERY duram matrem cranio firmiter adhærere 1705.

LITTRE de glandula pituitaria, de sinibus sellæ equinae transversali & ovali 1707.

MERY fetus absque cerebro 1712. & 1713.

GARENGEOT de sinibus cerebri, longitudinali, transversalibus 1728.

WINSLOW de chiasmo fibrarum medullæ oblongatæ 1739.

AUBERT de ventriculis cerebri observatio 1743.

Paralysis motu integro ibid.

MORAND de ventriculis anterioribus, de eorum cornu posteriori, & corporis callosi cruribus fornicem facientibus, de calcari in eo, quod dixi, cornu, tæniis crurum hippocampi, papillis, &c.

PETRI CHIRAC experimenta, quibus docet cerebello secto animal non continuo perire, exstant in *Phil. Transf.* n. 226. de ligato vero nervo octavi paris absque orta inde cordis quiete apud BESSE in ejus anatome analytica.

POUPARTII descriptio foraminum cranii, quæ in prioribus editionibus Libri *Chirurgia completa* pro appendice subjicitur, omnino legi meretur.

ANTONII PACCHIONI de dura meningis fabrica & usu, Romæ 1701. 8. fibrasque musculares falcis inprimis utriusque & tentorii describit, motum ipsi falci tribuit, quo cerebrum comprimat dum elevat tentoria, caudex autem sive falx cerebelli urgeat cerebellum deducendo tentoria. Experimenta etiam in vivis canibus fecit, quæ irritabilem naturam duræ matris demonstrant. Idem systema suum promittit in GALLER. di MINERV. 1701.

Tom.

tantum in quinque sinus deferri venofos, fed totam bafin cranii, tot finus in-
fcu-

Tom. IV. *EJUSDEM* theoria in epiftola exftat inter *COMMENTARIOS BONONIENSES*, & ibidem fatis favens refponfo *STANCARI & BAZZANI*, tum in *Opufc. Philol.* III.

G. BAGLIVI Specimen de fibra motrice, Romæ 1702. Ad experimenta *PACCHIONI* addidit theoriam & duumviratum inter duram matrem, quæ comprimendo cerebrum cordi fpiritus mittat, atque cor, quod fanguinem urget dilatatque cerebrum. Experimenta, fed parum firma, adducit, de irritationibus duræ meningis, ejusque motu. Defendit fe & removet objectionem, quod *PACCHIONUM* exfcripferit, cui fabricam eruendam fe reliquiffe, fibi vero physiologiam fumiffe fcribit. Aliqua etiam habet in *Diff. varii argumenti V.* & in *Diff. I.* Contra eum *THOMSONUS* in *I. Diff.* dixit, & alii.

G. BAGLIVI Specimen de fibra motrice primum prodiit Peruffiæ 1700. 4. Recufum etiam eft *Bafil.* 1703. 8. *Altdorf.* 1703.

JOSEPHI de la CHARRIERE anatomie de la tête de l'homme, Paris. 1703. 12. Præter osteologiam, & angiologiam, fenfusque, cerebri etiam & nervorum descriptionem habet, hanc ex *VIEUSSENIO*.

ANTONII PACCHIONI de glandulis conglobatis dura matris, Romæ 1705. 8. & in *E. N. C. Cent. I. & II.* Eas, quæ in finu funt falcifor-
mi, glandulas, & vafa defcribit, ut credit, inde orta, irrigantia fuperficiem convexam piæ matris. Epiftola ad *LUDOVICUM TESTI* inferta eft in *A. ERUD.* 1701. p. 415.

ADAMI PHERNÆ differtationes V. de cerebro, refpiratione, oculorum morbi, aliisque curiosis experimentis, Lugd. 1705. fol. Compilatum opus citant *GAL. di MIN.**

J. B. MORGAGNII Adversaria anatomica. In VI. adverfariis inprimis de cerebro agit, ejusque varias particulas, & nervorum originem primam, & finus, & glandulam pituitariam aliaque observationibus fuis illustravit. Experimenta etiam anatomica de phænomenis a diffectis nervis orientibus in *Advers. anat.* II. & in epiftola ad *VALSALVÆ* opera addita X. & XIII. produxit, & de medulla fpinali in *Epift.* XVI.

SEBASTIANI WIRDIG de medicina spirituum curiofa überfetzt durch CHRISTOPH. HELWIG, Mulhauf. 1707. 8. Latine edita Hamburgi 1673. 8. & 1688. 12. Parum fanus homo, qui omnia fpiritibus plena faciat, & ipfa corpora doceat ex fpiritibus coagulari. Physiologia fequitur fuperftructa fpiritibus. Cenfuram expertus eft Academia Roftochienfis & VVittembergenfis.

DOMINICI MISTICHELLI dell' apopleffia, Romæ 1709. 4. *EJUSDEM* aggiunta al trattato dell' apopleffia, Padova 1715. 4. In priori opere fibras aliquas medullæ oblongatæ & fpinalis ornatus defcribit. In altero inprimis contra fpiritus animales pugnat, & nervos ex meningibus oriri, & inde fenfum & motum pendere adfirmat.

FRANCISCUS PETIT omiffio nomine fuo, fub titulo *Lettres d' un Médecin des Hopitaux du Roi, à un autre Médecin.* Namurci 1710. 4. multa egregia ad cerebri hiftoriam addidit, decuffationem fibrarum medullæ oblongatæ, ex qua lateris alterni refolutio explicatur, canalem feptilucidi, fibras ab eminentiis mammillaribus quæ per thalamos adscendunt, & in centro gemino femicirculari terminantur, finem fornicis in iis eminentiis, finum ophthalmicum a venis oculi factum, fifsuras medullæ fpinalis, fibras & longitudinem fequentes & tranfverfas, experimenta in canibus, & morbos ad eruendas functiones partium cerebri, & alternam refolutionem lateris non vulnerati.

J. RUD. ZWINGER de usu & functionibus cerebri, *Bafil.* 1710. 4.

J. MAR. LANCISII Diff. de fede cogitantis anima, quæ exftat cum *J. BAPT. FANTONI obff. anatomicis*, Turini 1713. 4. editis; habet fibras tranfverfas nervosque corporis callofi, quod pro fede animæ recipit, pediculos glandulæ pinealis, alia. Icones demum in editione Genevenfi operum omnium accefferunt.

GODOFREDUS BIDLOO in opusculis anatomicis, Leidæ 1715. 4. excufis duas de nervis differtationes habet, quibus contra fpiritus pugnat.

J. CONRADI BRUNNER de glandula pituitaria, Heidelberg. 1687. 4. habita difputatio, recufa an. 1715. cum *Tr. de gland. Duodeni* omnino legi meretur. Sinum circularem jam vidit.

J. WILH. PAULI progr. de fibra motrice & dura matre, *Lips.* 1717.

SAMUEL SEELMATTER de dubia spirituum existentia, Argent. 1720. 4.

ARENT CANT ad sinus & productiones duræ membranæ aliqua proposuit.

J. HYACINTHI VOGLI fluidi nervei historia, Bonon. 1720. 8. spiritus defendit aereos, subtiliores, sed ex meningibus, non ex cortice, natos. Unicam observationem suam habet, monstri acephali. Fluidum nerveum crassius & facile sensibile refutat.

J. J. BIANCHI icon & descriptio sinuum cerebri exstat in L. IV. Theatri Mangeriani, in quam severe animadvertit MORGAGNUS.

ANTONII PACCHIONI de dura matre Diss. physico-anatomica, Romæ 1721. 8. Variæ sunt epistolæ ad MERYUM, Academiam Bononiensem, FANTONUM, cujus etiam duæ epistolæ hic exstant. Defendit sententiam suam PACCHIONUS. Hoc opusculum, cum prioribus, in operibus omnibus PACCHIONI, Romæ 1741. recusis exstat, cum nova tabula falcis.

ANTONIUS van LEEUWENHOEK multa ad fabricam cerebri, filorumque nerveorum passim habet in operibus. Vide Phil. Transf. n. 108. 136. 167. Epist. Physiol. 32. 34. 36. &c. &c. alibi.

M. E. ETTMULLER de cerebri membranis, Lips. 1721. (B. PL.)

JOH. GOTTL. BOETTICHER de vera fluidi nervei existentia scripsit, Berolini 1721. 4. ubi aereos spiritus defendit, solida sponte moveri negat, &c. *

J. G. BOETTICHER l. c. recusis est Hafn. 1724. 8.

J. DOMINICUS SANTORINUS in observationibus anatomicis plurima habet de cerebro; de magis recondito nervorum ortu, de venis ex dura matre ad venas externas capitis euntibus, &c.

In præfatione ad COWPERI Myotomen spiritus animales negat PEMBERTONUS, tum THOMAS MORGAN, nervosque fartos ponit cellulositate.

J. THEOPH. HENSING examen chemicum cerebri humani dedit, Giesæ 1719. 4.

FRANC. MERY an cordis motus a dura meninge, Paris. 1726. 4.

JOH. PHIL. BURGGRAV in L. de spiritus nervosi existentia, Francof. 4. & in spiritu nervoso restituto, Francof. 1729. 4. & in aliis opusculis, liquidum nerveum contra Stahlia-norum objectiones tuetur. Eandem theoriam HEISTERUS in compendio. ILL. ROSEN in Suecica anatome. Ingeniosissimus P. G. WERLHOF in L. de febribus J. H. SCHULZE in physiologia, aliique ex HOFMANNI schola defendunt.

Contra STAHLIANI in Actis Berolinensibus inque variis GOHLII & GOELICKII scriptis spiritus adesse omnino negarunt. Nempe huc pertinent A. O. GOELICKE spiritus animalis ex foro medico relegatus, Francof. ad Viadr. 1725. 4. & spiritus ex foro medico juste relegatus Francof. ad Viadr. & spiritus animalis merens exul justarum imputationum plenissime convictus, ibid. 1731.

J. DAN. GOHL insufficientia cerebri ad sensum & motum animalis, & meningum indispensabilior usus adsertus. Colberg. 1732. 4. Contra BURGGRAVIUM.

Ejusd. gedanken von der materie von den spiritibus animalibus, Hall. 1733. 8. In eundem.

JOH. de GORTER in Chirurgia sua & in L. de perspiratione & alibi, liquorem nerveum duplicem facit, alium qui in cerebri involucris natus sub capsula communi nervei funiculi contineatur, alium in fistulis tenuissimis nervi.

In Actis Petropolitanis in T. IV. de ventriculis cerebri septoque lucido exstant observationes. Et J. G. DUVERNOI de nervorum vera fabrica T. II.

J. QUINCY in SANCTORIUM motum duræ matris admittit, succo nerveo solam humectationem tribuit, tum BROWNE LANGRISCH in nuperis lectionibus de motu musculari.

In CL. SYLVA L. de venæ sectione aliqua ad arterias duræ matris minores, & ad sinus cerebri exstant.

HERM. FRID. TEICHMEYER de magna cerebri valvula, Jen. 1728. 4. de Lympha cerebri eod. anno, & alia Programmata huc pertinent.

H. FR. TEICHMEYER etiam huc pertinet de musculo substantia dura matris, Jen. 1729. 4.

THOMÆ BRINII de spiritibus animalibus L. Venet. 1729. 4. Contra spiritus animales & pro tremore fibrarum elastico, practicus potius quam anatomicus, argumenta adfert non difficilis solutionis.

J. B. WINSLOWUM semel laudavi ob totius corporis anatomen, repetere necesse non est.

In T. II. Edimburgensium Actorum experimenta in nervo recurrente ligato facta recensentur.

FRIDERICUS RUYSCH plurima in *Epistolis* & in *Theſauris* paſſim ad hiftoriam cerebri adiecit. Corpora pyramidalia poſteriora conſtituit. Fabricam glanduloſam refutavit, vaſculoſam per experimenta docuit, jam ab anno 1698. Præſ. ad VI. Theſ. nervos in tenuiſſimas fibrillas reſolvit, &c.

C. A. a BERGEN iconem novam ventriculorum cerebri, an. 1734. dedit qua cornua tria expreſſit, corpus fimbriatum deſcripſit, & choroideos plexus, corporis calloſi ſulcos tranſverſos monuit veſtigia venarum eſſe.

IDEM in progr. de pia matre, Norimb. 1736. 4. arachnoideam membranam pro vera membrana, piam pro cellulosa tela habet.

A. O. GOELICHE de meninge arachnoidea Cerebri, Francof. ad Viadr. 1734. Diſſ. *

IOH. FANTONUS in opusculis anatomicis, Genev. 1738. 4. Pacchionianam de dura meninge hæreſin fuſe refutat & ſolide, niſi quod pauca aliqua de lymphaticis vaſis cerebri minus firma defendit. Alia adjecta ſunt non hujus argumenti.

ALEX. STUART tum in ſuis de motu muſculorum Libellis, tum in *Phil. Tranſ.* n. 424. pro fluido nerveo contra ſyſtema tremorum in partibus ſolidis experimenta habet.

In nova editione ſuarum Diſſ. phyſiologicarum SENNAC fuſe de motibus ſympathicis & nervis egit.

DANIEL CHEVALIER. Ergo a diverſa cauſa moventur cerebrum & dura meninx, Pariſiis 1737. Diſp.

J. JACOBI HUBER de medulla ſpinali, Gotting. 1739. 4. Hoc quidem opusculum ſatis vitioſum, ex obſervationibus tamen in noſtro theatro factis natum, utilitate non caret.

ABRAHAM KAAU in L. de perſpiratione, Leid. 1739. 8. vaporem adſurgentem cerebri per experimenta confirmavit. In Impetum vero faciente Hippocratis, Leid. 1745. 8. per experimenta efficacia & dominium nervorum conſtituendum ſuſcepit, pulchro, ut ſolet, labore. Agit autem de motu muſculorum, nervorum, vulneribus cerebri, ſomno, opii effectu. Imperium nervorum in arterias recepit, quod ope laqueorum peragitur. Cerebellum motui cordis præeſſe minime credit, motum muſculorum a nervis pendere confirmat, duram matrem irritatam convulſiones nullas facere demonſtrat.

J. E. HEBENSTREIT de methodo incidendi cerebrum an. 1739. programma edidit, & an. 1738. de baſi calvaria in quo agit de arterioliſ & adhæſionibus duræ matris, ſinibus qui non ſunt niſi venæ, &c.

J. JAC. BELETETE. Ergo dura mater non habet motum a ſe, Pariſ. 1739. Recte obſervat undique adhærere duram membranam & immobilem eſſe.

D. KINNEIR *nerv essay on the nerves and the doctrine of animal ſpirits*, Lond. 1739. 8. 2^a. editio. Phyſiologica pars brevis, & videtur quaſi captatio benevolentiaſ eſſe pro ſequente practica, in qua aquam frigidam commendat ad morbos nervorum. In priori ſuccum nerveum reſorberi in fibrarum nervearum parallela intervalla, & nervorum facere e-laterem, & nutrire, & mucilaginofum eſſe docet.

BROWNE LANGRISH in L. de motu muſculorum ſyſtema ſpirituum animalium ob molitiem nervi veri, aliasque rationes defendit. In nuperis lectionibus ſpiritum æthereum recepit, & ſuccum nerveum pro inertī habet.

CAR. GOTTHOLD KESLER de liquore nerveo & ejus effectu in corpore, Erfurd 1739. 4.

EMANUEL SWEDBERG in *Oeconomia animalis* P. II. Amſtelod. 1741. 4. Corticis ſphæras totidem eſſe corcula, quæ in motum cient quamcumque voluerimus fibram, & in eam impellunt liquidum tenuiſſimum, quod inde in ſanguinem, & perpetua circulatione, iterum in corticem redit. Varia alia hujusmodi ibi reperies.

In *Differtationibus duabus de febre & ſucco nerveo*, Romæ 1740. 8. Spirituum exiſtentia in altera Diſſ. ex BOERHAAVIO defenditur.

NATALIS MARIA DE GEVIGLAN. Ergo functionum integritas a ſpiritibus, Par. 1740. 4.

CL. NICOLAUS LE CAT in L. de ſenſibus iconem dedit baſeos cerebri, & partis medullæ ſpinalis, in qua vaſa cerebri & venoſa expreſſa ſunt.

JOH. JAC. HUBER de nervis ex medulla ſpinali, Gotting. 1741. 8. Bona icon medullæ ſpinalis, Rollini opus, & diligens deſcriptio primarum originum horum nervorum.

CL. LADMIRAL duabus tabulis Amſtelodami an. 1738. editis vaſa duræ matris, tum majuscula, tum tenerrima & evaneſcentia, cum ſuis coloribus depicta dedit.

WILH.

WILH. CHESELDEN in nova editione anatomes suæ satis malas dedit icones medullæ spinalis, in prioribus vero editionibus arteriarum cerebri non incommodam iconem. MONROUS in descriptione nervorum, quam CHESELDENIANO Libro addidit, experimentum Bellinianum aliaque argumenta adduxit.

D. de la PEYRONIE jam in *Extractis actorum Societatis Monspeliensis* an. 1708. deinde imprimis in *Ac. REG. SCIENT.* 1741. fuse de sede animæ egit, quam in corpore calloso posuit, cum ejus vulnera sola funesta esse, non cerebelli neque alterius partis encephali, se demonstrasse putaret. Sed avibus nullum corpus callosum est. Neque certa mors a corpore calloso læso satis evicta.

In *opusculis philologicis* ROSETTUS spirituum circulationem describit ex nervis in membranas, inde iterum in caput: tum in *opusc. scientific. filolog.* T. V.

In T. X. & XII. DOMINICI de MAURODENOSA contra ROSETTI de circulatione spirituum systema observationes exstant.

D. LIETAUD consulere oportet, qui figuras aliquas huc pertinentes, dedit, & infundibulum cavum esse negat.

OTTO JUST. WREDE *demonstrat. des geirnes*, Hann. 1742. 8. Compend. WINSLOWIANUM.

ILL. SWIETENUS experimenta aliqua ligatis nervis & arteriis in animalibus vivis instituit.

J. JUNKER de *sinibus dura matris*, Hal. 1743. Disp. *

J. JUNKER de *sinibus dura matris, sinibus malorum*, Hall. 1743. 4.

J. STEPH. GUETTARD. *Ergo nervi canales*, Paris. 1743. 4.

Nostra de *nervorum in arterias imperio* Dissertatio edita 1744. 4. potest extendi ad pene omnes in corpore humano nervos, quos magis & magis reperimus plerasque in corpore humano arterias suis laqueis revincire & circumplecti.

LU. OVICI de CLARELLIS *spiritus animales ex systemate medico exturbantur*, Neapoli 1744. 4. Acris & iracundus adversarius spirituum, dictione usus impura & ægre intelligibili. Urget ridiculas opiniones nonnullorum, qui nerveos spiritus defenderunt, tubulos, minimos, tarditatem in tanta a corde distantia, momentum ex minutie & tarditate nascens exiguum. Fibras solidas pro sensu & motu explicando sufficere credit.

CL. TABARRANI in *Luccensium Memorie de' Valentuomini* varias observationes habet, de circulari sinu & transverso receptacula conjungente, de sinu comitante carotidem, de sinu in cartilagine inter os petrosum & occipitale posito.

JOSEPH LALLEMANT. *Ergo actio muscularis a solis spiritibus*, Paris. 1745. 4.

In *Actis Acad. Scient.* Massil. 1746. exstat CL. ARLETI de cerebri proportionibus observationes, quænam animalia magnum, quæ parvum cerebrum habeant, &c.

FRIDERICUS WINTER de *irritabili natura nervorum*, a qua plerique in corpore humano motus pendent, in *Oratione de certitudine in Medicina practica*, Franekeræ 1746. fol. utilia dixit.

Nervos ligatos tumere observavit CL. MOLINELLUS in *L. de Aneurysmatibus*.

J. G. GUNZ de *sanguinis motu per sinus dura matris*, Lips. 1747. 4. novam theoriam proposuit, sinus factos esse ad retardandum sanguinis iter, ut eo copiosior in corticem veniret, arteriolas minimas utique sanguinem in sinus exhalare. Varia etiam de sinibus rarioribus duræ membranæ, & emissario habet, de quibus etiam in *Libello de arteria maxillari*, Lips. 1743. 4. observationes proposuit.

J. G. GUNZ duo etiam sunt programmata de cerebro, quæ anno 1750. prodierunt.

DIONYS CLAUD. DOUCET, *Ergo tonus partium a spiritibus*, Paris. 1747. 4.

D. BOUILLET in *suite des élémens de la Médecine pratique*, 1746. 4. vias per foramina ossis cribrosi aeris vult patulas esse, & verum aerem in ventriculum cerebri venire. Hujus renovatæ opinionis jam exstant vestigia in Disp. D. CHEVALIER superius dicta an. 1737.

CARL GOTTLÖB KESLER *die bevvegung der electrischen materie als die vvvirkende ursache der bevvegungen und empfindungen*, Landshut 1749. 8. Materiam animalium spirituum cum HAUSENIO aliisque electricam fecit.

J. GOTTFRIED ZINN. me præside defensa disputatio qua *Experimenta circa corpus callosum, cerebellum, duram meningem in vivis animalibus instituta continentur*, Gotting 1749. 4. Vulnera corporis callosi, & cerebelli nihil magis funesti habere, quam reliqua cerebri vulnera, & duram membranam insensibilem esse ostendit.

sculptos habere, qui vasa venosa recipiunt, ut quatuordecim (a) omnino sinus venosi distincti exhiberi possent. De decursu vero fibrarum in dura matre (b), quas WILLISIUS ad nervos magis festinans, non descripsit, habet aliqua VIEUSSENS & RIDLEIUS. Præterea VIEUSSENS cerebrum dissectum variis modis egregie in figuris repræsentat, adeo ut pigritia sit, quando anatomici hodierni hanc partem non bene demonstrent. WILLISIUS in figuris integris cerebrum non dissectum exhibet, sed clarissimus VIEUSSENS, dum cerebrum exhibet dissectum, secundum longitudinem, & oblique & alio modo, tantum etiam involutum cerebrum repræsentat in figuris: Verum VIEUSSENIUS ipse nactus est censorem RIDLEIUM, qui suffultus observationibus WILLISII & VIEUSSENIII addidit egregia, nempe fibras duræ matris, vasa lymphatica in plexu choroideo, & mirificos ductus per ceram repletos in eo plexu. Ab his ergo Auctoribus omnia de cranio, meningibus cerebri, harum arteriis, venis, sinibus, quæ nosci possunt, habere possumus, & omnia apud eos discemus, quæ de apparatu mirifico vasorum, arteriarum, &c. ad cerebrum venientium habentur. Videbimus ibi, quomodo ille apparatus ante ingressum extra cranium, & quomodo intra cranium se habeat. RIDLEIUS præsertim demonstrat, quomodo in ingressu hæc se habeant. De egressu vasorum WILLISIUS videatur. Hi iidem viri tradiderunt descriptionem figurarum, situs, molis partium, distributionis, appendicum corticis, medullæ, medullæ oblongatæ, medullæ spinalis, cerebri atque cerebelli, & originis nervorum.

Situs cerebri & cerebelli discatur inprimis ex RIDLEIO & WILLISIO, nam quæso, quare cranium externe glabrum est, interne vero rupibus & eminentiis scatet, ut eminentia cristæ galli? Cui bono ad basin cerebri fella turcica, ad latera cavitates, ad posteriora quasi cornua reperiuntur? Cur tota basis cranii horrescit ubique quasi prærupta rupes? Hæc omnia certe perpetuo ignorabimus, nisi horum trium Auctorum observata perlegamus: neque necessitatem harum cavernarum, in quibus reconditur sanguis reflui, ne comprimatur vasa cerebri, absque eorum opera intelligeremus. Quis nos docebit, cur dura mater, tanquam velum pendulum, ad has eminentias cranii adfigatur, uti videmus ad ingressum arteriæ carotidis ad sellam turcicam, ubi hæc arteriæ ingrediuntur? nempe suspenditur hoc velo cerebrum, ne comprimatur a suis propriis vasis arteriosis (c).

Ex iisdem porro Auctoribus discimus commenta egregia de usu enumeratarum partium: nisi vero earum usus intelligatur, nihil boni intelligemus de natura horum viscerum, & notandum est, ultimam correctionem & majorem semper esse, & priorem superare.

Jam alterum quod considero de cerebro, hoc est. Quando tiro impressit accuratam speciem, seu ideam hujus apparatus cerebri & cerebelli; ea cognita, superaddet doctrinam ipsius structuræ, in substantia cerebri compertæ. Verum

tres

(a) Additis nempe quatuor sinibus ad sellam equinam.

(b) Hæc magis excoluit A. PACCHIONUS & parum est, quod eo contulit aut VIEUSSENIUS aut RIDLEIUS, nisi istius experimentum velis, quo duram Matrem minime mobilem esse defendit.

(c) Videtur sensus esse, protegi a dura matre carotidem, ne pondere incumbentis cerebri sanguis ejus nimis retardetur.

tres præcedentes Auctores omnia solum externa docent, sed quænam structura sit intimæ substantiæ, de ea re fere nihil scripserunt. Hinc duo sequentes Auctores addantur 1. FRIDERICUS RUYSCHIUS (a) in observationibus suis sparsum editis, tam anatomicis quam chirurgicis, sed præsertim in *thesauris* suis, ubi hinc inde figuras præparatarum partium & membranarum partis corticalis cerebri, distributionis vasorum sanguiferorum per hæc partes exhibet. 2. Sed nemo ulla cum specie rationis carere potest MALPIGHIO (b) qui videndus erit 1. in tractatu de *glandulis conglobatis*, & 2. in tractatu de *cerebro*, ubi naturam fistularum nervosarum, quæ medullofæ vocantur, distincte exhibet.

Qui hos binos viros legit, poterit discernere cum iudicio, quid cogitandum sit de medulla & de cortice cerebri.

Quicumque edoctus præcedentia impressit sibi adcuratissime, transeat nunc ad doctrinam de nervis, eorum substantiam, originem, egressum ex cerebro, distributionem intra cranium, & thecam vertebralem, egressum ex cranio, & ex commissura vertebrarum, distributionem per musculos, viscera, & reliqua loca corporis humani.

Ut adcurate discere & retinere hanc doctrinam quis possit, hæc agenda sunt. Primo, cognoscenda est substantia medullæ cerebri, cerebelli, & medullæ, quæ prolongatur in ramos laterales; substantia quidem cerebri ubique æqualiter mollis est, verum, ubi ad exitum venit, acquirit duram matrem; unde durior fit, ab adscita membrana callosa. Ubi vero nervea aliqua propago per cranium decurrit, non acquirit duram matrem, nam recurrens nervus WILLISII non accipit duram matrem; sed ubi nervi transeunt per foramina, ut ex cranio exeant, ibi accipiunt utique vaginam duræ matris, & cum ea progrediuntur; iidem nervi ubi ingrediuntur musculos, viscera, vel organa quæcunque, deponunt iterum duram matrem, & pergunt cum pia matre; ubi denique nervus ad loca sentientia venit, eoque nunc pervenit, deponit membranas suas omnes, & explicat se in pulposum quoddam corpus. Quando nervi ad cerebrum redeunt, tunc iterum deponunt membranas, & fit mollis substantia.

Incepimus dare methodum facillimam addiscendorum omnium, quæ ad nervos spectant. Consideravimus ibi primo, ideam substantiæ nervosæ; omnem scilicet substantiam nervosam in cerebro esse ejus medullam, hanc, ubi egreditur

ex

(a) Ut qui ubique corticem non glandulis, sed vasculis fieri demonstravit, partim per experimenta, partim per analogiam, a partibus, quæ cera replentur, ad eas quæ repleri non possunt. Iconem vasorum corticis in ultima adhuc adamum nostrum J. C. BOHLIUM epistola dedit. Valuit autem experimentum contra hypothesen, ut etiam SCHELHAMMERUS a præparato, RUYSCHIANA arte, cortice convictum se fuisse fateatur in *posthum. oper. p. CCLXXXII.* & BOERHAAVIUS in ejus sententiam ultimis vitæ annis transiverit, desertam, quam pro sua eloquentia tuitus erat, Malpighiana hypothesi.

(b) In collectione *exercitationum anatomicarum de viscerum structura*, Bononiæ 1666. 4. * & Londini 1669. 12. excusa, exstat M. MALPIGHII de *cerebri cortice* Libellus, quo fabrica glandulosa corticis proponitur. Fere omnes autem Anatomici in eam sententiam iverant, & LISTERUS in *Exercit. Anat. II.* eam opinionem contra LEEUWENHOECKIUM defendit, experimentis vero fulcire in priori opere suscepit RAYMUNDUS VIEUSSENS, nam in posteriore opere de *vas. syst.* corticem spongiosum fecit, non glandulosum, clanculum exscripto RUYSCHIO, si ipsi credis *Proæm. Thef. VI. p. 10.*

ex cranio, recipere membranam, & durissimum corpus fieri, quod in cerebro molliissimum fuerat. Porro, ubi hic nervus ex commissuris cranii & vertebra- rum exit, semper transire ibi una duram matrem, & nervum cum hac dura matre pergere, sic defendi mollem nervum, ut tuto perveniat ad locum suum. Duplex vero est locus, quo vergit nervus. Ubi sentire debet, ibi depo- nit vaginam, quam adquisivit in transitu ossis, & mollior iterum ac tene- rior fit, & explicat se, quasi in corpus mucosum. Id ubique advertitur. Vi- de nervos olfactorios, postquam os cribrosum transiverunt, ubi nunc per sinus nasi & membranam pituitariam distribuuntur, adverte, quam molles sunt (a) ! ut, si vel parum stimulentur, statim sternutatio oboritur. Vide etiam nervos opticos, & ipsi piam matrem deponunt, & faciunt choroideam & uveam, eo- rum vero substantia medullosa distribuitur, ac si esset mucus. Ita sub epider- mide reperitur corpus mucosum MALPIGHII, quod nihil est, nisi papillæ perfecte nervosæ (b), pia & dura matre orbata, dispositæ ad recipiendum motum objectorum. 2. Vel motui inserviunt. Hi nervi non videntur depone- re piam matrem; hinc in musculis nervi duriores sunt, quam ubi distribuun- tur ad quinque sensus.

Alterum, quod observandum esse dicebam, erat origo nervi, quæ in gene- re in cerebro, cerebello & medulla spinali latet. Jam quænam sint distributio- nes, separationes, conjunctiones, recursus nervorum & iter ad viscera, videan- tur sequentes Auctores.

WILLISIUS in parte posteriore tractatus de cerebri anatome, cui subjungi- tur *nova nervorum descriptio* (c). Hæc est ea pars, in qua origo, distributio, modus separandi, coeundi, & finis nervorum optime describitur: ita ut GALE- NUS nunquam, neque SYLVIUS, qui de suis tabulis gloriatus est, quibus etiam laudem meruit, neque alii possint suas figuras comparare cum WILLISIANIS. Verum hæc scripta WILLISII inserviunt ad describendos nervos, ad sensus, ad viscera, & qui circa collum distribuuntur. Plura ex WILLISIO non oportet disci, sed in hisce optimus est; solus enim fere descripsit ex cranio ortos nervos, reliqui fere ad loca hæc distribuuntur.

Verum si nervos, qui ad musculos pedum, brachiorum, &c. distribuuntur, sci- re quis

(a) Conf. Comm. Boerb. II. n. 593. *segg.*

(b) Conf. Ejusd. operis T. III. n. 418. unde quidem non poterit hæc sententia defendi, pa- pillæ enim semper solidiusculæ sunt, & grenulosæ, & a reticulo diversissimæ.

(c) Nervorum descriptio ex difficillimis anatomæ partibus est, quæ versetur circa parti- culas molles, teneras, latentes, nulla arte augendas, sæpe per durissima ossa varie & ocul- te repentes. Inde factum est, ut non plurimos hic certe Anatomicos laudare liceat. Inter- costalis & octavi paris prima stamina reperiuntur in HIPPOCRATIS Libro περί φλέβων. HEROPHILUS nervos separavit a tendinibus. GALENUS in L. de nervorum dissectione & de organis vocis nervos diligentius descripsit, recurrentes invenit, experimenta perpulchra fecit ad demonstrandam nervorum in motu producendo prærogativam.

ALEX. ACHILLINUS nervum quarti paris bene descripsit.

ANDREAS quidem VESALIUS non alibi minus gloriæ consecutus est, adeo ejus ico- nes malæ & fictitiæ sunt, & enumeratio nervorum imperfecta. Brachii tamen nervos qui- nos ante DUVERNEYM constituit.

re quis cupit, tum nimis brevis erit tractatus WILLISII; multum etiam hic jam præstitit RAYMUNDUS VIEUSSENS in Libro in folio jam commendato de *Neurologia* (a). Frequenti enim dissectione invenit & depinxit accuratissime nervos, qui ex medulla spinali orti, vadunt ad singulos musculos corporis. Cum enim tentaret hos omnes nervos describere, debuit adsequi omnes nervos accuratissime, & ea occasione ad ultimos fines ubique perventum fere est; hinc certe huic viro ab accuratissimis hodie anatomicis hoc laudis datum vidi, ut si persequerentur aliquem nervum, secundum ejus descriptionem, nunquam decepti fuerint. Cum præterea figuræ ejus egregiæ sint, & systema brevissimum, est quod nos contentos hisce duobus Auctoribus esse deceat, ex his enim discemus omnia, quæ per compendium prius recensui.

Post-

C. STEPHANUS non penitus contemnendas figuras dedit. Intercostralem ab octavo pare separavit. Nervorum brachii truncos quinque distinxit.

Sed BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS longe feliciter in eo opere versatus est. Paria nervorum decem constituit, ut ex iconibus apparet, nervi intercostalis originem veram ex sexto pare primus detexit. Nervos oculi accurate, si a ganglio recesseris, exposuit, tum chordam tympani aliasque quinti & septimi anastomoses. Nervorum artuum cum musculis suis veras dedit icones. Inimitabili labore totum, adeo complexum, nervorum abdominalium systema comprehendit. Nervum opticum ex laminis plicatis cerebri fieri ante MALPIGHIIUM docuit.

GABRIEL FALLOPIUS quartum par notum habuit, & tympani chordam, & durum nervum, & alia ad nervos capitis mares pertinentia, aliquam etiam nervorum intercostalium & cordis adumbrationem.

CONSTANTIUS VAROLIUS nervorum opticorum originem propria epistola, Patavii 1573. 8. edita, ex thalamis deduxit, quæ etiam ob alios nervos, & basin cerebri noviter delineatam lectu dignissima est.

ARCHANGELUS PICCOLHOMINEUS processus mammillares ad nervos reduxit.

Quænam sunt elegantissimæ septem figuræ nervorum totius corporis Romæ excusæ, quas mirabatur RIOLANUS (op. omn. p. 829.) non vidisse VESLINGIUM, neque inde notasse nervorum distributiones? An eadem quæ BERRETTINI? Est suspicio J. FANTONI in *Diff. anat. nov. ed.* p. 213., valde mihi probabilis.

Nempe nuper an. 1741. fol. prodierunt Romæ Tabulæ quibus pictoris BERRETTINI nomen præfixum est. Earum magna pars est neurologia, & ad vivum corpus depictos habet nervos, eosque in suo situ. Eos consulere oportet, sed ut errores admistos vitemus, v. gr. septimo pari tribuitur nervus descendens noni. In exemplare Bibl. Gotting. GUIELMI RIVÆ & nomen & aliquæ icones præfixæ sunt.

A. LAURENTIUS sex truncos nervorum brachii descripsit.

JULIUS CASSERIUS & universorum nervorum Vesaliana, nec bona sceleta dedit, & nervos cordis & recurrentes pinxit, sed in istis omnibus minus felix fuit.

C. HOFMANN de usu venarum & arteriarum & nervorum origine, Norimb. 1615. Disp.

(a) THOMAS WILLIS in descriptione nervorum cum historia cerebri edita nervos etiam, imprimis capitis & viscerum, cum suis gangliis descripsit. Ab eo profecta est minus vera origo nervi intercostalis ab ophthalmico ramo quinti. Laqueos nervosos observavit, & ganglia plexusque principes, neque eos male. Artus vix attigit, & cum aliquo metu legi oportet, ob admissos errores, & brutorum animalium descriptiones.

RICH. LOWER nervorum cordis tabulam habet, Villisianæ similem.

In C. BARTHOLINI epistola de ranis, neurologia hujus animalculi exstat, tum ejusdem cum JACOBÆO de ranis Epistola de nervorum usu in musculorum moru, Paris. 1676. 8.

De fibris nerveis per os cuneiforme descendentes exstant SCHNEIDERI de osse cribiformi, & CHARLETONI (de cerebr. hum.) observationes, qui ultimo loco dictus Auctor eas evidentes facit.

Postquam nunc nervi accuratissime sunt descripti, quatenus propagines sunt cerebri, sequitur, ut de visceribus agamus. Initium faciemus a faucibus, quæ maxime merentur hic recenseri, propter admirabilem structuram.

JOSEPHUS DUVERNEY nervum durum per faciem euntem, & chordam tympani iconibus expressit, & reliquos auriculæ nervos, mollium etiam ramulos ad intima organi auditus penetralia deduxit.

RAYMUNDUS VIEUSSENS in *Neurographia* princeps Auctor est. Nervos enim totius corporis novo & immenso labore, ad exempla ex corpore humano systemata, disposuit, artuumque nervos, & dorsi, a WILLISIO omisso, supplevit. Nervum splanchnicum, ganglia semilunaria, nervos cordis & viscerum laboriose expressit, unice ad hominis corpus, dignissimus Auctor. In capitis tamen difficilibus nervis, & in quinto maxime minus felix fuit; nervum descendantem noni octavo tribuit, in origine nervi intercostalis WILLISIIUM secutus est, paucosque alios nervos in immenso opere reliquit. Nervos brachii vitiose pingi monuerat MERYUS, & minatus erat se errores demonstraturum (*Progrès de la Médecine* p. 26.)

H. RIDLEY in nervis parcus est. Ramos ad duram matrem a quinto pare, non satis vere deduxit. In decimo pare, quod sub prima vertebra ait exire, vehementer aberrat.

In *Anthropographia* COWPERUS aliquas observationes habet, v. gr. minimos furculos esse, qui ex posterioribus foraminibus ossis sacri exeunt. Imo nulli sunt, ut certo didici inquirendo, sed arteriæ a sacris in longissimum dorsi musculum ibi erumpunt.

In KOENIGII regno animalium specimen Neurologiæ ex PETRI CHIRAC dictatis habetur, quo multa melius describuntur, & v. gr. descendens ramus nono restituitur.

J. M. HOFMANNI de nervis disp. Altdorf 1692. 4.

Anno 1697. quinque truncos brachialium nervorum propriis nominibus distinxit JOSEPHUS DUVERNEY, habebat autem axillarem pro ramo radiali (PALFYN II. p. 307. VERDIER II. p. 402.) Et eodem fere tempore RAVIUS sex truncos descripsit in posthumis Schedis, quæ cum VALENTINO exstant.

In ACTIS REGIÆ ACADEMIÆ an. 1727. FRANCISCUS PETIT de nervis oculi observationes protulit. Intercostalem iterum ex quinti primo ramo deduxit, ganglion ophthalmicum descripsit, ex quinto & tertio compositum, a quo interiores oculi nervi proveniunt.

CL. HUNAULT an. 1734. nervum cordis a plexu semilunari retrogradum descripsit.

JOSEPHUS DE LA CHARRIÈRE VIEUSSENIUM in nervis, ut in cerebro, imitatus est.

ANTONIUS MARIA VALSALVA durum aliosque nervos auris, sed illum satis imperfecte descripsit.

In Epistolis MORGAGNIANIS, posthumis VALSALVÆ adjectis, sollicite agitur de nervi mollis itineribus ad vestibulum, & cochleam.

SIMONCELLII Chirurghi fabulosa descriptio nervi mollis habetur in epistolis DES NOUËS Romæ an. 1706. in 8. editis.

ADR. SLEVOGT in Diss. de processibus cerebri mammillaribus, Jenæ 1715. satis ingeniose eos nervos esse negavit.

D. W. ANDRÆ Disp. de processibus mammillaribus. Leid. 1715. *

JOH. MARIA LANCISIUS in posthumo de corde tractatu, jam laudato, nervorum cordis miram tabulam dedit, & nervos novos a primo cervicalium ortos, qui descenderent per omnem vertebrarum colli seriem, tum a phrenicis addidit. Sed ea omnia mihi suspecta sunt. Neque satis novi, an firma sint, quæ VIR. CLAR. de Gangliis in epistola habet, quæ cum V. Adversariis MORGAGNI prodiit. Molles ibi ramos intercostalis Ganglii primum, ni fallor, descripsit.

ARENT CANT de nervis quinto & septimo aliqua habet, non optima in T. I.

J. FRID. BAUER de nervis eorumque præstantia in corpore humano. Lips. 1725. 4.

In WILL. STUKELEY description of the spleen Tab. V. habetur nervorum icon ad Eustachianam ficta, sed pessime corrupta.

In Actis Petropolitans T. II. CL. BULFINGERI & DUVERNOY de nervorum fabrica experimenta exstant.

CHESELDENIANÆ anatomes editiones posteriores habent neurologiam adjectam ab ALEX. MONROO, cum variis inde deductis physiologicis corollariis & pathologicis.

ANDR. OTT. GOELICKE de nervorum structura & usu. Francof. ad Viadr. 1732. 4.

In J. M. HOFMANNI de nervis disp. Altdorf. 1692. 4. exstat icon nervorum in basi cranii ad nostram præparationem nata.

J. B. WINSLOWI anatome hætenus fere unica neurologia est, etsi brevior, ex scopo Libri, imprimis in nervi quinti ramis. Ejus quasi compendium exstat apud VERDIER.

J. TIMM. anat. des Rückgrades Brem. 1735. 8.

C. A. a BERGEN de nervis cranii ad novem paria non relatis. Progr. Francof. ad Viadr. 1738.

J. CHRISTIAN KLUG Disp. de nervorum usu & differentia. Argentor. 1740.

GEVIGLIAN in thesi sua de respiratione a nobis recusa, describit nervos ex plexu semilunari ad cor & ad diaphragma euntes.

J. F. CASSEBOHM in difficillimos nervos organi auditus accurate inquirit.

C. AUG. a BERGEN de nervo intercostali. Francof. 1732. 4. & WALTHERI de eodem Diff. Lips. 1733. 1735. omnino legi merentur. Idem CL. a BERGEN in *Commerc. Litter.* 1738. aliquos subtiliores in cranio nervos descripsit, quos etiam in Progr. jam laudato habet.

In CL. LE CAT. L. des Sens nervorum origines & rami aliqui exstant, tum ganglion ophthalmicum & nervi oculi, rete intercostalis nervi, quod in carotide est.

ABR. VATER in Diff. de consensu partium. VVittemb. 1741. 4. præter papillas nerveas etiam plexum brachialem depinxit. Sed & CL. LIEUTAUD in neurologicis legi meretur.

Ego in icone baseos cranii nervos oculi & ganglion ophthalmicum, nisi fallor, unicus depinxi, in tabulis arteriæ carotidis vero plexus pharyngeos, nervosque molles & passim alia adpersi. In Diff. de vera nervi intercostalis origine. Gott. 1743. eum nervum a primo quinti ramos non habere demonstravi, communicationem noni cum phrenico descripsi.

CL. GUNZIUS in Commentario ad L. HIPPOCR. de humoribus nervos phrenicos a ganglio semilunari ortos descripsit.

J. J. HUBER de nervi intercostalis origine. Gotting. 1744. 4. similia fere nostris repetiit, adjecit plexus pharyngei non satis plenam descriptionem.

CL. CASIMIR. CHRISTOPHORUS SCHMIEDEL in Ep. de controversa origine nervi intercostalis. Erlang. 1747. 4. restituendam sibi sumpsit ejus nervi a quinto originem. Verum, etsi mallem aliorum judicio plus tribuere quam meo, neque in ea re, neque in gangliis & rete in nervo intercostali depictis meæ observationes cum CL. VIRO sinunt me sentire.

CL. J. FRID. MEKELII de nervo quinti paris Diff. Gotting. 1748. 4. eximiam certe descriptionem hujus difficillimi nervi habet, qua ejus anastomoses cum ophthalmicis, temporalibus, duro, intercostali, verus ortus chordæ tympani, & alia multa diligentissime describuntur, & elegantissime pinguntur.

CL. AM. BERTRANDI in tractatu de hepate & oculis descripsit nervum V. paris.

GEORGIUS THOMAS ASCHE, Gottingæ 1750. 4. disputavit de primo pare nervorum medulla spinalis. Ostendit duplices radices habere, oriri super Atlantem, ejusque truncum anteriorem & posteriorem cum omnibus ramis, & diligenter persecutus est, & nitide depictum dedit.

AUGUSTI SCHAARSCHMIDT Neurologische tabellen, Berlin. 1750. 8. Ex WINSLOWO & MEKELIO.

CL. BARBAUT cum splanchnologia neurologiam conjunxit.

Neurologia in universum longius a perfectione abest, & multa in ea parte anatomes aut obscura supersunt & imperfecta, aut omnino ignota.

C A P U T IV.

De Faucibus.

A Gimus hoc loco ex ordine de structura faucium, quo nomine intelligo *velum palatinum*. Scimus enim hoc duplex esse, Palati nempe pars alia ossea est rugosa, & ad posteriora velum est expansile & contractile, in cujus medio est uvula, & ad latera sunt tonsillæ. Hoc idem velum explicatur in suos quatuor musculos, quos descripsit FALLOPIUS (a), & deinde alios palati musculos, quos VALSAVA (b) invenit. Qui nunc scire vult, quantum in hac

(a) FALLOPIUS utique velum mobile palati, ab uvula melius quam recentiores separavit, musculos circumflexum & levatorem palati mollis, stylopharyngæum, cephalopharyngæum, & plerasque origines musculorum pharyngis descripsit.

Sed BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS in iconibus. T. XII. XLII. multo minutius hæc omnia & levatorem & circumflexum expresse, & musculos pharyngis atque uvulæ numerosiores depictos dedit, hyperoopharyngæum, pharyngostaphylinum, hujus & stylopharyngæi insertionem in thyreoideam cartilagineam.

NICOLAUS HABICOT stylopharyngæi insertionem in cartilagineam thyreoideam vidit, descripsit etiam musculos pharyngis, novo modo & paradoxo.

C. V. SCHNEIDERUS in L. I. de catarrhis, de larynge & pharynge, sed de isto inprimis egit.

CÆSO GRAMM in *explicatione problematis Hippocratis*. Slesvici 1661. 4. per experimenta in veterem quæstionem inquisivit, an aliquid de potu per asperam arteriam descendat.

FRANCISCUS GLISSON in L. de ventriculo & intestinis palatum leve iterum ab uvula separavit.

In BROWNII Myotomæ unica icon est propria CROONII, qua musculi uvulæ, neque ii optime, exprimuntur.

J. A. SLEVOGT de gurgulione Disp. Jenæ 1696. 4. & recusa in collectione nostra T. I. non inutilis est. Ex racemo glandularum uvulam componi docuit.

JACOBUS DOUGLAS multo minutius prioribus musculos Pharyngis, inprimis medios, divisit, azygon uvulæ invenit, mylopharyngæum & salpingopharyngæum, syndesmo-pharyngæum, chondropharyngæum, alios.

GUILLIELMUS COWPER in n. 220. *Phil. Transf.* uvulam etiam a velo palati distinxit. IDEM in *Myotomia posthuma* meliores iis, quæ hæctenus exstabant, icones dedit musculorum pharyngis & uvulæ, quales fere descripsit DOUGLASSIUS. In appendice *anthropographia* f. 8. tonsillas foraminulentas pinxit, glandulas labiorum, &c.

(b) In *Tr. de aure humana* musculos rubæ, & ea occasione etiam glossostaphylinos, circopharyngæum, thyreopharyngæum depinxit, sed ex situ motos. In eo valde incommodus fuit Auctor, quod uvulæ eos omnes musculos tribuerit, qui palati sunt mollis, neque utramque particulam satis separaverit. Pterygopharyngæum, adeo amplum musculus, omisit.

R. WILH. KRAUSE de Tonsillis. Jen. 1704. 4. Disp.

J. BOECLER *historia instrumentorum inprimis deglutitioni inservientium*. Argentor. 1705. Disp.

J. B. MORGAGNUS in *Adversar.* I. & II. in epistola, quæ exstat in *Comm. Bononiens. Acad.* T. I. & inprimis in *Epistolis* ad posthuma VALSALVÆ VIII. IX. X. XI. eruditissime & minutissime multa in musculorum & glandularum faucium historia correxit. Azygon uvulæ, eo quo DOUGLASSIUS tempore invenit: staphylopharyngæi ortum ab osse palati vidit. Cephalopharyngæum, neque mihi visum, non admittit.

CL. WIEDEMANN Diss. de Tonsillis iconem & descriptionem utilem dedit, tum ILL. L. HEISTERUS de iisdem in E. N. C. Cent. IV. & experimenta habet VATERUS de *duct. saliv.* ubi credit cum thyreoidea glandula sinus tonsillæ communicare.

LEEUVENHOECK de palato Boum *Phil. Transf.* n. 320.

miraculi, legat primo VALSALVAM de Oesophago, de musculis salpingostaphylinis (σαλπιγξ, enim est tuba, & σαφύλη dicitur Græce uvula, ob similitudinem cum racemo uvarum) hoc est, cujus tendo unus & extremitas, uvulæ adfigitur, altera tubæ Eustachianæ, quæ ex cavo auris ad palatum vergit. Videatur præterea de hisce partibus CONRADI VICTORIS SCHNEIDERI de catarrhis Liber, editus Wittembergæ anno 1660. (a). Primus iste Liber prodiit, cui

Huc etiam refero Disp. de Masticatione C. LUD. WELSCHII. Lips. 1703. 4. LAUR. HEISTERI, Altdorf. 1711. ALVARES TELLES DACOSTA. Ultraj. 1734. 4.

J. CHRISTOPHORI LISCHWITZ disp. Lips. 1725.

In P. DIONIS Cours d'Anatomie, azygos, aliique uvulæ musculi breviter recensentur. Illum vero RUYSCHIIUS etiam mature in Thes. II. attigit.

In Monumentis Acad. Reg. Soc. JOH. LUD. PETIT an. 1715. 1716. suctionem & deglutitionis aliquos casus descripsit.

De veli palatini etiam elevatione D. DODART an. 1707. & HOMBERGIUS an. 1712. observationes adtulerunt.

JUSSIEU an. 1718. egit de puella quæ absque lingua deglutiebat.

CL. LITRE an. 1718. uvulam a velo separavit, iconem faucium dedit, azygon non lectis, ut videtur, prioribus scriptis, indicavit, tum pharyngostaphylinum pinxit, & glossostaphylinum.

ARENT CANT tabulam musculorum pharyngis dedit, ut eo tempore plenior, nunc optimis cedentem.

Deglutitionis etiam historiam dederunt POLYCARPUS GOTTLIEB SCHACHER Diss. de Labio leporino; SENAC in Diss. Physicis. COWPER in Phil. Transf. n. 220. & in Introductione: HEUCHERUS: REVERHORST Diss. de fabrica Linguae.

JOACHIMI POETÆ L. de usu Uvula. Neap. 1720. 8. *

J. DOMINICUS SANTORINUS in observationibus anatomicis multa, in musculis pharyngis minutius rimatus est: hyperoopharyngæum a thyreopalatino separavit, ab utroque pharyngostaphylinum, &c.

AL. CAMERARII Disp. de sorbendi actu, modo & usu multiplici. Tubing. 1736.

CL. JOSIAS WEITBRECHT accuratas observationes ad musculos pharyngis in IX. T. Actor. Petropolitanorum attulit. Et ipse & MORGAGNUS musculum salpingopharyngæum vix admittunt, & me omnino habent consentientem. In Syndesmologia aliqua ad ceratopharyngæum adjecit.

B. S. ALBINUS musculos pharyngis de integro descripsit, in tres constrictores divisit, novam penitus explicationem deglutitionis dedit. In tabulis majoribus pulcherrime, & undique eos musculos expressit. Mylopharyngæum a buccinato primus deduxit.

Frater EJUS CHRISTIANUS BERNHARDUS eadem inventa in Disp. sua de deglutitione Leidæ 1740. ornate proposuit, & multa in BOERHAAVIANA hujus actionis descriptione correxit.

CHR. BERNHARDI ALBINI citata disp. recusa est in Vol. disputationum VII.

AUG. FRID. WALTHERUS in anatome musculorum teneriorum, Lips. 1731. in ea de deglutitione 1737. & de oscitatione ib. 1738. & de larynge & voce 1740. & de obesitate & voracibus & de lingua, denique varia de minutis musculis uvulæ, & pharyngis & uvulæ inter musculos capitis exhibuit, & diligenter descripsit circumflexum aliosque.

LAUR. HEISTERUS in nuperioribus editionibus compendii anatomici figuras aliquas faucium dedit, novum musculum ceratostaphylinum proposuit.

(a) Idem judicium BOERHAAVII in IV. tomo Praelectionum, & in cap. de olfactu existat. Aliqua ad anatomen harum partium attulit; & imprimis mucum non esse cerebri recrementum, sed in pulposa membrana, quam sæpe a SCHNEIDERI nomine vocant Anatomici, generari, contra receptam opinionem docuit. Quæ anatomica habet, ea leguntur in L. I. & III.

cui accedit tractatus secundus, tertius, quartus, hinc ea editio incēpit anno citato. Id opus diffusæ lectionis est, & abundantem eruditionem continet. Videmus ibi totam membranam narium, faucium, œsophagi, esse membranam repletam glandulis, quæ mukum lubricantem stillant, & rationem discimus simul tot morborum ibi sedem habentium. Irreprehensibilis tractatus esset, si non tantæ eruditionis esset, nam quod duobus foliis potuisset exponere, tot voluminibus in 4. conscripsit. Quæ tamen de anatomia harum partium habet, ea egregia sunt.

C A P U T V.

De Pulmone.

Pulmo quid sit, rite qui scire vult, incipiat semper a *larynge* (a). Ita vocamus mirificum caput asperæ arteriæ, plurimis musculis instructum, ut nulla in corpore tam parva pars ad tot motus destinetur. Si de ejus cartilaginibus, & ligamenti legere quis velit, sumat Librum in folio JULII CASSERII (b), excellentissimi

Ad glandulas etiam faucium & palati legere oportet SAMUELEM COLLINS; NICOLAUM STENONIS de glandulis oris; COWPERI icones in myologia; T. WARTHON, A. KAAU, HEISTERUM in not. 57. compendii anatomici qui aliquas glandularum palati mobilis sub nomine Gland molarium descripsit, REVERHORSTIUM de fabrica lingua.

(a) De Larynge primus GALENUS satis fuse in L. de vocis instrumentis dixit, ejusque ventriculos, musculos plerosque & alias particulas minime ignoravit, in nervo etiam recurrente experimenta instituit in admin. anat. L. VIII. & de Hipp. & Platon. decret. L. II. EJUS etiam spurius Liber exstat de voce & anhelitu.

GALENI Liber de vocalium instrumentorum dissectione AUG. GADALDINO interprete prodit, Lugd. 1550. 8.

J. BERENGARIUS quinque cartilagines laryngis esse monuit, cum tres tantum numerarentur.

A. VESALIUS parum in eo profuit, qui animalium laryngem pro humano demonstrare solitus sit, (COLUMBUS de re anat. p. 43.) experimenta tamen fecit, quibus constitit vocem, perforato thorace supprimi.

Sed BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS cartilagines quinque, vario in situ, cum simplicibus, sed veris musculorum iconibus dedit T. XLI. XLII.

G. FALLOPIUS præter alia, receptos etiam hyoepiglottideos refutavit, quod etiam PAREUS fecit.

J. C. ARANTIUS glottidem verius descripsit ejusque ligamentum Obs. 31.

(b) JULIUS CASSERIUS in L. de vocis organis, Ferrariæ 1600. edito, utique Laryngis historiam ex variis animalibus dedit. Figuræ nitidæ sunt, & multo quam descriptio eloquentiores, ea enim valde parva est, & in osteologicis atque myologicis omnino bonæ exceptis arytænoideis. Vix quidquam invenit.

HIERONYMI FABRICII ab AQUAPENDENTE de brutorum loquela. Pat. 1603. f. de locutione & ejus instrumentis, Venet. 1603. 4. Patav. 1643. fol. * 1625. fol. nihil valde singulare continet. Literarum formationem, sed obscurius describit. EJUSDEM de visione, voce & auditu L. exstat. Venet. 1600. fol. & Patav. 1625. fol. Granula ossea ligamenti hyothyroidei describit, &c.

PABLO BONET (barlet servant de su Magestad) Reduccion de las letras y arte para ensennar a ablar los mudos. Madrit. 1620. 4. * (MORHOF. hyaloel.) Artem docendi surdos docuit. PONTIUS vero, de quo VALESIIUS scripsit, etiam BONETO antiquior est.

J. B. ab HELMONT alphabeti hebraici brevissima delineatio, Sulzbach. 1657. 12. recusur Germanice Sulzbaci 1667. Natur alphabet der heiligen sprache sonos omnes literasque i sua

tissimis figuris ornatum, & eruditionis maximæ. Explicat hanc fabricam in corpore humano, & omni fere genere brutorum; nobilis sed rarus tractatus est, cujus bona

sua genesi considerat, uti ab organis nostris nascentur, & paradoxam opinionem profert, hebraicis literis figuram repræsentari, quam lingua, uvula dentesque in pronuncianda qualibet exprimeret.

JAC. ROLANDI DE BELLEBAT *aplossostomol alographia*, Salmuriæ 1630. 8. edita, & in E. N. C. Ann. III. Dec. I. Latina lingua recusa, casum habet hominis, qui absque lingua locutus est, & similem in Monumentis Gallicis proposuit A. de JUSSIEU l. c.

WILH. HOLDER. *Elements of speech*, Londin. 1669. 8. Pertinet ad physicam formationem literarum, quas valde subtiliter divisit, vocis & spiritus diversitatem recte perspexit, inque docendis surdis ipse experimento innotuit, & aliquas observationes de surditatis causa protulit.

JOH. OTT in epist. de sono vocis humana ad WEPFERUM egit de scripto Holderi, de elemento sermonis & de Morlandi stenterophonia.

NIC. STENONIS in L. de musculis & glandulis invenit glandulas & foramina Epiglottidis. In JOH. WALLIS *Grammatica Anglicana lingua*, Lond. 1674. 8. edita, similia HOLDE-RIANIS, sed certe multo deteriora habentur.

D. CORDEMOI de la Parole, Parisiis 1668. 12. 1677. 8. literarum etiam generationem describit.

D. CORDEMOI l. c. recusum etiam est Genev. 1679. 8. Latine.

Aliqua etiam huc pertinentia vide in n. 61. & 245. & 312. *Phil. Transf.* & in MORHOFII paradoxis sensuum, & exemplum loquentis absque lingua n. 462.

GEORG. SIBSCOTA *Deaf and Dumb mans discourse concerning those who are born deaf and dumb*, Lond. 1670. cum dissertatione de loquela creaturarum inanimatarum. *

De Laryngis usu nonnulla in BELLINI Opusculis.

M. MAPPI Disp. de voce articulata, Argent. 1681. 4. B. Pl.

G. C. SCHELHAMMER Disp. de voce, Jen. 1677. 4. & bona aliqua de formatione vocis, & paradoxa continet.

In WILH. COWPERI *Anthropographia appendice* figuræ exstant minime malæ laryngis cum musculis & glandulis eo pertinentibus. Sed & ex myotome pulchras, quas consulas, repete figuras.

In Monumentis Parisinis D. DODART an. 1700. 1706. 1707. glottidem multo minutius descripsit, cum ligamentis suis elasticis, vocisque formationem ex laxata in depressione laryngis, arctata in elevatione, Glottide explicavit. Naturam loquelæ, & cantus ex homine & in animalibus, cum mensuris & musicis experimentis demonstravit.

J. CONRAD AMMAN in *Phil. Transf.* 286. tum in *surdo loquente* 1692. 8. & 1700. 8. auctius vero in *Diff. de loquela*, Amstelod. 1702. sæpius recusa, etiam Germanice versa omne tulit punctum. Literarum genesein fideliter descripsit, modum docendi surdos candide aperuit, vitia in pronunciando varia vitare efficaciter docuit.

J. JAC. SCHEUCHZER Disp. de surdo audiente. Ultraj. 1694.

POLYCARP GOTTLIEB SCHACHER de hominis loquela, Lipsi. 1696. 4.

ANDREÆ JULII BOETTICHER Disp. de loquela organo, Leid. 1697. 4.

CHRISTIAN WOLF. ILL. VIRI de loquela, Lipsi. 1703. 4.

J. B. MORGAGNUS in *Adv. L. & V.* & in *Epist.* IX. glandulas varias, epiglottideas, ary-ænoides, thyroideæ appendicem, ventriculos oblivione longa obritos, musculos, eorumque affectiones rariores, immistos tendines, &c. alia adnotavit, & bonas icones dedit.

JOH. PHILIPPUS VERHEYEN in posterioribus editionibus glandulas epiglottidis, & laryngis alias, & novam, ut credit, inter ary-ænoides positam, & ligamenta, fibrasque epiglottidi insertas expressit.

GEORGIUS RAPHEL in L. *die kunst taube reden zu lehren*, Luneburgi 1718. fere AMMANUM imitatus est, ipse tamen similia expertus in filiabus suis.

In THUMMIGII *versuche* P. III. aliqua ad surdos mutos docendos pertinent.

J. P. SANTORINI in Observationibus musculos adeo subtiles descripsit in larynge, ut paucissimi

bona nulla est editio, nisi Itala Ferrariae 1600. (a). Nam reliquæ habent figuras pessimas.

cissimi anatomici ab eo tempore eos receperint. Cornicula arytanoidea pro distinctis cartilaginibus proposuit.

SIMON P. HILSCHER de loquela, Jen. 1729. Disp.

GOTTLIEB FRID. HAGEN de mensura soni articulati, Hall. 1731. 4.

In iconibus ossium fetus ALBINI elegantes sunt figuræ cartilaginum, musculi vero de more in majore opere eximie picti.

J. G. DUVERNOI in Act. Petrop. Vol. VI. cellulas spongiosas cartilaginum laryngis descripsit, & de Gl. thyroidea & Epiglottide aliisque particulis egit.

Lettre sur la voix des Eunuques VALISNERII in Biblioth. Ital. T. VII. exigui momenti est.

A. F. WALTHER de Lingua & in Diss. de obesitate & voracibus, & in ea de larynge & voce, & de oscitatione, ligamenta laryngis, musculos, glandulas, motusque minutius descripsit.

CL. FERREIN in duodecim questionibus quas Monspelii defendit an. 1732. & in Monumentis Academiae Parisinae an. 1741., & in thesibus D. MONTAGNAT novam theoriam vocis proposuit. Sonos acutos aut graves ait, non ab angustatione aut dilatatione glottidis pendere, sed a longioribus vel brevioribus ligamentis glottidis, prouti vel antrosum trahitur scutiformis cartilago, vel retrorsum retrahitur. Experimenta produxit in Acad. Regia facta, & NOLLETUM habet consentientem. Eum etiam secutus est D. de SAUVAGE in Dissert. morbos vocis & loquela exponente, Monspel. 1745. * (MONTAGNAT.)

Contra eum CL. BERTIN scripsit in Lettre sur un nouveau système de la voix, Parisiis an. 1745. 8. Utique arctatam glottidem acutos sonos, laxatam graves producere defendit, cum chordæ neque liberæ sint, neque humentes; adduxit etiam altiores in sibilo voces a sola angustatione labiorum. Acriter contra eum rescripsit aut D. FERREIN, aut amicus ejus D. MONTAGNAT, in éclaircissement en forme de Lettre à M. BERTIN sur la découverte qu'a faite M. F. Paris. 1746. 8. & in Lettres à M. l'Abbé des F. ibid. 1745. 8.

RUD. AUG. VOGEL. In de larynge humano & formatione vocis, Erfurt. 1747. 4. Disp.

De fletu docta J. FRID. SCHREIBERII exstat commentatio, Lips. 1729. 4. tum aliqua apud SCHARSCHMIDIUM in Berliner Nachrichten 1740. & nuper proprium Libellum edidit D. NICOLAI. Hall. 1747. 8. von Thränen und Weinen. Causam lacrumarum, copiosius generatarum credit mechanicam esse, & poni in sanguinis fluxu per pulmonem impedito, &c.

De risu ERN. ANTON. NICOLAI vom lachen, Hall. 1746. 8. Mechanismus risus & in musculis faciei & in musculis respirationis describit.

JOUBERT Tr. du ris, contenant son essence, ses causes, &c. Paris. 1574. 8. *

ELPIDII BEZZELLARII L. de risu, Florent. 1603. 4. *

ANTONII LAURENTII de risu, Francof. 1603. 8. Mogunt. 1606. *

G. FRANK. de risu sardonio, Heidelberg. 1683. Disp.

De oscitatione exstat docta disputatio A. G. WALTHERI, Lips. 1738. 4.

J. JAC. BAIER (sub nomine Hermannii) de oscitatione & pandiculatione 1720. Altd.

De sternutatione J. MAUR. HOEMAN ptarmographia physiol. pathol. therapeutica Disp. Altd. 1710. 4.

J. BALTHASAR HAVER de oscitatione, Leid. 1744. 4.

De sternutatione, oscitatione, risu, fletu, exstant dissertat. AL. della FABRA in collectione quam citabo.

J. & MICH. BARTHOLOMÆI de pandiculatione, Lips. 1648. 4.

A. LUDOV. PORTEFAIX de singultu, Basil. 1739. 4.

J. EILERTS. de suspiriis, Leid. 1750.

De sternutatione proprius tractatus etiam exstat MARTINI SCOOKII, Amstelodami 1664. 12.

J. ERN. UNZER de sternutatione, Hall. 1748. 4.

(a) CASSERII pentæsthesion equidem recusum est, non vero Libri de vocis & auditu organis.

(a) Nulli

peſſimas. Hæc editio in folio prodiit, reliquæ non ſunt in folio, ſed contra-
ctæ (a).

Quando tiro hunc Librum de larynge legit, debet novas eas addere observa-
tiones, quæ in penultimo & ultimo tomo (b) Monumentorum Academiae Re-
giæ Pariſinæ habentur, ubi optime demonſtratur musculos glottidem claudentes,
& aperientes, non eſſe musculos illos carneos, ſed alba ligamenta.

Verum ubi quæritur de pulmone, de bronchiis, de arteriis pulmonalibus, de
venis, de plexu vaſorum, & veſicularum, videatur THOMAS BARTHOLI-
NUS

(a) Nullas novi editiones, quæ non ſint in ea majori forma, quam in folio dicunt;
ſed tabulæ Caſſerianæ poſthumæ utique in 4. Francofurti reſuſcitatæ ſunt an. 1636. 4. cum
interpretatione Germanica S. PAULI.

(b) De *respiratione*, de *cauſis reſpirationis*, de *utilitate reſpirationis*, & de *difficultate re-
ſpirationis* exſtant Libri GALENI & de *uſu partium* L. VII. ſeoriſim Pariſiis excuſi 1533.
interprete JOHANNES VASSÆO (B. RIV.) ejuſque viri experimenta cum musculis inter-
coſtalibus nerviſque inſtituta negligi non debent. Intercoſtalium internorum & externo-
rum musculorum officia facit oppoſita.

Eſſi de GALENO diximus, eum intercoſtalium internorum & externorum musculorum
officia oppoſita facere, addendum tamen eſt, inconstantiorum eum eſſe in horum muscu-
lorum officiis adſerendis; in Libro enim de *musculorum motu* expirationem omnibus in-
tercoſtalibus tribuit: In Libro de *cauſis reſpirationis* internos ait deprimere, externos elevare.

ANTON. LUDOVICUS de *uſu reſpirationis*, cum L. de *re medica*, Ulyſſip. 1540. fol.
DOUGL.

Ab eo tempore primus A. VESALIUS experimenta inſtituit, interque ea celebre illud,
quod ab HOOKIO nomen habet. Diaphragmatis non optimam iconem dedit.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS vaſa tria magna pulmonum pulchra icone expreſſit,
quatuor venas pulmonales eſſe vidit, azygon venam huc pertinentem in proprio Libello
pulcherrime deſcripſit.

In H. RORARIJ *contradiſtionibus*, Venet. 1566. 8. diſſeritur de uſu musculorum inter-
coſtalium, quos omnes, internos & externos, famulari ait expirationi.

G. FALLOPIUS erroneam intercoſtalium musculorum deſcriptionem VESALII correxit,
primus internos musculos continuata directione ad ſternum pervenire oſtendit.

ARCHANGELUS PICOLHOMINEUS in diaphragmate viam, non foramen eſſe demonſtra-
vit.

BERNHARDINI TELESII de *uſu reſpirationis* L. Venet. 1590. 4. DOUGL.

H. F. ab AQUAPENDENTE de *reſpiratione*, Patav. 1614. 4. In musculorum intercoſta-
lium officio GALENUM ſequitur, reſpirationem modicam a violenta ſeparat, ſegmenta
cartilaginea coſtarum contrario cum oſſeis motu inquit agitari.

C. HOFMANNI Diſp. *an ſpiritus nutriantur externo aere*, Altd. 1627.

EJUSD. Diſp. de *pulmone* 1622.

EJUSD. de *thorace* L. III. Francof. 1627. fol. Doctus Liber, eſſi, ut ſolet, minus ha-
beat experimentorum. Circulationem minorem per pulmonem evidenter docet.

J. VESLING quatuor venæ pulmonalis ramos pinxit

N. HABICOT peritior recentiſſimis phyſiologis non dari musculos intercartilagineos,
ſed internum ordinem ad ſternum continuari vidit, poſt FALLOPIUM.

RIOLANUS contra PARISANUM de diaphragmatis uſu ſpongiam ſcripſit. Hujus nempe
in nobil. exerc. VII. exſtabat de reſpiratione Libellus & de diaphragmate in parte altera
nobiliorum exercitationum, Venet. 1635. fol.

FABRICII BARTHOLETTI de *reſpirationibus* L. IV. Acceſſit L. V. de *curationibus*, Bo-
non. 1633. 4. Poſthumæ prælectiones ſunt, habitæ an. 1628. Animam humanam in ampla
vitæ recipere, ita ſalem quemdam, ut putat, beneficium parare docuit. Glandulas bron-
chiales habet.

NUS de *substantia pulmonum ejusque motu*, editus Hafniæ, anno 1663. (a) & Lugduni Batavorum anno 1672. in 12. In eo tractatu accuratissimus ille Anatomicus prosequutus est omnia, quæ alii de pulmone scripserant. Postquam hoc scriptum evolutum erit, addatur MARCELLUS MALPIGHIIUS, cujus *epistola prostat de Pulmone* (b), tum perro in *Operibus posthumis*. Dolendum tamen est, quod

FAB. BARTHOLETTI l. c. recusæ sunt 1735. Venet. Auctor cæterum an. 1630. obierat. J. B. HELMONTII Liber de *catarrhorum deliramentis* omnino ad respirationem legi debet.

MELCHIOR SEBIZ de *respiratione* disp. I. II. & III. Argentor. 1643. 4.

M. AURELII SEVERINI *Antiperipneumonia de respiratione piscium*, Neap. 1659. Tres sunt Libelli, quorum primus huc pertinet. Pisces nempe aerem ducere & respirare, & calidum habere sanguinem contendit, & eorum describit pulmonem, imprimis ex polypto.

(a) Vide inferius suo loco.

(b) MARCELLI MALPIGHII de *pulmone* Epist. I. & II. Bonon. 1661. fol. * Leidæ 1672. 12. & in *posthumis* fabricam pulmonis novam, imprimis ex ranæ exemplo descripsit, ex vesiculis in lobulos collectis, per quorum parietes vasa in ramos abeunt minimos, anastomosibus conjunctos. In variis etiam animalibus musculosas esse vesiculas scripsit. Eum, ut ubique, ita in hac anatome fere omnes anatomici secuti sunt.

ROB. BOYLE in l. de *aere*, in l. Tomo laudato, de respiratione insignem habet digressionem.

Ejus etiam *continuatio* I. & II. *Experimentorum physico-mechanicorum* de aere omnino huc pertinet.

THOMÆ BARTHOLINI de *pulmonibus* *epistola*, Hafn. 1663. 8. cum MALPIGHII *Epistolis* jam citatis edita valde parum habet, quod usui esse possit.

EJUSDEM de *usu thoracis & partium ejus* Disp. Hafn. 1657. 4.

ISAACI RENAUDOT, *Estne pulmonum motus naturalis & insitus?* Paris. 1658. 4.

NIC. STENONIS F. in l. de *musculis & glandulis*, & in *myologia specimine* de musculis respirationis, in priori vero imprimis de septi transversæ actione suas habet observationes.

In Philosophicis Transactionibus plurima huc pertinent.

HOOKII experimentum n. 28. 29. conf. 226. repetitum ab H. RIDLEY in *observ.* a BAGLIVO, & a J. W. PAULL. apud LUTHERUM in Disp. de *pericardii & pulmonis anomaliis* aliisque.

R. LOWER experimenta resecto nervo phrenico facta n. 29. Idem in Libro de corde omnino experimenta etiam varia habet, quæ huc pertinent.

J. SWAMMERDAMI contra MALPIGHII observationes n. 94.

TEMPLER de pulmone n. 56. 85. Fabricam vesicularum rejicit.

Experimenta in vacuo spatio facta n. 122. &c.

SLARE de copia aeris ad respirationem requisita n. 204.

MUSGRAVE de resorbtione aquæ in thorace, &c. n. 240.

De pulmone COWPER n. 280. & 285.

J. DRAKE de influxu respirationis in motum cordis n. 281.

De piscium vita sub aqua. n. 333.

De aere sub aqua suppeditando n. 349.

JURIN de vi, qua aer in pulmonem ducitur, & ex pulmone exit n. 355.

HALLEY de urinatoribus n. 368.

LEEÜWENHOEK de fabrica diaphragmatis n. 379.

NICHOLIS de pulmone n. 418.

Vita per quindecim minuta absque aere tolerata n. 454.

HOUSTOUN experimenta, quibus contra receptam sententiam demonstrare voluit, aerem pectore receptum respirationem non mutare. n. 441.

ALEX. MAUROCORDATUS de *pulmonum usu*, Francof. 1665. 12. Premi in pulmone sanguinem, tanquam in torculari, & incallescere docuit. Phænomena etiam respirationis factis bene recensuit, nisi quod eam actionem cum motu cordis lynchronam faciat.

quod Britanni non addiderint figuras, quæ in Lugdunensi editione reperiuntur, quod mireris.

Tunc

AMSTELODAMENSES in collegio suo privato 1667. 12., & ex ipsis BLASIUS, arteriam pulmonalem vena sodali majorem esse viderunt.

In CLEMENTINA Academia varia sunt, ad animalium in vacuo positorum phænomena & passiones, quæ vide in editione MUSCHENBROEKII.

JOH. SWAMMERDAM de respiratione & usu pulmonum, Leidæ 1667. 8. * 1677. 1679. 12. &c. Post brevem in thesibus inauguralibus an. 1667. editam adumbrationem, hoc pulcherrimum opusculum secutum est, plenissimum experimentis. In vivis animalibus respirationem sollicite observavit. Per machinas & instrumenta demonstravit, nullum dari Cartesianum circulum, sed eo urgeri aerem, ubi minus resistatur. Multa etiam alia perutilia admisit. Eorum experimentorum alia descripta sunt in minime mala Disputatione septima F. SYLVII de le BOE, ubi vera in universum sententia defenditur.

Contra SWAMMERDAMIUM scripsit J. B. a LAMZWEERDEN, respirationis Swammerdamianæ expirationem, Amst. 1674. 8. ubi imprimis motum aeris in circulum in SWAMMERDAMIO carpit.

MALACH. THRUSTON de respirationis usu primario, Londini 1670. Leidæ 1671. 8. Minime malus Auctor. Biolychnium refutat. Experimenta passim interponit. Experimentum etiam Hookiano simile recenset a CROONIO factum.

Nova hypotheseos de pulmonum motu & respirationis usu specimen, Lond. 1671. 8. septum moveri ab aere elastico, & cedere non agere. *

THOMAS WILLIS in L. de anima brutorum branchias ex insectis & piscibus depinxit. In L. vero qui pharmacia rationalis nomine Oxonii prodiit, cujusque Tom. I. an. 1673. 4. impressus est, Tomus vero alter 1675. 4. post Auctoris mortem prodiit, in eo altero Tomo fabrica pulmonum traditur, ex vesiculis non communicantibus, appensis ad ramos asperæ arteriæ extremos, &c. Vereor ut ad ipsam naturam icones delineatæ sint.

JOH. MAYOW in Tr. de respiratione, Oxon. 1668. 8. Leidæ 1671. 8. & in L. cui titulus de spiritu nitro-aereo, &c. tractatus quinque, Oxon. 1674. 8. Omitto nitrum aereum & theorias nonnullas. Recte tamen omnino primus constituit officium muscutorum intercostalium internorum, & rotationem costarum, modumque, quo thorax dilatatur. Circulum Cartesii refutavit. Tr. IV. aliqua de septo transverso habet.

J. MAYOW. tr. de respiratione alii habent editionem Oxon. 1669. 8.

J. BOHN de pulmonum & respirationis usu, Lips. 1671. 4.

HENR. MEIBOM de respiratione ejusque difficultate & causis, Helmst. 1673. Dis.

C. BARTHOLINUS de diaphragmate, Paris. 1676. 8. Minor pars de septo ipso agit, eaque fere ex animalibus. Decussationem appendicum septi circa Oesophagum descripsit. C. DRELINCOURTIUS totum Libellum in bibliotheca anatomica MANGETI sibi vindicavit.

NATHANAEL HENSHAW in aerochalino, Londini 1677. 12. officium pulmonum ponit in acceleratione sanguinis: aerem etiam recipi humoribus nostris, & ibi fermentationem vitalem facere credit.

GEORGIUS ENT antidiatriba in Malachiam Thruston de respirationis usu primario, Lond. 1677. 1682. 8. (LEHM.) * in Belgio etiam recusa. Non videtur mihi aut satis attulisse experimentorum, aut satis solidas objectiones proposuisse, uti v. gr. septum immobile facit, & magis placet mihi responsio THRUSTONI candida, & modesta.

Idem ENTIUS in G. CHARLETON L. de differentiis animalium contra MALPIGHIIUM eos, quos iste descripsit, ranarum pulmones eo nomine indignos in respiratione immobiles, & veras vesicas natatorias esse defendit. Respondit in posthumis MALPIGHIIUS.

In J. J. WEPFERI opere de cicuta aquatica multa observata in vivis animalibus phænomena reperiuntur, utique lectu dignissima.

ZACHARIÆ NEUKRANZ Disp. de respiratione Præside ETTMULLERO, Lipsiæ an. 1676. defensa, docta omnino.

J. NIC. PECHLIN de aeris & alimentorum defectu, Kilon. 1676. 8. Historia ipsa, de qua
H h h proprie

proprie agitur, vix vera videtur. Sed ea occasione de aeris utilitate in plantis, & animalibus erudite disputat.

J. MAUR. HOFMAN de *aëroteria*, Altdorf. 1680. 4.

J. ALPH. BORELLUS in L. de *motu animalium* II. Romæ. 1681. 4. respirationis mechanismum ad eandem, quæ fuit MAYOWII, sententiam descripsit, dilatationem thoracis a mutato costarum situ demonstravit, aream thoracis definire conatus est, de utilitate etiam pulmonum cum MALPIGHIO controversiam habuit.

STEVEHAN. BLANCARD in *Cent. V. Diarii*, quod sub titulo *Jaarregister* edidit, habet Dissertationem Chirurghi celebris BOEKELMANNI de natante & subsidente pulmone, occasione litis, quam moverant Chirurghi aliqui, posse nempe natare pulmonem a fermentatione humorum, vel a respiratione in vagina. Negabat ille. Addebat RUYSCHIIUS, non facile natare pulmonem, etiam putridum.

G. C. SCHELHAMMER in *Disp.* quæ inter analecta est, unicum musculus intercostalem facit, qui costas sursum extrorsum ducat.

FRID. SCHRADER de *aëris in corpore humano effectibus*, Helmstad. 1685.

FRANCISCUS BAYLE in *Dissertationibus* an. 1685. editis, & in L. de *copore animato* novam theoriam officii musculorum intercostalium internorum proposuit, GALENI sententiam contra MAYOWIUM restituit, argumento ducto a distantia ab hypomochlio, quæ major esset in extremitate superiori eorum musculorum, adeoque costa superior mobilior. Eum P. S. REGIS, & alii secuti sunt.

LUD. MAR. BARBERII Imolensis *spiritus nitro aërei operationes in microcosmo*, Bonon. 1680. 12. *. Tribuit aëri fermentationem ciborum & animales spiritus.

LAUR. BELLINUS in epistola anno II. Dec. I. E. N. C. inserta, Librum de respiratione promissit. Deinde ante opus de *urina & pulsibus*, & in edit. 1711. DRELINCOURTII de *lienosis* de ejus actionis mechanismo & costarum dispositione utilia lemmata adjecit, etsi pauca. De experimento in nervo phrenico instituto alibi dixi. In Epistola inserta in *GIORN. de LETTER. VENETI* Tomo IV. resorptionem aëris in sanguinem defendit. In *discorso postumo* I. dari in pulmone musculos, ut ubique, docet.

JACOBI BRACHI *pensieri fisico medici de animalibus in vacuo morientibus*, Venet. 1685. 8. *.

F. MERCURIUS ab HELMONT in L. de *alphabeto natura* aërem a pulmonibus in cavam thoracis elabi, & in L. de *homine & morbis* de ente vitali aëris multa habet. Amst. 1692. 12.

J. PH. VERHEYEN in I. Libro ad sternum, ad musculos costarum, observationes habet; in altero vero experimenta minime contemnenda de septi transversi motu, aëre thoracico, &c.

MARTINUS LISTER in *Exercitatione de cochleis terrestribus* habet digressionem, in qua valde paradoxa docet, pulmonem esse unice diverticulum sanguinis, quo in majori motu musculari se conferat.

Sanguinem non celerius per pulmonem circumire quam per alias partes corporis dudum ostendit BUSSIÈRE in Libro a MERY.

ARNOLDI SENGUERD *inquisitiones experimentales*, Leidæ 1690. & 1699. 4. experimenta continent cum mobilibus septis facta, quibus circulum Cartesii demonstrare voluit, & alia pro aëre thoracico. Ea experimenta existant etiam in c. 18. *connubii rationis & experientie*.

JOH. SCHREYER ob es ein gewiss. Zeichen seye, wann eine kinder-lunge untersinkt, dass es in Mutterleib gestorben seye 1690. 4. Hall. 1746. 4. Pulmonis subsidentiam certum esse signum infantis in materno utero mortui tuctur.

J. ZELLER *Disp. de subsidentia pulmonum in aqua*, Tubing. 1691. 4. bona experimenta habet. Adfirmat pulmonem, qui non adeo diu respiravit, adhuc mergi.

CLOPTON HAVERS in *Osteologia nova* modum, quo costæ extroversæ ad dilatandum thoracem faciunt, recte explicavit.

J. G. BERGER *Disp. de respiratione*, Witteb. 1697. & in L. de *natura humana* docte de hac actione disputat.

SALOMONIS STRANGER *homines enydrobioi* *Diff. qua qua genuinam vitam rationem circa respirationem spiritus sanguinem temperamentum sensus illustrat*, Lipsi. 1692. 12.

SAL.

SAL. SPRANGER l. c. explicare suscepit monstrosam illam sub aqua viventis hortulanæ Sueci historiam. Aliquid credit aëris per cutis poros resorberi.

GEORG EMERICH de inspiratione, Regiomont. 1698. 4. bona disp.

MELCHIOR SEBIZ de Urinatoribus & arte urinandi, Argentor. 1700. 4.

In Academia Gallicæ antiquis monumentis varia huc pertinentia habentur, respiratio avium in struthionis anatome, & a MERYO seorsim descripta. Quæstio, cur homo adultus non possit absque aëre vivere, cum id fetus facile possit. In nuperis vero Memoires

JOH. MERY de viis quæsit, per quas aër receptus de corpore exiret 1700. 1707. & per cutem non transpirare demonstravit.

Branchias piscium descripsit DUVERNOY 1699. & de circulatione sanguinis in pulmonibus egit 1701.

LITRE observavit aërem a dextro ventriculo in sinistro non invenire viam 1704. Sed lac eam viam legere 1707. &c.

REAUMUR aërem per chartam madidam non transire 1714.

J. ADRIANUS HELVETIUS anno 1718. de pulmonibus Libellum inter monumenta edidit. Arteriam pulmonalem vena majorem esse, hinc sanguinem in pulmone condensari, vesiculas non esse continuas docuit.

Cum vero P. A. MICHELOTTI in Epistola ad FONTENELLUM an aër sanguinem solvat cogatne, Lutet. 1724. 4. edita contra HELVETIUM objiceret, respondit ipse in éclaircissement sur la manière dont l'air, &c. Paris. 1728. 4.

LITRE de submersis. 1719.

CL. SENNAC an. 1724. & 1729. de respiratione fusa egit, & diaphragmatis dedit descriptionem. Idem 1729. de submersis.

F. PETIT an. 1733. bona experimenta ad quæstionem produxit, cur primum respiret fetus.

J. B. WINSLOW an. 1720 & 1730. & 1738. de costarum mechanismo, & respirationis modo sapienter, ut solet, scripsit, & veram ubique confirmavit.

D. de BREMOND experimenta de respiratione exstant an. 1739. quæ non nemo BERTINO tribuit. Eo fere tendunt, quo HOUSTOWNIANA, ut nempe ostendat, pulmonum motum superesse, etiamsi thorax aperiatur, & propria adeo aliqua vi pulmones moveri.

Citata D. de BREMOND experimenta de respiratione BERTINO tribuit P. SENAC du cœur II. pag. 237.

PETIT de submersis 1741.

C. HERISSANT in Hist. Ac. 1743. respirationem fieri ab impulsu solo arteriæ pulmonalis cum HALELIO & HOUSTOWNIO credit, nihil obstante aperto pectore.

D. BOULLET eodem anno egit de aëre resoluta in humorem bronchiale, & ita in sanguinem recepto.

G. GETHARDING de aëris ingressu per poros cutis, Rostoch. 1703. 4. EJ. de carminatione sanguinis in pulmonibus, ibid. 1718. 4.

J. JOACHIM SCHOEPPER Disp. de pulmone infantis natante vel submergente (barbare). Rostoc 1705. Contra hujus experimenti vim ad demonstrandum vitalem partum fetus.

In C. J. LANGII physiologia experimentum est, quo materies injecta ex arteria pulmonali in asperam pervenit.

BECKER de moribus submersorum sine aqua, Gieß. 1704. 8. Jen 1720. 4. Animalia non ab aqua epota perire. Nos tamen non valde dudum in femina submersa aquam reperimus.

J. DRAKE & Phil. Trans. & in anthropographia systema de respiratione erroneum proponit, in quo inspirationi eam utilitatem tribuit, ut cor ab ea actione ad dilatationem cogatur.

J. G. BIDLOO in Exercit. anat. IV. mechanisum explicat, quo bronchus vasa sanguinea sibi adjecta comprimit, & circulationem promovet.

CHRIST. SERTOEM de causa alternæ inspirationis & expirationis theoriam proposuit.

JOHN. FLOYER in physicians pulsevarch vol. II. Londini 1707. 1710. respirationis numeros & ad pulsus proportionem in homine sano, ægro, & animalibus aliis persecutus est.

JAC. KEIL in tentaminibus vim expirationis definire conatus est, & copiam aëris inspirati, areamque pulmonis.

In Diario Veneto (Giornale de' Letterati) T. IV. exstant ZERILLI argumenta contra BELLINUM Diss. qua adserit, aërem in sanguinem non recipi.

G. REMUS de *structura pulmonis*, Leidæ 1711. 4.

F. PETIT in epistolis II. experimenta sua cum nervo phrenico citat.

J. GEORG. a BERGEN in *Oratione de aëris per pulmones in sanguinem transitu*, Francof. Viadr. 1710. 4. rationibus & experimentis eam opinionem refutat.

In WOLFARTI Disp. de *monstro*, de experimento pulmonum natantium & subsidentium agitur.

F. HOFMANNI & HENR. CHR. KRUGER, Disp. de *vi respirationis in arte medica*, Hall. 1714.

ANTON. GABRIEL MEDER de *partium respirationi servientium structura*, Leid. 1714. 4.

ARCHIBALDUS PITCARNE in Disp. de *diversa mole qua sanguis fluit per pulmones*, aëris ingressum in sanguinem refutat, in Disp. vero de *circulatione sanguinis in genitis & non genitis*, de causa inquit, quare fetus absque aëre vivere possit.

PETRI van MUSCHENBROEK de *aëris presentia in humoribus animalibus*, Leidæ 1715. 4. aërem, sed dissolutum, in omnibus liquoribus humanis reperiri egregie demonstravit. Recusa est Disp. in vol. IV.

D. BOON in Disp. inaugurali de *physiologia & pathologia respirationis*, Leidæ 1716. 4. Aliqua etiam experimenta habet.

In GUIL. DERHAM *physicotheology* varia experimenta de mortibus animalium in vacuo, de asperæ arteriæ diversitatibus proponuntur aliisque rebus huc pertinentibus.

De GL. bronchialibus, & asperæ arteriæ fibris & lymphaticis vasis pulmonis, aliisque huc spectantibus consulatur MORGAGNUS, in omnibus operibus,

Vaginas cellulosas vasorum pulmonalium habet LANCISIUS in L. de corde & aneurysmate.

P. A. MICHELOTTUS ex J. BERNOULLI principiis vim expirationis æstimavit in Libro de *separ. fluid.*

JOH. van HORNE bres *huru vvy da man vvitaflungans siunkande*, &c. Stockholm 1718.

8. & in *andra bres om corruption can komma etc. döföde barns lunga at flyta* ib. 1720. 4.

In posteriori epistola post varia experimenta adseruit, nunquam pulmonem natare, qui infantis nondum nati fuerit, ne putridus quidem.

DAN. BERNOULLI in Disp. de *respiratione*, Basil. 1721. 4. mensuras aeris inspirati, dilatati pectoris, antrorsum cedentis sterni, aliaque mathematico calculo confirmavit.

R. DAV. JAC. CHATELLIN de *respiratione*, Monspel. 1721. 4.

In J. DOMIN. SANTORINI observationibus aliqua pro MICHELOTTO de causa angustiae venæ pulmonalis, & in diaphragmate factæ observationes exstant.

L. HEISTER ex *pulmonis fetuum innatatione vel submersione in aqua nullum certum in infanticidis signum peti posse* defendit, Helmstad. 1722. 4. & in *Annal. Jul. T. I* ubi contra HORNIUM scribit, & pulmonem putridum ait natare, vere omnino.

B. ROBINSON vitam animalis conservari ab acidis particulis aëris cum MAYOWIO docet in *Anim. Oeconom. Pr. XXIV*.

Cum EDW. BARRY tractatu *on consumption* extat tractatus of the *structure and the use of the lungs*, London 1727. 8.

HUGONIS GOURAIGNE Disp. de *respiratione*, Monspel. 1729. 4. quæ etiam cum titulo GUILIELMI PELISSIER eodem anno prodiit (*JOURN. DES SAV.*) pulmonem passive se habere, & ipsum thoracem ab aëre dilatari contendit. IDEM an. 1730. aliquas objectiones Diarii *Journal des Savans* Libello in 4. refutare conatus est.

STEPHAN. HALES in *vegetable statiks* fuse primo aëris naturam, deinde inprimis ejus in pulmonem resorptionem, mutationem in non elasticam naturam, copiam qua inspiratur, vim qua efflatur, aream pulmonis, vesicularum & alia exploravit.

IDEM in *hamastaticis* egregie plurima de vera ratione circulationis per pulmonem, de utilitate respirationis, de aëre thoracico (quem fuse demonstrare conatur), deque aliis pulmonis actionibus legi debet.

G. E. HAMBERGER in Disp. de *respirationis mechanismo*, Jen. 1727. 4. ulterius ornavit Baylianam sententiam, & aërem quidem thoracicum cum aëre pulmonali alterne pugnantem adsumsit, pulmonisque vim coagulantem & refrigerantem sanguinis, in costis vero vim oppositam musculorum intercostalium, ut interni costas deprimant, externi elevent. Sed addidit præterea demonstrationem, intercostalem muscolum quemque non suam solum costam,

costam, sed etiam proximam aut elevare aut deprimere, aliaque ad mechanismum pulmonis facientia. Neque absque sequacibus fuit, inter quos J. F. SCHREIBERUM, J. G. HAHNIUM, CL. KRUGERUM, & NICOLAI Hallenses, ipsumque D. de SAUVAGES numero. Quare cum satis faveretur huic opinioni, ego in *Commentario Boerhaaviano* non potui non Præceptorem defendere, & adserere, neque aërem inter pleuram & pulmonem esse, neque intercostales internos musculos costas deprimere. Quæ cum modestissime, nisi omnino fallor, proposuissem, acriter & cum contemptus demonstratione, contra me scripsit CL. HAMBERGERUS, in octo programmatibus, quæ an. 1744. & 1746. edita sunt. Contra primum ego *experimenta de respiratione anatomica* scripsi, quæ an. 1746. Gottingæ 4. prodierunt, contra reliqua, *alteram partem eorum experimentorum impressam* an. 1747. 4. In iis, nisi fallor, ad liquidum deductum est, nullum aërem inter thoracem & pulmones interesse, nullumque spatium: deinde & in vivo animale, & in thorace mobili, a musculis intercostalibus internis, vel a filis eos imitantibus, costas elevari. Passim etiam intervallo- rum inter costas diminutionem, mensuram adscensus & extroversionis costarum, & alias, prius dublas, actiones definivi.

Contra hoc scriptum G. E. HAMBERGERUS, Jenæ 1748. 4. animadversiones ut plenas conviciorum, ita omni anatome & experimento destitutas edidit. Noster vero discipulus & amicus D. TRENDLENBURG exeunte anno 1749. respondit Hambergero, & ostendit, uti in experimento, ita perinde ex Geometriæ vi costas necesse esse adscendere ab actione intercostalium internorum. Sed video & in proprio elogio contra HAMBERGERUM judicare BOERNERUM (p. 70.), & CL. J. G. KRUGERUM, qui HAMBERGERUM secutus fuerat, in nova physiologiæ editione de vacuo thoracico nobiscum sentire n. 219. in musculis omittere Hambergeri contrariam vim internorum: & secundum me dixisse Lipsienses aliosque per omnem Europam præstantissimos viros. Confer. *Nouvelle Bibliothèque Germanique* T. IV. P. II. qua historia litis ad annum usque 1747. traditur.

Responsio mea ad HAMBERGERI animadversiones hac pagina citatas exstat nunc in *Opusculis anatomicis*, Gottingæ anno 1751. 8. editis, & primos meos libellos recudi feci, emendatos, & addidi diarium experimentorum, quibus meam cum HAMBERGERO litem conficere conatus sum.

J. G. HAHNIUS cum commentario de febribus continuis an. 1728. edidit *Dissertationem de aëris inspirati in pulmones effectum*, Lipsi. 1731. 4. qua aërem omnino in sanguinem recipi defendit.

In Edimburgensibus commentariis reperitur MARTINI de causa alterna respirationis theoria T. I. & STEVENSONI, pulmonem refrigerium in sanguine excitare. T. V.

J. HENR. GEELHAUSEN de pulmonibus non natorum aqua innatantibus, Prag. 1728. 4. Propria experimenta non habet. Pulmones qui respiraverint a pure, suffocatione, posse ponderosos fieri credit, & in aqua subsidere; natare vero quibus inhalatus sit in os aër, etsi nunquam spiritum homo duxerit.

JOH. ARBUTHNOT *essay concerning the effects of air on human bodies*; Londini 1753. 8. Multa collegit ad physicam in universum & practicam naturam aëris, tum etiam ad respirationem, ejusque vim.

A. O. GOELICKE de pulmonis infantis in aqua natatione aut subsidentia infallibili indicio, Francof. V. 1730.

LUD. PETRI le HOC *Ergo omnes animalium motus ab aëre*, Parisi. 1731. Disp.

DANIEL REINHOLD MELTZER *vasa pulmonalia sanguifera qualia in adultis apparent*, Regiom. 1733. 4. *. B. PL.

J. B. L. HAZON & J. B. CHOMEL *Ergo præcipuum respirationis organum diaphragma*, Parisi. 1732. 4.

R. KELDERMAN Disp. de pulmonis humani fabrica ac usu primario, Ultraj. 1732.

F. HOFMAN de gravitate aëris & elasticitate in machinam corporis humani, Hall. 1733. 4.

CORN. KLOEKHOF Disp. de atmosphaera efficacia in corpus humanum, Leidæ 1734.

F. RUYSHIUS, uti universam anatomen, ita pulmonis historiam illustravit, cellulas interlobulares descripsit, materiem exhalare coegit ex arteriis levibus in asperam, &c.

M. J. *spiramina or respiration revived*, Londini 1733. 8. sunt argumenta pro exhalatione aëris ex pulmone per poros in cavitatem thoracis.

D. SENNAC in Acad. Reg. Sc. uti dictum respirationis organa descripsit, & in *essais de Physique*, cum compendio HEISTERI an. 1734. reculis, de aeris modo, quo in sanguinem venit, & quo iterum abeat, inquit, & aliquem aerem, non multum tamen, in sanguinem venire admittit.

D. FERREIN in propria thesi an. 1738. Parisiis edita cum titulo *an actio pulmonis mechanica tempore expirationis*, aerem vasa sanguinea subire defendere conatus est, experimenta etiam adtulit de modo respirationis nostrorum similia, & quiescere pulmones, pleura magno vulnere violata, demonstravit. Vide in *Coll. Disp. nostr.* T. IV.

GOTTLIEB EPHRAIM BERNER de efficacia & usu aeris in corpore mechanico, Amstelod. 1738. 8. Diffusus & absque experimentis.

Mr. BERTIER in propria Dissertatione, quæ Burdigalæ an. 1739. præmium tulit, & cum titulo *si l'air de la respiration passe dans le sang* ibid. an. 1740. 12. edita est, & in *Actis* ejus Academiæ, alias laudatis, multa paradoxa dixit, aerem nempe omnino in sanguinem recipi, descendere in pulmonem ob minorem ibi contenti aeris elaterem, idque fieri absque vi musculorum dilatantium, descendere autem aerem in spatia interlobularia, & cum inde non detur exitus, in sanguinem coactum venire, calorem vero in sanguine excitare, &c. Aliqua addidit in *Journ. des Savans* 1742. Contra eum anonymus in *Journ. des Savans* 1740. varia objecit, & aeris in sanguinem receptionem dubiam reddidit.

Huc ILL. RALTHERI *Disp. de oscitatione & de vomitu*, Lips. 1737.

LAUR. HEISTERUS in *Disp. de fallaci pulmonum experimento*, Helmst. 1732. negavit, aut subsidentiam pulmonum certam mortem in utero demonstrare, aut natationem certam vitam extra uterum.

A. KAAU perspirationem pulmonum experimentis confirmavit, vasa lymphatica descripsit, & experimenta ad transitum sanguinis pertinentia in *L. de perspiratione*: in eo vero de *Impetum faciente* experimentum HOOKII renovavit.

J. B. MAZINI *conjectura de respiratione fetus*, Brix. 1737. 4. Ex vagitu uterino, minuro cum tempore in ipso fetu pondere specifico, aliisque dubiis experimentis demonstrare vult, utique fetum respirare. Ad finem ostendere fatagit, uterum ex lato in longum cum graviditate mutari, ita capacitatem minui, hinc partum naturalem succedere.

CL. DAN. BERNOULLI in hydrodynamicis irruptionem aeris densioris in rariorem ad calculum reduxit, cujus instituti magna ad intelligendam naturam respirationis est utilitas.

D. SCHACHER *Disp. de aeris efficacia in corpus humanum*, Lips. 1738. 4.

MICH. ADEL BULNER de pulmonum fabrica, Altdorf. 1738.

J. CHRISTOPH. POHLII de respiratione sana & lesa, Lips. 1738. 4.

J. SULZER de aeris absque exhalationibus considerati effectibus in corpus humanum, Basl. 1739. 4.

J. G. GUNZ in progr. de respiratione, Lips. 1739. 4. nuperam etiam HOUSTOWNI & BREMONDI & HAMBERGERI theoriam refutavit.

J. G. GUNZII jam citati huc etiam pertinet disputatio de derivatione puris quæ fit per pedus ad brachia, Lips. 1738. 4.

Anno 1739. de respiratione fetus nova lis enata est inter BERNARDUM IDEMA & J. H. CROESER, qui fetum in ipsa vagina materna se movere atque respirare posse tuentur, & R. ROUKEMA Chirurgum ac PETRUM IDEMA Medicum, qui non subito adeo pulmonis naturam mutari, neque in vagina, neque aliquo tempore a partu, fetum respirare volunt: et si postea varia aliena admista sunt liti, cum alii vacuum spatium inter pulmones fetus & pleuram statuerent, alii negarent. Initio a rationibus facto, finitum fere est conviciis. Libellos eo pertinentes habeo omnino.

BERN. ROUKEMA *gedagten over het dryven en zinken der Longe*, Leeuwarden 1739. 4.

R. ROUKEMA *naturlyke stellingen van een dryvende en zinkende Long* ib. eod. anno.

BERNARD IDEMA *vervolg der gedagten*, ib. eod. anno.

J. H. CROESER *kort ontverp. van de eerste inademing*, Groning 1740. 4.

PETRI IDEMA *aanmerkingen tegens de gedagten*, Leeuwarden 1740.

BERN. IDEMA *naareeden agter de gedagten*, ib. eod. anno.

R. ROUKEMA *aanmerkingen over J. H. CROESER ontverp.*, ib. 1741. 4. quod inprimis scriptum opprobriosum est.

- J. H. CROESER** *berigt over een dryvende en zinkende long*, Groning. 1741. 4.
- BERNARD IDEMA** *noodige tusschen-inspraak over het dryven, &c.* Leeuwarden 1741. 4. *Scriptum & ipsum satis asperum.*
- D. PEAGET** *an musculorum intercostalium & diaphragmatis motus sympathicus.* Parisiis 1740. 4. habet peculiarem nervum cordis, & conjunctionem phrenici cum intercostali.
- BENJAMIN LUDOV. LUC. de LAUREMBERT**, *Ergo demersorum vite fomes ultimus est respiratio*, Paris. 1740. 4.
- BENJAMIN HOADLY** *on the organs of respiration*, Lond. 1740. 4. In vivis animalibus respirationem observavit, & machinis quibusdam bilocularibus cum fundo mobili, conatus est imitari: Aerem thoracicum defendit.
- P. GERIKE** in *Diff. qua conjectura de respiratione fetus in Italia proposita examinantur*, Helmst. 1740. Contra **MAZINUM**.
- In **NIC. ANDRY** Thesi, *Ergo ab impulsu sanguinis respiratio spontanea*, Paris. 1741. 4. Respondente **D. HERISSANT** defenditur, pulmones ab influxu sanguinis arteriæ pulmonalis distendi.
- BENJAMIN LUDOV. LUC. de LAUREMBERT**, *Ergo aer sanguini immiscetur per pulmones*, Paris. 1741.
- In fasciculo primo iconum anatomicarum figuram dedi septi transversi, in proprio vero Libello, Bernæ 1733. 4. edito, recuso Lips. 1738. 4. & Leid. 1738. 4. historiam experimentorum ad ejus musculi actionem dignoscendam institutorum dedi.
- J. G. GUNZ** in *Lib. de situ parturientium*, Lips. 1742. 4. edito, aliqua experimenta & cogitationes de actione musculorum quorundam respirationis attulit, & de mutatione respirationis in situ vario corporis.
- V. H. de NORMANDIE** *Disp. de fabrica pulmonum eorumque usu*, Leid. 1742.
- J. FRANCISCUS de SAUVAGES** in *Actis Monspeliensis Academiae*, 1743. de aeris transitu in pulmones inquisivit, & ob mucum copiosum transitum invenire, aut sanguinem condensari negavit. Varia etiam ad respirationem monuit in *Diff. de inflammatione*, & in notis ad *hamastatiks*.
- J. FRID. CRELL** in *Disp. de causis respirationem vitalem clientibus*, Helmstad. 1743. 4. Bremondî nimis latas conclusiones ingeniose & vere coercuit.
- ANT. BERGER** *an respiratio motus sympathico-mechanicus*, Paris. 1743. 4.
- FRID. de la FOSSE** *de aere vita, & morborum causa*, Leid. 1744. 4.
- J. FRID. CARTHEUSER** *de aeris subtilioris per corpus humanum perenni circuitu*, Francof. Viadr. 1743. 4.
- AARENT MULDER** *de respiratione*, Leid. 1744. 4.
- JOSEPH VERATTI** in *T. II. Comm. Bonon. P. II. de avibus in vacuo enectis phænomena protulit.*
- In **DAVID STEPHENSON** *new mechanical practice of physick*, Lond. 1744. fol. agitur etiam de respiratione & aeris efficacia in *C. H.* qua eam utilitatem inprimis urget, quod aer nimis diu in sanguine retentus & acrior factus, per pulmonem exhalet.
- JOS. ANTON. PUJATI** in *Libro de morbo Naroniano* notabilem habet digressionem de respiratione, in qua **MICHELOTTUM** contra **HELVETIUM** defendit.
- CL. SCHWARTZ** in *Disp. de vomitu & respiratione*, Leidæ 1745. observavit varietatem respirationis in canibus aliisque animalibus.
- J. CHRIST. GERH. KNOLLE** *von der verdikung des geblütes in der Lunge*, Hallæ 1746. 4.
- Vasa lymphatica superficiei pulmonis reticulata, absque valvulis, demonstravit **CL. FERREIN** apud **MONTAGNAT** *Lettre sur un nouveau genre de vaisseaux.*
- CL. van SWIETEN** experimenta **HOUSTOWNIANA** vidit, ipse aliqua instituit, Præceptoris theoriâ defendit, modum explicavit quo septum transversum fungitur officio, in constrictione venæ cavæ, in respiratione, &c.
- In **NOLLETI** physica experimentalis aliqua de spatii aere vacui noxis exstant.
- J. DAOUSTENC** *de respiratione*, Monsp. 1745. 8. *coll. Disp. vol. IV.* per experimenta **BREMONDUM** refutat, pulmones non a propria aliqua vi dilatari demonstrat, expirationem ad animæ imperium refert, &c.

Tunc etiam addendus est RUYSCHIIUS pro bronchialibus arteriis (a), de quibus exiguum tractatum scripsit.

Ex RAVIO vero suppleri debet, quod ab omnibus Auctoribus omissum est, venas nempe bronchiales (b) non in auriculam dextram, sed in venam ἀζυγον redire.

CL. BROWNE LANGRISH in *physical experiments upon Brutes*, Londini 1747. 8. fumum sulfuris in animalium pectora admisit, effectus innocuos observavit.

ROBERT DOUGLASS in Libello of *animal heat* omnem calorem unice ex frictione inter sanguinem vasorum minimorum & superficiem proximam frigidi aeris generari, pulmonem vero refrigerare docet.

CL. OVELGUN in E. N. C. vol. VIII. de experimento cum pulmonibus natantibus vel subsidentibus egit, nec credidit sufficere.

FRID. WILH. WACHTER Disp. de trachea Fr. Viadr. 1748.

BRYAN ROBINSON in L. of *food and discharges*, Londini 1748. 8. pulmonum proportionem ad reliquum corpus examinat.

CL. QUELMAIZ in progr. Lips. 1748. edito, arteriam pulmonalem in inspiratione longiorem & angustiolem fieri, ita sanguinem densari, accelerari credit.

CL. SCHAARSCHMID in ultimo (VI.) volumine der *Berlinischen nachrichten* prorefrigeratione in pulmonibus scripsit, tum J. GOTTLÖB KRUGER in Disp. de refrigeratione sanguinis in pulmonibus, Hall. 1748. 4.

STEPH. LUD. GEOFROI Ergo aer precipuum digestionis instrumentum, Paris. 1748. 4.

CL. HANOVIVS in actis Societatis Gedanensis vim flatus experimento definire conatus est.

Inter CL. LA MURE disputationes reperio de respiratione, quam non novi an forte eadem sit cum ea D. DAOUSTENC.

Fuse de respiratione & pulmone in secundo Tomo Libri de corde egit SENACUS. Rejicit aerem thoracicum & aeris condensationem, & venarum denique amplitudinem.

SAMUEL AURIVILLIUS Gottingæ an. 1750. defendit disp. de pulmonalium & cavitatum cordis inaequali amplitudine. Confirmat ampliores esse venas, sed eam amplitudinem ex magna parte refert ad finem naturæ impedituræ, ne sanguis in nixu congestus vasa sua rumperet. Rejicit sanguinis condensationem, & alia notatu digna proponit.

(a) Arterias Bronchiales ERASISTRATO dictas, GALENO memoratas, & omnibus barbaris, ad memoriam hominum revocatas esse a DOM. de MARCHETTIS, & a FRID. RUYSCHIO, fusius dixi in icone arteriar. bronchialium, quæ exstat in III. fasciculo, ubi eas arterias ex multis observationibus descriptas, & depictas dedi.

PHIL. ADOLPH. BOEHMER, Hall. 1748. 4. Dissertationem de bronchiis & vasis bronchialibus, in ea iconem dedit venæ bronchialis.

(b) Venam bronchialelem sinistram ILL. WALTHERUS in progr. Lips. an. 1731. edito; dextram J. RAVIUS primus dixit (apud VALENTINUM in appendice Amphib. Zootom.) De utrisque a RUYSCHIO non bene negatis eodem loco fusius dixi. Vena vero bronchialis ex vena cava orta non longe super septum transversum NICOLAI SAMMICHELLII, aut non bene descripta est, aut mihi non visa.

C A P U T VI.

De Ventriculo, & Intestinis.

Qui has partes ordine tractare voluerit, sic incipiat.

1. GLISSONIUS de Ventriculo & Intestinis in 4. Londini prodiit anno 1678. (a) deinde in 12. Verum ea editio multum differt a præcedenti. In eo tractatu

(a) GALENUS de motu peristaltico, in Libro de facultatibus naturalibus III. & alibi varia bona habet.

Statu vir iste, qui omnium Anatomicorum exactissimus fuit, ut incomparabilis tractatus de hepate nobis persuadet, omnia quæ de œsophago, & ventriculo eo tempore nota erant, optimo ordine, & absque confusione describit.

2. Le-

Apud RUFUM Ephesium situs ventriculi pleni verus, cum convexitate peritonæi & epigastrio opposita describitur.

J. BERENGARIUS intestinum cœcum ex homine primus descripsit.

A. VESALIUS valvulam pylori primus indicavit, œsophageas glandulas (sed eas nimis paucas, nimis œsophago proprias) appendices epiploicas coli, quas RIOLANO minus bene tribuit DOUGLASSIUS, aliaque invenit.

GERARDI BUCOLDIANI de puella qua sine cibo & potu vitam transigit, Paris. 1547. 8. L.*.

JAC. SYLVIUS ligamenta tria coli primus vidit.

G. FALLOPIUS valvulas intestinorum tenuium villosamque tunicam invenit.

JOH. COSTA de venarum mesentericarum usu Liber, Venet. 1565. 4. Intestina alere statuit, non corpus. DOUGLAS.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS in œsophago situm verum, in ventriculo ligamenta ad ingressum œsophagi, mutationem figuræ ex vacuo in plenum, duodeni curvaturam, coli intestini geminos flexus, & plurima alia utilia habet.

CONSTANTIUS VAROLIUS valvulam ad coli initium credebatur invenisse. Sed eam jam VIDUS descripsit, deinde, forte ex G. RONDELETII experimento, a JOHANNE POSTHIO breviter citata est. SALOMON ALBERTUS eandem valvulam serius pinxit, & proposuit, cum C. BAUHINUS, Patavii an. 1579. qui inventionis gloriam masculine defendit post ROUSSETUM, in theatro, & alibi. NICOLAUS TULPIUS ultimus ad eam accessit in observationibus.

ARCHANGELUS PICCOLHOMINEUS intestina omnia unum tubum efficere docuit, villosæ amplitudinem dixit, valvulæ coli (malam tamen) descriptionem dedit.

NIC. TAURELLI de ventriculi natura & viribus, Altd. 1587. 4.*.

J. ÆMYLIANI naturalis de ruminantibus historia, Venet. 1584. 4. B. PL.*.

HIER. FABRICII ab AQUAPENDENTE de gula, ventriculo & intestinis, omento & mesocolo tractatus, Patav. 1618. 4. Valvulas ex villosa tunica factas, etiam habet, & notas diversorum intestinorum, aliqua etiam ex comparata anatome, ut quatuor ruminantium animalium ventriculos. Sed senile, Galenicum, & fusioris dictionis opus.

TANCREDI LATINI de fame & siti L. III. Venet. 1607. 8.

TANCREDI LATINI L. III. citati controversiis pleni sunt quas cum rationibus excutit & pro GALENO plerumque decedit. Melancholiam confirmat appetitum facere. Aliquid deglutiri per asperam arteriam defendit. Multa aliena, etiam falsa.

P. LENTULI historia Apollonia Schreyera, Bern. 1604. 4. Præter historiam asitiæ aliquot annorum multa etiam similibus casuum collegit.

J. JAC. CHIFFLET Asiria in puella Helvetica mirabilis physica exstasis, Vesontin. 1610. 8.

FORTUNII LICETI de iis qui diu vivunt sine alimento, Patav. 1612. fol.

RODERICI a FONSECA de hominis excrementis, Pisis 1613. 4.

RODERICI a FONSECA l. c. ad semioticen proprie facit, & omnia considerat quæ ex corpore humano egeruntur.

J. B. ab HELMONT contra calorem coquum ventriculi validas objectiones protulit, de modo quo cibi successive in naturam volatilem alcalinam mutantur, magni momenti observationes proposuit. Huc autem pertinet duumviratus, jus duumviratus, pylorus rector, de flatibus in homine, sextuplex digestio, triplex Scholarum digestio, imago fermenti, calor non efficaciter digerit, sed excitat; de spiritu vitali, &c.

JOHANNIS WALÆI Epistola de chylo cum T. BARTHOLINI anatome, Leidæ an. 1641. edita, egregium opusculum est, quo successivum iter & mutatio ciborum determinatur per experimenta.

G. MOEBII de chylicatione sive coctione prima, Jenæ 1645.

S. SORBIERE discours sceptique sur le passage du Chyle & sur le mouvement du Cerveau, Leidæ 1648. 12. parvi momenti.*.

GOD. MOEBII *de usu ventriculi & intestinorum*, Jen. 1651. 4.

In AUG. de LAURENZO *disceprationibus* prima est *an possit homo naturaliter diu absque cibis vivere*, Panorm. 1652. 4.

MARTIN SCHOOK *de fermentatione*, Groning. 1663. 12. id utique boni habet, quod acidum HELMONTIANUM refutet.

ANTONIUS DEUSING *de ventriculo & digestionem*, Groning. 1664. 12. EJ. *de chyli a faecibus alvi secretionem*, ib. 1665. 12. & *de nutrimenti in corpore elaborationem*, 1660. 12.

F. SYLVIVS in *Dissertationibus* omnino etiam ad hanc rem experimenta, & longe magis opiniones habet, quas multi sunt secuti.

N. STENONIS filius glandulas minimas oesophagi invenit in *Tractatu de musculis & glandulis*.

Sed etiam in RUDBEKII experimentis in *messe aurea* editis multa adsunt, huc utilia, ad motum peristalticum.

In PHIL. TRANSACTIONIBUS.

G. COLE de fibris spiralibus intestinorum n. 125. post *Librum de febribus intermittentibus*. Londini 1694. 8.

M. LISTER experimentum de mutando colore chyli n. 95. 143. & 144. 270. & MUSGRAVE de eodem n. 166. De ressecando coeco, & ejus necessitate n. 151. 155.

C. LEIGH de digestionem n. 162. Vir ruminans n. 192.

G. COWPER de chylicationem n. 220.

PITT de motu peristaltico ventriculi n. 243.

CL. HAVERS de concoctionem ciborum mirifica theoria n. 254.

Motus peristalticus observatus in intestino quod in thoracem migraverat n. 275.

A. van LEEUWENHOEK de vasis & tunicis intestinorum n. 314.

Observatio erosionis absque tritu factae in humano ventriculo n. 317.

ST. ANDRE' contra motum antiperistalticum n. 351.

HOLT de motu peristaltico experimentum n. 375.

De villis ventriculi & intestinorum PRICE n. 404.

STUART de causa motus peristaltici ab irritationem n. 414.

CL. NIC. LE CAT motus peristalticus in homine observatus n. 460.

In CLEMENTINAE ACADEMIAE monumentis aliqua ad succum ventriculi in rapacibus avibus & multivoris experimenta exstant, tum ad vim ventriculi avium infrangendis globis vitreis.

FRANCISCUS REDUS in *esperienze intorno alle cose naturali*, Flor. 1671. 4. habet progressum ciborum per intestina animalium, & tempora itineris, & vim frangentem globos vitreos. Idem in *Tractatu de anim. intra anim. vivent. plurimorum animalium viam chyli describit*.

In Antiquioris Academiae Gallicae Documentis historia quidem animalium plenissima semper est in ventriculorum & intestinorum attributis.

DUVERNEY de organis nutritionis T. IX.

In Collegii privati Amstelodamensis plurima huc pertinentia exstant.

In EPHEMERIDIBUS NATURAE CURIOSORUM multa huc pertinent, inprimis vero in Dec. I. ann. II. J. WEFFERI observationes in ventriculo Castoris, & de ventriculo observationes Dec. II. an. IX. Dec. III. an. VIII.

Ventriculus Ciconiae a J. C. PETERO descriptus Dec. II. ann. III.

PETER de glandulis intestinorum Dec. II. ann. VI.

HARDER de glandulis duodeni Dec. III. ann. I. & alia plurima.

JEREMIAE LOSS de fermento ventriculi, Jen. 1665. 4.

FLORENTII SCHUYL L. de veteri medicina huc etiam referri potest, sed de eo alibi fusius.

HENRICI MEIBOM de chylicationem Disp. Helmst. 1671.

MAUR. HOFMAN de lactis & chyli statu naturali & praternaturali, Altd. 1673. 4.

FRANCISCI GLISSON de ventriculo & intestinis, Londini 1676. 4. Amstel. 1677. 12. Paulo minus anatomicus hic fuit senex, ut videtur. De principio tamen irritabili in partibus solidis animalis residente, omnino legi meretur. Motum antiperistalticum fuse descripsit.

JOH.

2. Legatur porro, I. CONRADUS PEYERUS (a), quo carere non possumus. Si legenda alicujus Auctoris sunt opera, certe merentur quæ PEYERUS scripsit, licet aliis distractus negotiis anatomiam deferuerit. Quæ GLISSONIUS non habuit,

JOH. MAYOW de fermento ventriculi aliisque fermentis egit in Tr. IV. eorum qui Oxonii 1674. 8. prodierunt.

TOB. ANDREÆ de concoctione ciborum in ventriculo, Francof. Viadr. 1675. 4. *.

THEODORUS KERKRINO in spicilegio obss. valvulas intestinorum pro re nova ad RUXSCHII præparationes descripsit, & obscure depinxit.

J. NICOLAUS PECHLINUS in L. de purgantibus. Leidæ an. 1672. 8. edito, glandulas simplices intestinorum primus descripsit.

B. SWALWE Querela & opprobria ventriculi, Amst. 1679. 12. 1675. 12. Practicus imprimis.

THOMÆ WILLIS Pharmacopœa rationalis Tomus I. Oxonii 1673. 4. & 1678. 8. Hag. 1675. 12. editus continet descriptionem ventriculi & tunicarum intestinalium. Etsi priorum utique labores superavit, multa tamen in utraque descriptione sunt, quæ aut desideres, aut velis expuncta. Ventriculi fibræ non satis veræ sunt, & tributæ extimæ membranæ longitudinales, intestinis adfectæ tunicæ glandulosa nervosa. Explicatio tamen operationis medicamentorum omnino non mala. Villosam intestinorum tunicam constituit.

TH. WILLIS l. c. exstat etiam editio, Oxon. 1674. 12. STAEH.

G. BALTH. METZGER historia anatomica ventriculi, Tubing. 1661. Disp. *.

GALATHEAU Diss. sur la digestion de l'estomac, Paris. 1676. * (Journ. des Sav.). A calore explicat digestionem, acidum omnino aliquid valere negat.

ANDRE' Entretien sur l'acide & l'alcali, Paris. 1672. 12. Contra BOYLEUM pro duumviratu * (Journ. des Sav.)

JOH. PASCAL nouvelle découverte des ferments, Paris 1681. 12. mirum systema: Fermentum volatile acidum esse, quod irretitum in alcali fixum fiat. Lympham & animales spiritus acidos esse, cerebrum acidum, ut ex eo pasta panis fermentari possit.

(a) J. CONRADI PEYER Opuscula septem variis prius locis prodierant. Libellus I. de Glandulis intestinorum habet historiam accuratam glandularum tum agminatarum, tum singularem a M. AUR. SEVERINO in zootomia primum, tum PECHLINO & LISTERO (Phil. Trans. p. 95.) memoratorum, & in homine, & ex magna animalium varietate. In Ejus Exercitationis parte posteriori tribuit suarum glandularum succo vim digestivam, ibique motum antiperistalticum fuisse per experimenta demonstrat. Ad praxin etiam inventa applicat. Adjecta est appendix, qua studiosissima anatome ventriculi gallinacei continetur. In Exercitatione (sive Parergo) II. iterum de glandulis agit intestinorum. Jus inventi sibi vindicat, & officium nobile. In Certamine Epistolico cum MURALTO negat, per eas glandulas chylum resorberi. De glandulis intestinorum etiam in E. N. C. Dec. II. ann. VI. egit. De his omnibus varia etiam in commercio epistolico cum HARDERO habet. Hæc parerga VII. conjunctim, Genevæ 1681. 8. & Amstelodami 1682. 8. seorsim primum Scaphusii an. 1677. & Amstelod. 1681. 8. prodit.

A. QUIR. RIVINI de acido fermento ventriculi, Lips. 1677. 4.

J. BOHN etiam huc pertinet de chyli natura disp., Lips. 1668. 4. JE. ep. de acido & alcali, ibid. 1675. contra hanc hypothesin scripta.

J. J. WEPFER L. de cicuta aquatica numerosissimas & egregias observationes habet de ventriculi & intestinorum motu peristaltico, de illius ad vomitum robore, de valvula pylori, de glandulis duodeni & intestinorum, &c.

In CL. PERRAULT Mécanique des animaux, anatome comparata organorum digestionis breviter describitur; cum pulchris iconibus Tractatus etiam integer de motu peristaltico exstat in Essais T. III.

J. J. HARDERUS in apiario plusculas observationes glandularum humani ventriculi habet, & alia ex comparata anatome.

PASCAL nouvelle découvertes des ferments dans le corps humain, Paris. 1681. 12. *.

NEHEMIÆ GREW comparative anatomy of the guts cum musæi Greshamensis catalogo. Lond. 1681. fol. edita habet ex plurimis quadrupedibus, avibus etiam & piscibus systema ventriculi &

buit, ea in PEYERI tractatu certe reperiemus. Tractatus est in 8. dictus *Exercitatio medica de Glandulis intestinorum*: editus est Schafhusiæ in Helvetia, sed hæc editio evanuit. Iterum impressus est in Parergis ejus anatomicis. Elegantissimæ sunt observationum egregiarum collectiones. In anatomia brevissimo stilo & nervoso conscriptæ, editæ sunt Genevæ 1681. & Amstelodami apud Wetstein in 8. an. 1681.

Huic tractatui addendus est ejusdem PEYERI tractatus *de Ruminantibus* Basileæ an. 1685. in 4. editus (a). In hoc libro omnia fere, quæ rarissima possumus optare de œsophago, ventriculo, & intestinis fide optima reperiuntur.

3. Hisce addendus est etiam HIERONYMUS FABRICIUS AB AQUAPENDENTE in tractatu *de Ventriculo* & varietate intestinorum, qui tractatus egregius est, & eximio stilo a Professore illo Patavino conscriptus; non modo vero humanum ventriculum, sed etiam aliorum animalium ventriculos describit, ut Anseris, Annatis, &c. in folio. Editus est Lipsiæ in folio anno 1687. in collectione cui titulus est *Opera omnia anatomica & physiologica HIERONYMI FABRICII AB AQUAPENDENTE*, cum præfatione Clar. BOHNII. In eo Libro reperitur citatus tractatus, quo carere non possumus.

4. Unus potest addi, nempe THOMAS WILLISIUS (b) in *Pharmacia rationali* Intestinorum, cum eorum convolutione, longitudine, mole, glandulis, quas forte ante PEYERUM vidit, rationibus fabricæ.

DANIEL DUNCAN *la Chymie naturelle ou l'explication chymique & mécanique de la nourriture de l'animal*, Montauban 1683. 8. * Paris. 1662. 8. Latine vero auctius cum titulo *Chymia naturalis specimen* prodiit. Amstel. 1707. Digestionem chemice explicat, & liquorem ventriculi compositum facit ex sale alcalino, alio vitriolico, & acido spirituofo, &c.

GER. BLASIUS in *miscell. anatomicis*, Amst. 1683. 8. de valvula coli non malas observationes habet, eoque etiam pertinent ex anatome comparata plurima, quæ in *anatome animalium* exstant.

J. BOHN. *Disp. de menstruo universali animalis*, Lips. 1687. & *Disp. de vomitu* 1688.

G. CHARLETON *inquiries on nutrition*, &c. Lond. 1659. 4. & in tribus Dissertationibus earum, quæ sub titulo *inquiries on human nature*, Lond. 1680. 4. prodierunt, etiam continuationem membranarum oris in ventriculum & intestina, describit, quorum intima fiat membrana quæ in cute extima.

J. C. VOLCAMERI *de stomacho* Ep. Altdorf. 1682. 4.

J. C. BRUNNER in *Diff. inaug. de glandulis duodeni*, Heidelbergæ 1687. & in E. N. C. an. 1694. & in Libello cum eodem titulo Heidelbergæ 1715. 4. edito glandulas a J. F. WEPFERO & PEYERO tactas, rariuscule in duodeno conspicuas, fuscè describit, & multa ad digestionem pertinentia utilia experimenta habet, & villorum lacteorum & venosorum descriptionem. Suas glandulas liquorem digestivum secernere, PEYERIANAS solum mucum parare demonstrat.

SAMUEL COLLINS ex animalibus, imprimis piscibus, non indiligentes ad anatomen comparatam observationes habet.

MARCELLUS MALPIGHIUS imprimis in Ep. *de glandularum conglobatarum structura* glandulas ventriculi & intestini recti ex variis animalibus habet.

(a) J. C. PETER in *Merycologia*, Basil. 1685. 4. ventriculos animalium ruminantium fibrasque musculares fuscè describit, & in BRUNNERUM pugnat. Additæ sunt utiles WEPFERI Epistolæ.

(b) WILLISIUM suo loco diximus.

THOMAS CORNELIUS Consentinus, cujus *posthuma* Neapoli 1688. 8. prodierunt, & una recusa sunt *progymnasmata* VII. Venet. prius an. 1673. 4. edita, Glandulas ventriculi humani describit, experimenta varia Galenicis, eo tempore regnantibus, medicis opponit.

MEL-

MELCHIOR FRIDER. GEUDER *diatribe de fermentis*, Amstel. 1689. 8. Nulla in corpore fermenta dari, neque salivam aut lympham acidam esse.

M. FR. GEUDER l. c. omnino legi meretur.

In LEONH. a CAPOA *ragionamenti de incertitudine medicamentorum fusa satis de organis digestionis dissertatio* exstat, in qua fermentis faver.

JOH. VIRIDET *de prima coctione & ventriculi fermento*, Genev. 1691. 8. & auctius in *Tr. des causes de la production du bon chyle*, Paris. 1735. 8. 2. vol. In priori Libello equidem alcalinum succum ventriculi, cum acida saliva conflagere; sic effervescentiam nasci digestivam, & glandulas omnes, pancreas, salivales, reliquas, succos præparare acidos proposuit. Sed intermixta experimenta & practica sunt, & anatomica non pauca. In altero opere quadragesimo post anno edito, eandem theoriam ad morborum, a se ipso curatorum, phænomena comparat. Multæ ibi corporum morbosorum sectiones.

J. M. HOFMANN *de liquore gastrico*, Altd. 1690. 4.

J. PH. VERHEYEN in L. II. anatomies experimenta ad naturam digestionis ciborum habet.

ANTONIUS NUCK experimento egregio demonstravit intestina de cavitate abdominis sorbere.

WILH. COWPER in *anthropographia* fibrarum intestinorum icones habet: tum in *myorome*: IDEM in *introductione* ad magnam anatomiam historiam totam digestionis habet.

GUIL. COWARD *de fermento volatili nutritio conjectura*. Lond. 1695. 8. Concoctionis causam esse salinem volatilem oleosum sanguinis in ventriculo secretum, ad finem salii volatili oleoso SYLVII *.

GUILH. COWARD etiam est *enquiry in to the erroneous philosophy of alkali and acid* Lond. 1698. 8. *

G. WEDEL *de valvulis conniventibus*, Jen. 1695. 4.

JOH. FLOYER in *praternatural state of humours* edita Londini 1696. 8. plurima huc pertinentia habentur. Valde laborat Vir CL. ut ostendat, digestionem fermentatione fieri, & vitio fermenti pene omnes morbos oriri.

J. A. SLEVOGT *de fermentationibus microscopis*, Jen. 1696. 4.

CAROLUS DRELINCOURT in *canicidiis* egregia de motu peristaltico docet.

PETRI ELFWING *de motu peristaltico*, Upsal. 1698. 12. Motum ventriculi & intestinorum peristalticum vidit, etiam integro peritonæo, a musculis denudato.

PHIL. JAC. HARTMANNUS in *Diff. de peritia anat. veterum* multa bona de intestinorum anatome habet, & de vasorum in cavitate aperto hiato. Valvulam coli pro anulo habet.

FRANCISC. BAILE' primus negavit ventriculum vomitum facere, & experimentum attulit, quo confirmaret, eum motum a vi muscutorum abdominalium pendere.

LAVATERUS in *Diff. de enteroperistole* pro motu antiperistaltico egregium experimentum habet.

G. COLE in L. de febribus intermittentibus excitat BACCIACUM Genuensem, qui an. 1690. per experimenta sibi demonstraverit, ventriculum in motu peristaltico quiescere. Idem cum eodem Libello recudi curavit suam fibrarum spiraliū ventriculi & intestinorum adfirmationem.

H. BOERHAAVE *Diff. inauguralis de utilitate excrementorum explorandorum*, Hardervyk 1693. Londini cum BURTONI vita recusa, habet analyses.

JOH. GOTTSCHED *de circulatione chyli*, Regiomont. 1702. 4. aliqua habet ad oscula lacteorum pertinentia.

In Monumentis Academiae Reg. Scientiarum.

CHIRAC de actione ventriculi in vomitu 1700. & de eodem MERT,

DUVERNEY de eadem re.

De aquæ exhalatione per ventriculum MERT 1700. 1701.

1711. Ciborum acescentia in ventriculo.

HOMBERG analysis fecum alvi.

1712. Secessio membranæ internæ ventriculi.

1713. HAGUENOT contra motum antiperistalticum.

1715. WINSLOW de situ viscerum, & ventriculi pleni & inanis diversitate.

ionali, edita Londini & Oxoniæ in 8. ubi, antequam purgantia præscribit, historiam prius ventriculi & intestinorum tradit,

5. Por-

1717. LITRE de clysteribus nutritiis.

1719. HELVETIUS de digestionem, ventriculo, cujus fibras musculosas melius describit, & anno 1721. de intestinis, ubi minus bene aliqua profert de cellulosa tertia, papillis spongiosis intestinorum, &c. IB. 1719. Digestionem fieri fermentatione quæ sales volatiles producat.

1729. SENNAC vim diaphragmatis in claudendo oesophago docet.

1732. LINDERN pro erosione & fermento ventriculi. HUNAUDE de appendicibus Ileï.

1733. LA MORIER cur equi non vomant.

1744. Volvulus absque colica. Clysteres nutritii.

J. FANTONUS in *Dissertationibus anatomicis*, sed imprimis in editione nupera. Turin. 1745. 8. multa ex anatome comparata ad ventriculi & intestinorum historiam attulit, poros cryptorum ventriculi; cellulosam secundam, anuli pylori bonam descriptionem, cellulosam oesophago circumjectam.

J. PHIL. HECQUET est etiam thesis, *Ergo functiones non a fermentis*, Paris. 1696. 4.

Nunc etiam legi J. ASTRUC epistolas quibus responderetur epistolari dissertationi THOMÆ BOERII de causis concoctionis, Tolosæ 1715. 12. Iterum repetit demonstrationem suam de fibra circulari, quæ sit polygonum infinitilaterum, & in cujus singulis chordis vires distrahentes destruunt vires incurvantes. Vim trium unciarum admittit.

LUD. ANTONIUS PORTIUS in *opusculis variis*, Neapol. 1701. 12. habet etiam Tractatum de confectione ciborum in ventriculo, ubi salivam pro fermento admittit.

Ad vim resorbicam ventriculi aliqua habet R. VIEUSSENS in *novo vasorum Systemate*.

IDEM in Tractatu *des liqueurs* accuratam historiam ventriculorum animalium ruminantium, & mutationis successivæ cibi, & succi etiam ventriculi humani alcaliscentis, & exhalationis arteriosæ tradit.

IDEM in Tractatu *des liqueurs* jam citato ad succum ventriculi & intestinorum legi meretur.

J. B. MORGAGNUS passim, sed imprimis in Adv. III. de valvula coli, de sinibus & valvulis intestini recti, & in Epist. XIV. de iisdem accuratiores observationes habet.

JAC. de SANDRIS de ventriculo cum Tractatu de sanguine edito. Opusculum nihil proprium habet. Editum est Bonon. 1696. 4. Sed mea editio est Francofurtensis 1712.

PETRUS MATTHÆUS in *animadversionibus physico-medicis in X. dialogos congestis*, Neapoli 1704. 4. discipulus CORNELII, Physiologiæ partem dat, qua viscera chylopoietica & hæmatopoietica continentur. Experimenta varia habet satis singularia ad vires digestrices de succis digestivis animalium &c.

J. F. HOFMANN de duodeno multorum malorum sede. Hall. 1708. Disp.

JAC. VERCELLONI de glandulis oesophagi conglomeratis, vero humore digestivo, & vermicibus Dissert. anat. med. Astæ 1711. 4. Oesophagi, & plures quidem quam nemo alius, glandulas describit, quarum liquorem credit digestivum esse, in thyreoidea vero glandula vermium esse nidum, qui in ventriculum deferantur, ut cibo vitalem characterem imprimant.

ALOYSII della FABBRA *Dissertationes physico-medice*, Ferrar. 1712. 4. De itinere ciborum per primas vias ex cuniculis experimenta habet, & de terrarum solubilitate.

R. VIEUSSENS du levain de l'estomac in J. des SAV. 1710. Oct. & prius in J. de TREVOUX 1710. Jan. recusam inter opera HECQUETI Dissertationem dedit, qua ventriculi fermentum contra tritum defendit.

J. PHIL. HECQUET *Traité de la digestion & des maladies de l'estomac*. Paris. 1711. 12. recusum est an. 1730. 12. Digestionem a tritu fieri, & secretionem, & omnem fere in corpore humano mutationem eandem causam habere docet. Vagus ratiocinator plus auctoritatem producit, quam experimentorum. In primo tomo multis Libellis contra SYLVAM & venæ pedis sectionem, & contra Kermes minerale invehitur, & vegetabilia sola naturalia medicamenta esse defendit, &c. Contra ASTRUCI etiam & VIEUSSENSII Dissertationem respondit. EJUSDEM est *Discours préliminaire sur la trituration* & Thesis eo pertinens *ap. morbi a solidorum tritu*. Parisiis 1712. 4. cum Opusculis de tritu recusa.

IDEM

IDEM in *Traité des Dispenses du Carême* contra fermenta scribit, ventriculi succum inertem esse monet.

JOH. ASTRUC *Thesin de causa fermentationis* defendit Monspel. 1702. Inde edidit *de la digestion des animaux pour montrer qu'elle se fait par le moyen d'un levain*. Parisiis 1710. 12. iterumque *Mémoire sur la digestion des alimens*, Monspel. 1711. 4. inter Opera **HECQUETI** recusum, denique *Traité de la digestion*, Toulouse 1714. 8. In *mémoire* celebrem habet demonstrationem de impossibili contractione fibrarum circularium, derisam a **BOERIO**; & nimias adfirmationes **PITCARNII** refutat.

MIC. PROCOPE *Analyse du système de la Trituration*, Paris. 1727. 12. * Contra **HECQUETUM**.

Réponse à M. PROCOPE CUTEAUX sur son analyse du système de la Trituration, par **M. PHILIPPE de BORDIGARATE**. Paris. 1713. 12. Acer **HECQUETI** defensor. *

J. B. GASTALDI *an alimentorum digestio a fermentatione an a tritu*, Avenione 1713. 12. Pro fermentatione, vi salivæ solvente, &c.

BERTRAND in *Diario Trivultino* 1714. Febr. conciliationem aliquam inter fermentationis defensores & tritus patronos proponit.

GUIL. AUG. de la *ROSE de chyli preparatione*. Leid. 1715. Disp.

ARCHIBALDI PITCARNE *Dissertationes medicae*, Edimb. 1713. 4. Roterod. 1714. 4. &c. Huc pertinet *Diss. de motu quo cibi in ventriculo rediguntur ad formam sanguini reficiendo idoneam*, quam anno 1693. jam editam fuisse lego, Leidæ. Enormibus plena est adfirmationibus, ut 12951. L. vires faciat digestionis, fibras solidas animalium in sanguinem venire adfirmet. Adjecta est **THOMÆ BOERII** contra **ASTRUCIUM** demonstratio, posse omnino contrahi fibram circularem. Contra **PITCARNIUM** **D. SENEZ** tritum equidem defendit, geometricam demonstrationem dedit, ventriculum ad minimum trigesies debiliorem esse, quam fecerat **PITCARNIUS** in *Mém. de Monspel.* 1715.

P. HAGUENOT *an Ileus a motu antiperistaltico*, Monspel. 1715. 8. Experimenta habet, quibus antiperistalticum motum nullum esse, & solam contractionem musculorum abdominis, post impedimentum natum, cibum sursum repellere demonstrare vult.

AMAND DOUTÉ & L. de SANTEUIL, non ergo mutuum tritus & fermentationis commercium, Paris. 1716. 4.

G. DETHARDING de subactione ciborum in ventriculo, Rostock 1717. 4.

J. A. WEDEL de resolutione ciborum in ventriculo. Jen. 1719. 4.

L. HEISTER de valvula Coli. Altdorf. 1718. 4. & in collectione Disp. T. I. **BIANCHUM** refutat, valvulam duplicem vere in colo adesse demonstrat.

MAGNI BLOCK *bedänkande öfver Ester John dotter*, Stokh. 1719. 8. Non nimis credit abstemiam fuisse, celebrem hanc jejunatricem.

M. B. ADOLPHI Disp. de motu ventriculi & intestinorum peristaltico. Lips. 1720.

EJUSDEM de tunica intestinorum villosa. Lips. 1721. 4.

EJUSD. de colo intestino aninusto, recusa in collectione Disp.

J. B. BIANCHI in **MANGETI** *Theatro anatomico*. L. II. Dissertationem de valvula Coli edidit, in qua **FALCOBURGII**, **HARTMANNI**, **PAWII**, **HIGHMORI**, **RUTSCHII**, **SCHELHAMERI** sententiam secutus, eam valvulam, paulum remoto adipe, ad naturam circuli reducit.

ARENT CANT in impetibus anatomicis situm ventriculi pleni & vacui icone expressit T. V.

J. M. VERDRIES de actione ventriculi in comminuendis cibis *disquisitio*, Giess. 1722. 8. veram sententiam defendit, sed novi parum habet.

J. FRANC. FAVELET in *prodromo apologia fermentationis*, Lovan. 1721. 8. inanis est rhetoricator.

GEORG. DETHARDING *an homo adultus citra cibum & potum quadraginta dies & noctes solis natura viribus vitam trahere possit* Disp. Rostock. 1721. 4.

A. van LEEUWENHOECK passim varia ad villos intestinorum, quos facit musculosos, vim digestivam ventriculi proponit, &c.

J. ZAMBECCARI experimenta capta in animalibus, quæ resecto Cæco supervixerunt, exstant passim, etiam in **SANCASSANI** dilucidationibus.

J. JAC. Peyer in *observationibus anatomicis*, Leid. 1719. 8. experimenta anatomica ad respirationem, motum cordis, vim peristalticam profert.

NICH.

5. Porro RUYSCHII observationes, in *epistolis & thesauris*, ubi de lymphaticis vasis, arteriis & venis ventriculi egregia habet (a).

C A-

NICH. MATTH. LUDOLF *disputatio de vomitu*, Leid. 1721. 4.

JOH. LE THUILLIER *an alimentorum coctio a fermentatione* Paris. 1722. Disp. contra tritum.

J. DOM. SANTORINUS observationum C. IX. aliqua habet de intestino duodeno, de reticulo ejus interno, &c.

CL. SENNAC in suis ad HEISTERUM commentariis motum peristalticum parvi facit, antiperistalticum omnino non admittit.

MARTINI SCHURIG *Chylogia*, Dresd. 1725. 4. De appetitu aucto, minuto, vomitu, excrementis, herniis, prolapsibus, compilatio.

MARTINI CANISII Disp. de *Ventriculo*. Leid. 1724.

In Actis Petropolitanis de tunica cellulosa intestinorum secunda in T. IV. in I. de osculis lacteorum: in VII. de vasis & tunicis ventriculi CL. DUVERN. experimenta exstant.

A. VATER de *invaginatione intestinorum*. Progr. Non continuo inde sequi volvulum docet.

J. BURMAN Disp. de *alimentorum in chylum mutatione*. Leid. 1726.

Ad exhalantem in intestinis liquorem, vim contractilem ventriculi, &c. experimenta habet CL. HALES.

HYACINTHI THEODRI BARON. Ergo *duodenum Ventriculus alter*. Paris. 1730.

ROBERTI HUBERT LINGUET. Ergo *a placido intestinorum motu perfectior chyli secretio*. Paris. 1732.

PETRI BOOTT de *intestinis tenuibus*, Leid. 1733. 4.

In Edimburgensibus Actis T. IV. egregia exstat MONROI de *intestino duodeno* Disp.

THOMAS KNIGHT *vindication of a late essay on the transmutation of blood*. Lond. 1731. 8. De digestionem fusc agit, quam tribuit acido in cibis, quod vinculum sit partium corporum, idemque nunc explicatum se expandendo eas particulas a se invicem dimoveat.

(a) FRID. RUYSCHIUS plurima ad hanc historiam contulit. In ventriculo vasa, villosam naturam exhalantem: in intestinis cellulosam primam, villos, papillas, poros varios, membranarum distinctionem, epidermidis descensum in ventriculum & intestina, veram valvulae coli naturam, ilei diverticula. Tria ligamenta coli revocavit ni fallor primus, bonam iconem coli ex feru dedit.

J. A. SEGNER in Disp. de *actione intestini Coli*. Jenæ 1733. 4. & in versione germanica operis NIEUWENTYT valvularum ternatarum mechanismum descripsit, quo sustineant unitæ faciem, & resistant relapsuræ.

J. OSTERDYCK SCHACHT de *actione ventriculi*. Trajecti 1736. 4.

MATTHIÆ LAMBERTI VONK de *ingestorum assimilatione in chylum*. Leid. 1731. 4. Disp.

In Bononiensis Academia Actis T. I. GALEACIUS simplices & compositas glandulas intestinorum describit.

A. FRID. WALTHER in Diss. de *angustia intestinorum*. Lips. 1737. 4. Præter plurima alia inprimis cellulosam secundam & tertiam intestinorum describit.

IDEM de *vomitu*. Lips. 1738. & de *deglutitione*. Varia ad illustrandam anatomen oesophagi tradit.

J. JAC. RITTER de *possibilitate & impossibilitate longa abstinencia a cibis*. Basil. 1737. 4.

B. S. ALBINUS de *vasis intestinorum*. 1738. per totam seriem intestinorum vasorum successivas mutationes non in una sed in omnibus membranis persecutus est. Idem valvulam coli cellulositate destructa evanescere olim nos docuit, quod inventum in D. HUYBERT Disp. de *valvulis quæ in intestinis*, &c. Leid. 1644. 4. & apud HAYMANNUM etiam in Com. ad BOERHAAVIUM laudatur.

C. B. ALBINI *nova tenuium intestinorum descriptio*, Leidæ 1722. 4. recusa 1728. 8. Continet descriptionem tunicae cellulosa secundæ, & varia alia utilissima.

SCHULZE Disp. de *naturali & præternaturali menstrui ventriculi constitutione*. Hall. 1736. 4.

J. ERN. SCHULZE etiam est *disputatio de refectione celeri per alimenta humida*, Altdorf. 1728. 4.

J. ERN.

J. GOTTFR. BRENDL de chyli ad sanguinem com meatu per venas mesaraicas non improbabili, Gotting. 1738. 4.

EMAN. MAURIT. DUVERNEY. Ergo tritus chylosin juvat. Paris. 1737.

A. KAAU in L. de perspiratione. Exhalationem intestinale, transitum aquæ per poros ventriculi & alia hujusmodi per experimenta confirmavit: In Libro vero de imperum faciente aliqua experimenta cum opio facta recenset, in ventriculum recepto.

AL. STUART in Tr. de motu muscutorum etiam vasa & motum peristalticum considerat.

JOH. MIDY. Ergo ventriculi motus ad elaborationem chyli confert. Paris. 1639. 4.

PETRI RATELL de fabrica & usu ventriculi, Leid. 1740. 4.

JOSYÆ VERHEL de alimentorum in ore & ventriculo chylopoesi, Leid. 1741. 4.

PETRI JOH. BURETTE ergo canalis intestinorum glandula primaria. Paris. 1741. 4.

Meum de valvula Coli Programma. Gotting. 1742.] continet siccæ & recentis valvulæ comparationem, modum quo destruitur, retinacula & reliqua attributa ex pluribus corporibus.

GEOR. C. HAHN. de transitu chyli per ventriculum. Lips. 1740. 4.

J. FR. CASSEBOHM in posthumo Lib. de modo secandi, plurima bona ad historiam ventriculi intestinorum, ad cellulosas habet, ad situm œsophagi, &c. IDEM in Progr. inaugurali de differ. fetu varia de situ ventriculi in fetu magis pendulo, de cæci in fetu natura observavit.

In JOURN. de TREVoux 1743. Dissertatio exstat sur les propriétés du levain de l'estomac. p. 2374. Argumenta Vieussenii contra tritum habet.

J. NATH. LIEBERKUHNS de valvula coli, Leid. 1742. 4. præter varia experimenta anatomica, imprimis defendit, cæcum intestinum factum fuisse, ut colon clausum esset.

EJ. de fabrica & actione villorum intestinorum tenuium hominis. Leidæ 1745. 4. Microscopiis optimis & injectionibus felicissimis detexit villos cavos esse, in cavitatem chylum refugi, ex ea vas lacteum oriri, aliaque super omnem aliam industriam subtilia.

CONR. VELSE de mutuo intestinorum ingressu. Leid. 1742. egregia Dissert.

BERCHER an a valvulis motus chyli determinetur. Paris. 1742. 4. & in Collect. Disp. mea T. I.

CL. GUNZIUS de humoribus observationes proprias ad cryptas intestinorum habet.

CL. LANGGUTH de motu peristaltico, VVittemb. 1742. 4. Eum motum denegat œsophago, ventriculo, & crassis intestinis, & solis relinquit tenuibus.

PETRI JOSSELET de vomitu, Leid. 1742.

FR. JOS. de OVERKAMP de mutatione esculentorum & potulentorum, VVürzburg 1743. 4.

EJ. Mechanismus seu fabrica intestinorum tenuium, ibid. 1745. 4. BOERHAAVIANUS.

CL. van SWIETEN de actione ventriculi experimenta citat in tomo II. sui Commentarii.

WENKER de Virgine per 27. annos ventriculum perforatum alente. Argent. 1743. 4. Disp. habet etiam motus peristaltici testimonium.

H. PAUL JUCH & LOSS de viis & motu chyli, Erfurt. 1744. 4.

HENSING de omento & intestino colo. Gieß. 1745. 4. de homine descriptio. Exstat in Coli Disp. T. I.

PETRI CHEVALIER quo accuratior masticatio, eo perfectior digestio. Paris. 1745. 4.

BENJ. SCHWARTZ de vomitu & intestinorum. Leid. 1745. 4. & in collectione nostra T. I. De causa vomitus quæ in septo & quæ in ventriculo est, de motu peristaltico vero & tumultuario, experimenta sollicita cura facta habet.

J. GOTTSCHALK WALLERII de siti naturali & morbosa, Upsal. 1746. 4.

MICHAELIS SAUSSINE Diss. physiologica de digestionis negotio. Monspel. 1746. 4.

CAMILLI BARBERINI Diss. fis. anat. sopra l'esclusione de' fermenti stomachici e delle glandole nella villosa. Rom. 1747. 12. *

BRYAN ROBINSON on the food and discharges of human body. Lond. 1748. 8. Tabulæ huc pertinent, quibus ratio cibi ad excrementa & perspirationem exprimitur, & quas alibi laudabo.

ERNST GOTTLÖB BOSE Disp. de assimilatione alimentorum, Lips. 1748.

In PLANQUE Biblioth. de Méd. exempla exstant hominum qui absque cibo vixerunt.

DOMINICI GUSMANI GALEACII de carnea ventriculi & intestinorum tunica Comm. Acad. Bonon. T. II. P. II. p. 238.

RUDOLF VOSS van ZYLL de prima coctione. Leid. 1748.

JAC. HOOG de actionibus & passionibus primarum viarum in morbis, Leid. 1748. Disp.

J. FRID. CARTHEUSER de ciborum neglecta manducatione, Fr. Viadr. 1748. 4.

JOACHIM VOSSE de intestino ceco ejusque appendice vermiformi, Gotting. 1749. 4. Primas in fetu origines ligamentorum intestinalium, inde sensim subortas coli valvulas plicasque & nascentem a pondere fecum saccum cæci, & mutationem appendicis utiliter describit.

JACOBI FOELIX de motu peristaltico intestinorum bona disputatio Trevini 1750. 4. Experimenta in theatro Gottingensi facta ostendunt motum peristalticum in toto systemate ciborum reperiri Lactea vasa coeruleo colore tinxit, venenorum effectus observavit.

CAR. FRANC. BAUTIGNY des PREAUX & COMPALUPIER, Ergo diu potest homo absque cibo & potu vivere quidem, sed non valere, Paris. 1750. 4.

De vario Cardiacæ sensu erudita varia exstant in C. SAL. KOELDRI disp. de cardialgia, Gotting. 1750. 4.

C A P U T VII.

De Splene.

AD naturam Splenis intelligendam legi debent (a) Theses inaugurales maximi Medici CAROLI DRELINCOURTII, filii magni istius Anatomici CAROLI DRELINCOURTII, qui Lugduni Batavorum Medicinæ laudatissimus Professor fuit. Titulus est de Lienosis in 8. (b). & Lugduni Bat. editus est. Habetur in ea dissertatione, quidquid in Anatomes practicæ observationibus ab omni tempore usque in illum diem circa hoc negotium reperiri potest; ingens certe & egregius tra-

(a) Cum nihil valde compositi in eo viscere sit, pauci inter Anatomicos veteres peculiariter de eo scripserunt.

Ligamenta ejus aliqua EUSTACHIUS expressit.

FRANCISCUS ULMUS Pictaviensis, anatomes Professor Parisinus an. 1581. Lutetiæ parvum Libellum de Liene 8. edidit physiologicum potius quam anatomicum, quo sanguinem melioris notæ, arteriosum, in liene pro corde præparari docet. *

J. B. HELMONTIUS varia eaque plerumque valde caduca de liene proposuit, somni, venerisque sede &c.

NATHANAEL HIGHMOR in disquisitionibus anatomicis, cellulosam fabricam lienis a VESALIO tactam, ornatus repetiit, poros venæ lienalis vitulinæ descripsit.

CONR. VICTOR SHNEIDER de liene Disp. VVittemb. 1644. 4. *

JAC. ISRAEL de liene ac vasorum lymphaticorum nuper inventorum observatio. Heid. 1654. 4.

J. VISCHER de usu atque officio splenis in homine, Tubing. 1577. 4.

C. HOFMANNI de usu lienis secundum Aristotelem, Altdorf. 1613. 4. Lips. 1615. 8. Leid. 1639. 12.

C. HOFMANN 1. c. proponit sententiam suam, credit autem lienem trahere chylum lactosum & aqueum per arteriam & per venam, eum in sanguinem excoquere, ejus parte ali, aliam excrementitiam expellere, ad renes aquam, ad ventriculum denique melancholicam pro excitato appetitu minime mittere.

G. BALTHASAR MEZGER historia anatomica lienis, Tubing. 1664. 4.

J. BOHN de hepatis & lienis officio, Lips. 1677. 4.

J. VALENTIN SCHEID de usu lienis, Argentor. 1691. 4.

(b) CAR. DRELINCOURTII filii Diff. de Lienosis. Leid. 1693. 4. recusa cum paternis Opusculis & Leidæ 1711. 8. præter collectionem undique exquisitam, habet ad finem subjecta experimenta chemica & analyses varias humorum corporis omnino utiles.

JOH. JAC. RAVIUS in codice M. S. quem M. B. VALENTINUS edidit, capsulam vasorum lienis, & arteriarum extremarum in venas amplissimas continuationem descripsit.

G. C. SCHELHAMMER de liene Diff. Kiel. 1703. 4.

Status est, summi & senilis ingenii opus, & videtur pater suum filium in hoc opere adjuvasse.

Huic addatur VELTHUYSEN de *Liene* (a), editus Ultrajecti in 12. anno 1675. in quo tractatu lienem descripsit in imitationem GLISSONII de *hepate*.

Hisce evolutis addamus MARCELLUM MALPIGHIIUM (b), qui colophonem imponit & ultimam structuram explicat. Tum observationes Clarissimi RUYSCHII de Splene, quæ iterum diversis locis quærendæ sunt; dolendum enim est, quod non conjunxerit omnia, habet enim plurima experimenta de fibris, vasis, cellulis MALPIGHII, in *Observationibus anatomico-chirurgicis*, in *Litteris problematicis*, & in suis *Thesauris* (c).

G. C. SCHELHAMMER l. c. cellulas ex anatome comparata defendit & nuper in Museo anatomico CL. A. VATERUS.

R. WILH. CRAUSE de *liene*. Jen. 1705. Disp.

ALB. HEINRICH GRETZ de *structura & usu lienis*. Regiom. 1710. 4.

In libello S. PURCEL de *colica* exstat digressio de *liene*. Lond. 1714. 8.

M. V. STOK de *liene ejusque vasis*. Leid. 1718. 4. *

(a) LAMBERTI VELTHUSII Lib. de *liene & generatione*. Ultrajecti 1657. 12. Theoria mera est, sanguinem in liene in statum fusionis & volatilitatis reduci dixit.

FR. SYLVIIUS DE LE BOE in *Dissertationibus* suis evertit equidem fictitiam utilitatem vasis brevis, sed sanguinem in liene ab adfusus spiritibus plusquam perfici, & in reliqui sanguinis fermentum fieri docuit.

GEORG. BALTH. MEZGER *historia anatomica Lienis*. Tubing. 1664. 4.

JOH. ARN. FRID. *anatomia Lienis*. Jen. 1669. 4.

In Phil. Transactionibus aliqua huc faciunt.

Lienes in cane duo; n. 122.

LEEUVENHOEK, n. 307. fibras lienis descripsit, utilitatem adsignavit ad motum sanguinis accelerandum, in amplissimis venis, ortum cum membranis lienis definivit, inter fibras particulas minimas descripsit, quæ globuli viderentur.

Lienum multiplicatorum Observationes habet CHESELDEN. *Phil. Transact.* n. 337.

Glandulæ lienis humani visæ in morbo JAC. DOUGLAS, n. 349.

(b) MARCELLUS MALPIGHIIUS hoc viscus sub anatomicum examen primus revocavit in Tr. de *Liene*, qui continetur in collect. *exercitat. anat. de structura viscerum*, Bononiæ 1666. 4. Cellulas quidem repetiit, fibrasque lienis, & sanguinem in eas effundi docuit, in posthumis observationibus musculosas esse suspicatus est, verumque denique musculum scripsit, plurimis consentientibus, ut aliqui etiam pro pulmonis specie habeant, ut G. COCKBURN in *Oecon. animali*. Addidit autem MALPIGHIIUS glandulas, inter cellulas lienis dispositas, in medio sanguine suspensas, &c. Primus autem fibras lienis refutavit in *Coroll. ad dissert. de respiratione* J. SWAMMERDAM.

MATTHIÆ TILING *anatome lienis*. Rintel. 1673. 12. ejusque digressio de *vase brevi*. Minden. 1676. 12. Collector.

J. JAC. WALSCMID de *usu lienis*. Marpurg. 1680. Disp.

JOH. MAYOW lienem salibus sanguinis fixis in volatiles mutandis credidit inservire.

In *progrès de la Médecine*. Paris. 1697. 12. exstat JOHANNIS MERY observatio de fibris lienis, quas cum fibris corporis cavernosi penis comparavit.

G. COWPERUS varia de *Liene* in magno opere *anthropologia* attulit, feri copiam in sanguine lienis majorem esse, quam alibi credidit.

In *Mém. de l'Acad. Roy. des Sciences* exstat MERY lienis glandulosi observatio. 1701.

Et an. 1738. LIEUTAUD suspicatur lienem ventriculo vacuo stagnantem sanguinem congerere, eundem a ventriculo pleno comprimi, ita ad hepar eo tempore plus bilis venire. Idem in *Essais Anatomiques* capsulam similem Glissonianæ in liene vasa comitantem dixit.

(c) FRIDERICUS RUYSCHIIUS multis locis de liene egit, & glandulas, quas juvenis a MALPIGHIO receperat, refutavit, ut nihil essent, nisi vasorum glomeruli. Idem venam

homine arteriæ comitem esse jam 1665. monuit. Huc pertinent imprimis RUYSCHII I. *de valvulis vasorum lymphaticorum*, in quo lymphatica lienis habet, ejus *Epistola IV.* & *Thesaurus VII.* ubi glomulos vasorum lienis pulcherrime dedit pictos.

RAIMUNDUS VIEUSSENS in *novo Systemate vasorum* etiam glomulos glandulis substituit & fibras vasa esse adseruit, & *vasculofo-vesiculosam*, ut vocat, fabricam lienis descripsit.

J. THEODOR. ELLER *de liene*, Leid. 1716. ostendit in ipso vitulo nullas nisi a collapsis vasis cellulas esse, glandulas vero quæ credebantur fibras esse retractas.

J. TH. ELLER disp. recusa est in Tom. III. disp.

POL. GOTTL. SCHACHER *de lienis genuino usu*. Lips. 1722. 4.

A. Q. RIV. Disp. *de genuino usu lienis*. Lips. 1722. 4.

A. VATER *de liene celluloso* Progr. VVittemb. 1723. 4. EJUSDEM *de lienis prolapsione* Progr. Sanguinem fluidum spumantem & tenuem in liene generari, talemque hepatis suppeditari docet.

G. STUKELEY *description of the spleen*. Lond. 1723. fol. Valde paradoxus homo, docet arterias lienis subire cavum venarum, & per id cavum longe decurrere: lienem sanguinem, contra vulgarem circulationem, mittere cordi, ventriculo, reni, genitalibus, hinc utique ad venerem id viscus pertinere. Icones passim per fraudem fictæ.

In Actorum Petropolitanorum Vol. IV. CL. J. G. DUKERNOI glandulas Lienis in ipso elephanto negat, venam autem in homine etiam perforatam esse, & cellulosa fabricam penis corpori cavernoso adfinem ponit, & lienem perinde a sanguine inflari.

In EDIMBURGENSIBUS ACTIS Tom. III. habetur modus cellulosi lienis post flatum siccandi. D. SENAC in physiologia sub nomine *Essais de Physique* docet sanguinem in liene fluidiorem esse; cæterum MALPIGHIANAM sententiam tuetur, & cellulas lienis, & grana glandulosa.

ANTONII FIZES *Diff. de liene hominis sano*, Monspel. (1717. 12. vel 1716. nam etiam ita lego) recusa cum operibus omnibus. Lienem factum esse pro sanguine miscendo & attenuando, & sanguinem venosum lienis nihil arterioso deteriore esse, cellulas vero fieri præter naturam ruptis vasis, neque inesse glandulas, fibras vero quæ adsint in liene eas ad capsulam pertinere docet.

ANTON. WILHEM SCHAAF *de fabrica & usu Lienis*. Duisburg. 1734. Disp.

MARC. PAUL. DEISCH *de splene canibus exciso*, Hall. 1735. Præside J. H. SCHULZE propria de experimento priori seculo valde frequenter instituto habet pericula.

M. P. DEISCH citata disp. etiam recusa exstat in collect. disp. V. III.

In WINSLOWI Opere, præter alia, situs imprimis lienis ex perpendiculari in transversum mutatus est.

JOH. DE MESLON *de Liene*, Leid. 1738. ALBINI eandem fere, quam ELLERUS, theoriam habet, cellulas nihil esse nisi vasa venosa.

J. ZACH. PLATNER *de risu a splene*, Lips. 1738. Progr.

J. LUD. BAUDE *de la GLOE. Ergo Lien idem munus hepatis ac pulmo universo corpori præstat*. Parisiis 1740. 4.

J. CHRISTOPH. POHLIUS *de defectu lienis & liene in genere*. Lips. 1740. 4.

J. F. CASSEBOHM in posthumo opere cellulositates lienis duas descripsit, quorum altera a fibris fieret a membrana lienis ortis, inque eandem redeuntibus, altera tenerrima vasa comitaretur, patere etiam in cellulas venas atque communicare in earum cava docuit.

FRANC. DREW *de usu lienis*, Leid. 1744. 4. cum ALBINIANIS experimentis.

CORN. JOH. de FAMARS *de lienis structura & usu*, Leid. 1745. 4.

Ad ligamenta lienis confer CL. HENSINGIUM de peritonæo. Ego, ni fallor, causam variabilis in liene situs, & sustentantem lienis capsulam a mesocolo ortam, primus descripsi.

SAMUEL THEODOR. QUELMALZ *de Liene*. Disp. Lips. 1748. Glandulosum facere ex Diariis colligo.

SAM. THEOD. QUELMALZ *de liene* citatam disputationem nunc legi. Sanguinem docet effundi in cellulosa lienis intervalla, ita fieri, ut sanguis non pulsu, sed perpetuo fluxu ad hepar veniat, coagulationem vero a vi contractili fibrarum impediri & a respiratione.

C. F. TH. de TOULOUSE de KALLUM & VANDERMONDE. *Ergo sanguis a liene spissior*, Paris. 1748. Inspissari tarditate sanguinem, & ad secretionem viscidæ bilis aptiorem reddi.

CHRISTIAN LUDWIG ROLOFF *de fabrica & functione lienis*, Francof. Viadr. 1750. 4. utilis discipuli & amici nostri disputatio.

C A P U T VIII.

De Pancreate.

Pancreas sequitur ordine indagandum. De eo viscere optandum esset, ut tractatum haberemus VIRSUNGII (a), quem promiserat; sed infami scelere facta fuit percussus, ex hominum invidia, quod ductum illum pancreaticum invenerat (b). Habemus tamen REGNERI de GRAAF Thesin hic loci defensam, deinde in ejus Operibus habemus tractatum de *Pancreatis natura & usu* (c).

Tum quæ MALPIGHIIUS circa pancreas animalium inspectorum observavit, & tra-

(a) JACOBUS WIRSUNGUS Bavarus, cum apud VESLINGIUM in anatomen incumbere, essetque in theatro, ut vocant, Professor, in ductum pancreaticum, incidit, ejusque iconem unico folio cum brevi descriptione, ex plurimis tamen animalibus collecta, ad JOHANNEM RIOLANUM misit die 7. Jul. 1643. (RIOL. *Opp. omn.* p. 811.) quæ in prima editione, GRAAFIANI de pancreate Opusculi existat. Idem inventor brevi post, a Dalmata Medico, quem in angustias coegerat disputando, nefarie occisus est. Neque ideo dissimulandum, magnos esse testes, qui pro MAURICIO HOFMANNO discipulo WIRSUNGII pugnent; & huic viro autumnus 1641. prius adeo quam VVirsungo, in gallo Indico ductum excretorium ejus glandulæ innotuisse, atque ab eo ipso WIRSUNGO demonstratum fuisse contendant. BARTHOLINUS certe & J. T. SCHENKIUS *Exerc. anat.* p. 343. aliique quos habet G. FRANK *Bon. Nov. anat.* n. 21. eam gloriam tribuunt HOFMANNO, & annum diem festum Altdorfii celebrari audio, quo is ductus ab ejus Academia doctore inventus sit. Simile testimonium dixit, MAGNUS DANIEL OMEIS excitatus a CL. SCHMIDT de Germanorum in anatomen meritis. Vindex etiam patris filius JOHANNES MAURICIUS fuit (*idea corp. hum.* p. 42.)

Ductus pancreatici inventionis gloriam HOFMANNO etiam tribuit CL. BAIERUS in *biogr. Prof. Altd.*

(b) Hæc insipida fabella omnes libros pererravit, etiam A. O. GOELIKII *histor. anat.* p. 135. ab aliis adhuc magis corrupta, ut v. gr. C. DEIDIER in *Anat. raisonn.* p. 364. narret Monspeli, si Diis placet, eum ductum a WIRSUNGO inventum, & inventorem occisum esse a sodali, cum quo invenerat, quod contra pacta solus suo unico nomine commune inventum descripsisset. Sed vanitatem ejus famæ, & injuriam JOHANNI VESLINGIO, candidissimo homini, illatam ultus est, confutata ex ipsis actis nationis Germanicæ suspicione ILL. MORGAGNUS *Epist. anatom.* I. p. 83. Cæterum de pancreate non valde multa apud veteres legimus, Glandulam nempe ex qua liquidum aliquod in intestinorum initium stillaret, HEROPHILO & EUDEMO notam fuisse GALENIUS L. II. de semine c. VI. satis declarat. Sed recentiores pulcherrimam fabricam neglexerunt.

B. EUSTACHIUS figuram veriore pancreatis dedit bilobam, ferri equini similem, crus tamen longius non satis ad lienem produxit, forte quod id vulgo notum esset.

CASPAR ASELIUS non utili instituto errorem GUINTERI a COLUMBO jam refutatum renovavit, pancreas nempe verum pro nescio qua glandula anonyma depinxit, pancreatis vero nomine coactas in centro Mesenterii glandulas conglobatas depinxit, unde nomen pancreatis Asellii ortum est, ex quo ipso plurima confusio in descriptionem vasorum lacteorum manavit.

F. SYLVIIUS iconem hujus ductus paravit, quæ apud PLEMPPIUM in *fundamentis* & in prima editione GRAAFIANI Libelli existat an. 1664. 12. idem novi systematis Auctor, de quo continuo dicitur.

HERMANN BARTHOLD *Disp. de pancreate & ejus usus* Jen. 1669. 4.

(c) R. DE GRAAF de *succo pancreatico* Libellus 1664. 12. 1671. 8. 1674. 8. & alias recusis, Gallice etiam, Parisiis an. 1666. 12. Postremæ editiones auctiores sunt. Juvenis non malum opus, quo equidem falsam, a Præceptore SYLVIO receptam, sententiam proposuit, acidi succi pancreatici, qui cum bile effervesceret tum in intestinis, tum secundo in corde dextro. Sed ea occasione novam iconem Pancreatis ex homine, diversitatem in animalibus nume-

tradidit in suis operibus posthumis, pro illustratione pancreatis in hominibus inservire potest (a).

Legatur etiam CONRADUS BRUNNERUS in *Experimentis circa pancreas institutis* (b).

Tum iterum PEYERUS in *Parergis suis anatomicis* (c).

Ex his fontibus, quodcunque hactenus notum est de pancreate, expiscari poterimus, ut tamen non omittamus unum Auctorem, THOMAM WHARTONUM (d), qui in tractatu mox laudando, usque ad pondus pancreatis, & minimum nervum examinavit.

numerosis, experimenta etiam in cane facta ad definiendam celeritatem, qua is succus discernitur, utiliter adjecit, quod experimentum etiam habet FLORENTIUS SCHUYL. Exstat etiam in operibus omnibus.

(a) Pancreata insectorum & piscium intestinula caeca sunt, sub initia intestinorum inserta, & plena succo, de quibus MALPIGHIUS in *Tractatu de bombyce* & in *posthumis* egit, ubi cum pancreate comparat. ARISTOTELI minime ignorata fuerunt, & fuse dicta RONDELETIO, REDO, GREWIO, COLLINSIO aliisque zoologis, in insectis vero SWAMMERDAMIO.

BERNARDI SWALWE *Pancreas Pancrene*. Amstelodami 1667. 12. & alias prodiit, joculari & tragicomico stilo scriptum.

(b) J. CONR. BRUNNER *Experimenta nova circa Pancreas*, Amstelod. 1682. 8. Sape recusa, & nuper Leidæ 1722. Egregium Opus, quo primum innotuit vir, quem sua virtus ad summos honores, & raras in Medico divitias evexit. Suscipiebat refutandam sectam Sylvii, Graafique libellum. Ergo non solum succum non acidum esse, & unice viscidulum, emollientem demonstravit, sed etiam difficillima operatione pancreatis partem majorem in cane delevit, ut ostenderet, absque eo succo felicem satis digestionem ciborum superesse. In posterioribus editionibus aliqua adjecta sunt experimenta, quæ BRUNNERUS post editum Librum in *Ephemeridibus Naturæ Curiosorum* ediderat. Dec. II. ann. I.

(c) Nihil valde habet, quæ eo faciant, plura WEPFERUS de *cicut. aquat.* & aliqua J. C. PEYERI de Pancreate cogitata cum BRUNNERI Libello prodierunt.

Excarnatum, ut vocant, ductum pinxerunt KERKRINGIUS & CHESELDENIUS, non valde utili instituto.

FRID. FERD. ILMER & JAC. IGNATII FOCKY de *pancreate*. Vienn. 1692. Disp. In *anciens Mémoires* Tom. X. DUVERNEYI de succo pancreatico sunt experimenta. Galli etiam Academici in *Mémoires pour l'histoire des animaux* Ductus pancreatici fabricam observare solent, tum S. COLLINS, BLASIUS, alique. Aliqua huc facientia habet etiam J. W. PAULI in *Præf. ad L. van HORNE*.

J. M. HOFMANN de *pancreate*. Altdorf. 1706. Disp.

Ad naturam succi pancreatici experimenta veriora exstant etiam apud BOHNIUM, C. J. LANGIUM, PECHLINUM, WEPFERUM, BLASIUM aliosque. Et PECHLINUS inprimis in *metamorphosi Apollinis & Æsculapii* demonstravit, quam vitiose id ipsum experimentum institutum sit, ex quo acidum succum pancreaticum aliquando sibi obrigisse gustandum demonstratum iverat GRAAFIUS.

G. HENRICH. BEHR de *Pancreate & ejus liquore*. Argentor. 1730. 4. Disp.

CL. WINSLOWUS caput Pancreatis, sive processum, quo cum Duodeno descendit, renovavit, situm etiam figuramque & ipse, & CL. LIEUTAUD, curatius proposuerunt, & MONROUS in *Edimburgensibus*. Iconem etiam in situ vero dedit CHESELDENIUS.

VLOOT de *pancreate*. Leid. 1733. Disp.

In CL. PETSCHÉ sæpe laudata Disp. aliqua observationes de eo ductu reperiuntur.

D'ORVILLE de *fabrica & usu Pancreatis*. Leid. 1745. 4.

(d) Minime mala sunt, quæ de pancreate habet THOMAS WHARTON, qui iconem dedit ductus, & pancreatis processum inferiorem non ignoravit, & ramum ductus inferioris.

C A P U T IX.

De Omento.

DE Omenti natura pro rudiori intellectu (a) legatur primo **HIERONYMUS FABRICIUS AB AQUAPENDENTE** (b). Deinde **THOMAS BARTHOLINUS** (c), in editione Anatomies reformatæ, quæ Lugduni Batavorum apud Haakium prodiit. Sed de eodem legi debet illustris **MARCELLUS MALPIGHIUS** in Epistola de Omento & adiposis ductibus & usu (d), de qua re apud alios litigatur (e).

(a) Veteres non multa de Omento bona habuerunt, solum enim ipsis notum fuit Omentum vulgare, magnum, sive gastrocolicum, neque id satis recte. Mesocoli enim pars media ab omnibus ab ipso **GALENO** Anatomicis, nullo excepto, nisi **EUSTACHIO**, (ut ex iconibus judico), pro Omenti parte habita est, unde mira in vasis, situ pancreatis describendo, aliisque partibus, nata est confusio. **EUSTACHIUM** Omentum minus hepatico-gastricum non ignorasse ex T. X. f. 2. adparet.

THOMÆ ERASTI de pinguedinis in animalibus generatione & concretionem, Heidelberg. 1580. 4. **DOUGL.**

(b) **HIERONYMI FABRICII AB AQUAPENDENTE** de gula, ventriculo, intestinis, mesenterio & Omento L. Patav. 1618. 4. Partem Omenti dixit, quæ lobulum hepatis obvolvit, cæterum parum habet observationum.

ADAMI LUCHTENII de Adipe, Helmstad. 1607. 4. *

JOH. RIOLANUS paucis vocibus demonstravit sibi omentum melius, quam plerisque Anatomicis, notum fuisse, sinistrum nempe finem sive lienale, ut vocat, omentum, dextrum, sive intestinale, parvum omentum, quod vocat, includens parvum lobum. Sed paucae sunt voces, & Mesocolon cum Omento nihilo minus confudit quam priores. Idem in anatome pneumatica memoriam injecit extensi ad hepar usque Omenti.

CÆCILII FOLII della generazione della pinguedine, Venet. 1644. 4. Liber antiquo more scriptus est.

Icones omenti gastrocolici ex melioribus habet **CASSERIUS** & **BIDLOUS**.

(c) Apud **BARTHOLINUM** nihil valde singulare de omento reperio, qui ubique in hujusmodi rebus solet **VESALIUM** exscribere.

DOM. DE MARCHETTIS Mesocolon ab omento distinxit.

F. GLISSONIUS de ventriculo & intestinis omnino legi potest, idemque pinguedinem in cellulas deponi recte observavit.

H. EYSSON de officiis Omenti. Groning. 1658. 4.

(d) **MARCELLUS MALPIGHIUS** in Libro de Omento & adiposis ductibus cum retrade epistolarum de lingua & cerebro. Bonon. 1661. 12. * edito, subtilem potius fabricam, quam crassiorem illam inquisivit, resorptionem tamen adipis in sanguinem experimentis in animalibus factis adseruit. Ductus adiposos, qui peculiariter fecernerent veherentque adipem, ut salivales salivam, descriptos olim, in posthumis ipse dubios reddidit. Eos ductus **MORGAGNUS** & **SBARALEA** refutarunt (de oculorum & mentis vigiliis).

JAC. PANCRATI BRUNONIS & **J. M. HOFMAN.** de pinguedine Disp. Altdorf. 1674. 4.

ANT. van LEEUWENHOEK de adipis particulis Obs. Ph. Transf. n. 372. & alibi. De cellulosa vero muscolari plurimis locis Opp.

JACOB. WOLF de obesitate exsuperante. Jenæ 1683. Disp.

(e) **J. MAUR. HOFMANN** in Diss. de Omento, Altdorf. 1695. 4. Strias adiposas sive ductus Malpighii adiposos se vidisse sibi persuasit. Vesiculas etiam, quibus globuli adnati essent, & vasa adiposa ex vesiculis exeuntia, sibi visa descripsit.

J. M. VERDRIES de pinguedinis usibus & nocuementis in corpore humano. Giesl. 1702. 4.

In Mémoires de l'Académie Royale des Sciences, pauca huc pertinent. De Omenti usu cogitationes **PETITI** exstant an. 1725.

J. BENIGNI WINSLOW Omentum hepaticogastricum, post **EUSTACHIUM**, **RIOLANUM**, **SPIGELIUM**, qui leviter adumbraverant, solido constitutum describitur an. 1715. & in ejusdem expositione anatomica.

Iconem omenti minoris primus dedit **GARENGEOTUS** in *splanchnolog.*

Idem **WINSLOWUS** plerasque in corpore humano cellulositates exterius membranis circumpositas descripsit.

CHRIST. LUDOV. WUCHERER de corpulentia nimia. Jen. 1716. Disp.

A. Q. RIVINUS de Omento. Lips. 1717. 4.

H. STOKAR de Omento. Leid. 1717. 4.

DAN. WILH. TRILLER de pinguedine & succo nutritio, Hall. 1718. 4. sub **F. HOFMANNO**.

FRID. RUYSCHIUS vasa omenti pulchre depinxit, poros a rudioribus Anatomicis propositos refutavit.

PETR. JOH. BURETTE. Ergo refusa in sanguinem pinguedo non cedit in corporis nutrimentum. Parisiis 1733. 4.

JAC. FRID. HULSEBUSCH (amici olim nostri) pinguedinis corporis humani sive panniculi adiposi veterum, hodie cellulosa membrana dicta, fabrica ejusque & contenti olei historia & usus. Leid. 1728. 4. Diss.

R. WORSWYCK de pinguedine soluta & in massam sanguineam admista. Leidæ 1735. 4.

Verhandelinge van de Cellulosa 1736.

Verhandelinge van de Cellulosa est versio disputationis **HULSEBUSCHIANÆ** auctore **D. S. M. D.** edita Enchusæ. Signat se in præfatione *Descriptor sincerus*.

S. THEOD. QUELMAZ de pinguedinis sede naturali. Lips. 1738. Disp.

J. HENRICI SCHULZE & BERTRAM de pinguedine. Hall. 1739. 4. Mira theoria. Lympham per cellulas pinguedinis ad sanguinem ait redire.

LUD. WILH. LEMONNIER & la SONE. Ergo in macilentis liberior quam in obesis circulatio. Paris. 1740. Disp.

De omenti situ, & adhæsiōne ad duodenum in *Tentaminibus Edimburgensibus*. T. IV. observationes habet **AL. MONROO**.

PATYN de Omento & ejus inflammatione 12. Leid. 1740.

De adipe in fetu **A. KAAU** n. 792. & de cellulosa universa **IDEM** ubique.

Nos in programme an. 1742. edito, & cum fasciculo iconum anatomicarum. Gottingæ 1743. folio recuso, omenti cum mesocolo incommodam confusionem emendavimus, novam portionem omenti, colicam, primi descripsimus, icones duas omenti, quibus limites & origo a mesocolo exprimuntur.

CL. ROEDERER thes. anat.

CL. FRID. WILH. HENSINGIUS in Diss. de peritonæo, deinde in Progr. de Omento & colo. Gieß. 1745. 4. in primo volumine Dissertationum a nobis selectarum recuso, parietes omenti (non laminas majores) divisit experimento, quod ipsi etiam fecimus, & fecerant **WINSLOWUS & KAAUWIUS** (de perspir.) Colicam etiam portionem pro nova descripsit, nostris observationibus, ut videtur, non visis.

CL. LIEUTAUD in *Essais anatomiques* etiam legi meretur, qui Omenti originem a Colo solo, sed aliquot linearum, eodem fere mecum tempore descripsit.

D. C. SCHOBINGERUM nostrum de cellulosa tela jam laudavimus.

C A P U T X.

De Mesenterio:

Circa hanc rem non potest brevius absolvi negotium, quam legendo **HIERONYMUM FABRICIUM AB AQUAPENDENTE** (a), qui de Visceribus abdominalibus scripsit.

Legatur pariter **BARTHOLINUS** in Tractatu de *Vasis lymphaticis* (b).

Tum **CASPAR ASELIUS** (c) in Tractatu de vasis lacteis, tot editionibus evulgato. Addatur **Clar. WHARTONUS** de glandulis unitis & vagis in mesenterio (d).

Hi sunt primarii Auctores, qui tradiderunt quidquid in hac re observatum est.

(a) **VESALIUS** ob Omentum cum Mesocolo confusum hanc historiam non potuit perficere, distinxit tamen Mesenterium medium, dextrum, & sinistrum. De origine aliqua protulit **FALLOPIUS**. **EUSTACHIUS** contra **VESALIUM** in f. 2. T. XI. continuitatem Mesocoli cum Mesenterio expressit, glandulas Mesocolo adjecit. **HIER. FABRICII** Tr. de ventriculo & intestinis aliqua de mesenterio, sed nihil valde arduum habet, plicas tamen describit & modum quo intestinum coercet.

(b) **NEQUE BARTHOLINUS** historiam Mesenterii expedivit, neque

(c) **ASELIUS**, qui glandulis Mesenterii pro Pancreate descriptis hanc descriptionem mire turbavit. Eum errorem correxit in *posthumis Epistolis* **JOH. VESLINGIUS**.

(d) **TH. WHARTON** utique cellulosa telam interjectam duabus laminis Mesenterii descripsit, & glandulas, & de origine Mesenterii morbisque aliqua protulit. Nemo tamen Mesenterii historiam, multis etiam postea annis suscepit, quasi vel nimis difficile esset, vel nimis facile. Sed præterito seculo solebant fere viscera non aliter, nisi resecta de corpore situque suo ab Anatomicis considerari. Ita vero Mesenterium perit.

MENH. CAR. EULERI de Mesenterio Disputatio, Argentor. 1714. 4. Potius ad vasa lactea spectat & sanguinem.

J. B. WINSLOW multa utique in melius reformavit. Deinde **DOUGLASSIUS** in Libro de Peritonæo, quem continuo laudabimus, etiam hanc productionem Peritonæi melius exponit. Aliquam nempe primam partem Mesenterii in IV. T. Edimburgensium attigit **ALEXANDER MONROO**: & totum in L. de perspiratione **KAAU**, & in *Essais d'Anatomie* **LIEUTAUD**, & in posthumo opere **CASSEBOHM**, & in nuperis Dissertationibus **J. FANTONUS**. Plenissime tamen de Mesenterio scripsit **T. WILH. HENSING** in Dissertatione de peritonæo. Giesæ 1742. 4. proposita, in qua imprimis fusc Mesenterium & Mesocolon, & Mesocoli cæcum foramen, ex suis & **HUMMELII**, nostri olim Professoris, observationibus descripsit. Superfunt tamen aliqua de adhæsiōne laminæ superioris Mesocoli ad Duodenum, Ventriculum, Hepar & Pancreas, nondum satis explicata, quæ aliquando conabor perficere, ex puerorum imprimis, hic aptissima anatome.

C. PLEVIER de Mesenterio ejusque morbis. Leid. 1721. 4.

J. D. RUCKER de Mesenterio ejusque morbis. Leid. 1728. 4.

Peritonæi historiam huc referimus, ut valde connexam cum Mesenterio. Pauca sunt quæ habent veteres, & vulgo receptus mos duplicis laminæ demonstrat, quam parum in ejus historia acuti fuerint: qui poterant meliora dicentem **GALENUM**, unicæ membranæ, & cellulositatis externæ minime ignarum, secuti fuisse: **NICOLAUS MASSA** primus Peritonæum integrum clausumque de corpore exemit. Sed nostro ævo **JAC. DOUGLAS** in Libro de peritonæo. Londin. 1730. 4. edito & ab **E. FR. HEISTERO** Latine an. 1733. 8. verso & emendatus, ut promittitur, Latine reddito a **D. NELSON**, Leidæ 1737. 8. diligentissime omnem ambitum peritonæi persecutus est, omnesque productiones descripsit, & nullam esse externam laminam, faciemque peritonæi non internam sed externam obverti visceribus docuit. Merentur etiam legi, quæ **IDEM VIR CL.** de venæ Cavæ meatu per peritonæum, de exitu recti intestini ex ejus sacco, de situ viscerum, & ligamentis, de arteriarum membranis habet.

ERN. HENRIC. WEDEL de Peritonæo, Jen. 1696. Disp.

LAUR. THEOPH. LUTTER de Peritonæo, Erfurt. 1734. Disp.

Porro J. B. WINSLOWUS falsam de duplicitate Peritonæi theoriam rejecit (post DIONISIUM), quem lege in *Comment. Acad.* an. 1715. & in Ep. ad MORAND. p. 314. & in *expositione anatomica*. Eum virum, non satis laudatum, sequitur GARENGEOT.

Varia etiam adspersit de vapore & membranarum viscerum abdominis ortu a Peritonæo A. KAAU L. citato.

Denique CL. HENSING in excitata Dissertatione observationes suas & HUMMELIANAS de peritonæo, deque ejus cellulositate, & de ligamentis utilissime protulit.

Varia etiam, maxime de cellulosis Peritonæi processibus habent S. MORAND *de la raille du haut appareil*, CHRYSOPH. GOTTLIEB BUTTNER in *Pr. de peritonæo*. Regiom. 1738. 4. in nostro primo volumine recuso, CASSEBOHMIUS in posthumo opere, VERDIER, J. G. GUNZIUS de herniis, CHRISTOPH. SCHOBINGER in *Diss. de dignitate tela cellulosa*.

Peritonæum a vasis spermaticis non perforari, eaque sub interna ejus parte descendere SYLVIVS jam monet, in *Isag.* p. 270. tum VIDUS, FRANCO de herniis n. 6. b. PAREUS in *admin. anatom.* & ED. TYSON *Anat. of a pigmy* p. 26. Rarum vero est diverticulum naturale adesse, etsi vidi hujusmodi fabricam, & viderunt tum JOHANNES MERY *Mémoires de l'Acad.* 1701. p. 283. tum RENEAUME in *Libro de herniis* p. 138. alique.

C A P U T X I.

De Hepate.

HUjus visceris structura differt a fabrica omnium reliquorum viscerum, cum enim omnia reliqua viscera sanguinem, quem mutant, recipiant per arterias, hepar illum recipit ex venis.

Hoc ita animadversum fuit ab omnibus Anatomicis. Sed primus FRANCISCUS GLISSONIUS (a), nobilis ille Britannus & anatomiae Professor, structuram

(a) Scriptores qui de hepate egerunt, in duas classes dividemus quorum priores de hepatis anatome, reliqui de physiologia ejus & bilis inprimis historia scripserunt. HEROPHILUM egregie de hepate scripsisse, & apud ORIBASIVM legimus, & aliqua ibi conservata offendimus, quæ multum boni promittunt. VESALIUS figuras vesiculæ, adhæSIONEM hepatis ad septum, & ligamentum finistrum habet, & duos lobos in homine vidit tum J. SYLVIVS EUSTACHIUS aliquas bonas icones hujus visceris dedit, meliores certe, quam etiam apud recentiores invenias, T. X. f. 2. T. XI. f. 3. 4. cum iconibus eminentiarum, portarum, vasorum omnis generis, & ligamentorum, & cellulosa ad septum transversum adhæSIONE.

G. FALLOPIUS de itinere bilis veriolem sententiam docuit, bilem nempe continuo ab hepate ad intestinum feri, nisi obstaculum experiatur, tunc vero in vesiculam regurgitare. Eum secutus est SALOMON ALBERTUS in *Oratione* edita, VVittemb. 1590. 8. & eandem sententiam defendit.

JULIVS FASOLINUS in *Libro de Poris Choledochi & vesicula fellea pro Galeno adversus neotericos*, Neap. 1577. 8. (DOUGL.) sæpe recuso & cum SEVERINO de vena saluat. L. Francof. an. 1668. 4. theoriam quidem non optimam habet, cum vasa hepaticocystica minuta primus excogitaverit, quæ pro melioris bilis itinere in vesiculam, nata esse credit, dum deterior bilis per porum ab hepate ad duodenum fluere. Sed utilis tamen est icon vesiculæ, qua sinus cervicis bene exprimitur, & portiones ductuum, & valvulæ in ductu cystico, & angulus verior cystici ductus cum hepatico.

NIC. HABICOT in L. IV. ligamenta hepatis habet, dextrum & finistrum.

C. HOFMAN de hepate, Altdorf. 1617. 4. *

J. HIE-

ram hepatis descripsit nitide in nobilissimo illo & incomparabili Tractatu de Hepate, cui præmittuntur quædam generalia ad anatomiam spectantia, & ad finem adjungitur Tractatus de Vasis lymphaticis. Plurima itaque continet, & etiam prodest illis, qui publice rebus anatomicis operam dant. Editio optima est Londini anno 1654. in 8. sed & Amstelodami fuit impressus an. 1656. in 12. quæ editio etiam valde adcurata est. Qui hoc scriptum evolvit (nam melior Anatomicus non scripsit) nihil ratiocinii inveniet, desinit enim GLISSONII sermo, ubi anatomia desinit, nec ultra pergit. Ex GLISSONIO intelligetur hepatis in majoribus partibus structura.

Deinde adjungatur MALPIGHIUS de Hepate (a). Clarissimus iste Auctor, cum nesciret, quid tandem inter arterias & venas, & inter ductus biliosos esset, detexit

J. HIERONYMI BRONZER de calido innato & principatu jecoris, Patav. 1628. 4. sanguinem in hepate non parari, cum hepar in piscibus non rubeat, sagax vidit, neque tamen ausus est GALENUM refutare. Spirituum tres classes antiquis receptas in unam conjungit.

ANDRIANO SPIGELIO lobulus solet adscribi, qui se in curvaturam ventriculi immitit. Sed dudum is quidem lobus notus erat. Tres valvulas in cervice vesiculæ descripsit.

J. RIOLANUS, præter alia, fibras musculares vesiculæ negavit, quem multi sequuntur recentiorum.

GODOFR. MOEBII de bilis natura & usu utilissimo, Jen. 1644. disputatio. EJ. de usu hepatis & bilis, Jen. 1653. 4.

WERN. ROLFINKII de hepate Diss. Jen. 1653. 4.

J. WALÆUS in Epistola II. de motu sanguinis celebrem illam Glissonii capsulam primus indicavit.

FRANCISCUS GLISSONIUS anatome hepatis, Londini 1654. 8. Hag. 1681. 12. sæpe recusatus, nihil quidem pleni habet, cum hepar humanum raro, & ex corpore resectum unice viderit. Diligenter tamen aliqua prosecutus est, venam portarum, cum ramis, & capsula, sinuque, vasa, bilis cum vera de motu bilis theoria, tum hepaticocystica demum vascula, hæc ex animalibus. Multa subjecit de vasis lymphaticis, & de nutritione atque secretionem quæ ex nervis fiat.

FRANC. SYLVII Disp. de bilis & hepatis usu, Leidæ 1660. 4. inter bona aliqua paradoxam habet opinionem, bilem omnem in vesicula parari, inde in hepar venire, &c. a BACKIO receptam (Libro de corde)

In Phil. Transf. n. 178. BROWN de glandulis in hepate morbofo visis.

N. 307. de MARCHETTIS Obs. de poris vesiculæ felleæ bilem sudantibus, dum ab hepate separatur.

N. 449. Ductus hepatico-cistici ex corpore morbofo describuntur.

J. J. WEPFERUS in nuperis editionibus Libri de apoplexia an. 1669. se glandulas hepatis vidisse gravis etiam de se ipso testis, laudat. In Libro de cicuta bene descripsit monticulum, in quo ductus choledochus inseritur.

LAUR. STRAUSS de hepate, Gieff. 1665. Disp.

THEOD. KERLRING in spicilegio habet vasa hepatis ad portas pertinentia, carne liberata, (ut olim SPIGELIUS) obs. 96.

OL. BORRICH de vesicula fellea observ. habet T. II. Actorum Hafniensium.

J. PECQUETUS & C. PERRAULT in JOURN. des Savans 1668. & 1680. & in Essais de Physique T. III. ductum ab hepate ortum, & in vesiculam insertum, & in ductum hepaticum descripserunt, nempe cysthepaticum, qualem etiam in suo collegio anatomico Amstelodamenses proponunt.

PARISINI solent in suis animalium Dissectionibus fusc de vasis vesiculæ felleæ bilaris agere.

(a) M. MALPIGHIUS in Libro de hepate, qui exstat in collectione de structura viscerum, Bonon. 1666. 4. * non solum glandulosam hepatis fabricam proponit, quam utiq; sibi vindicat, sed alia utilia habet experimenta, quibus pugnat contra F. SYLVIIUM. Nempe

xit esse acinos glandulosos. Verum hoc opusculum etiam in Operibus posthumis impressum est, & ibi plura contra SYLVIIUM habentur; nam eo tempore, quo MALPIGHIUS de Hepate scribebat, natæ sunt plures objectiones, quibus per egregia experimenta anatomica respondet (a).

De-
pe MALPIGHIUS, etiam quando vesicula destructa est, bilem generari ostendit. Folliculos etiam simplices felleæ vesiculæ describit. Huc etiam in ejus Libro *de liene*, Tract. *de glandulis conglobatis*, utilia aliqua pertinent.

J. BOHN. *de hepatis & lienis officio*, Lips. 1667. 4.

A. Q. RIVINI *de bile disputatio*, Lips. 1678. 4.

(a) JOH. BOHNIUS in ACT. ERUD. 1682. de vasis bilariis, ductibus animalium hepaticocysticis duorum generum, & itinere bilis observationes suas habet. In Tractatu *de lethaliitate vulnerum* experimenta habet, quibus constat lethale fieri vulnus, si bilis, non ligato cystico, ex hepate adfluens in abdomen effusa fuerit.

FRANCISCI SPOLETI *dissertationes dua*. I. *de momento, quo gravia deorsum nituntur*; II. *de secretionem bilis in hepate*, Venet. 1686. 4. * Theoriam secretionis proposuisse video, qua circulationis celeritas in extremis vasis major ponitur.

In JOURN. DES SAVANS, 1688. glandulæ vesiculæ felleæ & ductuum biliariorum propriæ describuntur.

HERMAN VAN BEECK *de folliculo fellis* Diss. Ultraj. 1087.

MAURICIUS VAN REVERHORST *de motu bilis circulari* Diss. Leid. Leid. 1692. 4. recusa cum NUCKII *adenographia*, an. 1696. & alias. Hac egregia disputat. continentur hepatis historia, vasa lymphatica, mensura secretæ bilis per experimenta sumta calculorum felleorum observationes.

LAUR. BELLINUS *de motu bilis*, Pistojae 1695. * & in opusculis, Leidæ 1696. editis, motum fellis ab hepate ad vesiculam dirigi facile ostendit.

JOH. FRID. ORTLOB *Exercitium anatomico physiologicum, integrum χοληποιήσεως negotium examinans*, Lips. 1691. 4.

JOH. IOQUET *de de arteria hepatica*, Leid. 1693. 4. & in *dispp. mee collect.* T. VII. Eximia disputatio. Negat arteriam hepaticam parenchyma adire.

PHIL. VERHEYEN ductus in vesiculam insertos & alios inter vesiculam, & ductus hepaticos medios descripsit, ex bove, & experimenta contra SYLVIIUM in animalibus instituit.

In *Mémoires de l'Acad. Royale des Sciences* huc spectant.

LITTRE *de glandulis hepatis* 1701.

Vesiculæ in homine absentia 1701. 1705.

Vasa lymphatica in superficie hepatis 1721.

MAIOET *de glandulis hepatis*. 1727.

FERREIN *de fabrica hepatis & ductibus bilariis* 1733.

Experimenta aliqua pro ductibus hepaticocysticis attulit C. J. LANG, alia TACCONUS, alia GARENGEOTUS in *Splanchnologia*.

W. COWPERUS negat ductus hepaticocysticos in homine reperiri, aut laceratam vesiculam iterum repleri. Capsulam GLISSONII primus, ni fallor, demonstravit parvi momenti esse.

JAC. KEIL in Libro *de secr. & anim.* non solum ratiocinio, sed experimento etiam adgressus est definire quantitatem secretæ bilis.

J. B. MORGAGNUS in *Advers. Anat.* III. & in *Epistolis Anatomicis duabus*, Leidæ an. 1728. editis plurima notatu digna de hepatis fossis, ligamentis, situ, partibus, vesicula fellis, calculis fellis aliisque huc spectantibus protulit. Ductus hepaticocysticos refutat.

C. BIERWIRTH *de hepatis structura & morbis*, Leidæ 1706. 4. * cum icone glandularum hepatis cocti ex sue & rami venæ Portarum.

BURCHART *Diss. de secretionem bilis*, Kiel 1709. 4. aliqua ad analysin bilis, tum in univ. ad secretionem habet.

A. HELVETIUS *de structura hepatis*, Leidæ 1711. 4.

JOSEPHI ZAMBECCARI in vivis animalibus extirpatæ vesiculæ experimenta instituit, in DIONYSII SANCASSANI *dilucidationibus*, & alibi edita.

JAC. DRAAKE theoriam de utilitate bilis in promovendis mensibus, satis inutilem proposuit.

J. G.

Denique legantur Clarissimi FRIDERICI RUYSCHII (a) observationes anatomicae.

J. G. a BERGEN de bile, icteri causa ficta, Francof. ad Viadr. 1710. Diss. bilem negat colorem ictericum producere, &c.

POLY. GOTTL. SCHACHER in Diss. de admin. anat. Leidæ 1710. ductus hepaticysticos experimento restituere conatur. EJUSD. Progr. 1722. de vasorum biliariorum existentia & distributione agit.

CHRIST. FRAWN. Diss. de vena Porta, Leidæ 1715. 4. agit potius de visceribus cum vena Portarum conjunctis. Glandulas Duodeni describit.

BERNARD de JUSSIEU de naturali secretione bilis, Monspel. 1729. 12. Est opus D. FIZES.

(a) FRID. RUYSCHIUS in universum quidem fabricam hepatis vasculosam adsumit, glandulosam evertit per injectiones, quæ ex vena portarum in ductus hepaticos penetrant. Deinde multa bona de collo vesiculæ felleæ curvo, vasculoso, glandulis vesiculæ, vasisque ductibusque, quos non admittit, aliisque huc pertinentibus particulis protulit.

J. DOM. SANTORINI de ductus choledochi reticulo, de monticulo, in quo inseritur, observationes habet.

H. RIED de preparatione bilis in hepate, Leidæ 1722. 4.

Cum nuperioribus edition. operis JER. WAINWRIGHT de rebus non naturalibus exstat conjuncta descriptio sive treatise on the liver, Lond. 1737. 8. Nihil autem valde a reliquis remoti habet.

J. B. BIANCHI historia hepatica, Turin. 1710. 8. 1716. 4. PL. Genev. an. 1725. 4. 2. vol. multo auctius recusa. Minor pars anatomica est. In ea historia invenio varia, quæ minime placent, ductus cysthepaticos, hepaticysticos, icones inversas hepatis, icones improbables cisternæ chyliferæ, nervorum, cavillos meros & audaciam miram in carpendis scriptoribus, observationem propriam, utilemque, vix ullam.

A. VATER novum diverticulum bilis, VVittemb. 1710. observationem propriam, qua ductum choledochum in ipso intestino in rete cum pancrearico conjunctum describit, sed modeste, ut ex uno cadavere.

JOH. FANTONIUS in Diss. anatomicis imprimis renovatis, multa habet & ex homine & ex animalibus. Ductus hepaticysticos admitti, & ductus ex cystide in choledochum patentes fibrasque vesiculæ musculares, pro glandulis hepatis pugnat, ductus choledochi motum peristalticum experimento confirmat, capsulam Glissonii refutat, poros muciferos vesiculæ describit.

CL. LOQUETI de arteria hepatica Diss. sæpe laudari vidi, ipse non possideo, neque annum novi locumve quo defensa sit.

ANT. FIZES de naturali secretione bilis in genere, Monspel. 1719. 8. & in collectione opusculorum scripsit.

JOSEPHUS POZZI in Commentariolo Epistolico pro glandulis hepatis, & Glissonianæ capsulæ carneis fibris, pugnat.

F. HOFMAN de morbis hepatis ex Anatome deducendis, Hall. 1726. Disp.

P. CHIRAC vasa lymphatica hepatis picta habuisse a LA FONT, inde ea pervenisse ad CL. la PEYRONIE auctor est MONTAGNAT Lettre a M. Bertin p. 71.

FRANC. JOH. HUNAULD an bilis preparatio in Omento, Paris. 1731. 4. PL.

NIC. den OTTER de secretione bilis cystica, Leidæ 1731. 4.

ANDR. OTTOM. GOELICKE singularia hepatis humani, Diss. Francof. ad. Oder. 1731.

GEORGII GRIEVE de secretione bilis, Edimb. 1732. Disp. *

J. B. WINSLOW. & hic & ubique legere oportet. Fabricam etiam subtilem, & acinos hepatis descripsit in Acad. Reg. Scient.

A. F. WALTHER in Progr. de vena Porta I. & II. Lips. 1739. capsulam Glissonii evertit.

VISSCHER Diss. de cholepoiesi, Leid. 1735. 4. experimentum habet ALBINI, quo venæ portarum cum poro bilario demonstratur continuatio, nullam vero esse ei poro cum arteria hepatica conjunctionem evincitur.

P. VINK de hepate, Leidæ 1735. 4.

G. BRITTEN de hepatis fabrica & actione & bilis natura.

J. GEORG. SEGER de ortu & progressu bilis cystica, Leidæ 1739. 4. Per experimenta processit, in Libello, quem alibi laudavi, & inserui vol. III. Disp. select.

tomicae, quibus, conatur demonstrare, illud omne, quod MALPIGHIUS acinos vocat,

RAIMUND. JAC. FINOT *an bilis circulatio multiplex*, Paris. 1741. Disp. PL.

CL. LIEUTAUD multa laude digna habet de lacunis felleae vesiculae, capsulae Glissonianae vanitate, cellulosa vesiculae, vena cystica ad cavam eunte, (hac equidem a nostris observationibus remota).

ANDR. WESTPHAL *existentia ductuum hepaticocysticorum*, Gryphisvald 1742. 4. Descriptionem habet tunicarum vesiculae. Ductus hepaticysticos ex homine describit. Sed novi doctos viros, qui huic observationi refragantur.

CAJETANUS TACONUS in *observ. de raris hepatis adfectionibus*, Bonon. 1740. 8. quae etiam in *Memoriarum* Luccens. T. II, exstant, & copiam bilis, quae per vulnus effluerat, intra datum tempus determinat, & multa profert ad declarandum iter bilis.

D. MOSEDER *de vesicula fellea*, Argentor. 1742. 4.

CHESELDENUS in anatome bonae hepatis, vesiculae, curvaeque cervicis icones dedit.

D. GIERING in *selector. Francofurt.* T. III. habet experimenta aliqua in cadavere humano instituta, quae ad bilis iter pertinent.

F. G. MOERING E. N. C. vol. V. obs. 44. pingit systema biliosum Lutrae.

J. FR. CASSEBOHM in posthumo opere *de methodo secandi capsulam GLISSONII* accurate describit, cellulosa vesiculae felleae, ligamenta & externam cellulositatem hepatis.

J. JUNKER & DAV. LORENZ. *singularia ad vesicam felleam ejusque bilem spectantia*, Hall. 1745. 4.

D. CHRISTOPH. SCHOBINGER *de ortu & motu bilis cystica*, Gotting. 1747. 4.

Ad ligamenta in *syndesmologia* JOSIAE WEITBRECHT observationes exstant.

Hepatis icones possunt omnino utiles esse, quas in *Tractatu de differ. nati & non nati* habet ILL. TREWIUS, tum de valvulis vesiculae felleae in *Disp. de Chylo fetus*, a L. HEISTERO repetitae.

BRYAN ROBINSON in *Libro of food and discharges*, Lond. 1747. 8. comparavit hepata variorum animalium, & invenit eo majora esse, quo animal debilius lentiusque, & vicissim.

ABRAHAM FRANKEN *de hepatis historia anatomica*, Leidæ 1748. Habet observationes aliquas, & ALBINI experimentum de acinis.

CLAUD. PERSON *Disp. Ergo vesicula fellea per ductum cysticum bilis mittitur*, Paris. 1747. Valvulam in ostio ductus choledochi, & lacunas vesiculae felleae habet, negat ductus hepaticysticos, &c.

DOMINICI GUSMANI GALEACII *de cystidis felleae ductibus obs. in Comm. Bonon.* T. II. P. II. Vasa statuit in vesiculam ramos dantia, peculiaria, non penetrantia in cavitatem.

JUST. GOTTFR. GUNZ *observationes circa hepar factas*, Lips. 1748. 4. nondum legi.

J. G. GUNZII l. c. nunc legi & video primarium scopum esse describere venas, quarum trunci in hepate & vena portarum, rami in ligamenti sunt: tum de vasis lymphaticis hepatis, capsula Glissonii, exhalantibus venis a portarum trunco agit, &c.

AMBROSII BERTRANDI *dissertationes anatomicae duae de hepate & oculo* multa peculiaria continent, editæ Turini 1748. 4. Varia pro BIANCHO & ductibus cystico-hepaticis profert, rejicit glandulas hepatis, describit ligamenta, vasa, &c.

Nunc ad alteram partem, sive de bilis functionibus, & usu transitus. A GALENO sua habet NEMESIUS, in quibus aliqui rudimenta SYLVIANÆ hypotheseos quæsierunt. Sed mihi nihil quidquam a GALENO dissentire videtur. Post eum vix quidquam accessit novi, ad J. B. HELMONTIUM usque, qui plurimis Libellis, & imprimis quibus titulus est *sexupl. digestio, duumviratus, jus duumviratus*, bilem ab opprobrioso excrementi nomine liberavit, eamque alcalescere & aciditatem ciborum frangere satis certe vere demonstravit, ut tamen nimium inventum suum urgeret.

Inde FR. SYLVIVS de le BOE in *Diff. de bile & hepatis usu*, Leidæ 1660. 4. & alibi, & ejus discipulus R. de GRAAF in *Lib. de succo pancreatico*, bilem fecerunt alcalicam, eamque cum acido succo pancreatico configere in intestinis, ita chylum separare a faecibus, iterumque in corde dextro cum acido chylo effervescente, sic ignem ali vitale, multis obsequentibus docuerunt. Pro ea sententia scriptus est etiam Liber de veteri medicina FLO-

REN-

vocat, tantum esse structuram vasorum. Verum hac occasione dedit egregia de hepate experimenta.

RENTII SCHUUL, quem aliqui F. SYLVIO ipsi tribuunt, a se ipso vero multa sumfisse queritur WILHELMUS TEN RHYNE de veteri medic. p. 87. Leidæ 1664. & 1670. editus 12. quo partim in ipso HIPPOCRATE quærentur radices hypotheseos, partim experimento demonstrari suscipitur, vere omnino effervescentiam in duodeno cum spuma & calore fieri. Non ineptus cæterum Libellus est, quo ostenditur bilem non esse excrementum, & LUDOVICI LE VASSEUR cavilli nimis mordaces repelluntur. Ea etiam opinio fuit BAGLIVO, HARDERO, DIEMERBROEKIO, BATLEO, JOHANNI MAYOW, SWAMMERDAMIO. Pro SYLVIO etiam & contra CASSIUM extat amici ad amicum epistola scripta 1668. Amstelodami edita.

Contra hanc theoriam vero CAROLUS DRELINCOURTIUS incubuit, ejusque tota secta discipulorum. Huc ergo pertinet LUD. LE VASSEUR de triumviratu Sylvii, Paris. 1668. 12. ipsius nempe DRELINCOURTII opus, quem ex Gracificatione & amarore dictionis facile adgnoscas, nimis cavillatorium utique, neque ex propriis natum experimentis. ANDR. CASSII de triumviratu intestinorum, Groning. 1668. 4. Neomag. 1669. 12. qui etiam analysin bilis dedit. LUDOVICI LE VASSEUR SYLVIIUS confutatus, Paris. 1673. 8. priori similis; & inprimis denique JANI LEONICENI Metamorphosis Apollinis & Æsculapii, Leidæ 1673. 8. qua SYLVII fama & eruditio mire elevatur, GRAAFIUS vero acriter exagitur, ejusque experimenta pro aciditate pancreatici ductus proposita in dubium revocantur. Sed etiam ANT. DEUSING Sylviam caduam cadentem, Groning. 1664. 12. & jacentem 1665. 12. in Sylviam Echo, Groning. 1663. 12. & disquisitionem de calido innato antisylviana, Groning. 1663. 12. & disq. antisylvianam de motu cordis & arteriarum 1663. 12. & Disp. de chyli a facibus alvinis secretionem & succi pancreatici natura & usu, Groning. 1665. 4. (MERCLIN.) scripsit, & ubique Sylvium, sed, ut solebat, non ex ipsa natura, repetitis experimentis refutat.

Longe verius JOHANNES BOHN de duumviratu hypochondriorum, Lips. 1689. 4. & in circulo, & FRIDERICUS HOFMANN in Libro de acidi & visceri pro causis morborum insufficiencia, Francof. 1689. Sectam SYLVII expugnarunt; & VERHEYENIUS, & PECHLINUS, qui experimentis SYLVIIUM refutant, & BRUNNERUS de pancr. & ipse denique BOERHAAVIUS.

J. GALARATI de alcali & acido in GIORN. di PARMA.

In Phil. Transact. huc varia pertinent, ut:

ALEX. STUART obs. de utilitate summa bilis n. 414. 427.

Alia etiam quæstio acriter agitata fuit inter antiquos, an nempe venæ ex hepate, an ex corde, nascantur. Huc.

CHRISTOPHORI GUARINONII de principio venarum, Francof. 1601. 4. LIND.

BALTH. GITTLER de venarum & arteriarum vero & genuino exortu, Lips. 1605.*

PETRI GUIFFART cor vindicatum huc etiam pertinet, & BRONZERI jam citatus Liber & aliorum, quos ob sterilitatem quæstionis nunc non recenseo. Nempe pro corde ARISTOTELES, C. HOFMANNUS Libro de principatu partium, Paris. 1647. 4. CÆSAR CREMONINUS, & alii pugnarunt, pro hepate GALENUS, & tota fere Schola.

Sed alia paulo prius controversia physiologica de hepatis utilitate orta est. Contra Antiquos, inventis lacteis thoracicis demonstrabat GLISSONIUS & THOMAS BARTHOLINUS, neque chylum ad hepar venire, neque ibi adeo in sanguinem coqui.

Eo pertinent T. BARTHOLINI hepatis exsequia quæ Hafniæ 1653. 4. cum vasis lymphaticis nuper in animantibus inventis prodierunt; Liber de hepate defuncto, Hafn. 1661. 8. quo BILSII experimentum, ad chyli in sanguine venæ portarum præsentiam demonstrandam susceptum, & DEUSINGIUM refutat, hepatis exauctorati desperata causa, Hafn. 1666. 8. Eo contra DEUSINGIUM aliosque chylum ad hepar venire negatur.

Huc etiam pertinet NIC. STENONIS responsio ad vindicias hepatis rediuvivi contra DEUSINGIUM, Leidæ 1662. 12. (MERCL.) Triumphus cordis dictus ob victoriam ex clade hepatis GEORGII SEGERI. Hafn. 1654. 4. adsentatoris BARTHOLINI, & PETRI GUIFFART cor vindicatum, Rothomag. 1672. 4.

Contra

Contra pro veteribus non solus *BILSIUS* pugnabat, de quo viro alias dicitur, sed *SWAMMERDAMIUS* proprio experimento chylum in venas mesentericas resumere ostendebat. Denique *ANTONIUS DEUSINGIUS* adjutus Bilsonianis experimentis scripsit *vindicias hepatis rediuvivi*, quæ exstant in P. III. *Exercitationum Physico-anatomicarum*, Groningæ an. 1660. 12. editarum. Porro ejusdem Auctoris est *Appendix ad easdem*, Groningæ 1661. 12. & *supplementum ad easdem* 1662. 12. Resurrectio hepatis adserta, ibid. 1662. 12. Ingenium omnes referunt *DEUSINGII*.

EJUSDEM sensus est *ECCARDI LEICHNERI* *Diff. de rediuviva hepatis sanguificatione cum praternaturali ejus latione*, Erfurt. 1689. 4. * Nunc, postquam satis confirmatum est, & chyli iter, & sanguinis, nemo contra *BARTHOLINUM* sentit. Quid autem contineatur in *HENRICI HENRICI* *Disp. cui titulus est, hepar ex tumulo ad officium sanguificationis renovatum*, Hall. 1713. non dixerim quam non vidi.

AD Bilis historiam porro

J. CORN. BRODTBECK *χολογύμια*, sive gustamen physico medicum bilis, Tubing. 1676. 4. *

JOH. GEORG. GREULICH *Cholologia*, Francof. 1683. 8. Inanis.

AUG. QUIRIN. RIVINI *de bile*, Lips. 1679. 4.

JOH. BROEN *de duplici bile veterum*, Leidæ 1685. 12. Secretiones per cribrum explicat, fermentationem vero bilis cum ductu pancreatico negat, cæterum satis inutilis ratiocinator, & priorum parvus experimentorum. Saponem in morbis scopo resolvendi commendat.

G. WOLFG. WEDEL *de bile ejusque morbis*, Jen. 1689. 4.

HENR. CHRISTOPH. ALBERTI *de bilis natura & usu medico*, Erfurt. 1691. 4.

JAC. PANCR. BRUNONIS *duæ de bile Disputationes*. Altdorf. 1694. 1695.

FRID. HOFMANN *Disp. de bile medicina & veneno corporis*, Hall. 1704.

DEMOCRITUS CHRISTIANUS in *Libro Vita animalis morbus & medicina*, Lips. 1711. 1730. 8. proponit frigus & calorem febrium intermittentium fieri a spasmō constringente orificia ductuum bilarii & pancreatici, qui ipse alterne remittat, ut modo pancreaticus acidus succus erumpat, qui frigus facit, modo bilis quæ calorem, acidumque eum succum utique cum bile alcalina effervescente contendit.

J. WOODWARD (teste *J. BAYFIELD* *letter to Woodward*, Lond. 1719. 8.) bilem habuerat pro causa omnium fere motuum in machina humana, etiam ipsius motus cordis.

C. STEPH. SCHEFFEL *de lithiasi fellea & lapide Maluccensi*, Leid. 1721. 4.

A. E. BUCHNER *de naturali bilis constitutione & usu*, Hall. 1726. 4.

F. JOSEPH HUNALD, *Ergo bilis preparatio in omento* 1731. 4.

LUD. M. POUSSE, *Ergo ab exquisita bilis secretionē perfectior digestio* 1732. 4.

Ad analysin bilis pertinent *CAR. DRELINCOURT* in *JANI LEONICENI* Libello; *GHIA-RESCHI* in *Diario Parmensi* 1687.; *BRUNO* *de bile*, Altdorf. 1694. 4.; *A. CASSIUS* L. c.; *JOH. BOHN* in *circulo*; *ALOYSIUS della FABBRÀ* *de aqua Nucerinā*; *ACADEMICI GAL-ILII* apud *DUHAMEL*, & *HOMBERG*, 1709.; *MAETSIUS* in *collectaneis chymicis Leidenensibus*; *A. VALISNERIUS* *Galer. di Min. T. VI.* & *L. TESTI* ibid.; *PHIL. VERHEYEN*; *SCHAPER* *de corpusculis massa sanguinea*; *PETIT* in *Lettres à un Médecin* II.; *PHIL. JAC. HARTMANN* *de bile*, Regiomont. 1700. & in *collect. T. III.*; *RAIMUNDUS VIEUSSSENS* in *epist. ad Lipsienses* 1698. 4. & *Phil. Trans.* n. 241. & in *Traité des liqueurs*, Toulouse 1715. 4.; *GEORGIUS BAGLIVUS*; *BARCHUSEN* post *Phys. Acroamata* *Exper. VI.*; *HENNIN-GER* *de bile*, Argentor. 1705. 4.; *FRID. HOFMANN* in *medic. systematica*; *DEIDIER* & *MONTRESSE* in *expériences sur la bile des pestiferés*, Zurich. 1722. 4.; *BOERHAAVIUS* in *Chemia*; *R. MEAD* *of poisons*; *CASPAR NEUMANN* in *prælectionibus posthumis*; *CAJE-TANUS TACCONUS* L. c. *Adde commerc. Noric.* 1743. *Diff. DAVIDS* *de calculis cysticis & hepaticis*, Leidæ 1734. 4.; *HIER. DAV. GAUBII* *experimenta* in *Diff. NARCISSI* *de gener. chyli*, Leidæ 1742. & in *Collect. Dispp. sel. T. I.* & in *Disp. VISCHERI* *de cholepoiesi*, Leidæ 1735. 4. & in *J. G. H. Comment. ad Boerh. instit.* T. III.; *MOSEDER* L. c. *STROHLEIN* *de calculis felleis*, Jen. 1742. 4. aliosque.

C A P U T XII.

De Virorum Organis genitalibus.

DE vasis genitalibus horumque origine prima circa lumbos, & exitu ultimo, qui in viris in urethram, in feminis in vaginam est, & de eorum vasorum indole, distributione, decursu, effectu, optime scripserunt sequentes Auctores. Primo (a) legendus est REGNERUS de GRAAF (b), Delfensis, SYLVII discipulus dexter-
M m m terri-

(a) De organis virorum genitalibus non negligendi sunt veteres, nam & apud HIPPOCRATEM aliquod vesicularum seminalium vestigium reperitur, & apud RUFUM; GALENI de semine L. II. & de spermate Liber exstat apocryphus. Sed iste partes masculas parum declaravit. VESALIUS, uti notum est, ligamentum penis suspensorium dixit, tactum etiam ACTILLINO; neque vesiculas seminales ignoravit.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS præter præstantissimas vasorum icones, quas alibi laudavimus, testis etiam virilis conspectus varios, musculos & inter azygon cutaneum perinæi, vesiculas etiam seminales caput gallinaginis, ostia duo seminalia in urethra, corpus cavernosum urethræ, primus figuris expressit.

GABRIEL FALLOPIUS vesiculas seminales, hæcenus parum integre notas, restituit, & uberius descripsit.

PHILIPPUM INGRASSIAM primum vesiculas seminales descripsisse auctor est LEONARDUS a CAPOA Raggionam. II. p. 82. sed, ubinam descriperit, ignoro.

J. CÆSAR ARANTIUS in observationibus de fabrica ductuum excretoriorum vesicularum seminalium, testium, corpore cavernoso urethræ, &c. legi potest.

JAC. SCHEGK de plastica seminis facultate, Argent. 1580. 8. DOUGL.*

PETRI de PERAMATO de semine Liber de generatione 4. Sanlucar de Berrameda 1576. 1590. 1596. fol. DOUGL.*

JULIUS CASSERIUS pennatam fabricam septi penis, & bulbum urethræ ad naturam depinxit.

CHRISTOPHORI GUARINONI de natura humani seminis L. IV. Francof. 1601. 4. de generatione viventium, ibid. eodem anno.*

JOHANNES RIOLANUS habet fibrosam testium compagem, ligamentum inter ossa pubis (aut ischii ut vocat).

N. HABICOT in Lect. V. Auctor est erroneæ opinionis unicum pro duabus vesiculis esse ductum excretorium.

FRANCISCI SPINÆI de hominis procreatione, Maceratæ 1622. 4. * DOUGL.

J. HIERONYMI BRONZER de principio effectivo semini insito, Ven. 1627. 4.

ÆMILII PARISANI de seminis a toto proventu in Nobil. Exerc. L. XII. Venet. 1623. & in pare & saniori judicio de seminis a toto proventu, ibid. 1633., &c. Vide inter organa muliebria.

CÆSARIS CREMONINI de calido innato & semine, Leid. 1634. 12. semen feminas non habere contra GALENIUM pro ARISTOTELE defendit.

N. HIGHMOR corpus in teste, quod ipsius solet nomini inscribi, detexit, non tamen ausus est cavum pronunciare.

ANTONII DEUSING de partibus corporis humani conservationi speciei inservientium, Groning. 1651. 4. Genesis microcosmi, ibid. 1653. 12., &c.

J. C. ZEISOLD de seminis natura, Jen. 1649. 8. Animatum esse negat, Philosophus.

JOH. NARDII noctes geniales, Bonon. 1656. 4. secunda est de prolifica genitura facultate. Animam in semine latitantem refutat, neque inesse vult, nisi motum a generante commissum, calori innato.

(b) REGNER de GRAAF de partibus genitalibus virorum, Leidæ 1668. 8. Partes utique unice adhibuit de corpore exactas, inde ea, quæ ab integritate pendent, ibi non quæras. Sed multa uti-

térrimus, qui promiserat plurimum emolumenti rebus anatomicis; nisi fatali peste, tam subito consumptus (a), nobis abretus fuisset. Omnia ejus opera edita sunt Latine Lugduni Batavorum in 8. an. 1677. (b) cum figuris elegantissimis. Continetur ea collectione Liber de virorum organis, & alter de mulierum partibus generationi servientibus. Is Tractatus Belgice etiam in 8. prostat, cujus editionis figuræ præferuntur Latinis. Multa GRAAFIUS detexit primus, & plura obscura explanavit.

Hoc

ta utilissima aut primus habet, aut ornavit pulchrius. Testis certe fabricam, vascula excretoria, epididymidis ortum, melius quam ullus alius Auctor expressit, sinusque mucosos urethræ, etsi breviter tetigit, minime tamen ignoravit.

(a) Ex ira, ob jurgium minime decorum cum SWAMMERDAMIO obiisse juvenem an. 1673. lego. Nam SWAMMERDAMIUS in iis ipsis partibus genitalibus solita cum industria occupabatur, in quibus primus veram causam erectionis positam in effuso sanguine per experimentum invenit in Prodrema suo.

(b) Etiam apud VVetstenium exstant 1705. 8. Icones primæ editionis 1668. utique nitidiores sunt.

J. THEOD. SCHENK de partibus generationi inservientibus masculis, Jen. 1662. 4.

H. MEIBOM in Diss. de motu vasorum, 1668. testes solis fibris, non glandulis fieri, recte docuit, & corpus in medio cæcum habere.

In Phil. Transf. testium fabricam exhibet J. CLARKE n. 35. VADLIUS DATHRIUS BONCLARUS sive CLAUDIUS UBERIUS in Phil. Transf. n. 42. dedit iconem testis aprugni, in quo corpus Highmori pro vero canali describitur, a radicibus propriis habente semen, reddente in epididymidem. De testium filamentis etiam agit D. KING n. 52.

Continuatio vasorum testis cum vasculis epididymidis in vipera n. 144.

GARDENI theoria vermiculorum, quæ vulgo LEEUWENHOEKIANA dicitur, habetur n. 191.

WALLER vascula epididymidis ratti evidentissima, & vesiculas seminales & glandulas ad extremum penem n. 196.

MORLAND n. 283. de secretionem seminis.

A. de MARCHETTIS experimentum in cane profert, quo demonstrat epididymidem verum semen secundum generare n. 307.

C. MORTIMER pro anastomosi arteriarum spermaticarum cum venis dixit Phil. Transf. n. 415.

D. de SUPERVILLE de animalculis seminis n. 466.

Urethræ diversæ diametri LE CAT n. 460.

J. JAC. WEPFER in E. N. C. Dec. I. ann. 3. obs. 167. ex ariete aliisque animalibus descriptionem harum partium dedit, in qua bulbum urethræ, glandulasque in ejus membrana habet.

R. J. CAMERARIUS memorabile experimentum habet de vasis lymphaticis per inflatas vesiculas seminales turgentibus E. N. C. Dec. II. ann. I.

HIERONYMI BARBATI Liber de formatione fetus prodiit Patav, 1676. 4. Vitiosus est loquax, habet tamen proprias opiniones solum serum in arterias pampiniformis corporis venire. Albugineæ lamina tres facit, corpus Highmori vero cæcum cum intus contentis vasculis.

GUERN. ROLFINK admiranda anatomica de organorum genitalium structura admiranda in utroque sexu, Francof. & Lips. 1686. 4. Idem opus est, quod cum femininis organis recensui.

JOH. MERY in Progrès de la Médecine, 1697. musculos erectores penem deprimere recte vidit, etsi cellulosis fibris corporum cavernosorum id officium non optime dederit. Glandulas etiam inter acceleratores & prostates, quas vulgo COWPERO tribuunt, primus omnino vidit, ut apparet ex JOUR. DES SAV. 1684. n. 17.

Mr. in sur la structure des organes des deux Sexes, destinés à la génération, Parisiis 1696. 12. superfetationem statuit.

DAN.

Hoc Libro cognito legendus est de organis virilibus Professor ille Patavinus **LEAL LEALIS** (a), cujus rarissimus Tractatus Patavii editus est, titulo *περί τῶν σπερματιζόντων ὀργάνων*, qui egregia experimenta anatomica continet, & singularia observata, neque venalis reperiebatur. Nunc autem de novo impressus est mea cura Lugduni Batavorum anno 1707. apud van der Linden, & invenitur post opera Eustachii eodem anno edita.

Præterea de iisdem partibus habemus **GUILIELMUM COWPERUM** (b),
gra-

DAN. ASMANN de seminis virilis generatione & vitiis. Vraject. 1696. 4.

(a) **LEAL LEALIS** *περί σπερματιζόντων ὀργάνων in viro*, Patav. 1686. 12. mihi non eodem, quo **PRÆCEPTORI**, pretio est. Dictio theatralis & nimis florida: errores multi, ut anastomosis arteriæ spermaticæ cum vena, rectius refutata a **GRAAFIO**, a **DIONYSIO** Tr. *général des accouchemens*, aliisque; ductus Highmori cavus, cui vasa & sanguinea & lymphatica inferantur: osculum vesicularum spermaticarum unicum. Pleraque desumpta ex ariete.

BERNARDINO GENGA in anat. chirurgica sinum in principio glandis definivit, in quo sedes sit gonorrhœæ.

NICOLAUS HARTSOEKER vermiculos seminales annorum 18. juvenis invenit an. 1674. (*Extrait critique*, &c.) anno vero 1678. demum revelavit in *Journal des Savans* n. 30. inventionis tamen honorem etiam ab Academicis Gallis, parum sibi faventibus, retulit. De iisdem observationes suas protulit in *Dioptrice* & in *Journ. des Sav.* 1695. & in *Remarques* & alibi. In *Extrait critique* istis animam plasticam admittit, quæ ea animalcula formet, & se tuetur contra **LEEUWENHOEKIUM**, ejusque malam fidem excusat. Utriusque opusculi editio nostra est 1730. Hagæ excusa.

ANTONIUS VAN LEEUWENHOEK an. 1677. se ab **HAMMIO** Libri de herniis Auctore observationem vermiculorum habere refert. Eo pertinent ejus observationes *Phil. Transf.* n. 142. 145. (ubi ovaria refutat) 196. 255. 268. 270. 284. 307. 323. 331. 336. ubi fatetur non fuisse vermiculos, quos in ostreis viderat, & testacea parere absque maribus, n. 380. & per omnia opera dispersæ plurimæ. Systema observationibus superstruxit, quo everteret ova Malpighiana, & primordia hominis unice in semine masculo poneret. Id ornavit magis **GARDENIUS**, & **BOERHAAVIUS**. Idem in Epistolis Physiologicis 31. & 41. de fabrica robusta epididymidis observationes habet.

DIONYSIUS van der **STERRE** in Libro de generatione ex ovo, Amstelod. 1687. 12. argumenta varia contra vermiculos protulit, tum **GEUDERUS** in L. de fermentatione, Amstel. 1689. 8. jam citato. Et ille quidem etiam in muliebri liquore genitali animalcula se vidisse adfirmat. Porro **RAIUS** in *wisdom of God* contra **LEEUWENHOEKIUM** scripsit, & ideas plasticas defendit. Contra eundem **LEEUWENHOEKIUM** **LISTERUS** multis locis & in *Philos. Transf.* n. 244. & in Tractatu de conchyliis bivalvibus, & **VATERUS** in *Phys. ref.* & **LYONNET** in *théologie des insectes*, & **LAUNAI** in Libro de generatione, & **VERHEYENIUS** & **BLAIRIUS** botan. essais, & **MAITRE JEAN** de la forme du poulet, & **BOURQUETUS** in epistolis philosophicis, & Auctor Libri, cui titulus *Venus physique*, & **P. ANGO** in *quest. med. an homo a vermibus*, Cadomi 1711. 4. * & **VALISNERIUS** in operibus alias citandis, & **LANCISIUS** in epist. quæ exstat cum **VALISNERIO**, & alii scripserunt.

PETRUS MASSUET Vermiculorum Leeuwenhoekianorum opinionem probabilem censet in sua Dissertatione Medica de Generatione ex Animalculo in Ovo, Leidæ an. 1729. edita, cum Iconibus Animalculorum seminalium, Embryonum humanorum, Gyrinorum, &c. huc spectantibus.

De iisdem vero vermiculis fuse egit **CL. BUFFONIUS** in T. II. de l'histoire naturelle, & **CL. TURBERVILLE NEEDHAM** in nouvelles observations microscopiques, & videntur evincere, nihil esse nisi microscopica animalia inferioris ordinis, non hominis primordia. **DALENPATIANUM** autem homuncionem, pictum in *Diario Eruditorum*, esse jocum **FRANCISCI PLANDADE** auctor est **ASTRUCIUS** de lue vener. p. 1002. 1003.

(b) **GUIL. COWPER** in myotomes minoris appendicæ theoriam erectionis, vasa penis lymphatica.

ejus nempe bina opuscula (de organis virilibus loquor.) Unum reperitur in *Myographia ejus reformata*, ubi ad finem plura de structura membri virilis & ejus glande habet. Alterum Tractatus est *de glandulis urethrae* in 4. Londini editus, qui rarus utcunque est. Ibi etiam de glandulis huc spectantibus observationes habentur. Eadem observationes hujus viri inveniuntur in *Actis Societatis Anglicae*.

Post COWPERUM legi meretur MORGAGNI, ille clarissimus Patavinus Professor anatomes. Opus Patavii est editum an. 1719. duobus voluminibus cum figuris, & titulus est *Adversaria anatomica*, ubi multa continentur rara, & ab aliis Anatomicis prætermissa. Iterato impressus est ille Liber Lugduni Batavorum in 4. an. 1723.

Tunc videatur CL. RUYSCHIUS (a) in suis observationibus. Is enim primus reperit caput penis esse unice productionem spongiosam urethrae, neque hoc caput quidquam communicare cum corpore penis, sed urethram productam ad finem corporum nervosorum reflexam & expansam facere caput penis. Nobile est inventum, & ipsi viro soli debetur. In *Thesauris* etiam multa egregia circa hanc rem habet.

De testibus UBERIUS DATHIRIUS BONCLARUS (b) scripsit in Italia, in

tica, cum iconibus proponit, & aliqua in GRAAFIO carpit. TYSONIS glandulae odoriferae ibi describuntur. In *append. ad anthropographiam* habet iconem vesicularum bulbique sui. In Tractatu denique quo *glandularum nuper detectarum earumque ductuum descriptio* continetur, Lond. edito, 1702. 4. Glandulas duas MERYANAS, jam in n. n. 258 *Phil. Transf.* descriptas (an. 1699.) pro novis, & tertiam, parum hodie notam, describit, cum nitidis iconibus.

N. VENETTE in saepe recuso Libro spurca multa ad excitandam libidinem habet, veri experimenti parum.

PHIL. VERHEYEN experimenta, analyses chemicas, sinus urethricos, & alia habet in nuperioribus editionibus.

In *Mémoires de l'Acad. Royale des Sciences*, D. LITTRE egit de urethra, ejusque musculis, glandula nova, (quam antiprostatam vocat, nos ignoramus) erectionis causis, corporibus cavernosis, glandulis præputii, &c. 1700.

DUVERNEI de generationis partibus masculis ibid.

L. S. SCHMIEDER de seminis ad sanguinem regressu, A. E. Lips. T. V. sect. IX.

(a) FRID. RUYSCHIUS in omnibus operibus plurimum his partibus lucis attulit, cellulosa internam, parum notam, filamenta testis ostendit, corpus cavernosum urethrae, non equidem ignotum, cum glandis cavernoso corpore continuari recte monuit, papillas penis pulchre exhibuit, in scroto septum, sed id minus ad naturae mentem, descripsit; in posthuma denique icone, quam pictam dedit ADMIRALTIUS, ductus urethrae mucosos exhibuit, magnos & parvos

(b) Vide in *Phil. Transf.*

J. FAC. RAU epistola de septo scroti duae ad RUYSCHIIUM, Amstel. 1699. 4. demonstrat ante RUYSCHIIUM septum scroti notum fuisse.

J. G. FREUND de semine masculino, Altdorf. 1698. 4. *

STEPHANI FRANCISCI GEOFROI quaestio medica an hominis primordia vermes, Parisiis 1704. 4. cum *materie medica* posthuma recusa continet argumenta pro vermiculis, pro sexu plantarum.

JOH. DEPINET PESCHARD an homo a vermibus, Paris. 1705. 4. PL. *

JOH. BANTONUS in *Dissertationibus anatomicis*, Turini an. 1745. recensis in 8. varia, ut reliqua, ita etiam in his partibus notatu digna observavit. Darton recte negat musculum esse, &c. Ad litem etiam inter MORGAGNIUM & TERRANEUM legi debet.

In Aula Hetrusca . Si addantur LEAL LEALIS Opera , perfecta habebitur descriptio harum partium .

DES NOUES in fossa penis duos glandularum ordines cum suis canalibus secretoriis descripsit , in epistolis an. 1706. editis .

ANTON. DOMENICO del PINO *penfieri sopra la generazione dell' Uomo* . Lucca 1706. 4. *

J. B. MORGAGNUS in III. & IV. *Adversar.* penis ligamentum , neglectum a nuperis , glandulas coronæ penis , majores sinus urethræ virilis , musculos eo pertinentes aut invenit , aut exquisitius descripsit .

Laudari solet figura urethræ humanæ , quæ continetur in ALGHISI Libro *de lithotomia* .

LAUR. TERRANEUS *de glandulis novis ad Urethram virilem* , Turin. 1709. 8. Leidæ 1721. 8. Describit tum MERYI aut COWPERI glandulas , tum minores folliculos urethræ virilis , & ex homine & ex animalibus variis . De sede Gonorrhœæ & moribz partium non inutilia habet . Ob sinus urethræ inventos in controversiam incidit cum MORGAGNO . Eas vero glandulas , quæ COWPERO tribui solent a TERRANEO annis 1698. 1699. ostensas esse , J. B. BIANCHI testis est *Memor. di Valentuom.* III. pag. 124.

PHIL. HECQUET , *Ergo ut virginitatis ita virilitatis certa indicia* , Paris. 1713. 4.

J. B. BIANCHI apud MANGETUM solitariam glandulam absidentem bulbo urethræ se demonstraturum promittit .

R. WILH. BUSSIUS *de adstribus virilibus* , Erfurd. 1715. 4.

GIUSEPPE VIDUSSI *motivi di dubitare intorno la generazione de' viventi* , Venet. 1717. 12. Videtur D. Theologiæ fuisse . Pro generatione æquivoca pugnat , ob vermes in putrefactis corporibus repertos , qui absque ovis proveniunt , & vermes morbosos absque parente natos , & formationem fetus fermentationi particularum tribuit , & seminis utriusque miscelam statuit .

J. F. NICHOLSON cum *modern syphilis* edidit descriptionem partium genitalium utriusque sexus Lond. 1718. 8.

MART. SCHURIG. *spermatologia* , item *de castratione* , *de hermaphroditis* , &c. Francof. 1720. Compilatio , nec ex bonis Auctoribus , & nullo cum collectoris judicio .

LAURENTIUS HEISTER ligamenta penis lateralia pro perpetuis jam in Libro *de incrementis anatomes* an. 1720. proposuit . In posterioribus editionibus compendii venas superficiales penis depinxit . Glandulas etiam vesicularum seminalium ex proprio experimento dixit , & testiculum ab epididymide separatum delineavit .

ANT. VALISNIERI *della generazione dell' uomo* , Venet. 1721. 4 & Germanice , Lemgovia 1739. 8. Fere unice contra vermiculos & systema LEEUWENHOEKII scripsit . Pauca hic nova aut propria habet VALISNERUS , & magis in ratiociniis occupatur . Idem in GAL. di MIN. T. VI. LEEUWENHOEKIUM refutat , descriptiones falsas ipsi imputat , &c.

L. BOURGUET in *Bibliotheca Italica* T. IX. sibi tribuit , quod VALISNERIUM , vermiculis deditum , ad evolutionem ovorum , traduxerit .

Eunuchism displayd describing the different sorts of Eunuchs , Lond. 8. *

ANTONII MARIE VALSALVÆ rudimentum inventi ductus a capsulis renalibus euntis ad ovaria & testes , a CL. TEICHMEYERO , RANBYO *Phil. Transf.* n. 387. varie ornatum , nunc ex posthumis MORGAGNI Epistolis novimus esse meram cellulosam telam .

B. DAV. MAUCHART *Disp. de hernia incarcerata* , Tubing. 1722. 4. habet descriptionem scroti .

J. DOMINICUS SANTORINI multa minutius in *observationibus anatomicis* de musculis virilium genitalium habet . Venas , non satis puto repletas , sinus vocat .

EL. CAMERARIUS *de generatione hominis ex verme* , Tubing. 1723. 4. Diss.

J. B. PAITONI in I. *discorso Accademico della generazione dell' uomo* , Venet. 1722. 4. sequitur VALISNERIUM , & vermiculos nihil facere ad futurum fetum , esse vero naturales seminis hospites fuisse demonstrare satagit .

CL. MENZ in *Diss. de paradoxa generatione ranarum* , Lips. 1724. 4. observationes aliquas a SWAMMERDAMIO inceptas , & in A. E. 1685. repetitas , de tumore in pollice ranæ maris qui non reperiatur in pollice feminae ita auxit , ut credat posse pro pene haberi , & eo forte abire ductum aliquem deferentem obscurum . Ovaria etiam ranarum describit .

In R. BRADLY *philosophical account of the works of nature* etiam vermiculorum habentur observationes, & apud COWPERUM, CHESELDENIUM in *anat. of human body* alibique in microscopiorum Auctoribus.

WILLIAM RUTTY *treatise on urinary passages*, Lond. 1726. 4. Ex DOUGLASSIO habet insertionem fibrarum longitudinalium vesicæ in prostatam, ex MORGAGNIO alia, ad sinus urethræ observationes, &c.

J. G. DUVERNOI in *Actis Petropolitanis* eorumque T. II. penem Elephantii fuscè & eleganter describit, nervos maxime venasque & arterias, & displicere sibi demonstrat theoriam erectionis vulgarem.

HENR. FRANC. LE DRAN in suo *parallele de la taille* omnino ad has partes, quas breviter & simpliciter descripsit, legendus est. Pingit ligamenta vesicæ, describit ligamentum interosseum pubis, etiam a DOUGLASSIO in *appendice ad Tractatum de apparatu laterali* dictum, negatum a CL. JOSIA. WEITBRECHT in *syndesmologia*.

WILH. COCKBURN in editione IV. Libri de Gonorrhœa, cui titulus est *The symptoms nature cause and cure of a Gonorrhœa*, London. 1728. 8. lacunas urethræ innumerabiles esse, omnes inter se & cum vasis partium genitalium communicare, esseque sedem Gonorrhœæ, & icones penis addit, eas, quæ etiam cum coloribus suis pictæ exstant, ut ex B. PL. confirmor.

HENRICUS BASS in *observationibus anatomico chirurgicis* iconem dedit & descriptionem vesiculæ seminalis, in qua anulum quendam describit, mihi non visum.

H. P. JUCH de *animalculis spermaticis*, Erfurt. 1731. 4.

SENNAC in nuperiori editione *tentaminum physicorum* recte negat Glandulam tertiam Cowperi. Vermiculos refutat, de generationis negotio ampliat.

J. B. WINSLOW, semper & ubique laudandus, vaginas vasorum spermaticorum etiam seorsim describit in Ep. ad MORAND. p. 315.

ALEX. MONROO in *Edimburgensium* Tom. V. veram sententiam de omnis muscularis fabricæ absentia a darto, deque natura septi scroti primus aperuit.

GEORGIUS MARTIN ibidem T. V. anastomosis arteriarum spermaticarum cum venis recte refutat.

A. F. WALTHER in *anatomie muscutorum tenuiorum*, Lipsi. 1731. & de *collo vesicæ virilis*, Lipsi. 1745. musculos partium genitalium eorumque utilitates describit. Idem in A. E. 1725. de cellulosa scroti fabrica penisque occasione sarcocèles verba facit.

GOTTFRID. HENR. BURGHART de *terminis pubertatis*, Francof. Viadr. 1736. 4.

J. MATTH. GESNER *Ἰσχυαὶ Ἰπποκράτους* Gotting. 1737. 4. continent commentarium in I. Libro de *diata* qui exstat inter Hippocraticos, quo docte, ut solet, evicit, Auctorem ejus Libri feminum perennitatem, & de corpore altero in aliud æternam migrationem alternamque involutionem & evolutionem notas habuisse.

ABRAHAM KAAU in Libro de *impetum faciente Hipp.* multa habet, quæ huc pertinent, totus LEEUWENHOEKIANUS, ut & in epididymide demum nasci vermiculos, & coire, parere, etiam immatura reperiri & alia hujusmodi doceat.

In *Anonymi dilucidationibus de origine anima & malo hereditario*, Holmiæ 1740. & *Systema vermium* defenditur.

CL. LIEUTAUD de more legi potest, maxime ad musculos.

J. FRID. CASSEBOHM in posthumis multa huc habet. Highmori corpus cæcum & foraminulentum facit, membranam describit, quæ epididymidem obvolvitur, tum darton, veram cellulosam esse recte docet, iter testium exponit, quo sensim ex abdomine in scrotum veniunt, quem lege.

J. G. GUNZ in Libro de *calculo* ob observationes in musculis erectionis, & in Libro de *herniis* legatur, ubi equidem Darti naturam musculosam defendit, a nobis non inventam, cremasterem, præterea vaginas cellulosas peritonæi describit.

Auctor *Essay on comparative anatomy* ut de aliis partibus, etiam in istis classes animalium, & varias causas diversitatis rimatur.

CL. TABARRANI in *memoriis Luccensibus* aliqua habet de glandulis urethræ.

J. FRANCISCUS ISEZ in Thesi Parisiensi defensa an. 1743. an *Vena spermatica structura secretionem seminis faciat*, lentorem parere credit eam venam, ut fiat subtilius.

TURBERVILLE NEEDHAM in *microscopicis observationibus*, quas in classe physica citavi, vermiculos habet pro machinis, quæ vim suam demum certis cum circumstantiis expediant & demonstrent.

FRANC. IMBERT *Diff. de la génération*, Monspel. 1745. vermiculos pro putredinis effectui habet, & alia contra **LEEUWENHOEKIUM** adfert, non validissima.

ERN. ANTONIUS NICOLAS in *Libro von der erzeugung der kinder*, Hall. 1746. 8. suas de vermiculis feminis observationes adducit.

J. PHIL. LAUR. WITTHOFF *commentarii duo ad systema Leeuwenhoekianum*, Leid. 1746. 8. **LEEUWENHOEKII** rationes exponit, adfert contrarias, nec epignesin pro certa, sed epechein docet.

Anonymus Auctor Libri Venus physique plurima huc pertinentia habet, vermiculos statuit ad motum factos esse, generationem explicat per attractionem partium similium in utroque semine, argumento hybridum, & productionem varietatum novarumque specierum conatur explicare.

GEORG. DETHARDING de *glandula inguinali*, Rostok. 1746. 4.

CL. HEIN in *Acad. Berol. Actis* T. I. theoriam **GESNERIANAM** fusius ornat, & ipsam polypi reparationem per animalcula explicat de semine aut humoribus animalis insecti resorbta, & ex latere polypi erumpentia.

CHRISTIAN GOTTLIEB KRAZENSTEIN von der erzeugung der würmer in menschlichen korper, Hall. 1748. 8. vermiculos seminales defendit, & statuit propagari.

In dissertatione **BIANCHI** quæ prodiit in T. III. collectionis opusculorum de Valentini variæ exstant observationes de musculis genitalium virilium, glandulis, ostiolis seminalibus, scroto, &c.

In **SCHLICHTINGII** *siphilide* cum femininis etiam mascula organa describuntur.

J. JAC. ROHT de *fecundatione absque consuetudine viri*, Argentor. 1748. 4.

JAN MONNIKHOFF ontleed en heelkundige saamen stelling... van de byzondere plaatsen... der scheurzels, Amstelod. 1750. 8. Describit organa inprimis mascula in quibus herniæ fiunt.

In editione ultima (1748.) Libri cui titulus est *observations sur les Maladies de l'Urethre* par **JACQUES DARAN**, habetur duplex picta penis icon, quarum altera sinus urethrici & ductuli prostatici repræsentantur.

Plures, qui de toto generationis systemate egerunt, inferius subjiciam. Ego vero in *Progr. de viis feminis*, Gotting. 1745. & nuper in *Phil. Trans.* ostendi vesicularum seminalium veram fabricam, quæ intestini similis sit, cui alia cæca intestina etiam ramosa inferantur. Deinde rete vasorum seminalium testis, vasaque quæ ex teste exeunt, post **GRAAFIUM**, vulgo ignorata, restitui & declaravi.

C A P U T XIII.

De Feminarum Organis Genitalibus.

Primo legatur **REGNERUS DE GRAAF** (a), optimam enim dedit ideam de partibus illis oculo non denudandis.

Sed præterea multa egregia circa structuram vaginæ, uteri, utriusque oris, tubarum

(a) De **GRAAFIO** vide suo ordine.

Fusior multo & difficilior est historia generationis quæ ad mulieres pertinet. Quare omissis infinitis eo pertinentibus observationibus majora unice sequemur.

EMPEDOCLES interius fetus involucrum ἀμνιον χόριον vero dixit, quod exterius ponitur, **POLLUCE** teste.

HIPPOCRATIS plusculi Libri huc pertinent, vel certe qui **HIPPOCRATI** vulgo tribuntur. Ita mechanismum, quo corpus humanum struatur, descripsit in Libro *περί γυναικός*, & in eo *περί ἀρχῶν καὶ σαρκῶν* ingeniosa utrinque hypothesei usus, tum *περί παιδίου ἀνθρώπου*, quo

quo Libro a *GALENO* modo veris, modo spuriiis accenso, celebre illud ovum humanum describitur, an satis verum? cum certe septimo die ea mole esse nequeat, & alia iterum theoria generationis proponitur. In Libro II. *γυναικείων* clitoridem cum columnæ nomine describit. Libri vero de *septimestri & oëtimestri* fetu omnino spurii sunt, (etiam a *CL. TRILLERO* repudiati in L. *περὶ ἀνατομῆς*) & auctoritatem minime merentur, quam apud Jurisconsultos nacti sunt. In eos exstant commentarii *JOH. LALAMANTII*, Lugd. 1571. 8. 1588. 8. * *DOUGL.* Ita neque Libri *περὶ ἐπικυήσεως* genuini sunt, neque de *arate*. In Libris 5. de genitura, & natura pueri exstant *JOH. GORRÆI adnotationes*, Paris. 1545. 1564. 4. *DOUGL.* * Quæ *DIOCLES* scripsit, ea interciderunt. Cotyledones certe in utero statuit in *ὑπομνήμασι περὶ ζωογονίας*, *SORANO* citante.

Citados Libros *HIPPOCRATIS* *περὶ γυνῆς*, *περὶ ἀρχῶν καὶ σαρκῶν*, & *περὶ παιδῶν ἀνθρώπων* spuriiis certe ob tautologiam aliasque rationes accenset *MEIBOMIUS de jurejur. HIPPOCR.* p. 144.

Liber *περὶ γυνῆς* seu de genitura cum *NICANDRI* theriacis exstat cum *GORRÆI* operibus omnibus Paris. 1622. fol. cum ejus *CL. viri* adnotationibus, deinde a *JOD. WILLICHIO* Resellano versus cum notulis, Basil. 1542. 8.

J. LALAMANTII dicti commentarii in Libros *HIPPOCRATIS* de *septimestri & oëtimestri* fetu novam habent versionem *LALAMANTII*. Una prodierunt etiam *scholia* in Librum de *septimestri & oëtimestri* fetu, ex more seculi scripta, & *GALENI* fragmentum in Libro de fetu *septimestri* quod spurium videtur.

J. GORRÆI adnotationes in libris de genitura, & natura pueri recusæ etiam exstant Paris. 1622. fol.

ARISTONIS SAMII de generatione locus non magni momenti exstat apud *A. GELLII*.

ARISTOTELIS Libri de *historia*, & *partibus Animalium* omnino toti legi merentur. Minime mala historia incubationis, & ovi bona descriptio habentur *hist. VI. c. 3.* & *L. VII.* fitus fetus humani verus, & perfectionis, quæ sensim in partibus fetus apparet, explicatio ut omnino Auctor sit epigenesios. Atretas earumque sanationem recenset.

HEROPHIUS tubas etiam habet, quantum ex paucis ejus verbis judicare licet.

RUFUS EPHESIUS tubas uterinas habet, & descriptionem partium genitalium Capræ. Clitoridem etiam nominat.

SORANUS EPHESIUS in paucis, quæ de ejus operibus supersunt, utiliter cotyledones in humano fetu nullas esse demonstravit, & uteri bonam descriptionem dedit, & clitoridis. Hymenem negavit. Hujus viri Librum *περὶ μήτρας καὶ γυναικείου αἵματος* editum habeo, Paris. 1554. 8. Aliqua *LYCUM* de utero scripsisse ex *SORANO* apparet.

CL. GALENUS duos de semine Libros plurima certe cum curiositate scripsit, & alium de *vulva dissectione*. Et his quidem non valde profuit, cum dubiis & obscuris verbis uteri humani nunquam sibi visi, & uteri ruminantis animalis descriptionem confundat, auctorque sit minime laudabilis illius opinionis vulgo receptæ, feminam esse mare introversum (conf. *VESAL.* p. 669. &c.) Ovale tamen foramen satis bene in Libro XV. de *parium utilitate* descripsit, & arteriosum ductum, in Libro VI. de *placitis* *HIPP.* & *PLAT.* experimentum habet de pulsatione arteriarum umbilicalium, quam demonstrat unice a fetu pendere. Ejus etiam sunt Libelli de *fetuum formatione: an omnes particula animalis quod in utero est, fiant simul: an animal sit, quod in utero est: de septimestri partu*. Seorsim editus per *J. CAJUM*, Basil. 1557. 8.

Inter muliebrium Auctores *MOSCHION* aliquam anatomen habet, & iconem cum literis, antiquus Auctor, qui Methodicus fuerit.

EROS manifestissime spurius est, & Salernitanus procul dubio Medicus, cum mulierum Salernitanarum mores citet.

CONSTANTINUS AFRIC. Libro de *coitu* nihil utile habet.

JULII OBSEQUENTIS *Prodigiorum* Librum cum *POLYDORO VIRGILIO* de *prodigiis* L. III. & *J. CAMERARII* de *ostentis* L. II. Lugduni 1553. editum huc, ut originem plurimorum monstrorum, excitare visum est.

Arabes nihil addiderunt, Clitoridis tamen cognitionem conservarunt (*AVICENNA* in primis post *PAULUM*), quam ipse ignoravit *VESALIUS*, & ad morbum retulit (*Examen obs. Fallop.* p. 143.)

ALBERTUS, qui vulgo magnus vocatur, Liber de *secretis mulierum*, August. Vindel. 1489. 4. Antverp.

barum FALLOPIANARUM, jam habemus apud VESALIUM (a). Tubarum
Nnn etiam

Antvverp. 1538. 8. Amstelod. 1648. 8. Francof. 1615/ 8. &c. a Q. APOLLINARI versus anno 1585. 8. Germanice prodiit.

THOMÆ de GARBO *Expositio super capitulo de generatione embryonum* 3. Canon Fen 28. AVICENNÆ Venet. 1602. fol. cum JAC. de FOROLIVIO, super eodem argumento commentario prodiit.

JACOBUS CARPENSIS Hymenem habet, non quidem GALENO dictum, sed tamen non ignotum veteribus, cum sit negatus ab ORIBASIO & SORANO: IDEM non duas, sed unam umbilicalem venam esse primus monuit.

NICOLAI LEONICENI *de virtute formativa*, Basil. 1529. 8. cum aliis opusculis.

ANTONII MARTINEZ *de la complexion de las mugeres*, Madrit 1529. 8. ANT. *

JASON a PRATO cujus Liber Antvverpiæ dicitur an. 1524. editus esse, (mihi enim Amstelodamensis tantum editio ad manus est 1657. 12.) scripsit *de uteris* Libros II. & *de pariente & partu*. Merus ex veteribus mythologus, absque ulla propria fruge.

JOH. de KETHAM *de matrice & impregnatione*, Venet. 1495. fol. 1513. fol. iconem primam uteri tradit.

MICHAEL SCOTUS *de hominis procreatione*, Paris. 1508. 8. DOUGL.

JACOBUS SYLVIVS *de mensibus* Libellum scripsit, Basil. 1556. 8. recusum cum operibus omnibus. Præter paucas observationes feminarum præcocium, &c. vix quidquam habet. Sed in variis dissectionibus, quæ Venetiis an. 1561. 8. prodierunt partes genitales feminarum, & fetus variorum animalium minime male descripsit.

EUCHARIUS RHODION *de partu hominis & quæ circa ipsum accidunt*, Francof. 1537. 1544. cum ic. * DOUGL.

Idem est procul dubio EUCHARII ROESLIN *ehstands arzney buch oder schwangerer frauen Rosengarten*, cujus multæ editiones sunt, adjectis etiam BONACIOLI, & aliorum similibus libellis. Et idem esse suspicor THOMÆ REYNOLDT *the birth of manckind other wise the womans book*, Londin. 1540. 4. 1545. 4. AMES.

NICOLAI de HAULTEAS *de contemplatione naturæ humana, nempe de formatione fetus in utero*, Lutet. 1555. 8. DOUGL. *

LUDOVICI BONACIOLI Liber *de conformatione fetus* anno, mihi non satis noto, primum impressus, tum Argentorati 1537. 8. Basileæ 1566. 4. & Leidæ an. 1641. 12. recusum cum PINÆO & cum antiquo nomine *Enneas Muliebris in Gynaceis Wolfii* editus. Clitoridem ab eo viro restitutam esse laudat J. DOUGLAS & DE NEUFVILLE. Cæterum rhapsodiam fere non magni momenti habet.

J. FERNELIUS ovum humanum descripsit Libro VIII. c. 10.

JOH. DRYANDER sinus mucosos sive foramina duo in extrema parte vulvæ habet.

N. MASSA monstri dedit descriptionem.

C. STEPHANUS Clitoridem habet, & uteri spongiosos & anfractuosos sinus, & Libro III. c. 7. quibusdam lineis valvulas vicinas urethræ expressisse videtur. Idem post ORIBASIUM, & post eum Galli omnes, hymenem negaverunt adesse. Secuti enim sunt eum PAREUS, LUD. VASSÆUS, PINÆUS, MAURICEAU, DEVAUX (*de l'art de faire les rapports*) DIONIS, LAMOTTE, alique,

FRANCISCI NICONISH *de fetu nato ex uxore marito absente per sexennium*; Cracoviæ 1541. 8. *

(a) A. VESALIUS hic minus profuit, quam alibi, cum enim gravidam feminam nunquam secuisset, quo tempore magnum opus edidit (*examen obs. Fall. p. 154. & de rad. Chin. p. 207.*) figuras eo & ad fetum pertinentes ex brutis animalibus sumpsit. Uterum etiam humanum ita pinxit, ut & ipsa cavitas male appareat, & ovaria tubasque, ni fallor, ex brutis admisceat. Eo deterior vero is error fuit, quod in omnes fere recentiorum Libros transiverit, ut qui VESALIUM universi exscripserint. Hymenem tamen per plura experimenta restituit (*de ead. Chin. p. 204. 205. 206.*) Ova humana vidit, Foramen ovale satis bene descripsit, non item arteriosum ductum.

MAT-

etiam uteri descriptio apud FALLOPIUM (a) extat in *Observationibus anatomicis*. Hisce

MATTHIÆ CORNACIS *historia quinquennis fere gestationis in utero*, &c. Vienn. 1550. 4.
MATTH. CORNACIS l. c. extat etiam Basil. 1464. 8.

JACOB RUEFF *von der empfängnuß der menschen*, Tigur. 1554. 4. * *de conceptu & generatione hominis*, Tigur. 1554. 4. & Francof. 1580. 4. (LEHM.) 1587. 4. Parum utilis Auctor, figuras habet situum morbosorum, & monstra aliqua. Ridiculum est, quod LA FAYE & GARENGEOT de eo laudant, circulationem nempe ipsi notam fuisse, qui nihil super sortem ævi sui vel voluerit sapere. Monet SCIPIO MERCURIALIS compilasse EUCHARIUM RHODIONEM.

J. RUEFF *de conceptu & gener. hominis* recusatus est Tiguri 1569. 8. teste PASCHALI.

ALBERTI NOVOCAMPIANI *Disq. utrum cor an jecur in formatione fetus consistat prius*, Cracoviæ 1551. 8. * DOUGL.

J. PHIL. INGRASSIA *trattato di due mostri nati in Palermo in diversi tempi con un ragionamento fatto sopra l'infermità epidemica dell' anno 1558*. Palermo 1560. 4. * MONGIT.

MATTHIÆ CURTII *de partu septimestri* Liber extat cum opusculis *de dosibus medicamentorum*, Venet. 1562. 8.

(a) Longe felicior FALLOPIUS tubas apud GALENUM varie confusas cum binis uteri brutorum animalium cornubus, primus sollicite restituit, clitoridem cum musculo suo, glandeque & præputio hymenem. In viis sanguinis fetui propriis erravit.

FORTUNII AFFATAT *Librum de hermaphroditis*, Venet. 1549. quo hermaphroditos dari, in utroque sexu fecundos, non bene adfirmatur, nondum vidi.

ANTONIO MARIA VENUSTI *discorso generale intorno alla generazione al nascimento degli uomini*, Venez. 1562. 8. Theoretice & fere theologicæ scripsit.

Verum super omnes eminet industria B. EUSTACHII, quantum ex duabus Tabulis XIV. & XV. colligimus. Musculos clitoridis, sphincterem vaginæ, hymenem, vasa uteri, eaque artificiosissime, vasa communicantia ligamenti teretis, tubas, uteri humani figuram, triangularem caveam, sinus cervicis, sinus vaginæ, Amnion chorionque, ovum caninum & vitulinum cum involucris verissime depinxit. Allantoidem in homine non reperiri monuit.

A. PAREUS in *Libro de hominis generatione & in administrationibus anatomicis* aliqua habet, quæ huc pertinent. In administrationibus de membranarum numero allantoidem delet.

A. PAREI liber citatus Gallice prodiit cum titulo *deux livres de chirurgie*; 1. *de la génération de l'homme & manière d'extraire les enfans*; 2. *des monstres tant terrestres que marins*, Paris. 1573. 8. Habet anatomen practicam genitalium fetusque, monstra vero collectitia, fere, cum adjectis animalibus rarioribus. In collectione operum efficit libros XXIII. & XXIV. & plura adhuc capita habet de herniis, articulorum vulneribus, &c. quæ in ea collectione alibi suo loco reperiuntur.

R. COLUMBUS monstra rarosque partus descripsit.

G. CUNEUS apud CARDANUM *Variet.* Libro III. c. 77. primus diligenter fetum bicorni corpusculum descripsit.

C. GEMMA monstra aliqua & ova humana habet in *L. de natura divina characteris*.

THOMAS TYGEON *Antimaologiam*, quo demonstratur obstetricibus non esse fidendum de virginitate & defloratione mulieris adultera testimonium ferentibus, Londini 1574. 8. DOUGL. *

J. BAPT. CARCANI Libri II. in quorum altero *de cordis vasorum in fetu unione pertractatur*, Ticini 1574. 8. recte corrigit & FALLOPIUM, qui foramen ovale omiserat, & ARANTIIUM qui canalem fecerat, & VESALIUM, qui ductum arteriosum in foramen mutaverat. Valvulas Azygæ negat. Describit satis bene utramque anastomosen, sed directionem sanguinis per ductum arteriosum moti invertit. Valvulam eidem non bene adfinxit.

LACTANTI EUGENII *de maris & femina generatione* 1568. 8. *

VOLCHERUS COITER habet experimenta cum ovis incubatis. Corpora lutea primus descripsit.

ULYSSES ALDROVANDI *Ornithologia*, Bonon. 1599. 1605. in Libro XIV. ovi incubati observationes, & satis bonam descriptionem Partium genitalium Gallinæ ab ULMO dissectarum habet, cum multis iconibus.

DOMINICI TECELLII *de generatione & partu hominis* Libri II. Lugdun. 1578. 3. *

CLAU-

CLAUDII GUARDINI de partu 271. dierum, Ancon. 1573. 4. MERCL. *

PETRI de PERAMATO de semine, generatione, spiritibus, conceptu in partum, S. Lucar de Barramede 1576. 1590. 1596. fol. DOGL. * Partum quarto mense vitalem editum vidit, aut certe descripsit.

J. B. CANNANUS apud AMATUM Cent. I. cur. 27. monuit etiam in gemellis unam uteri caveam esse, leviter in dextram & sinistram divisam.

RENATI BRETONNAYAU de generatione hominis tractatus variis & multis observationibus refertus, Paris. 1583. 4. *

ALBERTINI BOTTONI de morbis muliebribus, Patav. 1585. 4. Libri II. Venet. 1588. 4. DOUGLAS & in Gynæciis.

ANDRÆ HELLEPYRI de hominis conceptu, Ingolstadt. 1582. 4. *

F. ROUSSET de partu caesareo sive HYSTEROTOMOTOKIA, Basil. 1588. 8. & 1591. 8. Opus eximium, non chirurgica sola, sed & anatomen peritonæi & partium genitalium & virilium & muliebrium, tum plurimos morbos organorum habet. Accessit editioni Basiliensi JOH. ALBOSII Senis 1582. 8. excusum opusculum cum titulo Lithopadii Senonensis in utero materno petrefacti & PROVANCHERII de lithopadio Senonensi annis 28. gestato exiguus Libellus. Hi duo, Amstel. 1622. 12. recusati sunt sub nomine Lithopadii Senonensis. Edit. ROUSSETI prima est Paris. 1581. (DOUGL.), alia 1590. 8. auctior. Exstat etiam cum Gynæciis WOLFII.

EJUDEM ROUSSETI exstat exercitatio medica assertionis novæ verius anastomoseon cardiacarum fetus ex utero materno sanguinem trahentium in suos pulmones cordi prepositos, Paris. 1603. 8. *

ALBERICI GENTILIS Liber de nascendi tempore, VVitteb. 1586. 8. a

PETRI UFFENBACH de generatione & interitu, Argentor. 1591. 4. *

JULIUS CÆSAR ARANTIUS de formato fetu, Venet. 1571. 4. Basil. 1579. 8. & Venet. 1587. 4. & cum Observationibus anatomicis, Venet. 1595. 4. Foramen in observationibus ovale describit, emendatius in hac posteriori editione quam in priori. Monuit priores anatomicos brutorum animalium uteros depinxisse: Sphincterem vaginæ descripsit, mucumque ventriculi, & placentæ membranam obversam utero. Primus anastomoses vasorum uteri cum fetus arteriis negavit.

In MAUR. CORDÆI Commentariis ad L. I. muliebrium Hipp. qui exstant cum Gynæciis variæ bonæ observationes anatomico-practicæ continentur. Negat discessum ossium pubis in partu, & diversitatem sceleti feminini.

C. VAROLIUS clitorides fere majores esse, quas pro hermaphroditis habeant, monuit. Quid ejus radices dorsales sint, quibus in principiis fetus alatur, id quidem non video.

SEVERINUS PINNÆUS (PINEAU) de notis integritatis & corruptionis virginum & de partu naturali. Paris. 1597. 8. Francof. 1599. 8. Leid. 1641. 12. &c. in qua editione quinque adjectæ sunt figuræ partium genitalium, quæ in Parisina non reperiuntur, tum Francofurti & Lipsi. 1650, 12. Mala continet mista bonis, etsi eruditi certe Chirurgi opus. Fetus humanos varios, nisi fallor, non bene depinxit. Hymenem male exterminavit, & carunculas ipsi substituit, vestibulum tamen pudendi, & valvulas (partes a nymphis diversas). Ossa pubis in partu paulum discedere contra MAURICIUM CORDÆUM confirmavit. Observationes etiam varias adpersit. In lithotomia excelluit.

SEVER. PINÆI l. c. recusatus exstat Amstelod. 1663. 12. Germanice etiam prodiit Erfurt. 1724. 8.

MARTIN WEINRICH de monstrorum ortu Comment. Breslav. 1595. 8

DAVID KYNALLOCH de hominis procreatione carmen. Paris. 1596. 4. Amstel. 1637. 12. *

DUNCANI LIDDEL de generatione hominis. Helmst. 1597. 4.

HORATII AUGENII quod homini non sit certum nascendi tempus: adjectum est Embryon petrefactum Senonense. Venet. 1595. 8. MERCL. *

ANDRÆ LIBAVII de vagitu expresso fetus in utero. Norimb. 1597. 4.

In HIER. CAPIVACII operibus etiam Liber est de virginitatis tam mascula quam femella notis, & alter de fetus formatione.

H. CAPIVACCII Libri de fetus formatione anonymam editionem Patavinam fol. possideo. Sed opusculum inutile est.

A. LAURENTIUS imaginarium canalem descripsit ab ovario in cervicem euntem, diversum ab illo Veterum.

Hiscæ addatur tractatus SWAMMERDAMII (a), Clarissimo TULPIO dicatûs; & inscriptus *Miraculum naturæ*. Tum HIERONYMUS FABRICIUS ab *Aquapendente*, in Tractatu de pullo incubato (b), egregia enim, quæ eo spectant, habet, & plura ibi invenientur, quam a tam antiquo Auctore facile sperares.

Hiscæ

BALDUINI RONSÆI de humana vita primordiis & affectibus hystericis Cento. Leid. 1594.

BALDUINI RONSÆI citati libri exstat etiam editio Leid. 1618. 8. Cæterum addimus, aliqua eum habere de partu, de semine, partibus generationis & monstris.

J. COSTÆI de humani conceptus, formationis, motus & partus tempore. Bonon. 1596. 4. Papiæ 1604. 4. (MÉRCL.)

TAB. HIPPIUS de corporis humani ex semine ortu. Lips. 1597. *

JOH. LALAMANTII de mora partus in utero. Lugdun. 1599. 4.

Cæterum gynaciorum collectiones equidem non sunt penitus hujus loci, quarum prima Basil. 1586. 4. prodiit: alteram ISRAEL SPACHIUS edidit, Argentor. 1595. fol. Multa tamen ibi reperiuntur.

CHRISTOPHORI GUARINONII de generatione viventium Liber Francof. 1601.

M. ANTONII ULMI uterus muliebris. Bonon. 1601. 4. Anatomicæ peritiæ aliquod vestigium dedit in anatome uteri gallinæ, quæ exstat apud ALDROVANDUM. Hic vero nihil habet fere, nisi irritamenta libidinis, & arbitraria temperamenta uteri eorumque spurcissima signa, cum nonnullis eo pertinentibus. Hymenem negat.

SYLVII LAMCEANI de mola generatione, fetus formatione. Rom. 1602. 8. *

MERCURIALIS de hominis generatione. Venet. 1597. fol. Francof. 1602. fol. Placita veterum absque propria observatione.

EJUSDEM monstrorum historia posthuma. Bonon. 1642. fol. Nauseosa compilatio, cum paucis propriis descriptionibus tripedum & quadrupedum pullorum. Monstra vegetabilia etiam continet.

FRID. BONAVENTURÆ de partus octimestris natura adversus vulgarem opinionem, Francof. 1601. fol.

J. JESSEII a JESSEN de generationis humana periodis. VVittemb. 1602. 4. disp.

JOH. RIOLANI Lib. de monstro Lutetia nato Paris. 1601. 8. Anatome mediocris, Auctor credulus.

JOH. RIOLANI filii esse Librum de monstro Lutetia nato, non patris, ut alii voluerunt, constat ex privilegio.

EJUSD. Liber de fetu inter magna Opera exstat, quo dissectio feminae gravidæ & alia utilia continentur. Idem in *Anthropographia* libero sermone & pruriginoso persequitur historiam genitalium muliebrium. Clitoridis musculos & ligamentum suspensorium sibi tribuit: urachum humanum cæcum esse monet: ossa pubis hiare confirmat experimento suo: hymenem contra malam descriptionem PINÆI restituit, fetum in ovario vidit.

EJUSDEM Discours sur les Hermaphrodites. Paris. 1614. 8. citatur in B. THUANÆ, cujus nullum vestigium alibi reperi.

RODERICI a CASTRO de universa mulierum medicina P. I. continet theoriam, anatomicam nempe, ex aliis sumtam, & physiologiam partium genitalium utriusque sexus, graviditatis, partus, ejusque octimestri & alio tempore monstris & androgynis. Hamburgi prodiit 1603. fol.

(a) Vide suo ordine.

(b) HIERONYMI FABRICII ab AQUAPENDENTE Liber de formato fetu & de formatione ovi atque atque pulli. Patav. 1625. fol. Patav. 1604. fol. DOUGL. * Incubationem observavit in gallinae Indicæ ovis, teste ipso PEIRESCIO, & una observante (Vit. Peiresc. p. m. 50.) Ovarium, infundibulum, ova, petiolos, mutationes fetus in ovo describit. Deinde per varia animalia fetus & involucrorum conditionem plurimis tabulis exprimit. Vasa omphalo mesenterica in fele & cane invenit, præcipuus in his Auctor.

In JULII CASSERII iconibus habentur etiam valvulae & media eminentia cervicis uteri, tum vaginae uteri.

J. GEORG.

J. GEORG. SCHENK *monstrorum historia memorabilis monstrosa humanarum partium miracula referens, cui accessit analogum argumentum de monstris brutis*. Franc. 2609. 4.

J. G. SCHENK l. c. Germanice prodiit cum titulo *vvunderbuch von misgeburten*, Franc. 1610. 4. satis utilis est collectio, neque enim sola habet plurimorum scriptorum collectanea, sed etiam sua propria bene multa non absque dissectionibus.

MELCHIORIS SEBIZ *exercitat. med. & anat.* reliquaue scripta, quæ Argentor. recusa esse diximus, edita sunt primum Argentor. 1629. 4.

FELICIS PLATERI *quaestiones physiologica de partium in utero conformatione* exstant cum SEVERINI PINÆI Opusculo. Leidæ 1641. 12. & continent observationes aliquas de ovis humanis, tribus bullis, embryonis incrementis.

JOH. HUEBER *de sterilitate utriusque sexus*. Genev. 1610. 8. DOUGL. *

LUD. SEPTALII *Liber de navis*. Mediol. 1606. 8. Patav. 1628. 8. 1651. 8. &c.

SIGISMUNDI SCHILLING *de procreatione hominis*. Lips. 1710. 4. *

MELCHIORIS SEBIZ in L. *de notis virginitatis*, cujus veram editionem ignoro, docte scribit, & HOR. AUGENIUM, qui hymenem negat, egregie refellit, additis etiam tribus propriis observationibus. Exstat recusus cum PINÆO, Leid. 1641. 12. EJUS etiam *exercitationes Medica & anatomica; Diss. de discrimine corporis virilis & muliebris: de notis virginitatis: & de femina qua ventrem supra modum tumidum plus quam decennio gestavit*. Argentor. 1672. 4. recusæ sunt. *

RUDOLPHI (le MAITRE) MAGISTRI *doctrina Hipp. in qua de limitibus partus humani*, &c. Paris. 1613. 12. *

GUIL. FABRICII HILDANI *de monstro Lausanne equestrium exciso*, Oppenheim 1614. 8. *

In ejus *posthumis schedis*, quas Bernæ in Bibliotheca vidi, multum iconum monstrosa- rum reperi,

HECTORIS SCLANOVII *de vasis umbilicalibus diascepsis, & tractatus de partu Gabsheimense*, Franc. 1614. 8. Urachum etiam ligamentum esse, neque veram homini inesse Allantoidem recte monet. Monstri bicorporei descriptionem dat.

ÆGIDII ROMANI *de formatione corporis in utero*. Paris. 1615. 4. Venet. 1623. 4. * DOUGL.

JOH. SISINII AMABILIS *de natura fetus disputatio*. Rom. 1615. 8. * DOUGL.

JOH. STEINMEZ *oratio utrum femina in sexum masculi mutari possit*, Jen. 1615. 4.

FORTUNII LICETI *de monstrorum natura*. Patav. 1616. 4. & cum iconibus 1634. 4. recusus a G. BLASIO, Amstel. 1665. 4. Monstra ex theoria in classes distribuit, exempla omnium collegit ex PAREO aliisque, absque anatome, proprii vix quidquam addidit. BLASIUS Librum ex TULPIO, EVERARDO, & BARTHOLINO auxit, unam etiam monstri historiam de suo addidit.

EJ. LICETI *de spontaneo viventium ortu*, Vicetiae 1618. fol. Inutilis. EJUSDEM *de perfecta constitutione hominis in utero*. Patav. 1616. 4. est ARISTOTELIS quædam cum GALENO combinatio, ut ex semine de toto deciduo maris & feminae, exque sanguine menstruo conjunctis formaretur fetus.

GREG. HORST *de causa similitudinis parentum*. Gieff. 1628. 4. Orationes sunt, hinc mere rhetoricæ. IDEM in *Epistolarum cum observationibus* editarum L. IV. valde titubanter de hymene scripsit. J. D. HORSTII *Progr. ad anat. Canis gravida*. Gieg. 1639. 4. habet iconem fetuum in cornu uterino jacentium.

VALENTINI RYLAND *de procreatione hominis & procreantis matris purgatione*. Disp. Basil. 1618. 4. * In B. RIV. lego annum 1608.

SCIPIONIS MERCURII *Commare o raccogliatrice*, Milan. 1618. 4. Veron. 1652. 4. &c. Liber dudum scriptus est, & Auctor anno 1568. ARANTII discipulus fuit. Anatome brevis est, cum nonnullis figuris, quaestionum abunde. Urachum ligamentum esse, allantoidem nullam docet, &c.

FRANCISCI PLAZONI *de partibus genitalibus mulierum* Libri II. Patav. 1621. 4. Leid. 1644. Lacunas obiter descripsit, & aliquas vasorum spermaticorum varietates, cæterum veteres est secutus.

THOMÆ FIENI *de formatione fetus* Liber I. Antvverp. 1680. 8. Liber II. Lovan. 1624. 8. & pro

& *pro sua de animatione fetus opinione apologia*, Lovan. 1620. 8. DOUGL. Contra PETRUM SANTACRUZ defendit sententiam suam de animatione fetus, quam ait tertio die contingere.

EJUSDEM *de viribus imaginationis* Liber Leidæ 1635. 16. Ibi limitari conatus est effectus imaginationis maternæ in fetum, & nimis fabulosa rejicere, & recte fatetur, multa imaginationi tribui, quibus nihil cum ea commune sit.

TH. FIENI dictus *de viribus imaginationis* liber Londini recusatus est 1657. 12.

MUNDINI MUNDINII *Disputatio, in qua ea, quæ de semine sunt controversa, discutiuntur*, Tarvis. 1609. 4. DOUGL. EJUSDEM *de genitura pro Galenicis adversus Peripateticos Disputatio pro animatione seminis*, Venet. 1622. 4. EJ. *Additamentum ad disputationem de generatione contra ÆMILIUM PARISANUM*, Venet. 1626. 4. (DOUGL. non bene 1625.) Refutat inprimis vulgarem opinionem, quod semen de omnibus partibus corporis decidat.

FRANCISCI SPINÆI *de hominis procreatione*. Maceratæ 1622. 4. DOUGL. *

THOMÆ REINESII *de vasis umbilicalium eorumque missione*. Lips. 1624. 4. *

A. SPIGELII *de formato fetu* Liber Venet. 1626. fol. Francof. 1631. 4. Icones habet speciosas partium muliebrium, sceleti, placentæ. Hymenem defendit.

EJ. *de incerto tempore partus*. Patav. 1618. & cum PLAZZONI editione Batava, brevissimum Opusculum.

J. CONR. RHUMEL *partus humanus, sive de partus humani natura, temporibus & causis*. Amberg. 1624. 8. *

JOH. FABRI in suis *adnotationibus ad alia animalia RECCHI* quæ cum historia Mexicana prodierunt. Habet egregiam dissectionem monstri vitulini, observationes factas in fetibus cæsareo partu editis: descriptionem vitellarii & organorum generationis in Gallina.

JOH. ELERI Liber *de partu*. Luneburg, 1626. 4. *

ANDRÆ EMMEN *beschreibung zuveyer vundergeburten*, Lips. 1627. 4. Partus uterque biceps est, quorum alter ad thoraces, alter ad umbilicum connatus erat. Anatome minime mala.

VINCENTII ALSARII a CRUCE *Disp. generalis ad historiam fetus nonimestris &c.* Rom. 1627. 4.

VICTOR CARDELINI *de origine fetus* Libri II. Vincentiæ 1628. 4.

HENRICI HOPFNER *de signis virginitatis*. Ulm. 1628. 4. inter epistolas Horstianas.

Inter Libros GUILLEMÆI conjunctim editos reperitur etiam Liber *de generatione*, collectus ex veteribus, in quo præter alia, ex suis quingentis observationibus, ossa pubis in partu laxari defendit.

GREGOR. NYMMAN *de vita fetus in utero*. VVittemberg. 1627. 4. Fetum sibi vivere defendit, & causam motus cordis in ipso fetus corde esse, etiam experimento adducto. Respirare fetum credit. Recusus est cum PLAZZONI jam citata editione.

C. HOFMAN *de generatione hominis*, Franc. 1629. fol. Pro ARISTOTELE in GALENUM, doctior quam utilis. EJ. *de generatione hominis* Disp. prodiit. Altdorf, 1625. 4.

C. BAUHINI *de hermaphroditorum monstroforumque partuum natura* Libri II. Francof. 1629. 8. Ingens collectio cum paucis propriis experimentis.

N. HABICOT bonas aliquas de foramine ovali observationes habet, fero claudi, celeriter vero arteriosum ductum, &c.

ALPHONSI de CARANZA *de partu naturali & legitimo*. Madrit. 1626. Genev. 1630. 4. accessit ANNIBALIS FABROTTI *de tempore humani partus & numero puerperii* liber. Aquis Sextiis editus 1629. 4. Jurisconsultus utique doctus in suis, in nostris aliorum stat judicio. Partus annuos recte excludit, Leges tuetur.

DANIELIS WINKLER *animadversiones in NYMMANNUM*, Lips. 1630. 4. Vitam fetus a matre esse, ratiociniis potius, quam experimentis demonstrat.

ÆMILII PARISANI Libri *de genitalium semine* II. *de similitudine ad parentes* Liber, *de primis fetus materiebus, de procreationis modo ac ordine* Liber EJ. *par & sanius judicium de seminis a toto corpore casu* contra MUNDINUM, Venet. 1623. fol. EJ. *de seminis a toto provenitu* Lapis Lydius. Venet. 1635. fol. & alius *Lapis Lydius de seminis a toto provenitu*, Venet. 1638. fol. Omnes bono fructu perinde cassi.

VINCENTIUS ROBINUS an. 1632. 4. Divione edidit *synopsin rationum* T. FIENI & ad-
ver-

Hiscce rite perlectis legatur **GUILIELMUS HARVEIUS** (a), in illo nulli umquam

versariorum, de animatione fetus tertia die facta, & **FIENUM** defendit (**NICERON**).

J. SPERLING de monstris. VVittemb. 1635. 4.

MATTH. ANDR. LAURENTII *σκέψις* monstrorum. Lips. 1639. 4.

MICH. RUPERTUS BESLER *admiranda fabrica muliebrium partium generationis & fetus delineatio*, Norimb. 1640. 4. Amplissimæ tabulæ sunt, quarum quæ de fetus viis propriis, valde ad **FABRICIANAS** accedunt. Icones pleræque rudes. Vesicam fetui majorem, urachum solidum, uterum gravidum duarum unciarum crassitie, ova muliebria bene pinxit.

HENNINGI ARNISÆI *de tempore partus* Liber. Franc. 1641. 12. More veterum scripsit, veram tamen sententiam defendit, partumque ad finem noni & initium decimi mensis definivit. Aliquas etiam observationes adfert, & ipse urachum vesicæ ligamentum facit.

LOUISE BOURGEOIS *observation sur la stérilité, perte des fruits, &c.* Libri I. II. III. Paris. 1642. 8. quæ editio altera est. Multa utilia apud eam feminam inveni, descriptiones variorum ovorum humanorum, & alia.

J. BENEDICTI SINIBALDI *Geneanthropia, sive de generatione hominis Pentateuchos*, Romæ 1642. fol. Franc. 1669. 4. Anatome nulla, historiæ aliquæ practicæ, neque ipsæ forte satis certæ, multum fabularum, & inutilis obscoenitatis.

GEO. BOUDEWYN, *Estne decimestris partus perfectissimus*, Lutet. 1642. 4.

ECCARI LEICHNER *Disp. de generatione*. Erfurt. 1643. 4. & *Exercitationes Antiperiparetica XX. de generatione, sive propagativa animalium, plantarum & mineralium multiplicatione*. ibid. 1649. 4. B. RIV.

RUPERTI BESLER *observatio anat. med. trigeminorum*, Norimb. 1644. 4. Placenta unica fuerat. Cordis vasa in fetu usu esse promiscuo docet.

In **J. VESLINGII** *syntagmate* fetus bonæ satis icones exstant.

DOMINICUS PANAROLUS hymenem bene descripsit & pinxit in *quinto Jatrologismo*.

In **PAULO ZACCHIA** plurima ad partum, virginitatem, aliasque de partibus genitalibus quæstiones exstant: tum in aliis Medicinæ forensis Auctoribus.

MAURITIUS HOFMANN *de generatione & usu partium eidem inservientium*. Altdorf. 1661. 4.

NICOLAI le MAIGRE *Monstri an. 1649. in lucem editi historia*. Paris. 1650. 8. *

CAROLI LUSSAULA *functionum fetus officialium assertio cum exercitatione adversus PHILIPPUM le HOUST* Niort. 1651. 8. Una prodiit **PHILIPPI le HOUST** *exercitatio contraria adser-tioni CAROLI LUSSAULÆ de functionibus fetus officialibus*. Niort. *

NATHANAEL HIGHMOR *history of the generation examining the opinions of different authors, chiefly of K. Digby, and a description of generation in plants and animals*. Lond. 1651. 12.

ANTON. DEUSING *Diff. dua, altera de lacte & nutrimento fetus in utero*. Groning. 1651. & 1655. 12. *Anatome parvorum naturalium*. ibid. 1651. 4. Idem in *Institutionibus anatomicis* vasa lactea uteri ex cane descripsit. *EJUSD. genesis microcosmi* prodiit 1653. ib. 1665. 12. in qua editione acceperunt cura secunda de generatione & nutritione, quibus **COURVEUM** refutat, & pro nutritione fetus per os pugnat. *EJUSD. DEUSING. Liber de fetu Mussipontano*, Groning. 1661. 12. *EJUS. fetus Mussipontani secundina*, Groning. 1662. 12. Et *vindicia fetus extra uterum geniti*, Groning. 1662. 12. Contra personatum **BERNARDUM a DOMA** Bartholini discipulum acriter invehitur.

BALDUS BALDUS in ovis quadrupedibus ova depinxit.

In **PECQUETI** editione posteriori exstat historia hominis, cui viscera inversa fuerunt, ut dextra essent, quæ sinistra esse solent, & vicissim. **MENTELLI** opus **CL. AUZOUT** ibidem vasa omphalomesenterica descripsit.

JOSEPHI MANCUSI *de partu dierum 238. quod non sit legitimus, sed octimestris, minimeque vitalis*, Panorm. 1651. 4.

(a) **GUIL. HARVEI** *Exercitationes de generatione animalium, de partu, de membranis ac humoribus uteri, de conceptione*, Lond. 1651. 4. Amstelodami eod. anno 12. & Anglice Londin. 1652. 8. Leidæ cum **ALBINI** præfatione recusæ sunt 1737. 4. Has solas schedas senescenti amico extorsit flagitationibus suis **G. ENTIUS**, dignissimas, quæ conservarentur. Habet gallinæ organa genitalia, mutationem partium successivam in ovo incubato, per singulos dies: anthro-

quam comparando Tractatu de Generatione Animalium. Si CAROLUS I. diutius vixisset (a), & Anatomico suo HARVEJO sumtus suppeditasset, ut quidem inceperat, ab eo viro optima quæque habuissimus. Sed etiam nunc constat, melius opus non exstare, quam sunt egregii duo Tractatus HARVEII. Verum fatali bello civili omnia reliqua conbusta & perdita fuerunt (b). HARVEII Libello nemo carere potest, qui præcedentes Auctores pertractavit.

Post

anthropogoniam egregiam, dissectionem Damarum aliquot (ex qua in errorem incidit, semen in uterum non recipi) perpulchra multa de partu, de vi propria uteri, &c. Urachum recte negat pervium esse. Epigenesin statuit, ubique fere, paucis exceptis, verus, ingenuus, & solers. Ova non aliter intellexit, nisi membranam liquore plenam.

Injustum autem est nimiumque iudicium BUFFONII, quando HARVEIUM ait vix habere quidquam, nisi ex ARISTOTELE, *Histoire naturelle* II. p. 79.

(a) Nihil omnino a Rege habuit, nisi duodecim Damas l. c. p. 228.

(b) Adversaria sua periisse & multa ex anatome insectorum ipse queritur *Exerc.* 67.

HIER. KORNMANN de virginitate, virginum statu, & jure. Hagæ 1654. 12. * Norimb. 1679. 12.

STEPHANI RODERICI CASTRENSIS Liber de natura muliebri. Han. 1654. 4. Franc. 1668. 4.

JOH. CLAUDII de LA COURVEE paradoxa de generatione fetus. Dantisc. 1655. 4. HARVEII experimentis usus nihil fere addidit, nisi ratiocinia. Docuit aquam chorii, & aquam amnii, distinctas esse, & utramque alere, hanc primam, denique & illam a fetu per os fugi, nihil subire per umbilicum, nisi aliquid aëris a matre, &c.

WHARTONUS de amnio, ovariis, placenta, &c. varia habet.

REN. DESCARTES de homine & de formatione fetus. Editio mea est cum notis LUDOVICI de la FORGE. Amstel. 1677. 4. alia Leid. 1672. 4. alia Gallica, Amstel. 1680. 4. Explicat mechanice, quomodo potuerit machina humanæ similis oriri ex semine utriusque parentis effervescente, sibi que inducente cuticulas secundum leges mechanices. Pertinaciter tuetur contra HARVEIUM erroneam theoriam de cordis motu.

LAURENTII VELTHUSII de Liene & generatione, Ultraject. 1657. 12. Excerptit HARVEII experimenta, & nescio quas, nobis inutiles, addit ratiocinationes.

LUD. de BILS beschryving van een vranschepzel, Middelburgi 1659. 4. & Latine Roterodami 1661. 4. Paradoxum monstrum, si satis verum, cum pene in faciem translato, &c.

MARTIN SCHOOK de signatura fetus. Groning. 1659. 12. Compilatio navorum absque experimento proprio.

JOH. ZWINGER de monstris eorumque causis & differentiis. Basil. 1660. 4. *

J. ZWINGER & CÆSO GRAMM de monstris Basil. 1660. 4.

GEORGII SEGER de Hippocratis orthodoxia in doctrina de nutritione fetus humani. Accedunt Dissertationes dua: Una de Democriti heterodoxia in doctrina de nutritione fetus in utero; altera de coryledonibus. Basil. 1660. 4. Theoria complicata est. Nutriri fetum per umbilicum sanguine materno; & lacte materno pariter per umbilicum, & liquore amnii, qui a vasis quibusdam lactiferis placenta oriatur.

HONORATI MARIÆ LAUTHIER Prodigium, fetum nempe humanum extra locum conceptum, lapideum, &c. Aix. 1660. 4. De Mussipontano fetu agit, & in collectione STRAUSIANA reperitur.

JOH. SPERLING de formatione fetus in utero, VVittemb. 1661. 8. Inutilis.

HENRICI EYSSON Diss. de fetu lapidefacto per 20. annos retento. Groning. 1661. 12. *

STEPHANI WILLET de ostento Dolano, Dolæ 1661. 4. * MERCL.

ANTONII EVERARDI novus exortus hominis & animalium. Medioburgi 1661. 12. & cum falso titulo Cosmopolita historia naturalis, Leid. 1688. 12. Habet de generatione Cuniculi minime mala & propria experimenta, pro successiva formatione fetus, etsi lactea vasa uteri non optime admittat. EYUSD. lux ex tenebris affulsa ex viscerum monstrosi partus enucleatione. Medioburgi 1661. 12.

In

In *JOH. van HORNE* microcosmo fetus monstrosi descriptio habetur : & alia in *SCUL-
TETI* armamentario , alia in *C. V. SCHNEIDERI* Lib. de Corde.

C. DRELINCOURT de partu octimestri vivaci , Parisiis 1662. 12. Errorem epidemicum refutat.

FRID. MOELLER de partu 175. dierum vivo , Custrin. 1662. 12. Ut demonstraret ejus ætatis partum vitalem esse posse , eum septimestrem facit , partim menses admittendo lunares , partim inceptos & imperfectos menses numerando , non tamen absque ingenio , sed ita ut causæ serviat.

ARNOLDI SENGUARD ostentum Dolanum , Amstelod. 1662. 12. Historia fetus indurati , se-
decimo a conceptu anno in abdomine reperti. Aliqua de fetu Mussipontano.

In *T. CORNELII Progymnasmatibus* , quorum prior editio est 1663. 4. varia huc spectant , & totum Programma de generatione , & liquor naturalis in utero fluens.

PIHRINGER de monstro. VVittemb. 1664. 4.

J. C. WEPFERRI historia anatomica de puella sine cerebro nata . Scaphus. 1665. 8.

J. THEOD. SCHENK de conceptione. Jenæ 1664. 4.

N. STENONIS f. in *Specimine observationum anatomicarum*. Hafniæ 1664. 4. ductus om-
phalo-mesentericos , resorbtionem vitelli in intestina , multas vero de ovo & pullo & de
ovis viviparorum animalium corporibusque luteis observationes edidit in *Actor. Hafniens.*
ann. II. Ova humana primus agnovit in specimine myologiæ , etiam *SWAMMERDAMIO*
fatente in prodromo.

G. ROLFINK methodus partium generationi dicatarum cognoscendi fabricam . Jenæ 1664. 4. Eru-
dite , Græce , flosculis ex Comicis decerptis , textibus Aristotelis & Galeni copiosissimis ,
utriusque sexus tradit organa , sed sua propria vix adfert , etsi demonstretur in præfatio-
ne , Rolfinkium publice pro *FABRICIO* ab *AQUAPENDENTE* Patavii secuisse . Hymenem
negat . In *Dissertationibus* anatomicis idem fetum bicipitem unicorporeum descripsit .

JAC. BARLINI Disp. de feminis ex suppressis menstruis barbatis . Altd. 1664. 4. *

FRANCISCI VERDE observationes de fetus animationis & nutritionis tempore . Lugdun.
1664. 4. * *MERCL.*

G. RIVA in rarissimis iconibus anatomicis habet trigeminorum , & monstri anatomen .

MICH. HEYLAND de monstro Hassiaco , Gieß. 1664. 4. & 1677. 8. *MERCL.* Egregia & ac-
curata est descriptio fetus bicorporei , capite unico . *IDEM* ediderat 1655. 4. Disp. de prin-
cipiis generationis corporis humani materialibus .

In *Phil. Transactionibus* plurima huc pertinent .

Caput vituli monstrosus , n. 5.

Androgynus , sed vera , ut videtur femina , n. 32. alius ibid. alius , n. 186.

Cor testudinis , n. 36.

W. DURSTON monstri figura , n. 65.

Viscera inversa , n. 107.

GREAVES de modo excludendi pullos in Ægypto , n. 137.

BRIGGS monstrum porcinum , n. 142.

LEEUWENHOECH contra systema ovorum , n. 145.

Conceptus super conceptum , n. 149. 243. 302. 461.

Ossa , pili , dentesque in ovario , n. 150.

Monstri descriptio , n. 160.

MALPIGHII de uteri fabrica , n. 161.

C. DRELINCOURT experimenta anatomica de ovo & utero , n. 169.

Fetus in tuba sedens utero integro , n. 170.

WALLER de girinis (*frog spawn*) , n. 192.

BUSSIÈRE partus tubarius , n. 207.

DUVERNEY ex vasis uteri via in uterum , glandulæ uteri , n. 26.

Ova anguillarum *ALLEN* , n. 321.

Partus cum vagina coalita , n. 237.

HARTMANN embryo quatuor septimanarum .

SOUTHWHEEL vitulus biceps , n. 238.

Generatio pulicum , n. 249.

- BUSSIÈRE fetus absque cerebro, n. 251.
 Porcelli caput monstrosum, n. 259.
 Uterus puerperæ, n. 269.
 RICH. HALE Allantois humana & ejus anatome, n. 271.
 DRAKE & COWPER pro communicatione vasorum placentæ & uteri, n. 281.
 Mens ex toto corpore, n. 303.
 Catulus absque ore genitus COKBURN, n. 304.
 Urachus solidus: hymen verus: lactea uteri; uterus crassus in gravida A. de MARCHET. n. 307.
 Monstra CAMELI, n. 307.
 Uterus gravidus ejusque glandulæ DOUGLAS, n. 308.
 Monstruosi partus, n. 308. 311.
 Felis extra uterum, n. 323.
 Vagitus uterini exempla DERHAM, n. 324.
 A. VAN LEEUWENHOECK ovarium mytuli & ejus animalis generatio, n. 336. De mamma elephantis IDEM ibid. testacea absque mare generare ibid. de fetu & genitalibus ovis, n. 373. & de generatione animalium, n. 380.
 Caput vituli monstrosum, n. 337.
 Tubæ cæcæ, n. 337.
 Partus duplex, n. 377.
 Fabrica non naturalis pudendorum, n. 384.
 RANBY arteriæ novæ ovarii, n. 395.
 NICHOLLS de sexu locustarum marinarum & androgynis in eo genere, n. 413.
 Fetus in ovario, n. 416.
 SUPERVILLE de monstris, n. 456.
 Le CAT de foramine ovali, n. 460.
 Homo cui adnatus ex pectore alter homo, n. 453. 461.
 Partus similis simiæ, n. 461.
 DE TORRES cor situ motum & inversum, n. 461.
 Fetus genitalibus monstruosis, n. 462.
 Partes genitales monstruæ in recens nato, n. 464.
 Acaros virgines parere BONNET, n. 470.
 Fetus tubarius, n. 475.
 Partus ossium per anum, n. 477.
 Singulare monstrum. J. PARSONS de monstris. n. 487.
 J. C. WEPFER *historia anatomica de puella sine cerebro nata*, Scaphus. 1665. 8. * Sed repetitur in E. N. C. In Libro de cicuta aquatica uteri humani anatomen tradit.
 In HONORATI FABRI L. II. de plantis & de hominis generatione, Paris. 1666. 4. Norimb. 1677. 4. De rebus sibi parum cognitis scripsit audaculus. Circulationem sanguinis sibi tribuit: si boni aliquid habet, id est de oculis.
 In J. L. BAUSCH de atate. Lips. 1665. aliquæ monstrorum historiæ, & partuum difficultas existant.
 J. PEYSSONEL de temporibus humani partus secundum Hippocratem, Lugd. 1666. 8. Partus terminum brevissimum die 182. definit, longissimum 282.
 GOTTFRIED WEISCH de gemellis & partu numerosiore. Lips. 1667. 4.
 THOMÆ BARTHOLINI de insolitis partus viis. Hafniæ 1668. 8. Scriptum est occasione feminæ Lalandicæ, quæ 18. anno fetum per ulcus hypogastrii ediderat. Ea occasione multa alia similia exempla collegit. EJUSD. *historia monstrorum nuper in Dania natorum*. Hafn. 1665. 8. cum Tractatu de cometis prodiit. Ediderat jam Basil. an. 1645. orationem de monstris in natura & medicina.
 In ACTIS HAFNIENSIBUS T. BARTHOLINI multa huc spectant.
 In T. II. monstra, generatio ranarum, N. STENONIS observationes in ovis viviparorum.
 In T. IV. glandulæ uteri, ova animalium, renes quadruplices, monstra.
 T. V. C. BARTHOLINI de ovariis mulierum observationes.
 THOMÆ ALDES *Dissertatio epistolica contra HARVEIUM interpolata & auctior* 1667. 12. Bona, observationibus propriis dives, etsi brevis epistola. Duplices aquas HARVEII refutat.

futat. Allantoidem homini recte denegat. Communicationem uteri cum cotyledonibus habet.

Contra eum JOH. de ANGELIS *Vindicias ab epistola T. SLADE* edidit eodem anno, & eodem loco. Excusationibus fere pugnat, non experimentis.

Invenio autem THOMÆ ALDES (f. MATTHÆI SLADI) *Observationes in ovis factas & sciagraphiam pulli in ovo & fetus in utero, nec non Friderici Ruyschii observatiunculam de ovo in utero humano, cura CAROLI SCHÆFFERI* Hallæ prodiisse 1674. 12. B. RIV.

GUALTHER NEEDHAM *de formato fetu.* Lond. 1666. 8. Amst. 1668. 8. Egregius Liber & per experimenta natus. In variis animalibus uterum fetusque incrementa observavit, errores populares plurimos refutavit, ut flammulam cordis, aëris in sanguinem receptionem, vasa lactea ab utero ad mammas euntia. Vasa omphalo-mesenterica distinctius descripsit. Hominem ipsum secare ipsi non contigit.

In *Diario Eruditorum* 1667. experimentum exstat de catella, quæ, cum sanguinem multum amisisset, fetus peperit exsanguis. In eodem Diario multa monstra describuntur annis 1677. 1680. 1684. 1698. (pectore nuda corda) 1727. Vagitus uterinus 1686.

Fetus cerebro & cerebello destitutus 1690.

Partus 22. mensium 1695.

SAVIARD fetus extra uterum, 1696. gemelli per pelves oppositi, 1707. (iidem qui descripti a DUVERNEYO.)

Anno 1678. exstat RAINSANT *examen de l'histoire de l'enfant de Toulouse*, de Bayleano nempe fetu explicatio.

An. 1694. POUPART de partibus genitalibus limacum.

1695. BUSSIERE de ovario, &c.

JANI ORCHAMI *de generatione animalium*, Colon. Brandeb. 1667. 12. Verum Auctorem ait BARTHOLINUS vocatum esse JOH. VORST. Defendit ex utroque semine componi fetum, & masculum sperma omnino in uterum venire, contra quam sit HARVEIO visum.

LAUR. STRAUSS *historia fetus Mussipontani*, Darmstad 1662. 4. Francof. 1669. 4. In hac editione primo STRAUSSII exstat fusa de fetu diu in feminæ abdomine gestato expositio, qua etiam ova aliqua humana describuntur; deinde DEUSSINGLANA jam dicta: tum HONORATI MARIÆ LAUTIER prodigium, ad eundem pertinens fetum, & responsio calidissima contra anonymum quemdam Massiliensem: denique collectio judiciorum doctorum virorum, GUIDONIS PATINI, qui totam historiam pro fabella habet, EISENMENGERI, hoc utilius, & aliorum. EJUSD. STRAUSSII *de ovo Galli*, Giesl. 1669. 4. Extra uterum ova gigni non posse, fuse & parum utiliter defendit.

Collectanea de diuturna graviditate. Amstel. 1662. 12. video citari. *

JOH. MAYOW habet inter Tractatus suos etiam de respiratione fetus, & de ovo differentiationem, & de succo uteri, nutritione fetus, usu aëris in ovo.

PETRI le MERCIER *potestne infans per plures annos in utero matris ejusque tubis sanus superstite muliere conservari*, Lutet. 1667. fol.

J. SIMONIS *diversicolor fetus*, Vvittemb. 1668. 4.

FRANC. REDI *esperienze intorno la generazione degl' insetti*, Firenze 1668. 4. Refutat epidemicum errorem generationis æquivocæ, & nihil ex putredine nasci evincit, nisi quod animalcula in gallis ex anima vegetante arborum gigni credat.

IDEM in Libro *degli animali viventi negli animali viventi* monstrum serpentis bicipitis describit.

H. MEIBOM in *Disp. de motu sanguinis*, &c. Helmst. 1668. 4. ostia arteriarum capillarium uteri, per quæ menses fluunt, & descripsit, & seta immissa exploravit.

NICOLAI HOBOKEN *anatomie secundina humana*, Ultraject. 1669. 8. & *anatomie secund. hum. repetita*, ibid. 1675. 8. In prima editione maculas habet arteriarum, valvulasque & spongiosam fabricam funiculi. Altera potius novum Opus est, multaque ornatius proposita habet, membranam mediam fetus adsertam, icones Auctoris manu pictas, physiologiam brevem. Ordo minus commodus, cum secundum cadavera observationes disponat, multas adeo repetat.

G. FRID. RALLII *de generatione animalium*, Stettin. 1669. 12. Originem animalis ex ovo defendit, & quidquam, præter motum, a mare negat conferri. HARVEIUM adeo contra ORCHAMUM tuetur, parum tamen ipso in experimentis usus.

J. SIGISM. ELSHOLZ de conceptione tubaria, Colon. Brandenb. 1669. 4. Fetus tubarum a *VASSALIO* Chirurgo in *Phil. Transf.* & alibi descriptum considerat. Fetus etiam meminit, cui viscera ob naturalem involucrorum defectum extra abdomen fuerant.

FRANCISCI BAYLE de menstruis mulierum, sympathia partium corporis humani cum utero, usu lactis ad tabidos, Tolos. 1670. 4. 1681. 12. &c. & *de causis fluxus menstrui mulierum, sympathia rarior partium cum utero & lactis usu*. Hag. 1678. 12. Fermentum invocat, quod eum fluxum promovet, collectum in sinibus cavernosis uteri. *EJUSDEM* Tract. IV. est *de generatione animalium*; & inter *Dissertationes physicas* III. *de formatione fetus*. Idem in *L. de corpore animato*, refutat omnia primordia fetus, eumque ex materia immediate figurari contendit, ex cohaesione particularum similium, quæ opinio nuper renovata est. Idem porro in *histoire d'un enfant qui a demeuré 25. ans dans le ventre de sa mere*. Paris. 1679. 12. tradidit descriptionem fetus, qui 25. annis in ventre manserat incorruptus, substantia gypsea obductus, cum per ulcus uteri erupisset.

FR. BAYLE duobus prius citatis libris sympathiam a vicinia, vasorum communione & nervis derivat.

In *EPHEMERIDIBUS NATURÆ CURIOSORIUM*.

Placentæ excarnatæ sceletos *ELSNER*. Dec. I. Cent. I.

J. J. WEPFER Arietis androgyni optima descriptio Dec. I. Ann. 3. Obs. 167.

D. LUDOVICI de tempore partus cervorum Dec. I. Ann. 8.

J. M. HOFMANN bona descriptio monstri Dec. I. Ann. 9. 10. & II. a. 4.

Fetus corde destitutus *SCHELHAMMER* Dec. II. Ann. IX.

P. J. HARTMAN de epigenesi. Ovum humanum. Monstra Dec. II. Ann. 10.

A. VALLISNERI Ova anguillarum Cent. I. II.

Urachus apertus *HEISTER* Cent. III. IV.

BLISCHER monstrum ibid. Cent. IV.

Ovum humanum Cent. V.

Fetus ore impervio Vol. II. Obs. 96.

Cor in latere dextro & Monstra varia Vol. IV.

Partus tubarius Vol. V. & fetus bicorporeus Vol. eod.

RITTERI & mea epistola de fetu intestinis nudis Vol. VII.

Agnus monocolus *ALBRECHT* Vol. VII. Obs. 102.

GRASHUYS puer male formatus similis androgyno Vol. VIII.

Sed infinita alia hic reperies, quæ recenseri non possunt.

THEODORI KERKRING in *Antropogenia*, Amstel. 1671. 8. Ova humana & sceletos aliquos tenuiores describit. Non ubique fidem invenit, qui alioquin non ita vixit, ut ab ejus ingenuitate pendeas, & olim a *SWAMMERDAMIO* in *prodromo*, & a *LA MOTTE* de *la generation* ea de re postulatus sit. Idem in *Spicilegio* placentæ vasa, & monstra aliqua, & alia huc pertinentia habet.

R. de GRAAF epistola de nonnullis circa partes genitales inventis novis. Leid. 1668. 16. *
De organis generationis muliebribus, Leid. 1672. 8. In priori promittit, quæ in posteriori elegantissimo opere exstant, quod maturius illo de virorum genitalibus, & melius est, & icones pulchriores habet *SWAMMERDAMIANS*, & egregias observationes in cuniculis factas, de ovi receptione & incremento corporibus luteis, &c.

Ejusdem partium genitalium defensio adversus SWAMMERDAMIUM. Leid. 1673. 8. acris est, & animosa, cum æmulis de inventionis gloria male conveniret. Aliquæ ibi observationes, plexus vaginæ cum clitoride non communicare. Opera omnia prodierunt, Leid. 1677. 8. Plagiarium esse, & *HORNIUM* exscripsisse atrociter, & præter verum scripsit *A. O.*

GOELICHE hist. anat. antiqu. p. 142. 143.

JOH. ARN. FRIDERICI Disp. de conceptu. Jen. 1670. 4. B. RIV.

EJUSD. de rentigine, de secundinarum natura & usu. Disp. Jen. 1671. 4.

J. FRID. SCHEPFER Omphalographia. Giesf. 1670. Disp.

NICOLAI HOBOKENI anatome secundina vitulina, Ultraject. 1672. 8. Bonum omnino Opus: corpora etiam lutea ex vaccis habet, icones nitidas, Auctoris manu pictas. Corpora lutea descripsit.

In *Diario Eruditorum* 1672. multæ observationes de viis ovi per tubam in uterum ex variis animalibus referuntur.

In WILHELMI ten RHYNE *Vet. Med.* monstrosæ circa genitalia fabricæ in viro historia habetur.

Prodromus de partibus genitalibus in utroque sexu sub JOHANNIS van HORNE nomine editus erat Leidæ 1668. 16. quo Libello SWAMMERDAMIUS non nominatur, qui tamen, ære quidem HORNII, pleraque experimenta ipse instituerat. Eum Libellum recudi iussit SWAMMERDAM, & notis ornavit, vocavitque *miraculum natura*. Leid. 1672. 4. 1679. 4. 1717. 4. Editio prima a sequentibus differt iconibus coloratis, & Tulpii insignibus in T. III. nam cæterum paginae sibi respondent. Recusus est 1685. 4. cum J. M. HOFMANNI *Diff. anatomic. pathol.* & Londini solum 1680. 8. (HARL.) Cum nempe GRAAFIUS, si SWAMMERDAMIO fides, multa sibi tribueret ipsius & HORNII inventa, postulavit eum furti, & ad Societatem Regiam Londinensem provocavit. Icones ibi equidem ad siccitas partes, quod minus placet, & rudiusculæ, sed plurima bona habet. Hymenem contra GRAAFIUM tuetur, ligamenti teretis naturam exponit, & alia etiam de injectionibus, reformatione chyli in venas mesentericas, &c. non vulgaria subiecit. Idem in *bibliis natura generationem apum, ranarum, aliorumque insectorum minutissime descripsit: in historia insectorum ranarum metamorphosin, evolutionem pulicis, pediculi, &c.* Systema evolutionis, ut vocant, ad SWAMMERDAMIUM proprie pertinet, natum ex insectorum metamorphosis.

FR. HOFMANNI patris *Cardianastrophe admiranda*, Lipsi. 1671. 4.

MATTH. TILING *anatome placentæ* 1672. 12. *de tuba uteri & fetu nuper in Gallia extra uteri cavitatem in tuba concepto*. Rintel. 1670. 12. & *de fetus in utero nutritione*. Brem. 1698. 4. Compilator.

J. C. BRUNNER *de fetu monstroso*. Argentor. 1672. 4. Bona descriptio.

MARCELLI MALPIGHII *de formatione pulli* Liber Londini 1666 4. & in collectione operum. Duæ sunt Epistolæ præstantissimi viri, quibus egregie de veritate meritus est, cum successivam evolutionem cordis viscerumque pulli multo melius reliquis Auctoribus, & per minutiora intervalla expresse. Idem in *Epistola ad JAC. SPONIUM* vasa mucosa, ramosa, uteri vaccini describit, quæ data est an. 1681. In *posthumis* aliquot ova humana recensuit. Corpora lutea etiam fuisse descripsit, & ovum intra hujusmodi corpus, ex ejus mutatione, nasci credidit. Duæque mucosæ uteri vaccini invenit.

M. MALPIGHII *de formatione pulli* liber Londini recusus exstat 1673. 4. Gallice etiam versus cum tractatu *de bombyce*, Paris. 1686. 12. prodiit.

In *Mémoires & Conférences de DENIS* aliquot monstra describuntur.

La génération d's œufs défendue, par EUDOXE & PHILOTIME contra ANTIGENE, Rouen 1672. 12. Dicitur in B. PL. Auctor esse PHIL. de HOUEVILLE.

LOUIS BARLES *nouvelles découvertes sur les parties de l'homme & de la femme*, Lion. 1673. 12. Inutilis repetitor inventorum ejus ævi, KERKRINGII, & aliorum.

DAVID van der BECKE *amanitates physica*. Hamburg. 1674. 8. 1703. 8. Ideas plasticas defendit, & animas vegetabiles.

SIM. FRID. FRENCEL *monstrum humanum, ventribus sine proportionem & mutilis artibus*. VVittemb. 1674. 4. B. PL.

ANDRÆ GERET *infans monstrosus Wittembergæ genitus*, ibid. 1674. 4. Disp.

G. FRANK *de castratione mulierum*, Heidelberg. 1670. 8. *de testibus virilibus & muliebribus*. Heidelb. 1674. 4. *de impuberibus generantibus* ibid. eod. anno. EJUSD. *Dissertatio de superfetatione*, ibid. 1676. *de sanguine menstruo per se non malo*.

GERHARDI BLASII *de fetu humano*. Amstel. 1675. 4.*

Anatome monstri Francofurtensis obiter facta per J. U. S. H. D. M. P. Heidelberg. 1674. 4.*

G. W. WEDEL *de menstruis*, Jen. 1674. Disp. *De consensu partium* 1686. *Venus medica & morbifica* 1688. *de notis gravidarum*. 1690. Disp.

G. W. WEDELI etiam est *de navis maternis*, Jen. 1688.

ADALBERT TYLKOWSKY *disquisitio physica ostendi duorum puerorum, quorum alter cum dente aureo, alter cum capite giganteo Vilna spectantur*, Olivæ 1674. 12. Insulsa fabula hydrocephali & fraudulentis procul dubio portentis.

Observationes & historia ex GUILLIELMO HARVEIO collectæ. WILHELMI LANGLEY *de generatione animalium observationes quædam*, cujus experimenta in cuniculo facta, similia GRAAFIANIS, perierunt. JUSTI SCHRADER *inspectiones ovorum, & observationum*

anatomico medicarum Decades IV. Amst. 1674. 12. Prima particula est *HARVEII* Liber de generatione conceptus, & observationes in ordinem dispositæ. In altera Medicus Dordrace-nus suas in incubatis ovis & in ovibus dat observationes, quarum aliqua *HARVEIO* ad-versantur. In *SCHRADERIANIS* multa bona & rara reperiuntur præceptorum ejus viri *RUYSCHII*, *F. SYLVII*, *J. SWAMMERDAMII*, *JOH. van HORNE*, quæ omnia vix alibi exstant.

JEREMIAE LOSS de ovario humano. VVittemb. 1675. 4.

Ovum Harveianum generationis animantium curiosum, &c. Kiel. 1675. 4. *

HIERONYMUS BARBATUS in Libro de formatione, conceptu & organisatione fetus, jam citato, & edito Patav. 1576. 4. materiem fetus a femina, spiritum seminalem, qui effor-met, a viro venire, vascula ovarii albo liquore plena esse, modulos dari scribit, secun-dum quos formentur partes spermaticæ, unde fetus corpusculum nascatur, vidisse se fe-tum tubarium, &c.

PAULI AMMANNI paranesi ad discipulos & docentes respiratio fetus defenditur, & fe-tus humani abortivi describuntur.

C. BARTHOLINI de ovarii mulierum & generationis historia. Rom. 1667. 8. (*MERCL.*) Amstel. 1678. 12. In priori Epistola Romæ edita, describit prostatam illam femininam, & auram seminalem defendit. In altera, quæ primum Amstelodami prodiit, *HIERONYMUM BARBATUM* refutat. *IDEM* jam in Libro de diaphragmate ductus ramosos, fibras muscu-lares, uteri, glandulas ad latera vaginæ descripserat ex *DUVERNEY* fere experimentis, & in Miscellaneis quasiverat, an fetus nutriatur a sanguine matris.

C. BARTHOLINI de ovarii, &c. historia recusa est Norimb. 1679. 8.

J. BOHN disputatio de generatione, Lips. 1677. 4. de fetus æconomia, ib. 1677. 4.

HENR. CHRISTIANI HENNINGS de hominis generatione. Ultraj. 1677. 4.

GOTTFRIED von LANKISCH beschreibung einer Mißgeburt, Zittau. 1679. 4. Fetus abs-que corde & capite.

CONRAD BRODTBECK de sanguine menstruo. Tubing. 1679. 4.

RUMMEL de fetibus leporinis extra uterum repertis epistola. Ulm. 1680. 4.

FRID. WILHELM SCHMUCKER de spielenden natur Kunstverke. Argent. 1679. fol. cum continuationibus quatuor, quæ prodierunt an. 1679. 1680. 1682. & 1683. In prima deca-de habentur monstra vera humana, & eorum unum cum anatome. In reliquis varia ra-ra, maxime monstrosa, aut undique collecta exstant.

In *NICOLAI BLEGNY Zodiaco Medico Gallico* multæ monstrorum historiae sunt, *DUVER-NEI* etiam aliqua contra ova *GRAAFIANA* objectiones, & *NOVESII* suorum ovorum descriptio, quæ in cervice uteri nidulantur.

In *STEPHANI BLANCARD jaar register Cent. V.* de respiratione fetus fuse disputatur, ut supra dictum est.

JOH. CONRAD. AXT de partu septimestri an sit legitimus. Jen. 1679. 12. Cordatus ho-mo non adeo incertum esse pariendi tempus multis argumentis docet, septimestrem fetum oportere indicia imperfectionis gestare monet, &c.

CL. PERRAULT essais de physique. Tomo tertio continetur tractatus de generatione, qua panspermiam adfirmat, sive semina plantarum & animalium in aere obvolitare & ore hau-riri. *HIPPOCRATIS* locum de diæta huc olim revocavit. Explicavit, quomodo imagina-tio nævos producere possit, dum nempe vel magis ad datum locum imaginatio nutrimen-tum determinat, vel inde avocat.

In *Actis Eruditorum.*

An. 1687. de generatione ranarum fusa & bona dissertatio.

1693. Conceptus vagina pene coalita.

1706. *NICOLAI BIDLOO* Arch. Russ. descriptio partus bicipitis.

1710. *HENRIC HEYSE* monstri bicipitis descriptio.

In *TASSINI* administrationibus fetus habetur tubarius.

J. C. PETERUS in exercitationibus anatomicis glandularum adfidentium vaginæ a *DU-VERNEY* inventarum etiam meminit.

FRID. WILH. KRAUS de ovario mulierum. Jen. 1681. Disp.

CHRIST. FRIEDERICH GARMAN homo ex ovo, sive de ovo humano. Chemniz. 1682. 4. & ejusdem oologia curiosa Zvickau. 1691. 4. Multum variæ lectionis, proprii experimenti parum.

FRAN.

FRANCISCI MAURICEAU *Opus des maladies des femmes grosses, &c.* Paris. 1683. 4. sæpe recusum, multa habet ad incrementa fetus per pondera definita, ad systema generationis, ad fetus ovorum similes abortivos, &c.

MICHAEL BERNHARD VALENTIN *de nova matricis anatome aliisque observationibus curiosis.* Gieß. 1683. 8. recusa post *Polycrēsta Exotica* glandulas vaginæ describit.

ANTON. FELICIS MARSIGLI *relazione del ritrovamento dell' uova di Chiocciola*, Bolog. 1683. 12. sive *de ovis cochlearum*, August. Vind. 1684. 8. in qua editione accesserunt J. JAC. HARDERI & LUCÆ SCHROECKII *aliquot de partibus genitalibus cochlearum* Epistola. MARSIGLIUS contra BONANNUM demonstrat, ova in cochleis esse, & ex iis ovis cochleas prodire. HARDERUS penem & uterum cochleæ describit, & REDI animam vegetabilem Gallarum refutat.

BRONCHET *Lettre a M. BRYON sur un monstre.* Paris. 1683. 4.*

CLEM. JOS. BRECHT *didymographia*, Argentor. 1684. 4. Puellæ earum similes, quas descripsi. Anatome non valde minuta, & admixta integra pene physiologia.

Tractatus anatomicus de organorum generationi dicatorum structura in utroque sexu. Francof. 1684. 4.*

J. ULR. SCHMID *de causa partus monstri.* Marburg. 1684. 4. cum iconē.

J. DANIEL DORSTEN *de monstro humano nupero.* Marburg. 1684. Disp.

MICH. BERNH. VALENTINI *de monstrorum Hassiacorum ortu* Ep. ad DORSTENIUM. Marburgi 1684. 4.

Apud BIDLOUM fetus secundum ætates non male depicti habentur, ovaque humana. Similia addit de incrementis fetus COWPERUS. *Vasa succifera fetus*, a BIDLOO proposita & a MUNNIKIO nemo invenit.

NATHANAELIS SPRYE *Tract. de fluxu menstruo*, Patav. 1685. 8. * Lunæ vim, & fermenta refutat, aucto impetui sanguinis menses adscribit.

DIEMERBROEKIUS etiam ova humana habet, & non contemnendam totius negotii generationis tractationem.

MARCI MAPPI *de aquis fetus.* Argentin. 1681. Disp.

In HARDERI *apiario* ovula Nabothi, nempe glandulæ inter uteri plicas habentur.

ANDREAS SNÄPE *discourse on the generation of animalis* post anatomen equi pro appendice est, qua series phænomenorum incubati ovi, ex propria, ut certe promittit, observatione continentur.

A. van LEEUWENHOEK præter ea, quæ passim habet de ovario inutili, descripsit etiam in *anat. Cent. II.* conceptum ovillum, &c.

GUALTH. CHARLETON *de causis catameniorum & uteri rheumatismo*, Lond. 1685. 8. Leid. 1686. 12. Menses explicat a succo alimentario, qui in acrem materiem mutatus, stagnet in sinibus uteri, quos ex BAILEO recipit, ibique distensione sua irritationem faciat, &c.

J. BAPT. a LAMZWEERDEN *historia naturalis molarum.* Leid. 1686. 8. hic citari potest, cum molas virgineas, vivaces, partus ex humana & belluina fabrica compositos, rejiciat, nimis tamen fusus & longus in ratiociniis.

J. GEORG. STEIGERTHAL Disp. *de imaginationis materna in fetum efficacia.* Helmst. 1687.

FRID. SCHRADER *de imaginationis materna in fetum efficacia*, Helmst. 1686. 4.

P. STALPART van der WIEL, CORN. FIL. *de nutritione fetus.* Diss. Leid. 1686. 4. excusa cum patris observationibus. Contendit fetum unice ali per os, & nihil quidquam per umbilicum ad fetum venire, ut placenta sanguinis unice diverticulum sit, quo interim cedat, donec pulmo explicetur. Pater etiam apud BILSIUM Urachum cæcum esse demonstravit. Habet membranam extus placentam vestientem, membranam mediam, &c.

In J. a MURALT *collegio anatomico* monstri agnini capite semiduplici habetur descriptio.

J. a MURALT etiam est *kinder und hebammen büchlein*, Basel 1697. 12. Habet partium anatomen cum iconibus BIDLOI.

In Diss. J. C. STURMII *de plantarum & animalium generatione*, Altdorf. 1687. repetitur PERRALTI theoria, & HIPPOCR. de diætâ locus eo revocatur. In historia etiam aliqua habet STOLLIIUS.

Gaudebat PERRALTUS defensore STURMIO, GEUDER *de ort. anim.* pag. 340. 341.

C. BARTHOLIN *de formatione & nutritione fetus in utero*, Hafn. 1687. 4. Experimen-

ta varia habet, & descriptionem fetus vaccini in utero adhuc latentis, ovarium tubam amplexum.

M. MAPPUS de *Acephalis*, Argent. 1687. 4. bona collectio.

DIONYSII van der STERRE de *generatione ex ovo & monstrorum productione* epistola dua, Amstel. 1687. 12. Priorem Dissertationem diximus. In altera explicat generationem navorum, nempe matris animam aliquam fibram comprimere, sic ejus incrementum impedire similia facere fetus animam, &c. Monstra etiam aliqua describit.

NICOLAI VENETTE *tableau de l'amour conjugal*. Priorem editionem ignoro, video jam 1696. prodiisse, video fuisse, qui CAROLO PATINO lascivum Librum tribuerint. LAUNAI de *la générat.* p. 123. Ceterum seminum missionem defendit, parum anatomicus.

Prima editio NICOLAI VENETTE videtur fuisse N. SALONICCHI *tableau de l'amour dans l'état du mariage*, Amstel. 1688. 12. Belgice versum a J. V. E. Amstelod. 1695. 8. de *bedryven der liefde in den stande des huwelyks*.

J. PAULI STABE de CASSINO Dissertatio ad NIGRISOLIUM, qua investigatur ratio, ob quam gallina incubant, & quare fetus maculis & monstruositatibus deturpati & parentibus similes nascantur, Mutinæ 1688. 8.

DU RONDEL *histoire du fœtus humain des Extraits de M. BAYLE*, Leidæ 1688. 12. * PL.

J. GOD. a BERGER de *conceptione fetus humani*, VVittemb. 1688. 4.

PHIL. BONANNI *observationes circa viventia qua in rebus non viventibus reperiuntur*, Romæ 1691. 4. Defendit generationem æquivocam experimentis dubiis aut fictitiis.

De GEUDERO diximus, eum post Librum de fermentis in Diss. de ortu animalium evolutionis systema & ovariorum defendere.

JOH. SCHRYER ob es ein gevvisses zeichen sey, vvan eines kindes lunge untersinkt, dass es mutter leibe gestorben sey, Zeiz. 1690. & Hall. 1745. 4. exstat etiam in M. B. VALENTINI *Pandectis Medicis*. Pugnat pro certitudine signi, quod a pulmone fundum petente pro mortuo fetu petitur, & consensum aliquorum in Germania collegiorum Medicorum adducit.

GOESGEN de *monstro*, Lipsi. 1690. 4.

ANT. NUCK *uteri feminei anatome nova cum Adenographia* prodiit, Leid. an. 1691. & alias. Experimentum profert ligatæ tubæ, ut inter ovarium & vinculum fetus reperiretur. Allantoidem statuit.

ALANUS LAMI in *Tractatu explication de l'ame sensitive* fuse systema ovariorum humanorum refutat, ob angustiam uteri, &c.

ERN. REYER de *hermaphroditis*, Arnstatt. 1688. 4. PL.

J. A. CRAMER de *glandulis uterinis*, Leidæ 1690. Disp.

LAUR. BELLINI de *ovo incubato* experimenta, quæ exstant in *opusculis*, Leidæ an. 1696. & alias recusis, demonstrant inprimis aeris progressum, qui per poros ovi subeuns sensim cavitatem in ovo sibi parat, & ejus humores comprimit. Vasa aeris accuratius describit IDEM in *epistola ad VALISNERIUM*, quæ exstat in *Giornal. de' letter.* T. II.

J. R. de HONUPHRIIS *abortus bicorporeus monocephs*, Romæ 1691. 4.

FRID. GODOFR. BARBECK de *generatione animalium*, Duisburg. 1693. 4. B. RIV.

RYCHARDUS CARR in *Epistola XVI.* demonstrat, puellas quæ dicuntur sexu mutato in mares transisse, fuisse veras feminas, sed longa clitoride.

MELCH. FRID. GEUDER de *ortu animalium*, Amstel. 1689. 8. LEEUWENHOEKIO non valde credulus, LAMYUM refutat. Defendit prima stamina in ovo. Admisceri tamen credit aliquid de paterno semine, & alere fetum, ideam etiam patris a matre fetui imprimi.

JOH. ZELLER Disp. de *subsidentia pulmonum in aqua*, Tubing. 1691. recusa an. 1747. Halæ, & ejus *vita humana ex fune pendens* an. 1692. 4. omnino observatu dignæ sunt. In ista amnii glandulas & earum oscula excretoria se vidisse adfirmat, & rationem reddere conatur, cur in brutis animalibus nulla a resecto funiculo hæmorrhagia fiat, quod ad brevitate funiculi refert. In illo fetum jam respirare in utero, nec certum esse signum fetus ante partum mortui, si pulmo fundum petierit, aut vivi editi, si nata-verit, experimentis suscepit demonstrare, quæ considerari merentur.

C. POSNER *generationis humanae descriptio*, Jenæ 1692. folio. Compilatio. Lego etiam ejus Diss. exstare de *monstris quid ea sint*, Jen. 1652. 4. & de *illorum differentia in genere atque in specie*, ibid. 1652. 4. *

Post hunc addamus CAROLUM DRELINCOURTIUM (a) de *feminarum*
P P P *ovis*

C. POSNER etiam est de *fetuum in uteris vita*, Jen. 1676. 4.

FRANC. MARIA NIGRISOLI *lettera nella quale si considera l' invasione fatta da' topi*, Ferrar. 1693. * Examinatur error epidemicus, murium nempe gravidos dari fetus.

MARTINUS LISTER in suis *Exerc. de Cochleis*, Lond. 1694. partes genitales animalculorum istorum modo androgynorum, modo sexu distinctorum, sollicite describit. SWAMMERDAMII descriptionem corrigit. In Libro fuse de generatione agit & de mensibus.

JOH. VAL. SCHEID *paradoxa circa generationem hominis*, Argent. 1694. 4. habet observationes nonnullas, ut v. gr. cæcas tubas in femina quæ pepererat.

J. M. HOFMAN de *fluidorum catholicorum fetus motu*, Altd. 1695. 4.

DOM. de SANDRIS in Libro de *ventriculo & sanguine*, Bonon. 1696. 4. aliqua de ovariiis habet.

JOH. RAJUS in *wisdom of God*, uti dixi, contra generationem spontaneam scripsit, & pro plasticis ideis.

(a) CAROLUS DRELINCOURTIUS, cum obierit an. 1697. huc omnia ejus opuscula refero. Ea sunt de *partu octimestri* 1668. 1680. de *feminarum ovis* & de *utero*, Leidæ 1684. 12. 1687. 12. cum *curis secundis*.

De *conceptione animadversaria*, 1685. 12.

De *humani fetus membranis hypomnemata*, de *tunica allantoide*, de *tunica chorio*, de *agnina*, de *fetu cum pileolo*, de *umbilico*, conceptus de *conceptu*, de *feminarum ovis*, omnia eodem anno prodierunt 1685. 12. EJ. de *femine virili*, de *utero*, *tubis*, *partu*, Libelli editi sunt cum canicidiis.

Collecta hæc opuscula exstant in editione 1727. 4. quæ certe valde confusa & imperfecta est, & repetitos habet integros Tractatus, ut recte monetur apud NICERON T. XV. Ego quidem valde in his Libellis a PRÆCEPTORE dissentio, sed Morgagnum habeo, qui mecum stet. Video eruditum virum, qui plurima legerit, qui excutiat, & refutet alios acriter & libere, sed propria experimenta alicujus momenti non invenio.

C. DRELINCOURTII de *partu octimestri* Liber primum prodit Lugd. 1666. 8. & ibid. 1668. 12.

CONR. PHIL. JIMMER de *monstruoso abortu Dessaviensi*, 1691. Disp. *

JOH. HIERONYMI SBARAGLI *scep sis I. & II. de generatione vivipara*, Viennæ 1696. (DANIELI) Bonon. 1701. 8. summa rei est ova non continere primordia animalis, cum a tuba remota sint, neque ea apte se applicare ovario possit, aut permovere ova, utilitatem adeo ovorum ignorari. Observationes aliquas habet in morbosis corporibus factas, & alias in brutis animalibus.

Nouveau progrès de la Médecine. In hoc Diario MERTIS contra ova pugnat, & ea habet pro hydatidibus, atque seminum miscelam defendit, ligamenta deferentia cava facit. Habetur etiam ibi descriptio fetus ventralis, quam Chirurgus SAVIARD aliter paulum dedit.

J. MUNNIK in brevi sua anatome observationem habet allantoidis membranæ sibi visæ, & aperti urachi. Non valde fidem invenit. Habet etiam ductus succiferos secernentes humorem Amnii, qui sunt ipsa spongia gelatinosa umbilici.

R. VIEUSSENS in *second Epitre* cicatricem ovarii, & rubam dilatatam post abortum vidit.

DAV. SEMLER de *infante sine manibus pedibusque*, VVeimar. 1699. 4.

JOH. HÆNFLER de *ovo gallopavonis*, Custrin. 1697. 4. Rotundum ovum sine testa ab ave hujus generis mare editum describit, unice exterius & absque anatome. Contra fabulam basilisci dicit.

In BUSSIERII epistola ad BOURDELIN accurate describitur fetus capite dimidiato.

G. HERN. STAHL. de *menstruo fluxu mulierum*, Hall. 1694. de *mensum insolitis viis* 1702.

PHIL. JAC. HARTMANN in *dubiis de generatione viviparorum*, Regiomonti 1699. 4. & collect. Disp. select. T. V. validius quam vix ullus aliorum anatomicorum, evertere adnissus est systema ovorum. GRAAFII experimenta diluere tentat globulis albuminosis a se ipso in Cuniculis, sed sterilibus repertis, non ovis unquam, massis vero gelatinosis, vasis pictis visis loco ovorum in Sue recens imprægnata: vesicarum circa uterum nimia copia & luxuria; tubarum angustia. Paspermiam statuit, & epigenesin ex gelatina. Utilis certe & memoranda Disputatio.

ovis; de fetus tunicis; de umbilico; de humoribus fetus; atque periochæ seu conceptus
de

B. ALBIN de partu naturali, Dis. Francof. Viadr. 1697. 4.

In Commentariis Parisinis plurima huc pertinent, quorum aliqua recensebo.

In *anciens Mémoires* animalium omnino partes genitales solent describi. In Tomo X. MERYUS aërem defendit per placentam ad fetum venire. In eodem systema suum proponit, & duos fetus describit in eodem Amnio positos. In eodem Tomo agitur cur adultus absque aëre vivere nequeat, cum id fetus possit. Cor etiam testudinis describit MERY, & apud du HAMELIUM. Ibi etiam describitur fetus duplex pectoribus conjunctis.

In novæ Academiæ Commentariis.

1693. Gemelli in eadem Amnio. Alia historia 1700. & 1720.

1699. DUVERNEY cor testudinis, ranæ, viperæ, &c.

Vasa omphalomesenterica EYUSDEM.

1700. Infans monstrosus. Connati lepores. Puer cucullatus. Foramen ovale apertum in adulto.

1701. MERYUS multa contra ova, objicit cellulas non liberas esse, membranam nimis duram esse.

DODART descriptio embryonis. Fetus ore impervio.

LITTRE pro ovario: tuba ovarium amplexa; fissura in ovario, &c. & 1709. IDEM alantoidem sive membranam mediam describit, & ibi & in seqq. corpora lutea.

1702. LITTRE descriptio embryonis 40. dierum cum fissura ovarii, &c. Feles connatæ, fetus inæquales, in eodem utero. Fetus in ovario positi.

1703. MERY de circulatione sanguinis in fetu, & de corde testudinis fuse contra DUVERNEYUM, quem certe videtur convincere.

Agnus monstrosus.

Fetus connati.

Fetus in ovario.

1704. Fetus acephalos, puella absque visceribus. Tuba amplexa ovarium, in quo cicatrix: grana granulosa tubarum cum poris LITTRII.

1705. LITTRE uterus divisus.

1706. Uterus musculosus in puerpera LITTRE.

Puellæ per pelves connatæ DUVERNEY & pro systemate monstrosæ in ipsa jam delineatione Dissertatio.

1708. MERY de circulatione sanguinis inter uterum & fetum. DUVERNEY generatio limacum.

1709. MERY contra ovaria. Pulli corde duplici. De causis uteri ad latus declinantis. Fetus monstrosi LITTRII & MERY ore impervio, &c.

Idem MERY an. 1711. 4. edidit *Problèmes Physiques*, quæ maximam partem huc spectant, nempe an generatio fetus ab alimento pendeat, an inter eum & matrem communicatio, ubi negat experimentum FALCONETTI. An alatur lacte uteri. An adultior lac fugat, quod negat. An vita ejus a Matre pendeat. An ob defectum alimenti exeat utero. Idem apud la MOTTE des *accouchemens* vasa in amnio lymphatica vidisse dicitur.

1710. Gallina pariens ova absque vitello, & causa hujus morbifici partus.

1711. & 1712. MERY fetus absque cerebro & cerebello.

1712. Vagina in partu dilatata quæ angustissima fuerat.

1713. Puer acephalos.

1714. P. S. ROUHAULT de placenta (& idem 1715. 1716.) Partus vesicarius.

Fetus tubarius. Ovum humanum ANEL. 1714.

1715. DUPUY de agno monstroso, ore impervio.

1716. MARCOT fetus monstrosus & alia.

1717. LITTRE fetus monstrosus Cyclops. WINSLOW de valvula Eustachii.

1718. Ovum monstrosum. Funiculus nodosus.

1720. MERY fetus monstrosus.

LITTRE de fontibus mensium.

PETIT Androgynus verus.

le conceptu. Auctori huic tuto confidere possumus, observationes etiam egregiæ,

P p p 2

sunt,

1721. Fetus, qui 46. annis in utero manserat. De catellis exsanguibus cum mater sanguinem amisisset.
1723. GEOFROY monstrum. Monorchis.
1724. De Nigritis & mistis ex diversis gentibus, hominibus.
LEMERY fetus monstruosus, & Diss. pro systemate monstrorum accidentalium.
1725. WINSLOW de circulatione sanguinis in fetu.
1726. Psittacus pariens.
1727. Educta placenta sanguis ex utero per funiculum fluens. Infantes frontibus connati.
1729. MASSON superfetatio.
1732. GEOFROY lactis analysis.
1733. WINSLOW de monstris, & Diss. pro monstrositate germinum. De eodem subjecto
Idem 1734. 1742. 1743.
MORAND ovis monstruosæ anatome.
PETIT de prima respiratione & ejus causis, de pulmone fetus, &c. EJUSDEM infans monstruosus.
1734. Puer albus ex matre nigra.
1735. PETIT & MALOET de suctione.
Cyprinus androgynus MORAND.
1738. 1739. 1740. LUDOVICI LEMERY contra WINSLOWUM pro monstris accidentalibus
Dissertationes.
1739. EJUSDEM de circulatione sanguinis in fetu contra WINSLOWUM.
1741. GOURAIGNE fetus monstruosus.
1742. Ovum geminum.
1743. GRANJEAN de FOUCHY pro germinibus monstris.
1744. Catellus cyclops. Vitulus hydrocephalicus.
1745. MORAND & de la SONE & alia monstra.

An. 1700. incepit edi *Diarium Trivultinum* in quo multa sunt quæ huc spectant, maxime vero fetus monstruosi 1701. 1706. 1714. 1722.

De tempore partus incerto, & fetuum quinto mense editorum ortu probabili 1702.

J. CASP. GRIMM *relation von einem monstro bicorporeo*, Lips. 1700. 4. * LEHM.

J. CASP. GRIMM in dicto libro puellas connatas describit, absque anatome.

DANIEL TAUVRY an. 1695. Diss. inauguralem defendit. Ergo est uteri cum supernis partibus consensus a nervis. EJUSDEM est Liber de la génération & de la nourriture du fetus, Paris. 1700. 12. Magna pars collecta ex variis scriptoribus, aliqua propria ex fabrica brutorum animalium. Contra MERYI systema de circulatione fuse pugnat, sed argumentis neque veris omnibus, neque firmis. Chordulas foraminis ovalis invenit.

JAC. GAVOT in *idea februm*. Genev. 1700. etiam egit de generatione animalium.

Inter MICHAELIS BERNH. VALENTINI Diss. epistolicas varii argumenti, quæ Francof. 1700. 4. prodierunt, nona habet novam uteri anatomen, cum glandulis vaginæ.

ABRAHAM CYPRIANI epistola ad T. MILLINGTON historiam exhibens fetus humani salva matre ex tuba excisi, Leidæ 1700. 8. Gallice, Amstel. 1707. 8. Continet proprie historiam fetus, quem ex matre viva exciderat Auctor, & tubarium credit, ego vero suspicor ventralem fuisse ex nimia magnitudine. Sed plurima egregia addit ad negotium generationis, & ad universam Chirurgiam pertinentia.

HENRICI van DEVENTER *novum lumen obstetricantium*, Leidæ 1701. 4. & P. II. five *ulterius examen partuum difficile*, Leidæ etiam an. 1733. & Parisiis anno 1734. recusum, aliqua huc pertinentia habet, ad fabricam uteri sani, gravidique, &c.

F. HOFMAN pulli gallinacei in femina cachectica formati, Hall. 1702. d. EJUSDEM de ignorata uteri structura multorum errorum fonte 1726. d.

ANDR. JUL. BOETTGER de respiratione fetus in utero, Helmst. 1702. Diss.

BARTHOLOMÆI CORTE epistola de tempore quo anima rationalis fetui infundi solet, 1702. 8. * contendit id fieri ipso tempore conceptus.

JACOB. de BOURGES. Ergo infantum navi ab imaginatione materna, Paris. 1703. 4.

G. C.

sunt, & certe studiosus anatomes, quemcunque horum tractatum, quem poterit adquirere, emat securus.

Post hunc addendus est RAYMUNDUS VIEUSSENS (a) in Libello illo in 8. *de Vasorum in corpore humano structura*.

Tunc ANTONII NUCKII *descriptio uteri*, edita Lugduni Batavorum in 8. anno 2697. (b).

Pro colophone debet addi MARCELLI MALPIGHII *epistola de utero*, & in posthumis *observationes de uteri structura & generatione*, & binæ demum *epistolæ de ovo incubato* (c).

G. C. SCHELHAMMER *de partibus generationi dicatis earumque usu* R. DOBEL. Kiel. 1703. 4.

JOH. FREIND *Emmenologia*, Oxon. 1703. 4. & alias, etiam Gallice, Paris. 1730. 12. vertente DE VAUX. Mensium fluxum unice a plethora deducit, idque a posteriori, ut vocant, demonstrat, cum tot libris sanguinis, quot per aliquot annos emiserunt, feminae absque malo careant, adeoque superfluum habeant. In sanguine experimenta cepit varia, unde efficaciam medicamentorum definit. In eo peccat, quod negligat vim stimuli, vasa, quæ menses exhalant, rumpi ajat, venæ sectionem in mensibus nimis rejiciat, &c.

J. FREIND *Emmenologia* Parisiis primum recusa est 1727. 12.

LUTHER *de termino partus naturali*. Kilon. 1703.

ADAMI BRENDEL *Disp. de embryone in ovulo praexistenti*, VVittemb. 1703. 4. & *de nutritione fetus*, ibid. 1734. 4. utique plenæ sunt utilibus neque vulgatis experimentis. Ova ex feminis lascivis defluentia vidit.

In J. C. LANGII *physiologia* aliqua experimenta huc faciunt, ut tincta per injectas arterias uteri placenta.

In D. BESSE *recherche analytique* T. II. fetus ex ovario in ventrem elapsus describitur.

Contra FREINDIUM dixit D. SNELLE in *theoria physico-medica delineatione*, & fermentum in glandulis residens pro causa mensium proposuit.

In H. RIDLEYI *observationibus medico-præcticis* experimenta de foramine ovali exstant, & observatur ductus venosum minorem esse sinu Venæ Portarum, quæ in embryone minor sit, quam in adulto, &c.

DOM. SANTORINI *opuscula quatuor*, Venet. 1705. 8. Quartum est de catameniis, ad quæ liquorem mucosum feminarum aliquid facere credit.

In BAGLIVII *opusculis* huc pertinet anatome cordis testudinis.

Dissertation anatomique sur la génération de l'homme dans laquelle on combat le système des Ovaristes, Paris. 1705. 12. * HEISTER Sec. XVIII.

(a) RAIM. VIEUSSEN *novum vasorum systema* continet fabricam subtilem, qualem supponit, uteri. In *Tractatu des liqueurs* mammulas gravidæ uteri lacte stillantes, similes coryledonibus animalium, hiantibus porulis vidit. Mercurium ex arteriis in solos vaginæ villos, non uteri, penetrare, ergo menses ex vagina sola stillare, paradoxe docet. A matre in fetum injectiones penetrare adfirmat.

EJUSDEM *epistola de fabrica uteri* ad MANGETUM, quæ in editione Genevensi Verheyenianæ anatomes exstat, plura notatu digna continet, qua careo equidem, sed pleraque tamen video consentire cum iis, quæ exstant in *Tractatu des liqueurs*. In *Tractatu du cœur* præter foramen ovale etiam initia generationis, motum ovi per tubas describit, &c.

(b) Vide supra suo loco.

(c) Vide etiam suo loco.

Lettres de DESNCUES a GUILLIELMINI, Romæ 1706. 8. In iis & glandulæ cervicis uterinæ exstant, & monstri imaginarii, in deformitate modica unice positi, bona historia.

NIC. HARTSOEKERUS in suis conjecturis earumque *supplementis* (Suite) varia huc pertinentia de conceptu monstrisque habet. Systemate evolutionis deserto transit ad ideas plasticas.

J. B. MORGAGNI in adversario primo uteri iconem dedit, columnas, hymenem, mucosos sinus, glandulas sebaceas, fontem mensium, tubarum situm, juga cervicis, aliaque descripsit.

Passim

Passim etiam alibi & in *Epistola XX.* fetus monstrosos aliquos recensuit. *VALSALVÆ* novum inventum explicavit. In *Epistola XV.* de viis sanguinis, quæ fetui sunt peculiares, egit fusissime.

MICH. ERN. ETTMULLER & WERTHER monstrum Hungaricum, Lips. 1707. Disp. *E7. de exclusione secundinarum*, Lips. 1726.

JAMES DRAKE theoriam mensium a collecta in vesicula & subito effusa bile sanguinem in motum ciente in anthropographia sua proposuit.

MARTINI NABOTH de sterilitate mulierum, Disp. Lips. 1707. 4. celebris est, qua subruere recepta ovaria, & vesiculas substituere voluit, quæ in cervice uteri sunt. Adlegat scirrhusa ovaria, clausas tubas, in secundis feminis, &c. Contra eum scripserunt *BOETTIGERUS*, *PETER-MANNUS*, *M. E. ETTMULLERUS* in *Epistola ad RUYSCHIIUM*, *RUYSCHIUS*, alique.

J. A. HELVETII & SALVATORIS CLUSCARD Ergo partus naturalis causa menstruum per gestationem suppressum, Paris. 1707. 4.

MICH. ERN. ETTMULLER de monstro Hungarico, Lips. 1707. 4. de secundinarum exclusionem 1726. 4.

JEAN PALFYN description des parties de la femme, Leidæ 1708. 4. Figuræ *SWAMMERDAMI*, cum explicatione brevi adjecta, monstra *LICETIANA*, & partus monstri *PALFYNI*, de quibus inferius agam.

JOH. DARTIGUELONGUE Apographe rerum physico-medicarum, Amst. 1708. 12. * Generationem mechanice explicat, multum usus materia subtili.

A. O. GOELICKE partum octimestrem vitalem & legitimum esse, Hall. 1708. 4. *EJ. de pulmonum infantis in aqua natatione vel subsidencia infallibili signo*, Francof. Viadr. 1730. Disp.

Eo tempore excudebatur *GALER. di MINERVA* in qua varia reperiuntur, quæ huc spectant. Monstrum felinum T. V. aliud monstrum T. VI. Ova anguillæ *IBID.* glandulæ cervicis uteri *IBID.* Vascula aërea ovarum T. VII. fetus acephalos *MANGETI* *ibid.*

In *GIORNALE DE' LETTERATI* passim aliqua huc pertinent, ut *BELLINI* de ovis *Diff. T. II.*

NIGRISOLI idea I. de generatione. T. IV.

ABB. CONTI epistola critica contra *NIGRISOLIUM* Tom. XII.

Fetus destitutus visceribus T. 36. aliaque.

CHRISTIAN. FRID. BOETTGER fetum non ante conceptionem in ovulo præexistere, Lips. 1708. Disp.

CAROLI MUSITANI quæstiones duæ de semine musculo & femineo prodierunt Genev. 1709. 4. cum tractatu de morbis mulierum.

J. VON HOORNE anatomes publica anni 1705. Praelectio III. Upsal. 1709. 8. De organis genitalibus mulierum & fetu agit, vir in his rebus ex obstetriciis laboribus exercitatus. Admiscet rariores & utiles incisiones fetuum matrumque. Situm cernuum fetus etiam ante maturitatem, oris uteri maturum hiatum recte observavit. Partum tribuit incipienti putredini placentæ. Semen muliebre statuit. *ROBERGIUS* editor *GRAAFII* experimenta in cuniculo admiscuit & alia.

M. V. de sororibus gemellis ab osse sacro monstrose sibi cohærentibus, Kiel. 1709. 4. *

J. PHIL. VERHEYEN in supplemento suo minime contemnenda experimenta de generatione & formatione successiva fetus in vaccis & ovibus instituit: contra *MERIUM* in propria epistola pugnavit: in ipsa anatome rugas vaginæ non male depinxit.

J. HENRICI HEUCHER de muliebribus, VVittemb. 1710. Disp. Quibus infans differat ab adulto, *IDEM* 1711.

In de la *MARCHE* instruction familière & utile aux Sages-femmes, Paris. 1710. 8. Uterus duplex & alia describuntur.

JOH. BOHN & hic & ubique meretur legi.

DEMOCRITUS CHRISTIANUS in vita animalis morbo & Medicina defendit ideas plasticas, & generationem æquivocam, quam etiam *HENKELIUS* in flora saturnizante tuetur.

J. FANTONI in nupera editione suarum dissertationum anatomicarum omnino legi meretur: vascula amnii: urinæ iter per urachum: causam cur arteriæ umbilicales excæcentur: hymenem: ductus mucosos uteri: fibras musculosas: glandulas tubarum adfirmat & alia.

PETRI FRESART Emmenologia in qua fluxus menstrui phenomena ad rationes medico-physicas exiguntur, Leodii 1712. * Contra *FREINDIUM*.

FRANCISCI MARIAE NIGRISOLI *considerazione intorno alla generazione de' viventi e particolarmente de' mostri*, Ferrara 1712. 4. Defendit ova, eaque valde minuta (an fatis certo?) describit, refutat vermiculos, seminalem ideam plasticam adfirmat, monstra aliqua secundum externum tantum habitum describit. Ova humana in utero reperit. Secunda & tertia pars, quam promittit de monstris acturam, nunquam prodiit.

HENR. HENRICI *de vesiculis seminalibus mulierum*, Hall. 1712. 4. Pro NABOTHO, cui etiam favet F. HOFMANNUS.

J. SALZMANN *de natura miraculo utero muliebri*, Argentor. 1712. 4.

EJUSDEM *de circulat. sanguinis in fetu*, R. VVeisser. 1714. ibid.

EJUSDEM & HIRSCHELII *Diff. de praeipuis differentiis inter fetum & adultum* Dissertat. II. 1729. 4.

AUG. LUDOVIC. MITHOB *de anthropogonia*, Groning. 1712. Disp.

Cum SCULTETTI *armamentario*, Lugd. 1712. 4. excuso prodiit descriptio monstri a D. GOEFFON dissecti.

HELWICH WILH. STAUDACHER *de umbilico*, Altdorf. 1713. 4.

ARCHIBALD PITCARNE *Diff. de fluxu menstruo*, quæ exstat in editione Edimburgensi 1713. 4. eam fere theoriâ tradit, a plethora, quæ reperitur apud BOERHAAVIUM.

PHILIPPI della TORRE *lettera intorno alla generazione dei vermi cum VALISNERI observationibus lumbricorum* prodiit, Patavii 1713. 4.

In GOELIKII *historia anatomes aliqua contra NABOTHUM* habentur, & ovum humanum de ovario pendulum.

J. A. WEDEL *de sanguine menstruo*, Disp. Jen. 1713. 4.

The mysteries of virginity *. Lond. 1714. 8. B. PL. Sed vereor ad corrumpendos mores pertinere.

Difesa della considerazione del S. NIGRISOLI, Ferrara 1714. 4. Contra epistolam criticam Abbatis CONTI, quæ exstat in GIORN. de' letterati.

J. PELEGR NUVOLETTI *lettera sopra d'un parto mostroso nato il 1. d' Ag. 1713. Fano* 1714. 4. * Nonne idem qui in *opusculis filol.* recusatus est?

In D. FEUILLE'E *itineribus* habentur monstra aliqua.

JAN PALFYN *beschryving van twee monstreusen kinderen*, &c. Leidæ 1714. 8. Bona descriptio anatomica duorum fetuum per oppositas pelvis connatorum.

J. JAC. GRAMBS *de nutritione & augmento fetus in utero*, Gieff. 1714.

CHRISTIAN VATER *de partu hominis post mortem matris*, VVittemb. 1714. Disp.

J.G. a BERGEN *de vagitu uterino*, Francof. ad Viad. 1714. Collegit exempla & vagitum defendit.

M. E. ETTMULLER *de novo ovario Epistola ploblematica ad RUYSCHIIUM* 1714. 4. Contra NABOTHUM.

P. DIONJIS in *Libro obstetricio* tribuit ligamenti latis fibras musculares, & teretibus vim deducendi uterum, ut occurrat semini. In *Cours d'anatomie* fetus ventrales habentur: uterus duplex, multa alia utilia. IDEM. jam an. 1683. 8. ediderat *Histoire anatomique d'une matrice extraordinaire* quæ observatio redit in *cours d'anat.* Ad ejus de generatione Librum dedit notas TIMMIUS, Brem. 1745. 8.

R. JAC. CAMERARIUS *de generatione hominis & animalium*, Tubing. 1715. 4. multa bona habet de differentiis fetus ab adulto homine, corpore luteo, &c.

J. ANT. TEREZONI *Exerc. phys. med.* Lucca 1708. 4. & *de morbis uteri*, Lucca 1715. 4. Menses a nescio quibus igniculis uteri explicat.

In WALTHERI *thesauro obss.* qui anno 1715. Lipsiæ 8. prodiit monstra varia describuntur, mensium anomalix & alia hujusmodi.

GOTTFR. POLYCARPI MULLER & J. Z. PLATNER *meditationes in æconomiam generationis animalium*, Lipsi. 1715. 4.

G. POL. MULLER & J. Z. PLATNER citatæ meditationes contra vermiculos seminales scriptæ sunt pro plastica potentia & ovulis.

L. L. GOVEY *Chirurgien véritable suivi d'un nouveau système sur la génération*, Rotomagi 1716. 8. Systema ex refutatione CAMERARII didici.

L. L. GOVEY l. c. semen non venire in uterum tradit, sed per poros oris interni uteri transpirare, & ova per venerem ad uterum delata imprægnare: ova etiam absque voluptate ex utero descendere (quæ videntur fuisse placenta vesicaria).

In URATISLAVIENSIBUS ACTIS Monstra passim descripta exstant.

F. BELLINGER of the nutrition of the fetus in the womb, Lond. 1717. 8. Liquorem amnii acrem esse & lixivum, minime nutritium. Placentularum succum lacteum venire in thymum, inde per ductum proprium ad glandulæ maxillaris ductum excretorium ferri, atque porro a fetu deglutiri. Unica observatio, eaque in monstroso fetu facta.

A. Q. RIVINI puella monstrosa, Lips. 1717. 4.

A. van der HULST de circulatione sanguinis in fetu, Leidæ 1717. Disp. *

P. G. SCHACHER quomodo fiat ut fetus absque putredine in utero maneat, Lips. 1717. 4.*
De partu gemellorum disparis magnitudinis. 1721. 4.

EJ. De conceptione fetus humani abstrusa, an absque membri genitalis insertione femina concipere possit, 1728. De pilis in ovariis muliebribus 1735.

VIDUSSI opusculum jam citavi.

C. G. NEUMANN de exclusione ovulorum in salacibus absque prægresso coitu, Leid. 1717. 4. *

J. MAR. LANCISI de puncto saliente & cordis evolutione in fetu observationes describit in Libro posthumo de corde. IDEM inter posthuma inedita reliquit Tractatum de formatione fetus. EJUS epistola de uteri vesiculis exstat cum VALISNERIO.

In JOBLOTI microscopicis Paris. editis 1718. 4. (Physic. p. 119.) varia de generatione insectorum habentur & panspermia defenditur.

L. de SMIDT de ortu & generatione hominis, Leidæ 1718. 4.

JOH. HYAC. VOGLI de anthropogonia, Bonon. 1718. 4. II. vol. Non ovum femininum, sed semen, de teste muliebri venire, in utero cum semine masculo misceri, effervesce, inde fetum nasci. Multa compilatio, castigatio variorum scriptorum, propriæ observationis minimum.

La MOTTE dissertation sur la génération & la superfétation, Paris. 1718. 12. Pugnat contra ovorum systema, & defendit formationem animalium ex semine utriusque sexus. Argumenta sumit ab angustia, a distantia tubarum, a tubis in femina secunda nimis brevibus, quam ut ovarium adsequerentur. PUZOS in epistola ad la MOTTE partum ventralem describit, cum tuba & uterus integra essent. In Libro etiam la MOTTE obstetricio, quem alibi laudabimus, multa ad rem nostram habet la MOTTE ut ova humana.

Tr. of flogging in venereal affairs and of hermaphrodites, Lond. 1718. 12. *

JOH. von HORNS bres huruvvuda man utaf, langans siunkande, &c. Stockholm. 1718. 8. Supra citatæ epistolæ multa continent ad dignoscendum fetum perfectum, vitalem, ad ejus respirationem primam, &c.

P. S. ROUHAILT discours concernant les différens changemens qui arrivent a la circulation du sang du fetus, Turini . . . 8. systema suum proponit, quo MERYUM defendit, sed novis utique rationibus & experimentis.

S. MIDDELBEEK de incremento fetus humani in utero, Leidæ 1719. Disp.

DANIEL adnotationes in hypothses Goueyanas, Francof. 1719. 8. Chirurgus Gallus nomine GOUY (uti diximus) semen masculum ad uterum venire negaverat, rationibus desumptis ab ostio uteri cæco in secunda femina: ab ovulis femininis ex sola irritatione in proprio experimento delapsis, &c. Ad ea ratiocinia respondet HOFMANNUS. In præfatione statum medicinæ describit, qualis an. 1718. Parisiis fuit.

J. JAC. RAU in posthumis, quæ adsunt apud VALENTINUM in Amphitheatro Zootomico, glandulas vaginæ muciferas describit.

A. VATER progr. de modo quo foramen ovale clauditur, VVittemb. 1719. 4. habet descriptionem foraminis ovalis fibra quadam divisi, medullæ in arteriis umbilicalibus, &c.

A. VATERI etiam est programma de hymene, VVittemb. 1727. 4.

SIEGM. AUG. PFEIFFER Embryologia seu doctrina fetus in utero, Sedini 1719. 8. *

SIM. P. HILSCHER de opere generationis in feminis, Jenæ 1719. Disp. Corpora lutea describit.

ORTH. de fetu 46. annorum, Tubing. 1720. 4.

WILH. ULR. WALDSCHMIDT de ortu & generatione hominis, Kiel. 1720. 4.

J. A. SLEVOGT de acquirenda & conservanda sobole, Jen. 1720. 4.

J. CONR. PEYER de uracho in fetu humano pervio, Leidæ 1721. 8. Unica observatio, quæ demonstrare vult hunc canalem pervium esse.

Nouvelles conjectures physiques par GAUTIER, Meaux 1721. Omnia evolvi, neque quidquam in corpore humano nasci, ne sanguinem quidem.

RICH. BRADLEY philosophical account of the works of nature, Lond. 1721. 4. fetus aliquos habet, & de Pipa bufone observationes, & batrachogoniam. Eam etiam duplicem, & miram illam Surinamensem, quæ Europæ contraria est, *SIBILLA MERIAN* in *Surinamensibus insectis* depictam dedit.

ANT. VALISNERI istoria della generazione dell' uomo. Venet. 1722. 4. Fuse in II. Tomo agit de ovariis, quæ per omne animalium quadrupedum genus persequitur, & ubique corpora lutea *MALPIGHIANA*, & ova ipsa sollicitè describit. Ovum statuit invisibile, quod in corpore luteo natum, per angustas tubas transire possit, & sit verum ovum humanum. Porro ad refutandum systema generationis æquivocæ pertinent *Miglioramenti e correzioni d'alcune esperienze del S. REDI* quas collegit *GASPARI*. In *nuova giunta d'esperienze intorno all'istoria medica e naturale* habentur observationes de aere in ovis contento. In *secundo dialogo* & in III. vol. *GIORN. DE' LETTER.* negat vagitus uterinos, & fetus pipitum intra ovum. Deinde per omnia fere opera legendus est *VALISNERIUS*, in quibus ingens collectio habetur monstrorum cum titulo *relaxioni di varj mostri*. Ita porro de partu vesicario & in universum de generatione insectorum, undique & perpetuo univoca multa optima experimenta habet.

In editione *BERGERIANA* (Lemgov. 1739. 8.) Libri de generatione in notis defenduntur vermiculi & ova vulgaria, & in *appendice* exstat collectio monstrorum.

GOD. HELD. a HAGELSHEIM Diss. de tempore partus occasione partus tubarii 46. annis gestati ad *L. SCHROEK*. Baruth. 1722. 4.

FOERSTER de menstruo fluxu ejusque suppressione, Helmst. 1722. Disp.

ABR. VATER graviditas apparens, VVittemb. 1722. Disp. Ova humana describit, &c.

L. P. THUMMIG in Versuche, Halæ 1723. 8. editis varia huc pertinentia habet, de monstris, vomitu canini fetus; ova non fecunda fieri absque coitu defendit, &c.

G. BATT. PAITONI discorsi della generazione dell' Uomo I. & II. Venet. 1722. 4. III. IV. 1726. 4. Ovaria defendit, & ova Malpighiana, & contra invisibile *VALISNERI* ovum & contra Graafianum illud vulgo notum: Fecundationem in utero contingere docet. *EJUSDEM vindicta contra epistolas PETRI BIANCHI*, Faventia 1724. 4. *P. BIANCHI*, discipulus *VALISNERII* vindicaverat contra juvenem *PAITONUM* præceptorem suum, epistolis duabus, quæ non videntur editæ fuisse. *PAITONUS* in epistola prima semen masculinum redire in sanguinem confirmat, in altera vero idem semen per tubas ad ovaria venire, & eas antiperistaltico motu agitari negat.

ANTOINE MAITREJEAN observation sur la formation du poulet, Paris. 1722. 12. Usus est gallinis *Calecutensibus* majoribus, & albumen coagulavit, figuras suas ipse delineavit. Ita in quibusdam potuit *MALPIGHIIUM* corrigere. Vasa umbilicalia fuse describit. Chalazas albumen resorbere, & vitellum vehere credit. Vasa contorta vitelli, appendicem intestini vitellariam, & alia fuse recenset. Vermiculos seminales refutat, omnia a matre esse, patrem tantum fermentum addere contendit.

SIGISM. MAYOR de mascula sobole procreanda, Altdorf. 1723. Disp.

LUD. HIERON. COSNIER an fetus in utero suctione nutriatur, Paris. 1724. Disp.

In *J. DOMIN. SANTORINI* Observationibus plurima egregia habentur, fetus tubarius, corpus luteum, muscoli feminini, rugæ vaginæ, cervicis uteri, de ovo invisibili consensus cum *VALISNERIO* & *MORGAGNO*, de ligamentis vaginæ, de fibris tubarum observationes.

EJUSDEM istoria d' un feto estratto delle parti deretane, Venet. 1727. 4. Non solum fetus multo tempore retenti per anum extractionem describit, sed plurima alia utilia habet, ovi 12. dierum bonam descriptionem, observationes de tubis, de corporibus luteis ovarium diffringentibus, intestinis connatis, &c.

MARTIN. MARTINEZ observationes de corde, Madriti 1723. 4. Habet varia monstra, cordis sive disturbati historiam, alia.

LISCAWITZ de ortu & propagatione hominis, Lips. 1723. Disp.

BEN. STÆHELIN spect. anat. botan. 1724. 4. Habet vasa lymphatica uteri.

MENZ

MENZ *de generatione paradoxa ranarum*, Lips. 1724. Disp. Ovaria ranarum tubæque.

J. H. LUDOLF & CLEMENS *de funiculo umbilicali hominis longiori*, Erfurt. 1724. 4.

In ROBINSONI physiologicis habetur theoria mensium probabilis.

JOH. ADAM. KULMI *descriptio fetus monstri*, Gedan. 1724. 4. Bonus Liber. Anatome accurata fetus, qualem descripsi, cum vasis tamen umbilicalibus simplicibus, auribus cordis quatuor. In historia hominis suffocati, quæ pro *appendice* est, utilia omnino multa continentur. Systema causarum accidentalium in monstros non probat. Signa sexum femininum distinguuntur solito copiosius recenset, liquoris amnii vim nutritiam negat.

S. SIMONE ROUHAULT *osservazioni anatomico-fisiche*, Turin. 1724. 4. Quæ in Monumentis Parisinis habet, ea hic ornatiùs repetuntur. Sex sunt observationes I. de placenta, in qua membranam mediam nostram & reticularem Chorion fabricam describit. II. in qua funiculi umbilicalis spongiosum corpus. III. Fetus unice per venam umbilicalem ali. IV. V. de circulatione sanguinis in fetu, quam a fetu corde pendere, & morem sequi MERYANUM defendit. VI. de causa partus.

A. VATER *uterus gravidus*, VVittemb. 1725. 4. Habet imprimis descriptionem sinuum uteri, quales vulgo statuuntur.

CHRISTOPH. JOAH. WOLFART *de fetu monstroso duplici*, Marburg. 1725. 4.

G. MARTYN *de fluxu menstruali & morbis virginum*, Leid. 1725. 4. disputatio.

EL. CAMERAR. *de generatione hominis ex venere*, Tubing. 1725. 4. *de ortu humano occulto* 1733.

BECKINDORP *de signis virginitatis*, Franeker. 1725.

MULLER *an primum rudimentum fetus in ovo*, Altdorf. 1725. 4.

CHARLES DENIS LAUNAI *nouveau système sur la génération de l'homme & de l'oiseau*, 1726. 12. Mirum systema, perfectum puerum in semine maris & perfectam puellam in femina & vesiculis feminæ perfici. Experimenta vix ulla propria habet.

In *annalibus Juliis* 1726. exstat partus tubarius profoceri mei HERMANNI TEICHMEYER; anno videlicet 1727. & in disputatione propria *de fetu tredecimestri* L. HEISTERI historia recensentur fetuum, eo tempore in utero gestorum. IDEM laudatus.

HEISTERUS etiam in compendio ovum humanum pictum dedit, tubarumque repetita vasa.

HEISTERI etiam est *de existentia Dei ex partibus genitalibus* 1727. 4.

ARCHIBALD MITCHELL *the soeterkin disserted*, Londin. 1726. 8. contra fabulam molarum animatarum.

FRID. HOFMANN *de ignorata uteri structura multorum errorum fonte*, Hall. 1726. 4.

JACQ. AUG. BLONDEL *the strength of imagination of pregnant women examined*, Lond. 1727. 8. Gallice *diff. Ph. sur la force de l'imagination des femmes grosses*, Leidæ 1737. 8. Celebri Libro vim omnem maternæ imaginationis in producendis nævis refutavit ingeniose certe, ut facile demonstraret, modo omnino, quo fiat, intelligi non quire. Sed multa fiunt, quorum modum ignoramus. Cum D. DANIEL TURNER contra eum pro afferenda vi imaginationis scripsisset *on the force of the mothers imagination upon the fetus in utero*, respondet BLONDELIUS, Lond. 1729. 8. Libro qui vocatur *the power of the mothers imagination over the fetus examined in answer to D. D. DANIEL T.* *

J. A. BLONDEL Gallice primum prodiit Lond. 1727. 8. deinde Leidæ, ut diximus.

Iterum respondit D. TURNER *the force of the mothers imagination upon the fetus in utero still further considered by way of reply to D. BLONDEL's book*, Lond. 1730. 8.

JOSEPH VOLPINI *opere medico-pratiche filosofiche*, Parma 1726. 4. in disputatione quarta solvuntur objectiones, quæ contra systema ovorum proponi solent. Ovum invisibile etiam defendit, & in ovo ante fecundationem jam adesse primum stamen futuri animalis. Descriptionem dat ovi humani.

J. BAPT. du BOIS. *Ergo fetus extra uterum genitus salva matre potest excidi*, Paris. 1727. 4. Partum gemellorum ventralium habet.

JAMES DOUGLAS *avertissement on the journal of R. Manningham*, Lond. 1727. 8. Agitur de ridicula illa comœdia cuniculorum, quæ tunc maxime ludebatur a Maria Fosts. Demonstrat DOUGLASIUS nunquam se fidem illepidæ historiæ habuisse.

A. VATER progr. de hymene, VVittemb. 1727. 4.

CHRIST. GOTTFR. STENZEL de munere & pathematibus organorum genitalium, VVittemb. 1727. Disp. *

P. SIMON ROUHAULT réponse a la critique de M. VVINSLOVV, Turin 1728. 4. Pergit defendere sententiam MERVI, sinusque cordis & aures diverso tempore repleri contendit. Multum cavillorum & inutilis pugnae.

T. COE de fluxu muliebri menstruo, Leidæ 1728. Disp.

J. HENR. GEELHAUSEN de pulmonibus recens natorum, &c. supra citatus est.

J. R. GARENGEOT in sua splachnologia habet hymenem, contra morem Gallorum.

FABR. JOH. FERRI de generatione viventium in triplici statu, univoco, analogo, & equivoco ad mentem Hippocratis, Ferrar. 1728. 8. * PL.

In Raccolta d'opuscoli scientifici passim varia huc spectant, ut in T. I. VALISNERI refutatio partus ridiculi viperæ per os, & descriptio cloacæ uterinæ in eo animale. T. II. fetus cerebro destitutus. T. V. epistolæ duæ de systemate evolutionis. T. VI. ROUHAULT partus ventralis. T. IX. Censura in NUVOLETTI descriptionem monstri, T. XIII. CONST. GATTA de graviditate 22. mensium T. XXII. brevis descriptio partus bicipitis LUNADEI.

J. CHRISTOPH. SCHUTZER de fabrica & morbis ligamentorum uteri, Harderovic. 1729. 4. *

J. MART. SCHURIG parthenologia, Dresdæ 1729. 4. Muliebria EJUSDEM eod. anno 4. Gynacologia 1730. 4. Syllepsologia 1731. 4. Embryologia 1732. 4. Compilationes meræ.

In BECKERI paidioetonia inculcata existat observatio de conceptu per angustissimam vaginam, qualis etiam apud H. F. ab AQUAPENDENTE, in Chirurgicis reperitur.

V. W. WALDSCHMID de superfetatione falso prætensa, Hamburg. 1728. 4. & prius de superfetatione progr. Kiel. 1725. 4. de allantoide, Kiel. 1729. 4.

ABR. VATER in mola pregnante, VVittemb. 1729. ova humana abortiva describit.

THOMÆ SIMSON System of the womb, Edimburg. 1729. 8. Systema est, uterum sinus habere, ad quos sanguis non veniat in junioribus virginibus, sed sensim dilatatis vasis demum eo penetret, tunc comprimat uteri vasa, circulationem impediat, &c. Plethoram acerbè refutat. In anatome nihil invenit.

A. F. WALTHER historia suffocationis, Lips. 1729. 4. habet poros sebaceos genitalium, lacunas urethræ.

In BIBLIOTHEC. ITAL. T. I. fetus ventralis quatuordecim annis gestatus describitur.

LE TELLIER réflexions critiques sur l'emménologie de Freind, Paris. 1730. 8. A sanguine menses derivat, qui per arterias majori copia adveniat, quam refluat per venas. Vasa uteri non rumpi, sed dilatari, recte contra FREINDIUM monet. In venæ sectionis temporibus ab eodem viro dissentit.

LUD. de NEUFVILLE de allantoide, Leidæ 1730. 4. & THEODOR. TRONCHIN de nympha eod. anno ibid. recusæ Leidæ 1736. 8. Membrana allantoidea & urachus pervius ex ALBINI observatione in priori Libello defenditur.

JAC. MICH. KORNMANN höchstnoethiger unterricht von der geburt der menschen, Erfurt. 1731. 8. *

In COMMERCIO NORICO plurima bona, inprimis series fetuum egregie delineata: icones valvularum cervicis uteri, arteriarum pelvis, monstra, fetus tubarius, ventralis, musculi uterini descriptiones, venæ umbilicales, de uracho experimenta, vagina duplex.

B. MEIBOM de conceptione, Helmstad. 1731. Disp.

MICHAEL ALBERTI de hominis generatione, &c. Hall. 1731. Disp. EJUSD. de hepate uterino 1735. &c.

MICH. ALBERTI etiam est de anima humana, ubi demonstratur proprium sibi domicilium struere, Hall 1732.

CHRISTIAN FRID. RAST de utero, Regiomont. 1731. 4.

WILH. BERNARD NEBEL de partu tredecimestri legitimo, Heidelb. 1731. 4.

COLONNE de la nature & de la génération des choses, Paris. 1731. 12. Physicus Platonius.

BENEDICTUS STAEHELIN in Specimine Anat. Bot. 1731. experimenta pro deglutitione a fetu peracta retulit.

GOTTFRID WILHEM. MULLER de situ uteri obliquo, Argent. 1731. Disp.

Theses D. GEOFROY huc pertinent laudatæ in hist. genit. masc.

J. HENR.

J. HENR. COHAUSEN *Lucina Ruyschiana*, Amstel. 1731. 8. Musculum RUYSCHII non differre a notissimis fibris uteri muscularibus; non depellere placentam, sed adjuvare exitum, & uterum in legitimam parvitatem reducere. Placentam in utero non debere relinqui, &c.

FITZGERALD *de catameniiis*, Monspel. 1741. 8.

In BASSI *observationibus* de himene experimenta habentur.

LAUR. HEISTER *de fallaci pulmonum experimento*, Helmst. 1732. 4.

J. HENR. SCHULZE *de vasis umbilicalibus*, Hall. 1732. 4. & *an eorum deligatio necessaria*, ibid. eodem anno. Negat vir doctissimus & aliqua experimenta adfert.

In ACTIS EDIMBURGENSIBUS in T. I. reperitur GIBSONI Dissertatio pro vi nutritia liquoris Amnii. In T. II. Diff. ALEXANDRI MONROO contra eam vim fusa & erudita adest, qua ova etiam ovipara egregie describuntur, & allantoides vera. Plurimæ adhuc aliæ intercurrent hoc pertinentes observationes ut ovi humani in T. IV. placenta & conceptus humani rara descriptio in T. V.

F. E. BRUKMANN *beschreibung einer seltamen missgeburt*, VVolfenbuttel 1732. 4. Fetus externa descriptio, cui alter semiformatus de pectore pendeat.

F. E. BRUKMANN hoc loco citatus etiam in *Epistolis* monstra aliqua habet.

JOHN CRAWFURD *the cases of impotence and virginity discussd*, Lond. 1732. 8.* PL.

F. RUYSCHIIUS plurimum ad hanc partem anatomies contulit Anthropologiam five feriem fetuum humanorum majorem, quam ullus præterea collegit, descripsit in *Thes.* VI. & alibi. Conceptionem recentissimam aliquoties observavit, ut apud SCHRADERUM in *Addit. ad VESLINGIUM*, DIEMERBROEKIUM, BLANCARDUM *Inarregister* I. Semen masculum in utero & tubis vidit, & menses ex osculo uteri fluentes. Placentas ex hydatiditibus factas, corpus luteum intra ovum subnatum, membranam exteriorē placenta descripsit, &c. Musculum novum uteri propria Epistola exposuit, Amstelod. 1726. edita, & a J. C. BOHLIO, amico nostro, Latine versa, propter quem ipsi gratulati sunt ABRAHAMUS VATER etiam in *Epistola*, excusa Amstelodami 1727. 4. & PHIL. HECQUET in simili *Epistola* eodem anno data: alii contra scripserunt, ut COHAUSEN, CHR. POLYK. LEPORIN in *einigen die zurückgebliebene nachgeburt angehenden Fragen* Quedlinburg. 1728. 4. Vir CL. P. CONRADUS FABRICIUS in *Syngraph.* Butisbac. p. 68. & alii. Sed ipse demum RUYSCHIIUS musculum suum revocat apud SCHREIBERUM in *vita Ruyschii*, p. 54. Hymenem restituit. Chorii membranam reticulatam confirmavit, mediamque, sanguinem coactum a placenta distinguere docuit, ipse aliquando ex similitudine deceptus.

F. RUYSCHIIUS uterum gravidum jam 1673. tabula expressit.

EJUS epistola qua novum uteri musculum exposuit, primum belgice prodiit Amstel. anno 1725. 8.

Citata ad RUYSCHIIUM HECQUETI epistola prodiit etiam cum EJ. *traité sur l'abus des purgatifs & des amers*, Paris. 1729. 8.

JACOB. DENYS *verhandeling over het ampt der Vroedmeesters en Vroedvrouwen*. Leidæ 1733. 4. multa bona habet ad monstra, ad situm fetus, vim contractilem uteri, placentam, funiculum, totumque hoc negotium.

H. BERNARD *de eo quo differt circuitus sanguinis fetus ab illo hominis nati*, Leid. 1733. 4.

P. de la COUR *de naturali catameniorum fluxu*, ibid. eod. anno.

EL. CAMERAR *de ortu corporis humani occulto*, Tubing. 1733. 4.

OT. CAS. BARFEKNECHT *ergo omne vivens ex ovo*, Paris. 1733. 4. Fetus in ovario reperti historiam habet.

BOURDELIN *quo uberior transpiratio, eo parcior menstruus fluxus*, Paris. 1733. 4.

LUD. CLAUD BOURDELIN etiam est, *Ergo ut insectis animalibus sic & fetui sua metamorphosis*, Paris. 1733. 4.

HARTMANN *de bruto ex homine*, Erfurt. 1733. 4. Fetus paulum deformis pro simia exhibetur.

GEORG. VOLCMAR HARTMANN *brutum ex homine*, Erf. 1733. 4.

J. FRID. BORBSTAETTER *de circulatione sanguinis in fetu*, Region. 1733. 4.

BUCHWALD *de graviditate tempus excedente*, Hafn. 1734. Disp.

J. de BUCHWALD etiam edidit *historiam gemelli coaliti scholiis illustratam*, Hafn. 1743. 4.

B. MEIBOM *de conceptu*, Helmaſtad. 1734. Diſp.

A. VATER *de ſignis, ex quibus dijudicari poteſt, an infans recens natus vitalis, aut, &c.* VVitemb. 1735. 4.

ILL. de REAUMUR *inſectorum hiſtoria plurimum ad illuſtrandam generationem facit.*

J. de JUSSIEU *in theſi an fetui ſanguis maternus alimento ſit.* Pariſ. 1735. alii fetum per vaſa lactea uteri, neque ſanguinem a matre ad fetum tranſire defendit.

HERELIUS *in emmenologiam Freindianam*, Hall. 1735. 4.

J. FRID. CASSEBOHM *in Tractatum anatom. VI. de aure humana egregiam fabricæ monſtroſæ deſcriptionem dat.* EJUSD. an. 1730. prodiit progr. *de differentiis fetus.*

N. TETTRODE *Diſſ. de fluxu menſtruo*, Leid. 1735. 5.

D. SENNAC *in nova editione des Eſſais de Phyſique* legi poteſt. Habet obſervationes varias v. gr. de fetu maturo cui os clauſum.

J. de DIEST & SAINT VAST *in theſibus*, Pariſ. 1735. profert manere fetum ſanguine plenum, quando mater exhausta eſt, nec vim ſtyptici a ſanguine materno ad ſanguinem fetus tranſire. Recenſam legi.

REICHART *de utero gravido una cum fetu vulnerato*, Argentor. 1735. 4.

GOTTL. FRIDERICI *de monſtro humano rariffimo*, Lipſ. 1736. 4.

In uytgeleezene natuurkundige aantekeningen. T. III. habetur GORTERI de pulmone natante vel merſo Diſſertatio.

H. F. TEICHMEYER *de generatione*, Jen. 1736. Diſp.

CHRISTOPH. JACOB. TREW *de præcipuis inter hominem natum & non natum differentiis*, Norimb. 1736. 4. Egregio opere deſcribit eas partes, quibus fetus inprimis ſe diſtinguit, tum circulationis cauſam, quæ diverſa eſt, tum in veſica alibique, cum numeroſis ad naturam delineatis figuris, & plurima erudita Auctorum dijudicatione. Idem in Diſp. inaug. *de chyloſi fetus in utero.* Argentor. 1715. 4. ad fetum, ductumque venoſum, ſed ad alias etiam partes anatomes obſervationes ſuas ediderat. Liquorem amnii deglutiri experimento confirmat.

J. B. MAZZINI *de reſpiratione fetus conjeſtura.* Brixia 1737. 4. magn. Reſpirare in aquis fetum conatur demonſtrare ex pipitu pulli, vagitu uterino, diminuto in adoleſcente fetu ſpecifico pondere. Partus cauſam naturalem deducit ex ſphærica figura in oblongam, minus capacem.

CLOZ *de reſpiratione fetus in Italia*, Helmſt. 1740. 4. Refutat Italum.

J. PH. BURGGRAB *bedenken vom geſchäfte der erzeugung*, Francof. 1737. 4.

In J. CHR. KUNDMANN rarioribus natura & artis, Breſl. 1737. fol. Inter alios monſtroſos partus habetur acephalus, corde deſtitutus.

G. WOLFGANG. TRIER *de vita fetus humani in utero*, Francof. Viadr. 1737. 4.

In PETSCHII ſæpe laudata diſputatione quæritur, cur bruta animalia allantoidem tunnicam habeant, homo ea deſtituatur.

Traité de la Communication des maladies & des paſſions, la Haye 1738. 8. Auctorem D. de la METTRIE vocat Abatem MOREAU de S. ELIE (*Penelope* I. p. 83.) Scopus eſt demonſtrare a lacte materno, malis animi adfectibus pleno, pleraque vitæ humanæ mala oriri. Sed nimium provectus omnia tribuit corpori, quæ ſunt animæ, ipſam v. gr. ſuperbiam.

A. KAAU *in utroque opere conſuli debet, ad ſudorem uteri, &c.*

A. KAAU dictus in *Nov. Comm. Petropol.* erudite de hermaphroditis egit, quos minime admittit.

MICH. PHIL. BOUVART *an oſſa innominata in gravidis & parturientibus diducantur*, Pariſ. 1739. Id omnino fieri demonſtrat. Reſpondentis vice functus eſt JOS. EXUP. BERTIN. Amicus noſter, cujus calamitoſum exitum nondum deſimus lamentari.

J. PHIL. GRAVEL *de ſuperfetatione.* Argent. 1738. 4. cum icone uteri ſemiduplicis reſuſa in coll. Diſp. Vol. V.

De ROUKEMÆ CROESERI, & utriuſque IDEMÆ Libellis alibi diximus.

J. C. HEBENSTREIT *in progr.* an. 1738. edito varia de allantoidis abſentia, urachi cæcitate, foramine ovali, obſervat.

In Satyris Sileſiacis uterus duplex in VIII T. deſcribitur.

In PETROPOLITANIS in variis Tomis de monſtris egregiæ obſervationes habentur JOHANNIS GEORGI DUKERNOI, in T. III. V.

GOTTW

GOTTW SCHUSTER *genesis quadrimellorum, five historia rara mulieris duplices gemellos enitenti*, Chemniz 1739. 4. B. PL.

BAUER *de causa fecunditatis gentis circumcisa*, Lips. 1729. Disp.

J. FRID. BAUER *de causis fecunditatis gentis circumcisa*, Lips. 1739. 4.

In obstetricio Libro FIELDING OULD alibi laudando agitur de obliquitate uteri, quam parvi omnino facit.

JAMES PARSONS *enquiring into the nature of hermaphrodites*, Lond. 1740. 8. Feminas esse *macroclitorides*, quas vocant androgynos, collectis exemplis defendit. EJUSDEM anatomicæ vesicæ alibi laudata varia huc pertinentia habet. Idem in *Phil. Transf. supplemento* in Dissertatione de motu muscutorum uteri dedit figuram, & ligamenti teretibus vim musculosam tribuit; tubarum fibras longitudinales & transversas, hinc motum peristalticum; figuram in gravida rectam describit, hinc cum ovarium comprehendere nequeat, superfetationem omnino impossibilem esse adfirmat.

DAVID VASSE *Ergo a mutuo nisu vasorum lactiferorum & spermaticorum menstrua purgatio*, Paris. 1740. 4. Cellulas uteri describit.

J. WILH. HESSE *de partu gemellorum*, Argent. 1740. 4.

In *Actis Upsaliensibus* 1740. D. SPOERING bonam dedit anatomen partus monstrosi.

J. B. BIANCHI *de naturali & vitiosa generatione*, Turin. 1741. 4. Anthropologiam habet, quæ ab ipso ovo nondum fecundato incipit, cui tamen rudimentum fetus tribuit, ad mediam graviditatem usque. Rudes vero icones & ex ipsa statura suspectæ sunt. Sequuntur historię partuum tubariorum & ventralium, non absque propriis observationibus. Inde molæ & germina abortiva, & monstrosi aliqui fetus. Denique vermes humani, quorum aliqui valde paradoxo.

J. B. BIANCHI etiam est *storia del mostro di due corpi che nacque sul Pavese*, Turin. 1749. 8. utilis & bona descriptio aliquot partuum monstroforum: & rationes contra systema monstorum primigenorum.

J. EXUP. BERTIN *an detur imaginationis materna in fetum actio*. Paris. 1741. Negat.

LEANDER PEAGET *an sanguis a dextra in sinistram cordis auriculam transeat*. Paris. 1741. Recte adfirmat, jam laudatus.

BERCHER *Ergo non datur imaginationis materna in fetum actio*, Paris. 1741. 4.

In H. GOURAIGNE *Diff. de natura & causis fluiditatis naturalis*. Monspel. 1741. 8. habetur analysis lactis. In ejusdem *questionibus* 12. negatur monstra ex vi imaginationis fieri.

FR. de BUCHWALD *thes. decad. de Musculo Ruyschii in uteri fundo*, Hafn. 1741. Defendit RUYSCIUM contra LEPORINUM, etsi & ipse nonnumquam ægrius fibras se videre fateatur: esse vero feminas, quæ placentam anno demum a partu excluderint, neque placentam semper ad eandem sedem firmari.

P. A. BOEHMERI *de situ uteri gravidi*, Hall. 1741. 4. cum icone & gemontrica consideratione.

JOS. WEITBRECHT aliqua ad ligamenta lata, situm uteri, in syndesmologia habet & in *ACT. PETR. T. IX.* hominem monstrosum describit.

JOS. WEITBRECHT citatus dedit etiam uteri historiam in *T. I. Nov. Comment.*

Fetum cum 4. cornubus & tribus auribus descripsit SEBASTIANUS ROTARI.

CLISTONI WINTRINGHAM experimenta de vasorum duritie etiam ad explicandam uteri functionem pertinent, cujus arterias laxiores, venas duriores reperit.

Philos. Essai on fecundation, Lond. 1742. 8. Parvi momenti systema, idem quod D. LAUNAY, semen nempe maris plenum pueris, femininum plenum puellis esse, hæc duo corpusculorum genera in conceptu se adtrahere & cohærere.

J. J. HUBER *de hymene & vagina rugis*, Gotting. 1742. 4. Icones in universum minus bonæ, maxime quæ cervicis uteri & columnarum vaginæ rugas exprimunt. Columnas quatuor numerat, quæ nobis duæ sunt, & hymenis varietates recenset.

J. J. HUBERI etiam sunt *observationes & cogitationes de monstrosis*, Cassel 1748. 4. Continent rationes mihi oppositas pro systemate accidentium & structricis animæ, cum descriptione aliqua externarum partium monstorum nonnullorum.

In KLEINII *ichthyologicis* multa huc pertinent, uti v. gr. formatio successiva piscis Galei.

LE MONNIER *de conceptu & incremento fetus*, Leid. 1742. 4. Membranam placentæ externam refutat, &c.

Inter SYLVÆ posthuma reperitur *Traité de la conception*, quam fieri adfirmat a spiritibus, per vasa ovarii resorbitis. Conf. JOURN. des SAV. 1744. Jul.

In Libro *Vernunftige gedanken von der natur* plurima ad generationem pertinentia habentur. Ovum verius intra vulgare latere creditur.

ANTON. FIZES *de generatione* Diss. quæ exstat cum operibus omnibus, Monspel. 1742. editis 4.

JOH. PETER SUSSMILCH *die göttliche ordnung in den veränderungen des menschlichen geschlechts*, Berolin. 1742. 8. Multa bona habet, undique collecta de numeris partuum masculorum & femininorum, longævitatibus, &c.

HERISSANT *an in omni partu Chirurgia*, Paris. 1742. 4. Pro hymene.

SIMON BERNHARD WOLFSHEIMER *de causis fecunditatis Hebraorum*, Hall. 1742. 4.

WOLFGANG THOMAS RAU *de navis maternis*, Altdorf. 1742. 4.

J. JAC. LAUFFER *de infante sine cerebro nato*, Hall. 1743. 4.

VOIGT in Diss. *de capite infantis abrupto*, Gieß. 1743. 4. uteri habet descriptionem.

JOH. FRANC. ISEZ *Ergo vena spermatica structura secretioni seminis favet*. Paris. 1743.

WILH. NORTWYK *historia uteri gravidi*, Leid. 1743. 4. Fetus humanos describit aliquos: maceratione communicationem placentæ cum utero detegit, allantoidem refutat, epigenesin adfirmat, fusus Auctor & collector.

CORN. TRIOEN in *observationibus Medico Chirurgicis* aliquot ova humana expressit, fetum tubarium & ventralem descripsit.

ONYMOS *de naturali fetus in utero materno situ*, Leid. 1743. 4. & 1745. 8. Defendit fetum nunquam aliter nisi capite cernuo in utero sedere.

BUSSON & POISSONNIER *an ab origine monstra*, Paris. 1743. 4. Negant.

In TABARRANI *observationibus* hymen defenditur, & patula via aëris in uterum, vasa lactifera mammæ describuntur, quorum communicationem mutuam statuit, & ductus longos prostatæ muliebris exponit.

FR. DAVID HERISSANT *an secundina fetui pulmonum præstent officia*, Paris. 1743. 4. adfirmat, sanguinem in vena pulmonali pulchrius quam in arteria socia rubere.

ANDREÆ JOSEPH SERON *Ergo suppresso & immoderato catameniorum fluxui aperientia*. Paris. 1743. 4. legi meretur.

J. de BUCHWALD *historia gemelli coaliti scholiis illustrata*, Hafniæ 1743. 4. *

P. GERIKE *de generatione*, Helmstad. 1744. 8. seminis vim resorberi per vascula in superficie uteri hiantia, & ad sanguinem venire, malaciam facere, auram recta ad ovarium tendere. Panspermiam etiam statuit, & semina quidem ore recipi, & eadem esse pro homine brutoque; varietatem vero ab alimento fieri. Fabricam conceptionis suillæ describit. EJ. Disp. *de viis natura ad ovarium, & conceptione*, Helmstad. 1746. 4. Vindicat priorem Libellum ab aliquibus in BIBL. RAIS. propositis observationibus.

Pro P. GERIKE sententia defendenda scripsit etiam MICH. CLOETZ *de respiratione fetus*, Helmstad. 17...

J. CAR. HEFFTER *de causa incrementi fetus celerioris*, Erfurt. 1745. 4.

CL. BOLTENIUS fetum respirare defendit. Vid. *Comm. Lit.* 1744. P. 355.

JANI PLANCI *breve storia di Catarina Vizzani*, Venet. 1744. Hymenem describit in adulta femina.

MÜLLER *de utero rupto*. Disp. Basil. 1745. pulvis muliebris rationem ad virilem, fibras vorticosas fundi uteri describit, mathemata ad physiologiam adplicat.

FRANC. IMBERT *de generationis historia*, Monspel. 1745. 4. Pro ovorum systemate.

NAUGIER *de fecundatione*, Monsp. 1745. 8.

LAUBLE *de fluxu menstruo*, Argentor. 1745. Disp.

HANSEN *de termino animationis humane*, Halæ 1745. Disp.

HESSE *de generatione fecunda*, Franc. ad Viadr. 1745. Disp.

CL. HENSING Disp. *de peritoneo ad ligamenta uteri & ejus situm* legi debet.

CLAUDII de la VIGNE de FRECHEVILLE *Ergo quo uberior transpiratio, eo parcius fluxus menstruus*, Paris. 1745. 4.

NIC. SALMON de fluxu menſtruo. Monſpel. 1745. fere SIMSONUM ſequitur, & menſes deducit a ſinubus uteri demum ſub pubertatis annos a ſanguine explicatis.

NIC. SALMON citata diſputatio nonne ea eſt quæ inter CL. la MURE diſputationes edita eſt? *Venus phyſique ou Diſſertation ſur l'origine des hommes & des animaux* anno 1746. variis locis excuſa, Auctoris incerti, ut ſint qui referant ad D. de MAUPERTUIS (la METTRIE comm. ſur les Inſtit. de Boerhaave T. VI. p. 140.) Ovaria refutat, miſtionem ſemini, & attractionem partium ſimilium ponit, quæ in ventriculum aliave membra coëant. Obſervationes LITTRI de ovulis in tubas ſuſceptis merito ſuſpectas habet. Semina animalium immutabilia ſtatuit.

CL. WEISS Progr. anat. V. Altdorf. 1745. 4. lochia oriri ex villoſis abſcendentibus uteri vaſculis, excerni etiam per tubas, & alia eo pertinentia habet.

In CASSEBOHMI poſthumo opere huc multa pertinent. Ligamenta teretia ex fibris uteri componi: epidermidem uteri: fibras a ſpinctere ani ad clitoridem: carunculas uteri mere vaſcuſoſas habet: carunculas ab hymene recte ſeparat. Idem in Progr. de differentia fetus ab adulto, Hall. 1730. cæcum fetus inteſtinum & ventriculum deſcribit, uterum aliquantum apertum vidit: In Tractatu de Aure humana capitis monſtri oſteologia habetur.

In Anatome D. DEIDIER fibrarum uteri ſtrata duo, longitudinale & tranſverſale, & vaſcula uteri menſes ſtillantia, vaſa lactea in caveam uteri pendula, & cum placenta communicantia habentur, tum in Tractatu des humeurs p. 91. & ex eo FIZES de generat. p. m. 182.

AD. BERNH. WINKLER de uteri ſitu obliquo, Gotting. 1745. 4. Antiquam eſſe obſervationem monet, nec tanti momenti.

J. J. HUBER de foraminis ovalis & canalis arterioſi uſu & ſtructure, Caſſel. 1745. 4. MERYUM, quem credit uſum canalis arterioſi invertiſſe, fuſe refutat innocuum, chordulas foraminis ovalis deſcribit valvulæque huius hiatus fabricam, quem nimis humili loco ponit.

JOH. TIMM comm. in DIONIS von erzeugung und geburt des menſchen, Brem. 1745. 8.

Lezione di MICHEL ANGIOLO ROBERTI ſulla teſta monſtruoſa d' un vitello, Neapoli 1746. * & de eodem LEMUEL GULLIVER lettera ſu d' un vitello di due teſte colle ſue note, Neapoli 1746. 4. *

P. AD. BOEHMER de neceſſaria funiculi umbilicalis deligatione, Hall. 1746. 4. Recte contra SCHULZIUM negat geniculum, negat abrumpi arterias umbilicales, teſtatur ſanguinem in ſuis obſervationibus ex arteriis umbilicalibus fluxiſſe: icones cellulofitatis umbilicalis dat.

De TURBERVILLE NEEDHAM obſervationibus diximus in tomo phyſico. Ad generationem aliqua habet.

TURBERVILLE NEEDHAM in nupero opere nouvelles obſervations microſcopiques, Pariſ. 1750. 12. magni momenti obſervationes profert, quibus oſtendat, a putredine utique animalia naſci, eaque a vi expansiva & reſiſtente contemperatis formari, animalia denuo in ſyſtema vegetabile redire, &c.

Lettres ſur le pouvoir de l' imagination des femmes enceintes, Pariſ. 1745. 8. Nævus explicat a nimia vel nimis parca ſanguinis determinatione ad aliquam partem fetus: tum a compreſſione ſpaſmodica muſculoſi uteri, omne vero nævorum a matre in fetum commercium rejicit. Idem Auctor anonymus in Trivultinis Actis 1746. April. Jun. recte negat aliquos nævos a matre ad fetum tranſire, contra anonymum adfirmantem in Trivult. 1746. Jan.

ERNST. ANTON. NICOLAI von der erzeugung des Kindes in mutter leibe, und der harmonie, wvelche die mutter mit ſelbigem hat, Hall. 1746. 8 Explicat matris in fetum imperium per harmoniam utriuſque, ut anima matris cum ſuo corpore, hoc cum corpore fetus, id cum ſua anima in harmonia ſit, & eo tempore, quo ſanguis celerius aut lentius ad partem aliquam in matre venit, etiam in fetus partem ſimilem celerius aut lentius influat.

ERN. ANT. NICOLAI edidit etiam Gedanken von der erzeugung der miſgeburten und mond kälber, Hall. 1749. 8. Et per accidens & a prima fabrica monſtra dari poſſe, & animam utique ſuos nævos fetui inſculpere perſuadetur.

STEPHANI POURFOUR du PETIT ergo pro diverſis a conceptus temporibus varia nutritionis fetus via, Pariſ. 1746. Diſp.

ST. POURFOUR du PETIT citata diſputatione primo per poros cutis, inde per placentam & os fetum nutriri tradit.

LUD. BALDINGER de conceptione, Altdorf. 1747. 4.

In JOH. LOGAN *experimentis & meletematibus circa plantarum generationem*, Lond. 1747. 8. Panspermia defenditur.

In *Bononiensibus Comment.* T. II. P. II. p. 369. habentur PAULI BAPTISTÆ BALBI observationes in cicatricula ovi factæ.

J. E. HEBENSTREIT *funiculi umbilicalis pathologia*, Lips. 1747. 4. cum bona descriptione funiculi, amnii gemellorum, vasorum propriorum fetui. Exstat in T. V. mearum collectionum.

G. AUG. LANGGUTH *de fetu ab ipsa conceptione animato*, VVittemb. 1747. 4.

G. BATT. SORMANI *della natura de' mostri*, Lucca 1747. 4. Nondum legi.

In CORN. SCHLICHTING *embryulcia*, Amstel. 1747. 8. omnes figuræ uteri feti falsæ esse arguuntur, quod uterum non plenum repræsentent: dolores partus explicantur ab uteri constrictione.

CORN. SCHLICHTING hoc loco citatus in *siphilidos mnemosyno critico*, Amstelod. 1746. 8. describit partes femininas, additis suis hymenis iconibus, & sinus mucosos vaginæ confirmat, &c.

In PLANQUE *Bibliothèque de Médecine*, magnâ vis habetur partuum monstrosorum.

CHRISTOPH. GOTTLIEB BUTTNER *Beuveißs daß ein Kind mit dem aus der brust gewachsenen herzen leben könne*, Königsberg 1747. 4. Fetus cui pectus apertum, cor nudum.

D. QUESNAY in nova editione suorum *Essais* iterum fere sententiam D. LAUNAY repetit, germina nempe & in masculo semine & in femineo ovo latere.

In LEVRETI *Libro des accouchemens difficiles* aliqua habentur de pelvis diametris. Sed in universum omnes Auctores obstetricios legere oportet.

CL. KALTSCHMIED in *Diss. de distinctione inter fetum animatum & non animatum*. Jen. 1747. 4. pariter recte demonstrat nullam esse.

CL. KALTSCHMIED etiam edidit *disputationem de virginitate*, Jen. 1750. Pro hymene.

AARON MONCECA *von der einbildungs kraft der schwangeren vveiber*, 1747. 8. *

GEORG. CHRISTOPH. BAUMGARTNER *de differentia partus vivi & vitalis*, Altdorf. 1748. 4.

PETRI BERCHER & MORAND, *Ergo non ab uteri ejusque vasorum situ perpendiculari menstrua mulierum purgatio*, Paris. 1748. 4. Etiam bruta animalia menses pati.

PHIL. JAC. WALTHER *de partu naturali ejusque causis*, Argent. 1748. 4.

W. AUG. LINDNER *de communicatione vasorum mammariarum cum epigastricis*, Hall. 1748. 4.

Contra BIONDELLUM nuper CL. HAMBERGERUS multis programmatibus pugnavit, & cyprini monstri caput descripsit.

LUD. MICH. DIETERICH *de fratribus Italis ad Epigastrium connatis*; Regenspurg 1749. 4. nempe viro, qui semiperfectum infantem appensum gerit.

S. T. QUELMALZ *de incremento fetus*, Lips. 1748. 4.

Meus *de fetu bicipite* libellus recusatus est nunc Gotting. 1751. 8.

EBERH. FRID. BLANCHOT *de indole & usu liquoris amnii*, Tubing. 1748. Disp.

CAROLI JOH. AUG. OTTONIS *Ep. de fetu puerpera*, VVeissenfels 1748.

In COMM. BONON. T. II. P. I. habetur bona descriptio monstri agni, JOSEPHI GARATTANI.

Ego denique *de fetu bicipite ad pectora connato*, Tiguri 1735. 8. & Hannoveræ 1739. 4. Libellum edidi, quo partus compositus describitur & ea sententia de monstrorum delineatione in primis staminibus proponitur, quam etiam WINSLOWUS docuit. In *Progr. de tunica allantoidea*, Gott. 1739. Membranam mediam fetus descripsi.

In *femina gravida historia*. Gott. 1739. 4. duarum feminarum gravidarum, quas mihi aperire contigerat, descriptionem dedi, & cicatricem ovarii, corpus luteum, &c.

In *duorum monstrorum anatome*. Gotting. 1742. 4. fetum porcinum connatum descripsi, & felem capite semiduplici, & canem pede posteriori superfluo.

Anatomen duorum monstrorum, & citata duo ibidem programmata etiam recusa dedi Gotting. 1751. 8.

In *Progr. de fetu humano septimestri cerebri experte*, Gott. 1745. 4. dedi dissectionem hujusmodi fetus, ubi multa similia exempla recensentur.

In alio Progr. de monstrorum origine mechanica, Gotting. 1745. ad LEMERY aliquas observationes respondi.

Iconem uteri humani in secundo fasciculo dedi cum rugis vaginæ, fabrica eleganti cervicis uterinæ, sinibus mucosis, caruncularum genere duplici, septo uteri. Quæ de eo negotio in Commentariis Boerhaavianis scripsi, justum volumen implent.

Tractationi huic de partibus genitalibus mulierum adde: CAR. JOH. AUG. OTTONIS epistola de fetu grandi, VVeissenfels 1748. 4. Miram ab ovo historiam repetit, & ostendere suscipit, quo modo fieri possit, ut fetus utero concipiat.

LUIGI STAMPINI descrizione d' un feto nato con la maggior parte delle membra radoppiate, Rom. 1749. 4. *

FRANCI PLANCI de monstris & rebus monstrosis, Venet. 1749. 4. satis pro nostro systemate, nempe aliqua casu monstra nasci, alia in prima fabrica fundari. Multa & monstrosa & alioquin rara describit, galli enorme calcar, ossa præter naturam passim nata, ossis hyoidis varietates, &c.

J. NOREEN professoris nostri de uracho observatio Gotting. 1749. 4. Naturaliter pervium esse, sed in funiculo terminari.

ABRAH. d' ORVILLE de causis menstrui fluxus, Gotting. 1749. 4.

BERN. SIEGFR. ALBINI Tabula VII. uteri gravidi, Leid. 1749. fol. Recipit ovi membranam villosam extimam; pingit & arteriarum & venarum oscula in cavum uterum hiantia.

In IV. Tomo Hamburger Magaz. CL. vir. J. G. PIETSCH ostendit non posse androgynos dari.

GODOFREDI PLOUQUET de generatione corporum organisatorum disquisitio, Stuttgart. 1749. 4. Monadem primariam sive totius animalis fingere ad sui similitudinem monades servientes particularum corporis sui, &c. Vermiculos refutat.

CL. vir BUFFONIUS in II. Tomo historiae naturalis systema proponit, corpora animalia & vegetabilia esse modulos in quibus figuratum ad similitudinem majoris animalis aliquid, ejus vero partem superfluum descendere, in semen fieri, inque eo adparere mobilem, & pro vermiculis vulgo haberi. Quæ omnia in ipso opere legenda sunt. Anthropogoniam etiam describit. In T. III. CL. DAUBENTON analogiam ornat masculorum & femineorum organorum.

ISAAC. MOBACH QUÆT de catameniis earumque usu, Leid. 1749. 4.

CHRISTOPHORI MANTELISSI intorno la probabilità della superfetazione, e i diversi sistemi concernenti la generatione. Continentur in Dissertazione, lettera sopra varie materie, Firenze 1749. 8. Contra systema evolutionis pro novo illo systemate dicit, quo generatio viribus insitis naturæ tribuitur. Superfetationis exemplum describit, Parmacopola.

J. R. BOEHMER de consensu uteri cum mammis causa lactis dubia, Lips. 1750. 4.

Iconem falsæ androgynæ, veræ nempe feminæ hoc anno edidit MERTRUD.

Et de androgynis scripsit ARNAULD cum libro JOURDANI de sananda lue venerea atque aliqua exempla protulit.

JULIANI OFFRAI réflexions philosophiques sur l'origine des animaux, Londin. (Berol.) 1750. 4. Ludibunda dictione casu a parturiente terra animalia generari ita ostensum.

De BAUSSAC in J. des Sav. 1750. octob. urachi dat descriptionem, & vult inseri arteriis umbilicalibus.

J. GEORG ROEDERER disputatio de fetu perfecto, Argent. 1750. 4. Multa propria habet de uracho nostris similia, de placentulis vaccarum, ampullis aqueis pro allantoide inponentibus, membrana pupillari, foramine ovali, ductu arterioso &c.

J. CONR SCHIMPER de signis graviditatis, Basil. 1750. 4.

J. PHILIP. ERPEL nachricht von einer frauen welche zugleich fünf kinder vier misgeburt und ein mondkalb geboren, Hall. 1750. 8. Ex aliena relatione, audio a viris fide dignis unice quatuor infantes fuisse cum sanguinis grumis aut molis.

Mammarum historiam omnium commodissime muliebribus genitalibus subjicere visum est, quæ eorum quasi partem efficiant.

Organa quidem veteribus parum nota fuerunt. De natura & conditionibus boni lactis aliqua ex RUFO habet ORIBASIIUS L. IV. Synops. c. 40. aliqua AVICENNA & sic in vulgum Practici plerique. Ductus in mammis lactiferos primus vidisse videtur A. VESALIUS.

HIERONYMI ACCORAMBONI de lacte, Venet. 1536. 8. *

HIERON. ACCORAMBONI citata ad mammarum historiam disputatio de lacte non inutilis est, sed practica magis.

JOH. VISCHER de lacte ejusque partium natura, Tubing. 1586. 4.

JULII CÆS. BARICELLI de lactis, seri & butyri facultatibus, Neap. 1603. 1623. 4. *

JOH. RONCONI de MUTIGLIANA de sero lactis ejusque usu & preparatione, Florent. 1631. 8. Pro destillati seri usu, diæteticus potius & practicus.

JOH. NARDII lactis physica analysis, Florent. 1634. 4.

JOH. NARDII lactis physica analysis, Florent. 1634. 4. jam citata, ad ARISTOTELIS ingenium scripta est, cum varia eruditione, absque experimentis. Serum idque destillatum contra H. OBICIUM defendit, butyri antiquitates docet &c.

EZECHIEL di CASTRO tractatus del colostro dove si tratta de' diversi mali de' bambini &c. Venet. 1642. 4. recusum cum SCIPIONE MERCURIO.

In ANTONII MENIOT posthumis opusculis, Amstelod. 1697. 4. editis, exstat de lactis materia tractatus.

LUDOV. TESTI de saccharo lactis, Venet. 1698. fol. 1700. 8. Practici magis scopi.

P. MARQ. SLEGEL de natura lactis, Jenæ 1640. 4.

STEPHANI RODERICI CASTRENSIS de sero lactis, Flor. 1632. 8. Norimb. 1646. 12. *

FRANCISCI MARIE FLORENTINI de genuino puerorum lacte mamillarumque usu, Luc. 1653. 8. *

P. FRANCISCI PALLIERI de vera lactis generatione & usu, Genuæ 1664. MERCL.

ANTON. DEUSING de motu cordis & sanguinis, itemque de lacte, Groning. 1655. 12. Una prodierunt H. CONRINGII Helmsladii 1649. habita, & LINDENI de lacte Diss.

T. BARTHOLINUS Cent. I. hist. 92. dedit primam iconem ductuum lactiferorum.

MAUR. HOFMANN. de statu naturali & praternaturali mammarum, Altdorf. 1662. 4. 1673. 4.

MART. SCHOOK de butyro, acc. de aversatione casei, Groning. 1664. 12.

In Phil. Trans. Vir lacteans, n. 461. Nutrix vetula 214. 453.

WILH. CHRIST. KUEFFER Diss. de lacte, Argent. 1672. 4.

GEORG. FRANK de triplici lacte virginis, Heidelberg. 1678. 4.

CHRISTOPH. DAN. METZER de lactatione, Altdorf. 1685. 4. B. RIV. *

HENRICI CHRIST. ALBERTI Disp. de lactis statu secundum & prater naturam, Erfurt. 1684. *

ALANI LAMY de la génération du lait exstat cum explication de l'ame sensitive.

A. van LEEUWENHOECK globulos lactis in Phil. Trans. n. 102. & alibi descripsit.

GOTFR. ECHARDT de humani lactis natura & usu Disp. Erfurt. 1691. 4. B. RIV. *

CHRIST. LANGE de lacte humano Disp. 1692. *

CHRIST. LANGE citata de lacte humano disputatio prodit primum, Lips. 1653. 4.

PHIL. ab HULDEN de mirandis natura fontibus e quibus humane sustentationis nectar hauritur, Jen. 1697. 4. *

J. PHIL. BREYN de galactosi, Disp. 1699. 4. *

SCEVOLE de SAINTE MARTHE la manière de nourrir les enfans à la mammelle, Paris. 1698. 4.

GOD. SAND de effectarum lactatione, Regiom. 1701. 4. *

BERTINI DEUXIVOYE an recens nato lac recens enixa matris, Paris. 1703. 4. PL.

Ad anatomen mammarum observationes habet J. B. MORGAGNUS Adversarior. I. & V.

THEOPH. PRAUSER de lactis natura, usu & abusu, Leid. 1706. 4.

FR. PETIT in epistolis Namur. 1710. 4. editis habet lactis analysin.

J. SIGISM. HENNINGER de lacte, Argent. 1713. 4.

DAN. SLUIM de lacte, Leid. 1716. 4. *

J. FRANÇ. LEAULTE an virgines possint lactescere, Paris. 1719.

FRANÇ. WILHELM. MENCELII Disp. de structura mammarum, Leid. 1720. 4.

HIER. LUDOLF de lacte, Erfurt. 1724. 4.

J. FRID. de PRE' Disp. de lactis progenie, caseo & butyro, Erfurt. 1725.

CHRIST. GOTTFR. STENZEL de lactis succique nutritii preparatione, VVittemb. 1721. 4.

GUTERMANN de mammis ac lacte, Tubing. 1727. 4.

LAUR. HEISTER Dei existentia ex mammis &c., Helmst. 1730. 4.

COG. ROSSI de mammis Opuscul. scientif. T. VII.

J. GOTFR. GUNTZ de mammarum fabrica & lactis secretionem, Lips. 1734. 4.

L. THEOPH. LUTER de lactis humani statu naturali & praternaturali, Erfurt. 1735. 4.

J. V. de BERG de Mammis, Leid. 1737. 4.

HYACINTHI THEODORI BARON Ergo prolem lactare matribus saluberrimum, Paris. 1741.

De VANDENISE & LEAULTE Ergo recens nato lac maternum, ibid.

PH. AD. BOEHMER de ductibus mammarum lactiferis, Hall. 1742. 4. cum icone.

POLYC. FRID. SCHACHER de lacte virorum & virginum, Lips. 1742. 4.

J. H. SCHULZE de lacte, Hall. 1742. Diss.

J. J. S. untersuchung in wuelchen fallen es erlaubt sey Saug-Ammen zu halten, Lips. 1745. 8.

J. DOLDE de colostro, Basil. 1750. bona disputatio.

Icones etiam ductuum lactiferorum non tamen optimas dederunt ANT. NUCK & PH. VERHEYEN. Bona adhuc deficit.

Ad lactis porro analyfin LUD. TESTI in Libello alibi citato, & Mercure Suisse 1734. BOERHAAVIUS in Chemicis DOORSCHOOT in Diss. Leidæ habita 1737. 4. quæ experimenta HIERONYMI DAVIDIS GAUBII continet. CASPAR NEUMANN in posthumis prælectionibus. J. FRID. CARTHEUSER in pharmac. GOURAIGNE in Libello jam citato. CL. BERCH in Svenska Acad. Handlingar 1745. HOMBERG Acad. Reg. Scient. 1712. J. C. BARCHUSEN in Epist. citatis Acroamatibus, & alii scriptores habent.

Ad lactis analyfin citatus J. FRID. CARTHEUSER, de eadem etiam egit in *mar. med.* T. II.

C A P U T XIV.

De Renibus.

R Enēs referimus ad hoc caput propter magnum nexum, & exortum vasorum spermaticorum. De iis itaque primus legendus erit magnus ille & illustrissimus Romanus scriptor BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS (a). Inter ejus nempe *opuscula anatomica*, non aliud magis super alios Auctores eminet, quam *Tractatus de Renibus*, qui Liber ita latuit, ut quindecim, & viginti florenis constituerit; sed edendum illum curavi in 8. anno 1707. in qua editione simul adduntur figuræ æneæ, quæ latuerant in bibliotheca Principis in Italia (b). Hic etiam Auctor

(a) Ante EUSTACHIUM parum profecerat renum historia. RUFUS urethram ab uretere separaverat. Papillas tamen JACOBUS CARPUS dixerat, aqua injecta fistulas uriniferas exploraverat, & NICOLAUS MASSA ductulos uriniferos ipsos. CAROLUS STEPHANUS descripsit meatus acicularum similes, ægre visibiles, innumeros, quibus renes urinam adtrahunt, vidit etiam renem ex duobus connatum. VESALIUS nihil addidit. GABRIEL FALLOPIUS fistulas in sinu renis cum operculis breviter indicavit: varietates etiam vidit geminorum ureterum, arteriarum duplicium. WILHELMUS RONDELET renes compositos Delphini aliorumque animalium dixit, & papillas, forte ante EUSTACHIUM.

Sed BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS justo Libro, excuso Ven. 1563. 4. & 1564. 4. papillas renales, earumque ductus multo liquidius descripsit, VESALII ex animalibus desumptam descriptionem correxit, capsulas reni vicinas invenit, vasorum innumerabiles varietates vidit, iconibus expressit, ureterum in ingressu ad vesicam fictitias valvulas refutavit, experimento docuit vesicam vacuum reperiri si ureter ligatus fuerit, dextrum renem humiliori loco poni contra omnem antiquitatem demonstravit, tumorem album ureteribus continuum indicavit in Tabulis posthumis.

(b) Misit Librum quidem PETRUS HOTTON, icones vero DOMINICUS GUIGLIELMINI, qui eas invenerat inter libros RAMAZZINI (Præf. ed. 1707.) Cæterum recuderat eas icones.

Auctor incomparabilis est, & habet ea omnia de renibus, quæ pro novis nunc a neotericis traduntur, cum tamen antiquus Auctor sit, vixit enim cum VESALIO.

Legatur etiam LAURENTII BELLINI Tractatus exiguus de Renibus (a), editus Florentiæ, sed & iste elapso nuper anno Lugduni Batavorum recusus est. BELLINUS multa quidem habet, quæ EUSTACHIUS jam invenerat (b), ex eo enim se ornaverunt plurimi, quod lateret ille Liber, neque furtum facile adgnosceretur. Aliqua tamen propria habet.

Videatur etiam MARCELLUS MALPIGHIUS de Renibus (c).

Dein-

C. BAUHINUS in theatro anatomico. BOERHAAVIUS in editione sua omisit PINI adnotationes, quibus indicantur loci antiquorum, ad quos EUSTACHIUS respexit.

SALOMON ALBERTI in histor. part. glandulas vermiculatas (papillas) pervias poris ægre visibilibus non admittentibus pilum dixit, EUSTACHIO forte usus.

J. RIOLANUS capsulas cavas esse primus negavit, musculum dici, qui esset vesicæ membrana, noluit.

A. SPIGELIUS canaliculos renovavit, musculum vesicæ a H. F. ab AQUAPENDENTE propositum recensuit, renem sinistram altiore in iconibus fecit.

GEORG. GRASSECK de fabrica corporis humani, Argent. 1605. 8. vidit renem ex duobus coalitum.

JOACH. OELHAVEN de usu renum, Gedan. 1616. 4. & Hafn. 1669. 8. Theoria mera, qua renes ad generationem & seminis præparationem facere contendit.

BARTH. CABROLIUS etiam observationem habet duorum renum in unum coalitorum.

J. RHODIUS in Mantissa varias renum & vasorum eo facientium anomalias habet, & ductum a succenturiato rene in testem. Sed etiam M. A. SEVERINUS in Zootomia hunc ductum prior dixerat.

THOMAS WHARTON in Adenographia icones dedit capsularum bubularum, cavitatem adseruit, foramina in cavo vidit in venam cavam ducentia.

V. F. PLEMPIUS papillas renales & earum ductus descripsit, qui etiam stylum recipere, addidit, non bene, membranulas valvulosas.

OL. WORMIUS de usu renum, Hafn. 1669. 8. ad seminis generationem facere credit.

DOM. PANAROLUS aliquos in rene lusus observavit, tum J. van HORNE in BOTALLUM, alique, quos omnes laudare nimium foret.

JOH. LOESEL de genuina renum fabrica, Regiomont. 1642. 4. Non malus Libellus cum iconibus propriis & observationibus anatomicis varii argumenti.

THOMAS BARTHOLINUS capsulas accuratius consideravit, cavas esse adseruit, varietates observavit. Renes in unum connatos vidit. Pro viis stetit propioribus urinæ.

M. LYSERUS carunculas & tubulos descripsit, per quos serum stillat.

(a) LAURENTIUS BELLINUS de structura renum, Florent. 1662. 4. Argentin. 1664. 12. cum iudicio de renum usu. J. ALPH. BORELLI, Patav. 1666. 8. Leid. 1665. 12. (cum rene monstruoso BLASII, tum an. 1711. & variis annis in 4. Dictio complicata. Sinulos EUSTACHII ita auxit, ut cavos tubulos faciat; de vasis renum observationem addidit, quod ex circulis suis ad superficiem renis ramos spargant; spatium inter arterias renis & fistulas medium interposuit.

J. ARN. FRIDERICI de Renibus, Jen. 1663. 4.

(b) EUSTACHIUM nempe nusquam citat, & unicum corpus papillare facit, ex vervece, manifesto argumento, nunquam humanum renem ab ipso fuisse dissectum.

(c) MARCELLUS MALPIGHI in Libro de viscerum structura, Bonon. 1666. 12. Londin. 1669. 12. & in operibus omnibus habet de Renibus Tractatum in quo prioribus addidit glandulas elementales renis, quas credidit urinam separare, & infundere ductibus BELLINIANIS, ut vulgo vocantur. Aliqua, ejusdem scopi, in posthumis addidit.

CHRISTOPHORI WREN historia renum, quam erat adgressus, nunquam prodiit (THURSTON diatrib. de respir. p. 116.)

GER. BLASIUS in observationibus fabricas peculiares renis multas habet: in Civetta va-

sa per

fa per superficiem decurrere observavit; ad *BELLINI* Opusculum renem adjecit ex duobus coalitum.

F. SYLVIVS sanguinem a liquore capsularum reddi fluidiorem ex conjectura proposuit, in *Diff.*

In *Philosophicis Transactionibus*.

TYSON fabrica renum peculiaris de capsularum figura & cavitate, n. 142.

Renes distincti in urso, lutra, phocæna, struthione, n. 144.

Triplex vesica, n. 168.

Ureteres feminarum ampliores sunt. Aliqua de situ renum. De vasis renalibus observatio, n. 307.

Pilulæ & alia egesta per urinam, n. 323.

Ureter per duas tertias suæ longitudinis partes duplex, n. 337.

Viarum urinæ fabrica non naturalis, n. 410.

Ureteres duo & pelvis duæ in rene, n. 475.

T. KERKRINGII alternas ureteris dilatationes & contractiones vidit *Obs.* 50.

THOM. PETRUCCI in *spicilegio anatomico de structura & usu capsularum renalium*, Romæ 1680. 12. ut ex *JOURN. des SAV.* video, docet ferri eo per venas sanguinem, ex quo separetur atra bilis: hinc valvulas esse, quæ ex vena in cavitatem capsulæ liquidum admittant, non contra adfirmat. Renes ex lobulis compositos vidit.

TH. PETRUCCI librum citatum cum ab eo tempore ipse nactus sum, de eo addo, quod proponat, atram bilem a vena secretam per arteriam resorberi, & urinæ misceri, eamque tingere. Icones, quas habet, non bonæ sunt. *IDEM* parabat etiam renovatam hominum genesin & de hominis generatione ex ovo, qua novam de semine sententiam proferre constituerat. *P. MANDOS.* p. 249. sed videtur nunquam prodixisse.

De viis novis ad vesicam, de quibus diximus, invenio etiam apud *T. GUIDOT* in *prolegomenis* historiam, qui partem potus ventriculo suscipi credit.

Vias novas ad vesicam, rene insalutato patentes, eo tempore multi descripserunt, post *HIPPOCRATEM* περὶ τῶν ὀν, *ERASISTRATUM*, *ASCLEPIADEM* (*GAL. facult. natur. I.*) *Anonymus* in *Phil. Transf.* n. 65. 67. & *E. N. C. Dec. I. Ann. 2.* *T. BARTHOLINUS*, *CORNELIUS CONSENTINUS*, *M. TILING* de *vas. brev. A. DEUSING* aliment. depurat. *THEOD. CRAANEN*, *TOB. ANDREÆ* (qui proprias observationes adlegat p. 119. 127. 160.), la *HIRE* anciens Mémoires T. II. ubi observat ex vesica inversa aquam destillare, hinc poros habere admittentes, neque vicissim emittentes. *MORIN* Acad. des Sciences 1701. & *REAUMUR* 1714. quod experimentum, ubi de vesica agemus demonstrabimus ab aliis etiam, ab ea secta alienis viris factum esse. *G. V. FRANKENAU* in *diapedesi restituta*, Hafn. 1716. 4. (& in coll. mea T. III.) & *NIC. HARTSOEKER* in *suite des conjectures*, & *MORGAN* in *mechanic. principles* (quorum uterque adfirmat ligatis ureteribus vesicam tamen repleri.)

OL. BORRICHIVS in *Act. Hafn.* fabricam ureterum descripsit.

MATTH. TYLING de admiranda renum structura, Francof. 1672. 12. Compilatio, & ex vulgaribus scriptoribus. Recusa est cum titulo *M. T. mirabilis anatome renum*, Francof. 1699. 12. & *nephrologia nova curiosa M. T.* cura *J. HELFR. JUNKEN*, Francof. 1709. 12.

P. ANTONIVS MOLINETTI varietates vesicæ vidit, de capsulis sententiam proposuit, factas esse, ut sanguinis in fetu diverticulum sint, quo decedat, ne in renes decumbat copiosior.

P. PERRAULT valvulas ureterum renovavit, & fuse de eorum officio egit.

In *JOURN. des SAV.* 1671. 1678. renes monstrosi connati describuntur.

J. M. HOFMAN de glandulis renalibus *Diff.* Altdorf. 1683. 4.

R. J. CAMERARII historia anatomicæ renum & vesicæ, Tubing. 1683. 4.

EL. RUD. CAMERARII historia anatomica renum *Disp.* Tubing. 1699. 12.

SAMUEL COLLING ex anatome comparata, ut solet, diligenter egit de renibus, etiam in rarioribus animalibus, ut in tigride, ex homine etiam papillas octo, cum suis lineolis & apicibus in infundibula prominentibus satis bene pictas dedit.

T. GIBSON in *Anatomy epitomized*, Lond. 1684. 8. habet icones capsularum *TYSONIANAS*, exiguas.

ANTONIUS NUCKIVS contractiones & dilatationes alternas, in uretere fere perpetuas, indicavit.

J. GOD.

Deinde FRIDERICUS RUYSCHIUS, tam in *Observationibus*, quam in *Theſauris* diverſis locis (a).

J. GOD. WELSCH de renibus ſuccenturiatis, Lipſ. 1691. 4. eas capſulas aliquid ad ductum thoracicum mittere ſuſpicatus eſt, quam opinionem video etiam B. TEICHMEYERO placuiſſe in *anthropologia* & a J. A. KULMUS in *Breslauer Samlungen* 1722. experimento quodam confirmari. Sed vicinia vaſorum lymphaticorum manifeſta eſt, ex cavea capſulae oriri ſuper eſt ut demonſtetur.

CAR. DRELINCOURT apud BLASIUM aliqua de liquore capſularum Agyptico habet, &c.

J. J. HARDER in *apiario* de capſulis aliqua & maximum renem deſcripſit, & glandulas corticales MALPIGHII ex femina.

G. BIDLOO glandulas MALPIGHIANAS pro re certa & definita depinxit.

J. HARTMANNUS capſulas renales docuit liquidum ſeparare, quod ſanguinem, ſero plurimo privatum, fluidiorem redderet. Ea etiam ſententia eſt BIUMI de *canaletti* &c. & J. FANTONI.

G. BAGLIVI renem unicum vidit.

J. BOHNIUS egregiis experimentis contra vias peculiareſ urinæ pugnavit *Progymn.* XIV. & ligato uretere nihil in veſicam venire vidit: tum P. KERHEYEN in T. II. varietates etiam in rene vidit.

J. COWPERUS in *Anthropologia* cera & aere per venas capſulas ſe repleviſſe ſcribit: circulationem per renes deſcripſit injectionibus. Ureteris contractionem ad unum locum arteriæ iliacæ non bene reſtrinxit.

In *Mémoires de l'Académie des Sciences*.

In *Anciens Mémoires* Academici cavitatem capſulae negarunt, renem urſi depinxerunt; in Elephanto Glandulas renales & ductus excretorios manifeſtos expreſſerunt.

In novæ Academiae monumentis 1700. Nullus in altero latere ren.

1701. Glandulae ureteris.

1704. Appendices veſicae.

1702. 1705. 1706. Glandulae renis Malpighianae a LITTRIO confirmatae, ita evidenter, ut nimium videatur.

1707. LITTRE ren unicus.

1715. MARANGONI de immenſa vi aquae a virgine reddita.

1714. Membrana de veſica decedens.

1730. Ren unicus major.

1731. Ren in delphino in renculos diſcedens, poſtquam externa membrana remota eſt.

1740. Explicatio modi, quo bifurcati ureteres generantur HUNAUDD.

1744. T. E. BERTIN fabricam renis deſcribit, cui reſtituit MALPIGHII glandulas, magnasq; facit, & ex iis majorem partem ductuum uriniferorum oriri, minorem ex arteriis, docet.

J. FANTONUS in *Differtationibus* defendit ex brutorum anatome glandulas elementares renis: capſulas cavas eſſe aut proprium liquorem habere cum MORGAGNO negat.

J. PETRI HOLLARD de renum ſtructure & uſu, Baſil. 1705. 4. * PL.

J. B. MORGAGNUS demonſtrat Ureterum diametrum inaequalem eſſe, neque tamen id pertinere ad vim comprimentem iliacorum vaſorum. Capſularum cavitatem negat, aut in dubium revocat, Vaſſalvianum inventum in *epiſtola* XX. explicat.

Vaginam vaſorum renalium habet J. RAU apud VALENTINUM.

RAYMUNDUS KIEUSSENS in *novo vaſorum ſyſtemate* habet iconem arteriarum renalium ex cervice, quam RUYSCHIUS, & deſcriptionem, eo quo ſolet omnia modo. Vaſa credit ſe vidiffe neuro-lymphatica, quae urinam ab arteriis ducerent in ductulos uriniferos. In *Tractatu des liqueurs* renem per medium ſectum, papillas numeroſas ductuſque earum ſatis pulchre expreſſit p. 361.

(a) FRIDERICUS RUYSCH glandulas renales negavit, renem unice vaſculoſum eſſe & ejus corticem componi vaſculis ſerpentinis in ductus Bellini continuatis, capſulas non remotas eſſe a rene, ſed incumbere contra BARTHOLINUM oſtendit. In *Adv.* II. habet conjecturas aliquas de vaſculis ex uretere abſcedentibus.

Arcus arteriarum renalium ſe vidiffe confirmat SCHELHAMMER in *physiologia poſthuma*. A. M.

A. M. VALSALVA, ut notissimum est, credebat se vidisse in animalibus; maxime in iis, quæ testes in lumbis gerunt, vasa a capsulis ad ovaria aut testes euntia. Sed ea fuerunt cellulosa tela vid. *Comm. Bonon. Giorn. de' letter. T. 32. & Dissert. posth. a MORGAGNO editam III. CL. RANBY* arteriolam pro eo ductu habuerat *Phil. Transf. n. 385. 395. CL. TEICHMEYERUS* nervum in *Disp. de generatione*.

In *MIDDLETONI* de calculi sectione Libro varietates aliquæ in ureteribus habentur.

J. KEIL in *compendio* habet glandulas & contractiones ureteris.

G. D. COSCHWITZ de *valvulis ureterum*, Hall. 1723. & in *Collect. nostra T. III.* statuit in decursu ureterum valvulas, quas in *Museo* admittit A. VATERUS, nos non reperimus. Habet etiam alias utiles observationes.

W. RUTTY a *treatise on the urinary passages*, London. 1726. 4. Est Gullstoniana lectio. Multum utitur MORGAGNO. Addidit renis cum duplici pelvi, & vasorum in rene animalium rapacium per superficiem decurrentium Parisinis Anatomicis & BLASIO minime ignotorum iconem. Practicas etiam observationes aliquas proponit.

W. CHESELDEN habet icones renum in situ. CL. BASSIUS in observationibus de venalibus capsulis scripsit, & serum secernere quod sanguinem adtenuaret, cum PETRUCCIO aliisque credidit.

RICH. POWER de *urina secretion, & excretion*, Leid. 1729.

H. P. JUCH de *urina secretion & excretion*, Erfurt. 1729. 4.

J. G. DUVERNOI in *Tom. V. Actor. Perrop.* egit de capsulis renalibus, & P. A. MOLINETTI atque JOSEPHI POZZI conjecturam secutus est.

A. NOOT de *usu & structura renum*, Leid. 1733. *Disp.*

In *EDIMBURG. SOC. SPEC. vol. III.* habetur exemplum urinæ per foramina duo super pubem effluentis.

S. P. HILSCHER in *progr. Jen. 1733.* renis unici observationem descripsit. Recusum est in *vol. Disp. select. III.*

H. J. REGA in *Traſſatibus duobus de urinis*, Lovan. 1733. 12. impugnat vasa peculiaris urinæ, urinam potus ab urina sanguinis separat.

J. CHRISTOPH. LISCHWITZ *renum in fetu urina secretionem declinans diverticulum*, Kilon. 1736. 4. *

J. NELSON de *renibus & secretionibus, & diabete*, Leidæ 1736. *Disp.*

CL. PETSCHÉ in *anatomicis observationibus*, Hall. 1736. 4. arteriarum circulos describit, unde rami rectilinei exeant Belliniano more. Varietates etiam multas describit.

JOS. MOSES BENDIEN de *renibus eorumque affectibus*, Traject. 1737. 4.

J. H. SCHULZE & KESSELRINGII *Disp. de lithiasi sinistro magis quam dextro reni magis infesta*, Hall. 1738. 8. Omnino legi meretur ad vasa renum, &c.

JOH. KENNION de *situ & structura renum*, Leidæ 1739.

Perpirationem renum proposuit CL. KAAU.

CL. CASSEBOHMIUS in posthumo Libro renem vervecinum bene descripsit. Valvulas COSCHWITZII refutavit, alia bona attulit.

D. VELSE in *Disp. de ingressu intestinorum* duas in uno rene pelves, flatum a vesica in ureterem redire vidit.

GYSBERTI BEUDT de *fabrica & usu viscerum uropoieticorum*, Leid. 1744. 12. & in *Coll. nostra vol. III.* Multa utilia habet, membranas ureterum quinque; glomeres albos renis ex cera alba a spiritu vini expressa explicatos; varietates vasorum. Ductus aliquando duos a capsulis renalibus ortos & euntes versus pelvim se vidisse refert.

CHRISTIAN SWAGING de *excrementis secunda coctionis*, Leid. 1744. 4.

EDUARDI LYNE de *urina secretion in statu naturali & morboſo*, Leidæ 1744. 4.

ABRAHAMUS BAECK in sua oratione habita coram Academia Suecica meminit renis ex duobus connati.

CLIFTONUS WINTRINGHAM vasorum renalium capacitates, & robora, æstimavit. Venas amplissimas & laxissimas invenit, arterias ex firmioribus.

In Libro of comparative anatomy ut aliorum, etiam hujus visceris ætiologiæ exstant. Papillam unicam carnivoris ob fætorem lotii, ad celeriores secretionem datam esse suspicatur.

Ren unus a CL. HANDWIG in *Bibl. Hamburgensi* in vol. I. describitur. Alius ex HUME.

HUMELII olim mei Professoris observatione in *Comm. Litt. Nor.* 1743. alius in CL. WITTHOFII nupero scripto de hypothese LEEUWENHOEKIANA exhibetur, alius in *Comment. Bonon.* T. II. P. I.

HENR. KINTIUS in *Disp. de nephritide*, Leidæ 1746. 4. habet observationes aliquas in vasis renalibus & anatomen visceris.

G. AUG. LANGGUTH de *humoris saccati per solos renes percolatione*, Vittemb. 1746. 4. Negat vias peculiare urinae.

Nos in monstri descriptione renem duplicem connatum exhibuimus, & in icone vasorum renalium tres classes arteriarum capsularium; arterias ureterum, aliaque minute investigavimus.

Scriptores subijcimus, qui de vesica urinaria egerunt, quorum plerique equidem jam tum sunt citati, quando egimus de partibus generationis virilibus.

A. VESALIUS peritonæi ad vesicam habitum in *examine observationum FALLOPII* descripsit.

G. FALLOPIUS sphincterem, fibras vesicæ, insertionem ureterum, & ejus utilitatem ostendit.

F. ROUSSET in *Libro de partu caesareo* egregie expressit peritonæi ad vesicam habitum, ejusque super ossa pubis situm, & in vacua & plena vesica.

J. RIOLANUS sphincterem vesicæ duplicem fusius descripsit, ut exterior amplecteretur prostates: in *enchiridio* appendicem vesicæ ex primis vidit, quam calculus fecerat.

NIC. HABICOT vesicæ ligamenta tria describit, ad os pubis euntia, & ad intestinum rectum, & tertium super vesicam extensum, quo ab abdomine separaretur.

J. CASSERIUS vesicam super os pubis adurgere in iconibus expressit: fibras per longitudinem vesicæ decurrentes, posteriores, bene depinxit.

M. A. SEVERINUS duos monticulos albæ & durioris substantiæ in initio urethræ positos primus in sue vidit in *zootomia*. Eos etiam GRAAFIUS habet.

V. P. PLEMPIUS valvulas ureteris refutavit, compressionem vesicæ musculis abdominalibus potius, quam FABRICIANO musculo tribuit.

J. PECQUET experimenta de vesicæ contractione fecit, & vidit, acu compunctam nihil emittere.

T. BARTHOLINUS appendices vesicæ & ejus absentiam plenam vidit, & vim contractilem in vivo animale. Sphincterem apud BARTHOLINUM descripsit O. BORRICHIIUS.

G. BLASIUS etiam absentem vesicam & ureteres ad umbilicum apertos vidit, & vesicas gemellas, & septo distinctas.

Glandulas vesicæ in VII. Centuria *collectaneorum* habet S. BLANCARD, in *apiario* vero HARDERIUS.

In *Phil. Transf.* glandulæ vesicæ per morbum auctæ describuntur n. 228. & a CL. BUSIERE n. 268.

LEEUWENHOEK duodecim in vesica bubula membranas distinxit n. 323.

JURINUS n. 359. vim contractilem vesicæ æstimavit, ad libram unam & semis.

CL. NIC. LE CAT Urethram, cera plenam, & cellulositatem inter vesicam & os pubis descripsit, depinxit n. 460.

J. C. WEPFER vesicæ motum contractilem, diversum a muscutorum abdominis vi, recte confirmavit, tum DRELINCOURT in *canicidiis*: tum BOHNIUS.

R. J. CAMERARIUS de *renibus & vesica*, Tubing. 1683.

Glandulas mucosas vesicæ COWPERUS in *Libro de glandulis urethra* descripsit. IDEM in *myologia* musculus ut vocat proprium vesicæ expressit.

In *Acad. Scient. Gallica*.

1701. LITTRE vesicæ sphincterem describit.

1713. Vesica amplissima, quatuor pintarum capax.

J. G. de BERGER resorptionem vaporis abdominalis in vesicam admittit, vias urinae præter renem, nullas admittit. Eum vaporem in vesicam venire etiam J. FANTONUS admittit, & DEIDER, A. KAAU & alii.

Idem J. FANTONUS imam partem vesicæ latiore esse recte observat, &c.

JAC. RAVIUS sphincterem vesicæ describit, mistum ex fibris sphincteris ani & vesicæ fibris.

J. W.

J. W. PAULI in *programme de siph. anat. usu* 1721. vesicam ope ejus machinæ in multas laminas divisit, nerveam in tres, carneam in quatuor, &c.

J. B. MORGAGNUS de vesica & urethra multa habet, quorum partem recensui. J. BAPTISTÆ BIANCHI novos musculos & pseudosphincterem refutat, tumores albos ab ureteris ingressu continuatos sollicite describit, &c.

T. ALGHISII urethræ ex utroque sexu figuras in naturali situ dedit.

J. KEIL in *Tract. de velocit. sang.* vim vesicæ æstimat, & trium unice unciam facit. Sed eam vim P. A. MICHELOTTUS 504. libris æquat, & duplo etiam majorem facit D. RUTTY.

C. WOLFIUS in *nützliche versuche* III. vesicæ poros introrsum ducentes, aeri impervios demonstrat, etiam J. W. ALBRECHT in *observationibus anatomicis*, & J. F. CARTHEUSERO de aeris circulatione, &c. & olim C. CONSENTINO aliisque visos, membranæ vesicæ divisionem, ope siphonis sui, factam describit.

L. HEISTERUS glandulas vesicæ, & appendices exhibet (in *Chirurgicis*).

J. BAPT. BIANCHI in *Theatro anatomico MANGETI* L. II. multa nova proponit: Sphincterem vesicæ negat, ejus vices ait repleri a prostata in vesicam eminente: in feminis vero a prostata ibi minore (ignota). Levatorem vesicæ novum, & depressoem; & velum musculosum infra prostates ad bulbum urethræ progressum pro sphinctere habitum solus hactenus proponit.

Quæ J. B. BIANCHI l. c. proposuit, eorum multa repetit in nupera dissertatione quæ recula est in *Memorie di Valentuomini*.

J. D. SANTORINUS in *observationibus* sphincterem vesicæ negat, ad urethram varia observat.

In MIDDLETONI *Tractatu de calculi sectione* aliqua etiam ad vesicæ situm super os pubis, & ad cellulosa telam pertinent.

W. CHESELDEN in *Libro de apparatu alto*, Lond. 1723. 8. bonas figuras dedit situs vesicæ super os pubis, & plenam super id os adsurgere observavit.

W. RUTTY habet ex DOUGLASSIO fibras longitudinales vesicæ ortas ex prostata & osse pubis.

JOS. WEITBRECHT in *Act. Petrop.* vol. V. figuram situmque vesicæ egregie explicavit: fasciculos ad os pubis euntes potius pro musculosis habuit.

H. FR. LE DRAN in *parallèle de la taille*, Paris. 1730. 8. icones habet & observationes multas egregias; tendines, ut vocat, vesicæ ab ossibus pubis ortos; cellulosa vesicæ, situm in imo abdomine, cellulosa telam circumpositam, figuram veram variabilem aliaque. In *Academia Chirurgica Monumentis*, modum explicat mechanicum, quo appendices generantur, de quibus etiam alii Auctores in eo Libro observationes adferunt, & situm pinxit FOUBERT.

J. B. WINSLOW in epistola ad MORAND (cum ejus *Libro de apparatu alto* excusa) plicam illam semilunarem peritonæi, & hujus membranæ cellulosa telam circumfusam vesicæ describit.

In nova editione *Commentarii HEISTERIANI* ligamenta vesicæ a lamina interna peritonæi facta, & saccus cæcus secundum vertebrae lumborum positus a WINSLOWO visus adducuntur, de quo postremo possit expectari, esse eam viam urinæ peculiarem a ventriculo descendentem.

JAC. DOUGLASS adhæSIONES fibrarum vesicæ longitudinalium ad os pubis vidit, & situm in peritonæi sacco, hujusque adhæSIONES & semilunares plicas primus in *Libro de peritoneo* sollicite exposuit.

J. VAN BEEKHOVEN de WIND de *ureteribus & vesica urinaria*, Leidæ 1734. Disp.

F. NICHOLSS novam hypothesin de pyramidalibus musculis proposuit, qui vesicam elevent & ligamenta vesicæ laxent, dum mingitur. Eam in *œconomia animali* propositam non sibi displicere demonstravit JAC. PARSONS.

CL. CASSEBOHM in posthumo opere tunicam mucosam diversam a nervea statuit, sphincteremque in utroque sexu ab ani sphinctere ortum describit.

A. KAAU vim contractilem vesicæ observavit, resorptionem in vesicam demonstrat, & arterias halantes in ejus caveam, & aliam exhalationem in abdomen.

JAMES PARSONS *description of the urinary bladder*, Lond. 1742. 8. Paris. 1743. 8. recusa,

Eo fine inprimis scripsit, ut JOHANNÆ STEPHENS medicamentum refutaret. Brevem tamen etiam anatomicam descriptionem dedit maxime detrusoris fasciculi ex JACOBI DOUGLASSII observationibus, & de appendicibus, modoque egit, quo generantur, de figura vesicæ latiori, &c. Auctor Libri *of comparative anatomy* figuras vesicæ, ut ex pueris factas, carpit, quæ sacco inferiori destituuntur.

A. F. WALTHER in *Diff. de collo vesicæ virilis*, Lips. 1745. 4. sphincterem vesicæ non sufficere officio sagax vidit, eamque vel a solo situ claudi, deinde in adfuetis multos musculos vicinos eo conferre, levatores aliosque. Sed omnino legenda est.

CL. G. A. LANGGUTH in *Disp. supra citata* etiam nerveam a villosa tunica distinguit: aquam, ut per eam penetret, docuit.

PALUCCI in chirurgicis suis de calculi sectione observationibus etiam descripsit vesicam vasque pelvis & urethram.

GYSBERTUS BEUTH in *Disp. jam laudata*, iconem dedit vesicæ insidentis recto intestino: fibras ab uretere descendere versus urethram docet: cellulosam vesicæ primus, aut inter primos, describit; & mucosam & peritonæi habitum ad vesicam per varias ætates: figuram vesicæ veram: & sphincterem & vasa, & exhalationem demonstrat.

Ad urinam ejusque analysin pertinet THURNEISERI paradoxus Liber an. 1576. Berolini editus *neue erfundung der harnprobierung*. Pondera ipsa & analysin sollicitè habet, & salis, sulfuris & mercurii proportionem, indeque præagia deducit, sed sani, ni fallor, nihil inest. P. FORESTI Librum *de incerto urinarum judicio* & alios ejus generis de industria nunc omittimus, ut qui praxin unice secuti sint, neque analyses habeant J. B. HELMONTIUS *de lithiasi*, ubi præter paradoxas aliquas opiniones de spiritu urinæ vinoso, de origine calculi, habet tamen experimenta sua minime mala & nova, ex putrefacta urina nata, sales varios, spiritum urinæ cum spiritu vini coagulabilem. Idem *de febribus* bilem lotii refutat.

O. TACHENIUS in *Hipp. Chémico* salem marinum in urina demonstravit.

BARTHOL. BONACORSI *de humano sero, vel de urinis*, Bonon. 1650. 4. *

R. BOYLE in *apparatu ad historiam sanguinis humani*, in *Chémista sceptico*, in *historia fluiditatis & firmitatis*; in *Libro de infido experimentorum successu*, in *Libro de origine formarum*, & salem crystallinum urinæ, & fixum marino similem, & volatilem alcalinum salem, & alium ammoniacalem, & differentiam urinæ putridæ a recenti docuit.

H. MARTIN *Anatomia urinæ Galeno-spagirica*, Francof. 1658. 12.

THOMAS WILLIS *de urinis*, Lond. 1662. 8. Ed. III. Analysin habet, aut certe consilia ad destillationem, ad exhalationem, ad admistos liquores chemicos, & rariores viarum urinæ morbos.

THOMÆ WILLIS l. c. Gallice versus prodiit Paris. 1682. 12.

J. PHIL. BONANUS moleculas salis marini in urina vidit.

LAURENT. BELLINUS *de urinis*, Bonon. 1683. 4. (MERCL.) advocata de urina aqua augeri factorem & intendi colores expertus est. Similia etiam habet PITCARNIUS in *Elementis*.

EBERH. LANGERMANN *de excrementis corporis humani*, Leidæ 1694. * PL.

Varia huc pertinentia exstant apud *Anciens Mémoires* T. XI. LUDOVICUM LEMERY *Mémoires de l'Acad.* 1707. HOMBERG 1712. HELLOT 1737. JOHANNEM BOHN in *Progr.* XIV. ANTONIUM de HEYDE obs. 89. CAR. DRELINCOURT. *Disp. de lienosis*: PHILIPPUM VERHEYEN *Anat.* l. II. J. C. BARCHUSEN post *Acroamata*: G. E. STAHL in *fund. Chem.* NIC. LEMERY in *Chem.* VIEUSSENS *Traité des liqueurs* (qui acidum lotii defendit): SCHAPER *de corpusculis massa sanguinea* in T. II. Coll. *Disp. recusum*: F. HOFMANN in *Med. systematica* T. I. P. GERIKE in *Chem.* F. NICHOLLS in *compend. æconom.* CASPARUM NEUMAN (in operibus, quæ quidem valde placent): F. STEPHANUM GEOFFROY *Expériences sur la pierre*. Eximia etiam sunt quæ CL. POTT & MARGGRAAF de sale fusili urinæ habent in *Berol. Acad. Scient. monum.* an. 1746. Aliqua habet PINELLI in *Tractatu de podagra*.

HERMANNUS BOERHAAVE in *elementis chemicis*. T. II. salem essentialem urinæ sollicitè describit. Idem in *Libello de calculo*, quem nos recudi fecimus, generationem crystallorum calculosarum describit. Similia fere HENKELIUS *de aggregatione* habet.

ERN. HENR. WEDEL *physiologia urinæ*, Jen. 1703. 4.

De sale fusibili urinæ lege etiam HENKELIUM redivivum, ROHTIUM in *Chémia*, &c. Anonymus in *Trivultinis* 1708. habet analysin urinæ putridæ, & contendit in fundo destilla-

stillationis mansisse salem ammoniacum. Aliqua contra eas analyses vide in *Journ. des Savans*. 1708.

CL. LANGRISH per analyses diversitatem principiorum urinæ hominis sani & febrientis exponit.

J. HENRICUS POTT *Misc. Berol.* T. VI. analysin lotii habet, & acidum ejus experimentis confirmat.

Præcticos scriptores alibi dicemus.

Ad scriptores de phosphoro in physicis recensos adde.

JOURNAL DES SAVANS. 1677.

HELMONTIUM de homin. morb. *

HOMBERG *Anciens Mém.* vol. X. *Misc. Berol.* T. VI. VII. POTT *lithogegnos.* LEIBNITZ *Miscell. Berol.* T. I. HENKEL *kleine schriften* p. 601.

S E C T I O V.

De Adenographia, seu Glandularum descriptione.

Historiam de glandulis postposui visceribus, ex hac ratione, quia inventionione glandularum antiquior est viscerum cognitio.

Hæc historia vocatur *adenographia*, quia ἄδην Grace significat *glandulam*, & γράφω *scribo*.

De glandulis legendi sunt (a), primo, eminentissimus ille anatomicus, THOMAS WHARTON (b), gravissimæ auctoritatis in anatomia, & bonæ fidei, laudisque optimæ, non magnus ratiocinator, sed unice fidens cultro anatomico. Scripsit *Adenographiam*, qui Liber editus est in 8. Londini anno 1656. quæ editio optima est propter figuras; iterumque Amstelodami in 12. an. 1659., quæ editio satis bona est, nisi quod figuræ non tam bene exaratae sint. Nullibi plura de generatione animalium, de testibus, vesiculis feminalibus & prostaticis reperies, quam apud WHARTONUM; hinc qui de iis rebus publice & cum laude dicere & scribere vult, meliorem non potest consulere Auctorem.

ssf 2

Po-

(a) Veteres ante GALENUM non pessimam glandularum cognitionem attigerant. HIPPOCRATICIS equidem Libris inmixtus Liber περὶ ἀδένων, spurius dictus GALENO, in quo invenio vestigia glandularum mesentericarum, quas in omento ponit Auctor, capsularum renalium, glandularum in articulis, quas credo esse inguinales & alares. Doctrina de catarrhis ei similis est, quæ exstat in Libro de locis in homine.

Deinde GALENUS de semine L. II. ex MARINO manifesto repetit eam distinctionem glandularum rararum, conglomeratarum, secretoriarum, a conglobatis sive densis, ut vocat, quæ divisionibus vasorum adsident, quæ longo abinde tempore a FRANCISCO SILVIO de le BOE proposita est in *Dissertatione medica* V. qui conglobatarum glandularum bene plenum catalogum dedit.

B. EUSTACHIUS mesentericas, mesocolicas, aliasque expressit iconibus. Neglectæ tamen sunt pleræque glandulæ, maxime quod VESALIUS, ignobili attributa utilitate, eas contemtum habuerit. Quas ipsi tribuunt dorsales EUSTACHIUS etiam habet.

(b) Sed primus utique T. WHARTON proprio opere *adenographia*, Lond. 1656. 8. Amstel. 1659. 12. Vesalia 1671. & alias edito, eas rimatus est, quo libro plenior enumeratio glandularum, & multa ad pondera respectiva & incrementa thymi, thyreoideæ, salivarium continentur. Sed ex vitulis pleræque desumpsit, icones satis malas, & passim dedit observationes parum fidas, & ex nervis liquida pleræque secerni non bene ex conjectura docuit, cui multi crediderunt, Angli maxime. Laudat auxilium GLISSONII.

Postea (a) videatur Epistola MALPIGHII de glandulis conglobatis (b) ad Societatem Britannicam. In ea epistola exactissima habetur descriptio, & puto plus quam decies editam esse.

Post hæc legatur *Adenographia* ANTONII NUCKII, edita Lugduni Batavorum in 8. an. 1692. (c), non quod putem (d) NUCKIUM præstitisse aliquid, cum tentat refutare MALPIGHIUM: verum hac occasione nova aliqua detegit, quæ a WHARTONO & MALPIGHIO omissa erant.

Tunc MALPIGHII castigatio ad NUCKIUM potest videri (e).

Et laudatus tractatus GUILIELMI COWPERI de glandulis Lond. editus (f).

Denique FRIDERICUS RUYSCHIUS in suis *Observationibus anatomico-chirurgicis, thesauris & epistolis* (g).

Glan-

(a) NICOLAI STENONIS Filius in *specimine observationum de musculis & glandulis*, Hafn. 1664. 4. & in priori Libello de glandulis oris, Leidæ 1662. 12. 1680. 12., qui natus est ex inaugurali Dissertatione habita Leidæ 1661. 4. & in appendice *speciminis myologia* multa invenit in hoc genere, ductum, quem laudabimus, glandulas mucosas narium, palati, laterales linguæ, ceruminis, cutaneas mucosas animalium, oculares glandulas. Distinctionem SYLVII, qui glandulas conglobatas & conglomeratas fecerat, primus propagavit.

(b) MARCELLUS MALPIGHIUS magnam suarum laudum partem a glandulis habet. Omnia viscera, certe cerebrum, hepar, lienem, renes glandulis fieri primus docuit, quæ secretum ex arteriis, per earum membranas distributis, liquorem per ductum excretorium ad proprium locum amandarent. In Libro de externo tactus organo & in posthumis glandulas sebaceas diligenter descripsit. Deinde in Epistola de glandulis conglobatis (quibus fibras musculares & vim similem tribuit), Londini 1689. 4. & alias edita, & Leidæ 1690. 4. recusa, multa de mesenterii, ventriculi, intestinorum glandulis pulchra & utilia addidit. Eadem epistola cum operibus omnibus prodiit, & in *Diario Parmensi* an. 1689. p. 285. recusa est.

J. J. WEPFER tubulos in ventriculo avium, sive glandulam simplicem evidentiore egregie descripsit.

FRANCISCO MARIA GILIO (NIGRISOLIO) dell' anatomia Chirurgica delle Glandole, Ferrar. P. I. 1681. P. II. 1682. Nunquam vidi.

JEREMIÆ LOSS Disp. de glandulis in genere, VVittemb. 1683. Congregatas, conglobatas veriores, conglomeratas, ad quas refert lymphaticas, conglutinatas denique glandulas ponit, accuratius quam SYLVIVS aut MALPIGHIUS, omnesque fieri vasis, glutine (cellulosa) connexis, acute vidit. Recusa est in *Coll. Disp. T. II.*

FR. SCHRADER de lymphis & glandulis, Helmst. 1686. 4.

NEHEMIAS GREW in *Cosmologia sacra* recte docet, glandulas conglomeratas, ut in testiculi exemplo, fieri fibris & vasis (p. 20.)

J. PHIL. EYSEL de glandularum natura & usu, Erfurt. 1694. 4.

(c) ANTONII NUCK *Adenographia curiosa* (cum qua nova uteri anatome conjuncta est), Leid. 1691. 8. 1723. 8. Catalogum glandularum copiosorem proposuit, fabricam muscosarum glandularum sive conglobatarum demonstravit, lymphatica maxime persecutus est.

(d) Mihi quidem videtur A. NUCKIUS aliqua in melius mutasse, cum v. gr. mediam cavitatem sive acinum in conglobatis glandulis sua injectione mercuriali deletum expunxerit.

(e) Nempe in posthumis glandularum conglobatarum involucrum carnosum extus glandulam ambiens, & fibras intus reticulatas carneas repetit.

(f) Vide supra de part. genit. viril.

(g) F. RUYSCHIUS glandulis in universum iniquior fuit. Cum enim in visceribus variis caveas Malpighianas non invenisset, non de visceribus solum rejecit, falsam utique glandularum imputationem, sed de universo fere corpore nomen deletum voluit, & omnium simplicissimas glandulas cryptarum nomine reformare conatus est. Acinos viscerum non negat, sed ad glomeres valde cohærentium vasorum refert. Icones dedit glandularum nonnullarum & imprimis mesentericæ cum subtilibus vasis.

Hanc

Glandulæ vero nonnullarum partium, ut glandulæ palati, ad loca illa sitæ, ubi membrana SCHNEIDERI est, videri possunt apud SCHNEIDERUM. Glandulæ uteri apud MALPIGHIIUM describuntur, & apud eos, qui de utero

Hanc RUTSCHII sententiam ex omnium primis defendit J. GOD. BERGERUS in *Diss. de natura humana*, & in *Disp. de secretione* 1712. & cum eo BERNHARDUS ALBINUS *Libro de poris*. Nunc ubique obtinuit.

GODOFRIDUS BIDLOO in *opusculis*, inque expostulatione in COWPERUM ad glandulas conglobatas, & vasa lymphatica eas glandulas prætervehentia varia addidit. In *Disp. inaug.* quam defendit GUIELMUS MYLIUS, Leidæ 1698. habetur novus catalogus glandularum conglobatarum, earumque fabrica describitur, nimis, ut vereor distincta, musculosa duplex dicitur, dilatans folliculum & constringens, & tendinea, cum folliculo & vasis lymphaticis, quæ transire secundum glandulas, abque ipsis ramos simplices accipere vult, dicitur, non autem in eas glandulas dividi, aut eo suum liquorem deponere.

J. CHRISTIAN WOLF *Epistola de glandulis*, Lips. 1699. 4.* PL.

J. WILH. PAULI *de abstrusissima glandularum structura & differentia*, Lips. 1709. 4.*

LAUR. TERRANEUS in jam laudato opusculo glandularum receptis classibus novam adjicit *disgregatarum*, quo nomine simplices glandulas intelligit, quas utique a lymphaticis & conglomeratis merito separat cum J. FANTONO & olim MALPIGHIO. In morbos etiam earum glandularum inquirat.

ADAMI FRIDERICI KREMER *de structura & officio glandularum*, Vienn. 1716.*

HERMANNI BOERHAAVE & FRIDERICI RUTSCHII *epistolæ de structura glandularum*, Leid. 1722. 4. PRÆCEPTOR ornatissimo primo sermone doctrinam MALPIGHII exponit, & propriis experimentis usus, longam simplicium glandularum seriem per universum corpus humanum persequitur, adjecta humorum descriptione. Glandulas ex simplicibus compositas, parum notas, proponit. Denique fabricam viscerum glandulosam ex insectorum anatomie, morbis, aliisque rationibus defendit, quam tamen theoriam sub vitæ suæ finem deseruit. RUTSCHIANAM etiam artem fraudis alicujus & nonnaturalis mutationis viscerum ream facit.

J. B. MORGAGNUS magnam glandularum minorum vim passim aut invenit, aut accuratius descripsit, in epiglottide, larynge, lingua, pene, urethra, vaginæ muliebris orificio, articulis, mamma, cute, alibi. Vide ubique & inprimis *Adv. I. III. IV. V.* Pro glandulosa fabrica viscerum, & pro MALPIGHIO erudite, ut solet, & morbis inprimis usus disputavit in *Epistolis ad VALSALVAM* datis, & ipse VALSALVA in *Epistola III.*

NANNIUS in *Comm. Bononiensibus I.* fabricam etiam glandulosam tuendam suscepit: tum JOSEPHUS POZZI in *commercio epistolico*, & J. FANTONUS in *anat. dissert.*

B. D. MAUCHART *de vera glandula appellatione*, Altdorf. 1718. 4. sententiam CL. PRÆCEPTORIS sui HEISTERI defendit, nempe ab habitu definiendam esse glandulam.

J. JAC. GRAMBS *de glandulis quæ præter necessitatem in corpore humano statuuntur*, Altdorf. 1719. 4. HEISTERI videtur opus esse.

JO. NIC. WEISS *de viscerum & glandularum & ulcerum analogia*, Altdorf. 1729. 4.

C. G. STENZEL *de glandularum in plurimis visceribus absentia*, VVittemb. 1731. 4. Sententiam Ruyschianam defendit.

LAURENTIUS HEISTER *Compendio suo adenographiam* adjecit, quæ universalialia aliqua ad glandulam & compendium glandularum corporis continetur.

W. CHESELDENIUS glandulas conglobatas a musculosa functione removit, cum fibris eam perfecturis destituantur.

THEOPHILUS LOBB. in *rational method of curing fevers*, Lond. 1734. 8. fabricam glandularum simplicium ex theoria definivit, ut vas esset ex rubro ortum valde flexuosum, ex cujus flexionibus orta lymphatica vasa humorem tenuiorem traherent. Conglomeratas ex hujusmodi simplicibus congregatis fieri posuit.

J. F. CRELL *de glandularum in cæcis & apertis divisione* (quam refutat), Helmstad. 1741. 4.

C. GOTTL. LUDWIG *de glandularum differentia*, Lips. 1740. 4. Nobiscum glandulas conglobatas separat a simplicibus, cum quibus nescio quomodo conjunxerunt BOERHAAVIUS.

Eam

ntero scripserunt; hinc non opus est, ut de his seorsim agamus. Glandulæ intestinorum apud PEYERUM, & illos, qui de illis partibus scripserunt, habentur (a).

Eam nos observationem in *commentariis* nostris feceramus, passim etiam forte ad historiam glandularum aliqua addideramus, ad thymum, conglobatas.

SERVAAS van de COPPELLO *de fabrica & actione glandularum*, Leidæ 1743. 4.

A. de HUGO *de glandulis in genere & thymo*, Gotting. 1743. 4.

(a) Subjungemus Auctores, qui de glandulis sigillatim dixerunt, deinde alios, qui secretionem, absque glandularum memoria proposuerunt, alios denique qui liquores varios corporis humani, in superioribus nondum tactos, consideraverunt. Ad plerasque equidem glandulas jam Auctores citavimus, addemus qui supersunt.

Salivales ductus inferiores invenit EUDEMUS, unde ad GALENUM, & Arabes omnes, & JACOBUM BERENGARIUM, & AL. ACHILLINUM transferunt, apud quos viros describunt nominari. Suscitavit antiquum inventum THOMAS WARTON loco citato & ex vitulo descripsit, cum satis mala icona, & proportionem indicavit ejus glandulæ cum thyreoideâ, thymo, aliisque glandulis.

JAC. SEIDEL *de saliva, spuma & muco*, Gryphsvvald. 1588. 4. *

JULIUS CASSERIUS ligamenti meminit in buccinatore, quod videtur esse ductus Stenoniani resecti superstes radix, & venarum nomine eos ipsos ductus expressisse videtur. Id ligamentum in medio buccinatore an. 1648. repertum pro re nova describit MOULINS in *Musculor. histor.* p. 17. Sed neuter ejus naturam totam perspexit. Eum ductum ergo invenit juvenis adhuc N. STENONIS, & descripsit ex brutis animalibus, non tamen optime, in *Diff. de glandulis oris*, Leidæ 1661. 4. GERARDUS vero BLASIUS, sibi tribuit discipuli præstantissimi inventum, in *præf. ad medicinam generalem*, & de eo apud BARTHOLINUM litigavit (in *Epist.*) Verum præter NICOLAUM HOBOKEN, cujus exstat *de ductu salivæ Blasianus*, Ultrajecti 1661. 12. excusus, & qui testimonia trium discipulorum pro BLASIO adjecit, atque DEUSINGIUM infensum STENONI vix quemquam sequacem invenit. Nam & imperfecte valde loco citato descripsit, & magnæ laudes aliæ NICOLAI faciebant, ut ab eo, qui adeo multa invenisset, plura facile expectarentur. Ipse se tuitus in *Libro de muscul. & gland.* Neque NEEDHAMUS, qui sibi idem adrogabat inventum, consensum ullum expertus est.

J. von HORNE *de ductibus salivalibus*, Leidæ 1656. 4. Vol. *Disp. sel.* I. Tres disputationes sunt, omissæ in editione PAULIANA operum HORNII. Primus ductus novus WHARTONII ex homine descripsit.

Apud M. AUR. SEVERINUM multa semina inventorum reperiuntur, quæ alibi laudavi, ad glandulas intestinales, bronchiales.

F. SYLVIUS, STENONIO teste, invenit glandulas buccales.

In *Collegio Amstelod.* observationes utiles exstant.

CAROLI RAYGER *de saliva natura & vitiis*, Argentor. 1667. *Disp.*

NICOLAUS STENONIS filius, præter priores laudes, etiam buccarum glandulas descripsit in *Diff. & Libro de muscul. & gland.* Glandularum sublingualium oscula primus vidit, sed ad perfectionem inventum non deduxit. Plura deinde excretoria oscula princeps RIVINUS in corollario disputationis *de dyspepsia*, Lips. 1679. 4. unum autem grandem ductum, similem VWhartoniano, CASPAR BARTHOLINUS descripsit *de ductu salivæ novo*, Hafniæ 1684. 4. Ultrajecti 1685. 8. sibi vero inventum tribuit J. M. HOFMAN *Disp. de gustu* p. 34. J. de MURALTO, qui sibi in Libello, quem *Vademecum Anat.* inscripsit, ductus sublinguales tribuit, neminem consentientem invenit. Porro ALBINUS pater in *Diff. de salivatione mercuriali*, Francof. Viadr. 1689. ductus sublinguales descripsit parallelos VWhartoniano, fere uti BARTHOLINUS. Propius ad verum accessit J. B. MORGAGNUS, cujus de ductulis salivalibus, foramine cæco, &c. observationes legere oportet. Deinde A. F. WALTHERUS in *Libro de lingua*, Lips. 1724. 4. Harlemi 1745. 8. & in *Disp. select.* vol. I. & tenues glandulæ sublingualis ductus observavit, & alios majores, similes Bartholinianorum. Contra eum equidem objectiones aliquæ motæ sunt in A. E. 1725. ab anonymo, qui WALTHERIANOS ductus a MORGAGNO jam descriptos fuisse suspica-

rus est. J. DOM. SANTORINUS eodem loco aliqua addidit, & MORGAGNIANOS ex sublinguali glandula vere oriri testatur. Sed WALTHERUS ad eas objectiones respondit in A. E. 1727. & aliqua addidit. Idem glandulam VVhartonianam continuari sublinguali, nec distinctam esse, recte monuit, & ductum Coschvzii refutat. Et certum est, perpetuo multa earum glandularum ostia adesse, etsi minime rarum sit, ductum aliquem grandem inde nasci, similem descriptioni C. BARTHOLINI.

T. BARTHOLINUS thymi succum & cavitatem lacteo succo plenam vidit. Eam etiam AMADEUS BOURDON, & J. G. DUVERNOI, & alii viderunt. Ductus vero excretorius Thymi quem DAN. TAUVRY, & anonymus in Breslav. Act. 1718. & Fr. BELLINGER in Libro of the nutrition of the fetus in the womb. Lond. 1717. 8. & olim RUTSCHIIUS & alii aliquando crediderunt se invenisse, is quidem haecenus latet.

GEORG. BALTHASAR. MEZGER historia anatomico-medica thymi, Tubing. 1679. Disp.* Pituitariam glandulam dixerunt WILLISIUS, LOWERUS, & imprimis J. C. BRUNNERUS in Disp. propria, Heidelb. 1688. habita, in qua pro conglobata habet, & vaporem cerebri credit resorbere. De ea etiam legi potest CL. LITRE in Mémoires de l' Acad. des Sciences 1707. MORGAGNUS Adv. VI. alique.

J. M. HOFMAN de saliva natura, usu & effectibus, Altdorf. 1676. Disp. JEREM. LOSS de natura & usu saliva, VVittemb. 1677. 4. *

G. FRANK de vasis salivalibus, Heidelb. 1673. Diss. * F. SCHRADER & COLLINSIUS foramen cæcum, & folliculos simplices linguæ descripserunt.

ANT. NUCK de ductu salivali novo Librum scripsit, Leidæ 1686. 12. quem ex glandula quadam brutis animalibus peculiari deduxit, in homine nondum repertum, sed in cane a B. ALBINNO visum & sibi vindicatum. Sed idem in sialographia, Leidæ 1690. 8. adjecit reliquos prius notos ductus salivales, & satis mediocriter depinxit, salivæ vero analysin dedit.

AUG. HENR. FASCH parotides, Jenæ 1683. 4. * BERNHARDUS ALBINUS in Disputatione de poris habita Francof. ad Viadr. 1685. p. 27. ductum molarem sive palatinum haud longe a Stenoniano apertum invenit. IDEM an. 1688. 4. Disp. edidit de massa sanguinea corpusculis, quam recudi curavi, ob analyses liquidorum humanorum.

CONTULUS in ACT. LIPS. 1699. enormem glandularum cutanearum dedit iconem. Sic J. PHIL. VERHEYEN in supplemento salivæ & fere omnium liquidorum humanorum analyses dedit: tum C. DRELINCOURTIUS de lienosis: HERM. BOERHAAVE in Diss. inaugurali de excrementis quam CL. HAYMANNUS excudi curavit: JOSEPHUS DUVERNEI in historia DU HAMELIANA: JOH. ASTRUC de digestionem: GEORGIUS BAGLIVUS: CHRISTIANUS DEMOCRITUS von Krankheiten des animalischen lebens: T. ZWINGER in collectis Disp. quarum una est de saliva sana & agra.

G. BAGLIVUS, quem ibi citavimus ad salivæ & liquidorum C. H. analysin, de eo argumento egit in dissertationibus II. Perusinae editis cum tractatu de fibra motrice.

J. VIRIDET in Libro de prima coctione, Genev. 1691. 8. & Paris. 1735. 8. in saliva, succo gastrico, & enterico experimenta fecit, & acidum inesse credidit.

F. HOFMAN de saliva ejusque morbis, Hall. 1694. 4. Disp. & progr. 1698. glandulas in musculo buccinatore sitas descripsit.

F. ROPER de salivatione critica, Hall. 1702. 4. GUIL. COWPERUS in anthropographia salivales ductus & sebaceas glandulas passim glandulas varias per occasionem icone expressit.

Sed etiam A. van LEEUWENHOEK glandulas sebaceas faciei earumque smegma in epistolis physiologicis descripsit.

JOH. ERN. SCHAPER de glandulis mucilaginosi, Rostok 1698. 4. *

J. C. BARCHUSEN post Acroamata supra laudata salivæ habet analysin. J. W. PAULI in præf. ad microcosmum JHO. van HORNE glandulas buccinatori incumbentes describit.

J. W. PAULI ibidem citati etiam est programma de glandulis conglobatis, Lips. 1717. 4. ANTONIUS MARIA VALSALVA glandulas sebaceas cum J. B. MORGAGNO inter primos constituit. Idem ductus Stenoniani iconem non optimam dedit, ex homine tamen.

JOS. LANZONI *de saliva*, Ferrar. 1702. 8. & in operibus omnibus.

RAIMUNDI VIEUSSENS *Traité des liqueurs du corps humain*, Tolosæ 1715. 4. *salivæ* etiam & aliorum liquorum humanorum habet analysin. Multa repetit & late BERGERI inprimis loca describit.

J. SIG. HENNINGER *de saliva* Diff. I. & II. Argentor. 1705. 6.

J. ADR. SLEVOGT *spicilegium circa tonsillas*, Jen. 1704. 4. suo loco omissum.

WILH. HENR. MULLER (discipulus BIDLOI) *de thymo*, Leidæ 1706. 4. & J. PHIL. VERHEYEN *responsio ad exercit. anatomicam de thymo*, Lovan. 1706. 4. Non magni momenti etsi acerba satis controversia.

JACOBI VERCELLONI *de glandulis œsophagi conglomeras*, humore vero digestivo, &c. Astæ 1711. 4. Describit glandulas œsophago incumbentes, bronchiales etiam, dorsales, & alias nescio quas, ductus excretorios adscribit, non valde probabiles, ramosos, inde vero & inprimis ex thyreoidea fermentum vitale, nempe vermes ad ventriculum descendere supponit. Contra eum JOHANNES HAGERUS, VVittembergæ an. 1721. Diff. *de glandula thyreoidea* edidit, tum J. W. PAULI scripsit in progr. ad RIVINI filii *de auditus vitiis* Diff. demonstravit glandulas bronchiales lymphatici generis esse, œsophageas ipsas magis ad ductum thoracicum pertinere.

JACOB GELLETIN *de excerniculis capitis recentioribus inventis anatomicis illustratis*, Hall. 2712. 4. habet glandulas salivales, pituitarias.

J. BAPT. GASTALDI *de saliva* in *Aët. Trivultinis* 1715. eam habet pro fermento ventriculi. *

THOMÆ SCHWENKE *de saliva*, Leidæ 1715. Disp.

CHRIST. ADAM GORN *de pituita*, Lips. 1718. 4. Utilis Disputatio cum experimenta chemica varia contineat, facta cum pituita, & variis chemicis salibus commistis.

BENED. STÆHELINUS in *spec. anat. bot.* 1724. Basileæ edito, glandularum subcutanearum in homine repertarum habet exemplum.

J. G. a BERGEN *de parotidibus*, Francof. ad Viadr. 1717. Disp. *

MARTINI SCHURIG *sialographia*, Dresd. 1723. 4. De saliva & ductibus salivalibus brevis compilatio. De hydrophobia & morfu animalium rabidorum fusissime.

BARTHOLOMÆI BOSCHETTI *de salivatione mercuriali*, Diff. Venet. 1722. Ofenbac. 1732. Venet. 1744. 4. Naturales etiam & præternaturales *salivæ* dotes considerat.

A. VATER *de ductu salivali in lingua*, VVittemb. 1720. 4. recus. 1721. 4. & 1723. 4. præter alia inprimis glandulas simplices ad posteriorem partem dorsi linguæ positas pro una glandula conglomerata describit, cujus ductus excretorius esset in linguæ foramine cæco, rami etiam ad glandulam thyreoideam irent. Contra eum ductum L. HEISTERUS monuit in *Annal. Jul.*

G. D. COSCHWITZ *de ductu salivali novo*, Hall. 1724. 4. ductum salivalem ex sublinguali, maxillari aliisque glandulis ortum, a dextris & sinistris in parte posteriori linguæ in arcum coeuntem, ramis suis in superficiem linguæ distributum describit ex unica observatione, & in *continuatione observationum de ductu salivali*, Hall. 1729. 4. eum defendit. Eum etiam ductum industrius alias J. A. KULMUS crediderat se vidisse.

J. G. DUVERNOI *de ductu salivali novo*, Tubing. 1725. 4. & A. HALLER experimenta & dubia circa ductum Coschvitzianum, Leidæ 1727. 4. In priori Diff. ex brutis animalibus, in ista ex hominis cadavere demonstratur, non fuisse verum ductum, quem descripserat COSCHWITZIUS, sed venas, rete facientes ante epiglottidem. Porro ILL. olim WALTHERUS, & L. HEISTERUS, & CL. BEHR in *physiolog.* & alii contra eum ductum dixerunt. Nunc obsolevit.

SANTORINUM ubique legere oportet. Habet glandulam impositam ductui Stenonis, cujus ductum excretorium primus ni fallor descripsi, & depinxi (icon. art. fac.)

A. F. WALTER *de lingua humana*, Lips. 1724. 4. Harlem. 1745. 8. Egregium opus, quo & salivales ductus, glandulæ, alique vicini fontes, etiam de thyreoide ductu excretorio suspiciones continentur.

A. F. WALTHERI l. c. Harlemensis editio annexas habet illas jam dictas anonymi cum WALTHERO controversias.

WILL. CHESELDEN in *Anatome sua* præter bonam iconem thymi, aliaque id genus, diversas etiam secretiones ab attractionibus variis, &c.

- J. G. GMELIN** de actione glandularum mesenterii retardatoria, Tubing. 1725. 4.
JAC. SWART de saliva, Leidæ 1731.
ACHILLIS FRANC. FONTAINE an a saliva digestio, Paris. 1732. 4.
 In *Actis Petropolitanis* de Thymo exstant observationes **CL. DUVERNOI**, & de salivalibus ductibus **D. JOSIÆ WEITBRECHT** T. IX.
 Thymum etiam **JOSEPHUS POZZI** descripsit, & **HENRICUS BASS**, in *observ. anat. chirur.*
LAURENTIUS HEISTER glandulas bronchiales & thyreoideas in *E. N. C. Cent. VII. VIII.* tonsillas in *Cent. III. IV.* descripsit. Oesophageas incertas esse recte monet, in *compendio*, & thymi iconem dat, & glandulæ molaris, quæ pars est palatarum.
ANTONIUS DEIDER in *Libro des tumeurs* salivam alcalinam esse per experimenta proponit, secretionem ex fibris & poris respuentibus explicat.
FRIDERICUS RUYCHIIUS glandulas nasales, palatinas, thymum, mesentericas aliasque observationibus illustravit. Ejus exstat epistola in *L. D. de WESTHOVEN* de angina, in qua liquorem peculiarem in thyreoidea glandula parari, & in sanguinem venosum recipi suspicatur: similia etiam in thymo & liene fieri adfirmat.
CHRIST. JAC. TREW de vasis Lingua salivalibus epistola ad **A. HALLER**, Norimberg. 1734. 4. Ad salivæ ductus, sublinguales maxime, refutandum **COSCHWITZIUM**, &c.
JOH. JUNKER *Disp. de ignobili muco*, Halæ 1739. 4.
A. KAAV plurima in *Libro de perspiratione* egregia huc pertinentia habet, ad glandulas in universum, sed imprimis ad simplices cutis, faucium, ventriculi, &c. tum salivales aliasque.
J. OSTERDYCK SCHACHT de saliva, Ultraject. 1741. 4. PL.
PETRI JOH. BURETTE. Ergo canalus intestinorum glandula primaria, Paris. 1741. *Disp.*
VOLPRECHT de saliva ejusque ortu ex Parotide, Lips. 1741. 4.
J. C. KUHLER de saliva non temere exspuenda, Lips. 1741. 4.
CL. LIEUTAUD ad ductus salivales legi potest, qui bonam sublingualium descriptionem habet. *EJUSDEM* exstat in fine speciminum *Diff. de secretionis animalis mechanismo*.
J. GEORG. LAUTH de glandula thyreoidea, Argent. 1742. 4.
NIC. FRID. WILH. PRÆTORIUS de saliva, Leidæ 1742. 4.
 In **HAYMANNI** commentario **BOERHAAVIANO** analysis salivæ **GAUBIANA** exstat. Alias habet etiam in commentario **G. van SWIETEN**.
AUG. LUD. de **HUGO** in *Disp. de glandulis in genere & de thymo*, Gotting. 1746. 4. habet icones thymi cum cavitate, & duas diversas glandulas esse confirmat.
 In suis ad **HALESII** accessionibus **FR. de SAUVAGES** habet tabulam coæssionum in variis liquoribus humanis.
R. BROCKLESBY de saliva sana & morbosa, Leidæ 1745. 4.
AUG. GOTTF. KURELLA de saliva vera secretionem, Hall. 1748. 4.
 Classes humorum animalium constituit **CL. J. GOD. WALLERIUS** in *hydrologia*, P. 79.
 Nunc de secretionis modo agamus.
CARTESIUS de formatione fetus explorare cœperat secretionem per figuras pororum, quæ unice transmitterent humorum particulas figuræ suæ respondentes. Similia habent **J. A. BORELLUS** adjecta amplitudine, **J. D. GUILLIELMINI**, **J. P. VERHEYEN**, **THEOD. CRAINEN**, **J. H. VOGLI** *hist. fluidorum*, aliique.
MORLANDUS in *Phil. Transf.* n. 283. de secretionem animali minime malas cogitationes protulit. Diametros cæterum osculorum secretiorum diversitatem secreti liquidi facere credit.
GUIL. COLE in *Libro de secretionem animali*, Oxon. 1674. 12. Hagæ 1681. 12. Amstelod. 1698. 8. & alias passim recuso fermenta humores in loca secretionum pellentia in spiritibus animalibus quæfivit. Omnem secretionem glandulis tribuit, glandulas ubique adesse posuit.
J. M. HOFMAN *sciagraphia secretionum*, Altdorf. 1695. *Disp.* & cum eodem fere titulo 1707.
J. M. HOFMAN citati libelli editio anni 1695. *sciagraphia* est *secretionis animalis*, altera vero anni nempe 1707. vocatur *specimen secretionis animalis*.
C. BARTHOLIN de secretionem humorum in corpore animali, Hafn. 1696. 4.*
LAUR. BELLINUS inter opuscula, aliqua etiam de glandularum fabrica habet, & de arteriarum minimarum structura, retardatione quæ a plicis fit, seminis secretionem in teste.

FRANCISCI SROLETI Diff. II. *quarum altera est de secretione bilis*, Venet. 1686. * Bilem fecerni, quod crassissimis particulis fiat, in tanto motus lentore se comprehendentibus. Sed motum humorum in minimis accelerari admitti nequit.

J. KER *de secretionis animalis efficiente causa & ordine*, Leidæ 1697. 4. *

BERNARDUS CONNOR post *de evangelio Medici* edidit *tentamen epistolare de secretione animali*, Lond. 1697. 8. Glandulæ descriptionem habet, qualem MALPIGHIUS: fecerni vero in quolibet viscere eum liquorem, qui a primis initiis ibi a Deo esset concreatus, & cujus adfinis liquor unice per glandulam fluat, uti oleum per filtrum aquosum nunquam decedit. Nervos vero vi tonica regere glandulas addidit, & nullas præter eas, quæ requiruntur, particulas transmittere. Sententia de filtro placuit P. S. REGIS, J. G. BERGERO, WINSLOWO, J. A. HELVETIO (*éclaircissement sur la manière dont le sang, &c. & in œcon. anim.*) D. VERDIER, CRAZENSTEINIO & aliis.

Cum JAC. GAVETI *nova febris idea* prodiit etiam explicatio secretionis humorum, Genev. 1700. 4.

RAIMUNDUS VIEUSSENS in *Epistola qua nova aliqua inventa exhibentur*, Lips. 1704. 4. & in *novo vasorum systemate* vasa secretoria & mediate ex vasis rubris, & immediate ex vasis lymphaticis oriri fuse describit, tum in *Traité des liqueurs*. Sed ejus vasa minora videntur fibræ cællulosæ fuisse. Fermentationes defendit.

Ex Acad. Reg. Scientiarum Parisina monumentis huc pertinent:

J. B. WINSLOW de secretionem & glandulis 1711. 1712. Ponit ibi villos exhalantes in ductus excretorios aut cavitates glandulosas.

Zibethicæ felis folliculi eorumque glandulæ simplices describuntur 1728. & ratti moschati. 1711.

ASCANII MARIAE BAZZICALUVE *novum systema medico-mechanicum*, Parma 1701. 4. vide alibi ubi de vasis rubris agetur.

J. ADR. HELVETIUS *an quilibet humor ope sibi congeneris secernatur*, Paris. 1708. 4. EJUSD. Ep. de *structura glandularum* ad WINSL. 1728. 8. est excerptum quoddam epistolarum Boerhaavii & RUYSCHII. Utitur adtractione humorum homogeneorum.

JAC. KEIL *account of animal secretion*, Lond. 1708. 8. Latine recusum in tentaminibus. Hypothesin protulit, qua secretionem quidem in genere refert ad attractionem particularum similium, quæ sibi coherent, vi motus progressivi retardata: diversitates fere a diametris cum MORLANDO explicat.

CHRISTOPH. MART. BURCHARD *de secretionem humorum in genere*, Kiel. 1708. Disp. A magnitudine ostiorum excretoriorum secretionum discrimen ducit.

ARCHIBALDUS PITCARNE in Diff. *de modo, quo sanguis per minima*, &c. theoriam poristicam mathematice refutavit, quod etiam G. E. STAHLIUS fecerat in *progr. de paralogismo proportionis figura pororum secretoriorum*, Hall. 1702. 4.

FRIDERICUS RUYSCHIUS, præter priora, secretionum diversitatem a diversa fabrica vasorum minimorum secretoriorum deduxit, quæ aliter & aliter in singulis corporis partibus se habent.

In D. WAINWRIGHT *account on non naturals*, Lond. & sæpe alias excuso, etiam de secretionem aliqua exstant. Glandula ipsi est arteria complicata. Motum lentum viscida generare, & ea pelli ad canales longos vel cacos, velocitatem sanguinis augere secretionem fluidas, aliaque proposuit.

J. B. BIANCHI *systema secretionum* exstat post *Librum de hepat. hist.* in qua a velocitate diversitates secretionum deducit, bilem credit sanguine crassiore esse, ideoque a sanguine secedere. Contra eum scripsit LANCISIUS in *tertia Dissertatione*. BIANCHUS etiam in *prolusione* sibi glandulas omentales adscribit.

LUD. FRID. JACOBI *de secretionem animali*, Erfurt. 1711. Disp.

LAUR. BLUMENTROST Disp. *de secretionem animali*, Leid. 1713. 4. *

P. ANTONII MICCHELOTTI *de separationem fluidorum*, Venet. 1721. 4. Mathematica principia, & velocitates Leibnizianas in secretionem introduxit, leges secretionis, classes humorum proposuit, poros contra PITCARNIUM defendit, contra diversitatem secretionum a velocitate pugnavit, & pro diametris.

M. LISTERI *de humoribus* Liber huc pertinet omnino, Londin. 1709. 8. Amstel. 1711. editus,

editus, quo omnes in corpore liquores considerantur, multis adspersis, quæ ex varia eruditione conquirit, secretiones omnes ex chylo deducit. Spiritus animales negat, pituitam in cerebro parari credit. In singulis experimentis utilis, asper cæterum in adversarios, & **DRAKIUM**, **RUYSCHIUM** aliosque.

GEOR. CHEYNE *theory of acute and slow fevers*, London 1722. 8. Bellinum sequitur, febrem explicat a sanguine per canales liberos, dum alii obstructi sunt, celerius fluente, a rugis plicisque retardationem deducit, quæ sit (per paralogismum) ad totam velocitatem destruendam liquidi, uti unitas ad numerum plicarum, secretiones denique a magnitudine pororum explicat, & a velocitate fluidi. Vires corporis æstimat a copia sanguinis.

CHRISTOPH. DANIEL METZGER *de modo secretionis humorum*, Regiomont. 1722. 4.

JOH. de GORTER *de secretionem animali*, Leid. 1727. 4. Præter theoriam vasorum minorum **BOERHAAVIANAM**, varia etiam utilia ad secretionem monita habet.

THOMÆ MORGAN *philosophical principles of Medicine*, Lond. 1725. 8. & *philosophical principles of practice*, ibid. In priori imprimis Libro secretionem tractat, **KEILIANO** more, & explicat ab adtractione particularum tenuiorum in ultimis vasis, ubi impulsio & calor minora sunt, & tenuiora liquida a paucioribus complicationibus, a pluribus crassiora & tenacia secerni credit. Glandulas pro glomere vasorum habet.

GIUSEPPE DUCCINI *sopra la natura de' liquidi del corpo umano*, Lucca 1729. 12. Fermentationes aliasque chemicas hypotheses dudum obsoletas revocat, totum corpus in chemicum laboratorium mutat. Rudis omnino, qui quinque ostia facit ductus chyli ferri.

J. HENR. GEELHAUSEN *de differenti fluidorum in corpore animali secretionem*, Argentor. 1730. 4. & **J. DANIEL KUNTSCHE** in *Dissertatione de secretionem in genere*, VVittemb. 1746. 4. theoriam **HAMBERGERIANAM** proposuerunt, qua docet fluidi particulas, quæ solido aliquo leviores sunt, omnino non abire in vasa minora, eo vero ferri leviores particulas, motu ex adhæsiōe, & progressivo motu composito: inde secretionem ita varias fieri, ut in viscere specificè graviori graviores humores secernantur, neque id fiat nisi in iis partibus, ubi cordis motus est imminutus. Sed hanc theoriam audio Auctorem nuper proposuisse, quæ falso nititur fundamento, fluida graviora ad solida leviora non adhærere, falso iterum altero, liquida graviora in specificè gravioribus visceribus parari, &c. Cæterum calumnia est, ægre excusabilis, quando ait, **BOERHAAVIUM** ejusque sequaces poros triangulares & quadrangulares pro secretionum fundamento posuisse, cum **PRÆCEPTOR** eam hæresin fuse refutaverit.

Iis, qui theoriam **HAMBERGERIANAM** de secretionem proposuerunt, adde: **ANDREAM GUTSCHE** *de secretionem humorum*, Leid. 1749. 4.

JOH. OSTERDYCK SCHACHT *de secretionem animali*, Leid. 1726. Disp.

PETRI RIDEUX *conspectus in humores secretionum in genere*, Menspel. 1731. 8. Variæ conditiones, quæ ad secretionem pertinent, more fere **BOERHAAVIANO** exponuntur.

ADOLPH. FRID. HOFMANN in *novis hypothesis de rebus physiologicis*, Erfurt. 1731. 4. habet pondera specifica liquidorum humanorum, secretionem ab anima ope sphincterum nerveorum gubernari docet, &c.

PHIL. CARON & de DAVAL *liquida omnia in organo suo nasci quod incolunt*, Paris. 1732. Thes.

JOSEPHUS del PAPA *de præcipuis humoribus qui in corpore humano reperiuntur*, Florent. 1733. 4. Leid. 1736. 8. Secretionem a magnitudine pororum explicat. Recentiorum Auctorum sententias repetit, vix ullo proprio usus experimento.

D. PAYEN Paris. 1734. *varium motum requiri ad varietatem secretionum*. Crassiora remotissime a corde & contra generari, &c.

HENR. FRANC. BOURDELIN *Ergo variis secernendis humoribus varius sanguinis motus*, Paris. 1735. 4.

J. H. SCHULZE *de mechanico excretionis fundamento*, Hall. 1736. 4.

F. QUESNAJ in III. Tomo suæ *œconomia* varia habet, & inter alias causas diversæ secretionis, etiam sensibilitatem ostiorum, ut v. gr. mollioribus particulis orificia se non aperiant.

CLAUDII BRUNET *Ergo a diverso glandularum situ secretionem diversa*, Paris. 1737. 4.

B. MARTINE de animalibus similibus, refutat opinionem, quæ a molecularum & orificiorum diametro secretionem explicet, cum in animalibus ejusdem generis liquida in senioribus easdem quas in adultis naturas habent, pori vero insigniter augeantur, neque tamen mutantur secretionem.

LUD. ALEX. VIEILLARD *ab imminuta sanguinis velocitate in capillaribus facilior secretio*, Paris. 1740. Thes.

EJUSD. VIEILLARD & CANTWELL *an diversitatis secretionum causa multiplex*, Paris. 1741. Thes. Recte non unam, sed multas causas esse variarum secretionum.

LUDOV. GUILL. LE MONNIER *Ergo ex vasorum figura & origine facilior aptiorque fluidorum dispensatio* 1741. Paris.

CLIFTON WINTRINGHAM *in experimental inquiry in some parts of animal structure* varia observavit ad secretionem facientia, imprimis autem firmiores esse arterias, quæ ad organa secretoria ferantur, ut etiam vena portarum de eo privilegio participet.

ANT. FIZES *de Liene* varia huc habet. Secretiones depauperare sanguinem fluidioribus particulis recte monet.

CORN. GOESSEL *de organis secretoriis & ipsa secretionem in genere*, Marpurg. 1746. 4.

FLORENTII CAROLI BOLLOT *an quo lonstius a corde distat organum secretionis, eo humor secretas subtilior*, Paris. 1746. 4. B. PL.

Inter CL. LAMURE *diff. exstat etiam de secretionum mechanismo disp.*, Monspel. 1749. ni fallor.

BENI LUD. LUC. de LAUREMBERT, *ergo a diverso glandularum situ secretio diversa*, Paris. 1749. 4.

S E C T I O VI.

A N G I O L O G I A,

Sive vasorum proprie sic dictorum descriptio.

C A P U T I.

De vasis rubris.

Vasa corporis proprie vocantur *Canales* 1. qui ducunt humores a corde acceptos ad quodlibet internum & externum punctum corporis, &c. 2. qui liquores referunt ab hisce punctis iterum versus cor; & tum 3. qui humores ibi & delatos & secretos in se stagnantes aliquamdiu continent, quos alii sinus, vesicula alii aut folliculos vocant, sed nihil refert. Ergo vasorum nomine continetur omne arteriarum, omne venarum, vesicularum, folliculorum, finiumque genus (a).

De arteriarum ortu, natura, distributione, & usu, duo quæri possunt, 1. in usum chirurgicum nempe, 2. in usum theoreticum. Chirurgis enim magnæ arteriæ notæ esse debent, ut eas vitare queant, quando aliquas corporis partes secant, & curare easdem in vulneribus.

Qui nosse vult arterias, per totum corpus distributas, inspiciat 1. Tabulam VESALII in *Libro III. pag. 483. (b)*. Ea tabula fidissima omnium est, quæ editæ sunt; non

(a) BOERH. INST. n. 131.

(b) Angiologiam in tres partes dividemus. Dicemus primo arteriarum historiam, secundum magnos truncos, qui ex corde per omnes corporis partes pergunt. Inde subtilem arteriarum

non ideo perfecta (a), id enim sperari ab eo tempore non potest, sed tamen optima, etiam cum suis vitiis.

Ve.

rum historiam five ultimas divisiones, & quæ eo pertinent. Deinde sanguinem prosequemur, paulum mutato ordine *PRÆCEPTORIS*: denique venas. Ergo arteriarum historia, post pauca *ARISTOTELIS* rudimenta, & *RUEI*, incipit omnino a *GALENO*, qui in Libro *de arteriarum & venarum dissectione*, cujus propriam editionem habemus interprete *ANTONIO FORIOLO*, Basil. 1529. 8. plenum systema vasorum dedit, in Libro *de utilitate partium, an sanguis in arteriis contineatur*, & alibi sparsim arterias descripsit, cujus apud *ORIBASIUM* etiam compendium superest. Nihil ibi finiti exspectabis, habet tamen utique multa utilia, ut ipsam v. gr. bronchialem arteriam receptam ab *ERASISTRATO*.

Librum *de arteriarum & venarum dissectione* *GALENI*, hoc loco dictum, ipse auctor citat in *L. de propriis libris*, & ait pro tironibus scriptum esse.

Ex *GALENO* Arabes omnes de more aliquid angiologici & imprimis etiam arteriam bronchialem conservarunt.

(a) Inde *VESALIUS* L. III. arterias & venas descripsit. Quem virum mallem certe laudare, qui ejus admiror in tanta juventute industriam, robur animi, peritiam. Sed omnium minime angiologiam laudare licet, cum arterias carotides per aliena foramina in sinus cerebri duxerit, arteriam meningeam pro vena habuerit, arterias omentales posteriores (five *mesocolicas*) ex splenica prodeuntes finxerit, & in universum aliqua etiam *GALENO* nota omiserit. Cæterum loca a *PRÆCEPTORE* citata sunt ex editione 1555. Icones autem *VESALII* a *VALVERDO*, *PLATERO*, *CASSERIO*, *BARTHOLINO* & fere ab omnibus Anatomicis receptæ sunt.

Quare *VESALII* loco laudo *EUSTACHIUM*, quem miror hic prætermisum fuisse. Is, ut videtur, correcturus *VESALIUM* minutissime vasa rimatus est. In sceletis, quos dedit vasorum uterinorum, mesentericorum & coeliacorum, brachialium, hepaticorum, cranialium, pulmonalium, renalium, summam industriam adhibuit. Idem utilissimo instituto in T. XXV. & XXVI. arterias cum venis in situ, inter suos musculos expressit, quo modo fere solus usus est, multo certe meliori, quam illo *VESALIANO*, quem omnes, etiam ipse *COWPERUS*, sunt imitati, in quo vasa exempta corpore, absque viciniis, in uno plano, satis, ni fallor, inutiliter exprimuntur.

Nomina arteriis imposuit *JACOBUS SYLVIVS*, *GABRIEL FALLOPIUS* multa in arteriis, sed imprimis arterias capitis emendatius proposuit, tum renales, aliasque in *observationibus*.

THOMÆ MOSTELII Synopsis arteriarum & venarum ex Vesalio, VVittemb. 1558. 8. Respondet titulo.

VIDUS VIDIUS Fallopianas observationes non valde bonis iconibus illustravit. Cæterum sæpe miratus sum, qui fieri potuerit, ut *VIDUS*, & *COLUMBUS*, & *VESALIUS*, & *J. P. INGGRASSIAS de ossibus*, cæterum non valde in arteriis curiosi, adeo minutos tamen ramos recenseant, qui cranii canales, & exempli causa canalem pterygoideum percurrant.

COLUMBUS etiam arteriam penis sibi tribuit inventam, & vertebralem inter os occipitis, & primam vertebra cranium dicit subire.

J. CÆSAR ARANTIUS aliquas observationes de arteria lienis serpentina, & de vasis spermaticis habet.

JULIUS CASSERIUS aortæ bonam figuram in Libro *de org. vocis* dedit, quæ apud *VESALIUM* & reliquos mala erat. Laudem etiam merentur icones, quas in cerebro exhibuit. Plurimas etiam in magno opere dedit arteriarum tabulas, sed fere, forte sculptoris vitio, confusas, ut passim venæ cum arteriis videantur confundi.

F. PLAZZONUS de partium genitalium vasis aliquas observationes habet.

C. HOFMANN de usu arteriarum & venarum mesaraicarum, Norimb. 1615. 4. Theoria.

EJUSD. de usu vena arteriosa & arteria venosa 1618. *

Angiologia *RIOLANI* non respondet famæ viri, ramos tamen principes aortæ restituit, turbatos a prioribus.

JOH.

JOH. CASTELLANI *phylacterium phlebotomia & arteriotomia cum figuris venas & arterias totius corporis representantibus*, Argentin. 1628. 8. *

G. HARVEIUS nomina reformavit arteriæ & venæ pulmonalis, cum omnis antiquitas venæ arteriæque nomen in hypothefin commutasset. Vim pulificam arteriæ experimento refutavit.

JOH. LEONCENÆ, qui VESLINGIO pro ministro fuerat, quem *Profectorem* vocant, tabulæ vasorum corpore exemtorum extant in *Phil. Transf.* 280. Passim vitiosæ sunt, & multo deteriores EUSTACHIANIS. Vertebralem sinistram ex trunco aortæ deducit. T. BARTHOLINIUM simili instituto vasorum systemata disposuisse ex corpore exempta, ipse testis est *Anat. reform.* p. 584.

In JOH. RHODII *maniffa*, quæ cum historiis BARTHOLINI prodiit, observationes aliquæ habentur rariorum fabricarum, & ramus a coronaria arteria ad hepar.

R. LOWERUS arterias carotides earumque ad cerebrum iter, & arcum aortæ emendate pinxit.

D. de MARCHETTIS varia angiologica habet, & arteriam hepaticam a mesenterica primus vidisse videtur, & bronchialem post veteres renovavit, & a mesenterica cœliacam separavit, quæ pro ejus ramo habebatur.

NATHANAELIS HIGHMORI grandes icones clanculum ad VESALIANAS sunt imitatæ.

GUERNERI ROLFINKII inter *anatomicas dissertationes*, Jenæ 1656. 4. etiam V. VI. de venis & de arteriis sunt, ex lectione librorum, quam ex proprio experimento, magis natæ.

J. J. WEPFERRI *de apoplexia* Liber Scaphus. 1658. 8. & auctius 1675. 8. & Amstelodami 1728. continet bonam descriptionem arteriarum cerebri, qualis eo tempore haberi poterat. Rete mirabile, popularem eum errorem, proscripsit.

Sed in eodem opere etiam T. WILLISIUS versatus est in Libro *de cerebro*. Idem in *Pharmacopœa rationalis* T. II. icones tunicarum arteriosarum, minus tamen bonas dedit. Errore neam glandulosam introduxit, quam VIEUSSENSIUS & VERHEIENIUS conservarunt, & fibras longitudinales intimæ. Vasa medullæ spinalis etiam habet IDEM & G. BLASIUS.

Circa hæc tempora inventa, aut restituta, in Belgio, vasorum repletionem, via ad Angiologiam aperta est. Et SWAMMERDAMIUS quidem GRAAFIUSQUE unice in genitalium partium vasis versati sunt, quæ multo ornatus depinxerunt prioribus, & ille quidem anastomofin spermaticarum cum epigastricis per ligamentum teres notam habuit.

Ligatæ arteriæ experimentum, quo motus muscularis destruitur non a N. STENONIS solo, sed a BRUNNERO post Librum *de pancreate*, D. BROWNE LANGRISCH *lect. on muscular motion*, n. 93. JOH. ASTRUC in *Diss. de motu musculari* aliisque repetitum est.

In F. GLISSONIO descriptio vasorum ad partes chylopoieticas euntium habetur.

GER. BLASIUS in *miscellaneis* aliqua non incommoda habet, ut phrenicam a lumbali.

H. MEIBOM *de motu sanguinis*, arteriarum valvulas, a quibusdam propositas, recte refutat, & unice limbos prominentes esse ostendit.

MATTHIÆ TILING *de vase brevi*, Rinteln. 1676. 12. supra citatus est.

PARISINI non incommodas angiologias animalium, maxime avium, dederunt in suis animalium dissectionibus.

GOD. BIDLOO icones vasorum ex omnium vitiosissimis sunt.

A. de MARCHETTIS in *Phil. Transf.* n. 307. & in n. 29. FAIRFAX de vasis spermaticis observationes habet, & n. 415. C. MORTIMER, & LEAL LEALIS, etsi minus bonam defendat hypothefin, legi potest.

Chinenses ridiculas angiologias habet CLEYERUS in l. *de medicina Sinensium*.

RAIMUNDUS VIEUSSENS omnino ad vasa capitis etiam subtilia illa, quæ nervos olfactorios, acusticos, aliosque comitantur, & medullæ spinalis arterias, legi meretur in *Neurographia*. Idem in *novo vasorum systemate* non bene expungit musculosam, a maceratione delusus, quæ similis & a natura alienissima est. SCHELHAMMERI adfirmatio in *Analektorum Diss.* IX. & olim I. N. PECHLINI *de purg.*

JOSEPHUS DUVERNEY arterias umbilicales in adulto apertas manere, & dare vesicales ramos invenit.

In *Ac. Reg. Scient. Gallica* angiologica pauca exstant. Huc tamen an. 1725. HELVETII cal-

Verum post hanc tabulam adjungenda est *tabula tertia* GUILLIELMI COWPERI, in *Appendice ad BIDLOIANUM Opus magnum* (a), in editione Londinensi. Ibi enim ex fetu, cera injecta, repleto, totum systema arteriarum accuratissime depictum habetur.

Clarissimus RUYSCHIUS per partes etiam hujusmodi edidit tabulas (b).

Hi

calculus, quo rationem trunci aortæ ad suos ramos æstimavit, anno 1735. Varietates factis mirificas ramorum magnorum aortæ suppeditat D. HUNDAULD.

Sic RIDLEYUS etiam aliqua de arteriis duræ matris minoribus, & de flexione vertebralis addidit. Arcum Aortæ etiam ad vivum pinxit.

J. GOD. de BERGER in *Aët. Erud.* 1698. p. 295. de vertebrali ex arcu aortæ nata existat observatio.

(a) Tabula III. quæ etiam paulum emendata est XX. DRAKIANI operis, passim & in CL. BURGGRAVI lexico recusa. In abdomine aliqua, & circulum magnum arteriæ mesentericæ habet, & in brachio arterias recurrentes & flexionem externam carotidis. Cæterum longissime a perfectione abest. IDEM COWPERUS in *Phil. Transf.* n. 280. iconem carotidis dat, eamque ad cranium dilatari observat, & vertebralem, & alibi splenicam, aliqua etiam ad recurrentia ea vasa, & ad circulationem sanguinis habet, & in *Philos. Transf.* n. 290. de peculiari fabrica Aortæ in animale Opossum. Idem consideravit lentorem sanguinis in arteria spermatica, & in *myotom. parva* vasa penis descripsit, in *magna* vasa faciei pinxit T. XXII. & alibi alia dedit, quorum hic usus est. Icones etiam vasorum pulmonalium, & arteriæ venam excedens magnitudo ad ipsum pertinent, quæ sunt apud DRAKIAM.

J. PHIL. VERHEYEN icon arteriarum multa meliora habet, in aortæ arcu, vasis manus, aliisque partibus.

JOS. de la CHARRIERE in sua capitis anatome etiam vasa tradidit.

ALEX. THOMSON de motu arteriarum elastico egit, quo sanguinem in minima credit urgeri.

Arterias minimas sanguinem sibi a corde pulsante submissum elastica vi retropellere observavit H. BOERHAAVE de usu ratiocinii mechanici in Med.

(b) F. RUYSCHIUS arterias optime cognititas habuit. Verum, dum ad conservandas partes omnem industriam impendit, potius aliquas minores particulas arteriarum quam systemata descripsit. Bronchiale arteriam renovavit, & œsophageam supremam, vasa mammarum, scroti, cordis, pericardii, hepatis, oculorum, tympani, ossiculorum auditus, narium, aliaque delineavit.

J. B. MORGAGNI observationes de arteria aorta & ejus principio sinubusque cum VALSALVÆ de iisdem hypothese existant in *Epist. posthumis*. Arcum aortæ emendavit in *Adv.* I. & alia passim utilia addidit.

J. H. KELLNER de vasorum elasticitate, Leid. 1711. 4.

J. JAC. RAVII minime contemnenda angiologia existat in M. B. VALENTINI *zootomia amphitheatro*.

J. MARIA LANCISIUS in Libro de motu cordis & aneurysmate. Fusus est in fabrica arteriarum, maxime aortæ. In eodem Libro vasa cordis, & carotides, earumque flexum externum expressit.

A. CANT in impetibus cordis & aortæ situm, arteriasque faciei & carotidem, sed eas minus bene expressit.

J. F. WREDENS *arteriologische tabellen*, Hannov. 1721. fol. Minus, quam merentur, notæ sunt, quibus multa contineantur, quæ ab aliis prius inventa putaram, ut celiacæ bona descriptio.

STEFH. HALES experimenta de robore arteriarum existant in *hamastatiks*. Aliqua jam KEILIUS habuerat, tum de ratione arteriarum ad venas.

In WILH. STUKELEY *description of the spleen* arteriarum tabulæ parum fideles reperiuntur.

G. van SWIETEN de arteriarum fabrica, Leid. 1725.

H. A.

Hi tres Auctores optime satisfaciunt ad hoc quæsitum . Oportandum quoque foret,

H. A. NICOLAI de *directione vasorum*, Argent. 1725. 8. satis erudita, neque absque observationibus aut propriis est, aut a SALZMANNO acceptis. Arteriam hepaticam a mesenterica ortam dixit in *Comm. Nor.* 1732.

Unicam membranam veram arteriæ relinquit CL. J. DOUGLAS Libro de *peritoneo*.

Hactenus miris modis languerat arteriarum historia. Nunc incepit reviviscere J. B. WINSLOWI ope, cujus in *Expositione*, etsi in compendio, optima tamen exstat arteriologia earum quas habemus, & unice hactenus eo nomina digna. Inventa singulatim recensere impossibile videtur. Ex eo viro pleraque habet BOUDON ad PALFYN, VERDIER & GARENGEOT, & SYLVA in *Traité de la saignée* in quo multa subtiliora de vasis capitis, & bronchialibus habentur.

W. CHESELDENIUS multa habet eo pertinentia. In editione III. arteriarum capitis internarum non mala icon exstat, & hepatis & mesentericarum. In Editione VI. arteriæ brachii, maxime in sede venæ sectionis pinguntur.

T. MORGAN *mechan. pract.* omnes arterias ex cellulosa fabrica fieri acute vidit p. 338.

Vim arteriæ contractilem mechanice considerat JOH. QUINCY post *Librum de perspir.*

A. F. WALTHER solitariis scriptis hanc medicinæ partem illustravit. Huc ergo spectant *Tabula coeliaca*, Lips. 1729. 4. & in *ACT. ERUD.* 1730. Progr. de *vasis vertebrali-bus*, ibid. 1730. & Progr. I. & II. de *vena portarum*, Lips. 1731. ubi imprimis diligentem se, etiam in thyreoideis inferioribus & aliis minus notis arteriis se gessit. Sed etiam in Progr. de *aneurysmate aorta* ejus arteriæ membranas descripsit.

J. R. C. GARENGEOT in *splanchnologia* & alia & imprimis rariorem, & male pro constante venditam, habet iconem arteriarum intercostalium, quas omnes ab aorta deducit.

LAUR. HEISTER præter ea, quæ in compendio sunt, dedit etiam observationem arteriæ brachialis in humero fissæ, quam frequentem reperimus, in *Diss. de æt. crural. vulner.* & in *obs. anatomicis* quas defendit D. MOEBIUS. Ea observatio etiam exstat apud PALFYNUM, HEBENSTREITIUM Progr. ad *Diss. inaug. CL. HAHNII*, TREWIUM *Comm. Litt.* 1737. CL. PETSCHÉ l. l. c.

J. F. CASSEBOHM subtilem angiologiam auris perfectiorem dedit, quam DUVERNEY: & fabricam arteriæ in universum in postumis.

In *Actis Edimburgensibus* Vol. II. Tab. II. habentur arteriæ communicantes brachii, quæ ad latus humeri utrumque ab arteriis cubiti ad humeralem ascendunt. Ibi etiam CL. MONROI de arteriæ fabrica *Diss.* exstat, in qua tendineam ex numero membranarum expungit. In V. Tomo de vasis spermaticis observationes MONROI reperiuntur.

In H. FRANCISCI LE DRAN *parallèle de la taille* & in FOUBERTI *Obs.* in *Academ. Roy. de Chirurgie*, aliqua sunt ad vasa partium genitalium & ani.

In *Commercio Litterario Norico* ILL. TREW exstant variæ observationes de vasis brachii l. c. de vasis pelvis annis 1733. 1734. 1737 1738. 1743. Varietates aortæ expressæ sunt an. 1737. In Libro etiam de *præcipuis hominis non nati differentiis* & in Ep. ad me de *vasis salivalibus* data VIR CL. multa ad arteriarum historiam habet.

J. PARSONS arterias umbilicales in *Traçtatu of the bladder* depinxit.

LUDOVICI BELLOT Ergo *attenuando sanguini motus arteriarum*, Paris. 1735.

B. S. ALBINI de *vasis intestinorum* observationes alibi laudavimus. Plurima etiam huc pertinentia passim exstant apud ejus discipulos in disputationibus Leidenfis.

HIER. LUDOVICUS BACCHETTONI in *Anatomia medicina ministra*, Oeniponti 1740. 4. vasorum ex corpore extractorum & siccatorum tabulas habet, fere uti LEONCENA, sed haud paulo deteriores.

De arteriarum fabrica legatur etiam J. FR. SCHREIBER in *Elementis*.

Huc pertinent CL. HEBENSTREITII de *arteriarum confiniis* 1739. de *vaginis vasorum*, Lips. 1740. 4. de *flexu arteriarum* 1741. 4. de *vasis sanguineis oculi* 1742. 4. quibus varia nova & rariora continentur. Exstant in *Coll. Disp. mearum* T. II. & IV.

In CL. PETSCHÉ *observationum sylloge*, Hall. 1737. 4. Plurima egregia ad arteriarum flexiones & varietates pertinent, imprimis rara aortæ in abdomine duplicis observatio.

set, ut figuræ COWPERI ederentur in usus communes, pro iis nempe rerum anatomo-

V u u

nato-

CLIFTONUS WINTRINGHAM in *experimental enquiry into some parts of animal structure*, Lond. 1740. 8. duritatem arteriarum per varias partes humani corporis per experimenta persecutus est, & in minoribus vasis majorem esse, versus uterum insigniter minorem, majorem in secretoriis organis, majorem, quod mirum, in arteriis quam in venis reperit.

C. G. LUDWIG Diss. de tunicis arteriarum, Lipsi. 1739. 4. & in Coll. nostra T. II. celulositatem arteriæ pro tendinea tunica habitam, fibrarum in arteriis divisionem, musculosam membranam in arteriis cerebri, & alia utilia demonstravit.

CL. LIEUTAUD in *Essais* omnino legi meretur, ad arterias pelvis aliasque.

Vasa capitis in icone inserta *Traité des sens* depinxit CL. NIC. LE CAT.

CL. PHIL. A. BOEHMER Progr. de quatuor & quinque ramis aorta, Hall. 1741. 4. varietates nonnullas ex CASSEBOHMII præparationibus adduxit. Coll. nostra T. II.

J. GOD. GUNZ de arteria maxillari interna, Lipsiæ 1743. 4. edidit Dissertationem, quam etsi aliquando minus nobiscum convenerit, minime absque laude oportet dimisisse, ut in re difficili. In Dissertatione de mammis arterias mammarias descripsit.

JOSEPHI EXUPERII BERTINI historia carotidis jam, nisi fallor parata, cum ejus sagacitate intercidit. Vindicabat sibi, dum secum mens ipsi fuit, CL. GUNZII observationes.

J. STEPH. GUETTARD Thes. an ex vasorum figura & origine facilius fluidorum dispensatio, Paris. 1741. Arterias cum BELLINO cylindricas facit.

JOH. JAC. GRAMBS *Anvveisung ... zur ... Angiologie*, Francof. 1741. 8. Breves sunt arteriarum venarumque tabulæ.

CASIMIRI CHRISTOPH. SCHMIEDEL de varietatibus vasorum Diss. Erlang. 1745. 4. varia rariora habet de arteriis brachialibus recurrentibus cubiti, arteriis pelvis, earum communicatione cum vesicalibus.

In *syllabo partium corporis humani*, Petropol. 1743. edito, T. XVI. fol. 2. & 6. habentur vasa circa cor.

MICH. ALBERTI de arteriarum dubia systole Disp. Hall. 1743. 4.

In J. NICOLAI WEISS de arteriis viscerum propriis, Altdorf. 1744. 4. & varietates aliquæ, fabricæ internæ secretoriarum mollioris observationes.

DOMINICUS TABARRANI in *memorie de' Valentuomini* T. II. etiam arteriosas varietates de brachialibus aliisque habet.

AD. BERNH. WINKLER de arteria brachii, Gotting. 1745. 4. Disputatio diligenter, uti notum, ad naturam elaborata.

In CL. MOLINELLI Libro de aneurysmatibus recurrens radialis & arteriæ magnæ brachii exprimuntur T. II. fol. 3.

GEORG. AUG. LANGGUTH de arteriæ efficacia ab officio cordis remota, VVittemb. 1745. 4. Arterias nihil sua contractione ad sanguinis circulationem conferre defendit. IDEM in Disp. de fractura patella promittit, se in ejus ossis vasa inquisitum.

HENR. WESSELING *specimen de arteriis hominis*, Leid. 1747.

HENR. WESSELING in citato specimine motus cordis BOERHAAVIANAM theoriam refutat.

J. FRID. MECKEL in nuperrima Diss. de Quinto Pare nervorum Cerebri, Gotting. 1748. iconem dedit multorum vasorum subtiliorum capitis, stylomastoideæ arteriæ, dentalis anterioris, aliarum: laqueos etiam arteriæ temporalis meningæ, arterias receptaculi descripsit.

Angiologiam in sua *anatomie en couleurs* incepit edere GARTIER.

CL. SENAC & cordis arterias & arteriarum venarumque fabricam, & cylindricas arteriarum longitudines atque diametros, & de elatere arteriarum cogitationes & alia protulit in Libro de corde.

PHILIP. CONRADI FABRICII de cognitionis anastomoseos vasorum insigni usu, Helmstad. 1750. 4.

Qui de ossibus scripserunt, occasione foraminum cranii, plerumque etiam aliqua habent de vasis, quæ per ea foramina migrant, plura inprimis MONROUS, tum POUPARTUS in compendio Chirurgiæ, quod sub nomine *Chirurgie complete* jam an. 1695. 12. prodiit.

Ego

natomicarum curiosis, qui ejus magnum Opus non habent; constat enim ingenti pretio.

Præter hos etiam legatur ANTONIUS LEEUWENHOECKIUS in *Tomo tertio observationum suarum*, ubi optime fines & exitus arteriarum in venas delineat (a).

In

Ego vero multum ab omni tempore hac in parte anatomes laboravi, & integram historiam arteriarum humani corporis nunc maxime molior. Præter ea ergo, quæ sparsim in *Commentariis Boerhaavianis Primis lineis physiologia de fetu monstroso*, ad arterias pertinent proprie Progr. edit. 1643. quo *baseos cerebri icon* habetur, in qua icones arteriarum receptaculi & minorum arteriarum duræ matris, & ophthalmicæ exstant. Tum in *Disp. de arteriis & venis bronchialibus œsophageis*, Gotting. 1743. 4. ostendi, multo plures & bronchiales & œsophageas esse, quam plerumque credebatur. In *Disp. de nervorum in arterias imperio*, Gotting. 1744. 4. inprimis laqueos descripsi, per quos arteriæ transeunt, & a quibus reguntur. Arteriæ carotidis Icon I. quæ pertinet ad arteriam maxillarem internam an. 1745. prodiit in *Fasciculo II.* qua majores trunci hujus arteriæ in iconæ, reliqua in descriptione habentur.

Arteria Thyreoidea inferioris T. I. & II. eodem anno prodierunt, cum suis ad duram matrem spinæ dorsi, ad asperam arteriam & œsophagum ramulis, & cum vertebrali, occipitali, bronchiali arteria anastomosis. Occipitalis etiam ea occasione describitur.

Arteria Coeliaca T. I. & II. anno 1745. editæ. Coeliacam, primum a WALTHERO descriptam, per ramos minores persequitur, rami pancreatico-duodenalis anastomosis cum mesenterica & duodenali superiori, aliaq; minuta exprimit. Altera vitio Sculptoris non placet.

Arteria Carotidis T. II. Prodiit in *Fasciculo Iconum III.* qua pharyngeæ arteriæ non descriptæ, submentalis, palatarum, tympani continentur.

Arteria Carotidis interna T. III. ubi icon arteriarum faciei habetur, & oculi cum novis ciliaribus anterioribus describuntur, una cum priori prodiit.

Arteria Mesenterica Tabula in *Fasciculo etiam III.* expressa est cum ramis pancreaticis cæcalibus anterioribus, posterioribus.

Arteriæ anteriores pectoris, parvæ illæ thymicæ, comitis nervi phrenici descendentes & ascendentes, mammaria ejusque rami phrenici, hepatici alique, & anastomosis cum thoracis externis, phrenicis, intercostalibus, eodem anno descriptæ sunt.

Arteriarum bronchialium superiorum & inferiorum numerum diversum, & varietates œsophageas copiosas, in eodem *Fasciculo* dedi.

Arteriarum renalium & phrenicarum Tabula, arcum diaphragmaticum, arteriam phrenicogastricam, arterias a capsularibus ad hepar, capsularium classes tres, & adiposarum, & uretericarum & spermaticarum varietates continet.

In eo qui nunc recentissime prodiit *Fasciculo IV.* exstant arteriarum pelvis T. V. Reliquas, si DEO videbitur, subjiciam, & paratæ sunt arteriosæ tabulæ.

In V. *Fasciculo*, qui nunc prodiit Arteriæ artus infimi describuntur & depinguntur. In VI. ejus icones paratæ sunt, brachii vasa pingentur, & in VII. quo opus absolvitur, arteriæ cerebri & medullæ spinalis.

(a) De vasis nunc minoribus sive subtili angiologia dicendi locus est. Ea tota ad Anatomicos recentiores pertinet, & debetur arti injiciendi, ut vocant, & microscopio. Nam, etsi veteres de anastomosis inter arterias & venas non debiles conjecturas habuerint (loca vide apud HARTMANNUM *perit. anat. vit. spec.* p. 66.) quas experimentis suis RIOLANUS (in resp. ad HAR. p. 53.), sed parum firmis, aliis M. A. SEVERINUS in phoca, alii aliis confirmare conati sunt, non tamen multum ultra conjecturam sunt progressi, cum inprimis parenchyma non organicum ex concreto succo inter arterias & venas ponerent. EDMUNDUS KING in *Phil. Trans.* n. 18. 52. ut alibi dixi, hoc parenchyma organicum fecit & vasculosum, quæ ita auxit D. DUVERNEY, ut omnia solida corporis humani ex vasis & vesiculis inter vasa mediis componi doceret in *Antiens Mémoires*, & LISTERIS omnino nihil præter vasa in corpore relinqueret, expuncto omni intermedio inter arterias venasque corpore *Exerc. Anat.* II. Hæc opinio celeriter increvit, & sola

In omnibus etiam suis operibus depingit vasa sanguine distenta, ita ut ibi videamus, quo modo in ipsis animalibus vivis se habeant.

Pariter ad titulum de Microscopiis in Actis Societatis Londinensibus supra hac re continentur plurima, in appendice etiam ad opera BIDLOIANA (a).

Sed & FREDERICUS RUISCHIUS arterias cera implevit, quæ frigefacta præbuit videndos fines antea incognitos (b).

Si distributionem arteriarum ultimarum cognoscere quis velit, videatur BELLINUS in *Opusculis postremis seu Epistola ad PITCARNIUM* (c).

In

& sola diu viguit. Deinde microscopia ad scrutanda vasa minima in pulmone ranino, & imprimis in ranæ mesenterio adhibuit MARCELLUS MALPIGHIIUS, cujus curiosa certe est observatio, in *posthumis*. ANTONIUS vero van LEEUWENHOECK imprimis anastomoses arteriarum & venarum tum per ramos transversos, tum per circumflexos & redeuntes parallelo itinere truncos exposuit plurimis locis. RAIM. VIEUSSENS in *novo vasor. Systemate* similia utique docuit, & vasculosa viscera esse, quæ pro glandulosis habebantur, per experimenta propria evincere conatus est. Ea quidem omnia prius a se demonstrata fuisse RUYSCHIIUS objecit, arte certissime superior, & perinde tempore, si numeros annorum accurate subducamus, quibus thesauri & epistolæ prodierunt.

(a) GUILIELMUS COWPERUS in *Phil. Transf.* n. 280. & 281. 285. tum S. MORLANDUS n. 283. divisiones & ramos vasorum capillarium microscopio observarunt.

STEPHANUS HALES in *hamastatiks* ramorum minimorum angulos, conjunctiones varias, & celeritates consideravit.

THOMAS SCHWENKE in sua *hematologia* huc pertinet, qui recte observat, arterias minimas frequenter cylindricas esse, &c.

(b) Verus Auctor angiologiæ subtilis RUYSCHIIUS est, cum SWAMMERDAMII aut perierint opera, aut adtentio unice ad insecta conversa sit. Is vir industria felici, totis fere 70. annis per experimenta consumptis, omnium partium corporis humani vasa, amnio humano & allantoide & arachnoidea exceptis, sebo replevit, & magna ex parte depinxit, & varietates fabricæ, in singula parte variæ, fideliter expressit. Sed totum oportet legere. Adde autem ADMIRALII vasa periostei acetabuli & duræ matris ad RUYSCHII præparationes picta, & edita Amstelod. 1738. Quæ post eum præstiterunt B. S. ALBINUS, & J. N. LIEBERKUNHN, ea nondum descripta sunt.

(c) BELLINUS equidem in *Opusculis* de arteriarum divisione, figura inter ramos cylindrica, ramis reticulatis, huiusque fabricæ utilitatibus multa habet, sed a theoria potius, quam ab experimento repetita.

Ad id studium pertinent etiam ARCHIBALDUS PITCARNE in *Tractatu de circulatione sanguinis per minima*, BOERHAAVIUS ipse, J. F. SCHREIBER in *elementis*, J. de GORTER in plerisque scriptis, Libro de *secretione*, *Compendio med.* & alibi. Huc etiam refero eos, qui de vasorum minimorum habitu ex theoria imprimis dixerunt. Huc ergo

G. FRANK in *Anastomosi detecta*, Hafn. 1705. 4. M. LISTERUS in *Exerc. Anat.* I. II. & III. VIEUSSENS in *nov. syst.* & *Tr. des liqueurs*. J. G. BERGER in Libro de *natura humana*, & *Disp. de inflamm.* J. S. de BERGER in *Disp. de transitu sang. per vasa min.* ad J. E. HEBENSTREIT de *venis communic.* qui omnes arterias cum venis absque medio corpore conjungi docent. Neque tamen desunt, qui etiam nunc, frustra reclamante injectione, transfusione, infusione, intervalla inter arterias venasque tueantur, ut STAHLIANA secta, & CL. SENAC in *comm. ad Heist.* p. 458. (quod experimentum unice exhalationem facilem in cellulosam telam demonstrat), & olim BOHNIUS simili argumento, & KERKRINGIUS, quod aer viam in venas non inveniret, & ipse STAHLIUS de *motibus humorum sphaſmodicis*, Hall. 1707. 4.

RAMUEL STEK de *vasorum minimorum natura & efficacia*, Leid. 1712. *Disp.*

J. KEIL non quidem primus ramorum lumen trunci lumine majus esse vidit, nam id in *Epistola* ad D. BOURDELIN video observasse D. BUSSIÈRE, longius tamen eam con-

Vuu 2

sider-

In his habetur, quidquid ad hoc negotium desiderari potest.

Si distributionem venarum cognoscere quis velit, is quærat apud **VESALIUM** paginam 450. in *Libro tertio* (a), ibi habetur tabula quæ exhibet omnium in corpore venarum distributionem, nec meliorem novi apud Auctores. Verum, si arteriarum, & venarum conjunctionem simul, ubi per corpus decurrunt, videre velimus, tam accurate ac in cadavere reperiri potest, tunc id spectandum habere-

fiderationem provexit, & considerata frequente repetitione ejusdem divisionis demonstravit, insignissimam in ultimis vasis ex ea ipsa fabrica retardationem sequi. Aliqua similia **THOMAS MORGANUS** habet in *Philos. principl. of Phis.*

CLIFTON WINTRINGHAM, dudum laudatus, hic omnino repetendus est. Ejus tamen *Enquiry into the exility of the vassels of human body*, Lond. 1743. 8. potius de staminibus corporis humani minimis & perpetuis agit, quam de vasis.

W. CHESELDENIUM video observasse angulos ramorum ad cor maximos sensim minores fieri, ut celeritas in ultimis ramis minima ad circulationem sufficeret. Rete etiam arteriosum & venosum pictum dedit, & hoc ut verum est, crassius fecit. Idem non totum corpus vasis fieri, pro suo quo pollet iudicio, monuit.

G. MARTINE in *Edimburgens. Act.* Vol. III. divisiones successivas vasorum & diametri trunci ad ramos rationes, & dilatationem, ubi ramos producit, describit, & ramos minores majoribus angulis oriri observat, ut modo ex **CHESELDENIO** citavi, & alia, ut tamen necesse sit cum **ALBINO** monuisse mensuras vasorum ab **EUSTACHIO** minus accurate sumi, cum vir optimus, unice de observationibus suis sollicitus, minimam in aliis ferum, quas pingebat, proprietatibus curiositatem adhibuerit. Recte etiam observat **MARTINE**, vasa in cellulositate membranarum inprimis decurrere. **IDEM** in *Tractatu de animalibus similibus & animalium calore*, Lond. 1740. 8. eandem truncorum ad ramos proportionem fufius repetit, adhibitis etiam **EUSTACHII** tabulis & **KEILII** mensuris, scopus vero princeps est comparare animalium similium vasa, diametros, velocitates liquidorum simplici calculo neque inutili.

SAM. THEOD. QUELMALZ de *venis absorbentibus*, Lips. 1732. 4.

CHRISTOPH. ANDR. KOCH de *proportione solidorum ad fluida*, Gotting. 1737. 4.

PETRI ARCELIN, *Ergo dantur vasa absorbentia*, Paris. 1745. 4.

(a) Venæ multo veteribus notiores fuerunt, quam arteriæ, ob venæ sectionem, ob dubium an omnino aliquid, præter spiritum, inesset arteriis, ob molem forte. Nomen etiam venæ multo est antiquius, sub quo ipso arteriæ apud veteres diu latuerunt. Venæ percussum adhuc **PLINIUS** dixit L. VII. c. 51. Huc ergo pertinet ille **HIPPOCRATICIS** inmixtus Libellus *περί φλεβῶν*, qui in vetustis editionibus Libro *περί ὕψων* continuatur. In eo valde paradoxa venarum corporis humani descriptio habetur, & quatuor venarum principum paria ponuntur, quæ nusquam in corpore humano reperiuntur. Alibi tamen veræ venæ, etiam subtiliores & mammariarum cum epigastricis anastomosis, vena sine pare, nervique non male describuntur.

De venis passim **ARISTOTELES** agit & maxime in *hist. anim.* L. III. c. II. ex **DIOGENE APOLLONIATA** & **SYNNESI** Cyprio vasa corporis humani venas describit.

GALENUS etiam in Libro de *venarum & arteriarum dissectione* ad venas magis respexit cum peculiari studio alibi venas cerebri, aliasque descripsit, quæ historiæ bono ordine digestæ exstant apud **ORIBASIUM**.

Arabes ad insignem utilitatem venas reduxerunt, cum ex hypothese alias aliis salubrius crederent secari. Inde vena *salvatella*, *seilem* aliæque. Vide **RHAZEM** L. I. c. 4. L. VII. c. 21. **AVICENNAM** & reliquos.

Sub tempore reformatæ anatomes **J. BERENGARIUS CARPENSIS** in *Isagoge* icones dedit venarum brachii pedisque, quæ vulgo secantur, nominibus ad Arabum doctrinam expressis p. 66. seq.

Sed & **ALEXANDER ACHILLINUS** easdem venas describit, & **NICOLAUS MASSA** in *Isag. anat.*

habetur iterum apud VESALIUM pag. 505. Libro tertio (a). Ex illis tabulis poterunt tirones animo suo vasorum ideam satis claram insculpere.

Sed si valvulas accurate designatas in venis videre cupias, vide HIERONY-
MUM

Fufius C. STEPHANUS adjectis etiam iconibus idem præstitit. Idem *Apophyfes membra-
neas factas ne sanguis in hepar regurgitaret, fere uti in corde valvula* in p. 185. descripsit,
primus, nisi fallor, valvularum Auctor.

JACOBUS SYLVIUS in *Isagoge* venis nomina imposuit, & recensuit omnes, ramos a re-
nalibus ad lienales euntes dixit, & varietatem azygæ in cor infertæ, & aliquid simile
valvulis in azyga, jugulari, brachiali, crurali, cava, sed is potuit habere a J. B. CAN-
NANO. In *calumniarum depulsione* azygæ descriptionem GALENICAM cum summa servi-
lis ingenii infamia defendere conatus est.

(a) ANDREAS vero VESALIUS utique Libro III. venas fufius, & paulo quam arte-
rias melius dixit, & expressit icone universali sive sceletto venoso p. 450. & alia tabula
venas cum visceribus conjunctas pinxit p. 505. cui aliæ minores figuræ peculiares sunt
additæ. Membranam porro venarum adscititiam dixit, fibras carneas vix admisit & emi-
nencias intra venarum corpus, quod comparare studuit membranæ, quæ in ostio aortæ
sunt (p. 443.), quas tamen in *examine* pro crassitie tantum protuberante non pro valvu-
lis admisit p. 83. ubi refert J. B. CANNANI experimentum, qui valvulas in initio azy-
gæ, emulgentis, iliacæ repererat, iis similes quæ sunt in cordis arteriis, non nimis ta-
men credulus amico.

IDEM proprium Libellum scripsit, quo docet *venam axillarem dextri cubiti in dolore la-
terum secandam*, Basil. 1539. 4. impressum, qui deest in nupera editione operum VESALII.
In eo Libello iconem dat venæ sine pari, & descriptionem, quod crederetur venam, ut
propriorem dextræ basilicæ, inflammationes intercostalium spatiorum melius levare. Idem
denique in Libro *de radice China* cavæ inferioris truncum a GALENO in thorace descri-
ptum, & venæ sine pari insertionem in pericardio redarguit.

G. FALLOPIUS in *institutionibus anatomicis, observationibus & in obss. de venis* quæ cum ope-
ribus sunt editæ & prius prodierunt Venet. 1570. 4. cum titulo *expositio in GALENUM de
ossibus, cui accesserunt observationes de venis cum aliquot earundem figuris a FR. MICHINO
de S. ARCHANGELO ex fidelissimo codice editæ**, descripsit & pinxit inprimis venam sine pa-
ri, ejus cum vena cava inferiori communicationes, truncos tres brachiales, inter quos pro-
funda est, venarum dextri & sinistri lateris communicationes, aliaque. Valvulas & in
vena sine pari & alibi rejecit. VIDUS cogitata FALLOPII iconibus expressit.

AMATUS LUSITANUS in *Curatione* 52. C. I. & in *Cur.* 70. L. V. ostiola azygæ defendit,
quæ nihil ex ea vena in cavam admittant, & ea occasione anastomoses cum mammariis
adjicit. Testem citat J. B. CANNANUM, manifesti tamen erroris reus, postquam via san-
guinis in circulum detecta est.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS in describendis venis eminuit. Ejus Liber *de vena sine
pari*, qui an. 1564. cum Opusculis prodiit oppositus VESALIO, habet hujus venæ anatome-
men, per omnia fere animalia excultam, & minimas quasque ejus proprietates. Valvulas
illas AMATI repudiavit. Iconem etiam dedit valvulæ coronariæ, ut de Eustachiana ta-
ceam, & tres (non duas) venas brachii. Deinde vasa renum jamalibilaudavimus. Dein-
de in magno opere sceletos venarum subtilissimos dedit artus superioris, in quo correxit
VESALIUM, artus inferioris, colli, viscerum chylopojeticorum, hepatis, uteri, etiam
nostro seculo admiratione dignissimos. Deinde venas superficiales & profundas multis ta-
bulis in situ cum suis musculis, unico fere exemplo, exhibuit, ita ut arterias una pin-
geret, magis tamen venarum historiæ studeret.

JOACH. GARCÆI *de origine venarum*, Francof. Viadr. 1587. PL. *

AMBROS. PAREUS Libro II. *anat.* aliquas suas observationes passim profert de vena
portarum, renalibus aliisque.

J. B. CARCANUS in Libro I. *Anatomia* negat valvulas venæ sine pari, & Germanum
Medicum, qui sibi præsentem eas voluerit demonstrare, se refutasse adfirmat.

MOSTELIUM citavi.

(a) HIE-

MUM FABRICIUM AB AQUAPENDENTE in Libello de Venarum valvulis (a).

Abfol.

(a) HIERONYMUS FABRICIUS ab AQUAPENDENTE valvulas venarum non invenit, ut adparet ex prioribus, sed certe restituit an. 1574. easdemque proprio Libro *de venarum ostiis*, Patav. 1603. fol. 1625. fol. & alias edito, descripsit & magnifice depinxit, per singulas fere corporis partes, utilitatem tamen veram non attigit. Adrogabat sibi inventas valvulas SARPIUS, sed vindicat FABRICIO B. S. ALBINUS & MORGAGNUS.

NICOLAUS SAMMICHELIUS Novocomensis invenit venam bronchiale, quod inventum an. 1568. H. F. ab AQUAPENDENTE approbavit (HENR. BOTTERO teste ad HORSTIUM Ep. p. 460.) Sed ea vena omnino figmentum est, ut ex descriptione video, magnam enim a vena cava inter cor & diaphragma venam in pulmones ire, quis videt aut credit?

FR. MICHINI de Castro S. ANGELI de azyga observationes apud MARCELLUM DONATUM laudantur, quas, nisi Fallopiæ sunt, non novi.

SALOMON ALBERTI, edoctus a FABRICIO, valvulas in sua partium historia, & in appendice orationum descripsit, utilitatem adsignavit, ut velocem sanguinis motum tardarent. De vena azyga in inferiorem cavam inserta & vasis renalibus observationes habet.

Aliqua habet ARANTIUS, & jugularem externam cum humeraria negat misceri: venam azygam cum axillaribus communicare monet.

A. LAURENTIUS varia monet non aliena, & rete vasorum brachii non male pingit p. 231. f. 2.

BALTH. GISLERI de venarum & arteriarum genuino ortu, Lips. 1615. 4. *

C. HOFMAN de venarum origine secundum Aristotelem, Altd. 1615. 4.

JUL. CASSERIUS icones, ut dictum, angiologicas plurimas dedit, & venas capitis aliasque.

J. RIOLANUS angiologiam totam dedit. Valvulas venæ sine pari ex proprio experimento confirmat, tubulos ex venæ substantia pronatos describit, & in ortu venarum renalium valvulam, aliasque, (p. 346. &c.) IDEM in novis opusculis habet Tractatum proprium de venarum valvulis.

C. BAUHINUS in T. VII. app. mirificam dedit tabulam perfectæ duplicis azygæ.

G. FABRICIUS HILDANUS in Libro vom nuzen der Anatomie historiam venarum brachii propriam protulit.

N. HABICOT inter aliam communicationem vasis brevis cum sinistra phrenica describit & sibi tribuit Dec. I. Lect. II.

A. SPIGELIUS venæ sine pari anastomoses cum renalibus, venam dorsalem superficiale a summo dorso ad imum decurrentem, quæ utiliter secari possit, descripsit, vix dictam recentioribus, sed apud RONDELETIUM notatam.

LUD. du GARDIN *manu ductio per omnes medicina partes, sive Institutiones medicæ in tres Libros digesta*, Duaci 1634. 4. DOUGL. a. Habet venas quæ a Medicis secantur.

G. HARVEI veram utilitatem valvularum detexit.

J. SALZMANNUS in epist. ad HORSTIUM varietates venarum ad pectus, ad renes pertinentium, a se ipso observatas, tum in obss. anatomicis.

WERNERUS ROLEINKIUS doctam collectionem habet, valvulas venæ sine pari tanquam proprio experimento inventas sibi adscribit.

T. BARTHOLINUS varias fabricas venarum vidit, aut ex aliis recensuit. Ita ex FALCOBURGIO duplicem venam cavam refert Cent. II. hist. 84. ex PAVIO de venæ azygæ cum emulgentibus conjunctione, ex RHODIO varietates renalium vasorum adducit. Valvulosum circulum in venarum hepaticarum insertione, & in emulgentibus, & mesentericis sibi visum in anatome describit.

T. WILLIS, R. LOWER & G. BLASIUS cum cerebri & medullæ spinalis historia sinus venasque conjunxerunt. WILLISIUS præterea fabricam venarum descripsit, fere primus.

M. A. SEVERINI *seilo-phlebotomia castigata* prodiit, Hanoviae 1654. 4. Francof. 1668. 4. sed dedicatio data est an. 1635. Venas brachii describit, & ex VESALIO pingit, nullam autem venæ aut salvatellæ, aut seilem esse prærogativam docet præ reliquis in corpore humano venis, nihil manui cum liene peculiaris commercii, &c.

D. de

- D. de MARCHETTIS & hic & ubique utiles habet observationes.
- J. LEONCENÆ Tabula venosa cum arteriosa exstat in *Phil. Transf.* n. 2. 280. ubi COWPERUS suam de utilitate venæ sine pari hypothesein protulit. In iisdem *Transactiōibus* A. de MARCHETTIS n. 307. aliqua de vena portarum habet.
- THEOD. KERKRING tubulos illos RIOLANI nomine piriformium valvularum, a RUYSCHIO utique inventos describit, tum varietates valvularum nonnunquam quintuplicium.
- FRANC. BAYLE in *Diff. sur quelques questions de physique & de médecine*, Tolosæ. 1688. 12. habet etiam quæstionem de utilitate valvularum venosarum.
- P. PERRAULT in *Essays* III. & in *Tractatu de motu peristaltico* valvularum officium mechanice explicavit.
- H. MEIBOM de *valvulis venarum earumque structura*, Helmst. 1682. 4.
- THEODULI KEMPER de *valvularum* in *C. H. natura*, Jen. 1683. Disp. Valvulas venæ cavæ valde numerosas tribuit.
- J. M. HOFMANN de *vena portarum*, Altdorf. 1687.
- J. PHIL. VERHEYEN iconem venæ cavæ emendatiorem dedit, & quæ hætenus, post EUSTACHIANAS, optima est.
- J. JAC. DOEBEL *valvularum, vasorum lacteorum lymphaticorum, ac sanguiferorum dilucidatio*, Rostoch 1694. 4.
- G. E. STAHL de *vena porta*, Hall. 1698. 4. anastomosein vasorum hypogastricorum cum mesentericis descripsit.
- RAYM. VIEUSSENS in *novo systemate* habet etiam venarum fabricam & membranas.
- G. W. WEDEL de *valvulis animalium semilunaribus*, Jenæ 1698. proportionem valvularum ad diametrum venæ pro numero variabiles exprimit.
- In *Acad. Reg. Scient. Paris.* huc pertinet an. 1738. C. N. Le CAT. azygos bifurcata. Vena coronaria in subclaviam inserta.
- P. JAC. HARTMANN in *Diff. de bile* lienalibus adhuc venis valvulas relinquit, uti N. HIGHMORUS alique.
- In J. DRAKE *Anthropologia nova*, Lond. 1707. 8. venæ pulmonales pinguntur, & aliæ.
- J. J. RAU in *Amphitheatro in appendice* jam citata VALENTINI venam bronchialeam dextram invenit.
- J. SALZMAN de *vena porta*, Argentor. 1717. 4. negavit anastomoses Stahlianas.
- A. MAR. LANCISI de *vena azyga ad MORGAGNUM* epistola exstat cum Adv. V. cum icone & descriptione. Confirmat sphincteres azygæ.
- J. B. MORGAGNUS in *Epist. XV.* de historia valvularum suas inquisitiones profert, SARPPIO laudem inventi & merito, ut puto, negat, suas de valvulis, & imprimis azygæ, observationes proponit.
- J. DOMINICUS SANTORINI de venis, imprimis penis, iisque quæ inter sinus cerebri & venas capitis externas mediæ sunt, observationes habet.
- J. BAPT. BIANCHI venæ portarum descriptionem, & non bonam iconem dedit in *hist. hep.*
- J. A. WEDEL de *valvula vena subclavia ductui thoracico imposita*, Jenæ 1714. 4. hanc valvulam ad eam venam non ad ductum thoracicum pertinere adfirmat. Sed certum est eum ductum sua propria ostiola habere.
- J. KEIL venarum proportionem ad arterias expressit, tum B. de MOOR in *instaur. med.* & alii.
- W. STUKELEY venam portarum pictam dedit, sed vereor non ad naturam.
- H. A. NICOLAI ut arteriarum ita venarum dedit observationes.
- W. CHESELDEN in *Phil. Transf.* n. 337. unam observationem azygæ in auriculam cordis insertæ habet. In *anatom. ed. VI.* venam portarum integram, & venas brachii depingit. Venarum ad arterias numerum majorem recte observat. Fibras earum musculares restituit.
- PETRI GERIKE de *valvulis venarum progr.* Helmstad. 1733. 4. *
- STEPHANI HALES experimenta de robore venarum superius jam citata sunt.
- J. F. CASSEBOHM de venis bronchialibus observationes exstant apud GLASSIUM de *sanguinis circuit.* de aliis vero vasis venosis in codice, quem posthumum reliquit, methodi secandi. Valvulam inter hepar & diaphragma descripsit in *Libro de sectione viscerum.*

Absolvi hoc thema, & certus sum, eum qui præscriptos Auctores ordine legērit, inventurum ea omnia, quæ in hac anatomes parte necessaria sunt (a).

J. BEN. WINSLOW hanc historiam primus fere contexuit. Inter rariora etiam ramos inter iliacam & azygon communicantes, ramos extrorsum a vena pulmonali euntes habet.

F. RUYCHIIUS valvulas dixit singulares, ad ortum venarum minorum positas. Ramos venosos a cava vena ad intestina in senectute descripsit, quas tamen alii, & nuper CL. HAYMANNUS, pro ramis venæ portarum, nos pro ramis venarum spermaticarum in venas portarum inosculatis habemus.

J. CHRIST. LISCHWITZ de origine venarum, Kiel. 1736. Disp.

C. J. TREW cum arteriis linguæ socias venas descripsit.

CLIFTONUS WINTRINGHAM vires comparativas venarum magnas eas, & præter consuetam hypothesin, duritiem ad uterum majorem & alia habet.

CL. PETSCHÉ in sua Disp. toties laudata miras habet de venarum, etiam ipsius cavæ, varietatibus observationes.

In Acad. Reg. Scient. 1738. LE CAT habet azygæ in auriculam insertæ observationem ex sue.

A. F. WALTHER de vasis vertebralibus, Lips. 1730. & Act. Erud. 1731. de vena portarum I. & II. 1739. 1740. cujus vaginam refutavit, & de vena bronchiali 1731. egregia programmata reliquit, quæ in collectione nostra recusa sunt.

A. F. WALTHERI etiam est de erubescētibz & venarum capitis subitaneo tumore, Lips. 1739. 4.

CL. HEBENSTREIT de venis communicantibus, Lips. 1740. multa utilia proponit, ut azygæ ad capsulas adiposas ramulos, in renalem venam inosculatos. Eam etiam observationem & alias de azyga J. A. KULMUS habet in tabulis anatomicis, & Bresl. 1718. Idem CL. HEBENSTREITIUS recte negat valvulas venæ cavæ inferioris & in universum venarum profundarum.

B. S. ALBINUS de antiquitatibus valvularum dixit in præf. ad HIER. FABR. ab AQUAP. opera, & eam laudem FABRICIO vindicavit. Aliqua etiam ALMELOVEENIUS habet novantiqua p. 228.

CL. C. C. SCHMIEDEL, loco nuper citato, anastomoses venæ azygæ cum iliacis & spermaticis descripsit.

CL. TABARRANI de venis bronchialibus, occipitalibus, aliisque observationes habet; in Memor. di Lucca T. II.

HUYBERS de valvulis quæ in intestinis ut & quæ in systemate venoso occurrunt Disp. Leidæ 1744. 4.

CL. MECKELII de venæ facialis & temporalis laqueis a nervo buccinatorio & a duro factis observationes exstant in sæpe laudata Disputatione.

Qui in osteologicis foramina cranii recensent, solent venas una enumerare, & antiqui & recentiores. Neque systematum scriptores repeto.

A venarum descriptione dudum me absterruit earum inconstantia, quæ facit, ut ex cadaveribus paulo numerosioribus unam communem descriptionem concinnare vix possibile sit. Venam tamen bronchialem dextram & sinistram constitui, negatam a RUYCHIO aliisque: in progr. de arteriis bronchialibus & de vena sine pari, portarum vena, adiposis aliisque observationes protuli.

(a) Nunc de sanguine dicam, qui arteriis & venis continetur, & cujus particulæ elementales per microscopium, per hydrostatica experimenta, & per chemicam analysin exploratæ sunt. Etsi enim ad anatomen non valde proprie pertineat hoc omne studium, ob nexum tamen naturalem, & ob ordinem Medicis receptum hic repetere visum est.

Et Veterum equidem modica in his rebus sunt merita. Quatuor humores primigenii apud HIPPOCRATEM reperiuntur περί φύσιος ἀνθρώπου & περί χυμῶν. Fibras sanguinis habet ARISTOTELES hist. animalium III. c. 19. & analysin aliquam in quatuor humores ubique GALENUS. Huc ergo imprimis pertinent de temperamentis L. III. seorsim excusi ex recensione D. SEBASTIANI SINCKELER, Basileæ 1538. 8. & Liber de humoribus seorsim Argentor. 1557. 8. qui cum Commentariis ARCHANGELI PICCOLHOMINEI, Paris. 1556. 8. * (RIV.) cum

cum aliis C. LOPEZ Compluti 1665. * fol. cum aliis L. FUCHSII, Paris. 1554. * cum aliis H. JEREMIAE THRIVERII Brachelii, Lovanii 1535. 8. * cum aliis ACCORAMBONI, Romæ 1590. fol. * & cum J. B. MONTANI periochis, Hanoviae 1595. 8. * prodierunt. Verum in his omnibus parum omnino veri experimenti est, & atra bilis penitus commentitia, flava valde precaria, sanguinis partibus essentialibus adjectæ sunt.

Huc etiam pertinet GAL. Liber *an sanguinis arteriis natura contineatur* contra ERASTRATUM, quem de l. propr. citavit.

Commentarius in tertium Librum GAL. de temperamentis extat F. VALESII, Franc. 1645. fol. & J. B. MONTANI periocha in L. de temperamentis & de atra bile, Venet. 1560. 8. Eos III. Libros citat in l. de ordine leg. script.

De colore sanguinis ex doctrina medica Persarum prodiit Leid. 1745. 8. libellus cura J. S. BERNARDI ex codice M. S. bibliothecæ academicæ Leidens.

J. CORVINI de sanguine dialogi VII., Lugdun. 1562. 8. SYLVII discipulus, in I. dialogo ad ingenium veterum egit de sanguinis essentia, & quatuor humoribus. Dial. II. de judicio ex sanguine emissio.

JOH. CORVINI de sanguine dialogi, Hanov. 1605. 12. LEHM.*

Coagulari sanguinem in fervida in speciem jecoris FABRICIUS vidit form. ov. p. 55.

JAC. SCHEGK de sanguificationis instrumentis L. I. Argentor. 1581. 8. *

PHIL. SCHERBII de temperamentis, Altd. 1586. 4. *

J. JESSENI de JESSEN de sanguine ex vena misso, Prag. 1618. 4. (LIND.) & Nuremb. 1668. 12. cum notis J. PANCRATII BRUNONIS. Sanguinem sponte coire, & a feri diversa copia varias indicationes desumi posse vidit.

J. RUD. SALZMANN de natura sanguinis, Argentor. 1618. *

SCIPIO PORTIUS in opere physiologico, Messan. 1618. 4. edito, Quæstione V. egit de sanguinis temperamento, quod calidum facit.

M. HOFMAN de sanguine, Altd. 1622. *

M. HOFMAN sunt etiam fundamenta medica prudentia ex sanguine, Altdorf. 1690. 8. physiologiam etiam sanguinis continent.

HERMANNI CONRING de sanguinis generatione naturali, Helmst. 1643. 4. Leidæ 1646. 8. Theoretice. EJUSD. de calido innato, Helmst. 1647. 4. Ignis in corde habitantis theorica.

J. B. HELMONTIUS quatuor humores, hactenus quasi canonice receptos, industrie certe & per experimenta refutavit in Libro Scholarum passiva deceptio atque ignorantia & alibi.

G. ROLFINK de chylo & sanguine, Jenæ 1652. Disp.

HENRICI CITTADINI de homœomeria massa sanguinea. L. II. Paris. 1659. 8. *

J. PANCR. BRUNONIS de fermentatione sanguinis Disp. Altd. 1663.

JOH. BETTI de ortu & natura sanguinis, Lond. 1669. 8. Pauca experimenta habet & theorix flatulentæ plurimum. Ad finem subjecta sectio senis descripti THOMÆ PARRE.

M. HOFMANN de sanguine & ejus observatione, Altdorf. 1660. Disp.

ANT. DEUSING exercitatio phys. anat. de chylicatione, motu chyli, sanguificatione, &c. jam dictæ sunt.

CASP. FOSNER de sanguine, Jen. 1666. 4.

GEORGE THOMPSON *disputatio* or the true way of preserving the blood in its integrity, Lond. 1670. 8. * PL.

In WILLISII variis Libris de sanguine nonnulla habentur, ut in Libro de fermentatione & febribus, in quo aliqua sanguinis analysis extat, & in Libro de accensione sanguinis.

HENR. MARTINI de natura sanguinis & generationis modo 1671 4. PL.*

T. BARTHOLINI de sanguine verito, Francof. 1673. 8. Theologice sanguinem in cibum adsumi non licere, neque unquam ab Ecclesia concessum esse demonstrat. In anatome etiam aliqua huc habet pertinentia, & in Libro de hepatis desperata causa aliqua ad elementa sanguinis.

A. QUIR. RIVINUS de sanguificatione, Lips. 1678. 4.

C. VICT. SCHNEIDER de sanguine, VVittemb. 1679. disp.

FRID. SLARE de effectibus liquoris cujusdam cum sanguine misti Phil. Transf. n. 196.

CONR. VICT. van SCHNEIDER de sanguine corporis parte principe, VVittemb. 1679. Disp. RIV.
In RICHARDI LOWERI opere de corde integrum caput de colore sanguinis reperiuntur, quem a nitro admisto derivat, quæ etiam MAYOWII fuit, ut notum, opinio.

OTTO TACHENIUS in Hippocrate Chemico c. XII. aliquam analysin sanguinis ejusque salem fixum habet.

HIERONYMUS BARBATUS de sero & sanguine, Paris. 1667. 12. Francof. 1667. 12. & nuper cum JOS. PAPA, Leidæ an. 1736. in 8. docet serum sanguinis omnium secretionum materiem esse, in igne coire, sanguini supernatare, &c.

Primus autem qui aliquid serii in sanguine præstitit MALPIGHIVS fuit in Libro de polypo, qui cum Exerc. de viscerum natura prodiit, sæpe citato. Rete sanguinis descripsit, & fila & aliqua ad elementa & phænomena cruoris cum variis liquoribus misti. Polypos ab acido cogi credit. In posthumis fibras sanguinis, negatas a J. A. BORELLO, tuetur.

NEHEMIAS GREW sanguinis salem, & ejus cum acidis effervescentiam descripsit (phytologia. p. 251. 2.)

Deinde ROBERTUS BOYLE in apparatu ad historiam sanguinis humani, Londini 1684. 8. primus fere, omissis sterilissimis theoriis, ad verum laborem accessit. Pondera specifica sanguinis & seri exposuit, sed ea quidem a recentioribus mutata. Phænomena misti cum chemicis liquoribus sanguinis recensuit. Deinde analysin chemicam & elementa, quæ sanguis fundit destillatus, docuit, maximum vero laborem posuit in spiritu sanguinis alcalino. Principiorum proportionem non inveniri posse fassus est.

Membranam sanguinis MERRETUS vidit post BOYLEUM de frigore, & analysin etiam habet BOYLE Chemist. sceptic. P. I. de utilit. philos. exper., &c.

In Phil. Transf. de sanguine experimenta sunt, n. 29. 69.

ALLEN MOULIN de pondere sanguineæ massæ in variis animalibus, n. 191.

VIEUSSENS de sanguinis analysi, n. 241.

COWPER de globulis sanguineis, n. 260.

Medici Romani de acido sanguinis, n. 264. contra R. VIEUSSENS.

LISTER de copia sanguinis, quam octo libris æstimat, n. 270.

ADAMS sanguinem ramosum esse, non globulosum, n. 325.

Infusoria experimenta COURTEN, n. 335.

De sanguine MUYS, n. 339.

JURIN de globuli sanguinei diametro, quem $\frac{1}{124}$ uncia æstimat n. 355. EJ. de pondere specifico sanguinis & analysi n. 361.

Serum album in sanguine, n. 442.

De globulis sanguinis, microscopio LIEBERKUHNII visis, BAKER n. 458.

ANTONIUS vero van LEEUWENHOEK globulos sanguineos an. 1673. vidit 15. Augusti. Vid. Transf. n. 102. 106. 108. 117. 145. Phil. Collect. 1678. Transf. n. 280. 293. 375. 377. 380 & Act. Hafn. III. n. 3. quibus locis, deinde in operibus suis eos globulos descripsit, dissiliente, elasticos, compressiles, &c. Contra eos NICOLAUS HARTSOEKER Extrait critique n. 5. monuit, non proprios sanguini, sed a liquoribus heterogeneis commistos, uti etiam parum globulis tribuit J. Z. PLATNERUS Disp. de suppuratione cohibita p. VI. & MUSSCHENBROEKIUS fere omnia liquida crassiora globulis componi observat.

Globulos etiam sanguinis post LEEUWENHOEKIUM vidit PHIL. BONANNUS micrograph. BIDLOO T. 23. COWPER Phil. Transf. n. 280. BAKER in microgr., &c.

OL. BORRICHIUS de sanguine ejusque sale (inter Orationes) & in Act. Hafn. V. II. narrat experimenta sua infusoria, & eventus a vario genere liquorum injectorum.

FRID. WILHELM KRAUSS de fermentatione in sanguine non existente, Jenæ 1682. 4.

PHIL. JAC. HARTMANN de sanguine alimento ultimo, Regiomont 1684. Disp.

CHRISTIAN HELWICH de sanguine, Gryphisvald. 1685. 4.

B. ALBINUS de massa sanguineæ corpusculis, Francof. ad Viadr. 1688. & in T. II. Disp. nostrarum.

ANT. de HEYDE ad sanguinis cum succis chemicis misti phænomena legatur, tum M. ETTMULLER in Disp. de Chirur. infusoria, & ad pondera partium sanguinis MONCONIS in Itinerum Tom. IV.

J. CHRISTOPH. WENZEL de purpura sanguinis, Jenæ 1689. 4.

CL. BOHNIUS & in *progymnasmate* & in *A. E. Ann.* I. proportiones sanguinis & feri habet, fibras refutat.

J. PHIL. VERHEYEN in T. II. analyses sanguinis chemicas habet, & in *Chemia sua LEMERT*, & alii eo pertinentes scriptores.

G. E. STAHL multa habet quæ huc pertinent, uti *Diff. de sanguificatione in corpore semel formato*, Jenæ 1685. 4. *EJ. Diff. qua temperamenta physiologice, physiognomice, pathologice, mechanice enucleantur*, Hall. 1697. 8. qui idem *Libellus sub titulo lehre von den temperamen-ten*, Lips. 1723. 8. recusatus est, ubi ex aqua, sulfure & terra, horumque elementorum con-temperatione, & ex stricto & laxo habitu pororum, & vasorum eam theoriam deducit. *EJUSD. de sanguinis temperie optima Disp.* prodiit 1711.

RAYMUNDUS VIEUSSENS in *Phil. Trans.* n. 241. *Epistola ad Lipsienses de sanguinis spiritu acido*, Lips. 1698. 4. & in *JOUR. DES SAVANS* 1698. n. 5. *EJ. deux Dissertations touchant l'extractions du sel acide du sang, & touchant la quantité de ses principes sensibles*, Mon-spel. 1698. 8. & in *Tractatu des liqueurs super citato*, habet experimenta, quibus persua-detur invenisse se veras proportiones aquæ, spiritus, salis, terræ, olei, in sanguine: sa-lem etiam acidum sanguinis & invenit, & defendit, cum a Romanis Medicis bolo im-putaretur, eum autem etiam absque bolo parari posse, neque a sale marino oriri osten-dit, cum perinde ex sanguine vituli obtineatur.

J. CHRISTIAN SCHELHAMMER *de temperamentis*, Kiel. 1700. 4.

EJUSDEM sententia de temperamentis habetur in *JOURN. de TREVoux*, Novemb. 1709. Ab oleo, sale acri, Phlegmate & acido ea explicat, uti quodlibet eorum dominaretur.

JAC. GYSI *de temperamentis*, Basil. 1704. *Disp.*

DOM. de SANDRIS *de naturali & praternaturali sanguinis statu*, Bonon. 1696. 4. Francof. 1721. 8. Potius physiologia aliqua totius corporis, quam sanguinis historia est, aliqua tamen phænomena habet cum reagentibus, ut vocant.

In *Monumentis Academia Regia antiquis* apud DU HAMEL ad analysin & phænomena san-guinis cum variis liquoribus aliqua exstant, & in *projet pour l'hist. des ph.*, &c.

PARENT *de rete sanguinis* 1711. *Analysis sanguinis HOMBERG* 1712. quem ex sale al-calino & acido commistis componit, ut neuter alteri repugnaret.

Phosphorus ex sanguine LEMERT 1714. quem dudum reperio apud CARDANUM *de subtilitate*.

PETIT *de grumo & coagulo sanguinis an.* 1731. 1732.

REAUMUR *de frigore, quo sanguis cogitur*.

CAROLUS DRELINCOURTIUS sanguinis cum chemicis liquoribus phænomena habet in *Bibl. Manger.* I. p. 951. & de copia sanguinis experimenta in *Canicidiis*.

J. H. SBARAGLI *de reticulo sanguinis scripsit, fibrasque negavit in Libro de mentis & oculorum vigil.*

DOM. GUIELMINI *de sanguinis natura & constitutione*, Venet. 1701. 8. Ultraject. 1704. 8. & in operibus. Theoreticus potius quam per experimenta.

FRID. HOFMAN *de temperamento fundamentorum & morborum*, Hall. 1705. *Disp.*

J. C. BARCHUSEN in *Acroamatibus ad Jatrochemiam & physicen spectantibus*, Ultraj. 1703. 8. habet etiam analysin sanguinis chemicam.

In BAGLIVI *Diff. IV. phænomena injectionum*, & sanguinis cum variis chemicis liquo-ribus misti, & alibi de ejus coagulis morbofis aliqua exstant. Aliqua etiam habet J. BROEN *de duplici bile veterum*.

C. NIEWAART *de sanguine*, Leidæ 1710. *Disp.*

PAUL HENRICH VOGEL *de sanguificatione in homine secundum & prater naturam*, Er-furt. 1710. 4.

FR. PETIT in *Lettres d'un Médecin* sæpius laudatis plurima habet in *Epist. II. ad san-guinis cum variis liquidis commisti phænomena; injectionem liquidorum variorum*, &c.

In DEIDER *physiologia* exstat analysis sanguinis. Idem in *Libro des humeurs* habet aliqua experimenta injectoria, & filamenta sanguinis defendit, quæ etiam HECQUETUS variis locis, & TEICHMEYERUS in *anthropologia* & in *Disp. de polypo*, & SENNAC, & alii admittunt.

HERMANNUS BOERHAAVE globulos sanguinis & feri & lymphæ, & alios decrescen-
cium

tium ordinum statuit, quem plurimi clari viri secuti sunt, JOHANNES de GORTER de *secretione* & alibi; & J. F. SCHREIBER in *elementis*; ILL. ROSEN in *Compend. Anat.*; & KINNEIR *essays on the nerves*, Lond. 1739. 8. & alii. IDEM PRÆCEPTOR in *Elem. Chem.* T. II. egregiam analysin sanguinis proposuit.

F. HOFMANN in *medicina systematica* aliqua etiam ad pondera specifica pertinentia habet, & J. ARBUTHNOTH de aëre & J. B. MAZINUS *mechanic. morb.* T. I. ad analysin aliqua, tum IDEM HOFMANNUS in *obss. chemicis*.

Olei animalis DIPPELII *encheiresis* exstat BRESL. 1718. Jan.

JACOBUS KEIL in *account of the quantity of blood*, Londini 1708. 8. & in eodem Libello, inserto *tentaminibus physiologicis*, quantitatem sanguinis partim ex computatione facta & æstimatione cavi luminis arteriarum ad earum solidas membranas, partim ex parca residui solidi post diffusa fluida copia æstimat, valde magnam. Globulos sanguinis in *Dissertatione de motu musculari* habet pro bullulis aëre plenis.

JOH. FREIND in *Emmenologia* plurima phænomena habet sanguinis cum variis succis & medicamentis compositi.

FRID. MENTZ de *temperamentis*, Lips. 1712. 4.

ARCHIBALD PITCARNE in *elementis medicina* phænomena habet sanguinis cum variis succis commisti. In *Dissertatione de opera quam præstant acida & alcalica* acidum sanguinis salii marino vel bolo tribuit.

J. M. LANCISIUS in *Diss. post MERCATI metallothecam* & in *Dissertatione IV. de acido sanguinis* agit contra VIEUSSENIUM.

DANIEL de SUPERVILLE de *sanguificatione*, Trajecti 1718. Disp.

JAC. LUFNEU de *sanguinis calore naturali ac præternaturali*, Leidæ 1718.

JUSTI VESTI de *temperamentis*, Erfurt. 1718. Disp.

JOH. TABOR in *exercitationibus medicis* sæpe citatis rationes feri ad rubram partem sanguinis, & magnitudines globulorum & pondera specifica dimetitur.

J. J. a BRUNN de *sanguine*, Duisburg. 1723. 4.

ANT. DEIDIER *quæstio de temperamentis*, Monspel. 1726. *

CHR. STENZEL de *veritemperamenti in corpore humano absentia*, VVittemb. 1727. 4.

Ad analysin aliqua habet ERMEL in *compendio*, qui etiam de oleo animali agit, & ROHTIUS in *Chemia* toties recusa Germanice, & Gallice; & C. NEUMANNUS in *oper. Chem.* p. 1242., & CL. P. GERIKE in *Chemia*, & J. F. CARTHEUSER in *Pharmaceutice*, ubi etiam oleum animale describit; & CL. POTT in *Miscell. Berol.* T. VI. ubi acidum sanguinis defendit, & PINELLI de *podagra*.

THOMAS MORGAN in *philosophical principles of Medicine* varia habet ad sanguinis historiam. Negat globulos sanguineos aëre plenos esse, cum ponderosiores sint sero, diametrum æstimat ad $\frac{1}{3000}$ pollicis.

An essay on the transmutation of blood, Lond. 1725. 4. A chemicis colorem sanguinis deducit, & eum in pus mutari contendit.

THOMAS KNIGHT in *vindication of a late essay on the transmutation of blood*, Lond. 1731. 8. Aliqua de sanguine habet, & globulos pro vesiculis aëreis crusta viscida a chylo unitis, ruborem esse a sulfure cum alcali misto docet, quod cum acido albescat.

GUIL. OSTENS de *sanguine*, Leidæ 1728. 4.

F. RUYSCH membranam ex sanguine parare docuit, quem CL. TEICHMEYERUS, & LOESCHER *specim. anthropol. experim.* & in muco B. S. ALBINUS sunt imitati.

DAN. de MEZA de *αἱματώσει*, Leidæ 1731. 4. Disp.

MICHAEL PROCOPE COUTEAUX E. *sanguinis partes tenuiores in venis quam in arteriis*, Paris. 1732. Disp.

MICHAEL ALBERTI *hamatologia physico-medica*, Hall. 1736. 4. EJ. de *differentia sanguinis arteriosi & venosi*, Hall. 1737. 4.

F. QUESNAY quatuor humores radicales veterum renovare studuit, lympham diversam ab humoribus gelatinosis, atram bilem mucosam, acidum in sanguine contentum defendit. Sed fusus est & legi potest in *Oeconomia animalis* nova editione T. II. & III. Similia ferre leges in *Mémoires de l'Académie de Chirurgie*.

ANDR. PASTA de *meru sanguinis post mortem & de polypo cordis in dubium revocato*, Bergomi

gomi 1637. 4. Polypos habet pro crusta sanguinis, quæ pro vario situ corporis innatans varie adhæreat.

STEPH. HALES in *vegetable statics* calorem sanguinis comparativum, aerem sanguinis demonstrat. In *Hemastatics* pondus specificum, magnitudines globulorum aliaque.

J. H. SCHULZE, & J. M. OTTO de *sanguinis humani constitutione naturali & praternaturali*, Hall, 1735. 4.

VISSCHER de *Cholepoiesi*, Leid. 1735. analysin sanguinis habet.

Auctoribus, quos ad analysin sanguinis citavimus, addendus est STANCARI in *Act. Bon.*

PH. AD. BOEHMER de *præcavenda polyporum generatione*, Hall. 1736. 4. Habet de fibris sanguinis quas defendit, & membrana inde nata, minime inutiles observationes.

G. W. MUYS in *fabrica musculorum sanguinis piscium* particulas fuse describit.

BROWNE LANGRISCH in pulcherrimo Libro *modern practice*, Lond. 1738. 8. diversas analyses sanguinis, & variabiles quantitates feri, cruoris, salis, terræ, olei pro varia ætate, pro morbis, definit, & co hæ sionis in sanguine gradus varios.

C. AUG. a BERGEN de *judicio medico ex sanguine per vena sectionem misso*, Francof. ad Viad. 1740. 4. Pondera globulorum & sanguinis habet, & de sanguinis exhalatione experimenta.

De S. LEGER an *proxima, qua corpus alitur, materies a rubro sanguine diversa*, Paris. 1740. Thes. Albam partem solam alere, & secedere in partem fibrosam, gelatinosam, & aqueam: rubram partem forte inutilem esse. &c.

THOMÆ SCHWENKE *hematologia sive sanguinis historia*, Hagæ 1743. 8. Dignum omni laude opus, quo plurima de calore sanguinem cogente, & resolvente, de globulis, de grumo sanguineo & seroso, de analysi, de ponderibus specificis sanguinis & feri, & alia perutilia habentur.

J. STAM de *αιματοποιησις*, Leidæ 1743. 4.

J. H. SCHULZE physiologiam ideo cito, quod fateatur non dari temperamenta. EYUSDEM exstat *Disp. de temperamentorum existentia illorumque usu in medicina*, Hall. 1734. 4.*

MARTIN SCHURIG *hematologia*, Dresd. 1744. 4. Compilatio.

ALEX. MONROO in *Actis Edimb.* II. de grumo sanguinis obturante vulnus fibroso. G. MARTINE ibid. de globulis diversarum serierum sanguinis, de ponderibus specificis, de temperamentis a globulorum numero variis, de analysi. In T. V. STEVENSON pro motu sanguinis intestino scripsit, a quo suscitetur cordis motus.

J. BOECLER an *nitrum sanguinem solvat*, Argent. 1741. 4.

In *Miscell. Berol.* T. VI. globuli sanguinei ranini motabili figura aliaque utilia describuntur.

JAC. FRANC. le CHAT de la SOURDIERE. Ergo non ubique corporis sanguis idem, Paris. 1743.

B. D. MAUCHART de *oleo animali*, Tubing. 1745. Utilis *Disp. De eod. Comm. Lit. Nor.* 1731. 1734. 1741. & D. LOEBERI me Præside habita Disputatio. Gotting. 1747. 4.

CL. de SAUVAGES in *Mémoires de l'Acad. de Montpellier*, 1743. sanguinem carotidis arteriæ specificè leviolem facit. Idem in Libro de *inflammatione* ad pondera specifica sanguinis aliaque ejus phænomena observationes suas attulit.

In CL. KNOLLE *Diff. von der verdickung des geblütes* sanguinem arteriosum venoso densiorem & ponderosorem esse defenditur.

CLAUDII BOURDELIN de la MOULIERE. Ergo in quacunque corporis parte *hematosis*, Parisiis 1745. 1745.

CL. CHRISTOPHORI ANGREÆ MANGOLD in nuperis suis *Chymische Erfahrungen*, Erfurd. 1748. 4. de oleo animali bona experimenta habet.

In Tomo II. operis Svvieteniani de crusta & pelle sanguinis, & de coagulatione in morbis acutis aliqua reperiuntur.

De ferro in sanguine contento egregiæ observationes VINCENTII MENGHINI exstant in *Comment. Bonon.* II. P. 2. & aliquæ JOSEPHI BADIA in *opusculis scientif.* T. 18.

C. LUD. LEBRECHT LOESEKE de *motu sanguinis intestino*, Hall. 1747. 4. Eum motum generari negat a repulsione globulorum, &c.

J. G. BRENDDEL progr. I. II. Hotting. 1747. 4. demonstrat globulorum sanguineorum & minorum progressionem non posse respondere descriptioni BOERHAAVII & LEEUWEN-HOEKII.

ROB. DOUGLAS of the generation of heat, Lond. 1748. 8. De globulis & eorum ad generandum calorem aptitudine.

FRID. GOTTL. JACOBI Disp. de colore sanguinis, Lips. 1748.

P. GERIKE de temperamentis, Helmstad. 1748. 4.

SAMUEL ANDR. TRESSELT de olei animalis faciliore preparatione & modo agendi, Præfide J. H. LUDOLF. ERFURT. 1748. disp.

Multa de sanguine, lymphæ, sero, muco, habet SENACUS, & globulos sanguinis lentculares esse ostendit.

E. A. NICOLAI de spissitudine sanguinis, Hall. 1749. 4.

J. PETR. EBERHARD de sanguificatione, Gall. 1749. 4.

J. FICHEL Experimenta circa sanguinem humanum instituta, Erfurt. 1749. 4.

C A P U T II.

De Vasis lymphaticis.

PRIUSquam de scriptoribus agam, qui hanc vasorum pellucidorum descriptionem dederunt, opus est aliquid dicere de sententia, quam super hac re foveo, & quam credo omnibus placituram (a).

Medici quidem vocant vasa lymphatica, „ Vascula oculo nudo conspicua, „ in quibus liquor limpidus deprehenditur „. Et primo omnia vasa, hæcenus apud Auctores descripta, sunt hujusmodi, ut oculo nudo discerni possint. Si sufficeret scrutatori anatomes hæc scire, promptum opus foret ex sequentibus Auctoribus ea addiscere. Verum ii nihil nos docent, nisi in corpore quædam vasa esse satis magna, quæ talem lympham ferant: atqui hæc vasa omnia tantum venæ sunt, quod demonstrabo.

Venæ est canalis liquorem motum continens, qui movetur iterum versus majores venas, & cor, adeoque venæ ferunt liquidum redeuns a communi fonte
versus

(a) Hoc systema vasorum minorum superstructum hinc arteriis minorum generum a RUYSCHIO repertis, inde globulorum in sanguine seriebus decrescentibus in LEEUWENHOEKII experimentis, maximo PRÆCEPTORI honori fuit, & ab omni fere Medicorum ordine hæcenus receptum est, ut arterias minores, tenuiorem sanguine liquorem ferentes admittant. Prima vero hujus theoriæ stamina non solum apud ERASISTRATUM (CELS. in præf.) arterias statuentem spirituosas, in quas transeuns sanguis inflammationem faceret, sed inprimis etiam inter recentiores apud RAIMUNDUM VIEUSSENIUM reperiuntur, qui paulo ante BOERHAAVIUM in novo vasorum systemate fuscè & ubique descripsit „ vasa neurolymphatica secretoria, ab arteriis orta, inserta venis, aut excretoriis ductibus. Ipsum denique errorem loci sive inflammationem ex sanguine in vasa minora aberrante manifesto descripsit p. 109. 110. & in Tractatu des liqueurs p. 129. Imo subtiliter trium generum vasa minora statuit, primum ex arteriis rubris ortum, alterum ex primo genere, tertium ex secundo. Et ea quidem vasa inflammatio, melius vero repletio vasorum rubrorum demonstrat, unde in toto corpore humano vasa continua rubris pellucida prius, & invisibilia, aut succo decolore cœruleo, fuscove plena conspicua fiunt. Inde non male ANTONIUS FIZES inventum vasorum minorum generum VIEUSSENIO vindicat, de tumoribus p. 10. Neque dissimulandum, vulgaria lymphatica vasa ex arteriis deduxisse, & per eas replevisse varios Auctores, COWPERUM, inprimis TYSONEM in Anat. of a pigmy: & ductum thoracicum atque lymphatica per cœliacam injecisse CL. BORRICHIIUS apud BARTHOLINUM, ut nuper CL. TARINO in lacteis successisse legimus & multo prius CL. MANGETO Theatr. anat. II. P. 168.

versus cor. Nunc dico omnia vasa lymphatica, hætenus ab anatomicis descripta meras venas esse.

Sic demonstratur. 1. Omnis canalis in corpore, qui ex angustiis deducit versus ampliora spatia, vena est: sed omnia vasa lymphatica, hætenus descripta (videantur omnes figuræ, legantur omnes Auctores) sunt vasa, quæ ex minoribus ramis in ampliora ducunt, ergo, &c.

Verum 2. vena est, quæ per laterales canales recipit liquidum, seu canalis, in quem alii canales minores se exonerant: nam omnis vena, gracili orta ramusculo, grandior fit per novum canalem ad latus insertum: si nunc omnia vasa lymphatica, hætenus descripta, consideravimus, omnia a radicibus invisibilibus incipiunt, & majora sensim fiunt, acceptis lateralibus vasis, quæ se in majorem truncum exonerant. Ex majori vero trunco in lateralia vasa nihil omnino derivari potest. Ergo omnia vasa lymphatica, hætenus ab anatomicis descripta, quæ oculis apparent, sunt meræ venæ, & nobis tum demum apparent, quando plures graciles venæ in unum magnum vas evacuarunt.

3. Omnia vasa lymphatica habent valvulas (loquor de illis hætenus descriptis). Verum nullibi in corpore in arteriis valvulæ reperiuntur, nisi in arteria aorta, & arteriæ pulmonalis initio, quas, si sedulo intueri lubuerit, constabit eas non proprie pertinere ad substantiam harum arteriarum, sed ad cordis carnem. Ergo in arteriis non sunt valvulæ, eæ vero in venis sunt, & ubicumque metus est, ne præcedens sanguis impediatur liberum transitum subsequenti ibi maximæ valvulæ sunt, nec alia ratio est omnium valvularum in corpore: venæ enim in initio tenuissimæ sunt, postea majores fiunt; sed demonstrant mathematici, „ si liquidum perpendiculariter adscendere debet, tunc totam se-
„ riem perpendiculariter obstare motui inferioris liquidi, hinc cum venæ fa-
„ cile comprimantur, non transiret sanguis pondere impeditus columnæ superioris. Ergo ne liquidum pressum, ubi major est vena, sanguinem per omnes venas minores fluentem impediatur, valvulæ ibi sunt. Videatur RUYSCHIUS.

Hinc in venis ubique valvulæ sunt, & vix per unciam progredimur, quin valvulas inveniamus, ob necessitatem mox dicendam.

Verum 4., vena est vas, quod ab extremis liquidum in majus infusum versus cor reddit; arteria contra a corde ad extrema ducit. Vide nunc omnia lymphatica vasa a RIDLEIO in cerebro picta, vide omnia lymphatica vasa a LOWERO detecta in externo & interno capite, quæ ad glandulam pituitariam reddunt suum liquidum venis jugularibus, vide omnia vasa lymphatica thoracis, quæ se exonerant in ductum PECQUETIANUM, in venam subclaviam, in sinum venosum, in venam ἀζυγον, videantur demum BARTHO-
LINUS, LOWERUS, MALPIGHIVS de vasis lymphaticis abdominis, omnis certe ea lympa, quam hi clari viri viderunt, unice versus cisternam fertur; hinc in ductum PECQUETIANUM, ut ipsa NUCKIO picta vasa lymphatica femoris, ad superiora eant & in venas lacteas majores se evacuent. Ita videmus, hæc omnia vasa lymphatica mediantibus vasis lacteis variis liquorem suum cordi reddere. Ergo concludimus, omnia vasa lymphatica, hætenus exarata & descripta, meras esse venas.

Sed nulla est vena, quin debeat habere suam arteriam, hoc est nullum vas potest deferre versus cor, quin ab alio vase liquidum suum deferendum receperit. Quod enim liquidum versus cor moveretur, id debet prius liquidum a corde accepisse. Ergo vena ab aliis vasibus suum liquidum habere debet. Et ex eadem ratione vasa lymphatica, quæ versus cor reducunt, debent ab aliis vasibus suum liquidum accepisse. Neque ea alia vasa venæ esse possunt, nam venæ recipiunt, quod attulerunt arteriæ. Ergo lymphatica vasa serum suum debent accipere a quibusdam arteriis, uti omnes venæ ab arteriis recipiunt; hinc, uti videmus, venas lymphaticas esse; sic etiam necesse est dari lymphaticas arterias invisibiles, a quibus venæ lymphaticæ liquidum accipiant. Neque enim ex sanguinea arteria vena lymphatica oriri potest, tunc enim per eam ferretur liquor crassior, sanguineus, qui semper ruber est, docente microscopio. Ergo arteria ea, unde prima vena lymphatica oritur, debet esse vas, quod ex arteria cruenta recipiat liquidum tenuius, quam est sanguis; ergo debet esse vas minus quam arteria cruenta, hoc est lymphatica arteria. Verum ubi cruenta arteria ultimo definit, ibi non est conspicua; ergo longe minus hæc arteria lymphatica conspicua erit. Si nunc quæsieris, cur arteria illa lymphatica conspicua non sit, respondebo, quia liquorem pellucidum vehit. Ita in pediculo, ubi a posteriore novimus infinita esse vasa, tamen ob pelluciditatem nobis ea videre haud licet.

Hæc ergo sententia nostra est, ad omnem locum, ubi transmittitur sanguis, ruber ex arteria in venam, ibi oriuntur canales invisiti, ad minimum decuplo minores diametro arteriarum rubrarum. Docent hoc globuli liquidorum pellucidorum per microscopia inspecti, nam globuli sanguinis rubri non intrant in illa vasa lateralia, & si comparentur cum globulis lymphaticis, ingens erit differentia, dum enim sanguis ad ea vasa lateralia applicatur, exprimit in eas liquidissimam partem liquoris sui, qua orbatus transit recta in venam. In hanc vero lateralem arteriolam, inquam, transit liquidissima pars, eamque voco *arteriam lymphaticam*, & certum est, ferri per eam liquidum motu arterioso, hoc est, ex lato in angustum, neque eam aggregari ex minoribus in majus vas, sed ex majoribus ferri in minora, tunc definire prolongatam in venam lymphaticam, quæ solitaria non conspicua est, sed aggregata ex minoribus conspicua fit, tuncque ibi demum incipit initium venarum lymphaticarum.

Neque hoc solum, sed id etiam mihi probabile fit, arterias lymphaticas, ubi in venas transibant, dare laterales canales tanto minores se ipsis, quanto ipsæ minores erant ultima arteria rubra, ex qua oriuntur. Hæc vasa vocantur mihi *lymphatica secundi generis* (a), & sic porro. Quousque vero hæc progressio

(a) Cum PRÆCEPTOR videret LEEUWENHOEKIUM plures nonnunquam globulorum series reperisse, ut etiam flavus globulus in lymphaticos pellucidos divideretur, neque viderentur ultimæ parvitatis arteriolæ commodè ex ipsa rubra arteria posse provenire, in id systema incidit, quod vide INSTIT. MED. CCXLV. CCXLVI. Ab eo transit ad SWIETENIUM, HELVETIUM, GORTERUM, MARTYNUM CLIFTONUM WINTRINGHAM patrem de podagra p. 28. aliosque. Nam HELVETIUS, qui sibi hoc systema tribuit in *Mém. de l'Acad. des Scienc.* & cui le TELLIER eum honorem defert in critica *Emmenologia* FREINDINÆ p. 75. post BOERHAAVIUM omnino scripsit quodcumque huc referendum edidit. Dubia vero mea contra id systema proposui, & pleraque vasa minorum generum ex arteria rubra oriri, per experimenta ostendi in *comment.* ad CCXLVI. & apud CL. C. A. a BERGEN Disp. de inflammatione sanguinea.

gressio pertingat, ignoramus, id tamen novimus, eousque pertingere, ut (nervi) (a) vasa lymphatica sint omnium minima.

Dantur ergo arteriæ lymphaticæ & venæ lymphaticæ, deinde rami arteriosi lymphatici arteriarum lymphaticarum, & harum iterum aliæ propagines. Uti nunc sanguis redit in sanguinem, sic lymphæ primi generis redit in venam lymphaticam primi generis, lymphæ secundi generis in venam lymphaticam secundi generis, & sic porro, hacque ratione omnia derivantur ex arteriis a corde in venas & redeunt in cor.

Objici posset, quæri omnino an hæc fabrica necessaria sit in corpore. Respondeo omnino esse. Advertat rerum gnarus animus ad cutim, tendinem, membranam, ossa, loca glandulosa, vix sanguinis rubri aliquid in vasis adesse reperiet, & tamen crescit hujusmodi pars nihilo segnius, quam pars rubra. Imo, quod majus est, in initio fetus omnino non reperitur sanguis ruber in ipsis partibus, quæ postea rubræ fiunt, & tamen eo tempore celerius, quam in alio æquali tempore crescunt. Verum ut crescant eæ partes, oportet eas, hoc est vasa quibus constant, impleri. Deinde debent nutriri, hoc est, debent liquido repleri, & applicari ex eo liquido tantum, quantum fuit perditum, quod non fieri potest, quin ad omnia puncta corporis applicetur hoc liquidum. Verum docent microscopia, maximam partem corporis sanguine carere. Si pes ranæ ad lentem instar grani sabuli magnam applicetur, in mediis locis non reperietur sanguis ruber, & tamen ibi nutritur illa pars pedis; ergo ibi esse debent vasa, quæ recipiunt, receptum propellunt, sed hæc vasa tantum possunt esse arteriæ, hoc est conferunt liquorem suum ex lato in angustum; ergo arteriæ lymphaticæ requiruntur. Sed tertio debet corpus humanum flecti, nec flexibile manere potest, nisi ex partibus infinite parvis constet. Nunc vasa, quæ sanguinem rubrum ferunt, non sunt partes minimæ, minora enim dantur, quæ liquidum tenuius quam sanguinem ferunt; videamus v. gr. in cute, quæ omnium maxime flexilis pars est, ibi vix vasa sanguifera, sed minora reperiuntur. Si corpus haberem, quod constaret ex partibus tam magnis, ac quinque mei digiti sunt, simul sumti, non posset flecti hujusmodi corpus absque separatione partium quarundam, hoc est absque ruptura. Verum, si constaret idem corpus ex partibus tam tenuibus, ac unus meus digitus est, tunc possent partes adhuc in contactu manere, licet flecteretur corpus; hinc quo vasa ad majorem tenuitatem reducuntur, eo facilius flecti possunt; hinc requiruntur vasa, quorum membranæ infinite tenuiores sunt, quam membranæ arteriarum; hujusmodi autem sunt vasa lymphatica.

Ex his vero vasis totum corpus constat; nam membranæ majores flexiles sunt, quia membranæ minoribus constant; & hæc minores membranæ sunt flexiles, quia ex minoribus canalibus conflantur, & illi canales sunt flexiles, quia ex minoribus adhuc canalibus componuntur. Si vero quæras quotuplicia hæc vasa sint, hoc ignoramus, majorem tamen crederem esse subdivisionem, quam facile imaginemur.

Y y y

Omnes

(a) *Instit. Rei Med.* n. CCCII. Eam conjecturam ita intelligere oportet, ut arteriæ æque parvæ, ac sunt nervi, etiam intra cerebrum oriantur, non ideo aut sensus capaces, futuræ, aut motus. Habet etiam eas arterias CL. WINTRINGHAM L. c. p. 33.

Omnes hætenus anatomici dixerunt, corpus ex arteriis & venis constare; nihil de lymphaticis dixerunt: nunc & arteria & vena lymphatica demonstrata sunt. Sed pergit divisio, donec omnes partes æqualiter parvæ, & liquida æqualiter divisa sint; hinc puto, hæc omnia tandem desinere in vasa tam parva, quam origo nervi est, nam neque tenuiora liquida spiritibus, nec vasa nervis tenuiora haberi possunt.

Hoc sensu nervi ubique sunt, & oriuntur non ex cerebro tantum, sed ex ultimis arteriis ubique (a), & a quibusdam lymphaticis nascuntur etiam lymphatica ubique, ubi plexus vasorum reperiuntur, hoc est, ubi arteriæ in venas fiunt.

Ultima arteria lymphatica desinit duplici loco. 1. Partim extra corpus in vacuitates aliquas. 2. Partim in venas corporis. In vacua spatia se exonerat, ut extrorsum ad cutem, & intus in cavitates corporis. Si quæras, ubi illa iterum, quæ

(a) Vasorum lymphaticorum antiquitates habet P. T. HARTMANNUS de peritia veterum anatomica II. c. 5. qui pene persuadet, aliquam eorum vasorum cognitionem apud veteres fuisse. Fibras certe inter arteriam venamque medias, ex natura sua sanien continentes ARISTOTELES dixit hist. anim. L. III. c. 6. Vasa vero lactea ERASISTRATO atque HEROPHILO nota fuisse, vulgo nunc ex GALENO scitur Libro Admin. anat. VII. c. ult. de usu partium L. IV. c. 19. Lactea autem de lymphaticorum esse genere, notissimum est. GABRIEL FALLOPIUS in obs. de venis vasa lymphatica hepatis descripsit.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS ductum thoracicum, omnium lymphaticorum vasorum maximum, descriptum dedit in Libro de vena sine pari, originem tamen ignoravit.

GASPARIS ASELLII Liber de lactibus sive lacteis vasis, Mediolani an. 1627. 4. Basil. 1628. 4. Leidæ 1640. 4. & cum SPIGELIO an. 1644. 4. prodit. Cum alia quæreret in vivis animalibus, in vasa lactea incidit, ea ab intestinis ad hepar usque persecutus est, quo ire credidit, ut videtur, a lymphaticis delusus, & descriptionem dedit eruditam, etsi posthumam, cum an. 1626. mortuus sit, icones vero artificiosas tribus coloribus distinctas, satis vitiose passim recusas; restaurator adeo vasorum lacteorum, quorum etiam valvulas non ignoravit. Male ejus inventum celebris ex libris doctor derisit C. HOFMANN Apol. pro Galen. L. II. c. 133. neque hic laudari potest HARVEIUS, cujus eadem fuit opinio in Libro generat. animal. & in epist. ad HORSTIUM, ut lactea vasa solam lympham revehere crederet. ADRIANUS vero SPIGELIUS, quando chylum rubrum sæpe se vidisse dicit L. V. c. 3. videtur aliquid de lymphaticis olfecisse. Brevi post ASELLIUM lactea se demonstrasse ROLFINKIUS sibi ipsi testis est Dissert. anat. p. 909. ubi ea vasa describit.

P. GASSENDI varia, de nutritione animalium, ubi & de venis lacteis, &c. Lugd. 1649. fol. cum Opere de Philos. Epicuri edita sunt.

MENTELIO inventæ an. 1629. cisternæ laudem tribuit CAROLUS le NOBLE, non satis tamen ea fama confirmata est.

JOH. VESLINGIUS in posthumis vasa lactea ita auxit, ut etiam in thoracem usque sit persecutus ibi ductum thoracicum viderit, sive lymphatica vasa. Ex humano etiam corpore primus lacteorum iconem bedit.

MAURITIUS etiam HOFMANNUS jam 10. Mart. 1643. se canalem inter septi crura ad thoracem adscendentem vidisse, anno vero 1649. a VESLINGIO percepisse, vasa sibi sub pancreate apparuisse, unde rami ad hepar & thymum, & ad cor abirent, ipse refert.

N. TULPIUS primus aut inter primos vasa lactea in homine vidit.

JOH. WALÆUS de chyli motu & natura egregiam epistolam ad BARTHOLINUM anno 1641. scripsit.

JOSEPH PECQUET experimenta anatomica quibus incognitum chyli receptaculum & ab eo per thoracem ad subclavios usque ramos lactea deteguntur, Paris. 1650. 4. & auctius 1654. 4. & Anglice, Londin. 1653. 8. & alias prodierunt. Dieppensis Medicus, an. 1647. cum venam

quæ in cavitates effunditur lymphæ, maneat. Porro ubique vasa esse absorbentia, uti **BELLINUS** demonstrat, & uti tota cutis perspirat juxta **SANCTORIUM**, sic tota cutis inspirat juxta **BELLINI** experimenta: verum sicut in cute, sic in omnibus membranis interioribus ubique.

Yyy 2

Hæc

venam cavam in cane lacteum humorem stillare vidisset, inquisivit, ampullam vidit cui lactea se infererent, & unde ductus duplex adscenderet, inque utramque axillarem se multis osculis infereret, & receptaculum suum juvenis, necdum Doctor, demonstravit **Monspeli** (*BINNINGER* Obs. l. n. 30.). Hæc quidem fabrica valde ab humana, ad quam passim traducta est, aliena videtur. Inde conclusit in *Diss. de chyli motu & circulatione*, chylum nec ad hepar ire, neque ibi coqui. Adjecta est *Diss. de thoracis lacteis contra RIOLANUM*, qua non bene invidentem novo invento doctum cæterum senem refutat: tum *HYGINI THALASSII SANGERMANI* personati acris contra **RIOLANUM** invection, & gratulationes variæ ad **PECQUETUM MENTELII**, **D. AUZOUT** & aliorum.

J. PECQUET experimenta anatomica &c. recusa etiam sunt, Amstel. 1700. 12.

EJUSDEM PECQUETI nova communicatio ductus thoracici cum venis lumbalibus & cava habetur & inter **PERRALTI** *Essays de Phys.* T. III. & in *Journal des Savans* 1667. n. 7. & 1672. n. 1. & in *Anciens Mémoires de l'Acad.* T. X. valde certe mihi incredibilis. Receptaculum Chyli ibi ex homine pingitur. Finem vitæ fecit valde singularem, cum spiritu vini solo se optime ali persuasus ejus liquoris abusu se enecaverit.

Pro **PECQUETO** scripsit etiam **GUILIELMUS** de **HENAU** *Clypeum*, in quo tela in **PECQUETI** cor a **CAR. le NOBLE** conjecta infringuntur, Rothomag. 1655. 12. *

J. van HORNE *Disp. de ductu chyliifero*, Leidæ 1652. 4. & jam in collectione operum **PAULIANA** exstat. Habet ductum thoracicum ex homine, sibi primum visum. Idem experimenta pro definiendo motu lymphæ instituit.

F. SILVI *Disp.* VIII.

PETRI GUIFFART *utrum chylus vel sanguis sit lactis materies*, Rotomag. 1652. 4. De receptaculo chyli aliqua habet. Inde ad placentulas ductus ire, liquorem amnii secernere credidit.

JOH. RIOLANI *opuscula nova*, Paris. 1652. 12. In iis commentatio adversus novum de venis lacteis commentum habetur, qua elevat **PECQUETI** inventum vanis, ut solent, ex theoria captiunculis contra experimenta usus. **IDEM**. Paris 1653. 8. edidit *opuscula nova anatomica. Judicium de venis lacteis lymphaticis BARTHOLINI refutatur. Dubia anatomica resoluta*. Anno vero 1655. 8. *Responsiones duas, primam ad experimenta nova PECQUETI, alteram in duos Doctores Parisinos Pecquetianos adversus sanguificationem in corde: accessit Ejus judicium de vasis lacteis & CAR. le NOBLE observationes de lacteis thoracis* *.

OL. RUDBEK *Rostochiensis Nova exercitatio ductus aquosus exhibens & vasa glandularum serosa*, Arosiæ 1653. 4. Leidæ 1654. 12. (*LIND.*) In editione Arosiana, quam debeo **ILL. ROSENIO** pauciores icones sunt, & observationes, quam apud **HEMSTERHUYSIUM**, ubi 14. observationes noviter accesserunt, & tabulæ 13. **RUDBEKIUS** anno 1650. vasa lymphatica vidit, & ea certe longius **BARTHOLINO** per varia viscera persecutus est, & propria manu depinxit in teste, pulmone, corde, utero, variis animalibus usus. Præclaræ etiam observationes sunt, quas addidit de fetu, de vomitu, &c. Exstat pro an. 1650. testimonium **L. ROBERG** *recens. invent. anatom.* p. 18. ubi adjectum est, etiam in artubus ovis Leidæ eundem virum anno 1654. ostendisse lymphatica. **EJUSDEM** *de sero ejusque vasis* *Disp.* Upsal. edita 1661. 4. a nemine fere visa est. Continet tres tabulas lymphaticorum cordis, septi transversi, colli, linguæ, &c. Eam in supplemento *Dissertationum* edam.

Insidia structa ductibus aquosis a THOMA BARTHOLINO, Leidæ 1654. 8. prodierunt. Contra **BOGDANI** Libellum scriptæ sunt, qui proxime sequitur, & quem non inmerito ex dictione multum de Præceptore habere suspicatur **RUDBEKIUS**. **IDEM** famam suam mascule tuetur & April. M. 1652. Regiæ se demonstrasse ductus suos adfirmat, cum Majo mense nihil adhuc de iis innotuisset **BARTHOLINO**, argumento silentii, quod egit in *lacteis thoracis* eo mense editis. **EJUSDEM** *epistola de vasis serosis* ad **T. BARTHOLINUM**, Upsaliæ 1657. 12. dicitur a **MERCLINO** prodierit. Et certum est **THOMAM**

paucos

Hæc præmittenda putavi, antequam de Auctoribus dicamus, quia apud eos illa nullibi inveniuntur, sed hæc edocti eo melius nos eorum inventis uti poterimus.

Agamus ergo de Auctoribus, qui scripserunt de vasis lymphaticis, quæ nos jure ac merito venas lymphaticas vocamus.

LU.

paucos ductus & vix uno modo descriptos, RUDBEKIIUM plerosque & eorum valvulas invenisse.

THOMÆ BARTHOLINI D. de lacteis thoracicis in homine & brutis nuper observatis, Hafn. 1652. 4. Excitatus HORNII experimentis, in homine ductum thoracicum vidit, & depinxit. Glandulas lumbales, quæ utique aliquid dant ad receptaculum, pro receptaculo habuit, insertionem insolitam, ab inferioribus sursum, & triplicem depinxit. EJUSDEM vasa dubia de lacteis thoracicis & an hepatis funus immutet methodum medendi, Hafniæ prodierunt 1653. 4. Respondet RIOLANI observationibus. Vasa lactea mammarum describit. EJUSDEM vasa lymphatica nuper in animalibus inventa, Hafn. 1653. 4. edita sunt. Eos ductus, dum inquit in lacteas hepatis, mense Decembri 1651. invenit in hepate, axilla, pelvi. Hic doctam, ut solebat, addidit descriptionem, & cadere inde hepatis officium ad sanguinem coquendum facile vidit. EJUSDEM vasa lymphatica in homine nuper inventa, Hafniæ 1654. Disp. Ea vasa in hepate vidit, eodem anno mense Januario, & fufe de hydropo agit, & eorum obstructione orto. Nomen serosorum vasorum refutat, quod imposuit RUDBEKIUS.

Defensio lacteorum & lymphaticorum & dubiorum anatomicorum contra RIOLANUM, Hafniæ 1655. 4. Erudita est & acris nascentis viri contra senem magna in auctoritate viventem defensio. HARVEIO etiam, ad lactea incredulo, respondet. EJUSDEM spicilegium I. ex vasis lymphaticis ubi Glissonii & Pecqueti sententia expenduntur, Hafniæ 1657. prodierant, 1658. 4. (MERCL.) & in collectione anni 1670. spicilegium II. ubi Baekii, Courvei, & aliorum sententia expenduntur, Amstelodami 1661. 12. editum est cum priori & 1661. 12. * & in eadem collectione recusum. Theorias nuper natas, absque novis experimentis, theoreticus ipse, expendit. EJUSDEM opuscula nova anatomica de lacteis thoracicis & lymphaticis vasis, Hafniæ 1670. 8. edita habent priora, & aliqua alia opuscula, ut examen judicii novi quod de lacteis protulit RIOLANUS, deinde aliqua, quæ infra dicemus, in BILSIUM dicta. In anatome sua BARTHOLINUS varia etiam bona habet, & plurima notatu digna reperiuntur in epistolis a N. STENONIS F. OLAO BORRICHIO aliisque ad BARTHOLINUM datis. Laudem inventi ipse cæterum cum LYSERO communicavit, quo Professore usus est (de vasis lymph. p. 8.)

Filius THOMÆ CASPAR in Libro de diaphragmate fufe de chylo ejusque motu egit. MARTINI BOGDAN Rudbekii insidia structa vasis lymphaticis T. BARTHOLINI, Francof. & Hafniæ 1654. 4. Inanis & cavillator, RUDBEKIIUM durissime habet, qui sibi vasa ferosa tribuat, & ipsi numeros dierum confusos objicit.

M. BOGDANI apologia pro vasis lymphaticis Bartholini adversus insidias secundo structas ab OLAO RUDBEK, Hafniæ 1654. 12. Acerbe & grammaticè adculat noster civis RUDBEKIIUM plagii, quod ridiculum est. Etsi enim prior descriptionem typis edidit BARTHOLINUS, decies tamen plura sunt experimenta RUDBEKII; etsi obrutus eloquentia BARTHOLINI gloria inventi spoliatus est, ut recte monet DETHARDINGIUS. In Præf. negat. BARTHOLINUS, se id Opusculum scripsisse.

Cæterum præter RUDBEKIIUM & BARTHOLINIUM alii etiam sibi inventa lymphatica adrogarunt. Ista JOLIVIO, non aliunde noto, tribuunt Angli bene multi, GUALTHERIUS CHARLETON Exerc. de lymph. PLOT Oxfordshire p. 301. & alii. F. SYLVIVS de le BOE se vasa lymphatica hepatis flava ante 25. annos (1635.) vidisse scribit in Dissertationibus suis. Idem vasa lactea lymphaticis adfinis esse accurate vidit Diff. VIII. n. 12. C. V. SCHNEIDERUS, eruditus cæterum vir, qui in Libro specialissimo de catarrhis sibi idem attribuit inventum, applausum nondum invenit.

TH. BARTHOLINI de lacteis thoracicis &c. opusculum recusum est Lond. 1652. 12. Parisiis 1654. 8. Genev. 1654. 8. Utrecht 1654. 12. Leid. 1654. 12.

EJUS-

LUDOVICUS DE BILS, *Dominus de Koppendam*, nobili stirpe natus, a primis sane ephebis se dedit studio anatomico, & maxime dissectioni animalium vivorum. Sed hoc ejus laudibus obfuit, quod operam neque literis, neque lectioni Auctorum dederat. Edidit anno 1661. & iterum an. 1669. Roterodami Tractatus exiguos *de labyrintho atque ductu suo rorifero dicto*, & dedit figuras æneas, prout molossi vivi anatome ipsi suppeditaverat. Liber ipse est rarus adquisitionem, tamen aliquando invenitur; describit satis bene vasa lymphatica thoracis. Verum BILSIUS putabat ea vasa vehere rorem, & esse originem ductus chyli, & ex his vasis lymphaticis, tanquam centro, per totum corpus & ad ipsas mammas vasa transire, chylum vero per venas recta via ire in sanguinem. Verum deceptus fuit BILSIUS, ut postea demonstratum est.

Alter Auctor, qui bene de lymphaticis scripsit est OLAUS RUDBECKIUS, Suecus Upsaliensis (a). Ejus quatuor Opuscula de vasis lymphaticis habemus. Primum Opusculum est *nova exercitatio anatomica ductus aquaticos hepaticos exhibens tabulis tredecim delineatos*. Sic scripsit titulum, Liber hic est editus Lugduni Batavorum an. 1654. in 12. Alter tractatus, licet eristicus sit, & contra THOMAM BARTHOLINUM unice scriptus, egregius etiam est, & vocatur *Insidia structæ ductibus aquosis hepatis a TH. BARTHOLINO*. Editus est etiam Lugduni Batavorum an. 1654. partim in 8. partim in 12. Tertius Tractatus vocatur, *pro ductibus hepatis contra THOMAM BARTHOLINUM*, etiam Lugduni Batavorum editus an. 1654. in 8. Quartus vocatur *Epistolæ ad THOMAM BARTHOLINUM de vasis serosis*. Ea est omnium optima, Upsaliæ edita an. 1657. in 12. Sunt hi egregii Tractatus, qui raro habentur, in quibus tamen optime scripsit. Sed emendus est Liber dictus *Messis aurea anatomica collecta ab HEMSTERHUYS* in 4. (b) in eo enim Libro illa RUDBECKIANA habentur, ut & BARTHOLINIANA & BILSIANA; atque adeo, si hunc Librum habuerimus, non indigemus opusculis antecedentibus.

Sequi-

EJUSDEM BARTHOLINI est etiam *examen lacteorum contra HARVEIUM & RIOLANUM*. Hafn. 1655.

EJUS *spicilegium* II. primum Hafn. excusum est 1661. 12.

In J. DANIELIS HORSTII *decade observationum & decade epistolarum*, Francos. 1676. 4. aliqua de lymphaticis cordis exstant, tum GUILIELMI HARVEII etiam de *generatione animalium* lacteis contrarii, contra vasa lactea, & pro iis T. BARTHOLINI epistolæ.

CAROLI LE NOBLE *observationes rara & nova de vasis lacteis mesentericis & thoracis*, Rothomagi 1654. 1655. 8. * Paris. 1655. 8. Observationes ductus thoracici & vasorum lacteorum habet, desumptas ex quatuor cadaveribus humanis.

CAR. LE NOBLE l. c. mirum in utramque subclaviam insertum ductum describit, & magnam partem chyli per venas mesentericas ad hepar venire defendit, inque ductu thoracico sæpe limpidum chylum esse monet. Adjecta est epistola RIOLANI, cum falso experimento de venis lacteis per venam portarum inflatis. Non multum chyli per ductum thoracicum adscendere adfirmat.

JAC. ISRAEL *lymphaticorum nuper inventorum observationes*, Heidelberg. 1654. 4. *

(a) Vide supra, p. 447.

(b) *Messis aurea* a SIBOLDO HEMSTERHUYS collecta, Leid. 1654. 12. * Heidelbergæ 1659. 8. continet PECQUETI experimenta cum iconibus absque reliquis dissertationibus: RUDBEKIIUM,

Sequitur THOMAS BARTHOLINUS. Habetur nempe in ejus Libello de *vasis lacteis & lymphaticis* apud *Blaeu*, Amstelodami edito anno 1661. in 8. (a) opusculum quod vocatur *vasa lymphatica nuper Hafnia in homine inventa*; verum quoniam & ille Liber non ita facile prostat, ematur iterum *Messis aurea* HEMSTERHUYSI, nam in eo Libello etiam invenitur.

Legendus porro est princeps in hoc studio GLISSONIUS an. 1654. editus. In eo nempe Tractatu de *Hepate* ad finem habetur Tractatus de *vasis lymphaticis* (b).

Præter

BEKIUM, uti diximus, auctiorem; & BARTHOLINI Libellos de *lacteis thoracicis vasis lymphaticis & dubia de lacteis thoracicis*. Alia collectio de *venis lacteis thoracicis & lymphaticis sylloge*, prodiit Genuæ 1654. 4.

(a) Vide p. 448. 397.

LUDOKICI de *BILS aan de liefhebbers der anatomie*, Roterodami 1659. 4.

EJUSDEM *Epistola qua verus hepatis usus in chylum & ductus chyli ferri usus docetur*, Roterod. 1659. 4. EJ. *vaarachtig gebruik der Gyl' buys*, Roterod. 1658. 4. EJ. *ad epistolam T. ANDRÆ responsio, qua ostenditur verus usus vasorum hactenus pro lymphaticis habitorum*, Marpurg. 1658. 4. *

NICOLAI ZAS *den daan der dieren ende vellen des vaters*, Roterod. 1660. 12. Continet Iconem & theoriam *BILSI*, chylum nempe per venas, vaporem per vasa rorifera (lactea) resorberi, venire ad cor lymphaticum labyrinthum, inde ad alendum per vasa lymphatica ad totum corpus.

J. van HORNE *VVaarschouwing aan alle de liefhebbers der Anatomia*, Leidæ 1660. 4. HOUFFWENIUM ad certamen anatomicum provocasse *BILSIUM*, & alia ad historiam pertinentia refert.

PAULI BARBETTE *aanmerkingen over de schriften van de Bils*, Roterod. 1660. 8. & *tegens de verleyding van de Bils*, ibid. Negat resorptionem chyli in venas, &c.

L. de BILS *kort berigt over de vvaarschouwing van J. van HORNE*, Roterod. 1660. 4. & Lat. 1661. 4. Hic primum celebris ille canis, centies repetitus adparet, quo labyrinthus ductus thoracici exprimitur, quæ mera videtur varietas.

EJUSD. LUD. de *BILS specimina anatomica*, Roterod. 1661. 4. EJUSD. *epistola apologica ad BARTHOLINUM de calumniis L. BILSI in partibus* 1661. 4. *accedit altera responsio contra BARTHOLINUM*. In universum parum utilitatis in omnibus his eristicis reperio. Provocabatur L. de BILS ad certamen, ut ostenderet labyrinthum, & anatomem incruentam, sed nunquam conveniebatur de horis. Roterodamenses amici *BILSI* laudes extollebant, reclamabant alii, Leidenenses inprimis, neque unquam lites potuissent hac ratione componi. Juncta denique *BILSI* opera prodierunt Amstelodami 1692. 4. cum hoc titulo L. de *BILS inventa anatomica antiquo nova cum Clariss. virorum epistolis & testimoniis*, ubi annotationes JOHANNIS ab HORNE & PAULI BARBETTE refutantur, interprete GID. BUENIO.

N. STEPHANI (T. BARTHOLINI) *castigatio epistola maledica BILSI*, Amstel. 1661. 8. & in orationibus *BARTHOLINI* prodiit. Acris utique Professoriorum honorum, contra *BILSIUM*, nobilitati suæ nimium tribuentem, defensio.

N. STEPHANI *castigatio epistola maledica BILSI* primum prodiit Hafn. 1661. 8.

T. BARTHOLINI *Epistola de experimentis anatomicis Bilsii*, Hafn. 1661. 8. Narrat, noluisse oblatam a MOINICHENIO pugnam subire *BILSIUM*.

T. BARTHOLINI addenda est *responsio ad novas observationes Bilsianas*, Hafn. 1661. 8. Belgice Amstel. 1661. 8. *

ANTONIUS EVERARDUS in *monstri anatome*, Medioburg. 1661. 12. vasa lactea, repugnante anatome, ad uterum duxit, nisi lymphatica vidit.

(b) Et ipse omnino & THOMAS WHARTON multa de lacteis in *Adenographia* habet, & de lymphæ & lymphaticis.

N. STE-

Præter hunc Auctorem, de lymphaticis etiam scripsit egregie, præsertim contra BILSIUM, JOHANNES HENRICUS PAULI (a). Titulus est *Anatomes Bilsianæ anatome circa vasa mesaraica, ductus Bilsianos roriferos*, editus Argentorati seu Strasburgi anno 1665. Rara Opuscula sunt, & scripta ea tempore vigente fervore anatomico.

Videndus est pariter Clarissimi FREDERICI RUYSCHII (b), nunquam sane satis laudandi, Liber de *Lymphaticorum vasorum valvulis*. Gloria illi debetur ejus inventionis. Libellus editus est Hagæ Comitum an. 1665. & fuit primum Opus ejus anatomicum.

MAR.

N. STENONIS in *specimine observationum anatomicarum*, Hafn. 1664. 8. & ubique in suis Operibus plurima bona habet de faciei, axillæ aliarumque partium vasis lymphaticis, tum in *Act. Hafn.* II. Obs. 97. & in Libro de *glandulis oris*. In cerebro & plexu Choroideo lymphatica vidisse testis est BARTHOLINUS *Anat. reform.* p. 475.

In *Phil. Transactionibus* pulchra experimenta huc facientia exstant. Ita CL. MUSSGRAVE n. 166. & 275. & CL. LISTER, n. 95. 143. & 270. experimentum descripserunt, quo tinctus liquor ex intestinis in vasa lactea successit.

G. NEEDHAM, n. 85. resorptionem chyli in venas & novum inventum PERRALTI refutavit.

A. de MARCHETTIS cisternam negat, vasa lactea hepatis tribuit, & mesocolo, n. 307.

R. HALE systema lymphaticum late persecutus est, n. 364. Felix expugnator mania, & ex donatoribus Collegii Medici orat. *Harv.* an. 1735.

J. SWAMMERDAM lymphaticorum icones egregias dedit in *BLASIANO* Syntagmate Veslingii, & varia eo pertinentia habet, & in Libro de *respiratione*, & in *prodromo de partibus genitalibus* chylum venis mesentericis resorberi, lacteis vasis lympham ferri adfirmavit. Valvulas tamen minime ignoravit, & in iis Libellis descripsit & depinxit.

(a) J. HENRICI PAULI *Anatomes Bilsianæ anatome*, Argentor. 1665. 8. Non resorberi in venas mesentericas chylum, neque moveri lympham a corde lymphatico ad partes reliquas, & BILSIUM multa nimis ornare in icone sua demonstrat, cui aliam magis naturalem opponit, eruditus disputator.

ANT. DEUSING in *Exercitatione de admiranda anatome BILSII*, Roterod. 1661. 4. suum in eum virum favorem testatus est. Idem *examen anatomie anatomie BILSIANÆ* eddidit, Groning. 1665. 12. Non sua sed aliena adversus J. H. PAULI, ex MOINICHENII confessione, novis publicis aliisque fontibus pro BILSIO & lymphæ motu a corde illo ad partes argumenta attulit.

(b) FRED. RUYSCH *dilucidatio valvularum lymphaticarum*, Hagæ 1665. 8. (MERCLIN), Leid. 1687. 12. etiam Belgice versa a GOD. BIDLOO. Egregius Liber, quo valvulas vasorum & lacteorum & lymphaticorum non solum argumento aliquo, sed subtilissima præparatione exhibet, & BILSIUM, qui nunquam ex eo prælio convaluit, penitus refutat. Cisternam chyli negavit.

L. de BILS *responsio ad L. TOBIÆ ANDREÆ*, Roterod. 1669. 4. Fatetur valvulas lymphaticorum, victus a RUYSCHIO, sed per mediam cavitatem solum fermentum contendit fluere, rorem vero in muscosa fabrica (cellulosa) inter duas tunicas.

CL. DRELINCOURTIUS in *canicidiis* plurima experimenta suscepit, quibus demonstraret, omnino ab intestinis ad ductum thoracicum lac fluere, non contra. De lacteis eorumque ex intestinis ortu etiam observationes habet.

GUALTHERUS NEEDHAM de vasis lymphaticis, & motu vero chyli in Libro de *formatione fetus* scripsit.

R. LOWER plurima de ductu thoracico, ejus valvula, receptaculo, vulnere, & motu, bene & utiliter scripsit in Libro de *corde*.

In *EPHEMERIDIBUS NAT. CUR.* multa huc pertinent.

ELSNER de lymphæ in vasis lacteis visa *Dec. I. ann. 1. Obs. 61.*

Vasa lymphatica thymi *E. N. C. Dec. II. ann. 5. testis ibid. ann. 7.*

MARCELLUS MALPIGHIUS de glandulis conglobatis, & in Operibus posthumis pariter plurima detexit (a).

Tum Clar. NUCKIUS, imprimis in Tractatu de anatomia uteri, & in Adenographia (b) plura de vasis lymphaticis habet.

Hi

Vas lymphaticum princeps Coli SCHELHAMMER E. N. C. Dec. III. ann. 3.

HENNINGERI icon ductus thoracici, Cent. III. IV.

Lactea vasa in recens nato E. N. C. Vol. VIII. 48.

In Opere sæpe citato D. CHAILLOU duo etiam, ut in PECQUETO, receptacula & ductus thoracici describuntur.

In J. de MURALT vade mecum varia de ductu thoracico ex propriis experimentis prostant, & in Obs. XXX. KERKRINGII aliisque.

SAUVAGES des valvules des veines lactées cum anat. GELE'E, Paris. 1683. 8. B. PLATN.*

J. J. WEPFÆRUS vasa lymphatica animalium utero inferi vidit, in venas, ut credit, hypogastricas.

THEOD. KEMPER in Diss. de valvulis olim citata, etiam lacteorum & lymphaticorum valvulas describit.

J. DAN. DORSTENII de ductu thoracico chyliifero Disp. Marpurg. 1678.

In F. SCHRADERI observationibus etiam ductus thoracicus describitur.

GRUBEL de ductu chyliifero Pecquetiano, Jenæ 1674. 4.

J. C. BRUNNER de pancreate fuse de lymphæ agit, & observationes eo pertinentes habet in lymphaticis colli, &c.

GUNT. CHRISTOPH. SCHELHAMMER de lymphæ ortu, Helmstad. 1683. 4. absque experimento proprio. Idem in Delphino, & Xiphia vasa lactea vidit (in physiol. posthum. p. CXXI.) In Diss. de voce lymphatica laryngis describit.

(a) MARCELLUS MALPIGHIUS vasa lymphatica coli, lienis aliorumque viscerum, & glandulas lymphaticas descripsit.

Ductus thoracici mirificam iconem dedit THEODORUS CRAANEN in Libro de homine.

FASCH de circulatione lymphæ & catarrhis, Jenæ 1682. Disp.

J. ZELLER de vasis lymphaticis, Tubing. 1687. 4. & in coll. Disp. T. I. egregia & per plurima experimenta nata.

P. J. HARTMANN in Diss. de vet. perit. anat. spec. II. lymphatica vasa ursi descripsit, & phocæ in ejus animalis anatome.

J. C. PEYER varia ad lymphatica ventriculi & alia eo pertinentia habet in Merycologia.

G. BLASIUS lymphatica in suis operibus passim in rene aliisque visceribus descripsit.

J. G. BERGER de chylo, VVittemb. 1690.

(b) ANTONII NUCK Adenographia & anatome uteri, Leid. 1691. 8. Optime meritis de his vasis, ea per totum corpus, post RUDBECKIUM primus persecutus est, ope microscopii membranarum fabricam demonstravit, singulari artificio usus. Cum eo viro spes integram angiologiam lymphaticam videndi fere exspiravit. Ductum etiam thoracicum ejusque valvulas descripsit, & humana lactea.

JOSEPHUS etiam DUVERNEY integrum vasorum lymphaticorum systema in vacca demonstravit (GEUDER de ferment. p. 123.) sed nihil ea de re edidit.

AME' BOURDON in magnis tabulis vasorum lacteorum & ductus thoracici iconem dedit, vasa pulmonis lymphatica descripsit.

MAURITIUS van REVERHORST in Libro de circulatione chyli lymphatica hepatis habet.

G. BIDLOO in Diss. de hydatidibus modum demonstrat, quo ex vasis lymphaticis inter duas stricturas tumentibus hydatides generentur, & ea vasa ligato ductu thoracico exhibere docuit. IDEM in MYLIANA Diss. cum glandulis conglobatis etiam lymphatica vasa describit.

GUIL. COWPER vasa lymphatica penis, thymi, aliaque per viscera per arterias repleta, depinxit, ductus thoracici ex homine iconem dedit in anthropographia.

H. RIDLEY vasa lymphatica cerebri habet.

J. RI-

Hi sunt, qui de hac re primarii, sed nihil inveniemus, nisi veras lymphaticas,
Zzz quo.

J. JAC. FLARDER de chyli secretione & distributione, Basl. 1690. 4.

S. FANTON lactea humana & brutorum animalium vidit & descripsit.

AL. de MARCHETTIS paradoxa opinio de vasis lacteis in capite, ad testes & alibi visis, & in avibus etiam repertis existat in CAMERARII Ep. Taurin. & apud DES NOUES.

J. B. MORGAGNUS ductum thoracicum, lactea ex homine, vasa lymphatica lienis, pharyngis, uteri humani, pedum in Epistolis & Adversariis variis locis descripsit.

In AC. REG. SCIENT. FARIS. DUVERNEY in anciens Mémoires T. I. varia huc pertinentia habet.

In novis lymphatica hepatis FERREIN 1733.

Vasa lymphatica pulmonis 1734.

C. J. LANG in Gallo Indico, contra anatomicorum opinionem, vas pellucidum, in mesenterio visum, intestina concomitans descripsit (in Physiolog. p. 99.)

J. GOTTSCHED de viis & circulatione chyli, Regiom. 1702. 4. in urso villos lacte plenos vidit.

G. BIDLOO de organis chyli R. EVERTZEN, Leid. 1706. 4. Disp. cum figura ductus thoracici ex BOURDONO.

MART. LISTER de humoribus, de chylo caput habet, quod est XXIII.

J. SIGISM. HENNINGER de chylo, Argentor. 1709. 4.

J. SALZMANN nova encheiresis ductus thoracici, Argentorati 1711. 4. & auctius in nostra Coll. Disp. T. I. Quærare docuit ductum per venas incumbentes venæ renali sinistrae, & nitide depinxit, nisi quod in latere sinistro vertebrarum eum ductum posuerit.

MENH. CARL. EULER de mesenterio, Argent. 1714. 4. & in collect. Disp. T. I. KIESLINGII opera usum esse testatur CL. BEHR physiol. p. 238. Ductum thoracicum replere docet per vasa lactea secundi generis, & depictum dedit.

CL. VIEUSSENS passim vasa lymphatica descripsit, & hepatis pellucida vasa in Tractatu des liqueurs.

ARENT CANT in impetibus anatomicis iconem ductus thoracici ALBINIANAM in thorace integro sculptam dedit, & insertionem recte descendentem expressit.

J. DOMINICUS SANTORINUS aliqua de receptaculo habet, & de lacteis humanis.

L. HEISTER vasa lactea depinxit ex homine in compendio & in Cent. III. IV. E. N. C. coli vero lactea in equo vidit. Cent. V. VI. Ipsi etiam inveniendi in thorace ductus thoracici artificium inventum tribuit C. P. PEPORINUS p. 62.

EDUARD PETER WIUM de via alimentorum & chyli, Hafniæ 1717. 4. & in supplem. nostr. singularem ductus thoracici duplicis iconem dedit, Parisiis paratam.

J. B. BIANCHI in historia hepatica iconem ductus thoracici & lymphaticorum hepatis dedit, satis, vereor, dubiam. Idem vasa lactea medullæ spinalis descripsit.

J. AD. KULMUS ductum thoracicum denuo depinxit, varias insertiones observavit in azygam, &c. BRESLAVIENS. XVI. Versuch.

ABRAHAMUS VATER an. 1722. edidit programma, in quo vasa lactea cum cisterna chyli die duodecimo chylo turgentia demonstravit. (Vit.)

G. D. COSCHWITZ vasa lymphatica circa linguam observavit, tum J. G. DUVERNOI in scriptis de ductu salivali. Ibi & ego vidi, & icones paravi.

BERN. de JUSSIEU & la RIVIERE, Ergo lymphæ suæ ut sanguini propria vasa circuitus, Paris. 1728. 4.

PAOLO GERONIMO BIUMI esamina di alcuni canaletti chiliferi che del fondo del ventricolo per le toniche dell' omento sembrano penetrare nel fegato, Mediol. 1728. 8. Observationem 20. prius annis factam ex memoria repetit CL. AUCTOR, nobis paradoxam. Sed experimenta experimentis unice refutantur.

Vulnera vasorum lymphaticorum observaverunt in artubus NUCKIUS in Experim. Chir. SOLINGEN, HEUCHERUS (p. 317. op.) & J. ADOLPHI de vinculis Chirurg. Ductus thoracici vero R. LOWER, MONROO Edimb. T. V. ZARINI de V. S. COL. de VILLARS Traité des playes p. 49. MAUCHART de inspect. Med. leg. RUTSCH Obs. XLI. &c.

quomodo nempe ad glandulas ferantur, ex iis oriantur, & quæ plura quidem scitu

A. F. WALTHER de *ductu thoracico bipartito* Progr., Lips. 1731. 4. & in *Collect. Disp.* V. I. Lactea in fetu recens edito vidit *DENYS* *amt van de Vroedmeesters en Vroedvrouwen*.

ALEX. MONROO apud *CHESELDENIUM* ductus thoracici descriptionem dedit: & ipse *CHESELDENIUS* ea vasa in thymo vidit, uti *COWPERUS*.

J. G. DUVERNOI pulchram iconem vasorum lymphaticorum artuum abdominis & ductus thoracici, rara felicitate repletorum, dedit in *Actis Petropolit.* T. I. & de ortu lacteorum conjecturas protulit.

J. R. C. GARENGEOT ductus thoracici iconem dedit.

J. G. SCHERB de *calculo receptaculi chyli causa hydropis*, Leid. 1729. 4.

In *Comm. Lit. Nor.* an. 1732. 1736. 1739. observationes exstant huc pertinentes.

Lymphatica ani vidit *AUERBACH* *Diss. de ani procidentia*.

ILL. WINSLOWUS inter alia crassorum intestinorum lactea vidit & *P. C. FABRICIUS* in *Anat. præf.*

J. PALFYN ex *ALBINI* observationibus ductus thoracici iconem exhibuit in *Anatomie chirurgicale*.

CL. IOESCHER in *Observ. ex homine* vasa lymphatica ex homine describit, cisternam negat.

SCHUSTER de *aqua pericardii* 1740. 4. Vasorum lacteorum in homine recens nato observationem habet.

A. PHIL. QUITCH *anatomische nachrichten von der grossen speisefast röhre*, Franc. Viadr. 1740. 4. & in variis tomis *selektorum Francofurtensium* ex homine & animalibus ductus chyliferi icones proposuit, & præparandi modos indicavit.

J. CHRISTOPH. BOHLII *via lactea corporis humani*, Regiomont. 1741. 4. & in *Coll. Disp.* T. I. egregiam dedit descriptionem vasorum lacteorum & thoracicum cum icone. Multas ibi *RUYSCHII* epistolas videas, aliaque lectu dignissima.

J. B. BIANCHI de *lacteorum vasorum positionibus & fabrica*, Turini 1743. 4. *

FR. NIC. NARCISSI de *generatione & receptaculis chyli*, Leid. 1741. 4. & in *Coll. Disp.* T. II. varietates aliquas ductus thoracici cum propriis iconibus dedit, & vasa lactea ampullosa.

HAMPACHER de *tubulor. capillar. &c.* Hall. 1742. 4. Explicat resorptionem chyli in lactea vasa

CONR. HENRICI VELSE de *mutuo intestinorum ingressu*, Leid. 1742. 4. Vasa lactea descripsit, & ductum thoracicum, & varietatum icones dedit.

HENR. PAUL. FUCH de *viis & motu chyli*, Erfurt. 1744. *Disp.*

CL. la PEYRONIE (*Journ. des Savans* 1742.) in rene & pulmone vasa lymphatica invenit.

CL. J. N. LIEBERKUHN originem vasorum lacteorum ex ampulla chylosa villorum intestinalium descripsit in *Tractatu de Villis intestinorum*.

W. CHESELDENIUS etiam lactea humana pinxit, & descripsit, & in *Comm. Bononiensibus* *LEPROTTUS*, & *SCHAARSCHMID* in *Berliner Nachrichten* T. II.

ABRAHAM KAAU passim varia huc pertinentia habet, & possidere se modum demonstrandorum lymphaticorum omnium testatur, in *Libro de perspir. Hipp.*

J. J. HEBENSTREIT de *venis communicantibus* & alibi ductum thoracicum azygæ insertum describit.

CL. FERREIN in *Thes. an actio pulm. temp. expir.* Paris. 1738. 4. describit lymphatica pulmonis.

C. C. SCHMIEDEL de *habitu naturali venarum lymphaticarum in hepate*, Erlang. 1747. 4. cum icone, absque nodulis.

CL. J. F. CASSEBOHM ductum thoracicum in posthumis varie se habentem descripsit, & in *visc. Diss.* da lacteis egit.

Vas lymphaticum a teste ad vesiculas seminales euns sibi visum descripsit *CL. J. H. SCHULZE* in *physiolog.*

scitu necessaria sunt. De arteriis lymphaticis altum ubique silentium est (a).

Zzz 2

Enu-

In *Actis Bononiensibus* lymphatica mesenterii describuntur T. II. P. I. & bilis in lacteis humanis, & in T. III. iter chalybis per venas mesentericas.

CL. TARINUS nuper per arterias mesentericas systema totum lactiferum replevit.

J. FRANC. PARIS *an chylus in canalem thoracicum quasi suctu trahatur tempore inspirationis*, Paris. 1747. 4.

De ductu thoracico ego an. 1741. Dissertationem edidi brevem cum varietatibus nonnullis, quarum longe plurimas theatrum nostrum nunc addidit.

(a) Nunc de sero sanguinis sive lymphæ Auctores aliquos excitabimus, inter quos plerique jam dicti sunt, cum de sanguine ageremus, seorsim tamen aliqui de sero scripserunt.

J. B. HELMONTII huc pertinent *Libelli latex humorum neglectus: catarrhi deliramenta* aliique.

J. THEOD. SCHENK *de sero sanguinis*, Jenæ 1655. Collectio.

GEORG. SEGER *de quidditate lymphæ Bartholiniana*, Hafniæ 1658. 4. Lympham ex spiritibus animalibus generari, &c.

F. SYLVIVS in *Disp. anatomicis*, Amstel. 1663. 12. Lympham acidam facit.

HIERONYMUS BARBATUS *de sanguine & sero serum sanguinis lento igne cogi primus* a GOLZADIO Patavino didicit (quod quidem dudum HARVEIUS viderat *de generat. anim.* p. 161.) Liquida humana ex lymphæ fere omnia generari credit.

J. C. BRUNNER *de pancreate* habet integram *Diff. de lymphæ*. Secretiones in corpore humano plerasque ex lymphæ deducit.

De acido glandularum succo CHRISTIANUS DEMOCRITUS in *Krankheit des animal. lebens* theoriâ renovavit, quam editor versionis Francof. 1736. recusæ refutat.

De lymphæ bona exstat Disputatio JEREMIÆ LOSSII *de languore lymphatico*.

JOH. de SAINCTLO *de sero sanguinis*, Argentor. 1705. Disp.

DE VANDENESSE & URBANI LEAUTE *an lymphæ omnium secretionum mater*, Paris. 1741.

F. QUESNAY in *œconomia* lympham contra sensum receptum vocis a gelatina distinxit. Aliqua etiam in hanc sententiam exstant in T. II. *Acad. Chirurg.*

Analyses lymphæ habent BOYLE *de hist. sang. & frig.* *Art.* VERHEYEN L. II. du HAMEL in *Hist. Acad. Reg. Scient.* MALPIGHIUS in *posthumis* & in *Diff. de Polypo*; VIEUSSENS *Traité des liqueurs*. BAGLIVIVS; LANCISIUS *de Cord. de vesc.* PETIT *Epître II.* LANGRISH. I. C. SCHWENKE I. C. SANDRIS, I. C. BOERHAAVE in *Element. Chémia* & aquas hydropicas (lymphæ nempe speciem) MALPIGHIUS I. C. GMELIN *Comm. Lit. Nor.* 1745. hebdom. 52. du VERNER *Acad. des Sciences* 1701. LITTRE *ibid.* 1707. BOHN *de lethali. vuln.* PETER *de method. anat. Phil. Transf.* n. 472. PINELLI *de podagra*; le THUILLIER in *consilior.* T. III. & aliqua de sero; PECHLIN *Obs.* p. 147. BARTHOLINUS variis locis; BELLINUS *de motu cordis*; LOWER *de corde*; BOHN *de menstruo universali*; LISTER *de cochl.* p. 95. (in succo cochleæ ad copiam feri & pondus specificum; J. TABOR (p. 64. &c.); PETIT *Acad. des Sciences* 1732. 1733. LISTER *de humoribus*; HELVETIUS *éclaircissement*; SYLVA *de V. S.* SAUVAGES *de inflamm.* SENAC *du cœur*, &c.

In chylo aliqua EISSON *de funct. anim.* *Diff.* VII.

Porro de humoribus corporis humani in universum egerunt.

J. FRID. SCHROETER *de omnibus corporis humani humoribus*, Patav. 1582. 4. Omnes omnino considerat, etiam invisibiles, sed ex veterum placitis.

J. LEONH. AGRICOLA *de omnibus corporis humani humoribus*, Lips. 1592. 4. PL.*

ANDR. MÆVIUS *de humoribus corporis humani naturalibus utilibus alimentariis*, Lips. 1628. 4. RIV.

J. THEOD. SCHENK *historia generalis humorum*, Jenæ 1663. 4. Collectio.

CHRISTOPHORI SCHELHAMMER *de corporis humani humoribus*, Jenæ 1652. Disp.

JEAN PASCAL *nouvelle découverte des ferments dans le corps humain*, Paris. 1681. 12. Aliqua bona habet, & fermenta acida viscerum destruit.

CONR. STISSER *de lymphæ ejusque morbis*, Leid. 1688. 4. *

Zzz 2

ADOLPH.

Enúmerandi sequuntur Auctores, qui de singulis partibus scripserunt, quæ viscera vocari nequeunt.

ADOLPH. CHRISTOPH. BENTZ de pituita vitrea insipida, Altdorf. 1690. 4.

FRANCISCI AFFORTY an in homine amarum, salsum, acidum &c. Paril. 1718.

PHIL. CARON Ergo humoribus quibusque sedes eadem & origo, Paril. 1732. 4.

GERH. ANTON. GAYMANS de fluidorum corporis humani natura, usu & recessu, Leid. 1744. 4.

JOSEPHI DEL PAPA de præcipuis humoribus qui in humano corpore reperiuntur, de eorum historia, qualitatibus & officiis, Florent. 1733. 4. Leid. 1736. 4. Propria experimenta vix habet.

J. SILBERLING de humorum corporis humani gravitate specifica, Argentor. 1749. bona disputatio.

Reliqui habentur in Tractatu de sanguine & de secretionibus.

Ad varias præterea partium fluidarum corporis humani analyses paucos Auctores citabo. GALENUS equidem jam dictus est. Ad vires visciditatis humorum SAUVAGES. Ad ossa & carnem FRIDERICUS SLARE Phil. Transf. n. 157. RIVIERE de dentibus fossilibus Acad. Monspel. Extrait de l'Assemblée de 1708. ST. FRANC. GEOFROY Acad. des Sciences 1732. CASP. NEUMAN in opp. omn. p. 1248. J. de GORTER in Chirurgia. J. C. BARCHUSEN post Acroamata. DIONISIUS PAPIN art d'amollir les os quodam modo.

Ad carnem GEOFROY Mémoires de l'Acad. 1710. 1732.

BROWNE LANGRISH l. c. & de motu musculari.

GHIARESCI Giorn. di Parma 1687.

De jure carniū variorum animalium in Comment. Bononiens. II. P. I.

Ad tendines BARCHUSEN post Acroamata.

LANGRISH l. c.

Ad cerebrum VIEUSSENS des liqueurs. HENSING Cerebr. analys. chem. Gieß. 1719. 4.

Ad pinguedinem BARCHUSEN l. c. GRUTEMACHER de ossium medulla.

S E C T I O VII.

C A P U T I.

De Oculo.

PLEMPHII Ophthalmographia, quæ habetur & in operibus ejus, & seorsim edita Lovanii in folio, anno 1659. (a) Egregium certe Opus.

Tum

(a) PRÆCEPTOR ab oculo sejunxit scriptores physiologicos. Id consilium mihi non duxi imitandum, ne labor meus absque utilitate lectoris cresceret. Quo magis enim conjunctæ distrahuntur materiæ, eo difficilius scriptoris officium est.

Inter HIPPOCRATICOS Liber est περί ὀφθαλμοῦ, spurius equidem & chirurgicus, celebris tamen ob primum vestigium rationis palpebræ.

HEROPHILIUS subtiliorem anatomen oculi primus adgressus est, ut adparet ex quibusdam apud GALENUM conservatis fragmentis.

IDEM GALENUM L. X. de utilitate partium oculi anatomen habet, & puncta & ductus lacrumales.

EJUSD. exstat spurius de anatome oculorum Liber, & in Libro VII. de Hipp. & Plat. desrer. c. 5. 6. varia ORIBASII, quæ de oculo habet, bono ordine scripta sunt, neque absque curiositate.

Cæterum VETERES & theoriam visionis non bonam secuti sunt, quæ sedem hujus sensus in lente crystallina ponit, & in simplicioribus atque cognitu facilioribus substituerunt.

Leva.

Levatores palpebræ (p. 13.) non ignoravit *AVICENNA*, nec ductus ad nares Lib. III. *Fen. V. Tr. I. c. 2.* Et ipse & Arabes omnes motum Iridis cognitum habuerunt.

Inter Arabes huc pertinenti *JESU HALI de oculis*, & *CANAMUSALI de BALDACH de oculis*, qui sæpe cum collectione chirurgorum prodierunt. Mea editio est Venet. 1499. fol. Uterque autem proprie ad medicos pertinet & chirurgos.

Seculo 13. exeunte, circa annum 1280. aut 1295. (*MANNI* p. 73.) inventa sunt conspici- cilla. Auctorem habent *SALUSNUM de ALMATIS*, secundum *DOM. MARIAM MANNI* in *Opusc. Scientif. T. IV.* & in proprio Libello *degli occhiali da naso* edito Florent. 1738. 4. ubi pro teste producit hujus Viri epitaphium p. 65. Nam *ALEXANDER de SPINA* quem *REDUS* in Epistola ad *CAROLUM DATUM*, Florent. 1678. 4. pro inventore pro- posuerat, ea vitra inventa ab alio unice ex ingenio suo imitatus est, ut ex alia *REDI* epistola adparet. In Libro supposititio *EROTIS* Magister *GERALDUS* citatur, qui spe- cillis vitreis usus fuerit, & legerit litteras minutissimas. Pro myopibus vero perspicilla minutas litteras reddentia adhibuit *C. GESNER Epist. p. 136. b.* & observavit, constan- tes esse myopum oculos, neque ætate lædi.

* *BENEVENTUS GRARSUS de oculis eorumque agitudinibus & curis*, Venet. 1500. 4.

J. CARPUS puncta lacrumalia habet, & pinguedinem, quæ tarsum humectet (*Isag. p. 58. b.*) quo nomine videtur glandulam lacrumalem ipsosque forte ductus intelligere.

ANDREAS VESALIUS oculos animalium unice secuit, unde multiplex confusio, & musculus septimus provenit, quem ne monitus quidem in *Examine Observ. Fallopii Ob- 126.*) deferere voluit. Musculos tamen oculi a dura membrana deduxit, porum nervi optici negavit, argumentum attulit, ut doceret eos nervos non ad alternos oculos venire. p. 518.

GABRIEL CUNEUS glaucum colorem a capsula lentis mutata fieri posse, aut a lente sic- cata ex senio, monuit in *Apologia pro VESALIO* p. 42.

GUILLIELMO RONDELET trochleam oculi inventam tribuit *RIOLANUS* in *SPIGELIUM* P. 740.

* *SIMON PORTII* Lid. *de coloribus oculorum*, Florent. 1551. 4.

J. FRANCISCI *de oculorum fabrica & coloribus carmen*, VVitemb. 1556. 8.

REALDUS COLUMBUS innominatam membranam, ex coalescentibus musculorum tendi- nibus factam, sibi tribuit, musculos mirifice descripsit.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS subtiliter oculum dissecuit, ut ex Tabula XL. adpa- ret, ubi expressit vasa choroideæ & retinæ, & punctum centrale nervi optici, & circu- lum album choroideæ ex quo ea membrana provenit. Musculos etiam a membrana, qui- dem nervi optici ortos, in T. XXXIX. recte exprimit, ut *VESALIUM*, ut videtur corri- gat. Neque aut trochleam, aut levatores palpebræ, ignoravit, quem ipse *VESALIUS EU- STACHIO* tribuit, cum ait, Romana se diligentia excitatum eum musculum reperisse *E- xam. obs. Fall. p. 48.* Nervos, quos T. XVIII. proposuit, alibi laudavi. Fabricam nervi optici ex lamellis factam in pisce brevissime descripsit.

GABRIEL FALLOPIUS in eo felicior fuit *BARTHOLOMÆO*, quod ipsi contigerit suas observationes edere. In iis ergo palpebræ levatores, & musculorum veras origines & in- sertiones, & puncta lacrumalia, indeque ad nares patentes vias proponit, quæ ab eo vi- dentur repetisse *TAGLIACOTIUS*, *FRANCO (de herniis)* p. 227. *GUILLEMEAU de oculo- rum morbis* L. VII. c. 4. & alii. Sed inversum iter lacrumarum docuit *FALLOPIUS*.

VIDUS VIDIUS, discipulus *FALLOPII*, cartilaginis (p. 76.) nomine palpebram ter- tiam *MORGAGNIANAM* descripsit, & trochleam primus, ni fallor, depinxit, & palpe- bræ levatores.

J. BAPT. DOLÆ in *anatomien oculorum humanorum tabula a GAL. &c. collecta*, Bonon. 1568. fol. *

CONSTANTIUS VAROLIUS de nervis opticiis in *Neurologicis* laudatus est.

J. C. ARANTIUS sibi inventum an. 1548. levatores palpebræ tribuit.

J. B. CARCANUS in L. *anatomicorum* II. quo de *musculis palpebrarum & oculorum* dis- feritur, Turin. 1574. 8. describit musculum orbicularem palpebræ, & levatores & tro- chleam, & passim *VESALIUM*, *COLUMBUM*, *FALLOPIUM* etiam corrigit. Glandulam la- crumalem humiditatem generare observat, puncta lacrumalia describit, & meatus cocun- tes, & viam ad nares.

FRIDERICI PETRI doctrina de oculo & modo visionis reperita & illustrata, Lips. 1576. 8. (BL. LEHM. & RIV.)*

FELIX PLATER primus, cujus nomen mihi notum sit, veram utilitatem retinæ adse-ruit, & sedem visionis esse confirmavit, abrogata lentis dignitate. Sed **VESALII** jam tem-pore aliqui fuerunt, qui organum visus in retina ponerent, etsi id minime placeat **VE-SALIO** p. 517. 806.

GEORGII BARTISCH augendienst, Dresdæ 1583, fol. & alias. Figuras & anatomen ocu-li habet, pro seculi genio.

SALOMON ALBERTI in Diss. de lacrumis quæ exstat cum orationibus VVittembergæ 1590. 8. excusis, & recusa in meis Diss. vol. IV. multa accuratius docuit de punctis la-crumalibus, eorum helicibus in sinum communem euntibus, via ad nares crassiorē par-tem lacrumarum deducēte.

NIC. PRÆTORII determinatio phil. med. de visu, visus organo & ejusdem nocuentis, sus-fusione maxime & curatione ejus dogmatica, Basil. 1590. 4.*

JULIUS CASSERIUS glandulas, quæ vulgo dicuntur a **MEIBOMIO**, in iconibus oculi depinxit, membranam **COLUMBI** innominatam refutavit, de oculo, utinotum, integrum in *pentasthesyo* librum scripsit.

ANDRÆ LAURENTII discours de la conservation & de l'excellence de vue, Rotomagi 1615. 12. (WOOLH.) recusatus ab **ÆMILIO PARISANO** cum adjecto seraceo sive observa-tionibus criticis, Venet. 1638. fol. **PARISANUS** ibi docet humores oculorum excremen-ta esse, visionem fieri radiorum emissionē, &c. Prodiit etiam **LAURENTII** opus Anglice 1599. Londini.*

Citatum **LAURENTII** opus prodiit Monachii 1618. 12. versum a **J. THEOD. SCHOEN-LINO** cum titulo discursus de nobilitate visus ejusque per diatam & medicamenta conservan-di vera methodo. RIV. Anglice autem anno quem diximus, prodiit cum titulo of the pre-servation of sight. AMES.

J. B. PORTA a **BARTOLO** de sono p. 88. **FABRO** ad **HERNANDEZ** p. 473. aliisque ha-betur pro auctore telescopiorum, neque casu, sed per philosophica tentamina inventorum. **FRIDERICUS CÆSIUS**, & **JOH. FABER** pariter Lyncei, ille telescopii nomen, hic mi-croscopii invenit (ad **HERNANDEZ** p. 473. 474.)

J. B. CORTESIUS apud **ALDROVANDUM** in Ornithol. I. p. 226. habet in aquila ossifra-ga membranam nictitantem, & præterea uveæ membranam tenuissimam & pellucidissimam, rudimentum, ni fallor, membranæ pupillaris.

HIERONYMUS FABRICIUS ab **AQUAPENDENTE** de visione, voce, auditu, Venetiis 1600. fol. (DOUGL.) Francof. 1614. fol. cum iconibus. In oculis nihil, quod nunc oc-currat, invenit.

LÆLI a **FONTE** de modo visionis, Francof. 1609. 8.*

* **JACOBI SCHALLINGII** ophthalmographia, Francof. 1615. fol.

JACOBI SCHALLINGII l. c. prodiit etiam Erfurt. 1615. fol. Auctor de secta roseæ crucis fuit, mirus homo, anatomen etiam cum iconibus **VESALII** & usum partium tradidit.

JOH. KEPLERI in Paralipomenis ad Vitellionem Opus, in quo visionis modus & humo-rum oculi usus contra vulgares opticos & anatomicos defendit, Francofurti prodiit, 4. 1604. Post **PLATERUM** veritatem suscitavit, in retina nempe pingi, tamquam in char-ta, objectum visionis, crystallinum autem corpus lentis convexæ munere fungi. **IDEM** scripsit *Dioptricam*, quæ prodiit Augustæ Vindelic. 1611. 4. **WOLFIO** teste, & alias, nam editionem legi Londinensem 1653. 8. quæ cum **GASSENDI** *Astronomia* prodiit. Ad na-turam presbyopiæ & myopiæ, viresque refractiles humorum propius accessit, focus len-tis definivit, oculum mutabilem esse a priori ostendit, processus ciliares retinam a lente remove ostendit.

J. KEPLERI *Dioptrica* prodiit etiam Lond. 1683. 8. quæ mea est editio.

CHRISTOPHORI SCHEINER Oculus sive instrumentum opticum ... quo ex oculi anatome radius visualis eruitur, sua visione in oculo sedes decernitur, anguli visorii ingenium ape-ritur, Oenipont. 1619. 4. Pulcherrimo Libro **KEPLERI** vestigiis institit, sedem visionis in lente, & cataractæ in capsula lentis fixit, presbyopiæ & myopiæ causas a lentis figura & situ deduxit, refractiones definiit, anatomen etiam oculi, præter Geometrica, dedit. Mutabilem

natu-

naturam oculi in figura & situ lentis IDEM evicit . Unicum uno tempore objectum adparere minime ignoravit . Experimento , nunc notiori , docuit , pingi in retina imaginem .

JOH. MANELPHI de fletu & lacrumis , Romæ 1617.

J. THEODORI SCHONLIN de visus nobilitate & conservandi modo , Monachii 1618. 16. *

J. SARDI GUIGONII P. de oculo I. Autopsiologia , Turin. 1619. * (TAYL.)

G. F. HILDANUS inter primos , si aliqui vetustiores sunt , oculum artificialem descripsit Epist. XVIII.

JACOBI CARANTA de natura visionis , Savigliani 1623. 4. ad Platonis sensum emissionem visum fieri contendit.

J. B. RUSCHI de visus organo , Pisis 1631. 4. *

MARTINI HORTENSII oratio de oculo , Amstel. 1635. 4.

DANIEL MULLER theoria duorum interiorum sensuum visus & auditus specialis , Lips. 1638. (B. RIV.) *

FELICIS PLATERI puto junioris , theoria visus Basil. 1639. 4.

J. DANIEL HORST de oculo , Marpurg. 1641. 4.

P. M. SLEGEL ophthalmographia , Jenæ 1640. 4. (B. RIV.) *

J. B. HODIERNÆ dell'occhio della mosca , Panormi 1644. 4. Microscopica contemplatio multiplicium in insectis cornearum.

JOH. MICHAELII de oculi fabrica & usu , Leid. 1649. 8. Visionem in lente , sed magis tamen in ventriculo anteriori cerebri fieri docet.

RENATI DESCARTES in Dioptrica , & de meteoris , variis annis excuso libro ad mutationes oculi , refractoriam vim lentis , oculi functionem varia attulit.

JOH. RIOLANUS aliqua hic auxit , orbicularem palpebrarum , ut nuper JACOBUS PARSONS , in tres musculos divisit , carunculam lacrumalem a glandula vera separavit , &c.

NICOLAUM a PEIRESC ex vita adparet varia de visione experimenta instituisse , mensuras cepisse convexitatis lentis in variis animalibus , propria manu multos oculos secuisse . Ibi etiam GASSENDI exstat opinio , quæ multis placuit , uno nempe oculo nos videre , qui inter duos melior esset .

ATHAN. KIRCHER ars magna lucis & umbra , Rom. 1646. fol.

VOPISCI FORTUNATI PLEMPPII ophthalmographia , Amstelod. 1632. 4. Lovan. 1638. & 1648. fol. & 1659. fol. Huic editioni GUTSCHOVII animadversiones accesserunt . Etsi annos demum 18. natus scripserit eum librum (p. 281.) minime tamen inglorium edidit , etsi minus anatomicus sit . Multum usus est KEPLERO & SCHEINERO .

THOMÆ BARTHOLINI de luce animalium L. III. Leid. 1647. 8. & Hafn. 1669. 8.

PETRI BORELLI de vero inventore telescopii & centum observationes microscopica . Hagæ 1655. 4.

CONR. VICTOR. SCHNEIDER Disp. de lacrymis , VVittemb. 1656. 4.

J. THOMASII de visu talparum Disp. Lips. 1659. 4. Altemburg. 1671. 4.

PETRI PETITI de lacrymis . Paris. 1661. 8.

MAUR. HOFMAN Disp. de lacrymis , Altdorf. 1662. 4.

ROB. BOYLE de coloribus , Londin. 1665. 8. Laudavi inter physicos scriptores . Hic aliqua habet etiam nostri fori , tum ad chemiam , ubi ex colorum mutationibus sales definit , tum ad physiologiam , ubi refert exemplum viri , qui tactu colores distinguebat , &c. IDEM in app. ad Librum de causis finalibus habet observationes de morbis oculorum , visione nocturna , visione absque lente crystallina , visione quæ uno oculo fit , visu cum oculo immobili , visione in tenebris , oculo felis : In Libro de frigore oculum bovis coagulatum & humores in eo coactos descripsit .

ROB. HOOKE in micrographia oculos muscarum earumque vires , fabricamque , & araneorum oculos ; aquæ , & spiritus vini vires refringentes habet : in experimentis antiquitates vitrorum , in posthumis fabricam oculi , vires confringentes corneæ , olei terebinthinæ , spiritus vini , aquæ , picturam in oculo artificiali , minimum angulum visibilem , lucis naturam , &c. pro suo , quo pollebat , acumine determinavit .

HONORATI FABRI Synopsis optica , Lugduni 1667. 4. & in Tractatu de homine legi meretur .

J. DAN. MAJOR oculi declaratio anatomica . Kiel. 1667. 4.

J. B. GRIMALDI *Physico-mathesis de lumine, coloribus & iride*, Bonon. 1666. 4. jam laudavimus in physicis.

GUERNERUS ROSENFINK in *Dissertationibus suis anatomicis* ipsam lentem deprimi in morbis, nervos opticos suum latus adire observavit, non alternum. CL. QUARRE lentis incrassationem eo tempore primum introduxerat (BARTHOLIN. apud SCULTETUM p. 63.) Alii inventum tribuunt D. LANIER, & in *histoire de la Chirurgie* legimus p. 204. thesin ejus viri exstare publice defensam *an crystallino visio an transfixo fiat meatu*. Annum ignoro.

J. THEOD. SCHENK *Ophthalmographia*, Jen. 1667. 4. (B. RIV.)

HENRICI POWER *Experimental Physic*. Lond. 1664. 4. habet varia de oculis cochlearum, insectorum, congelatione oculi, lentis nucleo.

In *Philosophicis Transact.*

N. 37. 39. 40. Visus senilis ope tuborum nigrorum restitutus: de myopia, &c.

N. 37. 373. 381. 284. Cataractæ in lente crystallina exempla.

N. 108. 117. contra porum opticum ANTONII van LEEUWENHOECK *Obs.* & EJUSD. n. 108. de humore aqueo, lente, cornea.

N. 147. 159. 166. G. BRIGGS de visione.

N. 164. TUBERVILLE *Obs.* de oculis.

N. 165. de lentis fabrica.

N. 205. de focus vitrorum omnis generis EDMUNDI HALLET.

N. 240. de oculis cantharidum.

N. 273. LEEUWENHOECKII de microscopiis.

N. 284. tres oculi minores muscarum.

N. 390. oculus Opossi, qui sole alto minus videt.

N. 293. fabrica lentis in balæna LEEUWENHOECK.

N. 322. Vasa corneæ.

N. 325. ADAMS de microscopiis.

N. 448. &c. experimenta pro NEWTONO J. TH. DESAGUL.

N. 361. Telescopia unici vitri pro myopibus DESAGUL.

N. 399. Cataractæ membranaceæ exemplum.

N. 412. CHESELDEN de visu in juvene, cui cæco nato cataracta deposita fuerat.

N. 437. de ductibus lacrumalibus CL. HUNDAULD.

N. 456. de lentibus microscopicis LEEUWENHOECKII. Sed vis earum nimis parva ponitur.

N. 476. de concavitatibus & convexitatibus e microscopio inversis.

NIC. STENONIS filius meatus glandulæ innominatæ invenit anno 1661. (BARTH. Ep. III. n. 85.) quos *Amstelodamensi* ex bove descripserunt. IDEM ductus lacrumales bene descripsit, quos etiam habet BORRICHIIUS de *hermet. medicina*, & humorem aqueum in lamellis corneæ contentum (*de musc. & gland.*), & vorticosa vasa Choroideæ.

HENRICUS MEIBOM in *Epistola de vasis palpebrarum novis*, Helmstad. 1666. 4. invenit, aut certe constituit, glandulas & ductus sebaceos palpebrarum. Iter lacrumarum, inversum a FALLOPIO, emendavit.

EDMUNDUS MARIOTTE anno 1668. 4. edidit *nouvelles découvertes sur la vue*, recusas in *anciens Mémoires* 1669. p. 102. & Paris. 1682. 4. cum epistolis PERRALTI & PECQUETI, & responsionibus MARIOTTI. Experimento ingenioso conatus est ostendere reveracæcam esse retinam, atque in choroidea sensum visus exerceri, id experimentum a D. PICARD paulum mutatum est fine eodem.

JOSEPHI BURRHI de *artificio humores oculi restituendi*, Hafniæ 1669. 4. Mirus homo, Alchemista, sed absque vera peritia. profugus, quod ex Maria virgine DIVINIS personis quaternitatem faceret (DEUSING. *append. ad nutrit. elaborat.* p. 355.) nescio quo arcano, ex Chelidonio composito, humores oculi, & in junioribus ipsam etiam lentem restituere suscepit, & magno cum plausu artificium exercuit, donec a F. REDO aliisque demonstratum est, humores oculi absque ulla Medici arte sponte renasci.

Sectæ & novi ordinis caput fuit, a Viennensibus traditus Pontifici in carcere Castelli Sancti Angeli mortuus est, ut tamen ei usus laboratorii permitteretur. CONNOR *descr. Polon.*

Polon. I. pag. 139. Cæterum contra BURRHUUM scripsit J. DAN. MAJOR *considerationem physiologicam occurrentium in duabus epistolis BURRHI*, Kiel. 1669. 4. non valde inutilem.

ANTONII MOLINETTI *Dissertatio anatomico physica de sensibus*, Patav. 1669. 4. Pleraque hic de oculo sunt. Retinæ adduci lentem a musculis externis, removeri a processibus ciliaribus: lentis circumferentiis ellipticas esse docet. Musculum peculiarem, internum trochleæ a FRANCISCO BALDUINO demonstratum habet, repetitum ab ALBINO. In *Dissertationibus anat. pathologicis* iconem etiam oculi dedit, & de eo organo fuse egit, atque eum musculum omisit.

J. OTT. *cogitationes physico-mechanicae de natura visionis*, Heidelberg. 1670. item *de propriorum oculorum defectibus ad leges mechanicas revocatis*, Basil. 1671. 4. Promittit potius.

F. A. BORELLI in *oss. intorno alla virtù ineguale degli occhi* GIORN. de' LETTER. apud TINASSIUM ed. p. 1669. p. 11. oculos demonstravit plerumque inæquales esse, ut alter distinctiora & majora objecta videat. Præfert sinistrum. Eum autem acutius videre certum est. Nempe minus callosus est, cum dextro utamur.

P. de GOTTYGNIES in *codem Diario* p. 139. 140. negat pulchros illos oculos insectorum esse veros oculos, habere enim alios, duos, quos in cimice campestri describit.

In B. N. C. Dec. II. Ann. REISELIUS de multiplici cornea. Observationes habet & varia alia in eo *Diario* latent.

PAULI MANFREDI *novæ observationes circa uveam oculi & aurem*, Romæ 1674. 4. * & in MANGETI *Bibliotheca anatomica*.

IS. BARROW *lectiones opticae, & geometricae* Cantabr. 1674. 4. In physicis laudatur.

GUILIELMI BRIGGS *ophthalmographia, sive visionis theoria*, Cantabrig. 1676. 12. Londini 1685. 8. & alibi. Princeps institutum auctoris est, ostendere cur visus in duobus oculis simplex sit: nempe chordas in nervo optico alias longiores, alias breviores, adeoque diverso modo tensas esse, ut aliquæ cum aliquibus in utroque oculo consentiant, dissentiant aliæ. Tunc ergo unum objectum adparere quando id objectum in fibris homologis utriusque oculi pingitur.

J. VALENT. SCHEID *de visu vitiat*, Argentor. 1677. 4. Erudita Diff. EJUSDEM *de visu* Disp. alia, Argentor. 1684. 4.

MARCI MAPPI *de oculi humani partibus & usu*, Argentor. 1677. 4.

P. CHERUBIN *la vision parfaite*, Parisiis 1677. fol. Fuse negavit, contra GASSENDUM, hominem uno oculo in videndo uti. IDEM in *dioptrique oculaire*, Parisiis 1681. cum priori operi opere excusa varia habet non abs re v. gr. non in unum punctum imaginem retinæ radios coire, corneæ refractionem esse tandem, quæ aquæ, uti per experimentum invenerit.

J. B. VERLE *anatomia artificialis oculi humani*, Florentiæ 1679. 12. (*Journal des Savans*.) Amstelodami 1680. 12. Describit oculum vero similem ex vitro, ebore, & membranis factum.

DAN. B. SCHERERS *beschreibung eines kunst-anges*, Nuremberg. 1680. 4. *

SEBASTIEN le CLERC *discours touchant le point dans lequel il est prouvé que les choses qu'on voit distinctement ne sont vues que d'un œil*, Paris. 1679. 12. Celeberrimus sculptor ostendit nos unico oculo videre, cum alioquin in speculo imago sub diversis angulis deberet duobus oculis incidere, neque adeo in puncta correspondentia incidere, neque simile objectum adparere. Neque posse nos ita videre demonstrat, ut unus axis opticus sit alterius director, neque ullum radiorum in oculis penicillum admittit, &c.

A. M. nempe ALLEN MOULIN *anatomical description of the elephant burnd at Dublin together with a relation of new anatomical observations in the eyes of animals*, Lond. 1682. Describit ex bove ligamenta peculiariora oculi in media sclerotica orta, & in corneam inferta, quæ pupillam dilatare, lentem retrorsum versus retinam pellere possent.

ALLEN MOULIN l. c. vasa a sclerotica in choroideam hinc in vitreum humorem & lentem euntia describit.

In JOURNAL DES SAVANS. Observations extant P. la HIRE an. 1678. (& in *Anciens Mémoires* T. X. p. 610.) An. 1680. Abbas CATALAN tres oculos insectorum minores descripsit. An. 1681. Libellæ oculi describuntur. Ibid. an. 1684. MERRY in fele submersa viva retinæ vasa vidit (& in *Anciens Mémoires* X. p. 656.) An. 1685. exstat methodus, qua oculorum

Tum NUCKII observationes de *Ductibus aquosis & humoribus oculi*, Lugd. Batavorum editæ 1686. in 12. (a).

Tum

bonitas aut myopiæ & presbyopiæ gradus inveniri potest. An. 1689. Monachus tres oculos inspectorum CATALANI negat.

GUENELLON in *nouvelles de la République des Lettres* 1686. glandulas & ductus adnatæ piscium, cellulositatem humoris vitrei, membranam inter choroideam & retinam, quæ impedit omnem a retina ad choroideam radiorum commutationem, contra systema MARIOTTI valide pugnantem, fibras radiatas retinæ, & alia utilia descripsit.

P. ANGO *l'optique divisée en trois livres*, Paris. 1682. 12. Pro retina in choroideam dixit. *

J. DUVERNEY in *Journal de Médecine* 1686. glandulam lacrimalem inferiorem ex homine relegat ad animalia, quibus tres palpebræ sunt: Idem in *Anc. Mém.* X. musculos palpebrarum satis peculiariter describit.

AUG. QUIR. RIVINI de visu, Lips. 1686. 4. fig. EJUSDEM an emittendo an recipiendo fiat visio 1675. *

ANT. le MOINE an visionis primarium instrumentum retina, Paris. 1681. 4. PL.

ANTONII le MOINE & EMMERETZ, Ergo visionis primarium instrumentum est retina, Paris. 1681. fol.

F. JOH. ZAHN oculus artificialis teledioptricus, Herbipoli 1685. fol. 2. vol.

P. PERRAULT du mouvement des yeux quod est inter *essays de physique* T. IV. oculos immobiles esse contendit. Alibi in *Mécanique des Animaux* oculos avium & palpebram tertiam descripsit mobilem. In epistola contra MARIOTTI opinionem adtigat, qua ad arteriolam centralem nervi optici experimenti MARIOTTIANI conatus refertur.

SAM. COLLINS ad nervos opticos in animalibus decussatos & non decussatos omnino legi debet.

(a) ANTONII NUCK de *vasis aquosis oculi*, Leidæ 1685. & *ductuum aquosorum anatome nova* cum sialographia edita an. 1690. 8. Ductus ex Carotide ortos, secernentes humorem aqueum describit, & in posteriori Libello defendit.

J. DAN. DORSTENII de oculo, Marburg. 1687. 4.

J. H. MEIBOM de fluxu humorum ad oculos naturali & præternaturali, Helmst. 1687. 4.

J. DAN. MAJOR de oculo humano Chamæleontis & aliorum animalium, Kiel. 1690. *

ANDR. PETERMANNI de visu, Lips. 1690. 4. * (B. RIV.)

ZACHARIÆ TRABER nervus opticus, Vienn. 1690. fol. nempe optica, catoptrica & dioptrica, & oculi brevem fabricam.

WARNER CHROUET de trium humorum oculi origine, formatione & nutritione Ed. II. Leodii 1691. 12. Ductus aquosos NUCKII arterias esse, & docet, & defendit contra posteriorem NUCKII Libellum. Multa præterea utiliter vidit, cellulosam fabricam humoris vitrei, analyses lentis & humoris aquei, membranam, quæ iridem claudit, in catulis recens natis vidit.

Contra CHROUETUM equidem defensionem ductuum aquosorum, Leidæ 1691. 8. edidit NUCHIUS, cum solutionum apologeticarum (CHROUETI) eversione per M. van REVENHORST. Sed ea theoria nunc exolevit.

In BERNARDINI GENGA anatome chirurgica describitur musculus peculiaris depressor palpebræ.

J. N. PECHLIN in obs. 33. L. II. vidit ex cæcis lentes opacatas gypseas extractas fuisse.

P. VERHEYEN oculis gelatis ad humores exprimendos usus est apud PALFYN *anat. Chirur.* Ed. II. p. 392.

G. W. WEDEL de nyctalopia, Jen. 1693. 4. observationes habet etiam proprias.

PHIL. de la HIRE de divers accidens de la vue, Paris. 1694. fol. Etsi oculum immutabilem faciat, hætenus a nostra opinione alienus plurima tamen pulcherrima habet de myopia, presbyopia, ejusque causis, de mensura virium oculi, de judicanda distantia.

P. de la HIRE l. c. prodiit recusis nuper cum *Mémoires de l'Acad. avant le renouvellement*.

C. HU-

Tum Clarissimus HOVIUS in dissertatione inaugurali Ultrajecti habita de o-

A a a a. 2

culo

C. HUGENIUM de la lumiere laudavi in physicis, hic imprimis repetendum.

G. COWPER oculorum musculos & in priori & in posteriori myologia depictos dedit, in officia noviter inquisivit.

G. BIDLOO in magna anatome processus ciliares aliasque oculi partes pinxit. In Libro de oculis, Leidæ 1715. 4. anatomen comparatam oculorum animalium, & talpæ, & insectorum habet.

MARCELLUS MALPIGHIVS in Libro de cerebro dixit de fasciculis medullaribus nervi optici, in posthumis imaginis in retina depictionem descripsit.

Glandula nova lacrumalis HARDERII ex cervo describitur in A. E. 1694. n. 2. Eam HEUCHERUS etiam habet & HORSTIO tribuit; tum J. M. HOFMANNUS, cum ductu excretorio circa initium membranæ nictitantis aperto *Idea mech. hum.* p. 268.

NICOLAI HARTSOEKER omnino laudabilis dioptrica anno 1694. 4. Parisi prodiit, cum observationibus microscopicis.

J. C. STURM de visionis organo & ratione genuina, Altdorf. 1676. 4. PL. E J. oculus theoscopus 1678. EJUSDEM vergeminum par problematum de sensu unius geminato, Altd. 1686. 4.* de loco imaginum a speculo repræsentatarum 1693. de presbyopibus & myopibus 1697. 4. de sensu visionis nobilissimo, Altd. 1699. 4. Multa utilia habet de loco imaginis visæ, de motu, magnitudine, figura. In Diss. de oculi comparatione cum camera obscura aliqua de motu ligamentorum ciliarium habet, de imagine in retinam incidente.

WOLFG. ERN. WAGNER de oculo, Altd. 1698. 4.

WOLFG. ERN. WAGNER de oculo delicatissimo machinæ humanæ organo, Altdorf. 1698. Disp.

J. MERY in Journ. de Med. 1697. in caruncula lacrumali multas parvas glandulas cum ductibus secretoriis detexit.

In Journ. des Sav. 1699. bursa lentis crystallinæ avium describitur. (& in dissectionibus animalium).

BAYLEUS in suo corpore animato mutationem oculi pro objectis varie distantibus ex machina pro oculo artificiali inserviente demonstrat. Musculos corneam convexionem facere credit.

In Mémoires de l'Académie des Sciences huc pertinent

In Anciens Mémoires tapetum sive membrana Ruyschiana in Leone, palpebra avium tertia. Bursa uti diximus.

In recentioris Acad. Monumentis an. 1699. MARIOTTE de coloribus post visum solem apparentibus.

1704. & 1710. MERY de iride.

1706. De lente crystallina.

La HIRE de oculi immutabili indole.

1707. La HIRE de refractione vitri.

1708. La HIRE optica & de visu.

1709. IDEM contra MARIOTTUM.

1711. MERY de organo visus & nervi optici fabrica & 1712. de iride felis sub aqua mersæ denuo. An. 1713. EJUSDEM observationes de cataracta, experimenta in nervo optico, obff. de glandulis in circumferentia exteriori iridis.

J. B. WINSLOW de musculis oculi & iride 1721.

1722. MORAND de duobus generibus cataractæ.

J. L. PETIT de cornea 1722. mensura camerarum oculi 1723. EJUSDEM anno 1725. obff. de cataracta. An. 1726. descriptio oculi hominis & animalium nonnullorum, de adnata, de cornea obff. An. 1727. EJUSDEM de oculorum cum nervo intercostali nexu, de visu infantum, ganglio ophthalmico. An. 1728. de oculorum fabrica, cornea, &c. musculis. An. 1730. de lente crystallina. An. 1735. de oculo galli Calecutici. An. 1737. de oculis testudinis.

J. L. PETIT de lacrumarum resorptione & viis.

1738. & 1741. FERREIN de vasis lymphaticis uveæ. Contra ea in lettre sur la formation de la

de la voix monet BERTINUS, quæ citabitur dudum nota fuisse, sed respondet in epistola D. MONTAGNANT.

1739. LE CAT de oculo observationes.

1741. DES MOURS de fabrica cellulari humoris vitrei, de cornea.

1743. BUFFON de causa strabismi, de coloribus accidentalibus qui ante oculos versantur.

LAUR. ROBERG in Diss. de inventis anatomicis recentiorum & eorum in medicina usu, Upsal. 1700. 4. Iconem propriam, microscopio auctam dedit, glandularum & ductuum sebaceorum palpebræ. In Diss. de cataracta 1722. 4. pro membrana cataracta pugnat.

JOS. de la CHARRIERE in anatomie de la tête de sensibus & de oculo fufe agit.

P. G. SCHACHER de cataracta, Lips. 1701. 4. primus, quantum novi, habet ganglion ophthalmicum.

JOH. GOTTSCHED de luce & coloribus, Regiom. 1701. EJUSDEM de visus modo finiendi 1702.

CONR. JOHRENI de visu integro & corrupto, & in specie de gutta serena, Francofurti ad Viadr. 1701. 4.

D. PUGET in Journ. de Sav. 1702. 1704. 1706. multiplices oculos insectorum ex muscarum genere describit.

WILH. ULR. WALDSCHMID de coloribus objectis coloratis non inexistentibus, Kiel. 1703. 4.

J. H. SBARAGLI in oculorum & mentis vigiliis aliqua habet de inversione cavi & convexi, quæ a lentibus vitreis oritur.

CHR. WARLITZ scrutinium lacrumarum, VVittemb. 1705. 8. Nihil præter titulum huc pertinet.

J. B. MORGAGNUS plurima in oculis invenit, correxit, in Advers. I. IV. VI. Epistolis XVI. XVIII. XIX. Palpebram tertiam, carunculæ lacrumalis glandulas, vias lacrumarum ad nares, exiguitatem cameræ posterioris, refutationem ductuum conspicuorum innominatæ glandulæ, vires musculorum oculi, cataractæ veram sedem declaravit & alia. Anulum moderatorem nervi optici, propositum a VALSALVA in Diss. posth. II. veri amantissimus deseruit. Pro nova de cataracta opinione etiam VALSALVA experimenta habet.

GUILIELMI COWARD ophthalmiatra, Lond. 1706. 8. Nihil legi, nisi acerbam censuram WOOLHOUSII. Videtur arcana amasse.

J. A. SLEVOGT de oculis. Jen. 1706. 4.

ANTONII MAITRE-JAN traité des maladies de l'œil, Troyes 1707. 4. Paris. 1741. 12. Notum est, primum aut inter primos cataractæ sedem in crystallina lente posuisse ab hominum memoria, cum REMIGII LASNIER & QUARREI opiniones exolevissent. Descriptionem etiam dedit oculi, in qua membranam paradoxam, nobis ignotam proposuit. Lentis flavedinem vidit, fibras descripsit.

F. HAWKSBEЕ vires refractrices lentis, & aquei in Phil. Transf. 328. descripsit, refractionem radii a vacuo in aerem illapsi defendit, &c.

J. BRISSEAU de la cataracte & du glaucome. Tornaci 1706. 24. * Paris. 1709. 8. Liber anno 1705. scriptus est. Cataractam non viso Libro ANTONII, in lente posuit, & oculum descripsit.

G. ERN. STAHL. de fistula lacrumali, Hall. 1707. ubi ANELLIANORUM siphonum certe idea habetur.

ALEX. le FRANCOIS potestne stare visio absque crystallino? Paris. 1708. 4. *

GEORGII BERKLEY (post ea tempora Episcopi) Essay toward a new theory of vision, Dublin. 1708. 8. Lond. 1709. 8. 1733. 8. Gallice & Italice versus 1732. Cum DEUM aiat arbitrium nobis cum rebus mundanis fecisse quasi sermonem mutuum, plurima habet valde singularia. Visibilia a tangilibus separat, negat illa solita de angulo visorio, distantias a sola debilitate objectorum, magnitudinem & erectionem ab experimento judicari docet, &c.

HERMANNI BOERHAAVE de Morbis oculorum lectiones posthumæ editæ, Gottin. 1746. 8. Satis corruptum & vitiosum exemplar, neque ita tamen absque utilitate, siue physiologiam oculi, siue curationes respexeris. Cataractæ veram sedem inter primos recepit cum eas prælectiones an. 1708. habuerit.

A brief treatise of the Eyes by WILLIAM CROSSE, Lond. 1708. 12. Anatomem oculi habet; sed compilatio videtur, ex censuris. *

culo , ubi plura egregia habet , quamvis non omnia admittantur (a).

FRE-

Inter G. A. HAMBERGERI dissertationes exstat *de opticis oculorum vitiiis*.

J. PALFY ad versionem operis MAITREJEANI varia anatomica adjecit, quæ inprimis a DUVERNEYO habuit.

In *Miscellaneis Berolinensibus* varia huc pertinent ut in T. III. CL. LUDOLFI historia cataractæ, quæ VIGNOLIO sponte delapsa fuerat, qua occasione etiam agit de viribus refracticibus humorum oculi. Tum in Cent. III. A. VATERI de ductibus sebaceis oculorum observationes & de viis lacrumarum, quas subtilibus foraminibus etiam alia, quam communi via, in narium cavitates credit stillare. In T. VI. cataractæ membranæ depositio habetur.

AUG. FRID. WALTHER *de lente crystallina*, Lips. 1712. 4. & in *Coll. Disp. nostra* Vol. IV. egregia habet de viribus refringentibus humorum oculi experimenta.

SEB. le CLERC citatum ibi opus nonne idem est, quod recensuimus ad annum 1679. ? in *addendis*.

SEBASTIEN LE CLERC *système de la vision*, Paris. 1712. 8. Uno nos oculo videre, & unicum punctum, unico radio, nec oculum mutari pro distantis, nec radios oculos subire, sed unice ferire corneam, &c.

DOMINIQUE ANEL *nouvelle méthode de guérir la fistule lacrimale & recueil de diverses pièces*, Turin. 1713. 4. Historiam quidem ductuum lacrumalium, eo tempore minus cognitam, satis accurate proposuit, & post aliquas cogitationes STAHLII, subtilia instrumenta ad curationem invenit. Verum lites, quas aluit cum D. SIGNOROTTI tedium faciunt. Scripsit autem SIGNOROTTI *lettera nella quale il S. risponde a M. ANEL*, Genova 1715. & *critiche della critica convinta* ibid. 1713. 4. & alios Libellos.

PETRI KENNEDY *ophthalmographia*, Lond. 1713. 8. & *supplement to his ophthalmographia*, 1739. 8. Anatome non optima est, nisi quod circulum uveæ ex RAVIO habet. In posteriori volumine varia contra D. PORTERFIELDS, JURIN, SHARP, CHESELDEN, BRAKEN & alios objicit.

C. SIG. GAKENHOLTZ *de visione per cataractam impedita*, Helmst. 1713. 4. Non absque experimento scripsit, & contra PITCARNIUM ostendit, objecta proxima omnino repræsentari in oculo, confusus equidem.

ARCHIBALDI PITCARNE *Disq. II. de theoria morborum oculi*. Vitia humoris aquei negat in retina impressionem facere, calculo geometrico adducto.

EL. HOPPE *de palpebris*, Basil. 1715. 4.

ANDR. WEBER *vestigia sapientia divina in oculo conspicua*, Amstalt. 1715. *

AUGUSTIN GRISCHOW *Polychresta ophthalmographia methodica*, Jen. 1716. 4. *

G. W. WEDEL *de visione qua fit oculo gemino*, Jen. 1714. 4. & in *Collect. Disp.* vol. IV. varia utilia habet, & utroque oculo nos uti demonstrat.

In W. DERHAM *Physical Theology* multa ad teleologiam oculi & ejus anatomen comparatam pertinentia exstant.

In VIEUSSENII *Traité des liqueurs* p. 211. utique exstant ea, quæ sibi tribuit FERREIN, vasa lymphatico-nervea uveæ etiam uberius descripta, & sphincter circulus, ut audit, uveæ. Lentem etiam frequentius in cataracta vitiari expertus confirmat.

(a) JACOBI HOVII *de circulari motu humorum per oculos apologética epistola ad RUYSCHIIUM*, Leidæ 1615. 8. Barbara dictio, experimenta suspecta, ut historia ductuum aqueum humorem adferentium, quinque laminæ membranæ choroideæ, vasa corneæ, vitrei humoris, & crystallinæ lentis, adeo conspicua. Invenit tamen, ni fallor, circulum venosum iridis. Contra RUYSCHIIUM acriter descripsit. Vide in eum criticam HEISTERI in vindictis p. 156. seq.

LAUR. HEISTER *de Choroidea*, Hardervici 1708. 4. & nuper, Helmstadii 1746. 8. In hac posteriori editione contra experimentum MARIOTTI suas observationes adtulit, vasa oculi descripsit, &c.

EJUSDEM *de cataracta in lente crystallina*, Altdorf. 1711. 1712. 1713. tribus dissertationibus, & auctiori Libello *de cataracta, glaucomate & amaurosi*, Altdorf. 1713. 8. collegit experi-

FREDERICUS RUYSCHIUS in *observationibus* suis & in *Thesauris* plura & egregia, nullibi certe reperiunda habet de oculorum tunicis (a).

Tum etiam Clarissimi BRIGGS *Ophthalmographia* in 12. legi potest (b):

Hi principes sunt, qui de hac parte videri merentur, nam reliqua apud collectores facile inveniuntur (c).

experimenta, quæ demonstrant, in lente sedere cataractam. Eam opinionem primus in Germania defendit, & encheireses addidit. IDEM in *apologia systematis sui de cataracta*, Altdorf. 1717. 8. in *vindictis sententia sua de cataracta* ibid. 1719. 8. fuse contra NICOLAI ANDRY *cenfurarum medicarum* in *Journal des Savans* auctorem, & contra WOOLHOUSIUM, membranaceæ cataractæ patronum novam sententiam defendit, & longe frequentiores crystallinæ lentis morbos, quam membranaceas suffusiones esse ostendit. IDEM in *Compendio oculorum congelatorum* icones dedit, cameram posteriorem minorem esse demonstravit. In *Diff. de fistula lacrumali* & in *Chirurgia magna* habet icones vasorum lacrumalium.

CÆL. COCCHI in *epistola de lente crystallina vera suffusionis sede*, Romæ 1720. 8. pro nova sententia argumenta proposuit.

J. B. BIANCHI de *ductibus lacrumalibus novis*, Turini 1715. 4. * Leidæ 1723. Enormiter amplos ductus, saccum, & nasalem canalem pingit, cum valvula imaginaria, quæ omnia MORGAGNI censuram meruerunt.

CL. WOOLHOUSE *Diff. de cataracta & glaucomate contra systema Brissæi, Antonii & Heisteri*; Francof. 1719. 8. Varia sunt opuscula, Epistolæ duæ ad P. le BRUN contra BRISSÆUM; aliæ censuræ ex *Mercurio Gallico* an. 1707. 1708. 1709. contra ANTONIUM, alia contra HEISTERUM: epistola ad PALFYNUM: carmen ad HOVIUM: DANIELIS GEISLER epist. ad LE CERF de membranacea cataracta Norimbergæ visa: censura in Librum HOWARDI, & programma de 40. operationibus chirurgicis quas in oculo suscipit WOOLHOUT. Summa rei est, clamore artibusque non optimis defendere cataractam membranaceam in utraque oculi camera, ut in lente raro & immedicabili cum morbo sit. IDEM variis locis varia alia scripsit. Ita an. 1718. GEISLERI experimentum edi curavit. Anno 1725. 4. dedit *disquisitiones physiquæ & anatomiquæ sur l'expérience de M. HEISTER*, qu'il avoit trouvé plus d'humour aqueuse, &c. * Experimenta congelationis HEISTERIANA, ut in cadavere animalis facta refutare conatur. Anno 1726. de crystallina lente observationes & an. 1728. musculi pathetici divisionem in duos tendines descripsit. IDEM an. 1726. edidit *observations sur le Mémoire de M. MORAND touchant la cataracte*. *

HENRICI PEMBERTON de *facultate oculi quæ ad diversas rerum conspectarum distantias se accommodat*, Leidæ 1719. Credit ipsam lentis substantiam fibras continere, quæ figuram mutant pro diversa objecti distantia.

H. PEMBERTON citata disputatio recusa est in *collect. Disp.* Tom. VII.

PETR. BECKER de *duplici visionis organo, dioptrico & catoptrico*, Rostoch. 1720. 4.

(a) FREDERICUS RUYSCHIUS pro magna sua industria multa in oculo invenit & imprimis in Ep. XIII. & Thes. II. proposuit papillas & vasa palpebrarum, circulum uveæ venosum & arteriosum, arteriolarum reptatum per Choroideam, per eam internam ejus faciem, quam Ruyfchianam vocavit, aliasque oculi subtiliores particulas.

(b) Jam citatus.

(c) J. W. PAULI ope siphonis sui corneam in 16. laminas separavit.

J. H. FREYTAG de *cataracta*, Argent. 1721. 4. Pro membranacea cataracta.

D. PINSON in *observations sur la cataracte & le glaucome faites a Tubingue*, in *JOURNAL DES SAVANS* 1722. M. Julio recensitis, exemplum habet cataractæ membranaceæ.

L. P. THUMMIG in *versuch einer gründlichen erklärungs*, &c. Hall. 1723. 4. agit de visu nocturno a læsione oculi, cum ejus sanatione evanescente. In II. *Versuch* historia visus per nares, habetur, qualis a SENNERTO etiam describitur.

A. VATER de *duobus vitiis visus rarissimis*, VVittemberg. 1723. 4.

J. DOM. SANTORINI experimenta contra decussationem nervorum opticomum profert.

In J. Z. PLATNER *Disp. de fistula lacrumali*, Lips. 1724. 4. describuntur ductus & sacculus lacrumarum.

J. A. KULMUS post Tractatum de monstro & in Breslaviensibus collectionibus 1722. descripsit secundum musculum trochlearem sibi visum.

ANTON. EMANUELIS a ROSSET de visu, Basil. 1725. Disp.

JAC. GERING praxis vitia partium oculi cognoscendi & curandi, Meissen 1725. 4. * PL. EJUSDEM de distantia lentis convexa ab oculo, in qua objectum sub maximo angulo apparet, Meissen 1726. 4.

CL. NOGUEZ in suo compendio ganglion ophthalmicum habet.

In Diario TRIVULTIANO LE MAIRE an. 1727. microscopicas de oculo observationes proposuit, nescio quas catenas pendulas lentis, & ejus vasa pellucida, papillas uveæ describit. Anno 1733. dissertatio habetur, an possit capsula separari sine destructione lentis, quod negatur. An. 1739. varia obijciuntur contra NEWTONI experimenta & fixum colorum numerum.

De S. YVES Traité des maladies des yeux, Paris. 1723. 8. Habet anatomen oculorum WINSLOWIANAM.

CL. BOUGUER Essai d'optique sur la gradation de la lumiere, Paris. 1729. 12. Lucis debilitationem, dum per aërem, vitra, & media varia transit, causam opacitatis, solaris lunarisque lucis rationes docet.

F. PETIT Lettre I. & II. dans laquelle il est démontré que le Crystalin est fort près de l'uvée, Paris. 1729. 4. Et troisième Lettre ou réflexion sur les découvertes faites sur les yeux, Paris. 1732. 4. * quæ videntur eadem esse cum Lettres de M. PETIT contenant des réflexions sur les découvertes sur les yeux, Paris. 1735. 4. nam neutras legi. Cum WINSLOWO de quibusdam inventis pugnat. IDEM in Epistolis illis an. 1710. editis analysin dederat humorum oculi. Circulum, uti notum est, lentis crystallinæ, veras dimensiones camerarum oculi, & alia subtilia in oculo primus detexit.

P. PETIT in lettres I. & II. respondet HECQUETO, dat oculi mensuras, ostendit in recepta administratione semper perforari lentem & destrui, docet aperire capsulam lentis, eamque per ejus rimam eximere, deponere in anteriorem oculi partem. Cameram posteriorem brevissimam esse ostendit.

J. PALFYN in sua chirurgia DUVERNEYUM ait vasa adducentia humoris aquei demonstrasse.

J. BUXTORF de visu, Basil. 1728. 4.

C. G. MOEHRING de visu, Leidæ 1729. 4.

C. G. MOEHRING in citata disp. ex ALBINO duas laminas retinæ describit, scleroticam a dura membrana oriri negat, &c.

J. CASP. SCHOBINGER de fistula lacrumali, Basil. 1730. 4. habet descriptionem viarum, & de novo musculo sacci lacrumalis conjecturam.

BENEDICTI DUDDELL treatise on the diseases of the horny Coat, Lond. 1729. 8. Oculi descriptio brevis, cum ganglii tamen ophthalmici memoria. Epidermidem conjunctivæ demonstrat, & corneæ opacitatem, quæ post 16. annum accedit.

BEN. DUDDELL. l. c. membranam crystalloidem ab arachnoidea separat, quod tantum anteriorem partem lentis tegat, &c.

Inter LANZONI Dissert. exstat 13^{ma}. de visione.

In Comm. Bononiensium T. I. CL. viri ZANOTTI & ALGAROTTI experimentis confirmaverunt theoriam NEWTONIANAM: CL. STANCARI nervos opticos tot esse in oculis insectorum, quot corneas, esseque adeo veros oculos ostendit. IDEM in scholis mathematicis (vid. GIORN. de' LETTER. T. XVIII.) ad experimentum MARIOTTI respondit. In iisdem GIORN. de' LETTER. Suppl. I. RIZZETTI systema refractionum habetur, oppositum NEWTONIANO.

In T. II. P. I. habentur variæ utiles P. P. MOLINELLI ad ductus viasque lacrumarum observationes. Motum peristalticum ductulis lacrumalibus tribuit.

In Petropolitano T. I. D. BERNOULLI subtiliori modo repetiit experimentum MARIOTTI in T. VII. JOSIAS WEITBRECHT de musculo orbiculari palpebrarum egit, & IDEM in syndesmologia T. 26. ligamentum palpebrarum expressit.

In Edimburgensium Actorum T. III. ALEXANDER MONROO de viis lacrumarum egit. In Tomo IV. CL. PORTERFIELDS fuse de oculi morbis scripsit, mutabilem esse oculum adseruit, non tamen ab externis musculis, sedem macularum consideravit, multum usus la HIRIO & REGIO. In T. V. Cataractæ in lente historia exstat.

CL. DES MOURS in sua editione *Actorum Edimburgensium* T. I. varia bona ad oculum attulit; & inter alia experimentum, uno oculo distantias male æstimari. Uvæ fibras nervosque describit.

J. F. SCHREIBER de *fletu*, Leidæ 1728. 8. Lips. 1729. 8. supra laudatus est.

Inter PHIL. HECQUETI opuscula cum *Libro de la digestion & des maladies del' estomac*, Paris. 1733. edita, exstat *Lettre V. sur les maladies des yeux*.

DAV. PARADIES de *oculorum fabri a*, Leidæ 1731. Disp.

JOSEPHUS POZZI vidit exentis humoribus oculi omnibus renatum vitreum & aqueum, non lentem, & obscuriorem visum rediisse.

PLACIDI de PUZZOLIS de *organo visorio dissertationes anatomico philosophica*, Romæ 1738. 4. EX BRIGGSIO.

ANTONIUS FERREIN an. 1738. Parisiis disputavit de quæstione non ergo *fistula lacrumali cauterium ætiale*, & vias lacrumarum descripsit. IDEM Monspelii 1732. 4. *duodecim quæstiones* defendit pro cathedra Regia de duplici visu, de luscitate ab inæqualibus lenticulis crystallinis, &c. IDEM apud HENKELIUM in *Chirurgische Anmerkungen* II. retina cum capsula lentis nexum subtiliter rimatus est.

CL. SENNAC in nov. edit. comm. in HEISTER foramina corneæ, lentis vasa ex equo, adnatam corneæ obductam, & alia descripsit.

GEORG. THOMSON of *the four senses*, Lond. 1734. 8. cum aliis anatomicis edita tractatio parum plena est.

P. C. van der MARK de *oculorum fabrica* Disp. Duisburg. 1738. *

JEAN TAYLOR *méchanisme du globe de l'œil*, Paris. 1738. 8. Pars prima anatomica est, & ad recentissima inventa conformata. Negat ligamenti ciliaris efficaciam. Contra retinam pugnat pro choroidea, eo imprimis argumento, quod a luce nimia iris claudatur, continua choroidea. Arterias oculi male describit, & Bibliothecam subjecit deterrimam, ubi v. gr. VAROLII de nervis opticis Epistola sub titulo NEROBI habetur. EJUSDEM *Traité sur l'organe immédiat de la vue*, Paris. 1735. 8. Londini sub titulo *impartial enquiry into the immediate organ of sight*, Lond. 1743. 8. recusatus, eandem de sede cataractæ opinionem defendit. *Conf. diseases of the chystalline humour*, Lond. 1736. 8. Situm retinae mutari concedit, figuram negat.

JEAN TAYLOR primo loco citatus libellus anglice prodit 1737. ni fallor & Germanice nuper Francof. 1750. 8. recusatus, adjecta brevi anatome oculi, longa vero serie morborum.

EJUSDEM etiam est *versuch über die bewegung der mäslein der augenkugel*, Lusitanice 1740. 8. *über die beschaffenheit und schönheit des auges*, Anglice L. 1744. 8.

JEAN BANIERES de *la lumière & des couleurs*, Paris. 1737. 12. Describit etiam oculum & visum. *

JAC. de MAFFE de *oculi constructione*, Leid. 1737. 4.

J. ZACH. PLATNER de *motu ligamenti ciliaris in oculo*, Lips. 1738. 4.

ROBERT SMITH compleat *systeme of optiks* cum notis JURINI, Cantabrig. 1738. 4. In I. Libro populari facili & laxa demonstratione utitur ad lentium functiones declarandas, &c. In notis JURINI varia sunt de visu, qui fit duobus oculis, de judicio distantiarum, de paradoxo BARROWII. EJUSDEM JURINI subjectus SMITHIO Liber of *distinct vision* extendit limites hujus visionis a 5' ad 14' 5". & invenit non sufficere vulgo notas mutationes oculi, hinc advocat sphincterem, qui corneam constringat, convexam reddat. Lentem vero a ligamenti credit conplanari, ob aquam sub lentis capsula mobilem. Corneæ refractionem recte magnam facit. Musculum vero priorem optat potius quam demonstrat. Cæterum & hic & alibi apud optimos Auctores erectio imaginum tribuitur experimento, non bene, cum animalia recens nata, homo, cui nuperrime cataracta deposita est, continuo omnia in vero situ videant. Contra hoc scriptum BENJAMIN ROBINS, Londini 1739. 8. edidit *remarks on . . . Smiths c. systeme of optiks and on Jurins Essay upon distinct vision* *. Respondit J. JURIN in *reply to ROBINS remarks on the essay on distinct vision*, &c. ibid. eod. anno *.

DOMENICO MARIA MANNI degli *occhiali da naso*, Florent. 1738. 4. Veteres conspicilla augmenta literas ignorasse, ALEXANDRUM de SPINA autem jam inventam artem calluisse, verum autem inventorem esse SALVINUM de ARMATIS docte demonstrat.

BEN-

BENJAMIN MARTIN *a compendious system of optiks*, Londin. 1740. 8.

CLIFTON WINTRINGHAM in *experimental enquiry on some parts of animal structure*, Lond. 1740. 8. refractorias vires humorum oculi adsignat, in lente potentiam confringentem exiguam facit, in cornea magnam, eam credit convexiorem reddi posse. Robur corneæ, capsulæ lentis crystallinæ, & densitates definit.

RICHARD HELSHAM *course of lectures in natural philosophy published by BRIAN ROBINSON*, Lond. 1739. 8. In opticis distinctus, & facilis, & inter compendia mihi præstare visus est. Focos vitrorum, refractiones humorum, per experimenta persecutus est.

De RICH. HELSHAM addimus, elegantissimos viri mores, & insignem artis peritiam laudare HIFFERNAN *of man* pag. 22.

CL. NIC. le CAT *Traité des sens*, Amstel. 1744. 8. solo fere in visu, versatur. Membranam novam, quæ piæ matri continua est & scleroticam subtendit, veram omnino, invenit, & in *Comm. Ac. Reg.* 1739. etiam descripsit. Experimenta optica plurima habet, tum ad erectum vel inversum, simplicem vel duplicem visum, tum ad radiorum refractiones, in quibus fuse demonstrare suscepit, non esse in ratione reflexibilitatis radiorum refrangibilitatem. Pro choroidea sentit. Septem colores se non potuisse demonstrare, nec NOLETUM nec du FAR aliosve Gallos, miror posuisse. Animam inversa videre credit. Plurima propria habet aut paradoxa.

CL. NIC. le CAT citatus liber primum prodiit Rouen 1740. 8. Melioratus vero, Amst. 1744.

W. CHESELDENIUS apud VOLTARIUM habet singulares observationes in cæco nato, cui cataracta deposita fuerat. Nervum opticum non ad alternum oculum ire confirmat.

SEBASTIANI MELLI *il pro e contra delle fistole lacrimali*, Venet. 1743. 8. Descriptionem satis minutam habet viarum lacrumarum, sed nescio quæ exigua foramina ex sacculo lacrumali in nasum addit, valvulam etiam depinxit. In practicis ANELLIUM refutat. Adjecta est SIGNOROTTII descriptio ductuum lacrumalium valde aliena a vera.

GER. FITZGERALD *de visu*, Monspel. 1741. 8. * PL.

G. AUG. LANGGUTH *de luce ex pressione oculi*, VVittemb. 1742. 4.

G. J.'s GRAVESANDII & P. van MUSSCHENBROEK *elementa physica etiam oculi bonam descriptionem & multa notatu digna continent. Et's GRAVESAMDIUS in primis optimi compendii pro opticis vice fungi potest.*

In *Comm. Lit. Nor.* 1737. corneæ vis refringens defenditur. An. 1733. 1735. & 1745. cataracta in lente visa recensetur.

P. C. FABRICIUS in *idea anatomes practica* laminas duas choroideæ etiam in humano oculo demonstrari posse docet.

DEN. APPEL *de oculi humani fabrica*, Leidæ 1714. 4. Vasa lentis ab ALBINO demonstrata recenset.

PETRI IDEMA *ontleed en natuurkundige verhandeling van't oog*, Leeuvvaarden 1741. 4. Adnatam obduci corneæ negat: Retinæ jura defendit, tum cataractam membraneam. Cameram posteriorem majorem facit.

CL. BURCHARD DAVID MAUCHART plurimum laboris posuit in oculi morbis. Scripsit ergo *Diff. de cornea oculi tunica*, Tubingæ 1743. 4. *aliam de ungue* 1742. 4. *de mydriase* 1745. In prima lamellas corneæ fibrillis conjunctas describit, corneæ diametros definit, & in ea vasa rubra vidit. In altera eandem corneam porosam lamellatam, & a sclerotica diversam describit. In ultima fibras circulares iridis confirmat.

ANTONIUS FIZES *de cataracta*, & in lente & in membrana sedem esse posse mali, sed eas, quas deponi vidit, semper fuisse in lente, cautus docet.

CL. LOBE' *de oculo humano* Disp. Leidæ 1742. ALBINIANA inventa habet, pro retina pugnat: fibras circulares iridis defendit, choroideam negat duplicem esse, aut scleroticam a dura oriri, arteriam habet a retina per vitreum ad lentis tunicam euntem, & duas retinæ arterias.

J. E. HEBENSTREIT *de vasis sanguineis oculi*, Lips. 1742. 4. & *de oculo lacrymante*, an. 1743.

CL. SHARPE in *chirurgia sua* pinxit oculum & ductus lacrumales.

In *syllabb partium corporis humani* edito Petropoli habentur ad oculum f. 7. 8. & 13. T. 21. & T. 19.

P. ARCELIN, *Ergo stare potest visio absque crystallino*, Paris. 1743. 4.

Bbbb

JOS.

JOS. MARIA de la SONE thefis. *Ergo stare potest absque crystallino visio*, Paris. 1743. 4.
SYLV. ANTONII LEMOINE thefis. *Ergo obliqui oculorum muscoli retinam a crystallino remouent*, Paris. 1743. Negat figuram mutari posse.

CL. LIEUTAUD modum secandi oculi descripsit, & sollicite fabricam expressit: albugineam ex membrana musculorum oculi super corneam extendi credit, ductus glandulæ innominatæ describit, & plexum ciliarem valde singulari modo in conjunctione scleroticæ & corneæ exponit.

E. A. NICOLAI vom thränen und vveinen hic unice repeto, quod etiam ductus lacrumalis glandulæ hic indicati habeantur.

LEONHARDUS EULER in *Mém. de l'Acad. des Sciences de Berlin* 1745. & in opusculis, novam theoriam de lumine proposuit, quod cum sono comparavit, ut esset tremor elasticus ætheris, & colorum diversitas a numero tremorum intra datum tempus penderet, &c.

THOMIN instruction sur l'usage des lunettes ou conserves, Paris. 1746. 8. De presbyopibus & myopibus varii generis laudabiles observationes habet.

THOMIN libro citato ostendit ut facile quisque posset vitra sibi aptissima eligere fili ope, quo distantia visionis distincte mensuratur. Strabonum vitium tribuit fere nimix convexitati corneæ & remedium docet &c. *EJUSDEM* etiam est *traité d'optique mécanique dans laquelle on donne les regles pour faire toutes sortes de lunettes d'ap proche, microscopes*, &c. Paris. 1749. 8. *

CL. KRUGER in *physiologia* contra *MARIOTTUM* pugnat, experimentum maculæ in retina pictæ ex carulo recenset.

BAKERUS in *microscope made easy* vim microscopiorum dimensus est.

J. F. SAUVAGE in *Diff. de suctione vasorum capillarum corporis humani*, Monspel. 1744. vim attractricem palpebrarum versus puncta lacrumalia demonstravit.

CL. J. G. GUNZIUS in *Libro de humoribus* describit ductus Meibomii; saccum lacrumalem etiam per poros inspirare vidit, &c.

In *Stokholmienfis Actis* 1745. depingit *D. RIBE* ductulos lacrumales glandulæ innominatæ sex septemve.

KLAUHOLD de visu duplicato, Argentor. 1746. exempla collegit, & propria etiam habet.

CL. MONTAGNAT in epistola ad *J. E. BERTIN* sur un nouveau genre de vaisseaux découverts dans le corps humain, Paris. 1746. 8. gloriam detectarum arteriarum pellucidarum uveæ adserere conatur *FERREINIO*; sed ea certe *RUYSCHIO* debetur.

CAMPER de visu. IDEMQUE de oculorum partibus, Leidæ 1746. 4. Lentis phænomena in aqua, arterias ejus (ab *ALBINO* petitas), canalem *PETITI* ejusque utilitatem, fibras ciliares describit, & retinæ jura defendit. Uveæ fibras circulares demonstrasse dicitur a *DE LA METTRIE* *ichthyolog.* II. p. 37. in *Machiavellismo*.

JACOBUS PARSONS in *Tractatu of human physiognomy* qui cum *Phil. Transf.* conjunctus prodiit, Lond. 1747. 4. orbicularem musculum palpebrarum descripsit, &, fere ut *RIOLANUS*, divisit, de motu oculi fuse egit, & de animi adfectuum signis ex eo motu petitis.

CL. V. F. HENKELIUS an. 1738. epistolam de singularibus circa Nervum opticum edidit. Hall. 1738. 4. & anno 1744. *Diff. de cataracta crystallina vera*, Francof. an. 1747. verum in II. collectione der Chir. und Medic. Anmerkungen. observationes de cataracta proposuit, quæ in capsulæ opacitate resider.

C. AUG. a BERGEN de maculis in oculo, Francof. ad Viadr. 1747. 4. Contra *PITCARNIUM* opaca in aqueo humore corpora in retina sui imaginem dare ostendit, & focus radiorum visoriorum in retina esse, &c.

CL. CASSEBOHM in *posthumis* ductus etiam innominatæ glandulæ describit, retinam deducit ad marginem lentis crystallinæ, &c.

Ego omnino parum in oculi fabrica profeci. Membranam tamen, quæ pupillam claudit, post aliqua sparsa vestigia, v. gr. in *LUCÆ* relatione itineris Tartarici, ubi Tartaros cæcos nasci scribit, postque *CL. PETSCHÉ* Disp. sæpe laudatam, ubi iridem in pullo incubato pupillam claudere confirmat, & post *CL. WACHENDORFII* experimenta (quæ exstant in *Comm. Lit. Nor.* 1740.) constituit, ut perpetua in fetu sit, & claudat pupillam, & vascula habeat, continua iridis vasculis. Eam in *Actis Upsaliens.* 1742. descripsi, in *Iconum* vero fasciculo III. vasa ciliaria nova, proxime corneam scleroticam perforantia, & se demit-

demittentia in circulum uveæ vasculorum descripta dedi. Sedem albam choroideæ, nisi fallor, inveni; quam etiam ad *EUSTACHIUM* habet brevissime *B. S. ALBINUS*. Nervos etiam & vasa descripsi & pinxi.

Descriptio quam dedi membranæ pupillam claudentis, recusa est in *Act. Stokh.* 1748. P. III. icone vero aucta & emendata in *opuscul. Anat.* nuper editis.

CAR. FRID. RIBE tal om ögonen, Stockholm 1748. 8.

J. HENR. MOELLER nonnulla obss. circa tunicam, retinam & nervum opticum, Hall. 1749. 4. & in *collect. Disp.* Tom. VII. describit arteriam opticam; medullam nervi optici non uno sed multis poris choroideæ album circulum perforare docet, vasculosam membranam retinæ describit, vidit arteriam lentis crystallinæ.

AMBROSII BERTRANDI dissertatio de oculo, Turin. 1748. 4. Rete fibrarum corneæ, vasa pellucida a choroidea ad retinam & humorem vitreum euntia, venas reducentes ex lente lymphaticas, fibras lentis & alia describit.

In Tom. III. operis *BUFFONIANI* de oculo agitur: & in propria dissertatione de visu inverso infantum quem tactus corrigit, de distantiarum judicio, myopia & presbyopia, visione distincta & clara, &c.

LEANDRI PEAGET & GRANDELAS, Ergo immediatum visus organum choroidea, Parisiis 1749. 4.

Infinitum optidorum scriptorum numerum neque exhaustire speravi, neque utile foret.

C A P U T II.

De Aure.

DUO Auctores legi merentur (a).

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS Lugduni Batavorum editus in 8. anno 1717. (b).

Tum

(a) *ALCMÆON* Pythagoræus, uti notum est, cochleam invenit. Cæterum ultra membranam tympani vix profecerunt veteres. *RUFUS* externa nomina auriculæ habet.

MARINUS apud *ORIBASII* nervi duri non malam descriptionem dedit, qui eum per foramen vulgo cæcum dictum transire monuerit, & misceri cum nervo III. (nempe Quinti tertio ramo), &c. Ea cæca foramina nervos etiam transmittere *RUFUS* dixerat.

JACOBUS BERENGARIUS Carpenfis non quidem invenit officula priora duo, & neminem inventorem nominat *NICOLAUS MASSA* *Epist.* V. p. 55. b. ubi temporibus *ALEXANDRI ACHILLINI* inventa fuisse refert, & satis demonstrat *JACOBUS* (in *MUNDINUM* p. 477.) aliorum esse inventum. Primus tamen descripsit.

GABRIEL FALLOPIUS stapedis inventi laudem equidem *J. PHILIPPO INGRASSIÆ* reliquit, multa vero in aure perfecit, vestibulum, canales semicirculares, foramen cæcum, quod dixit *aqua ductum*, & ejus hiatus, ipsum tympani nomen, fenestram utramque, musculos auriculæ.

(b) *BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS* in præstantissimo tractatu de auditus organo cum reliquis edito, Venet. 1563. 4. descripsit tubam, cui nomen inposuit, male pro meatu nervum & vasa ducente habitam a *VESALIO* aliisque. Musculum internum, chordam tympani, stapedem ipsum, primus invenit: de quo cum *INGRASSIA* certat, & nisi fallor facile vincit, cum neque *R. COLUMBUS*, neque *INGRASSIAS* aliquid in aure invenerint, unde credas, subtilius eam partem ab ipsis esse examinatam. In magnis tabulis hæc omnia varie depinxit *EUSTACHIUS*, tum musculos auriculæ.

A. VESALIUS in *Examine obss. Fallopii*, varia ex brutorum anatome ad cellulas mastoideas, promontorium aliasque particulas adduxit, nervi etiam duri cum Quinto plexum observavit.

A. PAREUS curva crurcula stapedis depinxit.

VOLCHERUS COITER proprio Libello *de auditus instrumentis*, qui exstat cum observationibus, inventa fere **FALLOPII** proposuit.

CONSTANTIUS VAROLIUS musculum stapedis indicavit.

J. MATHESII *de admirabili auditus instrumenti fabrica*, VVitemb. 1577. 4. *

FELIX PLATERUS varia minuta in organo auditus animadvertit, ostium amplius canalium semicircularium, eorum diversum positum, & forte longiorem mallei processum, qui **Folianus** dicitur.

SALOMON ALBERTI cochleæ iconem dedit, & in *Orat. de discipl. anat.* p. 90. sulcum descripsit nuclei cochleæ, nervo refertum.

V. ALDROVANDUS diligenter avium organum auditus descripsit in *Oto*.

JULIUS CASSERIUS *de vocis & auditus organo historia anatomica*, Ferrar. 1600. fol. Princeps laus est iconum, descriptiones enim minus plenæ sunt. Icones autem, per omnes animalium classes, pictæ pro ea ætate nitidæ, & numerosissimæ sunt. Musculum externum mallei an. 1593. invenit, & ligamenta auris & stapideum. Eadem tabulæ repetuntur iisdem cum verbis in *Pentasthesio*, Venet. 1609. fol.

HIERONYMUS FABRICIUS ab **AQUAPENDENTE** *de oculo aure & larynge*, Venet. 1600. f. Franc. 1614. fol. Musculum eundem, quem **CASSERIUS** se invenisse ait an. 1599. icones dedit non bonas, & in plerisque infra **FALLOPII** industriam substitit, qui v. gr. canales semicirculares innumerabiles fecerit. Processum longissimum pinxit.

J. JESSEN a **JESSEN** aquæductum cum tuba confudit, in quo errore plurimos habuit sequaces, **RIOLANUM** (in C. B. p. 721.), **FRANCISCUM BAYLE** (p. 448.), **ANDREAM O. GOELICKE** *hist. anat.* p. 212. **JOH. QUINCY** *dictionar.* p. 31. **JOSEPHUM DUVERNEY**.

H. F. HILDANUS, uti dictum, ossicula auditus picta dedit in *Epist. ad PAWIUM*.

J. RIOLANUS in *Enchiridio* musculos varios auriculæ descripsit a mastoideo processu, a frontali musculo, a cutaneo, ab occipitali ortos. Meatus auditorii in fetu naturam & mutationes descripsit in *isag. anat.*

Ad sonos multa repeti possunt ex *Cent. I. & II. sylva sylvarum VERULAMII*.

DAN. MYLLER *theoria duorum sensuum interiorum visus & auditus specialis*, Lips. 1738. 4. (B. RIV.) *.

J. B. CORTESIUS in *miscellaneis* aliquas icones organorum auditus dedit.

N. HADICOT ligamenta quatuor ossiculorum, duo ad malleum & stapidem euntia, duo ad pedes incudis vasaque tympani indicavit L. X.

NIC. PAPINII *περί τῆς κεφαλίδος*, five *de cerumine*, Salmur. 1684. 12. * PL.

V. F. PLEMP in *fundamentis* p. 108. exemplum memorabile adducit duarum membranarum tympani, quæ etiam spatio distarent.

FRANCISCUS SYLVIVS de la **BOE** ossiculum quartum invenit, cui certe viro **LINDANUS** & **C. BARTHOLINUS** eam gloriam adsignant, & **ALBERTUS KYPER** *Anthropol.* p. 185.

CÆCILIUS FOLIUS in *delineatione auris interna*, Venet. 1647. 4. & in *Coll. Disp. nostra* T. IV. tum in epistolis **BARTHOLINI**, processum, qui etiam nunc ejus nomen fert, accuratius descripsit, depinxit, musculum addidit, organum auditus totum melius delineavit. Semicircularem canalem superiorem & posteriorem in unum ostium conjungi vidit. Processum **FOLIANUM** etiam **VESLINGIUS** pinxit T. 8. f. 6.

MARINUS MERSENNUS *harmonicor.* L. fol. Paris. 1648. & in *harmonia* 1644. 4. & in *Comm. ad Genesin* plurima ad sonos, eorum velocitatem, vibrationum numerum, causas diversitatis tonorum attulit.

ATHANASII KIRCHERI *Musurgia universalis*, Romæ 1650. fol. & ejus compendium Campiduni editum 1673. fol. *Phonergia* nomine. Varia de Echus natura & itinere, soni reflexi multiplicato robore, tuba stentorea, quam sibi tribuit inventam, aure Dionysii habet. Sonos fortes velocius propagari male docuit. Consonantiam instrumentorum familiarum experimento didicit. Habet icones **CASSERI**. A **SCHEIHAMERO** id elogium retulit: primum a **KIRCHERO** se soni naturam didicisse (*Physiolog. posthum.* p. CCCVIII.) In *Physiologia KIRCHERIANA*, quæ per **J. STEPH. KESTLERUM**, Amstelodami 1680. fol. edita est, hypothesis est, qua soni cum certis coloribus, cœruleo rubrove, &c. comparantur.

M. A. SEVERINUS lapillos auditorios piscium dudum dixit, eorumque alterum cum malleo comparavit (*antiperipat.* p. 95.)

G. ROLFINK de officulo quarto ad latera apicis stapedis posito aliqua habet (p. 285.), diversa, ut videtur, a SYLVIANO. Musculum CASSERII non esse nisi membranam recte monuit.

MICH. LYSER de auditu, Lips. 1653. 4. Idem in cultro novam dedit ossis petrosi descriptionem.

J. ANTONIDES van der LINDEN in *medicina physiologica* quartum officulum minutius describit.

LUD. BILS van het gehoor, Brugg. 1655. 4. organum auditus in quatuor partes per futuras resolvit, (quod novum esse fatetur JOHANNES V. HORNE in *vvaaarschouwing* p. 12.) idemque depinxit.

N. STENONIS f. in Libro de glandulis oris, tum DRELINCOURTIUS in *Praludiis glandulas ceruminosas auditorii meatus viderunt*. Sebaceas vero Amstelodamenses in *Colleg. anatom.* p. 31.

In WILLISIO nervi duri describuntur.

In *Phil. Transactionibus*.

HOLDER de surditate, & experimentum hominis, qui non audiret, nisi conjuncto magno externo strepitu, n. 35.

WALLIS de tremore harmonico instrumentorum diversi generis. n. 134.

MORLAND de tuba stentorea, n. 79. 141.

NARCISSUS de sono, n. 156.

MOULIN de capitibus avium eorumque ductibus acusticis & auditus organo, n. 199. 206. Auriculæ mobiles, n. 133.

WALLIS, n. 243. effectus illos fabulosos musices merito castigat Titillatio Chinenſium in auditorio meatu, n. 246.

WALKER de sono, n. 247.

VIEUSSENS de organo auditus, n. 258.

HAWKSBEE sonum educto aere debilitari deinde destrui, n. 297. 321. aeris vero copia in spatio aliquo aucta sani robur intendi. ID.

G. GRANDI nova hypothesis, corpora sonora tremula hyperbolica esse, & sonos ad ambitum secundum hyperbolicas circumferentias moveri, n. 319.

Sonus in aqua profundior fit. ID. 321.

Organum auditus, cellulæ, cranium cellulofum Elephantis, n. 327.

BLAIR organum auditus elephantis, n. 358.

ARDERON contra auditum piscium n. 486.

Echo Mediolanensis 56^{es}. repetens, & camera sonos ad oppositos parietes propagans, n. 480.

FLORENTINI in *Acad. del Cimento* soni celeritatem metiri adgressi sunt.

ROBERTUS BOYLE in *experimentis physico-mechanicis* sonum in vacuo spatio extinguere observavit, & columnas ipsas & ligna cum certis, nec aliis tonis contremiscere (*of languid motion*), & vibrationem in scyphis vitreis descripsit.

Musica speculativa del MENGOLI, Bolon. 1670. 4. Valde paradoxam habet auris anatonien. *

SAM. MORLAND descripsit, sibi que tribuit, stentoream tubam *speaking trumpet*, Lond. 1671. 8.

J. A. FRIDERICI de aure, Jenæ 1670. 4. B. RIV.

G. BRANK de auribus mobilibus, Heidelb. 1676. 4. Collectio.

DAN. GEOR. MORHOF de paradoxis sensuum, Kilon. 1676. 4. EJUSDEM *stentor hyaloclastes* 1672. 4. & Kil. 1683. 4. Occasionem operi dedit experimentum cauponis, qui certo vocis tono, altiori per diapason, quam tonus naturalis vitri, scyphos frangebatur. Ea occasione multa curiosa de vibratione particularum in omnibus corporibus, & crispatione vitri, de ortu & natura soni, & vocis humanæ adfert, &c.

In Mantissa ad G. CHARLETON *Onomasticon Zoicum* officula auditus aselli, manati, ranæ piscatricis, in propria vesicula inclusa describuntur.

PAULI MANFREDI nova observationes circa uveam oculi & aurem, Rom. 1674. 4. & in MANGETI *bibliotheca* Tympanum stapedis habet PAULUS, tum A. MOLINETTUS.

Aphi.

Tum Clar. JOSEPHUS DUVERNEY in suo Tractatu *de l'ouye*, edito in 8. Parisiis (a). In Germania quidem in linguam latinam translatus est; verum quoad figuras pessime descivit a prima editione, & ne textus quidem omnino auctorem adsequitur, hinc emenda est illa editio Parisina. Perfectissimus est ille Libellus. De aquæductu quidem FALLOPII (b), & distributione nervorum in aure, unum & alterum vitium habet, cæterum optimus est. Virenim consumatus in Anatomia, & dolendum est, quod invidia adversariorum suppressa fuerint ea scripta (c), quæ de reliquis organis sensuum digesserat, dixit enim ipse, se de quinque organis sensuum scripsisse.

Possu-

A philosophical essay on musick, Lond. 1677. 4.

J. BOHN *de auditu*, Lips. 1677.

R. PIOTT & in Oxoniensis comitatus historia, & in Staffordiensis descriptiones Echus rariora exempla describit.

P. PERRAULT *Traité du bruit in Essai de Phys.* T. III. & organum auditus descripsit, & depinxit, sed rudius paulum, & theoriâ sonorum proposuit, atque particulas minimas omnes in tremorem agi monuit. Laminam spiralem cochleæ pro organo immediato auditus primus habuit.

J. HENR. GLASSER fissuram in anulo detexit.

DANIEL BARTHOLO *del suono e de' tremori armonici*, Bonon. 1680. 4. Ultima pars Libri anatomica est, desumpta ex BARTHOLINO, RIVA, aliisque, etiam iconibus adjectis. Cæterum vir ingeniosus fuit, & in experiendo diligens, & acutus in concludendo. Princeps scopus est demonstrare a corpore ad corpus consonans harmonicos tremores non per aerem, sed per corpora solida interjecta, propagari. De frangendis vitris per vocem humanam differt a MORHOFIO, & per unisonum scyphos se rupisse refert, plenus cæterum utilibus experimentis. Ita dudum vidit, non tantum unisona instrumenta contremere sibi, sed in alia etiam quacumque ratione, & instrumenta etiam diversissimis generis. Tremores chordarum, aquæ, mercurii, diligenter observavit. Sonos magnos non celeriores esse contra GASSENDUM & KIRCKERUM docuit. Auris Dionysianæ miraculum fere ad nihilum reduxit. Non a numeris pendere gratam naturam tonorum jam eo tempore monuit.

(a) JOSEPHUS GUICHARD DUVERNEY *Traité de l'organe, de l'ouïe*, Paris. 1683. 12. Norimb. 1684. 4. Leid. 1731. 12. Germanice etiam, Berolini 1732. 8. & Anglice. Prælua hujus operis reperiuntur in *JOURN. des SAV.* n. 17. Icones inprimis pulcherrimas habet, manu SEBASTIANI CLERICI sculptas. Plurima invenit aut perfecit. Glandulas ceruminosas meatus auditorii, tympani chordam, musculus stapideum, fabricam cochleæ, canales quos a situ definivit, nervos molles, durosque, fabricam auris in fetu exposuit. De morbis egregiam tractationem addit.

JOSEPHI GUICHARD DUVERNEY citatum ibi opusculum recusum est Paris. 1718. 12.

(b) In nomine tubæ (quam tamen bene cognitam habebat) aberravit, processum longissimum prætervidit.

(c) Spes est aliqua prodituros aliquando latentes codices DUVERNEYI, quos edendos susceperunt WINSLOWUS, PETITUS & MORANDUS (*Anc. Mém.* T. III. P. III. *Præf.*) Acerbum vero judicium in DUVERNEYUM LAMY (*préface au traité de l'ame sensitive*) nemo aut credit aut probat. Quare vero nihil prodierit de tam multis in insectis, & in reliqua anatome, viri nonagenarii laboribus, cernere est in vita, quam scripsit FONTENELLIUS. Infatiabili enim ardore ferebatur in novas inquisitiones, & ex ipsis laboribus, in novos labores se sinebat duci, omissis prioribus.

GUNTHERUS CHRISTOPHORUS SCHELHAMMER Librum *de auditu* singulare medidit, Leidæ 1684. 8. Multum refutationum ibi reperies, contra recentissimum inprimis DUVERNEYUM, cui neglectum musculus CASSERII exprobrat, ipse non valde anatomicus, qui
& mu-

& musculos auris externæ, & chordam tympani præfracte negat. Cæterum sonum, per radios propagari, & in meatu auditorio colligi in focum quemdam, imprimis sumpsit demonstrandum. In musculo interno vidit ossiculum.

M. MAPPUS de aurium cerumine, Argentor. 1684. 4. De fumo per aures eunte agit, additq; D. COLLE statuere foramen in membrana tympani, se vero fidem non facile adhibere.

S. COLLINS in T. II. fig. 14. processum longissimum mallei depingit.

A. LAMY explication de l'ame sensitive des organes des sens, des passions &c. & description exacte de l'oreille, seconde edition augmentée, Paris. 1687. 12. Ipse quidem LAMY utebatur unice experimentis & industria MERYI. Physiologica satis mira proposuit, aerem per aurem respiratum circulum obire a fenestra ovali nempe per vestibulum, anulos & cochleam, in tympanum per foramen rotundum redire, indeque exire per tubam.

Quod MERYI opusculum attinet, videtur id aliquamdiu ineditum mansisse, & esse DUVERNEYANO vetustius, cum PERRALTUM carpat, non nominet DUVERNEYUM, & privilegium datum sit 1677. Habet diligenter præparatam cochleam, osse petroso undique remoto, ut nuda supersit, qualem nos præparare solemus; scalarum foramen communicans; laminam semiosseam; tres intersectiones auditorii meatus; stapedis membranam; icones pulchras. Rudes errores retinuit. De molli nervo quidquam cochleam subire negavit, chordam tympani pro musculo incudis descripsit, noluit ullam esse in vestibulo anulisve membranam, aut periossteum ossiculorum, quod etiam DUVERNEYUS negavit.

GUILIELMUS COWPER in Myologia parva ossiculum in stapideo a D. ADAIR visum memorat, dat organi auditus iconem. In app. ad BIDLOUM fol. 8. de apertura in suprema parte meatus auditorii agit, per quam fumus ore receptus effletur per hiatum, qui eo loco in anulo reperiatur. In Myotomia majori nitidiores icones ossiculorum & musculorum exhibet.

J. M. HOFMANN de auditu, Altdorf. 1684. 4.

G. WELSCH de sono, Lipsi. 1690. 4.

L. F. MEISNER de auditu ipsiusque virtutis, Prag. 1690. 4. fig. *

J. ANDREAS SCHMIDT auris ὁδόντος, Jen. 1694. Disp.

In JOUR. des SAV. 1694. n. 30. aliqua habentur de distantia, quam sonus percurrere potest.

JOH. MUNNIK increbescens nunc hiatum tympani confirmat.

GEMINIANI MONTANARI in Galleria di Minerva T. I. exstat tractatus de tuba stenorea, cujus vim recte explicat per Echus plurimas cum sono primitivo confusas. IDEM liber recusus an. 1715. 8. recensetur in GALLERIA di MIN. T. VII. p. 286.

ISAACUS NEWTON causam soni & naturam tremoris elastici aperuit in Princ. Phil. Natur. L. II. Pr. 43. Celeritatem etiam soni per ipsas causas definivit.

In Mémoires de l'Academie Royale des Sciences.

In Anciens Mémoires.

Meatus auditorii in piscibus minimi, per quos nervus auditorius distribuitur DUVERNEY T. I. p. 280. IDEM apud du HAMELIUM de chorda aliqua habet.

PH. de la HIRE de la trompette marine. Requiri tremores particularum ad sonum. Apud du HAMEL celeritas soni a CASSINO ad 1094' intra 1" definitur.

De circulis a razione vitri duplicatis, quando sonus octava adscendit BLONDEL.

Echus explicatio T. X.

In dissectionibus animalium testudinis organum describitur.

In novis monumentis.

Sonus non transit per vacuum MARIOTTE 1699.

SAUVEUR de sono fixo &c. 1700. 1701. 1702. 1707. 1711. 1713.

Effectus musices in iis, quos Tarantula pupugit 1702.

Surdus & mutus aqua de aure effluxa sponte sanatus.

DODART de tonis, voce, & cantu 1706.

Requiri ad sonum tremorem elementorum corporis sonori: & Echo duodecies repetens 1710.

Surdus oculis audiens 1737.

MAIRAN de sono. Particulas statuit in aere diverso gradu elasticas, hinc ad hunc illumve sonum recipiendum aptiores. Totum auditus mechanismum, etiam in aure persequitur. 1737.

Possimus adjungere Italum illum ANOTNIUM MARIAM VALSALVAM, sed duodecim certe paginae facile continerent ea omnia, quae praeter Duverneyana habet (a). Propter egregias tamen quasdam observationes potest comparere sibi illum tiro Medicus.

SCHEL.

Experimenta accuratiora ad definiendam velocitatem soni 1738. Eam autem majorem esse in regionibus calidioribus expertus est in itinere suo la CONDAMINE.

Sub aqua audiri NOLLET. 1743.

Lettre de Mr. de HAUTEFEUILLE a Mr. BOURDELOT sur le moyen de perfectionner l'ouïe avec deux Lettres de Mr. PERRAULT sur le même sujet. Paris. 1702. 8. *

MART. NABOTH de organo auditus, Lips. 1703. Disp. *

(a) ANT. MAR. VALSAEVÆ de aure humana Liber, Bonon. 1704. 4. Ultrajecti. 1707. 4. & cum vita & posthumis dissertationibus atque doctissimis MORGAGNI Epistolis, Venetiis 1740. 4. In illo quidem opere VALSALVA subtiliter in multis versatus est. Canaliculum semicircularium mensuras sumpsit, & inde nomina repetiit. Musculos externae auris subtilius investigavit. Tubam accurate contemplatus est. Glandulas sebaceas constituit. Morbos aliquos descripsit. Nævus nodo fuso persequi. Processum mallei longissimum ignoravit, zonas sonoras non bene in theoriam intulit. Posthumus codex, cui Auctor notas aliquas adjecit, non pervenit ad MORGAGNUM, neque post ejus excessum inventus est.

J. B. MORGAGNUS in Epistolis XI. prioribus in VALSALVAM commentatur, & multa de itineribus nervi mollis, vestibulo, membrana tympani, ejus epidermide, tacta KERKINGIO, muscoli a VIEUSSENIO confusi, foramine fictitio tympani, tuba, nervulis minoribus ex hiatu aquæductus exeuntibus, &c. accurate definita & cum plurima eruditione adjecit.

NEHEMIAS GREW in Cosmologia sacra utiles aliquas de auribus animalium telologias dedit p. 24.

CAROLUS PLUMIER in Journal de Trevoux 1703. anatomen organi auditus testudinis dedit, & crocodili.

ERNEST HENRIC WEDEL de cerumine, Jen. 1705. 4

In Lettres de DESNOUES & de GUILLIELMINI p. 204. continetur notissima BARTHOLOMÆI SIMONCELLI delineatio nervi auditorii, quæ nihil ferri habet, præter nervulum ex hiatu aquæductus exeuntem. Confer HEISTERI appendicem Compendii anatomici & E. CAMERARII Epistolam Taurinensem.

DEMEHERENC de la CONSEILLERE de auditu, Ultrajecti 1710. 4.

G. DERHAM in Physicotheologia multa ex anatome animalium habet. Vidit in talpa a motis ossiculis nervum auditorium pulsatum fuisse. Avium organum auditus descripsit, De celeritate soni experimenta fecit, n. 313.

J. JAC. RAVIUS nihil quidem scripsit, sed auditoribus processum FOLIANUM, dudum obsoletum, demonstravit, & in anatomen reduxit.

NICOLAUS HARTSOEKER in Physicis animam numerare undas aëris ante nuperos scriptores suspicatus est.

A. Q. RIVINUS de auditus vitiis, Lips. 1717. 4. Cum dudum aliqua de foramine tympani fuisset memoria, apud scriptores varios, & HILDANUS, SCHNEIDERUS de ossibus temporum, LINDANUS, MAPPUS PLUMERIUS Journal de Trev. 1703. augm. alique de eo verba fecissent, & experimenta ipsa consentirent VALSALVÆ, GLASERI, MANGETI in theatro, tandem disertius id foramen adseruit RIVINUS, posuitque ad latus posterius ferre summi manubrii, & iconem dedit, dixitque sphinctere clausum esse, & inventum a se ipso an. 1689. Favit invento LEPROTUS in Bonon. Comment. I. & H. A. NICOLAI, & B. TEICHMEYERUS, & CHESELDENIUS, & J. J. RAV. Nos cum MORGAGNO in Epistola V. J. WILHELMO PAULI (præf. ad J. van HORNE), CL. FRIDERICO WALTHER, CASSEBOHMIO aliisque nunquam reperimus.

J. ANDREAS SCHMID de periosteis ossiculorum auditus ejusque vasculis, Leid. 1719. 4. ea vasa

vasa pinxit negata **DUVERNEYO**, & processum longissimum, de ejus vero iconis ruditate ipse in *Orat. de Germanorum meritis in anatomia conquestus est.*

RAYM. VIEUSSENS jam in *Phil. Transf.* n. 258. dederat operis sui prodromum, & **VALSALVAM** sibi nonnulla præripuisse questus erat. Deinde an. 1714. Tolosæ edidit *Traité sur la structure de l'oreille*, 4. Vitiolas dedit aut pallidas certe icones, quas vix adgnoscas. confudit duos musculos mallei in unum monogastricum, descriptiones dedit difficiles. Scyphum tamen nervi auditorii satis vere descripsit.

J. MATTHIAS HAASE de *tubis stentoriis*, Lipsi. 1719. 4. In conjunctione ellipseos & parabolæ perfectionem hujus tubæ quæsit.

J. MATTHIÆ HAASE citati libelli duæ editiones sunt, brevior una cum titulo de *tubis stentoreis earumque forma & structura fundamenta, praxes, exhibens*, 18. Mart. 1719. 4. Altera vero *Diff. physico mathematica de tubis stentoreis in qua de constructione & figura earum exponitur* &c. ibid. eodem anno prodiit, quæ plenior est. Ostenditur contra **F. de LANZA**, sonum non progredi undarum modo, & contra eundem adferitur, radios sonoros in altero foco ellipseos colligi. Inde examinat hætenus propositas tubarum fabricas **MORLANDI**, **CASSEGRAIN**, **MULLERI** & **CONYERI**. Ipse proponit tubam compositam ex ellipsi & parabola. Uni foco ellipseos os adaptat, ut vox in altero colligatur. Is idem secundus focus est focus parabolæ, ut ex eo parietes ejus illapsi radii paralleli exeant. Non tamen expertus est.

ARENT CANT processum longissimum mallei depinxit.

J. SALZMANN de *aure humana*, Argentor. 1719. Disp.

J. DOMINICUS SANTORINUS in observationibus musculos minores externæ auris, processus helicis aliaque minute persecutus est.

J. A. KULMUS de *auditu*, Gedan. 1724. 4. Idem pro hiatu **RIVINI** etiam testimonium dixit.

A. F. WALTHER de *membrana tympani*, Lipsi. 1725. 4. & in Vol. *Disp.* IV. Foramina tympani **VALSALVIANA** pro arteriis facta esse ostendit, de membrana tympani ejusque imaginario foramine egit, &c. In *anatomie muscutorum teneriorum* musculos auris externæ repetiit.

De sonis in chorda tacta *Journal. de Trevoux* 1722.

GODOFREDI du BOIS de *sono & auditu*, Leid. 1725. 4. docta Disputatio.

In *Actis Petropolitanis* T. VII. CL. **WEITBRECHT** de musculis minoribus auris egit.

L. HEISTERUS bonam mallei iconem dedit, processum longissimum expressit, nonnunquam tendineum esse recte monuit.

W. CHESELDEN exempla hominum attulit, qualia **SCHNEIDERUS** & **WILLISIUS** habent, quibus auditus non perierat destructa membrana tympani, aliqua phænomena explicat ex aliorum nervorum cum duro consensu.

H. F. TEICHMEYER in *anthropologia & vindictis quorundam inventorum anatomicorum*, Jen. 1727. 4. Coll. nostræ Vol. IV. hiatum **RIVINI** defendit, & valvulam habere testatur, ossicula nova unum inter malleum & incudem, alterum in musculo stapedis, denique ultimum in ramo incudis breviori descripsit.

In *Commercio litterario Norico* 1731. & in *E. N. C.* Vol. I. VI. CL. **TREWIIUS** de epidermide & laminis tympani egit. An. 1743. vero exempla habet surdorum, qui ope dentium audierunt.

LEONH. FERDINAND. MEISNER de *auditu ejusque vitiis*, Prag. 1726. 4. * An non eadem *Diff.* cum ea quam an. 1690. recensui?

B. S. ALBINUS musculos auris de integro recensuit, noviter ordinavit, nomina imposuit, depictos dedit. In *osteologia* etiam nitidissimas ossiculorum & organorum auditus icones exhibuit.

In *Academia Burdigalensi*, inque Tomo I. **HAUTEFEUILLE** Dissertationem dedit de Echo eamque defendit fieri radiis non parallelis sed convergendo reflexis.

HAGEN de *mensura soni articulari*, Hall. 1731. 4.

J. B. WINSLOW de more in tympano, promontorio, cellulis mastoideis, totoque eo organo diligentissime versatus est.

F. RUYSCHIIUS in *Epistola* VIII. periosteum & vasa ossiculorum auditus, & laminas membranæ tympani invenit & constituit.

J. FRIDERICUS CASSEBOHM de *aure interna* dederat inauguralem Disputationem Francof.

ad Viadr. 1730. 4. *EFUS Tractatus I. II. & III. de aure interna*, Halæ 1730. *Quartus* an. 1734. *Quintus & sextus* prodierunt 1735. 4. Laboriosissimo opere inprimis organum auditus ex fetu descripsit, & cum adulto comparavit, mutationes successivas consideravit. Vasorum organi auditus origines, cochleæ spiram, hamulum, & alia diligentissime persecutus est. Zonas *KALSALVÆ* & foramen membranæ tympani refutavit.

J. JAC. SACHS & SCHERTZ de sono, Argent. 1731.

G. M. BOE de hyperhesi soni PERRALTIANA, Lipsi. 1734. 4.

In *Journal de TREVoux* 1734. proponitur machina, ex speculis ligneis deauratis in parabolam fictis, in qua soni in uno foco pronunciati fortissime conservantur & in alterum focum transferuntur.

FR. NICHOLLS de chorda tympani paradoxam opinionem protulit, in *compendio anat.* nempe musculosam naturam habere.

SENNACUS in novis ad *HEISTERUM* commentariis receptam theoriam oppugnat, qua lamina spiralis pro organo auditus habetur, eamque gloriam tribuit mediæ canalium semicircularium parti.

FRID. WILH. KUHN pars I. *scrutinii sensus auditus*, Regiomont. 1736. 4. PL. *

CHRISTIANUS WOLF in III. tomo *der nützlichen Versuche* de sono fuse egit, deque tubis stentoreis, soni in vacuo spatio suffocatione, campanæ percussæ dilatatione & restitutione, &c.

R. HELSHAM in Libro sæpe citato naturam soni breviter & faciliter exposuit, & causas gravium acutorumque sonorum, celeritates, multiplicationem ab illisu in corpora elastica, tubam stentoream proposuit a logarithmica circa axin suam revoluta factam.

J. GORTERUS in *Chirurgia* membranam adscititiam membranæ tympani & muci vim ad suffocandos sonos considerat.

AL. MONROO in III. *Edimburgensium* ejus etiam membranæ fabricam describit.

R. COTES in *lectionibus* quas Gallice legi *sur l'équilibre des liqueurs & sur la nature & les propriétés de l'air*, de sono aliqua habet, quæ legi merentur.

G. J. 's GRAVESANDE & P. van MUSSCHENBROEK capita de sono & auditu merito leguntur, tum *CL. NOLLET* in *tertia parte Physices experim.* ubi sonum per aquam propagari demonstravit, & fumum tabaci per aurem exire falsum esse ostendit, sonometrum proposuit.

CL. NICOLAUS LE CAT in *Traité des sens* icones hujus organi non optimas dedit, & physiologiam soni. Auditus organum etiam in cochlea ponit.

LEONH. EULLER *tentamen novum theoria Musica*, Petropol. 1739. Pleraque physica & mathematica sunt. Suavitatis causam in parvitate numerorum posuit, quibus tremorum proportionem exprimantur, deinde in ordine, quando causas ordinis facile prævidemus. Vibrationum numeros pro tota longitudine instrumenti determinavit, & ad sonos in musica receptos adaptavit, &c. In *Dissertatione de sono*, Basil. 1728. 4. celeritatem soni a priori definivit, & propius, quam *NEWTONUS*, ad veritatem accessit. In *opusculis*, Berolin. 1746. 4. contra *MAIRANI* particulas aeris diverso gradu elasticas objicit, non posse eas diversitates diu superesse, & sponte debere æqualitatem renasci.

CL. CRAMER in *Journ. des Sav.* 1741. contra laminæ spiralis dignitatem in auditu objicit.

THEOD. PYL *de auditu in genere* Gryphiswald. 1742. Disp. Ex *ALBINI* experimento cellulositatem membranæ tympani descripsit.

In *A. STOKHOLMIENSIBUS* 1741. *Trimest.* I. habetur *Dissertatio* de distantiarum ex soni mora æstimatione.

P. C. FABRICIUS anastomoses nervi duri varias, periosteum internum ossiculorum auditus descripsit.

WILH. DAN. LILLIE *de auditu*, Leid. 1743. Disp.

CL. HEUTAUD organum auditus singulari diligentia descripsit: quatuor laminas membranæ tympani: ligamenta quæ pro musculis habita sunt (nam solum admittit internum) & alia nova proposuit; cartilagine tubæ accuratius enumeravit. Tympanum etiam fenestræ ovali non bene tribuit.

J. T. KLEIN in *manriffa anatomica de sono & auditu piscium*, Lipsiæ 1746. 4. eum audi-

SCHELHAMMERUS potest addi, sed qui **DUVERNEYUM** & **EUSTACHIUM** habent, facile reliquis carere possunt (a).

auditum defendit. Idem in *ichthyologicis* fuse ossicula auditus ex variis piscibus depingit.

J. G. BRENDL in duobus progr. *de auditu in apice cochleæ*, Gotting. 1747. 4. & in *Diss. nostris* T. IV. Infundibulum inprimis sursum latefcens descripsit in apice nuclei cochleæ, in quo uterque canalis convenit, & pro organo auditus proposuit.

CL. J. GOTTLOB KRUGERUS in *physiologia* sua, tum **C. G. KRAZENSTEIN** *beuveifs* *dass die seele den Körper baue* & **E. A. NICOLAI** *von der schönheit*: & in *Libro von der Musc* **EULERUM** secuti sunt, ut doceant animam numerare tremores aeris elastici, sibi que placere in iis, quorum harmoniæ numeris minoribus exprimuntur.

CL. J. F. MEKELIUS in *Disp. de nervo Quinti Paris* chordam tympani ex duro nervo oriri, & a secundo ramo Quinti luculentum ramum accipere, primus ostendit.

In **CAROLI TAGLINI** *lettere scientifiche* duæ huc pertinent, una de cantu fringillæ marinæ, altera de diversis sonis, quos una chorda edit.

J. T. KLEIN hoc loco citatus, audire pisces etiam in *PHIL. Transf. & Actis Gedanken* sibus confirmat.

GIAN. LUDOV. BIANCONI *due lettere al Marchese Maffei*, Venet. 1746. 4. Altera de sono agit.

GIAN. LUD. BIANCONI in citata epistola, quæ de sono agit, observationes profert, quibus per experimenta cognovit, hyeme sonum lentius, quam æstate, progressum esse, in ratione 76. 78.

In III. Tom. *description du cabinet du Roi* **CL. BUFFONUS** ostendit quemlibet sonum ex multis minoribus sonis constare. Tonos differre credit, non ex numero ictuum, sed ex eorum robore, ut debiliores ictus altiores tonos producant. Ossicula auditus pene inutilia facit.

CL. DIDEROT in *mémoires sur divers sujets de mathématique* gratiam sonorum ponit in uniformitate, in numero vibrationum intra quodlibet æquale tempusculum natarum.

RAMEAU magni musici, *demonstration du principe de l'harmonie*, Paris. 1750. 8.

De Olfactu.

(a) *Olfactus* sensum hic omisit Auctor codicis nostri. Eum ergo supplere visum est, etsi omnino pauci scriptores suum laborem ad has unice partes converterunt. Osteologi equidem omnes, dum ossa maxillæ superioris describunt, has etiam partes non potuerunt non hactenus recensere. Sed eos tamen inprimis citare visum est, qui peculiari cura & industria usi sunt.

CLAUDIUS GALENUS in *Libro de instrumento olfactus* & alibi, theoriam eam docet, ut aer per nares in cerebrum veniat, inque ventriculis anterioribus organum olfactus sit, mucus vero a cerebro per foramina cribrosa in nares descendat.

Eadem **ORIBASIUS** repetit & reliqui medici: membranam **IDEM** continuam os naresque obducere & fauces, recte scribit.

J. BERENGARIUS CARPUS (in *Comm. in Mund.* p. CCCCX.) sinus frontales primus, nisi fallor describit: nihil a cerebro in nares venire per os cribrosum dudum vidit. Eosdem sinus frontales **C. STEPHANUS** habet p. 250. & alii.

G. a ZERBIS olfactorium nervum primus in numerum recepit.

J. SYLVIVS in *calumniarum depulsionibus* sinus sphenoides satis recte proponit.

A. VESALIUS & frontales, & sphenoides cavitates dixit (*Exam. Obs. Fallop.* p. 32.) catarrhos per os cribrosum transire negavit. Neque sinus maxillares ignoravit.

G. FALLOPIUS primus os cribrosum seorsim de integro descripsit, habitum sinuum in fetibus observavit.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS in Tabula ultima f. 6. 7. ossa narium, & inter ea os palati simpliciter sed vere expressit, in Tabula XLI. vero musculos.

Cellulæ ethmoidæ, nisi fallor, inventum sunt **PH. INGRASSIÆ**.

CONST. VAROLIUS apertam aliquam viam a ventriculis anterioribus ad nervum olfactorium negavit.

JULIUS CASSERIUS in *pentasthesio* in Tractatu de naribus multa bona habet, musculos narium noviter pictos, ossa spongiosa omnino tria c. 16. T. 6. f. 7. ethmoidæ cellulas T. V. f. 2. &c. & varia alia, etiam ex animalibus, ut omnino hic inter primos legi mereatur.

JOH. RIOLANUS in *Tr. isagogico* & alibi, sinus pituitarios abunde describit.

J. B. HELMONTIUS catarrhos a cerebro per os cribrosum venire pariter negavit.

VOP. F. PLEMPHUS *van de spieren motum narium in respiratione adseruit.*

DAN. MYLLER *theoria trium sensuum exteriorum, olfactus, gustus, & tactus*, Lips. 1639.

4. B. RIV. *

PETR. SERVIUS *de odoribus*, Rom. 1641. 8. * PL.

NATHANAEL HIGMOR sinuum varietates dedit, maxillarem, uti notum est; addita Chirurgica observatione ita sibi proprium fecit, ut etiam nunc nomine ejus appelletur.

CONRAD VICTOR SCHNEIDER *de osse cribriformi*, VVittemb. 1655. 12. Princeps scopus est ostendere, neque catarrhos a cerebro per os cribrosum descendere, neque aerem ea via in cerebrum venire. Ea occasione etiam ossa spongiosa naresque variorum animalium describit. De nervis per os cribrosum descendantibus dubius fuit, os ipsum diligenter consideravit. IDEM in Libro *de Catarrhis* imprimis III. membranam pituitariam fuisse, maxime ex animalibus, descripsit, in ea mucum catarrhorum generari nihilque a cerebro accedere ita docte ostendit, ut plerisque sequaces habuerit, LOWERUM imprimis, qui etiam experimenta eo spectantia fecit, quæ edita sunt cum Libro *de corde*. Cæterum eruditissimus SCHNEIDERUS, etiam nimis, si id fieri potest, doctus fuit, nimis multas scriptorum oblivionem potius meritorum opiniones collegit, ita opus nimis amplum fecit, & difficilius lectu, cum rarius Auctor, frequentissime loquantur alii. Ita PRÆCEPTOR in prælectionibus scripsit.

T. WILLIS *de cerebro sinus frontales depinxit, de nervo olfactorio egit.*

J. B. SEBIZ *de instrumentis olfactus*, Argentor. 1662. 4. B. RIV. *

NICOLAUS STENONIS F. in *specimine myologia spiralia ossa spongiosa animalium*: in Libro *de vasis narium glandulas ejus partis, & sinus mucosos animalium* descripsit. Eo ductus sibi etiam adscripsit G. NEEDHAM.

In *Phil. Transactionibus*.

N. 139. DUVERNEY *de naribus egit. Glandulas exiguas in naribus descripsit, & nares & laminata ossa animalium sagacium.*

N. 326. Proboscis Elephanti BLAIR.

N. 327. Laminæ ossis cribrosi Elephanti BLAIR.

ANTONIUS MOLINETTI in *Dissertatione anatomic. physiol. de sensibus*, Patav. 1669. 4. etiam eum sensum attigit.

P. COLLINS fuisse & diligenter organa olfactus descripsit, valde artificiosa, & in piscibus, quæ laminis parallelis plena sunt: & in avibus. Glandulas etiam narium muciferas habet.

In R. BOILE *Tractatu de mira efficacia effluviarum, & altero de origine qualitatuum particularium* multa habentur experimenta, quæ ad odorem naturam faciunt.

C. BARTHOLINUS in *Actis Hafniensibus* T. V. *Observ.* 16. & in scripto *de olfactus organo*, Hafniæ 1679. 4. & in *specimine historia anatomica*, Hafn. 1701. 4. animalium spiralia & elegantes fabrefacta ossa cribrosa depinxit.

CL. PERRAULT in *Essais de physique* T. III. varia observavit: Bruta animalia sensum olfactus a nostro diversum habere supponit, intra nares esse organum sensus olfactus demonstrat *de l'odorat, &c.*

J. BOHNIVS etiam organa olfactus ex brutis describit (in *circulo* p. 279. &c.)

J. M. HOFMANN *de olfactus organo*, Altdorf. 1680. 4. IDEM in sua C. H. *idea processus mamillares cavos facit.*

RAIMUNDUS VIEUSSENS cellulas ethmoideas; nervos olfactus per os cribrosum euntes; viam eo patentem pro injecto liquore tincto; membranam pituitariam ejusque poros descripsit in *Neurographia*.

J. MERY in *progrès de la Médecine* nervos olfactorios ab officio removit, idque tribuit nervis Quinti paris, quod neque in nares deduci illi olfactorii queant, neque olfactus abfuerit, cum callosi essent.

VERHEIJENIVS etiam cellulas ethmoideas descripsit, & narium cartilagineas.

J. G. BERGER *de odoratu*, VVittemb. 1698. Disp.

ACADEMICI PARISIINI in suis animalium descriptionibus multa ad ossa spongiosa animalium addiderunt, glandulas narium dixerunt, refutaverant conjunctionem nervi olfactorii cum ventriculis anterioribus.

In recentiori Academia huc pertinent.

MORAND de ossibus spongiosis animalium 1724.

HUNAUD de lamina descendente ab osse spongioso superiori ad inferius 1730.

J. E. BERTIN 1744. nova officula descripsit, quæ sinuum sphenoidaeorum partem constituent.

J. H. SBARAGLI in oculor. & mentis vigiliis aliqua ad nares adspersit; negavit papillas.

J. PALFY elegantes in osteologia figuras dedit ad sinus narium, ethmoideos, sphenoidaeos.

J. B. MORGAGNUS in *Adversario* VI. narium fabricam recognovit, tertium os spongiosum prioribus addidit, poros membranæ pituitariæ, sinus, nervos olfactorios, in naso musculos descripsit (in explic. EUST.)

BENJ. EWALDT de olfactu, Regiom. 1708.

In JACOBI DRAKE iconibus a COWPERO communicatis, & in T. XVII. dedit icones narium, cellularumque ethmoidearum & poros narium.

J. A. SLEVOGT de processibus mammillaribus cerebri, Jen. 1715. 4. & in coll. nostra T. II. revocavit antiquam sententiam, cavos esse eos processus. EJUSD. de olfactus præstantia progr. Jenæ 1715. 4.

J. F. FLATO de narium fabrica, usu & morbis, Leid. 1721. 4.

SEBAST. REININGER de cavitatibus ossium cranii, Altorf. 1722. 4. jam laudatus est, SCHULZII procul dubio labor, ipso vindicante in biogr. Altdorf.

J. DOMINICUS SANTORINUS in observationibus multa subtiliter rimatus est, nova ossa turbinata proposuit, ossa spongiosa inferiora ad os palati, vomerem ad cribrosum revocavit cartilaginem nasi mediam cum lateralibus conjunxit. Musculos narium externarum persubtiliter auxit.

W. STUKELEY cellulas narium elephanti depinxit (app. I. de Liene).

In *Miscellaneis Berolinensibus* AUGUSTINUS BUDÆUS in Cont. II. bonas ad sinus ethmoideos aliosque observationes proposuit.

In Cont. IV. VATERUS a sacco nasali in sinum maxillarem viam esse invenit. IDEM in Dissertatione de polypo nasi descripsit glandulas sinus maxillaris.

H. BOERHAAVE in Tractatu de fabrica glandularum in mucosos fontes narium inquisivit, tum KAAUWIUS (perspir. p. 239.), CL. WALTHERUS, ALBINUS, LIEUTAUD, WEITBRECHT *At.* Petrop. T. IX.

FRIDERICUS RUTSCH sparsim de naribus egit. In Ep. VIII. T. 9. & alibi vasa septi narium pinxit: in ea epistola auxit numerum cartilagineum nasi. In *Thef.* IV. n. 3. V. n. 30. ramos nervi olfactorii, a multis negatos, persecutus est. In *Thef.* VII. vasa arteriosa mucosa narium descripsit, & in *Thef.* II. & III. T. 4. f. 5. ductum majorem septi narium, porosque in Ep. VIII. delineavit.

J. OSTERLING de olfactu, Leid. 1731. Disp.

ALEXANDER MONROUS in Libro de Ossibus cellulas pituitarias diligenter descripsit.

H. van de POLL de partibus quæ olfactui inserviunt, Leid. 1735. 4.

In *Syllabo Russico*, sæpe laudato, sectio cranii & sinus sphenoidaei atque ethmoidei ad naturam exprimuntur, & ossis cribrosi novæ figuræ.

CL. GUNZIUS de humoribus p. 180. poros narium descripsit membranamque.

CL. NIC. LE CAT narium glandulas nimis, ni fallor, conspicuas pinxit, villos papillares membranæ pituitariæ tribuit. Eas glandulas negavit CL. SENAC.

CL. NICHOLLS sinus sphenoidaeos ethmoideo ossi tribuit.

LEONH. SPEISEGGER de olfactu, Leid. 1743. Disp. Papillas narium ex observationibus ALBINI describit.

W. CHESELDENIUS negavit nervos olfactorios ad nares descendere. In magno opere etiam narium sectionem pinxit.

D. BOUILLET in tomo altero *Elémens de pratique*, Beziers 1746. 4. catarrhos per ossis cribrosi foramina omnino defluere, eam viam apertam esse, aeremque per nares ad cerebrum venire nonnullis experimentis conatus est confirmare.

FRID. BOERNER de mirabili narium structura, Brunsvici, 1747. 4. *

Nos iconem narium sinuumque pituitariorum, ni fallor, non malam dedimus, vasa etiam descripsimus narium, uti nervos J. F. MEEKELIUS l. sæpe citato.

In CAR. TAGLINI litteris scientificis, Florent. 1747. 4. exstat epistola, in qua quaeritur quare odores Veteribus grati nobis ingrati facti sint.

De Lingua.

DUO Auctores notissimi sunt; nimirum LAURENTIUS BELLINI de gustus organo (a), Lugduni Batavorum 1711. editus, qui tamen nihil habet, si conferatur cum MALPIGHIO de Lingua (b), ubi ea pars adcurate descripta habetur.

Quæ FRACASSATUS addidit, multum molis sed parum nervorum habent (c).
Nunc

(a) Ad fabricam linguæ veteres vix quidquam contulerunt, qui ejus carnem pro simplici & uniformi habuerunt, & eum sensum per varia loca dispersum esse docuerunt, qualis adhuc proximo tempore sententia fuit NEHEMIÆ GREW in *analys. plant.* qui valde curiose in experimento versatus est, & THOMÆ WHARTONI, qui linguam etiam pro musculo agnovit.

ARETÆUS de acut. pass. c. 7. linguam musculum esse & nervos sapienter scripsit. THEOPHRASTUS de caus. L. VI. c. 12. cognationem saporis cum odore vidit, ibidemque c. 2. videmus, jam DEMOCRITUM saporum diversitatem per figuras particularum explicasse.

LAU. GRELLI de sapore dulci & amaro L. II. Prag. 1566. 4.

FALLOPIUS crustam villosam linguæ descripsit, & villosæ ventriculi similem fecit.

J. BRAVI de saporum & odorum differentiis, Venet. 1592. 8. *

J. BRAVI lib. cit. collectio est ex veteribus absque experimento.

Non alibi, quam in gustu, brevior fuit CASSERIUS.

NICOLAUS STENONIS de musc. & gland. fibras linguæ.

LAURENTIUS BELLINUS de gustus organo ad M. MALPIGHIIUM, Bonon. 1665. 12. Leidæ 1711. &c. Papillas ex aliquot nerveis fibris coeuntibus, corpus reticulare, & epidermidis vaginas descripsit, obscuriori sermone, ut solebat. Sapo- res nusquam, nisi in lingua percipi, neque ibi nisi in papillis, per experimenta ostendit. Salium figuras descripsit.

JOHANNI van HORNE papillas linguæ primum expositas nescio an jure tribuit W. ten RHYNE de bile veterum duplici p. 78. 79.

(b) MALPIGHIIUS in Epistola de lingua ad J. A. BORELLUM, Bonon. 1665. 12. describit papillas linguæ triplices, nervoseo tendentes, corpus reticulatum, per quod papillæ transeunt, vaginas epidermidis in quas subeunt, fibras linguæ motrices variæ directionis, glandulas ad basin linguæ & in oesophagi principio, ex ruminantibus animalibus omnia. Papillas pro sede gustus habet. Ante BELLINUM scripsisse videtur in Sicilia, cum in Epistola de tactus organo, quæ recentior est ea de lingua, BELLINI opus sub prelo esse ajat p. 46. edit. Neapol. Ea vero, quam descripsit, fabrica, ut fere omnia MALPIGHII, avidissime ubique recepta & in libros translata, multis erroris occasio fuit, qui visam in animalibus fabricam ad hominem transtulerunt, a quo longe abest.

(c) CAROLUS FRACASSATUS in Ep. de lingua ad eundem BORELLUM cum priori edita, papillas etiam, quo nervi perveniunt describit: deinde se in varia diffundit, de salibus, saliumque figuris. Uterque amicus scripsit fere eodem tempore, non communis observationibus. Cum MALPIGHII operibus in editione Leidensi recusa est, tum in Bibliotheca MANGETI.

H. MEIBOMIUS apud JUSTUM SCHRADER in obss. anat. Dec. I. foramen cæcum linguæ invenit, & circumpositas papillas descripsit. O. 3.

J. BOHN. de gustu, Lips. 1676. 4.

J. MAUR. HOFMAN glossographia linguæ statum naturalem & praternaturalem... exponens, Altdorf. 1677. 4. EJ. de gustu 1689. 4. ib.

S. COLLINS foramen cæcum linguæ pinxit, tum papillas majores vicinas piscium, & animalium aliorum descripsit. Palatum gustare negavit.

F. REDUS Ep. de salibus factitis huc legi meretur & conjungi cum BELLINO.

CL. PERRAULT pauca aliqua in Essais T. III. ex brutorum anatome de papillis retentricibus habet.

OL. BORRICH in T. II. *orationum* etiam de *natura dulcedinis* agit.

NEHEMIAS GREW in *analys. plant.* p. 280. sapes fusius & minutius, quam alii, distinxit.

A. LAMY vulgo receptam ex animalibus linguæ descriptionem ita correxit, ut unicam membranam crassam, non reticulatam, unice pro papillis depressam describeret (*Exposition de l'ame sensitive*, p. 44.).

FREDERICUS RUYSCH linguæ papillas arcuatas, conicas & fungiformes, papillas buccales (*Thes.* II. & X.) descripsit & pinxit, easque pro veris gustus organis habuit.

DAVID ABERCROMBY in *Opusculis*, Londini 1687. 12. editis, habet *Tractatum de modo cognoscendi vires plantarum per sapes*.

G. FRANK de *gusta*, Altdorf. 1689. 4. Et in faucibus & in palato gustum exerceri credit. De papillis linguæ ex sue aliqua habet, & de papillis nerveis faucium & tonsillarum.

J. CHRISTIAN SCHAMBERG de *gustu*, Lips. 1689. Disp.

G. COWPER in *introductione* linguæ involucrum verius descripsit, molle, analogum epidermidi, tum ductus patulos exhalantes.

J. HIER. SBARAGLI in *apolog.* & in *vigil. ment. & ocul.* varia contra MALPIGHIIUM objicit, & contra papillas, quæ defint in piscibus, in avibus paucae sint, & contra salium figuras. Contra HORATIUS de FLORIANIS confirmat papillarum ad gustum necessitatem, & cum nervis nexum (p. 175.)

PARISINI Academici papillas duriores retentrices ex variis animalibus, linguæ elephantinae fibras musculosas, genas Gazellæ (Dorcadis Afr.) papillas perforatas in Cameli lingua descripserunt.

G. W. WEDEL *theoria saporum medica*, Jen. 1703. 4. Practica fere absque observationibus physicis aut physiologicis. Medicamenta percurrit ex ordine saporum, & exponit, quid dulcia, quid amara boni faciant.

J. B. MORGAGNUS foramen cæcum, & papillas majores linguæ in *primis adversariis* nitidissime depinxit. Iconem etiam ejus foraminis dedit HEISTERUS in *compendio*.

J. JAC. BAYER de *freno lingua*, Altdorf. 1706. 4.

J. H. HEUCHER de *organo gustus*, VVittemb. 1710. Disp.

J. REINH. KUSTNER de *lingua sana & agra*, Altdorf. 1716. 4. Papillarum linguæ erectionem in gustatione observavit.

ANTONIUS van LEEUWENHOECK plurima ad linguæ fabricam ex animalibus attulit. Huc ergo de lingua alba febrili. *Phil. Transf.* n. 312. 318. de lingua iterum n. 313. Ibi papillas porcinae linguæ describit.

ANTONIUS BIRRIUS in *specimine* pro loco an. 1732. aliqua ad linguæ fabricam monuit.

CL. TREWIUS vasa linguæ, & foramen cæcum, & alias partes dixit in epistola, quam ad me dedit anno 1734.

B. S. ALBINUS fibras vulgo receptas linguæ demonstrari non posse monuit (*de deglutit.* p. 38.), fabricam veriore linguæ, repudiato corpore reticulari perforato docuit, qualem vide descriptam apud D. CORNELISSEN van EBO de *fabrica & usu lingua*, Leid. 1742. & apud J. van REVENHORST de *fabrica & usu lingua*, Leid. 1739. 4. ubi epidermis & cutis linguæ, & papillarum varia genera, simplicium & compositarum, describuntur.

A. F. WALTHER in *Libro de lingua* aliqua ad papillas & folliculos simplices adjecit.

G. W. MÜYS in *Libro de musculi fabrica* carnem linguæ descripsit, systema membrarum diversum esse monuit, & credidit a numero musculorum posse eximi.

A. KAAU observationes ad exhalantia vasa buccarum & linguæ attulit (*de perspir.* p. 113.)

CL. NIC. LE CAT docuit gustum in œtrophago & ipso ventriculo etiam habitare, & famem eo pertinere, papillas in lingua reperiri fungiformes, lenticulatas, pyramidales, analogiam cum olfactu repetiit.

CL. LIEUTAUD papillas etiam linguæ, & pro ipsis perforatum corpus reticulare dixit.

CL. NOLLET, & VERDIER sapes in palato percipi repetierunt, & iste papillas ejus varias descripsit.

In *Phil. Transf.* n. 464. exemplum exstat hominis, qui absque lingua gustabat & loquebatur. Simile exemplum exstat in *Mémoires de l'Académie Royale des Sciences* 1718. & in E. N. C. Dec. I. ann. III.

In *posthumo opere CASSEBOHMII* fuse describitur lingua vitulina, deinde humana.

Nondum prodierunt tabulæ *posthumæ SANTORINI*, in quibus lingua humana depicta habebatur cum suis papillis. Laudatæ sunt ab *EUSEBIO SGUARIO* in *præf.* ad editionem operum *LANCISII*.

CAR. FRID. WALTHER de *gustū & saporibus*, Hall. 1743. 4.

ANDREAS CREUZBERGER Norimbergæ de *gustū & reliquis saporibus analogis*, cum septem coloribus, cogitata & similes de sonis hypotheses nuper edidit 4.

BALTH. J. de *BUCHWALD* de *lingua humana*, Hafn. 1749. 4.

THEOD. ERN. JOS. MOERS de *organo gustus*, Heidelberg. 1750. 4.

Ad sensum tactus necesse est scriptorum historiam adjicere. Veteres & hanc partem anatomes vix attigerunt. *HIPPOCRATES* luculenter equidem excretionem ex vena calida notam habuit *Epidem.* L. VII. S. VI. *περί τροφῆς* Sect. IV. (& vide loca *HIPPOCRATICA* apud *AB. KAAU* de *perspiratione* p. 403. seq. Neque perspiratio ignorata fuit *ARISTOTELI*, qui cutem, arteria, & vena, & nervo dixit constare, & ab hoc perspirationem esse de *spiritu* c. 5. neque *GALENO*, cujus adeo frequens mentio fuit perspirationis (de *usu puls.* c. V. &c.), ut ejus loca a *SANCTORIO* passim exscripta fuisse, monuerit *T. SECKER*, sed neque *CÆLIO* ignorata fuit, qui ἀδναλον διαφύρσιν occultam reddidit dissectionem *Acutor.* L. II. c. 32. neque *NEMESIO* c. 23. 24. neque aliis veterum.

THEOPHRASTUS Chamæleontis prænomina descripsit, & quod mirum, eandem fere, quam *VALISNERIUS* rationem proposuit, spiritum nempe eas mutationes facere, nam pulmonem amplissimum esse, & per totum corpus extendi, ut appareat inflando (de *animalibus qua colorem mutant*).

Ad inhalationem cutis experimentum proposuit *CASSIUS* Jatrofophista, n. 5.

N. MASSA tribuit sibi inventum panniculum carnosum *Isagog. anat.* c. 3. Verum ante ipsum *C. STEPHANI* tempore & notus fuit, & ab eo Auctore refutatus L. III. 14.

Bulbos pilorum *SALOMON ALBERTI* dixit *quæst. medic.* p. 42. *EJUSDEM* de *sudore cruento*, &c. Disp. 1582. 4.

EMANUELIS NONNII Liber de *tactu & tactus organo*, Ulyssipone 1595. 8. (MERCL.) *

JUL. CASSERIUS in *pentasthesio* potius musculos manus depictos dedit, quam verum tactus organum.

J. JESSENIUS de *JESSEN* de *cute & cutaneis affectibus*, VVittemb. 1601. Disp. *

MARCI ANTONII ULMI *Physiologia barba humana*, Bonon. 1603. fol. Fusissima & inutilissima eruditio.

CHRIST. BECKMAN de *barbigenia hominis mere maris*, Jen. 1608. 4. *

BARICELLI de *hydronosa natura*, sive *sudore humani corporis*, Neap. 1614. 4. *

SANCTORII SANCTORII *medicina statica*, Venet. 1614. 12. (1612. CAT. ENDTER.) & infinitis aliis locis. *LISTERI* editio Londinensis 1716. 14. nitida est. Aliam *BAGLIVUS* Italice eddidit, & addidit canones de *medicina solidorum*, Romæ 1704. 12., aliam adjectis notis & similis argumenti Libellis *DODARTII* & *KEILII* auctam *P. NOGUEZ*, Paris. 1725. 12. Germanice translatus est a *D. JOH. TIMMIO*, Bremæ 1736. 8. Cum *LISTERI* & *BAGLIVI* comm. prodiit, Patavii 1713. 12. Opus ipsum aphoristicum est, conclusionibus ab eventuum similitudine in universales definitiones contractis, absque ullo catalogo experimentorum, aut modi indicatione, quo hæc experimenta, sæpe valde difficilia, facta sint. Non dixerim, *CUSANUM* Cardinalem exscriptum esse a *SANCTORIO* (ut ejus viri inimici ipsi exprobraverunt. Vide in I. Fen. *fin. Avicenn.* p.) 81. aut *HIERONYMUM THEBALDUM*, quæ *OBICII* fuit calumnia. Id autem negari nequit, multa videri ad veterum, & *GALENI*, placita ficta esse, multa etiam aut omnino non admitti posse, aut ad aliquam idiosyncrasiam pertinere, ut magna illa perspirationis ad urinam ratio est, & nocturnæ perspirationis copia.

SANCTORII SANCTORII liber recusus est Venet. 1634. 12. Gallicam hujus libri editionem dedit etiam le *BRETON*, Paris 1722. 8. Exstat etiam editio cum *staticomastige OBICII* & *SANCTORII* *responsione*, Leid. 1642. 8. 1713. 8. Italice *SANCTORIUS* versus est a *FRANCISCO RENIER CHIARI*, Venet. 1743. Anglice excusus est cum animadversionibus, Lond. 1723. 8. Cum *BAGLIVI* & *LISTERI* comm. prodiit primum Patavii 1710. deinde anno, quo diximus.

HIPPOLYTI OBICII *staticomastix* : cujus editionem Lipsiensem pro prima citari video a **LINDENIO** 1614. 12. * aliam cum **SANCTORII** statica junctim, Lipsiæ 1670. 12. & alias prodiisse novi. Objectiones varias absque experimentis protulit. Paucis paginis respondit in editionibus posterioribus opusculi **SANCTORII**.

HIPPOL. OBICII liber cum **SANCTORII** statica primum Leid. 1642. 8. prodiit, deinde Lipsiæ.

HIERONYMI SENIS (nempe **FABRICII** ab **AQUAPENDENTE**) de integumentis corporis, Patav. 1618. 4. Regiomonti 1672. (nam nullus fuit unquam **HIERONYMUS SENIS**, cui tribuit hunc Librum **LINDENIUS**.) Musculum cutaneum erinacei, corneæ oculi epidermidem, duas laminas epidermidis vidit.

JOH. TARDINI de pilis *disquis.* Turoni 1619. 8. In quæstionibus subtilibus absque proprio experimento occupatur.

JAC. HEYST *diascepsis de pilis eorumque natura*, Amstel. 1646. 12. *

DAN. MYLLER *theoria trium sensuum exteriorum olfactus, gustus & tactus specialis*, Lipsi. 1639. 4. (B. RIV.)

JOH. FABER ad **HERNANDEZ** habet etiam Chamæleontis phænomena p. 723.

N. vero de **PEIRESC** suas de chamæleonte observationes in vita sua proposuit: tum in *Jatrologismis* **D. PANAROLUS**, & in *musæo* **NEHEMIAS GREW** p. 70. qui causam ad tuberculorum mutationem retulit, & in itinere suo **SPONIUS**. T. I. & **GEORGIUS WHEELER** III. p. 260. & le **BRUYN** in itinere priori p. 162. ed. Belg. & **BANIERES** in Tractatu in physicis citato de luce & coloribus, qui cutem sudantis animalculi pro speculo habet.

J. RIOLANUS in *novis opusculis* etiam de unguibus & pilis Tractatum habet, Parisiis 1652. 12.

N. STENONIS panniculum carnosum ex numero integumentorum corporis humani rejecit (*myolog. specim.*) Idem ibidem glandulas cutaneas piscium descripsit. Cuti insertos tendines ejusque involucri inde partem enatam observavit. In Libro de *solido intra solidum* testarum, quod tegumenti genus est, formationem descripsit. In A. H. II. 224. vim torpedinis in musculis poni, qui se contraherent, pridem vidit.

R. HOOK in *micrographia* cutem ex filis fieri pro certa re scripsit, pilorum subtiliorem dedit anatomen, tum **POWERUS** in obs. 50.

ROBERTUS BOYLE in *tentamine porologico* de pilis aliquas observationes habet, internam perspirationem viscerum splenis, jecoris, renum, &c. perspicax prævidit. Experimenta inhalationis & in eo Libro & in altero protulit de *mira subtilitate effluviurum*.

J. van HORNE de glandulis cutaneis dixit inter primos in *Epist.* **BARTHOLINI** 97. *Cen.* III. tum de sebaceis **CAROLUS DRELINCOURT** apud **PECHLINUM** de purgantibus p. 472.

JAC. BURLINUS de feminis ex suppressione mensium barbatis, Altdorf. 1664. Disp.

MARCELLUS MALPIGHII epistolam de externo tactus organo scripsit an. 1664. & edidit Neapoli 1665. 12. In ea inventas in lingua papillas atque reticulare corpus etiam in reliquo corpore persecutus est, & in Galli Indici pede, ungulis suillis, alibique invenit. Sedem nigredinis in eo ipso corpore posuit, quod *reticulare* vocavit. Glandulas sudoriferas descripsit. **IDEM** in *posthumis* de pilorum & unguum fabrica fuse egit, tum de glandulis sebaceis faciei humanæ, mucosis piscium. Papillas cutaneas labiorum, & glandis penis in *Glire* vidit.

In *Philosophicis Transactionibus*.

Inhalationis per cutem experimentum in Jamaica, n. 27.

GODDARD experimenta in Chamæleonte, n. 137.

A. van LEEUWENHOEK de fabrica pilorum, in *Lectures & collect.* **HOOKII** 1678. editis. **EJUSDEM** de iisdem pilis, n. 140. De pilis per urinam redditis, n. 323. De pilis Acari, n. 333. **IDEM** de sudoris particulis, n. 106. **IDEM** de squamis cuticulæ, puero squamoso, squamis in ore n. 159. 160. **IDEM** de cute Elephanti n. 335. Balænæ, n. 334. palati bubuli, n. 320. de callo manuum pedumque, n. 373. In epistolis etiam physiologicis de unguibus egit p. 416. & de pinguedine exhalante per cutim, de pilis, &c. Ejus squamas epidermidis negavit se reperire posse **HARTSOEKER** in *Extrait critique* p. 6.

M. MALPIGHII descriptio cornu quod ex latere Bovis prodierat, n. 160.

G. ENT. de Testudinis pondere hyberno & verno, & adeo de ejus perspiratione, n. 194.

N. GREW. rugæ cuticulæ spirales & sudoris pori, n. 199.

D d d d

Puer

Puer cornubus undique ex cute efflorescens, n. 230.
 Nigrita maculis albis, n. 235.
 Puella miro candore, solem ægre ferens, n. 307. Hæc est ea gens hominum, de qua CL. de MAUPERTUIS nuper scripsit.

BLAIR & ALLEN de cute & pilis Elephanti, n. 326.

A. VATER de puero squamoso n. 440. & MACHIN, n. 421.

CL. LINING n. 470. 475. & 487. pulcherrimas tabulas dedit experimentorum circa perspirationem institutorum. Ex iis constitit, æqualem esse urinæ aut paulo majorem portionem, & perspirationem sequi caloris gradum, ut hyeme infra urinam sit, æstate superet, &c.

MITCHELL de colore Æthiopum dissertatio n. 474. Causam quærit in crassitie majori cutis. Corpus reticulare negat succum concretum esse. Epidermidem in nigritis etiam crassiorem esse ait, & in duas laminas separabilem.

Plica polonica in vetula Angla absque sordium suspitione, n. 483. & longissimæ plicæ, n. 417. 426.

T. BARTHOLINUS de luce hominum & brutorum, Hafn. 1669. 8. Erudita collectio nata occasione lucis visæ in carnibus integris macelli. Plurima olim hujusmodi exempla fuerunt, ut JULUM omittam. Carmelitam monachum, qui retrorsum se pectendo ignem excuteret CARDANUS habet de rerum varietate p. 320. mulierem BARTHOLINUS Cent. III. hist. 70. virum PLOT Staffordshire p. 116. HEUCHER p. 1083. in oper. Carnes vero lucidas PLOT Staffordshire p. 265. du HAMEL p. 156. BOTTONI in pyrologia. Idem BARTHOLINUS de usu integumentorum partium corporis humani Diss. dedit, Hafniæ 1654. Franc. 1656. 4.
 * Respondente SEGERO.

J. PANCR. BRUNO de sudore sanguineo, Altdorf. 1669. 4.

J. BOHN de tactu, Lips. 1677. 4.

F. GLISSON in Libro de ventriculo & intestinis tegumentorum communium fabricam, pilos quos in homine a natura inesse vidit, panniculi carnosii absentiam dixit.

J. LUDOV. HANNEMANNI scrutinium curiosum nigredinis Æthiopum, Kilon. 1677. 4. Compilatio.

JOH. NICOLAUS PECHLIN de habitu & colore Æthiopum, Kilon. 1677. 8. In reticulo subcutaneo unice federe atrorem vidit, bilem eo aliquid facere ante recentiores sensit, solis efficaciam negavit, poros sudoriferos & succiferos in Æthiopibus detexit. Chamæleontis phænomena adjecit. De nigredine Æthiopum vide etiam T. BROWNE error popul. L. VI. c. XI. XII.

PARISIINI in prioribus monumentis multa ad historiam integumentorum corporis attulerunt. Piscem Torpedinum in effectu similem ex Anguillarum genere describunt, etiam PETRO BARRERE dictum hist. naturelle de la France Equinoxiale, & ILLUSTR de la CONDAMINE in itinere suo. Tum Elephanti cutem, & in Struthione reticulum papillasque, & Pelicani cutem, & unguem Leonis Ursique accurate delinearunt.

De glandulis subcutaneis etiam observationes habet PEYERUS, & HARDERUS, in exercitationibus, & BOHNIUS.

J. P. BRUNO de transpiratione insensibili, Altdorf. 1680. 4. de sudore, 1669. 4.

J. P. BRUNO etiam est de fuliginibus humanis, Altd. 1698. 4.

J. DUVERNEY passim de cute dixit, & de papillis apud BLEGNY in Zodiac. T. III. In JOURN. DES SAVANS 1689. describit fabricam cornuum ex papillis natorum, & unguium qui cornubus valde adfines sunt, & cutem, reticulare corpus & papillas quadru-partitas Elephanti exponit.

O. TACHENII experimenta de sudoris analysi huc refer ex Hippocrate Chémico C. XII.

A. E. RIVINI observationes circa poros in cute piscium vid. A. E. 1687.

CL. PERRAULT multis locis hanc historiam attigit. In Essays T. III. fabricam unguium, cornuum, pilos, aculeos Hystricis, transpirationis naturam aqueam proponit, papillas negat, exemplo tactus, qui in partibus corporis internis exercetur, & cutis Elephanti, quæ sit absque papillis.

J. STEPHANI LORENZINI osservazione intorno alle Torpedini. Florent. 1678. 4. Lond. 1705. 4. A musculis etiam ex vesicis compositis effectum interpretatur. Exstat etiam in E. N. C. Dec. I. Ann. IX. F. REDUS in esper. natur. p. 26. 27. torpedinis anatomen habet.

J. J. WALDSCHMIDT de colore *Æthiopum*, Marburg. 1683. Disp. EJUSDEM specimen de sensibus, Marburg. 1684. 4.

S. COLLINS squamas piscium, glandulasque eorum cutaneas dixit.

GRIENDL ab AICHA in micrographia pilos describit.

G. BIDLOO in magno opere proprios ductus aquosos inter cutem & cuticulam descripsit, & depinxit, quos nemo recepit, & refutavit COWPERUS, pilorum etiam paradoxas icones dedit.

J. M. HOFMAN de cuticula & cute, Altdorf. 1685. Disp.

Cum JAC. SYLVII novissima idea de febribus prodiit dissertatio de insensibili transpiratione mechanice probata, Dublin. 1686. 8. *

GUILLIELMUS COWPER in opere BIDLOVIANO ad T. IV. epidermidem ex multis laminis compositam descripsit, & pilorum medullam, & ungues, & cutaneas glandulas. Pilos IDEM a morte crescere adfirmavit, quod vulgo negant recentiores, experimento vero fulsit PURMANNUS *Lorberkranz* p. 228. Habet etiam glandulas sebaceas penis.

CONR. PHIL. LIMMER de cute simulque insensibili transpiratione, sudoribus, pilis & organo tactus, Servest. 1691. 4. *

EDMOND TYSON glandulas penis, & glandulas axillares internas peculiare in pygmaeo invenit p. 25.

PIERRE CHIRAC *Extrait d'une Lettre sur le sujet des cheveux*, Monspel. 1688. 12. cum operibus posthumis nuper recusa a D. BRUHIER. Fibras tendineas cutis pilum facere, medullam inesse ex glandulosa membrana sanguine ebria continuatam, quæ intus radicis bulbosæ pili insit, & alia invenit. Ungues a tendinibus deducit.

PLACIDUS SORACI in Disp. an pili partes corporis viventes, Paris. 1703. 4. & in *Collect. Disp.* vol. IV. describit bulbos pilorum glutine plenos, quod continetur in pili cavam, &c. Acriter de eo invento, etiam coram iudice, depugnavit cum PETRO CHIRAC PLACIDUS, & VIEUSSENIUS in réponse à trois Lettres de M. Chirac, Monspel. 1698. 8. fuisse testimonia adfert plagii, cujus CHIRACUS reum facit.

HEIDENRYCK OVERCAMP nader verklaring over de ontdeckte doorvasseming, Amstelodami 1694. 4. sive commentarius in SANCTORIUM Cartesianus.

GUILIELMI COLE disquisitio de perspirationis insensibilis materie & peragenda ratione, Lond. 1702. 8. cum consilio de epilepsia. Perspirabilem materiam a sudore diversam esse, & fieri ex halitu sanguinis, ab aliqua inprimis parte succi nutritii, & a partibus solidis corporis humani docet. Explicat etiam, quomodo sudor & diarrhœa perspirationis defectum suppleant. Per theorias omnia.

M. E. ETTMULLER de tactu sensuum externorum moderatore, Lips. 1695. 4.

CHRISTIANI VATER de transpiratione insensibili C. H. VVittemb. 1695. Disp.

G. FRANK onychologia, Jen. 1696. 4. Non absque experimento. Et ejusdem de unguibus monstrosis & cornuum productione in puella cornigera Lalandica, Hafn. 1716. 4. *

J. A. SLEVOGT de sudoribus, Jen. 1697. 4.

CONTULI de podagra, Romæ 1699. 4. & in *Act. Erud.* dat iconem imaginariam cutis cum glandulis, vase excretorio, valvula.

FRID. WILH. CRAUSE de capillis, Jen. 1700. Disp.

In *Mémoires de l'Acad. Royale des Sciences*.

An. 1700. & 1707. An aer ex cute exhalet, contra HOMBERGIUM.

1703. LITRE de fabrica cutis, nigredine *Æthiopum*, glandulis cutaneis, &c. DUVERNEY de iisdem ibid.

1714. REAUMUR de Torpedine. Musculos etiam advocat, quos LORENZINUS.

1716. REAUMUR de squamis piscium. De iisdem PETIT in anatome Cyprini 1733.

1719. ROUHAULT de unguibus monstrosis.

1724. De Nigritis & Mulattis.

1727. MAUPERTUIS lac acerrimum sub cute Salamandræ vidit.

SARAZIN de aculeis Hystricis cellulosas hominis icti perreptantibus.

1728. & 1731. Pili accidentales ex materie moschata facti, & a morte nati.

1740. Defectus epidermidis in una parte linguæ.

1734. & 1744. Nigrita albus iride rosea, idem de quo D. de MAUPERTUIS.

L. BELLINI in posthumo *discurso* II. exemplo maculæ in adtacto metallo roriferæ perspirationem demonstrat, manumque fumantem in loco obscuro una candela illustrato, adducit.

J. H. SBARAGLI contra papillas scripsit in suis *mentis & oculorum vigiliis*.

J. B. MORGAGNI glandulas sebaceas fere per totum corpus descripsit in *Adv.* I. IV. V. *epist.* III. De cute etiam Nigritarum sua experimenta protulit, & cutem etiam aliquantum vidit infici. De epidermide etiam egit *Adv.* II. De pilorum ortu in cellulosa & ex glandulis sebaceis vide *Adv.* IV.

J. GOD. BERGER de perspiratione, spirituosam & pulmonalem junxit cutaneæ.

JOH. FANTONUS de more utilia monita adpersit, pilos, glandulas sebaceas varias descripsit, sudorem ex glandulis parari negavit. Vascula epidermidis repleta ex thesauris BLANCHIANIS citavit, in *novis dissertationibus*.

G. BAGLIVUS musculum cutaneum hystricis descripsit in *Libro de fibra motrice*.

M. LISTER de humoribus. de sudore & perspiratione egit, illum morbosum esse scripsit, de glandulis subcutaneis egit, perspirationem nimiam a SANCTORIO describi, edoctus a CRESSENE- RIO monuit (*de cochleis*). IDEM commentarium in Sanctorium edidit, quem superius citavi.

CL. WAINWRIGHT in *Diff. of bathing* noxas nimix transpirationis consideravit. Prodiit cum ejus diætetico Libro, quem alibi laudabo.

ANTONII VALISNERI de *Chamaeleonte* opusculum in classe physica laudatum est. Cutis tubercula, sulcos, siphones aeris eo ex pulmone pertinentes, colorum veras in Italia mutationes describit, & conjecturam habet colorum varietatem imprimis ab effuso in sulcos cutis aere esse.

J. D. SANTORINI ad Nigritarum etiam atrorem experimenta protulit. Bilem ad eum colorem conferre conjecturam habet.

H. BOERHAAVE ad fabricam pilorum in *orat. de certo in physicis*.

J. KEIL in *statica Britannica* propria sua, non tamen longissimo tempore capta experimenta protulit, urinæ plus, perspirationis minus invenit, quam SANCTORIUS, & nocturnam minorem diurna, & in universum variabilem, ut insigniter mutari posset & minui monuit, absque evidente malo. Inspirationem etiam, quæ nocturno & pluvio tempore fit, experimento confirmavit.

JOH. QUINCY ad SANCTORIUM commentatus est, cujus libri *quarta editio* penes me est, edita Londini an. 1728. 8. Titulus est *Medicina statica*. Plus habet ratiociniorum quam veri experimenti. A balneo factam enormem quadraginta librarum perspirationem memorat. Sudorem plus, quam perspiratio, auferre faretur; pro ejus materie habet, id quod fibræ animalem irrorat & humectat, & spirituum partem perspirari credit; magnam vim, qua perspiratio contra aquæ pondus exit, ad calculum revocat. *Introductio* aliqua universalis habet de mechanicis corporum qualitatibus.

PAULI GOTTFRIED SPERLING de sudore, VVittemb. 1706. 4.

GEORG FRID. FRANCI *meditationes de sudore*, Hafniæ 1707. 4. B. RIV. *

ERN. HENR. WEDEL de perspiratione insensibili, Jen. 1708. Disp.

Ad sudoris analysin aliqua attulit PETIT *Epist.* II.

HERMANNUS BOERHAAVE poros subcutaneos & varia sebi genera in *Ep. de fabrica glandularum* plurimum illustravit.

PAULI DONS *Diff. physiologica de transpiratione animalium*, Hafn. 1713. 4. B. RIV. *

WILHELMUS DERHAM pilos animalium ad microscopium descripsit in *physico-theology*, eorumque medullam.

JOH. FLOYER de *asthmate* etiam experimenta fecit ad transpirationem, & sensibiles excretiones sextuplo majores invenit insensibili, neque perspirationem ante insultum morbi minui, ut edixerat SANCTORIUS.

M. V. ROSSEN Disp. de *functione cutis*, Leidæ 1719.

FREDERICUS RUYSCH infinita ad cutis historiam attulit, vasa per repletionem inventa, papillas varias, Epidermidis vasa, quæ GARENGEOTUS, BLAIR, S. ANDRE', BIANCHI, MIEG in *specim. Anat. Botan.* Basil. n. 25. & alii se replevisse credebant, etiam pretio constituto expugnavit. Epithelii & epidermidis in os & intestina descensum descripsit, ex papillis oriri credidit. Glandulas cutaneas negavit, cryptas esse dixit, oleum per poros exhalare de cellulosa docuit.

G. C. SHELHAMMER in *physiologia* meminit etiam chirothecarum epidermidis a se præparatarum, quales elegantes RUYCHIIUS & D. de la PETRONIE detraxerunt. SANCTORII merita elevavit, & experimenta, neque satis certa, neque tanti momenti esse pronunciauit, ut vulgo quidem habentur.

BENED. STÆHELIN in *tentamine Anat. Botanico*, Basil. 1721. 4. profert experimentum pro glandulis subcutaneis.

THOMÆ SECKER de *medicina statica*, Leidæ 1721. 4. Diss. & in vol. *nostr. coll.* III. Audaci instituto SANCTORIUM impugnare adgressus est. In multis GALENUM exscribere dixit & imitari, & ex theoria aphorismos facere: eandem esse perspirationis materiem cum ea sudoris, inspirationem male negligi, aphorismos aliquos sibi contradicere, &c. KEILIIUM perinde inconstantia arguit.

CROMWELL MORTIMER de *ingressu humorum in corpus humanum*, Leidæ 1724. 4.

HIERON. LUDOLF de *sudore*, Erfurt. 1724. 4.

JOH. DE GORTER de *perspiratione insensibili Sanctoriana*, Leidæ 1725. 4. & 1736. 4. In priori opere commentatur fere in SANCTORIUM, adjectis KEILII observationibus, & de motu musculari etiam, urina, &c. fuse agit, & ex Physiologia BOERHAAVIANA phaenomena explicat. In altero multa auctius habet. In somno minus transpirari, reliquis æqualibus, recte monet, & in hyeme, si cum æstate comparaveris. In Libro de *stri* etiam aliqua huc pertinent, ubi de *venis inhalantibus* agit. IDEM in Chirurgia sua papillas molles rejicit, veraque tenuia tubercula conica ab iis diversa describit.

Statica medicina Gallica DODARTI (& Britannica KEILII) a P. P. NOGUEZ cum staticis SANCTORII aphorismis edita est, Paris. 1725. 8. Experimenta DODARTI in unico homine capta, pauca, quorum initium factum erat 1668. continuata per 33. annos, multa tamen utilia habent. Excrementa visibilia per senium minui, demonstrant, & urinae copiam majorem & perspirationis minorem esse, quam fecerat SANCTORIUS; sordes etiam cutis ad calculum revocavit.

CAROLI FRANCISCI COGROSSI *saggi della medicina Italiana*, &c. Padova 1727. 4. Vitam habet SANCTORII, ejusque inventa celebrat, æolipilam ad morbos, pulsilogium anemometron, stateram hydrostaticam, lectum pensilem, acum triquetram, aliaque.

SACRELAIRE de *corporis humani integumentis*, Leidæ 1727. 4.

STEPHANUS HALES perspirationem humanam cum exhalatione plantarum comparavit. Inter J. LANZONI *Dissertationes prima de capillis* est.

J. R. C. GARENGEOT de epidermide Nigritarum aliqua experimenta attulit.

J. A. WEDEL de *transpiratione insensibili & sudore*, Jen. 1728. Disp.

JOHAN. AMMAN de *venis in corpore humano bibulis*, Leidæ 1729. 4.

J. FRID. HERELIUS de *primario usu pororum in corpore humano*, Altdorf. 1732. Disp.

CL. PASSAVANT de *insensibili transpiratione Sanctoriana*, Basil. 1733. 4. Inhalationem merito considerat.

C. J. TREW in *Commercio litterario* 1731. de Æthiopis integumentis communibus aliqua habet. In *Comm. Lit.* 1739. analysis sudoris exstat.

CHR. WOLF in *nützliche versuche* T. III. de pilorum fabrica agit.

JOSEPHUS POZZI in *Commercio Epistolico* de pilis & unguibus experimenta habet, quos ex tendinibus deducit.

CL. ARBUTHNOT perspirationem esse exhalationis excessum super inhalationem recte monuit *on air*.

J. H. SCHULZE de *sudore*, Hall. 1733. 4.

P. HAGUENOT de *transpiratione insensibili*, Mönspel. 1733. 8.

A. VATER de *cuticula pueri Londinensis* Progr. VVittemb. 1735. 4.

ALEXANDER MONROO in *Edimburgensium* T. III. describit cuticulam internam in ventriculo & intestinis, &c.

A course of statical experiments and observations made by a curious person in a twelve-month, Dublin. 1734. 8. Nomen auctoris est RYE, qui experimenta sua in epistola ad D. ROGERS tradidit. Perspirationem lotio majorem invenit, & faeces 6. fere unciarum, quæ cum SANCTORIO satis consentiunt. De ciborum perspirabili indole aut inperspirabili multa expertus est. Cibus & potus ipsi hyeme 4½. l. fuit, æstate ad 7. l. fuerunt.

In

In J. DAN. GEYER *reifestunden* dissertatio habetur de nigritis, quorum primum *CAR-*
NUM facit.

J. HENR. SCHAAF *de organo tactus*, Duisburg. 1734. 4. Papillas compositas vasculosas, ungues, epidermidem, ex ALBINI experimentis describit.

BARTH. MURRY *estne transpiratio hyeme perfectior*, Paris. 1736. 4. Adfirmat.

CLAUDE de la VIGNE de FRECHEVILLE. *Ergo perspirationi & sudori cetera excretiones vicaria*, Paris. 1737. 4.

BERNARD SIEGERID ALBINI *de colore Æthiopum*, Amstel. 1738. 4. Egregio labore reticulum, ut vocatur, mucosum in cute & unguibus, papillas cutaneas & alia exponit.

A. ZAUNSLIFFER *historia pilorum in homine*, Leidæ 1738. Disp.

C. A. a BERGEN *de perspiratione viscerum*, Francof. Viadr. 1738. 1739.

ABRAHAM KAAU integro Libro *de perspiratione Hippocratica* egit, Leidæ 1738. 8. quo plurima equidem alia, sed etiam huc pertinentia egregia experimenta habentur, ad exhalationem internam & externam, ad inhalationem utramque, ad fabricam cutis, glandulas, papillas, pilos, ungues, sudorem, adipis percolationem, epidermidem viscerum.

CHRISTIAN GOTTL. LUDWIG *de cuticula*, Lipsi. 1739. 4.

JAC. NIC. van GENT *de organo tactus*. Disp. Groning. 1739.

MELGHIOR VASSENS *de sudore & insensibili transpiratione*, Leidæ 1739. 4.

C. de COURCELLES papillas nerveas pinxit in Libro *de musculis capitis*, in apice perforatas, inter eas pulpam, & arteriolas nervulosque papillarum.

CHRISTIAN BERNHART von SANDEN *de cutis exterioris morbis*, Hall. 1740. 4. fusissima Disputatio, quæ ab ovo incipiat. Negat venas resorbentes.

BRANDAN MEIBOM *de pilis eorumque morbis*. Helmstad. 1740.

JAC. van LINDER *de integumentis hominis communibus*, Traject. 1740.

In Diario Trivertino anno 1737. Jun. & August. de causa nigroris Æthiopum agitur, & ea ex ola ambustione explicatur.

CL. NIC. LE CAT tactus sensum brevius attigit.

J. F. CARTHEUSER *de necessitate transpirationis cutanea*, Francof. ad Viadr. 1742. & ejusd. *de habitus cutanei subita inflatione*, ibid. 1747. 4.

W. CHESELDEN papillas cutaneas negavit, de epidermidis fabrica egit.

P. BARRERE *sur la cause physique de la couleur des Negres*, Paris. 1741. 12. Nigredinem Æthiopum a bile fieri, cutemque eorum perpetuo colore nigro sudare, &c. Contra eum virum in JOURN. DES SAVANS 1742. Maj. objicitur, non a bile atrorem esse posse, quæ flava sit non atra, &c.

CL. HEISTERUS glandulas cutaneas rejecit.

VANDENESSE & DES MOLES in Thesi. Paris. 1742. *ergo a globulosa sanguinis ad cutem applicati parte Æthiopum color*.

CL. LIEUTAUD in *essais anatomiques* bulbos pilorum & in cute radicari & sub ea, corpus reticulare non ubique reperiri, neque idem esse cum corpore mucoso Æthiopum glandulas in cute nullas reperiri & alia utiliter monet.

H. THEODOR. BARON in propria thesi 1742. Parisiis defensa cum titulo. *Ergo humor transpirationis non excrementitius*, humorem perspirantem non esse excrementitium ostendit, sed exhalare sub cuticula, & maxima parte per venas iterum resorberi.

DE RIET *de organo tactus*, Leidæ 1743. 4. Vasa papillarum dixit.

M. R. Med. a Lyon *dissertation sur l'origine des Nègres* 1744. 12. *

Diff. *sur un Nègre blanc* 1744. & 1746. 12. &c. Auctor anonymus, quem pro ILL. de MAUPERTUIS vulgo habent, describit Nigritam album, lucem ægre tolerantem, novum genus hominum, quod pro varietate Europæ speciei habet. Tales lacteos Æthiopes heliophobos dudum WAFERUS in itinere ad Isthmum aliique viderant.

PET. ARCELIN. *Ergo dantur vasa absorbentia*, in thesi, Paris. 1745.

CHRISTOPH. JACOB. HINTZE. *Examen anatomicum papillarum*, Leidæ 1747. 4. Bona & Albinus & sua experimenta attulit.

NATHAN AELJOH. B. CHESNEAU *an a facili perspiratione functionum libertas*, Paris. 1747. 4.

BRYAN ROBINSON *of the food and discharges of human body*, Lond. 1748. 8. Egregio labore comparat imprimis experimenta sua, & LININGII, & KEILLI, & DRYE, inde utiles u-

niver-

niversales conclusiones & tabulas format, alternationem perspirationis cum urina & diarrhoea demonstrat, & proportionem inconstantem urinae ad perspirabile ciborum ad excretionem ostendit, & diurnam maiorem esse nocturna, aestivam hyberna, & alia huc pertinentia breviter & solide definit, multo certe praestantior *SANCTORIO*.

CHRISTIAN GOTTL. LUDWIG de unguibus, Lips. progr. 1748. Periosteum, papillas, & tendines radici unguis adherere, & unguem a nervis fieri vasisque adunatis, neque ab epidermide proficisci docet. *EJUSDEM* de humore cutem inungente, Lips. 1748. Disput. Pilo omnes ex cellulosa oriri, eorum foramina sequi transfudans unguem, bulbo vaginam semiunguinosa circumponi, quae id unguem secernat. Glandulas cutaneas non admittit, nisi ubi pili sunt. Cutem etiam ejusdemque internum stratum cellulosum describit.

JOB. BASTER in *E. N. C.* vol. VIII. in pilorum sedem inquit, eorumque alios in cute, in cellulosa alios sedere adfirmat.

CL. VIR. A. BAECK in *Stockholm handlingar* 1748. p. I. agit de cute Nigritarum, cutem albam esse, reticulum in aqua caleme solvi docet.

J. H. KNIPHOF & KUCKIUS de transpiratione insensibili, Erfurt. 1748. 4.

G. AUG. LANGGUTH de pilo parte corporis humani non ignobili, VVitteb. 1749. 4.

CL. de BUFFON in Tom. III. operis sui de tactu agit, ut primario sensu, cujus reliqui omnes unice species sunt, & cujus ope nos veram imprimis cognitionem corporum percipiamus. In alia vero dissertatione de variis coloribus hominum, alborum & atrorum historice inquit, omnes ab uno primo parente derivat, & atrorem solis ardori tribuit.

J. PHIL. LAUR. WITHOFF de pilo humano, Duisburg. 1750. 4.

Utunque huc pertinent scriptores electrici, qui vel halonem pro perspirabili igneum viderunt, raro & felici spectaculo, vel alioquin perspirationem ope machinae electricae auxerunt, ut *CL. VIRI G. M. BOSE, KRAZENSTEINIUS* (qui perspirationem ad 3. uncias in hora electricitate auxit), alique.

Sed etiam medicos plurimos qui practice de sudore scripserunt, tum qui de plica huc possis referre.

V. F. PLEMP de affectibus capillorum & unguum, Lovan. 1662. 4. Plicam verum morbum esse

THEOPHRASTI VERIDICI SCOTI Plicmastia, sive plica e numero morborum *apospasma*, Gedan. 1668. 4. Contra *V. F. PLEMP*, & *THEODORUM SKUMINOVIVM* defendit *DAVISSONIUM* (nisi ipse est *DAVISSON*), & urget, quae de plica circumferantur, ea fabulosa esse, & plicam absque ulla noxa rescari.

ONUPHRII BONFIGLI de plica polonica, Uratislav. 1712. 4. Cracov. 1720. 4.

HIERON. LUDOLF. de plica, Erfurt. 1724. Disp.

In *ERNSTELII Warsavia physice illustrata* pro veritate plicarum pugnatur, &c.

Cum sensibus externis internos & alia in universum ad sensus pertinentia conjunxisse non erit alienum, somnum, animi adfectiones, & reliqua, quae ad animae historiam naturalem pertinent, quibus nullum locum dedit in ordine suo *BOERHAAVIUS*. Parci vero erimus, ut medici, & in iis Auctoribus subsistemus, qui medici fuerunt, aut certe haec negotia majori modo illustrarunt.

Inter *HIPPOCRATICOS* Liber est de insomniis, etiam cum *SCALIGERI* commentariis excusus, non certe indocti viri, qui varia insomnia ad suas mechanicas causas in turbato corpore reduxerit. Caeterum *HIPPOCRATES* plurimis locis de natura ita scripsit, tamquam principium aliquod sapiens & motus in corpore humano dirigens statueret, et sic aeo adeo sollicite vocationem pretia non statuta fuerint.

ARISTOTELEM de anima ejusque commentatores omitto.

GALENUM breviter tango, qui facultatibus animae in Libro de art. med. c. 12. varias in regionibus cerebri sedes definivit. Idem in Libro de formatione ferus in eam sententiam incidit, quae postea fuit *STAHLII*, nempe animam proprium sibi corpus struere. Utique huc referri videtur *HIERONYMI CARDANI metoposcopia* 813. iconibus faciei humana expressa, Latine versa a *CLAUDIO MARTINO LAMENDIER*, Paris. 1658. fol. *

Possunt etiam huc referri *GALENI* libri de dignoscendis & curandis animi affectibus.

H. CARDANI citata ibidem *metoposcopia* Germanice versa prodiit Norimberg. 1695 8.

ADAMANTII physiognomicon, i. e. de natura indicis cognoscendis Lib. II. Gr. Lat. vertere *J. CORNARIO*, Basil. 1544 8.

J. B. PORTÆ *L. de humana physiognomia* L. IV. Vici 1586. 4. Ursell. 1601. Venet. 1644. Italice 4. Contra nimios astrorum cultores.

A. CÆSALPINUS theorias Galenicæ reformavit, & negavit diversas sedes esse imaginationis & memoriæ in *question. peripat.*

J. ARGENTERIUS *de somno & vigilia*, Florent. 1556. 4.

G. P. lib. *de memoria & de artificiosa memoria quam publice proficitur* A. DISCONI *vanitate*, Lond. 1584. 12. AMES.

RUD. GOELENII *de sensu & sensibus*, Francof. 1596. 8. *

HIERONYMI PROVENZALII archiatri *de sensibus*, Rom. 1597. 8. MANDOS.

P. RAVENNATIS *phœnix, sive artificiosa memoria*, Vicentiæ 1600. 4.

P. RAVENNATIS lib. citatus prius prodiit Vicentiæ 1541. 4. Mirus libellus quo ars reminiscendi traditur fundata in associatione idearum, & abstractarum vocum conjunctione cum rebus visibilibus, inprimis ejusmodi, quæ gratæ recordationis sint. Parabat sibi locos in ædibus sacris & monasteriis, fenestras & columnas. In singulum locum ponebat imaginem aliquam connexam cum ea re, quam retinere vult. Pro alphabeto litterarum loco homines, & formosas inprimis virgines. Ita ex hominibus cum ipsa actione conjunctis syllabas faciebat, ut v. g. BRA esset BENEDICTA cum rapis &c. Testimonia autem profert admirabilis utique memoriæ.

J. CASSERII *Placentini Pentasthesion*, Venet. 1609. Francof. 1610. 1612. fol. De auditu totus Liber recusatus est. Reliqua sensuum organa brevius tractata sunt, quæ singulatim laudavimus, & muscoli extremorum artuum depicti.

T. FIENI *de viribus imaginationis*, Lovan. 1608. 8. Vim matris in fetum moderatius admisit.

SANCTORIUS SANCTORIUS *de somno, & de affectibus animi eorumque in sanitatem & perspirationem influxu*, subtiliter disputavit, in *Libro de perspiratione*.

J. B. HELMONTIUM hic nominare oportet, qui in physiologiam novam machinam introduxit, nempe *Archæum*, qui omnium motuum principium sit, & naturæ fere Hippocraticæ similis, ut tamen & a corpore humano & ab anima differret. Vide ejus *Tractatum imago mentis: demens idea: sedes animæ: sedes anima ad morbos: Archæus faber*, & alios *Tractatus*. Hæc opinio in multos transit, & G. W. WEDELIUS in *Disp. de Archæo*, atque J. J. WEPFERUS in *Libro de cicuta aquatica* eo inclinarunt.

J. CÆS. CLAUDINI *questio de sede facultatum principum*, Turin. 1628. 4. *

FRANCISCI SANCHEZ *de divinatione per 4. somnia* in *ARIST.* & in *EJUSD. physiognomica*, Roterodami 1649. 12.

CAR. PATIN, *Non ergo anima rationalis sui domicilii architecta*, Paris. 1657. fol.

CÆS. CREMONINI *Tractatus III. de sensibus externis, internis, & facultate appetitiva*, Messanæ 1637. 4. * & cum annotationibus marginalibus TROYLI LANCETTÆ, Venetiis 1644. 4. * Theoretica de more.

RENATUS CARTESIUS in *Libro de homine*, Leidæ 1662. 1677. 4. & in *Libro de passionibus animi* sapissime recusato, animæ sedem celebratam in glandula pineali posuit, & modum mechanicum, quo sensus & motus in corpore humano perficerentur, ex ingenio construxit. Non paucos tamen adsecutas habuit. Insomnium definivit, quod in eo aliquæ partes cerebri spiritus acciperent, aliæ minime, & in eo ad sensum meruit BOERHAAVIUS. Idem pro explicanda unione corporis & animæ, loco systematis influxus, systema causarum occasionalium introduxit.

J. FR. HELVETII alchemistæ, *amphitheatrum physiognomico-medicum*, Haag. 1664. 12. Amstelod. 1676. 8. Minori parte huc facit, majori ad plantas.

PETR. MICH. ab HEREDIA *de somno & vigilia*, Lugdun. 1665. fol.

MARTINI CURÆI de la CHAMBRE *traité des caractères des passions*, Paris. 1662, 4. Amstel. 1658. 8. Germanice cum titulo *kunst ud art die menschen zu erkennen*, Francof. 1672.

In *Philosophicis Transactionibus*.

Memoria insignis WALLISII, n. 178.

LOKE Calculator illiteratus felix, n. 272.

Somnus diuturnus multarum septimanarum, n. 304.

Perpetua agrypnia in maniaco, n. 317.

Opium vis in cane explorata COURTEN, n. 336.

De somni causis STUART, n. 427.

HENR. SCHÆVIUS de quinque sensibus, Sedin 1665, 12. *

THOMAS WILLIS in cerebri anatome & in Libro de anima brutorum, Lond. 1672. 8. Oxon. 1672. 4. (Cat. Osborn.) Animæ facultates noviter distribuit, ut in corpore calloso imaginatio & appetitus, in corpore striato sensationum perceptio, inter plicas cerebri memoria sederet. In Libro de cerebro nervos, arterias & vasa circumligare, sic pulsum ab animi affectionibus mutari perspicax vidit. IDEM Auctor est diversarum provinciarum, quæ in cerebello vitalibus facultatibus, in cerebro animalibus adsignantur, & ea quidem theoria innumerabiles adsecclas habuit, & inter alios C. WOLFIIUM. N. HARTSOEKERUM, H. BOERHAAVIUM, A. STUARTUM.

DANIEL DUNCAN in explication des actions animales, Paris. 1678. 12. sedem animæ fixit in septo lucido, memoriam in cortice, paulum a WILLISIO diversus.

ANTONII MOLINETTI dissertationes anatomico physicae de sensibus, Patav. 1669. 4. Præfudium quasi majoris operis. In dissert. anat. pathologicis multa mutavit & correxit.

J. B. du HAMEL de mente humana Libri IV. elegantissime, ut omnia hujus Auctoris, scripti exstant in operum T. II.

LUD. de la FORGE de mente humana ejusque facultatibus & functionibus secundum principia R. DESCARTES, Paris. 1666. 4.

CORDEMOI du discernement du corps & de l'ame, Paris. 1666. 12. Genev. 1679. 12. Non inelegans Auctor. Linguam affectuum animi docet.

NICOLAI HOBOKENI Liber de sede animæ, Arnheim 1668. 12. Non in conario, neque in sanguine, aut in ventriculis cerebri animam sedere, sed in toto cerebro, cerebello, & medulla oblongata.

ROBERTUS HOOKE in posthumous works, Lond. 1705. fol. valde peculiare institutum secutus est, omnem enim modum, quo anima ideas & recipit, & emittit, & corpori imperat, & reminiscitur, mechanice explicat. Repositorium nempe facit idearum corporearum, aut a corpore suppeditatarum, aut ab anima generatarum, in quo secundum ordinem temporis ordinantur ideæ, ut remotissima sit quæ verustissima, & robur tum a propinquitatē sive novitate pendeat, tum a repetita animæ irradiatione in eandem ideam. Curiosa certe hypothesis, in qua videas idearum in homine natarum numerum esse 3, 155, 760, 000. Idem vir in aliis posthumis aliqua ad naturas relativas rerum habet aliaque hujus generis.

A. G. MORHOF de paradoxis sensuum, Kiel. 1676. 4.

TOBIÆ VOGEL mnemosynologia seu de memoria libellus, Jen. 1676. 12.

HIERONYMI MARAFIOLI de arte reminiscendi per loca imagines & per notas & figuras in manibus positas, Fr. kipl. 1678. 8. * cum aliis ejus generis libellis.

CL. PERRAULT variis locis & inprimis in Tractatu du toucher, du bruit, des sens extérieurs, du gout, du mouvement des yeux, egit de animæ in corpus imperio. Ad hunc certe virum pertinent, quæ vulgo solent STAHLIO tribui dogmata, cum anno 1680. PERRAULTUS in Libro du bruit, anno demum 1685. STAHLIUS (de motu tonic. p. 27.) animam actionibus vitalibus præfecerit. Sensorium ponit in extremo fine nervi (quæ etiam JOHANNIS TABOR, A. STUARTI, & aliorum opinio est). Animam corpus suum regere, & vitales actiones gubernare, habere cogitationes confusas eorum quæ sibi longa consuetudine nota sint, motum ordinarium non percipere, sed eum, qui corpus destruere conatur, & ad eam curam attendere, &c. Vitia & delirium internum esse ab anima ex magnitudine corruptionis in humoribus desperabunda, accurate, ut STAHLIUS, scripsit.

JOH. BOHM de sensationibus in genere, Lips. 1675. 4. de somno & vigiliis, Lips. 1677. 4.

BULWER dissertatio of the significative muscles of the mind, Lond. 1679. 8. * ap. PARS.

OL. BORRICH de somno, Hafn. 1683. Disp. de animantibus hyeme sopitis inter orat. T. I. In JOURN. DES SAVANS, n. 33. prodigiosæ memoriæ homo.

J. J. WETFER & in Libro de apoplexia & in posthumo de morbis capitis legi meretur, ob raras & peculiare species alienatæ mentis, aut corruptæ a causis corporeis memoriæ.

ROBERTI BOYLE de ipsa natura disquisitio, Lond. 1687. 12. Liber quasi contra STAHLIUM scriptus est, fusus & acutus in refutanda naturalhumana corporis rectrice, morbo-

rum curatrice. Ejus etiam sensus est J. C. STURMII, cujus *idolum natura*, Altdorf. 1692. alique Tractatus ad eum sensum exstant.

J. A. BORELLUS (prop. 80.) voluntarios motus, quorum anima non sit conscia, & ipsum motum cordis eo pertinere, ante STAHLIUM etiam suspicatus est, qui anno 1680. obierit.

J. H. GLASER de cerebro, Basil. 1680. 8. sensuum etiam internorum animi adfectuum historiam habet.

B. ALBINI de adfectibus animi, Francof. ad Viadr. 1681.

G. FRANK quamdiu dormiendum, Heidelberg. 1681. 4.

JAC. TAPP de somno naturali ejusque causis, Helmstad. 1684. 4.

A. LAMY explication de l'ame sensitive, Paris. 1687. 12.

P. S. REGIS inter Cartesianos ad officia cerebri, & animæ functiones legi potest in suo cursu Philosophico.

A. Q. RIVINUS in Disp. de spiritu hominis vitali & alibi, Archæum recipit, & a corpore diversum, & a mente, qui sentiat, ideas componat, animi pathemata experiatur, motus omnes in corpore humano præstet.

FR. BAYLE in physicis in T. I. de sensibus in II. de anima brutorum agit.

FR. BAYLE etiam hic addendus tractatus de physiognomia qui est inter dissertationes physicas, Tolosæ 1681. 12. editas. Varia omnino & magni momenti continet, de mechanica corporis humani generatione ex succo, quem spiritus animalis informat, de imaginationis maternæ effectū, explicato ab alimento fetus, quod spiritus animales maternis similes producat.

RAIMUNDUS VIEUSSENS in neurologia etiam habet ansas nervorum circa arterias, ut tardius vel celerius sanguis fluere cogatur. De sede animæ suas, diversas a WILLISIANIS, theorias proponit.

P. MALEBRANCHE celebris fuit suo tempore Cartesianorum dogmatum & systematis causarum occasionalium defensor.

G. W. WEDEL de insomniis, Jen. 1690. Disp.

WEDELII etiam est disp. de archæo, Jen. 1678.

HERM. OSTERDIK SCHACHT de sensibus internis, memoria & imaginatione, Leidæ 1693. 4.

JOHN. LOCKE essay concerning human understanding in 4. books, Lond. 1690. fol. & 1700. compendium vero, Lond. 1688. ab ipso auctore concinnatum & varie Gallice versum prodit, Genev. 1738. 8. &c. ipsum autem opus Gallice redditum est sub titulo *Essai sur l'entendement*, sæpe prodit. Est historia naturalis animæ & modi quo cogitat, sentit, reminiscitur, judicat, acute sed paulum fuscè scripta. Omnes ideas per sensus advenire tueretur. Cæterum magnum medicum fuisse, & SYDENHAMII adjuvisse, atque contra utilitatem anatomes subtilis scripsisse lego apud COCCHIUM dell' *Anatom.* p. 20.

FRID. SCHRADER de idiosyncrasiis, Helmstad. 1696. 4.

In FERDINANDI SANTANELLI lucubrationibus secunda est de somno, quem explicat per halitus a ventriculo ad cerebrum adscendentes & obstanter motui spirituum. In tertia, quam *organismum mechanicum* vocat, statuit spiritus inter corpus & animam medios, æthereos, &c.

J. A. SLEVOGT de affectibus animi, Jen. 1695. Disp.

G. E. STAHLIUS sententiam CAMPANELLE, qui febres animæ esse opus, GALENI, PERRALTI & BORELLI renovavit, & ipse HIPPOCRATEM & GALENUM pro Auctore theoriæ suæ attulit (*de antiqua verit. art. med.*) Infinitis autem Libellis suam sententiam defendit, imprimis in *theoria medica*. Ea huc imprimis redit, animam rationalem ipsam corpus sibi in utero matris struere, eandem perpetuo corpus suum regere, motum circulationis pro impedienda putredine excitare, febriles impetus ad superandam sanguinis crassitiem moliri, & in universum motus proprios opponere morborum causis, etsi non conscia suæ actionis, ob consuetudinem. Huc ergo refero STAHLII Diss. de motu tonico vitali, Jen. 1692. 4. Hall. 1702. 4. Ejus positiones de mechanismo motus progressivi sanguinis quibus motus tonici partium porosarum necessitas demonstratur, Hall. 1695. 4. (Hæc motus tonici per fibras omnes corporis dispersi theoria multum adfinitatis habet cum principio irritabili, nisi quod mentis consilium addat STAHLIUS). Porro huc pertinet Disp.

Disp. de passionibus corpus humanum varie alterantibus, Hall. 1695. de astu maris microscopici, Hall. 1696. 4. de Autocratia natura, 1696. de differentia rationis & ratiocinationis, 1701. 4. de natura erroribus medicis, 1703. de mechanismi & organismi diversitate, 1706. 4. de animi morbis, 1708. Magnam autem famam, & adseclas sibi adquisivit plurimos, quorum nomina integro Libro congeffit J. CHRISTOPHORUS GOETZIUS, qui Norimb. 1729. 4. cum J. LUD. APINI supplementis prodiit. Inter eos in Germania MICHAEL ALBERTUS, J. SAMUEL CARL, J. DANIEL GOHL, ANDREAS OTTOMARUS GOELICKE, JOHANNES, JUNKER, & JOH. ZACHARIAS PLATNER fuit, si credis GOETZIO. In Anglia D. PORTERFIELDS (in Ast. Edimb. IV.), JOHANNES TABOR in exercitationibus, BRIAN ROBINSON in Oeconom. anim. Prop. XXI. Libro of food and discharges p. 80. T. MORGAN princip. p. 345. (ubi somnum voluntati animæ tribuit) RICH. MEAD. de variolis pag. 16. 17. F. NICHOLLS & alii. GEORGIUS CHERNE, qui vitam & animationem a materia pendere negat, sed principium esse rationale or English malady pag. 94. Idem celebre experimentum hominis voluntarie morientis, aut certe pulsus supprimentis & renovantis profert, in eodem libro. In Gallia CL. J. de SAUVAGES in Disp. de inflammatione: de febribus, & alibi. In Belgio T. SCHWENCKE hematolog. p. 37. & NICOLAUS HARTSOEKER (Diff. sur les passions), dogmata STAHLII aut omnia, aut præcipua secuti sunt.

G. E. STAHLII hic citatum de differentia rationis & ratiocinationis programma præcipuum est, in quo objectiones mechanicorum solvit, distinguendo internam animæ voluntatem, quæ absque conscientia, ab externa, cum conscientia. EJUS etiam huc pertinet de passionibus animi corpus humanum varie alterantibus 1719.

A. BUSSI de imaginationis viribus medicis, Leidæ 1698.

In suo de Pathologia cerebri Tractatu BARTHOLOMÆUS de MOOR fuse egit de sensorio communi, idque ab anima non differre demonstrare suscepit.

J. N. PECHLIN affectuum animi historias medicas & effectus in corpus humanum recenset in observationibus suis.

G. C. SCHELHAMMER de natura sibi & medicis vindicata, Kiel. 1697. 4. & ejusdem natura vindicata vindicatio, Kiel. 1702. 4. Uterque Liber contra STURMIUM & BOYLEUM scriptus est, & naturam defendit tamquam ens aliquod proprium, quod fere evanescit, ubi definitur (p. 104.) lex qua unumquodque ens jussu est agere convenienter ad finem. Superstitiosum, quod mireris, passim reperias. Ex praxi aliqua adspargit.

IDEM in præf. ad physiologiam posthumam fuse contra STAHLIUM dicit. EJUSDEM Liber de humani animi adfectibus, Kiel. 1710. 4. exempla copiosa habet efficaciarum adfectuum in mutando corpore.

JOSEPHUS PITTON de TOURNEFORT in propria inaugurali thesi estne anima corporis facultatum principium, Paris. 1695. PERRALTI opinionem, sive STAHLII refutat.

In Mémoires de l'Académie Royale des Sciences.

1702. De Musicæ vi ad Tarantularum morsum.

1707. Delirium a Musica suspensum.

1709. VIEUSSENS theoria somni.

1711. Amissa memoria a febre.

1713. Somnus diuturnus.

WINSLOW de motibus simultaneis duarum manuum.

1741. LA PEYRONIE de sede animæ in corpore calloso.

C. FRID. PETZOLD de memoria memorabili, Lips. 1699. Disp.

W. H. WALDSCHMIDT de imaginatione hominum & brutorum, Kiel. 1701.

In coll. disputationum ZWINGERIANARUM varia huc pertinent: Disp. de somnambulatione: & de nostalgia: & de antipathia humana.

JOH. BRANCACCII ars memoria vindicata, Panorm. 1707. 12. & de BILLY nouveau Traité de la mémoire, Paris. 1708. 12. *

JONES mystery of opium revealed, Lond. 1701. fuse de opii vi etiam per experimenta agit.

HENRICUS RIDLEY aliqua in opere de cerebro habet, ad diversas nervorum vitalium & animalium classes.

BESSE des passions de l'homme (in Journ. des Savans 1702.) mechanicam explicationem adfectuum animi tentavit.

- AL. della *FABBRÀ* de *animi adfectionum physicarum causa*, Ferrar. 1702. 4.
 AL. della *FABBRÀ* l. c. recusatus est Ferrar. 1712. 4.
 P. CHIRAC *Diff. de incubo, de causis mechanicis somni disputat.*
 In *JOURNAL DES SAVANS* 1707. April. & *A. ERUD.* 1707. habetur etiam historia somni diuturni.
 LUDOV. APINI de *principio vitali* Disp. V. Altdorf. 1702. 1703. Pro *STAHLIO*.
 LUD. APINUS disp. citata animam vegetabilem statuit.
 J. GEORG. KULMI *ονειρολογία*, Uratislav. 1703. 4.
 Circa hæc tempora WILHELMUS GODOFREDUS LEIBNITZIUS floruit, atque pro explicando corporis cum anima vinculo novam hypothesin proposuit, quæ satis ex mente *BOERHAAVII* fuisse videtur, ut nulla esset utriusque in homine conjunctæ substantiæ similitudo aut operatio mutua, sed, ex æterna lege, motus aliqui corporis cum animæ definitis cogitationibus conjungerentur, & vicissim. Infinitis libris hæc sententia proposita est aut impugnata. Duos unicos libros proponam. Pro compendio G. BERNHARDI BILFINGERI *Liber de harmonia anima & corporis humani maxime præstabilita*, Tubing. 1741. 8. Pro magno systemate *Psychologiam rationalem CHRISTIANI WOLFFII*, Hall. 1740. 4. & *empiricam* ibid. 1733.
 Inter THOMSONII dissertationes quinta de opio est, & vi somnifera.
 BENJ. EWALDT de *somno*, Regiom. 1711. Disp.
 BENJ. EWALDT citata disputatio utilis est.
 S. DURY de *motu vitali*, Leid. 1711. 4.
 CHRISTIAN WEISBACH de *intentione & inventione anima in administratione œconomia vitalis*, Basil. 1711. 4. *STAHLIANUS*.
 J. GEORG. a BERGEN & QUEITSCH de *insomniis*, Græcopol. ad Viadr. 1711. 4.
 J. B. GUASTALDI *question de Médecine*, Avignon 1713. De somnambulismis.
 POLYC. SCHACHER *an anima rationalis sit corporis vitale principium*, Lips. 1715. Disp. & ejusdem vel Respondentis AUGUSTI BEHRENS Disp. de *consideratione anima rationalis medica*, Lips. 1720. 4. Contra *STAHLIUM*.
 J. MELCHIOR VERDRIES de *commercio anima & corporis*, Giesf. 1713. & 1714.
 J. MELCH. VERDRIES, jam citati, etiam huc pertinet de *æquilibrio mentis & corporis*, Giesf. 1716. 8.
 JOH. MARIA LANCISII dissertationes de *physiognomia & sede anima cogitantis*, Venetiis 1713. 4. In priori a debilitate manus & frontis ad vires animi & corporis exiguas, a profunditate, rectitudine & simplicitate ad robur utriusque concludit. In altera sedem animæ figit in calloso corpore, & aliquas partes cerebri describit.
 MATTHÆI GEORGI de *homine* liber II. Genuæ 4. totus de anima agit ad modum Peripati.
 J. CONR. KUNDMANN *vom verstande des menschen vor und nach dem falle*, Breslau 1720. 8. Multa de insomniis prophetis, extasi, gustu fortunæ perfectioris, vi animæ struente corpus, ciente hæmorrhagias, laxante cutis poros, ut acre de sanguine diffari queat &c. ad *STAHLII* mentem.
 J. LUD. APINI *fasciculus* disp. maxima ex parte agit de *principio vitali*, ubi *STAHLII* causam agit, & animam etiam vegetabilibus tribuit, Altdorf. 1718. 8.
 De musculis faciei, qui in animi adfectionibus agunt *CANTIUS*.
 JAC. FOURNEAU. Ergo *perturbationes motus cordis sanguinisque augent, & minuunt*, Paris. 1721. 4.
 D. FLEMING *neuropathia, sive de morbis hysteris & hypochondriacis carmen*, Amstelod. 1741. 3. etiam huc pertinet.
 HENRICI JOSEPHI REGA de *sympathia, seu consensu part. hum. corporis*. Halem. 1721. 8.
 HENRICUS JOSEPH. REGA l. c. inprimis ad pathologiam spectat, & collectanea tradit ex BAGLIVO, HELMONTIO aliisque.
 CHRISTOPH. MARTIN BURCHART de *principio movente in animalibus*, Rostok 1723. Disp. Stal.
 J. A. WEDEL de *principio vitali*. Jen. c. *STHAL*. 1721. de *vi natura Medica*, Jen 1723. 4.

MARTIN GOTTHELF LOSCHER *de natura sensuum externorum hominis*, VVittemb. 1726.

GOTTFRID POLYCARP. MULLER *theoria sensuum generalis*, Lipsi. 1722.

J. ASTRUC *de phantasia & imaginatione*, Monspel. 1723. 8.

T. MORGAN in *philosophical principles of Medicine*, Lond. 1725. 8. haftenus etiam ad Stahlianam sententiam accedit, quod somnum habeat pro voluntaria remissione dolorifici & incommodi laboris, quæ etiam JOHANNIS TABOR opinio est L. c. p. 304. Ad animi adfectus & eorum efficaciam aliqua addit, terrorem recte separat a metu, &c.

P. HAGUENOT *de sensationibus externis*, Monspel. 1728. 8.

G. DETHARDING *scrutinium physico-medicum in quo indoles intellectus, anima insiti, & adventitii probe discernendi eruitur*, Rostok 1723. 4. Pro STAHLIO.

G. DETHARDING etiam est *scrutinium communionis anima & corporis*, Rostoch. 1714. 4.

DAVID VASSE'. *Ergo anima non est corporis facultatum principium*, Paris. 1723. 4.

EL. CAMERARII *de efficacia animi pathematum in negotio sanitatis & morborum*, Tubing. 1725. 4.

EL. CAMERARIUS ibidem jam dictus, in *medicina electrica* contra LA PETRONIUM dixit de animæ sede.

JOH. de GORTER in *exercitationibus medicis*, Amstel. 1737. 4. editis. Prima est *de motu vitali* quæ seorsim an. 1734. Harderovici prodiit. Omni fibræ humanæ attribuit vim se constringendi, cui contraria sit vis extendens musculosa, unde a perpetua pugna perpetuus etiam motus oriatur. In II. Exerc. contra BOERHAAVIUM & SANCTORIUM demonstrat, motus omnes in somno languere & minores esse, quæ etiam MORGANI, SCHWENKII, STENZELII, & olim AVICENNÆ opinio fuit. In III. IV. Exerc. *de fame & siti*, has adfectiones pro sensibus propriis habet, utilis ceterum Auctor. IDEM in *Lib. de perspiratione & in Chirurgia* legi meretur, in qua de dolore egit, de mechanica sensus ratione.

JOH. de GORTER etiam est I. *de actione viventium particulari*, ubi ostendit cuilibet parti Corporis Humani inesse propriam facultatem, cujus ope functionem suam perficiat, quæ neque a corde sit, neque ab elatere, neque ab adtractione elementorum, neque ab animæ arbitrio, cujus exempla sunt motus peristalticus, respiratio, vis pulmonis, lienis, glandularum, cerebri, placentæ, partium genitalium, mammarum.

In *Diario TRIVULTINO* 1729. Diss. exstat, qua demonstratur utique somnum esse a compressione aortæ.

JOH. FRID. SCHREIDER *de fletu* habet de dolore & adfectibus tristibus cogitationes suas.

H. F. TEICHEMEYER *de sepro pellucido*, Jen. 1729. 4. aliquot programmata edidit quibus sedem animæ ibi & in corpore calloso ponit.

MARTINI NAGY BOROSNAY *de potentia & impotentia anima humana in corpus organ.* Hall. 1729. Disp. Contra STAHLIUM plantas objicit, quarum fabrica absque animæ suspicionem sapientissima est.

P. GERIKE *de sensibus inprimis externis*, Halmst. 1733 & de insomnio ibid. 1742.

G. CLARKE *de vi animi pathematum in corpus humanum*, Leidæ 1727. 4.

P. GOTTL. WERLHOF in *obss. de febribus* contra Stahlianam sectam dixit, objecit perspicaciter, ut solet, plantarum exemplum, motum a morte.

J. HENRICI COHAUSEN *Archæus febrium faber & medicus*, Amstel. 1731. 12.

F. HOFMANNI & GEORG. WALTHER *de vera perpetui mobilis in corpore humano idea*, Hall. 1731. 4. Contra STAHLIANOS.

PETR. CHRIST. BURGMAN *examen hypothescos Stahlina de anima rationali*, Rostoch. 1731. & P. II. 1734. 8. Prior in M. ALBERTUM, posterior prioris in eundem & LONGOLIUM & HARTMANNUM est defensio.

J. DAN. LONGOLII *de organica intellectus humani actione*, Hall. 1709. Disp. *systema Stahlianum de vita & morte corporis humani ab incongruis medicorum mechanizantium opprobriis vindicata* occasione Burgmanniani scripti, Budissæ 1731. 8. & *mantissa ad vindicias systematis Stahlia examina Stenzelii furorem*, Budissæ 1735. 4. ista STENZELII pathologiæ pigrorum opposita. Acris, ut vides, STAHLII defensio.

MICHAELIS ALBERTI pene infinitæ disputationes sunt, quæ huc pertinent. Ep. *de admirandis animæ præcipue humana adfectibus*, Hall. 1713. *de sensuum internorum usu in Oeconomia vitali*, 1729. &c.

MICH. ALBERTI epistola citata patibulum etiam in ovo gallinæ expressum admittit : EJUSDEM etiam huc pertinet libellus *verhandlung von der seele der menschen, der thiere, und pflanzen* primum Hall. 1707. 8. recusatus est in collectione der medicinischen und philosophischen schriften, Hall. 1721. 8. Animas brutorum animalium immortales & immateriales facit, & peccati capaces, & vegetabilibus ipsis animas adscribit. Animæ nostræ de antiqua excellentia vestigia aliqua superesse, exemplo sternutationis ante hospitum adventum persuadetur. Demonstrat animæ in corpus imperium, & solitam distinctionem λόγου & νοησιµου adducit. In eadem collectione est etiam dissertatio de *energeja natura in actibus vitalibus sine medico salutariter exercendis*. EJUSD. est *Medicinische betrachtung von den kräften der seele nach dem Unterscheid des leibes und dessen gesundtheit und krankheit*, Hall. 1730. 4. continuatio scriptorum philosophicorum.

In *Opusculis scientificis* T. IV. exstat Diss. GUILIELMINI, qua docetur omnes motus naturales & cordis ipsius esse a stimulo. In T. X. curiosa somnambuli historia habetur.

In G. CHEYNE *English malady* habetur celebre, si verum, experimentum Domini TOWNSHEND, qui solo voluntatis nutu pulsum & respirationem suppressisse & revocasse ante mortem dicitur.

JAC. van EEMS de somno, Leidæ 1734. Disp.

WILH. NOORTWYK de natura humana, Leid. 1735. 4. recusa cum libello SOLANI LUQUES.

Traité de la communication des maladies & des passions, la Haye 1738. 12. Omnia ad corpus refert, quæ animæ tribui solent, ipsam voluntatem, & adfectiones, quæ quam maxime ad animam, videntur pertinere, ut superbiam. Passiones animi a corporeis passionibus nihil differre, & omnem, etiam moralem voluptatem, a remissione fibrarum esse docet, &c.

In D. PLUCHE *spectacle de la nature* T. V. multa bona huc pertinentia legi. Imagines veras in memoria refutat. Quanam dimensio odoris?

THEBESIVS de somno ut signo, Lipsi. 1740. Disp.

A. O. GOELICKE de genuino corporis organici motore. Disp. Francof. ad Viadr. 1740. 4. Pro STAHLIO.

P. van MUSSCHENBROECK de mente humana se ipsam ignorante oratio, Leid. 1740. 4.

ABRAHAM LEVIN de vi imaginationis in vitam & sanitatem, Hall. 1740. 4.

CAR. AUG. a BERGEN de organicorum & mechanicorum systematibus, Francof. ad Viadr. 1740. 4.

JAC. von VISVLIET de somni natura & causis, Leidæ 1742. 4.

J. CASP. METZGER de somni natura & causis, Leidæ 1742. 4.

J. G. KRUGER de sensatione, Hall. 1742. Disp.

J. A. SEGNER de sensibus in genere, Gotting. 1742. 4.

G. MICHAEL DUBINSKI de reminiscencia vitali, Hall. 1743. Disp. Historiolas aliquas pro sententia Stahlina minus probabiles habet.

F. de SAUVAGES in Tractatu de febre & in theoria inflammationis, Bourg. S. Andeol. 1743. 8. recusis cum hamastatiks HALESII, acrem STAHLII discipulum se demonstravit, qui docet febrem fieri ab anima contra obstacula vires cordis augente, nulla mechanica necessitate, & demente de viribus musculorum voluntariorum, ut vires cordis augeret, &c. Effectus adfectuum animi in pulsu mutando accurate observavit.

F. de SAUVAGES etiam est nova somni theoria, Monspel. 1740. 4. EJ. de motuum vitalium causa, ibid. 1741. 4. easdem hic sententias proponit, quas ibi excitavimus ex recensito EJUS tractatu.

D. LIEUTAUD Diss. I. de la nature & des usages de l'esprit animal cum Essais anatomiques prodiit.

In Elementis Newtonianis s. GRAVESANDII reperias eadem quæ BOERHAAVIUS urget, de diversitate inter ea, quæ in rerum natura vere existunt, & de iis quæ anima inde percipit.

J. ASTRUC an sympathia a certa nervorum positione in sensorio. Parisiis 1743. 4. Ingeniosa theoria.

ERNEST. ANT. NICOLAI von wüirkungen der kraft der Einbildung in dem menschlichem Körper, Hall. 1744. 8. Insomnia explicat a similitudine ideæ, quæ animæ obversatur, & alterius.

alterius adfinis, quæ in statu corporis aut præcedente idea fundatur. Motus omnes in corpore a stimulo deducit. Stahlianos refutat. *EJUSD. vereinigung de Music mit der artzneykunst*, Hall. 1744. 8. De lingua affectuum animi, eorumque signis naturalibus agit, atque effectum animi passionum explicare conatur, quod ex oriuntur in anima passiones, quarum lingua a musico exprimitur. In nuperis *pathologicis Diss.* quæ Germanice prodierunt, de affectibus animi eorumque in facie signis fusc agit.

ERN. ANT. NICOLAI primo loco citatus libellus Hallæ recusus est 1751. 8. *EJUS* etiam est *von der kunst die krankheiten aus dem gesicht zu erkennen*, in *EJUS* collectione *bemühungen in der arzneywissenschaft*, Hall. 1749. 4. Satis ad mentem PARSONI scripsit; musculos qui animæ affectum exprimunt repetita actione robustiores fieri, ut etiam extra affectum vestigia aliqua supersint.

Apud J. G. GUNZIUM de humoribus etiam collectio habetur ad effectus passionum animi.

J. FRID. MEYER *von der übereinstimmenden harmonie*, Hall. 1744. 8. & IDEM *von den Gemüths bevegungen*, ibid. 1744. 8. In priori Libello refutat systema influxus, quod in omni actione quæ animæ cum corpore communis est, & anima agit & corpus, atque adeo, si actionis causa in anima foret, effectus actionis duplex foret. Deinde causas occasionales refutat. In altero Libro animæ adfectiones, quatenus in anima habitant, & ex multis confusis, simul præsentibus, ideis oriuntur, explicat. In ea parte, quæ ad corpus pertinet, brevior est. Temperamenta etiam explicat.

J. GOD. KRUGER *grundriss eines neuen lehrgebäudes der arzeneygelahrtheit*, Hall. 1745. 8. Proponit mediationem inter Stahlianam sectam & mechanicam. Motus in corpore humano omnes vi stimuli alicujus fieri etiam in corde, & aliis partibus, & cum aliqua animæ obscura sensatione conjungi docet, quæ unice laboret, ut se a sensationibus ingratis vindicet.

Anonymus *von den Gemüths bevegungen*, Hall. 1746. 8. De temperamentis inprimis agit, eaque ex tensione nervorum & mobilitate varia explicat, ut modo velociter, modo valide, modo lente, modo debiliter affecti tremant. Etiam superbiam & alias hujusmodi adfectiones ex corpore interpretatur.

J. N. WEISS & SCHÆFFER *quod alia sensatio alium motum inferat*, Altdorf. 1745. Disp.

CHRISTIAN GOTTLIEB KRAZENSTEIN *beuveifs dass die seele ihren Körper baue*, & *Fortsetzung dieses beuveifes*, Hall. 1745. 8. Exemplo polyporum, quibus novi artus reparantur, demonstrare conatur, animam suum corpus struere, cum nullo mechanismo adeo apti & prioribus congruentes artus reparari queant. Contra hunc virum H. J. DELIUS Baruthensis nunc physicus, scripsit *Antwortschreiben auf den beuveifs dass die Seele ihren Körper baue*, Hall. 1746. 8.

C. G. KRAZENSTEIN est etiam *theoria & secundus in medicina usus principii sensationum sequitur motus sensationi proportionalis*, Erlang. 1749. 4.

CHRIST. GOTTFR. STENZEL *περί ύπνου*, Gedan. 1745. 8. Raro exemplo Græca lingua phænomena somni explicat, causasque. *EJUS* contra STAHLIUM scripta omittimus ob necessariam instituti nostri brevitatem.

PETRI POISSONNIER & DUPRE. *Ergo perfectior tempore somni χύλωσις*, Paris. 1745. Disp.

A. KAAU *impetum faciens dictum Hippocrati*, Leidæ 1745. 8. Non solum eruditissime de anima ex omni antiquitate egit, sed de motu nervorum, somno, opio, phænomenis ab opio adsumto ortis experimenta utilia protulit. Omnes motus peristalticos & alios, a somno frangi ostendit.

LUD. ANT. MURATORI *della forza della fantasia umana*, Venet. 1745. 8. Egregia historia naturalis imaginationis.

In *Edimburgensium T. V.* de opii effectum in retardando sanguine experimenta habentur pag. 154.

Histoire naturelle de l'ame, Paris. Hag. 1745. 8. Auctor videtur de la METTRIE. Scopus est, demonstrare animam materialem, hominemque de simiarum genere esse, neque ullas dari mentes incorporeas. Multum utitur nostris, minime citatis, ad BOERHAAVIUM commentariis, de viribus autem animæ earumque in corpore fundata natura multa habet.

FRIDERICI WINTER *de certitudine in medicina practica*, Francker 1746. fol. Causam motus animalis omnis ponit in irritabili natura fibrarum.

FRIDERICI HOFMANNI *comm. de differentia inter ejus doctrinam physico-medicam & STAHLII medico organicam*, Francof. 1746. 8. Posthumus egregius Libellus, sive HOFMANNI sit, sive nomen ejus unice præfixum gerat. Motum a corpore ipso generari posse: mortem non esse ab animæ fastidio: motus a venenis ortus a stimulo esse non a sapienti mentis consilio, &c. sobrie, dilucide & docte demonstrat. Non alius melior Liber STAHLIO objectus est.

J. A. UNZER *vom einfluss de seele in den Körper*, Hall. 1746. 8. Defendit Stahlianum influxum, quod mutationes, quæ in corpore oriuntur, cum nullo alio ente arctius jungantur, quam cum anima, atque adeo anima earum causa sit. Imo vero cum fabrica corporis multo propius connectuntur.

JACOBI PARSONS *human physiognomy explain'd*, Lond. 1746. 4. Mutationes varias musculorum faciei & oculorum describit, quæ ab animi adfectibus fiunt. A frequentia horum adfectuum musculos eos, qui regnanti adfectui serviunt, robustiores fieri, & magis conspicuos, inde physiognomiam nasci demonstrat. LANCISIUM refutat.

Lettres philosophiques sur les physionomies, La Haye 1746. 12. Omnem diversitatem ingenii a varietate organorum & fabricæ pendere; eam, temperamenti nomine, in cute faciei & oculis adparere; esse temperamenta eaque immutabilia, neque posse temperamento resisti, &c. Multa acute dicta, alia per jocum.

PASCHASII BORIE & du BOURG *datur ergo etiam vitalium organorum somnus*, Paris. 1746. 4.

J. C. J. SUPPRIAN *vom schlaffe und den träumen*, Hall. 1746. 8. In vero somno nullas animæ repræsentationes offerri, in spurio, turbulento, aliquas, & eas esse insomnia, vigiliarum partem; & sensum ubique in corpore aliquem exerceri, non in solo capite ostendendum sumit.

JOH. ANTONII BUTINI *de sanguinis circulatione*, Monspel. 1746. 8. Pro Stahlîi theoria.

RICHARD MEAD *mechanical account of poisons*, Londin. 1702. 1747. 8. Multa huc pertinentia habet. Somnum ad defectum stimuli refert, & opii vim ad voluptatem ex remoto omni incommodo. Tarantulæ historiam admittit.

HIERONYMI DAVID GAUBII *de regimine mentis, quod medicorum est*, Leid. 1747. 4. Corporis in animam imperium demonstrat exemplo malaciæ, delirii febrilis, diætæ. Priora de conjunctione animæ & corporis systemata refutat. In fibra animali pro causa motus, *σπασμὸν* sive irritabile recipit.

F. QUESNAY in nupera editione suæ *Oeconomiae* fusissime de anima ejusque functionibus agit, & de somno voluntario. Systema causarum occasionalium sequitur.

Essai sur l'origine des connoissances humaines. Amstel. 1746. 12. Egregius Liber ad historiam naturalem animæ.

J. BARKER in *Essai on the agreement between the practice of Hippocrates... and Boerhaave*, London. 1747. 8. Stahlianam animæ in morbis curam refutat, cum semper eodem invariabili modo, & sæpe cum corporis sui excidio, operetur.

L'homme machine, Leidæ 1748. 12. Iterum opus equidem de la METTRIE, sed multo audacius, & truculentius, cum omnino diserte DEUM ex rerum natura relegare conetur, neque aliud ens in universo admittat, præter ipsam materiem varie modificatam. Irritabilitatis inventum sibi perperam tribuit n. 18. 22.

L'homme plus que machine, Leidæ 1748. 12. Pro mente immateriali pugnare videtur.

BALTH. LUD. TRALLES *de machina & anima humana prorsus a se invicem distinctis*, Uratislav. 1749. 8. Et ipse & Auctor anonymus de l'homme machine suos libros ad me scripserunt, sed TRALLESius multo, ut facile est creditu, gratior. Ingenuus admittit, quæ vera habet ille DEI inimicus, quæ autem præceps conclusit, aut nimia admiscuit, ea perspicax refutat, his inprimis argumentis, quod perceptiones non sint eadem cum impressionibus sensuum, neque adeo cogitationes necessari effectus mundi corporei in corporeum cetebrum impressi.

Contra optimi viri B. L. TRALLES citatum libellum anonymus aliqua in A. E. 1749. Jun. P. J. objecit.

JOH. LUPS *de irritabilitate*, Leidæ 1748. Disp. systema WINTERI & GAUBII proponit, de proprietate nempe in omni & animali & vegetabili fibra residente, qua ab irritatione contrahitur.

Nunc addam breviter quinam Auctores ex iis , qui de universa anatomia scripserunt , commendandi sunt , nam non omnibus convenit omnes e-
mere (a).

F f f f

I. AN-

CL. FORMER de insomniorum generatione perelegans dissertatio exstat in *Mémoires de l'Acad. des Sciences de Berlin* 1746.

J. ANDR. ROEPER *die Wirkung der Seele in dem Körper nach Anleitung eines nachtrückerers* , Halberstadt 1748. 4. EX STAHLII secta, satis asper.

ANT. WILH. PLAZ de brutorum imaginatione, Lips. 1749. 4.

G. ERH. HAMBERGER de vigiliis, Jen. 1749. 4.

PHIL. JAC. VALCKENAER de consensione partium in corpore sano & morbo, Leid. 1749. 4.

J. WOLFGANG MANITII de idiosyncrasia ex diversa solidorum corporis humani irritabilitate optime dijudicanda, Leid. 1749. 4. Ad mentem ILL. WINTERI agit de irritabili natura solidorum C. H.

CL. de BUFFON in Tom. II. aliqua de mente & anima, in T. III. de sensibus in universum protulit.

DAVID HARTLEY *observations on man, his frame, &c.* Londin. 2. vol. 8. huc imprimis pernet, cum mechanicam explicationem proponat modi quo omnes corporis animæque functiones in homine peraguntur, per vibrationes primigenias & superstites a prioribus vibrationibus: de somno, idearum generatione, motu musculari, loquela, cogitatione, &c. Ediderat autem specimen hujus systematis Bathoniæ 1746. 8. sub titulo conjecturarum de sensu motu & idearum generatione, cum libello de medicamento STEPHANIÆ.

FRANCISCI ISEZ & MACMATIOIS Ergo decidit aliquid venustati diuturniori somno, Parisiis 1749. 4.

J. MARTINI CHLADENII de celeritate cogitandi egregia disp. Erlang. 1750. 4.

FRANC. NICHOLLS de anima medica, Londin. 1750. 4.

Ego vero præter alia passim sparsa dissertationem de nervorum imperio in arterias. Götting. 1744. 4. edidi, quam video CL. KAAVIO (impet. fac. p. 434.) aliisque claris viris placuisse. Ab ansis nerveis stringentibus magnas arterias, venasque explicare conatus sum modum mechanicum, quo nervorum adfectiones sanguinis circulum aut incitant aut debilitant.

(a) Hoc loco scriptores anatomicos secundum temporum ordinem recensere visum est, tum eos, qui de anatome in universum scripserunt, tum qui multa diversaque scripta, tum qui de nonnullis subjectis, quæ in prioribus nondum tetigimus. ÆGYPTIOS hic omittimus, qui alibi monuerimus, quam ruditer & timide in incisione corporum versati sint, quæ vilissimis hominibus committebatur. Vide Ægyptiæ anatomes iconem apud NARDIUM in Lucretii editione T. V. f. 2. & confer ANT. CÆLESTINI COCCHII testimonium dell' Anatomia p. 45. 46. qui Ægyptiorum anatomiam suum pretium statuit & Græcorum laudes vindicat. Neque de rarissimis illis dissectionibus dicam, inciso ab ARISTODEMO utero filia, ANAXAGORÆ ariete, ALCMÆONIS cochlea, aliisque, quorum tenuis ad nos memoria pervenit, etsi & in universum Pythagoreorum philosophorum, & imprimis etiam EMPEDOCLIS merita elevare nolim: neque DEMOCRITI, qui Chamæleonem in singula membra dissecuit PLINIO teste Lib. XXVIII. n. 29. & causas morborum in corporibus incisus quæsit. De monstris theoriam eam proposuit, contra quam nuper scripsimus, ARISTOTELE teste de gener. animal. L. IV. c. 34.

In antiquissimis HIPPOCRATIS Libris multa habentur quæ ad anatomen pertinent. Et in genuinis quidem operibus parcior est, neque supra osteologiam & aliquam Chirurgicam myologiam multum sapit; ut certe, si verum oportet fateri, non male GOELICKIUS anatomen Hippocraticam parum utilitatis habere moneat *Hist. anat. antiq.* p. 11. Ergo huc pertinet *μοχλινός* Liber qui nunc vocatur *περί ὀστέων φύσεως*. Osteologia brevis, non mala, nimis tamen pauca numerat ossa, in capite octo, in toto corpore 111. Appendix illa de venis, separata a LINDENIO jam dicta est, qua etiam nervi principes intercostales describuntur. Liber *περί χυμῶν* habet theoriam de bile & sanguine per ætates crescentibus, satis similem ejus, quæ exstat in Libro de natura hominis. Brevitas videtur esse Hippocratica. Edidit cum commentario PETRUS GIRARDETUS, Paris. 1631. tum J. C. GUNZ, Lips. 8. In L. *περί ὑδάτων ἀέρων καὶ τῶπων* habentur aliqua de capitis figuratione ex moribus gentium, de urethra femina bre-

breviori. Vertit nuper Anglice FRANCISCUS CLIFTON, Lond. 1743. 8. Librum *περί τῶν κατ' ἀνθρώπων*, de venis, ossibus, oculis aliqua habet, pleraque vero practici sunt argumenti. In eum exstat comm. FRANCISCI PERLÆ, Romæ 1638. 4. PL. Liber *περί τροφῆς* genuino similis, aliqua habet ad ossa, ad perspirationem, ad circulationem sanguinis, ut passim creditur. GALENUS modo inter genuinos refert, modo ex eorum numero excludit. In Libro *περί ἀρθρῶν* uti passim alia osteologica, ita etiam locus habetur de musculo ex clavicula orto, unde concludas, certe aliquando corpora humana ab HIPPOCRATE secta esse, uti alibi dixi in progr. *quod corpora humana dissectuerit HIPPOCRATES*, Gotting. 1737. 4. Si vero alterius & antiquioris HIPPOCRATIS sunt, Gnosidei f. ut GALENUS in Comm. ad Librum *de fracturis*, habet, antiquiorem etiam apud Asclepiadas anatomes cognitionem fuisse necesse est. Liber *περί ἀρχαίας ἰατρικῆς* contra anatomen, quam AUCTOR pictoribus putat relinqui posse, & contra qualitates primigenias Peripateticorum scriptus est, quod multo plura sint in corpore humano activa principia acidum, amarum, salsum, &c. Liber *περί ἀρχῶν ἢ σαρκῶν* quem DEMOCRITO LAERTIUS videtur tribuere, & tribuit H. CONRINGIUS, acutissimus Libellus est, quo explicatur, quomodo ex calore & elementis mechanice corpus humanum fabrefactum sit, & ex frigido & pingui ossa, ex glutinoso nervi & viscera singulatim omnia nata sint. Varia anatomica hic habentur, fibræ lienis, membrana tympani, oculi tunica, & nervus opticus. Videntur esse HERACLITI principia cum Peripateticis conjuncta. In eum commentatus est HEURNIUS. Liber *περί γυναικῶν* jam dictus est, nasci nempe puerum docet ex femine ab omni parte maris & feminæ deciduo, in medullam spinalem, hinc in renes, inde in testes, nascique alterutrius sexus infantes prouti masculum vel femininum semen dominatum fuerit. Liber *περί παιδίου φύσεως* acute in primis scriptus videtur. Ovum humanum, incubata ova in gallinis hic habentur. Mechanice etiam explicatur, quomodo semen calidum spiritum frigidum hauriat, inde calefactum iterum erumpat, sic umbilicum generat, iterumque adtractum pelliculas struat, ut placenta generetur, & alia nimis hic longa. Liber *de septimestri & octimestri partu* jam dictus est, & Liber *de diata primus*, quo doctrina panspermica continetur. In eum GALENI exstat commentarius. Liber *de hominis ætate* seorsim excusus est, latine versus a JOHANNES LALAMANTIO Lugd. 1571. 8. cum Libro *de septimestri partu*. Liber *περί φύσεως ἀνθρώπου* mihi non genuinus videtur, cum quatuor habeat humores, febres ex varia bile diversas natas, aliaque theoretica. Hic venæ illæ mirificæ describuntur. In eum GALENUS commentatus est, & utrumque opusculum edidit Colinaus, Paris. 1534. 8. tum JACOBUS SCUTELLARIUS, Parmæ 1568. & BLAS. HOLLERIUS, Basil. 1562. 8. & JOH. FRID. SCHROETERUS, Jenæ. 1585. 8. & JOH. HEURNIUS, Leid. 1609. 4. & SEBASTIANUS PAPARELLA, Venet. 1551. * PL. DEMOCRITI Liber *περί φύσεως ἀνθρώπου*: Quæ de bile, de Liene habet, videntur posteriorem ætatem sapere. *De structura hominis* spurius est; cum arterias venasque & nervos accurate distinguat. JOHANNIS STEPHANI notæ exstant in eum Librum, Venet. 1633. 4. * Librum *περί ἀνατομῆς* detexit J. CAJUS edidit CL. DAN. WILHELMUS TRILLERUS cum *commentatione de nova HIPPOCRATIS editione adornanda*, Leid 1728. 4. Certum est auctorem corporum humanorum anatomen tenuisse, & de industria comparasse cum animalium fabrica, & aliqua de quinquefido favi simili pulmone non mala habet. Doctus, fusus & minime timidus commentarius est, quem dixi. CL. GUNZIUS arteriam cartilagineam, quam pro vena Cava habuerat TRILLERUS, ad pericardium refert, in progr. quo in Libro *Hipp. de dissectione* commentatur Lipsiæ 1737. 4. In Libro *περί καρδιᾶς* satis accurata anatome est, & nimis, pro temporibus HIPPOCRATIS, minuta. Potus tamen descensum per asperam arteriam retinuit. Supra jam laudatus est. De eo proprius exstat G. SEGERI Libellus, Basil. 1661. 4. Liber *περί φούων* eloquens & acute scriptus est, maxime pathologicus. Liber *περί ἀδνῶν* theoriam de catarrhis habet eam, quæ etiam in Libro *de locis in homine* docetur. Glandulas varias habet, etiam in articulis, sed eas forte alares. Liber *de dentitione* brevis & verax, etsi spurius. Liber *de insomniis* acute, uti dictum, scriptus. In Libro II. *Epidemicorum* habetur eadem ridicula venarum descriptio, quæ in Libro *de ossibus*. In Libro V. *Epidemicorum* arteriæ a venis distinguuntur, ut vix possit HIPPOCRATIS esse. In Libro *περί νοσῶν* IV. habetur subtilis ætiologia superstructa theoriæ quatuor humorum Peripateticorum: refutatur descensus humoris per asperam, qui in Libro *περί τῶν ἐν τῷ παθῶν* adfirmatur. In Libro *περί ἱερῆς νοῦς* de cerebro agitur, & humanum cum brutorum cerebro

rebro comparatur, experimentum etiam anatomicum dissectarum caprarum & ovium adducitur. Liber *περί ὀφθίος* jam dictus est, & ille de *superfetatione*. Cæterum de editionibus HIPPOCRATICORUM operum alibi dicemus. Osteologiam Hippocraticam dedit, uti dictum est, RIOLANUS.

Librum *περί τῶν τῶν κατ' ἀνδρῶν* hic citatum, non ante ARISTOTELEM scriptum, neque adeo genuinum HIPPOCRATIS esse, eruditissimi viri T. REINESII opinio est, *variar. lectio. p. 75.*

In commentarii GALENI L. II. (*de propr. l.*) & III. libro in HIPP. I. *περί φύσεως ἀνδρῶν* demonstratur veram sententiam HIPPOCRATIS etiam in aliis libris declaratam hoc opere contineri. Hunc librum HIPP. cum GALENI commentario edidit etiam EUSTACHIUS QUERCETANUS, Basil. 1549. 8. seorsim vero prodiit HIPP. *de natura humana*, Brem. 1584. 4.

Physiologica potius sunt, quam anatomica, quæ PLATO habet, & quæ recenset CL. J. H. SCHULZE. In eum *ex philosophorum & medicorum spatiis scholia* MATTHÆO FRIGILIANO collectore prodierunt, Paris. 1560. 4. *

De DIOCLE Carystio alibi dictum est. Primus de *administratione anatomica* scripsit.

Sed ARISTOTELIS opera negligere nefas est, qui corpora plurimorum animalium secuerit, aliquando satis subtiliter, ut in Chamæleonte, eo consilio ut classes ex communitatibus constitueret: idemque icones anatomicas paraverit, etiam suis literis, ut nunc solemus inscriptas (v. p. 51.) & corpora humana ipsa secuerit, si credis CL. SCHULZIO. Ita tamen legere oportet, ut magis prima semina opinionum & descriptionum ibi inquiras, quam accuratas aut fide undique dignas descriptiones. Huc ergo pertinent *de historia animalium* Libri XI. Prodierunt etiam cum J. C. SGALIGERI commentariis & nova versione, Tolosæ 1618. fol. EJUSD. *De partibus animalium* Libri IV. *De generatione animalium* Libri V. *De spirita* Liber I. *De respiratione* Liber I. *De somno* Liber I. *De insomniis* Liber I. *De sensu* Liber I. *De memoria* Liber I. *De longevitate & brevitate vite* Liber I. *De juventute & senio* Liber I. *De incessu animalium* Liber I. *De motione animalium* Liber I. Passim aliqua ibi reperias nobilia, de ovi incubatione & fabrica, de piscium dissectione, de vasis, de viscerum in systemate animalium lato vel angusto imperio. Errores intercurrent ægre excusabiles, ut ille celebris de tribus cordis sinibus, &c. EJUS etiam *Problemata* non oportet omississe quæ M. ANTONII ZIMARÆ opera, cum ALEXANDRI Aphrodisiaci sectionibus interprete POLITIANO prodierunt, Basil. 1544. 8. (PLATN.) Ex Philosophia ARISTOTELIS major pars theoriæ Galenicæ derivata est.

Anonymi Isagoge anatomica. Videtur ex ARISTOTELE compiler recentiori paulum ævo, qui clitoridem habeat, elegans cæterum & boni ordinis. Edidit Gr. Lat. primo PETRUS LAUREMBERG, Leid. 1618. 8. nuper vero JOANNES STEPHANUS BERNARD, Leid. 1744. 8.

ARISTOTELICOS cæterum minutos satis anatomicos fuisse apparet ex auctione vitarum LUCIANI.

MARTIANUS ERASISTRATEUS scripsit duos libros *de anatome GAL. de propr. lib.*

HEROPHILUS Alexandria corpora, non tamen vivorum hominum secuit (COCCHI in oratione an. 1736. edita *de usu artis anatomica*, Florent. 4. p. 14.) Scripta ejus perierunt. Vasa tamen lactea vidisse, nervos in tria genera separasse, ligamentorum, tendinum, nervorum, sinus cerebri, tubas animalium, vesiculas seminales descripsisse satis notum est. COCCHIUS fragmentum ejus viri de ligamento terete edidit.

ERASISTRATUS secuit equidem ANTIACHI favore corpora noxiorum hominum (conf. COCCHI. c.) non tamen viva, alioquin non negasset sanguinem arteriis contineri (IDEM p. 16.) uti neque crederem verum esse, quod ex THEOPHANE eodem loco legitur, CONSTANTINUM, LEONIS Isaurici f. medicum vivo alvum & præcordia incidi jussisse p. 18. Vasa lactea in mesenterio vidit ERASISTRATUS, cerebrum subtilius rimatus est, candidus errorum revocator, paulo tamen nimius in *hypothesibus*. Errorem loci, five aberrationem sanguinis in vasa aliena primus docuit. CELSUS in *præf.* Inventorem esse arteriæ bronchialis alias ostendi. Duos Libros *anatomicorum de singulis passionibus* scripsit, in quibus tamen eum carpit CÆLIUS acur. III. c. 4.

LUCRETIVS in carmine suo *de rerum natura* physiologiam etiam habet, ad Epicureorum

sententiam. Fines membrorum negat. Contra eum *BOYLEUS* dixit in *disquisitione about the final causes of natural things*.

CICERONE omisso, qui in *Libro de natura Deorum* aliquam physiologiæ adumbrationem dedit, ad A. C. *CELSUM*, transeo, theoreticum forte potius quam practicum anatomes cultorem. Osteologiam ut diximus, breviter, sed satis vere in *Libro VIII. viscerum* vero quandam anatomen *Libro IV. ab initio* dedit. Anatomes causam oravit *Libro I. c. 1.*

PLINIUS ad generationis officium, ad rariora staturæ, ætatis, &c. aliqua contulit.

CASSII *Jatrofophistæ problemata physica* apud *H. STEPHANUM* an. 1567. cura vero *C. GESNERI*, Tiguri 1562. 8. *ANDREA* denique *RIVINO* erudito viro edente Gr. Lat. Lipsi. 1653. 4. prodierunt. Placet *CASSIUS*, qui legitimas passim phænomenorum causas adferat. Celebris est ob explicationem resolutionis latere non læsi in vulneribus cerebri. Methodicus fuit, qui *circulum metasyncriticum* citet, & adstrictionem meatuum & laxationem, &c.

ARETÆUS de causis & signis acutarum & diuturnarum passionum, & de curatione utrumque alibi laudabitur. Interspersa aliqua; sed vera tamen anatomica habet, nervum olfactorium, vasculosam substantiam testis.

SORANUS EPHESIUS in exiguo *Libello de utero & pudendo muliebri*, qui cum *RUFUS* prodiit, Parisi. 1555. 8. jam laudatus est, longe *GALENO* melior, cum iste ad animalia, *SORANUS* ad humanam fabricam descriptionem dederit. Reliqua, & non sine damno anatomes, omnia perierunt. Non dubito potuisse tempore *TRAJANI* vivere, quæ *LAMBECHII* sententia est de *bibl. Vindob* *Libro VI. P. 2.*

RUFUS pariter Ephesius fuit. *EJUS* plusculi sunt *Libelli*. Ad anatomen pertinent *περί τῆς αἰσθητικῆς ὁμοιοστάσεως τῶν τοῦ ἀνθρώπου μερῶν*, *Libri III.* ut tamen primus *Liber* parum diversus his exster. In iis *Libris* demonstrat se *ERASISTRATEUM* esse, ut etiam spiritum in ventriculo sinistro & arteriis contineri scribat. Fuse de partium externarum nomenclaturis egit. Simiam jussit dissecare, quod homini proxima sit p. 33. Inter viscera inprimis partes genitales & tubas in animalibus proprio labore dissecare adgressus est. *TRAJANO* florente vixit, teste *SUIDA*. Sermonem ad filium direxit. Multæ sunt editiones Græca Parisina 1654. 8. *TURNEBI* opera: Græco Latina *CLINCHII* nitida sed vitiosa, Londin. 1726. 4. Latina denique *PAULI JUNII CRASSI*, Basil. 1581. 4. aliæque.

In *PLUTARCHI de placitis philosophorum* *Libris IV. & V.* varia physiologica ex antiquis conservata exstant. Adeo sibi similia sunt quæ hic *PLUTARCHUS* habet; & in *Libro* similis fere tituli *GALENUS*, ut istum prioris plagiarium fuisse *COLLENUTIUS* non dubitaverit adfirmasse (pro *PLINIO*).

CLAUDIUS GALENUS solus fere ex antiquis anatomicis superest, ultimus eorum qui inter Græcos eam artem ornarunt. Legi omnino vel ideo oportet, quod quindecim fere seculis, ad *HARKEJUM* nempe, omnis physiologia, & parum abest, quin omnis etiam anatomie ex eo communi fonte hausta sit. Deinde etsi dudum observatum est verbosiores esse & sæpe quam maxime necessaria obruere ambagibus phrasium, quæ inanitatem occultant; etsi corpora humana raro secuit, ut demonstravit post *C. HOFMANNUM* *Apolog.* p. 292. *CLERICUS*; etsi descriptiones humani corporis ex antiquioribus sumtas cum suis, quæ secabat, animalibus sæpe obscurissime miscuit exemplo partium genitalium mulieris, ossis sacri, etsi in multis inconstans est, & in alias & alias sententias dilabatur, ut exemplo epiphyseos, jejuni &c. demonstravit *C. HOFMANNUS* *apolog.* c. 120., & in universum in *præfatione apologia*; etsi (neque alienum a vero est *SCHELHAMMERI* judicium in *additamentis ad CONRINGIUM*, & *P. J. HARTMANNI de perit. anat. vet.* pag. 23.) vasorum & nervorum historia nimis brevis est, & in universum omnia a nostri seculi perfectione remotiora, non tamen ideo non magnus & utilis fuit anatomicus. In animalibus enim vivis experimenta passim suscepit, etiam nobis aut utilia, aut difficilia, ad vocem, respirationem, nervorum utilitatem. Multa minime ruditer descripsit, ut etiam nobis semina veri grata esse oporteat. Multa ex veteribus conservavit, quæ alibi non exstant, multa addidit ipse, quæ exposuit in *anthropographia* *RIOLANUS* p. 26. tum in *bibliographia* *DOUGLASSIUS*. Quare a me non sine voluptate lectus sæpissime, uti notum, excitatus est in *Commentariis BOERHAAVIANIS*. Neque certe omnino non corpora humana secuisse dici debet. Cum in *Libro III. c. 2 de compositione medicamentorum* medicos Romanos ipse scribat secuisse barbarorum corpora, qui contra *M. ANTONINUM* pugnaverant. Numerosissimi vero sunt *GALENI* *Libelli*.

belli, qui de anatome agunt, neque tamen eos omittere licet, cum nimis frequens eorum apud recentiores sit memoria seculo maxime XV. Cæterum editiones meæ sunt Græca, Basileæ 1538. fol. 5. vol. & Latina ibid. 1562. fol. De *CHARTERIANA* alibi dicemus. Ecce Libros eo ordine, quo in Gesneriana editione exstant, omiſſis nonnullis physiologicis, ut numerum, quantum licet, minuamus.

Comm. in HIPPOCRATIS Librum de natura hominis.

De optima hominis structura.

De ossibus, de quo alibi, & qui ex deterrimis & vitiosissimus est, genuinus tamen & passim a GALENO ipso citatus. ROLFINK *Diff. anat.* p. 199. 200.

Liber GALENI *de ossibus* citatur ab eo *de ord. leg. libr. de propr. libr.* Pro tironibus autem scripsit.

De musculorum dissectione jam dictus. Invenit autem GALENUS interosseos, platysma myoides, lumbricales, rectum internum capitis. Eum Librum JOHANNES CAJUS edidit cum *Comm. adjunctum Libris de administrationibus anatomicis*, Basil. 1544.

Sex Libros periisse ex iis, quos scripsit GALENUS *de administrationibus anatomicis*, patet ex ipso GALENO, cum XV. citet *de propriis Libris*.

De nervorum dissectione.

De venarum & arteriarum dissectione jam dicti Libri, & cum fragmento *de iis quæ medica dicta sunt* a TIMÆO, Lugd. 1550. 8. editi.

An sanguis in arteriis contineatur contra Erasistrateos.

De administrationibus anatomicis L. IX. cum sex reliqui perierint. Hi lectu dignissimi sunt ob experimenta intermixta, & descriptiones. Promiserat reliquos libros BARTHOLINUS.

De vocalium instrumentorum dissectione Latine tantum exstat. Etiam experimenta habet.

De vulva dissectione.

Lib. III. *de vulva* diff. citat GAL. *de scriptis propriis*. In juventute autem scripti sunt.

De instrumento odoratus jam dictus.

De usu partium corporis humani Libri XVII. haberi solent pro præcipuo GALENI opere. Non quidem valde subtilem habent anatomen, sed minus tamen vitiosam, & teleologias atque physiologicas considerationes egregias, de causis curita, nec aliter, partes corporis humani structæ sint. Cordis etiam anastomoses fetui proprias, & veram circulationem per pulmones, usumque valvularum in his Libris aperuit. Commentarios addidit CASPAR HOFMANNUS, Francof. 1625. fol. sed mererentur magis anatomicos, alios JOH. LONICER, Francof. 1550. 8. Quartum Librum seorsim VITUS ORTELIUS edidit, VVittemb. 1549. 8. PL.

Libri XVII. GAL. *de usu partium C. H.* scripti sunt per otium, cum ANTONINUS in Germania esset, GALENUS vero COMMODI valetudinem regeret (*de propriis scriptis*). Primus BOETHO dudum antea inscriptus fuerat, ID. ibid.

De utilitate, & de causis respirationis, & de pulsuum usu dicti sunt, quos in Libro *de formatione fetus* ipse GALENUS sibi tribuit. Sed in administr. Lib. c. 2. juvenem se scripsisse fatetur, seque invito esse editos quæritur.

De HIPPOCRATIS & PLATONIS decretis Libri IX. præter alia, non anatomica, etiam cerebri inprimis & nervorum historiam habent, tum de corde, respiratione, primis viis. Multa hic veterum scriptorum memoria. Hos CAJUS invenit.

Libri IX. GALENI *de HIPPOCRATIS & PLATONIS decretis* eo tempore scripti sunt, quo Libri *de usu partium* GAL. *de propr. script.* de iis etiam, quæ medice scripta sunt in TIMÆO. PLATONIS libellus seorsim prodiit Lugd. 1550. 8.

De motu musculorum Libri II.

De motu thoracis, fetuum formatione, semine, septimestri partu, &c. jam dicti sunt.

Libri III. *de facultatibus naturalibus* contra ERASISTRATEOS (L. *de propriis libris*) & *de ordine legendi libros*.

In Libro *de locis adfectis* egregia anatomica intercurrunt.

Spuriorum pauci nominari merentur, inter eos Liber *de anatomia vivorum, de voce & anhelitu, de motibus corporis manifestis, anatome parva, &c.*

Amiſſi sunt bene multi ut L. *de HIPPOCRATIS anatomia*.

Lib. III. *de anatomia ERASISTRATI*, quos ipse GALENUS ait (*de propriis libris*) curiose scriptos fuisse.

Libri de sectione mortuorum (de ordine legendi libros).

Libri II. de sectione vivorum, ibid.

Libri de iis quæ LYCO ignota erant in anatome. Eum scripsit, ut se tueretur a calumnia, quod sibi aliena inventa tribueret (de libris propriis).

Libri IV. qui erant compendium librorum XX. anatomicorum MARTIANI.

Et Libri II. de anatomicis LYCI (qui QUINTI discipulus fuerat) (de propriis libris).

In CÆLII AURELIANI practicis libris pauca ad anatomen pertinent. Physiologiam eo sensu sumpsit, quo hodie solet, p. 22.

JULIUS POLLUX (Πολυδεύκης) in onomastico, quod TYBERIUS HEMSTERHUTS, cum WOLFGANGI SEBERI, GODOFREDI JUNGGERMANNI, JOACHIMI KUHNII & HENRICI LEDERLINI observationibus splendide edidit, Amstelodami 1706. fol. ejusque Libro II. omnino ad anatomen aliqua habet, nomina nempe partium, non absque ineptis tamen erroribus. Quis crediderit ἰσχίον nomen esse ligamenti teretis?

MOSCHIONEM repeto, qui figuras citet & literas, & uterum, ut SORANUS, cucurbitulæ comparet. EJUS muliebrium Græcus codex cum inedita præfatione exstat in Vindobonensi bibliotheca LAMBECH. Libro VI. P. I. neque bona est, quam dedit CASPAR WOLFIUS. Manifestum vero est, quod IDEM vir doctissimus confirmat, non ex Græco in Latinum, sed ex Latino in Græcum sermonem versum esse.

ORIBASII anatomica ex I. GALENI cum versione J. BAPTISTÆ RASARII nitide prodierunt nuper Leidæ 1735. 4. cura GUILIELMI DUNDASS, additis harmoniis locorum GALENI. In collectione magna efficiebant Libros XXIV. & XXV. Utilis certe synopsis, ordinata, & libera illis infinitis litibus GALENI, aliqua etiam habet ex Libris deperditis.

ORIBASII anatomica prius Græce prodierunt Paris. 1556. 8.

Sed & reliqui scriptores Græci nihil habent, quod non ex GALENO sit. NEMESIUS περὶ φύσεως ἀνθρώπου, sive de natura hominis, Lond. 1636. 12. Anglice GræcoLatine & Antwerp. 1565. 1671. 8. Oxonii editus, Physiologiam Galenicam habet. Neque circulationem sanguinis cognitam habuit, quidquid agit editor Oxoniensis, neque alia de bile, nisi quæ GALENUS dudum docuerat.

NEMESIUM, cujus librum hoc loco citavimus, vixisse seculo IV. credit editor Oxoniensis.

MELETII περὶ φύσεως ἀνθρώπου, de natura structuraque hominis, Venet. 1552. 4. Perinde compendium anatomicum & physiologicum, ex GALENI placitis. Miror p. 46. in hoc ipso Libro MELETIUM citari. Rudis cæterum fuit, qui v. gr. feminis unam futuram esse scribat, eamque circularem. Adjecti sunt editioni modo citatæ Libelli varii POLEMONIS natura signorum interpretatio, MELAMPI de navis, &c. qui vix merentur nominari. Codex MELETHI monachi plenior editis cum aliis Vindobonæ later LAMBECH. Libro VI. P. II.

GREGORII NYSSENI de hominis opificio Librum Basil. 1567. 8. editum nondum vidi.

PAULUS, ALEXANDER TRALLIANUS, OCTAVIANUS HORATIANUS vix quidquam habent cur inter anatomicos excites.

Θεοφίλ. περὶ τῆς τῆ ἀνθρώπου κατασκευῆς Libri V. Græce, Paris. 1555. 8. Venet. 1536. 8.

Basil. 1539. 8. & in FABRICII Bibliotheca Græca Lib. XII. Gr. Lat. Dedit compendium Librorum GALENI de usu partium. De Libro de urina alias dicetur.

JOH. ACTUARIJ Liber περὶ ἐνεργειῶν καὶ παθῶν τοῦ ψυχικοῦ πνεύματος Libri II. Græce 1557. 8. GOUPYLI ope prodierunt, tum Latine, Venetiis 1547. 8. 1554. 4. 1556. & in Principibus H. STEPHANI.

HIPATUS de partibus corporis humani Gr. Lat. Leid. 1744. 8. Catalogus est partium corporis humani externarum. Editor J. S. BERNARDUS tres earum partium antiquas icones addidit, ex Leidensi bibliotheca sumtas, cum nominibus non simillimis eorum, quæ vulgo adhibentur.

ARABUM succedit seculum, qui a dissectionibus abhorruerunt quidem, cæterum anatomen ex Græcis repetitam, & ex GALENO inprimis sere omnes suis practicis Libris addiderunt. Et princeps ABUBETER RHAZES in operibus exquisitioribus, quæ per GERARDUM TOLETANUM, ANDREAM VESALIUM, & ALBANUM TORINUM edita sunt, Basil. 1544. fol. & in primo Libro ad ALMANZOREM anatomen concinno ordine descripsit. Vasa salivalia sub lingua & hic, & in ORRIBASIO, & apud omnes Arabes habentur.

In *AVICENNÆ Libro Canonis*, Venet. an. 1559. fol. & alias edito, a principio habetur anatome, ad quam exstant *V. F. PLEMPHII commentarii*, Lovanii 1658. fol. editi.

In *decimo volumine AVERROÏS*, quo *Colliget* continetur, Venet. 1552. fol. edito, habetur in primo Libro *Colliget* anatome simillima ejus, quam *AVICENNA* scripsit, *splanchnologiæ* nempe compendium. In Libro II. *physiologia* traditur.

ALBUCAZIS, ut vulgo vocatur, huc a *DOUGLASSIO* refertur ob icones oculi, viscerum, venarum, & sceleti. Sed ex icones omnes videntur esse recentioris ævi, neque exstant in editione Veneta anni 1520. fol. Sed unice in Argentoratensi 1532. fol. Clitoris autem apud *SORANUM*, uti dictum, dudum habetur, & verba *ALBUCAZIS* fere ea sunt, quæ *AVICENNA* habet, & *PAULUS*.

Recentiorum primum ponimus *CONSTANTINUM AFRICANUM*, magnum Arabum exscriptorem. Possis autem huc referre ejus Libros *de coitu*, & *de anima & spiritus discrimine*, sed exigui certe momenti sunt. De editionibus in practicis dicam.

ALBERTI Magni Liber de secretis mulierum sæpissime prodiit. Eo infelici tempore, cum vix quisquam præter clericos medicinam exerceret, anatome penitus extincta est, publicis etiam legibus *BONIFACII VIII.* proscripta, quarum vi adhuc anno 1571. anatome *NICOLAO BUCELLO* interdictum fuit. *ROOLFINK dissertation. anat. p. 187.*

ALBERTI Magni etiam est *de homine & animalibus*, Venet. 1498. fol. &c.

Italia uti reliquarum artium, ita anatomes in Europa reparatæ laudem sibi vindicat. In Sicilia quidem, nisi fallor omnium primus, *FRIDERICUS II.* anatomen restauravit, sancta lege, ne quisquam ad Chirurgiam exercendam admitteretur, nisi anatomen didicisset. *MARTIANUS* vero protomedicus obtinuit, ut omni quinquennio anatome administraretur, quam omnes medici & chirurgi frequentarent (*P. CASTELL de peste p. 23.*) Deinde Bononiæ *OTTUS AGERIUS LUSTRULANUS*, & *ARMUNDUS GUASCO* docuerunt, quorum posterior an. 1151. primus anatomen aperuisse dicitur a *CL. GUILIELMINO* in *Orat.* Bononiæ habita anno 1735. Porro *MUNDINUS* Bononiæ circa annum 1315. Librum scripsit, varie inscriptum, quem secta ab eo viro cadauera ita commendarunt, ut legibus in Italia sanctum sit, ne in alium auctorem Doctores prælegerent. Mæx editones sunt, Venet. 1513. fol. ex ed. *JOH. de KETAM* cum perantiquis figuris, alia cum amplissimo Commentario *JACOBI CARPENSIS*, Bonon. 1520. 4. alia cum *MATTHÆI CURVII* commentariis Papiæ 1550. 8. Alias habet *DOUGLASSIUS*, Editionem Patavinam per *HIERONYMUM de MAFEIS* emendatam 1484. 4. Lipsiensem emendatam per *MARTINUM POLICHIIUM de MELLERSTATT* 1505. 4. *DRYANDRI* editionem, Marburgi 1540. & 1541. 4. cum *MUNDINO* editam non vidi, cui titulus est *MUNDINI anatomia ad vetustissimorum codicum fidem collata*, nec Argentoratensem 1513. 4. (*B. LEHM.*) nec Venetam 1638. 12. cum scholiis (*MERCLIN*). Cæterum rudis, ut sermone, ita in descriptionibus auctor, nihil præter antiquitatem habet, quod valde commendes.

MUNDINIANI Libri hic citati editionem *DRYAND I*, quam tum temporis nondum videram, nunc vidi, sed coram est Lipsiensis illa *MARTINI de MELLESTAD* absque iconibus aut anni expressione, tum illa *J. DRYANDRI*, cui icones & scholia adjecta sunt.

Vivos etiam quotannis canes dissecabant Bononienses, *ALDROVANDO* Auctore *Ornitholog. II. pag. 490.*

Parisiis *HENRICUS de HERMONDAVILLA* anatomen fere eodem tempore in tredecim figuris demonstrabat (*GUIDO de CAULIACO in præf.*) Inde ad humana corpora accesserunt, & S. C. imperium cadaverum ipsis concessum est, atque an. 1564. Doctoribus pensio imperata fuit, ex qua duæ publicæ annuæ dissectiones administrarentur *RIOLAN. oper. p. 65.* Paulo prius *JACOBUS SILVIUS* corpora humana secuit, & ante eum *CAROLUS STEPHANUS*, de quo continuo.

GUIDO de CAULIACO, *GUILIELMUS DE SALICETO*, *NICOLAUS NICOLUS*, *J. MATTHÆUS DE GRADIBUS*, *JOHANNES ANGLICUS*, alique horum seculorum Medici & Chirurgi aliqua anatomica admiscuerunt, *GUIDO* imprimis, qui integrum anatomes compendium dedit, tum *GUILIELMUS DE SALICETO*, qui nervos etiam voluntarios a necessariis distinxerit.

PETRI de ABANO conciliator differentiarum Philosophorum & præcipue Medicorum, Venet. 1548. fol. & alias editus est. Ad physiologicas controversias plurima huc pertinent. Op-
ponit

ponit fere *ARISTOTELEM* & *AVERRHOEM GALENO*, rationes contrarias utriusque recenset, tunc suis adlatis litem definit.

TURRIANUS anatomicus, qui corpora humana secuit, & errores *MUNDINI* demonstravit, nihil, nisi fallor, scripti reliquit.

MAGNI HUNDT *anthropologium de hominis dignitate, natura, & proprietatibus*, &c. Lipsiæ 1601. 4. * Rarissimus Libellus inter primos est, quos figuræ anatomicæ ornent. Proprio de eo Libello egit programme *J. ZACHARIAS PLATNER*, & earum tabularum auctorem prædicavit, Lipsiæ 1734.

MAGNI HUNDT citatum librum inter primos esse, quos figuræ anatomicæ ornent, hoc loco dictum est, sed eas figuras ruditate antiquitatem suam confirmare, nunc video, cum ipse eum librum possideam.

JACOBI PEILIGK opus est, quod vocatur *compendiosa capituli physici declaratio principium humani corporis membrorum figuras liquido ostendens*, Lipsiæ 1499. & 1518. fol. quæ editiones in *PLATNERI* bibliotheca, posterior etiam apud me prostat. Auctor cæterum anonymus est, habet autem viscerum rudes icones & descriptiones ex Arabibus desumptas, & ex *CONSTANTINO*. Icones & *HUNDTIANIS* vetustiores sunt & *CARPIANIS*. *IDEM* an. 1505, Lipsiæ fol. edidit *ALBERI thesaurum vera philosophiæ & divinæ sapientiæ*.

GEORGII VALLÆ de corporis commodis & incommodis, Argentor. 8. & inter annos 1520. & 1530. Mera fere enumeratio partium corporis humani est ad *POLLUS* morem. Alium titulum habet *JACOBUS DOUGLAS*, & *J. vander LINDE* de humani nempe corporis partibus, Basil. 1627. (puto 1527.)

ALEXANDER BENEDICTUS Anatomia, sive de historia corporis humani Libros V. sæpe edidit. Editiones antiquissimas non vidi, cum prima anno 1497. videatur prodiisse, cum Liber scriptus esset anno 1483. Meæ sunt Parisi. 1514. (Venet. 1527. 12. B. *LEHM.*) & Argentinenfis 1528. 8. Recusa est Venet. 1533. fol. in collectione operum, & Basil. 1549. fol. in eadem collectione. Corpora equidem disseccuit, qui theatri Veronensis & Veneti descriptionem det, & de turba in theatro conqueratur. Bella etiam secutus est, & scripsit de *CAROLI VIII.* expeditione Italica. Non video multum super priorum inventa addidisse. Chirurgica & Medica aliqua adspersit. In magno etiam opere de omnium morborum causis, signis & differentiis aliqua partium corporis descriptio præcedere solet, quarum morbos explicat.

ALEX. BENEDICTI Anatomia Lib. V. nunc lego anno 1493. Venetiis 8. prodiisse.

GABRIELIS DE ZERBIS Veronensis Liber *anatomia corporis humani & singulorum membrorum illius*, Venet. 1502. fol. valde incommodo typo, ut vix legi possit. Anatomicum opprimit plurimis ex more seculi ratiociniis, & dictione barbara. *EJUSDEM anatomia infantis* cum *DRYANDRI* opere Marburgi 1517. prodiit. Furti reum agit, neque inventi alicujus, sed vasorum argenteorum, qua culpa exilium meruerit, filiosque addit in patibulo finem vitæ fecisse *CARP.* in *MUND.* p. XVII. b.

COPHONIS est etiam, de quo nihil quidquam ultra mihi innotuit, *anatome porci*, una edita.

GALEOTTI MARTII de homine Libri II. Basil. 1517. 4. Oppenheim 1610. 4. Basil. 1617. 4. In editione, quam primo loco dixi, adnotationes exstat *GEORGII MERULÆ*.

MICHAELIS SCOTI physiognomia, Parisiis 1508. 8 mihi ignota est. Habet *DOUGLASSIUS*.

ALEXANDER ACHILLINUS Medicus & Philosophus, notas dedit ad *MUNDINUM*, Venet. 1522. fol. *DOUGL.* *EJUS* etiam est Liber de humani corporis anatome, Venet. 1521. Neutrum vidi, sed penes me sunt ejus *anatomices adnotationes*, Bononiæ 1520. 4. editæ, quas non citat *DOUGLASSIUS*. Pleraque quidem valde rudia sunt, nam an. 1502. quinque ossa tarsi, an. vero 1503. novem ait se vidisse (p. XVI. p.) Habet tamen aliqua bona, nervum quarti paris, medullæ spinalis finem in lumborum principio. Opera omnia, sed philosophica, Venet. 1745. fol. prodierunt.

HANS V. GERSDORF genant *SCHYLMANS feldbuch der wundarzney*, Argentor. 1517. fol. Incipit ab anatome, habet icones sceleti, & systematis viscerum. Editionem habet *DOUGL.* Francof. 1551. 4. Cum alio practico libro Germanice edito Argentor. 1519. fol. edito anonymo etiam anatome prodiit.

JACOBUS BERENGARIUS Carpenſis ut in *dedic.* ipſe teſtatur, a patria vulgo **CARPUS** dictus eſt. Vir ſummus, inter primos auctores methodi fuit, qua hodie lues venerea expugnatur ope argenti vivi, hinc prædices, ut apud **ROLFINKIUM** legas, Chirurgico Libro *de fracturis cranii* etiam celebris, verus anatomes ex corporibus humanis inſtaurator, ne **EUSTACHIO** quidem diffidente, & **CORTESIO** in *miſcellaneis* II. qui **CURTII** æmulum Berengarii lingua, hunc ſcalpello valuiſſe, ait. Morum cæterum cum nescio qua ſimplicitate turpium fuit, ut nefanda crimina pro innocentiffimis haberet. *EJUS* exſtant *commentaria* cum ampliffimis adnotationibus ſuper *anatomia MUNDINI cum textu ejus in priſtinum nitorem redacta*, Bonon. 1521. 4. Auctor ipſe & in diſſecando, & in legendo **GALENO** & **CELSE** ſuper morem ſeculi peritus fuit. Injectionem aqueam in renum vafis tentavit. Præter theorias vanas multa utilia habet, de ſine vero medullæ ſpinalis, papillis renalibus, &c. Icones paucae & rudes ſunt. Anglice prodiit *Berengarius's anatomy of man's body* Lond. 1554. 12. *EJUSDEM* *Iſagoga breves in anatomen humani corporis*, Bonon. 1522. 4. iterumque 1523. 4. 4. parum diverſæ & nitide prodierunt, tum anno 1535. Venet. minus ſpecioſe & Argentorati 1530. 8. Mirum **ALDI MANUTII** diſcipulum adeo barbare ſcripſiſſe. Sed memorabili uſus peritia, qui ultra 100. cadavera humana ſecuerit, errores multos priorum correxit. Ita rete mirabile, cellulas uterinas **MUNDINI** deſcripſit. Figuras etiam hic rudes dedit, quarum aliquæ in poſtrema Veneta editione omittuntur, uteri inprimis figuræ duæ. Muſculos cæterum abdominis & totius corporis, cor, ſkeleton, artuum oſſa, venas brachii delineavit. Corpora hominum vivorum incidiffe fabula eſt, ut demonſtravit **JOHANNES ASTRUC** *de lue venerea* p. 618.

JAC. BERENGARII Carpenſis *iſagoga breves in anat. C. H.* prodierunt etiam Venet. 1527. 4.

JOHANNES GUNTER Andernacenſis Pariſiis an. 1530. Doctoribus adnumeratus, ſummum media parte condonata, (ed. Pariſ. 1536. *pref.*) cum applauſu ibi docuit. *Ejus inſtitutionum anatomicarum* Libri IV. Baſil. 1536. 8. * *ibid.* 1539. 4. cum **THEOPHILO**, Venetiis 1538. forma minima cum **A. VESALII** præfatione, VVittembergæ 1585. 8. * 1613. 8. (**PLATN.**) & alias editi ſunt: ſecuiſſe videretur ex præfatione, ſed negat **VESALIUS**. In notula tamen p. 109. de venæ humerariæ diſiſſione in duobus cadaveribus obſervatio habetur, & adrogat ſibi **GUNTERUS** interoſſeos quatuor **GALENO** ignoratos. Cæterum compendium anatomicum eſt.

JOH. GUNTER deinde citatus vixit ad annum 1574.

JOACHIMI FORTII RINGELBERGII Liber *de homine*, Antvverpiæ 1529. 8. &c. * **DOUGL.**

ANDRÆ LACUNÆ *anatomica methodus, ſive de ſeſſione corporis humani contemplatio*; Pariſ. 1535. 8. * Adparet collectionem eſſe ex **GALENO** & optimis auctoribus factam. **COLUMBO** ſecanti adſtitit, **RIOLANO** teſte.

JOH. DRYANDER, vero nomine dictus **EICHMANN**, in Gallia Medicinæ operam dedit, Marburgi vero docuit. *EJUS* *anatomia pars prior in qua membra ad caput ſpectantia reſenſentur & delineantur*, Marb. 1537. 4. prodiit. Primam anatomen an. 1535. celebravit, quod ſtudium propria oratione concelebrat. Icones dedit capitis, cerebri, oſſium, thoracis, pulmonis, cordis, vaſorum magnorum, paulo minus quam **CARPENSES** figuræ rudes, cæterum parum habentes veræ utilitatis. **GABRIELIS** de **ZERBIS** & **COPHONIS** oppellas una editas citavi alibi, & dixi de editione, quam dedit **MUNDINI**. Neque **EURICII CORDI** judicium, neque **VESALII** p. 254. 255. valde favet famæ viri.

BENEDICTUS VICTORIUS in *Practica magna* habet partium anatomen. Sic **ARCULANUS** in opere practico, Venet. 1357. fol. excuſo.

NICOLAUS MASSA, Venetus anatomicus, qui frequenter cadavera humana ſecuit. *Ejus* eſt liber *introducſorius anatomia, ſive diſſeſſionis corporis humani*, &c. Venet. 1536. 4. & 1559. 4. quæ editiones ſolo titulo differunt. **MUNDINUM** fere imitatur, & perinde ea organa deſcribit, quæ frequentius eo ævo demonſtrabantur, tres nempe ventres; artus vero breviter tangit. Non eſt abſque obſervationibus, quas ſuis locis pleraſque tetigimus. In *epiſtolis* etiam *medicinalibus*, Venetiis 1542. 4. 1550. 4. (**DOUGLAS**) & 1558. 4. 2. vol. excuſis, quæ mea editio eſt, aliqua ſparſim ad hiftoriam anatomicam habentur.

NICOLAI de **SABIO** *viſcerum viva delineatio*, Venet. 1539. fol. Non memini me citatam vidiffe. Duæ ſunt tabulæ, viri & feminæ. In utraq; viſcera abdominis ſecundum ſtrata,

ANDREAS VESALIUS, quo nemo carere potest (a).

2. REAL-

quæ sibi succedunt, delineata habentur, quod idem institutum multis postea placuit. Caterum rudes icones sunt, hepar multilobe, &c.

LUDOVICI VASSÆI in *anatomen corporis humani tabula quatuor*, Paris. 1540. & alias fol. DOUGL. Venet. 1544. 8. quæ mea est editio. JACOBI SYLVII addictissimus discipulus, nihil invenit, & omnia in *præf.* ad Præceptorem retulit.

LUD. VASSEUM Gallice vertit J. CANAPE Lugd. 1542.

BASSIANI LANDI Patavini præceptoris Libri II. de *humana historia vel singularium hominis partium cognitione* jam Basil. an. 1542. 8. prodierunt (ALBINO teste ad DOUGLAS p. 75.) Mea editio Francofurtensis est 1605. 8. Obiit an. 1562. a sicario enectus, Galenica placita rhetorico more docuit. De *prodigiis partibus* se scripsisse ipse auctor est p. 207. In *Opusculis*, Patavii 1552. 8. editis, exstat Liber de motu. Sed philosophicus omnino.

JACOBUS SYLVIVS Ambianus, vir doctissimus Græca Latinaque Lingua, cum summo adplausu Parisiis docuit, neque obstitit viri famæ avaritia, quæ in eo summa fuit, ne vitæ quidem scriptore diffidente. Cadavera humana, sed parcius, secuit, tum animalia aliqua. Sero scripsit & fere ad æmulationem VESALII. Inventa jam citavi. Ejus scripta sunt *Vesani cujusdam calumnia in Hippocratis Galenique rem anatomicam depulsio*, Parisiis 1551. 8. (STOLLE). Mea editio cum HENERI vindiciis VESALII prodiit Venet. 1555. 8. Hic Liber nonnunquam me consolatur, quando me video hinc ob parcissimum meum a PRÆCEPTORE discessum, inde ob meum in eum ipsum Præceptorem jamorem indignis modis discerpi. Insanit SYLVIVS, & VESALIUM ipsum excubiat, dum refutat, etiam ubi errat VESALIUS, ut in Carotidis descriptione. Frivolas pro GALENO excusationes attulit, sternum recentiorum hominum brevius fuisse, os incisivum distinctum se vidisse, suturas illas falsas veterum se conspexisse: sinus tamen sphenoides describit. In HIPPOCRATIS & GALENI *Physiologia partem anatomicam isagoge* Libris III. prodiit Paris. 1555. &c. (ALBIN. ad DOUGLAS) Venet. 1556. 8. B. PL. mea editio est Parisina 1561. 8. Compendium anatomicum, in quo vasa & muscoli per totum corpus, ex GALENO inprimis, sed tamen auctius disponuntur. Singularia aliqua de musculis, valvulis venosis, alibi laudavi quæ hic exstant. Adjectæ sunt rariorum corporum dissectiones tum hominum, tum brutorum, quibus inprimis laudem meruit. In posthuma editione Genevensi 1630. hæc repetuntur, tum *isagoge in GAL. de usu partium corporis humani*: & *epitome in tres Libros facultatum naturalium*. Reliquos Libros suis locis consideravimus.

JOHANNES FERNELIUS, itidem Ambianus, matheseos laude superior SYLVIO moribusque, praxi celebrior, non tamen perinde anatomicus. Ejus Libri de *naturalis parte Medicina VII. sive physiologia* (ut in mea editione vocatur) Parisiis prodierunt 1542. DOUGL. & alias, & recusati sunt in editione nitida operum FERNELII, quæ prodiit Ultrajecti 1656. 4. Latinissime & nitidissime scripsit. Primus Liber anatomicus est, sequentes physiologici. In Libro de *abditis rerum causis* multa physiologica admiscuit. Jugum GALENI passim excutere cepit.

G. HERMENII RYFF des *menschen vvahrhaftige beschreibung oder anatomy*, Strasburg. 1541. fol. (B. PL.) quæ est *description anatomique de toutes les parties du corps humain*, Paris. 1545. fol. & Latine ibid. prodiit eod. anno B. PL. Icones sunt, quas vetustas excusat, arteriarum, venarum (quarum multæ exprimuntur ex cava inter cor & septum ortæ, musculorum viscerum, sceletorum.

Duæ tabulæ in folio magno Argentorati prodierunt anno 1544. quarum primæ titulus est *anatomia oder abconterfeytung eines manns leibs vvie er in vvendig zu sehen ist*, alter *eines vvveibs leib*. Strata viscerum sibi succedunt, sed alio modo, quam in Venetis tabulis, & viscera ad latus aperta. Colores itidem vivi. Crediderim similes esse illis, quas Ulmæ 1541. editas citat B. PL. sed formam in 4. facit.

J. LONICER *erotemata in GALENI de usu partium* L. XVII. edidit Francof. 1550. 8. quod est ejus operis quasi compendium.

(a) ANDREAS VESALIUS verus anatomes instaurator, eo tempore incepit innotescere. Cum admirabili ardore in anatomen ferretur, & Lovanii atque Paris. per flammæ & ignem fere cada-

cadavera quæreret, in prima sua juventute meruit, ut annos natus 23. Patavium, deinde Bononiam Pisasque vocatus hic inprimis enormi 800. coronatorum stipendio conductus doceret, & a suis dissectionibus anatomicos tacitos discedere cogeret *præf. ad Librum de radice China*. Basileæ aliquandiu vixit, & an. 1546. sceleton ibi dedicavit (*MELCHIOR ADAM* p. 31.) quod interlapsum restituit *FELIX PLATER*. Sed id infeliciter accidit, & cum maximo damno anatomes, ut post paucos annos inter anatomicos labores consumptos Cæsar *VESALIUM* avocaret ad aulam & expeditiones bellicas. Hinc post annum ætatis 29^{um}. vix quidquam profecit *VESALIUS* cum editio II. magni operis a prima figuris nuspiam, sermone omnino parum differat. Eximius cæterum Chirurgus fuit, & *CAROLUM* infelicem illum Principem Hispaniæ sanavit, cum caput lapsu illisisset (*MELCHIOR ADAM* p. 134. *ROLFINCK Dissert.* p. 38. 39.) Mortem Comitissæ Burani anginosi ad horam indixit *M. AD.* p. 132. Cum *GALENI*, scholarum infallibilis eotempore oraculi, descriptiones conferret cum humanis corporibus, facile ubique dissensum naturæ vidit. Cum autem eum dissensum publice aperiret, tantum in se suscitavit Medicorum in tota Europa odium, ut inter perpetuas calumnias vitam molestam triverit, cum *J. SILVIUS* non erubesceret perpetuas ipsi indicare inimicitias, si quidquam a *GALENO* dissentiret. *VESALIUS* (*de radice China*) *CAJUS* vero *VESALIUM* codices *GALENI* sibi commissos corruptisse scripserit, ut haberet quod carperet, *PICOLHOMINEUS* denique p. 207. ridicule minatus sit se demonstraturum, omnia, quæ *VESALIUS* bona haberet, ex *HIPPOCRATE* & *GALENO* sumpta esse. Ita certe virum fervidi ingenii in ordinem coegerunt adversarii, ut *GALENI* opus suo labore emendatum flammis dederit, & infelicem vitæ finem fecerit anno 1564, sive Hierosolymitanam eam expeditionem ad expiandam vivi hominis cædem suscepit, ut ex *HUBERTO LANGUETO THUANUS* & vulgo solent scribere, sive sponsione facta motus Palæstinam petierit, ut *JOH. METEL* anno jam 1565. scripsit in *Epist. clar. Belg. ad CASSANDRUM*. Primus nitidas icones dedit, non *TITIANO* quidem, sed magnis tamen artificibus usus, qui naturæ robur & umbrarum vim exprimerent. Ossa, artuum maxime, musculosque majores optime descripsit & depinxit. In viscerum situ nexuque multa vidit ad *WINSLOWUM* usque ignorata. Venas, arterias, nervos, musculos subtiles, laryngem *COLUMBO* teste, oculum (ipso fatente *VESALIO*, & in *Libro de radicis China usu*, & in *exam. obs. Fallopp.*) renem (*EUSTACHIO* arguente), partes genitales muliebres (*ARANTIO* monente p. 104.) minus recte tradidit, cum ad absolvendum opus ardore aliquo ferretur, & defectum humanorum corporum animalibus non bene suppleret.

VESALIUM ad expiandam vivi hominis cædem Hierosolymitanam expeditionem suscepisse, nomine recto *PAREUS* etiam repetit *de la generation* p. 236. qui liber nono anno a *VESALII* excessu prodiit.

Opera anatomica, præter Librum *de vena secunda in pleuritide* jam citatum & chirurgiam, in qua sceleti depinguntur, ea sunt, quæ dicam. Edidit *ANDERNACI* institutiones cum nonnullis additionibus marginalibus, Parisiis 1539. 4. Propria est. *A. VESALII suorum Librorum de corporis humani fabrica epitome*, Basil. fol. max. 1542. Germanice opera *ALBANI TORINI*, Basil. 1543. fol. * tum, Parisiis an. 1560. Colonia 1600. fol. B. *PL.* Leidæ 1616. 4. Amstelod. 1633. 4. cum notis *P. PAVII*. In hac editione aliæ icones, & ipsæ tamen ex *VESALIO* decerptæ, habentur, cum nominibus musculorum novis, & nonnullis explicationibus. Porro, Amstelod. 1617. fol. & cum notis *NIC. FONTANI*, Amstelod. 1642. fol. epitome recusa est. Hæc ultima editio bona est, & icones aliquas novas, atque observationes ad anatomen inprimis practicam pertinentes habet. In iconibus etiam *PLANTINIANIS* exstat inserta, & in *GREVINI* opere citando, & in *JAC. BUWMANNI anatomia* & in *T. GEMINI compendiosa rotius anatomes delineatione are exarrata*, Londin. 1545. fol. Anglice recusa, 1553. 1559. fol. D. Brevis cæterum sermo est, icones grandes, perpulchræ, ex magno opere selectæ, & ita ex diversis figuris compositæ, ut numerus minuat. Adjecta viri & femina statura perpulchra.

De corporis humani fabrica Libri VII. Basil. 1543. fol. & nitidius, sermone etiam aucto, anno 1555. fol. Venet. 1568. fol. cum figuris parvis, iterumque Venet. 1604. fol. cum *RUFFI* & *SORANI* fragmentis. Justo hic volumine in folio sermone purissimo omnem anatomes ambitum de integro tradidit *VESALIUS*, & omni fere posteritati ad seculum usque *XVIII.* Librorum materiem præbuit, neque ab ullo anatomico debet negligi, etsi, quæ

monui, vitia aliqua sint, & passim *GALENUM*, cum quo perpetua ipsi pugna est, non absque suis etiam erroribus impugnaverit. Hujus operis icones infinitis locis recusæ sunt. Eas habet *JACOBUS BUWMANNUS* in *anatomia, das ist, eine kurze beschreibung von der aufstheylung und abtheilung aller glieder des menschlichen leibes*, Tigur. 1551. fol. 1573. fol. cum figuris æneis satis pulchris. Habet etiam, ni fallor, *T. GEMINI*, quem non vidi, *VESALIUS* vero valde accusat, tum certo *JACOBUS GREVINUS*, cujus *anatomes totius are insculpta delineatio*, Paris. prodiit 1564. fol. Ibi icones in minorem formam contractæ sunt, additæ aliquæ *GREVINI* inutiles lacinia, Eadem icones in *PAREI*, *VALVERDI*, *PLATERI*, *S. ALBERTI*, *INGRASSIÆ*, *T. BARTHOLINI*, *CASSERII* & quot non alia opera transierunt. Ex *VALVERDO*, qui aliquas adjecit, recepit *PLANTINUS* dixitque vitas imagines corporis humani æneis formis expressas, & edidit 1572. fol.

VESALII suorum librorum de *C. H. fabrica epitomes*, Germanica *ALB. TORINI* editio ibi dicta nunc penes me est, paulum diversa a Latina, quæ plures icones minores viscerum & ossium ex magna anatome decerptas habeat. Cæterum titulum est *von des menschlichen Körpers anatomey kurzer auszug durch ALBAN ZUM THOR*.

VESALII hic citati Libri VII. de *C. H. fabrica*, Lugduni etiam recusæ sunt 1552. 8.

Valde suspicor huc pertinere mihi non visam *Description & démonstration des membres Intérieurs de l'homme & de la femme*, Paris. 1560. 4.

De *radicis China usu*, Basil. 1546. fol. Venet. 1542. 8. (si fides *NICERONIO*) versus autem 1546. 8. & Lugd. 1547. 12. parv. Scopus princeps est demonstrare, *GALENUM* non homines secuisse, sed simias, sæpe etiam absque animalium dissectionibus ex ingenio natas conjecturas cum anatomicis veterum descriptionibus miscuisse. Facile vero demonstrat in utero, cæco intestino, vena sine pare, venæ cavæ parte quæ supra septum est, cerebello, ventriculis cerebri, ossibus plerisque, *GALENUM* animalibus usum esse. Legi etiam debet ad historiam ipsius *VESALII*.

Examen observationum Fallopii, Venet. 1564. 4. & Hannov. 1609. 8. Madriti datum est Decembri mense 1561. tertio die postquam legerat impressas eo ipso anno *FALLOPII* observationes. Quare cum & præcepit scripserit, & absque cadavere, cum ne cranii quidem in Hispania copia esset, non potuit tanti viri experimenta refellere, ad ossa tamen aliqua ex animalibus monet.

Passim etiam lego *GABRIELIS CUNÆI* Mediolanensis anatomici *apologia FRANCISCI PUTEI examen*, Venetiis 1564. 4. excusum *VESALII* opus esse. *PUTEUM* ibi lego famulasse invidiæ *ANTONII FOSSANI* archiatri Hispani, & ex aula etiam Cæsarea *SILVII* rabiem provocatam esse. Ad frigidum cæterum Libellum non utilissima refutatio.

Denique opera omnia anatomica & chirurgica viri ediderunt *H. BOERHAAVE* & *B. S. ALBINUS*, Leid. 1729. fol. 2. vol. Accessit egregia *ALBINI* præfatio, nomina musculis adjecta sunt, *FALLOPII* una recula observationes & icones a peritissimo artifice *V. Vandelaar* exsculptæ.

Aliquas etiam *VESALII* tabulas ad musculos inprimis pertinentes, sæpe recuderunt pictores, & nuper Londini ediderunt ex *J. DOUGLASSII* correctione octo tabulas *VESALIANAS*, in quibus tamen clarissimus editor varia correxit.

FRATER VESALII FRANCISCUS insignis etiam anatomicus fuit, cum tamen juri se dedisset, Ferrariæ corpora secuit. *AMATUS LUSITANUS* Curat. Cent. I. hist. 60.

ANGELI FORTII de mirabilibus vita humana naturalia fundamenta, Venet. 1543. 8. * *DOUGLAS*.

JODOCI WILLICHII *Commentarius anatomicus, in quo est omnium partium corporis humani diligens enumeratio*. Argentor. 1544. 8. Compendium anatomicum est, ex *GALENO* sumtum cum etymologiis græcis. Adjectus dialogus de locustis.

JODOCI WILLICHII sunt etiam observationes in libellum *LACTANTII FIRMIANI* qui de opificio Dei inscribitur, Basil. 1542. 8. Compendium quoddam anatomes, & breve & inane.

CAROL. STEPHANUS doctor Parisinus Librum composuit, cui *RIVERIUS* Chirurgus icones adjecit, unde orta lite, sermo Medico, figuræ Chirurgi tributæ sunt. *Recherches sur l'histoire de la Chirurgie en France* p. 228. *second Mémoire pour la faculté*, Paris. 1743. p. 305. Primum Latine prodiit sub titulo *C. S. de dissectione partium corporis humani* Libri III. una cum figuris & incisionum delineationibus a *STEPHANO RIVERO* Chirurgo compositis, Paris. 1545. fol. In præfatione legitur jam an. 1539. opus absolutum fuisse. Primus liber

osteo-

osteologiam habet, hanc satis bonam, paulo minus vero utilis est vasorum & nervorum historia, & musculorum. Ubique late exscriptus est *GALENUS*. In II. Libro viscera sunt, & organa mascula, in III. organa feminæ propria & musculorum singulares figuræ & modus secandi. Icones lignæ satis magnæ, sed ea pars de qua inprimis agitur minutissima est, quod fere ubique totum corpus depictum sit. Gallica editio splendidior est, & titulum habet *la dissection des parties du corps humain*, Paris. 1546. fol.

THOMAS VICARY the english man's treasure or the true anatomy of man's body, Lond. 1548. 1577. 8. 1633. DOUGL. & ALB. *

THOMÆ VICARY alium paulum quam quem nos dedimus titulum habet *J. AMES*, nempe *a profitable treatise of the anatomie of man's body compyled by T. VICARY Sr. surgeon reveiwed and published by the Chir. of Barthol. hospital*, Lond. 1577. 12.

AMBROISE PARE' brieve collection de l'Administration anatomique, Paris. 1549. 8. Secabat in Scholis facultatis cum *THIERRY de HERY*, & legebat *GALENUM* sibi a *D. CANAPE* Latine versum. Caterum compendium anatomicum est, ad modum *VESALII* fere, scriptum cum observationibus nonnullis, & præceptis de cæsarea sectione & scelotopoja. *EJUSDEM* est *anatomie universelle du corps humain revue par AMBR. PARE'*, &c. Paris. 1561. 8. Non vidi, sed suspicor eam esse, quæ Latine exstat in operibus, Paris. 1582. fol. editis ubi Libros II. III. IV. & V. efficit. Habet icones *VESALII*, anatomen brevem, propria pauca, chirurgica aliqua.

MATHÆUS CURTIUS in *explicatione in MUNDINUM*, Papiæ 1550. 8. Lugd. 1551. 12. Ex *GALENO* auctorem suum explicat & corrigit. Non tamen penitus absque naturæ observatione est, maxime ad morbos. Ita lapillos in pulmone ter a se visos recenset. Editio Veneta 1580. 8. exstat apud *PLATNERUM*.

JACOBI MILICHII oratio de studio doctrinae anatomicae, VVittemb. 1550. 8. DOUGL.

PHIL. MELANCHTHONIS Liber de anima, VVittemberg. 1552. 8. physiologiam continet.

LEONHARDUS FUCHSIUS propria quidem opera vix anatomen coluit, & *VESALIUM* potius secutus est. *EJUS* de corporis humani fabrica P. II. sive de instrumentis nutritionis, propagationis speciei, cordis, cerebri, Lugdun. 1555. 8. Splanchnologiam continet. In *paradoxis Medicinae* quorum Libri III. Basileæ 1535. fol. prodierunt animadversiones anatomicæ in *ALEXANDRUM BENEDICTUM*, *ARABES*, *MUNDINUM*, argumentis ibi inprimis ex *GALENO* sumtis. De myologia & osteologia diximus.

LEONH. FUCHSII institutiones medicæ prodierunt Lugd. 1560. 8. Basil. 1594. 8. quibus de more Physiologia continetur.

BERNARDINI MONTANA de hominis anatomia, Vallesoleti 1551. fol. * DOUGL.

G. RONDELETII nullo modo laudes omittendæ sunt, cuius Libri de piscibus, Lugduni 1554. prodierunt. Magnus enim anatomicus fuit, & propria manu secuit (*RIOLAN. anthrop. p. 57.*) adeo cupide, ut proprii filii viscera sit rimatus, & laudatas superius observationes magni momenti in pulmonibus & asperæ arteriæ cartilaginibus, in renibus, & in aliis corporis partibus factas reliquit. Verus etiam Auctor videtur valvulæ Coli, ut alibi ostendi. Princeps omnino, post *ARISTOTELEM*, in animalium sectionibus. Pisces ficcatos posteris reliquit, quos vidit *STROBERGERUS* in *hist. Monspel.* Amphitheatrum anatomicum Monspeliense, ipsius suasu, exstructum est.

FRANCISCI MICHINI de S. ARCHANGELO observationes anatomicæ, Venet. 1554. 4. Nunquam vidi, neque fere citari reperio. Habet *DOUGLASSIUS*. Sunte forte *FALLOPII* observationes de venis quas *FRANCISCUS* edidit?

N. SELNECCER de partibus corporis humani, VVittemb. 1554. 4. *

JOH. LYGHÆI de humani corporis harmonia Libri IV. Paris. 1555. 4. B. OSB. * Compendium anatomico-physiologicum.

RENATI HENERI Apologia adversus JACOBI SYLVII depulsionum anatomicarum calumnias pro ANDREA VESALIO, Venet. 1555. 8. Auctor Suevus Lindavii natus, Bolzani Librum dedit, discipulus *FUCHSII*. Ex *VESALIO* fere argumenta sua repetit, & plausum medicorum Monspeliensium meritis est teste *VESALIO*.

HENRICI PAXMANNI propositiones de partibus corporis humani & methodo, VVitteb. 1556. 8. * DOUGL.

(a) REAL-

2. REALDUS COLUMBUS (a).

3. SPI-

(a) REALDUS COLUMBUS VESALII discipulus (VESAL. exam. obs. Fallop. p. 73.) & familiaris (VESAL. defabr. C. H. L. I. c. 13.), deinde ejus successor, quindecim annis anatomen docuit Patavii, Pisus & Romæ, ita diligens ut uno anno ad quatuordecim cadavera secuerit (IPSE de re anat. p. 256. lege 262.) at an. retro 1543. quo CAJUS, concurrente COLUMBO Patavii prælegit (CAJO teste de canib. Brit. p. 163.), ut omnino nimis aspera sit censura CARCANI, qui ingratum VESALII discipulum, & pharmacopolam fuisse, & utriusque linguæ imperitum, & male secuisse, nervos penis præter rem negasse adeo crassos, & aliorum opera ad scribendum eguisse COLUMBO exprobrat. Sat grande opus ejus exstat de re anatomica L. XV. Ven. 1559. fol. exaratum, repetitum Paris. 1562. 8. cum FALLOPII obs. & 1572. 8. (B. PL.) tum cum additamentis recusum a J. POSTHIO, Franc. 1590. 8. & 1593. 1599. (MERCL.) Germanice etiam versum cum titulo R. C. Anatomia teutsch mit einer zugabe vvorinn sceleta bruta begriffen durch JOH. ANDR. SCHENK, Franc. 1609. fol. * Non diffitendum est, paulo audaciorem fuisse in carpento non GALENO solo, sed VESALIO, neque errores effugisse, etiam crassiores. Sed multa tamen utilia habet, ut Librum XVI. de vivorum corporum sectionibus, & Librum XV. de raris observationibus. Inventa etiam, quæ ipsi non sunt nulla, suo loco laudavi. Obiit anno 1577. GIORN. de LETTER. d' ITAL. T. XIII. p. 213.

JOHANNES VALVERDE Hispanus, COLUMBI discipulus, vix ipse secuisse visus est, adeo & sermone & iconibus VESALIIUM exscribit, paucissimis adjectis partim rariorum eventuum observationibus, partim figuris vasorum cutaneorum. Quatuor alias tabulas musculos repræsentantes editionis 1589. editor MICHAEL COLUMBUS adjecit. Editio Hispanica dicitur prodiisse Romæ 1559. fol. min. Italice vertit ipse VALVERDE, adjuvante TABO, & edidit sub titulo anatomia del corpo umano composta per M. G. V. Romæ 1560. fol. Deinde Latine edita est, cum titulo anatome corporis humani, Venet. 1589. fol. & 1607. fol. Prioris editionis 1560. & 1589. eadem, & meliores sunt icones, posterioris exscriptæ, hinc mutatum dextrum & sinistrum latus, sermo idem, & paginae respondent. In B. PL. exstat editio Italica Veneta anni 1559. fol. sed ea eadem cum Romana 1560. est, & in fronte Romam, in calce Venetias inscriptas habet. Icones in PLANTINIANAS abiisse jam monui.

Editionis Hispanicæ JOHANNIS VALVERDE invenio etiam alium annum & titulum Historia de la composizion del corpo umano, Rom. 1556. fol.

JOH. CRATONIS ad artem medicam isagoge & in Lib. GALENI de elementis: de natura humana: de bile, & de temperamentis & facultatibus naturalibus Periocha J. B. MONTANI, Venet. 1560. 8. PLATN.

LEVINI LEMNII de habitu & constitutione corporis, Antvverp. 1561. Erfurt. 1582. 8. Jen. 1587. 8. Physiologica aliqua habet de generatione, &c. IDEM in Libris IV. de occultis naturæ miraculis, Coloniae 1581. 8. editis varia physiologica habet, ad generationem inprimis, monstra, fabulas admisit corvorum, qui adpectu solo feminas inprægnent, &c.

GABRIEL FALLOPIUS vero nomine FALOPPIA non an. 1490. sed an. 1523. natus est, cum an. 1528. quintum vel sextum annum egerit (de tumoribus p. 83. b. ed. Venet. 4.) ut recte 39. vel 40. anno ætatis obiisse dicat THUANUS, & nondum quadragenarium GUILANDINUS de papyro (conf. FANTON Diff. anat. 1745. edit. p. 51. 52.), & MARCOLONI præf. ad Librum de aq. medic. Fallop. Ea brevis vita publice utilissima fuit. Anatomen docuit post COLUMBUM Patavii, chirurgiam cum maximo plausu exercuit, vir optimus, qui GUILANDINUM suo ære ex captivitate Mauritanica redemerit, neminemque in tanta auctoritate læserit, unice EUSTACHIO, sed forte non aliter merenti, paulo iniquior. Vivus edidit observationes anatomicas, Ven. 1561. 8. primum excusas, deinde 1571. (B. PL.) & Parisiis cum COLUMBO an. 1562. 8. Coloniae 1562. 8. & alias recusas. In systema redactæ sunt, & in quinque Libros distributæ a JOH. SIEGFRID, Helmstad. 1588. 8. Hoc eximio opere supplevit plerasque VESALII lacunas, quod ipsi inprimis videtur propositum fuisse, ad corpus humanum unice factis descriptionibus. Omnia recensere infinitum foret, laryngem certe, oculi musculos, organa genitalia muliebria, a VESALIO parum bene descripta, solícite exposuit. Angiologiæ & osteogeniæ primus justus Auctor fuit, & a nemi.

nemine anatomico cupido debet unquam ex oculis omitti, merito hinc cum *VESALIO* recusatus ab *ALBINO*. Alia Opera sunt *Exp. in Librum de ossibus cui addita a F. MICHINO figura venarum*, Venet. 1570. 8. * *DOUGL.* Tum *de humani corporis anatome compendium*, Patav. 1585. 8. * *NICER.* Venet. 1571. 8. quæ mea est editio. Hæ eadem sunt *institutiones anatomica*, quæ in posthuma operum collectione reperiuntur. *Lectiones de partibus similibus corporis humani a COITERO editæ* 1575. fol. Verum in posthumis omnino non dissimulare licet, editores codices suos M. S. prælectionum *FALLOPII* secutos esse, hinc rudem esse dictionem, omniaque longe minus rebus gravia, quam observationes fuerant. Collecta prodierunt opera Francofurti 1600. fol. Venet. 1584. fol. 1606. fol.

GABRIEL FALLOPIUS, anatomen Patavii docuisse diximus, cui addimus, intra annum ad septem usque cadavera humana secuisse, quod eo ævo rarissimum fuit (*MELCH. ADAMI* p. 205.)

Eas ejus *institutiones anatomicas* laudat *BARTHOLINUS* quæ in Veneta *FALLOPII* editione prodierunt anni 1606. rejectis iis, quas Francofurtenses dederunt (*vindic. anat.* p. 3.) *FRANCISCI PUTEI apologia in anatome pro GALENO contra VESALIUM*, Venet. 1562. 8. Inutile opus.

VIDUS VIDIUS non longe debet removeri a *FALLOPIO*. Et si enim ejus Opera an. 1611. demum prodierint, anno tamen 1547. jam Professoris munere functus est, & obiit anno 1569. (*ASTRUC de morb. vener.*) *EJUS de anatome corporis humani* L. VII. Venet. 1611. fol. tum Francofurt prodierunt. Præter *VESALIANAS* icones & descriptiones plurimæ hic novæ occurrunt, tum ex *FALLOPIO* descriptiones, tum icones propriæ, maximo numero, & singularium fere partium, ossiumque solutorum. Earum multas in sua simplicitate utiles esse satis novi, plures tamen & systemata inprimis, magis ad illustrandam descriptionem excogitatas, quam ad naturam pictas esse video, exemplo vasorum capitis, thoracis.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS omnium ante nostra tempora anatomicorum princeps, Romæ his temporibus floruit, magnamque partem laboris sui in refutando *VESALIO* posuit, ut ea, quæ *VESALIUS* in *GALENO* reprehenderat, ex homine & animalibus summo studio eruta in liquidum poneret. Maxima pars periit, vivus autem edidit opuscula conjunctim an. 1564. Venet. in 4. aut 1563. edita, nam utraque inscriptio reperitur. Singula jam recensui, & moneo Venetam editionem emi debere, cum in Leidensi 1707. 8. a *BOERHAAVIO* recusa, adnotationes *PINI* desint, quibus loca veterum & recentiorum auctorum indicantur, ad quæ respexit *EUSTACHIUS*, auctoribus non nominatis. Icones equidem fere in omnibus exemplaribus desunt, sed id demum detrimentum nunc in tabulis posthumis factum habetur. Eas icones etiam *C. BAUHINUS* in *theatro* reddidit. Recusa sunt etiam opuscula Venetiis an. 1574. & 1653. Magnum autem opus *de controversiis anatomicorum* omnino periit absque ulla spe restitutionis. Sed tabulæ æneæ posthumæ, jam anno 1552. æri incisæ (in *opusc.* p. 68.) cum *AUCTOR* anno 1574. vitam obiret, supererant apud *PINUM*, amicum *EUSTACHII*, deinde in familia Rubiorum conservatæ sunt. Eas admirabili arte paraverat *EUSTACHIUS*, omisis literis, mensuris, ne foedarentur tabulæ, earum loco adjectis. Eas icones non videtur auctor ad cadavera parasse, cum manifesto sint, quæ omnino nulla arte in corpore humano cultro possint exprimi. Sed ex multis figuris peculiaribus in sceleton, pro fundamento positum, congestis systemata conficiebat. In iis non curabat valde nitorem, neque minutiora alia, unice in id intentus, ut observationum suarum vim exprimeret. Eas ergo 38. tabulas primum notas, & octo priores, *JOHANNES MARIA LANCISIUS* sagaciter detectas, fatis subripuit (*Giorn. de' Letter.* XII. p. 448.) & continuo, communicato cum *FANTONO* & *MORGAGNO* consilio, edidit Romæ 1714. fol. suis interpretationibus adjectis, quæ editio Romæ recusa est 1728. fol. Habetur in his tabulis pars magna anatomies, myologia, (planta pedis, sternocostalibus, dorsi musculis subtilioribus & paucis aliis exceptis), angiologia, jam laudata, neurologia, de qua pariter diximus, viscerum icones, & ad ossa figuræ aliquæ; omnia ita divitiis inventis, ita naturali in positione depicta, ut nemo iis carere possit. Cum vero *LANCISIUS*, in eo quod adsecutus erat fastigio honorum, non posset his minutiis tempus tribuere & scalpellum, *MORGAGNI* vero epistola aliquas tantum particulas attingisset, *WINSLOWUS* quidem operi suo adjecit tabulas quatuor literulis adjectis & inter-

terpretatione. Deinde Romæ anno 1740. fol. omnes *EUSTACHII* tabulas edidit *CAJETANUS PETRIOLUS*, Medicus & Chirurgus, & addidit vitam *EUSTACHII*, tum *riflessioni anatomiche sopra le note del S. LANCISI fatte sopra le tavole dell' EUSTACHI*, postquam prius unicum folium cum hoc titulo publicaverat *Dubj anatomici considerati dal PETRIOLI circa le riflessioni aggiunte alle note del LANCISI sopra la T. 25. d' EUSTACHIO* Genuæ. Commentarii alii Romani in quinque successivas supplementorum series valde incommode disjecti sunt. Deinde *PETRIOLUS* sæpe adeo paradoxus est ut quem demum tolerabilem sensum verbis inperitiam, invenire non possim. Quid significat, arterias hepaticas in *EUSTACHII* figuris a splenicis venire? vaginam Glissonianam T. XI. fol. 4. depingi? & tot alia. Sed facile caremus eo interprete, siquidem habemus *BERNARDI SIEGFRIED ALBINI Explicationem tabularum anatomicarum EUSTACHII*, Leidæ 1744. fol. editam, in qua pro summa, qua pollet, & in cadaveribus secandis & in Librorum lectione peritia partim ex scriptis *EUSTACHII*, partim ex cadaveribus humanis interpretationem tabularum molitus est, descriptis absque umbra iconibus & adjectis literulis. Ad finem animadversiones in alios interpretes *EUSTACHII* adjecit, *WINSLOWUM* nempe, *MORGAGNUM*, *LANCISIUM*, *BOERHAAVIUM*. *PETRIOLUS* non videtur ipsi innotuisse. Cavendum est, ne tabulæ *EUSTACHII* legantur in editione Genevensi 1717. fol. ubi varie truncatæ & literulis vitiosis pictæ sunt. Transeunt etiam vulgo nunc in Libros anatomicos, ut in *SENACI* commentarios, aliosque.

CAJETANI PETRIOLI riflessioni anatomiche ad EUSTACHIUM dictas habeo etiam seorsim editas, cum eo titulo, quem hic dixi 1740. fol. sed eæ terminantur ad p. 78. editionis meæ prioris, cum qua eo usque accurate consentiunt, & deficiunt adeo *spiegazione aggiunta alle predette ommissioni*, tum tabulæ ipsæ.

PROSPERI BORGARUCCI (discipuli *VESALII*) *della contemplazione anatomica sopra tutte le parti del corpo umano* L. V. Venet. 1564. 8.

JOH. GORRÆI definitionum medicarum L. XXIV. Paris. 1564. fol. Francof. 1578. fol. & alias. Ut alias voces græcas medicas, ita anatomicas etiam interpretatur, ut una descriptionem aliquam addat, & loca veterum. Similia etiam, sed pauciora habentur apud *ANUTIUM FOESIUM* in *Oeconomia*.

JOH. COSTÆI disquisitionum physiologicarum in primam primi Canonis AVICENNÆ sectionem L. VI. Bonon. 1589. 4. * *DOUGLASSIUS* huc refert, & *adnotationes in AVICENNÆ canonem*, Venet. 1595. fol.

JOH. HALL a very fruitful and necessary brief vwork of anatomy, Lond. 1561. 4. *

THADDÆUS DUNUS, cujus de respiratione Librum recensuimus, secuit omnino Tiguri corpora humana.

HIERONYMUS CARDANUS in *contradictentibus medicis*, Paris. 1565. 8. multa omnino physiologica tractat.

NIC. RORARIUS in *contradictionibus* alibi citatis utique anatomica etiam veterum conciliat.

CHRISTOPHORI WIRSUNG Praxis habet etiam descriptionem omnium externorum & internorum membrorum corporis humani, Heidelb. 1568. fol. &c.

VOLCHERUS COSTER FALLOPII discipulus, Groninga Frisius, juvenis obiit, ut quidam *RIOLANUS* habet (*Anthopogr.* p. 31.) in castris J. *CASIMIRI* Palatini principis, (*EYSSON* in præf. ad *COITERI* Librum *de ossibus infantis*). Ipse se exercuerat imprimis in brutorum animalium anatome, quorum multa apud *ALDROVANDUM* secuit, & sceletos paravit, vivorum etiam incisorum phenomena, incubationem & alia notatu digna observavit. In homine imprimis utiles ex morbois corporibus observationes reliquit. In collectione ergo, quæ sub titulo *Externarum & internarum humani corporis partium tabulae atque anatomica exercitationes & observationes varia* prodiit Norimb. 1573. fol. dedit methodum studendi anatomen, tabulas, quæ anatomicum compendium sunt, oculorum tabulas, observationes anatomico-chirurgicas, miscellanea varia. Reliqua jam laudavimus, Alterum opus, quo *Lectiones FALLOPII de partibus similaribus* continentur, & sceleta variorum animalium, nihil ultra habet.

De *VOLCHERO COSTER*, cujus hic laudes recensuimus, addimus, statuam etiam eum parasse, in qua muscoli, venæ, ossa & ligamenta sunt, Norimbergæ in bibliotheca conservatam, *BAIERO* teste *adag.* p. 44.

HIERONYMI MERCURIALIS L. VI. *variarum lectionum*, Venet. 1571. 4. editi varia argumenti anatomici habent.

In **C. PEUCERI** Libro *de principis divinationum generibus*, VVittemb. 1572. 8. magna pars physiologiae exstat.

MICHAEL de S. PIERRE *anatomica tabula corporis humani methodice conscripta*, Paris. 1571.

In *Chirurgia* sua **L. FIORAVANTI** aliqua etiam anatomica habet, etsi anatomen ridicule contemnit, & chirurgus pene noxiam facit. Venet. 1679. 12. & alias.

JULIUS CAESAR ARANTIUS Bononiensis Professor, **BARTHOLOMÆI MAGGII** discipulus. Ejus *de humano fetu* Libellus dictus est. *Observationes vero anatomicas* scripsit anno 1586. die Matthiae Apostoli (in *observ.* p. 119.), Venetiis 1595. 4. editas, quibus plurima utilissima tradit, quæ suis locis laudavi, cornu inferius ventriculorum cerebri, pedes hippocampi, ventriculum quartum, musculi genioglossi officium verius, musculos coracobrachialem, obturatorem externum, indicatorem, spincterem vaginæ, fasciæ latæ insertionem in tibiam, ductus excretorios vesicularum seminalium, circulationem minorem, globulos valvularum aortæ.

CONSTANTII VAROLII *de resolutione corporis humani* L. IV. a **J. B. CORTESIO** editi, Patav. 1573. 8. * **DOUGL.** Franc. 1591. 8. una cum Ep. *de nervis opticis*. Non valde crediderim an. 1573. Librum editum esse, qui in præfatione legitur a morte Auctoris a **CAESARE MEDIOVILLANO CORTESIO** traditus fuisse. Obiit autem **VAROLIUS** anno demum 1575. Adeoque si aliqua, ut videtur, editio prior fuit Francofurtensi, video ignorari. Cæterum physiologia est secundum quæstiones proposita, non plenissima propriis observationibus, habet tamen valvulam coli, uti dixi. Ob detectum veterum errorem, & demonstrationem, ventriculos non spiritu sed pituita plenos esse, multa a Galenistarum invidia passus est. Novum modum cerebrum incidendi invenit.

JULII JASOLINI *Quæstiones anatomicas* singulatim diximus, quæ Neapoli an. 1573. 8. prodierunt & quibus *Osteologia parva, de cordis adipe, de aqua in pericardio, de pinguedine in genere* Libelli continentur: tum *tertia quæstio de aqua in pericardio & quæstio de poris choledochis*, Neapol. 1576. 8. quæ omnia recusa habentur, Hanovix 1654. 4. Francofurti 1665. 4.

CARCANUM etiam diximus. Sed apud **BARTHOLOMÆUM CORTE** alia adhuc ejus opuscula citari lego. Nempe *felice successo di Anatomia fatta quest' anno 1585. nel mese di Gennajo, nello studio soprad detto*. (non addit an Ticini sed credo Ticinum intelligi 1585) 4. Deinde ejus *sectio anatomica* Cardinalis **CAR. BORROMÆI** exstat in appendice ad eum, quem citavi, **CURTIUM**.

SIMON SIMONIS *de partibus animalium proprie vocatis solidis atque obiter de prima fetus conformatione*, Lips. 1574. 4. B. RIV. *

Beßätigung d'yonum, oder bestaetigung dessen das zänkisch ist, vwie die neue erfindung des harn probieren, geuviesen ist durch den inventorem LEONGARD THURNEISEN zum THURN, Berolin. 1576. fol. Mirus Liber. Compendium anatomicum primo loco est, figuris partim ad **VESALIUM** imitatis, partim novis, sectionibus nempe viscerum horizontalibus variis. Tunc urinæ sequitur analysis. *EJUSDEM partium omnium corporis ut externarum & internarum pictura & icones ad vivum impressa cum historia plantarum* editæ, Berol. 1578. fol. citantur a **DOUGLASSIO**. Meo Libro nihil hujusmodi adhæret, sed unice viscerum & sceletorum minimæ figure per Librum sparguntur.

J. RIOLANI patris *Comment. in sex physiologia FERNELII posthumos & de rerum causis* Libros, Paris. 1577. 8. Antvverp. 1601. 8. Theoria mera.

J. RIOLANI patris ibi citati etiam est *universa medicina compendium*, Paris. 1598. 8. edita & Basil. 1601. 12.

JOH. BANISTER *the history of man suckled from the sappe of the most approved anatomists in this present age*, Lond. 1578. fol. parv. * **DOUGL.** cujus censura non multum boni promittit.

J. JAC. WECKERI *medicina utriusque syntaxis*, Basil. 1576. fol. In hac collectione etiam anatomica aliqua intercurrent.

DOMINICI LEONI *ars medendi humanos morbos a capite usque ad pedes*, Bonon. 1576. 4. D. anatomica continet.

DOMINICI LEONI *artis medendi, &c.* exstat etiam editio Bonon. 1583. fol. Adde deinde:

H h h h

de: *ANDREÆ CÆSALPINI quaestionum Peripateticarum* Liber V. ad physiologiam pertinet. Nervos facit ex corde oriri, & in corde animam sedere. Causam respirationis diversam a cordis motu esse credit, &c. Prodierunt 1571. 4. & 1593. 4. quæ editio una physiologica quaestione ditior est.

HIER. XIMENES institutiones medicae, Epilæ 1578. 1596. 4. Toleti 1583. fol. *

GEORGII BULLEYNE little dialogue between two men concerning apostumations and vvicunds, Lond. 1579. fol. *DOUGLASSIUS* Auctor est, multa anatomica hic contineri, & sceleti figuram.

DAVIDIS CHYTRÆI de structura humani corporis, Rostoch. 1579. 8. * Ad modum Libri de usu partium *GALENII*.

MATTHÆI DRESSER de partibus corporis humani L. II. VVittemb. 1581. *DOUGL.* Lips. 1586. 8. mihi. *PLATNERO*, Lips. 1597. 8. scripsit hunc Libellum, cum Gymnasium Misnæ regeret, quare unice apud eum reperias partium corporis humani Græcas vitiosas appellationes cum nomine Germanico & Latino.

REMBERTI DODONÆI tabula physiologico-medica, Colon. 1581. 8. *

NICOLAI TAURELLI de partibus corporis humani, Altdorf. 1583. 4. Philosophus, non anatomicus.

J. FRIDERICI SCHROETER de natura & origine calidi innati, Jenæ 1583. 4. * suo loco amissa est.

J. FR. SCHROETER etiam est commentarius in Librum *HIPPOCRATIS* περὶ φύσιος ἀνθρώπου, ib. 1585. 8.

FELIX PLATER quinquaginta continuis annis anatomen docuit, botanicem exercuit, thesauros rerum naturalium collegit, in summa gratia vixit apud suos cives. Edidit, præter ea quæ ad muliebria pertinent, de partium corporis humani structura & usu L. III. tabulis methodice explicatis iconibusque accurate illustratos, Basil. 1583. fol. 1603. fol. Et descriptiones & icones ex *VESALIO* in universum desumptæ sunt. Non tamen pauca in descriptionibus minutius proposuit, & icones etiam aliquas proprias habet, lentis crystallinæ, eamque bonam, organi auditus. Mire enim amabat a prima juventute anatomen, & apud ipsos laniones sequebatur, teste *MELCHIORE ADAMI*. *EJUS* etiam exstat *Quaestionum medicarum paradoxarum & endoxarum Centuria posthuma*, Basil. 1625. 8. & cum *Praxi* recusa quæ aliqua physiologica continet.

SALOMON ALBERTUS vir doctissimus, *HIERONYMI FABRICII* discipulus, VVittembergæ docuit. Ejus plures Libelli huc pertinent. *Historia plerarumque partium corporis humani in usum tironum edita*, VVittemb. 1585. 8. (*DOUGL.* 1583. 8.) & auctius 1601. 8. & 1602. 8. prodit. In priori editione breve compendium est cum figuris *VESALII*, & Græcis nominibus, adjecta valvula coli, & papillis renalibus. In posterioribus multa sparsim accesserunt, tum imprimis de valvulis venarum, & varietatibus vasorum emulgentium. *EJUSDEM* tres orationes auctæ, VVittemb. 1585. 8. prodierunt. Inter eas ultima est de disciplina anatomica. Deinde adjecta est illa, a me recusa, de lacrumis dissertatio, adjectæ etiam icones valvularum venolarum, valvulæ coli, raræ fabricæ ureterum. *EJUS* orationes & miscellanea, VVittemb. 1590. 8. In prima inter has quatuor orationes systema Fallopiæ de bilis motu defendit, in altera de sudore cruento agit. Inter quaestiones medicas habet de lacrumarum utilitate in levando affectu animi. *EJUSD.* oratio de surditate & mutitate; Norimb. 1591. 8. Habet etiam *DOUGLASSIUS* ejus observationes anatomicas 1620. 8. sed de iis nihil unquam mihi innotuit.

SAL. ALBERTI Historia, &c. editio VVittemb. anni 1601. in titulo quidem auctior esse dicitur, sed ea editio aucta non est.

J. BOKELII Anatomie partium corporis humani, Helmst. 1585. 1588. 8. Compendium anatomicum fere ex *VESALIO* sumtum, multis tricis scholasticis & physicis admistis. Proprii nihil invenio.

PETRI MONEDULATI de homine magno illo in rerum natura miraculo & partibus ejus essentialibus, VVittemb. 1585. 8. *

JACOBI SCHEGK Tractatus physicarum & medicarum T. I. quarum 3. spiritum in ventriculis cerebri non esse animalem sed vitalem ostendit, quarta de corde & ejus principatu est, Françof. 1585. 12. 1390. 12. *DOUGL.* *

PHIL. SCHERBII (Aristotelici) *de partibus simultaneis*, Altdorf. 1586. 4.

CHRISTOPHORI RUMBAUM *de partibus corporis humani exercitationes quadam*, Basil. 1586. * Exscriptionem vocat DOUGLASSIUS.

ARCHANGELI PICCOLHOMINI *anatomica praelectiones explicantes mirificam corporis fabricam*, Romæ 1586. fol. Fere ex schola physiologus, qui ex ipsa sua intolerabili figurarum ruditate videtur corpora aut nunquam aut valde raro secuisse. Aliqua tamen physiologica primus proposuit, quæ suis locis recensuimus. In iis, quæ magis anatomica sunt, qualia ossa sunt, omnino deficit.

MICHAELIS GAVASSETI L. III. quorum *secundus de praeludiis anatomicis, tertius de exercitatione methodi anatomica*, Venet. 1587. 4. CAPIVACCII discipulus, nihil supra GALENUM sapit. In III. L. musculos & ossa brachii recenset, absque experimento suo.

EUSTACHII RUDII *de usu totius corporis humani*, Venet. 1588. 4. *

CASPAR BAUHINUS vir indefessus, & in colligendis inprimis auctorum descriptionibus inque unum opus ordinandis laboriosissimus, non perinde vero proprio scalpello exercitus, annis quadraginta quatuor anatomes curam gessit. Parisiis autem an. 1579. (PINÆUS p. 194.), & prius Patavii studiis operam dedit. Ejus *de corporis humani partibus externis h. e. universalis methodi anatomia quam ad VESALIUM accommodavit* Liber unus prodiit. Basil. 1588. 8. (GOUGL.): tum *secundus* Liber, *Anatomes partium spermaticarum tractationem continens* 1591. 8. & 1592. cum priori. Tunc an. 1597. Lugduni 8. Secuta est *Anatomica corporis virilis & muliebris historia* recusa Basil. 1609. 8. Inde integrum opus prodiit Basil. 1600. 8. sub titulo *De corporis humani fabrica* L. IV. iterumque cum titulo *Institutiones anatomica*, Bernæ 1604. 8. cum iconibus VAROLII & JASOLINI, & Basil. 1600. 8. Francof. 1616. 8. *Theatri anatomici* titulum induit, Francof. 1605. 8. cui icones accesserunt, idemque ultimo *Theatrum anatomicum infinitis locis auctum*, Francof. 1621. 4. prodiit, cujus icones seorsim etiam an. 1640. 4. secutæ sunt. In hoc opere VESALII quidem descriptiones pro fundamento consecravimus, adjecit tamen & suis locis inseruit EUSTACHII (a nemine præterea fere lecti), FALLOPII aliorumque observationes, cum suis parum numerosis, & fidei non maximæ experimentis, argumento anastomoseos inter venam pulmonalem & aortam descendentem, quæ omnino azyga fuit, hinc cavæ ad cor, inde ad lumbos inserta. Icones ex VESALIO sunt, adjectis EUSTACHIANIS, valvulis FABRICIANIS, paucis aliis. Egregii compendii anatomici, eo inprimis tempore, locum tuetur. Acerbam vide censuram J. RIOLANI, p. 734. *operum omnium*, ubi undique sua invasisse, nominatis fontibus nimis, credo, acerbus objicit. *Epist. anatomica curiosa*, Lipsi. 1673. 4. mihi ignota est, quam citat DOUGLAS, neque credo prodiisse. *Oratio de homine*, Basileæ 1614. 4. excusa est.

FRANCISCI ROUSSET *de partu casareo*, Basileæ 1588. 8. & alias omnino inter anatomicos locum habet. Vide de peritonæo, de vesica, &c.

JACOB HORSTI *vvunderbare geheimnisse der natur das VIII. und IX. buch*, Lipsiæ 1688. 4. est anatome & physiologia, ex variis collecta, ut tamen necessaria vocabula satis apte germanice vertat.

BALDI ANGELI ABBATII *de natura vipera*, Urbin. 1589. 4. Hagæ 1660. 12. Minime mala anatome hujus animalis. Ova vidit & nominavit in his animalibus: coitum descripsit.

ANDR. LEON *de anatomia*, Besæ 1590. 4. Hispanice, D. *

ANDREAS LEON hic citati verus titulus est *definiciones de medicina differencias i virtudes del animo ANT.*

FRANCISCI VALESII *controversiarum medicarum & philosophicarum* Libri I. & II. ad physiologiam pertinent, antiquo more scripti Francof. 1590. fol.

JOHANNIS POSTII Poetæ, discipuli RONDELETII, viri doctissimi, *Observationes anatomica post B. COLUMBI de re anatomica* Libri XV., Franc. 1590. 8. & alias prodierunt. Inprimis ad myologiam pertinent. Valvulam Coli primus novisse videtur, inventam, ut probabile est, a RONDELETIO. Quam ipsi *mantissam anatomicam* DOUGLASSIUS tribuit, ea ad RHODIUM pertinet.

HIERONYMI MONTALTI *de homine sano* Libri III., Franc. 1591. 8. DOUGL.

HIER. MONTALTI Libri III. dicti, physiologiam integram continent.

JOH. BORDINGI *φυσιολογία* (cum hygieine & pathologia), Rostock 1591. 8. *

ALPHONSI RODERICI GUEVARÆ *de re anatomica* Liber Conimbricæ 1592. 4. (DOUGL.) *.

J. HEURNII *Institutiones medicina, accedit modus studendi eorum qui medicina suam operam dicarunt*, Hanov. 1593. 8. & Leidæ apud Plantin. 1609. 4.

J. HEURNIUS prodiit primum Leidæ 1592. 8. recusum vero exstat etiam ibid. 1662. 12.

HIERONYMI CAPIVACCII *Methodus anatomica, sive ars secandi*, Venet. 1593. 4. & cum **TEUCRII ANNÆI PRIVATI** præf. de anatomia laudibus Franc. 1594. 8. Non ars secandi est, sed anatomicum compendium ex **GALENO** sumtum, retentis etiam rudibus erroribus, quos toties **VESALIUS** notaverat, v. gr. venæ cavæ supra diaphragma & infra cor longitudine. In operibus omnibus, **DOUGLASSIO** teste, idem repetitur Liber, & adjecti sunt de fetus formatione & signis virginitatis Libelli, Venet. 1606. fol. *

NICOLAI TAURELLI de facultatibus naturalibus corporis humani 1594. 4.

J. SIEGFRIED *disputationes anatomica* XXIII. Helmstadii ab an. 1595. ad 1602. 4.

DAVID KYNALOCH de anatome & morbis internis poema, Paris. 1596. 4. * D. Amstel. 1637. 12.

OTHONIS CASMANNI *Antropologia, h. e. anatome corporis humani methodice descripta*, Hanov. 1596. 8. *

THOMÆ ERASTI *dissertationes & epistola medicinales*, Tigur. 1595. 4. aliqua, ut ex **DOUGL.** video, physiologica habent.

Post **THOMAM ERASTUM** adde: *Universa medicina synopsis in quatuor tabulas collecta*, Venet. fol. Brevis physiologia est & oculi mala figura & inutilis collectio. Tabula ultima est a **GABRIELE CUNEO**.

IM. SEGARRA *commentarii physiologici complectentes ea quæ ad partem medicam physiologia pertinent ad HIPPOCRATEM de natura humana & GALENUM de temperamentis*, Valentia 1598. fol. *

De **SEVERINO PINÆO** diximus, reliqua enim anatomica, quæ multa habebat, & cum **LAURENTIO** communicaverat, hoc ipso teste (p. 21.) non prodierunt.

In **MARCELLI DONATI** *historia medica mirabili*, Venet. 1597. 4. multa adsunt argumenti anatomici.

JACOBI GUILLEMEAU *Chirurgi Parisini Oeuvres de Chirurgie*, Parisiis 1598. fol. & noviter, Rothomagi 1647. prodierunt. *Anatomes Libri VIII.* hac collectione continentur, quorum figuræ ad **VESALIUM** pertinent, utile aut proprium vix quidquam est, etsi Auctor in anatomicis se multum dicat exercitum fuisse.

JACOBI GUILLEMEAU sunt etiam *tables anatomiques avec les pourtraitures*, quæ jam anno 1586. fol. prodierunt, perinde cum iconibus **VESALII**.

SAM. SATLER *de ratione formali subjecti anatomici, quæ est motus voluntarius*, Basil. 1599. 4. B. RIV. *

CAROLI RUINI *esquisita anatomia del Cavallo*, Venet. 1599. fol. sub nomine pferd anatomie recusa **PETRI UFFENBACI** cura, Francof. 1603. fol. non debet illaudata dimitti, qua tota corporis equini dissectio, vasa etiam & nervi & muscoli perpulchre delineantur & describuntur.

ANDRÆ LAURENTII *Regis Galliarum Archiatri Historia anatomica corporis humani & singularum ejus partium*, Paris. 1600. fol. mag. & eodem anno minus splendide Franc. fol. minori prodit: & in operibus omnibus anatomico-medicis, Franc. 1627. fol. Gallice vero Rothomagi 1661. fol. Alias editiones habet **DOUGLASSIUS**. Infinita vis est quæstionum, controversiarum, argutiarum, propriæ observationis parum. Ex **VESALIO** icones desumptæ sunt paucis exceptis, ut sceletorum fetus, medullæ spinalis. Priorem Monspeliensem editionem citat auctor, de qua nihil aliunde rescivi, potuit adeo etiam prior Francofurtensis exstare quam vidi ad an. 1595. in Catalogis citari.

ANDR. LAURENTII *historia anatomica* prodit Francof. jam 1595. 8. Hanov. vero recusa exstat 1601. 8. Lugd. 1605. 8. absque iconibus.

HIERONYMUS FABRICIUS ab **AQUAPENDENTE**, patria sua, nimis frequenter dictus, **FALLOPII** Discipulus, quinquaginta & ultra annis Patavii in summo splendore constitutus & ab an. jam 1600. novis honoribus ornatus docuit, sero tamen scribere coepit, quod legi alicubi ab ignorantia Latinæ linguæ profectum esse. *EJUS* viri in universum semper fere eadem fuit in scribendo methodus, ut præmissa partium anatome, deinde de actione & utilitate disquireret. Libellos edidit numerosissimos, quos omnes suo loco citavi, primum autem an. 1600.

an. 1600. cum jam ante 26. annos valvulas venarum in venis totius corporis constituisset, & ob ætatem suffectus jam esset *CASSERIUS*, quæ sine dubio causa est breviorum & minus plenarum descriptionum, quæ in *FABRICIO* reperiuntur, ut quæ non factæ sint ad corpus humanum. Senilia ejus opera deteriora esse jam *RIOLANUS* sensit (p. 32. *anthrop.*) Figuræ in universum propriæ quidem sed non optimæ sunt, neque in anatome *PRÆCEPTORIS* fastigium attigit, cum v. gr. tres canales semicirculares *FALLOPIUS*, innumeros *FABRICIUS* faciat. Prima collectio de *aure, omento, larynge* Oppenheimi prodiit 1613. alia de *formato fetu, locutione, loquela brutorum, venarum ostiolis*, Francof. 1624. deinde Patavii 1625. fol. sub nomine *novi operis anatomici, multis observationibus referti*, quo princeps labor *FABRICII* de *formato fetu, & ovi formatione, locutione, brutorum loquela & venarum ostiolis* continetur. Deinde *J. BOHNII*, Lipsiæ 1687. fol. edidit opera anatomica omnia, reiectis præfationibus, neque semper Patavinas editiones secutus est. Denique *ILL. ALBINUS*, Leidæ 1737. fol. novam editionem procuravit, præfationes in caput Libri conjecit, ut paginæ Lipsiensibus responderent, eamque editionem procuravit, præfatione ornavit. Icones 300. quas vivis coloribus paraverat (præf. ad Libros de *voce & loquela*) ad *JOHANNEM* van *HORNE* pervenerunt, & nisi fallor ad *BOERHAAVIUM*. Posthumus est Liber de *formatione ovi & pulli* (*FABER* in *Hernandez* p. 758.) hic aliquæ tabulæ absq; explicatione editæ. Is autem & Liber de *venarum ostiolis* eminent inter *FABRICII* opera.

JOH. SCHENK observationum medicarum rararum, novarum, admirabilium & monstrorum Libri VII. Francof. 1600. fol. a *J. GEORGIO SCHENK* recusæ & auctæ, & Francof. 1665. fol. omnino in sigulis capitibus rara, & ad anatomen & physiologiam pertinentia habet.

HIPPOLYTI BOSCI de facultate anatomica cum quibusdam observationibus, Ferrar. 1600.

4. *DOUGL.*

CHRISTOPHORI GUARINONI de natura humana sermones 4. Francof. 1601. 4. *

JOH. JESSENI a *JESSEN* eruditus sed infelix Pragensis Academiae Rector anno 1601. edidit *VVitterbergæ Anatomiam Pragæ an. 1600. administratam*, compendium nempe anatomicum, concinnum, ex *VESALIO* inprimis excerptum, cum nonnullis observationibus. *IDEM* edidit *examen Obsf. FALLOPII*, Hannov. 1609. 8. * Idem de *generationis & vitæ humanæ periodis*, Oppenh. 1610. 8. Librum dedit cum *GALEOTTO MARTIO* excusum (*B. LEHM.*)

JOH. NICOLAI STUPANI partes corporis humani compendiose enarrata, Basil. 1601. 4. Compendium anatomicum brevissimum. *EJUSDEM* *Medicina Theoretica* ex *HIPPOCRATE* & *GALENO* collecta, Basil. 1614. 8. etiam physiologiam continet.

MARTIN SCHROETER de partibus internis ventris medii, Jenæ 1602. 4. * *B. RIV.*

Sceletos & dissectiones satis numerosas *ULMI, COITERI* aliorumque ope administratas habet in ornithologia *ALDROVANDUS*.

BARTHOLOMÆI CABROL Chirurgi & Anatomici Academiae Monspeliensis *Alphabet anatomique*, Monspel. 1603. 4. & Latine 1603. 4. Oportet vero anteriorem editionem esse, cum in præf. appareat, Gallice virum scripsisse, inde Librum Latine versum esse. Utramque vero editionem nostram curavit Genevensis Bibliopola *CHOUET*. Compendium equidem exigui momenti est, sed observationes egregiæ, cordati hominis, qui fastus sit ægrum ab alio sanato fuisse, de quo desperaverat ipse ad functionem ventriculi, testis, aliasque chirurgicas & anatomicas observationes habet. Hoc alphabetum recusum est cum *JASOLINO*, Hanoviæ 1654. 4. Francofurti 1668. 4. Pulchriorem vero editionem dedit *VOPISCUS FORTUNATUS PLEMP*, cum titulo *ontleeding des menscheliken lichaems*, Amstelodami 1648. fol. iconibus ex *VESALIO, PAVIO* & aliunde collectis. Proprii equidem *PLEMPIUS* nihil addidit.

SEBASTIANI MEYER Institutiones medicae, Friburg. 1603. 12. *

JACOBI FONTANI responsio ... de usu partium, Avenione 1603. 8. *

GEORG. GRASSEK *Examen microcosmici theatri, sive de fabrica corporis humani*, Argent. 1605. 8. Compendium collatitium.

WENCESLAI WINSENII compendium anatomicum disputationibus triginta in illustri *Franequerana propositum*, Franequer 1605. 4. * *DOUGL.*

JULII CASSERII Placentini mors cadit in annum 1605. Hic ergo professor, *FABRICII* senescentis discipulus & vicarius, & æmulus, cæterum in dissectione magistro major fuit, etsi,

etfi, forte quod *HIERONYMUS* senex fuerit, contra sentiat *RIOLANUS* p. 33. Felix Chirurgus fuit *CASSERIUS*, *THOMASINO* teste (I. p. 336.) Priora opera laudavimus, de tabulis posthumis vero hic dicere oportet, quas edidit a morte *DANIEL BUCRETIUS* Medicus Uratislaviensis, qui ut ex inquisitionis carceribus ereperet religionem mutavit, denique monachus (dissuadente præceptore *RIOLANO* p. 739. 229.) obiit an. 1621. (*SACHS Ocean.* p. 105. 106.) Ex 78. tabulæ magno labore auctoris ad plenam anatomen paratæ fuerunt, & pleræque ad corpus ipsum delineatæ, reliquæ & icones ossium inprimis, ex *VESALIO*. *BUCRETIUS* viginti tabulas supplevit, non maximi momenti, ex *VESALIO* desumptas, atque ex *Pentæsthesio* *CASSERII*. Pulchriores mihi videntur, quæ ad cerebrum pertinent, & ad musculos dorsi, & plantæ pedis, quos omnium optime ante nostra tempora repræsentavit *JULIUS*. In vasis & nervis vitia aliqua reperio, quæ emendasset forte auctor, si superstes fuisset. Multa nova habet, ut alibi ostendi, glandulas Meibomii, musculos interspinales, transversum pedis, levatores costarum, arachnoideæ cerebri primas icones. Sed pleræque non intellexit *BUCRETIUS*. Tabulæ, nunc quas laudo, prodierunt cum *SPIGELII* anatome, Venetiis 1627. fol. & Amstelodami 1644. fol. In parvam formam in 4. contraxit *SIMON PAULI*, & Francofurti edidit 1732. 4. 1656. 4. recudi vero curavit *J. F. FIEKIUS* eodem loco 1707. 4. cum versione Germanica.

DUNCANI LIDDELLII Ars modica succincte & perspicue explicata, Hamburg. 1607. 8. * Physiologiam continet.

DUNCANI LIDDELLII l. c. an non *ID. universa medicina compendium*, Helmst. 1605. 4. 1620. 4. in operum omnium P. I. continentur physiologica Lugd. 1624. 4.

Cum *LUDOVICI MERCATI* operibus omnibus prodiit in I. tomo *physiologia systema*.

GREGORIUS HORSTIUS nunc scribere cepit. Edidit *VVittebergæ nobilium exercitatio- num de humano corpore & anima Librum* 1604. & correctius 1607. 8. Neque enim alius fuit Torgensis *HORSTIUS*, quem *GEORGIUM* vocat *DOUGLASSIUS*.

EJUS est *Scepſis de naturali conservatione & cruentatione cadaverum, de somno, &c.* *VVitteb.* 1606. 8. *DOUGL.* *

Secuti sunt an. 1712. Francofurti (& 1607. 8. *VVitteb.* *DOUG.*) *de natura humana* Libri. Physiologiæ compendium est, plenissimum quæstionibus scholasticis. Icones ex *VESALIO* sumpsit. *Anatome corporis humani an. 1617. instituta*, Gieſſ. 1617. fol. parv. *Observationum medicarum singularum* Libri IV. Ulmæ 1625. 4. editi sunt, & subjectæ Epistolæ, multa continent anatomica ex *J. RUD. SALZMANNI*: *G. FABRICII HILDANI*: *C. BAUHINI*: *HENRICI HOPHNERI*: *J. HORNUNG* aliorumque laboribus. Ibi etiam recusa reperitur *HORSTII de natura motus animalis & voluntarii exercitatio singularis*, disputatio nempe, Gieſſæ 1617. 4. habita, quam *J. MULLERI*, respondentis nomine, in myologicis recensuit, cum nondum inter meos Libros esset. In ea ostendit musculum, dum figuram mutat & crassescit, eandem tamen aream conservare, & tanto brevior reddi, quanto fit crassior, & unicum transversum abdominis esse. In operibus omnibus hæcetiam recusa sunt Norimbergæ 1660. fol. Goudæ 1661. 4. 4. tribus voluminibus, & Libri *de natura transformati in partem primam Institutionum medicarum*. In *Institutionum physicarum* Libro II. aliqua exstant de anima. Reliqua jam recensui. An alius *GREGORIUS HORSTIUS* fuerit, cujus est *specimen anatomie practica in Academia Gieſſena*, Francof. 1678. 4. ?

GREGORIUS HORSTIUS ibi dictus utique is est, cujus libros habeo.

JOH. RIOLANI schola anatomica recusa est Genev. 1624. 8. iisdem verbis & paginis.

TOBIÆ KNOBLOCH Dissertationes anatomica & physiologica, *VVitteb.* 1608. 4. recusa 1612. 8. Medicus Onolsbacensis, compendium compilavit, figuras ex *VESALIO* adjecit.

ANDRÆE LIBAVII Disputatio de partibus humani corporis in medio ventre contentis, Coburg. 1608. *

JAC. WERENBERG de corporis humani fabrica Disp. X. *VVitteb.* 1608. 4. 8. *

JOHANNES RIOLANUS nunc cœpit innotescere, totisque quinquaginta annis auctoritate floruit, & magis floruisse, nisi in nova inventa & succedentem laboribus juventutem, & in universum in omnes anatomicos fuisset iniquior, qui principis anatomicorum titulum quasi ex merito reciperet. Eruditione cæterum eminuit, qui omnes fere anatomicos Auctores legerit, eorumque inventa in succum converterit (ad *schol. anat. præs.*)

Anatomen male relictam (*anthrop.* p. 57.) Chirurgis, ut ipse queritur, Medicis quasi ex postliminio vindicavit, & ab anno 1614. quadriennio in schola medica secandi munus obiit p. 64. usus tamen etiam JOHANNES RIOLANO Chirurgus (*præf. ad schol.*) Iconum osor fuit (p. 52. 53.), antiquitatis vero accerrimus defensor; hinc iniquus in VESALIUM, HARVEIUM, PECQUETUM inventores. Ejus *Scho'a anatomica novis & raris observationibus illustrata* prodit Parisiis 1608. 8. post octo annorum sectiones, sed auctoris 27. annos nati (*operum* p. 847.) Primum rudimentum est futuri operis.

Anatome corporis humani, Parisi. 1610. fol. DOUGL. *

Eadem duplo auctior *Anthropographia* titulo edita est, Parisiis 1618. 8. iterumque aucta 1626. 4. & denique cum reliquis operibus anatomicis 1649. fol. cui optimæ editioni G. PATINUS indicem adjecit. In hoc eruditissimo opere omnem antiquitatem in unum volumen stipavit, historiam anatomes præfixit, cum judiciis, fere tristioribus. Non fuit absque propriis observationibus, argumento filorum testis, musculi sui, &c. Sed magnam tamen partem anatomes numquam attigit, ut vasa, in quibus, & in organo auditus certe, si dicere licet, quod sentio, præter fidem erravit. Inter priora opera *Osteologia ex veterum & recentiorum præceptis descripta*, Parisi. 1614. edita non redit in collectione operum.

Eodem anno tam Parisiis fol. quam Londini 4. prodierunt ejus animadversiones in anatomicos sui seculi, ANDREAM LAURENTIUM CASPARUM BAUHINUM, p. 33. A. SPIGELIUM, C. BARTHOLINUM, umbraticum ut ait anatomicum, qui ex C. BAUHINO & observationibus Patavinis quibusdam sua collegerit (p. 687.), CASPARUM HOFMANNUM, virum acutum, sed qui sanguine nimis abstinerit (p. 34. 793.), VESLINGIUM, quem tamen pro eorum habet doctissimo, contra quos scripserit (p. 806.), & ÆMILIUM PARISANUM, de quo ultimo dictum est. In primis autem a C. BAUHINO aliisque se exscribi variis locis queritur, p. 752. &c.

EJUSDEM *enchiridion anatomicum*, Parisi. 1648. 12. prodit Leidæ 1649. 8. (cui editioni bibliopola adjecit icones VESLINGII) & Parisi. 1658. 8. EJUS partem secundam promiserat in *Opuscul. contra GUIFFART* p. 210. sed ea nunquam prodit. Hoc compendium & si breve, mihi tamen reliqui RIOLANI scriptis utilius videtur, pluraque propria haberetum anatomica, tum adjectarum observationum practicarum, & merito, quod omnium novissimum prodierit. Incommodum est, quod osteologia bis, & tamen diversa occurrat, cum & I. & VI. Liber ossibus dicetur. Gallicam editionem, Lugd. 1682. 8. dictam DOUGLASSIO, non vidi.

EJUS *enchiridion anatomicum* recusum etiam exstat Lipsi. 1674. 8. etiam cum iconibus VESLINGII, sed absque alio additamento. Gallica etiam exstat editio Parisi. 1661. 8. Cæterum moneo, ut Parisina editio 1658. 8. ematur, quæ multo plenior sit priori, tum prætermisissis adjectis, tum multis libellis de pilis, unguibus, valvulis venarum & de circulatione sanguinis.

Porro *Opuscula anatomica varia & nova, inprimis de motu sanguinis ejusque vera circulatione*, Parisiis 1652. 12. edita præter ea, quæ de circulatione agunt, etiam continent *anacephalaosin HIGHMORI*, sive operis ejus viri censuram: *Anatomen pneumaticam: De transpositione partium naturalium & vitalium in latronem Francœur.*

Alia *Opuscula* anni 1653. & 1655. vide in *Tractatu de vasis lymphaticis*. Atque adeo inter lites perpetuas depositus senex obiit RIOLANUS.

In THOMÆ CORNACCHINI *Medicina practica rationali & empirica*, Venet. 1607. fol. * aliqua anatomica reperiri monet DOUGL.

JUSTI CNUITII *Compendium universæ medicinae juxta doctrinam HIPPOCRATIS & GALENI* Vicetiæ 1608. Patav. 1666. 8. *

JAC. LAVELII *compendium medicinae*, Venet. 1609. 8. 1610. 8. *

J. BAPT. DE GELLO *de natura humana fabrica* Libri X. Amberg. 1609. 12. DOUGL. *

NICOLAUS HABICOT, celebris Chirurgus, compendium in titulo *semaine anatomique* ante annum 1610. edidit, si fides *Recherches sur l'histoire de la Chirurgie en France*, p. 271. Recusa est Parisiis 1660. 8. & Belgice versa sub titulo *Anatomycke vveeke door vvelcke in 14. lessen het middel om de partyen dens menschelyken lichaams van een te scheiden angevveezen vvert*, Hagæ 1629. 8. vertente CASPARO NOLLENS. Non quidem eruditus Auctor fuit, sed multa corpora secuit, hinc multa ad naturam vivide & absque nauseosa illa VESALII exscriptione verius delineavit. Ligamenta hepatis lateralia, tria vesicæ ligamenta, septum uteri, coracohyoidei originem veram, ligamenta ossiculorum auditus, inter-

interosseorum in manu veram descriptionem, pharyngis constrictorem, alia, primus dixit. Allantoideam membranam inflari posse adfirmat. Appendiculam cæci intestini solidam facit. Ductum seminalem per prostatam euntem unicum esse, idque se invenisse monet. Musculos uvulam negat habere. Hæc minus bene. Obiit an. 1624.

Liceat hic adjecisse Libellum quem nunquam vidi, habent vero Chirurgi in *Recherches* p. 271. *Paradoxe myologique par le quel est démontré contre l'opinion vulgaire tant ancienne que moderne que le diaphragme n'est pas un seul muscle*, Paris. 1610. Nempe dextrum & sinistrum vult esse, ut duo sunt transversi. De reliquis dictum est.

HENNINGII ARNISÆI *Observationes anatomicae aliquot*, Francof. 1610. 4. & eum *Tra-ctatu de partu* 1641. 12. EJUS splendidæ icones anatomicae vivis coloribus & nativa magnitudine, viginti quinque, jubente HENRICO JULIO depictæ, conservatæ Helmstadii musculorum sunt. Quæ genitalia muliebria referebant, ob ineptum pudorem remotæ, nunc perierunt. Eas vidit & describit CONRINGIUS introd. c. IV. Hortum etiam & laborato-rium chemicum privata cura extruxit, ut ex Epistolis HORSTIANIS video.

HENRICI PETRAREI λόγος ἐγκομαστικός *studii anatomici*, Marburg. 1610. 4.

THEODORI ZWINGERI *physiologia medica THEOPHRASTI PARACELSI dogmatibus il-lustrata*, Basil. 1610. 8. Syncretista, qui multa chemicorum dogmata recepit.

CASPAR BARTHOLINUS, Discipulus FABRICII & PLATERI, Medicinæ primo, dein- de Theologiæ professor. Ejus *Anatomica institutiones corporis humani cum plurimis novis ob-servationibus* VVitteb. prodierunt 1611. 8. (quæ est *Albia DOUGLASSII*), tum Argentinae 1626. 8. Goslariae 1632. 8. Compendium anatomicum est, quod idem cum additamentis filii recusum, tandem in celebrem illam THOMÆ BARTHOLINI *anatomien renovatam* ab- iit. EJUSDEM *problemata*, &c. VVitteb. 1611. 4. Sunt decem exercitationes circa pro- blemata quinquaginta antiqui saporis. EJUSDEM *Controversia anatomica & affines notabi- liores & variores*, Goslar. 1631. 8. nihil sunt, nisi nova editio problematum, adjectis aliis quæstionibus, ut nunc secundum ordinem partium corporis humani dispositæ habeantur. Solet rationes adfirmantium & negantium proponere, suasque addere, quæ de lite defi- niant. Aliquæ observationes inter multas obsoletas controversias mistæ sunt.

NICOLAI NANCELII TRACHYENI *Analogia microcosmi ad macrocosmum* Parisiis 1611. fol. *

PETRUS LOWE in suo *discourse of the vvhole art of surgery*, Lond. 1612. 4. anatomica habere dicitur DOUGLASSIO. *

GERMANI COURTIN (qui notas etiam addidit JACOBO GUILLELMEAU) *Leçons ana- tomiques & chirurgicales*, Paris. 1612. fol. sunt lectiones a 1578. ad 1587. factæ, a morte auctoris a Chirurgo STEPHANO BINET editæ.

GERMANI COURTIN lectiones dictæ nihil habent eximii aut proprii.

JOH. PISTORII *Microcosmus*, sive *Liber cepheleanatomicus de proportionibus utriusque mun- di*, Lips. 1612. 8. DOUGL. *

JOACHIMI OELHAFEN *de partibus abdomine contentis*, Gedan. 1613. 4. *

HIERONYMI PERLINI *bina historia physiologica, pathologica & therapeutica, quæ corpora muliebria & temperamenta & morbos spectant*, Hanov. 1613. 4. MERCL. *. EJUSDEM in- stitutiones medica, physiologica, pathologica & therapeutica eod. anno 4. editæ. *

CASP. PAFFIUS *de homine*, Lips. 1614. 4. RIV.

JOH. PINCIER *Otium Marburgense in VI. Libros digestum, quibus fabrica C. H. describi- tur*, Herborn. 1614. 8. Physiologia in versus conjecta.

FRANCISCI TIDICÆI *microcosmus, h. e. descriptio hominis & mundi parallelus &c.* Li- psia 1615. 4. * DOUGL.

J. REMMELINI *Catepiron microcosmum* Aug. Vind. 1619. fol. DOUGL. Ulmæ 1639. Fran- cof. 1660. fol. quæ mea est editio Aug. Vind. 1632. & 1661. fol. Germanice, & Amste- lodami 1667. fol. sunt icones VESALII, ita ad modum NICOLAI de SABIO coaptatæ, ut seriem stratorum suo ordine repræsentent in tribus tabulis ex inventione REMMELINI, excudente MICHAELE SPACHERO. Anglice reddidit, quod mireris, CLOPTON HAYERS Lond. 1702. fol. IDEM Liber etiam cum nomine excusoris, rejecto REMMELINO, prodiit cum titulo STEPHANI MICHAEL SPACHER *Pinax microcosmographica ontleedingh der Kleenen vvaereld*, Amstelodami 1634. fol. ALBINUS ad DOUGLASSIUM citat editionem

1645. fol. In hac editione invenies tabulam primam prioris operis , & vasa cutanea , omiffa tabula fecunda & tertia.

CASPAR HOFMANNUS Altdorfinus , ab anno 1607. TAURELLI fuffeffor (*pref. ad CAT. JUNG*) vir utriufque linguæ peritiffimus , ARISTOTELIS juratus defenfor , etiam contra GALENUM , iniquus fatis coætaneorum cenfor , unde illæ pro patre in HOFMANNUM orationes THOMÆ BARTHOLINI , cæterum ex libris anatomicis . Plurima fcripfit , quæ huc pertinent , quorum pleraque recensui , fed præterea Libros VI. *variarum lectionum* , Lipf. 1619. 8. ubi varia loca GALENI & veterum critice & physiologicè expendit , & ARISTOTELEM tuetur . EJUSDEM *de partibus fimilaribus corporis humani* , Norimber. 1625. 4. *de facultatibus naturalibus* ibid. 1626. 4. * *Commentarius in Librum GALENI de usu partium* , Francof. 1627. fol. *Relatio judicii acti in campis Elyfiis contra GALENUM* , Norimb. 1642. 12. * *Institutiones medicae Libris VI.* Lugd. 1645. 4. (inter quos Libros etiam physiologia habetur) earumque epitome , Paris. 1648. 12. *De partibus fimilaribus Liber fingularem defectum fuppleturus Libri quem GALENUS fe ait fcripiffe* , Francof. 1667. 4. poft mortem auctoris . *De veritate contra ARGENTERIUM aliofque* , Paris. 1647. 4. contra GALENUM , PARISANUM , FERNELIUM , pro ARISTOTELIS opinione de partium principatu . Sed inprimis huc pertinent poftumæ apologia pro GALENO five *Chrestomathia* . Libri III. 1668. 4. Hos perituros amici labores redemit G. PATINUS , & paulo ante fuam mortem edidit . Nomen malum eft . Nam vere ARISTOTELEM contra GALENUM tuetur , in iftum iniquior , ut etiam VESALIUM laudet , & ipfi opponat (in *pref.*) In *prefatione* acerbe in GALENUM invehitur , qui anatomica fua omnia ex aliis habeat , & inconfantiffimus modo huic , modo alteri auctori adhæreat . In eodem Libro p. 1352. varia testimonia pro ARISTOTELE contra GALENUM , æmulum , ut credit , congregat . Multum græcæ lectionis , anatomes parum , nifi velis fceleton cocti hepatis . Liber fcriptus eft an. 1635. GALENI quam paraverat editio , tempore J. J. BAYERI latebat apud VOLCAME- RUM (*vit. Prof. Altdorf.*)

CASP. HOFMANNUS ibi citatus in *Epift. ad REINESIUM* paffim anatomica tangit .

THOMÆ COLLADONIS *Adverfaria five commentarii medici* , &c. Genev. 1615. 8. 2. vol. *

THOMÆ COLLADONIS commentarii , quos diximus , parum utiles funt , recte monente WELSCHIO *Ven. medinenf.* p. 275.

PETRI PAW *osteologica fcripta* , & *fucenturiatum anatomicum* , & epitomen VESALII diximus , valvulamque cæci primum negaffe monuimus , in *Cent. I. Ep. HILDANI* . Observationes vero poftumas T. BARTHOLINUS edidit in *Cent. III. IV.* quæ fere ex ægrotorum fectionibus funt . Obiit an. 1617. factis in Galliam & Italiam itineribus , horto reparato , & theatro anatomico , melancholicus tamen cum acri ingenio & memoria valida (NEANDER. MELCH. ADAMUS .)

MICHAELIS POLL *structura anthropologica five somatologica* , Francof. ad Viadr. 1616. 4. Compendium anatomicum eft , octo difputationibus inclufum , ftudiofi medicinæ opus .

HELKIAH CROOKE *μικροσκομογραφία* , a description of the body of man , Lond. 1617. fol. quæ videtur prima editio effe : annum tamen 1615. ponit DOUGLASSIUS . Candidus fatetur auctor , effe compilationem ex CASP. BAUHINO inprimis , & ANDREA LAURENTIO . Nondum Anatome in Angliam penetraverat , cum Auctor in *prefatione* fufo fermone deprecetur quod de genitalibus partibus egerit aut figuras dederit . Ita J. CAJUS fectiones apud Chirurgos vidit , cum eo tempore nullæ apud medicos haberentur (p. 171. opusc. a JEBBIO editorum) . In bene grandi volumine an aliquid proprium fit , nondum novi , nihil certe inveni . Icones ex VESALIO funt , paucae ex PLATERO , CASSERIO .

PETRI LAUREMBERG *Proceffria anatomica* , Hamburg. 1619. 4. Eft fere perpetua pugna contra Laurentium , abfque anatome , nihil enim præter boves diffecuiſſe facile credo RIO- LANO (*pref. in anim. in C. B.* p. 688. & in *Anthropogr.* p. 32.)

EJUSDEM *Collegium anatomicum* , Rostoch. 1636. 4. recufum cum titulo *Anatomia corporis humani* , Francof. 1665. 12. Sunt duodecim difputationes inaugurales , in quibus præter grammatica aliqua nihil inveni . Circulationem pro re nova propofuiſſe monui .

JOH. VARANDÆI *Physiologia & Pathologia* , Hanov. 1619. 8. B. RIV.

FABRICII BARTHOLETTI *Anatomica humani corporis descriptio per thefes difpofita* , Bonon. 1619. fol. *

In **FABRICII BARTHOLETTI**, etiam eo loco dicti, *encyclopadia hermetico-dogmatica* pars I. est *physiologica*, Bonon. 1619. 4. *

In **MATTHIÆ LUDOVICI GLANDORP** *speculo chirurgico*, Brem. 1619. 12. & Londini 1729. 4. edito, continetur compendium anatomies. In ejus etiam *Gazophylacio polyplusio fonticulorum & feraceorum*, Brem. 1633. 4. Londin. eod. anno recuso venæ, & muscoli & alia anatomica, sed breviter omnia, exhibentur. **SPIGELIUM** dicentem audiverat.

DANIELIS SENNERTI *Institutionum medicarum* Libri V. VVittemb. 1611. 4. 1621. 4. 1631. & *Epitome Institutionum*, VVittemb. 1631. 4. 1664. 12. & *tabula institutionum*, VVittemb. 1635. fol. Physiologiam etiam habet, antiquo more, bono tamen ordine scriptam, ut omnia hujus auctoris.

J. GEORG. GROSS *compendium medicina ex scriptura sacra depromptum*, Basil. 1620. 8.

SALVATOR ARDEVINES ISLA *fabrica universal y composicion del mundo mayor y minor*, Mad. 1621. *

JOH. COLLE *Elucidarium anatomico-chirurgicum ex Græcis, Arabibus & Latinis selectum*, &c. Venet. 1621. fol. Anatomica ex **LAURENTIO** & similibus auctoribus collegit.

PAULI ZACCHIAE *Quæstiones medico-legales*, Liber I. Romæ 1621. 4. Liber II. ibidem 1625. Libri III. IV. ibid. 1628. Liber V. ibid. 1630. Liber VI. 1634. Liber VII. 1635. recusus plenissime Libris IX. primo **J. D. HORSTII** deinde **GEORGII FRANCI** cura, Francofurt. 1688. fol. 3. vol. Etsi practici viri omnino opus sit, tamen ad anatomen & physiologiam pertinet, cum infinita habeat ad ætatem, pubescentiam sexus, generationis in utroque sexu negotium.

CHRISTOPHORI BREBIS *fabrica corporis humani octo disputationibus comprehensa*, Lipsiæ 1621. 4. *

GEORG. MILLER *idea hominis*, Lips. 1921. 4. B. RIV.

JOH. BURGOWER *de corporis humani partibus* Disp. 1622. 4. * **MERCL. EJUS** *de ruminatione humana* Disp. 1631. 4. **MERCL. ***

SEBASTIANI BLOSS *disquisitio totius scepseos anatomica* Disp. Tubing. 1622. 4. * **DOUGL.**

ROBERTI FLUDD *Anatomia theatrum triplici effigie designatum*, Francof. 1623. fol. Fanatici & parum sani hominis.

ÆMILIUS PARISANUS Venetiis floruit ab omni anatome alienus, & tamen confidentissimus coætaneorum censor. Spississimum volumen operum reliquit. Titulus est *nobilium exercitationum de subtilitate* Libri 12. accessit *par & sanius* (Parisanus) *judicium de seminis a toto proventu*, Venet. 1623. fol. **DOUGL.** mihi an. 1633. fol. Deinde *Nobilium exercitationum pars altera de diaphragmate ad J. RIOL. de seminis a toto proventu, & de stigmatibus, vita ARISTOTELIS, de calido innato, vita & sanguinis motu* prodiit Venet. 1635. fol. De *microcosmica subtilitate pars tertia*, est iterum de seminis proventu & de visione. Venet. 1638. fol. *Quarta pars microcosmi salus, cosmica subtilitas* serius prodiit. Iterum agit *an semen proveniat a toto, de GALENI & BOTTALLI placitis, &c.*

GUIL. FABRICIUS HILDANUS, ex Hilden pago Coloniae vicino Paterniacum, inde Bernam venit, ibique in Physiici functione finem finivit, celebris practicus & chirurgus in inveniendis felix, in tentando animosus. Ad Anatomen pertinent passim variæ observationes per observationes & Epistolas dispersæ. Sceletos Bernæ paravit, qui etiam nunc supersunt, & scapulas a tortura lacerari observavit. *EJUS* Liber *de anatomia præstantia* germanice scriptus est *vom nutzen und fürtreflichkeit der anatomie*, Bern. 1624. 4. Primo numerosos casus funestos habet, quorum infelicitas ab ignoratione anatomies profecta esset: deinde osteologia varia, jam citata. Posthuma varia reliquit, quæ in *Bibliotheca Bernensi* vidi, volumen inprimis, in quo plurimæ monstrosarum partium imagines & varia chirurgica continentur.

G. FAB. HILDANUS sceleta tria Coloniae dedicavit *nuz der anat.* p. 139.

ANTONII PONTII SANTA CRUZ Archiatri Hispanici *disputationes in primum Librum AVICENNÆ*, Madriti 1624. fol. * **DOUGLASSIUS** multa huc facere scribit.

ANT. PONT. SANTA CRUZ nunc legi, cui titulus est in *AVICENNÆ primam primi*. Physiologica sunt, de temperamentis, facultatibus, spiritibus. Arabes defendit contra **ARGENTERIUM** aliosque, & solis auctoritatibus pugnat.

GILBERTI PACCHÆI *institutiones medica*, Leid. 1624. 12. Brevis physiologia.

3. SPIGELIUS in folio charta regia editus. (a)
4. JOHANNES RIOLANUS. (b)
5. BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS Romæ editus. (c)

Iiii 2

6. THO-

STEPHANI van SCHOONEVELD *Ichthyologia*, Amburg. 1624. 4. Dissectiones varias piscium continet.

MELCHIOR SEBIZ per multos annos Argentorati Professor fuit. Numerosas disputationes anatomicas edidit, quarum collectiones subinde prodierunt. Aliquas recenset DOUGLASSIUS an. 1624. & alias factas ut *Exercitationes medicas* 56. Argentorati 1672. 4. editas. Aliæ penes me sunt, antiquo more omnes, & fere absque experimento scriptæ.

J. BAPTISTÆ CORTESII *Miscellaneorum medicorum Decades* X., Messan. 1625. fol. prodierunt, quem rarum Librum ex dono ILL. MORGAGNI possideo. Juvenis secuerat apud ALDROVANDUM, ediderat VAROLIUM, corpora animalium aperuerat. Inde in Siciliam vocatus vix duo vel tria cadavera viderat p. 3. 4. Quare 40. post annis fere inmutata edidit, quæ in cerebro elaboraverat. In *Decade* III. descriptionem dat artificii TAGLIACOTIANI.

Post JOH. NEANDRI *Tabacologiam*, Leidæ 1626. 4. exstant epistolæ aliquæ anatomicæ.

(a) ADRIANUS SPIGELIUS, Patavinus Professor, funesto casu rebus humanis ereptus, reliquit de corporis humani fabrica Libros X. quos BUCRETIUS ordinavit, sed additis suis opinionibus etiam auxit & corrupit (RIOLAN. in SPIGEL. p. 735.) cum SPIGELIUS 24. tantum lectiones edere vellet (VESL. pref. ad syntagm.) SPIGELIANUM ergo codicem edidit LIBERALIS CREMA, Venet. 1625. fol. adjectum CASSERIANIS tabulis, & recudit BLAEU, Amstelodami 1644. fol. Reliqua citavimus. Latine & pure scripsit SPIGELIUS, anatomica fere ex VESALIO habet, & practicas observationes interspersit.

ADRIANI SPIGELII exstat etiam editio Francofurtensis 1632. 4.

(b) De RIOLANO dictum est, pag. 614.

(c) Et de EUSTACHIO, pag. 607.

F. GIROLAMO GERMANO Medico Francese, *Breve trattato intorno alle figure anatomiche* Neapol. 1625. fol. Non vidi usquam citari hunc Libellum, qui inter meos est. Duo ex homine sceleti sunt, deinde alii simiæ aliorumque animalium, adscriptis frigidissimis horum animalium proprietatibus.

SANCTORII SANCTORII in I. fen. *AVICENNÆ comment.*, Venet. 1626. fol. Anatomica pauca habet, neque enim in iis excellebat, aliqua tamen; thermometra primus ad artem medicam adhibuit. Chirurgica instrumenta multa invenit.

CÆSARIS CREMONINI Opera Aristotelica & theoretica jam citavi; & BRONZERII, & C. ASELLII.

GODOFR. CUNDISI *admiranda microcosmi, sive collegium anthropologicum*, Lipsi. 1627. 4. B. RIV. *

MARTINI LEISCHNER de partibus corporis humani similaribus, Stettin 1628. 4. & dissimilaribus 1628. 4.

Huc refero scriptos JOH. FABRI Germani Bambergensis, ad NARDI ANTONII RECCHII *historiam animalium commentarios*, Romæ 1651. editos fol. quos nemo absque fructu leget, ob monstrorum & animalium curiosam anatomen.

M. AURELII SEVERINI THURII CRATHIGENÆ TARSENSIS, ut amat se vocare, Professoris Anat. Bot. Neap. *historia anatomica & observatio medica eviscerati corporis*, Neapoli 1629. 4. MERCL. EJUSDEM *Zootomia Democritea, sive anatome totius animantium opificii*, Norimbergæ 1645. 4. cura VOLCAMERI prodiit. Anatomen equidem animalium nimis, & supra humanam anatomen, non recte extollit: observationes in numerosis animalibus sane quam multæ, breves in universum, cum rudiusculis iconibus. Varia tamen, quæ minime expectes, passim ibi latent, vas a capsula atrabilaria ortum Valsalvianum, glandulæ intestinorum, bronchiorum, &c. EJUSDEM de vipera natura, veneno, medicina demonstrationes & experimenta nova, Patav. 1651. 4. Inter plurima inutilia bona dissectio fabricæ viperarum JOH. VESLINGII & J. B. HODIERNÆ, & aliquæ aliæ utiles observationes. Icones poeticæ. EJUSDEM antiperipatias, sive de respiratione piscium adversus Aristotelicos diatriba, de piscibus in sicco viventibus Phoca illustratus. De radio Turturis marini.

rini, Neapol. 1654. vel 1659. fol. Vita Auctoris præfixa est, acri ingenio viri magni Chirurghi, ad omnem necessariam crudelitatem confirmati, sed paradoxo. In *Anat. Phoca* vasa cordis & anastomoses arteriosas & venosas hujus animalis describit, & in universum de anastomosibus agit. Circulationem sanguinis non recipit.

HARVEIUM diximus.

JOH. MAGIRI *physiologia*, Francof. 1629. 8. *

JOH. MAGIRI *physiologia*, Francof. 1600. 8. primum prodiit, ad scholæ saporem scripta.

LEVINUS FISCHER .. *observationibus anatomicis locum verum affectus præcordialis vulgo Hypochondriaci illustravit* 1631. 12. *

J. DOMINICI MAGLIOCCA *Disputationum medicarum physiologicarum, ætiologicarum, semeioticarum, therapeuticarum* P. III. Neapoli 1631. fol. LIND.

GREGORII QUECCII *Anatomia philologica* P. I. de præstantia hominis, Norimb. 1632. 4. Lips. 1654. 4. MERCL. *

DANIEL BECKER *Anatome infimi ventris* 12. *disputationibus delineata*, Regiomonti 1634. 4. *

FAB. VIOLET *la parfaite & entière connoissance du corps humain*, Paris. 1625. *

FRANCISCI SANCHEZ *summa anatomica ex GALENO & VESALIO*. Inter Opera omnia, Tolosæ 1636. 4.

DAVID HERMANN *manuale anatomicum*, Gedani 1637. 12. *

J. SOPHRONII a COZAK *Anatomia vitalis microcosmi*, Brem. 1636. 4. *

HERM. BOCCO *dubiorum anthropologicorum de principibus corporis humani partibus πλείαδες* (Disp. XXI.) Lipsiæ 1638. 4. RIV.

JOH. DANIEL HORST GREGORII f. *positionum anatomicarum decades* X. Marburg. 1638.

4. *Progr. ad anat. canis gravida*, ibid. 1639. 4. *anatome corporis humani tabulis comprehensa*, Argentor. 1639. 4. * quæ eadem esse videtur, *deutsche anatomie* an. 1639. gehalten, Marburg. 1679. 4. EJUSDEM *Decas observationum & decas Epistolarum*, Francofur.

1656. 4. In observationibus varia utilia reperi, tum ex morbis sumta, diætæ calidæ in variolis noxiam vim, alternæ partis in ulcere cerebri resolutionem, cordis lymphatica. In Epistolis longa epistola HARVEII contra vasa lactea continetur, & pro iis vasis alia BARTHOLINI.

PETRI CASTELLI *hyæna odorifera*, Messan. 1638. 4. Francof. 1668. 12. Dubitat, num sit hyæna veterum, describit felis Zibethiæ folliculos, & sceleton, & utrumque depingit.

PETRUS CASTELLUS hic dictus in epistolis digestionem ciborum ab acido docet pendere.

VOPISCI FORTUNATI PLEMPPI *fundamentorum medicina* P. III. Lovan. 1638. 4. & altera editio aucta, Lovan. 1644. fol. cum DANIELIS VERMOST *brevi apologemate pro aurore*, Lovan. 1653. fol. Amstelod. 1659. 4. *

SPIGELII discipulus minime obtusi ingenii, minus tamen anatomicus, magnus quæstionum amator. Candorem tamen in amplectenda HARVEIANA veritate demonstravit. Iconem dedit ductus pancreatici, WIRSUNGIANAM. Quæ ad CABROLIUM adjecit, & ad AVICENNÆ anatomica, alibi dicta sunt. Controversias habuit cum J. PRIMIROSE, qui destructionem fundamentorum PLEMPPI scripserat, Roterodami 1657. 4. oportet autem priorem aliquam editionem fuisse. Reposuit enim FRANCISCUS PLEMP munitorem fundamentorum V. F. PLEMPPI, Amstelod. 1649. 4. & GER. BLASIUS impetum J. PRIMIROSI in V. F. PLEMPIUM recusum ibid. 1659. 4.

VOP. FORT. PLEMPPI *fundamenta med.* prodierunt etiam Lovan. 1665. fol. OLAI WORMII *Institutionum medicarum epitome* Hafniæ prodiit 1640. 4. *Controversiarum vero medicarum selectarum Exercitationes* XVIII. Basil. 1611. 4. Ab utrisque minorem, quam, ex Runis & Musæo laudem reportavit.

PETR. TERRER MORANO *flor. de anatomia* Mad. 1640. 8. *

JOHANNIS VESLINGII *Syntagma anatomicum*, Patav. 1641. absque iconibus, Francofurti 1641. 12. Patavii 1647. 4. cum iconibus. Germanice etiam prodiit interprete BLASIO, Leidæ 1652. 4. B. LEHM. Norimb. 1676. 8. & Anglice vertente CULPEPERO, Londini 1653. fol. Mindæ in Germania natus, per itinera in Ægyptum, Palæstinam, & Mauritaniam celebris, summus suo tempore, meo judicio, anatomicus. Compendium anatomicum edidit breve, purissime scriptum, ordine quo C. BAUHINUS, ut omnes alicujus partis in

6. THOMÆ BARTHOLINI Anatome, opus in octavo, Lugduni Batavorum editum anno 1680. (a).

7. PHI-

in corpore musculos, & ossa & viscera conjungeret, servata situs ratione. Figuræ aliquæ non malæ, ut in aure, in fetu, aliæ minus ad archetypum. Observationes pauciores, aliquæ tamen, hymenis, indicatoris musculi inserti in os metacarpi, &c. *IDEM* *synagma* primo Amstel. 1659. 4. commentariis GERARDI BLASII illustratum prodiit, deinde 1666. 4. Patav. 1677. 4. * Germanice, Norimb. 1688. 8. * denique Latine, Ultrajecti 1696. 4. quæ editio non differt ab ea anni 1666. Parum est, quod addidit BLASIUS, si ab appendicibus recesseris, in quos fere omnia nuperorum inventa conjecit, etiam SWAMMERDAMIÆNAS aliquas icones, quibus vasa lymphatica exprimuntur; & quæ non alibi existant. Deinde cum VESLINGIUS an. 1649. ex morbo contagioso obiisset. BARTHOLINUS *Observationes anatomicas & posthumas epistolas* LXXIII. edidit, Hafniæ 1664. 8. quæ etiam nuper, Hagæ 1740. 8. recusæ sunt, & quas maximi facio. De generatione, incubatione ovi, de viperæ anatome, de vasis lacteis copiosæ observationes, de ductu thoracico & vasis lymphaticis lienis minime obscura experimenta, aliæque lectu dignissima hic reperiuntur.

De JOH. VESLINGIO, cujus hic laudes diximus, subjungimus, auditus & linguæ vitio eum laborasse. ROLFINK *dissertatio anat.* p. 46.

NICOLAI TULPII *Observationes medicæ* Libris III. prodierunt, Amstel. 1641. 8. quartus accessit 1652. 8. 1672. 8. & Leidæ 1739. 8. & alias. Doctissimi viri scripta, etsi pleraque practica sunt, cum fructu tamen leguntur. De spina bifida, de valvula coli, lacteis humanis aliasque observationes habet.

HENRICI REGII *physiologia tribus disputationibus proposita*, Ultraject. 1641. 4. *EJUS fundamentorum medicorum* Libri IV. Ultraject. 1647. 4. 1657. 4. 1664. 4. 1668. 4. LIND. Cartesianæ scholæ princeps in Belgio Auctor.

In HENR. REGII hic dicti *philosophia naturali*, Amstelodami 1654. 4. etiam *physiologia* exstat.

In ZACUTI LUSITANI *historia medicorum princip.* sub titulo *spicilegii anatomici* exstat. Compendium.

ANTONII SANTORELLI *de sanitatis natura* Libri XXIV. Neap. 1643. fol. Libri XX. ad physiologiam pertinent. Valde scholasticus, & plurimum usus D. THOMÆ.

ANDRÆ TRIMARCHI *discurso, o capriccio anatomico*, Messan. 1644. 4. *

(a) C. BARTHOLINI *Institutiones anatomicæ ex editione THOMÆ filii*, Leidæ prodierunt 1641. 8. maj. Hæc editio habet omnia priorum verba, quas jam supra enarravimus, additis inter hamulos augmentis, tum iconibus ex PINÆO, ASELLIO, F. SYLVIO, plerisque tamen ex VESALIO sumtis. Primum hic apparet F. SYLVII de cerebro epistola & epistolæ secundæ J. WALÆI ea pars, quæ ad sanguinem pertinet. Eadem *institutiones secundum locupletata* prodierunt Leidæ 1645. 8. * Deinde *tertium ad sanguinis circulationem reformatam anatome* recusa fuit nomine patris omisso, Leidæ 1651. 8. 1669. 8. Hagæ 1655. 8. 1660. 8. 1663. 8. 1666. 8. LIND. Plenior editio est Leidensis 1674. 8. cui titulus est *Anatome ex omnium observationibus maxime patris ad circulationem sanguinis & vasa lymphatica quartum renovata*. Huic editioni accesserunt fere omnia anatomica, quæ post priores editiones prodierunt N. STENONIS, J. SWAMMERDAM, REGNERI de GRAAF, ipsius RUYSCHII, Ipse BARTHOLINUS parum addidit. Nam, quod dolendum, paucis annis anatomen exercuit, & novis inventis maximam auctoritatem consecutus ad Libros, & honores alios secessit; adeoque viscera fere meliora habet, musculos, ossa, nervos, valde imperfecte. Quæstionum & controversiarum abunde est. GERARDUS BLASIUS summa fide editionem procuravit. Nuperior *quintum renovata* Leidensis etiam prodisse dicitur 1686. 8. Germanice a S. PAULI versa cum titulo *kunstliche zerlegung des menschlichen Leibes*, & Hafniæ prodiit 1648. 8. * Norimbergæ, interprete WOLLNERO recusa 1677. 4. Belgice Leidæ 1653. 1668. 8. Gallice Paris. 1646. 4. in metrum etiam conjecta, & ab HOSTILIO CONTALGENO (quod nomen Arcadicum est) Florentiæ 1651. carmine expressa, denique ipso BARTHOLINO in A. HAFNIENSIBUS Auctore Indice a D. BERNIER versa est. Sola floruit, donec VERHEYENIUS successit, ut isti HEISTERUS.

C. BAR-

C. BARTHOLINI tertium ad sanguinis circulationem reformata anatome recusa etiam exstat Hagæ 1651. 8. & Leidæ 1669. 8. Plenior autem editio C. BARTHOLINI sub titulo *Anat. quartum renovat* recusa est Lugdun. 1684. 8. Germanice vertente SIMONE PAULI, Hafniæ prodiit 1648. 8. Belgice, Leid. 1653. 8. Haag. 1658. Leid. 1669. 8. Gallice, Paris. 1646. 4. Italice poetice reddidit HOSTILIUS JONTALGENUS, Florent. 1651. 12. *

T. BARTHOLINUS eloquens & eruditissimus, etiam in diversissimis studiis homo, Europam universam peragravit, ubique diu & cum fructu moratus. Domum redux, & ad Anatomem admotus, forte ad aliqua VESLINGII indicia, adjutore MICHAELE LYSERO factis experimentis, ductum thoracicum in homine, deinde, uti dictum est, vasa lymphatica. Inde per omnem Europam celeberrimus, ob sua merita, socrisque Consulis Hafniensis, qui DOMINI REGIÆ in obtinendo hereditario & illimitato jure magno adjumento fuerat, nobili prædio donatus, in beato otio vixit, cumque eruditis viris per omnem Europam commercia literarum aluit. Non ideo vivos homines incidit ad ductum thoracicum, uti excidit CL. BEHRIO in *physiolog.* p. 249. imo mortuos nimis paucos. Multa Opera recensuimus, plura supersunt. T. B. *Anatomica vindicia C. HOFMANNO*, RIOLANO aliisque opposita acc. *Animadversiones in Anatomica HOFMANNI*, Hafn. 1648. 4.

T. BARTHOLINI anatomica vindicia C. HOFMANNO &c. opposita ex melioribus hujus viri scriptis sunt, in quo facile expertem anatomes adversarium superavit, non minor in literis.

EJUSDEM Collegium anatomicum Disput. XVIII. adornatum, Hafn. 1651. 4. * (In Catal. post *Anat. Pract.*)

EJUSDEM historiarum anatomicarum Cent. I. II. Hafniæ 1654. 8. quæ eadem etiam eodem anno in Belgio excusæ sunt, si titulo credis, tum Germanice anno 1657. 8. Francof. Centuria III. & IV. anno 1657. V. & VI. anno 1661. 8. secusæ sunt. Sua inventa, lymphatica, ductum thoracicum, psoam parvum hic repetit, ductusque mammarum. Satis etiam multas dissectiones adjecit, ut felis zibethicæ, leonis. Deinde multa anatomica rariora, monstrosa interspersit: denique sectiones corporum ægrorum copiosas. Multa tamen vel credula, vel inutilia admiscuit, ut pseudo HIPPOCRATIS Librum de pustulis.

EJUSDEM Cista medica, Hafn. 1662. 8. Ad anatomem varia pertinent, ut quæstio: An lac in mammis virginitatis diminutionem demonstret? De superfetatione. Cadaverum nonnullæ incisiones.

EJUSDEM epistolarum medicarum Cent. IV. Hafn. 1663. & 1667. 8. prodierunt. Amoenissimum opus & merito recusum, Hagæ C. 1740. 8. fere omnium eo tempore celeberrimorum virorum hic epistolas reperias, ut G. PATINI, SALMASII, VESLINGII, SEVERINI, deinde inter discipulos BARTHOLINI, N. STENONIS, OLAI BORRICHII, PETRI SCHUMACHER, (cujus infelix exitus celeberrimus est). MOINICHENII, LYSERI, BODGANI, & BLASII, demum & DEUSINGII. Nihil ab anno 1634. ad 1664. in anatome fere actum est, quod hic non recensetur, & infinita inventorum semina, aut peculiare observationes, hic latent.

EJUSDEM Orationes varii argumenti, Hafn. 1668. 8. Variæ quidem, medicæ, etiam poeticæ, multæ tamen anatomicæ sunt, in C. HOFMANNUM, RIOLANUM, BILSIUM.

EJUSDEM De Cygni anatome ejusque cantu, Hafn. 1668. 8. Erat disputatio, nunc auctior a filio CASPARO recusa. Sceletus avis ex SIMONE PAULI sumpta est sterni cavea, per quam aspera arteria incurvata transit, fuse describitur. Cantus Cygni non bene defenditur.

EJUSDEM Acta Hafniensia T. V. Primus an. 1673. II. an. 1675. III. & IV. 1677. ultimus an. 1680. 4. Hafniæ prodiit. Continent plurimas utiles dissectiones animalium, deinde anatomicas præstantissimas observationes N. STENONIS, de generatione, lymphaticis vasis, C. BARTHOLINI varia monstra, aliaque, ut sit ex optimis Diariis. Ergo in T. I. exstat anatome aquilæ, equi Regii, leonis, cercopitheci, erinacei, columbæ, leporis, rangiferi: in T. II. ululæ, ardeæ, pavonis, psittaci, aquilæ: in T. IV. anatome salamandræ, gryllotalpæ: in T. V. ciconiæ, linguæ pici, torpedinis. EJUSDEM Consilium de anatome practica ex cadaveribus morbofis adornanda, Hafniæ 1674. 4. Luget suas triginta annorum observationes ex anatome practica, quas omnes ignis deleverat. Laudat nosocomia, de eorum defectu in patria

patria sua queritur. Obiit an. 1680. & in ejus obitum WILHELMUS WORMIUS atque OLIGERUS JACOBÆUS, Hafniæ 1681. 4. orationes ediderunt.

JOHANNIS WALÆI *Epistolæ de chylo & sanguine sæpe laudavimus*, ab an. 1641. cum omnibus editionibus BARTHOLINIANÆ anatomes, & cum SPIGELIANIS operibus Amstelodami recusas. WALÆI *medica omnia* in lucem primum protulit C. RIVINUS Chirurgus Edimburgensis, Londin. 1660. 8. Lectiones sunt per totum ambitum medicinæ, etiam physiologiæ, quas præstitisset non edidisse. Practicus felicissimus fuit. GROSS in *Diff. epist. de febre intermittente*.

FRANCISCUS SYLVIUS de le BOE hoc eodem an. 1641. inclaruit epistola ad BARTHOLINUM data, & in ejus *anatomie excusa*. Præter practicam laudem, qua floruit, anatomem etiam coluit, ipsique BARTHOLINO multa cadavera aperuit (*BARTH. de anat. pract. p. 11.*) & inprimis salutarem morem Leidæ introduxit, ut demortuorum in nosodochio ægrotorum corpora inciderentur. Huc autem pertinent, præter cristica jam descripta, *Dissertationes medicae*, quarum P. I. nempe decem disputationes cum *Dissertatione apologetica adversus DEUSINGIUM* Amstelodami excusæ sunt an. 1663. 12. Leidæ 1664. 12. Inter hæc monumenta industriæ dolemus vices viri, qui, cum chemiæ nimis indulgeret, inde causas actionum deduxit, & ad eas explicationes naturam ipsam flexit torstique.

De cerebro & respiratione utiliter scripsit. Circulationem Leidæ adseruit. Deinde in *Praxeos medica idea nova* plurima loca habentur, ubi, occasione functionum læsarum, eadem integræ describuntur.

Inter opuscula varia, quæ in editione operum omnium, Trajecti 1695. 4. Genev. 1680. fol. edita sunt, dictata habentur, sed breviter, ad *institutiones anatomicas C. BARTHOLINI*.

SIMONIS PAULI sunt *Oratio de origine anatomia*, Hafn. 1643. 4. & *programma quo theatrum anatomicum auspiciatus est*, ibid. 1644. 4. & *carmen* ea occasione scriptum. De modo dealbandi ossa consilia alibi citavi.

CONRADI VICTORIS SCHNEIDERI dissertationes hoc anno inceperunt prodire, pleræque equidem suis locis citatæ. Prima *de capite*, VVittemb. prodit 1643. 8. alia *de corde* 1642. tum *de hepate*, omnes, ut semper solent hujus viri scripta, suis observationibus ornata. Sibi etiam vasa lymphatica adscripsit. Deinde in fusissimo alio opere de catarrhis ad os cribri-forme, vias ad nares, pharyngem, laryngem in Lib. I. glandulosam narium tunicam Libro III. descripsit, & præter auctoritates suas etiam observatione attulit.

FORTUNII LICETI infinita opera non moror. Libri III. *de vita*, Genuæ 1607. 4. prodierunt, sed perrexit scribere ad hæc tempora, absque observatione propria.

ANTONII SANTORELLI *de sanitatis natura* Libri XXIV. Neapoli 1643. fol. Physiologia est.

HERMANNUS CONRINGIUS corpora quidem rarissime secuit, multa tamen scripsit physiologici argumenti, & maxime quidem disputationes. Huc etiam revocari potest ejus Liber *de habitu corporum Germanorum antiqui & novi ejusque causis*, Helmstadii 1652. 4. Ibi quæritur, cur adeo uniformis fuerit indoles veterum Germanorum: cur procera statura: cur alba cutis: oculi cærulei: capilli flavi: cur hæc omnia in nuperis Germanis mutata sint. De commentario Burggraviano suo loco dicetur. Denique huc pertinet ejus *introductio in artem medicam*, qua ut aliarum medicinæ partium, sic Anatomies historia & de scriptis judicia continentur.

T. BROWNE *Pseudodoxiam epidemicam*, Lond. 1646. fol. & auctius 1673. editam possis huc referre. Inter errores enim, quos refutavit, etiam physiologicos varios tetigit.

CORNELII ab HOOGHELANDE *cogitationes de Dei existentia & historia æconomica corporis animalis*, Amstelod. 1646. 8. CARTESIANUS, & ignis in corde magnus Auctor.

FLORII BERNARDI *de ultimo corporis alimento*, Vener. 1646. 4.*

J. B. HODIERNÆ *partium viperæ anatomie*, Panorm. 1646. 4.

AUGUSTINI BUCCI *de principatu partium corporis humani cum epicrifi C. HOFMANNI*, Luter. 1647. 4.

JOHANNIS SPERLING *anthropophysica specimen*, VVittemb. 1647. 4. Non secuit ipse, sed LAURENTIUM fere & SPIGELIUM legit. Circa quæstiones versatur, quas scholastico more proponit, & sæpe parum solide resolvit.

PHIL. JAC. SACHS *Anthropologia*, Lipsi. 1648. 4. B. RIV. EJUSDEMOceanum diximus. Gammaro.

marologia, Lips. 1665. 8. edita varia ad colores, idiosyncrasias, aliasque quæstiones undique collecta habet.

THOMAS CORNELIUS CONSENTINUS a patria dictus, vir ingeniosus, Latine etiam doctus, veritatem novorum inventorum inter primos Italos perspexit, quo tempore rarissimi trans alpes erant, qui vel circulationem sanguinis admitterent. PHIL. TRANS. n. 265. EJUS *progymnasmata quadam physica* VII. Venet. 1663. 4. Francofurti 12. prodierunt, recusa cum operibus posthumis. Neap. 1688. 8. in qua editione progymnasma de sensibus & poemata quædam adjecta sunt. Suas observationes passim interponit, & de pulsu ab inserto tubulo intercepto experimentum GALENI refutat: glandulas ventriculi describit, paulum pronior in scepticismum, & de familia LEONARDI DA CAPUA. EJUS *physiologia rationis ponderibus ac momentis illustrata*, Jenæ 1683. 12. * procul dubio non differt a Progymnasmatibus.

LAUR. EICHSTAD *Collegium anatomicum, sive quæstiones de natura corporis humani*, Gedani 1649. 8. *

JOHANNES van HORNE nunc cepit scribere. EJUS *Exercitationes anatomicas I. & II. ad observationes FALLOPII anatomicas & earundem examen per VESALIUM addita ubique epicrissi*, Leidæ 1649. 4. non vidi. Dissertationes de ductibus salivalibus & chyliifero recensui. Deinde an. 1660. Leidæ 12. edidit *Microcosmum* sive compendium anatomicum, cui concinna brevitatis & inventa Stenoniana insunt. Recusum est Leidæ an. 1662. 12. 1665. 12. * Lipsiæ 1675. 12. Germanice Halberstatt. 1679. 12. &c. In controversia Biliana scripsit Libellum cum titulo *Waarschouwing*, uti dictum est. Denique cum præ suo amore anatomes, qui ipsi inerat maximus, SWAMMERDAMIUM socium operarum sibi adlegisset, cepit in partes genitales inquirere, ediditque *prodromum*, jam recensum. Candidus vir, in parandis præparatis sceletisque, & iconibus indefessus, figuras pulcherrimas posthumas reliquit, quæ inter BOERHAAVI Libros sunt 4. Vol. f. & 2. Vol. 4. etiam *commentarium in VESALIUM* (N. STENONIS Diss. inaug. n. 14.), sed is perinde periit. BOTALLI opera recudi fecit.

JOH. van HORNE compendium anatomicum recusum etiam existat Leidæ 1675. 12.

CHR. WEBER *de homine* (an non Disputatio), VVittemb. 1650. 4. * B. RIV.

ALEXANDRI READ *manual of dissection*, Lond. 1650. 12. Compendium anatomicum non ditissimum.

NATHANAELIS HIGHMOR *corporis humani disquisitio anatomica, in qua sanguinis circulationem in qualibet particula typis novis persecutus est*, Hagæ 1651. fol. In dedicatione ad HARVEJUM legitur, opus octo integris annis latuisse. Ex animalium dissectionibus fibras lienis, ductum testium excretorium, ex morbofo casu maxillarem sinum descripsit. Ratiocinii cæterum multum, descriptiones breves, icones malæ, quod notavit olim RIOLANUS *anacephalaos*. p. 152. & ad VESALIANAS clanculum fictæ.

Arcana microcosmi or the hid secrets of man's body discovered in an anatomical duel betwveen ARISTOTELE and GALEN, vvith a refutation of Brovvn's vulgar errors: Lord BACONS natural history: and HARVEY'S book of generation by A. R. Lond. 1652. 8. *

JOHANNES ANTONIDÆ van der LINDEN *medicina physiologica*, Amstel. 1653. 4. Est omnino anatome, quæ ex ordine ventres, deinde artus, ossa, nervos, vasa, proponat. Plurimum eruditionis Græcæ in nominibus & vetustis controversiis reperies. Inter anatomica aliqua tamen utiles observationes. Hypotheses aliquas habet non bonas, v. gr. cor esse sensus & motus principium. In ejusdem *Meletematibus medicina Hippocratica*. Leidæ 1660. 4. edita P. I. adusque p. 136. tradit physiologiam, ex placitis fere veterum.

DOMINICI de MARCHETTIS PETRI F. *anatomia*, Patav. 1652. 4. (MERCL.) & 1654. 4. Eximium compendium, quod minus notum est, non sine damno; observationes enim novas propriasque copiosissimas habet. VESLINGIUM sæpe contra RIOLANUM defendit.

Inter D. PANAROLI *Jatrologismos* existat anatome chamæleontis, & alia huc pertinentia.

JOH. GERHARDI *anatomia corporis humani succincta comprehensio & recollectio in Disp. V. collecta*, Tubing. 1652. 8. * PL.

GEORG GELMAN *dreyfache chirurgische Blume*, Francof. 1652. 4. anatomen etiam habet.

ISAACI CATTIER *observationes medica rariores*, Castris 1653. 12. recusæ cum BORELLI *observationibus*, Lips. 1670. 8. huc possunt referri, ob transpositarum in latrone FRANCOEUR partium historiam, ductum thoracicum, & valvulam EUSTACHII.

PETRI

PETRI BORELLI *historiarum & observationum medico-physicarum centuria IV.* Castris 1653. 12. & Lips. 2. c. arcana, monstrosa & vana plurima sublestæ fidei habet.

JOH. BARILII *Physiologia humana & pathologia per tabulas synopticas ex HIPPOCR. & GALIEN. &c.* Paris. 1653. MERCL. *

JOH. SCHMIDT *Spiegel der Anatomie.* Francof. 1654. 12. (B. LEHM.) *

NELLANI GLACANI *curfus medicus*, cujus I. Tomus physiologiam continet, Bonon. 1655. 4.

GUERNERI ROLFINK *dissertationes anatomica synthetica methodo exarata*, Norimb. 1656. 4. Vir eruditissimus Italiam & fere totam Europam viderat, & Auctor fuit horti, theatri anatomici & Chemiæ Jenensis. Instrumentorum etiam Chirurgicorum magnum apparatus collegit (*SCHENK Disp. de luxatione*). Libros rarissimos coacervaverat, quorum multi penes me sunt. Chirurgiam, & artem obstetriciam cum magno plausu exercuit. Dissecuerat in Italia & an. 1635. in palatio CONTARENO neurologiam, & medullam spinalem demonstraverat. Sed deficiente in Germania opportunitate numerosorum cadaverum, lectione multo magis valuit, quam autopsia anatomica, & Libros suos stipavit locis græcis ex ARISTOTELE & GALENO desumptis. Hoc cæterum Libro ossa, musculos, vasa, nervosque descripsit, & in Diss. I. programmata singulatim olim edita conjunxit, quæ ad laudem anatomes & historiam pertinent. Reliquos Libros citavi.

Ad GUERNERUM ROLFINK addimus, quod primus in Europa Chemiæ professor fuerit.

ALBERTI KYPER *Institutiones medicæ ad hypothesein de circulari sanguinis motu compositæ*, Amstelod. 1654. 4. & alio titulo *Anthropologia corporis humani contentorum & animæ naturam secundum circularem sanguinis motum explicans*, Leidæ 1660. 4. recusa Amsteled. 1665. 4. eodem numero paginarum conservato, in quarum editionum utraque est responsio ad *Pseudapologiam PLEMPII* integra physiologia est, quæ ex SYLVIO & FALCOBURGIO aliqua, propria vero vix ulla habet. IDEM jam an. 1642. Leidæ in 12. ediderat *Medicinam recte discendi & exercendi methodum*, Leidæ 1642. 12. Prima editio *Responsionis ad Pseudapologiam* V. F. P. edita fuit 1647. 12. Occasio autem litis futilis fuit, cum PLEMPIUS in definitione Medicinæ KYPERIANAM carperet, quod corpus humanum pro objecto admisisset, exclusis animalibus.

BARTHOLOMÆI BAUSNER *De consensu partium corporis humani* Libri III. Amstelod. 1656. 8. Theologus, qui de medicina scripsit. Partes singulas corporis humani percurrit, earumque usum, cumque aliis nexum.

ADRIANUS FALCOBURGIUS Leidenfis anatomes Professor, sæpe citatus, nihil scripsit. Valvulam coli negasse constat.

JOHANNIS RHODII *observationes anatomico-medice*, Patav. 1657. 8. aliæque cum BARTHOLOMÆO LINI *historiis* cum titulo *Mantissæ* recusæ. Aliqua habet a D. de MARCHETTIS, MOLINETTO & aliis Professoribus Patavinis, apud quos vir eruditissimus consenuit.

GODOFREDI MOEBII *fundamenta medicina*, Jen. 1657. 4. Francof. 1678. 4. *EJUSDEM Epitome institutionum medicina*, Jen. 1663. 4. In isto opere totum ambitum medicinæ habet, brevemque adeo etiam physiologiam, non magni momenti. Priori vero, quod proprie physiologiam continet, aliqua tamen utilia sparsim continentur & erudita ex aliis collectio.

THOMÆ WINSTON *anatomy lectures of Gresham college*, Lond. 1659. 8. Hoc tempore, vel paulo prius, ab Anglis ex Italia reducibus anatome in Angliam introducta fuit, exstructum CUTLERI ope theatrum, HARVEII, GLISSONII, WHARTONI opera edita. WINSTONUS FABRICII & ALPINI discipulus fuerat, non certe indoctus, sed in dissecando minus exercitus. Circulationis sanguinis nondum meminit: practicas vero observationes interspergit.

JOHANNIS VIGIER *opera anatomico-chirurgica*, Hagæ 1659. 4. continent encheiridion anatomicum, & historiam fetus. Non maximi momenti utrumque.

J. CHRISTOPH. GEILFUSS *institutiones medicæ*, Aug. Vind. 1658. 12. PL. *

GUALTHER CHARLETON *Exercitationes physico-anatomica de œconomia animalis novis anatomia inventis superstructæ*, Lond. 1658. 12. Amstel. 1659. 12. & Anglice cum titulo *Natural history of nutrition, life and voluntary motion*, Lond. 1659. 4. Sunt *Exercitationes XI.* inter quas ultima est de motu musculorum. Theoreticus cæterum & alienis observationibus usus Auctor.

Ejus de differentiis & nominibus animalium exercitationibus, Lond. 1677. fol. editis adjecta est *mantissa anatomica*, in qua GEORGIUS ENT dissectionem ranæ piscatricis, galei piscis, & ranæ vulgaris dedit. Librum de catameniis, de cerebro citavi.

Denique in *enquiries into human nature in VI. praelections*, Lond. 1680. 4. de nutritione iterum tres, de vita unam, & de febre & de musculari denique motu singulas exercitationes edidit, diversas a prioribus.

GUALTHER CHARLETON *Exercitationes* hic dictæ recusæ etiam extant Leidæ 1678. 12.

J. CONR. WECHTLERI *homo oriens & occidens*, Franc. 1659. fol. Integrum systema physiologiæ & pathologiæ ad scholarum saporem, grandi volumine complexus est.

ANTONIUS DEUSING, Professor Groningensis, vir Arabice doctus, ab anatome alienior, numerosissimos Libellos physiologicos edidit, quorum magna pars recensita est. Addimus alios: *Idea fabrica humana*, sive *institutiones anatomicae* prodierunt 1659. 12. *Oeconomia corporis animalis* P. I. de *nutritione*, Groning. 1660. 12. P. II. de *nutrimenti in corpore elaboratione* ibid. 1661. 12. P. III. de *nutrimenti elaboratione ultima* 1660. 12. P. IV. de *motu animalium* Exerc. anat. 1661. 12. P. V. de *sensuum functionibus* Exercit. rres 1661. 12. *Oeconomus corporis animalis & speciatim de ortu animæ humana* 1661. 12. *Oeconomus corporis humani restitutus* 1662. 12. & *apologetica defensionis pro œconomo animali prodromus* 1662. 12. Reliqua jam citavi, & jam horum aliqua, quæ hic enumero.

PAULI BARBETTE *anatomia practica*, Amstel. 1659. 8. In opere non magni momenti opinio singularis exstat, os nempe petrosum mobile esse. Recusa est in *operibus chirurgico-anatomicis*, Leidæ 1672. deinde in *operibus medicis omnibus* a MANGETO recusis, Genevæ 1683. 4. 1704. 4. minus enim anatomicus quam practicus fuit.

HENRICI ERSSON, Professoris Groningensis, *Disp. de observationibus rarioribus in cadavere*, &c. Groningæ 1660. 4. *Diff. de fetu lapidificato & per 20. annos retento*, Groningæ 1661. 12. *EJUSDEM collegium anatomicum*, sive *partium omnium corporis humani historia* 1662. 12. * Ubique utilis omnino & diligens Auctor.

ROBERTI BAIFIELD *Exercitationes anatomicae in varias regiones corporis humani*, Lond. 1660. 12. * 1668. 12. (Sed in Belgio excusæ). Non magni momenti.

JACOB van der GRACHT *anatomie van de uytterlyke deelen, vermeerderd met een verhaal van 't hart*, Roterodami 1660. fol. * B. PL. Adjectus HARVEII Liber de *circulatione sanguinis*.

THOMÆ WILLIS Liber de *fermentatione, febribus & urinis*, Lond. 1659. 8. 1662. 8. 1677. 8. Amstel. 1664. 1665. 8. 1683. 12. In Libro de *fermentatione* unico capite de fermentis agit, eaque in totum fere corpus humanum introducit. In altero Libro de *febribus*, de sanguinis analysi, de nutritione, de effervescentia sani & morboşi sanguinis sermo est. Contra hos Libellos scripsit EDMUNDUS DE MEARA Hibernus *Examen diatribæ T. WILLISII de febribus*, Lond. 1665. 8. in quo negat febrem ab effervescentia fieri, circulationem etiam sanguinis & sanguificationem a sanguine ipso rejicit, vetustatis parasitus. Intercurrunt non inutiles observationes. Reposuit LOWERUS pro amico Librum titulo *vindicationis diatribæ T. WILLISII de febribus*, Lond. 1665. 8. quam physiologiam esse, ex judiciis invenio, nam ipse non legi.

Opera WILLISII omnia, Genevæ 1680. 4. deinde, Amstel. 1682. 4. cura G. BLASII, & Venetiis 1720. 4. recusa sunt. Erat utique in hoc viro hypotheseos amor (quem ipse contraneus viri carpit RICHARDUS MEAD de imper. sol. & lun. in pref.) Eum tamen amorem non ex nostro seculo, quo valde exosus est, sed ex WILLISII temporibus metiri oportet, quo cuivis auctori systemata condere non licebat solum, sed erat honori. Reliquos Libros omnes diximus.

MICHAEL SENNERT *Diff. anatomica miscellanea*, VVittemb. 1660. 4.

MAUR. HOFMANNI *synopsis institutionum anatomicarum partium plerarumque vitam declarans*, Altdorf. 1661. 8. 1681. 8. MERCL. * Patav. 1664. 8.

M. HOFMANNUS hic dictus theatrum Altdorfinum condidit & in eo primum anno 1655. secuit.

GABRIEL CLAUDER *Epist. de observatione practico-anatomica mirabili*, Patav. 1661. 4. *

DANIEL VOET *physiologia*, Amstelod. 1661. 4. *

VALENTINI HENRICI VOGLERI *Institutionum physiologicarum Liber* Helmst. 1661. 4. *

CASPAR a REYES *elysius jucundarum quaestionum campus*, Bruxell. 1661. fol. Franc. 1670. 4. Magna varietas est curiosarum quaestionum, imprimis ex muliebrium historia, in centum titulos stipata.

JOH. THEODORI SCHENK *Exercitationum anatomicarum Libri VI.*, Jenæ 1662. 4. Dissertationes sunt novem, quibus abdominis partes describit, cum græcis fragmentis bene multis, & paucissimis observationibus. *EJUSDEM schola partium corporis humani*, Jenæ 1664. 4. Compendium anatomicum est, ex Libris collectum. Ipsum motum peristalticum ex HARVEJO unice citat. Hymenem negat. De lacteis thoracicis & nervis, aliqua propria profert. Ex XI. disputationibus coaluit. *EJUSDEM synopsis institutionum medicina physiologica & pathologica*, Jenæ 1668. 4. * *EJUSD. de anatomes natura & ejus utilitate*, Jenæ 1657. 4. Disp.

J. TH. SCHENK etiam est *commendatio anatomes*, Jen. 1656. 4. & *anatomes localis defensio*, ibid. 1657. 4.

Oeconomia HIPPOCRATICA R. RESTAURAND, ne quis fallatur, est unice conspectus editionis librorum physiologicorum HIPPOCRATIS, quos RAYMUNDUS cum suis commentariis edere constituerat. Prodiit Paris. 1662. 12.

RENATI DESCARTES Liber *de homine* ex editione FLORENTII SCHUYL, Leidæ 1662. 4. Parisiis 1664. 4. gallice, & melius ad codices M. S. CARTESII (in præf.) cum addito Tractatu *de formatione fetus LUDOVICI de la FORGE*, Amstelodami prodiit 1677. 4. & gallice Paris. 1677. 4. In priori opusculo a SCHUYLIO Latine reddito, cum figuris satis nitidis, habetur posthuma fabula, qua modus explicatur, quo possit machina ex necessitate mechanica omnibus actionibus vitæ humanæ defungi. Hic illa celebris pinealis glandula, CARTESII beneficio, cum omnibus in corpore humano nervis connexa, hic ignis cordis, & sanguis ebulliendo in diastole exundans. Hic valvulosi ductus inter musculos communicantes. Altera editio CLERSELERIO debetur, icones LUDOVICI de la FORGE & GUTSCHOVII sunt plures, & magis ad mentem CARTESII, ut fuse ostendunt, magis etiam intricatæ, quam SCHUYLIANÆ. Commentarius LUDOVICI unice ex sectæ sententia est. In altero opusculo insanit certe CARTESIUS, qui ex liquore viscido, per solas leges mechanicas, generari vult corpus humano simile, modumque, quo sibi cuticulas induat, vasa formet & viscera, fuse explicat.

MARTINI KERGER *de fermentatione Liber physico-medicus*, VVittemberg. 1663. 4. Liber equidem physicus est & chemicus, digestionem tamen ventriculi & fere omnes in corpore humano functiones per fermenta explicat.

NICOLAI STENONIS f. pleraque inventa in hæc tempora cadunt. Librum *de glandulis oris, myologia specimen, Libellos de cerebro, de solido intra solidum* citavimus. In *specimine observationum anatomicarum de musculis & glandulis*, Hafniæ 1664. 12. Amstel. 1664. 12. edito, miscellanei argumenti varia, & pulcherrima quæque continentur. Hic vasa omphalomesenterica, descriptio muscutorum cordis, dorsi, vasa lacrumalia, vasa mucosa cutis & narium, & multa alia egregie traduntur, cum Rājæ anatome. In *myologia specimine* canis piscis dissectio eximia exstat. In *Epistolis* etiam ad BARTHOLINIUM, & in *Actis Hafniensibus* multa perpulchra habet. Vir industrius, candidus, innocuus, & magnus, inventor. In Italia ad religionem Romanam illectus, Episcopus Titianopolitanus & Vicarius Pontificius obiit Hanoveræ, ni fallor.

GERARDUS BLASIUS LEONHARDI F. quem per errorem sæpe GERARDUM LEONARDUM vocant, præter editionem VESLINGIANI syntagmatis & defensionem PLEMPHII edidit, Amstelod. 1661. 12. *Medicinam generalem*, nempe totius medicinæ compendium, cum physiologia. In præfatione sibi ductum salivalem paroticum vindicat. An. 1665. Amstelod. 4. *Medicinam universalem* dedit, grandius nempe compendium. Anno sequente *medulla spinalis anatomen*, eodem 1666. *anatomen contractam*, Amstel. 12. breve omnino compendium. Anno 1673. *miscellanea anatomica hominis & brutorum variorum fabricam exhibentia* excudi fecit, quibus canis, testudinis, columbæ, aliorumque animalium propriæ dissectiones, ex humano etiam corpore minime malæ observationes habentur. Anno 1674. Leidæ in 8. edidit *observationes anatomico-præcticas*. Anno 1676. 8. ibid. *Zootomia, sive anatomes variorum animalium Partem I.*, quæ auctior in splendidius opus abiit *anatomen*, nempe *animalium ex veterum, recentiorum, propriisque observationibus*, Amstel. 1681. 4. Magna pars

operis compilata est, ex HARVEJO, SEVERINO, STENONIO, E. N. C. DRELINCOURTIO (quæ optima), MALPIGHIO, ex sex prioribus dissectionibus Gallorum. Sua tamen adjecit non plurima, quæ etiam in *miscellaneis* exstant. Anno 1677. 8. & 1711. 8. prodierunt *Observationes medica rariores; acc. monstri triplicis historia*. Rariora anatomica passim intercurrunt, cum parvis & malis figuris, ex vasorum genere, ductubus, morbis, defectibus, excessibus. Adjecta monstri descriptio ex HEILANDO. Diligens homo & ex brutis quidem magis exercitus, neque tamen in homine rudis. Nunquam Professor Leidensis fuit, ut in *GIORNALE de' LETTERATI* legitur T. VIII. p. 427.

GE. TOB. SCHWENDENDÖRFER *Diff. qua anatomen medicorum jure divino & humano licitam esse ostenditur*, Lips. 1663. 4. Eruditi Jurisconsulti opus.

THEOPHILE GELE'E *anatomie Française*, Rouen 1664. 8. sed vetustiores editiones dantur. Compendium est RIOLANI. Editionem novam an. 1683. 8. habet B. PLATN. cum appendicibus SAUVAGEON de *vasis lacteis* & GABR. BERTRAND de *veritatibus anatomicis & chirurgicis*.

FRANCISCI REDI *osservazioni intorno alle vipere*, Firenz. 1664. 4. Pulcherrimus Libellus, partes etiam genitales animalis aliaque anatomica habet. Contra CHARASSIUM se tuetur in *lettere sopra alcune opposizioni*. IDEM in *Libro degli animali viventi negli animali viventi* copiosissimas habet dissectiones anatomicas, animalium, piscium, de vesica aere, alimento, &c.

Pro FR. REDO, cujus hic libros recensuimus, dixit etiam PLATTIUS *Giorn. de' letter.* T. IX. p. 80. seqq.

PEREONI *anatomical lectures*, Lond. 1664. 12. *

GUILLIELMI RIPA tabulæ anatomicæ. Earum rarissima collectio, nullo Auctore excitato, habetur in B. GOTTINGENSI, cum præfixa icone Auctoris, qui patria Astensis, medicinæ Doctor & Chirurgus fuit, & an. 1676. obiit febre pestilente, quod sub arbore somniculosus in agro Romano consedisset. LANCIS. de *nox. palud. effluv.* L. I. P. I. c. 20. Inter eas icones primæ 32., & ultra, procul dubio ad RIPAM spectant. Hæ varia jocularia continent, inter ea vero etiam anatomica, ad fetus monstrosos, trigeminos, vasa renum, omnino novas icones, multa præterea ad chirurgiam, ad morbos spectantia. Deinde sequuntur tabulæ 27. una compactæ quæ nuper Romæ an. 1741. fol. cum commentario CAJETANI PETRIOLI prodierunt, & quibus inscriptum nomen est BERRETTINI, celebris pictoris Crotoniatæ. Harum aliquæ a VESALIO & CASSERIO sumtæ sunt, ossium, aliarumque partium, multæ vero propriæ, nervorum imprimis, ut alibi excitavi, unde luculenta conjectura est antiquiores esse, & ipsas VESLINGII figuras. PETRI BERRETTINI ætas utramque conjecturam fert, qui 60. annos natus, anno 1669. obierit & potuerit paulo ante mortem RIPÆ, trigesimo vero anno ætatis suæ VESLINGIO inservisse, qui anno 1649. obiit.

ROBERTUM HOOK ob *micrographiam*, ob *lectures physical, medical, geographical*, Londini 1679. 4. ob *posthuma* de lumine & sensorio, huc possis referre; sed in physicis jam recensui.

PHILOSOPHICAS etiam *TRANSACTIONES* huc refer, & imprimis ANTONII de MARCHETTIS PETRI F. observationes in cursu anatomico propositas a RAJO notatas, n. 307. CHESEEDENII varia, n. 337. & RANBY, n. 401. deinde anatomicas dissectiones opposi utriusque sexus, elephantis, linguæ pici, &c.

MARCELLUS MALPIGHIIUS Professor Bononiensis ab anno 1666. Messanensis anno 1665. & denique Archiater Pontificius anno 1691. his temporibus cœpit innotescere. Huic viro gloriæ omnino maximæ fuit, quod eo tempore subtilem anatomen partium corporis humani adgressus sit, quo nemo de ea cogitabat. Utebatur autem maceratione, divulsione, injectione atramenti aut colorati liquoris, lente vitrea, & imprimis comparativa anatome. Dictione usus est impura, & difficilis. Acidam theoriam, nimis extensam glandulosam fabricam & pauca alia vitia temporibus imputare oportet, & grata mente recipere eximia alia viri merita. Cæterum plerosque Libros citavimus, *terradem epistolarum* inter M. MALP. & FRACASSATUM de *lingua & cerebro*, Bonon. 1665. 12. deinde epistolam ad RUFUM, ad SPONTIUM, Librum de *formatione pulli*, Tractatum pulcherrimum de *Bombyce*: *Dissertationes de fabrica viscerum & polypo*, Bonon. 1666. 4. Francof. 1678. 12. Jenæ 1677. 12. &c. Gallice Parisiis 1687. 12. recusas. In *Idea anatomica plan-*

plantarum aliqua ad dentium fabricam habet. Superest ut *posthuma* excitemus, quibus *I. vita* Auctoris continetur cum brevi censura inventorum, quæ partim ab objectionibus defenduntur, partim novis experimentis ornantur & augmentur. Multa ibi pulchra de dentibus, pilis, ossibus, sanguinis circuitu in vena, plantarum generatione. Altera pars eristica est. In ea duæ dissertationes sunt. Prima sub nomine *PLACIDI PAPADOPI* scripta respondet *M. LIPARO* Galenistarum defensori: In altera *MALPIGHII* contra *HIERONYMUM SBARALEAM* se tuetur, quem collegam & inimicum expertus erat, ut sæpe fit. Hos autem viros & *MINUM MONTALBANUM*, *TRIUMPHETTIUM*, *BONANNUM* aliosque æmulos & adversarios habuit, & multas in juventute sua repulsas passus est. Cartas etiam omnes incendium delevit. *Epist. ad RED. T. V. p. 122.* Obiit an. 1694. Cæterum editiones *posthumorum MALPIGHII* sunt, Londinensis 1697. fol. valde vitiosa, Veneta 1698. & 1743. fol. quæ eadem est, aucta præfatione & animadversionibus *GAVI-NELLI* non maximi momenti. Opera reliqua prodierunt Londini 1686. fol. pariter valde inordinata, etsi nitida. In Belgio Opera omnia recusa sunt in 4. Leidæ 1687. & *posthuma* an. 1698. paulum correctæ, additis. *FRACASSATI* epistolis.

• Scripsit autem contra *MALPIGHIIUM J. HIERONYMUS SBARAGLI De recentiorum medicorum studio Diss. epistolarem ARISTIDIS* Gottingæ (nempe Bononiæ, cui similis utcunque est significatio) 1689. (*posthum. p. 187.*), Parmæ 1690. * Deinde *LIBANII secunda epistolaris Dissertatio de recentiorum medicorum studio*, Bononiæ 1693. prodiit, & *appendix ad ad physico-anatomicas dissertationes epistolicas* in collectione 1701. Porro *scepsin de ortu viviparorum*, sive *dubia contra viviparorum generationem* edidit *SBARAGLI*, Viennæ 1696. 8. Bononiæ 1701. 8. deinde *de vivipara generatione alteram scepsin*, Bononiæ 1693. 8. quæ omnia cum titulo *Exercitationum physico-anatomicarum* Auctore *J. HIER. SBARAGLI*, Bononiæ 1701. 8. recusa sunt. In prima *Dissertatione epistolica SBARALEA*, tamquam *STAHLI* præcursor, negat curiosam illam anatomen ad praxin utilem esse. Verbosa certe & parum utilis ea demonstratio est, Altera *LIBANII* epistola etiam amarior videtur. De scepsibus alibi diximus.

Denique iustum volumen, cui titulus *oculorum & mentis vigilia*, Bonon. 1704. 4. scripsit *HIERONYMUS* scepticus, plenus ratiunculis & cavillis, neque, ut credo, nisi laudis collegæ refutator. *Dissertatio una critologica* est, inprimis contra *MALPIGHIANAS* glandulas scripta. Altera *apologetica*, inanis, qua *Microscopium* cavillatus imponere, cava convexa repræsentare, &c. Paucas & rudiusculas proprias observationes adducit.

Contra *MALPIGHIIUM* etiam est Liber *de moralibus criticis regulis monita*, ad quorum normam exiguntur, tum *controversia inter MALPIGHIIUM & SBARALEAM*, tum *Epistola quadam ab adseclis ipsius nuper evulgata*, Colon. 1706. 4. (contra *FLORIANUM* nempe) ubi nihil nimium in *SBARAGLI* refutationibus fuisse, acerbæ vero *MALPIGHIIUM* & amicos adversarium suum provocasse defenditur. Inde *D. STEPHANI DANIELLI epistola responsiva ad DOMINICUM GOTTI*, Bonon. 1710. 4. Secuta est, qua *vita SBARAGLI*, testimonia doctorum virorum, & apologia contra *HORATHIUM de FLORIANIS* continetur. Denique *risposta a TEOFILO ALETINO*, Bologna 1711. 4. *SBARAGLI* opus est.

Contra pro *MALPIGHIO* & contra oculorum & mentis vigiliis reposuit integrum Librum *HORATIUS de FLORIANIS* (nempe Auctor ignotus *GIORN. de' LETTER. IV. p. 272.*), cui titulus est *epistola, qua plus quam 150. errores in Libro inscripto oculorum & mentis vigilia ostenduntur*, &c. Romæ 1705. 4. Loco præfationis est epistola *LUCÆ TERRANOVAE*, qui ait se furripuisse *HORATHI* epistolas, easque supplet. Deinde sequuntur epistolæ ipsæ *HORATHI*, quæ acerbum & immitem *SBARAGLI* animum demonstrant. Habentur etiam aliquæ ibi observationes ad nervos, papillas linguæ, fibras rectas cordis, de mamma ossea, &c.

Pro *MALPIGHIO* etiam in *GAL. di MINERVA T. VI. p. 283.* contra idem *SBARAGLI* opus *dialogus* exstat, quem *VALISNERIO* aliqui tribuunt, deinde *epistola* aliquæ. Contra *dissertationem SBARAGLI*, *JOHANNES BOHNIIUS* dixit in *prælectione therapeutica*, Lipsiæ 1691. recusa cura ipsius *SBARALEÆ* in collectione, quam dixi. Contra *disputationem de moralibus criticæ regulis*, *disputatio critico moralis* reposita est 1707. 4. inedita, sed laudes merita auctorum *diarii*, quo modo dixi. Deinde secuta est alia *THEOPHILI ALETHINI* epistola quæ ex doctrina Libri *de mor. crit. reg. demonstrat*, *SBARALEAM* fuisse adgres-

adgressorem fol. 1709. quæ epistola videtur *GUIELMELMINI* fuisse, in cujus etiam operibus recusa est.

J. JACOBI WEPFER dubia anatomica, Norimb. 5664. 8. * & apud *J. HENRICUM PAULI* in *Anatomes Bilfiana anatome*, Argentorati 1665. Egregia varia continet. Non omnem chylum per ductum thoracicum transire sagaciter suspicatur. De tussi a gula in arteriam asperam patente egregia observatio. Hepatis substantiam glandulosam primus proponit. Id in responso non vult admittere *HENRICUS*. De *apoplexia historia* dixi Liber de *cicuta aquatica*, Basil. 1679. & 1716. 4. Leidæ 1733. 8. editus ex præcipuis anatomicis operibus est, ad negotium imprimis respirationis, digestionis ciborum, & cordis motum. Varia ad comparatam anatomen castoris, ciconiæ, aliæti, in E. N. C. dispersa habet *WEPFERUS*. In Libro de *morbis capitis posthumo* Scaphusiæ nuper & Tiguri edito, de memoriæ & judicii vitiis multa memoratu digna occurrunt. Neque enim unice anatomicus, verum sagax præterea causarum indagator fuit, & sapienter ex phænomenis veritatem eruit.

J. JACOBI WEPFER etiam est disputatio sub *M. SEBIZIO* ex *GALENI* L. I. de *elementis*, Argent. 1641. 4.

J. DAN. MAJOR historia anatomes Kilonensis prima, Kiel. 1666. fol. Magnus promissor fuit futurorum operum. Vir eruditus, qui vero se in nummos, in varios naturæ thesauros, & alia nimis diffudit. *EJUSD.* Disp. de *anatome quovis litterato digna, medico cum primis necessaria*, Kiel. 1665. quam non vidi. *EJUSDEM* *memoriale anatomicum*, Kiel. 1669. 4. Experimenta infusoria habet, anatomen melis. Reliqua botanica & physica, *Programma de anatome cygni* 1666. 4. unice præfamen est. *EJUSD.* *collegium medico-curiosum*, Kiel. 1670. 4. varia habet, mire varia, aliqua tamen ad finem nostrum spectantia. *EJUSDEM* *Scholion anatomicum*, Kiel. 1675. 4. * *EJUSD.* de *nova anatome concipienda breve consilium*, Kilon. 1677. 4. * *EJUSD.* de *arumnis gigantum*, Kiel. 1689. 4. quæ systema physiologicum est.

J. D. MAIOR edidit etiam *auream catenam hominis*, Kilon. 1685. 4.

ACADEMIA PARISINA ANTIQUA optime de anatome meruit. *PERRALTUS* primo egregius delineator (*JOURN. DES SAV.* 1689. ubi ejus vita exstat), & physiologicarum contemplationum Auctor: tum *JOSEPHUS DUVERNEY*, qui dexteritate anatomica famam sibi comparavit, adjutor *PERRALTI*, inde *PHILIPPUS* de la *HIRE* & ipse peritissimus artis pictoriæ, & denique *JOHANNES MERY*, regio jussu plurima animalia exotica dissecuerunt, ut ad fines physiologicos partium fabricam applicarent, ipsamque eorum animalium historiam firmiorem redderent. Primo prodiit *Observation sur un Lion disséqué dans la Bibliothèque du Roi*, Parls. 1667. 4. & *sur un grand poisson disséqué dans la Bibliothèque du Roi*, ibid. eodem anno. Deinde *description anatomique de l'ours, du Castor, de la Gazelle, du Chaméléon*, Paris. 1669. 4. Maj. Inde *Mémoires pour servir à l'histoire des animaux*, Paris. an. 1676. fol. magnificentissime excusa, quæ in nupera editione operum antiquæ anatomes tertii tomii P. III. repetita & pulcherrima anatome elephantis aucta sunt. Confer *consilia physica* p. 105. Aliud volumen promittitur piscium, a la *HIRIO* sectorum, quod nondum prodiit, & observationum posthumarum *JOSEPHI DUVERNEY*. In hac nupera editione (Paris. 1733., &c.) Cameli figura emendata est. Multa hic nova reperi, membranam nictitantem avium, glandulas intestinales, ante *PEYERUM*; pulmonem (& respirationem) avium, & testudinis, glandulas urethræ virili & vulvæ femininæ adfidentes, & alia. In Tomo X. des *anciens Mémoires* etiam plurima anatomica *JOSEPHI DUVERNEY*, *JOHANNIS MERY*, *PECQUETI* etiam & *GAYANI* continentur, vel propria Academia, vel ex diariis repetita.

HONORATUS FABRI de plantis & de generatione hominis Libri II. Paris. 1666. 4. Norimb. 1677. 4. Physiologiam tradit audax & argutus. De oculo imprimis fusior est. Huic *REGNAULT* origine ancienne de la physique nouvelle, p. 134. circulationem sanguinis inventam tribuit, quod de ea an. 1638, disputasset; sed *LAUREMBERGIUS* etiam an. 1636. fuse de circulatione egit, uterque nuperior *HARVEIO*, cujus scriptum an. 1628. prodiit *JOH. ZEISOLD anthropologia physica ex fontibus Aristotelicis*, Jen. 1666. 4. * Philosophi de schola opus.

LAURENTII BELLINI de gustus organo, de renibus, opuscula anatomica, diximus. De
urinis

urinis & pulsibus, Bonon. 1683. 4. * prodiit. alii ajunt Pisauri eod. anno, impressum esse, quam editionem nondum vidi. Et de *respiratione* omnia suis locis retulimus. *EJUS gratiarum actio ad Hetruriae Principem*, Pisis 1670. 12. * aliqua anatomica continere dicitur. Opuscula, quæ Pistorii 1595. 4. * Leidæ 1696. prodierunt, varii sunt argumenti, jam seorsim excitata, ad cor, arterias, circulationem, retia vasorum, glandulas, frictionem, vim contractilem, vim stimuli, laryngem, ovum incubatum, &c. Opera ejus omnia etiam Venet. an. 1708. & 1732. junctim excusa sunt. Anno 1697. *Anatomen Etruscam cum novis inventis* edidisse lego apud LANZONUM in *Galer. di Minerva* II. p. 58. A morte prodierunt *EJUS discorsi d' anatomia*, Florent. P. I. 1742. P. II. III. 1746. 8. Hi sermones in confesso Academiae della *Crusca* circa annum 1696. dicti sunt, fluidi, eloquentes, dithyrambici. Magnam partem physiologiae tetigit. Moniti sunt, multumque monendi lectores, ne huic viro, alioquin ut suo tempore novas vias tentanti, non nimis prompti fidem adhibeant, neque nisi ponderatas ab eo opiniones recipiant.

J. ALB. SEBIZ problemata quadam anatomica, Argent. 1665. 4. de variis corporis humani partibus, 1671. 4. & alia disputationes.

SAGGI dell' Accademia del Cimento, Firenz. 1667. fol. 1691. fol. habent experimenta ad forum, ad digestionem ciborum, ad aerem & vacuum.

COLLEGII PRIVATI AMSTELODAMENSIS observationes anatomica selectiores, Amstelod. 1667. 12. Magni facio paucarum paginarum Libellum. Societas erat DD. SLADI, BLASII, VEEN, F. RUYSCHII, QUINÆ, BODDENS, CORDES, SWAMMERDAMMII, & GODTKE. Multa hic ex vivorum anatome ad motum cordis & medullæ spinalis pertinentia, multa de glandulis, ductibus salivalibus, &c., aut prima, aut unica. Altero tomo illibenter careo, qui secutus est, Amstelod. 1673. 12.

JOH. RUD. SALZMAN observata anatomica edidit THEODORUS WYNANDTS, Amstel. 1669. 12. Sero prodierunt, cum collectæ sint inter annum 1610. & 1617. Inter ea varia non inutilia reperi, ut cartilagine valvularum arteriæ aortæ.

KENELM DIGBY of bodies and of man's soul with discourses on the power of sympathy, Lond. 1669. 4. Miraculorum, & sympathiarum seminator.

His temporibus scripsit BERNARDUS SWALWE cujus de pancreate, & de ventriculi quælibet Libellos recensuimus, quos solebat laudare BOERHAAVIUS. Ejus *alkali & acidum*, Amstel. 1670. 12. editum non legi.

LAURENTII STRAUSS conatus anatomicus aliquot disputationibus exhibitus, Gieslæ 1666. 4. & *EJUSD. μικροσκοπικα metrica*, Giesl. 1679. 8. brevia compendia sunt. *EJUS exercitationes medicas ad G. HORSTII compendium institutionum medicarum accommodatas*, Gieslæ 1670. 4. editas non vidi.

JOHANNIS BOHN Exercitationes physiologica 23. Lips. 1668. 4. primum rudimentum fuerunt *Circuli anatomico-physiologici de æconomia corporis humani*, qui inde an. 1680. 4. * & an. 1686. 1697. 4. & 1710. 4. Lipsiæ recusus est. Vir eruditus omnino, cautus, & in seipsum pronior, in brutis animalibus secandis multum exercitus, MALPIGHII sectator, veri tamen amans. Solet omnes sui ævi hypotheses producere, easque convellere rationibus, plerumque anatomicis. *Progymnasmatum* sunt, ut vocat, omnino 30. Adjectæ sunt ultimæ editioni disputationes aliquæ practicæ & chirurgicæ. In *Exerc. de aeris in sublunaria influxu*, Lips. 1678. 8. 1696. 8. experimenta aliqua anatomica reperiuntur.

GOTHOFREDI VOIGT curiositates physica, Gustrov. 1668. 8. magna ex parte huc pertinent, ut de congressu & partu viperarum, chamæleontis vita, cantione cygnea.

CORNELIUS vander VOORDE lichtende fakkel der Chirurgie pro primo tomo *Anatomen* habet, per quæstiones & responsa dispositam, lucem in usum tironum Chirurgiæ. Prodiit Amstelodami 1668. 4.

CAROLUS DRELINCOURT collega & æmulus F. F. SYLVII, ut hic in chemicos pronior, ita ille in græcas latinasque litteras, anatomicus tamen latis & nitidus & accuratus. Multa ejus scripta jam retuli. *EJUS Oratio in mortem J. van HORNE*, Leidæ 1670. 12. laudes viri ampullato sermone & contortuplicato tradit, quo fere ubique DRELINCOURTIUS usus est.

CAR. DRELINCOURTII praludium anatomicum prodiit etiam Amstel. 1672. 12.

Praludium anatomicum ibid. prodiit 1670. 12. 1680. 12. oratio est, qua anatomicum mu-

munus sibi demandatum capeffivit. Hoc inter opuscula eminet, & multa semina veri; & nova varia tradit, ad cerebrum, sinus laryngis, vias lacrumarum, glandulas ceruminis. *Libitina trophæa*, Leidæ 1680. 12. Catalogus est hominum, qui ad definitum numerum eodem die perierunt. *Appendix ad libitina trophæa* est acerba invectiva in Sylvianam sectam, uti vicissim contra eam orationem anonymus acres *Aletophili extemporaneus observationes* edidit. *Experimenta anatomica* ib. 1681. 12. 1684. 12. edita sunt per ERNESTUM GOTTFRIED HEYSE. Hoc omnium inter Drelincourtiana optimum opusculum esse persuadeor. Continet *Canicidia*, in quibus ad cordis motum, & chyli, & diaphragmatis, omnino eximia experimenta continentur. Editor simpliciter & caste PRÆCEPTORIS labores expressit. Ad Disputationem de *Lienosis* filii sui epimetra varia ad analyses liquorum quorundam humani corporis, ad circulationem sanguinis HIPPOCRATI notas adjecit. Alibi dixi *Opuscula medica omnia*, Hagæ an. 1727. 4. recusa esse, procurante BOERHAAVIO.

Egregias animalium sectiones aliquas apud BLASIUM reperiri etiam scripsi, quæ DRELINCOURTII sunt.

NICOLAI HOBOKEN pleraque dixi. *EJUS cognitio physiologico-medica cum oratione de medicorum utilitate prodiit*, Ultraj. 1670. 4. 1685. 4. *

NICOLAI HOBOKEN citati hic libri editio anni 1685. titulum præ se fert *Medicina physiologica*. Meræ fere sunt definitiones & divisiones.

JOHANNIS SWAMMERDAM etiam pleraque recensui, juvenis laboriosissimi, qui an. 1662. Parisiis, hinc cum STENONIO vixerat, an. 1667. Leidam venit, pro gradu disputavit, satis timide, ut narrabat BOERHAAVIUS, ibi cum JOHANNE van HORNE injectionibus & experimentis anatomicis se dedit, *prodromum* ejus edidit, Leidæ 1668. 16. a morte HORNI insectorum historiae se fere unice tradidit, & exhaustus marcore phthifico atque nimis tenero religionis sensu, ante diem periit. *Biblia natura*, quæ in *physicis* p. 110. laudavimus, plena sunt subtilissimis dissectionibus ranarum, apum aliorumque animalculorum.

JAC. PANCRATII BRUNONIS *Dogmata Medicina generalia ad recentiorum privilegia accommodata*, Norimbergæ prodierunt 1670. 8. PLATN. * Eorum compendium *Propylei medici*, sive *epitomes medicina dogmatica elementa comprehendentis* nomine prodiit in 8. Altdorf. 1696.

CHRISTIANI FRIDERICI GARMANN de *miraculis mortuorum*, Chemniz 1670. 4. Lipsiæ 1709. 4. Spissum & grande opus, quo varia & inexpectata quæque continentur, & integra fere anatome, sed unice per loca communia undique collecta & brevissime citata. Unde indicis loco esse posset. In *epistolarum centuria* quam edidit E. HENRICUS C. F. filius, aliqua ad chirurgiam infusoriam & ad ova muliebria pertinent.

THEODORI KERKRING *spicilegium observationum anatomicarum*, Amstelod. 1701. 4. prodiit, quæ nitida editio est. Sunt centum observationes varii generis, sed pleræque ad anatomen, ad excarnationes, ut vocabant viscerum & ductuum sceleta, monstra, varietates, intestina pertinent, &c. *Opeta omnia anatomica*, Leidæ 1717. 4. recusa continet hoc opus cum osteogenia & anthropogenia. Præparationes, quas vocant, anatomicae adhuc venales exstant Hamburgi, & eorum catalogus prodiit, sub nomine D. VERBORCHTEN. Lego cæterum, KERKRINHIUM fide mutata Hamburgi vixisse, cum titulo Legati M. D. Hetruriæ, suspicionem incurrisse occisæ propriæ uxoris, ut ejus sorore frueretur. In anatomicis etiam aliqua mihi suspecta habet, cor triventre, venarum spermaticarum defectum, observationes etiam aliquas nimias, ut illam contra polypum.

J. FERDINANDO HERTODT *Opus mirificum sexta diei, sive homo physice, anatomice & moraliter in partes dissectus*, Jen. 1676. 8. *

J. BAPT. du HAMEL de *corporum affectionibus tum manifestis tum occultis*, Libri II. Paris. 1670. 12. continet Tractatum de sensibus & de viribus medicamentorum. *EJUSD.* quatuor Libros de *mente humana* diximus. *EJUSD.* Liber de *corpore animato*, 1683. 12. est physiologica consideratio sensuum internorum, externorum, & motus muscularis, ex WILLISIO aliisque recentioribus sumpta. De historia *Acad. Regia* diximus in *physicis* p. 66.

EPHEMERIDES NATURÆ CURIOSORUM in eodem Libro laudavimus p. 65. 66. plenas observationibus ex animalium & morbosorum corporum sectionibus. Aliquas exprimiis excitabo.

- WEPFER anat. castoris *Dec. I. ann. I.*
 MAJOR anatome phocæ *ann. III.*
 REISEL statua humana circulatoria *ann. IX. X.*
 J. M. HOFMANN monstrum vitulinum *ibid.*
 STEPH. LORENZINI obss. ex brutorum anatome *ibid.*
 PETER anatome rupicaprae *Dec. II. ann. I.*
 SCHELHAMMERI anatome talpæ cui oculos negat *ibid.*
 PETER anatome ciconiæ *ann. II.*
 HARDER anatome muris alpini *ann. IV.*
 MURALTII anatome taxi, capitis vitulini, ardæ *ann. V.*
 SCHELHAMMERI anatome ciconiæ, *ann. VI.*
 PETER de glandulis intestinorum, &c. *ibid.*
 P. J. HARTMANN triginta sectiones morbosæ.
 J. J. WEPFER de ventriculo, *ann. VIII.*
 P. J. HARTMANN sectiones variæ, *ann. IX.*
 PAULI MINI objectiones contra anatomen subtilem & MALPIGHIIUM. *ibid.*
 J. C. STURMII responsiones *ibid.*
 J. MURALTII anat. lutræ, *ann. X.*
 P. J. HARTMANN observationes *ibid.* & *Dec. III. ann. II. III. IV. V. & VI. IX. X.*
 J. C. STURM contra MINUM *Dec. II. ann. X.*
 HARDER de glandulis duodeni *Dec. III. ann. I.*
 P. J. HARTMANN anatome xiphie, *ann. II.*
 NEBEL de glandula HARDRI, *ann. III.*
 ZAMBECCARI brutorum sectiones, *ann. IV.*
 SCHELHAMMERI anatome leporis, *ann. V. & VI.*
 BRUNNERII aliqua *ibid.*
 Et J. C. STURM denuo *ibid.*
 G. C. SCHELHAMMER anatome phocæ, *ann. VII. VIII. & piscium nonnullorum Cent. I. II.*
 LUDOVICI TESTI de saccharo lactis *Centur. III. IV.*
 HEISTERI de tonsillis, tactus humani *Cent. V. VI.*
 HENNINGER de ductu thoracico *ibid.*
 DILLENII anatome hirudinis *Cent. VII. VIII.*
 KULMI Anatome phocæ *vol. I., &c.*
 FRID. HOFMAN patris *cardianastrophe*, Lips. 1671. 4. continet historiam hominis, cui viscera in latus oppositum transiverant, ut dextra essent, quæ sinistra fuisse oportebat.
 REGNERUM de GRAAF laudavimus. EJUS in anatomicis præceptor (GRAAF p. 517.)
 ISBRANDUS van DIEMERBROECK *anatomes corporis humani* Libros X. edidit, Ultrajecti 1672. 4. vel 1671. 4. * neutram enim editionem vidi, tum Leidæ 1683. 4. qui in operibus omnibus, Ultraject. 1685. fol. recusati sunt, & Genevæ 1679. 4. 1685. 4. 1687. 4. Patav. 1688. 4. Gallice, Lugd. 1695. 4. Icones omnes ex variis collegit, musculorum, ossium, vasorum historiam ex VESALIO, viscerum ex recentioribus. Ipse passim observationes aliquas adjecit, tum ex anatome, tum ex morbofis corporibus, & de litibus physiologicis fuse egit.
 J. FERDIN. HERTODT opus mirificum VI. diei, i. e. homo physice, anatomice & moraliter consideratus, Jen. 1671. Exiguam spem nomen auctoris facit.
 A. GUILLIELMI ten RHYNE meditationes in HIPPOCRATE de veteri medicina Textum 14. hic debent recenseri editæ Leid. 1672. 12. quibus plurima physiologica continentur, debile circuitus sanguinis causa, & alia.
 BENJAMIN a BROECKUYSEN œconomia corporis animalis, Noviomag. 1672. 8. Amstel. 1683. 4. & œconomia animalis ad circulationem sanguinis breviter delineata absque nomine Auctoris edita, Goudæ 1685. 8. (JOURN. DES SAV.) Physiologia Cartesiana semipoetica. Admittit ignem cordis, sanguinem rarefciendo erumpentem, &c. EJUSD. rationes philosophico-medica, Hag. Com. 1687. 4. sunt editio tertia œconomia aucta & mutata.
 MOYSE CHARAS Nouvelles expériences sur la vipère. Vide Phys. Anatome viperæ, quæ egregia est, recusa exstat cum veteris Academia descriptionibus animalium.

MOYSE CHARAS Germanice prodiit Francof. 1679. 8.

ECCARDUS LEICHTNER paradoxus ille osor HARVEI edidit Erfurti an. 1674. 8. *Archæum synopticum*, sive XII. tabb. de legibus Reip. medica, fundamentaliter prima quaque artis principia constituentibus. Cum AMMANNI paranefin hoc Libello tetigisset LEICHTNERUS, AMMANNUS acutum Libellum edidit, *Archæum* nempe *synoptico* ECCARDI contra *Paranefin ad disc. oppositum*, recusum Lipsi. an. 1674. & 1677. 12. * cum *Paranefi* sua. Eo Libello antiquos refutat, ipsumque Hippocratem, novorum amator. Respondit ECCARDUS *Epistola apologetica de principiis medicis pro archæo synoptico contra Pseudarchæum synopticum*, Erfurt. 1675. 12. verbosa certe & inanis, idemque contra SYLVIIUM *Epicrisin medicam analyticam super XI. disputationes medicas* F. de le BOE edidit, Erfurt. 1676. 12. Verum hæc controversiæ parum e re medica fuerunt.

JACOB. BARNER chemici *Prodromus Sennerti novi*, in quo quidquid ad hunc usque diem de arte prodit, ex principiis anatomico-chirurgicis examinatur, Aug. Vind. 1674. 4. *

JUSTI SCHRADER observationum anatomico-medicarum *Decades* IV. quæ prodierunt cum WILHELMI LANGLEY & G. HARVEI *obss. de generatione animalium*, Amstelod. 1674. 12. bonæ sunt, & observationes RUYSCHII, JOHANNIS van HORNE & SWAMMERDAMMII continent, utique utiles, de papillis linguæ, utero imprægnato, herniæ natura, &c.

JOH. MAYOW opera omnia anatomico-physica, Oxon. 1674. 8. Hagæ 1681. 8. Magnam partem physiologiæ tractat V. his Tractatibus, quos suo loco citavi, de fermento ventriculi, quod admittit, usu lienis ad volatiles reddendos sales fixos, &c. & hypothefibus equidem paulum indulget, erecti tamen vir ingenii, & cui seculum pro excusatione est.

PETRI ANTONII MOLINETTI dissertationes anatomico-pathologicae, Venet. 1675. 4. Librum de sensibus jam recensum auxit MOLINETTUS & sub hoc titulo edidit, ut esset integra anatome corporis humani physiologica, cum subjunctis partium morbofis adfectibus. Non absque fructu legi, inprimis ob mistas observationes chirurgicas.

GEORGII ENT Opera medico physica huc repono, quod eo anno ejus *maniffa anatomica* prodierit 1677. fol. Duo inprimis Tractatus sunt, unus pro circulatione, alter contra MALACHIAM THRUSTON, uterque ingeniosus, sed paulo pronior in hypothefin biolychnii, &c.

FRANCISCI WILLUGHBY Ornithologia Libri III. Londini an. 1676. in fol. a RAIIO editi, multum habent anatomes, deinde de generatione & incubatione avium observationes.

In historia piscium iterum a RAIIO edita, & generis natatilis in universum, & multorum piscium singulatim anatome exstat. Oxon. 1686. fol.

JOHANNEM RAI & ob priores Libros editos, & ob *synopsin quadrupedum & serpentum*, Lond. 1693. 8. plenam dissectionibus animalium, denique ob leporis, aviumque & piscium nonnullorum in *Transactionibus philosophicis* editas dissectiones, a seipso factas, cursumque anatomicum jam laudatum, hic recenseri æquum est. Inprimis huc pertinent EJUS *Wisdom of GOD manifested in the works of the creation*, Lond. 1691. 8. & octava vice 1722. 8. edita. Physiologia majorem partem operis occupat, ex qua, certe omnium evidentissima methodo, DEI creatoris sapientiam deducit.

PAULI AMMANN Lipsiensis Professoris *Paranefis ad discentes circa emendationem Institutionum occupata*, Lipsi. 1677. 8. sceptico & critico Libello invehitur in hypothefes maxime Galenicæ, observationes tamen proprias majoris momenti vix addit. EJUSD. *Irenicum Numa Pompilii cum HIPPOCRATE*, quo veterum medicorum & philosophorum hypothefes in corpore juris civili & canonico transsumta a præconcepis opinionibus vindicantur, Lipsi. 1689. 8. * Contra HIPPOCRATIS physiologiam scriptum est, quantum ex recensione video.

GALATHEAU de l'empire de l'homme sur les animaux, Parisi. 1677. 12. ALANO LAMI oppositus Libellus.

STEPHANI LORENZINI anatome torpedinis, Florentiæ 1678. 4. * & Anglice prodiit, Londini 1705. 4. cum titulo *curious and accurate observations on the crampfish*, recusa etiam in E. N. C.

J. P. GIESWEIN *systema universa medicina*, Francof. 1676. 8.

ALANI LAMI *discours anatomiques* 1676. 12. * 1679. 12. mea autem editio an. 1685. prodiit. Juvenis & ingeniosi sed parum anatomici sermones physiologici sunt, ad præparationes Chirurgorum pronuntiati. Impius homo utilitates partium nobis notas esse negavit,

vit, aliquas partes inutiles esse, corpus humanum non optime structum, imo vero ex spontaneo casu, inter tot vices necessario aliquando eam fabricam ex particulis evalescere qualis est in homine & alia hunc in sensum docuit. Multa ipsi his de rebus cum D. CRESSE' concertatio fuit.

C. BARTHOLINI THOMÆ fil. Libellos de ductu salivali, ovario, olfactu, alibi dixi. In Libro de diaphragmate, Paris. 1676. 8. edito, cum Auctor esset annorum 22. observo multa de chylo, sanguinis itineribus, nervis, injectione, adjecta esse. EJUSD. *methodus demonstrationum anatomicarum* minime inutilis T. V. Aët. Hafn. n. 32. & cum LYSERI posterioribus editionibus recusa est. EJUS *Exercitationes miscellaneæ* Leidæ excusæ sunt 1675. 8. Pauca habet ad anatomen inter multa variæ eruditionis. De significatione anatomica fundi, & de corde tamen aliqua profert. EJUS *specimen historia anatomica*, Hafniæ 1701. 4. Amstelod. 1702. 8. continet primo compendium anatomico-physiologicum, deinde analecta observationum, nempe viæ sanguinis in circulum euntis, diaphragmatis, organi olfactus, ductus salivalis repetitas descriptiones. Ejus *Exercitationes anatomica de partium structura & usu* nescio quam multæ prodierunt, inceperunt edi Hafniæ 1692. Provectiori ætate in aulam vocatus, equestri dignitate auctus, & a studiis suis abstractus, non valde dudum obiit, callidus uti alienis laboribus.

C. BARTHOLINI *Exercitationum anatomicarum de partium structura & usu* ibi dictarum, prima est de anatomes subjecto & usu.

OLIGERI JACOBÆI *Tractatus de ranis*, Paris. 1676. 8. Anatome hic nondum valde accurata est. Adjecit autem C. BARTHOLINUS epistolam de motu musculorum, ubi observationes de nervis non malæ & objectiones contra systema WILLISII exstant, maxime quod sublato corde & cerebro ranarum muscoli pergant moveri, & emortua membra facile ad motum revocentur. Deinde an. 1686. 8. Hafniæ idem Libellus plenius prodit, absque BARTHOLINI epistola. Ibi ranæ, lacertæ, salamandræ, testudinis anatome habentur. Cor non diligenter examinavit, icones non bonas dedit. Utilia tamen intercurrunt.

LEONHARDI FRANCISCI DINGHENS *fundamentorum physico-medicorum* VI. Libri Lovan. 1677. fol. Physiologiam etiam habet, in qua lac a ductu thoracico ait descendere ad mammas, &c.

JOHANNIS von MURALT *vademecum anatomicum, sive clavis Medicina*, Tiguri 1677. 12. imprimis utile est ob copiosas animalium dissectiones. Experimentum HOOKII habet, arteriam bronchiale sibi tribuit, & venam sociam describit. Varia ex vivorum animalium sectionibus addit. EJUSD. *Exercitationes medicas observationibus & experimentis anatomicis mistas*, Amstelod. 1688. 12. non vidi neque novi an a priori opere satis differant. EJUSD. *Collegium anatomicum* prodit Norimb. 1687. 8. Condidit Tiguri theatrum anatomicum, & anatomen ibi introduxit, & sociis suis ex Libris & ex animalibus, nonnunquam etiam ex hominibus anatomen prælegit. Cæterum ad hanc anatomen miro instituto & obstetricias observationes subjecit, & plantas medicinales. In parergis physiologica concertatio est cum PEYERO; per glandulas enim chylum resorberi volebat MURALTUS. In E. N. C. multas animalium sectiones edidit.

CIACOPO MORO *anatome ridotta all'uso de' pittori e scultori*, Vinegia 1679. fol. * PLATN.

J. FAC. HARDER *Examen anatomicum cochleæ domiporæ terrestris*, Basil. 1679. 8. & una editus *prodromus physiologicus*. Analyses dedit succorum corporis humani fere compilatitias, fermentationes admisit, & epigenesin in formatione fetus, quatuor humores in sanguine defendit. EJUSDEM epistolæ de partibus genitalibus cochlearum prodierunt, Aug. Vind. 1684. 8. Penem & testem depingit, & contra animam vegetabilem REDI pugnat. EJUSDEM *Diff. de præcipuorum viscerum structura*, Basil. 1685. 4. EJUSDEM *Apiarium observationibus medicis & experimentis refertum scholiis & iconibus illustratum cum responsione ad investivam* J. B. de LAMZWEERDE, Basil. 1687. 4. & cum novo titulo *thesauri observationum medicarum variorum*, ibid. 1736. 4. Bonus Liber, ad centum capita plurimas observationes HARDERI aut amicorum habet; multum utilis anatomes comparatæ & anatomes practicæ. EJUSDEM & J. C. PEYERI sive Pæonis & Pitagoræ *Exercitationes anatomica & medica familiares*, Basil. prodierunt an. 1682. 8. PEYERI epistolæ itinerariæ pleræque Parisiis, Monspeli, Besnæ datæ, ad historiam medicam utiles sunt. Aliqua passim ex anatome comparata, aliqua etiam ex anatome practica intercedunt. Valde superat PEYERUS.

JOH. CONRAD Peyer Scaphusinus, eximius vir. *Parergorum anatomicorum* I. II. & III. recensui, IV. est historia virginis cæcæ, V. sectio Ascitici, VI. alia sectio uteri ascitici, VII. experimentum cordis resuscitati per inflatum ductum thoracicum. Dissectiones variae, etiam animalium, in E. N. C. exstant.

JOH. CONR. Peyer *Parerga anatomica* prodierunt Scaphusiae primum, deinde conjuncta, Genev. 1681. 8. Amstelod. 1682. 8.

GIACOPO MORO *Anatomia ridotta ad uso de' pittori, e scultori*, Vinegia 1679. fol. sunt tabulae musculorum *VESALIANÆ*, & ossium, remotis umbris sola peripheria exarata.

JACQUES CHAILLOU *recherches sur l'origine du mouvement du sang, du cœur, & de ses vaisseaux, du lait, des fièvres intermittentes & des humeurs*, Paris. 1679. 1699. 12. *PECQUETIANA & HARVEIANA* inventa, tanquam nova docet.

De ST. HILAIRE *Anatomie du corps humain*, Paris. 1679. 8. 1684. 8. 1698. 8. 2. vol. 1723. 8. 2. vol. Nullius momenti.

GEORG. FRANK polyhistoris, & collectoris *institutionum medicarum synopsis*, Heidelberg. 1672. 12. nimis fere brevis *varia collectio obss. de hymene*, &c. Heidelberg. 1673. (Sat. I.) *de hominibus absque hepate, liene, renibus*, &c. 1675. *de principiis anatomicis*, Heidelberg. 1679. 4. *bona nova anatomica*, Heidelberg. 1680. 4. *parva Bibliotheca zootomica*, ibid. 1680. 4. *de autopsia & iconibus anatomicis*, Heidelberg. 1683. 4. * *de studio anatomes*, ibid. eod. anno. Pleraque in annum collectæ volumen prodierunt, Lipsiæ 1722. 8.

JOHANNES ALPHONSUS BORELLUS celeberrimus physiologicus & anatomicus. *EJUS* princeps opus est posthumum illud *de motu animalium* in cujus Parte II., Romæ 1681. magna pars physiologiæ tractatur, motus cordis, pulmonis, (de cujus visceris actione cum MALPIGHIO disputat), hepatis, renum, cerebri, nutritio. Etsi multa bona, posthuma tamen sunt. Præterea *EJUS* passim aliqua alia de vi oculorum inæquali, &c. excitavi.

JOH. ALPH. PORELLUS multa Pisces animalia secabat, etiam pisces, teste FRACASSATO de cerebro pag. 357.

FRANCISCI BAYLE *Problemata physica & medica*, Tolosæ 1677. 8. 1681. 12. sunt 119. dissertatiunculæ ad quæstiones physiologicas. *Dissertationes medicae* editæ Tolosæ an. 1681. 12. & alias, quatuor omnino sunt, *de catameniiis* quæ an. 1670. primum prodiit; *de consensu variarum corporis partium cum utero*; *de utilitate lactis*, ubi aliqua de alendo fetu, de lacte uterino, & de venæ sectione in Pleuritide. *Dissertationes physicae ubi principia proprietatum in œconomia corporis animalis, in plantis & animalibus demonstrantur*, prodierunt Tolosæ 1677. 1681. 12. Earum tertia agit *de physiognomia*, de generatione, nutritione fetus, quam mechanice explicat ex succo, quem spiritus animales fingunt, de vi imaginationis maternæ, a spiritibus similibus. In quarta de visione aliqua habet. In T. I. *Institutionum physicarum* continetur Tractatus de sensibus & motu musculorum; in altero de anima brutorum. *EJUS* etiam Libro *de corpore animali* vera nempe & justæ molis physiologia, ætathomathematico more proposita. In T. IV. operum omnium inter *dissertationes physicomorales* V. nunc primum editas, duæ de generatione animalium, una de voluptate & dolore est.

G. WOLFGANG WEDEL, adfinis nostri & avunculi, *Physiologia medica*, Jen. 1680. 4. 1704. 4. & *Physiologia reformata* ibid. & 1688. 4. prodiit. Mirum videri posset ILL. Virum duas physiologias scripsisse, & priorem recudi curasse, cum exstaret posterior; nempe diversa opera sunt. In ista chemica autem principia & archæum sequitur: In priori magis anatomica & medica & historica docet. *EJUSDEM* de physiologicis infinitæ disputationes sunt.

THEOPHILI BONNET *Medicina septentrionalis collatitia* T. I. Genev. 1679. fol. T. II. 1686. fol. scopus fere idem est qui SHENKII, practica nempe, rariora, monstrosa, etiam anatomica colligere. Sed *Academia Anglicæ, Germanicæ, Hafniensis*, aliarumque commentariis inprimis usus est.

NICOLAI BLEGNY *Zodiacus medico Gallicus* annis quinque comprehensus, in physicis laudatus est. Multa hic anatomica, DUVERNEY de generatione, de cute; des NOUES de vesiculis mulierum; PAULE, CUCHOD & alii de monstris: aliqua etiam theoretica ex physiologicis interponuntur.

In NIC. BLEGNY *Zodiaco Med. Gall.* recensito continetur etiam SEIGNETTE anatomie balanæ.

EDMUNDI TYSON *anatomy of the porpessè dissected at the Gresham college*, Lond. 1680. 4. IDEM

IDEM in *Phil. Transf.* multas dedit animalium historias, lumbrici, viperæ caudisonæ, opossi, porci moscati. Vide in *Physicis* p. 106. seq. *EJUSD.* *orang outang or the anatomy of the pigmy* ibidem laudatus est, eximius Liber, cujus in anatome comparata vix similis exstat, cum viscera, vasa & musculos exquisite descripserit, in istis a *COWPERO* adjutus, & maximam certe laudem meretur, si consideraveris Librum ex unico cadavere natum esse. Philosophica etiam opportunitate usus, multa sagaciter collegit, & suspicatus est.

EDMUNDI TISON primo loco citatus liber bonus omnino est. Merito commendat dissectiones animalium. Splanchnologiam piscis cetaceorum minimi tradit, cum osteologiae parte, machina aquam expellente &c. Peculiare est stratum fibrarum ab ovario & tuba ortarum ad uterum euns.

PETRI GUENELLON de genuina medicinam instituendi ratione Epist. ad *MUNNIKIUM*, Amstelod. 1680. 16. Commendat anatomen & zootomiam.

MARTINI SCHOCH de capite humano, Franc. ad Viadr. 1680. Disp. *EJUS* certe ut videtur de fermento & fermentatione: de signatura fetus aliosque Libros jam recensuimus.

MARTINI SCHOCH citatus Liber de capite humano male inscriptus verius est *ISAACI SCHOKII* disquisitiones historico-politico-medicae de capite humano, Franc. ad Viadr. 1680. 4. *

L. VELTHUSII Opera omnia, Roterodami 1680. 2. vol. Ex *CARTESII* schola.

JEAN PASCAL nouvelle découverte & les effets des ferments dans les corps humain, Paris. 1681. 12. magnus acidi defensor.

ANDREÆ CLEYER specimen medicinae Sinica, Francof. 1681. 4. Præter pulsus mirificam observationem, & plus quam *HIPPOCRATICAM* angiologiam, omnium viscerum etiam icones ex Chinesium Libris habet. Eas manifestum est, ex animalibus sumtas esse, argumento hepatis multifidi, lienis prælongi, &c.

G. C. SCHELHAMMERI Introductio in physiologiam, Jen. 1681. 4. *EJUSDEM* de auditu Liber jam dictus & de pulsu. *EJUSDEM* programma valedictorium Jenense 1695. 4. breve sed multis observationibus anatomicis dives. *EJUSDEM* analecta, Kilon. 1704. 4. Sed non omnia possideo. Disputationes anatomico-physiologicae sunt, plenæ objectionibus contra obvium quemque, erat enim Aristotelicus, eruditus, & acutus homo, paulo tamen morosior, & cui nemo placeret: ipse vero facile in opiniones parum probabiles transibat. *EJUSDEM* adnotationes ad *H. CONRING* introductionem in artem medicam, ad historiam anatomes etiam pertinet. *EJUSDEM* anatome Xipha ad *Hortonum*, Hamburg. 1707. 4. & aliæ hujusmodi, jam citatæ, dissectiones. *EJUSDEM* posthumum opus, quod *VVismariæ* an. 1717 cum titulo prodiit *Artis medicae universa* vol. I. cum obiisset an. 1716. Hæc physiologia plena est judicii contra contemporaneos, satis fortibus, cum neque Iatromathematicis, neque *Sylvianæ*, neque *STAHLIANÆ* sectæ æquus sit, & ab omnibus dissentiat. His litibus ita inmoratur, ut totus Liber potius censura physiologorum sit, quam physiologia. Ignem in corde defendit, omnium, ut puto, ultimus, & vagitum uterinum.

NEHEMIAM GREW laudavimus tum in anatome comparativa intestinorum, tum in *Catalogo Musei*, ubi passim aliqua anatomica exstant ad sceletos, ossa, animalium fabricam, testes, fetus præparatos, &c. p. 118. *EJUSDEM* *Cosmologia sacra*, Londini 1701. fol. in primo Libro usus partium in nonnullis animalibus declarat.

L. TOZZI medicina pars prior theoretica, Lugduni 1681. 8. est physiologia *.

L. TOZZI l. cit. recusatus est Venet. 1711. 4. Diximus jam, physiologiam esse, sed undique collectam, ut nihil proprii habeat, nunc addimus.

RAYMUNDI RESTAURAND Magnus *HIPPOCRATES* Cous redivivus. Primus tomus, Lugd. 1681. 12. physiologiam tradit. * Sed a circulationis negatore quid expectes?

A. M. (ALLEN MOULIN) anatomical description of an elephant burnd at Dublin, together with a relation of new anatomical observations in the eyes of animals, Lond. 1682. 4. Non vidi, sed elephantis anatomen excerptam legi in *RAII* synopsis quadrupedum.

A. MOULIN utilis liber natus ex unius fere noctis laboribus. Multa observavit, cranium cellulosum, renes occultos, hepar absque vesicula &c.

MATTHIÆ NALDI rei medicae prodromi de principis physiologiae problematibus, Rom. 1682. fol. *

In *ANDREÆ CLEYER* specimen medicinae Sinica, Francof. 1682. 4. continetur utique appendix, qua splanchnologia Chinesis traditur cum iconibus, quæ manifesto ad bruta animalia factæ sunt, vasa vero ad hypothesin depicta.

ANTONII NOVARINI *Anatome curiosa* Rotemburgi ad Tuberim 1682. fol. Germanice : Ultimi ordinis.

Anatomy of human body epitomized by a member of the college of physicians, Lond. 1682. nondum vidi, sed videtur esse GIBSONI prima editio.

J. C. BRUNNER omnia diximus.

In ACTIS ERUDITORUM LIPSIENSIBUS sparsim aliqua BOHNII, & nuper WALTHERII alibi excitata, & BIDLOI & aliorum intercurrunt.

CL. PERRALTI etiam singulatim laudes diximus, ejus autem opera medici argumenti & anatomici sunt. Calumniam esse puto, quando LAMY in praefatione Libri de anima sensitiva DUVERNEO crimini datur, quod sibi ipsi hæc *essays de physique* tribuerit, quæ PERRALTI sunt.

FRANC. STOCKHAMER *microcosmographia*, Viennæ 1682. 12., cum titulo *Cosmopolita corporis humani anatomica delineatio*, Leidæ recusa est an. 1686. 12. In JOUR. DES SAV. 1683. n. 7. censura acris in hunc Libellum reperitur.

J. BAPT. de LAMZWEERDE *Oeconomia animalis ad circulationem sanguinis breviter delineata*, P. I. II. EJUSDEM de generatione hominis ex legibus mechanicis, Goudæ 1682. 8. * EJUSDEM examen eucharisticum durioris Harderiana apologia super fraternas admonitiones in c. 24. Tractatus de molis uteri contentis 1689. 4. *

AME' BOURDON *nouvelle description du corps humain*, Paris. 1683. 12. Compendium anatomicum, in quo aliqua utilia & explicatio tabularum, quas dicemus. EJUSDEM tabulæ anatomicae octo prægrandes passim sublestæ fidei sunt, aliquid habent histrionici, & pleræque clanculum compilatæ sunt, aliqua tamen propria. Prodierunt & tunc procul dubio, & Parisiis atque Cameraci an. 1707. fol.

STEPHANI BLANCARD *Cartesiaansche Academie*, Amstel. 1683. 8. & 1691. 8. * germanice versa & recusa, Lips. 1690. 8. cum titulo *Cartesianische Academie oder grundlehre der Arzneykunst*, physiologiam continet. Deinde EJUS hervormde ontleedkunst, Amstelod. 1686. 8. five *anatome reformata*, Amstel. 1688. 8. auctius recusa 1695. 8. cum tabulis 84. germanice etiam, Lipsiæ edita 1691. 4. Exscriptorem esse constat. Vide MALPIGHIIUM in *posthum.* p. 321. 322. GRÆTZ *epist.* VIII. ad RUYSCHIIUM. Omnia v. gr. quæ ad osteogeniam pertinent, ea ex KERKRINGIO sunt, non citato. EJUSDEM *anatomia practica*, Amstelod. 1688. 12. ex cadaverum morbosorum dissectionibus sumpta utilior est, germanice recusa, Hanover. 1692. 8. In suis collectionibus annuis, cum titulo *jaarregister*, Amstelodami ab 1680. ad 1682. editis, habet septem centurias observationum, quarum multæ hujus loci sunt, ex RUYSCHII, & chirurgorum Belgicorum observationibus desumptæ. In *Operibus medicis*, Leidæ 1701. 4. editis habentur *Institutiones medicina*, quibus tota physiologia repetitur.

STEPHANI BLANCARD primo loco citatus libellus Germanice recusatus exstat etiam, Lips. 1693. 8.

FRANCISCI ZYPÆI *Fundamenta medicina physico-anatomica*, Bruxell. 1683. 8. & 1693. 8. quæ tertia editio penes me est. Multum tribuit SYLVIO & CARTESIO, non tamen servili obsequio. De suo vix quidquam habet.

THOMÆ GIBSON *Anatomy of human body epitomized* secunda edit, Londin. 1684. 8. quæ mea est, 1703. 8. 1716. 8. READII Liber pro fundamento est. Addidit GIBSONUS aliqua ex TYSONI observationibus, tum ex GRAAFIO, WILLISIO, aliisque, ex quibus etiam figuras desumpsit.

PHILIP. JAC. HARTMANN Professor Regiomontanus, vir & in veterum lectione, & in dissecando exercitus, edidit an. 1683. *anatomen phoca*, five *vituli marini*, Regiom. 4. deinde eruditas disputationes I. II. III. & IV. eodem anno ibid. omnes de originibus *anatomies*: tum de peritia anatomica veterum in genere Diss. I. 1684. Diss. II. 1687. de peritia veterum *anatomicorum in specie*, Diss. I. 1689. II. & III. 1693. Præter loca ARISTOTELIS & veterum sagaciter conquistata, habet etiam non contemnendas observationes proprias, maxime ex zootome, ad intestina, &c.

ANTONII de HEYDE *anatomia mytuli & centuria observationum medicarum*, Amstel. 1684. 8. EJUSQUE *experimenta circa sanguinis missionem, fibras morrices, urticam marinam*. Accedunt priora omnia ibid. 1686. 8. In priori Libello bonam comparatam mytulanatomen, obser-

observationes utiles de sanguinis circulatione mutata per vasorum vulnera, de callo, & alia ad rem nostram reperio. In altero refutatio theoriæ Bellinianæ, de venæ sectionis effectibus, multa de circulatione sanguinis in ranis, de fibris muscularibus, anatome etiam animalis gelatinosi, valde simplicis fabricæ, &c.

In l'école de chirurgie par G. C. L. C. D. de la Faculté de Montpellier continetur compendium chirurgiæ pro tironibus, Lyon 1684. 12.

JOH. DOLÆI *Encyclopædia medicina theoretica & practica*, Francof. 1684. 4. Notissimus Archæorum nomenclator.

GODOFREDI BIDLOO Professoris Leidenfis *anatome corporis humani*, Amstel. 1685. fol. Tabulæ CV. nitidissime delineatæ a LAIRESSE, sculptæ a van GUNST, ut omnino etiam propter artificium magni fiant, a BIDLOO editæ sunt. Nervorum, vasorum, fabricæ subtilioris icones pleræque fictitiæ aut vitiosæ. Contra meliores in musculis, valde vividæ, etsi cura dissectoris non valde minuta appareat. Ossa pulchra, nimis levia, & fetus. Aliqua ad situs viscerum utilia. Explicatio valde brevis. Certo BIDLOI sunt, neque hic laudem meritus est COWPERUS, qui hunc qualemcunque honorem BIDLOO eripere voluit. Varia vero alia anatomica scripsit, quæ operum omnium anatomicorum & chirurgicorum editorum & ineditorum titulo conjunctim edita sunt, Leidæ 1715. 4. Huc ergo oratio de antiquitate anatomes, Leid. 1694. 4. *Vindicia adversus RUYSCHIIUM*, Leidæ 1697. 4. Etsi RUYSCHIUS peritia anatomica longissime BIDLOUM excelluerit, & iste poetici ingenii magis, præterea luxuriosi fuerit, non tamen potest dissimulari, acerbius cum BIDLOO egisse RUYSCHIIUM, qui discipulos suos ad epistolas ad se ipsum scribendas excitaverit, quæ unice essent de BIDLOI minus exquisitis descriptionibus partium corporis: ut adeo captaret occasionem refutandi adversarium. Utrunque non temperatum est a conviciis. Porro G. COWPERUM citatum ante tribunal edidit BIDLOUS 1700. 4. ubi justissimam causam defendit, cum nulla arte COWPERUS excusari posset, qui tabularum BIDLOIANARUM trecentas impressiones emerit a bibliopola, nomen BIDLOI deleverit, suum reposuerit. EJUS de nervis dissert. I. & II. in decadibus *Exercitationum anatomico-chirurgicarum*, jam Leidæ 1708. 4. excusæ sunt. EJUS de animalculis hepatis ovilli epistola prodiit 1697. 4. De Tractatu de oculis dictum est. Obiit denique BIDLOUS an. 1713.

RAIMUNDI VIEUSSENS scripta tractavimus, quorum optima neurographia est. In ultimis operibus nimis in theorias animum inclinavit.

RAIMUNDI VIEUSSENS etiam est *réponse aux trois lettres de M. CHIRAC*, Monspel. 1698. 12. Se plagiarium non esse, neque a SYLVESTRIO in nervis adjutum esse, in quibus anno 1671. jam laboraverit, neque sanguinis analysin a D. FABRE habere contra CHIRACUM adserit.

JAMES COOKE *mellificium: vvitb an anatomical treatise and institutions of physick*, Lond. 1685. 4.*

J. JACCOBI WALDSCHMID *fundamenta medicina*, Leidæ 1685. 8. *Institutiones medicina rationalis*, Marburg. 1688. 12. in collectione operum omnium, Franc. 1707. 8. recusæ. EJUSDEM & DOLÆI epistola in quibus in inventa anatomica, physica, chymica, &c. inquiritur, Francof. 1689. 4. aliqua habent nostri argumenti, BRUNNERI inprimis & aliorum amicorum observationes. Inter disputationes etiam multæ huc pertinent.

SAMUEL COLLINS *systema anatomicum*, Lond. 1685. fol. 2. vol. Anatomem comparatam amavit, ut ipse de se fatetur p. 355. hinc magna pars operis in zootome versatur, cujus præcipuus certe Auctor est, & avium pisciumque inprimis copiosissimas figuras dedit, ad PERRALTIANUM fere morem. Ex homine icones pauciores sunt. Anatomem practicam interponit, & physiologiam, anatomem, atque pathologiam conjungit.

WOLFERDI SENGUERD *philosophia naturalis*, Leidæ 1685. 4. brevem etiam physiologiam continet ad CARTESII saporem. EJUSDEM *inquisitionem experimentalem*, Leidæ 1690. 4. auctius recusam, Leidæ 1699. 4. superius citavimus, quæ fere unice ad respirationem pertinet.

Oeconomia animalis breviter delineata, tum generatio hominis ex legibus mechanicis, Goudæ 1685. 8. Nihil valde boni continet, & CARTESIUM sequitur.

FRANCISCI MERCURII ab HELMONT J. BAPTISTÆ fil. *microcosme or man*, Londin. 1685. 4. phantasticum & mirificum physiologiæ compendium est.

MICHAELIS ETTMULLER *fundamenta medicina vera*, Lips. 1685. eundem forte Librum constituunt,

stituunt, qui in collectione operum omnium titulum gerit *institutionum medicina*, & breve compendium physiologiæ semichemicæ continet. Disputationes duas alibi laudavimus, quas nescio an *ETTMULLERO* oporteat tribuere, an potius *respondentibus*. Repetuntur tamen in operibus omnibus, Francof. 1688. fol. & cura *CYRILLI* Neapoli recufis 1734. 5. vol. fol.

J. MAUR. HOFMANN *dissertationes anatomico-physiologicae ad HORNII microcosmum*, Altdorf. 1685. 4. sunt duodecim dissertationes physiologicæ junctim recusæ. Aliqua ibi ex præceptoribus suis de *MARCHETTIS* & *MOLINETTO*. *EJUSDEM* *idea machina humana anatomico-physiologica ad observationes recentiores conformata*, Altdorf. 1703. 4. Diversæ a prioribus, viginti disputationes, unice recusæ, quibus compendium corporis humani cum osteologia, neurologia, & physiologicis utilitatibus continetur. Adjecta programmata nonnulla. *EUSTACHIUM RUDIVM* de dentibus citat p. 299. cum velit *BARTHOLOMÆUM*. *EJUSDEM* *disquisitio corporis humani anatomico-pathologica*, Altdorf. 1731. 4. Iterum viginti disputationes sunt, quibus ad singulas partes humani corporis primo brevissima nomenclatura, deinde morbi continentur, hi fusi, undique collecti. Subjecta *programmata anatomica*. *EJUSDEM* *sciagraphia institutionum medicarum a J. H. SCHULZE* an. 1742. 8. edita est *.

J. M. HOFMANNI *sciagraphia* hic dicta, breve totius artis compendium est.

ANDREW SNAPE *anatomy of the horse*, Lond. 1686. fol. Veterinarius regius ex familia natus, quæ dudum ei muneri præfuerat. Anatome mihi videtur humana esse, detorta ad aliquam equi similitudinem, & de musculis consentit Auctor p. 150. Cerebri etiam, diaphragmatis, auris ejusque musculorum icones omnino hominem exprimere videntur, nec in vasis aut nervis ferri quid subesse credo. Osteologia equina est.

CAROLI PATINI *idea capitis humani*, Patav. 1686. 8. *

Essays d'anatomie, Leidæ par M. * 1686. 12. 1695. 12. Anglice Londini 1696. 12. sub titulo *Essays of anatomy*, & Italice vertente *BACCHINIO*, Parmæ 1687. & Venet. 1713. 12. titulo *Saggi d'anatomia*. Auctor est *D. BEDDEVOLE* medicus Genevensis, amicus *NUCKII*, Libellus autem compendium habet hypothesium, per quas functiones corporis humani explicare suscipit. Eas repetit ab alcali, acido, figuris particularum. Aliquæ observationes intercedunt de uvula & vasis glandularum sublingualium. Dictio grata & nitida.

SEBASTIAN CHRISTIANA ZEIDLEREN *somatologia anthropologica*, Pragæ 1686. alibi lego 1687. 4. Vienn. 1692. fol. Non propriæ industriæ partus, & veteres inprimis sequitur. *EJUSDEM* *institutiones medicina*, Vienn. 1691. 4. *VESLINGII* discipulum se vocat in præf.

BERNARDINO GENGA *Anatomia chirurgica, sive istoria dell'ossa e muscoli del corpo umano con la descrizione de'vasi*, Romæ 1687. 8. & prius 1675. 8. * Medico-chirurgus Romanus, firmi & singularis ingenii, qui ausus sit *HIPPOCRATEM* carpere ob infelices ægrorum curationes, ne in tirone quidem tolerabiles. Subjecit tractatum pro circulatione sanguinis, quæ eo tempore in Italia nondum vulgo recepta erat. *EJUSDEM* *anatomia per uso ed intelligenza del disegno*, Romæ apud Rossi 1691. fol. ampl. prodiit. *D. BERNARDINUS* cadavera præparavit, explicationes adjecit *J. M. LANCISIUS*. Ossa sunt & musculi, & isti in varios situs gladiatorios dispositi, cum nonnullis melioris notæ antiquis statuis.

CORNELII STALPAERT van der *WIEL* *observationes rariores anatomico-chirurgico-medice*, Leidæ 1687. 8. 1727. 8. 2. vol. Auctor medicus, chirurgus, obstetricator, & peritus anatomicus, fuit artis replendi & conservandi probe gnarus, non solum ipse 150. observationes adnotavit, sed etiam aliorum utilium scriptorum parallelas historias in scholiis contulit, adjecta *Disp. de monocerote*.

HENR. SCHÆVIS *anatomischer abriss des ganzen menschlichen körpers, samt den darauf und darin sich befindenden krankheiten, vermehrt und verbessert durch AVICENNA*, Basil. 1682. 8. * *B. PL. IDEM* vero *EMANUEL KOENIG*, qui inter naturæ curiosos Avicenna dictus est, edidit, Basileæ 1682. 4. *regnum animale* recufum 1698. 4. *IDEM* varia collectanea continet, cum quodam amore miraculi. In eo etiam *SIMONIS LESCOT*, qui primus artem injiciendi exercuit, (teste *DEVAUX* in indice funereo p. 574.) myologia, & *PETRI CHIRAC* nervorum historia continetur.

HENR. GERN. HELFELD *philosophicum hominis, sive de corporis humani machina*, Amstelod. 1685. 8. Ex secta *CARTESII*.

GIOVANNI CALDESI *osservazioni intorno alle Tartarughe*, Firenz. 1687. 4. * Bonam anatomem continet, sed nihil vidi nisi censuram in *Parmensi Diario*.

GIORGIO CALDESI citatus liber eximius est & quantivis pretii. Non enim solum trium generum testudines dissecuit, accuratius fere quam quisquam alius, sed de bilis vasis aliisque rebus physiologicis utiles interposuit digressiones.

CASP. PORTA medicina brevis exhibens hominis machinam cum morborum curatione, Leidæ 1688. 8. Exigui momenti.

CORNELII BONTEKOE Ontwerp van t'oud gestel der medicynen Liber I. in quo vulgaria ante *CARTESII* placita refellit. Deinde *opbouw der medicynen* pariter P. I. in qua anatomie & physiologia traditur. *EJUSDEM dierige huys-houding*, sive *œconomia animalis*, quæ etiam seorsim, Leidæ 1688. 8. Bremæ 1692. 8. & alias prodiit, compendium nempe physiologicum. *Discours op het leven, ziekte en den dood*. Notum est fuisse ex *CARTESII* schola, ut tamen sedem animæ in pineali glandula non admitteret, omnesque morbos fere unice ex viscido deduceret. Placuit magnatibus, & obiit archiater Brandenburgicus. Opera omnia, Amstel. 1689. 4. edita sunt.

In *CORN. BONTEKOE* ibidem recensiti *ontwerp* P. I. huc pertinet, qua naturam, calidum innatum, quatuor humores, facultates, cambium, rorem, gluten, spiritus diversarum classium dari negatur, & P. II. in qua anatomen superfluum esse, nominaque inprimis Græca & futuras, muscutorum nomina frustra esse ostendit. In *EJUS opbouw der medicynen* P. I. quem librum etiam diximus, nihil fere boni aut proprii adest. *EJUSD. Kort denkbeeld van de œconomia animalis op een nieuwe van de physiologie* brevissimum est compendium. *Ef. fundamenta medica seu de alcali & acidi effectibus*, Amstelod. 1688. non legi.

Satis similis *CORNELIO* fuit *DANIEL DUNCAN*, cujus *chymie naturelle* 2. & 3. partie, Paris. 1687. 12. secuta est, & praxin continet, & ejus versionem Latinam, Amstel. 1707. editam, sive *chymie naturalis specimen*, quo plane patet, nullum in chymicis officinis processum fieri, cui similis aut analogus in natura non sit, jam citavimus. Huc autem pertinet *histoire de l'animal ou connoissance du corps animé par la mécanique & la chymie*, Paris. 1687. 12. * nempe physiologia.

In *DAN. DUNCAN* citato *chymie specimen* actiones corporis humani ad classes chemicas referuntur.

JOSEPH LANZONI animadversiones varia ad medicinam anatomicam & chirurgicam facientes, Ferrar. 1688. 8. & cum operibus omnibus recusa, Lausannæ 1738. 4. Sunt 150. animadversiones, quarum decem aut duodecim huc pertinent, de ductu thoracico, a quo vasa ad mammas euntia vidisse se credidit, ad arteriam bronchiale, generationem, menses, &c. *EJUS de pericardio, saliva & dentibus dissertationes* exstant recusæ in I. volumine *oper. omn.* Eruditus cæterum vir, sed non ex professo dissector.

Varia de physiologia apud L. de *CAPOA*, chemicæ tamen sectæ addictum hominem; reperias.

MELCHIORIS FRIDERICI GEUDER de fermentis specificis & de ortu animalium, Amstel. 1689. 8. Fermentum pancreatis, ventriculi, intestinorum cordis refutat.

JUSTI VESTI compendium institutionum medicinae, Erfurt. 1688. * Lips. 1731. *

FRIDERICI SCHRADER additamenta ad JOH. VESLINGII syntagma anatomicum, Helmstad. 1689. 4. aliquot disputationes sed breviores sunt.

DANIEL TAUVRY nouvelle anatomie raisonnée, Paris. 1690. 12. 1698. 12. 1721. 8. ed. IV. Latine etiam versa & *anatomes rationalis* titulo a M. F. GEUDERO, Ulmæ edita est 1694. 8. Ingenii omnino non mediocris Auctor, sed ante diem fatis abreptus. In anatomie plerumque alienis observationibus utitur, & figuras mediocres habet: in theoria autem proprias hypotheses sequitur, qualis illa est de motu musculari.

DAN. TAUVRY libri citati editio IV. nihil aucta est, etsi promittatur, nisi quod accesserint 2. tabulæ *EUSTACHII*.

PIERRE DIONIS tours d'anatomie, Paris. 1690. 8. 1695. 8. 1705. 1716. quæ V. est editio, 1729. cum notis D. *DEVAUX*, Genevæ 1696. 8. Anglice 1703. pro Chinesium etiam Imperatore tartarice versa (*hist. del' Acad. des Sciences* 1726.) Secuit in horto regio a 1672. ad 1680. sub D. *CRESSE*, scripsit tamen, quasi ipse demonstrasset, & a capite ad calcem corpus humanum explicavit. Aliqua habet Parisinorum inventa, tum de generatione & corde, aliasque observationes chirurgicas & medicas, satis utiles.

PIERRE DIONIS recusus etiam exstat Paris. 1694. 8.

THEODORI CRAANEN Archiatri Brand. Liber *de homine*, Amstelodami 1689. 4. Neap. 1722. 8. 2. vol. Fusa physiologia Cartesiana, icones anatomicæ ad hypothesein pictæ, observationum parum. *EJUS æconomia animalis*, quam compendium esse crediderim, recusa est, Amstelodami 1703. 12. (p. 306.) Contra **CRAANENIUM** scripsit **DAVID GRÆBNER** *medicinam veterem restitutam*, sive *paragraphen Hippocratico-Galenicam in T. CRAANEN* Tractatum *de homine*, Lipsi. 1695. 4. * & additamentum in **T. CRAANEN**, Lipsi. 1714. 4. Sed excusat **CRAANENIUM TARGIRUS**, & culpam in imperitum editorem **THEODORUM SCHÖON** rejicit.

HENDRYK OVERCAMP *nieuuwe beginzelen tot de genees en heelkonst*. Cartesianam physiologiam continent, & prodierunt Amstel. 1694. 4. nam primam editionem ignoro, deinde germanice recusa Lipsiæ cum titulo *æconomia animalis*, oder *bericht von der geburt und wachsthum des menschen*, Lipsiæ 1690. 8. vertente **D. SCHREYERO**.

JACOBI SINIBALDI *Apollo bifrons*, Romæ 1690. 4. * Dissertationum collectio, Latina & Italica. Agitur ibi de usu respirationis, adipe, sudore, an parentum imaginatio ad generationem concurrat: quomodo fetus respiret: an aer in sanguinem subeat: an possit animal vivere absque aere: an urina secernatur per organorum configurationem: an somnus calefaciat an refrigeret? &c. (**CAT. ENDTER**.)

A. Q. RIVINI *physiologica theses*, Lipsi. 1690. 12. **B. LEHM**. In disputationibus, Lipsi. 1710. 4. editis, multæ etiam physiologici argumenti sunt, quarum plusculas citavimus.

OLAUS BORRICHIIUS in omni elegantiori literarum genere versatus est. *EJUS* epistolæ ad **BARTHOLINUM** multa ad historiam **BILSII** aliorumque anatomicorum continent. Inter *dissertationes posthumas* una de sanguine, alia de alcali & acido, alia de animalibus hyeme sopitis est, alia de dulcedine. In **A. HAFNIENSIBUS** glandulas ventriculi & vesiculæ felleæ fabricam descripsit. Attributa ei sunt scripta aliqua **BLOTTE SANDÆI** nomine in **DEUSINGIUM** edita, valde acria.

JOH. NICOLAI PECHLIN *observationes medica*, Hamburg. 1691. 4. Elegantissimus Liber multa ad physiologiam continet, ad adfectus animi, mensium & generationis rariora phænomena, arterias hepaticas & cysticas, generationem ossium, transpirationem & sudorem, aliaque.

PHILIPPI BONANNI *observatio circa viventia, quæ in rebus non viventibus reperiuntur, & micrographia*, Romæ 1691. 4. In priori Libro, uti dictum, generationem æquivocam defendit: in altero opere ad sales urinæ, pilos, aliquas observationes adfert.

P. S. REGIS *cours de philosophie*, Amstel. 1691. 4. in Libro VII. continet totam physiologiam, cum iconibus ex **VIEUSSENIO** aliisque. Multum usus est **BATLEO**,

FRIDERICUS RUISCH ex pharmacopolio prodiit, si fides **ULHOORNIO**, sed plures forte, quam ullus alius mortalium, ad anatomen perficiendam opportunitates nactus est. Nam in populosissima urbe Poliater, anatomices chirurgorum doctor, per totos 60. & ultra annos fuit, hinc corpora humana plurima, & rarissimos quosque casus, nemini faciles, sæpius vidit, ab anno 1665. quo primum Librum scripsit ad 1731. Deinde integerima mente, etiam digitis & oculis valentibus pene ad mortem usque usus est. Idem ardore in anatomen summo fuit, & singulari patientia atque industria non solum injectiones & repletiones corporum, sed inprimis etiam munditiem, ornamenta, & cultum artificiose administravit, unde mire in se conciliavit oculos, cum in cadaveribus decimo a morte anno anatomen demonstraret Thes. VI. *proxim.* summo cum applausu principum etiam virorum, **PETRI** maxime I. qui priores X. thesauros magno ære redemptos Petropolin asportavit. Injectionem a **SWAMMERDAMIO**, amico suo, acceptam, ita excoluit, ut nova ars videretur, novaque inde corporis humani theoria nasceretur. Aliis etiam artibus in macerando, resolvendo, indurando, inflando, ita usus est, ut multa nemini visa primus declaraverit. Scripsit simpliciter & sine fuco, cum mysterio tamen, & corollaria inventorum plerumque aliis deducenda dimisit, maxime **BOERHAAVIO**. Amabat autem partes ex corpore resecare, & in thesauros vel siccas vel frumenti spiritu repletas conservare, unde vix quidquam in situ suo aut conjunctione cum vicinis partibus repræsentavit. Candidus fuit suorum errorum revelator, ut thymicæ venæ pro vasculo excretorio habitæ *epist.* ad **SCHELH.** p. 355. Primus, quem edidit Liber, fuit ille *de valvulis vasorum lymphaticorum*, quem primo in flore ætatis & ingenii, & ex contentione in **BILSIUM** accuratior edidit,

7. PHILIPPUS VERHEYEN anno 1710. , Bruxellis duobus voluminibus in 4. editus, ubi omnia inventa recentiorum compilata habemus, familiari sermone expofita (a).

M m m m 2

Ab-

edidit, & qui reliquis etiam RUYSCHII operibus mihi videtur præferendus. Laudes ejus jam diximus. Subjectæ sunt observationes rariores variæ in quibus arteria bronchialis. Successit an. 1691. 4. liber, cui titulus *observationum anatomico chirurgicarum centuria, accedit catalogus rariorum in museo Ruyschiano*. In priori libro præter morbos raros, exstant etiam anatomica varia, glandis penis anatome, menses ex utero fluentes, &c. In posteriori cellulosa intestinorum depicta datur, ligamenta tria coli renovata, appendices epiploicæ, deinde multa ad osteogeniam. Successit an. 1694. 4. responsio ad vindicias BIDLOI, acrior quam erat necesse, cum alioquin RUYSCHII in publicis BIDLOI demonstrationibus, ipso præfente, demonstrationes Leidenfes refutaret. Inde an. 1696. cœpit Epistolas edere, quarum priores novem editæ sunt an. 1696. decima an. 1697. 11^{ma}. an. 1698. 12^{ma}. an. 1699. 13^a. an. 1700. 14^a. an. 1701. 15^a. an. 1704. 16^a. an. 1713. In iis omnibus solebat RUYSCHIIUS discipulos suos de aliquo BIDLOI errore commonefacere. Utiliter tamen in cerebri, oculi, intestinorum, penis descriptione versatus & multo nunc, quam in prioribus, subtilius. RAVIUM cum voluerit privilegio disseccandi exuere, certe neque bonam causam habuit, neque eam bene egit. Secuti sunt thesauri, quos RUYSCHIIUS publice certo pretio demonstrabat. Primus an. 1701. secundus & tertius an. 1703. quartus an. 1704. quintus 1705. sextus ni fallor an. 1706. septimus an. 1707. octavus 1709. nonus 1714. decimus 1715. prodiit, undecimus, qui numerum compleret. Præter catalogum rariorum, in quo sæpe causas requiras & uberiores descriptionem, ejus quod est præcipuum, hic multa chirurgica exstant, viscerum etiam vasculosa fabrica adseritur. *Thesaurus animalium* an. 1710. editus nullum habuit sodalem, rariores animalia continet. Anno 1724. successit thesaurus XI. sive *maximus*, sive *cura posteriores*, in quo vasa illa a cava vena ad intestina, cutemque sollicitè descripsit. Inde *adversaria* successerunt I. an. 1717. II. an. 1720. III. an. 1723. in quibus multa physiologica & practica & chirurgica egregii usus continentur. De *fabrica glandularum* epistola ad BOERHAAVIUM an. 1722. 4. secuta est. Tunc epistola de *musculo uteri novo* ab amico nostro J. C. BOHLIO Latine versa ex Belgico an. 1726. Propter hunc musculum P. HECQUET & A. VATERUS epistolas gratulatorias scripserunt, & respondit breviter RUYSCHIIUS an. 1727. Inde BOHLII veteris nostri sodalis, an. 1727. sequitur *epistola problematica*, ad quam eodem anno RUYSCHII responsio prodiit, cum iconne partis corticis cerebri. *Cura renovata*, sive *thesaurus anatomicus novus* an. 1728. editus est, & inprimis anatomen vegetabilium continet. Aliquæ RUYSCHII epistolæ exstant apud SCHELHAMMERUM in *epistolis* p. 99. in quibus de VIEUSSENIO conqueritur. Ad opera RUYSCHII laboriosum catalogum scripsit D. YSBRAND GYSBERT ARLEBOUT Amstelodami excusum an. 1725. Denique *vitam* ejus & in Actis Academiæ Parisinæ 1733. & inprimis opera amici nostri J. FRIDERICI SCHREIBER an. 1732. 4. Amstelodami editam possidemus, in qua inventa inprimis veræque laudes viri enarrantur.

FRANC. MERCURII de HELMONT *paradoxical discourses about the microcosm*, Londin. 1685. 8. * EJUSDEM de *homine*, Amstelodami 1692. 12. Paradoxæ omnino & mirificæ hypotheses.

PETRI BURGER *candidatus chirurgia oder erörterung . . . anatomischer fragen*, Hanov. 1692. 8.

CHRISTIAN LUDOV. WELSCH. *compendiosa status naturalis hominis historia*, Basil. 1692. 4. *

J. HELFRIC. JUNKEN *fundamenta medicina moderna eclectica*, Norimb. 1693. 8. *

(a) PHILIPPI VERHEYEN *anatome corporis humani* Liber I. Lovanii 1693. 4. Bruxellis. 1710. 1726. 4. prodiit & alibi. Etsi non valde eruditus fuerit, acerbam ideo passus censuram SCHELHAMMERI in *præf. ad analecta*, deinde non blandissimam LAURENTII HEISTERI, etsi in paupertate inter continua bella vixerit, omnino tamen non spernendus Auctor est, qui dictione plana & simplici usus, frequenter etiam propria experimenta interpoluerit, ut in offe sacro, sterno, costarum & dorsi musculus, vasis exhalantibus cordis,

Absolvi quidem omnes scriptores (a) anatomicos, qui ita scripserunt, ut fides
& ho-

cordis, sinibus pituitariis, muliebribus, quorum tamen pleraque in nuperis demum editionibus reperiuntur. *EJUS supplementum anatomicum*, five *anatome corporis humani* Liber II. Bruxellis prodiit anno 1710. 1726. 4. Physiologia est, & omnium in corpore humano humorum analysin continet, de actionibus vero partium solidarum experimenta, sano quodam & recto judicio & absque secta scripta. Multum anatomes vivæ, maxime de respiratione, de generatione. Adjecta est controversia cum *MERYO*. Hi duo libri recusati sunt Neapoli 1717. 4. 2. vol. Lipsiæ 1731. 8. 2. vol. Amstelod. 1731. 2. vol. 8. Germanice Liber I. Regiomonti prodiit 1739. 8.

PHIL. VERHEYEN *anatome corporis humani* L. I. prodiit etiam, Lipsiæ 1699. 8. &c. Belgice vero *ontleedkundige beschryving van het menschen lichaem*, Brussell. 1711. 8.

Cum in *VERHEYENII* censuram dedisset in præfatione sui compendii *ILL. HEYSTERUS*, acriter contra eundem pugnat *ZENGWARDINUS* in *observationibus chirurgicis* p. 41. seqq.

(a) *OLIGERI JACOBÆI* *compendium institutionum medicarum*, Hafniæ 1694. 8. *Paucarum paginarum physiologia*. *IDEM* anno 1681. edidit orationem in mortem *T. BARTHOLINI*.

J. F. VALLADE *idea generalis morborum*. P. I. continet principia ad constructionem hominis spectantia, Roterod. 1694. 4. *

MARTINI LISTER *de cochleis maxime terrestribus & limacibus dissertatio anatomica*, Lond. 1694. 8. *Anatome cochleæ* accurata, maxime genitalium partium, hepatis, cordis. Magna adjecta est digressio de respiratione, usu pulmonis, & lienis, quæ viscera *LISTERUS* habet pro sanguinis in majori copia aut velociore motu diverticulis. In *SWAMMERDAMIO* carpit penes flagelli similes cochlearum coeuntium, eosque rectos pingit. *EJUSDEM* *exercitatio anatomica* II. *de buccinis fluviatilibus & marinis*, accedit *Dissertatio de variolis*, prodiit Lond. 1694. 8. Cochleas descripsit androgynas aliquas, alias sexu distinctas, oviparas & viviparas; purpuram. De partibus corporis humani multis disputat. Negat parenchyma inter vasa positum: nervos facit solidos: defendit glandulas cerebri contra *LEEUWENHOEKIUM*: de aere vitali suo elatere sanguinem exagitante scribit. *EJUSDEM* *conchyliorum bivalvium utriusque aqua* *Exercit. III.* Lond. 1696. 4. Tres partes sunt opusculi. In prima exstat *anatome mytuli*, *conchæ anatifera*, *margaritifera*, *pholadis*, omnium sexu distincto proditarum, quod valde singulare est. In altera aliqua ad loliginis anatomem pertinent. Tertia est Liber de calculo, & alibi citabitur. *EJUSDEM* de humoribus & alios Libros jam diximus.

J. CASE D. M. *compendium anatomicum nova methodo instructum*, Amstelod. 1696. 12. Sed datum est Lond. 1694. Non magni momenti. Fusc pro ovis Graafianis laborat, tabulam dat venæ sectionum, &c.

FRIDERICUS HOFMANN F. fil. an. 1694. Hallæ in 8. edidit *medicina mechanica ideam universalem*, tum *fundamenta medicina ex principiis mechanicis exposita*, eademque emendata anno 1703. 8. & alias excudi fecit. Hoc breve compendium est. Deinde an. 1718. prodiit *medicina rationalis & systematica* T. I. *Philosophia corporis humani vivi & sani*. Physiologia simplex & perspicua est. Multa ubique *STAHLII* refutatio. Aliqua experimenta admista singularia ut inflatio ductus thoracici per vasa deferentia. Sanguinis circulationem in minimis vasis celeriores esse credit. Sensui naturalis causas fere habet quas *BOERHAAVIUS*, motusque cordis. Mentem, & animam, & corpus, tria nempe principia hominis, admittit. Subjecta diæta est. Plurimæ disputationes præterea sunt quæ huc pertinent de *anatome publica* 1703. de *anatomia in praxi medica usu* 1707.

FR. HOFMANNI addimus disputationem de atheo convincendo, &c.

GEORGIUS ERNESTUS STAHL, collega & æmulus *FRIDERICI HOFMANNI*, chemicus insignis, & experimentator, metaphysicus præterea, & tristioris paulum ingenii, parcus laudator alienæ industriæ. *EJUS anatomia anatomes* jam 1694. edita est. *Disputatio de vita* prodiit Hall. 1701. *motus theoria medica* 1702. de consuetudinis efficacia generatim 1702. de motibus vitalibus 1705. *sciagraphia physiologia vera medica*, Hall. 1711. 4. Hæc nisi fallor eadem est, quæ præficitur theoriæ medicæ. Sed ipsa theoria medica vera physia-

& honos illis habeatur . Verum quærere jam possumus , quinam sint , qui optimam enchei-

physiologiam & pathologiam sistens , Halæ 1708. 4. justo volumine prodiit . *EJUS Sciama-
chiam* , Harl. 1720. 4. non legi . Notæ sunt hujus viri opiniones , omnia nempe in corpo-
re humano ex consilio animæ fieri , quæ ad evitandam putredinem & conservandum cor-
pus suum , motus varios circulatorios , secretorios , &c. exciter , idque ope motus toni-
ci in parenchymate latentis perficiat . Quare omnes in corpore humano motus , etiam feбри-
les , cum ad usus certos destinati sint , merentur medici obsequium , &c. Hæc ipsa animæ ,
ut vocant , autocratia , fecit , ut *STAHLIUS* frigide anatomen commendaverit , & de or-
ganis corporis tanquam instrumentis meris mortuis minus sollicitus fuerit .

G. E. STAHLII etiam est disputatio de diversitate corporis mixti & vivi , Hall. 1707. 4.

BARTHOLOMÆI de MOOR cogitationum de instauratione medicinae Libri III. Amstelodami
1695. 8. In medicina repurganda primum versatur , ex qua proscripta vult placita *F. SYL-
VII & CORNELII BONTEKOE* . Deinde pressionem sanguinis ex corde in plenissimas arte-
rias pro vero fundamento omnium fere in corpore vel sano vel ægro phænomenorum pro-
ponit . Sic motum muscularem a sanguine in arteriis per tensionem tubulorum nervorum
retardato explicat , somnum a particulis heterogeneis chyli sanguini admistis tardius fluen-
tibus per vasa cerebri , id comprimantibus . In digestionem laudatur actio diaphragmatis ,
eaque pro exemplo legitimi tractatus proponitur .

In *chirurgie complete* , quæ Parisiis & in Belgio anonyma prodiit 1695. 12. & quæ re-
ste Academiæ Regiæ historia ad *POUPARTIUM* spectat , præfigitur anatome in qua ali-
qua ad foramina cranii non mala .

GUILLIELMI COCKBURNÆ œconomia corporis animalis , Lond. 1695. 8. Aug. Vind. 1696.
12. & in *Bibliotheca MANGETI* . Vehemens accusatio in Tractatu de legibus historiae natu-
ralis continetur , quæ cum *PITCARNII opusculis* prodiit , *COCKBURNUM* nempe plagia-
rium esse , qui ex *BELLINO & PITCARNIO* omnia desumerit . Mihi vero omnino non
ita visum est , neque quidquam habet saporis jatro-mathematici , cum *PITCARNIUM* in
Tractatu de ventriculo manifesto refutet . Facilis Auctor , & qui plerumque verum
novit distinguere .

HENRICI MAII physiologia medica novantiqua , Rintel. 1695. sunt disputationes acade-
micæ .

J. JAC. STOLTERFOHT studii anatomici deliciae , Gryphisvvald. 1695. 4.

ABEILLE anatomie de la tete (in *EJUS parfait chirurgien*) , Paris. 1696. 12. exigui momenti .

J. B. VERDUC Traité de l'usage des parties , Paris. 1696. 12. 2. vol. 1711. 2. vol. anglice
etiam 1704. 8. editus sub titulo *treatise of the parts of a human body* . Medicus posthumi
operis Auctor , chirurgus frater editor fuit . *BOHNIUM* cæterum esse , mutato ordine ex-
scriptum *FANTONUS* jam Auctor est in *Diff. anat. an.* 1745. editis p. 115.

LAURENTII VERDUC suite de la nouvelle ostéologie contenant une myologie raisonnée , Pa-
ris. 1711. 12. theoriæ motus muscularis , catalogum muscutorum fabellis decoratum , &
ligamentorum breve compendium continet . Chirurgi opus est , cum fratres suos chirur-
gos aliquos citet .

LAURENTII VERDUC etiam est *le maître en chirurgie* , Paris. 1702. 12. tertia ed. Conti-
net etiam myologiam , osteologiam , physiologiam .

JOH. HARTMAN anthropologia physico-medico anatomica , Venet. 1696. 4. Videtur inter e-
dendum Librum vitam reliquisse . Compendium anatomicum est , cum hypothesibus phy-
siologicis . Ita renales capsulas fingit serum separare , quod adfusus diluat sanguinem
suo sero in renibus exhaustum .

In *GUILLIELMI COWPER anthropographia or anatomy of human body* , Leidæ 1697. fol.
Leid. 1737. fol. max. edita , ad *BIDLOIANAS* tabulas adjecta est primo *introductio* , sive
compendium physiologicum . Deinde *COWPERTUS* multas literulas tabulis adjecit , quibus
varia explicantur , quæ neglexerat *BIDLOUS* . Sermonem etiam penitus novum tabulis ad-
junxit , multo meliorem , divitem anatomicis & chirurgicis propriis observationibus .
Tandem quadraginta figuras , sive novem insignes tabulas subjecit de proprio . In istis
muscutorum strata prima , arteriosum systema , icones parvæ suæ myotomes , & icones ex

encheiresin, hoc est, dissectionem cadaveris docuerunt, siue quinam optimi sint
Au-

RYDLEIANA cerebri anatome continentur. Reliqua opera *COWPERI* dudum excitavi. Insignis certe anatomicus fuit, mercurio vasa feliciter replevit, figuras nitidas propria manu delineavit, multa invenit aut perfecit.

JOH. FRID. ORTLOB historia partium corporis humani, Lips. 1697. 4. Discipulus & fidus adsecla *BOHNII*. Sinuum duræ matris circa sellam equinam novam dedisse iconem alibi monuimus.

JOHANNIS MUNNIKS Liber de re anatomica, Ultraject. 1697. 8. Brevis & Latinus omnino Libellus, aliqua peculiaria habet, foramen *RIVINI*, sesamoidea pollicis, urachum apertum. Amstelod. an. 1740. Belgico sermone recusatus est.

JOH. MUNNIKS Liber citatus belgice recusatus titulum habet *heel ontleed-en gezigtkundige vverken*, Amstel. 1740. 4.

PETRI JENS tirocinium medicum, Hag. 1697. 8. Physiologia & pathologia ad mentem *STAHLII*.

JOHANNES MERY celebris chirurgus & anatomicus Parisinus in *Progrès de la médecine*, Paris. 1698. 12. varias observationes edidit aut certe publicavit *BRUNETUS*, de ligamenti ovarii cavis, sine medullæ spinalis, penis erectione, musculis, panniculo carnosio humano, &c. Quanto amore anatomen profecutus sit, in elogio testatur *BERNARDUS DE FONTENELLE*. Præparabat, inquit *LISTERUS*, non valde deterius *RUYSCHIO*, & integras neurologias exemptas paraverat. *Journey to Paris* p. 64.

BERNARDI CONNOR evangelium medici, Londini 1697. 8. singularem hypothesein sequitur, ut explicet, quomodo miracula explicari queant. Hominis partes solidas credit componi moleculis, quarum quælibet fiat ex massula sulfurea, ex aquea, ex salina, & terrea in unam moleculam conjunctis. Generationem explicat per fermentum masculum, quod stamen primigenium in femina latens excitet. Redivivum in resurrectione hominem solis sensuum organis & corde constitutum, nec musca forte majorem fore suspicatur. Solida non mutari docet. Animam corpoream videri, neque semper & perpetuo cogitare. Subjecta est dissertatio epistolica de modo secretionis, & tabula nova œconomia animalis perbrevis.

BERN. CONNOR recusatus exstat Amstelod. 1699. 8.

CHRISTIAN LUDOVICI WELSCH tabula anatomica Ed. II. Lips. 1698. fol. 1712. fol. Non inutilis certe Auctor, & suas & *RIVINI* peculiare observationes aliquas habet.

GEORGII BAGLIVI Ragusini, magnæ famæ viri, quam accusatur fere editis alienis scriptis adquisivisse, ut L. de trasmutationibus morborum *CASSALECCHII* Regiensis; *VALSALVAM* (*MORGAGN. epist. XIII. n. 39.*) *PACCHIONUM* (*BAZZANI Comment. Academ. Bonon. T. I. p. 48.*) aliosque. Ita ex *MALPIGHIO* observationem de sanguinis in ranis circulatione exscripsit. Edidit Romæ 1696. 8. Librum de praxi medica, cum quo Dissertationes de experimentis per infusionem excusæ sunt, tum specimina IV. de fibra motrice & morbosa, Romæ 1702. Ultraject. 1703. 8. & ab eo tempore varia tum ad vivi sectiones, tum ad duram matrem, tum ad liquorum chemicorum cum sanguine commistionem, sanguinis circulationem edidit, quæ omnia recensuimus. Opera omnia sæpissime collecta prodierunt, ut Lugduni 1715. 4. Bassani 1737. 4. & 1752. 4. addjecta ejus vita.

GEORGII BAGLIVI specimina IV. de fibra motrice & morbosa primum prodierunt Paris. 1700. 4.

JOACHIMI TARGIRI medicina compendiaria, Leidæ 1698. 8. Physiologia primam partem occupat. In ea AUCTOR sententiam suam absque aliorum citatione proponit, boni sensus Auctor, & *BOERHAAVII* quasi præcursor. Fermentum tamen aliquod in ventriculo, & fermentationem lenem in corde retinet. Stahlianam sectam refutat. Musculorum actionem a sola simplicissima congestione adfluentis in fibram spiritus explicat, &c.

FERDINANDI SANTANELLI lucubrationes physico-mechanicae in VII. Tract. divisæ. Venet. 1698. 4. ad physiologiam pertinent secunda de somno, quem ad adfundentes ciborum halitus refert, tertia de spiritibus, quos medios inter corpus & spiritum facit, quarta de vitalitate vera & necessitate mortis, & sexta de nutritione, ubi chylicationem percurrit. Experimenta nulla.

J. PHILIPPI ETSEL compendium anatomicum, Erfurt. 1698. 8. per quæstiones & responsa. Nihil valde proprii.

J. PH.

Auctores, qui docent in dissectione quomodo sectio proseguenda sit, ut prior sectio non obstet sequentibus.

De-

J. PH. EYSEL *recusum extat compendium*, Erfurt. 1710. 4.

JAMES KEIL *anatomy of human body abridg*, Londini 1698. 12. primum absque nomine, deinde cum nomine Auctoris, variis annis & sæpissime recusa est, ut an. 1710. 12., nuper undecima vice an. 1742. Varias mensuras vasorum habet, atque physiologica, veram etiam nervi intercostalis originem. EJUSDEM *account of animal secretion, the quantity of blood in human body, and muscular motion*, Lond. 1708. 8. deinde auctius sub titulo *essays on several parts of the animal œconomy*, Lond. 1717. 8. & Latine cum titulo *tentamina medico-physica* prodiit. Lond. 1718. 8. cum *statica medicina*. Idem opus Leidæ 1725. 4. recusum est. Tractatus singulos jam tetigimus. Adde nunc virum matheseos peritum, eam cum medicina arctius conjunxisse; ad calculos ponendos primum logarithmis fuisse usum: positiones anatomicas fere ex COWPERO repetiisse, viva tamen animalia etiam cum cura secuisse, hypothesebus indulgisse, neque semper solícite ponderasse, quæ pro veris & solidis fundamentis adoptabat.

JAM KEIL *anatomy of human body abridg* exstat etiam Lond. 1714. 12.

MICH. BERNHARD. VALENTINI *medicina novantiqua*, Francof. 1698. 4. Est compendium medicinæ per omnes partes, etiam chemiam. Post *polycræsta exotica*, Francof. 1700. 4. novam matricis anatomen dedit, in qua glandulæ vaginæ describuntur. EJUSDEM *physiologia biblica capita selecta*, Giesæ 1711. 4. prodierunt. * EJUSDEM *amphitheatrum zootomicum*, Francof. 1719. * & 1740. fol. Zootomiam compilatitiam cum pravis figuris continet. In appendice habetur codex manuscriptus compendii anatomici RAVIANI, quo multa certe inventa continentur in myologicis, & alibi.

DANIELIS CLERICI & J. J. MANGET *Bibliotheca anatomica* (primum 1685. fol. edita) *illustrata & aucta*, Genev. 1699. fol. 2. vol. Collectio scriptorum ultimi seculi, qui fere ad fabricam partium pertinent, omissis reliquis anatomæ partibus, ut myologia, & osteologia, & omissis egregiis auctoribus seculi XVI. qui multo plura in partibus corporis majoribus invenerant quam recentiores seculi XVII. anatomici. Observationes adspersit MANGETUS. Huic editioni GAGLIARDUS & HAVERSIUS accesserunt. Icones non valde nitidæ. Hanc Bibliothecam imitati sunt Angli, Londini 1711. 3. vol. 4. Multa vero adjecta sunt, chirurgica nempe ad singulas partes, minorum Libellorum ex omnibus Europæ linguis multo major copia inserta maxime ex Anglia, neque adeo Libri integri, quam loci excerpti. Icones multo nitidius sculptæ. Hic etiam, & in SANCASSANI *dilucidationibus*, & in E. N. C. exstant JOSEPHI ZAMBECCARI egregia experimenta in brutis animalibus suscepta, quibus periculum aut spes ab exciso cæco intestino, liene aliisque partibus æstimata est.

Hac etiam occasione non possum non laudare THEOPHILI BONNETI *sepulchretum anatomicum* ejusdem MANGETI cura an. 1700. recusum 2. vol. fol. In eo equidem opere scopus practicus est, sed plurimæ tamen insunt morbosorum cadaverum dissectiones, plurima etiam ibi ad physiologiam utilissime legi & didici.

DOMINICI SANGUINETI *dissertationes iatrophysica*, Neapol. 1699. * Ex censuris video systema alcali & acidi refutari.

ALESSANDRO PASCOLI, *il corpo umano*, Perusiæ 1700. 4. Venet. 1712. 4. 1727. 1735. 4. & Latine ALEXANDRI PASCOLI *de homine, sive de corpore humano vitam habente*, Libri III. Venet. 1735. 4. Romæ 1738. 4. quæ splendidior editio penes me est. In Libro quolibet, primo anatome, deinde practica consideratio morborum continetur. Figuræ ex EUSTACHIO, VERHEYENIO sumptæ, ordo secundum ventres.

JAC. GAVET in *sua febris idea* varia physiologica habet de fermentatione, generatione animalium, sanguine, cordis motu, secretionem, Genev. 1700. 12.

GIDEON HARVEY in *vanity of physick and philosophy*, Lond. 1700. 8. varia physiologica habet, de digestionem, quam perficiant animales spiritus, de sanguine qui cor ipse moveat, &c.

JACOBI le MORT *fundamenta novantiqua theoria medica*, Leidæ 1700. 8. & 1718. 8. continent etiam physiologiam seu theoriam hominis.

J. BAPT.

J. BAPT. FANTONI *observationes anatomico-medicae editae & scholiis illustratae*, a JOHANNES filio, Turin. 1699. Venet. 1713. 4. In priori editione 31. in altera 37. observationes sunt, satis & curiosae & utiles, maxime ad cordis morbos. EJUSDEM JOHANNIS FANTONI J. B. F. *Dissertationes anatomicae* XI. Turini an. 1701. 8. prodierunt, quibus trium ventrium anatome continebatur. Inter eas, quae ventrem medium & imum describunt, recusae sunt ibid. 1711. 4. cum titulo *Anatomia corporis humani ad usum theatri* P. I. In eo elegante Libro multa minutiora ex anatome & humana & comparata, ad glandulas & alias corporis partes spectantia, tum physiologicae etiam cogitationes continentur, multa etiam ex MERYO, quem audivisse videtur FANTONUS, & Parisinis animalium dissectionibus. Dissertationes sunt 13. Deinde reiectis iterum dissertationibus, quae ad ventrem medium pertinent Turini 1745. in 8. Maj. recusae sunt *dissertationes anatomicae septem priores renovatae de abdomine*. Multa iterum ibi ad historiam inventorum, ad zootomen, ad omnem anatomen partium ventris imi utilia. MALPIGHIANAM viscerum fabricam passim tuetur. Hic solus ex anatomicis seculi XVII. supervivit, dum scribo. Epistola J. FANTONI ad LANCISIUM cum editione EUSTACHII prodit. EJUSDEM *opuscula medica & physiologica*, Genevæ 1738. 4. edita continent primo dissertationes & animadversiones fusas, eruditas, & quibus novum systema solide refutatur. Adjectae sunt observationes paternae cum scholiis, & aliae auctoris nostri ex anatome practica sumtae, egregiae. Reliqua physici argumenti sunt.

In *Monumentis Academiae Regiae scientiarum observationes* (inter historias) numerosissimae, deinde aliqua ex anatome comparata utilia existant. Ea fere in physicis citavimus p. 106. seqq.

LAUR. ROBERG *inventa anatomica hujus seculi*, Upsal. 1700. Disp. EJUS *lyck refnings, taflor*, Upsal. 1718. 8. compendium Suecicum.

In G. PASCHII *de novis inventis quorum accuraciones cultui faciem praeulit antiquitas*, Lipsi. 1700. 4. aliqua anatomica sunt.

BESSE *recherche analytique de la structure des parties*, Tolosae 1701. 8. 2. vol. Discipulus CHIRACI, cujus scripta compilavit Auctore HELVETIO, in praef. ad *réponse à la lettre critique*. Miro instituto ex effectibus ad causas resurgit, tamquam omnia planissima & certissima forent, aut a nobis ipsis corpus creatum esset. Fermentationibus omnia plena & fictitiis figuris partium, acido, alcali. Ipsi fœtus formationem, mechanice explicat, ut ex fermentatione struatur. IDEM anno 1725. satis acrem edidit epistolam sub titulo *lettre sur le livre de l'économie animale de M. H.*, Paris. 8. quam non vidi. Sed *replique aux lettres de M. HELVETIUS au sujet de la critique de son livre de l'économie animale*, Amstel. etiam (verius, Parisiis) 1726. 8. eam quidem legi. Cum in prioriepistola BESSIUS objiceret HELVETIO, quod theoriam inflammationis BOERHAAVIO, non citato, surripuisset, acriter vero respondisset HELVETIUS, & auctoritate uteretur ad supprimendas defensiones BESSI, iste furtim edita responsione satis vehementer priorem accusationem repetiit.

JEAN BESSE *lettre sur le livre de l'économie animale de M. H.* habeo nunc editionem Parisinam 1723. 12. Practica ea est, & unice ad anatomen pertinent, quae contra HELVETIUM dixit, ob dissimulata ea, quae BOERHAAVIO debebat circa errorem loci & arterias lymphaticas. Video *Oeconomiam animaleam*, Paris. 1723. 3. vol. 8. recusam esse.

ARCHIBALDUS PITCARNE Scotus, aliquo tempore Leidensis Professor, BOERHAAVIO sed brevi tempore praeceptor, iatromathematicus, acris vir ingenii, sed, si omnino legitima sunt carmina, & mira illa ARCHIMEDIS epistola (ad GELONEM enormi anacronismo data) in religionem parum pronus. EJUS pleraque opuscula singulatim recensuimus. Collecta sunt Roterodami 1701. 4. deinde Edimburgi 1713. 4. ubi 15. dissertationes habentur, quarum pleraeque citavimus, reliquae sunt de curatione febrium, quae fit per evacuantia, ubi sudorifera contra purgantia extollit: de modo in sanandis morbis quo agunt corpora acida vel alcalina; & BOERII epistola. In Roterodamensi editione an. 1714. 4. accessit scriptum de legibus historiae naturalis contra R. SIBBALD valde acerbum. Infensus erat SIBBALDO, quod contra medicos mathematicos Libellum an. 1696. edidisset, lingua vernacula scriptum. Aliae adhuc editiones horum opusculorum in Belgio successerunt, medica tamen nulla. *Elementa medicinae physico-mathematica* a morte PITCARNI, Londini 1717. 8. prodierunt, recusa in Belgio ad malum exemplar, a discipulis descripta.

scriptum, (*MARTINE de animal. similib. p. 30.*). Prima pars eaque brevis physiologiam continet. Opera omnia etiam Venetiis 1733. 4. recusa sunt.

ARCHIBALDI PYTCARNE, Elementa medico-physico-mathematica ibi dicta continent systema ad *BELLINIANUM* saporem, quod multa promittit. Singularia aliqua, docet nutrire venosum sanguinem, animalcula spermatica duorum sexuum dari.

MICHAEL ERNEST ETTMULLER corpus humanum sympatheticum, Lips. 1701. Disp. *JOH. WOLFGANG PREISER œconomia corporis animalis*, Vienn. 1701. vel 1702. 12. uterque enim annus in catalogis præfigitur. *

CHRISTIAN VATER machina humana, VVittemb. 1700. Disp. * *EJUSDEM physiologia experimentis & demonstrationibus mechanicis, chemicis, & anatomicis instructa*, VVittemb. 1701. 4. 1712. 4. Physiologia humana in systemate universali physices continetur. *EJUSDEM institutiones medica succinctis aphorismis comprehensa*, VVittemb. 1702. 4. *

POLYCARPI GOTTLIEB SCHACHER de anatomia præstantissimo totius medicina fundamento, Progr. Lips. 1701. 4. Eruditi viri plures adhuc sunt hujusmodi dissertationes, ut *de anatomia & physiologia in genere*, Lips. 1715. 4. *de partibus corporis humani externis & internis*, ibid. 1715. &c.

In *D. SAVIARD observationibus chirurgicis*, Paris. 1702. 8. multa bona habentur, & memoratu dignissima.

PETRI CHIRAC pleraque circa hæc tempora scripta sunt. Libellus de pilis recens est. *De incubo* Diss. Monspelii prodiit 1692. quem morbum a fermentatione læsa explicat, *de volvulo* an. 1694. * in quo hoc malum ab introsusceptione intestinorum explicatur, *examen analyticum de motu cordis*, an. 1698. ibid. quem a fluido proprio, neque nerveo, neque sanguineo derivat. Sed imprimis lectionum suarum codices manuscriptos numerosissimos discipuli circumtulerunt, in quibus theoria plurima, & eventum ad causas mechanicas reductio reperitur. *EJUS* denique *lettres ou réflexions préliminaires*, & ejus *réponse a la réclamation du P. C.* acri stylo in *VIEUSSENIUM* scripta est, quem plagii, invidiæ & nescio quot criminum reum agit. Hæ epistolæ cum posthumis *PETRI CHIRAC* consultationibus exstant.

JOH. GODOFREDI DE BERGER physiologia medica, sive de natura humana Liber bipartitus, VVittemberg. 1702. 4. Vir eloquens in schola *RUYSCHIANA* enutritus, & eorum omnium nisi fallor primus, qui hujus viri experimenta in theoriam medicam transtulerunt. In hac physiologia vocibus curiose selectis pondere plenissimis, & judicio non vulgari usus est, *BOHNII* sæpe adversarius. Novam editionem a collega meo conjunctissimo, erudito & avi simillimo, *JOHANNE GODOFREDO BRENDLIO*, ipsis auctoris observationibus ditiolem expectare licet. Interim *FRIDERICUS CHRISTIANUS CREGUT* aliam dedit, Francofurti 1707. 4. & dissertationem *de anthropologia ejusque præcipuis scriptoribus* præmisit.

JOHANNIS FREIND scripta citavimus. Eruditionem variam, experimenta & mathematica principia conjunxit.

JOHANNIS BROEN, cujus Librum *de duplici bile* jam diximus, opera medica posthuma Roterodami 1703. 4. edita sunt a *PETRO a PELT*, amico *BROENII*. Physiologia ibi habetur satis Cartesiana, multum usa æthere. *SYLVIIUM* tamen & effervescentias passim refutat.

HENRICI RIDLEI observationes medico-præctica, Londini. 1703. 8. præter ea, quæ ad foramen ovale pertinent, plurimas cadaverum dissectiones continent.

JOSEPH de la CHARRIERE medici & chirurgi *anatomie nouvelle de la tête de l'homme*, Parisiis 1703. 8. Varia continet, theoriam motus muscularis, sensuum, ossium fabricam, salivæ phænomena, ossa capitis, capitis, cerebrum, visus imprimis fusam enarrationem, vasa. Multum usus est *VIEUSSENIO*.

BLANKEN catalogus antiquarum & novarum rerum anatomicarum in theatro Leidensi 1703. 4. sæpe recusus.

ALEX. CHRISTIAN GAKENHOLTZ de principiis mechanicis physiologia applicandis, Helmstad. 1703. 4.

A. CHR. GAKENHOLTZ habet aliqua ad motum muscutorum &c.

ANTONIUS MARIA VALSALVA Medicus, Chirurgus (ut ex nupero *MOLINELLI* Libro *de aneurysmate* apparet) eximius, anatomicus artis suæ cupidissimus, ut constat ex anatome

cadaveris æstivis ardoribus tabefacti decimo tertio die instituta (in vita VALS.). Præter Librum de auditu alibi laudatum reliquit tres dissertationes annis 1715. 1716. & 1719. in academia lectas de oculi anulo moderatore, sinubus aortæ, renum succenturiatarum ductu excretorio, cum quibus aliqua de ligamento coli, fedeque cataractæ in ipsa lente conjuncta sunt. Posthuma alia VALSALVÆ chirurgica promittit ILLUSTRIS EDITOR, de cujus labore continuo dicetur. Varia passim de schedis VALSALVÆ decerpta admiscuntur dissertationibus MORGAGNI.

PETRUS MATTHÆUS Consentinus, CORNELII, & LEONARDI a CAPOA discipulus, dialogos decem scripsit, jam citatos, sub titulo *animadversionum physico-medicarum*, Neapoli 1704. 4. Experimenta in animalibus sæpe valde paradoxa fecit: opiniones nostro tempore omittimus. Physiologiæ magnam partem tractavit.

LUTHER de pericardii, pulmonis & partium genitalium anomaliis, Kiel. 1704. 4.

CHRISTIANUS JOHANNES LANGE, BOHNII discipulus, multas physiologicas dissertationes dedit ut *homo atomotatum*, Lips. 1694. &c. EJUS opera omnia posthuma curavit edi A. QUIRINUS RIVINUS, Lips. 1704. fol. Historia ibi medica reperitur, passim viciosa. GUIDO certe de CAULIACO non vixit seculo XV. Inde physiologia sequitur, eo ordine, ut theses præcedant, & sequantur objectiones & earum solutiones. Dissertationes ultimo loco ponuntur.

JOH. SALZMANN Diff. de anatome jucunda & utili, Argentor. 1704. de ætatibus vite humana, 1715. & alias disputationes edidit, STAHLIANUS, qui dum vixit magna laude anatomes floruit.

J. ZELLER theses inaugurales medica, Tubing. 1704. 4. Varia etiam ad glandulosam fabricam contra RUISCHIUM defendit.

J. VAL. SCHEID Prof. Argentoratensis doctrina splanchnologica, Argent. 1705. 4.

J. DOMINICUS SANTORINI primum inclaruit quatuor opusculis anatomicis, quæ Venetiis 1705. 4. Roterodami 1719. & fere cum omnibus editionibus BAGLIVII prodierunt. Eorum tria, quæ physiologica, sunt, de fibra, nutritione, & catamenii jam laudavimus. Deinde an. 1724. Venetiis edidit observationes anatomicas in 4. recusas, Leidæ 1739. 4. In his observationibus anatomicum indefessum, in difficillimis partibus extricandis artificiosissimum, & pene nimis perspicacem se gessit, nisi omnino hic aliquid nimii locum habet, cum multos musculos ejus viri nemo recentiorum perinde distinctos viderit. Pertinent autem hæ observationes ad musculos faciei, auriculæ, nasi, laryngis, pharyngis, ad cerebrum, ad oculum, nasi cartilagine, & ossa, ad diaphragma, musculos abdominis, ductum thoracicum, partes genitales utriusque sexus, in quibus inprimis diligentissime versatus est. Promiserat commentarios anatomico-medicos, sed illi nondum prodierunt. Istoria d'un feto jam dicta est.

J. DOM. SANTORINI quatuor opuscula prodierunt etiam Venet. 1740. 8.

In nouvelles observations sur les os JOHANNIS JOSEPHI COURTIAL, Paris. 1705. 8. Leidæ 1709. 8. aliqua de lymphaticis hepatis, aqua pericardii, aeris proprietatibus continentur.

ALEXANDRI THOMSON dissertationes medica, Leidæ 1705. 4. datæ Montrofs. 1704. Auctor ingenii ut videtur recti & facilis, BOERAAVII vel preceptor vel discipulus, DUVERNEYI vero certior auditor. In præfatione sectarum recentiorum patronos recenset, nulli valde favens. De Diss. I. dixi. Tertia explicat mechanice rationem ferri, qua sanguinem urget per minima vasa scirrhumque dissipet. In IV. argenti vivi, in V. opii agendi modum mechanice interpretatur, & in VI. de animi morbis, corpori valde noxiis agit.

HENRICI SNELLEN theoria mechanica delineatio, Leidæ 1705. 8. contra BAGLIVUM & theoriam fibræ solidæ & FREINDII emmenologiam scripsit, & fermenta tuitus est, & chemicas Theorias.

HENRICI SNELLEN etiam est defensio contra BARTHOLOMÆI de MOOR disputationem de spiritibus animalibus igneis, Leid. 1707. 8. ut videtur.

RAIMUNDI VIEUSSENS novum vasorum systema humani corporis, Amstel. 1705. 8. Continet fabricam plerorumque corporis humani viscerum, per injectiones liquorum, microscopia, & exsiccationes detectam, vasa inhalantia ventriculi, morbos cerebri, &c. RUTSCHIIUS de VIEUSSENIO querebatur, quod suis observationibus clam usus esset, epist. ad SCHELH. p. 99. Id non ita videtur, sed potius cellulofam fere ubique pro vasis a VIEUSSENIO acceptam esse.

NICOLAUS HARSTOEKER in *conjectures physiques*, Amstel. 1706. 4. *suite des conjectures physiques* 1708. *seconde suite* 1712. *éclaircissements sur les conjectures* 1710. & *suites des éclaircissements* 1712. multa physiologica habet.

J. B. MORGAGNI inter anatomicos eruditione, veritate, numero observationum eminet, utinam diu! EJUS *adversaria anatomica* I., Bonon. 1706. 4. *secunda & tertia* 1717. *quarta* eodem anno, inde tria reliqua an. 1719. Patavii prodierunt, ubi omnia etiam sex nitide conjunctim eo anno recusa sunt. Prima edidit ex primis suis laboribus, secunda in MANGET theatrum inprimis, tria alia ad BIANCHUM pertinent. In quarto & reliquis hunc virum conciliatus relinquit, & redit ad MANGETUM, iconesque priores defendit. Ubique & eæ dotes elucent, quas laudavi; sextis & primis adversariis etiam magis. Plurimos vulgo receptos in anatome errores primus expunxit. EJUS *nova institutionum medicarum idea*, Patav. 1712. 4. Leidæ 1740. 8. prodiit, quam non vidi, est autem brevissima. In editione LANCISIANA EUSTACHII epistola etiam MORGAGNI est, in qua aliqua difficiliora loca interpretatur. EJUS *epistola anatomica* II. Leidæ 1728. 4. prodierunt. Reconciliaverat BIANCHUM cum MORGAGNO communis amicus LANCISIUS. Eo mortuo in nova editione historię hepaticę se defendere cœpit BIANCHUS. Ad tabulas BIANCHI in prima epistola valde miti sermone respondit MORGAGNUS, & plurima addidit ad historiam anatomicam atque hepatis descriptionem. In altera vero epistola ob defensiones BIANCHI commotior, & acrius BIANCHUM adortus est. Adjectæ sunt JANI PLANCI & JOS. POZZII epistolæ, quibus tabula ductuum hepaticorum dilatatorum, quæ inter BIANCHIANAS est, plagii postulatur. Denique in operibus VALSALVÆ edendis summum laborem posuit MORGAGNUS. Vitam nempe viri addidit, & præfationem, & dissertationes anatomicas XVIII. quæ cum prioribus vigenarium numerum conficiunt. Edita sunt Venet. 1740. 4. 2. vol. Incomparabilis hic eruditio, omnium auctorum censura solida, observationes sæpe iteratæ & minuta cum cura, plurimæ ad organum auditus, cor, renes, succenturiatos, colon, fabricam viscerum, morborum sedem, oculum, nervos. In *Commentariis Bononiensibus* epistola MORGAGNI de uvula ejusque musculis reperitur.

G. DESNOUES, per 13. annos Professor (ut ipse ait p. 29.) anatomię & chirurgię, & primarius chirurgus nosocomii Genuensis fuit, notior ob circa cadavera, quæ ære spectanda Parisiis proponebat, de quibus etiam totus, quem dicam, Liber fere agit, qui inscribitur *lettres de GUILL. DESNOUES à M. GUILLIELMINI*, Romæ 1706. 8. intercurrent tamen aliæ observationes, de monstro fictitio, de nervis acusticis, de glandulis in radice penis. In *Zod. Med. Gall.* IDEM DESNOUES glandulas cervicis uteri descripserat.

Præter prius opus jam excitatum edidit CHRISTIANUS STROEM *raticiniorum mechanicorum in medicina usum vindicatum*, Leidæ 1707. 8. Defendit mechanicos; PITCARNIUM, BAYLEUM, BOERHAAVIUM, & recusatus est cum PITCARNIO, Venet. 1733. 4.

JOSEPHI DONZELLINI *questio convivalis de usu mathematicum in arte medica*, Venetiis 1707. 8. & in collectione operum GUILLIELMINI.

J. WILLHELMUS PAULI edidit Lips. 1707. 8. *opuscula anatomica & chirurgica* JOHANNIS van HORNE, addiditque doctam præfationem, qua multa recentiorum anatomica inventa continentur; deinde ad ipsius operis paginas eruditas adnotationes, adpersit ex COWPERO aliisque Anglis & idoneis doctoribus sumtas. EJUS *speculationes & observationes anatomicae* prodierunt, Lips. 1722. 4. * PL.

JACOBI DRAKE *new system of anatomy ... an animal œconomy ... and a rationale of many distempers*, Lond. 1707. 2. vol. cum titulo *anthropologia nova* recusa an. 1727. 2. vol. & 1737. 8. Auctor in ipsa editione operis in flore ætatis de vita decessit. Multum hypothesis non firmissimarum per opus dispersum, de bilis utilitate ad menses movendos, aeris ad cor dilatandum, ventriculi comparatione cum lebe PAPINIANO. Sed pretium habet a tabulis COWPERI ad viva corpora factis, exprimentes situm viscerum, musculos nonnullos, vasorum sceleton, arterias venasque pulmonales, quarum illæ majores sunt, narium denique bonam historiam. In appendice compilatæ sunt variorum auctorum icones.

LE CLERC *chirurgie complete avec l'ostéologie, la myologie*, Paris. 1702. 12. 1706. 12. 1739. 12. &c. In editione priori egregia quam jam laudavi, osteologia est, in nupera myologiæ compendium, & DUNCANI administratio cerebri. De chirurgica parte alibi.

JOSEPHI GRANDI oratio, qua Italiam anatomen ceteris præstantiorem esse ostendit, Ven. 1706. *

PETER PAXTON'S physico-medical directory, Londini 1707. 8. *Brevis physiologia delineatio & reliquarum partium medicinae*. *

HERMANNI BOERHAAVE institutiones rei medicae, Leidæ 1708. (dat. 1707.) 8. 1713. 8. 1720. 8. 1727. 8. 1734. 8. 1746. quæ duæ ultimæ editiones non differunt, innumeris cæterum annis locisque recusæ, etiam, si fides *ALBERTO SCHULTENS*, doctissimo viro, arabice. Non alius nostro ævo plures vidit aut discipulos, aut admiratores sui. Physiologia majorem partem hujus libri efficit, eaque inprimis famam viro peperit. Anatomicas descriptiones dedit fusiores quam priores ex *COWPERO* inprimis sumtas, & *VESALIO*, & *EUSTACHIO*, & *RUYSCHIO*. Hujus viri & *LEEUVENHOECKII* observationibus superstruxit systema vasorum minorum per multas series decrescendum, huic inflammationum theoriam. *SYLVIANA* fermenta undique profligavit, acidum a corpore, & a febribus abesse ostendit. Causas unius effectus multas collegit, quas priores fere dabant singulas. De commentariis alibi dicetur.

EJUS oratio de usu ratiocinii mechanici in medicina prodiit Leidæ 1703. 8. 1709. 8. In universum respondet ad objectiones osorum mechanices. Hic continetur celebre illud inventum arteria lymphatica, quam adeo ante *VIEUSSENIUM BOERHAAVIUS* vidit: ut nunc contra *GALLOS* & meipsum, male ipsis credulum, observo. *Oratio de certo in physicis edita* est Leidæ 1715. 4. Contra hypotheses & essentias rerum, quas nobis ignotas, & sola phænomena aliqua per sensus perspecta esse ostendit. In præf. ad *aphrodisiacum* telam cellulosa, uti dictum, descripsit. *Epistolam de fabrica glandularum* jam citavimus. Ea & una opuscula minora, Hagæ 1738. 4. prodierunt. Opera posthuma a præstantissimi nepotis *BOERHAAVIANI CL. KAAVII* cura & industria speramus.

In *L. de viribus medicamentorum BOERHAAVII* magna pars physiologiæ inprimis vasorum continetur.

Contra orationem de usu ratiocinii mechanici, scripsit *ANONYMUS ratiocinii mechanici abusum in medicina & impotentiam* Friburgi (nomen fict.) 1719. 8. sed eam satyram non legi. Objecit etiam *DEMETRIUS (ouvrage de Penelope p. 131.)* ex *PITCARNIO*, & clanculum quidem sumtam esse theoriam, quod nimium est, nam etsi passim recepit *PITCARNIANA* & inprimis *BELLINIANA* theoremata, ab ejus tamen theoria tritus, nutritionis, aliisque longe abfuit. Idem in *homme machine* iterum vitio dat, quod naturam non noverit, nisi per aliorum labores. Etiam hoc nimium est, cum, & viva corpora disseceverit & multum usus sit præparatis a *RUYSCHIO* corporis humani partibus. Cæterum viri æternitate dignissimi vitam possidemus a quatuor auctoribus descriptam. Prima est *ALBERTI SCHULTENS*, continuo a morte edita, Leidæ 1738. 4. Altera est elogium in *Monument. Acad. Reg. Scient.* 1738. Tertia a *D. BURTON* scripta anno 1743. repetita est 1747. in 8. cum nonnullis ad *MORTIMERUM* epistolis & *Dissert. BOERHAAVII* inaugurali. Quarta est *essai sur le caractère du grand Médecin, ou éloge critique de BOERHAAVE*, Leidæ 1747. 8. quæ *D. MATY* opus esse dicitur, & ea videtur ab omni aut nimis indulgente, aut pravo affectu remota esse.

JEREMIE WAINEWRIGHT mechanical account of nonnaturals, &c. Lond. 1708. 8. 1737. 8. Multa hic habentur conjuncta, physiologica, theoria secretionis, respirationis, ponderis aeris, digestionis & efficaciam ventriculi, hepatis denique anatome & physiologia.

ANTONII DEIDIER physiologia tribus dissertationibus comprehensa est disputatio inauguralis, quam *JOH. WYSS* patruus noster & *J. B. CHOMEL* defenderant, Monspeli 1708. 8. Prima pars physica est, altera physiologiam corporis humani tradit, ad chemica principia & fermentationes. Tertius Libellus est de vasis, ubi rara observatio ossæ portionis in corpore striato repertæ. Eiusdem auctoris esse credo *anatomie raisonnée du corps humain par M. DEIDIER*, Paris. 1742. 8. qua multa physiologica etiam valde paradoxa continentur, ut pulsum ab elatere sanguinis arteriosi nasci, diaphragma ad inspirationem passive se habere, nerveas fibras esse mera vasa arteriosa, & quæ alia hujusmodi. *Institutiones medicinae theoreticae physiologiam & pathologiam complexas*. Paris. 1731. 12. non vidi.

ANTONII DEIDIER institutionum medicinae &c. citatam editionem Parisinam latinam non vidi, sed gallicam quæ titum habet *Institutions de Médecine contenant la physiologie* &c., Paris. 1735. 12. Physiologiæ nomine hic habetur nutritio, motus muscularis, sensuum, vasorum & temperamentorum theoria. Lympham negat a sanguine differre nisi raritate. Vaporem abdo-

abdominis in intestina & vesicam resorberi: capsulas renales veros renes esse, quorum ductus uriniferi ab incremento corporis elisi sint, spiritus nerveos nullos dari, & alia paradoxa docet.

ANATOMOPHILI tabula anatomico-anthropologica beschreibung der theile des menschlichen körpers in VI. tabellen, Dresden 1708. fol. Compendium inane in giganteam formam dispositum.

JULII BARTHOLOMÆI BERINGER idea institutionum medicinae rationalium, VVurtzburg. 1708. 8. Breve compendium.

LAUR. TERRANEI præter Tractatum de glandulis alia opuscula, orationes imprimis, citantur in *GALER. di Minerva* VII. p. 26.

CHRISTIAN SIGMUND WOLF Disp. de moralitate anatomes circa animalia viva occupata, Lipsi. 1709.

J. SALZMANN specimen anatomia curiosa & utilis, Argentor. 1709. *EJ. theses anatomicae selectiores*, ibid. 1711. 4.

J. HE. FURSTENAU desiderata anatomico-physiologica, Hall. 1709. 4.

GEORG. EMMERICH Disp. de inspectione cadaveris, Regiomont. 1710.

DOMINICI GUILIELMINI opera omnia, Genev. 1719. 1740. 4. Obiit autem an. 1710. Mathematicus, *MALPIGHII* discipulus, paulo in hypothesin pronior. Liber de sanguine dictus est. Pro theoria medica adversus empiricos oratio dicta 1702. utcumque huc pertinet.

PETITI epistolas laudavimus.

In *Miscellaneis Berolinensibus* passim anatomica intercurrunt, ut *VATERI* de viis lacrumarum & glandulis *MEIBOMII*, *BUDÆUS* de offescentia dissertatio, aliaque.

CHRISTIANI HENRICI ERNDL iter anglico-batavum, Amstelod. 1709. * ni fallor & 1711. 8. legi potest ad *RAVII* & *RUYSCHII* inventa.

PATRICK BLAIR osteographia elephantina, Lond. 1711. 4. inter anatomes comparatae scriptores de meliori nota est.

J. HENRICI de *HEUCHER* litigia circa inventa anatomica, VVittemb. 1707. *ars magna anatomie* 1709. 4. de anatomie practica, 1709. paria analyseos mathematica & anatomica facta, ibid. 1709. de anatomie ad praxin accommodanda, 1710. de ignorantia anatomicorum, 1710. selectiora anatomica, numerosa nempe per omnem anatomem theses, 1711.

ANT. MAR. VALISNERI considerazione intorno al cervello d' un bue impietrato, Patav. 1710. 4. Demonstrat Francos academicos exostosin pro petrificato cerebro habuisse.

In *EJUSDEM* nuove osservazioni ed esperienze intorno alla storia medica e naturale exstat descriptio puellæ absque cranio qualem & nos descripsimus.

Istoria del camaleonte africano e di varj animali d' Italia, Venet. 1715. 4. & auctius in operibus omnibus. Accurata omnino anatomie, & multo emendatior, quam priorum, ut *DOMINICI PANAROLI*, Academicorum Gallorum. Cutis fabrica, pulmonis, genitalium legi meretur. Pipam demonstrat non feminam esse, quæ ova in dorso ferat, sed marem, cujus in dorsum femina ova ponat.

In *raccolta di varie osservazioni spettanti all' istoria medica e naturale* varia etiam anatomici argumenti reperi, ut excisum ex catella lienem: an digestio ab acido: de acido in bile: de circulatione sanguinis: de via aeris per testam ovi: & alia. De iis dixi quæ ad generationem pertinent.

J. JAC. FRANC. VICARII basis universa medicina, Argentor. 1710. 8. *

J. BAPTISTÆ BIANCHI historia hepatica, Turini 1711. 4. & multo auctius, Genevæ 1725. 4. 2. vol. In hac posteriori editione habentur Diss. de circulationis impedimentis, & orationes aliquæ, inter quas est ea de Bononiensibus medicis, in qua *MUNDINIO*, qui venam cavam (κοιλὴν) chyli vocat, ductus thoracici inventionem adscribit. In Tractatu de vitiosa generatione p. 278. 279. tæniæ anatomie continetur. *EJUSDEM* prolusio ad publicam anatomem, Turini 1736. 4. Varia promisit, ut dissertationes XII. quibus anatomie continetur (*JOURN. de TREVoux* 1728. p. 2351.) & nuper legi, incepisse prodire ejus tabulas: Earum aliquas in prolatione tetigerat, oculorum, cutis, auris, lacrumalium ductuum, cerebri. *IDEM* in *MANGETI* theatro observationes in *MORGAGNI* icones adsperserat, quæ magno constiterunt utrique.

CHRISTOPH. HELWIG Lexicon anatomico chirurgicum, Lipsi. 1711. 8. pro tironibus.

SAM. de RY de motu vitali, Leid. 1711. 4. habet fere totam physiologiam *BOERHAAVIANAM*.

SAM.

SAM. BATTIER *Oeconomia corporis humani brevis descriptio*, Basil. 1711. 4. & eadem continuata 1721. 4. disp.

L. H. RUNGE *de differentiis actionibus quae exercentur in corpore humano ab alimentis, medicamentis & venenis*, Hardervic. 1712. 4.

J. HERMAN ALBRECHT *de natura humana*, Leid. 1712. 4.

PAULI HIERONYMI BIUMI *scrutinio di notomia e di chirurgia*, Milan. 1712. 2. Anatomem habet, physiologiam, cum fermentis, ideis plasticis. Subjungit chirurgiam.

P. H. BIUMI etiam est *encomiasticon lucis seu lucis encomia in physiologicis medicina novae fundamentis e veterum tenebris erutis atque cultro anatomico autopsiaeque caractere confirmatis*, Milan. 1701. CORTE *.

YVONIS GAUKES *de medicina ad certitudinem mathematicam evehenda*, Amstelod. 1712. 8. Non legi.

YVO GAUKES Cartesianus est, qui etiam animae in glandula pineali sedem defendat, & sanguinis fermentationem.

LOUIS BELLEFONTAINE *médecine dogmatique mécanique en maniere d'institution*, Amstel. 1712. 8. 2. vol. Neque hoc medicinae compendium.

J. JAC. RAU Professor Leidensis, chirurgus alias & peritissimus lithotomus, an. 1713. edidit orationem *de methodo discendi anatomen*, Leidæ 1713. 4. **EJUS** *de dentibus & de septo scroti* Dissertationem citavimus. Pulcherrimi thesauri in Academia Leidensis theatrum anatomicum transferunt, eorumque catalogum dedit **B. S. ALBINUS**. Lectiones **M. S.** laudavimus apud **VALENTINUM**. Valde eum laudat **UYLHOORN** in *revuede vertoog (de spina bifida)*.

J. BAPTISTÆ GASTALDI *Institutiones medicinae physico-anatomicae*, Avenione 1713. 12. fere ex **CHIRACI** lectionibus.

PANCRATII WOLF *Physica hippocratica*, Lips. 1713. 8. Contra **STAHLIUM**, animae considerationem repudiat. Acidum & alcali defendit.

P. WOLF l. c. plenus titulus est *Physica Hippocratica in qua exponitur humanae naturae mechanismus geometrico-chymicus*.

ANDRÆ OTTOMARI GOELICKE *historia anatomica nova & antiqua*, Hall. 1713. 8. Fere ejusmodi studium secutus est, quale nos hic profiteamur, scripta recensere, & iudicia & inventorum memoriam addere. Sed multa utique tumultuaria sunt. **PARTHENIUM**, imaginarium in carmine nomen, pro medico habet. **GEORGIUM ENTIUM** ad seculum XVI. & **GEMINI** tempora revocat, quem tamen ipse addit scripsisse apologiam pro sanguinis circulatione. **NICOLAUM HOBOKENUM** cum **NICOLAO HABICOT** confundit. **NICOLAUM SEVERUM** habet, cui aliqua **STENONIS** opera tribuit, imaginarium hominem. Subjectæ sunt aliquæ observationes anatomicae. Deindæ an. 1738. Francofurti ad Viadr. 4. edidit *introductionem in historiam litterariam anatomes*, ubi Auctores ex temporis ordine cum primariis inventis recenset, & contentis scriptorum. Veteres eos errores ibi emendavit, **STOLIO** cæterum censori suo respondit. **EJUS** *institutiones medicae secundum principia mechanico-organica reformata* Franc. ad Viadr. 1735. 4. Habet aliquam partem historiae medicae, de scriptoribus iterum: & contra mechanismum pugnat.

MATTHEI GEORGI Liber II. *de homine*, Genæ 1713. 4. Physiologia in primo tomo continetur, in qua **BELLINI** ingenium reperio, ordinem mathematicorum utcumque similem, aliquid in Notione ingenti, & magno conatu evictum nihil. Corpus humanum secundum mechanicas leges generari docet: alimentum per triangularia spatia inter minimos nervos & minima vasa moveri, &c. Alter Liber de anima est.

WILLIAM SALMON *anatomy of human bodies*, Lond. 1714. 8. Compendium anatomicum satis plenum, etsi nusquam citatum vidi cum physiologia & iconibus. Proprias observationes non reperi.

DAVID de **GREBNER** ad **THEODORI CRAANEN** Librum *de homine additamenta* edidit cum aliis suis scriptis Lips. 1714. 4.

J. AD. WEDEL *de œconomia animali*, Jen. 1714. Disp.

JOHANNIS BROWNELL *institutions of physick*, Lond. 1714. 8. Physiologia etiam adest, aeri omnes in corpore humano motus tribuuntur.

CONR. LUDWIG WALTHER chirurgus in *thesauro observationum medico-chirurgicarum*, Lips. 1715. 8. multa bona ad monstra & alias physiologiae partes habet.

EL. CAMERARIUS variis opusculis aut physiologiam aut anatomen tetigit. *EJUS specimen medicinae electicae*, Francof. 1713. 4. edita continent in XI. prioribus dissertationibus dubia & censuras in *VIEUSSENIUM*, *LAPEYRONIUM*, de sede animae & imprimis in *LEEUWENHOECKIUM* ejusque semen pulicis, fibras lentis crystallinae, squammas epidermidis, &c. *EJUSDEM conamina medicina conciliatricis*, ibid. 1714. 4. etiam physiologiam continent satis amplam, Bohnianam. Laxatis vero limitibus recentiores scriptores cum vetustis conciliare satagit. Cæterum in difficultatibus excitandis potius quam in propriis experimentis excellebat. *EJUSDEM systema cautelarum medicarum*, Francof. 1721. 4. aliqua de modo medendi, deinde systema physiologicum continet, & ex ordine compendia reliquarum medicinae partium. In *epistolis Taurinensibus* aliqua huc pertinent. *EJUS* etiam est *Disputatio qua homo cum thermometro & barometro comparatur*, Tubing. 1721. 4.

JACOBI DOUGLAS *bibliographia anatomica*, Lond. 1715. 8. & libris nonnullis ex **B. S. ALBINI** bibliotheca auctior, Leidæ 1734. 8. Magni viri hæc minima pars laudum fuit, etsi & hic in raris libris detegendis, inque excerptis melioris momenti inventis super vulgus se extulerit. Videtur tamen multos scriptores ex **LINDENIO** recepisse, & dolendum est, quod cum **HARVEJO** operis finem fecerit. Præter alios jam recensitos libros magnum opus molitus erat **DOUGLASSIUS**, totam nempe anatomen cum novis iconibus, quarum multas paratas & supra fidem pulchras vidi. Excellebat etiam in præparationibus morbo-
sis, quibus, qua erat humanitate, chirurgos lectores adjuvabat.

ANTONII SARRACENI *anatomia del corpo umano*, Padova 1715. 4. Ex gallico versam esse additur, sed gallicum archetypum non vidi. Nonne **BEDDEVOLE**?

GUILLIELMI DERHAM *physico theology*, Lond. 1715. 8. Physiologiam teleologicam & multa alia ex anatome comparata continet.

FERDINAND CARL WEINHARD *nucleus universæ medicinae*, Patav. 1715. 8. 1728. 8. pro prima parte habet physiologiam.

JOH. SIMON BAUERMÜLLER *specimen theoriae medicae*, VVurtzburg. 1716. 8. Physiologiam Stahlia-
nam etiam continet.

JOH. SIM. BAUERMÜLLER etiam est *disputatio de usu partium* VVürzburg. 1726. 4. *EJ. physica HIPPOCRATICA* ibid. 1729. 4. *disputatio est compendium theoriae Stahlia-
nae*.

AD. BRENDELII *Decas I. II. & III. observationum anatomicarum dissertationibus tribus absoluta*, VVittemberg. 1715. & 1718. Non omnes apud me sunt.

JOHANNES MARIA LANCISIUS multa scripsit, fere recensita, de corde, aneurysmatibus, sede animæ, **EUSTACHII** editionem adornavit. *Dissertatio etiam secunda corporis humani anatomicam synopsis* tradit, quæ primum prodierat Romæ an. 1684. Collecta opera primo Genevæ 1725. 4. prodierunt, deinde Venet. 1739. fol. Inde excusæ sunt disputationes hujus archiatri, Romæ 1745. 4. & alia, quæ nondum vidi. Humanitate, eruditione, stili facilitate, judicio practico valuit, anatomen non potuit propria manu excolere, quantum jussisset animus. In *Libro de subitaneis moribus & de aneurysmatibus* multa egregia ex practica habet anatome. Posthuma adhuc latent de motu cordis ad **ZERILLUM**, *miscellanea anatomica, de formatione fetus* (in *præf. editionis* 1739.)

LOUIS LEGER de GOUY *la véritable chirurgie avec des nouvelles découvertes sur la myologie, l'ostéologie & un système sur la génération du fœtus*, Rotomagi 1716. 8. Non vidi, sed mirum hominem fuisse oportet, qui pro partu naturali eum habeat, quo pedibus fetus extrahitur.

MICHAELIS ALBERTI *introduc-tio in universam medicinam* prodiit, Halæ 1718. 4. quæ Stahlia-
num systema, etiam physiologiæ continetur. **IDEM** in **HEISTERUM** aliqua edidit, quæ olim lecta, neque cum voluptate, nunc non sunt ad manus. **IDEM** numerolas disputationes argumenti physiologici edidit. *EJUS theoriam generalem motus partium solidarum corporis humani & remedium excitantium & sedantium*, Hall. 1730. 4. non legi.

MICH. ALBERTI hic dictus in suis *vindictis STAHLIANIS* adversus **HEISTERUM** acriter pugnat.

J. JAC. MANGET *theatrum anatomicum*, Genev. 1717. 2. vol. fol. grand. Contra hanc celeberrimam collectionem strinxit calamus **MORGAGNUS**. Non idem erat, quod Bibliothecæ institutum, & inventa aliorum in continuum potius sermonem disponere hic scopus fuit. *Ufus est compiler osteologicis tabulis BIDLOJANIS, myologicis BROWNII, splan-*

splanchnologicis ex RUTSCHIO & seculi XVII. scriptoribus, vetustiores enim vix videtur notos habuisse. Ipse sparsim observationes addidit, tum BLANCHI animadversiones in MOR-GAGNI icones, & de valvula coli, sinibus cerebri, corde aneurysmatico dissertationes. Sumtibus non pepercit editor. Subjecta est corrupta editio tabularum EUSTACHII.

GEORGII THEODORI BARTHOLDI corporis humani descriptio anatomico-physiologica, Francofurti 1717. 4. * Parum placuit HEISTERO.

LAURENTII HEISTER compendium anatomicum, Altdorf. 1717. 4. 1719. 8. 1727. 8. 1732. 8. 1741. 8. prodiit, & saepe omnino recusum est, latine Amstel. 1732. & Germanice, Nuremb. 1721. 4. Uratislaviae 1733. 8. & Gallice, vertente DEVAUX 1739. (ad editionem II.). Primordia Libri fuerunt in quatuor disputationibus, quarum prima Altdorfi 1715. edita osteologiae compendium, altera & tertia 1716. compendii anatomici specimen, quarta 1717. eodem titulo prodiit. In ultimis editionibus compendii duae partes sunt. Prima ipsum compendium continet, in quo splanchnologia fusior, neurologia & angiologia brevissima sunt. In altera adenologia, cum responsione contra GARENGEOTUM exstat, tum nota, quibus multa in controversiam vocata retractantur, & observationes auctori propriae non paucae adduntur, & tabulae IX. In praefatione naevi VERHEYENII ostenduntur.

LAUR. HEISTERI compendium anatomicum Venetiis etiam prodiit 1730. 8. bis Anglice recusum est Lond. 1721. 8. Germanica editio alia exstat etiam Nurembergensis 1749. 8.

EJUS oratio de incrementis anatomiae seculo XVIII. & programma ad eandem orationem, VVolfenbuttel. 1718. 8. Ad historiam anatomicam hujus seculi, Auctores per itinera sua collectos, numerosos, & eorum inventa & merita recenset.

EJUSDEM Disp. de anatomae subtilioris utilitate, Helmstad. 1728. recenset tristia exempla mortium ex ignorantia anatomae ortarum, dissectarum arteriarum a chirurgis, &c.

EJUSDEM & MOEBII egregia Disp. in qua observationes medicae miscellaneae theoreticae & practicae continentur, Helmstadii prodiit 1730. 4.

EJUSDEM de anatomia in chirurgia majori quam in medicina necessitate, Helmstad. 1737. 4.

JUSDEM Disp. de medicina mechanica praestantia, Helmstad. 1738. Contra Stahlianos.

EJUSDEM compendium institutionum medicinae, Helmstad. 1736. 4. 1745. 4. In posteriori editione continetur brevis physiologia; & catalogus scriptorum, qui clarissimo viro in omnibus medicinae partibus utiliores visi sunt. IDEM in E. N. C. in Annalibus Juliis, in chirurgia sua magna, (quae nunc maxime recuditur), in Libris jam recens de cataracta multa anatomica habet. Vitam HEISTERI proprio Libro descripsit CHRISTIANUS POLYCARPUS LEPORINUS, Quedlinburgi an. 1725. 4. edito, ubi studia viri & merita recensentur.

In SEBASTIANI MELLI chirurgo svegliato, Venez. 1717. 8. anatome etiam exstat.

H. CORAZZI diss. tres de physiologicis animadversionibus, Bonon. 1717. 4. An huc faciant nescio.

In Actis URATISLAVIENSIBUS multae bonae animalium dissectiones reperiuntur, ut vespertilionis suppl. IV. Alcis ibid. Erinacei ibid. Castoris suppl. I.

JOHANNIS LUDOVICI APINI fasciculus disputationum Academicarum, Altdorf. 1718. 4. ad physiologiam & pathologiam pertinent.

FRANCISCI ARDINOIS Diss. de fundamento totius medicinae anatomico, Leidae 1718. proposita est. Hujus viri pater theatro novo anatomico a PETRO Magno in Russia exstructo praefectus fuit. Sed & ipsum PETRUM anatome delectatum fuisse & ursum propria manu dissecurasse legitur in BUCHNERI miscellaneis 1729. p. 125.

GEORGII PHILIPPI NENTER fundamenta medicinae theoretico-practicae secundum STAHLII potissimum placita, Argentorat. 1718. 4. & 1721. 4. & theoria hominis sani, sive physiologia medica, ibid. 1714. & 1723. 8. Mitigatus Stahlianus est, & succum nerveum admittit.

GEORGII DETHARDING Diss. de anatome jucunda & utili, Rostoch. 1718. 4. EJUSDEM palaestra medica exhibens themata physiologica XXX. disputationibus ventilata, Rostoch. 1720. 4. StahlII praeepta secutus, vocibus laxius usus est, sales adspargere sategit.

PATRIK BLAIR miscellaneae observationes, Lond. 1718. 8. Anatomica in titulo recensentur, sed ea paucissima sunt.

J. CHRISTOPHORI SPROEGEL der ganze menschliche Körper nach seinen theilen. Hamburg. 1718. 8. Multa tamen in sua brevitate nova, ex COLLINSIO etiam varia habet.

BERNARDUS SIEGFRIED ALBINUS BERNARDI F. RAUII successor, Præceptor noster celeberrimus, qui cognitione scriptorum anatomicorum & artificiosa dissectione, & repletione, & figurarum pulchritudine perinde eminet. Scripsit an. 1719. *de anatome comparata* orationem, aliam vero an. 1721. *de via in cognitionem corporis humani* utramque Leidæ 4. forma excusam. Inde an. 1725. *indicem suppellectilis RAVIANÆ* edidit, ibid. 4. qua vita etiam *RAUII*, & descriptio lithotomiæ continetur, quæ huic viro propria fuit. Eodem an. Liber *de ossibus* prodit. Eodem in *VESALIUM* doctissime præfatus est, & musculorum nomina adiecit, & alia utilia. **IDEM HARVEII** utrumque immortale opus cum præfatione edidit. **IDEM** *ossium fetus icones* dedit, Leidæ 1737. 4. jam laudatas, & *musculorum hominis historiam* 1736. 4. & *icones musculorum nunc absolutas*, in fol. max. **IDEM** in *EUSTACHIUM* interpretationem dedit, Leid. 1744. fol. *EJUS* multa adhuc alia exspectamus, tabulam ductus thoracici, tabulas VII. fetus in utero materno naturali situ positi, & *physiologiam* forte ab omni secta, ab omni male firma hypothese puram.

J. JACOBI FEYER *observationes anatomica*, Leidæ 1719. 8. Aliquæ hominum dissectiones, multæ brutorum animalium, etiam vivorum, in quibus multa ad physiologiam utilia, ad motum cordis, pulmonis, &c.

HERMANNI FRIDERICI TEICHMEYER soceri olim nostri *elementa anthropologia*, Jen. 1719. 4. & sex paginis auctius, passim tamen mutata 1739. 4. De ductuum biliariorum variabili natura, de poris vesicæ urinariæ, de hiatu membræ tympani proprias observationes habet: parabat etiam icones ad plenius compendium anatomicum ex optimis auctoribus collectas, cui labori immortalis est. Huc etiam pertinet *Diff. de cadaveris inspectione & sectione legali*, Jen. 1742.

J. M. GLUSING *anatomia ad vivum*, Hamburg. 1720. fol. & *anatomia rationalis*, ibid. eod. an. 4. An sani quid in hoc homine fuerit nescio, qui cerebri arterias a temporali & bronchiali deduxerit: icones dederit partim quidem passim exscriptas, partim ad *CARTESIUM* fictas, partim omnino mihi ignotas. Nomina Russica adiecit.

J. HENRICI SCHULZE *programma de periurgia in studio anatomico vitanda*, Altd. 1720. 4. *Disp. de justa studii anatomici æstimatione*, Altd. 1720. 4. *historia anatomica specimen I.* ib. 1721. 4. alterum 1723. **REININGERI** etiam de sinibus cranii *Disp.* ad eum pertinere videtur. *EJUSD.* est *Disp. de anatomes ad praxin chirurgicam summa necessitate*, Hall. 1737. 4. *EJUSD.* *physiologia medica* posthuma, Hall. 1746. 8. prodit, in qua *BOERHAAVIUM* sequitur, sed timidior minusque fidens hypothesebus. Eruditissimus vir, utraque lingua, nummorum etiam antiquorum curiosus collector, ad anatomen equidem non adeo faventes habuit opportunitates, ut in ea parte magis eminuerit, quæ ex diligente Librorum lectione pendet.

GOTTLOB EPHRAIM BERNER P. Duisburgensis Liber *de applicatione mechanismi ad medicinam*, Amstelod. 1720. 8. Fusissima dictio, anatomica nulla.

ARENT CANT *impetus anatomici primi*, Leidæ 1721. fol. max. Juvenem mors abripuit, qui cum *SERMESIO* senem *RUYSCHIUM* adjuvit, *ULHOORNIO* teste *ruveede verhoog*. Bibliothecam insignem collegerat, & delineabat probabiliter. Sex sunt tabulæ, absque literis ad *EUSTACHII* modum delineatæ, musculorum faciei, pharyngis, duræ matris, cordis in situ, ductus thoracici, articulationum nonnullarum, ventriculi, ossis palati, & mallei, ad naturam omnes.

ABRAHAMI VATER Ruyschiani discipuli, & in arte replendorum vasorum peritissimi, multa, sed non magna opuscula huc pertinent, cum aliorum magnorum virorum more vix ullum majoris molis opusculum ediderit. Anno 1723. edidit *programma de anatomes utilitate in morbis*, *programma vero de laboribus suis anatomicis & botanicis* an. 1733. Anno 1736 dedit *Regii ad Albim musei anatomici descriptionem, sive catalogum preparata RUYSCHIANA & aliorum celeberrimorum virorum exhibentem*. De lienis prolapsu *programma* 1746. Varias invitationes ad anatomen variis annis.

AB. VATER in *catalogo preparatorum* &c. vocibus fere *RUYSCHII* utitur, & sua breviter addit, & orationem de præcipuis Germaniæ musæis. *EJUSDEM* omnium invitationum ad anatome nuper compendium Helmstadii an. 1715. 4. cum ejusdem *museo anatomico proprio* recusum est, adjecto catalogo egregiorum laborum anatomicorum auctoris.

Nouvelles conjectures physiques par **GAUTIER**, Meaux 1721. Theoria est, omnia in homine unice evolvi, nihil novi generari, ne sanguinem quidem.

In *ACTIS BEROLINENSIBUS* cadaverum sectiones, & contra mechanicos & *STENZELIUM* scripta varia continentur.

In *A. LIT. SUEC.* multa anatomica sunt, v. g. 1730. dissectio testudinis terrestris &c.

J. CASIMIR HERT de utilitate anatomes, Gieff. 1722. 4.

ANTONIUS van *LEEUVENHOECH* an. 1722. obiit, qui anatomes varias partes attigit. Non solum enim solidas fluentesque partes corporis humani suis microscopiis per ipsa elementa studuit cognoscere, sed scalpellum etiam adhibuit, ut in primis theoriam ovorum impugnet. Sed pleraque singulatim tetigi, & scripta non repeto, quæ vide in *P. Physica*.

J. H. LAMPRECHT Disp. de mechanismo corporis humani, Leidæ 1722. 4.

POLYCARPI LEYSERI prima linea systematis medici, Argentor. 1722. 4. Disp. Circulationem in suo novo systemate negavit, polyhistor.

GEORGII CHEYNE essay on gout and Bathwaters: *EJUSDEM* theory on acute and slow fevers, Londini 1722. 8. Prior Libellus in primis practicus est, & diætam vegetabilem laudat, rejicit tamen animales spiritus. Alter pertinet ad iatromathematicos & theoriam, uti diximus, *BELLINIANAM*. *EJUSDEM* philosophical principles of religion, Lond. 1724. 4. Varia ad theoriam pertinentia habet.

G. CHEYNE philosophical principles of religion Londini recusatus est 1736. 8. & similia habet *DERHAMIANIS*. Animæ vim in corpus humanum necessariam adseruit, spiritus rejecit. *EJUS* etiam est natural method of curing the diseases of body and mind, 1742. 8. Pars prima physiologiam continet.

MARTIN GOTTH. LOESCHER Specimen anthropologia experimentalis, VVittemb. 1722. 4.

J. W. ALRUTZ (Medici Haaburgensis) vademecum anatomico-chirurgicum, Hanoveræ 1722. 8. Brevissimum compendium.

BENEDICTI STÆHELINI nostri theses, five specimina anatomico-botanica, Basil. 1721. 1724. 1731. 4. omnia sua prægnant utilitate, & propria experimenta continent. *EJUS* etiam illustre experimentum est, quo summa vi prementis aeris liquor rubro colore tinctus cogitur in cavum cranium subire. Exquisitam etiam seriem figurarum ovi incubati & mutationum quæ in utero avium contingunt, optabile est, ne per debilem clari viri valetudinem amittamus.

J. AUG. TROEGER medicina institutionalis aphoristica, Lipsi. 1723. 8. Germanice * *PL.* & synopsis medicina universa, nempe prius opusculum Latine versum 1724. 8. *

WILHELMUS CHESELDEN celeberrimus chirurgus Anglus, jam an. 1711. 4. dederat indicem partium corporis humani anatomicum, qui etiam in posterioris operis plerisque editionibus recusatus est. *EJUS* anatomy of human body sexies recusa est Lond. 1713. 8. 1722. 8. 1726. 8. 1730. 8. 1732. 8. 1741. 8. In hac ultima editione multæ novæ icones reperiuntur, ossium in primis, ex magno opere desumptæ, novæ etiam musculorum tabulæ, vasorum, ut venarum portarum, sceleti proprii & viscerum in situ bonæ tabulæ. Nervi & vasa lactea ab *AL. MONROO* communicata. Multæ interspariæ observationes chirurgicæ, multæ neque vulgares, tum physiologicæ contemplationes de motu cordis, musculorum. In posteriori editione aliquæ priorum editionum tabulæ omissæ sunt, ut sinuum cerebri. In Libro on the high operation of the stone, Londini 1723. 8. icones dedit vesicæ repletæ, ut ex pelvi adsurgit.

Perinde est, quo tempore recenseamus magnum virum *JACOBUM BENIGNUM WINSLOW*, qui potentia laboris, partium in situ consideratione, situs definitione veriori, auxilio aquæ puræ, novam lucem universæ arti anatomicæ attulit. Multa passim sparsa exstant in *Actis Academicis*, pleraque jam citata, uti an. 1715. cordis situm, & ventriculi, & alia alibi reformavit. Deinde cum ejus schedas anecdotas auditores certatim compilarent, dedit Parisiis an. 1732. 4. & 8. *Exposition anatomique du corps humain*. Id opus Anglice redditum a *GEORGIO DOUGLAS* excusum est Lond. 1733. 4. Germanice vero editum Berolini 1733. 4. 8. Italice nuper impressum, adjecto *DRAKIO*. Latina editio eaque reliquis operibus viri eximii aucta, expectatur a *JOHANNES ASTRUC* & *D. de la SOURDIERE* genero *WINSLOWI*. Amstelodami etiam Gallica editio passim emendatius recusa est. In osteologia recenti & ligamentorum historia & primus & solus post veteres Auctor fuit. Neorologia & angiologia hactenus etiam fere unicæ sunt. In splanchnologia infinita correxit, addidit. Omnia simpliciter & absque fūco. Quare hunc o boni nocturna ver-

na versate manu versate diurna! Aliqua etiam in MORANDI Tractatu du haut appareil de vesica & peritonæo exstant.

JAC. B. WINSLOW Italice prodiit Neapol. 1746. 4. 6. vol.

E. J. WACHENDORFF de natura solidorum & fluidorum eorumque mortua actione in variis ætatibus, Ultrajecti 1724.

J. CHRIST. HEBENSTREIT de corporis humani machina divina sapientia & providentia teste, Lipsi. 1725. 4.

CHRIST. HENR. KIRCHHEIM facies anatomica corporis humani dismembrati Polonice, VVarsov. 1725. 8. B. PL.

CHR. HENR. KIRCHHEIM Germanice prodiit Dresd. 1735. 8. sub nomine *Vade mecum anatomicum*, quod brevissimum pro tironibus compendium est.

JOHANNES ADRIANUS HELVETIUS in *Actis Academicis* varias dissertationes edidit. Deinde Parisiis 1722. 8. secuta est *idée générale de l'économie animale*, Anglice recusa 1723. 8. qua imprimis theoria vasorum minorum & inflammationis BOERHAAVIANA continetur, addito Libro de variolis.

CL. J. A. HELVETIUS in *lettre à M. BESSE* &c. purgat se ab intentata plagii accusatione.

In D. le FRANÇOIS *reflexions critiques sur la médecine*, Paris 1723. 12. etiam physiologia continetur.

J. AUG. TROEGER *medicina institutionalis aphoristica oder kurze einleitung in die ganze medicin*, Lipsiæ (etsi Leidæ nomen adjectum sit) 1723. 8. * & Latine 1724. 8. *

G. D. COSCHWITZ *organismus & mechanismus* Lipsi. recusus exstat 1741. 4.

Contra D. BESSE Librum suum & in *ACTIS ACADEMIÆ* defendit, & in *Lettre à M. BASSE contre l'idée générale de l'économie animale* (& les observations sur la petite vérole), Paris. 1725. 8. Defendit vasa lymphatica non valvulosa, proportionem ramorum ad truncos : : 64. 71. tuetur, & alia.

J. BAPTISTA MAZINUS nuper obiit. EJUS sunt *mechanica morborum* P. I. Brix. 1723. 4. II. 1725. 4. III. 1727. junctim recusa Offenbaci 1732. 4. Deinde *institutiones medicina mechanica*, Brix. 1739. 4. *Mechanica Medicamentorum*, Brix. 1734. 4. ubi a particulis tetraëdris, rhomboideis, octaëdris, &c. Functiones medicamentorum explicat. Fabricam etiam partium describit. *Opera omnia* ibid. 1743. 4. in tres tomos distributa emendata & aucta prodierunt cum mechanice pulsuum & urinarum, quam nondum vidi. Ad iatromathematicos pertinere videtur, sed candide loquar & absque invidia, ex eo genere quod nocet. Quis credat dulce lac esse, quia glandulæ mammarum ovales sunt? ex definitis angulis salium gastricorum cibos digeri, semina parentum in speciem crystallizationis, ut vocant, subsidendo figurari, & quæ non alia.

CHRISTIAN BERNHARD ALBINUS de *anatomie errores detegente in medicina*, Ultraj. 1723. 4.

J. ANDRÆ SCHMIDT *oratio de Germanorum in anatomen meritis*, Helmstad. 1723. 4.

AUGUSTINUS FRIDERICUS WALTHER Professor Lipsiensis in omnibus, quæ moliebatur diligentissimus, matheseos & anatomes perinde peritus, dictione paulum obscuriore usus est. EJUS huc pertinet programma quoad orationem de usu & præstantia solidioris in anatomicis scientiæ invitatur, Lipsi. 1723. 4. cum auspizaretur anatomes & chirurgiæ professionem. *Historia suffocationis & observationes anatomica*, ibid. prodierunt 1729. 4. Reliqua jam laudavimus.

GEORGII DANIEL COSCHWITZ *oratio de studii anatomici præstantia & utilitate*, Hall. 1727. 4. cum novum theatrum conderet. EJUS *organismus & mechanismus*, Lipsi. 1725. 4. Stahlianum systema, in anatomicis, ut solet ea secta, breve. Observationes tamen aliquæ medicæ inmixtæ. De temperamentis & motu tonico fusus est, & vasorum immediatam anastomosis negat. Succum nerveum admittit. Ductum salivalem suum defendit.

D. NOGUEZ (sed anonymus) edidit Parisiis 1723. 8. *anatomie du corps humain en abrégé*, qua continetur KEILIANI compendii quinta editio, nonnullis locis tamen aucta, ut in nervorum historia, & in refutatione sententiæ MALPIGHIANÆ. Recusa est cum iconibus 1726. 8.

WILL. STUKELEY *anatomy of the spleen* hic iterum citare visum est, quæ Lond. 1723. fol. prodiit. Nam multas nervorum & vasorum icones addidit, quas tribuit amico suo SYM-

MONDS, qui vasa repleverit. Sed ex certe ex *VESALIO* sumtæ sunt; lactea ex *ASELLIO* descripta, nervi ex *EUSTACHIO*. Subjecta est elephanti apud *SLOANEUM* secti satis bona historia, & dissectio genitalium partium *DOUGLASSIANA*.

W. STUKELEY præter eam quam indicavimus elephanti dissectionem, habet etiam aliam, factam in *Fort St. George* Malabaræ.

Anatomie de HEISTER avec des essais de physique, Paris. 1724. 8. 1735. 8. & prior editio Anglice cum titulo *physical essays*, Lond. 1734. 8. Posterior editio valde aucta est. Notæ, quas editor addidit, omnino sunt compendium physiologicum, in prima editione totum *BOERHAVIANUM*, in posteriori passim mutatum & magis proprium. Icones selectas habet ex *EUSTACHIO* aliisque bonis scriptoribus.

JOHANNIS TABOR exercitationes medica, Lond. 1724. 8. Ad iatromathematicos *Stahlianos* pertinet. Cordis fabricam viresque describit, illam præter anatomen, hanc nihilo melius, cum non majorem ponat vim, qua sanguis ab aorta in valvulas repellitur. In motu musculari multa bona habet, contractionis mensuram non sufficientem. Convulsiones ab acri derivat.

JOSEPHI FERDINANDI GUILIELMINI DOMINICI F. de recto morbosorum cadaverum iudicio, Bonon. 1724. 4. * *EJUSDEM* de clavis Bononia anatomicis, ibid. 1735. 4. *

PETRI GERIKE Professoris Helmstadiensis de studio novitatis in anatome & physiologia, Hall. 1724. 4. *EJUSDEM* de anatomes præsertim practica usu vero, Helmstad. 1736. *EJUSDEM* corpus humanum machina naturalis, Helmstad. 1745. 4.

JOH. ADAM KULMUS anatomische tabellen, Gedani 1725. Lipsi. 1741. Augspurg. 1740. 1745. Nurembergæ 1740. Amstelodami 1743. 8. & Latine Amstelod. 1732. 8. &c. Compendium anatomicum est viri, qui plurimum se in disseccando exercuerat, hinc in variis anatomes partibus melius, & plenius quam vulgo solent, ut in vasis, ligamentis. Observationes etiam propriæ interspersæ sunt. Tabulæ 26. fere ex *VERHEYENIO*, propriæ paucae. Alia *KULMUSII* Opera passim exstant. Multa ad anatomen comparatam, castoris, &c. in *Breslauer Sammlungen* reperiuntur, quæ *KANOLDUS* edidit, alia in E. N. C.

THOMÆ MORGAN, irreligiosi, uti notum, hominis, *philosophical principles of medicine*, Lond. 1725. 8. Ex *PITCARNII* grege fuit. In P. I. prop. XXXI. attractionem & effectum lunæ & solis in humores nostros admittit. In P. II. imprimis leges motus liquidorum animalium habentur, & motus muscularis explicatur. Velocitatem sanguinis diminutam ex *KEILII* placitis explicat, tum secretionem. Vias ad vesicam peculiare admittit. De nervorum classibus & animi adfectibus peculiaris est theoria, quam proponit. Pars III. practica est. *EJUSDEM* *mechanical practice of physic*, Lond. 1735. 8. Principium mathematicum est. Unicam rationem diminutæ in arteriis celeratis a latitudine ramorum admittit. Refutat *BOERHAAVII* theoriam de motu musculorum, nervos facit plenos & fartos, absque spiritibus, negat alternum imperium cordis & nervorum, unde quies sequeretur, carnes ex oleo coacto nasci scribit, &c.

JOHANNIS FRANCISCI van LEEMPOEL specimen inaugurale exhibens anatomia originem, progressum & omnes ab ALCMAEONE ad HARVEJUM scriptores, Leidæ 1725. 4. Vide miros errores hominis. Epistolam *ARCHIMEDIS* ad *GELONEM* (Hieronem oportuerat finxisse), pro vera habet. *HIEROPHILUM* Carthaginientem pro viro diverso habet ab *HEROPHILO* Chalcedonio. Quinam sunt barbari illi veteres anatomici *LITERUS*, *SITTERUS*, *ALAR-DUS*, *CHOSTUS*, *RITUVUS*, *AVITUS*, *PIRALDUS*, *AMINDUS*, *LINDUS*? Ubinam, marium, hæc nomina piscatus est? Quis est ille *ORIBASIO* antiquior *ORLANDUS*, *ALBIS-SUS*, quis ante *RHAZEM* *HERMANNUS ASTHNAR*? *DOUGLASSIUM* exscripsit plerumque, utinam unice!

JOHANNIS IGNATII MAJER collegia anatomico-practica ad presentiam cadaveris virilis secti an. 1724. Prag. 1725. 4. stilus, anatome, utilitates, ejusdem sunt saporis.

BERNARDI van NIEUWENTYT regt gebruyk der vvaereld beschouwing, Amstelodami 1716. 1725. & alias, nuper libere Germanice versum, & editum a *CL. J. ANDREA SEGNERO* affini nostro & collega, Jenæ prodiit 1747. 4. Magna omnino ex parte physiologia est, cum iconibus *VERHEYENIANIS* & teleologiis. In nova editione calculus virium musculorum frustra impensarum & diaphragmatis descriptiones emendationes & alia meliora adjecta sunt.

JOH. WOODWARD *idea of the nature of man*, Lond. 1725. * *Physiologia videtur. Omnia per sales explicat fabulosus. Hæc ex censura Diarii.*

HENRICI ALBERTI NICOLAI *observationes anatomica*, Argentor. 1725. 4. *disputatio de meliori nota, contra foramen RIVINI, &c.*

JOHANNIS PALFYN *anatomie chirurgicale*, Paris. 1726. 8. 2. vol. insigniter aucta & mutata prodiit, ibid 1734. 2. vol. opera D. BOUDON, ut secundus inprimis tomus (quo ossa, vasa, muscoli, & nervi continentur) totus, & ad ductum inprimis WINSLOWY, retractatus sit. Cæterum PALFYNIUS passim doctorum virorum DUVERNEYI, ALBINI aliorumque observationes collegerat, inter quas etiam est aliqua adumbratio ductus thoracici ex ALBINI observatione. Subjecta est (huic editioni) RUYSCHII centuria observationum, & BRISSÆI, hæc in chirurgicis notatu dignæ.

GIUSEPPE VOLPINI *opere medico pratiche filosofiche*, Parma 1726. 4. Quæ physiologici argumentanti sunt, ea fere ad generationis historiam pertinent & jam censa sunt.

Dissertations en forme de lettres au sujet des ouvrages de l'Auteur du Livre sur les maladies de os, Paris. 1726. 8. PETITUM non solum ossibus, sed per omnem anatomen persequitur ignotus sed acris Auctor, nisi fallor D. HUNAULD. Diss. de potu BOSSUETO tribuit. Musculorum uvulæ mentionem omissam culpat, tendinem histrionis Cochoix ruptum fuisse negat.

S. THEODOR. QUEIMALZ *de insigni anatomies in superioris facultates influxu*, Lips. 1741. 4.

STEPHANI HALESI *vegetable statiks*, Londini 1727. 8. Paris. 1733. Gallice versa a D. BUFFON, jam laudavimus, tum *kamastatiks*, Londini 1733. 8. & vertente de SAUVAGES Gallice recusa, Genev. 1744. 4. In priori Libro de aere inprimis, ejus in respirando destructione, & respiratione versatur. In ista magnam partem physiologiæ per experimenta attingit, non vim solam cordis & sanguinis, sed respirationem etiam, robora periosteorum & ligamentorum, vim ventriculi, motum peristalticum, alia.

JOHANNIS de GORTER discipuli BOERHAAVIANI Prof. sioris Harderovicensis multa sunt opera ad physiologiam pertinentia. Liber *de secretione animali & de perspiratione* jam dictus est. *Compendium medicina*, Leidæ 1731. 4. physiologiam utique habet praxi præmissam. In chirurgicis denique multa physiologica reperiuntur.

JOH. de GORTER *compendium* ibi dictum recusum est Francofurti 1749. 4.

MATTHIÆ EMANUELIS BORETI *de anatomia plantarum & animalium analogia*, Regiom. 1727. 4.

GUI DE TYMOGUE *nouveau système du microcosme ou Traité de la nature de l'homme*, a La Haye 1727. 8.

GUI DE TYMOGUE hac pag. etiam citavi verum nomen est EEME GUYOT Versaliensis, mirus homo, & magister tabellariorum.

CHRISTIANI FRIDERICI RICHTER *hochstnützliche erkenntnißs des menschen*, Lips. 1727. 1729. 8. & alias, Continet physiologiam Stahlianam.

Nondum videram, cum de musculis scripsi, PETRI ANTONII MICHELOTTI apologiam, qua JOHANNEM BERNOULLIUM *motricis fibra inflata curvam recte calculasse defenditur*, & RICHARDI MEAD, (potius HENRICI PEMBERTON) *objectionibus respondetur: atcedit rari ex utero morbi historia*, Venet. 1727. 4. Ipse se hic BERNOULLIUS defendit.

JOH. FRIDERICI ERMEL *physiologische und anatomische tafeln*, Dresdæ 1727. 4. Latine & Germanice. Ad physiologiam pauca pertinent, aliquæ tamen analyses sanguinis, physiognomiam & chiromantiam defendit. In partibus genitalibus & osteologia paulo fusior est.

A. BOYND *de miranda Dei sapientia conspicua in C. H. fabrica*, Harderovic. 1727. 4.

In ACTIS PETROPOLITANIS multa egregia anatomica sunt, partim ad viscera, monstra, & ossa jam laudata, partim ad anatomen comparatam elephantis, catopardi, sciuri volantis, cameli, &c.

ACTA PETROPOLITANA plena sunt eximiis anatomicis etiam animalium dissectionibus, catopardi, elephantis, simii, cameli &c.

J. RENÉ CROISSANT de GARENGEOT (ut amat vocari) *splanchnologie*, Paris. 1728. 4. 1742. 8. 2. vol. Germanice Berol. 1733. 8. Multa bona hic liber habet, inprimis ex WINSLOWO, icones etiam, ut ut parvæ, ad naturam tamen delineatæ sunt a D. STOKHAUSEN medico Magdeburgensi. Nimius tamen sui amator & medicorum iniquus hostis fuit. In arteria intercostali, cum aliquid vellet invenisse, erravit omnino, & icones varias malas dedit, ut septi transversæ, vesicæ, &c.

In *opusculis scientificis*, quæ ab anno 1728. Venet. prodeunt, physiologica & anatomica varia habentur, CAROLI GIROLAMI anatome fetus, cui cranium deficiebat; HYACINTHI de CHRISTOPHORO & GUILIELMINI de motu cordis; Epistolæ duæ de evolutione feruum; ROSETTI systema spirituum; PETRI S. ROUHAULT historia partus ventralis; DOMINICI de MAURODENOJA contra ROSETTUM; CONST. GATTA graviditas diuturna; JOSEPHI BADIA de ferro in sanguine; LUNADEI fetus biceps; MARTIALIS REGHELLINI somnambulo; COGROSSI de mammis, atra bile; NUVOLETTI monstrum; VALISNERII descriptio cloacæ viperinæ & epistola de impostore Parisino, qui in sanguine humano infecta demonstrabat; FANTONI & PACCHIONI lites.

Anatomia completa del hombre MARTINI MARTINEZ, Madrit. 1728. 4. continet observationes rariores, & chirurgica. *

Hoc anno prodit editio IV. *Commentariorum* JOHANNIS QUINCY in medicinam staticam. Ei adjuncta sunt *medico physical essays*, in quibus multa physiologica ad fibras, nervos, &c.

CHRISTIAN GODFRID STENZEL *anthropologia ad pathologiam applicata*, VVittemb. 1728. 4. & *medicina theoretico-practica*, Lipsi. 1732. 8. In priori opere integra physiologia habetur ex BOERHAAVIO & a bonis scriptoribus collecta, quæ prius disputationum specie prodierunt. Alterum nondum legi. Multa contra Stahlianos.

JACOBI LAZERME *conspectus mechanicus partium solidarum corporis humani*, Monspel. 1729. 8. Magnam physiologiæ partem continet.

THOMÆ SIMSON *de re medica dissertationes* IV. Edimburg. 1726. 8. In III. & IV. morbos solidorum defendit, & vitia humorum elevat. Experimenta etiam adfert de bile atra, liene, vasis bilariis.

GUILIELMI SCOTI *prolusiones medica* IV. habite in *Gymnasio Patavino*, Patav. 1729. 8. Contra PACCHIONUM ostendit, solidis corporis humani proprium motum non inesse. Nitrum aereum defendit, quod pulmones saliva dilutum subeat, &c.

SIMONIS ADOLPHI *theses anatomico-medica miscellanea*, Hall. 1730. 4.

W. GOERE'E *natuurlyk en schilderkonstig ontwerp der menschkunde*, Amstel. 1730. 8. Edit. II. priorem autem ignoro. Varia ad musculos & ossa totius corporis, ad adfectum animi ex facie agnitionem, &c.

W. GOERE'E prior editio est 1683. 8. aut 1680. 8.

CHRISTOPHORUS JACOBUS TREU ACAD. NAT. CUR. DIRECTOR jam an. 1715. *de ahiolosi fetus in utero* Altdorfi utilem disputationem dedit, qua multa rariores describuntur, ab HEILTERO etiam in *compendium anatomicum* recepta. Inde an. 1729 Norimb. 4. edidit *vertheidigung der anatomie*. Laborat, ut vulgi præjudicia removeat, & historiam fere dat anatomes. IDEM ab anno 1731. quindecim continuis annis *commercium literarium physico-technicum Noricum* quindecim voluminibus in 4. edidit, quo diario multæ aliorum, plurimæ CL. VIRI observationes continentur, ad monstra, fetus, vasa pelvis, cutem, uteri cervicem, alias corporis partes. Epistola *de vasis lingua*, Osteologia, & Tractatus *de discrimine inter natos & non natos* jam dicti sunt.

In COMM. ACAD. INSTITUTI BONONIENSIS, cujus primus tomus ibi an. 1731. tomus secundi partes tres ibid. 1745. 1746. & 1747. totidem voluminibus prodierunt, multa ad anatomen minime negligenda reperiuntur, MORGAGNI, GALEACII, MOLINELLI, BAZZANI, BONAZZOLI, MENGHINI, JOSEPHI PUTII, POZZI, BALBI, & ad physiologiam experimenta de ferri ad sanguinem itinere MENGHINI. Ibi etiam JANI PLANCI molæ anatome accurata exstat.

ADOLPHI FRIDERICI HOFMANN *de rebus physiologicis novæ hypotheses*, Erfurt. 1731. legi merentur.

J. WILHELM ALBRECHT P. Gottingensis *observationes anatomica*, Erfurt. 1731. 4. EJUSDEM *paranesis ad artis medicæ cultores*, Gotting. 1735. 4. primitivæ erant ardoris quo in verum ferebatur. Sed immaturum fatum abripuit.

Cartilla physiologica Galenica & spagirica per JUAN GIMENEZ de MOLINA, Murcia 1731. B. B.

JUAN GIMENEZ de MOLINA alibi invenio annum 1732.

HENRICI BASS *observationes anatomico-chirurgica*, Hall. 1731. 8. Multa ad anatomen pertinent, de thymi usu, & glandularum renalium, & vesicularum seminalium fabrica, de

de valvulis arteriosis aortæ, flexibus coli, musculo glandulæ thyreoideæ, hymenis varietatibus, ossibus setamoideis.

EM. KOENIG theses anatomico-botanica, Basil. 1731. 4.

FRIDERICI ZWINGER theses anatomico-botanica, Basil. 1731. 4.

JOH. FRIDERICI SCHREIBER, qui etiam DOUGLASSII myologiam edidit, *elementorum medicina physico mathematicorum* P. I. Lips. 1731. 8. BOERHAAVI discipulus, BELLINI amator, systema physiologicum methodo mathematica scribere aggressus erat. Parte I. medicinæ, sanitatis, &c. definitiones dedit severiores. Pars altera de fibra agit, de arteria & de sanguine. Inde in Russiam advocatus, summo studio systemati plenissimo physiologiæ incumbit.

GARSAUT *anatomie générale du cheval traduit de l' Anglois*, Parisiis 1732. 4. Nonne SNAPPE? *

ARNOUDT HELVETIUS *korte Ontleedkunde van het geheel menschelyk lighaam*, Edit. II. Amstelodami 1732. 8. Prima videtur prodierit an. 1726. Compendium anatomicum in quaestiones & responsiones dispositum, simplex & collectitium.

JOSEPHI POZZI *commercium epistolicum*, Bonon. 1732. 4. cujus primariæ observationes exstant in COMM. BONON. T. II. P. I. in commentariolo multa experimenta & paradoxa sæpe opiniones Auctoris exstant de fabrica pilorum, unguum origine, capsula Glissonii (quam confirmat), glandulis viscerum (quas tuetur,) pericardii, bronchialibus, cerebri in avibus magna mole, avium in oculo humoribus renascentibus, arteriarum ligatura, &c. Commoda multa & nova.

ANTONII FIZES *duodecim quaestiones*, Monspel. 1731. 4. pro loco disputata. EJUSDEM *universa physiologia conspectus*, ibid. 1737. 8. EJUSDEM *opera medica junctim a patre NICOLAO edita* 1742. 4. reliqua autem jam citavimus. Multa cum BOERHAAVIO communia habet, de liene tamen propriam hypothesin proponit.

HUGONIS GOURAIGNE *physiologia conspectus* Monspellii 8. prodit, annum vero ignoro. Habet functionum epitomen, opinionem propriam aerem subire pulmonem sua vi, non a pectoris dilatatione, fabricam musculi ex MURSIO &c.

BURCHARD ADAM SELII *de anatomica historia scriptoribus, atque commentariis*, Kiel. 1731. 4. Etsi juvenis, acute tamen errores in GOELICKIO vidit, aliqua etiam in HEISTERUM profert. Promisit *historiam auctorum anatomicorum secundum titulos*, sed ea non videtur.

FRANCESCO CANETTI *la macchina umana*, Veron. 1732. 8. Poema, quo physiologia traditur, non certe mala, ut ex Capite de somno judices.

CAR. GIANELLI *Saggio di medicina teoreco-pratica*, Venet. 1732. 8. Recentiores anatomicos sequitur. Agit de morbis solidorum ex stricto & laxo, de solidorum formatione ex succis, &c.

CAR. GIANELLI hic citatur liber ad praxin pertinet.

ANT. FERREIN *quaestiones medicae* toties laudatae hoc anno Monspellii prodierunt.

PHILIPPI HECQUET *novus medicina conspectus* P. I. *physiologica*, Pars II. *pathologica*, Paris. 12. maj. EJUSDEM *médecine théologique ou la Médecine créée*, Paris. 1733. 2. vol. *physiologia* est, systemati solidorum superstructa, cui non solam ventriculi functionem, sed omnem in corpore humano secretionem & sanguinis preparationem adscribit. Ratiociniis delectabatur amplis, vagis, remotis, & auctoritatibus, ab anatome ipse alienior.

PHILIPPI HECQUET primo loco citatus liber prodit 1722. 12. in quo pars prima physiologica est.

BRYAN ROBINSON *treatise on animal œconomy*, Dublini 1732. 8. & auctius cum responsione contra MORGANI refutationem 1738. 2. vol. quæ responsio etiam seorsim prodit sub titulo *an answer on MORGAN'S remarks on D. ROBINSON of animal œconomy*, Londin. 1737. 8. Fere major pars versatur in hydraulica corporis humani. Alterum tamen de nervis caput est, eorumque æthere. Tertium de secretionem. Quartum de excrementis & imprimis perspiratione. Sed imprimis ejus Librum *on food and discharges of human body* huc oportet revocare, Londini 1748. 8. editum, ubi multa de bona proportionem ciborum ad varii generis excrementa, & ad perspirationem: deinde proportionem mutua corporis totius, hepatis, pulmonis, cordis ex variis animalibus per experimenta demonstrantur.

BRYAN ROBINSON in nova *treatise on animal œconomy* editione, quam dixi, fibræ corporis humani robur pro varietate ætatis, pro immerfione in varios liquores, per experimenta in capillis facta determinat. In altero volumine de pulsu, de oscillatione fibræ, aliisque physiologicis agit.

JAN van WYCK *proeve der reedelyke heelkonst*, Roterodami 1732. 8. Continet etiam anatomies compendium.

JAN HOOGULIET *Konst om vrienden rke schouwen*, Amstelod. 1732. 8. Dimidiam libri partem efficit œconomia corporis humani BOERHAAVIANA.

ANTON. CAR. GROSS *verum universa medicina principium in structura mechanica partium reperiundum*, Hall. 1732. 4.

D. GOTTL. THEBESII *de principio rationis sufficientis maximi in anatomicis usus*, Hall. 1732. 4.

ANT. BIRR *de requisitis in demonstratione anatomica specim. I. & II.* Basil. 1732. Eruditi viri criticæ observationes.

PAUL. JAC. MALOUIN. *Ergo in reactionis actionisque æqualitate œconomia animalis*, Parisiis 1733. 4.

ANDREW HOOK *Essay on the practice of physic: or an attempt to revive the practice of the antients: with some observations on animal mechanism and materia medica*, Lond. 1734. 8.*

G. M. BOSE *rana anatome in vacuo mortua*, Lipsiæ 1734. 4.

Essays of a Society at Edimburg. Tomus I. prodit an. 1735. reliqui V. ad annum 1742. secuti sunt. Egregia plurima hic habentur, & plura quam facile in alio diario. Pleraque tamen majoris momenti jam recensui. MONROUS, SIMSONUS, GIBSONUS, STEVENSONIUS, alique anatomicas dissertationes ibi proposuerunt, historia etiam valde plena habetur Librorum novorum & inventorum ejus temporis. Explicationem tabularum EUSTACHII & collectionem figurarum partium corporis humani omnium, promittunt T. V. P. II. p. 1036. nondum autem rescivi, an prodierint.

Collectionem, quam GEORGIUS THOMSON cum *anatomy of human bones*, Lond. 1734. 8. edidit, jam recensui. Sensus, muscularem motum, digestionem, nutritionem, circulationem sanguinis totidem Libellis considerat, fere ex scriptis.

Ineunte anno 1733. edidi Librum *de diaphragmate*: prius autem *contra COSCHWIZIUM* dissertationem & paulo postea descriptionem fetus bicipitis. Inde, Gottingam vocatus, ab an. 1738. cepi edere *Commentarios in institutiones BOERHAAVIANAS*, de quibus, qui judicia aliorum legere volet, evolvat *Trivultianos* 1745. p. 360. Tomi sunt omnino VII. quorum ultimus an. 1744. in lucem exiit. Non ignoro numeros citationum passim, & sæpe quidem typographi culpa, cui numerus cifarum non sufficiebat, partim mea, vitiosos esse, & asperi nonnihil oriri ex nimis copiosis aliorum scriptorum locis. Verum certe ubique quæsi, & nihil præter verum. Hanc solam culpam præterea fateor, quod BOERHAAVIO, venerabili Præceptori meo, nimis passim adhæserim. Recusi sunt *commentarii*, Venetiis an. 1744. Turini an. 1743. & seq. 4. Vitiosam versionem suo nomine dedit JULIANUS OFFRAI dictus DE LA METTRIE. *Prælectiones* solas Angli recuderunt Londini 4. 1742. seqq. Inde, ut subvenirem discipulorum desiderio, edidi Gottingæ 1747. 8. *primas lineas physiologia*, ordine paulum mutato, & ad mea cogitata reformatas. Cellulosa telæ hic dominium explicui, & alia passim passim aliter aut descripsi aut explicavi. Cadaverum copiam nactus, coepi ab anno 1743. edere *icones anatomicas*, quarum bene multæ paratæ sunt, præter eas quas edidi; erunt autem, si vitam DEUS concesserit, omnino triginta & sex tabulæ. *Disputationes* etiam *anatomicas* melioris notæ collegi, ad BOERHAAVIANARUM institutionum ordinem digessi & Volumen I. anno 1746. II. an. 1747. III. an. 1748. IV. an. 1749. edidi Gottingæ apud Vandenhoeck. Tria reliqua continuo sequuntur. Physiologiam majorem de integro reddere, emendatis vitiis aut citationum, aut descriptionum laboro quidem, sed futura quis certus promittat! In *Philosophicis* etiam *Transactionibus*, *Commentario Norico*, *Actis Upsallienfibus*, passim aliqua mea opuscula dispersa reperiuntur.

De *Comment.* meis in BOERHAAVII institutiones legi etiam potest judicium GIANELLÆ *de leg. libr.* p. 31. Cæterum dicti *Commentarii* recusi etiam sunt Altd. 1741. 1743. 8. Versionem Parisiis excusam, quam dedit DE LA METTRIE, liberam traductionem esse fatetur *Oper. om.* p. 235.

Colle-

Collectionis meæ *Disputationum anatomicarum* T. V. anno 1750. T. VI. & VII. anno 1751. prodierunt.

GEO. FRID. WILPERT *de necessitate utilitateque anatomie pathologica in facienda medicina*, Leidæ 1733. 4.

J. BUXTORF *theses anat. bot.* Basil. 1733. & FRIDERICI ZWINGER eodem anno editæ.

Ubi BUXTORFII & ZWINGERI *theses anat. bot.* citatæ sunt, adde illas J. HENR. RESPINGER Basil. 1733.

JOH. LEMKENII *anatomie nucleus*, Gryphisvald. 1733. 4. * B. PL. EJUSDEM *de utilitate anatomies in theologia, jurisprudentia & medicina* 1733. 4. *

ILL. de REAUMUR historia insectorum multis modis ad physiologiam pertinet, ob anatomem horum animalium, victum, somnum, oculos, polypos, &c.

JOSEPHI THOMÆ ROSETTI *systema novum mechanico-hippocraticum de morbis fluidorum & solidorum*, Venetiis 1734. fol. In principio Libri habet aliqua de spiritibus, ex aere, sulfure & sale compositis, in pulmone natis, naturali judicio motus pene omnes ad crises dirigentibus.

JOS. THOM. ROSETTI l. cit. refutat. etiam POMPEIUM SACCUM & fermenta.

JOH. HOLLINGS *status natura humana expositus in oratione coram medicis Londinensibus in die festo D. Luca*, Lond. 1734. 8. *

JACOBUS NIC. WEISS Altdorfi erudita & boni usus programmata edidit ab anno 1733. quorum quinque ad me pervenerunt.

J. J. HECHER edidit Halæ 1734. 8. *betrachtung des menschlichen körpers nach der anatomie und physiologie*. *

VERDIER *anatomie du corps humain*, Paris. 1734. 1739. 8. 2. vol. & Germanice, Hamburg. 1744. 8. Inter melioris notæ compendia revoco, etsi in plerisque WINSLOWUM sequatur.

VERDIER lib. cit. Anglice prodiit 1750. 8. Ipsi etiam VERDIER tribuuntur *Nouveaux élémens d'anatomie raisonnée*, Paris. 1749. 12. Brevis fuit & in iis manit, quæ ad universam rem pertinent, fusior tamen de dentibus & ossibus. In pluribus BOERHAAVIUM sequitur, & icones compilavit.

Pluscula huc pertinent ILL. olim PLATNERI Scripta, ut *de damno ex neglecta anatomia in rem medicam redundante*, Lips. 1734. 4. *de notabilibus quæ in dissectione cadaverum animadversa sunt*, ibid. 1736. 4. &c.

JOH. TIMM *observationes anatomico-practica rariores*, Brem. 1735. 8.

JOHANNIS JUNKER *conspéctus physiologia*, Hall. 1735. 4. Physiologia fere qualis BOHNII ævo, circumspécta quidem, sed ad STAHLII placita omnino ficta. Ita parenchyma inter arterias venasque defendit, animam corpus sibi struere docet, & menses ultimos abundantius propellere, bene gnaram, eam nunc ad eliminandam plethoram viam clausum iri. Hujus operis compendium edidit Halæ 1745. 8. THEODORUS CHRISTOPHORUS URSINUS in quæstiones & responsa conjectum.

SERVATHI AUGUSTINI VILLERS *physiologia & hygieine*, Lovanii 1736. 4. Hygieine melior est. In Libro de V. S. SYLVAM sequitur.

GEORGI HENRICI BEHR *physiologia medica*, Argentor. 1736. 4.

BURCHARD DAVID MAUCHART *Diff. de anatomia medico-legali*, Tubing. 1736. Omnia hujus viri scripta utiliter leguntur.

FRANCISCI QUESNAY *æconomie animale*, Paris. 1736. 12. Ex BOERHAAVIO pleraque descripsit, ut recte olim monuit DEMETRIUS in *Comment. BOERH. I. p. 144.* & D. ANDRY in *lettres de Gléon a Endoxe*, deinde in *second Mémoire pour le Doyen & les DD. Régens de la Faculté* p. 73. Vide gradus caloris evidentissime exscriptos p. 30. 33. tum in nutritione, vasorum seriebus similem BOERHAAVII imitationem. In humoribus corporis equidem novam theoriam sequitur, atram bilem revocat, & cum muco confundit. IDEM opus Parisiis an. 1747. tribus voluminibus in 12. auctius prodiit. In theoreticis de elementis, de igne, causa duritatis aliisque fusissimus fuit. Deinde chemica de salibus plurima, aliqua vero de analysi & iis, quæ ignis de humoribus humanis separat, subjungit. Tertia pars physiologica est, agitque de humoribus, sede animæ, nervis, secretionibus. Maxima pars omnino physiologiæ penitus in tam vasto opere omittitur.

Catalogus von den anatomischen preparatis, so sich auf dem Königl. Amphitheatro zu Copenhagen befinden, Hafniæ 1636. 8. *

CAVAN de anatomia præstantia, utilitate, definitione, historia, Gryphisvald. 1736. Disp. D. PETSCHÉ (CASSEBOHMII amici & professoris) observationes anatomica selectæ, Halæ 1736. 4. Disputatio eximia & quanti vis pretii.

J. ZACHARIÆ PETSCHÉ citata disputatio recusa est in VI. Vol. disp.

Cum ERHARDI NORREN chirurgischen vveguveiser, Nurnberg 1736. 8. compendium etiam anatomicum parum utile continetur.

HENRICI HENRICI Kurzer begriff und betrachtung des menschlichen körpers, Zerbst. 1736. 8. Aliqua physiologica sunt de humoribus fibrisque.

FRANCISCI NICHOLS compendium anatomico æconomicum, Lond. 1736. 4. Viri acuti ingenii breve & in brevitate dives compendium, in tabulas digestum. Peculiares opiniones aliquæ, ut de motu cordis, cujus ventriculos alterne pulsare docet: de chorda tympani, quam pro musculo habet; de musculo pyramidali abdominis. Os palati bene descripsit.

Selecta Francofurtensia, quæ hoc anno inceperunt, & cum IV. Tomo an. 1747. finem fecerunt, primo GOELICKII, deinde A. P. QUEITSCH opera, prodierunt, & anatomica, physiologica, etiam, eristica, varia continent.

JOHANNIS FRANCISCI le FEVRE physiologia medica in T. II. operum omnium, Ventione 1737. 4. editorum, vel potius in urbe Vesoul. BOERHAAVIUM fere sequitur.

CHRISTIANI WOLF, celeberrimi Philosophi, vom gebrauch der theile in thiren und pflanzen, Halæ 1737. 8. Physiologiam & theleologiam continet. In physica etiam experimentalis T. III. de sono, de microscopiis, de animalibus in vacuo enectis experimenta habet.

D. KIRSTEN de physiologia ortu & progressu, Altdorf. 1734. 4.

J. FRID. CRELL observationes factas in partibus corporis humani morbidis, non tamen ad illustrandam sani corporis æconomiam applicandas demonstrat, Helmst. 1737. 4.

J. FRID. CRELL etiam sunt observationes nupera sectionis &c., Helmst. 1742. EJ. ad sectionem puella gibbosa progr, ibid. 1745. 4.

J. CHRIST. KUNDMANNI variora natura & artis usui esse possunt alibi laudata.

J. HIERONYMI KNIPHOF de physiologia, Erfurt. 1737.

GIUSEPPE ZINANNI delle ova e dei nidi degli uccelli, Venet. 1737. 4. habet non ova solum, sed etiam anatomen aliquam locustarum.

NICOLAI ROSEN compendium anatomicum eller beskrifning om de delar of hela menniskans kropp, Stockholm 1738. 8. Ad veram anatomen addidit ILL. ARCHIATER physiologicas observationes varias, & rariorum fabricarum observationes, ut omnino ex optimis compendiis sit.

PETRI ARTEDI ichthologia posthuma, Leidæ 1738. 8. a LINNÆO edita, plena est dissectionibus piscium anatomicis.

L. A. WESTERHOFF de cadaveribus auctoritate publica lustrandis, Leidæ 1738. Disp.

SAMUEL SCHAAARSCHMID VI. Tomos diarii, cui titulus medicinische und chirurgische nachrichten, quorum primus an. 1738. prodiit 4. Berolini edidit. In iis non solum anatomiam practicam plurimam dedit, sed varias partes physiologiæ propriis dissertationibus persecutus est.

J. MICHAEL SCHWARTZ de membranarum ac tunicarum corporis humani numero, Argentor. 1738. 4.

ANTON. FRANC. BARBAUT splanchnologie suivie de l'angiologie & de la neurologie, Parisiis 1739. 12.

ANT. FRANC. BARBAUT l. c. compendium fere WINSLOWI est raro aliquid proprii habet, aliqua tamen addit vasis umbilicalibus, placenta, theoria chylicationis.

RICHARDUS MEAD in egregio Libro de venenis, qui hoc anno Leidæ recusus est 8. & nuper 1747. quarta vice auctius Londini editus, cum titulo mechanical account of poisons egregiam anatomen viperæ caudifonæ dedit, cujus glandula venenifera alibi reperta est quam vulgo quarebatur. Ea debetur D. NICHOLLS. Varia de spiritibus, &c. hic utilia reperiuntur. EYUDEM Liber de imperio solis & luna, Lond. 1704. 8. & Londini an. 1746. 8. hic Gottingæ vero a me recusus, multa ad physiologiam, respirationem, vim aeris, menses, animi adfectus, utilia habet.

LIBERTUS de mechanismi in corpore humano absentia, Erfurt. 1738. 4. Acriter demonstrat, musculos non mechanice agere, animam per periosteum & ligamenta artus movere, &c.

FRANCISCI JOSEPHI OBERKAMP systema theoretico practicum, Norimb. 1737. 8. Continet physiologiam *STAHLIANAM*.

JOHANNIS ERNESTI HEBENSTREITII de usu partium carmen, Lipsiæ prodiit 1739. 8. *IDEM* vir clarissimus ab anno 1738. plura programmata anatomica perutilia dedit.

JOH. ERN. HEBENSTREIT etiam est *anatomie hominis recens nati*, Lipsi. 1738. 4.

Sed amicus noster *CHRISTIANUS GOTTLIEB LUDWIG*, pariter Lipsiensis Professor, passim utiles etiam physiologicas disputationes edidit. Ita *Decas questionum* (ad Gallicum morem aptatarum) prodiit, Lipsi. 1740. & alia 1743. qua utraque magni momenti, quæstiones utiliter pensitantur.

J. CHRIST. EUBELHUBER begriff von sein selbst erkenntniß, Regenspurg. 1739. 8. Physiologia & pathologia est.

In *J. CHR. EUBELHUBER* lib. cit. physiologia, quam habet, brevis est, & ad *STAHLII* sensum.

JOH. HUTCHINSON Oeconomy of human frame upon the principles of the new philosophy, Lond. 1739. 8. Maxime paradoxa theoria. Systema totum in vaporibus versatur, quos Auctor ait erumpere in lactea vasa, ad cor venire, exire per arterias, repelli a frigore & aere ambeunte, mutari in spiritus, &c. In œsophago valvulam fingit, ab anatomie alienissimus.

HIERONYMI LEOPOLDI BACCHETONI anatomia theoretica & practica ministra, Nuremb. 1740. 4. Vtiosissimum compendium.

In *J. THEODORI KLEIN* historia piscium, cujus missus quatuor an. 1740. & seqq. annis *GEDANI* edidit, multa etiam anatomica intercedunt.

DAVID de GORTER J. F. materia medica, Amstelodami 1740. 4. Etiam physiologiam tradidit.

JOH. JAC. GRAMBS anweisung zur Osteologie, & sic ex ordine, zur myologie, angiologie, neurologie und splanchnologie, quinque Libellos Francof. edidit 1740. 8. cum brevibus descriptionibus in tabularem ordinem digestis.

B. J. de BUCHWALD anatomicarum observationum quadriga, Hafn. 1740. 4.

CAR. FRID. SATTLER de mechanismi in corpore humano veritate, Altd. 1740. 4.

Anatomicum Lexicon in nucleo medicina quinquepartito *A. CONRADI ERNSTING* continetur Helmstatt. 1741. 4.

J. BOECLER & PHIL. HENR. BOECLER theses medicae variae, Argent. 1741. 4. & *J. BARBENES* ejusmodi theses, ibid. 1742. 4.

J. BURCHARDI SCHLERETH institutiones medicae, Fuldae 1741. 4. Stahlianam sectam sequitur.

CAR. AUGUSTUS a BERGEN Professor Francofurtensis ad Viadr. multas utiles ad anatomem dissertationes edidit. Anno 1742. *anatomes partes plures esse hactenus receptas* in programme docuit. An. 1743. dedit *pentadem observationum anatomico physiologicarum*, in qua multa bonæ notæ.

CAS. AUG. a BERGEN ibi citati est etiam *de perspiratione viscerum*, Francof. ad Viadr. 1738. 4. *EJUSDEM* etiam sunt *elementa physiologia juxta selectiora experimenta &c.* Genev. 1749. 8. Pleraque ad *BOERHAAVII* sensum sunt, nonnulla tamen propria, ut de lienis inæquali diametro, de secretionem, utilitate succi atrabilaris, nervis, materie spirituum.

Musei Imperialis Petropolitani vol. I. P. I. Petropol. 1742. 8. continet catalogum præparatorum, ut vocant, thesauri *RUYSCHIANI* in ordinem redacti, cum nonnullis animadversionibus.

Hoc anno 1742. obiit egregius anatomicus *HUNTAULD*, qui nihil scripsit, quantum novi, nisi quæ in monumentis Academia sunt, & epistolam forte quam citavimus.

PHILIPPI MAXIMILIANI DIETHEI observationes anatomico physico medicae, Herborn 1742. 8. sectiones fere medico legales.

D. LIEUTAUD Professoris Aquisextiensis, *essais anatomiques*, Paris. Compendium anatomicum uberius, in quo multa bona, & a *WINSLOWIANIS* diversa sunt; passim etiam adjectæ difficiliores encheireses.

MEMORIE de VALENTUOMINI quæ Luccæ eduntur, varia ad nostrum finem habent; inprimis PETRI TABARRANI observationes anatomicas, & de vasis bilis CAJETANI TACCONI.

F. C. LESSER in *sectotheologie*, & TREMBLEY atque BAKER de polypo, C. BONNETI in *sectologie*, Paris. 1745. 8. TURBERVILLE NEEDHAM *microscopical discoveries*, GEORGII ADAMI *micrographia*, GEORGII MARTINE *essays*: CLIFTONI WINTRINGHAMI varii Libri jam dicti sunt.

Vernünfftige gedanken von der natur 1743. 8. FISCHERI Regiomontani Prof. opus. Adtingit etiam aliquam partem physiologiæ. Vermiculos & harmoniam præstabilitam negat.

In GEORGII BERNHARDI BULFINGER viri illustris variis, Stutgardia 1742. 8. editis, habetur anatome elephantis petropolitana.

JOH. ASTRUC ergo ex subtiliori anatome ars medica certior, Paris. 1743. 4. Eximia thesis.

JOH. GOTTLÖB KRUGER *physiologie, oder zuveyter theil der naturlehre*, Hall. 1743. & auctius 1748. 8. Ad omnem sensum motum in corpore humano oriri, qui ad eum motum proportionem habeat, pro fundamento ponit: motus ergo respirationis & cordis & reliquos vitales motus utique a sensu nostri incommodi oriri docet, hætenus inter STAHLIUM & mechanicos medius, quod animam absque conscientia distincta admittat, struere tamen animam corpus neget. Sanguinem non celerius, sed lentius in pulmone docet circumagi, & refrigerari defendit, &c. EJUSDEM *Grundriss eines neuen lehrgebäudes der arzney-gelahrheit*, Hall. 1745. Hanc inprimis, quam citavi, de sensationibus doctrinam urget. EJUSDEM *Physicotheologische betrachtung einiger thiere*, Hall. 1746. 8. Teleologiæ. Penem ranarum in brachio post MENZIUM confirmat.

In *Memoires de l'Académie de Chirurgie*, Paris. 1743. 4. anatomica & physiologica aliqua ad humores corporis humani, & fabricam partium genitalium, & alias partes æconomiæ animalis spectantia habentur.

Syllabus, sive index omnium partium corporis humani, Petropoli 4. anno omisso, nisi fallor tamen 1744. Compendium anatomicum est, in quo laborarunt duo chirurgi, a MELLN & HANHARDT, quorum hic incepit opus, ille perfecit. In tabulas WINSLOWIANI ordinis labor digestus est, ita brevis, ut fere a nomenclatore non differat, Icones adjectæ, multæ quidem ex EUSTACHIO & aliis claris viris, non paucae tamen propriæ sunt, osium inprimis difficiliorum, vasorum cordis.

CHRISTOPHORI von HELWIG *anatomicum vivum*, Erfurt. 1745. fol. continet icones ad modum REMMELINI, nonnullis tamen recentiorum inventis ditatas.

Leidæ hoc anno in 8. quatuor disputationes recusæ sunt, inter quas L. HEISTERI de *choroidea*. ENSII de cordis motu.

FRANCISCUS de SAUVAGES Professor Monspeliensis ex præcipuis nostri ævi iatromathematicis est, in STAHLII sententiam pronior. EJUS commentarios in HALESIUM laudavimus, *Physiologia mechanica elementorum* primam schedam vidi, in qua de fibris, vasis & fluidis & eorum æstimando motu agitur. Liceat ad insignem meritis virum dubiorum aliquid proferre. Nonne longe magis elongatur fibra ventriculi flatu, quam parte septima, nec tamen rumpitur? An consentiunt cum WINTRINGHAMIANIS quæ habet de viribus arteriarum ad venas comparatis? An vere vasa in fetu & adulto semper eandem inter se proportionem habent? Quæ bona cum pace VIRI quærimus.

An *essay on comparativ anatomy*, Lond. 1744. 4. Quisquis Auctor fuerit, valde certe placet, quo utiles comparationes fabricæ humanæ cum animali continentur, etiam propriæ observationes. Solet vero canem, vaccam, aviumque & piscium fabricam considerare. Ipse p. 64. proprias inquisitiones citat, & p. 71. suorum in allantoide humana invenienda tentaminum meminit.

FRANCISCUS SALESIUS DANIEL PAULLIN ergo *functiones alia ab aliis pendent*, Parisiis 1744. 4.

JO. LETHIEUILLIER ergo *physiologia basis mechanice*, Paris. 1744. 4.

M. P. T. J. C. *tabula sciagraphica corporis humani, oder beschreibung des menschlichen körpers in tabellen*, Görliz. 1744. fol. *

GERARDUS van SWIETEN in *comm. ad aphorismos BOERHAAVI* multa admiscuit experimenta physiologica partiumque descriptiones, & vivorum animalium utiles dissectiones.

JUSTI

JUSTI GODOFRIDI GUNZII *comm. in Libr. HIPPOCRATIS de humoribus laudavimus*, Lipsi. 1745. 8. & varias disputationes.

Theatrum anatomicum animalium, plantarum & aliorum corporum naturalium Auctore D. ANTON de MONRAYA ROCA D. & anat. Madrit. 174.... (D. TRIV.)

CHRISTOPHORI HENRICI KEILII *compendiöses doch vollkommenes handbüchlein*, Lipsi. 1740. 1744. 1747., &c. Pro tironibus.

ANTONII COELESTINI COCCHI Mugellani viri doctissimi *oratio de usu artis anatomica*, Florent. 1736. 4. Aliqua ad historiam medicinæ & anatomes habet. De vivorum hominum sectionibus, quæ antiquis tribuuntur, calumnias refutat. EYUDEM *discorso d'anatomia*, Firenz. 1745. 4. ad inaugurandas prælectiones anatomicas in Nosodochio D. Mariæ novæ habitus. Ad historiam anatomes varia continet. De codice M. S. in quo APOLLONII CITIÆI *comm. ad HIPPOCRATIS Lib. περί ἀρρώγων* aliqua monet. Ibi locus HEROPHILI novus. Promittit CELSUM. Sed heu occidit! Ex ASCLEPIADE etiam fragmentum edidit.

A. F. LAMBRECHTS D. Jur. & Med. *compendium anatomico-medico-practicum*, Hardervvyck 1747. 8. Quæstionum modo proponitur, non maximi momenti.

JULIANI OFFRAI dicti *de la METTRIE institutions de medecine de BOERHAAVE avec un commentaire*, Paris. 1743. seqq. VI. vol. 12. Dixi versionem esse mei operis, & faterur JULIANUS in præfatione, sed adjecit varia, & inprimis rudes errores. Calculos corrumpit, quoties aliqui adfuerunt GIORN. citat pro Auctore (quod est GIORNALE de' LETTERATI). Vim vesicæ metitur tribus pollicibus, cum oportuisset tribus uncis metiri. BRESLAU pro Auctore citat. Plurimum etiam est locorum in quibus nullus omnino sensus est, & innumeris locis longe alius reperitur, quam in meo autographo. Vide de eo CL. MONTAGNAT *lettre au sujet d'un nouveau genre de vaisseaux*.

J. G. H. (HEYMANN) *quatuor tomos commentariorum in institutiones BOERHAAVII* edidit, Leidæ ab an. 1744. Multum utitur dissertationibus Leidensibus, etiam nostris commentariis, aliqua ab ALBINO utilia admiscet. Videntur plurimi tomi successuri esse.

J. G. H. (HEYMANN) *quatuor tomis commentar. in instit. BOERHAAVII* quos diximus, quintus accessit 1750. 8.

In JAMESII dictionario medico, quod nuper gallice versum VI. vol. fol. prodiit, continetur tota anatome, fere ad WINSLOWI ductum. Multum etiam anatomes, etiam icones aliquæ in J. P. BURGGRAVII celeberrimi practici, *Lexico medico* est, cujus tantum A & B prodiit: Multa neque inutilia reperies, in J. H. SCHULZII editione Lexici BLANCARDIANI. *Lexicon etiam anatomicum in suo nucleo medicina quinquepartito* dedit ARTHUR CONRAD ERNSTING, Helmstad. 1740. 4. Pro tironibus.

ANTONII le CAMUS *poema in Amphitheatrum medici ordinis Parisiis exstructum*, Paris. 1745. 4.

CHRISTIAN ALBRECHT GOTTHILF GRUNER *consilium bibliotheca physiologica*, Altdorf. 1747. 4.

AUG. SCHAARSCHMIDT edidit etiam catalogum thesauri anatomici Berolinensis Berolini 1751. 8.

AUGUST. SCHAARSCHMIDT *Splanchnologische tabellen*, Berolini. 1748. 8. Splanchnologia WINSLOWIANA.

JOHANN. THEODOR. ELLER *physiologia*, Schneeberg. 1748. 8. a 7. CHRIST. ZIMMERMANN edita, Germanica lingua, ab ipso ILL. ELLERO publice damnata est, quæ supposititia sit, & nata ex male castigatis prælectionibus. Inprimis BOERHAAVIO & WINSLOWI utitur.

J. FR. HENKEL in suis collectionibus *medizinischer und chirurgischer anmerkungen*, quarum tertia nunc pars prodiit, editis, Berolini 4. 1747. 1748. omnino & practica anatomica, & alia ad usus nostros habet.

J. B. chirurgi *traité de cephalatomie ou description anatomique des parties que la tête renferme*, Paris. 1748. 4. Plura quam titulus continet, systema ossium, musculorum, nervorum, humorum, cum iconibus plerisque propriis.

JANUS PLANCUS de monstris & rebus monstrosis habet etiam aliqua ad os hyoides &c. THOMÆ BIRCH *the wisdom of GOD proved from the frame of man*, Londin. 1749. 4.

Bre-

Demonstratores sunt tres (a)

.I. MI-

Breviter ad sensum *DERHAMI* scripsit. Multum tamen acute contemplatus est, ut sensum mediocritatem.

In nupera editione *Land en Zee chirurgie* *JOHANNIS VERBRUGGE* emendata habetur vetusta illa anatome quæ in prioribus editionibus exstat. Totam anatomen & compendium physiologiæ adjecit *J. DANIEL SCHLICHTING* Amstelod. 1750. 8.

Suis locis laudavi *BUFFONI* opus, sed aliquo eorum tomorum qui sequuntur, integra physiologia continebitur.

ANTONII LOUIS positiones anatomico-chirurgica de capite, Paris. 1749. 4. ultra modum inanes.

AL. CANTWELL, *Ergo microcosmi vita motus mere mechanicus*, Paris. 1749. 4.

CHRISTIAN EHREHRIED ESCHENBACH anatomische beschreibung des menschlichen körpers, Rostok 1750. 8. Libera versio operis *WINSLOWIANI* cum animadversionibus nonnullis *CL. VIRI*.

J. AUGUST UNZER philosophische betrachtung des menschlichen körpers überhaupt, Hall. 1750. 8. Physiologia.

PONTONOO (nomen Arcadicum) *descrizione del corpo umano*, Florent. 1750. 8. in 2. tomo *dissertazione e lettere* breve compendium anatomes.

In *Primitiis physico-medicis Polonia* varia habentur ad deglutitionem, arteriarum divisionem ut causam secretionis, superfetationem, velocitatem sanguinis, &c.

CORNEL. THOM. SNELLEN de varia vita energia, Leid. 1750. 4.

WILL. GIBSON in tractatu on the diseases of hoases, Lond. 1750. 4. hujus animalis anatomen dedit.

Porro observationum medicarum scriptores, & Auctores medicinæ forensis omnes: & biographi, atque lexicographi medici, & physices scriptores plerique *ROUHAULT*, *SCHEUCHZER*, *MUSSCHENBROEK*, *'S GRAVESANDE*, *DESAGULIERS* & multi scriptores historiæ animalium habent, quod ad anatomen profit. Sed eos suo loco laudavi.

(a) Nolo huc referre condituram corporum Ægyptiam. Ea enim mero circumfuso bitumine facta fuit, *POCOCKIO* teste *history of Egypt* p. 230. ut etiam in cranium bitumen infunderent. *DIOCLIS* de administrationibus anatomicis Liber periit. Quare de methodo disseccandi primus Auctor certe *GALENUS* est, cujus *administrationum anatomicarum* Libri IX. ad nos pervenerunt, seorsim interprete *GUINTERO* Paris. 1531. fol. excusi. Earum enim aliquas, ut experimenta, ad vim influxus nervei demonstrandam, valde solícite *GALENUS* descripsit. Inflabat autem tuba, qualis est aurificum, Libro IX. c. 2.

Inde in illa *parva anatomia CAPHONIS* & apud *MUNDINUM* aliqua rudimenta methodi secandi reperiuntur: alia apud *NICOLAUM MASSAM*, *JACOBUM CARPENSEM*, aliosque ejus seculi medicos.

Sed *ANDREAS* inprimis *VESALIUS* ubique suas encheireses cum descriptionibus conjunxit.

REALDUS COLUMBUS sceleti parandi modum, ut in Osteologicis dictum, exposuit.

Eo tempore ars injiciendi jam aliqua fuit. *CARPENSIS* enim *BERENGARIUS* tentavit per arteriam ureterem replere p. CLXXVIII. b.

CAR. STEPHANUS administrationem descriptioni subjecit. Inflatoria specilla ad membranas inflandas commendat p. 745.

JACOBUS SYLVIVS meminit injectionis liquorum diversorum colorum, crocatorum, vinatorum aliterve tinctorum, quæ per tubulos fieret, & cui ipse præfert inflationem in vasa per tubulos factam *Isag. anat.* Lib. III. p. 68.

AMATUS LUSITANUS vascula siphone, sive syringa impulso spiritu a se repleta citat *Cent. IV. hist.* 100.

BARTHOLOMÆUS EUSTACHIUS adeo artificiose vasa depinxit, in Tab. inprimis XIII. & XXVII., ut absque injectione liquidi id fieri potuisse vix credibile sit. In arteriam certe renalem injectam aquam in ureterem venisse disertus auctor est *renib.* p. 135.

Neglectum autem esse hoc artificium satis constat, unde apud nuperiores, & *CASSE-RIUM*, vasorum cognitio potius imminuta est.

AM-

I. MICHAEL LYSERUS, in *cultro suo anatomico* (a), edito in 8. Auctor ille per totam fere Europam peregrinatus erat, & in omnibus fere locis stipendium

AMBROSII PAREI *briefue collection de l'administration anatomique*, Paris. 1549. 8. Potius compendium equidem est quam culter anatomicus, administrationes tamen aliquas habet, etiam ad sceleton parandum, ad sectionem cæsaream.

PETRI BELLONII *de medicato funere*, Paris. 1553. 8. erudite sed inprimis botanice scripsit. In editione LUCRETII, quam NARDIUS dedit, antiqua conditurae Ægyptiæ ratio exprimitur, uti dixi.

JOACHIMI STRUPPI de GELHAUSEN *consensus medicorum de mumia genuina*, Franc. 1574. 4.* & Germanice ibid. eodem anno 4. cum descriptione Ægyptii cadaveris.

MEICHIOR SEBIZ *de balsamatione cadaverum humanorum*, Argentor. 1649. 4.

ANDRÆ RIVINI *de pollinctura*, Lips. 1655. 4.

C. VAROLIUS, F. SYLVIVS, T. WILLISIUS, DANIEL DUNCAN (*Traité des actions animales*), J. E. HEBENSTREIT *de methodo cerebrum incidendi*, Lips. 1739. 4. aliique varias cerebri præparandi methodus proposuerunt.

J. B. CARCANUS in suis opusculis methodum secandi satis solícite tradidit.

Aliqua, ut supra monuimus, adjecit HILDANUS, & fere utique secandi modum subjecit NICOLAUS HABICOT. Excarnationis, ut vocant, artificia, quæ sibi tribuit inventa an. 1617. SEVERINUS, in hepate primum tentata *zootom.* Democrit. p. 404. HADRIANUS SPIGELIUS, & alii eo tempore exercuerunt, & exemptas de corpore arterias venasve paravit JOHANNES ATHELSTEINIUS LEONCENA (*BOYLE de util. phil. experim.* p. 120. *Phil. Transf.* n. 280.) EJUS VIRI tabulas vasorum & nervorum etiam BARTHOLINUS habuit *hist.* 81. C. nt. IV. *resp. de exper. Bilf.* p. 34. tum similibus a FUIRENIO paratarum exemplaria, & a PETRO HOUFWENIO, cujus cupreum sceleton cum arteriis, venis, nervis, miris laudibus effert J. van HORNE *vuarschouwing* p. 22. 23. qui ipse de eo artificio varia ibi consilia dat.

F. GLISSONIUS injectione omnino usus est, tubulum etiam delineavit in *Libro de hepate* p. 211.

Anatome pneumatica, sive quæ aeris ope fit, non magni momenti est inter opuscula nova RIOLANI.

ALEXANDRI READ *manual of dissection*, Lond. 1650. 12.

(a) MICHAEL LYSER in brevi vita amatus præceptor discipulus fuit, qui cum ipso gloriam inventorum vasorum lymphaticorum communicavit (in *præf.*), & absque quo nihil singulare invenisse T. BARTHOLINUM RUDBECKIUS criminatur, non tamen absque alia in PRÆCEPTOREM invidia fuit, de qua a morte LYSERI queritur BARTHOLINUS. Artificia sua, crassorum musculorum sectiones ossiumque inprimis parandorum modum, in *cultum anatomicum* sive *methodum humana incidendi cadavera* conjecit, qui Hafniæ an. 1653. 8. prodiit, inde cum observationibus BOGDANI MOINICCHENII, SEIDELII & aliorum recusatus a T. BARTHOLINO, Hafniæ 1665. 8. auctior vero tertia vice cura C. BARTHOLINI *specimine demonstrationum anatomicarum*, Francofurti 1679. 8. Leidæ anno 1726. 8. 1731. 8. Germanice vero a J. TIMMIO cum addita C. BARTHOLINI *methodo*, Bremæ 1735. 8. recusatus, Londini denique a G. THOMSON Anglice versus prodiit anno 1740. 8. Nimis nunc increvit anatome, neque ullo modo sufficit nostri temporibus.

THOMÆ BARTHOLINI *domus anatomica*, Hafn. 1662. 8. Mechanica varia huc pertinentia habet, & catalogum præparatorum. EJUS *consilium de anatome practica*, Hafniæ 1674. 4.

Injectione sed atramenti & aliquorum coloratorum etiam T. WILLIS, (*de cerebro* p. 6.) P. BORELLUS *Cent. III. observatione* 6. J. J. WEPFER & MARCELLUS MALPIGHIVS, & R. VIEUSSENS usi sunt. Ceram tamen oleo terebinthinæ dilutam jam WILLISIUS laudat, quæ materia prope a perfectione distat (*pharm. ration.* II. p. 4.)

LUD. de BILS nobilis, sed pene analphabetos homo, qui vix nomina partium nosset, (*F. CRAANEN de homin.* p. 119.) magnum rumorem excitavit tum balsamo, quo condiebat cadavera, tum arte qua animalia viva absque sanguine secabat, arcanorum more gentis ama-

dium meruerat, ut profector anatomicus. Domum tandem redux scripsit illum Libellum de dissectionibus anatomicis cadaverum.

2. Ma-

amator, *TOB. ANDREAS* p. 85. Et illa quidem ars etiam adversario placuit *JOHANNI* van *HORNE vvaarschouwing* p. 31. ut *BILSII* balsamum supellectili argentea redimere voluerit. Flexilia enim membra manebant, aptaque dissectionibus (*TOB. ANDREÆ* L. c.) Ea ars post plurimos Libellos tandem æterno silentio pressa est. Nempe *L. BILSIUS* *aan de liefhebbers der anatomie*, Roterodami 1659. 4. & in *responsione* ad van *HORNE* & *BARBETTE*, Roterod. 1660. 4. 1661. 4. sub titulo *kort bericht* & in *fusiori codicillo*, Roterod. 1661. 4. & alibi venum exposuerat hanc mercem, immenso pretio. Defenderat *BILSIUM ANTONIUS DEUSINGHIUS* in *exerc. de admiranda anatome LUD. de BILS*, Roterod. 1661. 4. & *BURCHARDUS WITTEBERGIUS* in *déclaration pour donner a connoître la nouvelle dissection sans effusion du sang*, Brugge 1657. 4. & *TOBIAS ANDREAS* in *balance balsamationis Bilsiana & Clauderiana*, Amstelod. 1682. 12. ubi & *BILSIANAM* laudat artem, & sibi, qui cum *BILSIO* secuerit (p. 85.), pulchra præparata tribuit sua arte facta p. 53. animalium imprimis integrorum, uteri ovilli, infantis demum recens nati, quem multis a conditura septimanis accurate secuerit. Contra eam vero artem & nimia ejus pretia dixerunt *J. van HORNE vvaarschouwing*, Leidæ 1660. 4. & *PAULUS BARBETTE* *aanmerkinge over LUD. de BILS*, Roterod. 1660. 4. *T. BARTHOLINUS* de *experimentis anatomicis BILSII* 1661. 8. *J. H. PAULI* in *anatomes BILSIANÆ anatome*, Argentor. 1665. 8. neque voluerunt anatomici immensam vim nummorum suppeditare, centum nempe & viginti florenorum milia. Tandem Status Brabantiae artem *BILSIANAM* haud mediocri nummorum vi redemerunt, 22000. nempe florenis (vide *L. BILSII resp. ad TOBIAM ANDREAM*, Roterodami 1669. 4.) Sed corpora a *BILSIO* pro Lovaniensi Academia parata brevi computruerunt, *BORRICHIO* monente de *hermetic. medicin.* p. 210. etiam ipso Auctore fatente (ad *T. ANDR.* p. 40.), & tota res in fabulam abiit, cujus historiam descripsit *LUD. BILSIUS* in *Ep. ad TOB. ANDREAM* cum *ANDREÆ* Liber de balsamatione, & ejus brevi extracto *istorum in cadaveribus BILSIANA methodo preparatis*, Marburgi 1678. 4. recusa.

CLAUDERIUS præparata absque balsamo facta fuisse, sapore salino testis est: & *BILSIUM* ex putridis cadaveribus phthificum periisse, suumque arcanum sepeliisse (p. 130. seqq.)

Incruenta anatome aut vinculorum (*BORRICH.* ad *BARTHOL.* *epist.* 89. *Cent.* III.), aut injecti liquidi coagulantis ope (*GRAAF* de *usu siphonis* p. 534.), aut salis mirabilis *GLAUBERIANI HEUCHER.* *ars magn. anat.* n. 45. aut alio arcaniori artificio nititur. Sed eam potentiam huic salis omnino negat *J. F. CARTHEUSER* in *pharmac.* p. 413.

Circa ea etiam tempora plurima fama fuit infusionis & transfusionis. In illa scopus est varia medicamenta in sanguinem infundere, quæ vim suam longe acriorem demonstrant, circulationem vero sanguinis evincunt, quod in omnem corporis ambitum suam efficaciam circumferant. Eam *CHRISTOPHORO WREENIO* Angli tribuunt, ut *J. SPRAT* in *Hist. Soc. Reg.* p. 317. & Societas ipsa *Phil. Transf.* n. 7. 35. ut tamen *BOYLEUS* apparatus mechanisimum proposuerit. *J.* vero *DANIEL MAJOR* in *memoriali anatomico* n. 5. *JOHANNEM GEORGIUM* von *WAHRENDORF* adducit, qui an. 1642. in pago Lusatiæ Luche infusionem per venatorem suum in canibus administraverit. Ejus artificis historiam & experimenta in *Phil. Transf.* legas n. 7. 29. 30. 35. 39. 191. 192. 210. 240.

J. D. MAJOR cujus experimenta circa infusionem & transfusionem instituta diximus, de his etiam egit in *delictis hybernis*, Kiel. 1667. fol.

CAROLUS FRACASSATUS ex primis hæc experimenta imitatus est *Epist. de cerebr.* p. 411. seqq. Et *J. D. MAJOR* in *proedromo inventa a se chirurgia infusoria*, Lipsi. 1664. 8. & in *memoriali anatomico*, Kiel. 1669. 4. Obs. I. felices suos in infusoria chirurgia conatus laudavit. Idem in *chirurgia infusoria*, Kiel. 1667. 4. de operatione, quam vellet invenisse, cogitationes aliquas tradidit & instrumenta, absque experimento. (ipso fatente in *ocasu & regressu chirurgia infusoria.*)

J. SIGISMUNDUS ELSCHOLZ in *clysmatica nova*, Berolini 1667. 8. (& prius an. 1661.) infusionis experimenta pluscula habet, etiam in homine factæ, propria, & alia Gedano communicata, non incommode certe, alienorum vero compendium.

2. Magnus VESALIUS post singula capita sua docet, quo modo demonstranda
Q q q q

7. SIG. ELSHOLZ *clysmatica nova* Germanice versa est *neue clystierkunst*, Berolin. 1665. 8. Infusoriam etiam exercuerunt O. BORRICHIVS in orat. de sanguine & in BARTHOL. Ep. 92. Cent. IV. T. WILLIS *pharmac.* 7. C. BRUNNER de pancreate, MALPIGHIVS de polypo, C. DRELINCOURT. in canicidiis, R. BOYLE de util. phil. experim. HARDER in apiario, MICH. ETTMULLER Disp. de chirurgia infusoria, Lips. 1668. Academici Galli apud du HAMEL p. 58. P. S. SACHSIUS in oceani microcosmici fluxu & refluxu; R. GRAAFIVS, PEYERUS in exerc. ANTONIVS de HERDE in exper. anat. F. PETIT epitre II. CAPREZZO & MASSUELI in Galer. di Minerv. VII. p. 153. COURTEN in Phil. Transf. n. 335. J. FREIND in emmenologia, GEORGIUS BAGLIVUS de abusu vesicant. & in Diss. VIII. CHRISTIAN FRIDERICUS GARMAN in Centuria epistol. n. 30. PURMANNUS in chirurg. Lorberkranz III. pag. 274. (qui in se ipso operationem passus est p. 277.), PINELLI de podagra pag. 230. A. PASTA de motu sang. a morte, & alii; Chineses demum, fraudulentissimi mortalium, in porcorum venas aquam infundunt, ut pondus augeant, GEMELLI CARRERI in itinere IV. p. 299.

Huc etiam ex historicis pertinent ortus & progressus *clysmatie nova*, Goth. 1667. 4. & occasus & regressus *chirurgie infusoria* ibid. 1667. 4. Prior Libellus commendat experimenta ELSHOLZII. In altero MAJOR pungit eundem. Huc etiam 7. C. STURM transfusi sanguinis historia, Altdorf. 1676. Disp.

Nunc audio in Italia hoc seculo hanc quaestionem renovatam fuisse. PRIMITIVS GABELLO sub titulo Coloniae scripsit *la Taccia ripresa*, contra infusoriam chirurgiam occasione illustris personae, quae post infusionem alexipharmaci obierat. Defendit infusionem VINCENTIVS RENZONI in *difesa del D. V. R. Lucca* 1716. 4. Sed respondit D. BERNARDINVS MARIANI in *risposta alle censure del D. RENZONI* Lucca 1716. 4. Nihil horum ipse legi.

RICHARDUS LOWER in fusione prius exercitus, de transfusione sanguinis integrum in Libro de corde caput IV. habet. Eam sibi tribuit, an. 1665. primum exercitam, prius tamen ab HENSHAWO an. 1658. tentatam Phil. Transf. n. 38. Nam qui BILSIO tribuit, TOBIAS ANDREAE, nemini persuadet. ANDREAS LIBAVIVS in appendice ad syntagma chymicorum arcanorum, Franc. 1615. fol. intra conjecturam substitit. Inventum, ex quo immortalitatem sperarunt, sanguinem de sano animali in ægrum vel hominem vel animal transfuso, vide in Phil. Transf. n. 19. 20. 22. 25. 26. 27. 28. 30. (experimentum in homine factum) 32. 35. 36. 37. 54.

MAURITIUM HOFMANNUM an. 1663. in programme transfusionem descripsisse auctor est IRENÆVS VEHR. Id scriptum nondum vidisse contigit.

Successerunt scripta varia confertim edita. Ita C. TARDY an. 1667. Parisiis edidit scriptum de l'écoulement du sang d'un homme dans les veines d'un autre. Ubi probavit inventum.

Eam transfusionem 7. D. MAJOR sibi tribuit & ad ipsum etiam gloriam inventi refert MANFREDUS c. I. 1. seqq.

DENYSIVS Medicus plurimum inprimis in transfusione laboravit. Eam in cane tantatam retulit in JOURNAL DES SAVANS 1667. 14. Maj. n. 8. Deinde subiecit lettre écrite à M. DE MONTMOR touchant une nouvelle manière de guérir plusieurs maladies par la transfusion du sang, Paris. 1667. 4. & responsionem conjunctam cum priori epistola, Lamy 1667. 4. & lettre touchant une folie invétérée guérie par la transfusion, Paris. 1668. 4. (quem casum SORBERIVS in Giorn. de' Letter. Romæ 1668. p. 23. cum laude recensuit), in qua sanguinem agni in virum feliciter transfusum narrat, ope D. d'EMERETZ, & in juvene stupido, quem sanatum fuisse credebatur, præter canes varios.

In Actis etiam Danicis felix eventus narratur III. n. 54.

PAULUS MANFREDIVS in Libr. de transfusione sanguinis, Romæ 1668. 4. exempla & in homine felicia habet, & in canibus, & artem defendit, quam ipse exercuerat.

Relazione dell'esperienze intorno alla trasfusione del sangue, Romæ 1668. 4.

Ondervinding door de beroemste geneesheeren van het leyden des bloeds uyt een gedier te ip het ander, Leuvvaard. 1668. 12. MEIB. *

da & exponenda sint omnia, & nullus est scriptor, qui cum eo comparari mereatur,

IRENÆI VEHR *presidium novum chirurgicum de methamo chymia*, Francof. ad Viadr. 1668. 4. disp.

Felicia habet in canibus exempla IPPOLITI MAGNAGNI, non tamen absque incommodo, deinde collectionem eorum, quæ pro operatione & contra eam in Gallia scripta fuerant. Ea experimenta, Bononiæ apud CASSINUM facta, recensentur etiam in *Journ. des Savans* 1668.

Contra transfusionem autem, qua brutorum animalium sanguis in hominem fundebatur, intra breve tempus plurimi scripserunt. PERALTI scriptum *de la transfusion* exstat in *essays* T. IV. qui inventum ob coagulationem sanguinis damnavit. G. de MONTPOLLI epistolam scripsit ad BOURDELOTUM sub titulo *lettre touchant la transfusion*, Paris. 1668. 4. ubi dubium experimentum esse, & ipsos aliquando canes periisse monet. BARTHOLOMÆUS SANTINELLI *confusionem transfusionis sanguinis*, Romæ subjecit 1668. 8. (MERCL.) Sed inprimis D. LAMY in *Epitre* I. a M. MOREAU *contre l'utilité de la transfusion*, Paris. 1667. 4. accusavit transfusionem ob nimiam copiam sanguinis, quæ subito admittitur, ob sanguinem animalis ab humano diversum, &c. Eadem fere argumenta sunt EURYPHRONIS *Pseudonymi de curandis morbis per transfusionem sanguinis*, Paris. 1668. 4. Deinde secundam epistolam ad M. MOREAU subjecit LAMYUS *dans laquelle il confirme les raisons rapportées dans la précédente*, ibid. 1667. 4. ubi iterum canem a transfusione periisse refert, & DENYSIO mortem Sueci nobilis exprobrat. Neque non solum stultus ille, de quo gloriatus erat DENYSIUS, verum nobilis a BONDE, qui ex inflammatis intestinis laborabat, administrata transfusione perierat. Is casus finem attulit invento. Nam etsi *responsionem ad objectiones* LAMYI ederet GADROYS sub titulo *lettre de M. GADROYS a M. BOURDELOT pour servir de réponse à la lettre de M. LAMY*, Paris. 1668. 4. felicia in cane experimenta laudaret, & mortem BONDII excusaret, publica tamen accessit auctoritas, quæ in homine transfusionem fieri vetuit, ut in infusione tamen pergeret DENYS (DIONIS *cours de chir.* p. 498. du HAMEL p. 21. 22.). In animalibus pauci post DENYSIUM tentarunt, ut GRAAFIUS, & ANTONIUS NUCKIUS qui ex theoria laudavit.

Auctorem sub nomine EURYPHRONIS invenio nunc esse PETRUM PETITUM, celebrem virum.

Relazione dell'esperienze fatte in Inghilterra, Francia, ed Italia intorno alla celebre e famosa transfusione del sangue, Bologna 1698. 4. *

G. ABRAHAM MERCLIN *de ortu & occasu transfusionis sanguinis*, Nuremberg. 1679. 8. Refutat operationem, ejusque pericula demonstrat, absque tamen proprio experimento. Ægros duos G. RIVÆ per transfusionem periisse, etiam adlatis testibus, confirmat, ut a PONTIFICE MAX. prohiberentur medici, ne experimentum urgerent.

Interim in Belgio inprimis varia tentata sunt ad præparationes anatomicas. THEODORUS KERKRINGIUS succino, ut creditur, liquefacto partes corporis subtiles docuit præparare, & infantem eo bitumine circumfusus adfuisse inter ejus thesauros MORHOVIUS testis est in *polyhistore* Lib. II. P. II. p. 293. In spiritu vini defæcato, cum paucis spiritibus salis ammoniaci, circa ea etiam tempora excogitatum est conservare animalia minora BOYLE *Phil. Trans.* n. 12. quam artem an. 1675. N. GREVIUS exercuit *cat. rar. mus. Soc. Reg.* p. 58. qui modus brevi postea ad anatomica translatus est. Nunc spiritu frumenti, saccharive, vulgo utimur. Debilis spiritus molestam fecit renovationem ob sordes quas deponit, colore etiam opaciori est. Fortissimum alcohol præter pretium valde constringit, ut olim observavit P. J. HARTMANN *de perit. vet. anatom.* I. p. 40.

Gypso etiam & saccharo saturni in spiritu aceti soluto fuerunt qui vasa replerent jam BOYLEI tempore de *utilit. physic. experiment.* p. 121. Idem Gypsum laudavit THOMAS ALGHISI *giorn. de' letter.* T. VI. p. 162. seqq. Et quidem calore non eget, non tamen satis est solubile.

THOMAS ALGHISI ad replenda vasa gypsum etiam laudavit apud VALISNERIUM T. I. p. 304. *operum.*

REGNERUS de GRAAF injectorium siphonem primus delineavit, eoque usus est ad injectiones colo.

tur, utileque foret institutum, si VESALII de administratione præcepta in uno capitulo descripta haberentur pro tironibus in eorum usum.

3. Ve-

coloratas, *de usu siphonis*. Idem mercurio ad replenda vasa perite usus est, an primus, nondum inveni. Certe pulcherrimam repletionem vasorum testis nulla alia arte perficere potuit.

JOHANNES SWAMMERDAM, cum sumtibus JOHANNIS van HORNE sublevaretur, excogitavit injectionem solidam, quæ non diffunderet, & calide injecta frigore cogeretur, sic vasa ad dissectionem aptissima redderet. Ita ipse in *notis ad prodromum* p. 37. HORNII, & luculentissimus testis est RUYSCHIUS *de musculo uteri* p. 2. Sed HUDDENIUM, celeberrimum ob cognitionem matheseos Amstelodamensium Consulem, docuisse diversi coloris liquores injicere, ut idem ait SWAMMERDAMMIUS L. c. p. 38. id quidem post priora fidem non retinet.

FRIDERICUS RUYSCHIUS, amicus SWAMMERDAMII, in injectionibus & præparationibus eminuit, & valde juvenis excelluit. JOHANNEM certe van HORNE anno jam 1664. lienes suos publice exhibuisse ipse testis est RUYSCHIUS *obs.* 100. Replebat enim vasa subtilissima, ut ante eum nemo, arcana materie usus. Ea, si ulla RIEGERO fides (*introd. in hist. natur. & arte factor. artic. balsamatio*) sebum est. Ea replebat minutissima vasa oculorum, cerebri, periosteï, &c. Deinde callebat artem, partes corporis fluxas mollesque indurandi, ut ipsum cerebrum in spiritu terebinthinæ (*epist. ad SCHELHAMMER. pag. 353.*) Cellulositates etiam flatu distentas conservare primus adgressus est. Denique nemo ab eo pueros siccos dormientibus similes conservare potuit. Id enim, ut in liquido spiritu facile est, ita in aere difficillimum experietur, qui tentabit. Quantam admirationem autem consecutus sit industria sua etiam PETRI Primi aliorumque Regum, nihil necesse est fusius recensere.

Contra RUYSCHIIUM vero varia monet CL. LIEBERKUHNIIUS ob mota de situ vasa, nimis mollem materiem & nimis pinguem (*in monument. Berolin. 1748.*)

C. STALPART van der WIEL artem siccandorum artificiose humanorum corporum invenit, SWAMMERDAM *prodr.* p. 36.

J. SCHRADER methodum balsamo condiendi edidit cum suis & WILHELMI LANGLEY observationibus.

SIMON PAULI *epistolam* ad T. BARTHOLINIUM scripsit, sive *modum ossa dealbandi*, Hafn. 1673. quæ ars *Act. Hafn. vol. II. redit.*

Vasa miro artificio corpore eximebat ANTONIUS de MARCHETTIS PETRI f. C. PATIN in *Lyceo Patavino* p. 63.

C. BARTHOLINIUS post *Librum de diaphragmate* in app. siphonem descripsit, tum *ACT. HAFN. vol. IV. n. 4.* & in *Libro de præparatione viscerum*. Bieruris erat, ut continuo & forberet aquam & expelleret. IDEM in *ACT. HAFN. T. V. n. 32.* dedit breve compendium, neque inutile, cultri anatomici, sub titulo *methodi demonstrationum anatomicarum*, quod a TIMMIO & a priori etiam editore, LYSERO adjectum est.

In C. BARTHOLINI ibidem dicti *epistol. I. cent. n. 65.* describitur sceletos Opuntia aqua parata.

CASPARI CLAUDER *methodus balsamandi corpora humana*, Altenburg. 1679. 4. Similia BILSIANIS se præstiturum promisit. Sed in eum TOBIAS ANDREAS scripsit, meraque muria uti exprobravit.

CASPARI CLAUDER *Librum citatum* nunc legi. Contulit omnia de ea re scripta, & ipse experimenta varia fecit. Invenit mel non conservare corpora, neque ceram, contra veterum testimonia. Ipse usus est spiritu salis ammoniaci tartarifato.

Statuam humanam, quæ circulationem sanguinis exprimeret J. REISELIUS excogitavit E. N. C. Dec. I. ann. IX. & X.

Et de *præparatione artificiali pro circulatione humorum vitali secretoria & excretoria* disputavit CL. STAHL, Hall. 1710. 4.

Nunc & microscopium adhiberi cepit. FRANCISCUS STELLUTUS eo in apibus usus erat, dederat etiam aliquas observationes PETRUS BORELLIUS in *obs. microscop. alique*, quos in phycis citavimus. Artificiosius adhibuit M. MALPIGHIUS, ut anatome plantarum,

3. Verum, qui linguam Britannicam callent, legant COWPERUM in demonstrationibus suis in *myotomia reformata*; qui etiam adjunxit inventa ex FALLOPIO, aliisque, & ex DUVERNEYO (a).

Nunc rum, ovum incubatum, anatome ranæ in *posthumis* argumento sunt. Et si vero aliqua contra attulerit RERKRINGIUS, & alii, & fallacem exprobrarent efficaciam p. 93. nemo tamen iis cavillis motus est.

J. SWAMMERDAMIUS pulcherrime microscopio, sed fere ad insecta usus est.

ANTONIUS vero van LEEUWENHOEK, parum literatus civis, in ea arte eminuit, ut in physicis dictum est. In anatome circulationem sanguinis in vivis animalibus (post MALPIGHIIUM), vermiculos feminales (post HAMMIIUM), fabricam dentium, lentis crystallinæ, muscutorum, infinita alia descripsit.

STEPH. BLANCARD de modo balsamo condiendi Libellum dedit in *jaarregister* I. n. 4. de quo nescio an sit idem cum ejus arte condiendi, quam in *anatome reformata* recudit, & Hanoveræ 1705. 8. ediderunt Germanice, cum titulo *neue und besondere art körper zu balsamiren*.

F. SCHRADER de usu microscopii in anatome, Gotting. 1681. 8. Aliqua in itinere apud LEEUWENHOECKIUM viderat. Defendit microscopium contra KERKRINGIUM. Seminis tamen vermiculos & sanguinis globulos deserit, & fatetur, colores sub microscopio expallere.

J. C. PEYER *methodus historiarum anatomicarum*, Paris. 1678. 8. In universum quidem modum tradit, quo utiliter possit cadaver morbosum aperiri, ad eruendas morbi causas & utilitates physiologicas. Exemplar egregium dedit in sectione juvenis, cujus cordi pericardium connatum erat.

LEONARD TASSIN *administrations anatomiques*, Paris. 1678. 12. Lyon 1696. 12. Paris. 1723. 8. & alias Belgice etiam recusum an. 1730. 8. Rudis culter & parum utilis.

DIONYSIUS PAPIN ossium resolvendorum modum excogitavit, in physicis laudatum. Idem, & primus quantum novi, artem ope vacui injiciendi invenit *JOURN. DES SAV.* 1684. p. 92. quo anno etiam SARRIOTI experimenta, eodem modo, in replendo rene facta enarrantur n. 7. Id etiam artificium CAMERARIUS commendat in *præf.* ad dissertationes II. III. Tubingæ editas an. 1694. 8.

ANTONIUS NUCK argentum vivum artificiosissime adhibuit, æque peritus demonstrator angiologiæ lymphaticæ, quam alii in vulgaribus vasis. Testis est DOLÆUS Ep. II. ad WALDSCHMIDIUM, & maximus alter HERMANNUS BOERHAAVE *prælect. acad.* I. p. 576. Antlia etiam usum esse, & instrumentum ad antliam aptabile se apud eum vidisse CAMERARIUS auctor est l. c. In canibus experimenta chirurgica instituit, thoracem perforavit felici eventu.

Ad lymphaticorum etiam administrationem pertinet laudata alibi JOHANNIS ZELLERI Disp.

E. CAMERARIUS de subsidiiis pro arte medica ab antlia pneumatica perendis, Tubing. 1691. 4.

JOSEPH LANZONI de balsamatione cadaverum, Ferrar. 1693. 12. & in collectione operum. Ex variis sua collegit.

JOS. LANZONI l. c. recusum exstat Genev. 1696. 12.

(a) G. COWPER bronchia plumbo replebat T. 25. fol. 10. Argento vivo satis artificiose etiam uti norat, si verum est, in lactea & lymphatica penetrasse. Quid a DUVERNEYO habeat ignoro.

MERYI præparata, & nervorum sceletos laudat LISTER *Journy* p. 64.

G. BIDLOUS bismutho pulmones repletos pingit T. 25. f. II. & artem, sed difficilem, docet.

In Academia Regiæ Parisinæ monumentis HOMBERGIUS an. 1699. docet vasa replere ope antliæ & metalli fusi ex æqua parte jovis, saturni & bismuthi, quæ metalla in calore chartam unice rufo tingente nec amburente fluerent. Utebatur autem loco emboli vacuo Boyleano, nempe tubulum in libero aere immergebat catino, dum viscus intra antliam ab aeris pondere liberabatur.

ROUHAULT de injectione anatomica 1718. ichthyocollam laudat.

WINSLOW de vitiis inflationis in partibus mollibus 1725. p. 329.

LOUIS PENICHER des embaumemens suivant les anciens & modernes, Paris. 1699. 12. Unice describit plebejam condituram, qua vulgo pharmacopolæ utuntur in magnatum cada-

veri-

Nunc dixi de toto studio anatomico dirigendo. Qui his præceptis instructus pergit in hoc studio, non tam cito fateor, sed tuto progredi poterit, nec facile in errores incidet.

Hinc

veribus, ubi scarificationibus carnes incidunt, cavitates pulveribus aromaticis replent, &c.

BARTHOLD KRUGER anatomicus rheodidactos, sive methodus secandi Hipp. Democritea, Brunsvic. 1700. 4. Omnium cultorum anatomicorum pauperrimus.

*THOMAS GREENHILL necropaideja, sive de arte balsamo condiendi, Lond. 1705. 4.**

G. DESNOUES lettres a Mr. GUIGLIELMINI, Romæ 1706. 8. Anatomes cereæ vel inventor est, vel certe primus nitorem ipsi conciliavit famamque. Abbatem ZUMBO, qui in Academia Regia Scientiarum caput cereum demonstravit, plagii accusavit, quod a se doctus magistrum destituisset. Cadavera cerea ipse vidi, nitida, sed malo & noxio instituto. Naturam enim deferere, ad arbitrium operarii se tradere jubet anatomes cupidos.

THOMÆ GREENHILL quod citavimus opus, splendidum est, & inprimis ad artificia Ægyptiorum pertinet. Imo vero mera collectio, qua tota Ægypti historia continetur, ne verbulo quidem proprio, de pollinctura addito.

J. WILH PAULI progr. de siphone anatomico, Lips. 1721. 4.

J. DOUGLAS musculorum sectionem, sed etiam artificiosam illam peritonæi exemptionem docuit.

J. H. HEUCHER ars magna anatome, VVittenberg. 1709. 4.

HARMAN van BLOEMESTEIN de genuina administratione anatomica, Leidæ 1712. Disp.

J. B. MORGAGNI variis locis, & maxime ad pelvis musculos, modum præparandi adjecit.

P. G. SCACHER de anatomica præcipuarum partium corporis administratione, Lips. 1710. 4. Describit injectiones varias, etiam quæ vacui ope fiunt. Sebum laudat cum resina, liquorem etiam balsamicum proponit.

CHRISTIAN HERTOGE bericht von Egyptischen mumien, Goth. 1717. 8. Generalia aliqua de balsamis, deinde descriptionem habet mumie optimæ notæ, ubi credit aromata & opobalsamum, non solum bitumen adhibitum esse. Mumiam etiam Uratislaviensem scripsit ANDREAS GRYPH, Breslau 1662. 12.

JOH. G. HERLIN balsamirte maani nebst anmerkungen, wie die balsamischen concreta den menschlichen leib vor der corruption bevvahren, Chemnitz 1725. 8.

CHRISTIANUS WOLF in nützlichen versuche T. I. n. 60. ex hydrostatico experimento siphonem anatomicum deduxit, cavum, in quem tubulus exiguus inseritur. Membrana, quam separare volumus, supertenditur tubo, aqua immittitur, ita secedit in lamellas.

In M. B. VALENTINI amphitheatro zootomico artificia aliqua ad sceletos parandos utilia habentur.

H. A. NICOLAI in Disp. de directione vasorum laudat ad injectiones ichthyocollam p. 71. Sed ea nimis in cellulositates fugit, & deserit vasa, ut splendorem induat membranis, vero usu destituatur.

B. S. ALBINUS præstantissimus in arte replendi corpora, & sceleta fetuum parandi, modum, quo cellulosa tela intestinorum parantur, docuit in historia intestinorum tenuium.

STEPHANUS HALES novum modum replendi cadavera excogitavit ope tubi longi, per quem solum pondus liquorem in arteriam replendam impellit p. 221. Materiem etiam injiciendam ex sebo & resina laudat in hamastar.

De ST. ANDRÉ famam sibi paravit artificiosa mercurii injectione, sed cuniculorum partus, & epidermidis spuria vasa, eum omni fama & fide exuerunt.

In Commercio literario Norico plurima huc faciunt. Anno 1731. Specimine IX. de liquoribus balsamicis, & de modo quo præparata conservantur, monita habet TREWIUS. An 1736. (in præf.) gummi anime & sandarach ad injectionem laudat, & ichthyocollam. In hebdom. 30. an. 1738. de cadaveribus quibusdam integris præparatis agit p. 403. An. vero 1744. de liquoribus anatomicis, ubi præfert spiritum frumenti, salis ope paulum a phlegmate liberatum p. 272.

In Actis Edimburgensibus III. n. 10. ALEXANDER MONROO methodum conservandorum corporum habet. EJUSDEM Diff. ex Edimburgensibus sumpta seorsim an. 1741. in 8. Leidæ prodiit, sub nomine tentaminum circa methodum injiciendi. Ad exsiccationes aere faciendas, vel mercurio, nova aliqua habet. Adjectus siphon LIEBERKUHNI.

THIE-

Hinc omnia, quæ requiruntur in Medico, absolvi; sed duo restant, ut scilicet de theoria & de praxi dicamus. Vocabula ista in usu sunt, aliter dicemus de speculatione & de facienda medicina, si ita loqui liceret.

THIESEN de materie coracea ejusque injectione anatomica, Regiomont. 1731. Disp.

J. NIC. VEISS de adminiculo aqua in administratione anatomica, Altdorf. 1733. 4.

J. TIMMIUS, infelix literatus, edidit Bremæ 1735. 8. *Samlung zur vorbereitung des menschlichen korpers gehöriger schriften*. Nihil proprii habet, sed *LYSERI* cultrum, & *BARTHOLINI* methodum demonstrationum.

ABRAHAMUS KAAU cellulositates pleuræ, mediastini, multarum alium partium artificiose præparare aperuit.

J. FRID. CASSEBOHM præter methodum secandi musculos superius excitatam, dedit methodum secandi viscera, Halæ 1740. 8. Inter administrationes etiam peculiare observationes habet de valvulis venæ cavæ supra hepar: repletionem ductus thoracici, septo lucido, nimis tamen hic brevis. Uterque Libellus Germanice ab Auctore versus auctior prodiit eodem anno ibid. notis nonnullis auctior. *EJUS methodus secandi*, Berolini 1746. 8. Germanice edita inter opera huc pertinentia facile excellit, fusa enim & patientissime exponit modum, quo præparabat musculos, viscera, vasa, nervosque. In eo posthumo labore Osteologia deficit, cujus præcepta in nostro *CASSEBOHMIANO* codice etiam reperiuntur.

CL. LIEUTAUD artificiosas passim dissectiones aperuit in *essays d'anatomie*.

PHILIPPUS CONRADUS FABRICIUS in *idea anatomæ præctica*, VVetzlar 1741. 8. multa commoda ad injectiones & dissectiones consilia dedit, & observationes anatomicas interspersit.

CHRIST. FRID. SCHULZ de sicca corporum animalium conservatione, Lipsi. 1741. 4.

J. H. SCHULZE Diss. de mumia, Halæ 1737. de sicca corporum animalium conservatione, Hal. 1741. prodiit. Varias formulas habet, repletionis gummeæ & terebinthinatæ.

SZENT PETERI de conditioe corporum. ibid. eod. anno.

J. E. HEBENSTREIT de vermibus anatomicorum ministris, Lipsiæ 1741. programma.

DERCUM de anatomæ cereæ præstantia & utilitate, VVürtzburg. 1743. 4. Docet modum, quo cerebrum, aliæque partes corporis cera imitari possis. Magnus etiam anatomæ cereæ artifex esse dicitur *HERCULES LELLIUS*, qui pluscula cadavera cerea in usus Academiæ Bononiensis paravit *Bononiens. T. II. P. I. p. 44.* Hujusmodi etiam corpora demonstrabat *J. B. BIANCHI*.

A. WESTPHAL spec. de injectionibus anatomicis, Gryphisvald 1744. Disp.

JOHANNES ALEXANDER MISCHER institutionem anatomicam edidit Hamburgi 1744. 8. in qua imprimis etiam secandi methodos ex *D. LIEUTAUD* aliisque Auctoribus descripsit.

Inter artificiosæ injectionis magistros excellit *J. NATHANAEL LIEBERKUHN*, cujus præparata omnibus aliis præfert *BOHLIUS* noster de via lactea n. XIII. *IDEM* machinam valde opportunam pro firmandis ad anatomen ranis invenit, & in *Actor. Acad. Berolin. T. I.* descripsit. *EJUSDEM* microscopia alibi laudavimus.

J. NATH. LIEBERKUHN in monum. Berolin. 1748. revelavit suam methodum replendorum vasorum, tunc erodendarum membranarum in oleo vitrioli, de cera residua, denique imprimendæ in gypsum figuræ quæ argento possit repleri.

G. A. LANGGUTH de usu siphonis anatomici parum anatomico, VVittemb. 1746. 4. Scopus est demonstrare machinam *WOLFFII* nimis vehementer agere, poros facere inorganicos, ab animalibus poris diversos, laminarum numerum arbitrarium producere, vasa obtenebrare, &c.

G. A. LANGGUTH citatam hinc disputationem recusam dedi in *Coll. Disp. T. VI.*

CL. DAUBENTON in III. tomo *historiæ thesaurorum regionum* varia habet de conservante liquore Tafia, de impedienda exhalatione, de anatome cerea administrata ab Abbate *ZUMBO*, cui potius quam chirurgo *DESNŌVES* inventum debeatur (p. 172.), & a *D. de la CROIX*, & de similibus imitamentis, quorum etiam æneas icones dedit, deque mumiis denique.

Anthropotomie ou l'art de disséquer, Paris. 1750. 12. 2. vol. Satis diligenter scripta, cum iconibus etiam instrumentorum, & arte injiciendi, multa minime citata habet a *CL. MEKELIO* aliisque.

M. O. der allernueste und leichteste weg zur anatomie, Lipsi. 1710. 1747. 8. Cujuscumque sit Auctoris, antiquum jam, & ex *BARTHOLINI* patris temporibus est.

METHODI STUDII MEDICI

PARS VIII.

DE USU PARTIUM, SIVE THEORIA MEDICA.

CAPUT I.

Fontes Theoriæ.



Usus denotat nihil aliud, quam effectum, quem præstat unaquæque res, ad utilitatem & ad bonum aliquod; itaque dicere de usu partium nostri corporis est proprie, explicare functiones, seu actiones nostri corporis partium; nam omnes corporis actiones exercentur per sua causas & instrumenta, quæ sunt partes corpus constituentes; ergo, qui scit usum partium, sciet theoriæ medicam de hac re.

Qui ex mathematicis, physicis, chemicis, botanicis & pharmaceuticis didicit actiones naturæ, quæ obtinent in omni corporum genere, & quæ exercentur legibus naturæ omni corpori communibus, ille instructus est generali scientia ad medicinam requisita. Idemque instructus est & idoneus ad explicandas actiones, quæ in corpore humano fiunt.

Actio est motus, qui exercetur a parte aliqua definita, quæ concurrit ad constituendum corpus. Sed omnes illæ actiones fiunt primo loco ex iis, quæ communia sunt omnibus corporibus, secundo ex illis, quæ nostro corpori singularia sunt.

Prima illa petuntur ex mathematicis, physicis, chemicis, botanicis & pharmaceuticis, quia illa nos docent in genere, quid in natura contingat.

Si nunc quis simul noverit corporis humani ideam & fabricam, quoad omnes partes, & hæc conferat cum generalibus illis scientiis, ille demum scire poterit, quid corpus humanum & ejus partes agant, & alios idem docere poterit. Qui præter hæc duo aliquid advehit, semper errabit; quod enim summi viri erraverint, est quod discesserint ab his duabus regulis. Ita BORELLUS, nobilis BELLINUS, & JOHANNES BERNOULLI & magnus mathematicus KEILIIUS, viri certe optime gnari methodi detegendæ veritatis non errant. Quam primum vero adsumunt, quod non demonstratum est, ut falsa opposita in sanguine, statim miserrime errant. Ita BORELLUS omnia egregie demonstrat de musculis eorumque actione, sed ea, quæ de causa actionis muscu-

musculorum profert, certe vana sunt, uti de omnibus Auctoribus, qui de hac causa scripserunt, verum est, ne quidem systemate geometrico STENONIANO excepto.

Sed BORELLUS vidit musculus tumescere, pallefcere, & mole augeri dum agit, ergo dicit, aliquid adferri, quo propria substantia musculi expandatur. Quum vero ignoraret, quid in hac expansione ad musculus accederet, adsumit ex generalibus scientiis oleum vitrioli, & sal tartari, quæ salia sunt opposita, & mista sibi invicem, effervescentiam excitant, eademque, si vase flexili contineantur, id instant. Nimum certe festinus cognitum in natura effectum adsumit, & applicat causæ incognitæ phænomeni cogniti; hinc totus ejus error oritur, quod ab anatomia desciverit, & adsumserit aliquid, quod in ea non invenitur (a).

Videatur nunc BERNOULLII Tractatus de *musculorum motu*, qui in nova editione BORELLI reperitur. Adsumit ibi pro postulato in musculis succum nervosum & arteriosum conjungi, sed certe hoc est supponere aliquid, quod nusquam demonstratur, nam, ubi arteria effundit suum liquidum, ibi nervus suum liquidum infundere non potest, arteria enim causa est, cur etiam nervus prematur; ergo pressio in vase arterioso major est, quam in nervoso, ergo nervus non potest premere in arteriam, ergo nimia licentia est hoc assumptum hujus viri postulatum. Dein adsumit idem spiritus sic attenuare sanguinem, ut aer liberetur ex sanguine, sicque se expandat. Verum nullus mathematicus hoc demonstrabit (b).

Sic etiam KEILIIUS, ubi explicavit metum musculorum, adsumit partes liquidorum se mutuo attrahere, tuncque aerem inter partes sanguinis minus premi, & se expandere. Ingens certe postulatum, quod nusquam demonstratum esse puto, neque demonstrari posse (c),

Ergo in studio theoretico condendo semper certum adsumere debemus argumentum, unde ratiocinemur, idque semper clare demonstratum esse debet in mechanicis, physicis, chemicis, botanicis, anatomicis. Ita porro BORELLUS, cum demonstrare vult, tales sales oppositos in sanguine esse, fidem demum inveniet, ubi demonstraverit.

Ubi hujusmodi demonstrata principia adsumimus, modo bene argumentemur, nunquam errabimus. Ergo juxta hæc sex capita (mathesin, physicam, chemiam, botanicam, pharmaceuticam, & tandem anatomiam) dirigendum erit studium medicum theoreticum de usu partium corporis humani.

C A P U T II.

Auctores Theoriæ.

Perventum est eo, ut dicamus, quinam Auctores legi mereantur, pro explicandis actionibus animalium.

Dixi eam partem medicinæ, quæ hoc explicat, a multis vocari *theoriam medicam*, quod nomen tamen convenit omnibus institutionum medicarum.

Vo-

(a) Conf. *comment. BOERHAAV. III. p. 434.* Conjunxi Physiologos Anatomicis, quia plerique, inprimis priori ævo, & usus partium docuerunt, cum anatomen scriberent, & de fabrica egerunt, dum physiologiam docent. Deinde laborem absque fructu augent hæ partitiones, & repetitiones multiplicant.

(b) Ibid. not. 1. (c) Ibid. p. 435. not. 1.

Vocatur etiam *physiologia*, hoc est sermo de natura, seu naturalis expositio quorundam phænomenorum naturalium. Sed neque hoc nomen accuratum est, quia non stricte phænomena corporis humani spectat; hinc cum GALENO vocabimus hanc medicinæ partem, tractatum *de usu partium*.

Dicemus adeo, quinam Auctores sic scripserint, ut ex veris causis indubitatos proprios effectus bene cognitos descripserint.

Difficile non erit magnam Bibliothecam eorum scriptorum colligere, qui susceperint exponere actiones naturales & vitales, sed paucos enumeremus, qui fidem meruerint.

Ratio cur aberraverint plurimi hæc est; omnes medici qui ante annum 1628. a CHRISTO nato, aliquid de usu partium egerunt, nullibi bene scripserunt; five consulatur magnus ipse HIPPOCRATES, five GALENUS, five schola Græca, five schola Arabica, nihil boni in hoc negotio præstiterunt. Ratio hujus est, quod circulatio HARVEIANA nondum detecta esset: eam ergo ignoraverunt omnes. Atque ea est una causa princeps, unde desumendi sunt effectus in corpore humano noti omnes. Quid enim juvabit me scire structuram partis, nisi sciam perpetuo, & indubitato ordine, eo perpetuo deferri liquida? Sed hoc tantum cognitum fuit, postquam HARVEIUS circulationem demonstravit; id autem illo anno modo citato factum est. Sumamus ergo ante HARVEIUM optimum physicum & theoreticum, puta DANIELEM SENNER-TUM, videamus, quo modo explicet usum partium, & mirabimur, quam frivola causæ adferantur effectuum notissimorum (a).

Verum altera est ratio non satis deploranda in medicina, quod nempe adjumenta, per quæ ars emergere poterat, detrimento fuerint. Requirebatur fabricæ liquidorum, quoad naturam, cognitio. Verum chemici, a quibus hæc cognitio expectabatur, omnes eo declinarunt, ut omnem actionem a chemica actione putarent pendere, unde omnes Libri ab HARVEII tempore vacillant ab hac parte. Sumatur enim optimus ex his Auctoribus, dicet hæc fieri per effervescentiam, & per fermentationem, & præcipationem, ad hæc tria capita referunt omnem actionem. Si nunc demonstrari posset uno experimento, fermentationem non dari in sanguine, totum super hanc theoriam ædificatum opus nullius est momenti.

Tertius ordo superest eorum, qui subnixi anatomicis adsumtis propriis, mechanicam voluere actionem explicare, sed illi plerumque CARTESIANI sunt, & omnes confisi huic viro totam physiologiam ejus methodo explicuerunt.

Si nunc propius videamus, quid CARTESIUS boni in artem introduxerit, reperiemus, eum totum hominem explicare voluisse in Libro, quem scripsit *de homine*. Comparetur ergo ille tractatus *de homine* editus cum notis Dn. la FORGE, videbimus adsumere CARTESIUM bullulam fermento plenam, quæ ex virga viri effunditur in uterum feminae, & demonstrare totum hominem inde fieri ex effervescentia assidue enata ex propria feminis substantia; Nemo

R r r r

non

(a) Vide inter Anatomicos. Chemica principia conjungebat cum Galenicis, anatomen ipse non exercebat, non ergo mirum, meras inde theorias natas esse,

non potest non mirari, quo modo homo, qui præluxerat in mathematicis, uti certe eminuit **CARTESIUS**, adsumsisse sustinuerit pro datis hujusmodi principia, quæ repudiasset antea vel scholastica ipsa secta; videmus enim illum explicare functionem v. gr. cordis, dum hoc viscus considerat, ut ollam, & lebetem, igni impositum, cui instillatur una gutta fermenti, unde expansio & rarefactio oritur, ex ea vero cordis dilatatio, & expulsio sanguinis ex corde, & ex ordine causæ omnium motuum per corpus. Deinde cum viderent adfectæ, nihil inde effici posse ad secretionem & mutationem humorum explicandas, adsumserunt poros. Verum non oportebat in medicina argumentari de poris, nisi demonstrati sint. Demonstravit autem **ARCHIBALDUS PIT-CARNIUS** ex hoc ipso loco, ex quo nunc doceo, poros ubique eosdem esse, & flexiles; hinc eorum figuram nihil facere ad secretionem, quæ non tantum fit una particula simul perfluente, sed fit secretio liquidi a liquido, hoc est plures particule transeunt simul, adeoque secretio non pendet a poris, sed pori se accommodant transeunti liquido, nam idem canaliculus (sive porus vocetur idem est), qui hodie transmittit tantum urinam, cras poterit accedente aliqua causa transmittere sanguinem.

Verum præterea statuerunt **CARTESIANI**, ætherem, hoc est materiem subtilem. Quando vero rogabantur cur æther locis definitis contineretur, & cur non potius vagetur ad loca, ubi facile transire potest, responderunt nihil, sed statuerunt causas & atrahentes & determinantes eo versus, quas probare non poterant.

Itaque ante **HARVEIUM** nihil sperare possumus in hac parte; post hunc habemus chemicos & Cartesianos, sed utrique assumerunt principia, quæ statim explosa fuerunt.

Proinde ad commendandos Auctores circa hanc medicinæ partem, hac opus prudentia est, ut eos solos dignos habeamus & lectu & perscrutatu, qui pro datis adsumserunt nihil, nisi quod sensibus certo exploratum esset, & pro principiis argumentandi nihil omnino, nisi quod a mathematicis physicam explicantibus demonstratum sit.

Nunc etiam præmonui, sensus nos docere vires corporum physicorum in genere, & corporis humani in specie. Quidquid nunc ex physicis, quæ exposui, nec non ex anatomicis, chemicis, botanicis, aliisque jam expositis a me demonstratum est semper obtinere, hoc datum sit, hoc adsumatur libere, itidemque recipiatur confidenter, quod in eo per experimenta receptum continetur, ita ut statim inde fluat, adsumatur pro dato. Ergo in explicando aliquo phænomeno, semper adsumenda pro datis ea sunt, & quæ primo data sunt, & quæ in data propositione continentur, ita ut, si bene ea propositio consideretur, statim inde sequantur. Hinc, si physiologiam quis velit condere, colligat statim ea, quæ in natura demonstrata sunt, semper & indubitato contineri; sed cum tanta res sit, quæ hoc exponat, hinc colligat sibi hæc omnia in adversariis, quod ut facilius perficiat, legat modo **Clarissimum LOCKIUM de adversariis conscribendis**, Amstelodami editum cum gallico quodam Auctore.

Pro exemplis etiam hujusmodi collectionum legatur **VERULAMIUS in tractatu de ventis & calore, & in sylva sylvarum, seu collectione experimentorum,**

rum, invenietur in his duobus tractatibus modulus, secundum quem possunt dirigi collectiones.

Alterum quod requirebatur in his Auctoribus, qui physiologiam condunt, est, ut, quando argumentantur, nihil adsumant, nisi de his, de quibus scrutatores optimi nunquam dubitarunt, atque hæc sunt principia mechanica. Quod mechanicam nunc & hydrostaticam adtinet, Auctores, qui demonstrationes adeo claras dederunt, enumeravi, ut fidem unusquisque, qui modo intelligit, adhibere necessario debeat.

Ergo qui explicabit functiones, debet primo corporis humani fabricam non fingere, sed ex anatomia describere, deinde debet motum liquidorum describere ad eam partem, non fingere, sed partim ex anatomicis experimentis & injectionibus, partim ex vivorum animalium sectionibus adsumere. Si vero ex his deducere causas abditas voluerit, potest adhibere, quæ mathematici & mechanici demonstrarunt; & sic libere poterit argumentari, & applicando hæc generalia ad specialia non errabit.

Pro exemplo, demonstrat anatomia arteriam conicam esse, &, quo remotior a corde est, eo angustior fieri, elasticam porro esse, ut extensa se retrahat; & continuo dare arterias laterales, quæ eodem modo se habent, & liquidum per eas arterias fluere continuo, ex latiore in angustum. De his omnibus nemo dubitat, qui anatomiam noverit: demonstrat enim anatomia, sanguinem pelli per arterias ex motu a corde accepto. Hæc ergo data sunt. Si nunc Medicus velit expendere, quid ex hoc liquido in tale vas propulso sequatur, debet adsumere, quæ geometræ demonstrarunt, nempe, unumquodque punctum vasis istius tantum virtutis recipere, quantum momentum est lineæ liquidi in hoc arteriæ punctum ruentis, & idem valere in omni puncto istius arteriæ, quum perfecte plena sit; &, quum arteria illa elastica sit, eadem virtute illud liquidum retropelli omni momento. Hinc deducet nullam partem sanguinis manere posse in eodem situ, sed omnes moleculas continuo vario motu inter se moveri, quum varia arterias puncta vario modo retropellant, & hinc ipsa liquida vario modo in se mutuo ruere cogant. Hinc deducet, liquorem in nostris arteriis sanis non posse concreescere, sed contra fluidiorem reddi. In his omnibus errare non poterit. Nam licet geometræ motum hujus liquidi generaliter adsumunt, hoc est, ex quacunque causa ortum, idem tamen est, & certe liquidum illud movetur per huiusmodi vas, & non poterit non fieri, ut in arteria linea liquidi in aliquod punctum ruens retropellatur ab eo. Hoc exemplo videmus firmatas leges, secundum quas scribere oportet eum, qui functiones humani corporis describere vult.

Ecce nunc Auctores physiologicos. Celebris ille Neapolitanus, JOHANNES ALPHONSUS BORELLUS in opere illo elaboratissimo de motu animalium omnino nominandus est. Ad hoc opus Auctor per tot annos omnes vires impendit, judicium vero nostrum alibi exstat. Ad calcem hujus libri adjectæ sunt JOHANNIS BERNOULLI meditationes mathematicæ de *motu musculorum*, (nempe in editione Lugduni Batavorum edita an. 1710.).

Commendare quidem nequeo hos Auctores, quod errore puri sint, neque con-

tra duas leges præmissas peccaverint, peccarunt enim, sed tamen hætenus sunt optimi.

Peccavit enim BORELLUS contra primam legem, quando plus adsumit, quam anatomia demonstrat, nempe adsumit spiritum animale acidum esse, & effervesce cum sanguine.

BERNOULLIUS vero adsumit, quod nullibi demonstratum sit spiritus scilicet & sanguinem in unum vas effundi. Hoc suppositum non est adsumendum, quia nullibi datum adsumendum est, quin demonstratum sit.

Post hos viros sequitur LAURENTIUS BELLINI *de urinis & pulsibus*, & missione sanguinis, &c. Editio est in 4. Bononiæ an. 1684. edita, quæ optima est. Verum ea, quæ Francofurti & Lipsiæ per BOHNIUM est edita an. 1683. æque bona est, nisi quod charta paulo deterior sit. Hic Auctor discipulus fuit MALPIGHII in anatomicis, BORELLI vero in mechanicis & mathematicis. Castissimus est Auctor, & raro contra has binas leges peccat, raro nempe adsumit ea, quæ in anatomia non demonstrata sunt. Verum tamen & in eo sunt nonnulla, ubi ab his legibus descivit. A lege prima aberravit, quando expansiones & rarefactiones in motu musculorum adsumit, nam certe de iis mutationibus nulla demonstratione anatomica constat; si vero adsumisset vir ille, quod clare anatomia docet, nempe sanguinem & liquidum nervosum ad musculum ferri, licet per diversa vasa, & tumorem oriri per aggregationem sanguinis, errorem declinavisset. Verum pauca hujusmodi in eo Auctore sunt loca, & video ipsum erroris sui conscium fuisse ex lemmatibus, quæ habet in operibus ad PITCARNIUM. Sed raro palinodiam cantant eruditi viri: hinc credo ipsum tractatum intactum illum reliquisse. Legantur accurate ejus lemmata, quæ optime præmittuntur, hoc est, antequam ad textum lector veniat, scribit ibi brevissime ea, quæ spectant ad motum musculorum, respirationis, cordis, &c. ea enim exponit laconico textu lectu dignissima, quæ sæpe aliter prætervideri solent. Deinde legatur ejus rarissimus tractatus *de motu respirationis*, quem scripsit ad FERDINANDUM, Magnum Ducem Hetururiæ. Est epistola exigua, edita anno 1670., nec ullibi apparens, nisi in *actis seu ephemeridibus germanicis* anno 1671. Tomo secundo. Legantur postea ejus viri *Opuscula aliqua de motu cordis*, &c. ad PITCARNIUM scripta, Leidæ edita anno 1696. in 4. apud Boutestein. Est cygneus cantus ejus Auctoris; unde videmus privari nos spe alicujus operis promissi anatomici, nam ex REDO & MALPIGHIO composuerat opus, quo explicabat actionem partium. Id opus certe fuisset defæcatissimum, quantum patet ex opusculis ejus ad PITCARNIUM, nam ibi non peccat contra leges a nobis in principio datas.

Sequitur cum ARCHIBALDUS PITCARNIUS in *Dissertationibus medicis* collectim editis in 4. Roterodami anno 1701. Hæc scripta optima sunt & perfecta, sive legas dissertationem de motu sanguinis per pulmones, sive alia opuscula, sive ultimum tractatum de opio.

Præterea habemus MATTHIÆ GEORGII *Elementa scientiæ naturalis*, Lucæ (*Lucques*) in Italia edito anno 1707. in 4. ubi principiis satis certis theoremata condit, quæ prodesse possunt in physiologia condenda.

Tum,

Tum, si quis intelligat Italicam linguam, videat alterum tractatum, quem ille idem Auctor etiam edidit, *della ragione vera, e temeraria nella medicina*. Editus est Genuæ an. 1709. in 8. scitissimus est fane Libellus, & ad finem perductus.

Huic addatur ejus *Phlebotomia* edita in 4. Genuæ 1697. Hi Libelli ponderatim scripti sunt, & quidem libertate philosophica ex anatomia & principiis mechanicis, sed iis non plus attribuit, quam ex effectu constat.

Post hunc sequitur ASCANIUS MARIA BAZZICALUNE, cujus Liber editus est Parmæ in Italia an. 1701. Titulus est, *Novum systema physico mechanicum de Tumoribus*. Discipulus fuit BORELLI & BELLINI, ut patet, habentur ibi expositi effectus violentæ circulationis, & majoris attritus. Hanc sententiam jam docui, sed nescivi tam egregium tractatum supra hanc rem scriptum esse, nisi ante aliquot menses.

Tum GUILIELMUS COCKBURNE in *Oeconomia animalium* in 8. edita Londini. Ante aliquot annos in literis promisit alteram editionem.

Verum omnino his, qui felicius versati sunt in mathematicis, commendo Clar. JOHANNIS KEILII Libellum *de secretionem animalium*, lingua Britannica editum, qui Liber continet pulcherrimum quod in mathematicis unquam vidi. Peccavit tamen contra primam regulam, sed non obstat, quin in hoc Libello duo incomparabilia dederit, nempe demonstrationem, ex qua ex logarithmico calculo sanguinis tarditatem in vasis minimis supputare possumus, & explicationem ponderum, quibus premitur sanguis in pulmonibus.

Post enarratos & jam notatos Auctores sequitur nobilis ille Gallus PERRAULT in *Tentaminibus suis physicis, Essais de Physique*. Valuit vir iste ingenio, excultus erat studio mathematico, in chemia versatissimus & usus consuetudine & demonstratione maximorum virorum, ut LEMERII, DUVERNEII, PETITI. Scripsit autem de quinque sensibus, &c. Omnia ejus opera physica & mechanica edita sunt duobus voluminibus in 4. Lugduni Batavorum an. 1721. quæ editio elegantissima est.

Pertinent huc dissertationes anatomicæ una cum literis & adnotationibus super hac re habitis Domini LAMY. Titulus est *Dissertations anatomiques par LAMY, Docteur de la Faculté de Paris*, an. 1685. Hæc editio optima est & ultima. Hunc Libellum composuit omnino ea occasione, quam probare nequeo. Nempe cum medicus ille LAMY, quem Rex constituerat, plures dissectiones institueret, DUVERNEIUS in eum invecus est, contra eum LAMYUS in parte posteriori defensionem habet. Liber est editus Bruxellis, & satis rarus est.

Recenseri hic quoque meretur GUILIELMI COLE *de secretionem animalium tentamen*, editum Oxoniæ in 12. an. 1674. iterumque inpressum Hagæ Comitum 1684. in 22.

Hi Auctores sunt, quos lectu dignos & satis fidos inveni, ad doctrinam de actionibus vitalibus animalium, adeoque totum opus physiologicum. Nihil enim potest addisci nisi ex his scriptoribus.

Ne quis etiam miretur, quod physiologiam GALENI hic non recenseam; rationem antea dedi; cum nempe functiones tantum sint actiones circulantis liquidi, & cum ille vir ignoraverit lymphatica liquida horumque vasa; hinc hisce questionibus.

stionibus satisfacere non potuit. Nunc functiones quædam in physiologia a nonnullis singulatim exponuntur, ut:

De Visu.

De objecto visus, radiorumque, & colorum proprietatibus, unus modo vir bene scripsit, ut nunc patet omnibus, princeps nempe ille philosophorum ISAACUS NEWTON in tractatu *de Coloribus*, & quidem in ultima editione, quæ lingua Latina prostat, in priore enim editione lingua Britannica edita non sunt ea, quæ ab Auctore superaddita sunt; ille solus in his sufficit, nam quæ alii dixerunt, ea demonstrat, non in re ipsa, sed in imaginatione tantum consistere.

Verum CHRISTOPHORI SCHEINERI *Oculus seu fundamentum opticum* editum Oenoponti (*Inspruck*) in 4. anno 1619. & Wittembergæ 1660. omnino inservit, si quis velit applicare hos radios oculo. Rarus est liber, sed satis egregie explicat phænomena visus, melius certe quam ab eo tempore expectaremus. Huc pertinet *Catoptrica* CARTESII & *Dioptrica* HUGENII. Illi pro hoc capite sufficiunt.

De Auditu seu de functione Auris.

De natura soni ejusque proprietatibus, si quis velit legere scriptores, legendus erit ATHANASIUS KIRCHERUS, in Libro qui in folio prodiit, titulo *Phonurgia*, & addendi duo egregii tractatus ejus de musicis. Omnia ejus Romæ edita sunt.

Postquam etiam sic natura auditus intellecta erit, nonnulla experimenta addenda sunt, quæ inveniuntur apud MERSENNUM.

Tum super hac re egit egregie NEWTONUS in philosophiæ suæ principiis mathematicis, quibus experimentis determinatur, quanto tempore sonus a puncto sonoro usque ad organum auditus perveniat.

Ubi attente jactum est hoc fundamentum ex mathematicis, ut applicetur, auris fabrica cognoscenda est. Legantur ergo hi quatuor.

1. LAMY *Dissertationes anatomicae*.
2. PERRAULT *Essais de Physique*.
3. Tum inprimis Illustris JOSEPHUS DUVERNEI.
4. Tandem Clar. VALSALVA, cujus Liber Libro DUVERNEII in eo unice anteferri meretur, quod de theoria auditus accurate egerit, quo modo scilicet sonus laminæ spiralis applicetur.

De Gustu.

Legendi sunt in primis tres Auctores, nempe CAROLUS FRACASSATUS medicinae Professor Italus in epistola *de Lingua ad MALPIGHIIUM*. Habetur ea in operibus MALPIGHII. Continet naturam eorum corporum, quæ proprie sapida sunt, & nullus Auctor meliora experimenta super hac re habet.

Tunc, si hæc ad organum gustus applicare velimus, legatur MARCELLUS MALPIGHIIUS *de Lingua*.

Superaddantur istis BELLINI *Experimenta nova de gustu*, nunc Lugduni Batavorum nuper edita.

Ex hisce Auctoribus omnia intelligentur, sed addi potest illustrissimus ROBER-

BERTUS BOYLE in tractatu de saporum productionibus . Est fere ultimum magni viri opus . In Libro etiam de *mechanicis qualitatibus productionibus* de saporum causis experimenta habentur .

De Olfactu .

Videatur le CLERC in *Osteologia*, ubi habetur id, quod illustrissimus DUVERNEI invenit, dat enim præsertim structuram ossium narium.

Post hunc virum pro intelligenda membrana super hanc osseam fabricam extensa, aptus est SCHNEIDERUS de *Catarrhis*.

Hicce addatur JOHANNES PALFYN in *Nova descriptione ossium*, quem ideo hic commendo, quia DUVERNEIANAM methodum ibi inveniemus.

De Tactu .

Qua ratione hic sensus exerceatur, legendus est solus MARCELLUS MALPIGHIUS in tractatu de *Cornubus*, de *Organo tactus*, de *Lingua*, de *Cute*.

Enumeravi Auctores, qui de functionibus physiologicis omnium optima tradiderunt, & caste disseruerunt, hoc est manserunt intra leges anatomiae . Superest, ut enarrem, qui de generatione optime scripserint.

De historia Generationis .

Quomodo mirabilis illa propagatio fiat, per quæ instrumenta, per quas actiones, per quam materiam, quo modo mutetur illa, nostro seculo egregia multa dici possunt veteribus incognita.

Hinc, si accurate hoc negotium quis velit intelligere, legendi sunt citati Auctores anatomici de Organis Generationis, v. gr. de ovi in feminis origine, fabrica, materie, maturatione, discessione & decerptu, transitu in tubas Fallopianas, transitu per hasce tubas, ingressu in uterum, mutatione in utero, exclusionem ex utero; de hisce omnibus (quot capita singularia sint) legi meretur maxime CAROLUS DRELINCOURTIUS in Libello in 12. Lugduni Batavorum apud Boutestein edito cum titulo *Conceptus de conceptu*, ille enim vir per totam vitam congeffit, digessit, expolivit hunc Libellum, quem sub finem vitæ suæ edidit, eruditissimus certe, perspicax & candidus.

De seminis in viro ortu, secretionem, collectionem, maturationem, fecundationem, expulsum legi debent, (non ut anatomicum hic considero, sed ut physiologum) Clarissimus LEAL LEALIS.

Tum Clarissimus GUILIELMUS COWPERUS & FREDERICUS RUYSCHIIUS, atque tandem LEEUWENHOEKIUS, habet enim elegantissima super hac re experimenta, adeoque palmam præripuerunt fere omnibus.

De conjunctione, mutatione, maturatione seminis masculini cum ovo femineo legendi sunt clarissimus HIERONYMUS FABRICIUS AB AQUAPENDENTE in tractatu suo de *pulli ex ovo generatione*, Patavii edito in folio . Tum MARCELLUS MALPIGHIUS in egregio tractatu de *Bombyce*, idemque in duobus tractatibus, qui omnibus de hac re scriptis præferendi sunt, *epistolis* nempe *binis circa ovum incubatum*. Mihi certe visum fuit, cum has epistolas legerim, me vidisse ultimum terminum, quo constans observatio hominum pervenire potest; simplex tantum est narratio, ac si oculos videret, sed tædio nulli intelligenti erit: propria manu pinxerat figuras, ut per microscopium viderat, & tan-

& tantum laboris his inpendit, ut totus exhaustus emarcuerit suis observationibus.

Sed addendus est **GUILIELMUS HARVEIUS**, de *animalium generatione*, quem Librum jam commendavi in anatomia: verum majorem longe laudem in physiologicis meruit. Vir iste, cui natura dederat sublime ingenium, & ardorem communicandi cum aliis, quæ invenerat, totum se dederat dissectioni e- quorum, damarum, &c. Ista animalia primo duobus post coitum diebus, deinde variis subinde dierum intervallis aperiebat, sicque absolvisset rem egregiam omnino, cum exorta calamitate regni omnia everfa fuerint, & chartæ combustæ, unde tantum parvum illud opus superest, sed maxime egregium & incomparabile. Nam ex HARVEJO unice novimus ovaria esse, quæ veteres testes appellare solebant. Hoc opus per experimenta tantum, non per ratiocinia philosophica rem tractat, ideoque est pretiosissimum.

Observationes etiam circa genituram, & omnia, quæ hætenus diximus, habentur congestæ in *Historia Academia Regiæ Parisinæ* ubi LEMERII, & DUVERNEYI, & aliorum habentur observationes de fetibus hic & ibi repertis, modo adcretis ad testes seu ovaria, modo deprehensis in media tuba, denique in hernia facta uteri, ubi tuba FALLOPIANA ingreditur. Adeoque, quæ possunt circa hoc negotium requiri, antea incognita, ibi reperiuntur.

En schema Auctorum, quos, si physiologiam medicam intelligere vult tiro medicus emat & legat.

FINIS TOMI PRIMI.

